मुनिश्रीलावण्यविजयनिर्मित

धातुरत्नाकर

DHĀTURATNĀKARA

OF

MUNI LĀVAṆYA VIJAYA

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान

नई दिल्ली

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुस्तकमिदं राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानस्य पुनर्मुद्रणयोजनायां प्रकाशितम्।

मुनिश्रीलावण्यविजयसूरिविनिर्मित

धातुरत्नाकर

DHĀTURATNĀKARA

OF

MUNI LĀVAṆYA VIJAYA SŪRI

प्रथम भाग

तिङन्त प्रक्रिया

पुनरीक्षित संस्करण

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान

मानित विश्वविद्यालय

५६-५७, इन्स्टीट्यूशनल एरिया,

जनकपुरी, नई दिल्ली - ११००५८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

The firm will replace the copy/copies free of cost if any defect is found

प्रकाशक :

प्रो. वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री

कुलपति

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान

मानित विश्वविद्यालय

(मानवसंसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन)

५६-५७, इन्स्टीट्यूशनल एरिया,

जनक पुरी, नई दिल्ली - ११००५८

योजनासमन्यायक

प्रो० आर. देवनाथन्

प्राचार्य, (दिल्ली परिसर)

डॉ० प्रकाशपाण्डेय

सहायक निदेशक (शोध एवं प्रकाशन)

द्वितीयं पुनर्मुद्रितसंस्करणम् : २००६

मूल्यम् : रूप्यकाणि १६६५.०० (१-५ भाग)

मुद्रक:

परिमल पब्लिकेशन्स

27/28, शक्तिनगर

दिल्ली - 110007 (भारत)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अर्जुन सिंह
ARJUN SINGH

सत्यमेव जयते

मानव संसाधन विकास मंत्री
भारत
नई दिल्ली ११० ००१
MINISTRY OF
HUMAN RESOURECE DEVELOPMENT INDIA
NEW DELHI- 110001

सन्देश

संस्कृत साहित्य में अनेक ग्रन्थरत्न विद्यमान हैं जिनका पठन-पाठन एवं अनुसन्धान इस राष्ट्र में सहस्रों वर्षों से चला आ रहा है। वेद, शास्त्र, स्मृति एवं पुराण जैसे विशाल ग्रन्थ संस्कृत वाङ्मय का अंग हैं। यह वाङ्मय समय-समय पर प्रतिष्ठित विद्वानों द्वारा परिश्रम एवं आर्थिक व्यय से अंशतः प्रकाशित भी हुआ है। किन्तु समय के साथ इन ग्रन्थों की मुद्रित पुस्तकें छात्रों, विद्वानों एवं सामान्यजनों को दुर्लभ होने लगी हैं। अतः इन दुर्लभ सुसम्पादित ग्रन्थों का पुनर्मुद्रण कर न्यूनतम मूल्य पर उपलब्ध कराने की योजना मानव संसाधन विकास मंत्रालय एवं उसके अंगभूत राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान के द्वारा कार्यान्वित की गयी है।

मैं आशा करता हूँ कि इस दूरगामी उपक्रम से संस्कृत के विद्वान्, छात्र एवं संस्कृतप्रेमी सामन्यजन लाभान्वित होंगे तथा संस्कृत के ज्ञान, वैभव का विस्तार होगा। साथ ही मैं यह भी कामना करता हूँ कि राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान इस योजना में अन्य महत्वपूर्ण ग्रन्थों को भी प्रकाशित कर संस्कृत की श्रीवृद्धि करेगा।

(अर्जुन सिंह)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र-शासनसम्राट्-सूरिचक्रचक्रवर्त्ति जगद्गुरुतपागच्छाधिपति-भट्टारक

जन्म सं. १९२९ कार्तिक शु. १ मधुमती (महुवा) : दीक्षा सं. १९४५ ज्येष्ठ शु. ७ भावनगर

गणिपद सं. १९६० कार्तिक कृष्ण ७ वल्लभीपुर (वळा) : पन्यासपद सं. १९६० मार्गशीर्ष शु. ३ वल्लभीपुर (वळा)

भव्याब्ध्यामदवृद्धिचन्द्रसदृशं, श्रीनेमिसूरीश्वरं ।
सम्यग्दर्शनबोधदानसदनं, चारित्रभानूदयम् ॥
जैनेन्द्रागमतत्त्वनन्दनघनं, लावण्ययोगालयं ॥
भो दक्षास्त्रिविधं हितं प्रणमत, प्रज्ञाप्रमोदक्षमम् ॥ १ ॥

आचार्य श्रीविजयनेमिसूरीश्वरः

सूरिपद सं. १९६४ ज्येष्ठ शु. ५ भावनगर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तपोगच्छाधिपति–सर्वतन्त्रस्वतन्त्र–शासनसम्राट्–सूरिचक्रचक्रवर्त्ति–जगद्गुरु–भट्टारकाचार्यवर्य–
श्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरपट्टालङ्कार–
व्याकरणवाचस्पति–शास्त्रविशारद–कविरत्न–निरुपमव्याख्यानसुधावर्षि–विबुधशिरोमणि–धातुरत्नाकर-
तिलकमञ्जरीटीकाद्यनेकग्रन्थप्रणेता—

जन्म–वि. सं. १९५३ भाद्रपद वद ५ बोटाद (काठीयावाड) ॥ **दीक्षा**–वि. सं. १९७२ अषाड सुद ५ सादडी, (मारवाड) ॥ **वडी दीक्षा**–वि. सं. १९७३ मागशर सुद ३ सादडी, (मारवाड) ॥ **प्रवर्त्तकपद**–वि. सं. १९८७ कार्तिक (प्रायः) वद २, अमदावाद ॥

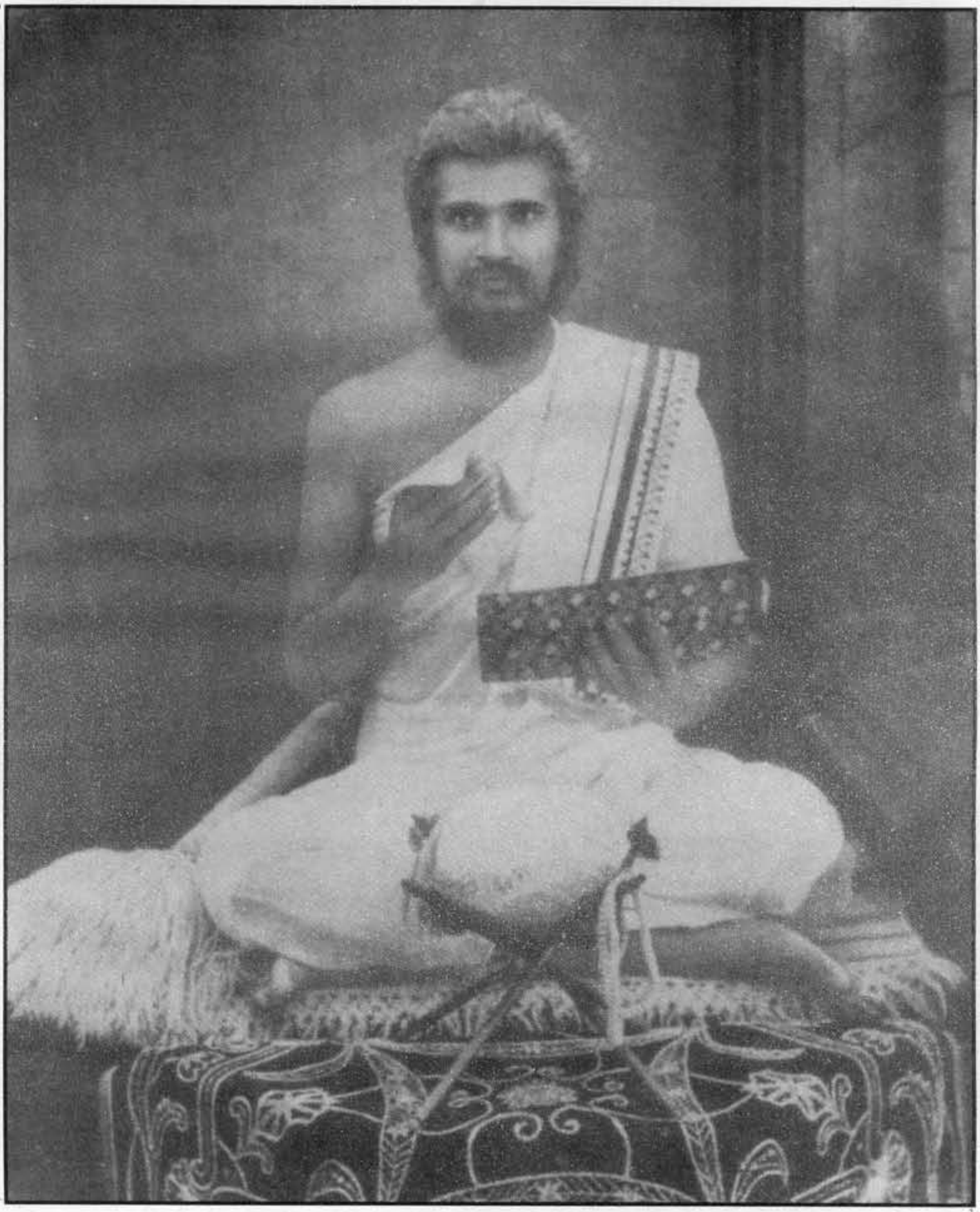

गणिपद–वि. सं. १९९० मागशर सुद ८, भावनगर ॥ **पन्यासपद**–वि. सं. १९९० मागशर सुद १०, भावनगर ॥ **उपाध्याय पद**–वि. सं. १९९१ जेठ वद १२, महुवा (काठीयावाड) ॥ **आचार्यपद**–वि. सं. १९९२ वैशाख सुद ४, अमदावाद ॥

भट्टारकाचार्यश्रीमद्विजयलावण्यसूरीश्वरः ॥

"न्यायव्याकरणागमेषु ललिते, काव्ये तथा छन्दसि। साहित्यप्रभृतौ प्रबन्धगगने यद्धीकराः विस्तृताः॥
प्रत्युत्पन्नमतिः प्रसादमदनं, व्याख्यानवाचस्पतिः। सोऽयं दक्षप्रमोददो विजयते, लावण्यसूरीश्वरः॥१॥"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भूमिका

धातुरत्नाकर हैम-व्याकरण की पद्धति में धातुरूपों का एक विपुल संग्रह है। इस संग्रह के कर्त्ता जैनमुनि आचार्य श्रीलावण्यविजयसूरि हैं।

पाणिनि-व्याकरण तथा पाणिनि-उत्तरवर्ती संस्कृत व्याकरण की अनेक परम्पराओं के स्वरूपनिर्माण में जैन-वैयाकरणों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। जैन-वैयाकरणों में जैनेन्द्र, शाकटायन तथा हेमचन्द्र ने अपनी विशिष्ट व्याकरणपद्धतियाँ स्थापित की हैं। उक्त व्याकरणपद्धतियों में, और संभवत: समस्त पाणिनि-उत्तरवर्ती व्याकरणपद्धतियों में, हेमचन्द्र द्वारा स्थापित व विकसित हैम-व्याकरण स्वयं में सर्वाधिक समग्र व सर्वाधिक वैज्ञानिक व्याकरण-तन्त्र है।

अपनी स्थापना के अनन्तर छोटी सी कालावधि में ही हैम-व्याकरण का गहन प्रचार और प्रसार हुआ। विद्वत्समाज के बीच इसे शीघ्र ही व्यापक स्वीकृति मिल गयी। हैम-व्याकरण चूँकि संस्कृत के साथ-साथ प्राकृत भाषा का भी व्याकरण प्रस्तुत करता था, इसलिए जैन परम्परा में तो विशेष रूप से इसके अध्ययन-अध्यापन की एक सुदीर्घ परम्परा ही प्रारम्भ हो गयी। जैन-धर्मावलम्बियों के बीच यह अविलम्ब ही बहुत लोकप्रिय हो गया।

प्रो० कीलहॉर्न के अनुसार हेमचन्द्र ने समस्त पूर्ववर्ती व्याकरणपद्धतियों का गम्भीर अध्ययन व विस्तृत मनन किया था और उनकी शैलियों व गुण-दोषों की आलोचनात्मक मीमांसा की थी। इसी अध्ययन-मनन और मीमांसा के फलस्वरूप ही वे अपने व्याकरणतन्त्र को एक परिष्कृत एवं उत्कृष्ट स्वरूप प्रदान कर सके थे।

हेमचन्द्राचार्य का व्यक्तित्व

हेमचन्द्र जैन-धर्म की श्वेताम्बर-शाखा के एक अग्रणी आचार्य थे। वे बारहवीं शताब्दी के सुप्रसिद्ध जैन विद्वान् हैं। जैन मतानुयायियों के बीच उनका नाम अत्यन्त श्रद्धा से लिया जाता है। जैन ग्रन्थकारों में उनका मूर्धन्य स्थान है। जैन-परम्परा में वे आचार्य हेमचन्द्रसूरि के नाम से विख्यात हैं। हेमचन्द्रसूरि की विविध शास्त्रों में अव्याहत गति थी। जैनधर्मावलम्बी उन्हें 'सर्वज्ञ' मानते हैं। विविध विद्याओं में पारङ्गत होने के कारण ही इस अप्रतिम मनीषी को अनहिलपाटन के सम्राट् ने 'कलिकालसर्वज्ञ' की उपाधि प्रदान की थी।

मेरुतुङ्गसूरिविरचित 'प्रबन्धचिन्तामणि' तथा प्रभाचन्द्रसूरिकृत 'प्रभावकचरित' नामक ग्रन्थ में आचार्य हेमचन्द्र के जीवन का विस्तृत विवरण दिया गया है। उन्हीं विवरणों को आधार बनाकर जर्मन विद्वान् डॉ० जी. ब्यूलर ने हेमचन्द्र का जीवनवृत्त लिखा था। यह जीवनवृत्त १८८९ में जर्मनी से प्रकाशित हुआ था। मणिलाल पटेल ने इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया है। पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद वाला यह संस्करण १९३६ में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ था।

हेमचन्द्राचार्य का जन्म सन् १०८८ में हुआ था। पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक कार्तिक पूर्णिमा संवत् ११४५ के दिन को उनकी जन्मतिथि मानते हैं। हेमचन्द्र के जन्मकाल के सम्बन्ध में विद्वानों में कोई वैमत्य नहीं है।

हेमचन्द्र का जन्म अहमदाबाद के समीप 'धुन्धुका' नामक स्थान पर हुआ था। यह स्थान अहमदाबाद से ६० मील दक्षिण-पश्चिम कोण में स्थित है। प्राचीन समय में यह एक समृद्ध नगर था। अनेक ग्रन्थों में इस नगर को

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'धुन्धक्कनगर' या 'धुन्धकपुर' भी कहा गया है। आचार्य हेमचन्द्र जन्मना वैश्य थे। मोढ़वंश से सम्बन्ध रखने वाले एक वैश्य परिवार में उनका जन्म हुआ था। वस्तुत: उनके वंशजों का निकास मोढेरा गाँव से हुआ था, इसीलिए वे मोढवंशी कहलाने लगे थे। इस वंश से सम्बन्ध रखने वाले वैश्य जन आज भी मोढ बनिये कहे जाते हैं। हेमचन्द्र के जन्म का नाम 'चाङ्गदेव' था। वस्तुत: हेमचन्द्र के परिवार की कुलदेवी का नाम 'चामुण्डा' तथा कुलपक्ष का नाम 'गोनस' था। उनके माता-पिता ने इन दोनों ही नामों के आद्यक्षरों को लेकर अपने इस पुत्र का नाम चांगदेव रखा था। कहा जाता है कि बालक चानदेव के जन्म से पूर्व ही उसकी माता को उसकी विलक्षणता के सम्बन्ध में अद्भुत स्वप्न आया करते थे। हेमचन्द्र के पिता का नाम 'चाचिग' और माता का नाम 'पाहिणी' था। युधिष्ठिर मीमांसक के अनुसार हेमचन्द्र के पिता वैदिक मत के अनुयायी थे, जबकि उनकी माता का झुकाव जैन धर्म की ओर था।

हेमचन्द्र श्वेताम्बर गुरुओं की सूरि उपाधि वाली एक प्रतिष्ठित आचार्य-परम्परा के महानतम सदस्य माने जाते हैं। इस परम्परा के आचार्यों को उनके गुरुओं से 'सूरि' की उपाधि प्राप्त होती थी। हेमचन्द्र के गुरु श्वेताम्बर-सम्प्रदाय की 'वज्र' नामक शाखा के आचार्य थे। उनका नाम चन्द्रदेवसूरि था। उन्हें देवचन्द्रसूरि के नाम से भी जाना जाता है।

कहा जाता है कि बालक चाङ्गदेव, जब वह अभी आठ वर्ष का मात्र था, एक दिन अपनी माता के साथ मन्दिर की ओर जा रहा था। मार्ग के बीच में ही आचार्य चन्द्रदेवसूरि से उसका साक्षात्कार हो गया। चन्द्रदेवसूरि ने चाङ्गदेव को तीव्र मेधा व विलक्षण सम्भावनाओं से युक्त बालक पाया। उन्हें इस बालक में भवितव्यता के शुभलक्षण स्पष्टरूप से दिखाई पड़े। इन अलौकिक शुभलक्षणों को देखकर देवचन्द्र ने घोषणा की कि यह बालक यदि क्षत्रियकुलोत्पन्न है, तो अवश्यमेव चक्रवर्ती सम्राट् बनेगा, यदि यह ब्राह्मण कुलोत्पन्न है तो महात्मा बनेगा; और यदि इसने दीक्षा ग्रहण कर ली तो अवश्यमेव इस युग में कृतयुग की स्थापना करेगा। स्वाभाविक था कि हेमचन्द्र उस बालक से बहुत प्रभावित हुए। चाङ्गदेव के पिता उस समय परदेश की यात्रा पर थे। आचार्य ने उसकी माता से आग्रह किया कि वे उस बालक को अपने साथ ले जाने की अनुमति प्रदान करें। आचार्य के इस आग्रह पर माता ने अपने उस होनहार पुत्र को सहर्ष उन्हें समर्पित कर दिया। गुरु चन्द्रदेवसूरि का शिष्यत्व ग्रहण करने के पश्चात् उस बालक ने उनके सान्निध्य में रहकर अनेक वर्षों तक विविध शास्त्रों का अध्ययन और मनन किया। अपनी विलक्षण प्रतिभा और कठिन परिश्रम के बल पर उस बालक ने बारह वर्ष के अन्तर्गत ही अनेक विद्याओं में अपार वैदुष्य अर्जित कर लिया। उसने शीघ्र ही एक प्रमुख जैन आचार्य के रूप में विशेष ख्याति अर्जित कर ली; और दुनिया उसे आचार्य हेमचन्द्र व हेमचन्द्रसूरि के नाम से जानने, पहचानने व आदर देने लगी।

हेमचन्द्र को बाल्यावस्था में ही संन्यास की दीक्षा प्रदान कर दी गई थी। आचार्य देवचन्द्र ने चतुर्विध संघ के समक्ष स्तम्भतीर्थ के चैत्यालय में उन्हें संन्यास की दीक्षा दी थी। संन्यासदीक्षा के उपरान्त उनका नाम चाङ्गदेव से बदल कर सोमचन्द्र रख दिया गया। मेरुतुङ्गाचार्य के अनुसार संवत् ११५४ माघशुक्ल १४ शनिवार के दिन संन्यासग्रहण के समय उनकी आयु मात्र नौ वर्ष की थी। सत्रह वर्ष की आयु में उन्हें 'सूरि' की उपाधि प्रदान की गई थी। इस उपाधि से अलंकृत किये जाने के साथ ही उनका नाम भी परिवर्तित कर दिया गया। अब उनका नाम हेमचन्द्र रखा गया। एक किंवदन्ती के अनुसार एक बार सोमचन्द्र ने शक्तिप्रदर्शन हेतु अपने हाथ को आग में रख दिया था। आग में जलता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हुआ सोमचन्द्र का हाथ सोने का बन गया था। इस घटना के उपरान्त ही वे 'हेमचन्द्र' के नाम से प्रसिद्ध हुए थे। 'हेमचन्द्रसूरि' बनने के पश्चात् उन्होंने अपना समग्र जीवन जैनविद्या के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित कर दिया। वे आजीवन ग्रन्थलेखन करते रहे।

अनाहिलपाटन (गुजरात) का राजा सिद्धराज जयसिंह तथा बाद में उसका पुत्र राजा कुमारपाल हेमचन्द्र के वैदुष्य से आत्यधिक प्रभावित थे। सच तो यह है कि ये दोनों ही राजा हेमचन्द्र के परम भक्त बन गए थे। सिद्धराज जयसिंह ने उन्हें अपने राजदरबार का सदस्य मनोनीत किया था। कुमारपालचरित के अनुसार सिद्धराज ने हेमचन्द्रसूरि के सम्मान में राजविहार तथा सिद्धविहार नामक दो मन्दिरों का निर्माण करवाया था। जयसिंह और कुमारपाल के संरक्षण में ही हेमचन्द्र ने अनेक ग्रन्थों की रचना की। उनके राज्याश्रय में रहते हुए वे जीवनपर्यन्त जैनमत का प्रचार करते रहे। डॉ० ए.के. मजूमदार का मानना है कि हेमचन्द्र की प्रेरणा से ही कुमारपाल ने अपने राज्य में मद्यपान, द्यूतक्रीडा तथा जीवहत्या जैसी बुराईयों को दूर किया था। हेमचन्द्र की मृत्यु सन् ११७२ में हुई थी। मृत्यु के समय उनकी आयु चौरासी वर्ष की थी। ऐतिहासिक साक्ष्य बताते हैं कि उनके स्वर्गस्थ होने के छह मास पश्चात् कुमारपाल की मृत्यु हुई थी। परम्परा के अनुसार उनके शरीर के भस्म को इतने लोगों ने अपने मस्तक पर लगाया कि उनके अन्त्येष्टिस्थल में एक महाखड्डु हो गया। यह महाखड्डु बाद में हेमचन्द्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ। आचार्य हेमचन्द्र की समाधि शत्रुञ्जय पर्वत पर स्थित मानी जाती है।

हेमचन्द्र का कृतित्व

जैसा कि पिछली पङ्क्तियों में कहा गया, हेमचन्द्रसूरि विविध विद्याओं और उनकी विविध विधाओं में पारङ्गत एक मनीषी आचार्य थे। उनका व्यक्तित्व असाधारण था। पाश्चात्य विद्वानों ने उन्हें 'ज्ञान का सागर' कहा है। उनका कृतित्व अभूतपूर्व रहा है। उन्होंने व्याकरण के साथ ही छन्द, न्याय और धर्मशास्त्र जैसे विविध विषयों पर अनेक ग्रन्थों की रचना की है। उनकी प्रत्येक रचना में नया चिन्तन, नयी शैली और नया दृष्टिकोण है। डॉ० मुसलगाँवकर के अनुसार 'संस्कृत साहित्य और विक्रमादित्य के इतिहास में जो स्थान कालिदास का है, श्रीहर्ष के दरबार में जो स्थान बाणभट्ट का है, प्राय: वही स्थान बारहवीं शताब्दी में चालूक्यवंशी गुर्जरनरेश सिद्धराज जयसिंह के इतिहास में हेमचन्द्र का है। उनके द्वारा लिखित अनेक ग्रन्थ आज उपलब्ध नहीं हैं।

आचार्य हेमचन्द्र द्वारा रचित ग्रन्थों की सूची निम्न है—

१. अभिधानचिन्तामणि	२. अभिधानचूडामणि
३. छन्दोऽनुशासन	४. छन्दोऽनुशासनवृत्ति
५. नाममाला	६. नाममालाशेष
७. लिंगानुशासन	८. द्व्याश्रयमहाकाव्य
९. शेषसंग्रह	१०. शेषसंग्रहसारोद्धार
११. सिद्धहैमशब्दानुशासन	१२. विभ्रमसूत्र
१३. बालभाष्यव्याकरणसूत्रवृत्ति	१४. बालाबालसूत्रबृहद्वृत्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५. निघण्टुशेष
१६. धातुपाठ
१७. धातुमाला
१८. धातुपारायण
१९. देशीनाममाला
२०. अनेकार्थकोष
२१. अनेकार्थशेष
२२. काव्यानुशासन
२३. उणादिसूत्रवृत्ति

हेमचन्द्रप्रणीत सिद्धहैमशब्दानुशासन

प्रो० कीलहॉर्न ने हैम व्याकरण को मध्यकालीन भारत का सर्वश्रेष्ठ व्याकरण कहा है। हेमचन्द्रसूरि की व्याकरणविषयक प्रमुख रचना 'सिद्धहैमशब्दानुशासन' है। कहा जाता है कि यह ग्रन्थ उन्होंने सिद्धराज जयसिंह के आग्रह पर लिखा था। प्रभावकचरित में इस संबन्ध में एक रोचक प्रसङ्ग मिलता है। उस प्रसङ्ग के अनुसार एक दिन हेमचन्द्र ने राजा सिद्धराज को भोजदेवकृत सरस्वतीकण्ठाभरण नामक व्याकरणग्रन्थ दिखाया। राजा के समक्ष हेमचन्द्र ने उस ग्रन्थ की बहुत प्रशंसा की। यह सुनकर सिद्धराज ने इच्छा व्यक्त की कि हेमचन्द्र स्वयं एक व्याकरणग्रन्थ लिखें। यह ग्रन्थ न केवल सरस्वतीकण्ठाभरण से अपितु अन्य सभी व्याकरणपद्धतियों की तुलना में अधिक उत्कृष्ट, अधिक समग्र व अधिक सरल हो। इस ग्रन्थ में संस्कृत के साथ-साथ प्राकृत भाषा का भी सर्वांग विवेचन हो और इस ग्रन्थ का नाम राजा के नाम पर रखा जाय-

यशो मम तव ख्यातिः पुण्यं च मुनिनायक।
विश्वलोकोपकाराय कुरु व्याकरणं नवम्।।

गुजरात में उन दिनों अध्ययन-अध्यापन में सर्ववर्माविरचित कातन्त्रव्याकरण का प्रचलन था। यह ग्रन्थ स्वयं में समग्र नहीं था। और पाणिनि-व्याकरण के साथ-साथ संस्कृत व्याकरण की अन्य सभी परम्पराएँ बहुत जटिल और बहुत विस्तृत थी। ऐसे में हेमचन्द्र को राजा का उक्त आग्रह अर्थपूर्ण लगा। उन्होंने राजा की प्रार्थना स्वीकार कर ली और एक सर्वांगपूर्ण व्याकरणग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ का नाम हेमचन्द्र ने 'सिद्धहैमशब्दानुशासन' रखा। राजा की इच्छानुसार ग्रन्थ के नाम के आरम्भ में राजा का नाम (सिद्ध) सम्मिलित किया गया। इसके साथ ही ग्रन्थकार ने ग्रन्थ के नाम में अपना नाम (हैम) भी जोड़ दिया। शब्दानुशासन का तात्पर्य व्याकरण से है। इस प्रकार इस ग्रन्थ का पूरा नाम 'सिद्धहैमशब्दानुशासन' रखा गया।

हेमचन्द्र ने 'सिद्धहैमशब्दानुशासन' में संस्कृत के साथ-साथ प्राकृत भाषा के व्याकरण का भी प्रवचन किया गया है। उन्होंने पाणिनि की अष्टाध्यायी का अनुसरण करते हुए अपने 'सिद्धहैमशब्दानुशासन' को आठ अध्यायों में विभाजित किया है। प्रत्येक अध्याय में पाणिनि-अष्टाध्यायी के समान ही चार-चार पाद हैं। ग्रन्थ के प्रारम्भिक सात अध्यायों में संस्कृत भाषा का व्याकरण प्रस्तुत किया गया है। जबकि अन्तिम तथा आठवें अध्याय में प्राकृत भाषा का व्याकरण है। हेमचन्द्र ने प्राकृत भाषा को आर्ष कहा है। द्व्याश्रयमहाकाव्य नामक अपने रचना में हेमचन्द्र ने हैम-व्याकरण के उदाहरणों को सूत्रक्रमनुसार प्रस्तुत किया है। यह महाकाव्य संस्कृत और प्राकृत भाषाओं में लिखा गया है। इसके आदिम २० सर्ग संस्कृत में और अन्त के ८ सर्ग प्राकृत भाषा में निबद्ध हैं। यह ग्रन्थ चालूक्यवंशी राजाओं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की यशोगाथा का वर्णन करता है। इसमें मूलराज से लेकर कुमारपाल तक का जीवनवृत्त दिया गया है। इस प्रकार 'सिद्धहैमशब्दानुशासन' में संस्कृत व्याकरण तथा प्राकृत व्याकरण दोनों के उदाहरण दिये गए हैं। हेमचन्द्र के व्याकरण में वार्तिक नहीं हैं। जैन शाकटायन का अनुसरण करते हुए हेमचन्द्र ने कात्यायन के वार्तिकों के कथ्य को सूत्रों के रूप में ही स्थान प्रदान कर दिया है।

हैम-व्याकरण की रचना शैली कातन्त्र-व्याकरण का विशेष प्रभाव दिखाई देता है। कातन्त्र-व्याकरण की रचनाशैली का ही अनुसरण करते हुए आचार्य हेमचन्द्र अपने शब्दानुशासन को प्रकरणानुसारी बनाया है। इसमें क्रमशः संज्ञा, स्वरसंधि, व्यञ्जनसन्धि, परिभाषा, नाम, कारक, षत्व, णत्व, स्त्रीप्रत्यय, समास, आख्यात, कृदन्त और तद्धित प्रकरण दिये गये हैं। 'सिद्धहैमशब्दानुशासन' के तृतीय अध्याय के दो पादों (द्वितीय एवं तृतीय) तथा चतुर्थ अध्याय में क्रियारूपों का प्रतिपादन किया गया है। हैम-व्याकरण पर जैनेन्द्र तथा शाकटायन का भी बहुत प्रभाव है। हेमचन्द्र ने अन्य संस्कृत व्याकरण-परम्पराओं में पाये जाने वाले दोषों- विस्तार, जटिलता एवं क्रमभङ्ग या अनुवृत्तिबाहुल्य- से अपने व्याकरण को यथासंभव मुक्त रखा है। यद्यपि वे उन सभी परम्पराओं के ऋण को स्वीकारते हैं।

'सिद्धहैमशब्दानुशासन' पर स्वयं हेमचन्द्र ने अनेक स्वोपज्ञवृत्तियाँ लिखी हैं। इन स्वोपज्ञवृत्तियों का नाम लघुवृत्ति, लघुवृत्तिचन्द्रिका, वृहद्वृत्ति, रहस्यवृत्ति तथा बृहन्न्यास है। इन वृत्तियों में उन्होंने अपने से पूर्ववर्ती वैयाकरण आचार्यों के मतों का उनके नामोलेख सहित विवेचन व आलोचन किया है।

आचार्य हेमचन्द्र की इस अमर कृति पर अन्य टीकाकारों ने भी अनेक टीकाएँ लिखी हैं। इन टीकाओं में वृहद्वृत्ति दीपिका, वृहद्वृत्ति-अवचूर्णिका, हेमढुण्डिका तथा न्यायसारसमुद्धार प्रमुख हैं।

हैम धातुपाठ

संस्कृत व्याकरण की लगभाग समस्त परम्पराओं में शब्दनुशासन को पांच अगों में विभाजित करके प्रस्तुत करने प्रणाली रही है। इसी कारण व्याकरणशास्त्र के लिए सभी व्याकरण-सम्प्रदायों में 'पञ्चाङ्ग व्याकरण' शब्द का प्रयोग किया जाता है। इन पांच अङ्गों में से प्रथम को सूत्रपाठ तथा शेष चार अङ्गों को खिलपाठ कहा जाता हैं। खिलपाठ में धातुपाठ, उणादिपाठ, गणपाठ तथा लिङ्गानुशासन सम्मिलित हैं। इन पांच अङ्गों में सूत्रपाठ सर्वाधिक प्रमुख है। यह व्याकरणशास्त्र का मूल भाग है। व्याकरण के अन्य चार अङ्गों को गौण माना जाता है। गौण होने के कारण ही उन्हें खिलपाठ नाम दिया गया है। व्याकरणशास्त्र के अध्ययन-अध्यापन में सूत्रपाठ की तुलना में इनकी उपेक्षा होती रही है। चिरकाल से सूत्रपाठ के परिशिष्ट के रूप में ही इनकी प्रयोग होता रहा है। पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक ने पठन-पाठन में इन महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के अल्प व्यवहार व उपेक्षा पर खिन्नता व्यक्त की है।

जहाँ तक धातुपाठ का प्रश्न है, धातुओं का प्रवचन व्याकरणशास्त्र के किसी भी परम्परा का एक अनिवार्य अङ्ग होता है। संस्कृत शब्दों की व्याकृति करने वाली समस्त व्याकरणपद्धतियों में धातुओं के प्रवचन का एक व्यवस्थित व प्रणालीबद्ध प्रयास दृष्टिगत होता है। धातुओं के प्रवचन के मूल व आद्य रूप को संस्कृत व्याकरणशास्त्र के विभिन्न सम्प्रदायों में धातुपाठ के रूप में जाना जाता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धातुओं का सग्रह करके उनके क्रियारूपों की सरल, समग्र व सुनियोजित निष्पत्ति के लिए व्याकरणतन्त्र के अनेक प्रवकताओं ने अपने-अपने शब्दानुशासन में उन धातुओं की एक विशेष क्रम में जो नियोजना की है उसे ही धातुपाठ कहते हैं।

यद्यपि ऐसा माना जा सकता है कि संस्कृत के सभी व्याकरणतन्त्रों में धातुपाठ का प्रवचन अवश्यमेव किया गया होगा, परन्तु आज पाणिनि-धातुपाठ के अतिरिक्त चान्द्र, जैनेन्द्र, काशकृत्स्न, कातन्त्र, शाकटायन और कविकल्पद्रुम- यह अन्य सात धातुपाठ ही उपलब्ध होते हैं। यद्यपि चान्द्र आदि पाणिनि-उत्तरवर्ती धातुपाठों की अपनी-अपनी मौलिकताएँ व अपनी विशेषताएँ हैं, पुनरपि हम निःशङ्क होकर कह सकते हैं कि उपलब्ध सभी धातुपाठों का प्रवचन पूर्णतया पाणिनि-धातुपाठ को आधार बनाकर ही किया गया है। पाणिनि-धातुपाठ सभी धातुपाठों का उत्स है। हैमधातु पाठ में धातुओं को अकारादिक्रम से रखा गया है। यहाँ तक की अन्तर्गणीय धातुओं को भी अकारादिक्रम से रखा गया है। प्रो० पल्सुले ने इस अर्थ में हैमधातु पाठ को सर्वाधिक वैज्ञानिक धातुपाठ माना है। अकारादिक्रम के सम्बन्ध में एक विशेष बात यह है कि हेमचन्द्र ने 'क्ष' को स्वतन्त्र वर्ण मानकर क्षकारांत धातुओं को हकारांत धातुओं के बाद पढ़ा है। इस धातुपाठ में अनिट् धातुओं को द्योतित करने के लिए धातुओं में अनुबन्ध के रूप में अनुस्वार रखा गया है।

हैम धातुपाठ की व्याख्याएँ

हेमचन्द्र के धातुपाठ पर कतिपय टीकाएँ भी लिखी गई हैं। उन टीकाओं में हैम धातुओं, उनके अर्थों व धातुरूपों की निष्पतिप्रक्रिया पर विद्वत्तापूर्ण टिप्पणियाँ की गई हैं। इन टीकाओं में सर्वप्रथम हेमचन्द्र की स्वोपज्ञ टीका है। हेमचन्द्र ने स्वयं अपने धातुपाठ पर 'धातुपारायण' नामक एक व्याख्या लिखी है। यह व्याख्या आकार में विशाल है। इसमें ५६०० श्लोक हैं। पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक के अनुसार हेमचन्द्र ने धातुपारायण का एक संक्षिप्त संस्करण भी तैयार किया था। इस संस्करण को 'लघुधातुपारायण' नाम दिया जा सकता है।

धातुपारायण पर 'हैमधातुपारायणटिप्पण' नामक एक अन्य टीका भी प्राप्त होती है। पण्डित मीमांसक के अनुसार यह व्याख्या संवत् १३१६ में लिखी गई है। इस टीका के लेखक का नाम ज्ञात नहीं है।

हैम धातुपाठ पर 'क्रियारत्नसमुच्चय' नाम से एक अन्य टीका भी मिलती है। यह टीका एक श्रेष्ठ रचना है। इसके रचयिता का नाम गुणरत्नसूरि है। पण्डित मीमांसक ने इसके लेखन का समय विक्रम संवत् १४६६ माना है। ग्रन्थकार ने इसमें हैमधातुपारायण की पद्धति का ही अनुसरण किया है। टीकाकार अनेक स्थलों पर धातुसम्बन्धी प्राचीन मतों का विस्तारपूर्वक विवेचन करते चलते हैं।

हैम धातुपाठ पर 'अवचूरी' नामक एक अन्य टीका भी देखने को मिलती है। इस टीका के लेखक जयवीरगणि हैं। पण्डित मीमांसक के अनुसार 'अवचूरी' टीका का निर्माणकाल वि० सं० १५०१ है। इसके अतिरिक्त हैम धातुपाठ पर 'आख्यातवृत्ति' नामक टीका भी मिलती है। इस टीका के लेखक का नाम अज्ञात है।

यहाँ यह वर्णन करना भी आवश्यक है कि हैम धातुपाठ पर श्रीहर्षगणि नामक किसी विद्वान् ने एक पद्यबद्ध व्याख्या भी लिखी थी। इस ग्रन्थ का नाम कविकल्पद्रुम है। इसमें क्रियारूपों की निष्पत्ति से सम्बन्धित विविध पक्षों पर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विस्तृत विवेचना प्रस्तुत की गई है। इसमें ११ पल्लव हैं। प्रथम पल्लव में धातुस्थ अनुबन्धों पर विचार किया गया है। द्वितीय से दशम पल्लव तक नौ गणों का संग्रह है जबकि ग्यारहवें पल्लव में सौत्र धातुएँ दी गई हैं।

हैमधातुपाठ की विशेषताएँ

श्री आर.एस. सैनी ने अपनी पुस्तक 'पोस्ट पाणिनीयन सिस्टम्स ऑफ संस्कृत ग्रामर' में हैमव्याकरण के धातुपाठ की कुछ प्रमुख विशेषताओं पर एक विवरण दिया है। नीचे की पंक्तियों में उस विवरण का सार प्रस्तुत है—

जहाँ तक धातुरूपों का प्रश्न है, आचार्य हेमचन्द्र अपने पूर्ववर्ती सर्ववर्मा के कातन्त्र व्याकरण से प्रभावित प्रतीत होते हैं। हेमचन्द्र ने अपने समय की समस्त धातुपाठों का गम्भीर अध्ययन किया। उन अनुभवों को आधार बनाकर के ही, उनके गुण-दोषों की यथासम्भव मीमांसा करके ही, उन्होनें अपने धातुपाठ का स्वरूप निर्धारित किया। यही कारण है कि वे अपने धातुपाठ को अन्य धातुपाठों में पाये जाने वाले दोषों और न्यूनताओं से मुक्त रखने में सफल हो पाये हैं।

हेमचन्द्र ने क्रियारूपों की सिद्धि प्रस्तुत करने से पूर्व वृद्धि और गुण की अवधारणाओं को स्पष्ट किया है। क्योंकि इन दोनों ही अवधारणाओं का धातुओं के स्वरों में परिवर्तन के संबन्ध में बहुत महत्त्व था। उन्होनें क्रियारूपों को सरल और सुबोध बनाने के उद्देश्य से अपने धातुपाठ को धातुओं के स्वरूप के अनुसार अलग-अलग भागों में विभक्त किया है। उन्होंने धातुओं को तीन प्रमुख विभागों में विभक्त किया है। पहले विभाग में वे धातुएँ सम्मिलित हैं जिनका गणों में वर्गीकरण किया गया है। दूसरे विभाग में वे धातुएँ सम्मिलित हैं जो नामपदों में प्रत्यय लगाकर क्रियारूप बनाये जाते हैं। ऐसी धातुओं को संस्कृत व्याकरण के लगभग सभी सम्प्रदायों में नामधातु कहा गया है। तीसरे विभाग में केवल वही धातुएँ सम्मिलित हैं जिनका प्रयोग हैमव्याकरण में किया गया है और लौकिक संस्कृत में जिनका कहीं प्रयोग नहीं होता है। प्रथम विभाग की धातुओं को हेमचन्द्र ने नौ गणों में विभाजित किया है। गणों का यह विभाजन पाणिनिकृत धातुपाठ से भिन्न है, क्योंकि पाणिनि ने अपने धातुपाठ में धातुओं को दस गणों में विभाजित किया है। हेमचन्द्र ने कातन्त्र और काशकृत्स्न धातुपाठ का अनुसरण करते हुए पाणिनि के जुहोत्यादिगण को अदादिगण का ही एक उपविभाग माना है। हेमचन्द्र ने धातुओं को जिन नौ गणों में विभाजित किया है वे निम्न हैं—

१. अदादिगण

२. दिवादिगण

३. स्वादिगण

४. तुदादिगण

५. रुधादिगण

६. तनादिगण

७. क्र्यादिगण

८. चुरादिगण

९. भ्वादिगण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हेमचन्द्र के धातुपाठ की एक अन्य प्रमुख विशेषता यह है कि उन्होंने धातुपाठ में आए हुए प्रत्येक धातु के अन्त में एक अनुबन्ध रखा है। उस अनुबन्ध को देखकर धातुपाठ का अध्येता अच्छी तरह से जान लेता है कि कौन सी धातु किस गण की है। हेमचन्द्र ने ऐसे आठ अनुबन्धों का प्रयोग किया है। ये अनुबन्ध व्यंजन के रूप में ही है। आठ अनुबन्ध आठ भिन्न-भिन्न गणों को इंगित करते हैं। एक गण की धातुओं में उन्होंने कोई अनुबन्ध नहीं पढ़ा है। ये सभी धातुएँ भ्वादिगण की धातुएँ हैं। पाणिनि के धातुपाठ में भ्वादिगण प्रथम गण है जबकि हेमचन्द्र के धातुपाठ में यह अन्तिम गण है। हेमचन्द्र के द्वारा उक्त आठ अनुबन्ध निम्न हैं—

अदादयः कानुबन्धाश्चानुबन्धा दिवादयः।

स्वादयष्टानुबन्धास्तानुबन्धास्तुदादयः।।

रुधादयः पानुबन्धाः यानुबन्धास्तनादयः।

क्र्यादयः शानुबन्धा णानुबन्धाश्चुरादयः।।

– हैमलघुप्रक्रिया

अर्थात् -

१. जिन धातुओं के अन्त में क् अनुबन्ध पढ़ा गया है वे धातुएँ अदादिगण की धातुएँ हैं।

२. जिन धातुओं के अन्त में च् अनुबन्ध पढ़ा गया है वे दिवादिगण की धातुएँ हैं।

३. जिन धातुओं के अन्त में ट् अनुबन्ध में पढ़ा गया है वे धातुएँ स्वादिगण की हैं।

४. जिन धातुओं के अन्त में त् अनुबन्ध पढ़ा गया है, वे तुदादिगण की धातुएँ हैं।

५. जिन धातुओं के अन्त में प् अनुबन्ध में पढ़ा गया है वे रुधादिगण की धातुएँ हैं।

६. जिन धातुओं के अन्त में य् अनुबन्ध में पढ़ा गया है वे धातुएँ तनादिगण की हैं।

७. जिन धातुओं के अन्त में स् अनुबन्ध में पढ़ा गया है वे धातुएँ क्रियादिगण की हैं।

८. जिन धातुओं के अन्त में न् अनुबन्ध में पढ़ा गया है वे धातुएँ चुरादिगण की हैं।

यह हेमचन्द्राचार्य की नूतन परिकल्पना है। संस्कृत व्याकरण के अन्य धातुपाठों में यह परिकल्पना कहीं भी दिखाई नहीं देती।

धातुरूपों की निष्पत्ति-प्रक्रिया में हेमचन्द्र कातन्त्र व्याकरण के ऋणी हैं। कातन्त्र व्याकरण की शैली में ही उन्होंने पाणिनिविहित लट् आदि लकारों के स्थान में 'वर्तमान' आदि अन्वर्थ संज्ञाओं का विधान किया है। वे अपनी व्याकरण में लट् लकार के लिए 'वर्तमान', लिट् लकार के लिए 'परोक्ष', लुट् लकार के लिए 'श्वस्तनी', लट् लकार के लिए 'भविष्यन्ती', लोट् लकार के लिए 'पंचमी', लङ् लकार के लिए 'ह्यस्तनी', विधिलिङ् के लिए 'सप्तमी', आशीर्लिङ् के लिए 'आशीः', तथा लृङ् लकार के लिए 'क्रियातिपत्ति' शब्द का प्रयोग करते हैं। पाणिनि द्वारा विहित लेट् लकार के वर्ण्यविषय को हैम-व्याकरण में छोड़ दिया गया है। क्योंकि लेट् लकार का विषय मात्र वैदिक भाषा है। पारिभाषिक शब्दों के रूप में लट् आदि के लिए 'वर्तमान' आदि का शब्दों या संज्ञाओं का प्रयोग इनके अर्थबोध को अधिक सुकर व अधिक सुस्पष्ट बना देता है। पाणिनि को अष्टाध्यायी में लकार आदि के अर्थों का प्रतिपादन करने के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लिए अलग से सूत्रों की रचना करनी पड़ती है। जबकि लौकिक व्यवहार के शब्द होने के कारण व अन्वर्थ होने के कारण हैमव्याकरण में वर्तमान, ह्यस्तनी आदि शब्दों को परिभाषित करना आवश्यक नहीं होता।

धातुरूपों की निष्पत्ति-प्रक्रिया के सम्बन्ध में हेमचन्द्र की एक अन्य विशेषता भी है। पाणिनि ने अष्टाध्यायी में प्रथमत: दस लकारों का विधान किया है तथा बाद में उनके स्थान पर तिप्, तस् आदि १८ आदेशों का विधान किया है। इन १८ आदेशों में से प्रथम ९ आदेश परस्मैपदी धातुओं के साथ तथा बाद के ९ आदेश आत्मनेपदी धातुओं के साथ जुड़ते हैं। प्रत्येक लकार में तिप् आदि प्रत्ययों का स्वरूप परिवर्तित होता चला जाता है। पाणिनि को भिन्न-भिन्न लकारों में घटित होने वाले इन परिवर्तनों की व्यवस्था के लिए भिन्न-भिन्न सूत्रों की रचना करनी पड़ती है। आचार्य हेमचन्द्र ने इस लम्बी तथा जटिल प्रक्रिया से बचने के लिए वर्तमान आदि प्रत्येक लकार के स्थान में भिन्न-भिन्न १८ प्रत्ययों का विधान किया। इस तरह वे पाणिनि के दस लकारों के स्थान में १८० प्रत्ययों की व्यवस्था करते हैं। वर्तमान आदि में विहित प्रत्येक १८ प्रत्ययों में आदि के ९ को परस्मैपद और शेष ९ को आत्मनेपद नाम दिया गया है।

हेमचन्द्र ने शतृ और क्वसु प्रत्ययों को परस्मैपदी धातुओं के साथ जोड़ने का विधान किया है। उन्होंने धातुओं से आत्मनेपदी और परस्मैपदी प्रत्ययों की व्यवस्था के लिए पाणिनि की पद्धति का ही अनुसरण किया है। नौ गणों की धातुओं से, यदि वे इदित् व नित् हैं तो अथवा यदि क्रिया का फल कर्त्ता को मिल रहा है तो आत्मनेपदी धातुओं का विधान किया गया है। इगित् धातुओं से आत्मनेपदी तथा परस्मैपदी दोनों प्रत्यय आते है। ऐसी धातुओं को हेमचन्द्र ने उभयपदी कहा है। पाणिनि के समान ही हेमचन्द्र का नियमन है कि जो धातुएँ उक्त दो प्रकार की धातुओं से भिन्न हैं, उनसे परस्मैपदी प्रत्यय हों। पाणिनिव्याकरण के समान ही हैमव्याकरण में भी धातुरूपों की निष्पत्ति-प्रक्रिया में विकरणों की व्यवस्था की गई है। इन विकरणों से काल, वाच्य आदि का प्रतिपादन होता है। पाणिनि के शप् के स्थान पर हेमचन्द्र ने शव् प्रत्यय का विधान किया है। इस प्रत्यय का विधान धातुसामान्य से किया गया है।

अदादिगण की धातुओं से शव् विकरण नहीं होता है। दिवादि धातुओं से श्य, स्वादि धातुओं से श्नु, तुदादि धातुओं से श, रुदादि धातुओं से श्ना, तनादि धातुओं से उ, क्रियादि धातुओं से श्नम् तथा चुरादिगणपठित धातुओं से णिच् प्रत्यय का विधान किया गया है। इन प्रत्ययों को पारिभाषिक शब्द में विकरण कहा जाता है। इन विकरणों में स्थित अनुबन्धों के गुण आदि प्रयोजन हैं। प्रेरणा अर्थ में संस्कृत की सभी धातुओं का स्वरूप परिवर्तित हो जाता है। पाणिनिविहित णिच् के स्थान पर हेमचन्द्र ने प्रेरणा अर्थ में धातुमात्र से णिग् प्रत्यय का विधान किया है। णिग् प्रत्यय का णित्-करण धातुओं में अ, ई और उ वर्णों में वृद्धि के निमित्त किया गया है। प्रत्यय का गित्-करण यह प्रतिपादित करने के लिए है कि णिजन्त धातुओं का प्रयोग आत्मनेपदी तथा परस्मैपदी दोनों ही धातुओं में किया जा सकता है। जब णिजन्त धातुओं से परस्मैपदी प्रत्यय जोड़े जाते हैं तो धातु सकर्मक होगा। णिजन्त धातुओं का प्रयोग सभी कालों तथा लकारों में होता है। इच्छा के अर्थ में पाणिनि के समान हेमचन्द्र आचार्य भी सन् प्रत्यय का विधान करते हैं। और सन् प्रत्यय की स्थिति में धातु को द्वित्व हो जाता है। शुद्ध कर्तृप्रक्रिया के समान सनन्त धातुओं से भी पूर्वोक्त विकरण हो जाते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रिया के पौन:पुन्य अर्थ में हेमचन्द्र भी यङ् प्रत्यय का विधान करते हैं। यङ् में ङ् का अनुबन्ध आत्मनेपद के लिए है। यङ् में भी सन् के समान धातुओं को द्वित्व हो जाता है। पाणिनिव्याकरण के समान हैमव्याकरण में भी यङ्लुगन्त धातुओं की निष्पत्ति-प्रक्रिया प्रदर्शित की गई है। यह भी क्रिया के पौन:पुन्य अर्थ को ही प्रतिपादित करता है। यङ्लुगन्त धातुओं से सर्वदा परस्मैपदी प्रत्यय ही होते हैं। हेमचन्द्र ने नामधातुओं का भी निरूपण किया है। नामधातुओं में काम्य, क्यङ्, णिच्, क्विप्, तथा क्यन् प्रत्ययों का विधान किया गया है। हेमचन्द्र ने ह्यस्तनी, अद्यतनी, तथा क्रियातिपत्ति की स्थिति में धातु के आदि में अट् आगम का विधान किया है। पाणिनि के समान हेमचन्द्र लुङ् लकार में च्लि प्रत्यय करके उसके स्थान में अङ्, क्स्, चङ् तथा चिण् आदेश का विधान नहीं करते हैं। अपितु उन्होंने सीधे ही सिच् आदि प्रत्ययों की व्यवस्था की है। हैमव्याकरण के चतुर्थ अध्याय के अन्तिम पाद में धातुओं में होने वाले परिवर्तनों तथा धातु के स्थान में होने वाले आदेशों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। धातुरूपों की निष्पत्ति प्रक्रिया में उक्त विवरण अतिमहत्त्वपूर्ण है। हेमचन्द्र ने अपने व्याकरणतन्त्र में धातुओं में इट्-अनिट् की व्यवस्था के लिये भी एक विस्तृत प्रकरण निर्धारित किया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीमज्जिनपुङ्गवेभ्यो नम:

सकलस्वपरसमयपारावारपारीण-तीर्थसंरक्षणप्रवण-विद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधक-तपोगच्छाधिपति-भट्टारकाचार्यवर्य-परमगुरुश्रीमद्विजयनेमिसूरिभगवद्भ्यो नम:

श्रीमत्तपोगणगगनाङ्गणगगनमणि-सार्वसार्वज्ञशासनसार्वभौम-तीर्थरक्षणपरायण-कोविदकुलालङ्कार-अखण्डविजयश्रीमद्गुरुराज-विजयनेमिसूरीश्वर-चरणारविन्दचञ्चरीकायमाणान्तिषन्मुनिलावण्यविजयप्रणीतो

धातुरत्नाकर:

लोकालोकावलोके विलसति विमला केवलार्चिर्यदीया
देवादेवाधिदेवैररचि च चरणार्चा च नित्यं यदीया।
गावो नावो नवीना घनभवजलधेस्तारणेऽरं यदीया
आप्ता: प्राप्ता: शिवं ते जिनवरप्रवरा नो नयन्तां शमालिम्॥१॥

लब्धानेकार्थसार्थो मकरधिमधरीकृत्य य: सत्तयास्ते
उद्यत्कल्लोलमालाऽपि जडपरिणतिर्गाहते यश्च नित्यम्।
सद्वंशो वारिराशौ सदमृतसरणिं संसृतौ संसृतोऽस्तु
पोत: श्रीनाभिसूत: विलसनवसति: धीवराणां नराणाम्॥२॥

भव्यग्रामानुशासी चरणजयकृतौ सिंहकल्पश्च शास्त्र-
विद्यादक्ष: प्रदाता प्रतिदिनरजनि क्षेत्रभृद्राज्यभीते:।
यो नित्यं दान्तराजैर्विहरति च सदाचारलब्धस्वरूप:
श्रीशान्तिं तं क्षमाभृन्निकर उभयतश्चक्रिणं नन्नमीमि॥३॥

विस्फूर्जत्स्फीतवाचो नरसुरकुरुह: प्राणिनां वाञ्छितार्थ-
दाने मीन: सदावस्थितिभृत उदरे शान्तिसिन्धोर्विहाय।
कान्तां भौगीञ्च राजीं मदनमदजितस्तीर्थराज: प्रभास:
आधिव्याधिप्रहीणं शमधि विदधतामक्षरस्थानमिज्यम्॥४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(उपजातिः)

जडप्रधानोऽपरभङ्गगोऽपि सपङ्कजातः सगरान्वयोऽपि।
नीचः प्रकृत्या मृततां गतोऽपि सप्ताम्बुराशिप्रकरः पृथिव्याम्॥५॥
यच्छत्रसप्तस्फटशालिनागाधिराजदम्भात्कृतसेवनातः।
महाशयत्वञ्च जगाम नित्यं पायादपायाज्जिनपः स पार्श्वः॥६॥ युग्मम्॥

(शार्दूलविक्रीडितम्)

यस्माद् बोधति चेदकं कुवलयं यस्तारकाल्याञ्चितः
सर्वाशासुखसम्पदुल्लसनकृन्नित्यं सुधामाश्रयन्।
यश्चञ्चद्धरिणाङ्कितः शमनिधिः सद्वृत्तसौभाग्यभूः
वन्देऽज्ञानतमोऽपनोदनकृते वीरं तमीशं सदा॥७॥

(शिखरिणी)

लसन्ती या नित्यं सरससुमनोमानसमिता
जलौल्लासी पक्षैः विलसितमरुद्भिः शुचितरैः।
कलध्वाना दीव्यद्गतिरुपनता मौक्तिकफलैः
सदा जैनी वाणी सुजयति मरालीव नितराम्॥८॥

(शार्दूलविक्रीडितम्)

पूज्यः श्रीयुतवृद्धिचन्द्र इह स प्रद्योतते पुण्यकृ-
च्चाकोरामदवृद्धिचन्द्र इव यश्चन्द्रश्च शान्त्याकरः।
सिद्धान्तोदधिवृद्धिचन्द्र उपमातीतः सतां हृत्सरः-
सम्वित्कैरववृद्धिचन्द्र उदिते पापातपे वारिदः॥९॥

सौवर्णाद्रिरिव क्षमाधरवरो मध्यस्थभावं गतो
भक्तिभ्राजितवैबुधाश्रितपदः काष्ठान्तप्रापिस्थितिः।
जैनेन्द्रागमजातचारुविभवः कल्याणरूपश्च यः
भव्यानां स तनोतु मङ्गलततिं श्रीनेमिसूरिप्रभुः॥१०॥

संसारार्णवपारप्रापणविधौ पोतायमानो नृणा-
मत्युद्भासितभिक्षुभावगरिमा विज्ञाततन्त्रावलिः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीमन्नेमिगुरुः प्रभूतकरणः सोऽयं सदानन्दनं
दद्यात्सद्गुणशालि चामृतपदं लावण्यसन्मन्दिरम्।।११।।

(स्रग्धरा)

कम्रालङ्काररम्या रुचिरतरपदन्याससौम्या प्रसन्ना
नानाश्लेषातिदक्षा स्वमधुरतया कर्णयुग्मापहारी।
विस्फूर्जत्स्फीतभावा नवरसहृदया चारुवर्णाभिरामा
कान्तेवासौ नवीना भुवि जयतितरां भारती नेमिसूरेः।।१२।।

(उपजातिः)

यः सर्वदारोचितचित्तवृत्ति-स्तथाप्यदारोचितचित्तवृत्तिः।
सिद्धेषु रागान्वितचित्तवृत्तिस्तथापि सिद्धान्तसुचित्तवृत्तिः।।१३।।
समाश्रितोऽधामतया सदापि श्रितः स्फुरद्धामतया तथापि।
सदर्पणो दर्पणारिक्तकोऽपि सनेमिसूरिर्जयताज्जगत्याम्।।१४।।

(अनुष्टुप्)

वर्णवर्गान्तिमत्त्वेऽपि निजनामावलम्बिनौ।
नमौ गुणश्रिया योज्यस्पर्शभावं नयन्ति ये।।१५।।
तेषां श्रीनेमिसूरीणां गुरूणां पादसेवया।
नायन्ति किमु दक्षत्वं मादृशा जडशेखराः।।१६।।
लावण्यविजयेनाथ तेषामन्तिषदा मया।
प्रणुन्नेन कृतः सर्वधातुरूपदिदृक्षुभिः।।१७।।
चित्रितश्चित्ररूपैश्च श्रितो हेमादिलक्षणैः।
चुराद्यन्तगणैर्गुप्तः प्रक्रियाभिः परिष्कृतः।।१८।।
दधातु धातुरत्नानामाकरो बहुधातुषम्।
अवित्तचित्तवृत्तिषु मयि च स्मृतिमद्भुताम्।।१९।।

इह हि तावन्निजनिर्मितामितकर्ममर्मोपनीतच्युतिप्रसूतिपानीयपरिप्लाविते अस्ताघभवनिर्माणनिपुणकषाय-पातालपरिष्कृते विशिष्टभ्रान्तिसम्पादनप्रौढप्रतापमोहावर्त्तपल्लविते संख्यातीतव्यसनजलचरदुर्ललिते निरन्तरप्रसृत्वरा-ज्ञानानिलेरितसंयोगवियोगादिवीचिनिचयोपचिते आधिव्याधिवडवानलकरालिते भीमे भवपाथोधौ निमज्जतां दुःखोद्विग्नमनसां सुखैकलिप्सूनां तनुभृतां तस्मात्सन्तरणैकप्रवणम् उपशमादिसुबन्धनबद्धसम्यग्दर्शनकूपकाभिरामम् अतुलज्ञानमयकर्णधाराध्यासितप्रशस्तदेशं वरसंवरावृतविवरवारं दुस्तपतपोऽनिलाहितपटुतरवेगं महार्घशीलाङ्गरत्नराजि-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विराजितमतिनिपुणायव्ययपूर्वकप्रवर्तनशीलवाचंयमवणिग्वरविभूषितममन्दानन्दसन्दोहनिधाननिर्वाणपुरप्रापणैकप्रवणं चारित्रमयपवित्रप्रवहणमिति सर्वजनसिद्धम्।

एतच्चारित्रमयपवित्रप्रवहणमपि पदपदार्थज्ञानद्वारोत्पन्नहेयोपादेयज्ञानपूर्वकम्। पदपदार्थज्ञानमपि नयनिक्षेपादिभिरधिगमोपायैः परमार्थतः, व्यवहारतस्तु प्रकृत्यादिभिः।। ताश्च प्रकृतयः पूर्वाचार्यप्रसिद्धा एव सुखग्रहण-स्मरणकार्यसंसिद्धये विशिष्टानुबन्धसम्बन्धक्रमा अर्थसहिताः प्रस्तूयन्ते। तत्र यद्यपि नामधातुपदभेदाद् "राजा जयति पूर्वाह्णेतरां पचतितराम्" इत्यादौ त्रेधात्प्रकृतिस्तथापि नामपदरूपं यत्प्रकृतिद्वयं तस्य धातुमूलत्वाद् धातुप्रकृतिरेवैका प्रधानम्। तथा ये शब्दानामव्युत्पत्तिपक्षमाश्रयन्ति तेषामपि व्युत्पत्तिपक्षानुसारेणैव शब्दस्वरूपनिर्णय इति तत्रापि धातुमूलत्वमबाधितमेव। धातुप्रकृतिश्च द्वेधा शुद्धा प्रत्ययान्ता च। शुद्धा 'भू' इत्यादि, प्रत्ययान्ता च "गोपाय कामि ऋतीय जुगुप्स कण्डूय बोभूय बोभू चोरि भावि बुभूष" इत्यादिरूपा। एषा प्रत्ययान्तापि प्रकृतिः शुद्धमूलैवेति शुद्धैवात्रादावुदाह्रियन्ते।

१ भू सत्तायाम्। भू इत्यविभक्तिको निर्देशः। सकारान्तरकारान्तभ्रमापाकरणार्थम्। न च धातुत्वेन नामत्वाभावात्कथं भूः इति प्रयोगः सम्भवेदिति शंक्यम्। नायं धातुरपि तु भवति इत्यादिषु योज्यमानभूधातोरनुकरणं तस्मात्तस्मात्सम्भवति विभक्तिः। न च तर्हि निरुक्तशङ्कोपायान्तरेणापनेया अपि तु सविभक्तिक एव प्रयोगः कर्त्तव्यः, निर्विभक्तिकप्रयोगस्य शिष्टासम्मतत्वादिति वाच्यम्, यदा अनुकार्यानुकरणयोः स्याद्वादाश्रयेणाभेदविवक्षा तदार्थत्त्वाभावान्न भवति नामसंज्ञा इति तत्कल्पे निर्विभक्तिक एव प्रयोगः शिष्टसम्मतो, यदा च भेदविवक्षा तदा अनुकार्येणार्थेनार्थवत्त्वात् नामसंज्ञा भवत्येव इति तत्र पक्षे सविभक्तिक एव प्रयोगः शिष्टसम्मतः। प्रस्तुते च प्रथमकल्पादरणात्सर्वशङ्का निरस्ता।। एवं सर्वत्राप्यूह्यम्। भू इत्येषा प्रकृतिः सत्तायां वर्त्तते। अभूत् भूत इत्यादौ ऊकारस्य प्रयोगित्वदर्शनात् "अप्रयोगीत्" इति इत्संज्ञा न भवति। एवमन्यत्रापि। वर्णसमाम्नायक्रमेण स्वरान्तव्यञ्जनान्तधातूपदेशप्रतिज्ञानात् "पां पाने" इत्यादेः प्रथमं निर्देशे प्राप्तेऽपि वृद्धसमयानुवर्त्तनार्थं प्रथममस्य पाठः। यदाहुर्वृद्धाः- 'भ्वादयः धातवः' इति मङ्गलार्थमपि, यदाह- माङ्गलिकत्वात् प्रथममस्य प्रयोग इति, माङ्गलिकत्वञ्चास्य वृद्धादवसेयम्, एवमदादिगणेष्वपि वृद्धसमयानुवर्त्तनमदिप्रभृतीनां प्राग्निर्देशे प्रयोजनमभ्यूह्यम्। ननु सत्तेति कोऽर्थ इति चेदुच्यते, सतो भावः सत्ता, अस्तित्वं, द्रव्यधर्मो धात्वर्थसामान्यमिति यावत्। यदाहुः—

सा नित्या सा महानात्मा तामाहुस्त्वतलादयः।
प्राप्तक्रमा विशेषेषु क्रिया सैवाभिधीयते।।

तां प्रातिपदिकार्थञ्च धात्वर्थं च प्रचक्षते। इति सेति सत्ता। अपि च-धात्वर्थः केवलः शुद्धो भाव इत्यभिधीयते। तथा यत्रान्यत्क्रियापदं न श्रूयते तत्रास्तीति भवन्तीपरं प्रयोक्तव्यमिति। अत्राह- ननु भुवः सत्तावाचित्वे धातुत्वमनुपपन्नम्। क्रियार्थो हि धातुः, क्रिया च स्पन्दनरूपा। सत्ता तु द्रव्यादिषु सत्सदित्यनुवृत्तप्रत्ययाभिधानलिङ्गा स्पन्दरूपा न भवति। नैष दोषः, यथा "जानाति पश्यति स्मरति श्रद्धत्ते संयुज्यते समवैति वियुज्यते नश्यति श्वेतते" इत्यादीनां ज्ञानदर्शनस्मरणश्रद्धानसंयोगसमवायवियोगाविनाशवर्णादयो द्रव्यगुणा अपरिस्पन्दात्मका अपि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आख्यातप्रकृतिवाच्याः सन्तः क्रियाव्यपदेशमर्हन्ति। एवं सत्तापि द्रव्यधर्मो धातुवाच्यतामापाद्यमाना क्रियाव्यपदेशं लप्स्यते। मणिमुकुरकृपाणादिज्ञापकवैचित्र्याच्चैकरूपस्यापि मुखादेर्नानात्वोपलब्धेर्धातुवाच्यैव सत्ता क्रियात्वमास्कन्दति न प्रातिपदिकवाच्येति नाव्यवस्था।

किञ्च पाकादिक्रियाणां त्रैकाल्याभिव्यञ्जकत्वमुपलब्धं पचति पक्ष्यति अपाक्षीत् जानाति ज्ञास्यति अज्ञासीत् इत्यादि। तद्वेहापि भवति भविष्यति अभूदिति धातुवाच्यायां सत्तायामुपलभ्यमानं क्रियात्वं व्यवस्थापयति। अत एव वृक्ष इत्यादिप्रातिपदिकवाच्यायाः सत्ताया न क्रियात्वम्। एवं स्थिते क्रियावाचित्वमात्रमाख्यातुं सत्तोपात्ता। अर्थान्तराण्यपि अनयोपलक्ष्यन्ते। यदाहुः—

निपाताश्चोपसर्गाश्च धातवश्चेति ते त्रयः।
अनेकार्थाः स्मृताः सर्वे पाठस्तेषां निदर्शनम्।। इति

तथा च भूरयं क्वचिदस्त्यर्थे वर्त्तते। यथा बहूनि धनान्यस्य भवति सन्तीत्यर्थः क्वाप्यभूतप्रादुर्भावे। यथा वचाक्षीरभोजिन्याः श्रुतधरः पुत्रो भवति जायते इत्यर्थः। क्वचिदभूततद्भावाख्ये सम्पद्यर्थे। यथा अशुक्लः शुक्लो भवति सम्पद्यते इत्यर्थः। एवमुपसर्गावशाद्य धातोरनेकोऽर्थः प्रकाशते। यथा प्रभवतीति स्वाम्यर्थः प्रथमतः उपलम्भश्च। पराभवति परिभवति अभिभवतीति तिरस्कारः। सम्भवतीति जन्मार्थः प्रमाणानतिरेकेण धारणञ्च। अनुभवतीति संवेदनम्। विभवतीति व्याप्तिः। आभवतीति भागागतिः। उद्भवतीति उद्भेदः प्रतिभवतीति लग्नकत्वमिति अथवार्थान्तरेष्वपि क्रिया सामान्यरूपा सत्ताऽनुवर्त्तते एवेति सत्ताया एवोपादानं कृतम्। सत्ताव्यतिरेकीणि ह्यर्थान्तराणि खरविषाणायमानानि स्युः। षड्भावविकारा इति वचनाद्य भावः सत्तासामान्यरूपा क्रियेत्यवसीयते। यदाहुः–जायते अस्ति विपरिणमते वर्धते अपक्षीयते विनश्यतीति षड् भावविकारा इति। अपि च सर्वेऽपि खलु धातवस्तेन तेनोपाधिना सत्तामेवावच्छिद्यावच्छिद्य विषयीकुर्वन्तीति सा क्रिया सामान्यमित्युच्यते। तथा च "क्रियार्थो धातुः" इति भुवो धातुत्वमित्यलं पल्लवितेन।

♣♣♣

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भू सत्तायाम्

वर्त्तमाना (लट्) Present.

भवति	भवतः	भवन्ति
भवसि	भवथः	भवथ
भवामि	भवावः	भवामः

सप्तमी (विध्यर्थ) (लिङ्) Potential.

भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
भवेः	भवेतम्	भवेत
भवेयम्	भवेव	भवेम

पञ्चमी (आज्ञार्थ) (लोट्) Imperative.

भवतु/भवतात्	भवताम्	भवन्तु
भवः/भवतात्	भवतम्	भवत
भवानि/भवतात्	भवाव	भवाम

ह्यस्तनी (लङ्) Imperfect.

अभवत्	अभवताम्	अभवन्
अभवः	अभवतम्	अभवत
अभवम्	अभवाव	अभवाम्

अद्यतनी (लुङ्) Aorist

अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
अभूः	अभूतम्	अभूत
अभूवम्	अभूव	अभूम

परोक्षा (लिट्) Perfect.

बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
बभूव	बभूविव	बभूविम

आशीः-(लिङ्) Benedictive.

भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः
भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त
भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म

श्वस्तनी (लुट्) I Future.

भविता	भवितारौ	भवितारः
भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थ
भवितास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः

भविष्यन्ती (लृट्) II Future.

भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

क्रियातिपत्तिः (लृङ्) Conditional

अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्
अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत
अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम

॥ अथादन्ताः शडनिटश्च॥

२. पां(पा) पाने।

व०	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
	पिबसि	पिबथः	पिबथ
	पिबामि	पिबावः	पिबामः
स०	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम
प०	पिबतु/पिबतात्	पिबताम्	पिबन्तु
	पिब/पिबतात्	पिबतम्	पिबत
	पिबानि	पिबाव	पिबाम
ह्य०	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम
अ०	अपात्	अपाताम्	अपुः
	अपाः	अपातम्	अपात
	अपाम्	अपाव	अपाम
प०	पपौ	पपतुः	पपुः
	पपाथ/पपिथ	पपथुः	पप
	पपौ	पपिव	पपिम
आ०	पेयात्	पेयास्ताम्	पेयासुः
	पेयाः	पेयास्तम्	पेयास्त
	पेयासम्	पेयास्व	पेयास्म
श्व०	पाता	पातारौ	पातारः
	पातासि	पातास्थः	पातास्थ
	पातास्मि	पातास्वः	पातास्मः
भ०	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः
क्रि०	अपास्यत्	अपास्यताम्	अपास्यन्
	अपास्यः	अपास्यतम्	अपास्यत
	अपास्यम्	अपास्याव	अपास्याम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. घ्रां (घ्रा) गन्धोपादाने।

व०	जिघ्रति	जिघ्रतः	जिघ्रन्ति
	जिघ्रसि	जिघ्रथः	जिघ्रथ
	जिघ्रामि	जिघ्रावः	जिघ्रामः
स०	जिघ्रेत्	जिघ्रेताम्	जिघ्रेयुः
	जिघ्रेः	जिघ्रेतम्	जिघ्रेत
	जिघ्रेयम्	जिघ्रेव	जिघ्रेम
प०	जिघ्रतु/जिघ्रतात्	जिघ्रताम्	जिघ्रन्तु
	जिघ्र/जिघ्रतात्	जिघ्रतम्	जिघ्रत
	जिघ्राणि	जिघ्राव	जिघ्राम
ह्य०	अजिघ्रत्	अजिघ्रताम्	अजिघ्रन्
	अजिघ्रः	अजिघ्रतम्	अजिघ्रत
	अजिघ्रम्	अजिघ्राव	अजिघ्राम
अ०	अघ्रात्	अघ्राताम्	अघ्रुः
	अघ्राः	अघ्रातम्	अघ्रात
	अघ्राम्	अघ्राव	अघ्राम
		तथा	
	अघ्रासीत्	अघ्रासिष्टाम्	अघ्रासिषुः
	अघ्रासीः	अघ्रासिष्टम्	अघ्रासिष्ट
	अघ्रासिषम्	अघ्रासिष्व	अघ्रासिष्म
प०	जघ्रौ	जघ्रतुः	जघ्रुः
	जघ्राथ/जघ्रिथ	जघ्रथुः	जघ्र
	जघ्रौ	जघ्रिव	जघ्रिम
आ०	घ्रेयात्	घ्रेयास्ताम्	घ्रेयासुः
	घ्रेयाः	घ्रेयास्तम्	घ्रेयास्त
	घ्रेयासम्	घ्रेयास्व	घ्रेयास्म
		तथा	
	घ्रायात्	घ्रायास्ताम्	घ्रायासुः
	घ्राया:	घ्रायास्तम्	घ्रायास्त
	घ्रायासम्	घ्रायास्व	घ्रायास्म
श्व०	घ्राता	घ्रातारौ	घ्रातारः
	घ्रातामि	घ्रातास्थः	घ्रातास्थ
	घ्रातास्मि	घ्रातास्वः	घ्रातास्मः
भ०	घ्रास्यति	घ्रास्यतः	घ्रास्यन्ति
	घ्रास्यसि	घ्रास्यथः	घ्रास्यथ
	घ्रास्यामि	घ्रास्यावः	घ्रास्यामः
क्रि०	अघ्रास्यत्	अघ्रास्यताम्	अघ्रास्यन्
	अघ्रास्यः	अघ्रास्यतम्	अघ्रास्यत
	अघ्रास्यम्	अघ्रास्याव	अघ्रास्याम

४. ध्मां (ध्मा) शब्दाग्निसंयोगयोः।

शब्दे मुखादिना चाग्निसंयोगे।

व०	धमति	धमतः	धमन्ति
	धमसि	धमथः	धमथ
	धमामि	धमावः	धमामः
स०	धमेत्	धमेताम्	धमेयुः
	धमेः	धमेतम्	धमेत
	धमेयम्	धमेव	धमेम
प०	धमतु/धमतात्	धमताम्	धमन्तु
	धम/धमतात्	धमतम्	धमत
	धमानि	धमाव	धमाम
ह्य०	अधमत्	अधमताम्	अधमन्
	अधमः	अधमतम्	अधमत
	अधमम्	अधमाव	अधमाम
अ०	अध्मासीत्	अध्मासिष्टाम्	अध्मासिषुः
	अध्मासीः	अध्मासिष्टम्	अध्मासिष्ट
	अध्मासिषम्	अध्मासिष्व	अध्मासिष्म
प०	दध्मौ	दध्मतुः	दध्मुः
	दध्माथ/दध्मिथ	दध्मथुः	दध्म
	दध्मौ	दध्मिव	दध्मिम
आ०	ध्मेयात्	ध्मेयास्ताम्	ध्मेयासुः
	ध्मेयाः	ध्मेयास्तम्	ध्मेयास्त
	ध्मेयासम्	ध्मेयास्व	ध्मेयास्म
		तथा	
	ध्मायात्	ध्मायास्ताम्	ध्मायासुः
	ध्मायाः	ध्मायास्तम्	ध्मायास्त
	ध्मायासम्	ध्मायास्व	ध्मायास्म
श्व०	ध्माता	ध्मातारौ	ध्मातारः
	ध्मातासि	ध्मातास्थः	ध्मातास्थ
	ध्मातास्मि	ध्मातास्वः	ध्मातास्मः
भ०	ध्मास्यति	ध्मास्यतः	ध्मास्यन्ति
	ध्मास्यसि	ध्मास्यथः	ध्मास्यथ
	ध्मास्यामि	ध्मास्यावः	ध्मास्यामः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रि०	अध्मास्यत्	अध्मास्यताम्	अध्मास्यन्
	अध्मास्य:	अध्मास्यतम्	अध्मास्यत
	अध्मास्यम्	अध्मास्याव	अध्मास्याम

५. ष्ठां (ष्ठा) गतिनिवृत्तौ।

व०	तिष्ठति	तिष्ठत:	तिष्ठन्ति
	तिष्ठसि	तिष्ठथ:	तिष्ठथ
	तिष्ठामि	तिष्ठाव:	तिष्ठाम:
स०	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयु:
	तिष्ठे:	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम
प०	तिष्ठतु/तिष्ठतात्	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
	तिष्ठ/तिष्ठतात्	तिष्ठतम्	तिष्ठत
	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम
ह्य०	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
	अतिष्ठ:	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम
अ०	अध्यष्ठात्	अध्यष्ठाताम्	अध्यष्ठु:
	अध्यष्ठा:	अध्यष्ठातम्	अध्यष्ठात
	अध्यष्ठाम्	अध्यष्ठाव	अध्यष्ठाम
		तथा	
	अस्थात्	अस्थाताम्	अस्थु:
	अस्था:	अस्थातम्	अस्थात
	अस्थाम्	अस्थाव	अस्थाम
प०	अधितष्ठौ/तस्थौ	तस्थतु:	तस्थु:
	तस्थाथ/तस्थिथ	तस्थथु:	तस्थ
	तस्थौ	तस्थिव	तस्थिम
आ०	स्थेयात्	स्थेयास्ताम्	स्थेयासु:
	स्थेया:	स्थेयास्तम्	स्थेयास्त
	स्थेयासम्	स्थेयास्व	स्थेयास्म
श्व०	स्थाता	स्थातारौ	स्थातार:
	स्थातासि	स्थातास्थ:	स्थातास्थ
	स्थातास्मि	स्थातास्व:	स्थातास्म:
भ०	स्थास्यति	स्थास्यत:	स्थास्यन्ति
	स्थास्यसि	स्थास्यथ:	स्थास्यथ
	स्थास्यामि	स्थास्याव:	स्थास्याम:
क्रि०	अस्थास्यत्	अस्थास्यताम्	अस्थास्यन्
	अस्थास्य:	अस्थास्यतम्	अस्थास्यत
	अस्थास्यम्	अस्थास्याव	अस्थास्याम

६. म्नां (म्ना) अभ्यासे।

व०	मनति	मनत:	मनन्ति
	मनसि	मनथ:	मनथ
	मनामि	मनाव:	मनाम:
स०	मनेत्	मनेताम्	मनेयु:
	मने:	मनेतम्	मनेत
	मनेयम्	मनेव	मनेम
प०	मनतु/मनतात्	मनताम्	मनन्तु
	मन/मनतात्	मनतम्	मनत
	मनानि	मनाव	मनाम
ह्य०	अमनत्	अमनताम्	अमनन्
	अमन:	अमनतम्	अमनत
	अमनतम्	अमनाव	अमनाम
अ०	अम्नासीत्	अम्नासिष्टाम्	अम्नासिषु:
	अम्नासी:	अम्नासिष्टम्	अम्नासिष्ट
	अम्नासिषम्	अम्नासिष्व	अम्नासिष्म
प०	मम्नौ	मम्नतु:	मम्नु:
	मम्नाथ/मम्निथ	मम्नथु:	मम्न
	मम्नौ	मम्निव	मम्निम
आ०	म्नेयात्	म्नेयास्ताम्	म्नेयासु:
	म्नेया:	म्नेयास्तम्	म्नेयास्त
	म्नेयासम्	म्नेयास्व	म्नेयास्म
		तथा	
	म्नायात्	म्नायास्ताम्	म्नायासु:
	म्नाया:	म्नायास्तम्	म्नायास्त
	म्नायासम्	म्नायास्व	म्नायास्म
श्व०	म्नाता	म्नातारौ	म्नातार:
	म्नातासि	म्नातास्थ:	म्नातास्थ
	म्नातास्मि	म्नातास्व:	म्नातास्म:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	म्नास्यति	म्नास्यतः	म्नास्यन्ति
	म्नास्यसि	म्नास्यथः	म्नास्यथ
	म्नास्यामि	म्नास्यावः	म्नास्यामः
क्रि०	अम्नास्यत्	अम्नास्यताम्	अम्नास्यन्
	अम्नास्यः	अम्नास्यतम्	अम्नास्यत
	अम्नास्यम्	अम्नास्याव	अम्नास्याम

७. दां(दा) दाने।

व०	यच्छति	यच्छतः	यच्छन्ति
	यच्छसि	यच्छथः	यच्छथ
	यच्छामि	यच्छावः	यच्छामः
स०	यच्छेत्	यच्छेताम्	यच्छेयुः
	यच्छेः	यच्छेतम्	यच्छेत
	यच्छेयम्	यच्छेव	यच्छेम
प०	यच्छतु/यच्छतात्	यच्छताम्	यच्छन्तु
	यच्छ/यच्छतात्	यच्छतम्	यच्छत
	यच्छानि	यच्छाव	यच्छाम
ह्य०	अयच्छत्	अयच्छताम्	अयच्छन्
	अयच्छः	अयच्छतम्	अयच्छत
	अयच्छम्	अयच्छाव	अयच्छाम
अ०	अदात्	अदाताम्	अदुः
	अदाः	अदातम्	अदात
	अदाम्	अदाव	अदाम
प०	ददौ	ददतुः	ददुः
	ददाथ/ददिथ	ददथुः	दद
	ददौ	ददिव	ददिम
आ०	देयात्	देयास्ताम्	देयासुः
	देयाः	देयास्तम्	देयास्त
	देयासम्	देयास्व	देयास्म
श्व०	दाता	दातारौ	दातारः
	दातासि	दातास्थः	दातास्थ
	दातास्मि	दातास्वः	दातास्मः
भ०	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः
क्रि०	अदास्यत्	अदास्यताम्	अदास्यन्
	अदास्यः	अदास्यतम्	अदास्यत
	अदास्यम्	अदास्याव	अदास्याम

८. जिं(जि) अभिभवे।

व०	जयति	जयतः	जयन्ति
	जयसि	जयथः	जयथ
	जयामि	जयावः	जयामः
स०	जयेत्	जयेताम्	जयेयुः
	जयेः	जयेतम्	जयेत
	जयेयम्	जयेव	जयेम
प०	जयतु/जयतात्	जयताम्	जयन्तु
	जय/जयतात्	जयतम्	जयत
	जयानि	जयाव	जयाम
ह्य०	अजयत्	अजयताम्	अजयन्
	अजयः	अजयतम्	अजयत
	अजयम्	अजयाव	अजयाम
अ०	अजैषीत्	अजैष्टाम्	अजैषुः
	अजैषीः	अजैष्टम्	अजैष्ट
	अजैषम्	अजैष्व	अजैष्म
प०	जिगाय	जिग्यतुः	जिग्युः
	जिगयिथ/जिगेथ	जिग्यथुः	जिग्य
	जिगाय/जिगय	जिग्यिव	जिग्यिम
आ०	जीयात्	जीयास्ताम्	जीयासुः
	जीयाः	जीयास्तम्	जीयास्त
	जीयासम्	जीयास्व	जीयास्म
श्व०	जेता	जेतारौ	जेतारः
	जेतासि	जेतास्थः	जेतास्थ
	जेतास्मि	जेतास्वः	जेतास्मः
भ०	जेष्यति	जेष्यतः	जेष्यन्ति
	जेष्यसि	जेष्यथः	जेष्यथ
	जेष्यामि	जेष्यावः	जेष्यामः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रि०	अजेष्यत्	अजेष्यताम्	अजेष्यन्
	अजेष्यः	अजेष्यतम्	अजेष्यत
	अजेष्यम्	अजेष्याव	अजेष्याम

९. जिं(जि) अभिभवे।

(उपरिवत्)

१०. क्षिं(क्षि) क्षये।

व०	क्षयति	क्षयतः	क्षयन्ति
	क्षयसि	क्षयथः	क्षयथ
	क्षयामि	क्षयावः	क्षयामः
स०	क्षयेत्	क्षयेताम्	क्षयेयुः
	क्षयेः	क्षयेतम्	क्षयेत
	क्षयेयम्	क्षयेव	क्षयेम
प०	क्षयतु/क्षयतात्	क्षयताम्	क्षयन्तु
	क्षय/क्षयतात्	क्षयतम्	क्षयत
	क्षयाणि	क्षयाव	क्षयाम
ह्य०	अक्षयत्	अक्षयताम्	अक्षयन्
	अक्षयः	अक्षयतम्	अक्षयत
	अक्षयम्	अक्षयाव	अक्षयाम
अ०	अक्षैषीत्	अक्षैष्टाम्	अक्षैषुः
	अक्षैषीः	अक्षैष्टम्	अक्षैष्ट
	अक्षैषम्	अक्षैष्व	अक्षैष्म
प०	चिक्षाय	चिक्षियतुः	चिक्षियुः
	चिक्षयिथ/चिक्षेथ	चिक्षियथुः	चिक्षय
	चिक्षाय/चिक्षय	चिक्षियिव	चिक्षियिम
आ०	क्षीयात्	क्षीयास्ताम्	क्षीयासुः
	क्षीयाः	क्षीयास्तम्	क्षीयास्त
	क्षीयासम्	क्षीयास्व	क्षीयास्म
श्व०	क्षेता	क्षेतारौ	क्षेतारः
	क्षेतासि	क्षेतास्थः	क्षेतास्थ
	क्षेतास्मि	क्षेतास्वः	क्षेतास्मः
भ०	क्षेष्यति	क्षेष्यतः	क्षेष्यन्ति
	क्षेष्यसि	क्षेष्यथः	क्षेष्यथ
	क्षेष्यामि	क्षेष्यावः	क्षेष्यामः
क्रि०	अक्षेष्यत्	अक्षेष्यताम्	अक्षेष्यन्
	अक्षेष्यः	अक्षेष्यतम्	अक्षेष्यत
	अक्षेष्यम्	अक्षेष्याव	अक्षेष्याम

११ इं (इ) गतौ।

व०	अयति	अयतः	अयन्ति
	अयसि	अयथः	अयथ
	अयामि	अयावः	अयामः
स०	अयेत्	अयेताम्	अयेयुः
	अयेः	अयेतम्	अयेत
	अयेयम्	अयेव	अयेम
प०	अयतु/अयतात्	अयताम्	अयन्तु
	अय/अयतात्	अयतम्	अयत
	अयानि	अयाव	अयाम
ह्य०	आयत्	आयताम्	आयन्
	आयः	आयतम्	आयत
	आयम्	आयाव	आयाम
अ०	ऐषीत्	ऐष्टाम्	ऐषुः
	ऐषीः	ऐष्टम्	ऐष्ट
	ऐषम	ऐष्व	ऐष्म
प०	इयाय	इयतुः	इयुः
	इययिथ/इयेथ	इयथुः	इय
	इयाय/इयय	इयिव	इयिम
आ०	ईयात्	ईयास्ताम्	ईयासुः
	ईयाः	ईयास्तम्	ईयास्त
	ईयासम्	ईयास्व	ईयास्म
श्व०	एता	एतारौ	एतारः
	एतासि	एतास्थः	एतास्थ
	एतास्मि	एतास्वः	एतास्मः
भ०	एष्यति	एष्यतः	एष्यन्ति
	एष्यसि	एष्यथः	एष्यथ
	एष्यामि	एष्यावः	एष्यामः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रि०	ऐष्यत्	ऐष्यताम्	ऐष्यन्
	ऐष्य:	ऐष्यतम्	ऐष्यत
	ऐष्यम्	ऐष्याव	ऐष्याम

१२. दुं(दु) गतौ।

व०	दवति	दवत:	दवन्ति
	दवसि	दवथ:	दवथ
	दवामि	दवाव:	दवाम:
स०	दवेत्	दवेताम्	दवेयु:
	दवे:	दवेतम्	दवेत
	दवेयम्	दवेव	दवेम
प०	दवतु/दवतात्	दवताम्	दवन्तु
	दव/दवतात्	दवतम्	दवत
	दवानि	दवाव	दवाम
ह्य०	अदवत्	अदवताम्	अदवन्
	अदव:	अदवतम्	अदवत
	अदवम्	अदवाव	अदवाम
अ०	अदौषीत्	अदौष्टाम्	अदौषु:
	अदौषी:	अदौष्टम्	अदौष्ट
	अदौषम्	अदौष्व	अदौष्म
प०	दुदाव	दुदुवतु:	दुदुवु:
	दुदविथ/दुदोथ	दुदुवथु:	दुदुव
	दुदाव/दुदव	दुदुविव	दुदुविम
आ०	दूयात्	दूयास्ताम्	दूयासु:
	दूया:	दूयास्तम्	दूयास्त
	दूयासम्	दूयास्व	दूयास्म
श्व०	दोता	दोतारौ	दोतार:
	दोतासि	दोतास्थ:	दोतास्थ
	दोतास्मि	दोतास्व:	दोतास्म:
भ०	दोष्यति	दोष्यत:	दोष्यन्ति
	दोष्यसि	दोष्यथ:	दोष्यथ
	दोष्यामि	दोष्याव:	दोष्याम:
क्रि०	अदोष्यत्	अदोष्यताम्	अदोष्यन्
	अदोष्य:	अदोष्यतम्	अदोष्यत
	अदोष्यम्	अदोष्याव	अदोष्याम

१३. द्रुं(द्रु) गतौ।/१४. शुं(शु) गतौ। (उपरिवत्)

१५ स्रुं(स्रु) गतौ।

व०	स्रवति	स्रवत:	स्रवन्ति
	स्रवसि	स्रवथ:	स्रवथ
	स्रवामि	स्रवाव:	स्रवाम:
स०	स्रवेत्	स्रवेताम्	स्रवेयु:
	स्रवे:	स्रवेतम्	स्रवेत
	स्रवेयम्	स्रवेव	स्रवेम
प०	स्रवतु/स्रवतात्	स्रवताम्	स्रवन्तु
	स्रव/स्रवतात्	स्रवतम्	स्रवत
	स्रवाणि	स्रवाव	स्रवाम
ह्य०	अस्रवत्	अस्रवताम्	अस्रवन्
	अस्रव:	अस्रवतम्	अस्रवत
	अस्रवम्	अस्रवाव	अस्रवाम
अ०	असुस्रुवत्	असुस्रुवताम्	असुस्रुवन्
	असुस्रुष:	असुस्रुवतम्	असुस्रुवत
	असुस्रुवम्	असुस्रुवाव	असुस्रुवाम
प०	सुस्राव	सुस्रुवतु:	सुस्रुवु:
	सुस्रोथ	सुस्रुवथु:	सुस्रुव
	सुस्राव/सुस्रव	सुस्रुव	सुस्रुम
आ०	स्रूयात्	स्रूयास्ताम्	स्रूयासु:
	स्रूया:	स्रूयास्तम्	स्रूयास्त
	स्रूयासम्	स्रूयास्व	स्रूयास्म
श्व०	स्रोता	स्रोतारौ	स्रोतार:
	स्रोतासि	स्रोतास्थ:	स्रोतास्थ
	स्रोतास्मि	स्रोतास्व:	स्रोतास्म:
भ०	स्रोष्यति	स्रोष्यत:	स्रोष्यन्ति
	स्रोष्यसि	स्रोष्यथ:	स्रोष्यथ
	स्रोष्यामि	स्रोष्याव:	स्रोष्याम:
क्रि०	अस्रोष्यत्	अस्रोष्यताम्	अस्रोष्यन्
	अस्रोष्य:	अस्रोष्यतम्	अस्रोष्यत
	अस्रोष्यम्	अस्रोष्याव	अस्रोष्याम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६. ध्रु स्थैर्ये च।

चकाराद् गतौ, गत्यर्थः कुटादिरयमित्यन्ये।

व०	ध्रवति	ध्रवतः	ध्रवन्ति
	ध्रवसि	ध्रवथः	ध्रवथ
	ध्रवामि	ध्रवावः	ध्रवामः
स०	ध्रवेत्	ध्रवेताम्	ध्रवेयुः
	ध्रवेः	ध्रवेतम्	ध्रवेत
	ध्रवेयम्	ध्रवेव	ध्रवेम
प०	ध्रवतु/ध्रवतात्	ध्रवताम्	ध्रवन्तु
	ध्रव/ध्रवतात्	ध्रवतम्	ध्रवत
	ध्रवाणि	ध्रवाव	ध्रवाम
ह्य०	अध्रवत्	अध्रवताम्	अध्रवन्
	अध्रवः	अध्रवतम्	अध्रवत
	अध्रवम्	अध्रवाव	अध्रवाम
अ०	अध्रौषीत्	अध्रौष्टाम्	अध्रौषुः
	अध्रौषीः	अध्रौष्टम्	अध्रौष्ट
	अध्रौषम्	अध्रौष्व	अध्रौष्म
प०	दुध्राव	दुध्रुवतुः	दुध्रुवुः
	दुध्रविथ/दुध्रोथ	दुध्रुवथुः	दुध्रुव
	दुध्राव/दुध्रव	दुध्रुविव	दुध्रुविम
आ०	ध्रूयात्	ध्रूयास्ताम्	ध्रूयासुः
	ध्रूयाः	ध्रूयास्तम्	ध्रूयास्त
	ध्रूयासम्	ध्रूयास्व	ध्रूयास्म
श्व०	ध्रोता	ध्रोतारौ	ध्रोतारः
	ध्रोतासि	ध्रोतास्थः	ध्रोतास्थ
	ध्रोतास्मि	ध्रोतास्वः	ध्रोतास्मः
भ०	ध्रोष्यति	ध्रोष्यतः	ध्रोष्यन्ति
	ध्रोष्यसि	ध्रोष्यथः	ध्रोष्यथ
	ध्रोष्यामि	ध्रोष्यावः	ध्रोष्यामः
क्रि०	अध्रोष्यत्	अध्रोष्यताम्	अध्रोष्यन्
	अध्रोष्यः	अध्रोष्यतम्	अध्रोष्यत
	अध्रोष्यम्	अध्रोष्याव	अध्रोष्याम

१७. सुं(सु) प्रसवैश्वर्ययोः।

व०	सवति	सवतः	सवन्ति
	सवसि	सवथः	सवथ
	सवामि	सवावः	सवामः
स०	सवेत्	सवेताम्	सवेयुः
	सवेः	सवेतम्	सवेत
	सवेयम्	सवेव	सवेम
प०	सवतु/सवतात्	सवताम्	सवन्तु
	सव/सवतात्	सवतम्	सवत
	सवानि	सवाव	सवाम
ह्य०	असवत्	असवताम्	असवन्
	असवः	असवतम्	असवत
	असवम्	असवाव	असवाम
अ०	असावीत्	असाविष्टाम्	असाविषुः
	असावीः	असाविष्टम्	असाविष्ट
	असाविषम्	असाविष्व	असाविष्म
क्रियारत्नस०			
	असौषीत्	असौष्टाम्	असौषुः
	असौषीः	असौष्टम्	असौष्ट
	असौषम्	असौष्व	असौष्म
प०	सुसाव	सुसुवतुः	सुसुवुः
	सुसविथ/सुसोथ	सुसुवथुः	सुसुव
	सुसाव/सुसव	सुसुविव	सुसुविम
आ०	सूयात्	सूयास्ताम्	सूयासुः
	सूयाः	सूयास्तम्	सूयास्त
	सूयासम्	सूयास्व	सूयास्म
श्व०	सोता	सोतारौ	सोतारः
	सोतासि	सोतास्थः	सोतास्थ
	सोतास्मि	सोतास्वः	सोतास्मः
भ०	सोष्यति	सोष्यतः	सोष्यन्ति
	सोष्यसि	सोष्यथः	सोष्यथ
	सोष्यामि	सोष्यावः	सोष्यामः
क्रि०	असोष्यत्	असोष्यताम्	असोष्यन्
	असोष्यः	असोष्यतम्	असोष्यत
	असोष्यम्	असोष्याव	असोष्याम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८. स्मृं(स्मृ) चिन्तायाम्।

व०	स्मरति	स्मरतः	स्मरन्ति
	स्मरसि	स्मरथः	स्मरथ
	स्मरामि	स्मरावः	स्मरामः
स०	स्मरेत्	स्मरेताम्	स्मरेयुः
	स्मरेः	स्मरेतम्	स्मरेत
	स्मरेयम्	स्मरेव	स्मरेम
प०	स्मरतु/स्मरतात्	स्मरताम्	स्मरन्तु
	स्मर/स्मरतात्	स्मरतम्	स्मरत
	स्मराणि	स्मराव	स्मराम
ह्य०	अस्मरत्	अस्मरताम्	अस्मरन्
	अस्मरः	अस्मरतम्	अस्मरत
	अस्मरम्	अस्मराव	अस्मराम
अ०	अस्मार्षीत्	अस्मार्ष्टाम्	अस्माषुः
	अस्मार्षीः	अस्मार्ष्टम्	अस्मार्ष्ट
	अस्मार्षम्	अस्मार्ष्व	अस्मार्ष्म
प०	सस्मार	सस्मरतुः	सस्मरुः
	सस्मर्थ	सस्मरथुः	सस्मर
	सस्मार/सस्मर	सस्मरिव	सस्मरिम
आ०	स्मर्यात्	स्मर्यास्ताम्	स्मर्यासुः
	स्मर्याः	स्मर्यास्तम्	स्मर्यास्त
	स्मर्यासम्	स्मर्यास्व	स्मर्यास्म
श्व०	स्मर्त्ता	स्मर्त्तारौ	स्मर्त्तारः
	स्मर्त्तासि	स्मर्त्तास्थः	स्मर्त्तास्थ
	स्मर्त्तास्मि	स्मर्त्तास्वः	स्मर्त्तास्मः
भ०	स्मरिष्यति	स्मरिष्यतः	स्मरिष्यन्ति
	स्मरिष्यसि	स्मरिष्यथः	स्मरिष्यथ
	स्मरिष्यामि	स्मरिष्यावः	स्मरिष्यामः
क्रि०	अस्मरिष्यत्	अस्मरिष्यताम्	अस्मरिष्यन्
	अस्मरिष्यः	अस्मरिष्यतम्	अस्मरिष्यत
	अस्मरिष्यम्	अस्मरिष्यावः	अस्मरिष्यामः

१९. गृं(गृ) सेचने।

व०	गरति	गरतः	गरन्ति
	गरसि	गरथः	गरथ
	गरामि	गरावः	गरामः
स०	गरेत्	गरेताम्	गरेयुः
	गरेः	गरेतम्	गरेत
	गरेयम्	गरेव	गरेम
प०	गरतु/गरतात्	गरताम्	गरन्तु
	गर/गरतात्	गरतम्	गरत
	गराणि	गराव	गराम
ह्य०	अगरत्	अगरताम्	अगरन्
	अगरः	अगरतम्	अगरत
	अगरम्	अगराव	अगराम
अ०	अगार्षीत्	अगार्ष्टाम्	अगार्षुः
	अगार्षीः	अगार्ष्टम्	अगार्ष्ट
	अगार्षम्	अगार्ष्व	अगार्ष्म
प०	जगार	जग्रतुः	जग्रु
	जगर्थ	जग्रथुः	जग्र
	जगार/जगर	जग्रिव	जग्रिम
आ०	ग्रियात्	ग्रियास्ताम्	ग्रियासुः
	ग्रियाः	ग्रियास्तम्	ग्रियास्त
	ग्रियासम्	ग्रियास्व	ग्रियास्म
श्व०	गर्त्ता	गर्त्तारौ	गर्त्तारः
	गर्त्तासि	गर्त्तास्थः	गर्त्तास्थ
	गर्त्तास्मि	गर्त्तास्वः	गर्त्तास्मः
भ०	गरिष्यति	गरिष्यतः	गरिष्यन्ति
	गरिष्यसि	गरिष्यथः	गरिष्यथ
	गरिष्यामि	गरिष्यावः	गरिष्यामः
क्रि०	अगरिष्यत्	अगरिष्यताम्	अगरिष्यन्
	अगरिष्यः	अगरिष्यतम्	अगरिष्यत
	अगरिष्यम्	अगरिष्याव	अगरिष्याम

२०. घृं(घृ) सेचने।

(उपरिवत्)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१. औस्वृ शब्दोपतापयोः।

व०	स्वरति	स्वरतः	स्वरन्ति
	स्वरसि	स्वरथः	स्वरथ
	स्वरामि	स्वरावः	स्वरामः
स०	स्वरेत्	स्वरेताम्	स्वरेयुः
	स्वरेः	स्वरेतम्	स्वरेत
	स्वरेयम्	स्वरेव	स्वरेम
प०	स्वरतु/स्वरतात्	स्वरताम्	स्वरन्तु
	स्वर/स्वरतात्	स्वरतम्	स्वरत
	स्वराणि	स्वराव	स्वराम
ह्य०	अस्वरत्	अस्वरताम्	अस्वरन्
	अस्वरः	अस्वरतम्	अस्वरत
	अस्वरम्	अस्वराव	अस्वराम
अ०	अस्वारीत्	अस्वारिष्टाम्	अस्वारिषुः
	अस्वारीः	अस्वारिष्टम्	अस्वारिष्ट
	अस्वारिषम्	अस्वारिष्व	अस्वारिष्म
	अस्वार्षीत्	अस्वार्ष्टाम्	अस्वार्षुः
	अस्वार्षीः	अस्वार्ष्टम्	अस्वार्ष्ट
	अस्वार्षम्	अस्वार्ष्व	अस्वार्ष्म
प०	सस्वार	सस्वरतुः	सस्वरुः
	सस्वरिथ	सस्वरथुः	सस्वर
	सस्वार/सस्वर	सस्वरिव	सस्वरिम
आ०	स्वर्यात्	स्वर्यास्ताम्	स्वर्यासुः
	स्वर्याः	स्वर्यास्तम्	स्वर्यास्त
	स्वर्यासम्	स्वर्यास्व	स्वर्यास्म
श्व०	स्वर्त्ता	स्वर्त्तारौ	स्वर्त्तारः
	स्वर्त्तासि	स्वर्त्तास्थः	स्वर्त्तास्थ
	स्वर्त्तास्मि	स्वर्त्तास्वः	स्वर्त्तास्मः
	स्वरिता	स्वरितारौ	स्वरितारः
	स्वरितासि	स्वरितास्थः	स्वरितास्थ
	स्वरितास्मि	स्वरितास्वः	स्वरितास्मः
भ०	स्वरिष्यति	स्वरिष्यतः	स्वरिष्यन्ति
	स्वरिष्यसि	स्वरिष्यथः	स्वरिष्यथ
	स्वरिष्यामि	स्वरिष्यावः	स्वरिष्यामः
क्रि०	अस्वरिष्यत्	अस्वरिष्यताम्	अस्वरिष्यन्
	अस्वरिष्यः	अस्वरिष्यतम्	अस्वरिष्यत
	अस्वरिष्यम्	अस्वरिष्याव	अस्वरिष्याम

२२. द्वृं (द्वृ) वरणम्। वरणं स्थगनम्।

व०	द्वरति	द्वरतः	द्वरन्ति
	द्वरसि	द्वरथः	द्वरथ
	द्वरामि	द्वरावः	द्वरामः
स०	द्वरेत्	द्वरेताम्	द्वरेयुः
	द्वरेः	द्वरेतम्	द्वरेत
	द्वरेयम्	द्वरेव	द्वरेम
प०	द्वरतु/द्वरतात्	द्वरताम्	द्वरन्तु
	द्वर/द्वरतात्	द्वरतम्	द्वरत
	द्वराणि	द्वराव	द्वराम
ह्य०	अद्वरत्	अद्वरताम्	अद्वरन्
	अद्वरः	अद्वरतम्	अद्वरत
	अद्वरम्	अद्वराव	अद्वराम
अ०	अद्वार्षीत्	अद्वार्ष्टाम्	अद्वार्षुः
	अद्वार्षीः	अद्वार्ष्टम्	अद्वार्ष्ट
	अद्वार्षम्	अद्वार्ष्व	अद्वार्ष्म
प०	दद्वार	दद्वरतुः	दद्वरुः
	दद्वर्थ	दद्वरथुः	दद्वर
	दद्वार/दद्वर	दद्वरिव	दद्वरिम
आ०	द्वर्यात्	द्वर्यास्ताम्	द्वर्यासुः
	द्वर्याः	द्वर्यास्तम्	द्वर्यास्त
	द्वर्यासम्	द्वर्यास्व	द्वर्यास्म
श्व०	द्वर्त्ता	द्वर्त्तारौ	द्वर्त्तारः
	द्वर्त्तासि	द्वर्त्तास्थः	द्वर्त्तास्थ
	द्वर्त्तास्मि	द्वर्त्तास्वः	द्वर्त्तास्मः
भ०	द्वरिष्यति	द्वरिष्यतः	द्वरिष्यन्ति
	द्वरिष्यसि	द्वरिष्यथः	द्वरिष्यथ
	द्वरिष्यामि	द्वरिष्यावः	द्वरिष्यामः
क्रि०	अद्वरिष्यत्	अद्वरिष्यताम्	अद्वरिष्यन्
	अद्वरिष्यः	अद्वरिष्यतम्	अद्वरिष्यत
	अद्वरिष्यम्	अद्वरिष्याव	अद्वरिष्याम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३. ध्वृं (ध्वृ) कौटिल्ये।

व०	ध्वरति	ध्वरतः	ध्वरन्ति
स०	ध्वरेत्	ध्वरेताम्	ध्वरेयुः
प०	ध्वरतु/ध्वरतात्	ध्वरताम्	ध्वरन्तु
ह्य०	अध्वरत्	अध्वरताम्	अध्वरन्
अ०	अध्वार्षीत्	अध्वार्ष्टाम्	अध्वार्षुः
प०	दध्वार	दध्वरतुः	दध्वरुः
आ०	ध्वर्यात्	ध्वर्यास्ताम्	ध्वर्यासुः
श्व०	ध्वर्त्ता	ध्वर्त्तारौ	ध्वर्त्तारः
भ०	ध्वरिष्यति	ध्वरिष्यतः	ध्वरिष्यन्ति
क्रि०	अध्वरिष्यत्	अध्वरिष्यताम्	अध्वरिष्यन्

२४. ह्वृं (ह्वृ) कौटिल्ये

व०	ह्वरति	ह्वरतः	ह्वरन्ति
स०	ह्वरेत्	ह्वरेताम्	ह्वरेयुः
प०	ह्वरतु/ह्वरतात्	ह्वरताम्	ह्वरन्तु
ह्य०	अह्वरत्	अह्वरताम्	अह्वरन्
अ०	अह्वार्षीत्	अह्वार्ष्टाम्	अह्वार्षुः
प०	जह्वार	जह्वरतुः	जह्वरुः
आ०	ह्वर्यात्	ह्वर्यास्ताम्	ह्वर्यासुः
श्व०	ह्वर्त्ता	ह्वर्त्तारौ	ह्वर्त्तारः
भ०	ह्वरिष्यति	ह्वरिष्यतः	ह्वरिष्यन्ति
क्रि०	अह्वरिष्यत्	अह्वरिष्यताम्	अह्वरिष्यन्

२५. सृं (सृ) गतौ।

व०	सरति	सरतः	सरन्ति
	सरसि	सरथः	सरथ
	सरामि	सरावः	सरामः
स०	सरेत्	सरेताम्	सरेयुः
	सरेः	सरेतम्	सरेत
	सरेयम्	सरेव	सरेम
प०	सरतु/सरतात्	सरताम्	सरन्तु
	सर/सरतात्	सरतम्	सरत
	सराणि	सराव	सराम
ह्य०	असरत्	असरताम्	असरन्
	असरः	असरतम्	असरत
	असरम्	असराव	असराम
अ०	असार्षीत्	असार्ष्टाम्	असार्षुः
	असार्षीः	असार्ष्टम्	असार्ष्ट
	असार्षम्	असार्ष्व	असार्ष्म
	असरत्	असरताम्	असरन्
	असरः	असरतम्	असरत
	असरम्	असराव	असराम
प०	ससार	सस्रतुः	सस्रुः
	ससर्थ	सस्रथुः	सस्र
	ससार/ससर	ससृव	ससृम
आ०	स्रियात्	स्रियास्ताम्	स्रियासुः
	स्रियाः	स्रियास्तम्	स्रियास्त
	स्रियासम्	स्रियास्व	स्रियास्म
श्व०	सर्त्ता	सर्त्तारौ	सर्त्तारः
	सर्त्तासि	सर्त्तास्थः	सर्त्तास्थ
	सर्त्तास्मि	सर्त्तास्वः	सर्त्तास्मः
भ०	सरिष्यति	सरिष्यतः	सरिष्यन्ति
	सरिष्यसि	सरिष्यथः	सरिष्यथ
	सरिष्यामि	सरिष्यावः	सरिष्यामः
क्रि०	असरिष्यत्	असरिष्यताम्	असरिष्यन्
	असरिष्यः	असरिष्यतम्	असरिष्यत
	असरिष्यम्	असरिष्याव	असरिष्याम

२६. ऋं (ऋ) प्रापणे च।

चकाराद् गतौ।

व०	ऋच्छति	ऋच्छतः	ऋच्छन्ति
	ऋच्छसि	ऋच्छथः	ऋच्छथ
	ऋच्छामि	ऋच्छावः	ऋच्छामः
स०	ऋच्छेत्	ऋच्छेताम्	ऋच्छेयुः
	ऋच्छेः	ऋच्छेतम्	ऋच्छेत
	ऋच्छेयम्	ऋच्छेव	ऋच्छेम
प०	ऋच्छतु/ऋच्छतात्	ऋच्छताम्	ऋच्छन्तु
	ऋच्छ/ऋच्छतात्	ऋच्छतम्	ऋच्छत
	ऋच्छानि	ऋच्छाव	ऋच्छाम
ह्य०	आर्च्छत्	आर्च्छताम्	आर्च्छन्
	आर्च्छः	आर्च्छतम्	आर्च्छत
	आर्च्छम्	आर्च्छाव	आर्च्छाम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	आरत्	आरताम्	आरन्
	आर:	आरतम्	आरत
	आरम्	आराव	आराम

तथा

	आर्षीत्	आर्ष्टाम्	आर्षु:
	आर्षी:	आर्ष्टम्	आर्ष्ट
	आर्षम्	आर्ष्व	आर्ष्म
प०	आर	आरतु:	आरु:
	आरिथ	आरथु:	आर
	आर	आरिव	आरिम
आ०	अर्यात्	अर्यास्ताम्	अर्यासु:
	अर्या:	अर्यास्तम्	अर्यास्त
	अर्यासम्	अर्यास्व	अर्यास्म
श्व०	अर्त्ता	अर्त्तारौ	अर्त्तार:
	अर्त्तासि	अर्त्तास्थ:	अर्त्तास्थ
	अर्त्तास्मि	अर्त्तास्व:	अर्त्तास्म:
भ०	अरिष्यति	अरिष्यत:	अरिष्यन्ति
	अरिष्यसि	अरिष्यथ:	अरिष्यथ
	अरिष्यामि	अरिष्याव:	अरिष्याम:
क्रि०	आरिष्यत्	आरिष्यताम्	आरिष्यन्
	आरिष्य:	आरिष्यतम्	आरिष्यत
	आरिष्यम्	आरिष्याव	आरिष्याम

अथ ऋकारान्त: सेट् च।

२७. तॄ प्लवनतरणयो:।

प्लवनं मज्जनम्, तरणमुल्लङ्घनम्।

व०	तरति	तरत:	तरन्ति
	तरसि	तरथ:	तरथ
	तरामि	तराव:	तराम:
स०	तरेत्	तरेताम्	तरेयु:
	तरे:	तरेतम्	तरेत
	तरेयम्	तरेव	तरेम
प०	तरतु/तरतात्	तरताम्	तरन्तु
	तर/तरतात्	तरतम्	तरत
	तरानि	तराव	तराम
ह्य०	अतरत्	अतरताम्	अतरन्
	अतर:	अतरतम्	अतरत
	अतरम्	अतराव	अतराम
अ०	अतारीत्	अतारिष्टाम्	अतारिषु:
	अतारी:	अतारिष्टम्	अतारिष्ट
	अतारिषम्	अतारिष्व	अतारिष्म
प०	ततार	तेरतु:	तेरु:
	तेरिथ	तेरथु:	तेर
	ततार/ततर	तेरिव	तेरिम
आ०	तीर्यात्	तीर्यास्ताम्	तीर्यासु:
	तीर्या:	तीर्यास्तम्	तीर्यास्त
	तीर्यासम्	तीर्यास्व	तीर्यास्म
श्व०	तरीता	तरीतारौ	तरीतार:
	तरीतासि	तरीतास्थ:	तरीतास्थ
	तरीतास्मि	तरीतास्व:	तरीतास्म:[1]
भ०	तरीष्यति	तरीष्यत:	तरीष्यन्ति
	तरीष्यसि	तरीष्यथ:	तरीष्यथ
	तरीष्यामि	तरीष्याव:	तरीष्याम:
क्रि०	अतरीष्यत्	अतरीष्यताम्	अतरीष्यन्
	अतरीष्य:	अतरीष्यतम्	अतरीष्यत
	अतरीष्यम्	अतरीष्याव	अतरीष्याम

॥ अथ एकारान्तोऽनिट् च॥

२८. ट्धें (धे) पाने।

व०	धयति	धयत:	धयन्ति
	धयसि	धयथ:	धयथ
	धयामि	धयाव:	धयाम:
स०	धयेत्	धयेताम्	धयेयु:
	धये:	धयेतम्	धयेत
	धयेयम्	धयेव	धयेम
प०	धयतु/धयतात्	धयताम्	धयन्तु
	धय/धयतात्	धयतम्	धयत
	धयानि	धयाव	धयाम
ह्य०	अधयत्	अधयताम्	अधयन्
	अधय:	अधयतम्	अधयत
	अधयम्	अधयाव	अधयाम

---

१. तरिता तरितारौ तरितार:/ तरिष्यति तरिष्यत: तरिष्यन्ति/ अतरिष्यत् अतरिष्यताम् अतरिष्यन्-- इत्यादि भी रूप बनेंगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	अदधत्	अदधताम्	अदधन
	अदधः	अदधतम्	अदधत
	अदधम्	अदधाव	अदधाम
	अधात्	अधाताम्	अधुः
	अधाः	अधातम्	अधात
	अधाम्	अधाव	अधाम
		तथा	
	अधासीत्	अधासिष्टाम्	अधासिषुः
	अधासीः	अधासिष्टम्	अधासिष्ट
	अधासिषम्	अधासिष्व	अधासिष्म
प०	दधौ	दधतुः	दधुः
	दधाथ/दधिथ	ददथुः	दध
	दधौ	दधिव	दधिम
आ०	धेयात्	धेयास्ताम्	धेयासुः
	धेयाः	धेयास्तम्	धेयास्त
	धेयासम्	धेयास्व	धेयास्म
श्व०	धाता	धातारौ	धातारः
	धातासि	धातास्थः	धातास्थ
	धातास्मि	धातास्वः	धातास्मः
भ०	धास्यति	धास्यतः	धास्यन्ति
	धास्यसि	धास्यथः	धास्यथ
	धास्यामि	धास्यावः	धास्यामः
क्रि०	अधास्यत्	अधास्यताम्	अधास्यन्
	अधास्यः	अधास्यतम्	अधास्यत
	अधास्यम्	अधास्याव	अधास्याम
	अधास्यम्	अधास्याव	अधास्याम

इतः परमैदन्ता अनुस्वारेतश्चैकविंशतिः॥

२९. दै वृ (दै) शोधने।

व०	दायति	दायतः	दायन्ति
स०	दायेत्	दायेताम्	दाययुः
प०	दायतु/दायतात्	दायताम्	दायन्तु
ह्य०	अदायत्	अदायताम्	अदायन्
अ०	अदासीत्	अदासिष्टाम्	अदासिषुः
प०	ददौ	ददतुः	ददुः
आ०	दायात्	दायास्ताम्	दायासुः
श्व०	दाता	दातारौ	दातारः
भ०	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
क्रि०	अदास्यत्	अदास्यताम्	अदास्यन्

३०. ध्यैं (ध्यै) चिन्तायाम्।

व०	ध्यायति	ध्यायतः	ध्यायन्ति
स०	ध्यायेत्	ध्यायेताम्	ध्यायेयुः
प०	ध्यायतु/ध्यायतात्	ध्यायताम्	ध्यायन्तु
ह्य०	अध्यायत्	अध्यायताम्	अध्यायन्
अ०	अध्यासीत्	अध्यासिष्टाम्	अध्यासिषुः
प०	दध्यौ	दध्यतुः	दध्युः
आ०	ध्येयात्	ध्येयास्ताम्	ध्येयासुः
		तथा	
	ध्यायात्	ध्यायास्ताम्	ध्यायासुः
श्व०	ध्याता	ध्यातारौ	ध्यातारः
भ०	ध्यास्यति	ध्यास्यतः	ध्यास्यन्ति
क्रि०	अध्यास्यत्	अध्यास्यताम्	अध्यास्यन्

३१. ग्लैं (ग्लै) हर्षक्षये।

धातुक्षय इत्यर्थः

व०	ग्लायति	ग्लायतः	ग्लायन्ति
	ग्लायसि	ग्लायथः	ग्लायथ
	ग्लायामि	ग्लायावः	ग्लायामः
स०	ग्लायेत्	ग्लायेताम्	ग्लायेयुः
	ग्लायेः	ग्लायेतम्	ग्लायेत
	ग्लायेयम्	ग्लायेव	ग्लायेम
प०	ग्लायतु/ग्लायतात्	ग्लायताम्	ग्लायन्तु
	ग्लाय/ग्लायतात्	ग्लायतम्	ग्लायत
	ग्लायानि	ग्लायाव	ग्लायाम
ह्य०	अग्लायत्	अग्लायताम्	अग्लायन्
	अग्लायः	अग्लायतम्	अग्लायत
	अग्लायम्	अग्लायाव	अग्लायाम
अ०	अग्लासीत्	अग्लासिष्टाम्	अग्लासिषुः
	अग्लासीः	अग्लासिष्टम्	अग्लासिष्ट
	अग्लासिषम्	अग्लासिष्व	अग्लासिष्म
प०	जग्लौ	जग्लतुः	जग्लुः
	जग्लिथ/जग्लाथ	जग्लथुः	जग्ल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	जग्लौ	जग्लिव	जग्लिम
आ०	ग्लेयात्	ग्लेयास्ताम्	ग्लेयासुः
	ग्लेयाः	ग्लेयास्तम्	ग्लेयास्त
	ग्लेयासम्	ग्लेयास्व	ग्लेयास्म
	ग्लायात्	ग्लायास्ताम्	ग्लायासुः
	ग्लायाः	ग्लायास्तम्	ग्लायास्त
	ग्लायासम्	ग्लायास्व	ग्लायास्म
श्व०	ग्लाता	ग्लातारौ	ग्लातारः
	ग्लातासि	ग्लातास्थः	ग्लातास्थ
	ग्लातास्मि	ग्लातास्वः	ग्लातास्मः
भ०	ग्लास्यति	ग्लास्यतः	ग्लास्यन्ति
	ग्लास्यसि	ग्लास्यथः	ग्लास्यथ
	ग्लास्यामि	ग्लास्यावः	ग्लास्यामः
क्रि०	अग्लास्यत्	अग्लास्यताम्	अग्लास्यन्
	अग्लास्यः	अग्लास्यतम्	अग्लास्यत
	अग्लास्यम्	अग्लास्याव	अग्लास्याम

३२. म्लैं (म्लै) गात्रविनामे, कान्तिक्षये इत्यर्थ।

व०	म्लायति	म्लायतः	म्लायन्ति
स०	म्लायेत्	म्लायेताम्	म्लायेयुः
प०	म्लायतु/म्लायतात्	म्लायताम्	म्लायन्तु
ह्य०	अम्लायत्	अम्लायताम्	अम्लायन्
अ०	अम्लासीत्	अम्लासिषम्	अम्लासिषुः
प०	मम्लौ	मम्लतुः	मम्लुः
आ०	म्लेयात्	म्लेयास्ताम्	म्लेयासुः
तथा-	म्लायात्	म्लायास्ताम्	म्लेयासुः
श्व०	म्लाता	म्लातारौ	म्लातारः
भ०	म्लास्यति	म्लास्यतः	म्लास्यन्ति
क्रि०	अम्लास्यत्	अम्लास्यताम्	अम्लास्यन्

३३. द्यैं (द्यै) न्यङ्करणे।

व०	द्यायति	द्यायतः	द्यायन्ति
स०	द्यायेत्	द्यायेताम्	द्यायेयुः
प०	द्यायतु/द्यायतात्	द्यायताम्	द्यायन्तु
ह्य०	अद्यायत्	अद्यायताम्	अद्यायन्
अ०	अद्यासीत्	अद्यासिष्टाम्	अद्यासिषुः
प०	दद्यौ	दद्यतुः	दद्यहः
आ०	द्येयात्	द्येयास्ताम्	द्येयासुः
तथा-	द्यायात्	द्यायास्ताम्	द्यायासुः
श्व०	द्याता	द्यातारौ	द्यातारः
भ०	द्यास्यति	द्यास्यतः	द्यास्यन्ति
क्रि०	अद्यास्यत्	अद्यास्यताम्	अद्यास्यन्

३४. द्रैं (द्रै) स्वपने।

व०	द्रायति	द्रायतः	द्रायन्ति
स०	द्रायेत्	द्रायेताम्	द्रायेयुः
प०	द्रायतु/द्रायतात्	द्रायताम्	द्रायन्तु
ह्य०	अद्रायत्	अद्रायताम्	अद्रायन्
अ०	अद्रासीत्	अद्रासिष्टाम्	अद्रासिषुः
प०	दद्रौ	दद्रतुः	दद्रुः
आ०	द्रेयात्	द्रेयास्ताम्	द्रेयासुः
		तथा	
	द्रायात्	द्रायास्ताम्	द्रायासुः
श्व०	द्राता	द्रातारौ	द्रातारः
भ०	द्रास्यति	द्रास्यतः	द्रास्यन्ति
क्रि०	अद्रास्यत्	अद्रास्यताम्	अद्रास्यन्

३५. ध्रैं (ध्रै) तृप्तौ।

व०	ध्रायति	ध्रायतः	ध्रायन्ति
स०	ध्रायेत्	ध्रायेताम्	ध्रायेयुः
प०	ध्रायतु/ध्रायतात्	ध्रायताम्	ध्रायन्तु
ह्य०	अध्रायत्	अध्रायताम्	अध्रायन्
अ०	अध्रासीत्	अध्रासिष्टाम्	अध्रासिषुः
प०	दध्रौ	दध्रतुः	दध्रुः
आ०	ध्रेयात्	ध्रेयास्ताम्	ध्रेयासुः
		तथा	
	ध्रायात्	ध्रायास्ताम्	ध्रायासुः
श्व०	ध्राता	ध्रातारौ	ध्रातारः
भ०	ध्रास्यति	ध्रास्यतः	ध्रास्यन्ति
क्रि०	अध्रास्यत्	अध्रास्यताम्	अध्रास्यन्

३६. कैं (कै) शब्दे।

व०	कायति	कायतः	कायन्ति
स०	कायेत्	कायेताम्	कायेयुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	कायतु/कायतात्	कायताम्	कायन्तु
ह्य०	अकायत्	अकायताम्	अकायन्
अ०	अकासीत्	अकासिष्टाम्	अकासिषुः
प०	चकौ	चकतुः	चकुः
आ०	कायात्	कायास्ताम्	कायासुः
श्व०	काता	कातारौ	कातारः
भ०	कास्यति	कास्यतः	कास्यन्ति
क्रि०	अकास्यत्	अकास्यताम्	अकास्यन्

३७. गैं (गै) शब्दे।

व०	गायति	गायतः	गायन्ति
स०	गायेत्	गायेताम्	गायेयुः
प०	गायतु/गायतात्	गायताम्	गायन्तु
ह्य०	अगायत्	अगायताम्	अगायन्
अ०	अगासीत्	अगासिष्टाम्	अगासिषुः
प०	जगौ	जगतुः	जगुः
आ०	गेयात्	गेयास्ताम्	गेयासुः
श्व०	गाता	गातारौ	गातारः
भ०	गास्यति	गास्यतः	गास्यन्ति
क्रि०	अगास्यत्	अगास्यताम्	अगास्यन्

३८. रैं (रै) शब्दे।

व०	रायति	रायतः	रायन्ति
स०	रायेत्	रायेताम्	रायेयुः
प०	रायतु/रायतात्	रायताम्	रायन्तु
ह्य०	अरायत्	अरायताम्	अरायन्
अ०	अरासीत्	अरासिष्टाम्	अरासिषुः
प०	ररौ	ररतुः	ररुः
आ०	रायात्	रायास्ताम्	रायासुः
श्व०	राता	रातारौ	रातारः
भ०	रास्यति	रास्यतः	रास्यन्ति
क्रि०	अरास्यत्	अरास्यताम्	अरास्यन्

३९. ष्ट्यैं (ष्ट्यै) संघाते च।

चकारात् शब्दे।।

व०	ष्ट्यायति	ष्ट्यायतः	ष्ट्यायन्ति
स०	ष्ट्यायेत्	ष्ट्यायेताम्	ष्ट्यायेयुः
प०	ष्ट्यायतु/ष्ट्यायतात्	ष्ट्यायताम्	ष्ट्यायन्तु
ह्य०	अष्ट्यायत्	अष्ट्यायताम्	अष्ट्यायन्
अ०	अष्ट्यासीत्	अष्ट्यासिष्टाम्	अष्ट्यासिषुः
प०	तष्ट्यौ	तष्ट्यतुः	तष्ट्युः
आ०	ष्ट्येयात्	ष्ट्येयास्ताम्	ष्ट्येयासुः
तथा-	ष्ट्यायात्	ष्ट्यायास्ताम्	ष्ट्यायासुः
श्व०	ष्ट्याता	ष्ट्यातारौ	ष्ट्यातारः
भ०	ष्ट्यास्यति	ष्ट्यास्यतः	ष्ट्यास्यन्ति
क्रि०	अष्ट्यास्यत्	अष्ट्यास्यताम्	अष्ट्यास्यन्

४०. स्त्यैं (स्त्यै) संघातशब्दयोः।

व०	स्त्यायति	स्त्यायतः	स्त्यायन्ति
स०	स्त्यायेत्	स्त्यायेताम्	स्त्यायेयुः
प०	स्त्यायतु/स्त्यायतात्	स्त्यायताम्	स्त्यायन्तु
ह्य०	अस्त्यायत्	अस्त्यायताम्	अस्त्यायन्
अ०	अस्त्यासीत्	अस्त्यासिष्टाम्	अस्त्यासिषुः
प०	तस्त्यौ	तस्त्यतुः	तस्त्युः
आ०	स्त्येयात्	स्त्येयास्ताम्	स्त्येयासुः
		तथा	
	स्त्यायात्	स्त्यायास्ताम्	स्त्यायासुः
श्व०	स्त्याता	स्त्यातारौ	स्त्यातारः
भ०	स्त्यास्यति	स्त्यास्यतः	स्त्यास्यन्ति
क्रि०	अस्त्यास्यत्	अस्त्यास्यताम्	अस्त्यास्यन्

४१. खैं (खै) खदने।

खदनं हिंसा स्थैर्यञ्च।।

व०	खायति	खायतः	खायन्ति
स०	खायेत्	खायेताम्	खायेयुः
प०	खायतु/खायतात्	खायताम्	खायन्तु
ह्य०	अखायत्	अखायताम्	अखायन्
अ०	अखासीत्	अखासिष्टाम्	अखासिषुः
प०	चखौ	चखतुः	चखुः
आ०	खायात्	खायास्ताम्	खायासुः
श्व०	खाता	खातारौ	खातारः
भ०	खास्यति	खास्यतः	खास्यन्ति
क्रि०	अखास्यत्	अखास्यताम्	अखास्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४२. क्षैं (क्षै) क्षये।

व०	क्षायति	क्षायतः	क्षायन्ति
स०	क्षायेत्	क्षायेताम्	क्षायेयुः
प०	क्षायतु/क्षायतात्	क्षायताम्	क्षायन्तु
ह्य०	अक्षायत्	अक्षायताम्	अक्षायन्
अ०	अक्षासीत्	अक्षासिष्टाम्	अक्षासिषुः
प०	चक्षौ	चक्षतुः	चक्षुः
आ०	क्षेयात्	क्षेयास्ताम्	क्षेयासुः
श्व०	क्षाता	क्षातारौ	क्षातारः
भ०	क्षास्यति	क्षास्यतः	क्षास्यन्ति
क्रि०	अक्षास्यत्	अक्षास्यताम्	अक्षास्यन्

४३. जैं (जै) क्षये।

व०	जायति	जायतः	जायन्ति
स०	जायेत्	जायेताम्	जायेयुः
प०	जायतु/जायतात्	जायताम्	जायन्तु
ह्य०	अजायत्	अजायताम्	अजायन्
अ०	अजासीत्	अजासिष्टाम्	अजासिषुः
प०	जजौ	जजतुः	जजुः
आ०	जायात्	जायास्ताम्	जायासुः
श्व०	जाता	जातारौ	जातारः
भ०	जास्यति	जास्यतः	जास्यन्ति
क्रि०	अजास्यत्	अजास्यताम्	अजास्यन्

४४. षैं (सै) क्षये।

व०	सायति	सायतः	सायन्ति
स०	सायेत्	सायेताम्	सायेयुः
प०	सायतु/सायतात्	सायताम्	सायन्तु
ह्य०	असायत्	असायताम्	असायन्
अ०	असासीत्	असासिष्टाम्	असासिषुः
प०	ससौ	ससतुः	ससुः
आ०	सेयात्	सेयास्ताम्	सेयासुः
श्व०	साता	सातारौ	सातारः
भ०	सास्यति	सास्यतः	सास्यन्ति
क्रि०	असास्यत्	असास्यताम्	असास्यन्

४५. स्नैं (स्नै) पाके।

व०	स्नायति	स्नायतः	स्नायन्ति
स०	स्नायेत्	स्नायेताम्	स्नायेयुः
प०	स्नायतु/स्नायतात्	स्नायताम्	स्नायन्तु
ह्य०	अस्नायत्	अस्नायताम्	अस्नायन्
अ०	अस्नासीत्	अस्नासिष्टाम्	अस्नासिषुः
प०	सस्नौ	सस्नतुः	सस्नुः
आ०	स्नेयात्	स्नेयास्ताम्	स्नेयासुः
		तथा	
	स्नायात्	स्नायास्ताम्	स्नायासुः
श्व०	स्नाता	स्नातारौ	स्नातारः
भ०	स्नास्यति	स्नास्यतः	स्नास्यन्ति
क्रि०	अस्नास्यत्	अस्नास्यताम्	अस्नास्यन्

४६. श्रैं (श्रै) पाके।

व०	श्रायति	श्रायतः	श्रायन्ति
स०	श्रायेत्	श्रायेताम्	श्रायेयुः
प०	श्रायतु/श्रायतात्	श्रायताम्	श्रायन्तु
ह्य०	अश्रायत्	अश्रायताम्	अश्रायन्
अ०	अश्रासीत्	अश्रासिष्टाम्	अश्रासिषुः
प०	शश्रौ	शश्रतुः	शश्रुः
आ०	श्रेयात्	श्रेयास्ताम्	श्रायासुः
		तथा	
	श्रायात्	श्रायास्ताम्	श्रेयासुः
श्व०	श्राता	श्रातारौ	श्रातारः
भ०	श्रास्यति	श्रास्यतः	श्रास्यन्ति
क्रि०	अश्रास्यत्	अश्रास्यताम्	अश्रास्यन्

४७. पै (पै) शोषणे।

व०	पायति	पायतः	पायन्ति
स०	पायेत्	पायेताम्	पायेयुः
प०	पायतु/पायतात्	पायताम्	पायन्तु
ह्य०	अपायत्	अपायताम्	अपायन्
अ०	अपासीत्	अपासिष्टाम्	अपासिषुः
प०	पपौ	पपतुः	पपुः
आ०	पेयात्	पेयास्ताम्	पेयासुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	पाता	पातारौ	पातार:
भ०	पास्यति	पास्यत:	पास्यन्ति
क्रि०	अपास्यत्	अपास्यताम्	अपास्यन्

४८. ओवं (वै) शोषणे।

व०	वायति	वायत:	वायन्ति
स०	वायेत्	वायेताम्	वायेयु:
प०	वायतु/वायतात्	वायताम्	वायन्तु
ह्य०	अवायत्	अवायताम्	अवायन्
अ०	अवासीत्	अवासिष्टाम्	अवासिषु:
प०	ववौ	ववतु:	ववु:
आ०	वायात्	वायास्ताम्	वायासु:
श्व०	वाता	वातारौ	वातार:
भ०	वास्यति	वास्यत:	वास्यन्ति
क्रि०	अवास्यत्	अवास्यताम्	अवास्यन्

४९. ष्णैं (स्नै) वेष्टने

व०	स्नायति	स्नायत:	स्नायन्ति
स०	स्नायेत्	स्नायेताम्	स्नायेयु:
प०	स्नायतु/स्नायतात्	स्नायताम्	स्नायन्तु
ह्य०	अस्नायत्	अस्नायताम्	अस्नायन्
अ०	अस्नासीत्	अस्नासिष्टाम्	अस्नासिषु:
प०	सस्नौ	सस्नतु:	सस्नु:
आ०	स्नेयात्	स्नेयास्ताम्	स्नेयासु:
		तथा	
	स्नायात्	स्नायास्ताम्	स्नायासु:
श्व०	स्नाता	स्नातारौ	स्नातार:
भ०	स्नास्यति	स्नास्यत:	स्नास्यन्ति
क्रि०	अस्नास्यत्	अस्नास्यताम्	अस्नास्यन्

।।अथ कान्ता: पञ्च सेटश्च।

५०. फक्क (फक्क्) नीचगतौ।

नीचैर्गति: मन्दगमनमसद्व्यवहारो वा।

अकार: श्रुतिसुखार्थ:। एवं शेषेष्वदन्तेषु।

व०	फक्कति	फक्कत:	फक्कन्ति
	फक्कसि	फक्कथ:	फक्कथ
	फक्कामि	फक्काव:	फक्काम:
स०	फक्केत्	फक्केताम्	फक्केयु:
	फक्के:	फक्केतम्	फक्केत
	फक्केयम्	फक्केव	फक्केम
प०	फक्कतु/फक्कतात्	फक्कताम्	फक्कन्तु
	फक्क/फक्कतात्	फक्कतम्	फक्कत
	फक्कानि	फक्काव	फक्काम
ह्य०	अफक्कत्	अफक्कताम्	अफक्कन्
	अफक्क:	अफक्कतम्	अफक्कत
	अफक्कम्	अफक्काव	अफक्काम
अ०	अफक्कीत्	अफक्किष्टाम्	अफक्किषु:
	अफक्की:	अफक्किष्टम्	अफक्किष्ट
	अफक्किषम्	अफक्किष्व	अफक्किष्म
प०	पफक्क	पफक्कतु:	पफक्कु:
	पफक्किथ	पफक्कथु:	पफक्क
	पफक्क	पफक्किव	पफक्किम
आ०	फक्क्यात्	फक्क्यास्ताम्	फक्क्यासु:
	फक्क्या:	फक्क्यास्तम्	फक्क्यास्त
	फक्क्यासम्	फक्क्यास्व	फक्क्यास्म
श्व०	फक्किता	फक्कितारौ	फक्कितार:
	फक्कितासि	फक्कितास्थ:	फक्कितास्थ
	फक्कितास्मि	फक्कितास्व:	फक्कितास्म:
भ०	फक्किष्यति	फक्किष्यत:	फक्किष्यन्ति
	फक्किष्यसि	फक्किष्यथ:	फक्किष्यथ
	फक्किष्यामि	फक्किष्याव:	फक्किष्याम:
क्रि०	अफक्किष्यत्	अफक्किष्यताम्	अफक्किष्यन्
	अफक्किष्य:	अफक्किष्यतम्	अफक्किष्यत
	अफक्किष्यम्	अफक्किष्याव	अफक्किष्याम

५१. तक हसने।

व०	तकति	तकत:	तकन्ति
स०	तकेत्	तकेताम्	तकेयु:
प०	तकतु/तकतात्	तकताम्	तकन्तु
ह्य०	अतकत्	अतकताम्	अतकन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	अताकीत्	अताकिष्टाम्	अताकिषुः
		तथा	
	अतकीत्	अतकिष्टाम्	अतकिषुः
प०	तताक	तेकतुः	तेकुः
आ०	तक्यात्	तक्यास्ताम्	तक्यासुः
श्व०	तकिता	तकितारौ	तकितारः
भ०	तकिष्यति	तकिष्यतः	तकिष्यन्ति
क्रि०	अतकिष्यत्	अतकिष्यताम्	अतकिष्यन्

५२. तकु (तङ्क) कृच्छ्रजीवने।

व०	तङ्कति	तङ्कतः	तङ्कन्ति
स०	तङ्केत्	तङ्केताम्	तङ्केयुः
प०	तङ्कतु/तङ्कतात्	तङ्कताम्	तङ्कन्तु
ह्य०	अतङ्कत्	अतङ्कताम्	अतङ्कन्
अ०	अतङ्कीत्	अतङ्किष्टाम्	अतङ्किषुः
प०	ततङ्क	ततङ्कतुः	ततङ्कुः
आ०	तङ्क्यात्	तङ्क्यास्ताम्	तङ्क्यासुः
श्व०	तङ्किता	तङ्कितारौ	तङ्कितारः
भ०	तङ्किष्यति	तङ्किष्यतः	तङ्किष्यन्ति
क्रि०	अतङ्किष्यत्	अतङ्किष्यताम्	अतङ्किष्यन्

५३. शुक (शुक्) गतौ।

व०	शोकति	शोकतः	शोकन्ति
स०	शोकेत्	शोकेताम्	शोकेयुः
प०	शोकतु/शोकतात्	शोकताम्	शोकन्तु
ह्य०	अशोकत्	अशोकताम्	अशोकन्
अ०	अशोकीत्	अशोकिष्टाम्	अशोकिषुः
प०	शुशोक	शुशुकतुः	शुशुकुः
आ०	शुक्यात्	शुक्यास्ताम्	शुक्यासुः
श्व०	शोकिता	शोकितारौ	शोकितारः
भ०	शोकिष्यति	शोकिष्यतः	शोकिष्यन्ति
क्रि०	अशोकिष्यत्	अशोकिष्यताम्	अशोकिष्यन्

५४. बुक्क (बुक्क) लाषणे।

व०	बुक्कति	बुक्कतः	बुक्कन्ति
स०	बुक्केत्	बुक्केताम्	बुक्केयुः
प०	बुक्कतु/बुक्कतात्	बुक्कताम्	बुक्कन्तु
ह्य०	अबुक्कत्	अबुक्कताम्	अबुक्कन्
अ०	अबुक्कीत्	अबुक्किष्टाम्	अबुक्किषुः
प०	बुबुक्क	बुबुक्कतुः	बुबुक्कुः
आ०	बुक्क्यात्	बुक्क्यास्ताम्	बुक्क्यासुः
श्व०	बुक्किता	बुक्कितारौ	बुक्कितारः
भ०	बुक्किष्यति	बुक्किष्यतः	बुक्किष्यन्ति
क्रि०	अबुक्किष्यत्	अबुक्किष्यताम्	अबुक्किष्यन्

अथ खान्ता द्वाविंशतिः सेटश्च॥

५५. ओखृ शोषणालमर्थयोः।

व०	ओखति	ओखतः	ओखन्ति
	ओखसि	ओखथः	ओखथ
	ओखामि	ओखावः	ओखामः
स०	ओखेत्	ओखेताम्	ओखेयुः
	ओखेः	ओखेतम्	ओखेत
	ओखेयम्	ओखेव	ओखेम
प०	ओखतु/ओखतात्	ओखताम्	ओखन्तु
	ओख/ओखतात्	ओखतम्	ओखत
	ओखानि	ओखाव	ओखाम
ह्य०	औखत्	औखताम्	औखन्
	औखः	औखतम्	औखत
	औखम्	औखाव	औखाम
अ०	औखीत्	औखिष्टाम्	औखिषुः
	औखीः	औखिष्टम्	औखिष्ट
	औखिषम्	औखिष्व	औखिष्म
प०	ओखांचकार	ओखांचक्रतुः	ओखांचक्रुः
	ओखांचकर्थ	ओखांचक्रथुः	ओखांचक्र
	ओखांचकार/ओखांचकर	ओखांचकृव	ओखांचकृम
		तथा	
	ओखामास	ओखामासतुः	ओखामासुः
	ओखामासिथ	ओखामासथुः	ओखामास
	ओखामास	ओखामासिव	ओखामासिम
		तथा	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	ओखांबभूव	ओखांबभूवतुः	ओखांबभूवुः
	ओखांबभूविथ	ओखांबभूवथुः	ओखांबभूव
	ओखांबभूव	ओखांबभूविव	ओखांबभूविम
आ०	ओख्यात्	ओख्यास्ताम्	ओख्यासुः
	ओख्याः	ओख्यास्तम्	ओख्यास्त
	ओख्यासम्	ओख्यास्व	ओख्यास्म
श्व०	ओखिता	ओखितारौ	ओखितारः
	ओखितासि	ओखितास्थः	ओखितास्थ
	ओखितास्मि	ओखितास्वः	ओखितास्मः
भ०	ओखिष्यति	ओखिष्यतः	ओखिष्यन्ति
	ओखिष्यसि	ओखिष्यथः	ओखिष्यथ
	ओखिष्यामि	ओखिष्यावः	ओखिष्यामः
क्रि०	औखिष्यत्	औखिष्यताम्	औखिष्यन्
	औखिष्यः	औखिष्यतम्	औखिष्यत
	औखिष्यम्	औखिष्याव	औखिष्याम

५६. राखृ शोषणालमर्थयोः।

व०	राखति	राखतः	राखन्ति
	राखसि	राखथः	राखथ
	राखामि	राखावः	राखामः
स०	राखेत्	राखेताम्	राखेयुः
	राखेः	राखेतम्	राखेत
	राखेयम्	राखेव	राखेम
प०	राखतु/राखतात्	राखताम्	राखन्तु
	राख/राखतात्	राखतम्	राखत
	राखाणि	राखाव	राखाम
ह्य०	अराखत्	अराखताम्	अराखन्
	अराखः	अराखतम्	अराखत
	अराखम्	अराखाव	अराखाम
अ०	अराखीत्	अराखिष्टाम्	अराखिषुः
	अराखीः	अराखिष्टम्	अराखिष्ट
	अराखिषम्	अराखिष्व	अराखिष्म
प०	रराख	रराखतुः	रराखुः
	रराखिथ	रराखथुः	रराख
	रराख	रराखिव	रराखिम
आ०	राख्यात्	राख्यास्ताम्	राख्यासुः
	राख्याः	राख्यास्तम्	राख्यास्त
	राख्यासम्	राख्यास्व	राख्यास्म
श्व०	राखिता	राखितारौ	राखितारः
	राखितासि	राखितास्थः	राखितास्थ
	राखितास्मि	राखितास्वः	राखितास्मः
भ०	राखिष्यति	राखिष्यतः	राखिष्यन्ति
	राखिष्यसि	राखिष्यथः	राखिष्यथ
	राखिष्यामि	राखिष्यावः	राखिष्यामः
क्रि०	अराखिष्यत्	अराखिष्यताम्	अराखिष्यन्
	अराखिष्यः	अराखिष्यतम्	अराखिष्यत
	अराखिष्यम्	अराखिष्याव	अराखिष्याम

५७. लाखृ (लाख्) शोषणालमर्थयोः।।

व०	लाखति	लाखतः	लाखन्ति
स०	लाखेत्	लाखेताम्	लाखेयुः
प०	लाखतु/लाखतात्	लाखताम्	लाखन्तु
ह्य०	अलाखत्	अलाखताम्	अलाखन्
अ०	अलाखीत्	अलाखिष्टाम्	अलाखिषुः
प०	ललाख	ललाखतुः	ललाखुः
आ०	लाख्यात्	लाख्यास्ताम्	लाख्यासुः
श्व०	लाखिता	लाखितारौ	लाखितारः
भ०	लाखिष्यति	लाखिष्यतः	लाखिष्यन्ति
क्रि०	अलाखिष्यत्	अलाखिष्यताम्	अलाखिष्यन्

५८. द्राखृ (द्राख्) शोषणालमर्थयोः।

व०	द्राखति	द्राखतः	द्राखन्ति
स०	द्राखेत्	द्राखेताम्	द्राखेयुः
प०	द्राखतु/द्राखतात्	द्राखताम्	द्राखन्तु
ह्य०	अद्राखत्	अद्राखताम्	अद्राखन्
अ०	अद्राखीत्	अद्राखिष्टाम्	अद्राखिषुः
प०	दद्राख	द्राखतुः	दद्राखुः
आ०	द्राख्यात्	द्राख्यास्ताम्	द्राख्यासुः
श्व०	द्राखिता	द्राखितारौ	द्राखितारः
भ०	द्राखिष्यति	द्राखिष्यतः	द्राखिष्यन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रि०	अद्राखिष्यत्	अद्राखिष्यताम्	अद्राखिष्यन्

५९. ध्राखृ (ध्राख्) शोषणालमर्थयोः।

व०	ध्राखति	ध्राखतः	ध्राखन्ति
स०	ध्राखेत्	ध्राखेताम्	ध्राखेयुः
प०	ध्राखतु/ध्राखतात्	ध्राखताम्	ध्राखन्तु
ह्य०	अध्राखत्	अध्राखताम्	अध्राखन्
अ०	अध्राखीत्	अध्राखिष्टाम्	अध्राखिषुः
प०	दध्राख	दध्राखतुः	दध्राखुः
आ०	ध्राख्यात्	ध्राख्यास्ताम्	ध्राख्यासुः
श्व०	ध्राखिता	ध्राखितारौ	ध्राखितारः
भ०	ध्राखिष्यति	ध्राखिष्यतः	ध्राखिष्यन्ति
क्रि०	अध्राखिष्यत्	अध्राखिष्यताम्	अध्राखिष्यन्

६०. शाखृ (शाख्) व्याप्तौ।

व०	शाखति	शाखतः	शाखन्ति
	शाखसि	शाखथः	शाखथ
	शाखामि	शाखावः	शाखामः
स०	शाखेत्	शाखेताम्	शाखेयुः
	शाखेः	शाखेतम्	शाखेत
	शाखेयम्	शाखेव	शाखेम
प०	शाखतु/शाखतात्	शाखताम्	शाखन्तु
	शाख/शाखतात्	शाखतम्	शाखत
	शाखानि	शाखाव	शाखाम
ह्य०	अशाखत्	अशाखताम्	अशाखन्
	अशाखः	अशाखतम्	अशाखत
	अशाखम्	अशाखाव	अशाखाम
अ०	अशाखीत्	अशाखिष्टाम्	अशाखिषुः
	अशाखीः	अशाखिष्टम्	अशाखिष्ट
	अशाखिषम्	अशाखिष्व	अशाखिष्म
प०	शशाख	शशाखतुः	शशाखुः
	शशाखिथ	शशाखथुः	शशाख
	शशाख	शशाखिव	शशाखिम
आ०	शाख्यात्	शाख्यास्ताम्	शाख्यासुः
	शाख्याः	शाख्यास्तम्	शाख्यास्त
	शाख्यासम्	शाख्यास्व	शाख्यास्म
श्व०	शाखिता	शाखितारौ	शाखितारः
	शाखितासि	शाखितास्थः	शाखितास्थ
	शाखितास्मि	शाखितास्वः	शाखितास्मः
भ०	शाखिष्यति	शाखिष्यतः	शाखिष्यन्ति
	शाखिष्यसि	शाखिष्यथः	शाखिष्यथ
	शाखिष्यामि	शाखिष्यावः	शाखिष्यामः
क्रि०	अशाखिष्यत्	अशाखिष्यताम्	अशाखिष्यन्
	अशाखिष्यः	अशाखिष्यतम्	अशाखिष्यत
	अशाखिष्यम्	अशाखिष्याव	अशाखिष्याम

६१. श्लाखृ (श्लाख्) व्याप्तौ।

व०	श्लाखति	श्लाखतः	श्लाखन्ति
स०	श्लाखेत्	श्लाखेताम्	श्लाखेयुः
प०	श्लाखतु/श्लाखतात्	श्लाखताम्	श्लाखन्तु
ह्य०	अश्लाखत्	अश्लाखताम्	अश्लाखन्
अ०	अश्लाखीत्	अश्लाखिष्टाम्	अश्लाखिषुः
प०	शश्लाख	शश्लाखतुः	शश्लाखुः
आ०	श्लाख्यात्	श्लाख्यास्ताम्	श्लाख्यासुः
श्व०	श्लाखिता	श्लाखितारौ	श्लाखितारः
भ०	श्लाखिष्यति	श्लाखिष्यतः	श्लाखिष्यन्ति
क्रि०	अश्लाखिष्यत्	अश्लाखिष्यताम्	अश्लाखिष्यन्

६२. कक्खृ (कक्ख्) हसने।

व०	कक्खति	कक्खतः	कक्खन्ति
स०	कक्खेत्	कक्खेताम्	कक्खेयुः
प०	कक्खतु/कक्खतात्	कक्खताम्	कक्खन्तु
ह्य०	अकक्खत्	अकक्खताम्	अकक्खन्
अ०	अकक्खीत्	अकक्खिष्टाम्	अकक्खिषुः
प०	चकक्ख	चकक्खतुः	चकक्खुः
आ०	कक्ख्यात्	कक्ख्यास्ताम्	कक्ख्यासुः
श्व०	कक्खिता	कक्खितारौ	कक्खितारः
भ०	कक्खिष्यति	कक्खिष्यतः	कक्खिष्यन्ति
क्रि०	अकक्खिष्यत्	अकक्खिष्यताम्	अकक्खिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६३. उख (उख्) गतौ।

व०	ओखति	ओखतः	ओखन्ति
	ओखसि	ओखथः	ओखथ
	ओखामि	ओखावः	ओखामः
स०	ओखेत्	ओखेताम्	ओखेयुः
	ओखेः	ओखेतम्	ओखेत
	ओखेयम्	ओखेव	ओखेम
प०	ओखतु/ओखतात्	ओखताम्	ओखन्तु
	ओख/ओखतात्	ओखतम्	ओखत
	ओखानि	ओखाव	ओखाम
ह्य०	औखत्	औखताम्	औखन्
	औखः	औखतम्	औखत
	औखम्	औखाव	औखाम
अ०	औखीत्	औखिष्टाम्	औखिषुः
	औखीः	औखिष्टम्	औखिष्ट
	औखिषम्	औखिष्व	औखिष्म
प०	उवोख	ऊखतुः	ऊखुः
	उवोखिथ	ऊखथुः	ऊख
	उवोख	ऊखिव	ऊखिम
आ०	उख्यात्	उख्यास्ताम्	उख्यासुः
	उख्याः	उख्यास्तम्	उख्यास्त
	उख्यासम्	उख्यास्व	उख्यास्म
श्व०	ओखिता	ओखितारौ	ओखितारः
	ओखितासि	ओखितास्थः	ओखितास्थ
	ओखितास्मि	ओखितास्वः	ओखितास्मः
भ०	ओखिष्यति	ओखिष्यतः	ओखिष्यन्ति
	ओखिष्यसि	ओखिष्यथः	ओखिष्यथ
	ओखिष्यामि	ओखिष्यावः	ओखिष्यामः
क्रि०	औखिष्यत्	औखिष्यताम्	औखिष्यन्
	औखिष्यः	औखिष्यतम्	औखिष्यत
	औखिष्यम्	औखिष्याव	औखिष्याम

६४. नख (नख्) गतौ।

व०	नखति	नखतः	नखन्ति
स०	नखेत्	नखेताम्	नखेयुः
प०	नखतु/नखतात्	नखताम्	नखन्तु
ह्य०	अनखत्	अनखताम्	अनखन्
अ०	अनाखीत्	अनाखिष्टाम्	अनाखिषुः
		तथा	
	अनखीत्	अनखिष्टाम्	अनखिषुः
प०	ननाख	नेखतुः	नेखुः
आ०	नख्यात्	नख्यास्ताम्	नख्यासुः
श्व०	नखिता	नखितारौ	नखितारः
भ०	नखिष्यति	नखिष्यतः	नखिष्यन्ति
क्रि०	अनखिष्यत्	अनखिष्यताम्	अनखिष्यन्

६५. णख (णख्) गतौ।

व०	नखति	नखतः	नखन्ति
स०	नखेत्	नखेताम्	नखेयुः
प०	नखतु/नखतात्	नखताम्	नखन्तु
ह्य०	अनखत्	अनखताम्	अनखन्
अ०	अनाखीत्	अनाखिष्टाम्	अनाखिषुः
		तथा	
	अनखीत्	अनखिष्टाम्	अनखिषुः
प०	ननाख	नेखतुः	नेखुः
आ०	नख्यात्	नख्यास्ताम्	नख्यासुः
श्व०	नखिता	नखितारौ	नखितारः
भ०	नखिष्यति	नखिष्यतः	नखिष्यन्ति
क्रि०	अनखिष्यत्	अनखिष्यताम्	अनखिष्यन्

६६. वख (वख्) गतौ।

व०	वखति	वखतः	वखन्ति
स०	वखेत्	वखेताम्	वखेयुः
प०	वखतु/वखतात्	वखताम्	वखन्तु
ह्य०	अवखत्	अवखताम्	अवखन्
अ०	अवाखीत्	अवाखिष्टाम्	अवाखिषुः
		तथा	
	अवखीत्	अवखिष्टाम्	अवखिषुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	ववाख	ववखतुः	ववखुः
आ०	वख्यात्	वख्यास्ताम्	वख्यासुः
श्व०	वखिता	वखितारौ	वखितारः
भ०	वखिष्यति	वखिष्यतः	वखिष्यन्ति
क्रि०	अवखिष्यत्	अवखिष्यताम्	अवखिष्यन्

६७. मख (मख्) गतौ।

व०	मखति	मखतः	मखन्ति
स०	मखेत्	मखेताम्	मखेयुः
प०	मखतु/मखतात्	मखताम्	मखन्तु
ह्य०	अमखत्	अमखताम्	अमखन्
अ०	अमाखीत्	अमाखिष्टाम्	अमाखिषुः
		तथा	
	अमखीत्	अमखिष्टाम्	अमखिषुः
प०	ममाख	मेखतुः	मेखुः
आ०	मख्यात्	मख्यास्ताम्	मख्यासुः
श्व०	मखिता	मखितारौ	मखितारः
भ०	मखिष्यति	मखिष्यतः	मखिष्यन्ति
क्रि०	अमखिष्यत्	अमखिष्यताम्	अमखिष्यन्

६८. रख (रख्) गतौ।

व०	रखति	रखतः	रखन्ति
स०	रखेत्	रखेताम्	रखेयुः
प०	रखतु/रखतात्	रखताम्	रखन्तु
ह्य०	अरखत्	अरखताम्	अरखन्
अ०	अराखीत्	अराखिष्टाम्	अराखिषुः
		तथा	
	अरखीत्	अरखिष्टाम्	अरखिषुः
प०	रराख	रेखतुः	रेखुः
आ०	रख्यात्	रख्यास्ताम्	रख्यासुः
श्व०	रखिता	रखितारौ	रखितारः
भ०	रखिष्यति	रखिष्यतः	रखिष्यन्ति
क्रि०	अरखिष्यत्	अरखिष्यताम्	अरखिष्यन्

६९. लख (लख्) गतौ।

व०	लखति	लखतः	लखन्ति
स०	लखेत्	लखेताम्	लखेयुः
प०	लखतु/लखतात्	लखताम्	लखन्तु
ह्य०	अलखत्	अलखताम्	अलखन्
अ०	अलाखीत्	अलाखिष्टाम्	अलाखिषुः
		तथा	
	अलखीत्	अलखिष्टाम्	अलखिषुः
प०	ललाख	लेखतुः	लेखुः
आ०	लख्यात्	लख्यास्ताम्	लख्यासुः
श्व०	लखिता	लखितारौ	लखितारः
भ०	लखिष्यति	लखिष्यतः	लखिष्यन्ति
क्रि०	अलखिष्यत्	अलखिष्यताम्	अलखिष्यन्

७०. मखु (मङ्ख्) गतौ।

व०	मङ्खति	मङ्खतः	मङ्खन्ति
स०	मङ्खेत्	मङ्खेताम्	मङ्खेयुः
प०	मङ्खतु/मङ्खतात्	मङ्खताम्	मङ्खन्तु
ह्य०	अमङ्खत्	अमङ्खताम्	अमङ्खन्
अ०	अमङ्खीत्	अमङ्खिष्टाम्	अमङ्खिषुः
प०	ममङ्ख	ममङ्खतुः	ममङ्खुः
आ०	मङ्ख्यात्	मङ्ख्यास्ताम्	मङ्ख्यासुः
श्व०	मङ्खिता	मङ्खितारौ	मङ्खितारः
भ०	मङ्खिष्यति	मङ्खिष्यतः	मङ्खिष्यन्ति
क्रि०	अमङ्खिष्यत्	अमङ्खिष्यताम्	अमङ्खिष्यन्

७१. रखु (रङ्ख्) गतौ।

व०	रङ्खति	रङ्खतः	रङ्खन्ति
स०	रङ्खेत्	रङ्खेताम्	रङ्खेयुः
प०	रङ्खतु/रङ्खतात्	रङ्खताम्	रङ्खन्तु
ह्य०	अरङ्खत्	अरङ्खताम्	अरङ्खन्
अ०	अरङ्खीत्	अरङ्खिष्टाम्	अरङ्खिषुः
प०	ररङ्ख	ररङ्खतुः	ररङ्खुः
आ०	रङ्ख्यात्	रङ्ख्यास्ताम्	रङ्ख्यासुः
श्व०	रङ्खिता	रङ्खितारौ	रङ्खितारः
भ०	रङ्खिष्यति	रङ्खिष्यतः	रङ्खिष्यन्ति
क्रि०	अरङ्खिष्यत्	अरङ्खिष्यताम्	अरङ्खिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७२. लखु (लङ्ख्) गतौ।

व०	लङ्खति	लङ्खतः	लङ्खन्ति
स०	लङ्खेत्	लङ्खेताम्	लङ्खेयुः
प०	लङ्खतु/लङ्खतात्	लङ्खताम्	लङ्खन्तु
ह्य०	अलङ्खत्	अलङ्खताम्	अलङ्खन्
अ०	अलङ्खीत्	अलङ्खिष्टाम्	अलङ्खिषुः
प०	ललङ्ख	ललङ्खतुः	ललङ्खुः
आ०	लङ्ख्यात्	लङ्ख्यास्ताम्	लङ्ख्यासुः
श्व०	लङ्खिता	लङ्खितारौ	लङ्खितारः
भ०	लङ्खिष्यति	लङ्खिष्यतः	लङ्खिष्यन्ति
क्रि०	अलङ्खिष्यत्	अलङ्खिष्यताम्	अलङ्खिष्यन्

७३. रिखु (रिङ्ख्) गतौ।

व०	रिङ्खति	रिङ्खतः	रिङ्खन्ति
स०	रिङ्खेत्	रिङ्खेताम्	रिङ्खेयुः
प०	रिङ्खतु/रिङ्खतात्	रिङ्खताम्	रिङ्खन्तु
ह्य०	अरिङ्खत्	अरिङ्खताम्	अरिङ्खन्
अ०	अरिङ्खीत्	अरिङ्खिष्टाम्	अरिङ्खिषुः
प०	रिरिङ्ख	रिरिङ्खतुः	रिरिङ्खुः
आ०	रिङ्ख्यात्	रिङ्ख्यास्ताम्	रिङ्ख्यासुः
श्व०	रिङ्खिता	रिङ्खितारौ	रिङ्खितारः
भ०	रिङ्खिष्यति	रिङ्खिष्यतः	रिङ्खिष्यन्ति
क्रि०	अरिङ्खिष्यत्	अरिङ्खिष्यताम्	अरिङ्खिष्यन्

७४. इख (इख्) गतौ।

व०	एखति	एखतः	एखन्ति
स०	एखेत्	एखेताम्	एखेयुः
प०	एखतु/एखतात्	एखताम्	एखन्तु
ह्य०	ऐखत्	ऐखताम्	ऐखन्
अ०	ऐखीत्	ऐखिष्टाम्	ऐखिषुः
प०	इयेख	ईखतुः	ईखुः
आ०	इख्यात्	इख्यास्ताम्	इख्यासुः
श्व०	एखिता	एखितारौ	एखितारः
भ०	एखिष्यति	एखिष्यतः	एखिष्यन्ति
क्रि०	ऐखिष्यत्	ऐखिष्यताम्	ऐखिष्यन्

७५. इखु (इङ्ख्) गतौ।

व०	इङ्खति	इङ्खतः	इङ्खन्ति
स०	इङ्खेत्	इङ्खेताम्	इङ्खेयुः
प०	इङ्खतु/इङ्खतात्	इङ्खताम्	इङ्खन्तु
ह्य०	ऐङ्खत्	ऐङ्खताम्	ऐङ्खन्
अ०	ऐङ्खीत्	ऐङ्खिष्टाम्	ऐङ्खिषुः
प०	इङ्खाञ्चकार	इङ्खाञ्चक्रतुः	इङ्खाञ्चक्रुः
	इङ्खाञ्चकर्थ	इङ्खाञ्चक्रथुः	इङ्खाञ्चक्र
	इङ्खाञ्चकार/चकर	इङ्खाञ्चकृव	इङ्खाञ्चकृम
	इङ्खामास/इङ्खाम्बभूव		
आ०	इङ्ख्यात्	इङ्ख्यास्ताम्	इङ्ख्यासुः
श्व०	इङ्खिता	इङ्खितारौ	इङ्खितारः
भ०	इङ्खिष्यति	इङ्खिष्यतः	इङ्खिष्यन्ति
क्रि०	ऐङ्खिष्यत्	ऐङ्खिष्यताम्	ऐङ्खिष्यन्

७६. ईखु (ईङ्ख्) गतौ।

व०	ईङ्खति	ईङ्खतः	ईङ्खन्ति
स०	ईङ्खेत्	ईङ्खेताम्	ईङ्खेयुः
प०	ईङ्खतु/ईङ्खतात्	ईङ्खताम्	ईङ्खन्तु
ह्य०	ऐङ्खत्	ऐङ्खताम्	ऐङ्खन्
अ०	ऐङ्खीत्	ऐङ्खिष्टाम्	ऐङ्खिषुः
प०	ईङ्खाञ्चकार	ईङ्खाञ्चक्रतुः	ईङ्खाञ्चक्रुः
आ०	ईङ्ख्यात्	ईङ्ख्यास्ताम्	ईङ्ख्यासुः
श्व०	ईङ्खिता	ईङ्खितारौ	ईङ्खितारः
भ०	ईङ्खिष्यति	ईङ्खिष्यतः	ईङ्खिष्यन्ति
क्रि०	ऐङ्खिष्यत्	ऐङ्खिष्यताम्	ऐङ्खिष्यन्

।। अथ गान्ता अष्टादश सेटो वल्गवर्जा उदितश्च।।

७७. वल्ग (वल्ग्) गतौ।

व०	वल्गति	वल्गतः	वल्गन्ति
स०	वल्गेत्	वल्गेताम्	वल्गेयुः
प०	वल्गतु/वल्गतात्	वल्गताम्	वल्गन्तु

ह्य०	अवलात्	अवलाताम्	अवलान्
अ०	अवलीत्	अवल्गिष्टाम्	अवल्गिषुः
प०	ववल्ग	ववल्गतुः	ववल्गुः
आ०	वल्ग्यात्	वल्ग्यास्ताम्	वल्ग्यासुः
श्व०	वल्गिता	वल्गितारौ	वल्गितारः
भ०	वल्गिष्यति	वल्गिष्यतः	वल्गिष्यन्ति
क्रि०	अवल्गिष्यत्	अवल्गिष्यताम्	अवल्गिष्यन्

७८. रगु (रङ्ग्) गतौ।

व०	रङ्गति	रङ्गतः	रङ्गन्ति
स०	रङ्गेत्	रङ्गेताम्	रङ्गेयुः
प०	रङ्गतु/रङ्गतात्	रङ्गताम्	रङ्गन्तु
ह्य०	अरङ्गत्	अरङ्गताम्	अरङ्गन्
अ०	अरङ्गीत्	अरङ्गिष्टाम्	अरङ्गिषुः
प०	ररङ्ग	ररङ्गतुः	ररङ्गुः
आ०	रङ्ग्यात्	रङ्ग्यास्ताम्	रङ्ग्यासुः
श्व०	रङ्गिता	रङ्गितारौ	रङ्गितारः
भ०	रङ्गिष्यति	रङ्गिष्यतः	रङ्गिष्यन्ति
क्रि०	अरङ्गिष्यत्	अरङ्गिष्यताम्	अरङ्गिष्यन्

७९. लगु (लङ्ग्) गतौ।

व०	लङ्गति	लङ्गतः	लङ्गन्ति
स०	लङ्गेत्	लङ्गेताम्	लङ्गेयुः
प०	लङ्गतु/लङ्गतात्	लङ्गताम्	लङ्गन्तु
ह्य०	अलङ्गत्	अलङ्गताम्	अलङ्गन्
अ०	अलङ्गीत्	अलङ्गिष्टाम्	अलङ्गिषुः
प०	ललङ्ग	ललङ्गतुः	ललङ्गुः
आ०	लङ्ग्यात्	लङ्ग्यास्ताम्	लङ्ग्यासुः
श्व०	लङ्गिता	लङ्गितारौ	लङ्गितारः
भ०	लङ्गिष्यति	लङ्गिष्यतः	लङ्गिष्यन्ति
क्रि०	अलङ्गिष्यत्	अलङ्गिष्यताम्	अलङ्गिष्यन्

८०. तगु (तङ्ग्) गतौ।

व०	तङ्गति	तङ्गतः	तङ्गन्ति
स०	तङ्गेत्	तङ्गेताम्	तङ्गेयुः
प०	तङ्गतु/तङ्गतात्	तङ्गताम्	तङ्गन्तु
ह्य०	अतङ्गत्	अतङ्गताम्	अतङ्गन्
अ०	अतङ्गीत्	अतङ्गिष्टाम्	अतङ्गिषुः
प०	ततङ्ग	ततङ्गतुः	ततङ्गुः
आ०	तङ्ग्यात्	तङ्ग्यास्ताम्	तङ्ग्यासुः
श्व०	तङ्गिता	तङ्गितारौ	तङ्गितारः
भ०	तङ्गिष्यति	तङ्गिष्यतः	तङ्गिष्यन्ति
क्रि०	अतङ्गिष्यत्	अतङ्गिष्यताम्	अतङ्गिष्यन्

८१. श्रगु (श्रङ्ग्) गतौ।

व०	श्रङ्गति	श्रङ्गतः	श्रङ्गन्ति
स०	श्रङ्गेत्	श्रङ्गेताम्	श्रङ्गेयुः
प०	श्रङ्गतु/श्रङ्गतात्	श्रङ्गताम्	श्रङ्गन्तु
ह्य०	अश्रङ्गत्	अश्रङ्गताम्	अश्रङ्गन्
अ०	अश्रङ्गीत्	अश्रङ्गिष्टाम्	अश्रङ्गिषुः
प०	शश्रङ्ग	शश्रङ्गतुः	शश्रङ्गुः
आ०	श्रङ्ग्यात्	श्रङ्ग्यास्ताम्	श्रङ्ग्यासुः
श्व०	श्रङ्गिता	श्रङ्गितारौ	श्रङ्गितारः
भ०	श्रङ्गिष्यति	श्रङ्गिष्यतः	श्रङ्गिष्यन्ति
क्रि०	अश्रङ्गिष्यत्	अश्रङ्गिष्यताम्	अश्रङ्गिष्यन्

८२. श्लगु (श्लङ्ग्) गतौ।

व०	श्लङ्गति	श्लङ्गतः	श्लङ्गन्ति
स०	श्लङ्गेत्	श्लङ्गेताम्	श्लङ्गेयुः
प०	श्लङ्गतु/श्लङ्गतात्	श्लङ्गताम्	श्लङ्गन्तु
ह्य०	अश्लङ्गत्	अश्लङ्गताम्	अश्लङ्गन्
अ०	अश्लङ्गीत्	अश्लङ्गिष्टाम्	अश्लङ्गिषुः
प०	शश्लङ्ग	शश्लङ्गतुः	शश्लङ्गुः
आ०	श्लङ्ग्यात्	श्लङ्ग्यास्ताम्	श्लङ्ग्यासुः
श्व०	श्लङ्गिता	श्लङ्गितारौ	श्लङ्गितारः
भ०	श्लङ्गिष्यति	श्लङ्गिष्यतः	श्लङ्गिष्यन्ति
क्रि०	अश्लङ्गिष्यत्	अश्लङ्गिष्यताम्	अश्लङ्गिष्यन्

८३. अगु (अङ्ग्) गतौ।

व०	अङ्गति	अङ्गतः	अङ्गन्ति
स०	अङ्गेत्	अङ्गेताम्	अङ्गेयुः
प०	अङ्गतु/अङ्गतात्	अङ्गताम्	अङ्गन्तु
ह्य०	आङ्गत्	आङ्गताम्	आङ्गन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	आङ्गीत्	आङ्गिष्टाम्	आङ्गिषुः
प०	आनङ्ग	आनङ्गतुः	आनङ्गुः
आ०	अङ्ग्यात्	अङ्ग्यास्ताम्	अङ्ग्यासुः
श्व०	अङ्गिता	अङ्गितारौ	अङ्गितारः
भ०	अङ्गिष्यति	अङ्गिष्यतः	अङ्गिष्यन्ति
क्रि०	आङ्गिष्यत्	आङ्गिष्यताम्	आङ्गिष्यन्

८४. वगु (वङ्ग्) गतौ।

व०	वङ्गति	वङ्गतः	वङ्गन्ति
स०	वङ्गेत्	वङ्गेताम्	वङ्गेयुः
प०	वङ्गतु/वङ्गतात्	वङ्गताम्	वङ्गन्तु
ह्य०	अवङ्गत्	अवङ्गताम्	अवङ्गन्
अ०	अवङ्गीत्	अवङ्गिष्टाम्	अवङ्गिषुः
प०	ववङ्ग	ववङ्गतुः	ववङ्गुः
आ०	वङ्ग्यात्	वङ्ग्यास्ताम्	वङ्ग्यासुः
श्व०	वङ्गिता	वङ्गितारौ	वङ्गितारः
भ०	वङ्गिष्यति	वङ्गिष्यतः	वङ्गिष्यन्ति
क्रि०	अवङ्गिष्यत्	अवङ्गिष्यताम्	अवङ्गिष्यन्

८५. मगु (मङ्ग्) गतौ।

व०	मङ्गति	मङ्गतः	मङ्गन्ति
स०	मङ्गेत्	मङ्गेताम्	मङ्गेयुः
प०	मङ्गतु/मङ्गतात्	मङ्गताम्	मङ्गन्तु
ह्य०	अमङ्गत्	अमङ्गताम्	अमङ्गन्
अ०	अमङ्गीत्	अमङ्गिष्टाम्	अमङ्गिषुः
प०	ममङ्ग	ममङ्गतुः	ममङ्गुः
आ०	मङ्ग्यात्	मङ्ग्यास्ताम्	मङ्ग्यासुः
श्व०	मङ्गिता	मङ्गितारौ	मङ्गितारः
भ०	मङ्गिष्यति	मङ्गिष्यतः	मङ्गिष्यन्ति
क्रि०	अमङ्गिष्यत्	अमङ्गिष्यताम्	अमङ्गिष्यन्

८६. स्वगु (स्वङ्ग्) गतौ।

व०	स्वङ्गति	स्वङ्गतः	स्वङ्गन्ति
स०	स्वङ्गेत्	स्वङ्गेताम्	स्वङ्गेयुः
प०	स्वङ्गतु/स्वङ्गतात्	स्वङ्गताम्	स्वङ्गन्तु
ह्य०	अस्वङ्गत्	अस्वङ्गताम्	अस्वङ्गन्
अ०	अस्वङ्गीत्	अस्वङ्गिष्टाम्	अस्वङ्गिषुः
प०	सस्वङ्ग	सस्वङ्गतुः	सस्वङ्गुः
आ०	स्वङ्ग्यात्	स्वङ्ग्यास्ताम्	स्वङ्ग्यासुः
श्व०	स्वङ्गिता	स्वङ्गितारौ	स्वङ्गितारः
भ०	स्वङ्गिष्यति	स्वङ्गिष्यतः	स्वङ्गिष्यन्ति
क्रि०	अस्वङ्गिष्यत्	अस्वङ्गिष्यताम्	अस्वङ्गिष्यन्

८७. इगु (इङ्ग्) गतौ।

व०	इङ्गति	इङ्गतः	इङ्गन्ति
स०	इङ्गेत्	इङ्गेताम्	इङ्गेयुः
प०	इङ्गतु/इङ्गतात्	इङ्गताम्	इङ्गन्तु
ह्य०	ऐङ्गत्	ऐङ्गताम्	ऐङ्गन्
अ०	ऐङ्गीत्	ऐङ्गिष्टाम्	ऐङ्गिषुः
प०	इङ्गाञ्चकार	इङ्गाञ्चक्रतुः	इङ्गाञ्चक्रुः
आ०	इङ्ग्यात्	इङ्ग्यास्ताम्	इङ्ग्यासुः
श्व०	इङ्गिता	इङ्गितारौ	इङ्गितारः
भ०	इङ्गिष्यति	इङ्गिष्यतः	इङ्गिष्यन्ति
क्रि०	ऐङ्गिष्यत्	ऐङ्गिष्यताम्	ऐङ्गिष्यन्

८८. उगु (उङ्ग्) गतौ।

व०	उङ्गति	उङ्गतः	उङ्गन्ति
स०	उङ्गेत्	उङ्गेताम्	उङ्गेयुः
प०	उङ्गतु/उङ्गतात्	उङ्गताम्	उङ्गन्तु
ह्य०	औङ्गत्	औङ्गताम्	औङ्गन्
अ०	औङ्गीत्	औङ्गिष्टाम्	औङ्गिषुः
प०	उङ्गाञ्चकार	उङ्गाञ्चक्रतुः	उङ्गाञ्चक्रुः
आ०	उङ्ग्यात्	उङ्ग्यास्ताम्	उङ्ग्यासुः
श्व०	उङ्गिता	उङ्गितारौ	उङ्गितारः
भ०	उङ्गिष्यति	उङ्गिष्यतः	उङ्गिष्यन्ति
क्रि०	औङ्गिष्यत्	औङ्गिष्यताम्	औङ्गिष्यन्

८९. रिगु (रिङ्ग्) गतौ।

व०	रिङ्गति	रिङ्गतः	रिङ्गन्ति
स०	रिङ्गेत्	रिङ्गेताम्	रिङ्गेयुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	रिङ्गतु/रिङ्गतात्	रिङ्गताम्	रिङ्गन्तु
ह्य०	अरिङ्गत्	अरिङ्गताम्	अरिङ्गन्
अ०	अरिङ्गीत्	अरिङ्गिष्टाम्	अरिङ्गिषुः
प०	रिरिङ्ग	रिरिङ्गतुः	रिरिङ्गुः
आ०	रिङ्ग्यात्	रिङ्ग्यास्ताम्	रिङ्ग्यासुः
श्व०	रिङ्गिता	रिङ्गितारौ	रिङ्गितारः
भ०	रिङ्गिष्यति	रिङ्गिष्यतः	रिङ्गिष्यन्ति
क्रि०	अरिङ्गिष्यत्	अरिङ्गिष्यताम्	अरिङ्गिष्यन्

१०. लिगु (लिङ्ग्) गतौ।

व०	लिङ्गति	लिङ्गतः	लिङ्गन्ति
स०	लिङ्गेत्	लिङ्गेताम्	लिङ्गेयुः
प०	लिङ्गतु/लिङ्गतात्	लिङ्गताम्	लिङ्गन्तु
ह्य०	अलिङ्गत्	अलिङ्गताम्	अलिङ्गन्
अ०	अलिङ्गीत्	अलिङ्गिष्टाम्	अलिङ्गिषुः
प०	लिलिङ्ग	लिलिङ्गतुः	लिलिङ्गुः
आ०	लिङ्ग्यात्	लिङ्ग्यास्ताम्	लिङ्ग्यासुः
श्व०	लिङ्गिता	लिङ्गितारौ	लिङ्गितारः
भ०	लिङ्गिष्यति	लिङ्गिष्यतः	लिङ्गिष्यन्ति
क्रि०	अलिङ्गिष्यत्	अलिङ्गिष्यताम्	अलिङ्गिष्यन्

११. त्वगु (त्वङ्ग्) कम्पने च चकाराद्गतौ। स्थितस्यैव चलनं कम्पनम्।

व०	त्वङ्गति	त्वङ्गतः	त्वङ्गन्ति
	त्वङ्गसि	त्वङ्गथः	त्वङ्गथ
	त्वङ्गामि	त्वङ्गावः	त्वङ्गामः
स०	त्वङ्गेत्	त्वङ्गेताम्	त्वङ्गेयुः
	त्वङ्गेः	त्वङ्गेतम्	त्वङ्गेत
	त्वङ्गेयम्	त्वङ्गेव	त्वङ्गेम
प०	त्वङ्गतु/त्वङ्गतात्	त्वङ्गताम्	त्वङ्गन्तु
	त्वङ्ग/त्वङ्गतात्	त्वङ्गतम्	त्वङ्गत
	त्वङ्गानि	त्वङ्गाव	त्वङ्गाम
ह्य०	अत्वङ्गत्	अत्वङ्गताम्	अत्वङ्गन्
	अत्वङ्गः	अत्वङ्गतम्	अत्वङ्गत
	अत्वङ्गम्	अत्वङ्गाव	अत्वङ्गाम
अ०	अत्वङ्गीत्	अत्वङ्गिष्टाम्	अत्वङ्गिषुः
	अत्वङ्गीः	अत्वङ्गिष्टम्	अत्वङ्गिष्ट
	अत्वङ्गिषम्	अत्वङ्गिष्व	अत्वङ्गिष्म
प०	तत्वङ्ग	तत्वङ्गतुः	तत्वङ्गुः
	तत्वङ्गिथ	तत्वङ्गथुः	तत्वङ्ग
	तत्वङ्ग	तत्वङ्गिव	तत्वङ्गिम
आ०	त्वङ्ग्यात्	त्वङ्ग्यास्ताम्	त्वङ्ग्यासुः
	त्वङ्ग्याः	त्वङ्ग्यास्तम्	त्वङ्ग्यास्त
	त्वङ्ग्यासम्	त्वङ्ग्यास्व	त्वङ्ग्यास्म
श्व०	त्वङ्गिता	त्वङ्गितारौ	त्वङ्गितारः
	त्वङ्गितासि	त्वङ्गितास्थः	त्वङ्गितास्थ
	त्वङ्गितास्मि	त्वङ्गितास्वः	त्वङ्गितास्मः
भ०	त्वङ्गिष्यति	त्वङ्गिष्यतः	त्वङ्गिष्यन्ति
	त्वङ्गिष्यसि	त्वङ्गिष्यथः	त्वङ्गिष्यथ
	त्वङ्गिष्यामि	त्वङ्गिष्यावः	त्वङ्गिष्यामः
क्रि०	अत्वङ्गिष्यत्	अत्वङ्गिष्यताम्	अत्वङ्गिष्यन्
	अत्वङ्गिष्यः	अत्वङ्गिष्यतम्	अत्वङ्गिष्यत
	अत्वङ्गिष्यम्	अत्वङ्गिष्याव	अत्वङ्गिष्याम

१२. युगु (युङ्ग्) वर्जने।

व०	युङ्गति	युङ्गतः	युङ्गन्ति
	युङ्गसि	युङ्गथः	युङ्गथ
	युङ्गामि	युङ्गावः	युङ्गामः
स०	युङ्गेत्	युङ्गेताम्	युङ्गेयुः
	युङ्गेः	युङ्गेतम्	युङ्गेत
	युङ्गेयम्	युङ्गेव	युङ्गेम
प०	युङ्गतु/युङ्गतात्	युङ्गताम्	युङ्गन्तु
	युङ्ग/युङ्गतात्	युङ्गतम्	युङ्गत
	युङ्गानि	युङ्गाव	युङ्गाम
ह्य०	अयुङ्गत्	अयुङ्गताम्	अयुङ्गन्
	अयुङ्गः	अयुङ्गतम्	अयुङ्गत
	अयुङ्गम्	अयुङ्गाव	अयुङ्गाम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	अयुङ्गीत्	अयुङ्गिष्टाम्	अयुङ्गिषुः
	अयुङ्गीः	अयुङ्गिष्टम्	अयुङ्गिष्ट
	अयुङ्गिषम्	अयुङ्गिष्व	अयुङ्गिष्म
प०	युयुङ्ग	युयुङ्गतुः	युयुङ्गुः
	युयुङ्गिथ	युयुङ्गथुः	युयुङ्ग
	युयुङ्ग	युयुङ्गिव	युयुङ्गिम
आ०	युङ्ग्यात्	युङ्ग्यास्ताम्	युङ्ग्यासुः
	युङ्ग्याः	युङ्ग्यास्तम्	युङ्ग्यास्त
	युङ्ग्यासम्	युङ्ग्यास्व	युङ्ग्यास्म
श्व०	युङ्गिता	युङ्गितारौ	युङ्गितारः
	युङ्गितासि	युङ्गितास्थः	युङ्गितास्थ
	युङ्गितास्मि	युङ्गितास्वः	युङ्गितास्मः
भ०	युङ्गिष्यति	युङ्गिष्यतः	युङ्गिष्यन्ति
	युङ्गिष्यसि	युङ्गिष्यथः	युङ्गिष्यथ
	युङ्गिष्यामि	युङ्गिष्यावः	युङ्गिष्यामः
क्रि०	अयुङ्गिष्यत्	अयुङ्गिष्यताम्	अयुङ्गिष्यन्
	अयुङ्गिष्यः	अयुङ्गिष्यतम्	अयुङ्गिष्यत
	अयुङ्गिष्यम्	अयुङ्गिष्याव	अयुङ्गिष्याम

१३. जुगु (जुङ्ग्) वर्जने।

व०	जुङ्गति	जुङ्गतः	जुङ्गन्ति
स०	जुङ्गेत्	जुङ्गेताम्	जुङ्गेयुः
प०	जुङ्गतु/जुङ्गतात्	जुङ्गताम्	जुङ्गन्तु
ह्य०	अजुङ्गत्	अजुङ्गताम्	अजुङ्गन्
अ०	अजुङ्गीत्	अजुङ्गिष्टाम्	अजुङ्गिषुः
प०	जुजुङ्ग	जुजुङ्गतुः	जुजुङ्गुः
आ०	जुङ्ग्यात्	जुङ्ग्यास्ताम्	जुङ्ग्यासुः
श्व०	जुङ्गिता	जुङ्गितारौ	जुङ्गितारः
भ०	जुङ्गिष्यति	जुङ्गिष्यतः	जुङ्गिष्यन्ति
क्रि०	अजुङ्गिष्यत्	अजुङ्गिष्यताम्	अजुङ्गिष्यन्

१४. वुगु (वुङ्ग्) वर्जने।

व०	वुङ्गति	वुङ्गतः	वुङ्गन्ति
स०	वुङ्गेत्	वुङ्गेताम्	वुङ्गेयुः
प०	वुङ्गतु/वुङ्गतात्	वुङ्गताम्	वुङ्गन्तु
ह्य०	अवुङ्गत्	अवुङ्गताम्	अवुङ्गन्
अ०	अवुङ्गीत्	अवुङ्गिष्टाम्	अवुङ्गिषुः
प०	वुवुङ्ग	वुवुङ्गतुः	वुवुङ्गुः
आ०	वुङ्ग्यात्	वुङ्ग्यास्ताम्	वुङ्ग्यासुः
श्व०	वुङ्गिता	वुङ्गितारौ	वुङ्गितारः
भ०	वुङ्गिष्यति	वुङ्गिष्यतः	वुङ्गिष्यन्ति
क्रि०	अवुङ्गिष्यत्	अवुङ्गिष्यताम्	अवुङ्गिष्यन्

॥अथ घान्ताश्चत्वारः सेटो गग्घवर्जा उदितश्च॥

१५. गग्घ (गग्घ्) हसने।

व०	गग्घति	गग्घतः	गग्घन्ति
	गग्घसि	गग्घथः	गग्घथ
	गग्घामि	गग्घावः	गग्घामः
स०	गग्घेत्	गग्घेताम्	गग्घेयुः
	गग्घेः	गग्घेतम्	गग्घेत
	गग्घेयम्	गग्घेव	गग्घेम
प०	गग्घतु/गग्घतात्	गग्घताम्	गग्घन्तु
	गग्घ/गग्घतात्	गग्घतम्	गग्घत
	गग्घानि	गग्घाव	गग्घाम
ह्य०	अगग्घत्	अगग्घताम्	अगग्घन्
	अगग्घः	अगग्घतम्	अगग्घत
	अगग्घम्	अगग्घाव	अगग्घाम
अ०	अगग्घीत्	अगग्घिष्टाम्	अगग्घिषुः
	अगग्घीः	अगग्घिष्टम्	अगग्घिष्ट
	अगग्घिषम्	अगग्घिष्व	अगग्घिष्म
प०	जगग्घ	जगग्घतुः	जगग्घुः
	जगग्घिथ	जगग्घथुः	जगग्घ
	जगग्घ	जगग्घिव	जगग्घिम
आ०	गग्घ्यात्	गग्घ्यास्ताम्	गग्घ्यासुः
	गग्घ्याः	गग्घ्यास्तम्	गग्घ्यास्त
	गग्घ्यासम्	गग्घ्यास्व	गग्घ्यास्म
श्व०	गग्घिता	गग्घितारौ	गग्घितारः
	गग्घितासि	गग्घितास्थः	गग्घितास्थ
	गग्घितास्मि	गग्घितास्वः	गग्घितास्मः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	गग्घिष्यति	गग्घिष्यतः	गग्घिष्यन्ति
	गग्घिष्यसि	गग्घिष्यथः	गग्घिष्यथ
	गग्घिष्यामि	गग्घिष्यावः	गग्घिष्यामः
क्रि०	अगग्घिष्यत्	अगग्घिष्यताम्	अगग्घिष्यन्
	अगग्घिष्य	अगग्घिष्यतम्	अगग्घिष्यत
	अगग्घिष्यम्	अगग्घिष्याव	अगग्घिष्याम

१६. दघु (दङ्घ्) पालने।

वर्जनेऽपीत्यन्ये।

व०	दङ्घति	दङ्घतः	दङ्घन्ति
स०	दङ्घेत्	दङ्घेताम्	दङ्घेयुः
प०	दङ्घतु/दङ्घतात्	दङ्घताम्	दङ्घन्तु
ह्य०	अदङ्घत्	अदङ्घताम्	अदङ्घन्
अ०	अदङ्घीत्	अदङ्घिष्टाम्	अदङ्घिषुः
प०	ददङ्घ	ददङ्घतुः	ददङ्घुः
आ०	दङ्घ्यात्	दङ्घ्यास्ताम्	दङ्घ्यासुः
श्व०	दङ्घिता	दङ्घितारौ	दङ्घितारः
भ०	दङ्घिष्यति	दङ्घिष्यतः	दङ्घिष्यन्ति
क्रि०	अदङ्घिष्यत्	अदङ्घिष्यताम्	अदङ्घिष्यन्

१७. शिघु (शिङ्घ्) आघ्राणे।[1]

व०	शिङ्घति	शिङ्घतः	शिङ्घन्ति
स०	शिङ्घेत्	शिङ्घेताम्	शिङ्घेयुः
प०	शिङ्घतु/शिङ्घतात्	शिङ्घताम्	शिङ्घन्तु
ह्य०	अशिङ्घत्	अशिङ्घताम्	अशिङ्घन्
अ०	अशिङ्घीत्	अशिङ्घिष्टाम्	अशिङ्घिषुः
प०	शिशिङ्घ	शिशिङ्घतुः	शिशिङ्घुः
आ०	शिङ्घ्यात्	शिङ्घ्यास्ताम्	शिङ्घ्यासुः
श्व०	शिङ्घिता	शिङ्घितारौ	शिङ्घितारः
भ०	शिङ्घिष्यति	शिङ्घिष्यतः	शिङ्घिष्यन्ति
क्रि०	अशिङ्घिष्यत्	अशिङ्घिष्यताम्	अशिङ्घिष्यन्

१८. लघु-(लङ्घ्) गतौ।

व०	लङ्घति	लङ्घतः	लङ्घन्ति
स०	लङ्घेत्	लङ्घेताम्	लङ्घेयुः
प०	लङ्घतु/लङ्घतात्	लङ्घताम्	लङ्घन्तु
ह्य०	अलङ्घत्	अलङ्घताम्	अलङ्घन्
अ०	अलङ्घीत्	अलङ्घिष्टाम्	अलङ्घिषुः
प०	ललङ्घ	ललङ्घतुः	ललङ्घुः
आ०	लङ्घ्यात्	लङ्घ्यास्ताम्	लङ्घ्यासुः
श्व०	लङ्घिता	लङ्घितारौ	लङ्घितारः
भ०	लङ्घिष्यति	लङ्घिष्यतः	लङ्घिष्यन्ति
क्रि०	अलङ्घिष्यत्	अलङ्घिष्यताम्	अलङ्घिष्यन्

॥अथ चान्ता विंशतिः सेटश्च॥

१९. शुच (शुच्) शोके।

व०	शोचति	शोचतः	शोचन्ति
	शोचसि	शोचथः	शोचथ
	शोचामि	शोचावः	शोचामः
स०	शोचेत्	शोचेताम्	शोचेयुः
	शोचेः	शोचेतम्	शोचेत
	शोचेयम्	शोचेव	शोचेम
प०	शोचतु/शोचतात्	शोचताम्	शोचन्तु
	शोच/शोचतात्	शोचतम्	शोचत
	शोचानि	शोचाव	शोचाम
ह्य०	अशोचत्	अशोचताम्	अशोचन्
	अशोचः	अशोचतम्	अशोचत
	अशोचम्	अशोचाव	अशोचाम
अ०	अशोचीत्	अशोचिष्टाम्	अशोचिषुः
	अशोचीः	अशोचिष्टम्	अशोचिष्ट
	अशोचिषम्	अशोचिष्व	अशोचिष्म
प०	शुशोच	शुशुचतुः	शुशुचुः
	शुशोचिथ	शुशुचथुः	शुशुच
	शुशोच	शुशुचिव	शुशुचिम
आ०	शुच्यात्	शुच्यास्ताम्	शुच्यासुः
	शुच्याः	शुच्यास्तम्	शुच्यास्त
	शुच्यासम्	शुच्यास्व	शुच्यास्म

१. आघ्राणं गन्धोपादानम्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	शोचिता	शोचितारौ	शोचितार:
	शोचितासि	शोचितास्थ:	शोचितास्थ
	शोचितास्मि	शोचितास्व:	शोचितास्म:
भ०	शोचिष्यति	शोचिष्यत:	शोचिष्यन्ति
	शोचिष्यसि	शोचिष्यथ:	शोचिष्यथ
	शोचिष्यामि	शोचिष्याव:	शोचिष्याम:
क्रि०	अशोचिष्यत्	अशोचिष्यताम्	अशोचिष्यन्
	अशोचिष्य:	अशोचिष्यतम्	अशोचिष्यत
	अशोचिष्यम्	अशोचिष्याव	अशोचिष्याम

१०० कुच (कुच्) शब्दे तारे। तार उच्च इत्यर्थ:॥

व०	कोचति	कोचत:	कोचन्ति
स०	कोचेत्	कोचेताम्	कोचेयु:
प०	कोचतु/कोचतात्	कोचताम्	कोचन्तु
ह्य०	अकोचत्	अकोचताम्	अकोचन्
अ०	अकोचीत्	अकोचिष्टाम्	अकोचिषु:
प०	चुकोच	चुकुचतु:	चुकुचु:
आ०	कुच्यात्	कुच्यास्ताम्	कुच्यासु:
श्व०	कोचिता	कोचितारौ	कोचितार:
भ०	कोचिष्यति	कोचिष्यत:	कोचिष्यन्ति
क्रि०	अकोचिष्यत्	अकोचिष्यताम्	अकोचिष्यन्

१०१. क्रुञ्च (क्रुञ्च्) गतौ।

व०	क्रुञ्चति	क्रुञ्चत:	क्रुञ्चन्ति
स०	क्रुञ्चेत्	क्रुञ्चेताम्	क्रुञ्चेयु:
प०	क्रुञ्चतु/क्रुञ्चतात्	क्रुञ्चताम्	क्रुञ्चन्तु
ह्य०	अक्रुञ्चत्	अक्रुञ्चताम्	अक्रुञ्चन्
अ०	अक्रुञ्चीत्	अक्रुञ्चिष्टाम्	अक्रुञ्चिषु:
प०	चुक्रुञ्च	चुक्रुञ्चतु:	चुक्रुञ्चु:
आ०	क्रुच्यात्	क्रुच्यास्ताम्	क्रुच्यासु:
श्व०	क्रुञ्चिता	क्रुञ्चितारौ	क्रुञ्चितार:
भ०	क्रुञ्चिष्यति	क्रुञ्चिष्यत:	क्रुञ्चिष्यन्ति
क्रि०	अक्रुञ्चिष्यत्	अक्रुञ्चिष्यताम्	अक्रुञ्चिष्यन्

१०२. कुञ्च (कुञ्च्) च कौटिल्याल्पीभावयो:।[१]

व०	कुञ्चति	कुञ्चत:	कुञ्चन्ति
स०	कुञ्चेत्	कुञ्चेताम्	कुञ्चेयु:
प०	कुञ्चतु/कुञ्चतात्	कुञ्चताम्	कुञ्चन्तु
ह्य०	अकुञ्चत्	अकुञ्चताम्	अकुञ्चन्
अ०	अकुञ्चीत्	अकुञ्चिष्टाम्	अकुञ्चिषु:
प०	चुकुञ्च	चुकुञ्चतु:	चुकुञ्चु:
आ०	कुच्यात्	कुच्यास्ताम्	कुच्यासु:
श्व०	कुञ्चिता	कुञ्चितारौ	कुञ्चितार:
भ०	कुञ्चिष्यति	कुञ्चिष्यत:	कुञ्चिष्यन्ति
क्रि०	अकुञ्चिष्यत्	अकुञ्चिष्यताम्	अकुञ्चिष्यत्

१०३. लुञ्च (लुञ्च्) अपनयने। अनुपयुक्तापासने।

व०	लुञ्चति	लुञ्चत:	लुञ्चन्ति
स०	लुञ्चेत्	लुञ्चेताम्	लुञ्चेयु:
प०	लुञ्चतु/लुञ्चतात्	लुञ्चताम्	लुञ्चन्तु
ह्य०	अलुञ्चत्	अलुञ्चताम्	अलुञ्चन्
अ०	अलुञ्चीत्	अलुञ्चिष्टाम्	अलुञ्चिषु:
प०	लुलुञ्च	लुलुञ्चतु:	लुलुञ्चु:
आ०	लुच्यात्	लुच्यास्ताम्	लुच्यासु:
श्व०	लुञ्चिता	लुञ्चितारौ	लुञ्चितार:
भ०	लुञ्चिष्यति	लुञ्चिष्यत:	लुञ्चिष्यन्ति
क्रि०	अलुञ्चिष्यत्	अलुञ्चिष्यताम्	अलुञ्चिष्यन्

१०४. अर्च (अर्च्) पूजायाम्।

व०	अर्चति	अर्चत:	अर्चन्ति
स०	अर्चेत्	अर्चेताम्	अर्चेयु:
प०	अर्चतु/अर्चतात्	अर्चताम्	अर्चन्तु
ह्य०	आर्चत्	आर्चताम्	आर्चन्
अ०	आर्चीत्	आर्चिष्टाम्	आर्चिषु:
प०	आनर्च	आनर्चतु:	आनर्चु:

१ चकार: क्रुञ्चोऽनुकर्षणार्थ: तेन कुञ्चस्यैर्थ्यं सिद्धं गतेरन्यस्य वा कौटिल्ये द्रव्यस्याल्पीभावे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	अर्च्यात्	अर्च्यास्ताम्	अर्च्यासुः
श्व०	अर्चिता	अर्चितारौ	अर्चितारः
भ०	अर्चिष्यति	अर्चिष्यतः	अर्चिष्यन्ति
क्रि०	आर्चिष्यत्	आर्चिष्यताम्	आर्चिष्यन्

१०५. अञ्चू (अञ्च्) गतौ।

व०	अञ्चति	अञ्चतः	अञ्चन्ति
स०	अञ्चेत्	अञ्चेताम्	अञ्चेयुः
प०	अञ्चतु/अञ्चतात्	अञ्चताम्	अञ्चन्तु
ह्य०	आञ्चत्	आञ्चताम्	आञ्चन्
अ०	आञ्चीत्	आञ्चिष्टाम्	आञ्चिषुः
प०	आनञ्च	आनञ्चतुः	आनञ्चुः
आ०	अच्यात्	अच्यास्ताम्	अच्यासुः
पूजायां विषये			
	अञ्च्यात्	अञ्च्यास्ताम्	अञ्च्यासुः
श्व०	अञ्चिता	अञ्चितारौ	अञ्चितारः
भ०	अञ्चिष्यति	अञ्चिष्यतः	अञ्चिष्यन्ति
क्रि०	आञ्चिष्यत्	आञ्चिष्यताम्	आञ्चिष्यन्

१०६. वञ्चू (वञ्च्) गतौ।

व०	वञ्चति	वञ्चतः	वञ्चन्ति
स०	वञ्चेत्	वञ्चेताम्	वञ्चेयुः
प०	वञ्चतु/वञ्चतात्	वञ्चताम्	वञ्चन्तु
ह्य०	अवञ्चत्	अवञ्चताम्	अवञ्चन्
अ०	अवञ्चीत्	अवञ्चिष्टाम्	अवञ्चिषुः
प०	ववञ्च	ववञ्चतुः	ववञ्चुः
आ०	वच्यात्	वच्यास्ताम्	वच्यासुः
श्व०	वञ्चिता	वञ्चितारौ	वञ्चितारः
भ०	वञ्चिष्यति	वञ्चिष्यतः	वञ्चिष्यन्ति
क्रि०	अवञ्चिष्यत्	अवञ्चिष्यताम्	अवञ्चिष्यन्

१०७. चञ्चू (चञ्च्) गतौ।

व०	चञ्चति	चञ्चतः	चञ्चन्ति
स०	चञ्चेत्	चञ्चेताम्	चञ्चेयुः
प०	चञ्चतु/चञ्चतात्	चञ्चताम्	चञ्चन्तु
ह्य०	अचञ्चत्	अचञ्चताम्	अचञ्चन्
अ०	अचञ्चीत्	अचञ्चिष्टाम्	अचञ्चिषुः
प०	चचञ्च	चचञ्चतुः	चचञ्चुः
आ०	चच्यात्	चच्यास्ताम्	चच्यासुः
श्व०	चञ्चिता	चञ्चितारौ	चञ्चितारः
भ०	चञ्चिष्यति	चञ्चिष्यतः	चञ्चिष्यन्ति
क्रि०	अचञ्चिष्यत्	अचञ्चिष्यताम्	अचञ्चिष्यन्

१०८. तञ्चू (तञ्च्) गतौ।

व०	तञ्चति	तञ्चतः	तञ्चन्ति
स०	तञ्चेत्	तञ्चेताम्	तञ्चेयुः
प०	तञ्चतु/तञ्चतात्	तञ्चताम्	तञ्चन्तु
ह्य०	अतञ्चत्	अतञ्चताम्	अतञ्चन्
अ०	अतञ्चीत्	अतञ्चिष्टाम्	अतञ्चिषुः
प०	ततञ्च	ततञ्चतुः	ततञ्चुः
आ०	तच्यात्	तच्यास्ताम्	तच्यासुः
श्व०	तञ्चिता	तञ्चितारौ	तञ्चितारः
भ०	तञ्चिष्यति	तञ्चिष्यतः	तञ्चिष्यन्ति
क्रि०	अतञ्चिष्यत्	अतञ्चिष्यताम्	अतञ्चिष्यन्

१०९. त्वञ्चू (त्वञ्च्) गतौ।

व०	त्वञ्चति	त्वञ्चतः	त्वञ्चन्ति
स०	त्वञ्चेत्	त्वञ्चेताम्	त्वञ्चेयुः
प०	त्वञ्चतु/त्वञ्चतात्	त्वञ्चताम्	त्वञ्चन्तु
ह्य०	अत्वञ्चत्	अत्वञ्चताम्	अत्वञ्चन्
अ०	अत्वञ्चीत्	अत्वञ्चिष्टाम्	अत्वञ्चिषुः
प०	तत्वञ्च	तत्वञ्चतुः	तत्वञ्चुः
आ०	त्वच्यात्	त्वच्यास्ताम्	त्वच्यासुः
श्व०	त्वञ्चिता	त्वञ्चितारौ	त्वञ्चितारः
भ०	त्वञ्चिष्यति	त्वञ्चिष्यतः	त्वञ्चिष्यन्ति
क्रि०	अत्वञ्चिष्यत्	अत्वञ्चिष्यताम्	अत्वञ्चिष्यन्

११०. मञ्चू (मञ्च्) गतौ।

व०	मञ्चति	मञ्चतः	मञ्चन्ति
स०	मञ्चेत्	मञ्चेताम्	मञ्चेयुः
प०	मञ्चतु/मञ्चतात्	मञ्चताम्	मञ्चन्तु
ह्य०	अमञ्चत्	अमञ्चताम्	अमञ्चन्
अ०	अमञ्चीत्	अमञ्चिष्टाम्	अमञ्चिषुः
प०	ममञ्च	ममञ्चतुः	ममञ्चुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	मच्यात्	मच्यास्ताम्	मच्यासुः
श्व०	मञ्चिता	मञ्चितारौ	मञ्चितारः
भ०	मञ्चिष्यति	मञ्चिष्यतः	मञ्चिष्यन्ति
क्रि०	अमञ्चिष्यत्	अमञ्चिष्यताम्	अमञ्चिष्यन्

१११. मुञ्चू (मुञ्च्) गतौ।

व०	मुञ्चति	मुञ्चतः	मुञ्चन्ति
स०	मुञ्चेत्	मुञ्चेताम्	मुञ्चेयुः
प०	मुञ्चतु/मुञ्चतात्	मुञ्चताम्	मुञ्चन्तु
ह्य०	अमुञ्चत्	अमुञ्चताम्	अमुञ्चन्
अ०	अमुञ्चीत्	अमुञ्चिष्टाम्	अमुञ्चिषुः
प०	मुमुञ्च	मुमुञ्चतुः	मुमुञ्चुः
आ०	मुच्यात्	मुच्यास्ताम्	मुच्यासुः
श्व०	मुञ्चिता	मुञ्चितारौ	मुञ्चितारः
भ०	मुञ्चिष्यति	मुञ्चिष्यतः	मुञ्चिष्यन्ति
क्रि०	अमुञ्चिष्यत्	अमुञ्चिष्यताम्	अमुञ्चिष्यन्

११२. म्रुञ्चू (म्रुञ्च्) गतौ।

व०	म्रुञ्चति	म्रुञ्चतः	म्रुञ्चन्ति
स०	म्रुञ्चेत्	म्रुञ्चेताम्	म्रुञ्चेयुः
प०	म्रुञ्चतु/म्रुञ्चतात्	म्रुञ्चताम्	म्रुञ्चन्तु
ह्य०	अम्रुञ्चत्	अम्रुञ्चताम्	अम्रुञ्चन्
अ०	अम्रुञ्चीत्	अम्रुञ्चिष्टाम्	अम्रुञ्चिषुः
प०	मुम्रुञ्च	मुम्रुञ्चतुः	मुम्रुञ्चुः
आ०	म्रुच्यात्	म्रुच्यास्ताम्	म्रुच्यासुः
श्व०	म्रुञ्चिता	म्रुञ्चितारौ	म्रुञ्चितारः
भ०	म्रुञ्चिष्यति	म्रुञ्चिष्यतः	म्रुञ्चिष्यन्ति
क्रि०	अम्रुञ्चिष्यत्	अम्रुञ्चिष्यताम्	अम्रुञ्चिष्यन्

११३. म्रुचू (म्रुच्) गतौ।

व०	म्रोचति	म्रोचतः	म्रोचन्ति
स०	म्रोचेत्	म्रोचेताम्	म्रोचेयुः
प०	म्रोचतु/म्रोचतात्	म्रोचताम्	म्रोचन्तु
ह्य०	अम्रोचत्	अम्रोचताम्	अम्रोचन्
अ०	अम्रुचत्	अम्रुचताम्	अम्रुचन्
	तथा		
	अम्रोचीत्	अम्रोचिष्टाम्	अम्रोचिषुः
प०	मुम्रोच	मुम्रुचतुः	मुम्रुचुः
आ०	म्रुच्यात्	म्रुच्यास्ताम्	म्रुच्यासुः
श्व०	म्रोचिता	म्रोचितारौ	म्रोचितारः
भ०	म्रोचिष्यति	म्रोचिष्यतः	म्रोचिष्यन्ति
क्रि०	अम्रोचिष्यत्	अम्रोचिष्यताम्	अम्रोचिष्यन्

११४. म्लुचू (म्लुच्) गतौ।

व०	म्लोचति	म्लोचतः	म्लोचन्ति
स०	म्लोचेत्	म्लोचेताम्	म्लोचेयुः
प०	म्लोचतु/म्लोचतात्	म्लोचताम्	म्लोचन्तु
ह्य०	अम्लोचत्	अम्लोचताम्	अम्लोचन्
अ०	अम्लोचीत्	अम्लोचिष्टाम्	अम्लोचिषुः
प०	मुम्लोच	मुम्लुचतुः	मुम्लुचुः
आ०	म्लुच्यात्	म्लुच्यास्ताम्	म्लुच्यासुः
श्व०	म्लोचिता	म्लोचितारौ	म्लोचितारः
भ०	म्लोचिष्यति	म्लोचिष्यतः	म्लोचिष्यन्ति
क्रि०	अम्लोचिष्यत्	अम्लोचिष्यताम्	अम्लोचिष्यन्

११५. ग्लुञ्चू (ग्लुञ्च्) गतौ।

व०	ग्लुञ्चति	ग्लुञ्चतः	ग्लुञ्चन्ति
स०	ग्लुञ्चेत्	ग्लुञ्चेताम्	ग्लुञ्चेयुः
प०	ग्लुञ्चतु/ग्लुञ्चतात्	ग्लुञ्चताम्	ग्लुञ्चन्तु
ह्य०	अग्लुञ्चत्	अग्लुञ्चताम्	अग्लुञ्चन्
अ०	अग्लुचत्	अग्लुचताम्	अग्लुचन्
तथा-	अग्लुञ्चीत्	अग्लुञ्चिष्टाम्	अग्लुञ्चिषुः
प०	जुग्लुञ्च	जुग्लुञ्चतुः	जुग्लुञ्चुः
आ०	ग्लुच्यात्	ग्लुच्यास्ताम्	ग्लुच्यासुः
श्व०	ग्लुञ्चिता	ग्लुञ्चितारौ	ग्लुञ्चितारः
भ०	ग्लुञ्चिष्यति	ग्लुञ्चिष्यतः	ग्लुञ्चिष्यन्ति
क्रि०	अग्लुञ्चिष्यत्	अग्लुञ्चिष्यताम्	अग्लुञ्चिष्यन्

११६. षस्च (सश्च्) गतौ।

व०	सश्चति	सश्चतः	सश्चन्ति
स०	सश्चेत्	सश्चेताम्	सश्चेयुः
प०	सश्चतु/सश्चतात्	सश्चताम्	सश्चन्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	असश्चत्	असश्चताम्	असश्चन्
अ०	असश्चीत्	असश्चिष्टाम्	असश्चिषुः
प०	ससश्च	ससश्चतुः	ससश्चुः
आ०	सश्च्यात्	सश्च्यास्ताम्	सश्च्यासुः
श्व०	सश्चिता	सश्चितारौ	सश्चितारः
भ०	सश्चिष्यति	सश्चिष्यतः	सश्चिष्यन्ति
क्रि०	असश्चिष्यत्	असश्चिष्यताम्	असश्चिष्यन्

११७. ग्रुचू स्तेये।

व०	ग्रोचति	ग्रोचतः	ग्रोचन्ति
स०	ग्रोचेत्	ग्रोचेताम्	ग्रोचेयुः
प०	ग्रोचतु/ग्रोचतात्	ग्रोचताम्	ग्रोचन्तु
ह्य०	अग्रोचत्	अग्रोचताम्	अग्रोचन्
अ०	अग्रुचत्	अग्रुचताम्	अग्रुचन्
तथा-	अग्रोचीत्	अग्रोचिष्टाम्	अग्रोचिषुः
प०	जुग्रोच	जुग्रुचतुः	जुग्रुचुः
आ०	ग्रुच्यात्	ग्रुच्यास्ताम्	ग्रुच्यासुः
श्व०	ग्रोचिता	ग्रोचितारौ	ग्रोचितारः
भ०	ग्रोचिष्यति	ग्रोचिष्यतः	ग्रोचिष्यन्ति
क्रि०	अग्रोचिष्यत्	अग्रोचिष्यताम्	अग्रोचिष्यन्

११८. ग्लुचू (ग्लुच्) स्तेये।

गतावपि केचित्।

व०	ग्लोचति	ग्लोचतः	ग्लोचन्ति
स०	ग्लोचेत्	ग्लोचेताम्	ग्लोचेयुः
प०	ग्लोचतु/ग्लोचतात्	ग्लोचताम्	ग्लोचन्तु
ह्य०	अग्लोचत्	अग्लोचताम्	अग्लोचन्
अ०	अग्लुचत्	अग्लुचताम्	अग्लुचन्
तथा-	अग्लोचीत्	अग्लोचिष्टाम्	अग्लोचिषुः
प०	जुग्लोच	जुग्लुचतुः	जुग्लुचुः
आ०	ग्लुच्यात्	ग्लुच्यास्ताम्	ग्लुच्यासुः
श्व०	ग्लोचिता	ग्लोचितारौ	ग्लोचितारः
भ०	ग्लोचिष्यति	ग्लोचिष्यतः	ग्लोचिष्यन्ति
क्रि०	अग्लोचिष्यत्	अग्लोचिष्यताम्	अग्लोचिष्यन्

अथ छान्ता एकादश सेटश्च।

११९. म्लेछ (म्लेच्छ्) स्तेये।

व०	म्लेच्छति	म्लेच्छतः	म्लेच्छन्ति
	म्लेच्छसि	म्लेच्छथः	म्लेच्छथ
	म्लेच्छामि	म्लेच्छावः	म्लेच्छामः
स०	म्लेच्छेत्	म्लेच्छेताम्	म्लेच्छेयुः
	म्लेच्छेः	म्लेच्छेतम्	म्लेच्छेत
	म्लेच्छेयम्	म्लेच्छेव	म्लेच्छेम
प०	म्लेच्छतु/म्लेच्छतात्	म्लेच्छताम्	म्लेच्छन्तु
	म्लेच्छ/म्लेच्छतात्	म्लेच्छतम्	म्लेच्छत
	म्लेच्छानि	म्लेच्छाव	म्लेच्छाम
ह्य०	अम्लेच्छत्	अम्लेच्छताम्	अम्लेच्छन्
	अम्लेच्छः	अम्लेच्छतम्	अम्लेच्छत
	अम्लेच्छम्	अम्लेच्छाव	अम्लेच्छाम
अ०	अम्लेच्छीत्	अम्लेच्छिष्टाम्	अम्लेच्छिषुः
	अम्लेच्छीः	अम्लेच्छिष्टम्	अम्लेच्छिष्ट
	अम्लेच्छिषम्	अम्लेच्छिष्व	अम्लेच्छिष्म
प०	मिम्लेच्छ	मिम्लेच्छतुः	मिम्लेच्छुः
	मिम्लेच्छिथ	मिम्लेच्छथुः	मिम्लेच्छ
	मिम्लेच्छ	मिम्लेच्छिव	मिम्लेच्छिम
आ०	म्लेच्छ्यात्	म्लेच्छ्यास्ताम्	म्लेच्छ्यासुः
	म्लेच्छ्याः	म्लेच्छ्यास्तम्	म्लेच्छ्यास्त
	म्लेच्छ्यासम्	म्लेच्छ्यास्व	म्लेच्छ्यास्म
श्व०	म्लेच्छिता	म्लेच्छितारौ	म्लेच्छितारः
	म्लेच्छितासि	म्लेच्छितास्थः	म्लेच्छितास्थ
	म्लेच्छितास्मि	म्लेच्छितास्वः	म्लेच्छितास्मः
भ०	म्लेच्छिष्यति	म्लेच्छिष्यतः	म्लेच्छिष्यन्ति
	म्लेच्छिष्यसि	म्लेच्छिष्यथः	म्लेच्छिष्यथ
	म्लेच्छिष्यामि	म्लेच्छिष्यावः	म्लेच्छिष्यामः
क्रि०	अम्लेच्छिष्यत्	अम्लेच्छिष्यताम्	अम्लेच्छिष्यन्
	अम्लेच्छिष्यः	अम्लेच्छिष्यतम्	अम्लेच्छिष्यत
	अम्लेच्छिष्यम्	अम्लेच्छिष्याव	अम्लेच्छिष्याम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२०. लछ (लच्छ्) लक्षणे।

व०	लच्छति	लच्छतः	लच्छन्ति
स०	लच्छेत्	लच्छेताम्	लच्छेयुः
प०	लच्छतु/लच्छतात्	लच्छताम्	लच्छन्तु
ह्य०	अलच्छत्	अलच्छताम्	अलच्छन्
अ०	अलच्छीत्	अलच्छिष्टाम्	अलच्छिषुः
प०	ललच्छ	ललच्छतुः	ललच्छुः
आ०	लच्छ्यात्	लच्छ्यास्ताम्	लच्छ्यासुः
श्व०	लच्छिता	लच्छितारौ	लच्छितारः
भ०	लच्छिष्यति	लच्छिष्यतः	लच्छिष्यन्ति
क्रि०	अलच्छिष्यत्	अलच्छिष्यताम्	अलच्छिष्यन्

१२१. लाछु (लाञ्छ्) लक्षणे।

व०	लाञ्छति	लाञ्छतः	लाञ्छन्ति
स०	लाञ्छेत्	लाञ्छेताम्	लाञ्छेयुः
प०	लाञ्छतु/लाञ्छतात्	लाञ्छताम्	लाञ्छन्तु
ह्य०	अलाञ्छत्	अलाञ्छताम्	अलाञ्छन्
अ०	अलाञ्छीत्	अलाञ्छिष्टाम्	अलाञ्छिषुः
प०	ललाञ्छ	ललाञ्छतुः	ललाञ्छुः
आ०	लाञ्छ्यात्	लाञ्छ्यास्ताम्	लाञ्छ्यासुः
श्व०	लाञ्छिता	लाञ्छितारौ	लाञ्छितारः
भ०	लाञ्छिष्यति	लाञ्छिष्यतः	लाञ्छिष्यन्ति
क्रि०	अलाञ्छिष्यत्	अलाञ्छिष्यताम्	अलाञ्छिष्यन्

१२२. वाछु (वाञ्छ्) इच्छायाम्।

व०	वाञ्छति	वाञ्छतः	वाञ्छन्ति
स०	वाञ्छेत्	वाञ्छेताम्	वाञ्छेयुः
प०	वाञ्छतु/वाञ्छतात्	वाञ्छताम्	वाञ्छन्तु
ह्य०	अवाञ्छत्	अवाञ्छताम्	अवाञ्छन्
अ०	अवाञ्छीत्	अवाञ्छिष्टाम्	अवाञ्छिषुः
प०	ववाञ्छ	ववाञ्छतुः	ववाञ्छुः
आ०	वाञ्छ्यात्	वाञ्छ्यास्ताम्	वाञ्छ्यासुः
श्व०	वाञ्छिता	वाञ्छितारौ	वाञ्छितारः
भ०	वाञ्छिष्यति	वाञ्छिष्यतः	वाञ्छिष्यन्ति
क्रि०	अवाञ्छिष्यत्	अवाञ्छिष्यताम्	अवाञ्छिष्यन्

१२३. आछु (आञ्छ्) आयामे।

व०	आञ्छति	आञ्छतः	आञ्छन्ति
स०	आञ्छेत्	आञ्छेताम्	आञ्छेयुः
प०	आञ्छतु/आञ्छतात्	आञ्छताम्	आञ्छन्तु
ह्य०	आञ्छत्	आञ्छताम्	आञ्छन्
अ०	आञ्छीत्	आञ्छिष्टाम्	आञ्छिषुः
प०	आञ्छ	आञ्छतुः	आञ्छुः
आ०	आञ्छ्यात्	आञ्छ्यास्ताम्	आञ्छ्यासुः
श्व०	आञ्छिता	आञ्छितारौ	आञ्छितारः
भ०	आञ्छिष्यति	आञ्छिष्यतः	आञ्छिष्यन्ति
क्रि०	आञ्छिष्यत्	आञ्छिष्यताम्	आञ्छिष्यन्

१२४. ह्रीच्छ (ह्रीच्छ्) लज्जायाम्।

व०	ह्रीच्छति	ह्रीच्छतः	ह्रीच्छन्ति
स०	ह्रीच्छेत्	ह्रीच्छेताम्	ह्रीच्छेयुः
प०	ह्रीच्छतु/ह्रीच्छतात्	ह्रीच्छताम्	ह्रीच्छन्तु
ह्य०	अह्रीच्छत्	अह्रीच्छताम्	अह्रीच्छन्
अ०	अह्रीच्छीत्	अह्रीच्छिष्टाम्	अह्रीच्छिषुः
प०	जिह्रीच्छ	जिह्रीच्छतुः	जिह्रीच्छुः
आ०	ह्रीच्छ्यात्	ह्रीच्छ्यास्ताम्	ह्रीच्छ्यासुः
श्व०	ह्रीच्छिता	ह्रीच्छितारौ	ह्रीच्छितारः
भ०	ह्रीच्छिष्यति	ह्रीच्छिष्यतः	ह्रीच्छिष्यन्ति
क्रि०	अह्रीच्छिष्यत्	अह्रीच्छिष्यताम्	अह्रीच्छिष्यन्

१२५. हुर्छा (हूर्च्छ्) कौटिल्ये।

व०	हूर्छति	हूर्छतः	हूर्छन्ति
स०	हूर्छेत्	हूर्छेताम्	हूर्छेयुः
प०	हूर्छतु/हूर्छतात्	हूर्छताम्	हूर्छन्तु
ह्य०	अहूर्छत्	अहूर्छताम्	अहूर्छन्
अ०	अहूर्छीत्	अहूर्छिष्टाम्	अहूर्छिषुः
प०	जुहूर्छ	जुहूर्छतुः	जुहूर्छहः
आ०	हूर्छ्यात्	हूर्छ्यास्ताम्	हूर्छ्यासुः
श्व०	हूर्छिता	हूर्छितारौ	हूर्छितारः
भ०	हूर्छिष्यति	हूर्छिष्यतः	हूर्छिष्यन्ति
क्रि०	अहूर्छिष्यत्	अहूर्छिष्यताम्	अहूर्छिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२६. मुर्छा (मूर्च्छ्) मोहसमुच्छाययोः।

व०	मूर्छति	मूर्छतः	मूर्छन्ति
स०	मूर्छेत्	मूर्छेताम्	मूर्छेयुः
प०	मूर्छतु/मूर्छतात्	मूर्छताम्	मूर्छन्तु
ह्य०	अमूर्छत्	अमूर्छताम्	अमूर्छन्
अ०	अमूर्छीत्	अमूर्छिष्टाम्	अमूर्छिषुः
प०	मुमूर्छ	मुमूर्छतुः	मुमर्छुः
आ०	मूर्छ्यात्	मूर्छ्यास्ताम्	मूर्छ्यासुः
श्व०	मूर्छिता	मूर्छितारौ	मूर्छितारः
भ०	मूर्छिष्यति	मूर्छिष्यतः	मूर्छिष्यन्ति
क्रि०	अमूर्छिष्यत्	अमूर्छिष्यताम्	अमूर्छिष्यन्

१२७. स्फुर्छा (स्फूर्छ्) विस्मृतौ।

व०	स्फूर्छति	स्फूर्छतः	स्फूर्छन्ति
स०	स्फूर्छेत्	स्फूर्छेताम्	स्फूर्छेयुः
प०	स्फूर्छतु/स्फूर्छतात्	स्फूर्छताम्	स्फूर्छन्तु
ह्य०	अस्फूर्छत्	अस्फूर्छताम्	अस्फूर्छन्
अ०	अस्फूर्छीत्	अस्फूर्छिष्टाम्	अस्फूर्छिषुः
प०	पुस्फूर्छ	पुस्फूर्छतुः	पुस्फर्छुः
आ०	स्फूर्छ्यात्	स्फूर्छ्यास्ताम्	स्फूर्छ्यासुः
श्व०	स्फूर्छिता	स्फूर्छितारौ	स्फूर्छितारः
भ०	स्फूर्छिष्यति	स्फूर्छिष्यतः	स्फूर्छिष्यन्ति
क्रि०	अस्फूर्छिष्यत्	अस्फूर्छिष्यताम्	अस्फूर्छिष्यन्

१२८. स्मुर्छा (स्मूर्च्छ्) विस्मृतौ।

व०	स्मूर्छति	स्मूर्छतः	स्मूर्छन्ति
स०	स्मूर्छेत्	स्मूर्छेताम्	स्मूर्छेयुः
प०	स्मूर्छतु/स्मूर्छतात्	स्मूर्छताम्	स्मूर्छन्तु
ह्य०	अस्मूर्छत्	अस्मूर्छताम्	अस्मूर्छन्
अ०	अस्मूर्छीत्	अस्मूर्छिष्टाम्	अस्मूर्छिषुः
प०	सुस्मूर्छ	सुस्मूर्छतुः	सुस्मर्छुः
आ०	स्मूर्छ्यात्	स्मूर्छ्यास्ताम्	स्मूर्छ्यासुः
श्व०	स्मूर्छिता	स्मूर्छितारौ	स्मूर्छितारः
भ०	स्मूर्छिष्यति	स्मूर्छिष्यतः	स्मूर्छिष्यन्ति
क्रि०	अस्मूर्छिष्यत्	अस्मूर्छिष्यताम्	अस्मूर्छिष्यन्

१२९. युछ (युच्छ्) प्रमादे।

व०	युच्छति	युच्छतः	युच्छन्ति
स०	युच्छेत्	युच्छेताम्	युच्छेयुः
प०	युच्छतु/युच्छतात्	युच्छताम्	युच्छन्तु
ह्य०	अयुच्छत्	अयुच्छताम्	अयुच्छन्
अ०	अयुच्छीत्	अयुच्छिष्टाम्	अयुच्छिषुः
प०	युयुच्छ	युयुच्छतुः	युयुच्छुः
आ०	युच्छ्यात्	युच्छ्यास्ताम्	युच्छ्यासुः
श्व०	युच्छता	युच्छितारौ	युच्छितारः
भ०	युच्छिष्यति	युच्छिष्यतः	युच्छिष्यन्ति
क्रि०	अयुच्छिष्यत्	अयुच्छिष्यताम्	अयुच्छिष्यन्

अथ जान्ताश्चतुश्चत्वारिंशत् त्यजषञ्जवर्जाः सेटश्च।।

१३०. धृज (धृज्) गतौ।

व०	धर्जति	धर्जतः	धर्जन्ति
	धर्जसि	धर्जथः	धर्जथ
	धर्जामि	धर्जावः	धर्जामः
स०	धर्जेत्	धर्जेताम्	धर्जेयुः
	धर्जेः	धर्जेतम्	धर्जेत
	धर्जेयम्	धर्जेव	धर्जेम
प०	धर्जतु/धर्जतात्	धर्जताम्	धर्जन्तु
	धर्ज/धर्जतात्	धर्जतम्	धर्जत
	धर्जानि	धर्जाव	धर्जाम
ह्य०	अधर्जत्	अधर्जताम्	अधर्जन्
	अधर्जः	अधर्जतम्	अधर्जत
	अधर्जाम्	अधर्जाव	अधर्जाम
अ०	अधर्जीत्	अधर्जिष्टाम्	अधर्जिषुः
	अधर्जीः	अधर्जिष्टम्	अधर्जिष्ट
	अधर्जिषम	अधर्जिष्व	अधर्जिष्म
प०	दधर्ज	दधृजतुः	दधृजुः
	दधर्जिथ	दधृजथुः	दधृज
	दधर्ज	दधृजिव	दधृजिम
आ०	धृज्यात्	धृज्यास्ताम्	धृज्यासुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धृज्याः	धृज्यास्तम्	धृज्यास्त
	धृज्यासम्	धृज्यास्व	धृज्यास्म
श्व०	धर्जिता	धर्जितारौ	धर्जितारः
	धर्जितासि	धर्जितास्थः	धर्जितास्थ
	धर्जितास्मि	धर्जितास्वः	धर्जितास्मः
भ०	धर्जिष्यति	धर्जिष्यतः	धर्जिष्यन्ति
	धर्जिष्यसि	धर्जिष्यथः	धर्जिष्यथ
	धर्जिष्यामि	धर्जिष्यावः	धर्जिष्यामः
क्रि०	अधर्जिष्यत्	अधर्जिष्यताम्	अधर्जिष्यन्
	अधर्जिष्यः	अधर्जिष्यतम्	अधर्जिष्यत
	अधर्जिष्यम्	अधर्जिष्याव	अधर्जिष्याम

१३१. धृजु (धृञ्ज्) गतौ।

(उपरिवत्)

व०	धृञ्जति	धृञ्जतः	धृञ्जन्ति
स०	धृञ्जेत्	धृञ्जेताम्	धृञ्जेयुः
प०	धृञ्जतु/धृञ्जतात्	धृञ्जताम्	धृञ्जन्तु
ह्य०	अधृञ्जत्	अधृञ्जताम्	अधृञ्जन्
अ०	अधृञ्जीत्	अधृञ्जिष्टाम्	अधृञ्जिषुः
प०	दधृञ्ज	दधृञ्जतुः	दधृञ्जुः
आ०	धृञ्ज्यात्	धृञ्ज्यास्ताम्	धृञ्ज्यासुः
श्व०	धृञ्जिता	धृञ्जितारौ	धृञ्जितारः
भ०	धृञ्जिष्यति	धृञ्जिष्यतः	धृञ्जिष्यन्ति
क्रि०	अधृञ्जिष्यत्	अधृञ्जिष्यताम्	अधृञ्जिष्यन्

१३२. ध्वज (ध्वज्) गतौ।

व०	ध्वजति	ध्वजतः	ध्वजन्ति
स०	ध्वजेत्	ध्वजेताम्	ध्वजेयुः
प०	ध्वजतु/ध्वजतात्	ध्वजताम्	ध्वजन्तु
ह्य०	अध्वजत्	अध्वजताम्	अध्वजन्
अ०	अध्वाजीत्	अध्वाजिष्टाम्	अध्वाजिषुः
		तथा	
	अध्वजीत्	अध्वजिष्टाम्	अध्वजिषु
प०	दध्वाज	दध्वजतुः	दध्वजुः
आ०	ध्वज्यात्	ध्वज्यास्ताम्	ध्वज्यासुः
श्व०	ध्वजिता	ध्वजितारौ	ध्वजितारः
भ०	ध्वजिष्यति	ध्वजिष्यतः	ध्वजिष्यन्ति
क्रि०	अध्वजिष्यत्	अध्वजिष्यताम्	अध्वजिष्यन्

१३३. ध्वजु (ध्वञ्ज्) गतौ।

व०	ध्वञ्जति	ध्वञ्जतः	ध्वञ्जन्ति
स०	ध्वञ्जेत्	ध्वञ्जेताम्	ध्वञ्जेयुः
प०	ध्वञ्जतु/ध्वञ्जतात्	ध्वञ्जताम्	ध्वञ्जन्तु
ह्य०	अध्वञ्जत्	अध्वञ्जताम्	अध्वञ्जन्
अ०	अध्वञ्जीत्	अध्वञ्जिष्टाम्	अध्वञ्जिषुः
प०	दध्वञ्ज	दध्वञ्जतुः	दध्वञ्जुः
आ०	ध्वञ्ज्यात्	ध्वञ्ज्यास्ताम्	ध्वञ्ज्यासुः
श्व०	ध्वञ्जिता	ध्वञ्जितारौ	ध्वञ्जितारः
भ०	ध्वञ्जिष्यति	ध्वञ्जिष्यतः	ध्वञ्जिष्यन्ति
क्रि०	अध्वञ्जिष्यत्	अध्वञ्जिष्यताम्	अध्वञ्जिष्यन्

१३४. ध्रज (ध्रज्) गतौ।

व०	ध्रजति	ध्रजतः	ध्रजन्ति
स०	ध्रजेत्	ध्रजेताम्	ध्रजेयुः
प०	ध्रजतु/ध्रजतात्	ध्रजताम्	ध्रजन्तु
ह्य०	अध्रजत्	अध्रजताम्	अध्रजन्
अ०	अध्राजीत्	अध्राजिष्टाम्	अध्राजिषुः
		तथा	
	अध्रजीत्	अध्रजिष्टाम्	अध्रजिषुः
प०	दध्राज	दध्रजतुः	दध्रजुः
आ०	ध्रज्यात्	ध्रज्यास्ताम्	ध्रज्यासुः
श्व०	ध्रजिता	ध्रजितारौ	ध्रजितारः
भ०	ध्रजिष्यति	ध्रजिष्यतः	ध्रजिष्यन्ति
क्रि०	अध्रजिष्यत्	अध्रजिष्यताम्	अध्रजिष्यन्

१३५. ध्रजु (ध्रञ्ज्) गतौ।

व०	ध्रञ्जति	ध्रञ्जतः	ध्रञ्जन्ति
स०	ध्रञ्जेत्	ध्रञ्जेताम्	ध्रञ्जेयुः
प०	ध्रञ्जतु/ध्रञ्जतात्	ध्रञ्जताम्	ध्रञ्जन्तु
ह्य०	अध्रञ्जत्	अध्रञ्जताम्	अध्रञ्जन्
अ०	अध्रञ्जीत्	अध्रञ्जिष्टाम्	अध्रञ्जिषुः
प०	दध्रञ्ज	दध्रञ्जतुः	दध्रञ्जुः
आ०	ध्रञ्ज्यात्	ध्रञ्ज्यास्ताम्	ध्रञ्ज्यासुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	ध्रञ्जिता	ध्रञ्जितारौ	ध्रञ्जितार:
भ०	ध्रञ्जिष्यति	ध्रञ्जिष्यत:	ध्रञ्जिष्यन्ति
क्रि०	अध्रञ्जिष्यत्	अध्रञ्जिष्यताम्	अध्रञ्जिष्यन्

१३६. वज (वज्) गतौ।

व०	वजति	वजत:	वजन्ति
स०	वजेत्	वजेताम्	वजेयु:
प०	वजतु/वजतात्	वजताम्	वजन्तु
ह्य०	अवजत्	अवजताम्	अवजन्
अ०	अवाजीत्	अवाजिष्टाम्	अवाजिषु:
		तथा	
	अवजीत्	अवजिष्टाम्	अवजिषु:
प०	ववाज	ववजतु:	ववजु:
आ०	वज्यात्	वज्यास्ताम्	वज्यासु:
श्व०	वजिता	वजितारौ	वजितार:
भ०	वजिष्यति	वजिष्यत:	वजिष्यन्ति
क्रि०	अवजिष्यत्	अवजिष्यताम्	अवजिष्यन्

१३७. व्रज (व्रज्) गतौ।

व०	व्रजति	व्रजत:	व्रजन्ति
स०	व्रजेत्	व्रजेताम्	व्रजेयु:
प०	व्रजतु/व्रजतात्	व्रजताम्	व्रजन्तु
ह्य०	अव्रजत्	अव्रजताम्	अव्रजन्
अ०	अव्राजीत्	अव्राजिष्टाम्	अव्राजिषु:
	अव्रजीत्	अव्रजिष्टाम्	अव्रजिषु:
प०	वव्राज	वव्रजतु:	वव्रजु:
आ०	व्रज्यात्	व्रज्यास्ताम्	व्रज्यासु:
श्व०	व्रजिता	व्रजितारौ	व्रजितार:
भ०	व्रजिष्यति	व्रजिष्यत:	व्रजिष्यन्ति
क्रि०	अव्रजिष्यत्	अव्रजिष्यताम्	अव्रजिष्यन्

१३८. षस्ज (सज्ज्) गतौ।

व०	सज्जति	सज्जत:	सज्जन्ति
स०	सज्जेत्	सज्जेताम्	सज्जेयु:
प०	सज्जतु/सज्जतात्	सज्जताम्	सज्जन्तु
ह्य०	असज्जत्	असज्जताम्	असज्जन्
अ०	असज्जीत्	असज्जिष्टाम्	असज्जिषु:
प०	ससज्ज	ससज्जतु:	ससज्जु:
आ०	सज्ज्यात्	सज्ज्यास्ताम्	सज्ज्यासु:
श्व०	सज्जिता	सज्जितारौ	सज्जितार:
भ०	सज्जिष्यति	सज्जिष्यत:	सज्जिष्यन्ति
क्रि०	असज्जिष्यत्	असज्जिष्यताम्	असज्जिष्यन्

१३९. अज (अज्) क्षेपणे च। चकाराद् गतौ।

व०	अजति	अजत:	अजन्ति
स०	अजेत्	अजेताम्	अजेयु:
प०	अजतु/अजतात्	अजताम्	अजन्तु
ह्य०	आजत्	आजताम्	आजन्
अ०	अवैषीत्	अवैष्टाम्	अवैषु:
प०	विवाय	विव्यतु:	विव्यु:
आ०	वीयात्	वीयास्ताम्	वीयासु:
श्व०	वेता	वेतारौ	वेतार:
भ०	वेष्यति	वेष्यत:	वेष्यन्ति
क्रि०	अवेष्यत्	अवेष्यताम्	अवेष्यन्

१४०. कुजू (कुज्) स्तेये।

व०	कोजति	कोजत:	कोजन्ति
स०	कोजेत्	कोजेताम्	कोजेयु:
प०	कोजतु/कोजतात्	कोजताम्	कोजन्तु
ह्य०	अकोजत्	अकोजताम्	अकोजन्
अ०	अकोजीत्	अकोजिष्टाम्	अकोजिषु:
प०	चुकोज	चुकुजतु:	चुकुजु:
आ०	कुज्यात्	कुज्यास्ताम्	कुज्यासु:
श्व०	कोजिता	कोजितारौ	कोजितार:
भ०	कोजिष्यति	कोजिष्यत:	कोजिष्यन्ति
क्रि०	अकोजिष्यत्	अकोजिष्यताम्	अकोजिष्यन्

१४१. खुजू (खुज्) स्तेये।

व०	खोजति	खोजत:	खोजन्ति
स०	खोजेत्	खोजेताम्	खोजेयु:
प०	खोजतु/खोजतात्	खोजताम्	खोजन्तु
ह्य०	अखोजत्	अखोजताम्	अखोजन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	अखोजीत्	अखोजिष्टाम्	अखोजिषुः
प०	चुखोज	चुखुजतुः	चुखजुः
आ०	खुज्यात्	खुज्यास्ताम्	खुज्यासुः
श्व०	खोजिता	खोजितारौ	खोजितारः
भ०	खोजिष्यति	खोजिष्यतः	खोजिष्यन्ति
क्रि०	अखोजिष्यत्	अखोजिष्यताम्	अखोजिष्यन्

१४२. अर्ज (अर्ज्) अर्जने।

व०	अर्जति	अर्जतः	अर्जन्ति
स०	अर्जेत्	अर्जेताम्	अर्जेयुः
प०	अर्जतु/अर्जतात्	अर्जताम्	अर्जन्तु
ह्य०	आर्जत्	आर्जताम्	आर्जन्
अ०	आर्जीत्	आर्जिष्टाम्	आर्जिषुः
प०	आनर्ज	आनर्जतुः	आनर्जुः
आ०	अर्ज्यात्	अर्ज्यास्ताम्	अर्ज्यासुः
श्व०	अर्जिता	अर्जितारौ	अर्जितारः
भ०	अर्जिष्यति	अर्जिष्यतः	अर्जिष्यन्ति
क्रि०	आर्जिष्यत्	आर्जिष्यताम्	आर्जिष्यन्

१४३. सर्ज (सर्ज्) सर्जने।

व०	सर्जति	सर्जतः	सर्जन्ति
स०	सर्जेत्	सर्जेताम्	सर्जेयुः
प०	सर्जतु/सर्जतात्	सर्जताम्	सर्जन्तु
ह्य०	असर्जत्	असर्जताम्	असर्जन्
अ०	असर्जीत्	असर्जिष्टाम्	असर्जिषुः
प०	ससर्ज	ससर्जतुः	ससर्जुः
आ०	सर्ज्यात्	सर्ज्यास्ताम्	सर्ज्यासुः
श्व०	सर्जिता	सर्जितारौ	सर्जितारः
भ०	सर्जिष्यति	सर्जिष्यतः	सर्जिष्यन्ति
क्रि०	असर्जिष्यत्	असर्जिष्यताम्	असर्जिष्यन्

१४४. कर्ज (कर्ज्) व्यथने।

व०	कर्जति	कर्जतः	कर्जन्ति
स०	कर्जेत्	कर्जेताम्	कर्जेयुः
प०	कर्जतु/कर्जतात्	कर्जताम्	कर्जन्तु
ह्य०	अकर्ज्जत्	अकर्ज्जताम्	अकर्ज्जन्
अ०	अकर्जीत्	अकर्जिष्टाम्	अकर्जिषुः
प०	चकर्ज	चकर्जतुः	चकर्जुः
आ०	कर्ज्यात्	कर्ज्यास्ताम्	कर्ज्यासुः
श्व०	कर्जिता	कर्जितारौ	कर्जितारः
भ०	कर्जिष्यति	कर्जिष्यतः	कर्जिष्यन्ति
क्रि०	अकर्जिष्यत्	अकर्जिष्यताम्	अकर्जिष्यन्

१४५. खर्ज (खर्ज्) मार्जने च।

चकाराद् व्यथने।

व०	खर्जति	खर्जतः	खर्जन्ति
स०	खर्जेत्	खर्जेताम्	खर्जेयुः
प०	खर्जतु/खर्जतात्	खर्जताम्	खर्जन्तु
ह्य०	अखर्ज्जत्	अखर्ज्जताम्	अखर्ज्जन्
अ०	अखर्जीत्	अखर्जिष्टाम्	अखर्जिषुः
प०	चखर्ज	चखर्जतुः	चखर्जुः
आ०	खर्ज्यात्	खर्ज्यास्ताम्	खर्ज्यासुः
श्व०	खर्जिता	खर्जितारौ	खर्जितारः
भ०	खर्जिष्यति	खर्जिष्यतः	खर्जिष्यन्ति
क्रि०	अखर्जिष्यत्	अखर्जिष्यताम्	अखर्जिष्यन्

१४६. खज (खज्) मन्थे। मन्थो विलोडनम्।

व०	खजति	खजतः	खजन्ति
स०	खजेत्	खजेताम्	खजेयुः
प०	खजतु/खजतात्	खजताम्	खजन्तु
ह्य०	अखजत्	अखजताम्	अखजन्
अ०	अखाजीत्	अखाजिष्टाम्	अखाजिषुः
		तथा	
	अखजीत्	अखजिष्टाम्	अखजिषुः
प०	चखाज	चखजतुः	चखजुः
आ०	खज्यात्	खज्यास्ताम्	खज्यासुः
श्व०	खजिता	खजितारौ	खजितारः
भ०	खजिष्यति	खजिष्यतः	खजिष्यन्ति
क्रि०	अखजिष्यत्	अखजिष्यताम्	अखजिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४७. खजु (खञ्ज्) गतौ।

व०	खञ्जति	खञ्जतः	खञ्जन्ति
स०	खञ्जेत्	खञ्जेताम्	खञ्जेयुः
प०	खञ्जतु/खञ्जतात्	खञ्जताम्	खञ्जन्तु
ह्य०	अखञ्जः	अखञ्जताम्	अखञ्जन्
अ०	अखञ्जीत्	अखञ्जिष्टाम्	अखञ्जिषुः
प०	चखञ्ज	चखञ्जतुः	चखञ्जुः
आ०	खञ्ज्यात्	खञ्ज्यास्ताम्	खञ्ज्यासुः
श्व०	खञ्जिता	खञ्जितारौ	खञ्जितारः
भ०	खञ्जिष्यति	खञ्जिष्यतः	खञ्जिष्यन्ति
क्रि०	अखञ्जिष्यत्	अखञ्जिष्यताम्	अखञ्जिष्यन्

१४८. एजृ (एज्) कम्पने।

व०	एजति	एजतः	एजन्ति
	एजसि	एजथः	एजथ
	एजामि	एजावः	एजामः
स०	एजेत्	एजेताम्	एजेयुः
	एजेः	एजेतम्	एजेत
	एजेयम्	एजेव	एजेम
प०	एजतु/एजतात्	एजताम्	एजन्तु
	एज/एजतात्	एजतम्	एजत
	एजानि	एजाव	एजाम
ह्य०	ऐजत्	ऐजताम्	ऐजन्
	ऐजः	ऐजतम्	ऐजत
	ऐजम्	ऐजाव	ऐजाम
अ०	ऐजीत्	ऐजिष्टाम्	ऐजिषुः
	ऐजीः	ऐजिष्टम्	ऐजिष्ट
	ऐजिषम्	ऐजिष्व	ऐजिष्म
प०	एजाञ्चकार	एजाञ्चक्रतुः	एजाञ्चक्रुः
	एजाञ्चकर्थ	एजाञ्चक्रथुः	एजाञ्चक्र
	एजाञ्चकार/रजाञ्चकर	एजाञ्चकृव	एजाञ्चकृम
	एजाम्बभूव/एजामास		
आ०	एज्यात्	एज्यास्ताम्	एज्यासुः
	एज्याः	एज्यास्तम्	एज्यास्त
	एज्यासम्	एज्यास्व	एज्यास्म
श्व०	एजिता	एजितारौ	एजितारः
	एजितासि	एजितास्थः	एजितास्थ
	एजितास्मि	एजितास्वः	एजितास्मः
भ०	एजिष्यति	एजिष्यतः	एजिष्यन्ति
	एजिष्यसि	एजिष्यथः	एजिष्यथ
	एजिष्यामि	एजिष्यावः	एजिष्यामः
क्रि०	ऐजिष्यत्	ऐजिष्यताम्	ऐजिष्यन्
	ऐजिष्यः	ऐजिष्यतम्	ऐजिष्यत
	ऐजिष्यम्	ऐजिष्याव	ऐजिष्याम

१४९. टुवोस्फूर्जा (स्फूर्ज्) वज्रनिर्घोषे।

व०	स्फूर्जति	स्फूर्जतः	स्फूर्जन्ति
	स्फूर्जसि	स्फूर्जथः	स्फूर्जथ
	स्फूर्जामि	स्फूर्जावः	स्फूर्जामः
स०	स्फूर्जेत्	स्फूर्जेताम्	स्फूर्जेयुः
	स्फूर्जेः	स्फूर्जेतम्	स्फूर्जेत
	स्फूर्जेयम्	स्फूर्जेव	स्फूर्जेम
प०	स्फूर्जतु/स्फूर्जतात्	स्फूर्जताम्	स्फूर्जन्तु
	स्फूर्ज/स्फूर्जतात्	स्फूर्जतम्	स्फूर्जत
	स्फूर्जानि	स्फूर्जाव	स्फूर्जाम
ह्य०	अस्फूर्जत्	अस्फूर्जताम्	अस्फूर्जन्
	अस्फूर्जः	अस्फूर्जतम्	अस्फूर्जत
	अस्फूर्जम्	अस्फूर्जाव	अस्फूर्जाम
अ०	अस्फूर्जीत्	अस्फूर्जिष्टाम्	अस्फूर्जिषुः
	अस्फूर्जीः	अस्फूर्जिष्टम्	अस्फूर्जिष्ट
	अस्फूर्जिषम्	अस्फूर्जिष्व	अस्फूर्जिष्म
प०	पुस्फूर्ज	पुस्फूर्जतुः	पुस्फूर्जुः
	पुस्फूर्जिथ	पुस्फूर्जथुः	पुस्फूर्ज
	पुस्फूर्ज	पुस्फूर्जिव	पुस्फूर्जिम
आ०	स्फूर्ज्यात्	स्फूर्ज्यास्ताम्	स्फूर्ज्यासुः
	स्फूर्ज्याः	स्फूजर्यास्तम्	स्फूर्ज्यास्त
	स्फूर्ज्यासम्	स्फूर्ज्यास्व	स्फूर्ज्यास्म

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	स्फूर्जिता	स्फूर्जितारौ	स्फूर्जितार:
	स्फूर्जितासि	स्फूर्जितास्थ:	स्फूर्जितास्थ
	स्फूर्जितास्मि	स्फूर्जितास्व:	स्फूर्जितास्म:
भ०	स्फूर्जिष्यति	स्फूर्जिष्यत:	स्फूर्जिष्यन्ति
	स्फूर्जिष्यसि	स्फूर्जिष्यथ:	स्फूर्जिष्यथ
	स्फूर्जिष्यामि	स्फूर्जिष्याव:	स्फूर्जिष्याम:
क्रि०	अस्फूर्जिष्यत्	अस्फूर्जिष्यताम्	अस्फूर्जिष्यन्
	अस्फूर्जिष्य:	अस्फूर्जिष्यतम्	अस्फूर्जिष्यत
	अस्फूर्जिष्यम्	अस्फूर्जिष्याव	अस्फूर्जिष्याम[1]

१५०. क्षीज (क्षीज्) अव्यक्ते शब्दे।

व०	क्षीजति	क्षीजत:	क्षीजन्ति
स०	क्षीजेत्	क्षीजेताम्	क्षीजेयु:
प०	क्षीजतु/क्षीजतात्	क्षीजताम्	क्षीजन्तु
ह्य०	अक्षीजत्	अक्षीजताम्	अक्षीजन्
अ०	अक्षीजीत्	अक्षीजिष्टाम्	अक्षीजिषु:
प०	चिक्षीज	चिक्षीजतु:	चिक्षीजु:
आ०	क्षीज्यात्	क्षीज्यास्ताम्	क्षीज्यासु:
श्व०	क्षीजिता	क्षीजितारौ	क्षीजितार:
भ०	क्षीजिष्यति	क्षीजिष्यत:	क्षीजिष्यन्ति
क्रि०	अक्षीजिष्यत्	अक्षीजिष्यताम्	अक्षीजिष्यन्

१५१. कूज (कूज्) अव्यक्ते शब्दे।

व०	कूजति	कूजत:	कूजन्ति
स०	कूजेत्	कूजेताम्	कूजेयु:
प०	कूजतु/कूजतात्	कूजताम्	कूजन्तु
ह्य०	अकूजत्	अकूजताम्	अकूजन्
अ०	अकूजीत्	अकूजिष्टाम्	अकूजिषु:
प०	चुकूज	चुकूजतु:	चुकूजु:
आ०	कुज्यात्	कुज्यास्ताम्	कुज्यासु:
श्व०	कूजिता	कूजितारौ	कूजितार:
भ०	कूजिष्यति	कूजिष्यत:	कूजिष्यन्ति
क्रि०	अकूजिष्यत्	अकूजिष्यताम्	अकूजिष्यन्

१५२. गुज (गुज्) अव्यक्ते शब्दे।

व०	गोजति	गोजत:	गोजन्ति
स०	गोजेत्	गोजेताम्	गोजेयु:
प०	गोजतु/गोजतात्	गोजताम्	गोजन्तु
ह्य०	अगोजत्	अगोजताम्	अगोजन्
अ०	अगोजीत्	अगोजिष्टाम्	अगोजिषु:
प०	जुगोज	जुगुजतु:	जुगुजु:
आ०	गुज्यात्	गुज्यास्ताम्	गुज्यासु:
श्व०	गोजिता	गोजितारौ	गोजितार:
भ०	गोजिष्यति	गोजिष्यत:	गोजिष्यन्ति
क्रि०	अगोजिष्यत्	अगोजिष्यताम्	अगोजिष्यन्

१५३. गुजु (गुञ्ज्) अव्यक्ते शब्दे।

व०	गुञ्जति	गुञ्जत:	गुञ्जन्ति
स०	गुञ्जेत्	गुञ्जेताम्	गुञ्जेयु:
प०	गुञ्जतु/गुञ्जतात्	गुञ्जताम्	गुञ्जन्तु
ह्य०	अगुञ्जत्	अगुञ्जताम्	अगुञ्जन्
अ०	अगुञ्जीत्	अगुञ्जिष्टाम्	अगुञ्जिषु:
प०	जुगुञ्ज	जुगुञ्जतु:	जुगुञ्जु:
आ०	गुञ्ज्यात्	गुञ्ज्यास्ताम्	गुञ्ज्यासु:
श्व०	गुञ्जिता	गुञ्जितारौ	गुञ्जितार:
भ०	गुञ्जिष्यति	गुञ्जिष्यत:	गुञ्जिष्यन्ति
क्रि०	अगुञ्जिष्यत्	अगुञ्जिष्यताम्	अगुञ्जिष्यन्

१५४. लज (लज्) भर्त्सने।

व०	लजति	लजत:	लजन्ति
स०	लजेत्	लजेताम्	लजेयु:
प०	लजतु/लजतात्	लजताम्	लजन्तु
ह्य०	अलजत्	अलजताम्	अलजन्
अ०	अलाजीत्	अलाजिष्टाम्	अलाजिषु:
		तथा	
	अलजीत्	अलजिष्टाम्	अलजिषु:
प०	ललाज	लेजतु:	लेजु:
आ०	लज्यात्	लज्यास्ताम्	लज्यासु:
श्व०	लजिता	लजितारौ	लजितार:

१. भ्वादेर्नामिन इति दीर्घे सिद्ध दीर्घोच्चारणम् भ्वादेरिति दीर्घत्वस्यानित्यत्वख्यापनार्थम्। तेन कुर्दते कुर्दन इति सिद्धम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	लजिष्यति	लजिष्यतः	लजिष्यन्ति
क्रि०	अलजिष्यत्	अलजिष्यताम्	अलजिष्यन्

१५५. लजु (लञ्ज्) भर्त्सने।

व०	लञ्जति	लञ्जतः	लञ्जन्ति
स०	लञ्जेत्	लञ्जेताम्	लञ्जेयुः
प०	लञ्जतु/लञ्जतात्	लञ्जताम्	लञ्जन्तु
ह्य०	अलञ्जत्	अलञ्जताम्	अलञ्जन्
अ०	अलञ्जीत्	अलञ्जिष्टाम्	अलञ्जिषुः
प०	ललञ्ज	ललञ्जतुः	ललञ्जुः
आ०	लञ्ज्यात्	लञ्ज्यास्ताम्	लञ्ज्यासुः
श्व०	लञ्जिता	लञ्जितारौ	लञ्जितारः
भ०	लञ्जिष्यति	लञ्जिष्यतः	लञ्जिष्यन्ति
क्रि०	अलञ्जिष्यत्	अलञ्जिष्यताम्	अलञ्जिष्यन्

१५६. तर्ज (तर्ज्) भर्त्सने।

व०	तर्जति	तर्जतः	तर्जन्ति
स०	तर्जेत्	तर्जेताम्	तर्जेयुः
प०	तर्जतु/तर्जतात्	तर्जताम्	तर्जन्तु
ह्य०	अतर्जत्	अतर्जताम्	अतर्जन्
अ०	अतर्जीत्	अतर्जिष्टाम्	अतर्जिषुः
प०	ततर्ज	ततर्जतुः	ततर्जुः
आ०	तर्ज्यात्	तर्ज्यास्ताम्	तर्ज्यासुः
श्व०	तर्जिता	तर्जितारौ	तर्जितारः
भ०	तर्जिष्यति	तर्जिष्यतः	तर्जिष्यन्ति
क्रि०	अतर्जिष्यत्	अतर्जिष्यताम्	अतर्जिष्यन्

१५७. लाज (लाज्) भर्जने च चकाराद् भर्त्सने।

व०	लाजति	लाजतः	लाजन्ति
स०	लाजेत्	लाजेताम्	लाजेयुः
प०	लाजतु/लाजतात्	लाजताम्	लाजन्तु
ह्य०	अलाजत्	अलाजताम्	अलाजन्
अ०	अलाजीत्	अलाजिष्टाम्	अलाजिषुः
प०	ललाज	ललाजतुः	ललाजुः
आ०	लाज्यात्	लाज्यास्ताम्	लाज्यासुः
श्व०	लाजिता	लाजितारौ	लाजितारः
भ०	लाजिष्यति	लाजिष्यतः	लाजिष्यन्ति
क्रि०	अलाजिष्यत्	अलाजिष्यताम्	अलाजिष्यन्

१५८. लाजु (लाञ्ज्) भर्जने च। चकाराद्भर्त्सने।

व०	लाञ्जति	लाञ्जतः	लाञ्जन्ति
स०	लाञ्जेत्	लाञ्जेताम्	लाञ्जेयुः
प०	लाञ्जतु/लाञ्जतात्	लाञ्जताम्	लाञ्जन्तु
ह्य०	अलाञ्जत्	अलाञ्जताम्	अलाञ्जन्
अ०	अलाञ्जीत्	अलाञ्जिष्टाम्	अलाञ्जिषुः
प०	ललाञ्ज	ललाञ्जतुः	ललाञ्जुः
आ०	लाञ्ज्यात्	लाञ्ज्यास्ताम्	लाञ्ज्यासुः
श्व०	लाञ्जिता	लाञ्जितारौ	लाञ्जितारः
भ०	लाञ्जिष्यति	लाञ्जिष्यतः	लाञ्जिष्यन्ति
क्रि०	अलाञ्जिष्यत्	अलाञ्जिष्यताम्	अलाञ्जिष्यन्

१५९. जज (जज्) युद्धे।

व०	जजति	जजतः	जजन्ति
स०	जजेत्	जजेताम्	जजेयुः
प०	जजतु/जजतात्	जजताम्	जजन्तु
ह्य०	अजजत्	अजजताम्	अजजन्
अ०	अजाजीत्	अजाजिष्टाम्	अजाजिषुः
		तथा	
	अजजीत्	अजजिष्टाम्	अजजिषुः
प०	जजाज	जेजतुः	जेजुः
आ०	जज्यात्	जज्यास्ताम्	जज्यासुः
श्व०	जजिता	जजितारौ	जजितारः
भ०	जजिष्यति	जजिष्यतः	जजिष्यन्ति
क्रि०	अजजिष्यत्	अजजिष्यताम्	अजजिष्यन्

१६०. जजु (जञ्ज्) युद्धे।

व०	जञ्जति	जञ्जतः	जञ्जन्ति
स०	जञ्जेत्	जञ्जेताम्	जञ्जेयुः
प०	जञ्जतु/जञ्जतात्	जञ्जताम्	जञ्जन्तु
ह्य०	अजञ्जत्	अजञ्जताम्	अजञ्जन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	अजञ्जीत्	अजञ्जिष्टाम्	अजञ्जिषुः
प०	जजञ्ज	जजञ्जतुः	जजञ्जुः
आ०	जञ्ज्यात्	जञ्ज्यास्ताम्	जञ्ज्यासुः
श्व०	जञ्जिता	जञ्जितारौ	जञ्जितारः
भ०	जञ्जिष्यति	जञ्जिष्यतः	जञ्जिष्यन्ति
क्रि०	अजञ्जिष्यत्	अजञ्जिष्यताम्	अजञ्जिष्यन्

१६१. तुज (तुज्) हिंसायाम्।

व०	तोजति	तोजतः	तोजन्ति
स०	तोजेत्	तोजेताम्	तोजेयुः
प०	तोजतु/तोजतात्	तोजताम्	तोजन्तु
ह्य०	अतोजत्	अतोजताम्	अतोजन्
अ०	अतोजीत्	अतोजिष्टाम्	अतोजिषुः
प०	तुतोज	तुतुजतुः	तुतुजुः
आ०	तुज्यात्	तुज्यास्ताम्	तुज्यासुः
श्व०	तोजिता	तोजितारौ	तोजितारः
भ०	तोजिष्यति	तोजिष्यतः	तोजिष्यन्ति
क्रि०	अतोजिष्यत्	अतोजिष्यताम्	अतोजिष्यन्

१६२. तुजु (तुञ्ज्) बलने च।

चाद् हिंसायाम्। बलनं प्राणनम्।

व०	तुञ्जति	तुञ्जतः	तुञ्जन्ति
स०	तुञ्जेत्	तुञ्जेताम्	तुञ्जेयुः
प०	तुञ्जतु/तुञ्जतात्	तुञ्जताम्	तुञ्जन्तु
ह्य०	अतुञ्जत्	अतुञ्जताम्	अतुञ्जन्
अ०	अतुञ्जीत्	अतुञ्जिष्टाम्	अतुञ्जिषुः
प०	तुतुञ्ज	तुतुञ्जतुः	तुतुञ्जुः
आ०	तुञ्ज्यात्	तुञ्ज्यास्ताम्	तुञ्ज्यासुः
श्व०	तुञ्जिता	तुञ्जितारौ	तुञ्जितारः
भ०	तुञ्जिष्यति	तुञ्जिष्यतः	तुञ्जिष्यन्ति
क्रि०	अतुञ्जिष्यत्	अतुञ्जिष्यताम्	अतुञ्जिष्यन्

१६३. गर्ज (गर्ज्) शब्दे।

व०	गर्जति	गर्जतः	गर्जन्ति
स०	गर्जेत्	गर्जेताम्	गर्जेयुः
प०	गर्जतु/गर्जतात्	गर्जताम्	गर्जन्तु
ह्य०	अगर्जत्	अगर्जताम्	अगर्जन्
अ०	अगर्जीत्	अगर्जिष्टाम्	अगर्जिषुः
प०	जगर्ज	जगर्जतुः	जगर्जुः
आ०	गर्ज्यात्	गर्ज्यास्ताम्	गर्ज्यासुः
श्व०	गर्जिता	गर्जितारौ	गर्जितारः
भ०	गर्जिष्यति	गर्जिष्यतः	गर्जिष्यन्ति
क्रि०	अगर्जिष्यत्	अगर्जिष्यताम्	अगर्जिष्यन्

१६४. गजु (गञ्ज्) शब्दे।

व०	गञ्जति	गञ्जतः	गञ्जन्ति
	गञ्जसि	गञ्जथः	गञ्जथ
	गञ्जामि	गञ्जावः	गञ्जामः
स०	गञ्जेत्	गञ्जेताम्	गञ्जेयुः
	गञ्जेः	गञ्जेतम्	गञ्जेत
	गञ्जेयम्	गञ्जेव	गञ्जेम
प०	गञ्जतु/गञ्जतात्	गञ्जताम्	गञ्जन्तु
	गञ्ज/गञ्जतात्	गञ्जतम्	गञ्जत
	गञ्जानि	गञ्जाव	गञ्जाम
ह्य०	अगञ्जत्	अगञ्जताम्	अगञ्जन्
	अगञ्जः	अगञ्जतम्	अगञ्जत
	अगञ्जम्	अगञ्जाव	अगञ्जाम
अ०	अगञ्जीत्	अगञ्जिष्टाम्	अगञ्जिषुः
	अगञ्जीः	अगञ्जिष्टम्	अगञ्जिष्ट
	अगञ्जिषम्	अगञ्जिष्व	अगञ्जिष्म
प०	जगञ्ज	जगञ्जतुः	जगञ्जुः
	जगञ्जिथ	जगञ्जथुः	जगञ्ज
	जगञ्ज	जगञ्जिव	जगञ्जिम
आ०	गञ्ज्यात्	गञ्ज्यास्ताम्	गञ्ज्यासुः
	गञ्ज्याः	गञ्ज्यास्तम्	गञ्ज्यास्त
	गञ्ज्यासम्	गञ्ज्यास्व	गञ्ज्यास्म
श्व०	गञ्जिता	गञ्जितारौ	गञ्जितारः
	गञ्जितासि	गञ्जितास्थः	गञ्जितास्थ
	गञ्जितास्मि	गञ्जितास्वः	गञ्जितास्मः

भ०	गञ्जिष्यति	गञ्जिष्यतः	गञ्जिष्यन्ति
	गञ्जिष्यसि	गञ्जिष्यथः	गञ्जिष्यथ
	गञ्जिष्यामि	गञ्जिष्यावः	गञ्जिष्यामः
क्रि०	अगञ्जिष्यत्	अगञ्जिष्यताम्	अगञ्जिष्यन्
	अगञ्जिष्यः	अगञ्जिष्यतम्	अगञ्जिष्यत
	अगञ्जिष्यम्	अगञ्जिष्याव	अगञ्जिष्याम

१६५. गृज (गृज्) शब्दे।

व०	गर्जति	गर्जतः	गर्जन्ति
स०	गर्जेत्	गर्जेताम्	गर्जेयुः
प०	गर्जतु/गर्जतात्	गर्जताम्	गर्जन्तु
ह्य०	अगर्जत्	अगर्जताम्	अगर्जन्
अ०	अगर्जीत्	अगर्जिष्टाम्	अगर्जिषुः
प०	जगर्ज	जगृजतुः	जगृजुः
आ०	गृज्यात्	गृज्यास्ताम्	गृज्यासुः
श्व०	गर्जिता	गर्जितारौ	गर्जितारः
भ०	गर्जिष्यति	गर्जिष्यतः	गर्जिष्यन्ति
क्रि०	अगर्जिष्यत्	अगर्जिष्यताम्	अगर्जिष्यन्

१६६. गृजु (गृञ्ज्) शब्दे।

(उपरिवत्)

१६७. मुज (मुज्) शब्दे।

व०	मोजति	मोजतः	मोजन्ति
स०	मोजेत्	मोजेताम्	मोजेयुः
प०	मोजतु/मोजतात्	मोजताम्	मोजन्तु
ह्य०	अमोजत्	अमोजताम्	अमोजन्
अ०	अमोजीत्	अमोजिष्टाम्	अमोजिषुः
प०	मुमोज	मुमुजतुः	मुमुजुः
आ०	मुज्यात्	मुज्यास्ताम्	मुज्यासुः
श्व०	मोजिता	मोजितारौ	मोजितारः
भ०	मोजिष्यति	मोजिष्यतः	मोजिष्यन्ति
क्रि०	अमोजिष्यत्	अमोजिष्यताम्	अमोजिष्यन्

१६८. मुजु (मुञ्ज्) शब्दे इति।

व०	मुञ्जति	मुञ्जतः	मुञ्जन्ति
स०	मुञ्जेत्	मुञ्जेताम्	मुञ्जेयुः
प०	मुञ्जतु/मुञ्जतात्	मुञ्जताम्	मुञ्जन्तु
ह्य०	अमुञ्जत्	अमुञ्जताम्	अमुञ्जन्
अ०	अमुञ्जीत्	अमुञ्जिष्टाम्	अमुञ्जिषुः
प०	मुमुञ्ज	मुमुञ्जमुः	मुमुञ्जुः
आ०	मुञ्ज्यात्	मुञ्ज्यास्ताम्	मुञ्ज्यासुः
श्व०	मुञ्जिता	मुञ्जितारौ	मुञ्जितारः
भ०	मुञ्जिष्यति	मुञ्जिष्यतः	मुञ्जिष्यन्ति
क्रि०	अमुञ्जिष्यत्	अमुञ्जिष्यताम्	अमुञ्जिष्यन्

१६८. २ मृज (मृज्) शब्दे इति केचित्।

व०	मर्जति	मर्जतः	मर्जन्ति
स०	मर्जेत्	मर्जेताम्	मर्जेयुः
प०	मर्जतु/मर्जतात्	मर्जताम्	मर्जन्तु
ह्य०	अमर्जत्	अमर्जताम्	अमर्जन्
अ०	अमर्जीत्	अमर्जिष्टाम्	अमर्जिषुः
प०	ममर्ज	ममृजतुः	ममृजुः
आ०	मृज्यात्	मृज्यास्ताम्	मृज्यासुः
श्व०	मर्जिता	मर्जितारौ	मर्जितारः
भ०	मर्जिष्यति	मर्जिष्यतः	मर्जिष्यन्ति
क्रि०	अमर्जिष्यत्	अमर्जिष्यताम्	अमर्जिष्यन्

१६९. मृजु (मृञ्ज्) शब्दे।

व० मृञ्जति मृञ्जतः मृञ्जन्ति, इत्यादि।

१७०. मज (मज्) शब्दे।

व० मजति मजतः मजन्ति इत्यादि।

१७१. गज (गज्) मदने च चकारात् शब्दे। मदनं मदोत्पत्तिः।

व०	गजति	गजतः	गजन्ति
	गजसि	गजथः	गजथ
	गजामि	गजावः	गजामः
स०	गजेत्	गजेताम्	गजेयुः
	गजेः	गजेतम्	गजेत
	गजेयम्	गजेव	गजेम

प०	गजतु/गजतात्	गजताम्	गजन्तु
	गज/गजतात्	गजतम्	गजत
	गजानि	गजाव	गजाम
ह्य०	अगजत्	अगजताम्	अगजन्
	अगजः	अगजतम्	अगजत
	अगजम्	अगजाव	अगजाम
अ०	अगाजीत्	अगाजिष्टाम्	अगाजिषुः
	अगाजीः	अगाजिष्टम्	अगाजिष्ट
	अगाजिषम्	अगाजिष्व	अगाजिष्म

तथा

	अगजीत्	अगजिष्टाम्	अगजिषुः
	अगजीः	अगजिष्टम्	अगजिष्ट
	अगजिषम्	अगजिष्व	अगजिष्म
प०	जगाज	जगजतुः	जगजुः
	जगजिथ	जगजथुः	जगज
	जगाज/जगज	जगजिव	जगजिम
आ०	गज्यात्	गज्यास्ताम्	गज्यासुः
	गज्याः	गज्यास्तम्	गज्यास्त
	गज्यासम्	गज्यास्व	गज्यास्म
श्व०	गजिता	गजितारौ	गजितारः
	गजितासि	गजितास्थः	गजितास्थ
	गजितास्मि	गजितास्वः	गजितास्मः
भ०	गजिष्यति	गजिष्यतः	गजिष्यन्ति
	गजिष्यसि	गजिष्यथः	गजिष्यथ
	गजिष्यामि	गजिष्यावः	गजिष्यामः
क्रि०	अगजिष्यत्	अगजिष्यताम्	अगजिष्यन्
	अगजिष्यः	अगजिष्यतम्	अगजिष्यत
	अगजिष्यम्	अगजिष्याव	अगजिष्याम

१७२. त्यजं (त्यज्) हानौ। हानिस्त्यागः।

त्यजति त्यजतः त्यजन्ति इत्यादि।

१७३. षञ्ज (सञ्ज्) सङ्गे।

व०	सजति	सजतः	सजन्ति
स०	सजेत्	सजेताम्	सजेयुः
प०	सजतु/सजतात्	सजताम्	सजन्तु
ह्य०	असजत्	असजताम्	असजन्
अ०	असाङ्क्षीत्	असाङ्क्ताम्	असाङ्क्षुः
प०	ससञ्ज	ससञ्जतुः	ससञ्जुः
आ०	सज्यात्	सज्यास्ताम्	सज्यासुः
श्व०	सङ्क्ता	सङ्क्तारौ	सङ्क्तारः
भ०	सङ्क्ष्यति	सङ्क्ष्यतः	सङ्क्ष्यन्ति
क्रि०	असङ्क्ष्यत्	असङ्क्ष्यताम्	असङ्क्ष्यन्

॥अथ टान्ता अष्टात्रिंशत्सेटश्च॥

१७४. कटे (कट्) वर्षावरणयोः।

वृष्टौ आवरणे चेत्यर्थः।

व०	कटति	कटतः	कटन्ति
	कटसि	कटथः	कटथ
	कटामि	कटावः	कटामः
स०	कटेत्	कटेताम्	कटेयुः
	कटेः	कटेतम्	कटेत
	कटेयम्	कटेव	कटेम
प०	कटतु/कटतात्	कटताम्	कटन्तु
	कट/कटतात्	कटतम्	कटत
	कटानि	कटाव	कटाम
ह्य०	अकटत्	अकटताम्	अकटन्
	अकटः	अकटतम्	अकटत
	अकटम्	अकटाव	अकटाम
अ०	अकटीत्	अकटिष्टाम्	अकटिषुः
	अकटीः	अकटिष्टम्	अकटिष्ट
	अकटिषम्	अकटिष्व	अकटिष्म
प०	चकाट	चकटतुः	चकटुः
	चकटिथ	चकटथुः	चकट
	चकाट/चकट	चकटिव	चकटिम
आ०	कट्यात्	कट्यास्ताम्	कट्यासुः
	कट्याः	कट्यास्तम्	कट्यास्त
	कट्यासम्	कट्यास्व	कट्यास्म
श्व०	कटिता	कटितारौ	कटितारः
	कटितासि	कटितास्थः	कटितास्थ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	कटितास्मि	कटितास्वः	कटितास्मः
भ०	कटिष्यति	कटिष्यतः	कटिष्यन्ति
	कटिष्यसि	कटिष्यथः	कटिष्यथ
	कटिष्यामि	कटिष्यावः	कटिष्यामः
क्रि०	अकटिष्यत्	अकटिष्यताम्	अकटिष्यन्
	अकटिष्यः	अकटिष्यतम्	अकटिष्यत
	अकटिष्यम्	अकटिष्याव	अकटिष्याम

१७५. शटे (शट्) रुजाविशरणगत्यवसादनेषु।

व०	शटति	शटतः	शटन्ति
स०	शटेत्	शटेताम्	शटेयुः
प०	शटतु/शटतात्	शटताम्	शटन्तु
ह्य०	अशटत्	अशटताम्	अशटन्
अ०	अशाटीत्	अशाटिष्टाम्	अशाटिषुः
	अशटीत्	अशटिष्टाम्	अशटिषुः
प०	शशाट	शेटतुः	शेटुः
आ०	शट्यात्	शट्यास्ताम्	शट्यासुः
श्व०	शटिता	शटितारौ	शटितारः
भ०	शटिष्यति	शटिष्यतः	शटिष्यन्ति
क्रि०	अशटिष्यत्	अशटिष्यताम्	अशटिष्यन्

१७६. वट (वट्) वेष्टने।

व०	वटति	वटतः	वटन्ति
स०	वटेत्	वटेताम्	वटेयुः
प०	वटतु/वटतात्	वटताम्	वटन्तु
ह्य०	अवटत्	अवटताम्	अवटन्
अ०	अवाटीत्	अवाटिष्टाम्	अवाटिषुः
		तथा	
	अवटीत्	अवटिष्टाम्	अवटिषुः
प०	ववाट	ववटतुः	ववटुः
आ०	वट्यात्	वट्यास्ताम्	वट्यासुः
श्व०	वटिता	वटितारौ	वटितारः
भ०	वटिष्यति	वटिष्यतः	वटिष्यन्ति
क्रि०	अवटिष्यत्	अवटिष्यताम्	अवटिष्यन्

१७७. किट (किट्) उत्रासे।

उत्रासो भयोद्गतिरुत्रासनञ्च।

व०	केटति	केटतः	केटन्ति
स०	केटेत्	केटेताम्	केटेयुः
प०	केटतु/केटतात्	केटताम्	केटन्तु
ह्य०	अकेटत्	अकेटताम्	अकेटन्
अ०	अकेटीत्	अकेटिष्टाम्	अकेटिषुः
प०	चिकेट	चिकिटतुः	चिकिटुः
आ०	किट्यात्	किट्यास्ताम्	किट्यासुः
श्व०	केटिता	केटितारौ	केटितारः
भ०	केटिष्यति	केटिष्यतः	केटिष्यन्ति
क्रि०	अकेटिष्यत्	अकेटिष्यताम्	अकेटिष्यन्

१७८. खिट (खिट्) उत्रासे।

उत्रासो भयोद्गतिरुत्रासनञ्च

व०	खेटति	खेटतः	खेटन्ति
स०	खेटेत्	खेटेताम्	खेटेयुः
प०	खेटतु/खेटतात्	खेटताम्	खेटन्तु
ह्य०	अखेटत्	अखेटताम्	अखेटन्
अ०	अखेटीत्	अखेटिष्टाम्	अखेटिषुः
प०	चिखेट	चिखिटतुः	चिखिटुः
आ०	खिट्यात्	खिट्यास्ताम्	खिट्यासुः
श्व०	खेटिता	खेटितारौ	खेटितारः
भ०	खेटिष्यति	खेटिष्यतः	खेटिष्यन्ति
क्रि०	अखेटिष्यत्	अखेटिष्यताम्	अखेटिष्यन्

१७९. शिट (शिट्) अनादरे।

व०	शेटति	शेटतः	शेटन्ति
स०	शेटेत्	शेटेताम्	शेटेयुः
प०	शेटतु/शेटतात्	शेटताम्	शेटन्तु
ह्य०	अशेटत्	अशेटताम्	अशेटन्
अ०	अशेटीत्	अशेटिष्टाम्	अशेटिषुः
प०	शिशेट	शिशिटतुः	शिशिटुः
आ०	शिट्यात्	शिट्यास्ताम्	शिट्यासुः
श्व०	शेटिता	शेटितारौ	शेटितारः
भ०	शेटिष्यति	शेटिष्यतः	शेटिष्यन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रि०	अशेटिष्यत्	अशेटिष्यताम्	अशेटिष्यन्

१८०. षिट (सिट्) अनादरे।

व०	सेटति	सेटत:	सेटन्ति
स०	सेटेत्	सेटेताम्	सेटेयु:
प०	सेटतु/सेटतात्	सेटताम्	सेटन्तु
ह्य०	असेटत्	असेटताम्	असेटन्
अ०	असेटीत्	असेटिष्टाम्	असेटिषु:
प०	सिषेट	सिषिटतु:	सिषिटु:
आ०	सिट्यात्	सिट्यास्ताम्	सिट्यासु:
श्व०	सेटिता	सेटितारौ	सेटितार:
भ०	सेटिष्यति	सेटिष्यत:	सेटिष्यन्ति
क्रि०	असेटिष्यत्	असेटिष्यताम्	असेटिष्यन्

१८१. जट (जट्) संघाते।

व०	जटति	जटत:	जटन्ति
स०	जटेत्	जटेताम्	जटेयु:
प०	जटतु/जटतात्	जटताम्	जटन्तु
ह्य०	अजटत्	अजटताम्	अजटन्
अ०	अजाटीत्	अजाटिष्टाम्	अजाटिषु:
		तथा	
	अजटीत्	अजटिष्टाम्	अजटिषु:
प०	जजाट	जेटतु:	जेटु:
आ०	जट्यात्	जट्यास्ताम्	जट्यासु:
श्व०	जटिता	जटितारौ	जटितार:
भ०	जटिष्यति	जटिष्यत:	जटिष्यन्ति
क्रि०	अजटिष्यत्	अजटिष्यताम्	अजटिष्यन्

१८२. झट (झट्) संघाते।

व०	झटति	झटत:	झटन्ति
स०	झटेत्	झटेताम्	झटेयु:
प०	झटतु/झटतात्	झटताम्	झटन्तु
ह्य०	अझटत्	अझटताम्	अझटन्
अ०	अझाटीत्	अझाटिष्टाम्	अझाटिषु:
	अझटीत्	अझटिष्टाम्	अझटिषु:
प०	जझाट	जझाटतु:	जझाटु:
आ०	झट्यात्	झट्यास्ताम्	झट्यासु:
श्व०	झटिता	झटितारौ	झटितार:
भ०	झटिष्यति	झटिष्यत:	झटिष्यन्ति
क्रि०	अझटिष्यत्	अझटिष्यताम्	अझटिष्यन्

१८३. पिट (पिट्) शब्दे च।

चकारात्संघाते।

व०	पेटति	पेटत:	पेटन्ति
स०	पेटेत्	पेटेताम्	पेटेयु:
प०	पेटतु/पेटतात्	पेटताम्	पेटन्तु
ह्य०	अपेटत्	अपेटताम्	अपेटन्
अ०	अपेटीत्	अपेटिष्टाम्	अपेटिषु:
प०	पिपेट	पिपिटतु:	पिपिटु:
आ०	पिट्यात्	पिट्यास्ताम्	पिट्यासु:
श्व०	पेटिता	पेटितारौ	पेटितार:
भ०	पेटिष्यति	पेटिष्यत:	पेटिष्यन्ति
क्रि०	अपेटिष्यत्	अपेटिष्यताम्	अपेटिष्यन्

१८४. भट (भट्) भृतौ। भृतिर्वेतनं भरणञ्च।

व०	भटति	भटत:	भटन्ति
स०	भटेत्	भटेताम्	भटेयु:
प०	भटतु/भटतात्	भटताम्	भटन्तु
ह्य०	अभटत्	अभटताम्	अभटन्
अ०	अभाटीत्	अभाटिष्टाम्	अभाटिषु:
		तथा	
	अभटीत्	अभटिष्टाम्	अभटिषु:
प०	बभाट	बभटतु:	बभटु:
आ०	भट्यात्	भट्यास्ताम्	भट्यासु:
श्व०	भटिता	भटितारौ	भटितार:
भ०	भटिष्यति	भटिष्यत:	भटिष्यन्ति
क्रि०	अभटिष्यत्	अभटिष्यताम्	अभटिष्यन्

१८५. तट (तट्) उच्छाये। वृद्धावित्यर्थ:।

व०	तटति	तटत:	तटन्ति
स०	तटेत्	तटेताम्	तटेयु:
प०	तटतु/तटतात्	तटताम्	तटन्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	अतटत्	अतटताम्	अतटन्
अ०	अताटीत्	अताटिष्टाम्	अताटिषुः
		तथा	
	अतटीत्	अतटिष्टाम्	अतटिषुः
प०	तताट	तेटतुः	तेटुः
आ०	तट्यात्	तट्यास्ताम्	तट्यासुः
श्व०	तटिता	तटितारौ	तटितारः
भ०	तटिष्यति	तटिष्यतः	तटिष्यन्ति
क्रि०	अतटिष्यत्	अतटिष्यताम्	अतटिष्यन्

१८६. खट (खट्) काङ्क्षे[1]।

व०	खटति	खटतः	खटन्ति
स०	खटेत्	खटेताम्	खटेयुः
प०	खटतु/खटतात्	खटताम्	खटन्तु
ह्य०	अखटत्	अखटताम्	अखटन्
अ०	अखाटीत्	अखाटिष्टाम्	अखाटिषुः
		तथा	
	अखटीत्	अखटिष्टाम्	अखटिषुः
प०	चखाट	चखटतुः	चखटुः
आ०	खट्यात्	खट्यास्ताम्	खट्यासुः
श्व०	खटिता	खटितारौ	खटितारः
भ०	खटिष्यति	खटिष्यतः	खटिष्यन्ति
क्रि०	अखटिष्यत्	अखटिष्यताम्	अखटिष्यन्

१८७. णट (नट्) नृत्तौ।

नतावित्यन्ये। हिंसायामित्येके।

व०	नटति	नटतः	नटन्ति
स०	नटेत्	नटेताम्	नटेयुः
प०	नटतु/नटतात्	नटताम्	नटन्तु
ह्य०	अनटत्	अनटताम्	अनटन्
अ०	अनाटीत्	अनाटिष्टाम्	अनाटिषुः
		तथा	
	अनटीत्	अनटिष्टाम्	अनटिषुः
प०	ननाट	नेटतुः	नेटुः
आ०	नट्यात्	नट्यास्ताम्	नट्यासुः

१. काङ्क्षास्यास्तीत्यर्शआदित्वादः काङ्क्षाविशिष्टो धात्वर्थः।

श्व०	नटिता	नटितारौ	नटितारः
भ०	नटिष्यति	नटिष्यतः	नटिष्यन्ति
क्रि०	अनटिष्यत्	अनटिष्यताम्	अनटिष्यन्

१८८. हट (हट्) दीप्तौ।

व०	हटति	हटतः	हटन्ति
स०	हटेत्	हटेताम्	हटेयुः
प०	हटतु/हटतात्	हटताम्	हटन्तु
ह्य०	अहटत्	अहटताम्	अहटन्
अ०	अहाटीत्	अहाटिष्टाम्	अहाटिषुः
		तथा	
	अहटीत्	अहटिष्टाम्	अहटिषुः
प०	जहाट	जहटतुः	जहटुः
आ०	हट्यात्	हट्यास्ताम्	हट्यासुः
श्व०	हटिता	हटितारौ	हटितारः
भ०	हटिष्यति	हटिष्यतः	हटिष्यन्ति
क्रि०	अहटिष्यत्	अहटिष्यताम्	अहटिष्यन्

१८९. षट (सट्) अवयवे (उपरिवत्)

१९०. लुट (लुट्) विलोडने विलोटन इत्येके।

व०	लोटति	लोटतः	लोटन्ति
स०	लोटेत्	लोटेताम्	लोटेयुः
प०	लोटतु/लोटतात्	लोटताम्	लोटन्तु
ह्य०	अलोटत्	अलोटताम्	अलोटन्
अ०	अलोटीत्	अलोटिष्टाम्	अलोटिषुः
प०	लुलोट	लुलुटतुः	लुलुटुः
आ०	लुट्यात्	लुट्यास्ताम्	लुट्यासुः
श्व०	लोटिता	लोटितारौ	लोटितारः
भ०	लोटिष्यति	लोटिष्यतः	लोटिष्यन्ति
क्रि०	अलोटिष्यत्	अलोटिष्यताम्	अलोटिष्यन्

१९१. चिट (चिट्) प्रैष्यं दासत्वम्।

व०	चेटति	चेटतः	चेटन्ति
स०	चेटेत्	चेटेताम्	चेटेयुः
प०	चेटतु/चेटतात्	चेटताम्	चेटन्तु
ह्य०	अचेटत्	अचेटताम्	अचेटन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	अचेटीत्	अचेटिष्टाम्	अचेटिषुः
प०	चिचेट	चिचिटतुः	चिचिटुः
आ०	चिट्यात्	चिट्यास्ताम्	चिट्यासुः
श्व०	चेटिता	चेटितारौ	चेटितारः
भ०	चेटिष्यति	चेटिष्यतः	चेटिष्यन्ति
क्रि०	अचेटिष्यत्	अचेटिष्यताम्	अचेटिष्यन्

१९२. विट (विट्) शब्दे, आक्रोशे इत्यन्ये।

व०	वेटति	वेटतः	वेटन्ति
स०	वेटेत्	वेटेताम्	वेटेयुः
प०	वेटतु/वेटतात्	वेटताम्	वेटन्तु
ह्य०	अवेटत्	अवेटताम्	अवेटन्
अ०	अवेटीत्	अवेटिष्टाम्	अवेटिषुः
प०	विवेट	विविटतुः	विविटुः
आ०	विट्यात्	विट्यास्ताम्	विट्यासुः
श्व०	वेटिता	वेटितारौ	वेटितारः
भ०	वेटिष्यति	वेटिष्यतः	वेटिष्यन्ति
क्रि०	अवेटिष्यत्	अवेटिष्यताम्	अवेटिष्यन्

१९३. हेट (हेट्) विबाधायाम्; डान्तोऽयमित्येके।

व०	हेटति	हेटतः	हेटन्ति
स०	हेटेत्	हेटेताम्	हेटेयुः
प०	हेटतु/हेटतात्	हेटताम्	हेटन्तु
ह्य०	अहेटत्	अहेटताम्	अहेटन्
अ०	अहेटीत्	अहेटिष्टाम्	अहेटिषुः
प०	जिहेट	जिहेटतुः	जिहेटुः
आ०	हेट्यात्	हेट्यास्ताम्	हेट्यासुः
श्व०	हेटिता	हेटितारौ	हेटितारः
भ०	हेटिष्यति	हेटिष्यतः	हेटिष्यन्ति
क्रि०	अहेटिष्यत्	अहेटिष्यताम्	अहेटिष्यन्

१९४. अट (अट्) गतौ।

व०	अटति	अटतः	अटन्ति
स०	अटेत्	अटेताम्	अटेयुः
प०	अटतु/अटतात्	अटताम्	अटन्तु
ह्य०	आटत्	आटताम्	आटन्
अ०	आटीत्	आटिष्टाम्	आटिषुः
प०	आट	आटतुः	आटुः
आ०	अट्यात्	अट्यास्ताम्	अट्यासुः
श्व०	अटिता	अटितारौ	अटितारः
भ०	अटिष्यति	अटिष्यतः	अटिष्यन्ति
क्रि०	आटिष्यत्	आटिष्यताम्	आटिष्यन्

१९५. पट (पट्) गतौ।

व०	पटति	पटतः	पटन्ति
स०	पटेत्	पटेताम्	पटेयुः
प०	पटतु/पटतात्	पटताम्	पटन्तु
ह्य०	अपटत्	अपटताम्	अपटन्
अ०	अपाटीत्	अपाटिष्टाम्	अपाटिषुः
		तथा	
	अपटीत्	अपटिष्टाम्	अपटिषुः
प०	पपाट	पेटतुः	पेटुः
आ०	पट्यात्	पट्यास्ताम्	पट्यासुः
श्व०	पटिता	पटितारौ	पटितारः
भ०	पटिष्यति	पटिष्यतः	पटिष्यन्ति
क्रि०	अपटिष्यत्	अपटिष्यताम्	अपटिष्यन्

१९६. इट (इट्) गतौ।

व०	एटति	एटतः	एटन्ति
स०	एटेत्	एटेताम्	एटेयुः
प०	एटतु/एटतात्	एटताम्	एटन्तु
ह्य०	ऐटत्	ऐटताम्	ऐटन्
अ०	ऐटीत्	ऐटिष्टाम्	ऐटिषुः
प०	इयेट	ईटतुः	ईटुः
आ०	इट्यात्	इट्यास्ताम्	इट्यासुः
श्व०	एटिता	एटितारौ	एटितारः
भ०	एटिष्यति	एटिष्यतः	एटिष्यन्ति
क्रि०	एटिष्यत्	एटिष्यताम्	एटिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९७. किट (किट्) गतौ।

व०	केटति	केटतः	केटन्ति
स०	केटेत्	केटेताम्	केटेयुः
प०	केटतु/केटतात्	केटताम्	केटन्तु
ह्य०	अकेटत्	अकेटताम्	अकेटन्
अ०	अकेटीत्	अकेटिष्टाम्	अकेटिषुः
प०	चिकेट	चिकिटतुः	चिकिटुः
आ०	किट्यात्	किट्यास्ताम्	किट्यासुः
श्व०	केटिता	केटितारौ	केटितारः
भ०	केटिष्यति	केटिष्यतः	केटिष्यन्ति
क्रि०	अकेटिष्यत्	अकेटिष्यताम्	अकेटिष्यन्

१९८. कट (कट्) गतौ।

व०	कटति	कटतः	कटन्ति
स०	कटेत्	कटेताम्	कटेयुः
प०	कटतु/कटतात्	कटताम्	कटन्तु
ह्य०	अकटत्	अकटताम्	अकटन्
अ०	अकाटीत्	अकाटिष्टाम्	अकाटिषुः
		तथा	
	अकटीत्	अकटिष्टाम्	अकटिषुः
प०	चकाट	चकटतुः	चकटुः
आ०	कट्यात्	कट्यास्ताम्	कट्यासुः
श्व०	कटिता	कटितारौ	कटितारः
भ०	कटिष्यति	कटिष्यतः	कटिष्यन्ति
क्रि०	अकटिष्यत्	अकटिष्यताम्	अकटिष्यन्

१९९. कटु (कण्ट्) गतौ।

व०	कण्टति	कण्टतः	कण्टन्ति
स०	कण्टेत्	कण्टेताम्	कण्टेयुः
प०	कण्टतु/कण्टतात्	कण्टताम्	कण्टन्तु
ह्य०	अकण्टत्	अकण्टताम्	अकण्टन्
अ०	अकण्टीत्	अकण्टिष्टाम्	अकण्टिषुः
प०	चकण्ट	चकण्टतुः	चकण्टुः
आ०	कण्ट्यात्	कण्ट्यास्ताम्	कण्ट्यासुः
श्व०	कण्टिता	कण्टितारौ	कण्टितारः
भ०	कण्टिष्यति	कण्टिष्यतः	कण्टिष्यन्ति
क्रि०	अकण्टिष्यत्	अकण्टिष्यताम्	अकण्टिष्यन्

२०० कटे (कट्) गतौ एतद्रूपाणि अनुपदोक्त कट १९८ वत्। पुनः पाठः ''कदृ कट्टवान्'' इत्यत्र ऐदित्करणेनक्तयोरिड्निषेधार्थः।

२०१. कुटु (कुण्ट्) वैकल्ये, डान्तोऽयमित्येके।

व०	कुण्टति	कुण्टतः	कुण्टन्ति
	कुण्टसि	कुण्टथः	कुण्टथ
	कुण्टामि	कुण्टावः	कुण्टामः
स०	कुण्टेत्	कुण्टेताम्	कुण्टेयुः
	कुण्टेः	कुण्टेतम्	कुण्टेत
	कुण्टेयम्	कुण्टेव	कुण्टेम
प०	कुण्टतु/कुण्टतात्	कुण्टताम्	कुण्टन्तु
	कुण्ट/कुण्टतात्	कुण्टतम्	कुण्टत
	कुण्टानि	कुण्टाव	कुण्टाम
ह्य०	अकुण्टत्	अकुण्टताम्	अकुण्टन्
	अकुण्टः	अकुण्टतम्	अकुण्टत
	अकुण्टम्	अकुण्टाव	अकुण्टाम
अ०	अकुण्टीत्	अकुण्टिष्टाम्	अकुण्टिषुः
	अकुण्टीः	अकुण्टिष्टम्	अकुण्टिष्ट
	अकुण्टिषम्	अकुण्टिष्व	अकुण्टिष्म
प०	चुकुण्ट	चुकुण्टतुः	चुकुण्टुः
	चुकुण्टिथ	चुकुण्टथुः	चुकुण्ट
	चुकुण्ट	चुकुण्टिव	चुकुण्टिम
आ०	कुण्ट्यात्	कुण्ट्यास्ताम्	कुण्ट्यासुः
	कुण्ट्याः	कुण्ट्यास्तम्	कुण्ट्यास्त
	कुण्ट्यासम्	कुण्ट्यास्व	कुण्ट्यास्म
श्व०	कुण्टिता	कुण्टितारौ	कुण्टितारः
	कुण्टितासि	कुण्टितास्थः	कुण्टितास्थ
	कुण्टितास्मि	कुण्टितास्वः	कुण्टितास्मः
भ०	कुण्टिष्यति	कुण्टिष्यतः	कुण्टिष्यन्ति
	कुण्टिष्यसि	कुण्टिष्यथः	कुण्टिष्यथ
	कुण्टिष्यामि	कुण्टिष्यावः	कुण्टिष्यामः
क्रि०	अकुण्टिष्यत्	अकुण्टिष्यताम्	अकुण्टिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अकुण्टिष्य:	अकुण्टिष्यतम्	अकुण्टिष्यत
	अकुण्टिष्यम्	अकुण्टिष्याव	अकुण्टिष्याम

२०२. मुट (ट्) प्रमर्दने।

उदितोऽयमिति कौशिकः।

व०	मोटति	मोटत:	मोटन्ति
	मोटसि	मोटथ:	मोटथ
	मोटामि	मोटाव:	मोटाम:
स०	मोटेत्	मोटेताम्	मोटेयु:
	मोटे:	मोटेतम्	मोटेत
	मोटेयम्	मोटेव	मोटेम
प०	मोटतु/मोटतात्	मोटताम्	मोटन्तु
	मोट/मोटतात्	मोटतम्	मोटत
	मोटानि	मोटाव	मोटाम
ह्य०	अमोटत्	अमोटताम्	अमोटन्
	अमोट:	अमोटतम्	अमोटत
	अमोटम्	अमोटाव	अमोटाम
अ०	अमोटीत्	अमोटिष्टाम्	अमोटिषु:
	अमोटी:	अमोटिष्टम्	अमोटिष्ट
	अमोटिषम्	अमोटिष्व	अमोटिष्म
प०	मुमोट	मुमुटतु:	मुमुटु:
	मुमोटिथ	मुमुटथु:	मुमुट
	मुमोट	मुमुटिव	मुमुटिम
आ०	मुट्यात्	मुट्यास्ताम्	मुट्यासु:
	मुट्या:	मुट्यास्तम्	मुट्यास्त
	मुट्यासम्	मुट्यास्व	मुट्यास्म
श्व०	मोटिता	मोटितारौ	मोटितार:
	मोटितासि	मोटितास्थ:	मोटितास्थ
	मोटितास्मि	मोटितास्व:	मोटितास्म:
भ०	मोटिष्यति	मोटिष्यत:	मोटिष्यन्ति
	मोटिष्यसि	मोटिष्यथ:	मोटिष्यथ
	मोटिष्यामि	मोटिष्याव:	मोटिष्याम:
क्रि०	अमोटिष्यत्	अमोटिष्यताम्	अमोटिष्यन्
	अमोटिष्य:	अमोटिष्यतम्	अमोटिष्यत
	अमोटिष्यम्	अमोटिष्याव	अमोटिष्याम

२०३. चुट (चुट्) अल्पीभावे।

व०	चोटति	चोटत:	चोटन्ति
स०	चोटेत्	चोटेताम्	चोटेयु:
प०	चोटतु/चोटतात्	चोटताम्	चोटन्तु
ह्य०	अचोटत्	अचोटताम्	अचोटन्
अ०	अचोटीत्	अचोटिष्टाम्	अचोटिषु:
प०	चुचोट	चुचुटतु:	चुचुटु:
आ०	चुट्यात्	चुट्यास्ताम्	चुट्यासु:
श्व०	चोटिता	चोटितारौ	चोटितार:
भ०	चोटिष्यति	चोटिष्यत:	चोटिष्यन्ति
क्रि०	अचोटिष्यत्	अचोटिष्यताम्	अचोटिष्यन्

२०४. चुटु (चुण्ट्) अल्पीभावे।

व०	चुण्टति	चुण्टत:	चुण्टन्ति
स०	चुण्टेत्	चुण्टेताम्	चुण्टेयु:
प०	चुण्टतु/चुण्टतात्	चुण्टताम्	चुण्टन्तु
ह्य०	अचुण्टत्	अचुण्टताम्	अचुण्टन्
अ०	अचुण्टीत्	अचुण्टिष्टाम्	अचुण्टिषु:
प०	चुचुण्ट	चुचुण्टतु:	चुचुण्टु:
आ०	चुण्ट्यात्	चुण्ट्यास्ताम्	चुण्ट्यासु:
श्व०	चुण्टिता	चुण्टितारौ	चुण्टितार:
भ०	चुण्टिष्यति	चुण्टिष्यत:	चुण्टिष्यन्ति
क्रि०	अचुण्टिष्यत्	अचुण्टिष्यताम्	अचुण्टिष्यन्

२०५. वटु (वण्ट्) विभाजने।

विभाजनं विभागीकरणम्।

व०	वण्टति	वण्टत:	वण्टन्ति
स०	वण्टेत्	वण्टेताम्	वण्टेयु:
प०	वण्टतु/वण्टतात्	वण्टताम्	वण्टन्तु
ह्य०	अवण्टत्	अवण्टताम्	अवण्टन्
अ०	अवण्टीत्	अवण्टिष्टाम्	अवण्टिषु:
प०	ववण्ट	ववण्टतु:	ववण्टु:
आ०	वण्ट्यात्	वण्ट्यास्ताम्	वण्ट्यासु:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	वण्टिता	वण्टितारौ	वण्टितारः
भ०	वण्टिष्यति	वण्टिष्यतः	वण्टिष्यन्ति
क्रि०	अवण्टिष्यत्	अवण्टिष्यताम्	अवण्टिष्यन्

२०६. रुटु (रुण्ट्) स्तेये।

रु०	रुण्टति	रुण्टतः	रुण्टन्ति
स०	रुण्टेत्	रुण्टेताम्	रुण्टेयुः
प०	रुण्टतु/रुण्टतात्	रुण्टताम्	रुण्टन्तु
ह्य०	अरुण्टत्	अरुण्टताम्	अरुण्टन्
अ०	अरुण्टीत्	अरुण्टिष्टाम्	अरुण्टिषुः
प०	रुरुण्ट	रुरुण्टतुः	रुरुण्टुः
आ०	रुण्ट्यात्	रुण्ट्यास्ताम्	रुण्ट्यासुः
श्व०	रुण्टिता	रुण्टितारौ	रुण्टितारः
भ०	रुण्टिष्यति	रुण्टिष्यतः	रुण्टिष्यन्ति
क्रि०	अरुण्टिष्यत्	अरुण्टिष्यताम्	अरुण्टिष्यन्

२०७. लुटु (लुण्ट्) स्तेये।

व०	लुण्टति	लुण्टतः	लुण्टन्ति
स०	लुण्टेत्	लुण्टेताम्	लुण्टेयुः
प०	लुण्टतु/लुण्टतात्	लुण्टताम्	लुण्टन्तु
ह्य०	अलुण्टत्	अलुण्टताम्	अलुण्टन्
अ०	अलुण्टीत्	अलुण्टिष्टाम्	अलुण्टिषुः
प०	लुलुण्ट	लुलुण्टतुः	लुलुण्टुः
आ०	लुण्ट्यात्	लुण्ट्यास्ताम्	लुण्ट्यासुः
श्व०	लुण्टिता	लुण्टितारौ	लुण्टितारः
भ०	लुण्टिष्यति	लुण्टिष्यतः	लुण्टिष्यन्ति
क्रि०	अलुण्टिष्यत्	अलुण्टिष्यताम्	अलुण्टिष्यन्

२०८. स्फट (स्फट्) विसरणे।

व०	स्फटति	स्फटतः	स्फटन्ति
स०	स्फटेत्	स्फटेताम्	स्फटेयुः
प०	स्फटतु/स्फटतात्	स्फटताम्	स्फटन्तु
ह्य०	अस्फटत्	अस्फटताम्	अस्फटन्
अ०	अस्फाटीत्	अस्फाटिष्टाम्	अस्फाटिषुः
		तथा	
	अस्फटीत्	अस्फटिष्टाम्	अस्फटिषुः
प०	पस्फाट	पस्फटतुः	पस्फटुः
आ०	स्फट्यात्	स्फट्यास्ताम्	स्फट्यासुः
श्व०	स्फटिता	स्फटितारौ	स्फटितारः
भ०	स्फटिष्यति	स्फटिष्यतः	स्फटिष्यन्ति
क्रि०	अस्फटिष्यत्	अस्फटिष्यताम्	अस्फटिष्यन्

२०९. स्फुटृ (स्फुट्) विसरणे।

व०	स्फोटति	स्फोटतः	स्फोटन्ति
स०	स्फोटेत्	स्फोटेताम्	स्फोटेयुः
प०	स्फोटतु/स्फोटतात्	स्फोटताम्	स्फोटन्तु
ह्य०	अस्फोटत्	अस्फोटताम्	अस्फोटन्
अ०	अस्फुटत्	अस्फुटताम्	अस्फुटन्
		तथा	
	अस्फोटीत्	अस्फोटिष्टाम्	अस्फोटिषुः
प०	पुस्फोट	पुस्फुटतुः	पुस्फुटुः
आ०	स्फुट्यात्	स्फुट्यास्ताम्	स्फुट्यासुः
श्व०	स्फोटिता	स्फोटितारौ	स्फोटितारः
भ०	स्फोटिष्यति	स्फोटिष्यतः	स्फोटिष्यन्ति
क्रि०	अस्फोटिष्यत्	अस्फोटिष्यताम्	अस्फोटिष्यन्

२१०. लट (लट्) बाल्ये; बाल्यं बालक्रिया।

व०	लटति	लटतः	लटन्ति
स०	लटेत्	लटेताम्	लटेयुः
प०	लटतु/लटतात्	लटताम्	लटन्तु
ह्य०	अलटत्	अलटताम्	अलटन्
अ०	अलाटीत्	अलाटिष्टाम्	अलाटिषुः
		तथा	
	अलटीत्	अलटिष्टाम्	अलटिषुः
प०	ललाट	लेटतुः	लेटुः
आ०	लट्यात्	लट्यास्ताम्	लट्यासुः
श्व०	लटिता	लटितारौ	लटितारः
भ०	लटिष्यति	लटिष्यतः	लटिष्यन्ति
क्रि०	अलटिष्यत्	अलटिष्यताम्	अलटिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२११ रट (रट्) परिभाषणे च।[1]

व०	रटति	रटतः	रटन्ति
	रटसि	रटथः	रटथ
	रटामि	रटावः	रटामः
स०	रटेत्	रटेताम्	रटेयुः
	रटेः	रटेतम्	रटेत
	रटेयम्	रटेव	रटेम
प०	रटतु/रटतात्	रटताम्	रटन्तु
	रट/रटतात्	रटतम्	रटत
	रटानि	रटाव	रटाम
ह्य०	अरटत्	अरटताम्	अरटन्
	अरटः	अरटतम्	अरटत
	अरटम्	अरटाव	अरटाम
अ०	अराटीत्	अराटिष्टाम्	अराटिषुः
	अराटीः	अराटिष्टम्	अराटिष्ट
	अराटिषम्	अराटिष्व	अराटिष्म
		तथा	
	अरटीत्	अरटिष्टाम्	अरटिषुः
	अरटीः	अरटिष्टम्	अरटिष्ट
	अरटिषम्	अरटिष्व	अरटिष्म
प०	रराट	रेटतुः	रेटुः
	रेटिथ	रेटथुः	रेट
	रराट/ररट	रेटिव	रेटिम
आ०	रट्यात्	रट्यास्ताम्	रट्यासुः
	रट्याः	रट्यास्तम्	रट्यास्त
	रट्यासम्	रट्यास्व	रट्यास्म
श्व०	रटिता	रटितारौ	रटितारः
	रटितासि	रटितास्थः	रटितास्थ
	रटितास्मि	रटितास्वः	रटितास्मः
भ०	रटिष्यति	रटिष्यतः	रटिष्यन्ति
	रटिष्यसि	रटिष्यथः	रटिष्यथ
	रटिष्यामि	रटिष्यावः	रटिष्यामः
क्रि०	अरटिष्यत्	अरटिष्यताम्	अरटिष्यन्
	अरटिष्यः	अरटिष्यतम्	अरटिष्यत
	अरटिष्यम्	अरटिष्याव	अरटिष्याम

१. चकारो लटानुकर्षणार्थः। तेन लटेरर्थद्वयं सिद्धम्।

।। अथ ठान्ताः सप्तदश सेटश्च।।

२१२. रठ (रठ्) परिभाषणे।

व०	रठति	रठतः	रठन्ति
स०	रठेत्	रठेताम्	रठेयुः
प०	रठतु/रठतात्	रठताम्	रठन्तु
ह्य०	अरठत्	अरठताम्	अरठन्
अ०	अराठीत्	अराठिष्टाम्	अराठिषुः
		तथा	
	अरठीत्	अरठिष्टाम्	अरठिषुः
प०	रराठ	रेठतुः	रेठुः
ठा०	रठ्यात्	रठ्यास्ताम्	रठ्यासुः
श्व०	रठिता	रठितारौ	रठितारः
भ०	रठिष्यति	रठिष्यतः	रठिष्यन्ति
क्रि०	अरठिष्यत्	अरठिष्यताम्	अरठिष्यन्

२१३. पठ (पठ्) व्यक्तायां वाचि।

व०	पठति	पठतः	पठन्ति
	पठसि	पठथः	पठथ
	पठामि	पठावः	पठामः
स०	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
	पठेः	पठेतम्	पठेत
	पठेयम्	पठेव	पठेम
प०	पठतु/पठतात्	पठताम्	पठन्तु
	पठ/पठतात्	पठतम्	पठत
	पठानि	पठाव	पठाम
ह्य०	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
	अपठः	अपठतम्	अपठत
	अपठम्	अपठाव	अपठाम
अ०	अपाठीत्	अपाठिष्टाम्	अपाठिषुः
	अपाठीः	अपाठिष्टम्	अपाठिष्ट
	अपाठिषम्	अपाठिष्व	अपाठिष्म
		तथा	
	अपठीत्	अपठिष्टाम्	अपठिषुः
	अपठीः	अपठिष्टम्	अपठिष्ट
	अपठिषम्	अपठिष्व	अपठिष्म

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	पपाठ	पेठतुः	पेठुः
	पेठिथ	पेठथुः	पेठ
	पपाठ/पपठ	पेठिव	पेठिम
आ०	पठ्यात्	पठ्यास्ताम्	पठ्यासुः
	पठ्याः	पठ्यास्तम्	पठ्यास्त
	पठ्यासम्	पठ्यास्व	पठ्यास्म
श्व०	पठिता	पठितारौ	पठितारः
	पठितासि	पठितास्थः	पठितास्थ
	पठितास्मि	पठितास्वः	पठितास्मः
भ०	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः
क्रि०	अपठिष्यत्	अपठिष्यताम्	अपठिष्यन्
	अपठिष्यः	अपठिष्यतम्	अपठिष्यत
	अपठिष्यम्	अपठिष्याव	अपठिष्याम

२१४. वठ (वठ्) स्थौल्ये।

व०	वठति	वठतः	वठन्ति
स०	वठेत्	वठेताम्	वठेयुः
प०	वठतु/वठतात्	वठताम्	वठन्तु
ह्य०	अवठत्	अवठताम्	अवठन्
अ०	अवाठीत्	अवाठिष्टाम्	अवाठिषुः
		तथा	
	अवठीत्	अवठिष्टाम्	अवठिषुः
प०	ववाठ	ववठतुः	ववठुः
आ०	वठ्यात्	वठ्यास्ताम्	वठ्यासुः
श्व०	वठिता	वठितारौ	वठितारः
भ०	वठिष्यति	वठिष्यतः	वठिष्यन्ति
क्रि०	अवठिष्यत्	अवठिष्यताम्	अवठिष्यन्

२१५. मठ (मठ्) मदनिवासयोश्च।

चकारात्स्थौल्ये।

व०	मठति	मठतः	मठन्ति
स०	मठेत्	मठेताम्	मठेयुः
प०	मठतु/मठतात्	मठताम्	मठन्तु
ह्य०	अमठत्	अमठताम्	अमठन्
अ०	अमाठीत्	अमाठिष्टाम्	अमाठिषुः
		तथा	
	अमठीत्	अमठिष्टाम्	अमठिषुः
प०	ममाठ	मेठतुः	मेठुः
आ०	मठ्यात्	मठ्यास्ताम्	मठ्यासुः
श्व०	मठिता	मठितारौ	मठितारः
भ०	मठिष्यति	मठिष्यतः	मठिष्यन्ति
क्रि०	अमठिष्यत्	अमठिष्यताम्	अमठिष्यन्

२१६. कठ (कठ्) कृच्छ्रजीवने।

व०	कठति	कठतः	कठन्ति
स०	कठेत्	कठेताम्	कठेयुः
प०	कठतु/कठतात्	कठताम्	कठन्तु
ह्य०	अकठत्	अकठताम्	अकठन्
अ०	अकाठीत्	अकाठिष्टाम्	अकाठिषुः
		तथा	
	अकठीत्	अकठिष्टाम्	अकठिषुः
प०	चकाठ	चकठतुः	चकठुः
आ०	कठ्यात्	कठ्यास्ताम्	कठ्यासुः
श्व०	कठिता	कठितारौ	कठितारः
भ०	कठिष्यति	कठिष्यतः	कठिष्यन्ति
क्रि०	अकठिष्यत्	अकठिष्यताम्	अकठिष्यन्

२१७. हठ (हठ्) बलात्कारे।

प्लवनकीलबन्धनयो रित्यन्ये।

व०	हठति	हठतः	हठन्ति
स०	हठेत्	हठेताम्	हठेयुः
प०	हठतु/हठतात्	हठताम्	हठन्तु
ह्य०	अहठत्	अहठताम्	अहठन्
अ०	अहाठीत्	अहाठिष्टाम्	अहाठिषुः।
		तथा	
	अहठीत्	अहठिष्टाम्	अहठिषुः
प०	जहाठ	जहठतुः	जहठुः
आ०	हठ्यात्	हठ्यास्ताम्	हठ्यासुः
श्व०	हठिता	हठितारौ	हठितारः
भ०	हठिष्यति	हठिष्यतः	हठिष्यन्ति
क्रि०	अहठिष्यत्	अहठिष्यताम्	अहठिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१८. उठ (उठ्) उपघाते।

व०	ओठति	ओठतः	ओठन्ति
स०	ओठेत्	ओठेताम्	ओठेयुः
प०	ओठतु/ओठतात्	ओठताम्	ओठन्तु
ह्य०	औठत्	औठताम्	औठन्
अ०	औठीत्	औठिष्टाम्	औठिषुः
प०	उवोठ	ऊठतुः	ऊठुः
आ०	उठ्यात्	उठ्यास्ताम्	उठ्यासुः
श्व०	ओठिता	ओठितारौ	ओठितारः
भ०	ओठिष्यति	ओठिष्यतः	ओठिष्यन्ति
क्रि०	औठिष्यत्	औठिष्यताम्	औठिष्यन्

२१९. रुठ (रुठ्) उपघाते।

व०	रोठति	रोठतः	रोठन्ति
स०	रोठेत्	रोठेताम्	रोठेयुः
प०	रोठतु/रोठतात्	रोठताम्	रोठन्तु
ह्य०	अरोठत्	अरोठताम्	अरोठन्
अ०	अरोठीत्	अरोठिष्ठाम्	अरोठिषुः
प०	रुरोठ	रुरुठतुः	रुरुठुः
आ०	रुठ्यात्	रुठ्यास्ताम्	रुठ्यासुः
श्व०	रोठिता	रोठितारौ	रोठितारः
भ०	रोठिष्यति	रोठिष्यतः	रोठिष्यन्ति
क्रि०	अरोठिष्यत्	अरोठिष्यताम्	अरोठिष्यन्

२२०. लुठ (लुठ्) उपघाते।

व०	लोठति	लोठतः	लोठन्ति
स०	लोठेत्	लोठेताम्	लोठेयुः
प०	लोठतु/लोठतात्	लोठताम्	लोठन्तु
ह्य०	अलोठत्	अलोठताम्	अलोठन्
अ०	अलोठीत्	अलोठिष्टाम्	अलोठिषुः
प०	लुलोठ	लुलुठतुः	लुलुठुः
आ०	लुठ्यात्	लुठ्यास्ताम्	लुठ्यासुः
श्व०	लोठिता	लोठितारौ	लोठितारः
भ०	लोठिष्यति	लोठिष्यतः	लोठिष्यन्ति
क्रि०	अलोठिष्यत्	अलोठिष्यताम्	अलोठिष्यन्

२२१. पिठ (पिठ्) हिंसासंक्लेशनयोः।

व०	पेठति	पेठतः	पेठन्ति
स०	पेठेत्	पेठेताम्	पेठेयुः
प०	पेठतु/पेठतात्	पेठताम्	पेठन्तु
ह्य०	अपेठत्	अपेठताम्	अपेठन्
अ०	अपेठीत्	अपेठिष्टाम्	अपेठिषुः
प०	पिपेठ	पिपिठतुः	पिपिठुः
आ०	पिठ्यात्	पिठ्यास्ताम्	पिठ्यासुः
श्व०	पेठिता	पेठितारौ	पेठितारः
भ०	पेठिष्यति	पेठिष्यतः	पेठिष्यन्ति
क्रि०	अपेठिष्यत्	अपेठिष्यताम्	अपेठिष्यन्

२२२. शठ (शठ्) कैतवे च[१]।

व०	शठति	शठतः	शठन्ति
स०	शठेत्	शठेताम्	शठेयुः
प०	शठतु/शठतात्	शठताम्	शठन्तु
ह्य०	अशठत्	अशठताम्	अशठन्
अ०	अशाठीत्	अशाठिष्टाम्	अशाठिषुः
		तथा	
	अशठीत्	अशठिष्ठाम्	अशठिषुः
प०	शशाठ	शेठतुः	शेठुः
आ०	शठ्यात्	शठ्यास्ताम्	शठ्यासुः
श्व०	शठिता	शठितारौ	शठितारः
भ०	शठिष्यति	शठिष्यतः	शठिष्यन्ति
क्रि०	अशठिष्यत्	अशठिष्यताम्	अशठिष्यन्

२२३. शुठ (शुठ्) गतिप्रतिघाते।

व०	शोठति	शोठतः	शोठन्ति
स०	शोठेत्	शोठेताम्	शोठेयुः
प०	शोठतु/शोठतात्	शोठताम्	शोठन्तु
ह्य०	अशोठत्	अशोठताम्	अशोठन्
अ०	अशोठीत्	अशोठिष्टाम्	अशोठिषुः
प०	शुशोठ	शुशुठतुः	शुशुठुः

---

१. चकाराद्धिंसासंक्लेशनयोः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	शुठ्यात्	शुठ्यास्ताम्	शुठ्यासुः
श्व०	शोठिता	शोठितारौ	शोठितारः
भ०	शोठिष्यति	शोठिष्यतः	शोठिष्यन्ति
क्रि०	अशोठिष्यत्	अशोठिष्यताम्	अशोठिष्यन्

२२४. कुठु (कुहण्ठ्) आलस्ये च।[1]

व०	कुण्ठति	कुण्ठतः	कुण्ठन्ति
स०	कुण्ठेत्	कुण्ठेताम्	कुण्ठेयुः
प०	कुण्ठतु/कुण्ठतात्	कुण्ठताम्	कुण्ठन्तु
ह्य०	अकुण्ठत्	अकुण्ठताम्	अकुण्ठन्
अ०	अकुण्ठीत्	अकुण्ठिष्टाम्	अकुण्ठिषुः
प०	चुकुण्ठ	चुकुण्ठतुः	चुकुण्ठुः
आ०	कुण्ठ्यात्	कुण्ठ्यास्ताम्	कुण्ठ्यासुः
श्व०	कुण्ठिता	कुण्ठितारौ	कुण्ठितारः
भ०	कुण्ठिष्यति	कुण्ठिष्यतः	कुण्ठिष्यन्ति
क्रि०	अकुण्ठिष्यत्	अकुण्ठिष्यताम्	अकुण्ठिष्यन्

२२५. लुठु (लुण्ठ्) आलस्ये गतिप्रतिघाते च।

व०	लुण्ठति	लुण्ठतः	लुण्ठन्ति
स०	लुण्ठेत्	लुण्ठेताम्	लुण्ठेयुः
प०	लुण्ठतु/लुण्ठतात्	लुण्ठताम्	लुण्ठन्तु
ह्य०	अलुण्ठत्	अलुण्ठताम्	अलुण्ठन्
अ०	अलुण्ठीत्	अलुण्ठिष्टाम्	अलुण्ठिषुः
प०	लुलुण्ठ	लुलुण्ठतुः	लुलुण्ठुः
आ०	लुण्ठ्यात्	लुण्ठ्यास्ताम्	लुण्ठ्यासुः
श्व०	लुण्ठिता	लुण्ठितारौ	लुण्ठितारः
भ०	लुण्ठिष्यति	लुण्ठिष्यतः	लुण्ठिष्यन्ति
क्रि०	अलुण्ठिष्यत्	अलुण्ठिष्यताम्	अलुण्ठिष्यन्

२२६. शुठु (शुण्ठ्) शोषणे।

व०	शुण्ठति	शुण्ठतः	शुण्ठन्ति
स०	शुण्ठेत्	शुण्ठेताम्	शुण्ठेयुः
प०	शुण्ठतु/शुण्ठतात्	शुण्ठताम्	शुण्ठन्तु
ह्य०	अशुण्ठत्	अशुण्ठताम्	अशुण्ठन्
अ०	अशुण्ठीत्	अशुण्ठिष्टाम्	अशुण्ठिषुः
प०	शुशुण्ठ	शुशुण्ठतुः	शुशुण्ठुः
आ०	शुण्ठ्यात्	शुण्ठ्यास्ताम्	शुण्ठ्यासुः
श्व०	शुण्ठिता	शुण्ठितारौ	शुण्ठितारः
भ०	शुण्ठिष्यति	शुण्ठिष्यतः	शुण्ठिष्यन्ति
क्रि०	अशुण्ठिष्यत्	अशुण्ठिष्यताम्	अशुण्ठिष्यन्

२२७. अठ (अठ्) गतौ।

व०	अठति	अठतः	अठन्ति
स०	अठेत्	अठेताम्	अठेयुः
प०	अठतु/अठतात्	अठताम्	अठन्तु
ह्य०	आठत्	आठताम्	आठन्
अ०	आठीत्	आठिष्टाम्	आठिषुः
प०	आठ	आठतुः	आठुः
आ०	अठ्यात्	अठ्यास्ताम्	अठ्यासुः
श्व०	अठिता	अठितारौ	अठितारः
भ०	अठिष्यति	अठिष्यतः	अठिष्यन्ति
क्रि०	आठिष्यत्	आठिष्यताम्	आठिष्यन्

२२८. रुठु (रुण्ठ्) गतौ।

व०	रुण्ठति	रुण्ठतः	रुण्ठन्ति
स०	रुण्ठेत्	रुण्ठेताम्	रुण्ठेयुः
प०	रुण्ठतु/रुण्ठतात्	रुण्ठताम्	रुण्ठन्तु
ह्य०	अरुण्ठत्	अरुण्ठताम्	अरुण्ठन्
अ०	अरुण्ठीत्	अरुण्ठिष्टाम्	अरुण्ठिषुः
प०	रुरुण्ठ	रुरुण्ठतुः	रुरुण्ठुः
आ०	रुण्ठ्यात्	रुण्ठ्यास्ताम्	रुण्ठ्यासुः
श्व०	रुण्ठिता	रुण्ठितारौ	रुण्ठितारः
भ०	रुण्ठिष्यति	रुण्ठिष्यतः	रुण्ठिष्यन्ति
क्रि०	अरुण्ठिष्यत्	अरुण्ठिष्यताम्	अरुण्ठिष्यन्

अथ डान्तास्त्रिंशत्सेटश्च।

२२९. पुडु (पुण्ड) प्रमर्दने।

व०	पुण्डति	पुण्डतः	पुण्डन्ति
	पुण्डसि	पुण्डथः	पुण्डथ
	पुण्डामि	पुण्डावः	पुण्डामः

१. चकारादगतिप्रतिघाते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स०	पुण्डेत्	पुण्डेताम्	पुण्डेयुः
	पुण्डेः	पुण्डेतम्	पुण्डेत
	पुण्डेयम्	पुण्डेव	पुण्डेम
प०	पुण्डतु/पुण्डतात्	पुण्डताम्	पुण्डन्तु
	पुण्ड/पुण्डतात्	पुण्डतम्	पुण्डत
	पुण्डानि	पुण्डाव	पुण्डाम
ह्य०	अपुण्डत्	अपुण्डताम्	अपुण्डन्
	अपुण्डः	अपुण्डतम्	अपुण्डत
	अपुण्डम्	अपुण्डाव	अपुण्डाम
अ०	अपुण्डीत्	अपुण्डिष्टाम्	अपुण्डिषुः
	अपुण्डीः	अपुण्डिष्टम्	अपुण्डिष्ट
	अपुण्डिषम्	अपुण्डिष्व	अपुण्डिष्म
प०	पुपुण्ड	पुपुण्डतुः	पुपुण्डुः
	पुपुण्डिथ	पुपुण्डथुः	पुपुण्ड
	पुपुण्ड	पुपुण्डिव	पुपुण्डिम
आ०	पुण्ड्यात्	पुण्ड्यास्ताम्	पुण्ड्यासुः
	पुण्ड्याः	पुण्ड्यास्तम्	पुण्ड्यास्त
	पुण्ड्यासम्	पुण्ड्यास्व	पुण्ड्यास्म
श्व०	पुण्डिता	पुण्डितारौ	पुण्डितारः
	पुण्डितासि	पुण्डितास्थः	पुण्डितास्थ
	पुण्डितास्मि	पुण्डितास्वः	पुण्डितास्मः
भ०	पुण्डिष्यति	पुण्डिष्यतः	पुण्डिष्यन्ति
	पुण्डिष्यसि	पुण्डिष्यथः	पुण्डिष्यथ
	पुण्डिष्यामि	पुण्डिष्यावः	पुण्डिष्यामः
क्रि०	अपुण्डिष्यत्	अपुण्डिष्यताम्	अपुण्डिष्यन्
	अपुण्डिष्यः	अपुण्डिष्यतम्	अपुण्डिष्यत
	अपुण्डिष्यम्	अपुण्डिष्याव	अपुण्डिष्याम

२३०. मुडु (मुण्ड्) खण्डने च। चकारात्प्रमर्दने।

व०	मुण्डति	मुण्डतः	मुण्डन्ति
स०	मुण्डेत्	मुण्डेताम्	मुण्डेयुः
प०	मुण्डतु/मुण्डतात्	मुण्डताम्	मुण्डन्तु
ह्य०	अमुण्डत्	अमुण्डताम्	अमुण्डन्
अ०	अमुण्डीत्	अमुण्डिष्टाम्	अमुण्डिषुः
प०	मुमुण्ड	मुमुण्डतुः	मुमुण्डुः
आ०	मुण्ड्यात्	मुण्ड्यास्ताम्	मुण्ड्यासुः
श्व०	मुण्डिता	मुण्डितारौ	मुण्डितारः
भ०	मुण्डिष्यति	मुण्डिष्यतः	मुण्डिष्यन्ति
क्रि०	अमुण्डिष्यत्	अमुण्डिष्यताम्	अमुण्डिष्यन्

२३१. मडु (मण्ड्) भूषायाम्।

व०	मण्डति	मण्डतः	मण्डन्ति
स०	मण्डेत्	मण्डेताम्	मण्डेयुः
प०	मण्डतु/मण्डतात्	मण्डताम्	मण्डन्तु
ह्य०	अमण्डत्	अमण्डताम्	अमण्डन्
अ०	अमण्डीत्	अमण्डिष्टाम्	अमण्डिषुः
प०	ममण्ड	ममण्डतुः	ममण्डुः
आ०	मण्ड्यात्	मण्ड्यास्ताम्	मण्ड्यासुः
श्व०	मण्डिता	मण्डितारौ	मण्डितारः
भ०	मण्डिष्यति	मण्डिष्यतः	मण्डिष्यन्ति
क्रि०	अमण्डिष्यत्	अमण्डिष्यताम्	अमण्डिष्यन्

२३२. गडु (गण्ड्) वदनैकदेशे।[१]

व०	गण्डति	गण्डतः	गण्डन्ति
	गण्डसि	गण्डथः	गण्डथ
	गण्डामि	गण्डावः	गण्डामः
स०	गण्डेत्	गण्डेताम्	गण्डेयुः
	गण्डेः	गण्डेतम्	गण्डेत
	गण्डेयम्	गण्डेव	गण्डेम
प०	गण्डतु/गण्डतात्	गण्डताम्	गण्डन्तु
	गण्ड/गण्डतात्	गण्डतम्	गण्डत
	गण्डानि	गण्डाव	गण्डाम
ह्य०	अगण्डत्	अगण्डताम्	अगण्डन्
	अगण्डः	अगण्डतम्	अगण्डत
	अगण्डम्	अगण्डाव	अगण्डाम
अ०	अगण्डीत्	अगण्डिष्टाम्	अगण्डिषुः

१. गण्डगतसंहननक्रियायामित्यर्थः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अगण्डी:	अगण्डिष्टम्	अगण्डिष्ट
	अगण्डिषम्	अगण्डिष्व	अगण्डिष्म
प०	जगण्ड	जगण्डतु:	जगण्डु:
	जगण्डिथ	जगण्डथु:	जगण्ड
	जगण्ड	जगण्डिव	जगण्डिम
आ०	गण्ड्यात्	गण्ड्यास्ताम्	गण्ड्यासु:
	गण्ड्या:	गण्ड्यास्तम्	गण्ड्यास्त
	गण्ड्यासम्	गण्ड्यास्व	गण्ड्यास्म
श्व०	गण्डिता	गण्डितारौ	गण्डितार:
	गण्डितासि	गण्डितास्थ:	गण्डितास्थ
	गण्डितास्मि	गण्डितास्व:	गण्डितास्म:
भ०	गण्डिष्यति	गण्डिष्यत:	गण्डिष्यन्ति
	गण्डिष्यसि	गण्डिष्यथ:	गण्डिष्यथ
	गण्डिष्यामि	गण्डिष्याव:	गण्डिष्याम:
क्रि०	अगण्डिष्यत्	अगण्डिष्यताम्	अगण्डिष्यन्
	अगण्डिष्य:	अगण्डिष्यतम्	अगण्डिष्यत
	अगण्डिष्यम्	अगण्डिष्याव	अगण्डिष्याम

२३३. शौडृ (शौड्) गर्वे।

व०	शौडति	शौडत:	शौडन्ति
	शौडसि	शौडथ:	शौडथ
	शौडामि	शौडाव:	शौडाम:
स०	शौडेत्	शौडेताम्	शौडेयु:
	शौडे:	शौडेतम्	शौडेत
	शौडेयम्	शौडेव	शौडेम
प०	शौडतु/शौडतात्	शौडताम्	शौडन्तु
	शौड/शौडतात्	शौडतम्	शौडत
	शौडानि	शौडाव	शौडाम
ह्य०	अशौडत्	अशौडताम्	अशौडन्
	अशौड:	अशौडतम्	अशौडत
	अशौडम्	अशौडाव	अशौडाम
अ०	अशौडीत्	अशौडिष्टाम्	अशौडिषु:
	अशौडी:	अशौडिष्टम्	अशौडिष्ट
	अशौडिषम्	अशौडिष्व	अशौडिष्म
प०	शुशौड	शुशौडतु:	शुशौडु:
	शुशौडिथ	शुशौडिथु:	शुशौड
	शुशौड	शुशौडिव	शुशौडिम
आ०	शौड्यात्	शौड्यास्ताम्	शौड्यासु:
	शौड्या:	शौड्यास्तम्	शौड्यास्त
	शौड्यासम्	शौड्यास्व	शौड्यास्म
श्व०	शौडिता	शौडितारौ	शौडितार:
	शौडितासि	शौडितास्थ:	शौडितास्थ
	शौडितास्मि	शौडितास्व:	शौडितास्म:
भ०	शौडिष्यति	शौडिष्यत:	शौडिष्यन्ति
	शौडिष्यसि	शौडिष्यथ:	शौडिष्यथ
	शौडिष्यामि	शौडिष्याव:	शौडिष्याम:
क्रि०	अशौडिष्यत्	अशौडिष्यताम्	अशौडिष्यन्
	अशौडिष्य:	अशौडिष्यतम्	अशौडिष्यत
	अशौडिष्यम्	अशौडिष्याव	अशौडिष्याम

२३४. यौडृ (यौड्) सम्बन्धे। सम्बन्ध: श्लेष:।

व०	यौडति	यौडत:	यौडन्ति
स०	यौडेत्	यौडेताम्	यौडेयु:
प०	यौडतु/यौडतात्	यौडताम्	यौडन्तु
ह्य०	अयौडत्	अयौडताम्	अयौडन्
अ०	अयौडीत्	अयौडिष्टाम्	अयौडिषु:
प०	युयौड	युयौडतु:	युयौडु:
आ०	यौड्यात्	यौड्यास्ताम्	यौड्यासु:
श्व०	यौडिता	यौडितारौ	यौडितार:
भ०	यौडिष्यति	यौडिष्यत:	यौडिष्यन्ति
क्रि०	अयौडिष्यत्	अयौडिष्यताम्	अयौडिष्यन्

२३४. मेडृ (मेड्) उन्मादे।

व०	मेडति	मेडत:	मेडन्ति
स०	मेडेत्	मेडेताम्	मेडेयु:
प०	मेडतु/मेडतात्	मेडताम्	मेडन्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	अमेडत्	अमेडताम्	अमेडन्
अ०	अमेडीत्	अमेडिष्टाम्	अमेडिषुः
प०	मिमेड	मिमेडतुः	मिमेडुः
आ०	मेड्यात्	मेड्यास्ताम्	मेड्यासुः
श्व०	मेडिता	मेडितारौ	मेडितारः
भ०	मेडिष्यति	मेडिष्यतः	मेडिष्यन्ति
क्रि०	अमेडिष्यत्	अमेडिष्यताम्	अमेडिष्यन्

२३५. म्रेडृ (म्रेड्) उन्मादे।

२३७. म्लेडृ (म्लेड्) उन्मादे।

व०	म्लेडति	म्लेडतः	म्लेडन्ति
स०	म्लेडेत्	म्लेडेताम्	म्लेडेयुः
प०	म्लेडतु/म्लेडतात्	म्लेडताम्	म्लेडन्तु
ह्य०	अम्लेडत्	अम्लेडताम्	अम्लेडन्
अ०	अम्लेडीत्	अम्लेडिष्टाम्	अम्लेडिषुः
प०	मिम्लेड	मिम्लेडतुः	मिम्लेडुः
आ०	म्लेड्यात्	म्लेड्यास्ताम्	म्लेड्यासुः
श्व०	म्लेडिता	म्लेडितारौ	म्लेडितारः
भ०	म्लेडिष्यति	म्लेडिष्यतः	म्लेडिष्यन्ति
क्रि०	अम्लेडिष्यत्	अम्लेडिष्यताम्	अम्लेडिष्यन्

२३८. लोडृ (लोड्) उन्मादे।

व०	लोडति	लोडतः	लोडन्ति
स०	लोडेत्	लोडेताम्	लोडेयुः
प०	लोडतु/लोडतात्	लोडताम्	लोडन्तु
ह्य०	अलोडत्	अलोडताम्	अलोडन्
अ०	अलोडीत्	अलोडिष्टाम्	अलोडिषुः
प०	लुलोड	लुलोडतुः	लुलोडुः
आ०	लोड्यात्	लोड्यास्ताम्	लोड्यासुः
श्व०	लोडिता	लोडितारौ	लोडितारः
भ०	लोडिष्यति	लोडिष्यतः	लोडिष्यन्ति
क्रि०	अलोडिष्यत्	अलोडिष्यताम्	अलोडिष्यन्

२३९. लौडृ (लौड्) उन्मादे।

व०	लौडति	लौडतः	लौडन्ति
स०	लौडेत्	लौडेताम्	लौडेयुः
प०	लौडतु/लौडतात्	लौडताम्	लौडन्तु
ह्य०	अलौडत्	अलौडताम्	अलौडन्
अ०	अलौडीत्	अलौडिष्टाम्	अलौडिषुः
प०	लुलौड	लुलौडतुः	लुलौडुः
आ०	लौड्यात्	लौड्यास्ताम्	लौड्यासुः
श्व०	लौडिता	लौडितारौ	लौडितारः
भ०	लौडिष्यति	लौडिष्यतः	लौडिष्यन्ति
क्रि०	अलौडिष्यत्	अलौडिष्यताम्	अलौडिष्यन्

२४०. रोडृ (रोड्) अनादरे।

व०	रोडति	रोडतः	रोडन्ति
स०	रोडेत्	रोडेताम्	रोडेयुः
प०	रोडतु/रोडतात्	रोडताम्	रोडन्तु
ह्य०	अरोडत्	अरोडताम्	अरोडन्
अ०	अरोडीत्	अरोडिष्टाम्	अरोडिषुः
प०	रुरोड	रुरोडतुः	रुरोडुः
आ०	रुड्यात्	रुड्यास्ताम्	रुड्यासुः
श्व०	रोडिता	रोडितारौ	रोडितारः
भ०	रोडिष्यति	रोडिष्यतः	रोडिष्यन्ति
क्रि०	अरोडिष्यत्	अरोडिष्यताम्	अरोडिष्यन्

२४१. रौडृ (रौड्) अनादरे।

व० रौडति रौडतः रौडन्ति इत्यादि

२४२. तौडृ (तौड्) अनादरे।

व० तौडति तौडतः तौडन्ति- इत्यादि

२४३. क्रीडृ (क्रीड्) विहारे।

व०	क्रीडति	क्रीडतः	क्रीडन्ति
	क्रीडसि	क्रीडथः	क्रीडथ
	क्रीडामि	क्रीडावः	क्रीडामः
स०	क्रीडेत्	क्रीडेताम्	क्रीडेयुः
	क्रीडेः	क्रीडेतम्	क्रीडेत

	कीडेयम्	कीडेव	कीडेम
प०	कीडतु/कीडतात्	कीडताम्	कीडन्तु
	कीड/कीडतात्	कीडतम्	कीडत
	कीडानि	कीडाव	कीडाम
ह्य०	अकीडत्	अकीडताम्	अकीडन्
	अकीड:	अकीडतम्	अकीडत
	अकीडम्	अकीडाव	अकीडाम
अ०	अकीडीत्	अकीडिष्टाम्	अकीडिषु:
	अकीडी:	अकीडिष्टम्	अकीडिष्ट
	अकीडिषम्	अकीडिष्व	अकीडिष्म
प०	चिकीड	चिकीडतु:	चिकीडु:
	चिकीडिथ	चिकीडथु:	चिकीड
	चिकीड	चिकीडिव	चिकीडिम
आ०	कीड्यात्	कीड्यास्ताम्	कीड्यासु:
	कीड्या:	कीड्यास्तम्	कीड्यास्त
	कीड्यासम्	कीड्यास्व	कीड्यास्म
श्व०	कीडिता	कीडितारौ	कीडितार:
	कीडितासि	कीडितास्थ:	कीडितास्थ
	कीडितास्मि	कीडितास्व:	कीडितास्म:
भ०	कीडिष्यति	कीडिष्यत:	कीडिष्यन्ति
	कीडिष्यसि	कीडिष्यथ:	कीडिष्यथ
	कीडिष्यामि	कीडिष्याव:	कीडिष्याम:
क्रि०	अकीडिष्यत्	अकीडिष्यताम्	अकीडिष्यन्
	अकीडिष्य:	अकीडिष्यतम्	अकीडिष्यत
	अकीडिष्यम्	अकीडिष्याव	अकीडिष्याम

२४४. तुड्ट (तुड्) तोडने। तोडनं दारणम्।

व०	तोडति	तोडत:	तोडन्ति
	तोडसि	तोडथ:	तोडथ
	तोडामि	तोडाव:	तोडाम:
स०	तोडेत्	तोडेताम्	तोडेयु:
	तोडे:	तोडेतम्	तोडेत
	तोडेयम्	तोडेव	तोडेम
प०	तोडतु/तोडतात्	तोडताम्	तोडन्तु
	तोड/तोडतात्	तोडतम्	तोडत
	तोडानि	तोडाव	तोडाम
ह्य०	अतोडत्	अतोडताम्	अतोडन्
	अतोड:	अतोडतम्	अतोडत
	अतोडम्	अतोडाव	अतोडाम
अ०	अतोडीत्	अतोडिष्टाम्	अतोडिषु:
	अतोडी:	अतोडिष्टम्	अतोडिष्ट
	अतोडिषम्	अतोडिष्व	अतोडिष्म
प०	तुतोड	तुतुडतु:	तुतुडु:
	तुतोडिथ	तुतुडथु:	तुतुड
	तुतोड	तुतुडिव	तुतुडिम
आ०	तुड्यात्	तुड्यास्ताम्	तुड्यासु:
	तुड्या:	तुड्यास्तम्	तुड्यास्त
	तुड्यासम्	तुड्यास्व	तुड्यास्म
श्व०	तोडिता	तोडितारौ	तोडितार:
	तोडितासि	तोडितास्थ:	तोडितास्थ
	तोडितास्मि	तोडितास्व:	तोडितास्म:
भ०	तोडिष्यति	तोडिष्यत:	तोडिष्यन्ति
	तोडिष्यसि	तोडिष्यथ:	तोडिष्यथ
	तोडिष्यामि	तोडिष्याव:	तोडिष्याम:
क्रि०	अतोडिष्यत्	अतोडिष्यताम्	अतोडिष्यन्
	अतोडिष्य:	अतोडिष्यतम्	अतोडिष्यत
	अतोडिष्यम्	अतोडिष्याव	अतोडिष्याम

२४५. तूड्ट (तूड्) तोडने, दारणे इत्यर्थ:।

व०	तूडति	तूडत:	तूडन्ति
स०	तूडेत्	तूडेताम्	तूडेयु:
प०	तूडतु/तूडतात्	तूडताम्	तूडन्तु
ह्य०	अतूडत्	अतूडताम्	अतूडन्
अ०	अतूडीत्	अतूडिष्टाम्	अतूडिषु:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	तुतूड	तुतूडतुः	तुतूडुः
आ०	तूड्यात्	तूड्यास्ताम्	तूड्यासुः
श्व०	तूडिता	तूडितारौ	तूडितारः
भ०	तूडिष्यति	तूडिष्यतः	तूडिष्यन्ति
क्रि०	अतूडिष्यत्	अतूडिष्यताम्	अतूडिष्यन्

२४६. तोड़ (तोड्) तोडने, दारणे इत्यर्थः।

व०	तोडति	तोडतः	तोडन्ति
स०	तोडेत्	तोडेताम्	तोडेयुः
प०	तोडतु/तोडतात्	तोडताम्	तोडन्तु
ह्य०	अतोडत्	अतोडताम्	अतोडन्
अ०	अतोडीत्	अतोडिष्टाम्	अतोडिषुः
प०	तुतोड	तुतोडतुः	तुतोडुः
आ०	तोड्यात्	तोड्यास्ताम्	तोड्यासुः
श्व०	तोडिता	तोडितारौ	तोडितारः
भ०	तोडिष्यति	तोडिष्यतः	तोडिष्यन्ति
क्रि०	अतोडिष्यत्	अतोडिष्यताम्	अतोडिष्यन्

२४७. हुड़ (हुड्) गतौ।

व०	होडति	होडतः	होडन्ति
स०	होडेत्	होडेताम्	होडेयुः
प०	होडतु/होडतात्	होडताम्	होडन्तु
ह्य०	अहोडत्	अहोडताम्	अहोडन्
अ०	अहोडीत्	अहोडिष्टाम्	अहोडिषुः
प०	जुहोड	जुहुडतुः	जुहुडुः
आ०	हुड्यात्	हुड्यास्ताम्	हुड्यासुः
श्व०	होडिता	होडितारौ	होडितारः
भ०	होडिष्यति	होडिष्यतः	होडिष्यन्ति
क्रि०	अहोडिष्यत्	अहोडिष्यताम्	अहोडिष्यन्

२४८. हूड़ (हूड्) गतौ।

व०	हूडति	हूडतः	हूडन्ति, इत्यादि

२४९. ह्रूड़ (ह्रूड्) गतौ।

व०	ह्रूडति	ह्रूडतः	ह्रूडन्ति, इत्यादि

२५०. हौड़ (हौड्) गतौ।

व०	हौडति	हौडतः	हौडन्ति
स०	हौडेत्	हौडेताम्	हौडेयुः
प०	हौडतु/हौडतात्	हौडताम्	हौडन्तु
ह्य०	अहौडत्	अहौडताम्	अहौडन्
अ०	अहौडीत्	अहौडिष्टाम्	अहौडिषुः
प०	जुहौड	जुहौडतुः	जुहौडुः
आ०	हौड्यात्	हौड्यास्ताम्	हौड्यासुः
श्व०	हौडिता	हौडितारौ	हौडितारः
भ०	हौडिष्यति	हौडिष्यतः	हौडिष्यन्ति
क्रि०	अहौडिष्यत्	अहौडिष्यताम्	अहौडिष्यन्

२५१. खोड़ (खोड्) प्रतीघाते।

व०	खोडति	खोडतः	खोडन्ति
स०	खोडेत्	खोडेताम्	खोडेयुः
प०	खोडतु/खोडतात्	खोडताम्	खोडन्तु
ह्य०	अखोडत्	अखोडताम्	अखोडन्
अ०	अखोडीत्	अखोडिष्टाम्	अखोडिषुः
प०	चुखोड	चुखोडतुः	चुखोडुः
आ०	खोड्यात्	खोड्यास्ताम्	खोड्यासुः
श्व०	खोडिता	खोडितारौ	खोडितारः
भ०	खोडिष्यति	खोडिष्यतः	खोडिष्यन्ति
क्रि०	अखोडिष्यत्	अखोडिष्यताम्	अखोडिष्यन्

२५२. विड (विड्) आक्रोशे।

व०	वेडति	वेडतः	वेडन्ति
स०	वेडेत्	वेडेताम्	वेडेयुः
प०	वेडतु/वेडतात्	वेडताम्	वेडन्तु
ह्य०	अवेडत्	अवेडताम्	अवेडन्
अ०	अवेडीत्	अवेडिष्टाम्	अवेडिषुः
प०	विवेड	विविडतुः	विविडुः
आ०	विड्यात्	विड्यास्ताम्	विड्यासुः
श्व०	वेडिता	वेडितारौ	वेडितारः
भ०	वेडिष्यति	वेडिष्यतः	वेडिष्यन्ति
क्रि०	अवेडिष्यत्	अवेडिष्यताम्	अवेडिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५३. अड (अड्) उद्यमे।

व०	अडति	अडतः	अडन्ति
स०	अडेत्	अडेताम्	अडेयुः
प०	अडतु/अडतात्	अडताम्	अडन्तु
ह्य०	आडत्	आडताम्	आडन्
अ०	आडीत्	आडिष्टाम्	आडिषुः
प०	आड	आडतुः	आडुः
आ०	अड्यात्	अड्यास्ताम्	अड्यासुः
श्व०	अडिता	अडितारौ	अडितारः
भ०	अडिष्यति	अडिष्यतः	अडिष्यन्ति
क्रि०	आडिष्यत्	आडिष्यताम्	आडिष्यन्

२५४. लड (लड्) विलासे।

व०	लडति	लडतः	लडन्ति
स०	लडेत्	लडेताम्	लडेयुः
प०	लडतु/लडतात्	लडताम्	लडन्तु
ह्य०	अलडत्	अलडताम्	अलडन्
अ०	अलाडीत्	अलाडिष्टाम्	अलाडिषुः
		तथा	
	अलडीत्	अलडिष्टाम्	अलडिषुः
प०	ललाड	लेडतुः	लेडुः
आ०	लड्यात्	लड्यास्ताम्	लड्यासुः
श्व०	लडिता	लडितारौ	लडितारः
भ०	लडिष्यति	लडिष्यतः	लडिष्यन्ति
क्रि०	अलडिष्यत्	अलडिष्यताम्	अलडिष्यन्

२५४–१ लल (लल्) विलासे।

व०	ललति	ललतः	ललन्ति
स०	ललेत्	ललेताम्	ललेयुः
प०	ललतु/ललतात्	ललताम्	ललन्तु
ह्य०	अललत्	अललताम्	अललन्
अ०	अलालीत्	अलालिष्टाम्	अलालिषुः
प०	ललाल	लेलतुः	लेलुः
आ०	लल्यात्	लल्यास्ताम्	लल्यासुः
श्व०	ललिता	ललितारौ	ललितारः
भ०	ललिष्यति	ललिष्यतः	ललिष्यन्ति
क्रि०	अललिष्यत्	अललिष्यताम्	अललिष्यन्

२५५. कडु (कण्ड्) मदे।

व०	कण्डति	कण्डतः	कण्डन्ति
स०	कण्डेत्	कण्डेताम्	कण्डेयुः
प०	कण्डतु/कण्डतात्	कण्डताम्	कण्डन्तु
ह्य०	अकण्डत्	अकण्डताम्	अकण्डन्
अ०	अकण्डीत्	अकण्डिष्टाम्	अकण्डिषुः
प०	चकण्ड	चकण्डतुः	चकण्डुः
आ०	कण्ड्यात्	कण्ड्यास्ताम्	कण्ड्यासुः
श्व०	कण्डिता	कण्डितारौ	कण्डितारः
भ०	कण्डिष्यति	कण्डिष्यतः	कण्डिष्यन्ति
क्रि०	अकण्डिष्यत्	अकण्डिष्यताम्	अकण्डिष्यन्

२५६. कद्ड (कड्ड्) कार्कश्ये।

दोपान्त्योऽयम्, दकास्य डत्वे कड्ड

व०	कड्डति	कड्डतः	कड्डन्ति
	कड्डसि	कड्डथः	कड्डथ
	कड्डामि	कड्डावः	कड्डामः
स०	कड्डेत्	कड्डेताम्	कड्डेयुः
	कड्डेः	कड्डेतम्	कड्डेत
	कड्डेयम्	कड्डेव	कड्डेम
प०	कड्डतु/कड्डतात्	कड्डताम्	कड्डन्तु
	कड्ड/कड्डतात्	कड्डतम्	कड्डत
	कड्डानि	कड्डाव	कड्डाम
ह्य०	अकड्डत्	अकड्डताम्	अकड्डन्
	अकड्डः	अकड्डतम्	अकड्डत
	अकड्डम्	अकड्डाव	अकड्डाम
अ०	अकड्डीत्	अकड्डिष्टाम्	अकड्डिषुः
	अकड्डीः	अकड्डिष्टम्	अकड्डिष्ट
	अकड्डिषम्	अकड्डिष्व	अकुड्डिष्म
प०	चकड्ड	चकड्डतुः	चकड्डुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	चकड्डिथ	चकड्डथुः	चकड्ड
	चकड्ड	चकड्डिव	चकड्डिम
आ०	कड्ड्यात्	कड्ड्यास्ताम्	कड्ड्यासुः
	कड्ड्याः	कड्ड्यास्तम्	कड्ड्यास्त
	कड्ड्यासम्	कड्ड्यास्व	कड्ड्यास्म
श्व०	कड्डिता	कड्डितारौ	कड्डितारः
	कड्डितासि	कड्डितास्थः	कड्डितास्थ
	कड्डितास्मि	कड्डितास्वः	कड्डितास्मः
भ०	कड्डिष्यति	कड्डिष्यतः	कड्डिष्यन्ति
	कड्डिष्यसि	कड्डिष्यथः	कड्डिष्यथ
	कड्डिष्यामि	कड्डिष्यावः	कड्डिष्यामः
क्रि०	अकड्डिष्यत्	अकड्डिष्यताम्	अकड्डिष्यन्
	अकड्डिष्यः	अकड्डिष्यतम्	अकड्डिष्यत
	अकड्डिष्यम्	अकड्डिष्याव	अकड्डिष्याम

२५७. अद्ड् (अड्ड्) अभियोगे दोपान्त्यः।

व०	अड्डति	अड्डतः	अड्डन्ति
स०	अड्डेत्	अड्डेताम्	अड्डेयुः
प०	अड्डतु/अड्डतात्	अड्डताम्	अड्डन्तु
ह्य०	आड्डत्	आड्डताम्	आड्डन्
अ०	आड्डीत्	आड्डिष्टाम्	आड्डिषुः
प०	आनड्ड	आनड्डतुः	आनड्डुः
आ०	अड्ड्यात्	अड्ड्यास्ताम्	अड्ड्यासुः
श्व०	अड्डिता	अड्डितारौ	अड्डितारः
भ०	अड्डिष्यति	अड्डिष्यतः	अड्डिष्यन्ति
क्रि०	आड्डिष्यत्	आड्डिष्यताम्	आड्डिष्यन्

२५८. चुद्ड (चुड्ड्) हावकरणे।

हावकारणमभिप्रायसूचनम्।

व०	चुड्डति	चुड्डतः	चुड्डन्ति
स०	चुड्डेत्	चुड्डेताम्	चुड्डेयुः
प०	चुड्डतु/चुड्डतात्	चुड्डताम्	चुड्डन्तु
ह्य०	अचुड्डत्	अचुड्डताम्	अचुड्डन्
अ०	अचुड्डीत्	अचुड्डिष्टाम्	अचुड्डिषुः
प०	चुचुड्ड	चुचुड्डतुः	चुचुड्डुः
आ०	चुड्ड्यात्	चुड्ड्यास्ताम्	चुड्ड्यासुः
श्व०	चुड्डिता	चुड्डितारौ	चुड्डितारः
भ०	चुड्डिष्यति	चुड्डिष्यतः	चुड्डिष्यन्ति
क्रि०	अचुड्डिष्यत्	अचुड्डिष्यताम्	अचुड्डिष्यन्[1]

अथ णान्ता एकोनविंशतिः सेटश्च।

२५९. अण (अण्) शब्दे। शब्दः शब्दक्रिया।

व०	अणति	अणतः	अणन्ति
	अणसि	अणथः	अणथ
	अणामि	अणावः	अणामः
स०	अणेत्	अणेताम्	अणेयुः
	अणेः	अणेतम्	अणेत
	अणेयम्	अणेव	अणेम
प०	अणतु/अणतात्	अणताम्	अणन्तु
	अण/अणतात्	अणतम्	अणत
	अणानि	अणाव	अणाम
ह्य०	आणत्	आणताम्	आणन्
	आणः	आणतम्	आणत
	आणम्	आणाव	आणाम
अ०	आणीत्	आणिष्टाम्	आणिषुः
	आणीः	आणिष्टम्	आणिष्ट
	आणिषम्	आणिष्व	आणिष्म
प०	आण	आणतुः	आणुः
	आणिथ	आणथुः	आण
	आण	आणिव	आणिम
आ०	अण्यात्	अण्यास्ताम्	अण्यासुः
	अण्याः	अण्यास्तम्	अण्यास्त
	अण्यासम्	अण्यास्व	अण्यास्म
श्व०	अणिता	अणितारौ	अणितारः
	अणितासि	अणितास्थः	अणितास्थ

१. त्रयोऽप्येते दोपान्त्याः एषां क्विपि कत् अत् चुत्। ये डोपान्त्या मन्यन्ते तेषां मते कट् अट् चुट् इति भवति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अणितास्मि	अणितास्वः	अणितास्मः
भ०	अणिष्यति	अणिष्यतः	अणिष्यन्ति
	अणिष्यसि	अणिष्यथः	अणिष्यथ
	अणिष्यामि	अणिष्यावः	अणिष्यामः
क्रि०	आणिष्यत्	आणिष्यताम्	आणिष्यन्
	आणिष्यः	आणिष्यतम्	आणिष्यत
	आणिष्यम्	आणिष्याव	आणिष्याम

२६०. रण (रण्) शब्दे शब्दक्रियायामित्यर्थः।

व०	रणति	रणतः	रणन्ति
स०	रणेत्	रणेताम्	रणेयुः
प०	रणतु/रणतात्	रणताम्	रणन्तु
ह्य०	अरणत्	अरणताम्	अरणन्
अ०	अराणीत्	अराणिष्टाम्	अराणिषुः
		तथा	
	अरणीत्	अरणिष्टाम्	अरणिषुः
प०	रराण	रेणतुः	रेणुः
	रेणिथ	रेणथुः	रेण
	रराण/ररण	रेणिव	रेणिम
आ०	रण्यात्	रण्यास्ताम्	रण्यासुः
श्व०	रणिता	रणितारौ	रणितारः
भ०	रणिष्यति	रणिष्यतः	रणिष्यन्ति
क्रि०	अरणिष्यत्	अरणिष्यताम्	अरणिष्यन्

२६१. वण (वण्) शब्दे शब्दक्रियायाम्।

व०	वणति	वणतः	वणन्ति
स०	वणेत्	वणेताम्	वणेयुः
प०	वणतु/वणतात्	वणताम्	वणन्तु
ह्य०	अवणत्	अवणताम्	अवणन्
अ०	अवाणीत्	अवाणिष्टाम्	अवाणिषुः
		तथा	
	अवणीत्	अवणिष्टाम्	अवणिषुः
प०	ववाण	ववणतुः	ववणुः
आ०	वण्यात्	वण्यास्ताम्	वण्यासुः
श्व०	वणिता	वणितारौ	वणितारः
भ०	वणिष्यति	वणिष्यतः	वणिष्यन्ति
क्रि०	अवणिष्यत्	अवणिष्यताम्	अवणिष्यन्

२६२. व्रण (व्रण्) शब्दे शब्दक्रियायाम्।

व०	व्रणति	व्रणतः	व्रणन्ति
स०	व्रणेत्	व्रणेताम्	व्रणेयुः
प०	व्रणतु/व्रणतात्	व्रणताम्	व्रणन्तु
ह्य०	अव्रणत्	अव्रणताम्	अव्रणन्
अ०	अव्राणीत्	अव्राणिष्टाम्	अव्राणिषुः
		तथा	
	अव्रणीत्	अव्रणिष्टाम्	अव्रणिषुः
प०	वव्राण	वव्रणतुः	वव्रणुः
आ०	व्रण्यात्	व्रण्यास्ताम्	व्रण्यासुः
श्व०	व्रणिता	व्रणितारौ	व्रणितारः
भ०	व्रणिष्यति	व्रणिष्यतः	व्रणिष्यन्ति
क्रि०	अव्रणिष्यत्	अव्रणिष्यताम्	अव्रणिष्यन्

२६३. बण (बण्) शब्दक्रियायाम्

व०	बणति	बणतः	बणन्ति
स०	बणेत्	बणेताम्	बणेयुः
प०	बणतु/बणतात्	बणताम्	बणन्तु
ह्य०	अबणत्	अबणताम्	अबणन्
अ०	अबाणीत्	अबाणिष्टाम्	अबाणिषुः
		तथा	
	अबणीत्	अबणिष्टाम्	अबणिषुः
प०	बबाण	बेणतुः	बेणुः
आ०	बण्यात्	बण्यास्ताम्	बण्यासुः
श्व०	बणिता	बणितारौ	बणितारः
भ०	बणिष्यति	बणिष्यतः	बणिष्यन्ति
क्रि०	अबणिष्यत्	अबणिष्यताम्	अबणिष्यन्

२६४. भण (भण्) शब्दक्रियायाम्।

व०	भणति	भणतः	भणन्ति
स०	भणेत्	भणेताम्	भणेयुः
प०	भणतु/भणतात्	भणताम्	भणन्तु
ह्य०	अभणत्	अभणताम्	अभणन्
अ०	अभाणीत्	अभाणिष्टाम्	अभाणिषुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तथा

	अभणीत्	अभणिष्टाम्	अभणिषुः
प०	बभाण	बभणतुः	बभणुः
आ०	भण्यात्	भण्यास्ताम्	भण्यासुः
श्व०	भणिता	भणितारौ	भणितारः
भ०	भणिष्यति	भणिष्यतः	भणिष्यन्ति
क्रि०	अभणिष्यत्	अभणिष्यताम्	अभणिष्यन्

२६५. भ्रण (भ्रण्) शब्दक्रियायाम्।

व०	भ्रणति	भ्रणतः	भ्रणन्ति
स०	भ्रणेत्	भ्रणेताम्	भ्रणेयुः
प०	भ्रणतु/भ्रणतात्	भ्रणताम्	भ्रणन्तु
ह्य०	अभ्रणत्	अभ्रणताम्	अभ्रणन्
अ०	अभ्राणीत्	अभ्राणिष्टाम्	अभ्राणिषुः

तथा

	अभ्रणीत्	अभ्रणिष्टाम्	अभ्रणिषुः
प०	बभ्राण	बभ्रणतुः	बभ्रणुः
आ०	भ्रण्यात्	भ्रण्यास्ताम्	भ्रण्यासुः
श्व०	भ्रणिता	भ्रणितारौ	भ्रणितारः
भ०	भ्रणिष्यति	भ्रणिष्यतः	भ्रणिष्यन्ति
क्रि०	अभ्रणिष्यत्	अभ्रणिष्यताम्	अभ्रणिष्यन्

२६६. मण (मण्) शब्दक्रियायाम्।

व०	मणति	मणतः	मणन्ति
स०	मणेत्	मणेताम्	मणेयुः
प०	मणतु/मणतात्	मणताम्	मणन्तु
ह्य०	अमणत्	अमणताम्	अमणन्
अ०	अमाणीत्	अमाणिष्टाम्	अमाणिषुः

तथा

	अमणीत्	अमणिष्टाम्	अमणिषुः
प०	ममाण	मेणतुः	मेणुः
आ०	मण्यात्	मण्यास्ताम्	मण्यासुः
श्व०	मणिता	मणितारौ	मणितारः
भ०	मणिष्यति	मणिष्यतः	मणिष्यन्ति
क्रि०	अमणिष्यत्	अमणिष्यताम्	अमणिष्यन्

२६७. धण (धण्) शब्दक्रियायाम्।

व०	धणति	धणतः	धणन्ति
स०	धणेत्	धणेताम्	धणेयुः
प०	धणतु/धणतात्	धणताम्	धणन्तु
ह्य०	अधणत्	अधणताम्	अधणन्
अ०	अधाणीत्	अधाणिष्टाम्	अधाणिषुः

तथा

	अधणीत्	अधणिष्टाम्	अधणिषुः
प०	दधाण	दधणतुः	दधणुः
आ०	धण्यात्	धण्यास्ताम्	धण्यासुः
श्व०	धणिता	धणितारौ	धणितारः
भ०	धणिष्यति	धणिष्यतः	धणिष्यन्ति
क्रि०	अधणिष्यत्	अधणिष्यताम्	अधणिष्यन्

२६८. ध्वण (ध्वण्) शब्दक्रियायाम्।

व०	ध्वणति	ध्वणतः	ध्वणन्ति
स०	ध्वणेत्	ध्वणेताम्	ध्वणेयुः
प०	ध्वणतु/ध्वणतात्	ध्वणताम्	ध्वणन्तु
ह्य०	अध्वणत्	अध्वणताम्	अध्वणन्
अ०	अध्वाणीत्	अध्वाणिष्टाम्	अध्वाणिषुः

तथा

	अध्वणीत्	अध्वणिष्टाम्	अध्वणिषुः
प०	दध्वाण	दध्वणतुः	दध्वणुः
आ०	ध्वण्यात्	ध्वण्यास्ताम्	ध्वण्यासुः
श्व०	ध्वणिता	ध्वणितारौ	ध्वणितारः
भ०	ध्वणिष्यति	ध्वणिष्यतः	ध्वणिष्यन्ति
क्रि०	अध्वणिष्यत्	अध्वणिष्यताम्	अध्वणिष्यन्

२६९. ध्रण (ध्रण्) शब्दक्रियायाम्।

व०	ध्रणति	ध्रणतः	ध्रणन्ति
स०	ध्रणेत्	ध्रणेताम्	ध्रणेयुः
प०	ध्रणतु/ध्रणतात्	ध्रणताम्	ध्रणन्तु
ह्य०	अध्रणत्	अध्रणताम्	अध्रणन्
अ०	अध्राणीत्	अध्राणिष्टाम्	अध्राणिषुः

तथा

	अध्रणीत्	अध्रणिष्टाम्	अध्रणिषुः
प०	दध्राण	दध्रणतुः	दध्रणुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	ध्रण्यात्	ध्रण्यास्ताम्	ध्रण्यासुः
श्व०	ध्रणिता	ध्रणितारौ	ध्रणितारः
भ०	ध्रणिष्यति	ध्रणिष्यतः	ध्रणिष्यन्ति
क्रि०	अध्रणिष्यत्	अध्रणिष्यताम्	अध्रणिष्यन्

२७०. कण (कण) शब्दक्रियायाम्।

व०	कणति	कणतः	कणन्ति
स०	कणेत्	कणेताम्	कणेयुः
प०	कणतु/कणतात्	कणताम्	कणन्तु
ह्य०	अकणत्	अकणताम्	अकणन्
अ०	अकाणीत्	अकाणिष्टाम्	अकाणिषुः
		तथा	
	अकणीत्	अकणिष्टाम्	अकणिषुः
प०	चकाण	चकणतुः	चकणुः
आ०	कण्यात्	कण्यास्ताम्	कण्यासुः
श्व०	कणिता	कणितारौ	कणितारः
भ०	कणिष्यति	कणिष्यतः	कणिष्यन्ति
क्रि०	अकणिष्यत्	अकणिष्यताम्	अकणिष्यन्

२७१. क्वण (क्वण) शब्दक्रियायाम्।

व०	क्वणति	क्वणतः	क्वणन्ति
स०	क्वणेत्	क्वणेताम्	क्वणेयुः
प०	क्वणतु/क्वणतात्	क्वणताम्	क्वणन्तु
ह्य०	अक्वणत्	अक्वणताम्	अक्वणन्
अ०	अक्वाणीत्	अक्वाणिष्टाम्	अक्वाणिषुः
		तथा	
	अक्वणीत्	अक्वणिष्टाम्	अक्वणिषुः
प०	चक्वाण	चक्वणतुः	चक्वणुः
आ०	क्वण्यात्	क्वण्यास्ताम्	क्वण्यासुः
श्व०	क्वणिता	क्वणितारौ	क्वणितारः
भ०	क्वणिष्यति	क्वणिष्यतः	क्वणिष्यन्ति
क्रि०	अक्वणिष्यत्	अक्वणिष्यताम्	अक्वणिष्यन्

२७२. चण (चण्) शब्दक्रियायाम्।

व०	चणति	चणतः	चणन्ति
स०	चणेत्	चणेताम्	चणेयुः
प०	चणतु/चणतात्	चणताम्	चणन्तु
ह्य०	अचणत्	अचणताम्	अचणन्
अ०	अचाणीत्	अचाणिष्टाम्	अचाणिषुः
		तथा	
	अचणीत्	अचणिष्टाम्	अचणिषुः
प०	चचाण	चेणतुः	चेणुः
आ०	चण्यात्	चण्यास्ताम्	चण्यासुः
श्व०	चणिता	चणितारौ	चणितारः
भ०	चणिष्यति	चणिष्यतः	चणिष्यन्ति
क्रि०	अचणिष्यत्	अचणिष्यताम्	अचणिष्यन्

२७३. ओणृ (ओण्) अपनयने।

व०	ओणति	ओणतः	ओणन्ति
	ओणसि	ओणथः	ओणथ
	ओणामि	ओणावः	ओणामः
स०	ओणेत्	ओणेताम्	ओणेयुः
	ओणेः	ओणेतम्	ओणेत
	ओणेयम्	ओणेव	ओणेम
प०	ओणतु/ओणतात्	ओणताम्	ओणन्तु
	ओण/ओणतात्	ओणतम्	ओणत
	ओणानि	ओणाव	ओणाम
ह्य०	औणत्	औणताम्	औणन्
	औणः	औणतम्	औणत
	औणम्	औणाव	औणाम
अ०	औणीत्	औणिष्टाम्	औणिषुः
	औणीः	औणिष्टम्	औणिष्ट
	औणिषम्	औणिष्व	औणिष्म
प०	ओणाञ्चकार	ओणाञ्चक्रतुः	ओणाञ्चक्रुः
	ओणाञ्चकर्थ	ओणाञ्चक्रथुः	ओणाञ्चक्र
	ओणाञ्चकार/ओणाञ्चकर	ओणाञ्चकृव	ओणाञ्चकृम
आ०	ओण्यात्	ओण्यास्ताम्	ओण्यासुः
	ओण्याः	ओण्यास्तम्	ओण्यास्त
	ओण्यासम्	ओण्यास्व	ओण्यास्म
श्व०	ओणिता	ओणितारौ	ओणितारः
	ओणितासि	ओणितास्थः	ओणितास्थ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	ओणितास्मि	ओणितास्वः	ओणितास्मः
भ०	ओणिष्यति	ओणिष्यतः	ओणिष्यन्ति
	ओणिष्यसि	ओणिष्यथः	ओणिष्यथ
	ओणिष्यामि	ओणिष्यावः	ओणिष्यामः
क्रि०	औणिष्यत्	औणिष्यताम्	औणिष्यन्
	औणिष्यः	औणिष्यतम्	औणिष्यत
	औणिष्यम्	औणिष्याव	औणिष्याम

२७४. शोणृ (शोण्) वर्णगत्योः।

व०	शोणति	शोणतः	शोणन्ति
	शोणसि	शोणथः	शोणथ
	शोणामि	शोणावः	शोणामः
स०	शोणेत्	शोणेताम्	शोणेयुः
	शोणेः	शोणेतम्	शोणेत
	शोणेयम्	शोणेव	शोणेम
प०	शोणतु/शोणतात्	शोणताम्	शोणन्तु
	शोण/शोणतात्	शोणतम्	शोणत
	शोणानि	शोणाव	शोणाम
ह्य०	अशोणत्	अशोणताम्	अशोणन्
	अशोणः	अशोणतम्	अशोणत
	अशोणतम्	अशोणाव	अशोणाम
अ०	अशोणीत्	अशोणिष्टाम्	अशोणिषुः
	अशोणीः	अशोणिष्टम्	अशोणिष्ट
	अशोणिषम्	अशोणिष्व	अशोणिष्म
प०	शुशोण	शुशोणतुः	शुशोणुः
	शुशोणिथ	शुशोणिथुः	शुशोण
	शुशोण	शुशोणिव	शुशोणिम
आ०	शोण्यात्	शोण्यास्ताम्	शोण्यासुः
	शोण्याः	शोण्यास्तम्	शोण्यास्त
	शोण्यासम्	शोण्यास्व	शोण्यास्म
श्व०	शोणिता	शोणितारौ	शोणितारः
	शोणितासि	शोणितास्थः	शोणितास्थ
	शोणितास्मि	शोणितास्वः	शोणितास्मः
भ०	शोणिष्यति	शोणिष्यतः	शोणिष्यन्ति
	शोणिष्यसि	शोणिष्यथः	शोणिष्यथ
	शोणिष्यामि	शोणिष्यावः	शोणिष्यामः
क्रि०	अशोणिष्यत्	अशोणिष्यताम्	अशोणिष्यन्
	अशोणिष्यः	अशोणिष्यतम्	अशोणिष्यत
	अशोणिष्यम्	अशोणिष्याव	अशोणिष्याम

२७५. श्रोणृ (श्रोण्) संघाते।

व०	श्रोणति	श्रोणतः	श्रोणन्ति
स०	श्रोणेत्	श्रोणेताम्	श्रोणेयुः
प०	श्रोणतु/श्रोणतात्	श्रोणताम्	श्रोणन्तु
ह्य०	अश्रोणत्	अश्रोणताम्	अश्रोणन्
अ०	अश्रोणीत्	अश्रोणिष्टाम्	अश्रोणिषुः
प०	शुश्रोण	शुश्रोणतुः	शुश्रोणुः
आ०	श्रोण्यात्	श्रोण्यास्ताम्	श्रोण्यासुः
श्व०	श्रोणिता	श्रोणितारौ	श्रोणितारः
भ०	श्रोणिष्यति	श्रोणिष्यतः	श्रोणिष्यन्ति
क्रि०	अश्रोणिष्यत्	अश्रोणिष्यताम्	अश्रोणिष्यन्

२७६. श्लोणृ (श्लोण्) संघाते।

व०	श्लोणति	श्लोणतः	श्लोणन्ति
स०	श्लोणेत्	श्लोणेताम्	श्लोणेयुः
प०	श्लोणतु/श्लोणतात्	श्लोणताम्	श्लोणन्तु
ह्य०	अश्लोणत्	अश्लोणताम्	अश्लोणन्
अ०	अश्लोणीत्	अश्लोणिष्टाम्	अश्लोणिषुः
प०	शुश्लोण	शुश्लोणतुः	शुश्लोणुः
आ०	श्लोण्यात्	श्लोण्यास्ताम्	श्लोण्यासुः
श्व०	श्लोणिता	श्लोणितारौ	श्लोणितारः
भ०	श्लोणिष्यति	श्लोणिष्यतः	श्लोणिष्यन्ति
क्रि०	अश्लोणिष्यत्	अश्लोणिष्यताम्	अश्लोणिष्यन्

२७७. पैणृ (पैण) गतिप्रेरणश्लेषणेषु।

व०	पैणति	पैणतः	पैणन्ति
स०	पैणेत्	पैणेताम्	पैणेयुः
प०	पैणतु/पैणतात्	पैणताम्	पैणन्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	अपैणत्	अपैणताम्	अपैणन्
अ०	अपैणीत्	अपैणिष्टाम्	अपैणिषु:
प०	पिपैण	पिपैणतु:	पिपैणु:
आ०	पैण्यात्	पैण्यास्ताम्	पैण्यासु:
श्व०	पैणिता	पैणितारौ	पैणितार:
भ०	पैणिष्यति	पैणिष्यत:	पैणिष्यन्ति
क्रि०	अपैणिष्यत्	अपैणिष्यताम्	अपैणिष्यन्

अथ तान्ता: दश सेट्श्च॥

२७८. चितै (चित्) संज्ञाने। संज्ञानं संवित्ति:।

व०	चेतति	चेतत:	चेतन्ति
	चेतसि	चेतथ:	चेतथ
	चेतामि	चेताव:	चेताम:
स०	चेतेत्	चेतेताम्	चेतेयु:
	चेते:	चेतेतम्	चेतेत
	चेतेयम्	चेतेव	चेतेम
प०	चेततु/चेततात्	चेतताम्	चेतन्तु
	चेत/चेततात्	चेततम्	चेतत
	चेतानि	चेताव	चेताम
ह्य०	अचेतत्	अचेतताम्	अचेतन्
	अचेत:	अचेततम्	अचेतत
	अचेतम्	अचेताव	अचेताम
अ०	अचेतीत्	अचेतिष्टाम्	अचेतिषु:
	अचेती:	अचेतिष्टम्	अचेतिष्ट
	अचेतिषम्	अचेतिष्व	अचेतिष्म
प०	चिचेत	चिचिततु:	चिचितु:
	चिचेतिथ	चिचितथु:	चिचित
	चिचेत	चिचितिव	चिचितिम
आ०	चित्यात्	चित्यास्ताम्	चित्यासु:
	चित्या:	चित्यास्तम्	चित्यास्त
	चित्यासम्	चित्यास्व	चित्यास्म
श्व०	चेतिता	चेतितारौ	चेतितार:
	चेतितासि	चेतितास्थ:	चेतितास्थ
	चेतितास्मि	चेतितास्व:	चेतितास्म:
भ०	चेतिष्यति	चेतिष्यत:	चेतिष्यन्ति
	चेतिष्यसि	चेतिष्यथ:	चेतिष्यथ
	चेतिष्यामि	चेतिष्याव:	चेतिष्याम:
क्रि०	अचेतिष्यत्	अचेतिष्यताम्	अचेतिष्यन्
	अचेतिष्य:	अचेतिष्यतम्	अचेतिष्यत
	अचेतिष्यम्	अचेतिष्याव	अचेतिष्याम

२७९. अत (अत्) सातत्यगमने।

सातत्येन गमनं नित्यगति:।

व०	अतति	अतत:	अतन्ति
	अतसि	अतथ:	अतथ
	अतामि	अताव:	अताम:
स०	अतेत्	अतेताम्	अतेयु:
	अते:	अतेतम्	अतेत
	अतेयम्	अतेव	अतेम
प०	अततु/अततात्	अतताम्	अतन्तु
	अत/अततात्	अततम्	अतत
	अतानि	अताव	अताम
ह्य०	आतत्	आतताम्	आतन्
	आत:	आततम्	आतत
	आतम्	आताव	आताम
अ०	आतीत्	आतिष्टाम्	आतिषु:
	आती:	आतिष्टम्	आतिष्ट
	आतिषम्	आतिष्व	आतिष्म
प०	आत	आततु:	आतु:
	आतिथ	आतथु:	आत
	आत	आतिव	आतिम
आ०	अत्यात्	अत्यास्ताम्	अत्यासु:
	अत्या:	अत्यास्तम्	अत्यास्त
	अत्यासम्	अत्यास्व	अत्यास्म
श्व०	अतिता	अतितारौ	अतितार:
	अतितासि	अतितास्थ:	अतितास्थ
	अतितास्मि	अतितास्व:	अतितास्म:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	अतिष्यति	अतिष्यतः	अतिष्यन्ति
	अतिष्यसि	अतिष्यथः	अतिष्यथ
	अतिष्यामि	अतिष्यावः	अतिष्यामः
क्रि०	आतिष्यत्	आतिष्यताम्	आतिष्यन्
	आतिष्यः	आतिष्यतम्	आतिष्यत
	आतिष्यम्	आतिष्याव	आतिष्याम

२८०. च्युतृ (च्युत्) आसेचने। आसेचनमीषत्सेकः।

व०	च्योतति	च्योततः	च्योतन्ति
स०	च्योतेत्	च्योतेताम्	च्योतेयुः
प०	च्योततु/च्योततात्	च्योतताम्	च्योतन्तु
ह्य०	अच्योतत्	अच्योतताम्	अच्योतन्
अ०	अच्योतीत्	अच्योतिष्टाम्	अच्योतिषुः
		तथा	
	अच्युतत्	अच्युतताम्	अच्युतन
प०	चुच्योत	चुच्युततुः	चुच्युतुः
आ०	च्युत्यात्	च्युत्यास्ताम्	च्युत्यासुः
श्व०	च्योतिता	च्योतितारौ	च्योतितारः
भ०	च्योतिष्यति	च्योतिष्यतः	च्योतिष्यन्ति
क्रि०	अच्योतिष्यत्	अच्योतिष्यताम्	अच्योतिष्यन्

२८१. चुतृ (चुत्) क्षरणे। क्षरणं स्रवणम्।

व०	चोतति	चोततः	चोतन्ति
स०	चोतेत्	चोतेताम्	चोतेयुः
प०	चोततु/चोततात्	चोतताम्	चोतन्तु
ह्य०	अचोतत्	अचोतताम्	अचोतन्
अ०	अचुतत्	अचुतताम्	अचुतन्
		तथा	
	अचोतीत्	अचोतिष्टाम्	अचोतिषुः
प०	चुचोत	चुचुततुः	चुचुतुः
आ०	चुत्यात्	चुत्यास्ताम्	चुत्यासुः
श्व०	चोतिता	चोतितारौ	चोतितारः
भ०	चोतिष्यति	चोतिष्यतः	चोतिष्यन्ति
क्रि०	अचोतिष्यत्	अचोतिष्यताम्	अचोतिष्यन्

२८२. श्चुतृ (श्चुत्) क्षरणे। क्षरणं स्रवणम्।

व०	श्चोतति	श्चो ततः	श्चोतन्ति
स०	श्चोतेत्	श्चोतेताम्	श्चोतेयुः
प०	श्चोततु/श्चोततात्	श्चोतताम्	श्चोतन्तु
ह्य०	अश्चोतत्	अश्चोतताम्	अश्चोतन्
अ०	अश्चोतीत्	अश्चोतिष्टाम्	अश्चोतिषुः
		तथा	
	अश्चुतत्	अश्चुतताम्	अश्चुतन
प०	चुश्चोत	चुश्चुततुः	चुश्चुतुः
आ०	श्चुत्यात्	श्चुत्यास्ताम्	श्चुत्यासुः
श्व०	श्चोतिता	श्चोतितारौ	श्चोतितारः
भ०	श्चोतिष्यति	श्चोतिष्यतः	श्चोतिष्यन्ति
क्रि०	अश्चोतिष्यत्	अश्चोतिष्यताम्	अश्चोतिष्यन्

२८३. श्च्युतृ (श्च्युत्) क्षरणे। क्षरणं स्रवणम्।

व०	श्च्योतति	श्च्योततः	श्च्योतन्ति
स०	श्च्योतेत्	श्च्योतेताम्	श्च्योतेयुः
प०	श्च्योततु/श्च्योततात्	श्च्योतताम्	श्च्योतन्तु
ह्य०	अश्च्योतत्	अश्च्योतताम्	अश्च्योतन्
अ०	अश्च्योतीत्	अश्च्योतिष्टाम्	अश्च्योतिषुः
		तथा	
	अश्च्युतत्	अश्च्युतताम्	अश्च्युतन
प०	चुश्च्योत	चुश्च्युततुः	चुश्च्यतः
आ०	श्च्युत्यात्	श्च्युत्यास्ताम्	श्च्युत्यासुः
श्व०	श्च्योतिता	श्च्योतितारौ	श्च्योतितारः
भ०	श्च्योतिष्यति	श्च्योतिष्यतः	श्च्योतिष्यन्ति
क्रि०	अश्च्योतिष्यत्	अश्च्योतिष्यताम्	अश्च्योतिष्यन्

२८४. जुतृ (जुत्) भासने।

व०	जोतति	जोततः	जोतन्ति
	जोतसि	जोतथः	जोतथ
	जोतामि	जोतावः	जोतामः
स०	जोतेत्	जोतेताम्	जोतेयुः
	जोतेः	जोतेतम्	जोतेत
	जोतेयम्	जोतेव	जोतेम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	जोततु/जोततात्	जोतताम्	जोतन्तु
	जोत/जोततात्	जोतम्	जोतत
	जोतानि	जोताव	जोताम
ह्य०	अजोतत्	अजोतताम्	अजोतन्
	अजोत:	अजोततम्	अजोतत
	अजोतम्	अजोताव	अजोताम
अ०	अजुतत्	अजुतताम्	अजुतन
	अजुत:	अजुततम्	अजुतत
	अजुतम्	अजुताव	अजुताम
		तथा	
	अजोतीत्	अजोतिष्टाम्	अजोतिषु:
	अजोती:	अजोतिष्टम्	अजोतिष्ट
	अजोतिषम्	अजोतिष्व	अजोतिष्म
प०	जुजोत	जुजुततु:	जुजुतु:
	जुजोतिथ	जुजुतथु:	जुजुत
	जुजोत	जुजुतिव	जुजुतिम
आ०	जुत्यात्	जुत्यास्ताम्	जुत्यासु:
	जुत्या:	जुत्यास्तम्	जुत्यास्त
	जुत्यासम्	जुत्यास्व	जुत्यास्म
श्व०	जोतिता	जोतितारौ	जोतितार:
	जोतितासि	जोतितास्थ:	जोतितास्थ
	जोतितास्मि	जोतितास्व:	जोतितास्म:
भ०	जोतिष्यति	जोतिष्यत:	जोतिष्यन्ति
	जोतिष्यसि	जोतिष्यथ:	जोतिष्यथ
	जोतिष्यामि	जोतिष्याव:	जोतिष्याम:
क्रि०	अजोतिष्यत्	अजोतिष्यताम्	अजोतिष्यन्
	अजोतिष्य:	अजोतिष्यतम्	अजोतिष्यत
	अजोतिष्यम्	अजोतिष्याव	अजोतिष्याम

२८५. अतु (अन्त्) बन्धने।

व०	अन्तति	अन्तत:	अन्तन्ति
	अन्तसि	अन्तथ:	अन्तथ
	अन्तामि	अन्ताव:	अन्ताम:
स०	अन्तेत्	अन्तेताम्	अन्तेयु:
	अन्ते:	अन्तेतम्	अन्तेत
	अन्तेयम्	अन्तेव	अन्तेम
प०	अन्ततु/अन्ततात्	अन्तताम्	अन्तन्तु
	अन्त/अन्ततात्	अन्तम्	अन्तत
	अन्तानि	अन्ताव	अन्ताम
ह्य०	आन्तत्	आन्तताम्	आन्तन्
	आन्त:	आन्ततम्	आन्तत
	आन्तम्	आन्ताव	आन्ताम
अ०	आन्तीत्	आन्तिष्टाम्	आन्तिषु:
	आन्ती:	आन्तिष्टम्	आन्तिष्ट
	आन्तिषम्	आतिष्व	आन्तिष्म
प०	आनन्त	आनन्ततु:	आनन्तु:
	आनन्तिथ	आनन्तथु:	आनन्त
	आनन्त	आनन्तिव	आनन्तिम
आ०	अन्त्यात्	अन्त्यास्ताम्	अन्त्यासु:
	अन्त्या:	अन्त्यास्तम्	अन्त्यास्त
	अन्त्यासम्	अन्त्यास्व	अन्त्यास्म
श्व०	अन्तिता	अन्तितारौ	अन्तितार:
	अन्तितासि	अन्तितास्थ:	अन्तितास्थ
	अनितास्मि	अन्तितास्व:	अन्तितास्म:
भ०	अन्तिष्यति	अन्तिष्यत:	अन्तिष्यन्ति
	अन्तिष्यसि	अन्तिष्यथ:	अन्तिष्यथ
	अन्तिष्यामि	अन्तिष्याव:	अन्तिष्याम:
क्रि०	आन्तिष्यत्	आन्तिष्यताम्	आन्तिष्यन्
	आन्तिष्य:	आन्तिष्यतम्	आन्तिष्यत
	आन्तिष्यम्	आन्तिष्याव	आन्तिष्याम

२८६. कित (कित्) निवासे।

व०	केतति	केतत:	केतन्ति
	केतसि	केतथ:	केतथ
	केतामि	केताव:	केताम:
स०	केतेत्	केतेताम्	केतेयु:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	केते:	केतेतम्	केतेत
	केतेयम्	केतेव	केतेम
प०	केततु/केततात्	केतताम्	केतन्तु
	केत/केततात्	केतम्	केतत
	केतानि	केताव	केताम
ह्य०	अकेतत्	अकेतताम्	अकेतन्
	अकेत:	अकेततम्	अकेतत
	अकेतम्	अकेताव	अकेताम
अ०	अकेतीत्	अकेतिष्टाम्	अकेतिषु:
	अकेती:	अकेतिष्टम्	अकेतिष्ट
	अकेतिषम्	अकेतिष्व	अकेतिष्म
प०	चिकेत	चिकिततु:	चिकितु:
	चिकेतिथ	चिकितथु:	चिकित
	चिकेत	चिकितिव	चिकितिम
आ०	कित्यात्	कित्यास्ताम्	कित्यासु:
	कित्या:	कित्यास्तम्	कित्यास्त
	कित्यासम्	कित्यास्व	कित्यास्म
श्व०	केतिता	केतितारौ	केतितार:
	केतितासि	केतितास्थ:	केतितास्थ
	केतितास्मि	केतितास्व:	केतितास्म:
भ०	केतिष्यति	केतिष्यत:	केतिष्यन्ति
	केतिष्यसि	केतिष्यथ:	केतिष्यथ
	केतिष्यामि	केतिष्याव:	केतिष्याम:
क्रि०	अकेतिष्यत्	अकेतिष्यताम्	अकेतिष्यन्
	अकेतिष्य:	अकेतिष्यतम्	अकेतिष्यत
	अकेतिष्यम्	अकेतिष्याव	अकेतिष्याम

धातूनामनेकार्थत्वात् कित: संशयप्रतीकारेऽपि ज्ञेय:।

निग्रुविनाशौ प्रतीकारस्यैव भेदौ।

२८६-१. स्वार्थे सनि। (चिकित्स्)

व०	चिकित्सति	चिकित्सत:	चिकित्सन्ति
	चिकित्ससि	चिकित्सथ:	चिकित्सथ
	चिकित्सामि	चिकित्साव:	चिकित्साम:
स०	चिकित्सेत्	चिकित्सेताम्	चिकित्सेयु:
	चिकित्से:	चिकित्सेतम्	चिकित्सेत
	चिकित्सेयम्	चिकित्सेव	चिकित्सेम
प०	चिकित्सतु/तात्	चिकित्सताम्	चिकित्सन्तु
	चिकित्स/तात्	चिकित्सम्	चिकित्सत
	चिकित्सानि	चिकित्साव	चिकित्साम
ह्य०	अचिकित्सत्	अचिकित्सताम्	अचिकित्सन्
	अचिकित्स:	अचिकित्सतम्	अचिकित्सत
	अचिकित्सम्	अचिकित्साव	अचिकित्साम
अ०	अचिकित्सीत्	अचिकित्सिष्टाम्	अचिकित्सिषु:
	अचिकित्सी:	अचिकित्सिष्टम्	अचिकित्सिष्ट
	अचिकित्सिषम्	अचिकित्सिष्व	अचिकित्सिष्म
प०	चिकित्साञ्चकार	चिकित्साञ्चक्रतु:	चिकित्साञ्चक्रु:
	चिकित्साञ्चकर्थ	चिकित्साञ्चक्रथु:	चिकित्साञ्चक्र
	चिकित्साञ्चकार/चकर	चिकित्साञ्चकृव	चिकित्साञ्चकृम
	चिकित्साम्बभूव/चिकित्सामास		
आ०	चिकित्स्यात्	चिकित्स्यास्ताम्	चिकित्स्यासु:
	चिकित्स्या:	चिकित्स्यास्तम्	चिकित्स्यास्त
	चिकित्स्यासम्	चिकित्स्यास्व	चिकित्स्यास्म
श्व०	चिकित्सिता	चिकित्सितारौ	चिकित्सितार:
	चिकित्सितासि	चिकित्सितास्थ:	चिकित्सितास्थ
	चिकित्सितास्मि	चिकित्सितास्व:	चिकित्सितास्म:
भ०	चिकित्सिष्यति	चिकित्सिष्यत:	चिकित्सिष्यन्ति
	चिकित्सिष्यसि	चिकित्सिष्यथ:	चिकित्सिष्यथ
	चिकित्सिष्यामि	चिकित्सिष्याव:	चिकित्सिष्याम:
क्रि०	अचिकित्सिष्यत्	अचिकित्सिष्यताम्	अचिकित्सिष्यन्
	अचिकित्सिष्य:	अचिकित्सिष्यतम्	अचिकित्सिष्यत
	अचिकित्सिष्यम्	अचिकित्सिष्याव	अचिकित्सिष्याम

२८७. ऋत (ऋत्-ऋतीय्) घृणागतिस्पर्धेषु।

व०	ऋतीयते	ऋतीयेते	ऋतीयन्ते
	ऋतीयसे	ऋतीयेथे	ऋतीयध्वे
	ऋतीये	ऋतीयावहे	ऋतीयामहे
स०	ऋतीयेत्	ऋतीयेयाताम्	ऋतीयेरन्
	ऋतीयेथा:	ऋतीयेयाथाम्	ऋतीयेध्वम्
	ऋतीयेय	ऋतीयेवहि	ऋतीयेमहि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	ऋतीयताम्	ऋतीयेताम्	ऋतीयन्ताम्
	ऋतीयस्व	ऋतीयेथाम्	ऋतीयध्वम्
	ऋतीयै	ऋतीयावहै	ऋतीयामहै
ह्य०	आर्तीयत	आर्तीयेताम	आर्तीयन्त
	आर्तीयथाः	आर्तीयेथाम्	आर्तीयध्वम्
	आर्तीये	आर्तीयावहि	आर्तीयामहि
अ०	आर्तियिष्ट	आर्तियिषाताम्	आर्तियिषत
	आर्तियिष्ठाः	आर्तियिषाथाम्	आर्तियिड्ढ्वं/ध्वम्
	आर्तियिषि	आर्तियिष्वहि	आर्तियिष्महि

तथा

	ऋतीयाञ्चक्रे	ऋतीयाञ्चक्राते	ऋतीयाञ्चक्रिरे
	ऋतीयाञ्चकृषे	ऋतीयाञ्चक्रावे	ऋतीयाञ्चकृढ्वे
	ऋतीयाञ्चक्रे	ऋतीयाञ्चकृवहे	ऋतीयाञ्चकृमहे
	ऋतीयामास/ऋतीयाम्बभूव		
प०	आनर्त	आनृततुः	आनृतुः
	आनर्तिथ	आनृतथुः	आनृत
	आनर्त	आनृतिव	आनृतिम
आ०	ऋतीयिषीष्ट	ऋतीयीषीयास्ताम्	ऋतीयिषीरन्
	ऋतीयिषीष्ठाः	ऋतीयिषीयास्थाम्	ऋतीयिषीढ्वम्
	ऋतीयिषीय	ऋतीयिषीवहि	ऋतीयिषीमहि

तथा

	ऋत्यात्	ऋत्यास्ताम्	ऋत्यासुः
	ऋत्याः	ऋत्यास्तम्	ऋत्यास्त
	ऋत्यासम्	ऋत्यास्व	ऋत्यास्म
श्व०	अर्तिता	अर्तितारौ	अर्तितारः
	अर्तितासि	अर्तितास्थः	अर्तितास्थ
	अर्तितास्मि	अर्तितास्वः	अर्तितास्मः

तथा

	ऋतीयिता	ऋतीयितारौ	ऋतीयितारः
	ऋतीयितासे	ऋतीयितासाथे	ऋतीयिताध्वे
	ऋतीयिताहे	ऋतीयितास्वहे	ऋतीयितास्मिहे
भ०	ऋतीयिष्यते	ऋतीयिष्येते:	ऋतीयिष्यन्ते
	ऋतीयिष्यसे	ऋतीयिष्येथे	ऋतीयिष्यध्वे
	ऋतीयिष्ये	ऋतीयिष्यावहे	ऋतीयिष्यामहे

तथा

	अर्तिष्यति	अर्तिष्यतः	अर्तिष्यन्ति
	अर्तिष्यसि	अर्तिष्यथः	अर्तिष्यथ
	अर्तिष्यामि	अर्तिष्यावः	अर्तिष्यामः
क्रि०	आर्तीयिष्यत्	आर्तीयिष्येताम्	आर्तीयिष्यन्त
	आर्तीयिष्यथाः	आर्तीयिष्येथाम्	आर्तीयिष्यध्वम्
	आर्तीयिष्ये	आर्तीयिष्यावहि	आर्तीयिष्यामहि

तथा

	आर्तिष्यत्	आर्तिष्यताम्	आर्तिष्यन्
	आर्तिष्यः	आर्तिष्यतम्	आर्तिष्यत
	आर्तिष्यम्	आर्तिष्याव	आर्तिष्याम

।।अथ थान्ताः षट् सेटश्च।।

२८८. कुथु (कुन्थ्) हिंसासङ्क्लेशनयोः।

हिंसाप्राण्युपघातः, संक्लेशो बाधा।

व०	कुन्थति	कुन्थतः	कुन्थन्ति
	कुन्थसि	कुन्थथः	कुन्थथ
	कुन्थामि	कुन्थावः	कुन्थामः
स०	कुन्थेत्	कुन्थेताम्	कुन्थेयुः
	कुन्थेः	कुन्थेतम्	कुन्थेत
	कुन्थेयम्	कुन्थेव	कुन्थेम
प०	कुन्थतु/कुन्थतात्	कुन्थताम्	कुन्थन्तु
	कुन्थ/कुन्थतात्	कुन्थतम्	कुन्थत
	कुन्थानि	कुन्थाव	कुन्थाम
ह्य०	अकुन्थत्	अकुन्थताम्	अकुन्थन्
	अकुन्थः	अकुन्थतम्	अकुन्थत
	अकुन्थतम्	अकुन्थाव	अकुन्थाम
अ०	अकुन्थीत्	अकुन्थिष्टाम्	अकुन्थिषुः
	अकुन्थीः	अकुन्थिष्टम्	अकुन्थिष्ट
	अकुन्थिषम्	अकुन्थिष्व	अकुन्थिष्म
प०	चुकुन्थ	चुकुन्थतुः	चुकुन्थुः
	चुकुन्थिथ	चुकुन्थथुः	चुकुन्थ
	चुकुन्थ	चुकुन्थिव	चुकुन्थिम
आ०	कुन्थ्यात्	कुन्थ्यास्ताम्	कुन्थ्यासुः
	कुन्थ्याः	कुन्थ्यास्तम्	कुन्थ्यास्त
	कुन्थ्यासम्	कुन्थ्यास्व	कुन्थ्यास्म

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	कुन्थिता	कुन्थितारौ	कुन्थितार:
	कुन्थितासि	कुन्थितास्थ:	कुन्थितास्थ
	कुन्थितास्मि	कुन्थितास्व:	कुन्थितास्म:
भ०	कुन्थिष्यति	कुन्थिष्यत:	कुन्थिष्यन्ति
	कुन्थिष्यसि	कुन्थिष्यथ:	कुन्थिष्यथ
	कुन्थिष्यामि	कुन्थिष्याव:	कुन्थिष्याम:
क्रि०	अकुन्थिष्यत्	अकुन्थिष्यताम्	अकुन्थिष्यन्
	अकुन्थिष्य:	अकुन्थिष्यतम्	अकुन्थिष्यत
	अकुन्थिष्यम्	अकुन्थिष्याव	अकुन्थिष्याम

२८९. पुथु (पुन्थ्) हिंसासङ्क्लेशनयो:।

व०	पुन्थति	पुन्थत:	पुन्थन्ति
स०	पुन्थेत्	पुन्थेताम्	पुन्थेयु:
प०	पुन्थतु/पुन्थतात्	पुन्थताम्	पुन्थन्तु
ह्य०	अपुन्थत्	अपुन्थताम्	अपुन्थन्
अ०	अपुन्थीत्	अपुन्थिष्टाम्	अपुन्थिषु:
प०	पुपुन्थ	पुपुन्थतु:	पुपुन्थु:
आ०	पुन्थ्यात्	पुन्थ्यास्ताम्	पुन्थ्यासु:
श्व०	पुन्थिता	पुन्थितारौ	पुन्थितार:
भ०	पुन्थिष्यति	पुन्थिष्यत:	पुन्थिष्यन्ति
क्रि०	अपुन्थिष्यत्	अपुन्थिष्यताम्	अपुन्थिष्यन्

२९०. लुथु (लुन्थ्) हिंसासङ्क्लेशनयो:

व०	लुन्थति	लुन्थत:	लुन्थन्ति
स०	लुन्थेत्	लुन्थेताम्	लुन्थेयु:
प०	लुन्थतु/लुन्थतात्	लुन्थताम्	लुन्थन्तु
ह्य०	अलुन्थत्	अलुन्थताम्	अलुन्थन्
अ०	अलुन्थीत्	अलुन्थिष्टाम्	अलुन्थिषु:
प०	लुलुन्थ	लुलुन्थतु:	लुलुन्थु:
आ०	लुन्थ्यात्	लुन्थ्यास्ताम्	लुन्थ्यासु:
श्व०	लुन्थिता	लुन्थितारौ	लुन्थितार:
भ०	लुन्थिष्यति	लुन्थिष्यत:	लुन्थिष्यन्ति
क्रि०	अलुन्थिष्यत्	अलुन्थिष्यताम्	अलुन्थिष्यन्

२९१. मथु (मन्थ्) हिंसासङ्क्लेशनयो:।

व०	मन्थति	मन्थत:	मन्थन्ति
	मन्थसि	मन्थथ:	मन्थथ
	मन्थामि	मन्थाव:	मन्थाम:
स०	मन्थेत्	मन्थेताम्	मन्थेयु:
	मन्थे:	मन्थेतम्	मन्थेत
	मन्थेयम्	मन्थेव	मन्थेम
प०	मन्थतु/मन्थतात्	मन्थताम्	मन्थन्तु
	मन्थ/मन्थतात्	मन्थतम्	मन्थत
	मन्थानि	मन्थाव	मन्थाम
ह्य०	अमन्थत्	अमन्थताम्	अमन्थन्
	अमन्थ:	अमन्थतम्	अमन्थत
	अमन्थम्	अमन्थाव	अमन्थाम
अ०	अमन्थीत्	अमन्थिष्टाम्	अमन्थिषु:
	अमन्थी:	अमन्थिष्टम्	अमन्थिष्ट
	अमन्थिषम्	अमन्थिष्व	अमन्थिष्म
प०	ममन्थ	ममन्थतु:	ममन्थु:
	ममन्थिथ	ममन्थथु:	ममन्थ
	ममन्थ	ममन्थिव	ममन्थिम
आ०	मन्थ्यात्	मन्थ्यास्ताम्	मन्थ्यासु:
	मन्थ्या:	मन्थ्यास्तम्	मन्थ्यास्त
	मन्थ्यासम्	मन्थ्यास्व	मन्थ्यास्म
श्व०	मन्थिता	मन्थितारौ	मन्थितार:
	मन्थितासि	मन्थितास्थ:	मन्थितास्थ
	मन्थितास्मि	मन्थितास्व:	मन्थितास्म:
भ०	मन्थिष्यति	मन्थिष्यत:	मन्थिष्यन्ति
	मन्थिष्यसि	मन्थिष्यथ:	मन्थिष्यथ
	मन्थिष्यामि	मन्थिष्याव:	मन्थिष्याम:
क्रि०	अमन्थिष्यत्	अमन्थिष्यताम्	अमन्थिष्यन्
	अमन्थिष्य:	अमन्थिष्यतम्	अमन्थिष्यत
	अमन्थिष्यम्	अमन्थिष्याव	अमन्थिष्याम

२९२. मथ (मन्थ्) हिंसासङ्क्लेशनयो:, विलोडने केचित्।

२९३. मान्थ (मान्थ्) हिंसासङ्क्लेशनयो:।

व०	मान्थति	मान्थत:	मान्थन्ति

॥ अथ दान्ता: षड्विंशति: स्कन्दवर्जा: सेटश्च॥

२९४. खादृ (खाद्) भक्षणे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व०	खादति	खादतः	खादन्ति
	खादसि	खादथः	खादथ
	खादामि	खादावः	खादामः
स०	खादेत्	खादेताम्	खादेयुः
	खादेः	खादेतम्	खादेत
	खादेयम्	खादेव	खादेम
प०	खादतु/खादतात्	खादताम्	खादन्तु
	खाद/खादतात्	खादतम्	खादत
	खादानि	खादाव	खादाम
ह्य०	अखादत्	अखादताम्	अखादन्
	अखादः	अखादतम्	अखादत
	अखादम्	अखादाव	अखादाम
अ०	अखादीत्	अखादिष्टाम्	अखादिषुः
	अखादीः	अखादिष्टम्	अखादिष्ट
	अखादिषम्	अखादिष्व	अखादिष्म
प०	चखाद	चखादतुः	चखादुः
	चखदिथ	चखादथुः	चखाद
	चखाद	चखादिव	चखादिम
आ०	खाद्यात्	खाद्यास्ताम्	खाद्यासुः
	खाद्याः	खाद्यास्तम्	खाद्यास्त
	खाद्यासम्	खाद्यास्व	खाद्यास्म
श्व०	खादिता	खादितारौ	खादितारः
	खादितासि	खादितास्थः	खादितास्थ
	खादितास्मि	खादितास्वः	खादितास्मः
भ०	खादिष्यति	खादिष्यतः	खादिष्यन्ति
	खादिष्यसि	खादिष्यथः	खादिष्यथ
	खादिष्यामि	खादिष्यावः	खादिष्यामः
क्रि०	अखादिष्यत्	अखादिष्यताम्	अखादिष्यन्
	अखादिष्यः	अखादिष्यतम्	अखादिष्यत
	अखादिष्यम्	अखादिष्याव	अखादिष्याम

२९५. बद (बद्) स्थैर्ये।

व०	बदति	बदतः	बदन्ति
	बदसि	बदथः	बदथ
	बदामि	बदावः	बदामः
स०	बदेत्	बदेताम्	बदेयुः
	बदेः	बदेतम्	बदेत
	बदेयम्	बदेव	बदेम
प०	बदतु/बदतात्	बदताम्	बदन्तु
	बद/बदतात्	बदतम्	बदत
	बदानि	बदाव	बदाम
ह्य०	अबदत्	अबदताम्	अबदन्
	अबदः	अबदतम्	अबदत
	अबदम्	अबदाव	अबदाम
अ०	अबदीत्	अबदिष्टाम्	अबदिषुः
	अबदीः	अबदिष्टम्	अबदिष्ट
	अबदिषम्	अबदिष्व	अबदिष्म
		तथा	
	अबादीत्	अबादिष्टाम्	अबादिषुः
	अबादीः	अबादिष्टम्	अबादिष्ट
	अबादिषम्	अबादिष्व	अबादिष्म
प०	बबाद	बेदतुः	बेदुः
	बेदिथ	बेदथुः	बेद
	बबाद/बबद	बेदिव	बेदिम
आ०	बद्यात्	बद्यास्ताम्	बद्यासुः
	बद्याः	बद्यास्तम्	बद्यास्त
	बद्यासम्	बद्यास्व	बद्यास्म
श्व०	बदिता	बदितारौ	बदितारः
	बदितासि	बदितास्थः	बदितास्थ
	बदितास्मि	बदितास्वः	बदितास्मः
भ०	बदिष्यति	बदिष्यतः	बदिष्यन्ति
	बदिष्यसि	बदिष्यथः	बदिष्यथ
	बदिष्यामि	बदिष्यावः	बदिष्यामः
क्रि०	अबदिष्यत्	अबदिष्यताम्	अबदिष्यन्
	अबदिष्यः	अबदिष्यतम्	अबदिष्यत
	अबदिष्यम्	अबदिष्याव	अबदिष्याम

२९६. खद (खद्) हिंसायाञ्च। चकारात्स्थैर्ये।

व०	खदति	खदतः	खदन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	खदसि	खदथः	खदथ
	खदामि	खदावः	खदामः
स०	खदेत्	खदेताम्	खदेयुः
	खदेः	खदेतम्	खदेत
	खदेयम्	खदेव	खदेम
प०	खदतु/खदतात्	खदताम्	खदन्तु
	खद/खदतात्	खदतम्	खदत
	खदानि	खदाव	खदाम
ह्य०	अखदत्	अखदताम्	अखदन्
	अखदः	अखदतम्	अखदत
	अखदम्	अखदाव	अखदाम
अ०	अखादीत्	अखादिष्टाम्	अखादिषुः
	अखादीः	अखादिष्टम्	अखादिष्ट
	अखादिषम्	अखादिष्व	अखादिष्म
		तथा	
	अखदीत्	अखदिष्टाम्	अखदिषुः
	अखदीः	अखदिष्टम्	अखदिष्ट
	अखदिषम्	अखदिष्व	अखदिष्म
प०	चखाद	चखदतुः	चखदुः
	चखदिथ	चखदथुः	चखद
	चखाद	चखदिव	चखदिम
आ०	खद्यात्	खद्यास्ताम्	खद्यासुः
	खद्याः	खद्यास्तम्	खद्यास्त
	खद्यासम्	खद्यास्व	खद्यास्म
श्व०	खदिता	खदितारौ	खदितारः
	खदितासि	खदितास्थः	खदितास्थ
	खदितास्मि	खदितास्वः	खदितास्मः
भ०	खदिष्यति	खदिष्यतः	खदिष्यन्ति
	खदिष्यसि	खदिष्यथः	खदिष्यथ
	खदिष्यामि	खदिष्यावः	खदिष्यामः
क्रि०	अखदिष्यत्	अखदिष्यताम्	अखदिष्यन्
	अखदिष्यः	अखदिष्यतम्	अखदिष्यत
	अखदिष्यम्	अखदिष्याव	अखदिष्याम

२१७. गद (गद्) व्यक्तायां वाचि।

व०	गदति	गदतः	गदन्ति
	गदसि	गदथः	गदथ
	गदामि	गदावः	गदामः
स०	गदेत्	गदेताम्	गदेयुः
	गदेः	गदेतम्	गदेत
	गदेयम्	गदेव	गदेम
प०	गदतु/गदतात्	गदताम्	गदन्तु
	गद/गदतात्	गदतम्	गदत
	गदानि	गदाव	गदाम
ह्य०	अगदत्	अगदताम्	अगदन्
	अगदः	अगदतम्	अगदत
	अगदम्	अगदाव	अगदाम
अ०	अगादीत्	अगादिष्टाम्	अगादिषुः
	अगादीः	अगादिष्टम्	अगादिष्ट
	अगादिषम्	अगादिष्व	अगादिष्म
		तथा	
	अगदीत्	अगदिष्टाम्	अगदिषुः
	अगदीः	अगदिष्टम्	अगदिष्ट
	अगदिषम्	अगदिष्व	अगदिष्म
प०	जगाद	जगदतुः	जगदुः
	जगदिथ	जगदथुः	जगद
	जगाद/जगद	जगदिव	जगदिम
आ०	गद्यात्	गद्यास्ताम्	गद्यासुः
	गद्याः	गद्यास्तम्	गद्यास्त
	गद्यासम्	गद्यास्व	गद्यास्म
श्व०	गदिता	गदितारौ	गदितारः
	गदितासि	गदितास्थः	गदितास्थ
	गदितास्मि	गदितास्वः	गदितास्मः
भ०	गदिष्यति	गदिष्यतः	गदिष्यन्ति
	गदिष्यसि	गदिष्यथः	गदिष्यथ
	गदिष्यामि	गदिष्यावः	गदिष्यामः
क्रि०	अगदिष्यत्	अगदिष्यताम्	अगदिष्यन्
	अगदिष्यः	अगदिष्यतम्	अगदिष्यत
	अगदिष्यम्	अगदिष्याव	अगदिष्याम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२९८. रद (रद्) विलेखने।

विलेखनमुत्पाटनम्।

व०	रदति	रदतः	रदन्ति
	रदसि	रदथः	रदथ
	रदामि	रदावः	रदामः
स०	रदेत्	रदेताम्	रदेयुः
	रदेः	रदेतम्	रदेत
	रदेयम्	रदेव	रदेम
प०	रदतु/रदतात्	रदताम्	रदन्तु
	रद/रदतात्	रदतम्	रदत
	रदानि	रदाव	रदाम
ह्य०	अरदत्	अरदताम्	अरदन्
	अरदः	अरदतम्	अरदत
	अरदम्	अरदाव	अरदाम
अ०	अरदीत्	अरदिष्टाम्	अरदिषुः
	अरदीः	अरदिष्टम्	अरदिष्ट
	अरदिषम्	अरदिष्व	अरदिष्म
		तथा	
	अरादीत्	अरादिष्टाम्	अरादिषुः
	अरादीः	अरादिष्टम्	अरादिष्ट
	अरादिषम्	अरादिष्व	अरादिष्म
प०	रराद/ररद	रेदतुः	रेदुः
	रेदिथ	रेदथुः	रेद
	रराद	ररद रेदिव	रेदिम
आ०	रद्यात्	रद्यास्ताम्	रद्यासुः
	रद्याः	रद्यास्तम्	रद्यास्त
	रद्यासम्	रद्यास्व	रद्यास्म
श्व०	रदिता	रदितारौ	रदितारः
	रदितासि	रदितास्थः	रदितास्थ
	रदितास्मि	रदितास्वः	रदितास्मः
भ०	रदिष्यति	रदिष्यतः	रदिष्यन्ति
	रदिष्यसि	रदिष्यथः	रदिष्यथ
	रदिष्यामि	रदिष्यावः	रदिष्यामः
क्रि०	अरदिष्यत्	अरदिष्यताम्	अरदिष्यन्
	अरदिष्यः	अरदिष्यतम्	अरदिष्यत
	अरदिष्यम्	अरदिष्याव	अरदिष्याम

२९९. णद (नद्) अव्यक्ते शब्दे। शब्दमात्रे केचित्।

व०	नदति	नदतः	नदन्ति
	नदसि	नदथः	नदथ
	नदामि	नदावः	नदामः
स०	नदेत्	नदेताम्	नदेयुः
	नदेः	नदेतम्	नदेत
	नदेयम्	नदेव	नदेम
प०	नदतु/नदतात्	नदताम्	नदन्तु
	नद/नदतात्	नदतम्	नदत
	नदानि	नदाव	नदाम
ह्य०	अनदत्	अनदताम्	अनदन्
	अनदः	अनदतम्	अनदत
	अनदम्	अनदाव	अनदाम
अ०	अनादीत्	अनादिष्टाम्	अनादिषुः
	अनादीः	अनादिष्टम्	अनादिष्ट
	अनादिषम्	अनादिष्व	अनादिष्म
		तथा	
	अनदीत्	अनदिष्टाम्	अनदिषुः
	अनदीः	अनदिष्टम्	अनदिष्ट
	अनदिषम्	अनदिष्व	अनदिष्म
प०	ननाद	नेदतुः	नेदुः
	नेदिथ	नेदथुः	नेद
	ननाद/ननद	ननद नेदिव	नेदिम
आ०	नद्यात्	नद्यास्ताम्	नद्यासुः
	नद्याः	नद्यास्तम्	नद्यास्त
	नद्यासम्	नद्यास्व	नद्यास्म
श्व०	नदिता	नदितारौ	नदितारः
	नदितासि	नदितास्थः	नदितास्थ
	नदितास्मि	नदितास्वः	नदितास्मः
भ०	नदिष्यति	नदिष्यतः	नदिष्यन्ति
	नदिष्यसि	नदिष्यथः	नदिष्यथ
	नदिष्यामि	नदिष्यावः	नदिष्यामः
क्रि०	अनदिष्यत्	अनदिष्यताम्	अनदिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अनदिष्यः	अनदिष्यतम्	अनदिष्यत
	अनदिष्यम्	अनदिष्याव	अनदिष्याम

३००. ञिक्ष्विदा (क्ष्विद्) अव्यक्ते शब्दे शब्दमात्रे केचित्।

व०	क्ष्वेदति	क्ष्वेदतः	क्ष्वेदन्ति
	क्ष्वेदसि	क्ष्वेदथः	क्ष्वेदथ
	क्ष्वेदामि	क्ष्वेदावः	क्ष्वेदामः
स०	क्ष्वेदेत्	क्ष्वेदेताम्	क्ष्वेदेयुः
	क्ष्वेदेः	क्ष्वेदेतम्	क्ष्वेदेत
	क्ष्वेदेयम्	क्ष्वेदेव	क्ष्वेदेम
प०	क्ष्वेदतु/क्ष्वेदतात्	क्ष्वेदताम्	क्ष्वेदन्तु
	क्ष्वेद/क्ष्वेदतात्	क्ष्वेदतम्	क्ष्वेदत
	क्ष्वेदानि	क्ष्वेदाव	क्ष्वेदाम
ह्य०	अक्ष्वेदत्	अक्ष्वेदताम्	अक्ष्वेदन्
	अक्ष्वेदः	अक्ष्वेदतम्	अक्ष्वेदत
	अक्ष्वेदम्	अक्ष्वेदाव	अक्ष्वेदाम
अ०	अक्ष्वेदीत्	अक्ष्वेदिष्टाम्	अक्ष्वेदिषुः
	अक्ष्वेदीः	अक्ष्वेदिष्टम्	अक्ष्वेदिष्ट
	अक्ष्वेदिषम्	अक्ष्वेदिष्व	अक्ष्वेदिष्म
प०	चिक्ष्वेद	चिक्ष्विदतुः	चिक्ष्विदुः
	चिक्ष्वेदिथ	चिक्ष्विदथुः	चिक्ष्विद
	चिक्ष्वेद	चिक्ष्विदिव	चिक्ष्विदिम
आ०	क्ष्विद्यात्	क्ष्विद्यास्ताम्	क्ष्विद्यासुः
	क्ष्विद्याः	क्ष्विद्यास्तम्	क्ष्विद्यास्त
	क्ष्विद्यासम्	क्ष्विद्यास्व	क्ष्विद्यास्म
श्व०	क्ष्वेदिता	क्ष्वेदितारौ	क्ष्वेदितारः
	क्ष्वेदितासि	क्ष्वेदितास्थः	क्ष्वेदितास्थ
	क्ष्वेदितास्मि	क्ष्वेदितास्वः	क्ष्वेदितास्मः
भ०	क्ष्वेदिष्यति	क्ष्वेदिष्यतः	क्ष्वेदिष्यन्ति
	क्ष्वेदिष्यसि	क्ष्वेदिष्यथः	क्ष्वेदिष्यथ
	क्ष्वेदिष्यामि	क्ष्वेदिष्यावः	क्ष्वेदिष्यामः
क्रि०	अक्ष्वेदिष्यत्	अक्ष्वेदिष्यताम्	अक्ष्वेदिष्यन्
	अक्ष्वेदिष्यः	अक्ष्वेदिष्यतम्	अक्ष्वेदिष्यत
	अक्ष्वेदिष्यम्	अक्ष्वेदिष्याव	अक्ष्वेदिष्याम

३०१. अर्द (अर्द्) गतियाचनयोः।

व०	अर्दति	अर्दतः	अर्दन्ति
	अर्दसि	अर्दथः	अर्दथ
	अर्दामि	अर्दावः	अर्दामः
स०	अर्देत्	अर्देताम्	अर्देयुः
	अर्देः	अर्देतम्	अर्देत
	अर्देयम्	अर्देव	अर्देम
प०	अर्दतु/अर्दतात्	अर्दताम्	अर्दन्तु
	अर्द/अर्दतात्	अर्दतम्	अर्दत
	अर्दानि	अर्दाव	अर्दाम
ह्य०	आर्दत्	आर्दताम्	आर्दन्
	आर्दः	आर्दतम्	आर्दत
	आर्दम्	आर्दाव	आर्दाम
अ०	आर्दीत्	आर्दिष्टाम्	आर्दिषुः
	आर्दीः	आर्दिष्टम्	आर्दिष्ट
	आर्दिषम्	आर्दिष्व	आर्दिष्म
प०	आनर्द	आनर्दतुः	आनर्दुः
	आनर्दिथ	आनर्दथुः	आनर्द
	आनर्द	आनर्दिव	आनर्दिम
आ०	अर्द्यात्	अर्द्यास्ताम्	अर्द्यासुः
	अर्द्याः	अर्द्यास्तम्	अर्द्यास्त
	अर्द्यासम्	अर्द्यास्व	अर्द्यास्म
श्व०	अर्दिता	अर्दितारौ	अर्दितारः
	अर्दितासि	अर्दितास्थः	अर्दितास्थ
	अर्दितास्मि	अर्दितास्वः	अर्दितास्मः
भ०	अर्दिष्यति	अर्दिष्यतः	अर्दिष्यन्ति
	अर्दिष्यसि	अर्दिष्यथः	अर्दिष्यथ
	अर्दिष्यामि	अर्दिष्यावः	अर्दिष्यामः
क्रि०	आर्दिष्यत्	आर्दिष्यताम्	आर्दिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	आर्दिष्यः	आर्दिष्यतम्	आर्दिष्यत
	आर्दिष्यम्	आर्दिष्याव	आर्दिष्याम

३०२. नर्द (नर्द्) शब्दे।

व०	नर्दति	नर्दतः	नर्दन्ति
स०	नर्देत्	नर्देताम्	नर्देयुः
प०	नर्दतु/नर्दतात्	नर्दताम्	नर्दन्तु
ह्य०	अनर्दत्	अनर्दताम्	अनर्दन्
अ०	अनर्दीत्	अनर्दिष्टाम्	अनर्दिषुः
प०	ननर्द	ननर्दतुः	ननर्दुः
आ०	नर्द्यात्	नर्द्यास्ताम्	नर्द्यासुः
श्व०	नर्दिता	नर्दितारौ	नर्दितारः
भ०	नर्दिष्यति	नर्दिष्यतः	नर्दिष्यन्ति
क्रि०	अनर्दिष्यत्	अनर्दिष्यताम्	अनर्दिष्यन्

३०३ णर्द (नर्द्) शब्दे।

नर्द् (३०२) वद्रूपाणि पृथक्पाठस्तु णोपदेशार्थः; तेन प्रणर्दति।

३०४. गर्द (गर्द्) शब्दे।

व०	गर्दति	गर्दतः	गर्दन्ति
स०	गर्देत्	गर्देताम्	गर्देयुः
प०	गर्दतु/गर्दतात्	गर्दताम्	गर्दन्तु
ह्य०	अगर्दत्	अगर्दताम्	अगर्दन्
अ०	अगर्दीत्	अगर्दिष्टाम्	अगर्दिषुः
प०	जगर्द	जगर्दतुः	जगर्दुः
आ०	गर्द्यात्	गर्द्यास्ताम्	गर्द्यासुः
श्व०	गर्दिता	गर्दितारौ	गर्दितारः
भ०	गर्दिष्यति	गर्दिष्यतः	गर्दिष्यन्ति
क्रि०	अगर्दिष्यत्	अगर्दिष्यताम्	अगर्दिष्यन्

३०५. तर्द (तर्द्) हिंसायाम्।

व०	तर्दति	तर्दतः	तर्दन्ति
स०	तर्देत्	तर्देताम्	तर्देयुः
प०	तर्दतु/तर्दतात्	तर्दताम्	तर्दन्तु
ह्य०	अतर्दत्	अतर्दताम्	अतर्दन्
अ०	अतर्दीत्	अतर्दिष्टाम्	अतर्दिषुः
प०	ततर्द	ततर्दतुः	ततर्दुः
आ०	तर्द्यात्	तर्द्यास्ताम्	तर्द्यासुः
श्व०	तर्दिता	तर्दितारौ	तर्दितारः
भ०	तर्दिष्यति	तर्दिष्यतः	तर्दिष्यन्ति
क्रि०	अतर्दिष्यत्	अतर्दिष्यताम्	अतर्दिष्यन्

३०६. कर्द (कर्द्) कुत्सिते शब्दे।

कौक्षे इत्यर्थः।

व०	कर्दति	कर्दतः	कर्दन्ति
स०	कर्देत्	कर्देताम्	कर्देयुः
प०	कर्दतु/कर्दतात्	कर्दताम्	कर्दन्तु
ह्य०	अकर्दत्	अकर्दताम्	अकर्दन्
अ०	अकर्दीत्	अकर्दिष्टाम्	अकर्दिषुः
प०	चकर्द	चकर्दतुः	चकर्दुः
आ०	कर्द्यात्	कर्द्यास्ताम्	कर्द्यासुः
श्व०	कर्दिता	कर्दितारौ	कर्दितारः
भ०	कर्दिष्यति	कर्दिष्यतः	कर्दिष्यन्ति
क्रि०	अकर्दिष्यत्	अकर्दिष्यताम्	अकर्दिष्यन्

३०७. खर्द (खर्द्) दशने।[1]

व०	खर्दति	खर्दतः	खर्दन्ति
स०	खर्देत्	खर्देताम्	खर्देयुः
प०	खर्दतु/खर्दतात्	खर्दताम्	खर्दन्तु
ह्य०	अखर्दत्	अखर्दताम्	अखर्दन्
अ०	अखर्दीत्	अखर्दिष्टाम्	अखर्दिषुः
प०	चखर्द	चखर्दतुः	चखर्दुः
आ०	खर्द्यात्	खर्द्यास्ताम्	खर्द्यासुः
श्व०	खर्दिता	खर्दितारौ	खर्दितारः
भ०	खर्दिष्यति	खर्दिष्यतः	खर्दिष्यन्ति

१. दशनमिह दन्दशूककर्तृकं दन्तकर्म। स्वभावाच्च धातुः साधनप्रधानप्रयोगसमवायी। पूर्वे तु खर्ददन्दशूके इति पठन्ति व्याचक्षते च दन्दशनशीलो दन्दशूक उच्यतेऽनेन च तद्विषया क्रिया लक्ष्यते क्रियार्थत्वाद्धातोः। दन्दशम इति यङन्तनिर्देशेऽपि तद्विषयाक्रिया प्रतीयते। किन्तुसाधननिर्देशः साधनप्रधान—प्रयोगसमवायित्वज्ञापनार्थः।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रि०	अखर्दिष्यत्	अखर्दिष्यताम्	अखर्दिष्यन्

३०८. अदु (अन्द्) बन्धने।

व०	अन्दति	अन्दतः	अन्दन्ति
स०	अन्देत्	अन्देताम्	अन्देयुः
प०	अन्दतु/अन्दतात्	अन्दताम्	अन्दन्तु
ह्य०	आन्दत्	आन्दताम्	आन्दन्
अ०	आन्दीत्	आन्दिष्टाम्	आन्दिषुः
प०	आनन्द	आनन्दतुः	आनन्दुः
आ०	अन्द्यात्	अन्द्यास्ताम्	अन्द्यासुः
श्व०	अन्दिता	अन्दितारौ	अन्दितारः
भ०	अन्दिष्यति	अन्दिष्यतः	अन्दिष्यन्ति
क्रि०	आन्दिष्यत्	आन्दिष्यताम्	आन्दिष्यन्

३०९. इदु (इन्द) परमैश्वर्ये।[१]

व०	इन्दति	इन्दतः	इन्दन्ति
	इन्दसि	इन्दथः	इन्दथ
	इन्दामि	इन्दावः	इन्दामः
स०	इन्देत्	इन्देताम्	इन्देयुः
	इन्देः	इन्देतम्	इन्देत
	इन्देयम्	इन्देव	इन्देम
प०	इन्दतु/इन्दतात्	इन्दताम्	इदन्तु
	इन्द/इन्दतात्	इन्दतम्	इदत
	इन्दानि	इन्दाव	इन्दाम
ह्य०	ऐन्दत्	ऐन्दताम्	ऐन्दन्
	ऐन्दः	ऐन्दतम्	ऐन्दत
	ऐन्दम्	ऐन्दाव	ऐन्दाम
अ०	ऐन्दीत्	ऐन्दिष्टाम्	ऐन्दिषुः
	ऐन्दीः	ऐन्दिष्टम्	ऐन्दिष्ट
	ऐन्दिषम्	ऐन्दिष्व	ऐन्दिष्म
प०	इन्दाञ्चकार	इन्दाञ्चक्रतुः	इन्दाञ्चक्रुः
	इन्दाञ्चकर्थः	इन्दाञ्चक्रथुः	इन्दाञ्चक्र
	इन्दाञ्चकार/इन्दाञ्चकर	इन्दाञ्चकृव	इन्दाञ्चकृम
	इन्दाम्बभूव/इन्दामास		
आ०	इन्द्यात्	इन्द्यास्ताम्	इन्द्यासुः
	इन्द्याः	इन्द्यास्तम्	इन्द्यास्त
	इन्द्यासम्	इन्द्यास्व	इन्द्यास्म
श्व०	इन्दिता	इन्दितारौ	इन्दितारः
	इन्दितासि	इन्दितास्थः	इन्दितास्थ
	इन्दितास्मि	इन्दितास्वः	इन्दितास्मः
भ०	इन्दिष्यति	इन्दिष्यतः	इन्दिष्यन्ति
	इन्दिष्यसि	इन्दिष्यथः	इन्दिष्यथ
	इन्दिष्यामि	इन्दिष्यावः	इन्दिष्यामः
क्रि०	ऐन्दिष्यत्	ऐन्दिष्यताम्	ऐन्दिष्यन्
	ऐन्दिष्यः	ऐन्दिष्यतम्	ऐन्दिष्यत
	ऐन्दिष्यम्	ऐन्दिष्याव	ऐन्दिष्याम

३१०. विदु (विन्द्) अवयवे।[२]

व०	विन्दति	विन्दतः	विन्दन्ति
	विन्दसि	विन्दथः	विन्दथ
	विन्दामि	विन्दावः	विन्दामः
स०	विन्देत्	विन्देताम्	विन्देयुः
	विन्देः	विन्देतम्	विन्देत
	विन्देयम्	विन्देव	विन्देम
प०	विन्दतु/विन्दतात्	विन्दताम्	विन्दन्तु
	विन्द/विन्दतात्	विन्दतम्	विन्दत
	विन्दानि	विन्दाव	विन्दाम
ह्य०	अविन्दत्	अविन्दताम्	अविन्दन्
	अविन्दः	अविन्दतम्	अविन्दत
	अविन्दम्	अविन्दाव	अविन्दाम
अ०	अविन्दीत्	अविन्दिष्टाम्	अविन्दिषुः
	अविन्दीः	अविन्दिष्टम्	अविन्दिष्ट
	अविन्दिषम्	अविन्दिष्व	अविन्दिष्म
प०	विविन्द	विविन्दतुः	विविन्दुः
	विविन्दिथ	विविन्दथुः	विविन्द
	विविन्द	विविन्दिव	विविन्दिम

१. परमैश्वर्य परमेशनक्रिया।

२. अवयव एकदेशः। अनेन स्वगता क्रिया लक्ष्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	विन्द्यात्	विन्द्यास्ताम्	विन्द्यासुः
	विन्द्याः	विन्द्यास्तम्	विन्द्यास्त
	विन्द्यासम्	विन्द्यास्व	विन्द्यास्म
श्व०	विन्दिता	विन्दितारौ	विन्दितारः
	विन्दितासि	विन्दितास्थः	विन्दितास्थ
	विन्दितास्मि	विन्दितास्वः	विन्दितास्मः
भ०	विन्दिष्यति	विन्दिष्यतः	विन्दिष्यन्ति
	विन्दिष्यसि	विन्दिष्यथः	विन्दिष्यथ
	विन्दिष्यामि	विन्दिष्यावः	विन्दिष्यामः
क्रि०	अविन्दिष्यत्	अविन्दिष्यताम्	अविन्दिष्यन्
	अविन्दिष्यः	अविन्दिष्यतम्	अविन्दिष्यत
	अविन्दिष्यम्	अविन्दिष्याव	अविन्दिष्याम

३११. णिदु (निन्द्) कुत्सायाम्।

व०	निन्दति	निन्दतः	निन्दन्ति
स०	निन्देत्	निन्देताम्	निन्देयुः
प०	निन्दतु/निन्दतात्	निन्दताम्	निन्दन्तु
ह्य०	अनिन्दत्	अनिन्दताम्	अनिन्दन्
अ०	अनिन्दीत्	अनिन्दिष्टाम्	अनिन्दिषुः
प०	निनिन्द	निनिन्दतुः	निनिन्दुः
आ०	निन्द्यात्	निन्द्यास्ताम्	निन्द्यासुः
श्व०	निन्दिता	निन्दितारौ	निन्दितारः
भ०	निन्दिष्यति	निन्दिष्यतः	निन्दिष्यन्ति
क्रि०	अनिन्दिष्यत्	अनिन्दिष्यताम्	अनिन्दिष्यन्

३१२. टुणदु (नन्द) समृद्धौ।

व०	नन्दति	नन्दतः	नन्दन्ति
स०	नन्देत्	नन्देताम्	नन्देयुः
प०	नन्दतु/नन्दतात्	नन्दताम्	नन्दन्तु
ह्य०	अनन्दत्	अनन्दताम्	अनन्दन्
अ०	अनन्दीत्	अनन्दिष्टाम्	अनन्दिषुः
प०	ननन्द	ननन्दतुः	ननन्दुः
आ०	नन्द्यात्	नन्द्यास्ताम्	नन्द्यासुः
श्व०	नन्दिता	नन्दितारौ	नन्दितारः
भ०	नन्दिष्यति	नन्दिष्यतः	नन्दिष्यन्ति
क्रि०	अनन्दिष्यत्	अनन्दिष्यताम्	अनन्दिष्यन्

३१३. चदु (चन्द्) दीप्त्याह्लादयोः[1]

व०	चन्दति	चन्दतः	चन्दन्ति
स०	चन्देत्	चन्देताम्	चन्देयुः
प०	चन्दतु/चन्दतात्	चन्दताम्	चन्दन्तु
ह्य०	अचन्दत्	अचन्दताम्	अचन्दन्
अ०	अचन्दीत्	अचन्दिष्टाम्	अचन्दिषुः
प०	चचन्द	चचन्दतुः	चचन्दुः
आ०	चन्द्यात्	चन्द्यास्ताम्	चन्द्यासुः
श्व०	चन्दिता	चन्दितारौ	चन्दितारः
भ०	चन्दिष्यति	चन्दिष्यतः	चन्दिष्यन्ति
क्रि०	अचन्दिष्यत्	अचन्दिष्यताम्	अचन्दिष्यन्

३१४. त्रदु (त्रन्द्) चेष्टायाम्।

व०	त्रन्दति	त्रन्दतः	त्रन्दन्ति
स०	त्रन्देत्	त्रन्देताम्	त्रन्देयुः
प०	त्रन्दतु/त्रन्दतात्	त्रन्दताम्	त्रन्दन्तु
ह्य०	अत्रन्दत्	अत्रन्दताम्	अत्रन्दन्
अ०	अत्रन्दीत्	अत्रन्दिष्टाम्	अत्रन्दिषुः
प०	तत्रन्द	तत्रन्दतुः	तत्रन्दुः
आ०	त्रन्द्यात्	त्रन्द्यास्ताम्	त्रन्द्यासुः
श्व०	त्रन्दिता	त्रन्दितारौ	त्रन्दितारः
भ०	त्रन्दिष्यति	त्रन्दिष्यतः	त्रन्दिष्यन्ति
क्रि०	अत्रन्दिष्यत्	अत्रन्दिष्यताम्	अत्रन्दिष्यन्

३१५. कदु (कन्द्) रोदनाह्वानयोः।

व०	कन्दति	कन्दतः	कन्दन्ति
स०	कन्देत्	कन्देताम्	कन्देयुः
प०	कन्दतु/कन्दतात्	कन्दताम्	कन्दन्तु
ह्य०	अकन्दत्	अकन्दताम्	अकन्दन्
अ०	अकन्दीत्	अकन्दिष्टाम्	अकन्दिषुः

१. आह्लाद आह्लादनमानन्दोत्पादनमित्यर्थः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	चकन्द	चकन्दतुः	चकन्दुः
आ०	कन्द्यात्	कन्द्यास्ताम्	कन्द्यासुः
श्व०	कन्दिता	कन्दितारौ	कन्दितारः
भ०	कन्दिष्यति	कन्दिष्यतः	कन्दिष्यन्ति
क्रि०	अकन्दिष्यत्	अकन्दिष्यताम्	अकन्दिष्यन्

३१६. क्रदु (क्रन्द्) रोदनाह्वानयोः।

व०	क्रन्दति	क्रन्दतः	क्रन्दन्ति
स०	क्रन्देत्	क्रन्देताम्	क्रन्देयुः
प०	क्रन्दतु/क्रन्दतात्	क्रन्दताम्	क्रन्दन्तु
ह्य०	अक्रन्दत्	अक्रन्दताम्	अक्रन्दन्
अ०	अक्रन्दीत्	अक्रन्दिष्टाम्	अक्रन्दिषुः
प०	चक्रन्द	चक्रन्दतुः	चक्रन्दुः
आ०	क्रन्द्यात्	क्रन्द्यास्ताम्	क्रन्द्यासुः
श्व०	क्रन्दिता	क्रन्दितारौ	क्रन्दितारः
भ०	क्रन्दिष्यति	क्रन्दिष्यतः	क्रन्दिष्यन्ति
क्रि०	अक्रन्दिष्यत्	अक्रन्दिष्यताम्	अक्रन्दिष्यन्

३१७. क्लदु (क्लन्द्) रोदनाह्वानयोः।

व०	क्लन्दति	क्लन्दतः	क्लन्दन्ति
स०	क्लन्देत्	क्लन्देताम्	क्लन्देयुः
प०	क्लन्दतु/क्लन्दतात्	क्लन्दताम्	क्लन्दन्तु
ह्य०	अक्लन्दत्	अक्लन्दताम्	अक्लन्दन्
अ०	अक्लन्दीत्	अक्लन्दिष्टाम्	अक्लन्दिषुः
प०	चक्लन्द	चक्लन्दतुः	चक्लन्दुः
आ०	क्लन्द्यात्	क्लन्द्यास्ताम्	क्लन्द्यासुः
श्व०	क्लन्दिता	क्लन्दितारौ	क्लन्दितारः
भ०	क्लन्दिष्यति	क्लन्दिष्यतः	क्लन्दिष्यन्ति
क्रि०	अक्लन्दिष्यत्	अक्लन्दिष्यताम्	अक्लन्दिष्यन्

३१८. क्लिदु (क्लिन्द्) परिदेवने।[1]

व०	क्लिन्दति	क्लिन्दतः	क्लिन्दन्ति
	क्लिन्दसि	क्लिन्दथः	क्लिन्दथ
	क्लिन्दामि	क्लिन्दावः	क्लिन्दामः
स०	क्लिन्देत्	क्लिन्देताम्	क्लिन्देयुः
	क्लिन्देः	क्लिन्देतम्	क्लिन्देत
	क्लिन्देयम्	क्लिन्देव	क्लिन्देम
प०	क्लिन्दतु/क्लिन्दतात्	क्लिन्दताम्	क्लिन्दन्तु
	क्लिन्द/क्लिन्दतात्	क्लिन्दतम्	क्लिन्दत
	क्लिन्दानि	क्लिन्दाव	क्लिन्दाम
ह्य०	अक्लिन्दत्	अक्लिन्दताम्	अक्लिन्दन्
	अक्लिन्दः	अक्लिन्दतम्	अक्लिन्दत
	अक्लिन्दम्	अक्लिन्दाव	अक्लिन्दाम
अ०	अक्लिन्दीत्	अक्लिन्दिष्टाम्	अक्लिन्दिषुः
	अक्लिन्दीः	अक्लिन्दिष्टम्	अक्लिन्दिष्ट
	अक्लिन्दिषम्	अक्लिन्दिष्व	अक्लिन्दिष्म
प०	चिक्लिन्द	चिक्लिन्दतुः	चिक्लिन्दुः
	चिक्लिन्दिथ	चिक्लिन्दथुः	चिक्लिन्द
	चिक्लिन्द	चिक्लिन्दिव	चिक्लिन्दिम
आ०	क्लिन्द्यात्	क्लिन्द्यास्ताम्	क्लिन्द्यासुः
	क्लिन्द्याः	क्लिन्द्यास्तम्	क्लिन्द्यास्त
	क्लिन्द्यासम्	क्लिन्द्यास्व	क्लिन्द्यास्म
श्व०	क्लिन्दिता	क्लिन्दितारौ	क्लिन्दितारः
	क्लिन्दितासि	क्लिन्दितास्थः	क्लिन्दितास्थ
	क्लिन्दितास्मि	क्लिन्दितास्वः	क्लिन्दितास्मः
भ०	क्लिन्दिष्यति	क्लिन्दिष्यतः	क्लिन्दिष्यन्ति
	क्लिन्दिष्यसि	क्लिन्दिष्यथः	क्लिन्दिष्यथ
	क्लिन्दिष्यामि	क्लिन्दिष्यावः	क्लिन्दिष्यामः
क्रि०	अक्लिन्दिष्यत्	अक्लिन्दिष्यताम्	अक्लिन्दिष्यन्
	अक्लिन्दिष्यः	अक्लिन्दिष्यतम्	अक्लिन्दिष्यत
	अक्लिन्दिष्यम्	अक्लिन्दिष्याव	अक्लिन्दिष्याम

३१९. स्कन्दृं (स्कन्द्) गतिशोषणयोः।

व०	स्कन्दति	स्कन्दतः	स्कन्दन्ति
	स्कन्दसि	स्कन्दथः	स्कन्दथ
	स्कन्दामि	स्कन्दावः	स्कन्दामः

१. परिदेवनं शोचनम्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स०	स्कन्देत्	स्कन्देताम्	स्कन्देयुः
	स्कन्देः	स्कन्देतम्	स्कन्देत
	स्कन्देयम्	स्कन्देव	स्कन्देम
प०	स्कन्दतु/स्कन्दतात्	स्कन्दताम्	स्कन्दन्तु
	स्कन्द/स्कन्दतात्	स्कन्दतम्	स्कन्दत
	स्कन्दानि	स्कन्दाव	स्कन्दाम
ह्य०	अस्कन्दत्	अस्कन्दताम्	अस्कन्दन्
	अस्कन्दः	अस्कन्दतम्	अस्कन्दत
	अस्कन्दम्	अस्कन्दाव	अस्कन्दाम
अ०	अस्कदत्	अस्कदताम्	अस्कदन
	अस्कदः	अस्कदतम्	अस्कदत
	अस्कदम्	अस्कदाव	अस्कदाम

तथा

	अस्कान्त्सीत्	अस्कान्ताम्	अस्कान्त्सुः
	अस्कान्त्सीः	अस्कान्तम	अस्कान्त
	अस्कान्त्सम्	अस्कान्त्स्व	अस्कान्त्स्म
प०	चस्कन्द	चस्कन्दतुः	चस्कन्दुः
	चस्कन्दिथ	चस्कन्दथुः	चस्कन्द
	चस्कन्त्थ/चस्कन्द	चस्कन्दिव	चस्कन्दिम
आ०	स्कद्यात्	स्कद्यास्ताम्	स्कद्यासुः
	स्कद्याः	स्कद्यास्तम्	स्कद्यास्त
	स्कद्यासम्	स्कद्यास्व	स्कद्यास्म
श्व०	स्कन्ता	स्कन्तारौ	स्कन्तारः
	स्कन्तासि	स्कन्तास्थः	स्कन्तास्थ
	स्कन्तास्मि	स्कन्तास्वः	स्कन्तास्मः
भ०	स्कन्त्स्यति	स्कन्त्स्यतः	स्कन्त्स्यन्ति
	स्कन्त्स्यसि	स्कन्त्स्यथः	स्कन्त्स्यथ
	स्कन्त्स्यामि	स्कन्त्स्यावः	स्कन्त्स्यामः
क्रि०	अस्कन्त्स्यत्	अस्कन्त्स्यताम्	अस्कन्त्स्यन्
	अस्कन्त्स्यः	अस्कन्त्स्यतम्	अस्कन्त्स्यत
	अस्कन्त्स्यम्	अस्कन्त्स्याव	अस्कन्त्स्याम

अथ धान्तास्त्रयः।

३२०. षिधू (सिध्) गत्याम्।

व०	सेधति	सेधतः	सेधन्ति
	सेधसि	सेधथः	सेधथ
	सेधामि	सेधावः	सेधामः
स०	सेधेत्	सेधेताम्	सेधेयुः
	सेधेः	सेधेतम्	सेधेत
	सेधेयम्	सेधेव	सेधेम
प०	सेधतु/सेधतात्	सेधताम्	सेधन्तु
	सेध/सेधतात्	सेधतम्	सेधत
	सेधानि	सेधाव	सेधाम
ह्य०	असेधत्	असेधताम्	असेधन्
	असेधः	असेधतम्	असेधत
	असेधम्	असेधाव	असेधाम
अ०	असेधीत्	असेधिष्टाम्	असेधिषुः
	असेधीः	असेधिष्टम्	असेधिष्ट
	असेधिषम्	असेधिष्व	असेधिष्म
प०	सिषेध	सिषिधतुः	सिषधुः
	सिषेधिथ	सिषिधथुः	सिषिध
	सिषेध	सिषिधिव	सिषिधिम
आ०	सिध्यात्	सिध्यास्ताम्	सिध्यासुः
	सिध्याः	सिध्यास्तम्	सिध्यास्त
	सिध्यासम्	सिध्यास्व	सिध्यास्म
श्व०	सेधिता	सेधितारौ	सेधितारः
	सेधितासि	सेधितास्थः	सेधितास्थ
	सेधितास्मि	सेधितास्विः	सेधितास्मः
भ०	सेधिष्यति	सेधिष्यतः	सेधिष्यन्ति
	सेधिष्यसि	सेधिष्यथः	सेधिष्यथ
	सेधिष्यामि	सेधिष्यावः	सेधिष्यामः
क्रि०	असेधिष्यत्	असेधिष्यताम्	असेधिष्यन्
	असेधिष्यः	असेधिष्यतम्	असेधिष्यत
	असेधिष्यम्	असेधिष्याव	असेधिष्याम

३२१. षिधौ (सिध्) शास्त्रमाङ्गल्ययोः।[१]

१. शास्त्रं शास्त्रविषयं शासनम्, माङ्गल्यं मङ्गलविषया क्रिया। अनयोरेवार्थयोरयमौदित्। अर्थान्तरे पुनरूदित्पूर्वक एव अन्यथा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व०	सेधति	सेधतः	सेधन्ति
	सेधसि	सेधथः	सेधथ
	सेधामि	सेधावः	सेधामः
स०	सेधेत्	सेधेताम्	सेधेयुः
	सेधेः	सेधेतम्	सेधेत
	सेधेयम्	सेधेव	सेधेम
प०	सेधतु/सेधतात्	सेधताम्	सेधन्तु
	सेध/सेधतात्	सेधतम्	सेधत
	सेधानि	सेधाव	सेधाम
ह्य०	असेधत्	असेधताम्	असेधन्
	असेधः	असेधतम्	असेधत
	असेधम्	असेधाव	असेधाम
अ०	असेधीत्	असेधिष्टाम्	असेधिषुः
	असेधीः	असेधिष्टम्	असेधिष्ट
	असेधिषम्	असेधिष्व	असेधिष्म
		तथा	
	असैत्सीत्	असैद्धाम्	असैत्सुः
	असैत्सीः	असैद्धम्	असैद्ध
	असैत्स्म्	असैत्स्व	असैत्स्म
प०	सिषेध	सिषिधतुः	सिषिधुः
	सिषेधिथ	सिषिधथुः	सिषिध
	सिषेध	सिषिधिव	सिषिधिम
आ०	सिध्यात्	सिध्यास्ताम्	सिध्यासुः
	सिध्याः	सिध्यास्तम्	सिध्यास्त
	सिध्यासम्	सिध्यास्व	सिध्यास्म
श्व०	सेधिता	सेधितारौ	सेधितारः
	सेधितासि	सेधितास्थः	सेधितास्थ
	सेधितास्मि	सेधितास्वः	सेधितास्मः
		तथा	
	सेद्धा	सेद्धारौ	सेद्धारः
	सेद्धासि	सेद्धास्थः	सेद्धास्थ
	सेद्धास्मि	सेद्धास्वः	सेद्धास्मः
भ०	सेधिष्यति	सेधिष्यतः	सेधिष्यन्ति
	सेधिष्यसि	सेधिष्यथः	सेधिष्यथ
	सेधिष्यामि	सेधिष्यावः	सेधिष्यामः
		तथा	
	सेत्स्यति	सेत्स्यतः	सेत्स्यन्ति
	सेत्स्यसि	सेत्स्यथः	सेत्स्यथ
	सेत्स्यामि	सेत्स्यावः	सेत्स्यामः
क्रि०	असेधिष्यत्	असेधिष्यताम्	असेधिष्यन्
	असेधिष्यः	असेधिष्यतम्	असेधिष्यत
	असेधिष्यम्	असेधिष्याव	असेधिष्याम
		तथा	
	असेत्स्यत्	असेत्स्यताम्	असेत्स्यन्
	असेत्स्यः	असेत्स्यतम्	असेत्स्यत
	असेत्स्यम्	असेत्स्याव	असेत्स्याम

३२२. शुन्ध (शुन्ध।) शुद्धौ।

व०	शुन्धति	शुन्धतः	शुन्धन्ति
	शुन्धसि	शुन्धथः	शुन्धथ
	शुन्धामि	शुन्धावः	शुन्धामः
स०	शुन्धेत्	शुन्धेताम्	शुन्धेयुः
	शुन्धेः	शुन्धेतम्	शुन्धेत
	शुन्धेयम्	शुन्धेव	शुन्धेम
प०	शुन्धतु/शुन्धतात्	शुन्धताम्	शुन्धन्तु
	शुन्ध/शुन्धतात्	शुन्धतम्	शुन्धत
	शुन्धानि	शुन्धाव	शुन्धाम
ह्य०	अशुन्धत्	अशुन्धताम्	अशुन्धन्
	अशुन्धः	अशुन्धतम्	अशुन्धत
	अशुन्धम्	अशुन्धाव	अशुन्धाम
अ०	अशुन्धीत्	अशुन्धिष्टाम्	अशुन्धिषुः
	अशुन्धीः	अशुन्धिष्टम्	अशुन्धिष्ट
	अशुन्धिषम्	अशुन्धिष्व	अशुन्धिष्म
प०	शुशुन्ध	शुशुन्धतुः	शुशुन्धुः
	शुशुन्धिथ	शुशुन्धथुः	शुशुन्ध
	शुशुन्ध	शशुन्धिव	शुशुन्धिम
आ०	शुध्यात्	शुध्यास्ताम्	शुध्यासुः

तत्पाठोऽनर्थकः स्यात्। अर्थान्तरेऽपि अनेनैव इड्विकल्पस्य सर्वत्रैव सिद्धत्वात्।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	शुध्याः	शुध्यास्तम्	शुध्यास्त
	शुध्यासम्	शुध्यास्व	शुध्यास्म
श्व०	शुन्धिता	शुन्धितारौ	शुन्धितारः
	शुन्धितासि	शुन्धितास्थः	शुन्धितास्थ
	शुन्धितास्मि	शुन्धितास्वः	शुन्धितास्मः
भ०	शुन्धिष्यति	शुन्धिष्यतः	शुन्धिष्यन्ति
	शुन्धिष्यसि	शुन्धिष्यथः	शुन्धिष्यथ
	शुन्धिष्यामि	शुन्धिष्यावः	शुन्धिष्यामः
क्रि०	अशुन्धिष्यत्	अशुन्धिष्यताम्	अशुन्धिष्यन्
	अशुन्धिष्यः	अशुन्धिष्यतम्	अशुन्धिष्यत
	अशुन्धिष्यम्	अशुन्धिष्याव	अशुन्धिष्याम

अथ नान्ता नव सेटश्च।

३२३. स्तन (स्तन्) शब्दे।

व०	स्तनति	स्तनतः	स्तनन्ति
	स्तनसि	स्तनथः	स्तनथ
	स्तनामि	स्तनावः	स्तनामः
स०	स्तनेत्	स्तनेताम्	स्तनेयुः
	स्तनेः	स्तनेतम्	स्तनेत
	स्तनेयम्	स्तनेव	स्तनेम
प०	स्तनतु/स्तनतात्	स्तनताम्	स्तनन्तु
	स्तन/स्तनतात्	स्तनतम्	स्तनत
	स्तनानि	स्तनाव	स्तनाम
ह्य०	अस्तनत्	अस्तनताम्	अस्तनन्
	अस्तनः	अस्तनतम्	अस्तनत
	अस्तनतम्	अस्तनाव	अस्तनाम
अ०	अस्तानीत्	अस्तानिष्टाम्	अस्तानिषुः
	अस्तानीः	अस्तानिष्टम्	अस्तानिष्ट
	अस्तानिषम्	अस्तानिष्व	अस्तानिष्म
		तथा	
	अस्तनीत्	अस्तनिष्टाम्	अस्तनिषुः
	अस्तनीः	अस्तनिष्टम्	अस्तनिष्ट
	अस्तनिषम्	अस्तनिष्व	अस्तनिष्म
प०	तस्तान	तस्तनतुः	तस्तनुः
	तस्तनिथ	तस्तनथुः	तस्तन
	तस्तान/तस्तन	तस्तनिव	तस्तनिम
आ०	स्तन्यात्	स्तन्यास्ताम्	स्तन्यासुः
	स्तन्याः	स्तन्यास्तम्	स्तन्यास्त
	स्तन्यासम्	स्तन्यास्व	स्तन्यास्म
श्व०	स्तनिता	स्तनितारौ	स्तनितारः
	स्तनितासि	स्तनितास्थः	स्तनितास्थ
	स्तनितास्मि	स्तनितास्वः	स्तनितास्मः
भ०	स्तनिष्यति	स्तनिष्यतः	स्तनिष्यन्ति
	स्तनिष्यसि	स्तनिष्यथः	स्तनिष्यथ
	स्तनिष्यामि	स्तनिष्यावः	स्तनिष्यामः
क्रि०	अस्तनिष्यत्	अस्तनिष्यताम्	अस्तनिष्यन्
	अस्तनिष्यः	अस्तनिष्यतम्	अस्तनिष्यत
	अस्तनिष्यम्	अस्तनिष्याव	अस्तनिष्याम

३२४. धन (धन्) शब्दे।

व०	धनति	धनतः	धनन्ति
स०	धनेत्	धनेताम्	धनेयुः
प०	धनतु/धनतात्	धनताम्	धनन्तु
ह्य०	अधनत्	अधनताम्	अधनन्
अ०	अधानीत्	अधानिष्टाम्	अधानिषुः
		तथा	
	अधनीत्	अधनिष्टाम्	अधनिषुः
प०	दधान	दधनतुः	दधनुः
आ०	धन्यात्	धन्यास्ताम्	धन्यासुः
श्व०	धनिता	धनितारौ	धनितारः
भ०	धनिष्यति	धनिष्यतः	धनिष्यन्ति
क्रि०	अधनिष्यत्	अधनिष्यताम्	अधनिष्यन्

३२५. ध्वन (ध्वन्) शब्दे।

व०	ध्वनति	ध्वनतः	ध्वनन्ति
स०	ध्वनेत्	ध्वनेताम्	ध्वनेयुः
प०	ध्वनतु/ध्वनतात्	ध्वनताम्	ध्वनन्तु
ह्य०	अध्वनत्	अध्वनताम्	अध्वनन्
अ०	अध्वानीत्	अध्वानिष्टाम्	अध्वानिषुः
		तथा	
	अध्वनीत्	अध्वनिष्टाम्	अध्वनिषुः
प०	दध्वान	दध्वनतुः	दध्वनुः
आ०	ध्वन्यात्	ध्वन्यास्ताम्	ध्वन्यासुः
श्व०	ध्वनिता	ध्वनितारौ	ध्वनितारः
भ०	ध्वनिष्यति	ध्वनिष्यतः	ध्वनिष्यन्ति
क्रि०	अध्वनिष्यत्	अध्वनिष्यताम्	अध्वनिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३२६. चन (चन्) शब्दे।

व०	चनति	चनतः	चनन्ति
स०	चनेत्	चनेताम्	चनेयुः
प०	चनतु/चनतात्	चनताम्	चनन्तु
ह्य०	अचनत्	अचनताम्	अचनन्
अ०	अचानीत्	अचानिष्टाम्	अचानिषुः
		तथा	
	अचनीत्	अचनिष्टाम्	अचनिषुः
प०	चचान	चेनतुः	चेनुः
आ०	चन्यात्	चन्यास्ताम्	चन्यासुः
श्व०	चनिता	चनितारौ	चनितारः
भ०	चनिष्यति	चनिष्यतः	चनिष्यन्ति
क्रि०	अचनिष्यत्	अचनिष्यताम्	अचनिष्यन्

३२७. स्वन (स्वन्) शब्दे।

व०	स्वनति	स्वनतः	स्वनन्ति
स०	स्वनेत्	स्वनेताम्	स्वनेयुः
प०	स्वनतु/स्वनतात्	स्वनताम्	स्वनन्तु
ह्य०	अस्वनत्	अस्वनताम्	अस्वनन्
अ०	अस्वानीत्	अस्वानिष्टाम्	अस्वानिषुः
		तथा	
	अस्वनीत्	अस्वनिष्टाम्	अस्वनिषुः
प०	सस्वान	सस्वनतुः	सस्वनुः
		तथा	
	सस्वान	स्वेनतुः	स्वेनुः
आ०	स्वन्यात्	स्वन्यास्ताम्	स्वन्यासुः
श्व०	स्वनिता	स्वनितारौ	स्वनितारः
भ०	स्वनिष्यति	स्वनिष्यतः	स्वनिष्यन्ति
क्रि०	अस्वनिष्यत्	अस्वनिष्यताम्	अस्वनिष्यन्

३२८. वन (वन्) शब्दे।

व०	वनति	वनतः	वनन्ति
स०	वनेत्	वनेताम्	वनेयुः
प०	वनतु/वनतात्	वनताम्	वनन्तु
ह्य०	अवनत्	अवनताम्	अवनन्
अ०	अवानीत्	अवानिष्टाम्	अवानिषुः
		तथा	
	अवनीत्	अवनिष्टाम्	अवनिषुः
प०	ववान	ववनतुः	ववनुः
आ०	वन्यात्	वन्यास्ताम्	वन्यासुः
श्व०	वनिता	वनितारौ	वनितारः
भ०	वनिष्यति	वनिष्यतः	वनिष्यन्ति
क्रि०	अवनिष्यत्	अवनिष्यताम्	अवनिष्यन्

३२९. वन (वन्) भक्तौ।[१]

३३०. षन (सन्) भक्तौ। भक्तिर्भजनम्।

व०	सनति	सनतः	सनन्ति
	सनसि	सनथः	सनथ
	सनामि	सनावः	सनामः
स०	सनेत्	सनेताम्	सनेयुः
	सनेः	सनेतम्	सनेत
	सनेयम्	सनेव	सनेम
प०	सनतु/सनतात्	सनताम्	सनन्तु
	सन/सनतात्	सनतम्	सनत
	सनानि	सनाव	सनाम
ह्य०	असनत्	असनताम्	असनन्
	असनः	असनतम्	असनत
	असनतम्	असनाव	असनाम
अ०	असानीत्	असानिष्टाम्	असानिषुः
	असानीः	असानिष्टम्	असानिष्ट
	असानिषम्	असानिष्व	असानिष्म
		तथा	
	असनीत्	असनिष्टाम्	असनिषुः
	असनीः	असनिष्टम्	असनिष्ट
	असनिषम्	असनिष्व	असनिष्म
प०	ससान	सेनतुः	सेनुः
	ससनिथ	सेनथुः	सेन
	ससान/ससन	सेनिव	सेनिम
आ०	सन्यात्	सन्यास्ताम्	सन्यासुः
	सन्याः	सन्यास्तम्	सन्यास्त
	सन्यासम्	सन्यास्व	सन्यास्म

---

१. भक्तिर्भजनम्। अर्थभेदार्थमिह पुनरधीतः। एतद्रूपाणि चानुपदमेवोक्तानि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	सनिता	सनितारौ	सनितार:
	सनितासि	सनितास्थ:	सनितास्थ
	सनितास्मि	सनितास्व:	सनितास्म:
भ०	सनिष्यति	सनिष्यत:	सनिष्यन्ति
	सनिष्यसि	सनिष्यथ:	सनिष्यथ
	सनिष्यामि	सनिष्याव:	सनिष्याम:
क्रि०	असनिष्यत्	असनिष्यताम्	असनिष्यन्
	असनिष्य:	असनिष्यतम्	असनिष्यत
	असनिष्यम्	असनिष्याव	असनिष्याम

३३१. कनै (कन्) दीप्तिगतिकान्तिषु।[१]

व०	कनति	कनत:	कनन्ति
	कनसि	कनथ:	कनथ
	कनामि	कनाव:	कनाम:
स०	कनेत्	कनेताम्	कनेयु:
	कने:	कनेतम्	कनेत
	कनेयम्	कनेव	कनेम
प०	कनतु/कनतात्	कनताम्	कनन्तु
	कन/कनतात्	कनतम्	कनत
	कनानि	कनाव	कनाम
ह्य०	अकनत्	अकनताम्	अकनन्
	अकन:	अकनतम्	अकनत
	अकनम्	अकनाव	अकनाम
अ०	अकानीत्	अकानिष्टाम्	अकानिषु:
	अकानी:	अकानिष्टम्	अकानिष्ट
	अकानिषम्	अकानिष्व	अकानिष्म
		तथा	
	अकनीत्	अकनिष्टाम्	अकनिषु:
	अकनी:	अकनिष्टम्	अकनिष्ट
	अकनिषम्	अकनिष्व	अकनिष्म
प०	चकान	चकनतु:	चकनु:
	चकनिथ	चकनथु:	चकन
	चकान/चकन	चकनिव	चकनिम
आ०	कन्यात्	कन्यास्ताम्	कन्यासु:
	कन्या:	कन्यास्तम्	कन्यास्त
	कन्यासम्	कन्यास्व	कन्यास्म
श्व०	कनिता	कनितारौ	कनितार:
	कनितासि	कनितास्थ:	कनितास्थ
	कनितास्मि	कनितास्व:	कनितास्म:
भ०	कनिष्यति	कनिष्यत:	कनिष्यन्ति
	कनिष्यसि	कनिष्यथ:	कनिष्यथ
	कनिष्यामि	कनिष्याव:	कनिष्याम:
क्रि०	अकनिष्यत्	अकनिष्यताम्	अकनिष्यन्
	अकनिष्य:	अकनिष्यतम्	अकनिष्यत
	अकनिष्यम्	अकनिष्याव	अकनिष्याम

॥अथ पान्ता: पञ्चदश गुपौ वेद् तपं सृप्लृं अनिटौ शेषा: सेट:॥

३३२. गुपौ (गुप्–गोपाय्) रक्षणे।

व०	गोपायति	गोपायत:	गोपायन्ति
	गोपायसि	गोपायथ:	गोपायथ
	गोपायामि	गोपायाव:	गोपायाम:
स०	गोपायेत्	गोपायेताम्	गोपायेयु:
	गोपाये:	गोपायेतम्	गोपायेत
	गोपायेयम्	गोपायेव	गोपायेम
प०	गोपायतु/गोपायतात्	गोपायताम्	गोपायन्तु
	गोपाय/गोपायतात्	गोपायतम्	गोपायत
	गोपायानि	गोपायाव	गोपायाम
ह्य०	अगोपायत्	अगोपायताम्	अगोपायन्
	अगोपाय:	अगोपायतम्	अगोपायत
	अगोपायम्	अगोपायाव	अगोपायाम
अ०	अगोपायीत्	अगोपायिष्टाम्	अगोपायिषु:
	अगोपायी:	अगोपायिष्टम्	अगोपायिष्ट
	अगोपायिषम्	अगोपायिष्व	अगोपायिष्म
		तथा	
	अगोपीत्	अगोपिष्टाम्	अगोपिषु:
	अगोपी:	अगोपिष्टम्	अगोपिष्ट
	अगोपिषम्	अगोपिष्व	अगोपिष्म
	अगौप्सीत्	अगौप्ताम्	अगौप्सु:
	अगौप्सी:	अगौप्तम्	अगौप्त
	अगौप्सम्	अगौप्स्व	अगौप्स्म

१. दीप्ति: प्रकाश:। कान्ति: शोभा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	गोपायाञ्चकार	गोपायाञ्चक्रतुः	गोपायाञ्चक्रुः
	गोपायाञ्चकर्थ	गोपायाञ्चक्रथुः	गोपायाञ्चक्र
	गोपायाञ्चकार/कर	गोपायाञ्चकृव	गोपायाञ्चकृम
	गोपायाम्बभूव	गोपायामास	
		तथा	
	जुगोप	जुगुपतुः	जुगुपुः
	जुगोपिथ	जुगुपथुः	जुगुप
	जुगोप	जुगुपिव	जुगुपिम
आ०	गुप्यात्	गुप्यास्ताम्	गुप्यासुः
	गुप्याः	गुप्यास्तम्	गुप्यास्त
	गुप्यासम्	गुप्यास्व	गुप्यास्म
		तथा	
	गोपाय्यात्	गोपाय्यास्ताम्	गोपाय्यासुः
	गोपाय्याः	गोपाय्यास्तम्	गोपाय्यास्त
	गोपाय्यासम्	गोपाय्यास्व	गोपाय्यास्म
श्व०	गोपिता	गोपितारौ	गोपितारः
	गोपितासि	गोपितास्थः	गोपितास्थ
	गोपितास्मि	गोपितास्वः	गोपितास्मः
		तथा	
	गोपायिता	गोपायितारौ	गोपायितारः
	गोपायितासि	गोपायितास्थः	गोपायितास्थ
	गोपायितास्मि	गोपायितास्वः	गोपायितास्मः
	गोप्ता	गोप्तारौ	गोप्तारः
	गोप्तासि	गोप्तास्थः	गोप्तास्थ
	गोप्तास्मि	गोप्तास्वः	गोप्तास्मः
भ०	गोपिष्यति	गोपिष्यतः	गोपिष्यन्ति
	गोपिष्यसि	गोपिष्यथः	गोपिष्यथ
	गोपिष्यामि	गोपिष्यावः	गोपिष्यामः
		तथा	
	गोपायिष्यति	गोपायिष्यतः	गोपायिष्यन्ति
	गोपायिष्यसि	गोपायिष्यथः	गोपायिष्यथ
	गोपायिष्यामि	गोपायिष्यावः	गोपायिष्यामः
		तथा	
	गोप्स्यति	गोप्स्यतः	गोप्स्यन्ति
	गोप्स्यसि	गोप्स्यथः	गोप्स्यथ
	गोप्स्यामि	गोप्स्यावः	गोप्स्यामः

क्रि०	अगोपिष्यत्	अगोपिष्यताम्	अगोपिष्यन्
	अगोपिष्यः	अगोपिष्यतम्	अगोपिष्यत
	अगोपिष्यम्	अगोपिष्याव	अगोपिष्याम
		तथा	
	अगोपायिष्यत	अगोपायिष्यताम्	अगोपायिष्यन्
	अगोपायिष्यः	अगोपायिष्यतम्	अगोपायिष्यत
	अगोपायिष्यम्	अगोपायिष्याव	अगोपायिष्याम
		तथा	
	अगोप्स्यत्	अगोप्स्यताम्	अगोप्स्यन्
	अगोप्स्यः	अगोप्स्यतम्	अगोप्स्यत
	अगोप्स्यम्	अगोप्स्याव	अगोप्स्याम

३३३. तप (तप्) संतापे।

व०	तपति	तपतः	तपन्ति
	तपसि	तपथः	तपथ
	तपामि	तपावः	तपामः
स०	तपेत्	तपेताम्	तपेयुः
	तपेः	तपेतम्	तपेत
	तपेयम्	तपेव	तपेम
प०	तपतु/तपतात्	तपताम्	तपन्तु
	तप/तपतात्	तपतम्	तपत
	तपानि	तपाव	तपाम
ह्य०	अतपत्	अतपताम्	अतपन्
	अतपः	अतपतम्	अतपत
	अतपम्	अतपाव	अतपाम
अ०	अताप्सीत्	अताप्ताम्	अताप्सुः
	अताप्सीः	अताप्तम्	अताप्त
	अताप्सम्	अताप्स्व	अताप्स्म
प०	तताप	तेपतुः	तेपुः
	तेपिथ/ततप्थ	तेपथुः	तेप
	तताप/ततप	तेपिव	तेपिम
आ०	तप्यात्	तप्यास्ताम्	तप्यासुः
	तप्याः	तप्यास्तम्	तप्यास्त
	तप्यासम्	तप्यास्व	तप्यास्म
श्व०	तप्ता	तप्तारौ	तप्तारः
	तप्तासि	तप्तास्थः	तप्तास्थ
	तप्तास्मि	तप्तास्वः	तप्तास्मः
भ०	तप्स्यति	तप्स्यतः	तप्स्यन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	तप्स्यसि	तप्स्यथः	तप्स्यथ
	तप्स्यामि	तप्स्यावः	तप्स्यामः
क्रि०	अतप्स्यत्	अतप्स्यताम्	अतप्स्यन्
	अतप्स्यः	अतप्स्यतम्	अतप्स्यत
	अतप्स्यम्	अतप्स्याव	अतप्स्याम

३३४. धूप (धूप्-धूपाय्) संतापे।

व०	धूपायति	धूपायतः	धूपायन्ति
	धूपायसि	धूपायथः	धूपायथ
	धूपायामि	धूपायावः	धूपायामः
स०	धूपायेत्	धूपायेताम्	धूपायेयुः
	धूपायेः	धूपायेतम्	धूपायेत
	धूपायेयम्	धूपायेव	धूपायेम
प०	धूपायतु/धूपायतात्	धूपायताम्	धूपायन्तु
	धूपाय/धूपायतात्	धूपायतम्	धूपायत
	धूपायानि	धूपायाव	धूपायाम
ह्य०	अधूपायत्	अधूपायताम्	अधूपायन्
	अधूपायः	अधूपायतम्	अधूपायत
	अधूपायम्	अधूपायाव	अधूपायाम
अ०	अधूपायीत्	अधूपायिष्टाम्	अधूपायिषुः
	अधूपायीः	अधूपायिष्टम्	अधूपायिष्ट
	अधूपायिषम्	अधूपायिष्व	अधूपायिष्म

तथा

	अधूपीत्	अधूपिष्टाम्	अधूपिषुः
	अधूपीः	अधूपिष्टम्	अधूपिष्ट
	अधूपिषम्	अधूपिष्व	अधूपिष्म
प०	धूपायाञ्चकार	धूपायाञ्चक्रतुः	धूपायाञ्चक्रुः
	धूपायाञ्चकर्थ	धूपायाञ्चक्रथुः	धूपायाञ्चक्र
	धूपायाञ्चकार/कर	धूपायाञ्चकृव	धूपायाञ्चकृम
	धूपायाम्बभूव	धूपायामास	

तथा

	दुधूप	दुधूपतुः	दुधूपुः
	दुधूपिथ	दुधूपथुः	दुधूप
	दुधूप	दुधूपिव	दुधूपिम
आ०	धूप्यात्	धूप्यास्ताम्	धूप्यासुः
	धूप्याः	धूप्यास्तम्	धूप्यास्त
	धूप्यासम्	धूप्यास्व	धूप्यास्म

तथा

	धूपाय्यात्	धूपाय्यास्ताम्	धूपाय्यासुः
	धूपाय्याः	धूपाय्यास्तम्	धूपाय्यास्त
	धूपाय्यासम्	धूपाय्यास्व	धूपाय्यास्म
श्व०	धूपिता	धूपितारौ	धूपितारः
	धूपितासि	धूपितास्थः	धूपितास्थ
	धूपितास्मि	धूपितास्वः	धूपितास्मः

तथा

	धूपायिता	धूपायितारौ	धूपायितारः
	धूपायितासि	धूपायितास्थः	धूपायितास्थ
	धूपायितास्मि	धूपायितास्वः	धूपायितास्मः
भ०	धूपिष्यति	धूपिष्यतः	धूपिष्यन्ति
	धूपिष्यसि	धूपिष्यथः	धूपिष्यथ
	धूपिष्यामि	धूपिष्यावः	धूपिष्यामः

तथा

	धूपायिष्यति	धूपायिष्यतः	धूपायिष्यन्ति
	धूपायिष्यसि	धूपायिष्यथः	धूपायिष्यथ
	धूपायिष्यामि	धूपायिष्यावः	धूपायिष्यामः
क्रि०	अधूपिष्यत्	अधूपिष्यताम्	अधूपिष्यन्
	अधूपिष्यः	अधूपिष्यतम्	अधूपिष्यत
	अधूपिष्यम्	अधूपिष्याव	अधूपिष्याम

तथा

	अधूपायिष्यत्	अधूपायिष्यताम्	अधूपायिष्यन्
	अधूपायिष्यः	अधूपायिष्यतम्	अधूपायिष्यत
	अधूपायिष्यम्	अधूपायिष्याव	अधूपायिष्याम

३३५. रप (रप्) व्यक्ते वचने।

व०	रपति	रपतः	रपन्ति
स०	रपेत्	रपेताम्	रपेयुः
प०	रपतु/रपतात्	रपताम्	रपन्तु
ह्य०	अरपत्	अरपताम्	अरपन्
अ०	अरापीत्	अरापिष्टाम्	अरापिषुः

तथा

	अरपीत्	अरपिष्टाम्	अरपिषुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	रराप	रेपतुः	रेपुः
आ०	रप्यात्	रप्यास्ताम्	रप्यासुः
श्व०	रपिता	रपितारौ	रपितारः
भ०	रपिष्यति	रपिष्यतः	रपिष्यन्ति
क्रि०	अरपिष्यत्	अरपिष्यताम्	अरपिष्यन्

३३६. लप (लप्) व्यक्ते वचने।

व०	लपति	लपतः	लपन्ति
स०	लपेत्	लपेताम्	लपेयुः
प०	लपतु/लपतात्	लपताम्	लपन्तु
ह्य०	अलपत्	अलपताम्	अलपन्
अ०	अलापीत्	अलापिष्टाम्	अलापिषुः
		तथा	
	अलपीत्	अलपिष्टाम्	अलपिषुः
प०	ललाप	लेपतुः	लेपुः
आ०	लप्यात्	लप्यास्ताम्	लप्यासुः
श्व०	लपिता	लपितारौ	लपितारः
भ०	लपिष्यति	लपिष्यतः	लपिष्यन्ति
क्रि०	अलपिष्यत्	अलपिष्यताम्	अलपिष्यन्

३३७. जल्प (जल्प्) व्यक्ते वचने।

व०	जल्पति	जल्पतः	जल्पन्ति
स०	जल्पेत्	जल्पेताम्	जल्पेयुः
प०	जल्पतु/जल्पतात्	जल्पताम्	जल्पन्तु
ह्य०	अजल्पत्	अजल्पताम्	अजल्पन्
अ०	अजल्पीत्	अजल्पिष्टाम्	अजल्पिषुः
प०	जजल्प	जजल्पतुः	जजल्पुः
आ०	जल्प्यात्	जल्प्यास्ताम्	जल्प्यासुः
श्व०	जल्पिता	जल्पितारौ	जल्पितारः
भ०	जल्पिष्यति	जल्पिष्यतः	जल्पिष्यन्ति
क्रि०	अजल्पिष्यत्	अजल्पिष्यताम्	अजल्पिष्यन्

३३८. जप (जप्) मानसे च।[१]

व०	जपति	जपतः	जपन्ति
स०	जपेत्	जपेताम्	जपेयुः
प०	जपतु/जपतात्	जपताम्	जपन्तु
ह्य०	अजपत्	अजपताम्	अजपन्
अ०	अजापीत्	अजापिष्टाम्	अजापिषुः
		तथा	
	अजपीत्	अजपिष्टाम्	अजपिषुः
प०	जजाप	जेपतुः	जेपुः
आ०	जप्यात्	जप्यास्ताम्	जप्यासुः
श्व०	जपिता	जपितारौ	जपितारः
भ०	जपिष्यति	जपिष्यतः	जपिष्यन्ति
क्रि०	अजपिष्यत्	अजपिष्यताम्	अजपिष्यन्

३३९. चप (चप्) सान्त्वने।

व०	चपति	चपतः	चपन्ति
स०	चपेत्	चपेताम्	चपेयुः
प०	चपतु/चपतात्	चपताम्	चपन्तु
ह्य०	अचपत्	अचपताम्	अचपत्
अ०	अचापीत्	अचापिष्टाम्	अचापिषुः
		तथा	
	अचपीत्	अचपिष्टाम्	अचपिषुः
प०	चचाप	चेपतुः	चेपुः
आ०	चप्यात्	चप्यास्ताम्	चप्यासुः
श्व०	चपिता	चपितारौ	चपितारः
भ०	चपिष्यति	चपिष्यतः	चपिष्यन्ति
क्रि०	अचपिष्यत्	अचपिष्यताम्	अचपिष्यन्

३४०. षप (सप्) समवाये।

व०	सपति	सपतः	सपन्ति
स०	सपेत्	सपेताम्	सपेयुः
प०	सपतु/सपतात्	सपताम्	सपन्तु
ह्य०	असपत्	असपताम्	असपन्
अ०	असापीत्	असापिष्टाम्	असापिषुः
		तथा	
	असपीत्	असपिष्टाम्	असपिषुः
प०	ससाप	सेपतुः	सेपुः
आ०	सप्यात्	सप्यास्ताम्	सप्यासुः
श्व०	सपिता	सपितारौ	सपितारः
भ०	सपिष्यति	सपिष्यतः	सपिष्यन्ति

१. मनोनिर्वर्त्ये वचने। चात् व्यक्ते वचने।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रि०	असर्पिष्यत्	असर्पिष्यताम्	असर्पिष्यन्

३४१. सृप्लृ (सृप्) गतौ।

व०	सर्पति	सर्पतः	सर्पन्ति
स०	सर्पेत्	सर्पेताम्	सर्पेयुः
प०	सर्पतु/सर्पतात्	सर्पताम्	सर्पन्तु
ह्य०	असर्पत्	असर्पताम्	असर्पन्
अ०	असृपत्	असृपताम्	असृपन्
प०	ससर्प	ससृपतुः	ससृपुः
आ०	सृप्यात्	सृप्यास्ताम्	सृप्यासुः
श्व०	सर्प्ता	सर्प्तारौ	सर्प्तारः
		तथा	
	स्रप्ता	स्रप्तारौ	स्रप्तारः
भ०	सर्प्स्यति	सर्प्स्यतः	सर्प्स्यन्ति
		तथा	
	स्रप्स्यति	स्रप्स्यतः	स्रप्स्यन्ति
क्रि०	असर्प्स्यत्	असर्प्स्यताम्	असर्प्स्यन्
		तथा	
	अस्रप्स्यत्	अस्रप्स्यताम्	अस्रप्स्यन्

३४२. चुप (चुप्) मन्दायाम्।

गतावित्यनुवृत्तेर्मन्दायां गतौ।

व०	चोपति	चोपतः	चोपन्ति
स०	चोपेत्	चोपेताम्	चोपेयुः
प०	चोपतु/चोपतात्	चोपताम्	चोपन्तु
ह्य०	अचोपत्	अचोपताम्	अचोपन्
अ०	अचोपीत्	अचोपिष्टाम्	अचोपिषुः
प०	चुचोप	चुचुपतुः	चुचुपुः
आ०	चुप्यात्	चुप्यास्ताम्	चुप्यासुः
श्व०	चोपिता	चोपितारौ	चोपितारः
भ०	चोपिष्यति	चोपिष्यतः	चोपिष्यन्ति
क्रि०	अचोपिष्यत्	अचोपिष्यताम्	अचोपिष्यन्

३४३. तुप (तुप्) हिंसायाम्।

व०	तोपति	तोपतः	तोपन्ति
स०	तोपेत्	तोपेताम्	तोपेयुः
प०	तोपतु/तोपतात्	तोपताम्	तोपन्तु
ह्य०	अतोपत्	अतोपताम्	अतोपन्
अ०	अतोपीत्	अतोपिष्टाम्	अतोपिषुः
प०	तुतोप	तुतुपतुः	तुतुपुः
आ०	तुप्यात्	तुप्यास्ताम्	तुप्यासुः
श्व०	तोपिता	तोपितारौ	तोपितारः
भ०	तोपिष्यति	तोपिष्यतः	तोपिष्यन्ति
क्रि०	अतोपिष्यत्	अतोपिष्यताम्	अतोपिष्यन्

३४४. तुम्प (तुम्प्) हिंसायाम्।

व०	तुम्पति	तुम्पतः	तुम्पन्ति
स०	तुम्पेत्	तुम्पेताम्	तुम्पेयुः
प०	तुम्पतु/तुम्पतात्	तुम्पताम्	तुम्पन्तु
ह्य०	अतुम्पत्	अतुम्पताम्	अतुम्पन्
अ०	अतुम्पीत्	अतुम्पिष्टाम्	अतुम्पिषुः
प०	तुतुम्प	तुतुम्पतुः	तुतुम्पुः
आ०	तुप्यात्	तुप्यास्ताम्	तुप्यासुः
श्व०	तुम्पिता	तुम्पितारौ	तुम्पितारः
भ०	तुम्पिष्यति	तुम्पिष्यतः	तुम्पिष्यन्ति
क्रि०	अतुम्पिष्यत्	अतुम्पिष्यताम्	अतुम्पिष्यन्

३४५. त्रुप (त्रुप्) हिंसायाम्।

व०	त्रोपति	त्रोपतः	त्रोपन्ति
स०	त्रोपेत्	त्रोपेताम्	त्रोपेयुः
प०	त्रोपतु/त्रोपतात्	त्रोपताम्	त्रोपन्तु
ह्य०	अत्रोपत्	अत्रोपताम्	अत्रोपन्
अ०	अत्रोपीत्	अत्रोपिष्टाम्	अत्रोपिषुः
प०	तुत्रोप	तुत्रुपतुः	तुत्रुपुः
आ०	त्रुप्यात्	त्रुप्यास्ताम्	त्रुप्यासुः
श्व०	त्रोपिता	त्रोपितारौ	त्रोपितारः
भ०	त्रोपिष्यति	त्रोपिष्यतः	त्रोपिष्यन्ति
क्रि०	अत्रोपिष्यत्	अत्रोपिष्यताम्	अत्रोपिष्यन्

३४६. त्रुम्प (त्रुम्प्) हिंसायाम्।

व०	त्रुम्पति	त्रुम्पतः	त्रुम्पन्ति
स०	त्रुम्पेत्	त्रुम्पेताम्	त्रुम्पेयुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	त्रुम्पतु/त्रुम्पतात्	त्रुम्पताम्	त्रुम्पन्तु
ह्य०	अत्रुम्पत्	अत्रुम्पताम्	अत्रुम्पन्
अ०	अत्रुम्पीत्	अत्रुम्पिष्टाम्	अत्रुम्पिषुः
प०	तुत्रुम्प	तुत्रुम्पतुः	तुत्रुम्पुः
आ०	त्रुप्यात्	त्रुप्यास्ताम्	त्रुप्यासुः
श्व०	त्रुम्पिता	त्रुम्पितारौ	त्रुम्पितारः
भ०	त्रुम्पिष्यति	त्रुम्पिष्यतः	त्रुम्पिष्यन्ति
क्रि०	अत्रुम्पिष्यत्	अत्रुम्पिष्यताम्	अत्रुम्पिष्यन्

॥ अथ फान्ताः सप्त सेटश्च॥

३४७. तुफ (तुफ्) हिंसायाम्।

व०	तोफति	तोफतः	तोफन्ति
स०	तोफेत्	तोफेताम्	तोफेयुः
प०	तोफतु/तोफतात्	तोफताम्	तोफन्तु
ह्य०	अतोफत्	अतोफताम्	अतोफन्
अ०	अतोफीत्	अतोफिष्टाम्	अतोफिषुः
प०	तुतोफ	तुतुफतुः	तुतुफुः
आ०	तुफ्यात्	तुफ्यास्ताम्	तुफ्यासुः
श्व०	तोफिता	तोफितारौ	तोफितारः
भ०	तोफिष्यति	तोफिष्यतः	तोफिष्यन्ति
क्रि०	अतोफिष्यत्	अतोफिष्यताम्	अतोफिष्यन्

३४८. तुम्फ (तुम्फ्) हिंसायाम्।

व०	तुम्फति	तुम्फतः	तुम्फन्ति
स०	तुम्फेत्	तुम्फेताम्	तुम्फेयुः
प०	तुम्फतु/तुम्फतात्	तुम्फताम्	तुम्फन्तु
ह्य०	अतुम्फत्	अतुम्फताम्	अतुम्फन्
अ०	अतुम्फीत्	अतुम्फिष्टाम्	अतुम्फिषुः
प०	तुतुम्फ	तुतुम्फतुः	तुतुम्फुः
आ०	तुफ्यात्	तुफ्यास्ताम्	तुफ्यासुः
श्व०	तुम्फिता	तुम्फितारौ	तुम्फितारः
भ०	तुम्फिष्यति	तुम्फिष्यतः	तुम्फिष्यन्ति
क्रि०	अतुम्फिष्यत्	अतुम्फिष्यताम्	अतुम्फिष्यन्

३४९. त्रुफ (त्रुफ्) हिंसायाम्।

व०	त्रोफति	त्रोफतः	त्रोफन्ति
स०	त्रोफेत्	त्रोफेताम्	त्रोफेयुः
प०	त्रोफतु/त्रोफतात्	त्रोफताम्	त्रोफन्तु
ह्य०	अत्रोफत्	अत्रोफताम्	अत्रोफन्
अ०	अत्रोफीत्	अत्रोफिष्टाम्	अत्रोफिषुः
प०	तुत्रोफ	तुत्रुफतुः	तुत्रुफुः
आ०	त्रुफ्यात्	त्रुफ्यास्ताम्	त्रुफ्यासुः
श्व०	त्रोफिता	त्रोफितारौ	त्रोफितारः
भ०	त्रोफिष्यति	त्रोफिष्यतः	त्रोफिष्यन्ति
क्रि०	अत्रोफिष्यत्	अत्रोफिष्यताम्	अत्रोफिष्यन्

३५०. त्रुम्फ (त्रुम्फ्) हिंसायाम्।

व०	त्रुम्फति	त्रुम्फतः	त्रुम्फन्ति
स०	त्रुम्फेत्	त्रुम्फेताम्	त्रुम्फेयुः
प०	त्रुम्फतु/त्रुम्फतात्	त्रुम्फताम्	त्रुम्फन्तु
ह्य०	अत्रुम्फत्	अत्रुम्फताम्	अत्रुम्फन्
अ०	अत्रुम्फीत्	अत्रुम्फिष्टाम्	अत्रुम्फिषुः
प०	तुत्रुम्फ	तुत्रुम्फतुः	तुत्रुम्फुः
आ०	त्रुफ्यात्	त्रुफ्यास्ताम्	त्रुफ्यासुः
श्व०	त्रुम्फिता	त्रुम्फितारौ	त्रुम्फितारः
भ०	त्रुम्फिष्यति	त्रुम्फिष्यतः	त्रुम्फिष्यन्ति
क्रि०	अत्रुम्फिष्यत्	अत्रुम्फिष्यताम्	अत्रुम्फिष्यन्

३५१. वर्फ (वर्फ्) गतौ।

व०	वर्फति	वर्फतः	वर्फन्ति
स०	वर्फेत्	वर्फेताम्	वर्फेयुः
प०	वर्फतु/वर्फतात्	वर्फताम्	वर्फन्तु
ह्य०	अवर्फत्	अवर्फताम्	अवर्फन्
अ०	अवर्फीत्	अवर्फिष्टाम्	अवर्फिषुः
प०	ववर्फ	ववर्फतुः	ववर्फुः
आ०	वर्फ्यात्	वर्फ्यास्ताम्	वर्फ्यासुः
श्व०	वर्फिता	वर्फितारौ	वर्फितारः
भ०	वर्फिष्यति	वर्फिष्यतः	वर्फिष्यन्ति
क्रि०	अवर्फिष्यत्	अवर्फिष्यताम्	अवर्फिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३५२. रफ (रफ्) गतौ।

व०	रफति	रफतः	रफन्ति
स०	रफेत्	रफेताम्	रफेयुः
प०	रफतु/रफतात्	रफताम्	रफन्तु
ह्य०	अरफत्	अरफताम्	अरफन्
अ०	अराफीत्	अराफिष्टाम्	अराफिषुः
		तथा	
	अरफीत्	अरफिष्टाम्	अरफिषुः
प०	रराफ	रेफतुः	रेफुः
आ०	रफ्यात्	रफ्यास्ताम्	रफ्यासुः
श्व०	रफिता	रफितारौ	रफितारः
भ०	रफिष्यति	रफिष्यतः	रफिष्यन्ति
क्रि०	अरफिष्यत्	अरफिष्यताम्	अरफिष्यन्

३५३. रफु (रम्फ्) गतौ।

व०	रम्फति	रम्फतः	रम्फन्ति
स०	रम्फेत्	रम्फेताम्	रम्फेयुः
प०	रम्फतु/रम्फतात्	रम्फताम्	रम्फन्तु
ह्य०	अरम्फत्	अरम्फताम्	अरम्फन्
अ०	अरम्फीत्	अरम्फिष्टाम्	अरम्फिषुः
प०	ररम्फ	ररम्फतुः	ररम्फुः
आ०	रम्फ्यात्	रम्फ्यास्ताम्	रम्फ्यासुः
श्व०	रम्फिता	रम्फितारौ	रम्फितारः
भ०	रम्फिष्यति	रम्फिष्यतः	रम्फिष्यन्ति
क्रि०	अरम्फिष्यत्	अरम्फिष्यताम्	अरम्फिष्यन्

अथ बान्ता अष्टादश सेट्क्ष।

३५४. अर्ब (अर्ब्) गतौ।

व०	अर्बति	अर्बतः	अर्बन्ति
	अर्बसि	अर्बथः	अर्बथ
	अर्बामि	अर्बावः	अर्बामः
स०	अर्बेत्	अर्बेताम्	अर्बेयुः
	अर्बेः	अर्बेतम्	अर्बेत
	अर्बेयम्	अर्बेव	अर्बेम
प०	अर्बतु/अर्बतात्	अर्बताम्	अर्बन्तु
	अर्ब/अर्बतात्	अर्बतम्	अर्बत
	अर्बाणि	अर्बाव	अर्बाम
ह्य०	आर्बत्	आर्बताम्	आर्बन्
	आर्बः	आर्बतम्	आर्बत
	आर्बम्	आर्बाव	आर्बाम
अ०	आर्बीत्	आर्बिष्टाम्	आर्बिषुः
	आर्बीः	आर्बिष्टम्	आर्बिष्ट
	आर्बिषम्	आर्बिष्व	आर्बिष्म
प०	आनर्ब	आनर्बतुः	आनर्बुः
	आनर्बिथ	आनर्बथुः	आनर्ब
	आनर्ब	आनर्बिव	आनर्बिम
आ०	अर्ब्यात्	अर्ब्यास्ताम्	अर्ब्यासुः
	अर्ब्याः	अर्ब्यास्तम्	अर्ब्यास्त
	अर्ब्यासम्	अर्ब्यास्व	अर्ब्यास्म
श्व०	अर्बिता	अर्बितारौ	अर्बितारः
	अर्बितासि	अर्बितास्थः	अर्बितास्थ
	अर्बितास्मि	अर्बितास्वः	अर्बितास्मः
भ०	अर्बिष्यति	अर्बिष्यतः	अर्बिष्यन्ति
	अर्बिष्यसि	अर्बिष्यथः	अर्बिष्यथ
	अर्बिष्यामि	अर्बिष्यावः	अर्बिष्यामः
क्रि०	आर्बिष्यत्	आर्बिष्यताम्	आर्बिष्यन्
	आर्बिष्यः	आर्बिष्यतम्	आर्बिष्यत
	आर्बिष्यम्	आर्बिष्याव	आर्बिष्याम

३५५. कर्ब (कर्ब्) गतौ।

व०	कर्बति	कर्बतः	कर्बन्ति
	कर्बसि	कर्बथः	कर्बथ
	कर्बामि	कर्बावः	कर्बामः
स०	कर्बेत्	कर्बेताम्	कर्बेयुः
	कर्बेः	कर्बेतम्	कर्बेत
	कर्बेयम्	कर्बेव	कर्बेम
प०	कर्बतु/कर्बतात्	कर्बताम्	कर्बन्तु
	कर्ब/कर्बतात्	कर्बतम्	कर्बत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	कर्बाणि	कर्बाव	कर्बाम
ह्य०	अकर्बत्	अकर्बताम्	अकर्बन्
	अकर्बः	अकर्बतम्	अकर्बत
	अकर्बम्	अकर्बाव	अकर्बाम
अ०	अकर्बीत्	अकर्बिष्टाम्	अकर्बिषुः
	अकर्बीः	अकर्बिष्टम्	अकर्बिष्ट
	अकर्बिषम्	अकर्बिष्व	अकर्बिष्म
प०	चकर्ब	चकर्बतुः	चकर्बुः
	चकर्बिथ	चकर्बथुः	चकर्ब
	चकर्ब	चकर्बिव	चकर्बिम
आ०	कर्ब्यात्	कर्ब्यास्ताम्	कर्ब्यासुः
	कर्ब्याः	कर्ब्यास्तम्	कर्ब्यास्त
	कर्ब्यासम्	कर्ब्यास्व	कर्ब्यास्म
श्व०	कर्बिता	कर्बितारौ	कर्बितारः
	कर्बितासि	कर्बितास्थः	कर्बितास्थ
	कर्बितास्मि	कर्बितास्वः	कर्बितास्मः
भ०	कर्बिष्यति	कर्बिष्यतः	कर्बिष्यन्ति
	कर्बिष्यसि	कर्बिष्यथः	कर्बिष्यथ
	कर्बिष्यामि	कर्बिष्यावः	कर्बिष्यामः
क्रि०	अकर्बिष्यत्	अकर्बिष्यताम्	अकर्बिष्यन्
	अकर्बिष्यः	अकर्बिष्यतम्	अकर्बिष्यत
	अकर्बिष्यम्	अकर्बिष्याव	अकर्बिष्याम

३५६. खर्ब (खर्ब्) गतौ।

व०	खर्बति	खर्बतः	खर्बन्ति
	खर्बसि	खर्बथः	खर्बथ
	खर्बामि	खर्बावः	खर्बामः
स०	खर्बेत्	खर्बेताम्	खर्बेयुः
	खर्बेः	खर्बेतम्	खर्बेत
	खर्बेयम्	खर्बेव	खर्बेम
प०	खर्बतु/खर्बतात्	खर्बताम्	खर्बन्तु
	खर्ब/खर्बतात्	खर्बतम्	खर्बत
	खर्बानि	खर्बाव	खर्बाम
ह्य०	अखर्बत्	अखर्बताम्	अखर्बन्
	अखर्बः	अखर्बतम्	अखर्बत
	अखर्बम्	अखर्बाव	अखर्बाम
अ०	अखर्बीत्	अखर्बिष्टाम्	अखर्बिषुः
	अखर्बीः	अखर्बिष्टम्	अखर्बिष्ट
	अखर्बिषम्	अखर्बिष्व	अखर्बिष्म
प०	चखर्ब	चखर्बतुः	चखर्बुः
	चखर्बिथ	चखर्बथुः	चखर्ब
	चखर्ब	चखर्बिव	चखर्बिम
आ०	खर्ब्यात्	खर्ब्यास्ताम्	खर्ब्यासुः
	खर्ब्याः	खर्ब्यास्तम्	खर्ब्यास्त
	खर्ब्यासम्	खर्ब्यास्व	खर्ब्यास्म
श्व०	खर्बिता	खर्बितारौ	खर्बितारः
	खर्बितासि	खर्बितास्थः	खर्बितास्थ
	खर्बितास्मि	खर्बितास्वः	खर्बितास्मः
भ०	खर्बिष्यति	खर्बिष्यतः	खर्बिष्यन्ति
	खर्बिष्यसि	खर्बिष्यथः	खर्बिष्यथ
	खर्बिष्यामि	खर्बिष्यावः	खर्बिष्यामः
क्रि०	अखर्बिष्यत्	अखर्बिष्यताम्	अखर्बिष्यन्
	अखर्बिष्यः	अखर्बिष्यतम्	अखर्बिष्यत
	अखर्बिष्यम्	अखर्बिष्याव	अखर्बिष्याम

३५७. गर्ब (गर्ब्) गतौ।

व०	गर्बति	गर्बतः	गर्बन्ति
स०	गर्बेत्	गर्बेताम्	गर्बेयुः
प०	गर्बतु/गर्बतात्	गर्बताम्	गर्बन्तु
ह्य०	अगर्बत्	अगर्बताम्	अगर्बन्
अ०	अगर्बीत्	अगर्बिष्टाम्	अगर्बिषुः
प०	जगर्ब	जगर्बतुः	जगर्बुः
आ०	गर्ब्यात्	गर्ब्यास्ताम्	गर्ब्यासुः
श्व०	गर्बिता	गर्बितारौ	गर्बितारः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	गर्बिष्यति	गर्बिष्यतः	गर्बिष्यन्ति
क्रि०	अगर्बिष्यत्	अगर्बिष्यताम्	अगर्बिष्यन्

३५८. चर्ब (चर्ब्) गतौ।

व०	चर्बति	चर्बतः	चर्बन्ति
स०	चर्बेत्	चर्बेताम्	चर्बेयुः
प०	चर्बतु/चर्बतात्	चर्बताम्	चर्बन्तु
ह्य०	अचर्बत्	अचर्बताम्	अचर्बन्
अ०	अचर्बीत्	अचर्बिष्टाम्	अचर्बिषुः
प०	चचर्ब	चचर्बतुः	चचर्बुः
आ०	चर्ब्यात्	चर्ब्यास्ताम्	चर्ब्यासुः
श्व०	चर्बिता	चर्बितारौ	चर्बितारः
भ०	चर्बिष्यति	चर्बिष्यतः	चर्बिष्यन्ति
क्रि०	अचर्बिष्यत्	अचर्बिष्यताम्	अचर्बिष्यन्

३५९. तर्ब (तर्ब्) गतौ।

व०	तर्बति	तर्बतः	तर्बन्ति
स०	तर्बेत्	तर्बेताम्	तर्बेयुः
प०	तर्बतु/तर्बतात्	तर्बताम्	तर्बन्तु
ह्य०	अतर्बत्	अतर्बताम्	अतर्बन्
अ०	अतर्बीत्	अतर्बिष्टाम्	अतर्बिषुः
प०	ततर्ब	ततर्बतुः	ततर्बुः
आ०	तर्ब्यात्	तर्ब्यास्ताम्	तर्ब्यासुः
श्व०	तर्बिता	तर्बितारौ	तर्बितारः
भ०	तर्बिष्यति	तर्बिष्यतः	तर्बिष्यन्ति
क्रि०	अतर्बिष्यत्	अतर्बिष्यताम्	अतर्बिष्यन्

३६०. नर्ब (नर्ब्) गतौ।

व०	नर्बति	नर्बतः	नर्बन्ति
स०	नर्बेत्	नर्बेताम्	नर्बेयुः
प०	नर्बतु/नर्बतात्	नर्बताम्	नर्बन्तु
ह्य०	अनर्बत्	अनर्बताम्	अनर्बन्
अ०	अनर्बीत्	अनर्बिष्टाम्	अनर्बिषुः
प०	ननर्ब	ननर्बतुः	ननर्बुः
आ०	नर्ब्यात्	नर्ब्यास्ताम्	नर्ब्यासुः
श्व०	नर्बिता	नर्बितारौ	नर्बितारः
भ०	नर्बिष्यति	नर्बिष्यतः	नर्बिष्यन्ति
क्रि०	अनर्बिष्यत्	अनर्बिष्यताम्	अनर्बिष्यन्

३६१. पर्ब (पर्ब्) गतौ।

व०	पर्बति	पर्बतः	पर्बन्ति
स०	पर्बेत्	पर्बेताम्	पर्बेयुः
प०	पर्बतु/पर्बतात्	पर्बताम्	पर्बन्तु
ह्य०	अपर्बत्	अपर्बताम्	अपर्बन्
अ०	अपर्बीत्	अपर्बिष्टाम्	अपर्बिषुः
प०	पपर्ब	पपर्बतुः	पपर्बुः
आ०	पर्ब्यात्	पर्ब्यास्ताम्	पर्ब्यासुः
श्व०	पर्बिता	पर्बितारौ	पर्बितारः
भ०	पर्बिष्यति	पर्बिष्यतः	पर्बिष्यन्ति
क्रि०	अपर्बिष्यत्	अपर्बिष्यताम्	अपर्बिष्यन्

३६२. बर्ब (बर्ब्) गतौ।

व०	बर्बति	बर्बतः	बर्बन्ति
स०	बर्बेत्	बर्बेताम्	बर्बेयुः
प०	बर्बतु/बर्बतात्	बर्बताम्	बर्बन्तु
ह्य०	अबर्बत्	अबर्बताम्	अबर्बन्
अ०	अबर्बीत्	अबर्बिष्टाम्	अबर्बिषुः
प०	बबर्ब	बबर्बतुः	बबर्बुः
आ०	बर्ब्यात्	बर्ब्यास्ताम्	बर्ब्यासुः
श्व०	बर्बिता	बर्बितारौ	बर्बितारः
भ०	बर्बिष्यति	बर्बिष्यतः	बर्बिष्यन्ति
क्रि०	अबर्बिष्यत्	अबर्बिष्यताम्	अबर्बिष्यन्

३६३. शर्ब (शर्ब्) गतौ।

व०	शर्बति	शर्बतः	शर्बन्ति
स०	शर्बेत्	शर्बेताम्	शर्बेयुः
प०	शर्बतु/शर्बतात्	शर्बताम्	शर्बन्तु
ह्य०	अशर्बत्	अशर्बताम्	अशर्बन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	अशर्बीत्	अशर्बिष्टाम्	अशर्बिषुः
प०	शशर्ब	शशर्बतुः	शशर्बुः
आ०	शर्ब्यात्	शर्ब्यास्ताम्	शर्ब्यासुः
श्व०	शर्बिता	शर्बितारौ	शर्बितारः
भ०	शर्बिष्यति	शर्बिष्यतः	शर्बिष्यन्ति
क्रि०	अशर्बिष्यत्	अशर्बिष्यताम्	अशर्बिष्यन्

३६४. षर्ब (सर्ब्) गतौ।

व०	सर्बति	सर्बतः	सर्बन्ति
स०	सर्बेत्	सर्बेताम्	सर्बेयुः
प०	सर्बतु/सर्बतात्	सर्बताम्	सर्बन्तु
ह्य०	असर्बत्	असर्बताम्	असर्बन्
अ०	असर्बीत्	असर्बिष्टाम्	असर्बिषुः
प०	ससर्ब	ससर्बतुः	ससर्बुः
आ०	सर्ब्यात्	सर्ब्यास्ताम्	सर्ब्यासुः
श्व०	सर्बिता	सर्बितारौ	सर्बितारः
भ०	सर्बिष्यति	सर्बिष्यतः	सर्बिष्यन्ति
क्रि०	असर्बिष्यत्	असर्बिष्यताम्	असर्बिष्यन्

३६५ सर्ब (सर्ब्) गतौ।

अस्य रूपाणि षर्ब (३६४) वत्।[1]

३६६. रिबु (रिम्ब्) गतौ।

व०	रिम्बति	रिम्बतः	रिम्बन्ति
	रिम्बसि	रिम्बथः	रिम्बथ
	रिम्बामि	रिम्बावः	रिम्बामः
स०	रिम्बेत्	रिम्बेताम्	रिम्बेयुः
	रिम्बेः	रिम्बेतम्	रिम्बेत
	रिम्बेयम्	रिम्बेव	रिम्बेम
प०	रिम्बतु/रिम्बतात्	रिम्बताम्	रिम्बन्तु
	रिम्ब/रिम्बतात्	रिम्बतम्	रिम्बत
	रिम्बाणि	रिम्बाव	रिम्बाम
ह्य०	अरिम्बत्	अरिम्बताम्	अरिम्बन्
	अरिम्बः	अरिम्बतम्	अरिम्बत
	अरिम्बम्	अरिम्बाव	अरिम्बाम
अ०	अरिम्बीत्	अरिम्बिष्टाम्	अरिम्बिषुः
	अरिम्बीः	अरिम्बिष्टम्	अरिम्बिष्ट
	अरिम्बिषम्	अरिम्बिष्व	अरिम्बिष्म
प०	रिरिम्ब	रिरिम्बतुः	रिरिम्बुः
	रिरिम्बिथ	रिरिम्बथुः	रिरिम्ब
	रिरिम्ब	रिरिम्बिव	रिरिम्बिम
आ०	रिम्ब्यात्	रिम्ब्यास्ताम्	रिम्ब्यासुः
	रिम्ब्याः	रिम्ब्यास्तम्	रिम्ब्यास्त
	रिम्ब्यासम्	रिम्ब्यास्व	रिम्ब्यास्म
श्व०	रिम्बिता	रिम्बितारौ	रिम्बितारः
	रिम्बितासि	रिम्बितास्थः	रिम्बितास्थ
	रिम्बितास्मि	रिम्बितास्वः	रिम्बितास्मः
भ०	रिम्बिष्यति	रिम्बिष्यतः	रिम्बिष्यन्ति
	रिम्बिष्यसि	रिम्बिष्यथः	रिम्बिष्यथ
	रिम्बिष्यामि	रिम्बिष्यावः	रिम्बिष्यामः
क्रि०	अरिम्बिष्यत्	अरिम्बिष्यताम्	अरिम्बिष्यत्
	अरिम्बिष्यः	अरिम्बिष्यतम्	अरिम्बिष्यत
	अरिम्बिष्यम्	अरिम्बिष्याव	अरिम्बिष्याम

३६७. रबु (रम्ब्) गतौ।

व०	रम्बति	रम्बतः	रम्बन्ति
स०	रम्बेत्	रम्बेताम्	रम्बेयुः
प०	रम्बतु/रम्बतात्	रम्बताम्	रम्बन्तु
ह्य०	अरम्बत्	अरम्बताम्	अरम्बन्
अ०	अरम्बीत्	अरम्बिष्टाम्	अरम्बिषुः
प०	ररम्ब	ररम्बतुः	ररम्बुः
आ०	रम्ब्यात्	रम्ब्यास्ताम्	रम्ब्यासुः
श्व०	रम्बिता	रम्बितारौ	रम्बितारः
भ०	रम्बिष्यति	रम्बिष्यतः	रम्बिष्यन्ति
क्रि०	अरम्बिष्यत्	अरम्बिष्यताम्	अरम्बिष्यन्

३६८. कुबु (कुम्ब्) आच्छादने।

व०	कुम्बति	कुम्बतः	कुम्बन्ति
	कुम्बसि	कुम्बथः	कुम्बथ

१. अषोपदेशत्वात् सिसर्बयिषति, षोपदेशत्वात् सिषर्बयिषति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	कुम्बामि	कुम्बाव:	कुम्बाम:
स०	कुम्बेत्	कुम्बेताम्	कुम्बेयु:
	कुम्बे:	कुम्बेतम्	कुम्बेत
	कुम्बेयम्	कुम्बेव	कुम्बेम
प०	कुम्बतु/कुम्बतात्	कुम्बताम्	कुम्बन्तु
	कुम्ब/कुम्बतात्	कुम्बतम्	कुम्बत
	कुम्बानि	कुम्बाव	कुम्बाम
ह्य०	अकुम्बत्	अकुम्बताम्	अकुम्बन्
	अकुम्ब:	अकुम्बतम्	अकुम्बत
	अकुम्बतम्	अकुम्बाव	अकुम्बाम
अ०	अकुम्बीत्	अकुम्बिष्टाम्	अकुम्बिषु:
	अकुम्बी:	अकुम्बिष्टम्	अकुम्बिष्ट
	अकुम्बिषम्	अकुम्बिष्व	अकुम्बिष्म
प०	चुकुम्ब	चुकुम्बतु:	चुकुम्बु:
	चुकम्बिथ	चुकुम्बथु:	चुकुम्ब
	चुकुम्ब	चुकुम्बिव	चुकुम्बिम
आ०	कुम्ब्यात्	कुम्ब्यास्ताम्	कुम्ब्यासु:
	कुम्ब्या:	कुम्ब्यास्तम्	कुम्ब्यास्त
	कुम्ब्यासम्	कुम्ब्यास्व	कुम्ब्यास्म
श्व०	कुम्बिता	कुम्बितारौ	कुम्बितार:
	कुम्बितासि	कुम्बितास्थ:	कुम्बितास्थ
	कुम्बितास्मि	कुम्बितास्व:	कुम्बितास्म:
भ०	कुम्बिष्यति	कुम्बिष्यत:	कुम्बिष्यन्ति
	कुम्बिष्यसि	कुम्बिष्यथ:	कुम्बिष्यथ
	कुम्बिष्यामि	कुम्बिष्याव:	कुम्बिष्याम:
क्रि०	अकुम्बिष्यत्	अकुम्बिष्यताम्	अकुम्बिष्यन्
	अकुम्बिष्य:	अकुम्बिष्यतम्	अकुम्बिष्यत
	अकुम्बिष्यम्	अकुम्बिष्याव	अकुम्बिष्याम

३६९. लुबु (लुम्ब्) अर्दने।

व०	लुम्बति	लुम्बत:	लुम्बन्ति
स०	लुम्बेत्	लुम्बेताम्	लुम्बेयु:
प०	लुम्बतु/लुम्बतात्	लुम्बताम्	लुम्बन्तु
ह्य०	अलुम्बत्	अलुम्बताम्	अलुम्बन्
अ०	अलुम्बीत्	अलुम्बिष्टाम्	अलुम्बिषु:
प०	लुलुम्ब	लुलुम्बतु:	लुलुम्बु:
आ०	लुम्ब्यात्	लुम्ब्यास्ताम्	लुम्ब्यासु:
श्व०	लुम्बिता	लुम्बितारौ	लुम्बितार:
भ०	लुम्बिष्यति	लुम्बिष्यत:	लुम्बिष्यन्ति
क्रि०	अलुम्बिष्यत्	अलुम्बिष्यताम्	अलुम्बिष्यन्

३७०. तुबु (तुम्ब्) अर्दने।

व०	तुम्बति	तुम्बत:	तुम्बन्ति
स०	तुम्बेत्	तुम्बेताम्	तुम्बेयु:
प०	तुम्बतु/तुम्बतात्	तुम्बताम्	तुम्बन्तु
ह्य०	अतुम्बत्	अतुम्बताम्	अतुम्बन्
अ०	अतुम्बीत्	अतुम्बिष्टाम्	अतुम्बिषु:
प०	तुतुम्ब	तुतुम्बतु:	तुतुम्बु:
आ०	तुम्ब्यात्	तुम्ब्यास्ताम्	तुम्ब्यासु:
श्व०	तुम्बिता	तुम्बितारौ	तुम्बितार:
भ०	तुम्बिष्यति	तुम्बिष्यत:	तुम्बिष्यन्ति
क्रि०	अतुम्बिष्यत्	अतुम्बिष्यताम्	अतुम्बिष्यन्

३७१. चुबु (चुम्ब्) वक्त्रसंयोगे।

वक्त्रेण सम्बन्धे।

व०	चुम्बति	चुम्बत:	चुम्बन्ति
स०	चुम्बेत्	चुम्बेताम्	चुम्बेयु:
प०	चुम्बचु/चुम्बतात्	चुम्बताम्	चुम्बन्तु
ह्य०	अचुम्बत्	अचुम्बताम्	अचुम्बन्
अ०	अचुम्बीत्	अचुम्बिष्टाम्	अचुम्बिषु:
प०	चुचुम्ब	चुचुम्बतु:	चुचुम्बु:
आ०	चुम्ब्यात्	चुम्ब्यास्ताम्	चुम्ब्यासु:
श्व०	चुम्बिता	चुम्बितारौ	चुम्बितार:
भ०	चुम्बिष्यति	चुम्बिष्यत:	चुम्बिष्यन्ति
क्रि०	अचुम्बिष्यत्	अचुम्बिष्यताम्	अचुम्बिष्यन्

।।अथ भान्ता अष्टौ यलवर्जा: सेटश्च।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३७२. सृभू (सृभ्) हिंसायाम्।

व०	सर्भति	सर्भतः	सर्भन्ति
	सर्भसि	सर्भथः	सर्भथ
	सर्भामि	सर्भावः	सर्भामः
स०	सर्भेत्	सर्भेताम्	सर्भेयुः
	सर्भेः	सर्भेतम्	सर्भेत
	सर्भेयम्	सर्भेव	सर्भेयुः
प०	सर्भतु/सर्भतात्	सर्भताम्	सर्भन्तु
	सर्भ/सर्भतात्	सर्भतम्	सर्भत
	सर्भाणि	सर्भाव	सर्भाम
ह्य०	असर्भत्	असर्भताम्	असर्भन्
	असर्भः	असर्भतम्	असर्भत
	असर्भतम्	असर्भाव	असर्भाम
अ०	असर्भीत्	असर्भिष्टाम्	असर्भिषुः
	असर्भीः	असर्भिष्टम्	असर्भिष्ट
	असर्भिषम्	असर्भिष्व	असर्भिष्म
प०	ससर्भ	ससृभतुः	ससृभुः
	ससर्भिथ	ससृभथुः	ससृभ
	ससर्भ	ससृभिव	ससृभिम
आ०	सृभ्यात्	सृभ्यास्ताम्	सृभ्यासुः
	सृभ्याः	सृभ्यास्तम्	सृभ्यास्त
	सृभ्यासम्	सृभ्यास्व	सृभ्यास्म
श्व०	सर्भिता	सर्भितारौ	सर्भितारः
	सर्भितासि	सर्भितास्थः	सर्भितास्थ
	सर्भितास्मि	सर्भितास्वः	सर्भितास्मः
भ०	सर्भिष्यति	सर्भिष्यतः	सर्भिष्यन्ति
	सर्भिष्यसि	सर्भिष्यथः	सर्भिष्यथ
	सर्भिष्यामि	सर्भिष्यावः	सर्भिष्यामः
क्रि०	असर्भिष्यत्	असर्भिष्यताम्	असर्भिष्यन्
	असर्भिष्यः	असर्भिष्यतम्	असर्भिष्यत
	असर्भिष्यम्	असर्भिष्याव	असर्भिष्याम

३७३. सृम्भू (सृम्भ्) हिंसायाम्।

व०	सृम्भति	सृम्भतः	सृम्भन्ति
	सृम्भसि	सृम्भथः	सृम्भथ
	सृम्भामि	सृम्भावः	सृम्भामः
स०	सृम्भेत्	सृम्भेताम्	सृम्भेयुः
	सृम्भेः	सृम्भेतम्	सृम्भेत
	सृम्भेयम्	सृम्भेव	सृम्भेम
प०	सृम्भतु/सृम्भतात्	सृम्भताम्	सृम्भन्तु
	सृम्भ/सृम्भतात्	सृम्भतम्	सृम्भत
	सृम्भाणि	सृम्भाव	सृम्भाम
ह्य०	असृम्भत्	असृम्भताम्	असृम्भन्
	असृम्भः	असृम्भतम्	असृम्भत
	असृम्भतम्	असृम्भाव	असृम्भाम
अ०	असृम्भीत्	असृम्भिष्टाम्	असृम्भिषुः
	असृम्भीः	असृम्भिष्टम्	असृम्भिष्ट
	असृम्भिषम्	असृम्भिष्व	असृम्भिष्म
प०	ससृम्भ	ससृम्भतुः	ससृम्भुः
	ससृम्भिथ	ससृम्भथुः	ससृम्भ
	ससृम्भ	ससृम्भिव	ससृम्भिम
आ०	सृभ्यात्	सृभ्यास्ताम्	सृभ्यासुः
	सृभ्याः	सृभ्यास्तम्	सृभ्यास्त
	सृभ्यासम्	सृभ्यास्व	सृभ्यास्म
श्व०	सृम्भिता	सृम्भितारौ	सृम्भितारः
	सृम्भितासि	सृम्भितास्थः	सृम्भितास्थ
	सृम्भितास्मि	सृम्भितास्वः	सृम्भितास्मः
भ०	सृम्भिष्यति	सृम्भिष्यतः	सृम्भिष्यन्ति
	सृम्भिष्यसि	सृम्भिष्यथः	सृम्भिष्यथ
	सृम्भिष्यामि	सृम्भिष्यावः	सृम्भिष्यामः
क्रि०	असृम्भिष्यत्	असृम्भिष्यताम्	असृम्भिष्यन्
	असृम्भिष्यः	असृम्भिष्यतम्	असृम्भिष्यत
	असृम्भिष्यम्	असृम्भिष्याव	असृम्भिष्याम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३७४. स्रिभू (स्रिभ्) हिंसायाम्।

व०	स्रेभति	स्रेभतः	स्रेभन्ति
स०	स्रेभेत्	स्रेभेताम्	स्रेभेयुः
प०	स्रेभतु/स्रेभतात्	स्रेभताम्	स्रेभन्तु
ह्य०	अस्रेभत्	अस्रेभताम्	अस्रेभन्
अ०	अस्रेभीत्	अस्रेभिष्टाम्	अस्रेभिषुः
प०	सिस्रेभ	सिस्रिभतुः	सिस्रिभुः
आ०	स्रिभ्यात्	स्रिभ्यास्ताम्	स्रिभ्यासुः
श्व०	स्रेभिता	स्रेभितारौ	स्रेभितारः
भ०	स्रेभिष्यति	स्रेभिष्यतः	स्रेभिष्यन्ति
क्रि०	अस्रेभिष्यत्	अस्रेभिष्यताम्	अस्रेभिष्यन्

३७५.षिम्भू (सिम्भ्) हिंसायाम्।

व०	सिम्भति	सिम्भतः	सिम्भन्ति
स०	सिम्भेत्	सिम्भेताम्	सिम्भेयुः
प०	सिम्भतु/सिम्भतात्	सिम्भताम्	सिम्भन्तु
ह्य०	असिम्भत्	असिम्भताम्	असिम्भन्
अ०	असिम्भीत्	असिम्भिष्टाम्	असिम्भिषुः
प०	सिषिम्भ	सिषिम्भतुः	सिषिम्भुः
आ०	सिभ्यात्	सिभ्यास्ताम्	सिभ्यासुः
श्व०	सिम्भिता	सिम्भितारौ	सिम्भितारः
भ०	सिम्भिष्यति	सिम्भिष्यतः	सिम्भिष्यन्ति
क्रि०	असिम्भिष्यत्	असिम्भिष्यताम्	असिम्भिष्यन्

३७६. भर्भ (भर्भ्) हिंसायाम्।

व०	भर्भति	भर्भतः	भर्भन्ति
भ०	भर्भेत्	भर्भेताम्	भर्भेयुः
प०	भर्भतु/भर्भतात्	भर्भताम्	भर्भन्तु
ह्य०	अभर्भत्	अभर्भताम्	अभर्भन्
अ०	अभर्भीत्	अभर्भिष्टाम्	अभर्भिषुः
प०	बभर्भ	बभर्भतुः	बभर्भुः
आ०	भर्भ्यात्	भर्भ्यास्ताम्	भर्भ्यासुः
श्व०	भर्भिता	भर्भितारौ	भर्भितारः
भ०	भर्भिष्यति	भर्भिष्यतः	भर्भिष्यन्ति
क्रि०	अभर्भिष्यत्	अभर्भिष्यताम्	अभर्भिष्यन्

३७७. शुम्भ (शुम्भ्) भाषणे च।

चकाराद् हिंसायाम्।

व०	शुम्भति	शुम्भतः	शुम्भन्ति
स०	शुम्भेत्	शुम्भेताम्	शुम्भेयुः
प०	शुम्भतु/शुम्भतात्	शुम्भताम्	शुम्भन्तु
ह्य०	अशुम्भत्	अशुम्भताम्	अशुम्भन्
अ०	अशुम्भीत्	अशुम्भिष्टाम्	अशुम्भिषुः
प०	शुशुम्भ	शुशुम्भतुः	शुशुम्भुः
आ०	शुभ्यात्	शुभ्यास्ताम्	शुभ्यासुः
श्व०	शुम्भिता	शुम्भितारौ	शुम्भितारः
भ०	शुम्भिष्यति	शुम्भिष्यतः	शुम्भिष्यन्ति
क्रि०	अशुम्भिष्यत्	अशुम्भिष्यताम्	अशुम्भिष्यन्

३७८. यभ (यभ्) मैथुने।

मिथुनस्य कर्मणि भावे वा।

व०	यभति	यभतः	यभन्ति
स०	यभेत्	यभेताम्	यभेयुः
प०	यभतु/यभतात्	यभताम्	यभन्तु
ह्य०	अयभत्	अयभताम्	अयभन्
अ०	अयाप्सीत्	अयाब्धाम्	अयाप्सुः
प०	ययाभ	येभतुः	येभुः
आ०	यभ्यात्	यभ्यास्ताम्	यभ्यासुः
श्व०	यब्धा	यब्धारौ	यब्धारः
भ०	यप्स्यति	यप्स्यतः	यप्स्यन्ति
क्रि०	अयप्स्यत्	अयप्स्यताम्	अयप्स्यन्

३७९. जभ (जम्भ्) मैथुने।

मिथुनस्य कर्मणि भावे वा।

व०	जम्भति	जम्भतः	जम्भन्ति
स०	जम्भेत्	जम्भेताम्	जम्भेयुः
प०	जम्भतु/जम्भतात्	जम्भताम्	जम्भन्तु
ह्य०	अजम्भत्	अजम्भताम्	अजम्भन्
अ०	अजम्भीत्	अजम्भिष्टाम्	अजम्भिषुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	जजम्भ	जजम्भतुः	जजम्भुः
आ०	जभ्यात्	जभ्यास्ताम्	जभ्यासुः
श्व०	जम्भिता	जम्भितारौ	जम्भितारः
भ०	जम्भिष्यति	जम्भिष्यतः	जम्भिष्यन्ति
क्रि०	अजम्भिष्यत्	अजम्भिष्यताम्	अजम्भिष्यन्

अथ मान्ताः सप्तदश यमूंणमगम्लृंवर्जाः सेटश्च॥

३८०. चमू (चम्) अदने।

व०	चमति	चमतः	चमन्ति
	चमसि	चमथः	चमथ
	चमामि	चमावः	चमामः
स०	चमेत्	चमेताम्	चमेयुः
	चमेः	चमेतम्	चमेत
	चमेयम्	चमेव	चमेम
म०	चमतु/चमतात्	चमताम्	चमन्तु
	चम/चमतात्	चमतम्	चमत
	चमानि	चमाव	चमाम
ह्य०	अचमत्	अचमताम्	अचमन्
	अचमः	अचमतम्	अचमत
	अचमम्	अचमाव	अचमाम

आङ्पूर्वस्य तु चतसृषु विभक्तिषु दीर्घत्वम्

व०	आचामति	आचामतः	आचामन्ति
	आचामसि	आचामथः	आचामथ
	आचामामि	आचामावः	आचामामः
स०	आचामेत्	आचामेताम्	आचामेयुः
	आचामेः	आचामेतम्	आचामेत
	आचामेयम्	आचामेव	आचामेम
प०	आचामतु	आचामतात्	आचामताम्
	आचामन्तु	आचाम	आचामतात्
	आचामतम्	आचामत	
	आचामानि	आचामाव	आचामाम
ह्य०	आचामत्	आचामताम्	आचामन्
	आचामः	आचामतम्	आचामत
	आचामम्	आचामाव	आचामाम
अ०	अचमीत्	अचमिष्टाम्	अचमिषुः
	अचमीः	अचमिष्टम्	अचमिष्ट
	अचमिषम्	अचमिष्व	अचमिष्म
प०	चचाम	चेमतुः	चेमुः
	चेमिथ	चेमथुः	चेम
	चचाम/चचम	चेमिव	चेमिम
आ०	चम्यात्	चम्यास्ताम्	चम्यासुः
	चम्याः	चम्यास्तम्	चम्यास्त
	चम्यासम्	चम्यास्व	चम्यास्म
श्व०	चमिता	चमितारौ	चमितारः
	चमितासि	चमितास्थः	चमितास्थ
	चमितास्मि	चमितास्वः	चमितास्मः
भ०	चमिष्यति	चमिष्यतः	चमिष्यन्ति
	चमिष्यसि	चमिष्यथः	चमिष्यथ
	चमिष्यामि	चमिष्यावः	चमिष्यामः
क्रि०	अचमिष्यत्	अचमिष्यताम्	अचमिष्यन्
	अचमिष्यः	अचमिष्यतम्	अचमिष्यत
	अचमिष्यम्	अचमिष्याव	अचमिष्याम

३८१. छमू (छम्) अदने।

व०	छमति	छमतः	छमन्ति
स०	छमेत्	छमेताम्	छमेयुः
प०	छमतु/छमतात्	छमताम्	छमन्तु
ह्य०	अच्छमत्	अच्छमताम्	अच्छमन्
अ०	अच्छमीत्	अच्छमिष्टाम्	अच्छमिषुः
प०	चच्छाम	चच्छमतुः	चच्छमुः
आ०	छम्यात्	छम्यास्ताम्	छम्यासुः
श्व०	छमिता	छमितारौ	छमितारः
भ०	छमिष्यति	छमिष्यतः	छमिष्यन्ति
क्रि०	अच्छमिष्यत्	अच्छमिष्यताम्	अच्छमिष्यन्

३८२. जमू (जम्) अदने।

व०	जमति	जमतः	जमन्ति
स०	जमेत्	जमेताम्	जमेयुः
प०	जमतु/जमतात्	जमताम्	जमन्तु
ह्य०	अजमत्	अजमताम्	अजमन्
अ०	अजमीत्	अजमिष्टाम्	अजमिषुः
प०	जजाम	जेमतुः	जेमुः
आ०	जम्यात्	जम्यास्ताम्	जम्यासुः
श्व०	जमिता	जमितारौ	जमितारः
भ०	जमिष्यति	जमिष्यतः	जमिष्यन्ति
क्रि०	अजमिष्यत्	अजमिष्यताम्	अजमिष्यन्

३८३. झमू (झम्) अदने।

व०	झमति	झमतः	झमन्ति
स०	झमेत्	झमेताम्	झमेयुः
प०	झमतु/झमतात्	झमताम्	झमन्तु
ह्य०	अझमत्	अझमताम्	अझमन्
अ०	अझमीत्	अझमिष्टाम्	अझमिषुः
प०	जझाम	जझमतुः	जझमुः
आ०	झम्यात्	झम्यास्ताम्	झम्यासुः
श्व०	झमिता	झमितारौ	झमितारः
भ०	झमिष्यति	झमिष्यतः	झमिष्यन्ति
क्रि०	अझमिष्यत्	अझमिष्यताम्	अझमिष्यन्

३८४. जिमू (जिम्) अदने।

व०	जेमति	जेमतः	जेमन्ति
स०	जेमेत्	जेमेताम्	जेमेयुः
प०	जेमतु/जेमतात्	जेमताम्	जेमन्तु
ह्य०	अजेमत्	अजेमताम्	अजेमन्
अ०	अजेमीत्	अजेमिष्टाम्	अजेमिषुः
प०	जिजेम	जिजिमतुः	जिजिमुः
आ०	जिम्यात्	जिम्यास्ताम्	जिम्यासुः
श्व०	जेमिता	जेमितारौ	जेमितारः
भ०	जेमिष्यति	जेमिष्यतः	जेमिष्यन्ति
क्रि०	अजेमिष्यत्	अजेमिष्यताम्	अजेमिष्यन्

३८५. क्रमू (क्रम्) पादविक्षेपे।

व०	क्रामति	क्रामतः	क्रामन्ति
	क्रामसि	क्रामथः	क्रामथ
	क्रामामि	क्रामावः	क्रामामः
		तथा	
	क्राम्यति	क्राम्यतः	क्राम्यन्ति
	क्राम्यसि	क्राम्यथः	क्राम्यथ
	क्राम्यामि	क्राम्यावः	क्राम्यामः
स०	क्रामेत्	क्रामेताम्	क्रामेयुः
	क्रामेः	क्रामेतम्	क्रामेत
	क्रामेयम्	क्रामेव	क्रामेम
		तथा	
	क्राम्येत्	क्राम्येताम्	क्राम्येयुः
	क्राम्येः	क्राम्येतम्	क्राम्येत
	क्राम्येयम्	क्राम्येव	क्राम्येम
प०	क्रामतु/क्रामतात्	क्रामताम्	क्रामन्तु
	क्राम/क्रामतात्	क्रामतम्	क्रामत
	क्रामानि	क्रामाव	क्रामाम
		तथा	
	क्राम्यतु/क्राम्यतात्	क्राम्यताम्	क्राम्यन्तु
	क्राम्य/क्राम्यतात्	क्राम्यतम्	क्राम्यत
	क्राम्यानि	क्राम्याव	क्राम्याम
ह्य०	अक्रामत्	अक्रामताम्	अक्रामन्
	अक्रामः	अक्रामतम्	अक्रामत
	अक्रामम्	अक्रामाव	अक्रामाम
		तथा	
	अक्राम्यत्	अक्राम्यताम्	अक्राम्यत्
	अक्राम्यः	अक्राम्यतम्	अक्राम्यन्
	अक्राम्यम्	अक्राम्याव	अक्राम्याम
अ०	अक्रमीत्	अक्रमिष्टाम्	अक्रमिषुः
	अक्रमीः	अक्रमिष्टम्	अक्रमिष्ट
	अक्रमिषम्	अक्रमिष्व	अक्रमिष्म
प०	चक्राम	चक्रमतुः	चक्रमुः
	चक्रमिथ	चक्रमथुः	चक्रम
	चक्राम/चक्रम	चक्रमिव	चक्रमिम
आ०	क्रम्यात्	क्रम्यास्ताम्	क्रम्यासुः
	क्रम्याः	क्रम्यास्तम्	क्रम्यास्त
	क्रम्यासम्	क्रम्यास्व	क्रम्यास्म
श्व०	क्रमिता	क्रमितारौ	क्रमितारः
	क्रमितासि	क्रमितास्थः	क्रमितास्थ
	क्रमितास्मि	क्रमितास्वः	क्रमितास्मः
भ०	क्रमिष्यति	क्रमिष्यतः	क्रमिष्यन्ति
	क्रमिष्यसि	क्रमिष्यथः	क्रमिष्यथ
	क्रमिष्यामि	क्रमिष्यावः	क्रमिष्यामः
क्रि०	अक्रमिष्यत्	अक्रमिष्यताम्	अक्रमिष्यन्
	अक्रमिष्यः	अक्रमिष्यतम्	अक्रमिष्यत
	अक्रमिष्यम्	अक्रमिष्याव	अक्रमिष्याम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३८६. यमूं (यम्) उपरमे।

उपरमो निवृत्ति:।

व०	यच्छति	यच्छत:	यच्छन्ति
स०	यच्छेत्	यच्छेताम्	यच्छेयु:
प०	यच्छतु/यच्छतात्	यच्छताम्	यच्छन्तु
ह्य०	अयच्छत्	अयच्छताम्	अयच्छन्
अ०	अयंसीत्	अयंसिष्टाम्	अयंसिषु:
प०	ययाम	येमतु:	येमु:
आ०	यम्यात्	यम्यास्ताम्	यम्यासु:
श्व०	यन्ता	यन्तारौ	यन्तार:
भ०	यंस्यति	यंस्यत:	यंस्यन्ति
क्रि०	अयंस्यत्	अयंस्यताम्	अयंस्यन्

३८७. स्यमू (स्यम्) शब्दे।

व०	स्यमति	स्यमत:	स्यमन्ति
स०	स्यमेत्	स्यमेताम्	स्यमेयु:
प०	स्यमतु/स्यमतात्	स्यमताम्	स्यमन्तु
ह्य०	अस्यमत्	अस्यमताम्	अस्यमन्
अ०	अस्यमीत्	अस्यमिष्टाम्	अस्यमिषु:
प०	सस्याम	सस्यमतु:	सस्यमु:
		तथा	
	सस्याम	स्येमतु:	स्येमु:
आ०	स्यम्यात्	स्यम्यास्ताम्	स्यम्यासु:
श्व०	स्यमिता	स्यमितारौ	स्यमितार:
भ०	स्यमिष्यति	स्यमिष्यत:	स्यमिष्यन्ति
क्रि०	अस्यमिष्यत्	अस्यमिष्यताम्	अस्यमिष्यन्

३८८. णमं (नम्) प्रह्वत्वे। नम्रत्वे इत्यर्थ:।

व०	नमति	नमत:	नमन्ति
	नमसि	नमथ:	नमथ
	नमामि	नमाव:	नमाम:
स०	नमेत्	नमेताम्	नमेयु:
	नमे:	नमेतम्	नमेत
	नमेयम्	नमेव	नमेम
प०	नमतु/नमतात्	नमताम्	नमन्तु
	नम/नमतात्	नमतम्	नमत
	नमानि	नमाव	नमाम
ह्य०	अनमत्	अनमताम्	अनमन्
	अनम:	अनमतम्	अनमत
	अनमम्	अनमाव	अनमाम
अ०	अनंसीत्	अनंसिष्टाम्	अनंसिषु:
	अनंसी:	अनंसिष्टम्	अनंसिष्ट
	अनंसिषम्	अनंसिष्व	अनंसिष्म
प०	ननाम	नेमतु:	नेमु:
	नेमिथ/ननन्थ	नेमथु:	नेम
	ननाम/ननम	नेमिव	नेमिम
आ०	नम्यात्	नम्यास्ताम्	नम्यासु:
	नम्या:	नम्यास्तम्	नम्यास्त
	नम्यासम्	नम्यास्व	नम्यास्म
श्व०	नन्ता	नन्तारौ	नन्तार:
	नन्तासि	नन्तास्थ:	नन्तास्थ
	नन्तास्मि	नन्तास्व:	नन्तास्म:
भ०	नंस्यति	नंस्यत:	नंस्यन्ति
	नंस्यसि	नंस्यथ:	नंस्यथ
	नंस्यामि	नंस्याव:	नंस्याम:
क्रि०	अनंस्यत्	अनंस्यताम्	अनंस्यन्
	अनंस्य:	अनंस्यतम्	अनंस्यत
	अनंस्यम्	अनंस्याव	अनंस्याम

३८९. षम (सम्) वैक्लव्ये।

वैक्लव्यं कातरत्वम्।

व०	समति	समत:	समन्ति
	समसि	समथ:	समथ
	समामि	समाव:	समाम:
स०	समेत्	समेताम्	समेयु:
	समे:	समेतम्	समेत
	समेयम्	समेव	समेम
प०	समतु/समतात्	समताम्	समन्तु
	सम/समतात्	समतम्	समत
	समानि	समाव	समाम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	असमत्	असमताम्	असमन्
	असमः	असमतम्	असमत
	असमम्	असमाव	असमाम
अ०	असमीत्	असमिष्टाम्	असमिषुः
	असमीः	असमिष्टम्	असमिष्ट
	असमिषम्	असमिष्व	असमिष्म
प०	ससाम	सेमतुः	सेमुः
	सेमिथ	सेमथुः	सेम
	ससाम/ससम	सेमिव	सेमिम
आ०	सम्यात्	सम्यास्ताम्	सम्यासुः
	सम्याः	सम्यास्तम्	सम्यास्त
	सम्यासम्	सम्यास्व	सम्यास्म
श्व०	समिता	समितारौ	समितारः
	समितासि	समितास्थः	समितास्थ
	समितास्मि	समितास्वः	समितास्मः
भ०	समिष्यति	समिष्यतः	समिष्यन्ति
	समिष्यसि	समिष्यथः	समिष्यथ
	समिष्यामि	समिष्यावः	समिष्यामः
क्रि०	असमिष्यत्	असमिष्यताम्	असमिष्यन्
	असमिष्यः	असमिष्यतम्	असमिष्यत
	असमिष्यम्	असमिष्याव	असमिष्याम

३९०. ष्टम (स्तम्) वैक्लव्ये।

वैक्लव्यं कातरत्वम्।

व०	स्तमति	स्तमतः	स्तमन्ति
स०	स्तमेत्	स्तमेताम्	स्तमेयुः
प०	स्तमतु/स्तमतात्	स्तमताम्	स्तमन्तु
ह्य०	अस्तमत्	अस्तमताम्	अस्तमन्
अ०	अस्तमीत्	असमिष्टाम्	असमिषुः
प०	तस्ताम	तस्तमतुः	तस्तमुः
आ०	स्तम्यात्	स्तम्यास्ताम्	स्तम्यासुः
श्व०	स्तमिता	स्तमितारौ	स्तमितारः
भ०	स्तमिष्यति	स्तमिष्यतः	स्तमिष्यन्ति
क्रि०	अस्तमिष्यत्	अस्तमिष्यताम्	अस्तमिष्यन्

३९१. अम (अम्) शब्दभक्त्योः। भक्तिर्भजनम्।

व०	अमति	अमतः	अमन्ति
स०	अमेत्	अमेताम्	अमेयुः
प०	अमतु/अमतात्	अमताम्	अमन्तु
ह्य०	आमत्	आमताम्	आमन्
अ०	आमीत्	आमिष्टाम्	आमिषुः
प०	आम	आमतुः	आमुः
आ०	अम्यात्	अम्यास्ताम्	अम्यासुः
श्व०	अमिता	अमितारौ	अमितारः
भ०	अमिष्यति	अमिष्यतः	अमिष्यन्ति
क्रि०	आमिष्यत्	आमिष्यताम्	आमिष्यन्

३९२. अम (अम्) गतौ।

अम (३९१) वद्रूपाणि; अर्थभेदार्थं पुनरुपादानम्।

३९३. द्रम (द्रम्) गतौ।

व०	द्रमति	द्रमतः	द्रमन्ति
स०	द्रमेत्	द्रमेताम्	द्रमेयुः
प०	द्रमतु/द्रमतात्	द्रमताम्	द्रमन्तु
ह्य०	अद्रमत्	अद्रमताम्	अद्रमत्
अ०	अद्रमीत्	अद्रमिष्टाम्	अद्रमिषुः
प०	दद्राम	दद्रमतुः	दद्रमुः
आ०	द्रम्यात्	द्रम्यास्ताम्	द्रम्यासुः
श्व०	द्रमिता	द्रमितारौ	द्रमितारः
भ०	द्रमिष्यति	द्रमिष्यतः	द्रमिष्यन्ति
क्रि०	अद्रमिष्यत्	अद्रमिष्यताम्	अद्रमिष्यन्

३९४. हम्म (हम्म्) गतौ।

व०	हम्मति	हम्मतः	हम्मन्ति
स०	हम्मेत्	हम्मेताम्	हम्मेयुः
प०	हम्मतु/हम्मतात्	हम्मताम्	हम्मन्तु
ह्य०	अहम्मत्	अहम्मताम्	अहम्मन्
अ०	अहम्मीत्	अहम्मिष्टाम्	अहम्मिषुः
प०	जहम्म	जहम्मतुः	जहम्मुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	हम्म्यात्	हम्म्यास्ताम्	हम्म्यासुः
श्व०	हम्मिता	हम्मितारौ	हम्मितारः
भ०	हम्मिष्यति	हम्मिष्यतः	हम्मिष्यन्ति
क्रि०	अहम्मिष्यत्	अहम्मिष्यताम्	अहम्मिष्यन्

३९५. मीमृ (मीम्) गतौ।

व०	मीमति	मीमतः	मीमन्ति
स०	मीमेत्	मीमेताम्	मीमेयुः
प०	मीमतु/मीमतात्	मीमताम्	मीमन्तु
ह्य०	अमीमत्	अमीमताम्	अमीमन्
अ०	अमीमीत्	अमीमिष्टाम्	अमीमिषुः
प०	मिमीम	मिमीमतुः	मिमीमुः
आ०	मीम्यात्	मीम्यास्ताम्	मीम्यासुः
श्व०	मीमिता	मीमितारौ	मीमितारः
भ०	मीमिष्यति	मीमिष्यतः	मीमिष्यन्ति
क्रि०	अमीमिष्यत्	अमीमिष्यताम्	अमीमिष्यन्

३९६. गम्लृं (गम्) गतौ।

व०	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
स०	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
प०	गच्छतु/गच्छतात्	गच्छताम्	गच्छन्तु
ह्य०	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
अ०	अगमत्	अगमताम्	अगमन्
प०	जगाम	जग्मतुः	जग्मुः
	जगमिथ/जगन्थ	जग्मथुः	जग्म
	जगाम/जगम	जग्मिव	जग्मिम
आ०	गम्यात्	गम्यास्ताम्	गम्यासुः
श्व०	गन्ता	गन्तारौ	गन्तारः
भ०	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
क्रि०	अगमिष्यत्	अगमिष्यताम्	अगमिष्यन्

॥अथ यान्ता अष्टौ सेटश्च॥

३९७. हय (हय्) क्लान्तौ। चकाराद्गतौ।

व०	हयति	हयतः	हयन्ति
स०	हयेत्	हयेताम्	हयेयुः
प०	हयतु/हयतात्	हयताम्	हयन्तु
ह्य०	अहयत्	अहयताम्	अहयन्
अ०	अहयीत्	अहयिष्टाम्	अहयिषुः
प०	जहाय	जहयतुः	जहयुः
आ०	हय्यात्	हय्यास्ताम्	हय्यासुः
श्व०	हयिता	हयितारौ	हयितारः
भ०	हयिष्यति	हयिष्यतः	हयिष्यन्ति
क्रि०	अहयिष्यत्	अहयिष्यताम्	अहयिष्यन्

३९८. हर्य (हय्) क्लान्तौ; च। चकाराद्गतौ

व०	हर्यति	हर्यतः	हर्यन्ति
स०	हर्येत्	हर्येताम्	हर्येयुः
प०	हर्यतु/हर्यतात्	हर्यताम्	हर्यन्तु
ह्य०	अहर्यत्	अहर्यताम्	अहर्यन्
अ०	अहर्यीत्	अहर्यिष्टाम्	अहर्यिषुः
प०	जहर्य	जहर्यतुः	जहर्युः
आ०	हर्य्यात्	हर्य्यास्ताम्	हर्य्यासुः
	हर्यात्	हर्यास्ताम्	हर्यासुः
श्व०	हर्यिता	हर्यितारौ	हर्यितारः
भ०	हर्यिष्यति	हर्यिष्यतः	हर्यिष्यन्ति
क्रि०	अहर्यिष्यत्	अहर्यिष्यताम्	अहर्यिष्यन्

३९९. मव्य (मव्य्) बन्धने।

व०	मव्यति	मव्यतः	मव्यन्ति
स०	मव्येत्	मव्येताम्	मव्येयुः
प०	मव्यतु/मव्यतात्	मव्यताम्	मव्यन्तु
ह्य०	अमव्यत्	अमव्यताम्	अमव्यन्
अ०	अमव्यीत्	अमव्यिष्टाम्	अमव्यिषुः
प०	ममव्य	ममव्यतुः	ममव्युः
आ०	मव्यात्	मव्यास्ताम्	मव्यासुः
श्व०	मव्यिता	मव्यितारौ	मव्यितारः
भ०	मव्यिष्यति	मव्यिष्यतः	मव्यिष्यन्ति
क्रि०	अमव्यिष्यत्	अमव्यिष्यताम्	अमव्यिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४००. सूर्क्ष्य (सूर्क्ष्य्) ईर्ष्यायाम्।

ईर्ष्या कामजमसहनम्।

व०	सूर्क्ष्यति	सूर्क्ष्यत:	सूर्क्ष्यन्ति
	सूर्क्ष्यसि	सूर्क्ष्यथ:	सूर्क्ष्यथ
	सूर्क्ष्यामि	सूर्क्ष्याव:	सूर्क्ष्याम:
स०	सूर्क्ष्येत्	सूर्क्ष्येताम्	सूर्क्ष्येयु:
	सूर्क्ष्ये:	सूर्क्ष्येतम्	सूर्क्ष्येत
	सूर्क्ष्येयम्	सूर्क्ष्येव	सूर्क्ष्येम
प०	सूर्क्ष्यतु/सूर्क्ष्यतात्	सूर्क्ष्यताम्	सूर्क्ष्यन्तु
	सूर्क्ष्य/सूर्क्ष्यतात्	सूर्क्ष्यतम्	सूर्क्ष्यत
	सूर्क्ष्याणि	सूर्क्ष्याव	सूर्क्ष्याम
ह्य०	असूर्क्ष्यत्	असूर्क्ष्यताम्	असूर्क्ष्यन्
	असूर्क्ष्य:	असूर्क्ष्यतम्	असूर्क्ष्यत
	असूर्क्ष्यम्	असूर्क्ष्याव	असूर्क्ष्याम
अ०	असूर्क्ष्यीत्	असूर्क्ष्यिष्टाम्	असूर्क्ष्यिषु:
	असूर्क्ष्यी:	असूर्क्ष्यिष्टम्	असूर्क्ष्यिष्ट
	असूर्क्ष्यिषम्	असूर्क्ष्यिष्व	असूर्क्ष्यिष्म
प०	सुसूर्क्ष्य	सुसूर्क्ष्यतु:	सुसूर्क्ष्यु:
	सुसूर्क्ष्यिथ	सुसूर्क्ष्यथु:	सुसूर्क्ष्य
	सुसूर्क्ष्य	सुसूर्क्ष्यिव	सुसूर्क्ष्यिम
आ०	सूर्क्ष्य्यात्	सूर्क्ष्य्यास्ताम्	सूर्क्ष्य्यासु:
	सूर्क्ष्य्या:	सूर्क्ष्य्यास्तम्	सूर्क्ष्य्यास्त
	सूर्क्ष्य्यासम	सूर्क्ष्य्यास्व	सूर्क्ष्य्यास्म
		तथा	
	सूर्क्ष्यात्	सूर्क्ष्यास्ताम्	सूर्क्ष्यासु:
	सूर्क्ष्या:	सूर्क्ष्यास्तम्	सूर्क्ष्यास्त
	सूर्क्ष्यासम्	सूर्क्ष्यास्व	सूर्क्ष्यास्म
श्व०	सूर्क्ष्यिता	सूर्क्ष्यितारौ	सूर्क्ष्यितार:
	सूर्क्ष्यितासि	सूर्क्ष्यितास्थ:	सूर्क्ष्यितास्थ
	सूर्क्ष्यितास्मि	सूर्क्ष्यितास्व:	सूर्क्ष्यितास्म:
भ०	सूर्क्ष्यिष्यति	सूर्क्ष्यिष्यत:	सूर्क्ष्यिष्यन्ति
	सूर्क्ष्यिष्यसि	सूर्क्ष्यिष्यथ:	सूर्क्ष्यिष्यथ
	सूर्क्ष्यिष्यामि	सूर्क्ष्यिष्याव:	सूर्क्ष्यिष्याम:
क्रि०	असूर्क्ष्यिष्यत्	असूर्क्ष्यिष्यताम्	असूर्क्ष्यिष्यन्
	असूर्क्ष्यिष्य:	असूर्क्ष्यिष्यतम्	असूर्क्ष्यिष्यत
	असूर्क्ष्यिष्यम्	असूर्क्ष्यिष्याव	असूर्क्ष्यिष्याम

४०१. ईर्क्ष्य (ईर्क्ष्य्) ईर्ष्यायाम्।

ईर्ष्या कामजमसहनम्।

व०	ईर्क्ष्यति	ईर्क्ष्यत:	ईर्क्ष्यन्ति
	ईर्क्ष्यसि	ईर्क्ष्यथ:	ईर्क्ष्यथ
	ईर्क्ष्यामि	ईर्क्ष्याव:	ईर्क्ष्याम:
स०	ईर्क्ष्येत्	ईर्क्ष्येताम्	ईर्क्ष्येयु:
	ईर्क्ष्ये:	ईर्क्ष्येतम्	ईर्क्ष्येत
	ईर्क्ष्येयम्	ईर्क्ष्येव	ईर्क्ष्येम
प०	ईर्क्ष्यतु/ईर्क्ष्यतात्	ईर्क्ष्यताम्	ईर्क्ष्यन्तु
	ईर्क्ष्य/ईर्क्ष्यतात्	ईर्क्ष्यतम्	ईर्क्ष्यत
	ईर्क्ष्याणि	ईर्क्ष्याव	ईर्क्ष्याम
ह्य०	ऐर्क्ष्यत्	ऐर्क्ष्यताम्	ऐर्क्ष्यन्
	ऐर्क्ष्य:	ऐर्क्ष्यतम्	ऐर्क्ष्यत
	ऐर्क्ष्यम्	ऐर्क्ष्याव	ऐर्क्ष्याम
अ०	ऐर्क्ष्यीत्	ऐर्क्ष्यिष्टाम्	ऐर्क्ष्यिषु:
	ऐर्क्ष्यी:	ऐर्क्ष्यिष्टम्	ऐर्क्ष्यिष्ट
	ऐर्क्ष्यिषम्	ऐर्क्ष्यिष्व	ऐर्क्ष्यिष्म
प०	ईर्क्ष्याञ्चकार	ईर्क्ष्याञ्चक्रतु:	ईर्क्ष्याञ्चक्रु:
	ईर्क्ष्याञ्चकर्थ	ईर्क्ष्याञ्चक्रथु:	ईर्क्ष्याञ्चक्र
	ईर्क्ष्याञ्चकार/ईर्क्ष्याञ्चकर	ईर्क्ष्याञ्चकृव	ईर्क्ष्याञ्चकृम
	ईर्क्ष्याम्बभूव	ईर्क्ष्यामास	
आ०	ईर्क्ष्य्यात्	ईर्क्ष्य्यास्ताम्	ईर्क्ष्य्यासु:
	ईर्क्ष्य्या:	ईर्क्ष्य्यास्तम्	ईर्क्ष्य्यास्त
	ईर्क्ष्य्यासम	ईर्क्ष्य्यास्व	ईर्क्ष्य्यास्म
		तथा	
	ईर्क्ष्यात्	ईर्क्ष्यास्ताम्	ईर्क्ष्यासु:
	ईर्क्ष्या:	ईर्क्ष्यास्तम्	ईर्क्ष्यास्त
	ईर्क्ष्यासम्	ईर्क्ष्यास्व	ईर्क्ष्यास्म
श्व०	ईर्क्ष्यिता	ईर्क्ष्यितारौ	ईर्क्ष्यितार:
	ईर्क्ष्यितासि	ईर्क्ष्यितास्थ:	ईर्क्ष्यितास्थ
	ईर्क्ष्यितास्मि	ईर्क्ष्यितास्व:	ईर्क्ष्यितास्म:
भ०	ईर्क्ष्यिष्यति	ईर्क्ष्यिष्यत:	ईर्क्ष्यिष्यन्ति
	ईर्क्ष्यिष्यसि	ईर्क्ष्यिष्यथ:	ईर्क्ष्यिष्यथ
	ईर्क्ष्यिष्यामि	ईर्क्ष्यिष्याव:	ईर्क्ष्यिष्याम:
क्रि०	ऐर्क्ष्यिष्यत्	ऐर्क्ष्यिष्यताम्	ऐर्क्ष्यिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	ऐक्ष्यिर्ष्य:	ऐक्ष्यिर्ष्यतम्	ऐक्ष्यिर्ष्यत
	ऐक्ष्यिर्ष्यम्	ऐक्ष्यिर्ष्याव	ऐक्ष्यिर्ष्याम

४०२. ईर्ष्य (ईर्ष्य्) ईर्ष्यायाम्।

ईर्ष्या कामजमसहनम्।

व०	ईर्ष्यति	ईर्ष्यत:	ईर्ष्यन्ति
स०	ईर्ष्येत्	ईर्ष्येताम्	ईर्ष्येयु:
प०	ईर्ष्यतु/ईर्ष्यतात्	ईर्ष्यताम्	ईर्ष्यन्तु
ह्य०	ऐर्ष्यत्	ऐर्ष्यताम्	ऐर्ष्यन्
अ०	ऐर्ष्यीत्	ऐर्ष्यिष्टाम्	ऐर्ष्यिषु:
प०	ईर्ष्याञ्चकार	ईर्ष्याञ्चक्रतु:	ईर्ष्याञ्चक्रु:
	ईर्ष्याम्बभूव/ ईर्ष्यामास		
आ०	ईर्ष्य्यात्	ईर्ष्य्यास्ताम्	ईर्ष्य्यासु:
		तथा	
	ईर्ष्यात्	ईर्ष्यास्ताम्	ईर्ष्यासु:
श्व०	ईर्ष्यिता	ईर्ष्यितारौ	ईर्ष्यितार:
भ०	ईर्ष्यिष्यति	ईर्ष्यिष्यत:	ईर्ष्यिष्यन्ति
क्रि०	ऐर्ष्यिष्यत्	ऐर्ष्यिष्यताम्	ऐर्ष्यिष्यन्

४०३. शुच्यै (शुच्य्) अभिषवे।

अभिषवो द्रवेण द्रवाणां परिवासनम् स्नानमिति चान्द्रा:।

व०	शुच्यति	शुच्यत:	शुच्यन्ति
	शुच्यसि	शुच्यथ:	शुच्यथ
	शुच्यामि	शुच्याव:	शुच्याम:
स०	शुच्येत्	शुच्येताम्	शुच्येयु:
	शुच्ये:	शुच्येतम्	शुच्येत
	शुच्येयम्	शुच्येव	शुच्येम
प०	शुच्यतु/शुच्यतात्	शुच्यताम्	शुच्यन्तु
	शुच्य/शुच्यतात्	शुच्यतम्	शुच्यत
	शुच्यानि	शुच्याव	शुच्याम
ह्य०	अशुच्यत्	अशुच्यताम्	अशुच्यन्
	अशुच्य:	अशुच्यतम्	अशुच्यत
	अशुच्यम्	अशुच्याव	अशुच्याम
अ०	अशुच्यीत्	अशुच्यिष्टाम्	अशुच्यिषु:
	अशुच्यी:	अशुच्यिष्टम्	अशुच्यिष्ट
	अशुच्यिषम्	अशुच्यिष्व	अशुच्यिष्म
प०	शुशुच्य	शुशुच्यतु:	शुशुच्यु:
	शुशुच्यिथ	शुशुच्यथु:	शुशुच्य
	शुशुच्य	शुशुच्यिव	शुशुच्यिम
आ०	शुच्य्यात्	शुच्य्यास्ताम्	शुच्य्यासु:
	शुच्य्या:	शुच्य्यास्तम्	शुच्य्यास्त
	शुच्य्यासम्	शुच्य्यास्व	शुच्य्यास्म
		तथा	
	शुच्यात्	शुच्यास्ताम्	शुच्यासु:
	शुच्या:	शुच्यास्तम्	शुच्यास्त
	शुच्यासम्	शुच्यास्व	शुच्यास्म
श्व०	शुच्यिता	शुच्यितारौ	शुच्यितार:
	शुच्यितासि	शुच्यितास्थ:	शुच्यितास्थ
	शुच्यितास्मि	शुच्यितास्व:	शुच्यितास्म:
भ०	शुच्यिष्यति	शुच्यिष्यत:	शुच्यिष्यन्ति
	शुच्यिष्यसि	शुच्यिष्यथ:	शुच्यिष्यथ
	शुच्यिष्यामि	शुच्यिष्याव:	शुच्यिष्याम:
क्रि०	अशुच्यिष्यत्	अशुच्यिष्यताम्	अशुच्यिष्यश्
	अशुच्यिष्य:	अशुच्यिष्यतम्	अशुच्यिष्यत
	अशुच्यिष्यम्	अशुच्यिष्याव	अशुच्यिष्याम

४०४. चुच्यै (चुच्य्) अभिषवे।

द्रवेण द्रवाणां परिवासने इत्यर्थ:।

व०	चुच्यति	चुच्यत:	चुच्यन्ति
स०	चुच्येत्	चुच्येताम्	चुच्येयु:
प०	चुच्यतु/चुच्यतात्	चुच्यताम्	चुच्यन्तु
ह्य०	अचुच्यत्	अचुच्यताम्	अचुच्यन्
अ०	अचुच्यीत्	अचुच्यिष्टाम्	अचुच्यिषु:
प०	चुचुच्य	चुचुच्यतु:	चुचुच्यु:
आ०	चुच्यात्	चुच्यास्ताम्	चुच्यासु:
	चुच्य्यात्	चुच्य्यास्ताम्	चुच्य्यासु:
श्व०	चुच्यिता	चुच्यितारौ	चुच्यितार:
भ०	चुच्यिष्यति	चुच्यिष्यत:	चुच्यिष्यन्ति
क्रि०	अचुच्यिष्यत्	अचुच्यिष्यताम्	अचुच्यिष्यन्

।। अथ रान्ता अष्टौ सेटश्च।।

४०५. त्सर (त्सर्) छद्मगतौ छद्मप्रकारे

व०	त्सरति	त्सरत:	त्सरन्ति
	त्सरसि	त्सरथ:	त्सरथ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	त्सरामि	त्सराव:	त्सराम:
स०	त्सरेत्	त्सरेताम्	त्सरेयु:
	त्सरे:	त्सरेतम्	त्सरेत
	त्सरेयम्	त्सरेव	त्सरेम
प०	त्सरतु/त्सरतात्	त्सरताम्	त्सरन्तु
	त्सर/त्सरतात्	त्सरतम्	त्सरत
	त्सराणि	त्सराव	त्सराम
ह्य०	अत्सरत्	अत्सरताम्	अत्सरन्
	अत्सर:	अत्सरतम्	अत्सरत
	अत्सरम्	अत्सराव	अत्सराम
अ०	अत्सारीत्	अत्सारिष्टाम्	अत्सारिषु:
	अत्सारी:	अत्सारिष्टम्	अत्सारिष्ट
	अत्सारिषम्	अत्सारिष्व	अत्सारिष्म
प०	तत्सार	तत्सरतु:	तत्सरु:
	तत्सरिथ	तत्सरथु:	तत्सर
	तत्सार/तत्सर	तत्सरिव	तत्सरिम
आ०	त्सर्यात्	त्सर्यास्ताम्	त्सर्यासु:
	त्सर्या:	त्सर्यास्तम्	त्सर्यास्त
	त्सर्यासम्	त्सर्यास्व	त्सर्यास्म
श्व०	त्सरिता	त्सरितारौ	त्सरितार:
	त्सरितासि	त्सरितास्थ:	त्सरितास्थ
	त्सरितास्मि	त्सरितास्व:	त्सरितास्म:
भ०	त्सरिष्यति	त्सरिष्यत:	त्सरिष्यन्ति
	त्सरिष्यसि	त्सरिष्यथ:	त्सरिष्यथ
	त्सरिष्यामि	त्सरिष्याव:	त्सरिष्याम:
क्रि०	अत्सरिष्यत्	अत्सरिष्यताम्	अत्सरिष्यन्
	अत्सरिष्य:	अत्सरिष्यतम्	अत्सरिष्यत
	अत्सरिष्यम्	अत्सरिष्याव	अत्सरिष्याम

४०६. क्मर (क्मर्) हूर्च्छने।

कौटिल्ये इत्यर्थ:।

व०	क्मरति	क्मरत:	क्मरन्ति
स०	क्मरेत्	क्मरेताम्	क्मरेयु:
प०	क्मरतु/क्मरतात्	क्मरताम्	क्मरन्तु
ह्य०	अक्मरत्	अक्मरताम्	अक्मरन्
अ०	अक्मारीत्	अक्मारिष्टाम्	अक्मारिषु:
प०	चक्मार	चक्मरतु:	चक्मरु:
आ०	क्मर्यात्	क्मर्यास्ताम्	क्मर्यासु:
श्व०	क्मरिता	क्मरितारौ	क्मरितार:
भ०	क्मरिष्यति	क्मरिष्यत:	क्मरिष्यन्ति
क्रि०	अक्मरिष्यत्	अक्मरिष्यताम्	अक्मरिष्यन्

अभ्र बभ्र मभ्र गतौ।

४०७. अभ्र (अभ्र्) गतौ।

व०	अभ्रति	अभ्रत:	अभ्रन्ति
	अभ्रसि	अभ्रथ:	अभ्रथ
	अभ्रामि	अभ्राव:	अभ्राम:
स०	अभ्रेत्	अभ्रेताम्	अभ्रेयु:
	अभ्रे:	अभ्रेतम्	अभ्रेत
	अभ्रेयम्	अभ्रेव	अभ्रेम
प०	अभ्रतु/अभ्रतात्	अभ्रताम्	अभ्रन्तु
	अभ्र/अभ्रतात्	अभ्रतम्	अभ्रत
	अभ्राणि	अभ्राव	अभ्राम
ह्य०	आभ्रत्	आभ्रताम्	आभ्रन्
	आभ्र:	आभ्रतम्	आभ्रत
	आभ्रम्	आभ्राव	आभ्राम
अ०	आभ्रीत्	आभ्रिष्टाम्	आभ्रिषु:
	आभ्री:	आभ्रिष्टम्	आभ्रिष्ट
	आभ्रिषम्	आभ्रिष्व	आभ्रिष्म
प०	आनभ्र	आनभ्रतु:	आनभ्र:
	आनभ्रिथ	आनभ्रथु:	आनभ्र
	आनभ्र	आनभ्रिव	आनभ्रिम
आ०	अभ्र्यात्	अभ्र्यास्ताम्	अभ्र्यासु:
	अभ्र्या:	अभ्र्यास्तम्	अभ्र्यास्त
	अभ्र्यासम्	अभ्र्यास्व	अभ्र्यास्म
श्व०	अभ्रिता	अभ्रितारौ	अभ्रितार:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अभ्रितासि	अभ्रितास्थः	अभ्रितास्थ
	अभ्रितास्मि	अभ्रितास्वः	अभ्रितास्मः
भ०	अभ्रिष्यति	अभ्रिष्यतः	अभ्रिष्यन्ति
	अभ्रिष्यसि	अभ्रिष्यथः	अभ्रिष्यथ
	अभ्रिष्यामि	अभ्रिष्यावः	अभ्रिष्यामः
क्रि०	आभ्रिष्यत्	आभ्रिष्यताम्	आभ्रिष्यन्
	आभ्रिष्यः	आभ्रिष्यतम्	आभ्रिष्यत
	आभ्रिष्यम्	आभ्रिष्याव	आभ्रिष्याम

४०८. बभ्र (बभ्र्) गतौ।

व०	बभ्रति	बभ्रतः	बभ्रन्ति
स०	बभ्रेत्	बभ्रेताम्	बभ्रेयुः
प०	बभ्रतु/बभ्रतात्	बभ्रताम्	बभ्रन्तु
ह्य०	अबभ्रत्	अबभ्रताम्	अबभ्रब्
अ०	अबभ्रीत्	अबभ्रिष्टाम्	अबभ्रिषुः
प०	बबभ्र	बबभ्रतुः	बबभ्रुः
आ०	बभ्र्यात्	बभ्र्यास्ताम्	बभ्र्यासुः
श्व०	बभ्रिता	बभ्रितारौ	बभ्रितारः
भ०	बभ्रिष्यति	बभ्रिष्यतः	बभ्रिष्यन्ति
क्रि०	अबभ्रिष्यत्	अबभ्रिष्यताम्	अबभ्रिष्यन्

४०९. मभ्र (मभ्र्) गतौ।

व०	मभ्रति	मभ्रतः	मभ्रन्ति
स०	मभ्रेत्	मभ्रेताम्	मभ्रेयुः
प०	मभ्रतु/मभ्रतात्	मभ्रताम्	मभ्रन्तु
ह्य०	अमभ्रत्	अमभ्रताम्	अमभ्रन्
अ०	अमभ्रीत्	अमभ्रिष्टाम्	अमभ्रिषुः
प०	ममभ्र	ममभ्रतुः	ममभ्रुः
आ०	मभ्र्यात्	मभ्र्यास्ताम्	मभ्र्यासुः
श्व०	मभ्रिता	मभ्रितारौ	मभ्रितारः
म०	मभ्रिष्यति	मभ्रिष्यतः	मभ्रिष्यन्ति
क्रि०	अमभ्रिष्यत्	अमभ्रिष्यताम्	अमभ्रिष्यन्

४१०. चर (चर) भक्षणे च।

चकाराद्गतौ।

व०	चरति	चरतः	चरन्ति
स०	चरेत्	चरेताम्	चरेयुः
प०	चरतु/चरतात्	चरताम्	चरन्तु
ह्य०	अचरत्	अचरताम्	अचरन्
अ०	अचारीत्	अचारिष्टाम्	अचारिषुः
प०	चचार	चेरतुः	चेरुः
आ०	चर्यात्	चर्यास्ताम्	चर्यासुः
श्व०	चरिता	चरितारौ	चरितारः
भ०	चरिष्यति	चरिष्यतः	चरिष्यन्ति
क्रि०	अचरिष्यत्	अचरिष्यताम्	अचरिष्यन्

४११. धोऋ (धोर्) गतेश्चातुर्ये।

व०	धोरति	धोरतः	धोरन्ति
स०	धोरेत्	धोरेताम्	धोरेयुः
प०	धोरतु/धोरतात्	धोरताम्	धोरन्तु
ह्य०	अधोरत्	अधोरताम्	अधोरन्
अ०	अधोरीत्	अधोरिष्टाम्	अधोरिषुः
प०	दुधोर	दुधोरतुः	दुधोरुः
आ०	धोर्यात्	धोर्यास्ताम्	धोर्यासुः
श्व०	धोरिता	धोरितारौ	धोरितारः
भ०	धोरिष्यति	धोरिष्यतः	धोरिष्यन्ति
क्रि०	अधोरिष्यत्	अधोरिष्यताम्	अधोरिष्यन्

४१२. खोऋ (खोर्) प्रतीघाते।

गतेरित्यनुवृत्तेर्गतिप्रतीघाते।

व०	खोरति	खोरतः	खोरन्ति
स०	खोरेत्	खोरेताम्	खोरेयुः
प०	खोरतु/खोरतात्	खोरताम्	खोरन्तु
ह्य०	अखोरत्	अखोरताम्	अखोरन्
अ०	अखोरीत्	अखोरिष्टाम्	अखोरिषुः
प०	चुखोर	चुखोरतुः	चुखोरुः
आ०	खोर्यात्	खोर्यास्ताम्	खोर्यासुः
श्व०	खोरिता	खोरितारौ	खोरितारः
भ०	खोरिष्यति	खोरिष्यतः	खोरिष्यन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रि०	अखोरिष्यत्	अखोरिष्यताम्	अखोरिष्यन्

४१३. दल (दल्) विशरणे।

अथ लान्ताश्चत्वारिंशत्सेटश्च।

व०	दलति	दलतः	दलन्ति
स०	दलेत्	दलेताम्	दलेयुः
प०	दलतु/दलतात्	दलताम्	दलन्तु
ह्य०	अदलत्	अदलताम्	अदलन्
अ०	अदालीत्	अदालिष्टाम्	अदालिषुः
प०	ददाल	देलतुः	देलुः
आ०	दल्यात्	दल्यास्ताम्	दल्यासुः
श्व०	दलिता	दलितारौ	दलितारः
भ०	दलिष्यति	दलिष्यतः	दलिष्यन्ति
क्रि०	अदलिष्यत्	अदलिष्यताम्	अदलिष्यन्

४१४. ञिफला (फल्) विशरणे।

व०	फलति	फलतः	फलन्ति
स०	फलेत्	फलेताम्	फलेयुः
प०	फलतु/फलतात्	फलताम्	फलन्तु
ह्य०	अफलत्	अफलताम्	अफलन्
अ०	अफालीत्	अफालिष्टाम्	अफालिषुः
प०	पफाल	फेलतुः	फेलुः
आ०	फल्यात्	फल्यास्ताम्	फल्यासुः
श्व०	फलिता	फलितारौ	फलितारः
भ०	फलिष्यति	फलिष्यतः	फलिष्यन्ति
क्रि०	अफलिष्यत्	अफलिष्यताम्	अफलिष्यन्

४१५. मील (मील्) निमेषणे।[1]

व०	मीलति	मीलतः	मीलन्ति
	मीलसि	मीलथः	मीलथ
	मीलामि	मीलावः	मीलामः
स०	मीलेत्	मीलेताम्	मीलेयुः
	मीलेः	मीलेतम्	मीलेत
	मीलेयम्	मीलेव	मीलेम
प०	मीलतु/मीलतात्	मीलताम्	मीलन्तु
	मील/मीलतात्	मीलतम्	मीलत
	मीलानि	मीलाव	मीलाम
ह्य०	अमीलत्	अमीलताम्	अमीलन्
	अमीलः	अमीलतम्	अमीलत
	अमीलम्	अमीलाव	अमीलाम
अ०	अमीलीत्	अमीलिष्टाम्	अमीलिषुः
	अमीलीः	अमीलिष्टम्	अमीलिष्ट
	अमीलिषम्	अमीलिष्व	अमीलिष्म
प०	मिमील	मिमीलतुः	मिमीलुः
	मिमीलिथ	मिमीलथुः	मिमील
	मिमील	मिमीलिव	मिमीलिम
आ०	मील्यात्	मील्यास्ताम्	मील्यासुः
	मील्याः	मील्यास्तम्	मील्यास्त
	मील्यासम्	मील्यास्व	मील्यास्म
श्व०	मीलिता	मीलितारौ	मीलितारः
	मीलितासि	मीलितास्थः	मीलितास्थ
	मीलितास्मि	मीलितास्वः	मीलितास्मः
भ०	मीलिष्यति	मीलिष्यतः	मीलिष्यन्ति
	मीलिष्यसि	मीलिष्यथः	मीलिष्यथ
	मीलिष्यामि	मीलिष्यावः	मीलिष्यामः
क्रि०	अमीलिष्यत्	अमीलिष्यताम्	अमीलिष्यन्
	अमीलिष्यः	अमीलिष्यतम्	अमीलिष्यत
	अमीलिष्यम्	अमीलिष्याव	अमीलिष्याम

४१६. श्मील (श्मील्) निमेषणे।

निमेषणं सङ्कोचः।

व०	श्मीलति	श्मीलतः	श्मीलन्ति
स०	श्मीलेत्	श्मीलेताम्	श्मीलेयुः
प०	श्मीलतु/श्मीलतात्	श्मीलताम्	श्मीलन्तु
ह्य०	अश्मीलत्	अश्मीलताम्	अश्मीलन्
अ०	अश्मीलीत्	अश्मीलिष्टाम्	अश्मीलिषुः

१. निमेषणं सङ्कोचः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	शिश्मील	शिश्मीलतुः	शिश्मीलुः
आ०	श्मील्यात्	श्मील्यास्ताम्	श्मील्यासुः
श्व०	श्मीलिता	श्मीलितारौ	श्मीलितारः
भ०	श्मीलिष्यति	श्मीलिष्यतः	श्मीलिष्यन्ति
क्रि०	अश्मीलिष्यत्	अश्मीलिष्यताम्	अश्मीलिष्यन्

४१७. स्मील (स्मील्) निमेषणे।

निमेषणं सङ्कोचः।

व०	स्मीलति	स्मीलतः	स्मीलन्ति
स०	स्मीलेत्	स्मीलेताम्	स्मीलेयुः
प०	स्मीलतु/स्मीलतात्	स्मीलताम्	स्मीलन्तु
ह्य०	अस्मीलत्	अस्मीलताम्	अस्मीलन्
अ०	अस्मीलीत्	अस्मीलिष्टाम्	अस्मीलिषुः
प०	सिस्मील	सिस्मीलतुः	सिस्मीलुः
आ०	स्मील्यात्	स्मील्यास्ताम्	स्मील्यासुः
श्व०	स्मीलिता	स्मीलितारौ	स्मीलितारः
भ०	स्मीलिष्यति	स्मीलिष्यतः	स्मीलिष्यन्ति
क्रि०	अस्मीलिष्यत्	अस्मीलिष्यताम्	अस्मीलिष्यन्

४१८. क्ष्मील (क्ष्मील्) निमेषणे।

निमेषणं सङ्कोचः।

व०	क्ष्मीलति	क्ष्मीलतः	क्ष्मीलन्ति
स०	क्ष्मीलेत्	क्ष्मीलेताम्	क्ष्मीलेयुः
प०	क्ष्मीलतु/क्ष्मीलतात्	क्ष्मीलताम्	क्ष्मीलन्तु
ह्य०	अक्ष्मीलत्	अक्ष्मीलताम्	अक्ष्मीलन्
अ०	अक्ष्मीलीत्	अक्ष्मीलिष्टाम्	अक्ष्मीलिषुः
प०	चिक्ष्मील	चिक्ष्मीलतुः	चिक्ष्मीलुः
आ०	क्ष्मील्यात्	क्ष्मील्याक्ष्ताम्	क्ष्मील्यासुः
श्व०	क्ष्मीलिता	क्ष्मीलितारौ	क्ष्मीलितारः
भ०	क्ष्मीलिष्यति	क्ष्मीलिष्यतः	क्ष्मीलिष्यन्ति
क्रि०	अक्ष्मीलिष्यत्	अक्ष्मीलिष्यताम्	अक्ष्मीलिष्यन्

४१९. पील (पील्) प्रतिष्टम्भे।

प्रतिष्टम्भो रोपणतम्

व०	पीलति	पीलतः	पीलन्ति
स०	पीलेत्	पीलेताम्	पीलेयुः
प०	पीलतु/पीलतात्	पीलताम्	पीलन्तु
ह्य०	अपीलत्	अपीलताम्	अपीलन्
अ०	अपीलीत्	अपीलिष्टाम्	अपीलिषुः
प०	पिपील	पिपीलतुः	पिपीलुः
आ०	पील्यात्	पील्यास्ताम्	पील्यासुः
श्व०	पीलिता	पीलितारौ	पीलितारः
भ०	पीलिष्यति	पीलिष्यतः	पीलिष्यन्ति
क्रि०	अपीलिष्यत्	अपीलिष्यताम्	अपीलिष्यन्

४२०. णील (नील्) वर्णे।

वर्णोपलक्षितायां क्रियायामित्यर्थः।

व०	नीलति	नीलतः	नीलन्ति
स०	नीलेत्	नीलेताम्	नीलेयुः
प०	नीलतु/नीलतात्	नीलताम्	नीलन्तु
ह्य०	अनीलत्	अनीलताम्	अनीलन्
अ०	अनीलीत्	अनीलिष्टाम्	अनीलिषुः
प०	निनील	निनीलतुः	निनीलुः
आ०	नील्यात्	नील्यास्ताम्	नील्यासुः
श्व०	नीलिता	नीलितारौ	नीलितारः
भ०	नीलिष्यति	नीलिष्यतः	नीलिष्यन्ति
क्रि०	अनीलिष्यत्	अनीलिष्यताम्	अनीलिष्यन्

४२१. शील (शील्) समाधौ।

समाधिरैकाग्र्यम्।

व०	शीलति	शीलतः	शीलन्ति
स०	शीलेत्	शीलेताम्	शीलेयुः
प०	शीलतु/शीलतात्	शीलताम्	शीलन्तु
ह्य०	अशीलत्	अशीलताम्	अशीलन्
अ०	अशीलीत्	अशीलिष्टाम्	अशीलिषुः
प०	शिशील	शिशीलतुः	शिशीलुः
आ०	शील्यात्	शील्यास्ताम्	शील्यासुः
श्व०	शीलिता	शीलितारौ	शीलितारः
भ०	शीलिष्यति	शीलिष्यतः	शीलिष्यन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रि०	अशीलिष्यत्	अशीलिष्यताम्	अशीलिष्यन्

४२२. कील (कील्) बन्धे।

व०	कीलति	कीलतः	कीलन्ति
स०	कीलेत्	कीलेताम्	कीलेयुः
प०	कीलतु/कीलतात्	कीलताम्	कीलन्तु
ह्य०	अकीलत्	अकीलताम्	अकीलन्
अ०	अकीलीत्	अकीलिष्टाम्	अकीलिषुः
प०	चिकील	चिकीलतुः	चिकीलुः
आ०	कील्यात्	कील्यास्ताम्	कील्यासुः
श्व०	कीलिता	कीलितारौ	कीलितारः
भ०	कीलिष्यति	कीलिष्यतः	कीलिष्यन्ति
क्रि०	अकीलिष्यत्	अकीलिष्यताम्	अकीलिष्यन्

४२३. कूल (कूल्) आवरणे।

व०	कूलति	कूलतः	कूलन्ति
स०	कूलेत्	कूलेताम्	कूलेयुः
प०	कूलतु/कूलतात्	कूलताम्	कूलन्तु
ह्य०	अकूलत्	अकूलताम्	अकूलन्
अ०	अकूलीत्	अकूलिष्टाम्	अकूलिषुः
प०	चुकूल	चुकूलतुः	चुकूलुः
आ०	कूल्यात्	कूल्यास्ताम्	कूल्यासुः
श्व०	कूलिता	कूलितारौ	कूलितारः
भ०	कूलिष्यति	कूलिष्यतः	कूलिष्यन्ति
क्रि०	अकूलिष्यत्	अकूलिष्यताम्	अकूलिष्यन्

४२४. शूल (शूल्) रुजायाम्।

व०	शूलति	शूलतः	शूलन्ति
स०	शूलेत्	शूलेताम्	शूलेयुः
प०	शूलतु/शूलतात्	शूलताम्	शूलन्तु
ह्य०	अशूलत्	अशूलताम्	अशूलन्
अ०	अशूलीत्	अशूलिष्टाम्	अशूलिषुः
प०	शुशूल	शुशूलतुः	शुशूलुः
आ०	शूल्यात्	शूल्यास्ताम्	शूल्यासुः
श्व०	शूलिता	शूलितारौ	शूलितारः
भ०	शूलिष्यति	शूलिष्यतः	शूलिष्यन्ति
क्रि०	अशूलिष्यत्	अशूलिष्यताम्	अशूलिष्यन्

४२५. तूल (तूल्) निष्कर्षे।[1]

व०	तूलति	तूलतः	तूलन्ति
स०	तूलेत्	तूलेताम्	तूलेयुः
प०	तूलतु/तूलतात्	तूलताम्	तूलन्तु
ह्य०	अतूलत्	अतूलताम्	अतूलन्
अ०	अतूलीत्	अतूलिष्टाम्	अतूलिषुः
प०	तुतूल	तुतूलतुः	तुतूलुः
आ०	तूल्यात्	तूल्यास्ताम्	तूल्यासुः
श्व०	तूलिता	तूलितारौ	तूलितारः
भ०	तूलिष्यति	तूलिष्यतः	तूलिष्यन्ति
क्रि०	अतूलिष्यत्	अतूलिष्यताम्	अतूलिष्यन्

४२६. पूल (पूल्) संघाते।

व०	पूलति	पूलतः	पूलन्ति
स०	पूलेत्	पूलेताम्	पूलेयुः
प०	पूलतु/पूलतात्	पूलताम्	पूलन्तु
ह्य०	अपूलत्	अपूलताम्	अपूलन्
अ०	अपूलीत्	अपूलिष्टाम्	अपूलिषुः
प०	पुपूल	पुपूलतुः	पुपूलुः
आ०	पूल्यात्	पूल्यास्ताम्	पूल्यासुः
श्व०	पूलिता	पूलितारौ	पूलितारः
भ०	पूलिष्यति	पूलिष्यतः	पूलिष्यन्ति
क्रि०	अपूलिष्यत्	अपूलिष्यताम्	अपूलिष्यन्

४२७. मूल (मूल्) प्रतिष्ठायाम्।

व०	मूलति	मूलतः	मूलन्ति
स०	मूलेत्	मूलेताम्	मूलेयुः
प०	मूलतु/मूलतात्	मूलताम्	मूलन्तु
ह्य०	अमूलत्	अमूलताम्	अमूलन्

१. निष्कर्षोऽन्तर्गतस्य बहिर्निःसारणतम्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	अमूलीत्	अमूलिष्टाम्	अमूलिषुः
प०	मुमूल	मुमूलतुः	मुमूलुः
आ०	मूल्यात्	मूल्यास्ताम्	मूल्यासुः
श्व०	मूलिता	मूलितारौ	मूलितारः
भ०	मूलिष्यति	मूलिष्यतः	मूलिष्यन्ति
क्रि०	अमूलिष्यत्	अमूलिष्यताम्	अमूलिष्यन्

४२८. फूल (फल्) निष्पत्तौ।

त्रिफला (४१४) वत्

४२९. फुल्ल (फुल्ल्) विकसने।

व०	फुल्लति	फुल्लतः	फुल्लन्ति
	फुल्लसि	फुल्लथः	फुल्लथ
	फुल्लामि	फुल्लावः	फुल्लामः
स०	फुल्लेत्	फुल्लेताम्	फुल्लेयुः
	फुल्लेः	फुल्लेतम्	फुल्लेत
	फुल्लेयम्	फुल्लेव	फुल्लेम
प०	फुल्लतु/फुल्लतात्	फुल्लताम्	फुल्लन्तु
	फुल्ल/फुल्लतात्	फुल्लतम्	फुल्लत
	फुल्लानि	फुल्लाव	फुल्लाम
ह्य०	अफुल्लत्	अफुल्लताम्	अफुल्लन्
	अफुल्लः	अफुल्लतम्	अफुल्लत
	अफुल्लम्	अफुल्लाव	अफुल्लाम
अ०	अफुल्लीत्	अफुल्लिष्टाम्	अफुल्लिषुः
	अफुल्लीः	अफुल्लिष्टम्	अफुल्लिष्ट
	अफुल्लिषम्	अफुल्लिष्व	अफुल्लिष्म
प०	पुफुल्ल	पुफुल्लतुः	पुफुल्लुः
	पुफुल्लिथ	पुफुल्लथुः	पुफुल्ल
	पुफुल्ल	पुफुल्लिव	पुफुल्लिम
आ०	फुल्ल्यात्	फुल्ल्यास्ताम्	फुल्ल्यासुः
	फुल्ल्याः	फुल्ल्यास्तम्	फुल्ल्यास्त
	फुल्ल्यासम्	फुल्ल्यास्व	फुल्ल्यास्म
श्व०	फुल्लिता	फुल्लितारौ	फुल्लितारः
	फुल्लितासि	फुल्लितास्थः	फुल्लितास्थ
	फुल्लितास्मि	फुल्लितास्वः	फुल्लितास्मः
भ०	फुल्लिष्यति	फुल्लिष्यतः	फुल्लिष्यन्ति
	फुल्लिष्यसि	फुल्लिष्यथः	फुल्लिष्यथ
	फुल्लिष्यामि	फुल्लिष्यावः	फुल्लिष्यामः
क्रि०	अफुल्लिष्यत्	अफुल्लिष्यताम्	अफुल्लिष्यन्
	अफुल्लिष्यः	अफुल्लिष्यतम्	अफुल्लिष्यत
	अफुल्लिष्यम्	अफुल्लिष्याव	अफुल्लिष्याम

४३०. चुल्ल (चुल्ल्) हावकरणे।

मैथुनेच्छाप्रेरितशरीरविकारो हावकरणम्।

व०	चुल्लति	चुल्लतः	चुल्लन्ति
स०	चुल्लेत्	चुल्लेताम्	चुल्लेयुः
प०	चुल्लतु/चुल्लतात्	चुल्लताम्	चुल्लन्तु
ह्य०	अचुल्लत्	अचुल्लताम्	अचुल्लन्
अ०	अचुल्लीत्	अचुल्लिष्टाम्	अचुल्लिषुः
प०	चुचुल्ल	चुचुल्लतुः	चुचुल्लुः
आ०	चुल्ल्यात्	चुल्ल्यास्ताम्	चुल्ल्यासुः
श्व०	चुल्लिता	चुल्लितारौ	चुल्लितारः
भ०	चुल्लिष्यति	चुल्लिष्यतः	चुल्लिष्यन्ति
क्रि०	अचुल्लिष्यत्	अचुल्लिष्यताम्	अचुल्लिष्यन्

४३१. चिल्ल (चिल्ल्) शैथिल्ये च।

चकाराद्धावकरणे।

व०	चिल्लति	चिल्लतः	चिल्लन्ति
स०	चिल्लेत्	चिल्लेताम्	चिल्लेयुः
प०	चिल्लतु/चिल्लतात्	चिल्लताम्	चिल्लन्तु
ह्य०	अचिल्लत्	अचिल्लताम्	अचिल्लन्
अ०	अचिल्लीत्	अचिल्लिष्टाम्	अचिल्लिषुः
प०	चिचिल्ल	चिचिल्लतुः	चिचिल्लुः
आ०	चिल्ल्यात्	चिल्ल्यास्ताम्	चिल्ल्यासुः
श्व०	चिल्लिता	चिल्लितारौ	चिल्लितारः
भ०	चिल्लिष्यति	चिल्लिष्यतः	चिल्लिष्यन्ति
क्रि०	अचिल्लिष्यत्	अचिल्लिष्यताम्	अचिल्लिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४३२. पेलृ (पेल्) गतौ।

व०	पेलति	पेलत:	पेलन्ति
स०	पेलेत्	पेलेताम्	पेलेयु:
प०	पेलतु/पेलतात्	पेलताम्	पेलन्तु
ह्य०	अपेलत्	अपेलताम्	अपेलन्
अ०	अपेलीत्	अपेलिष्टाम्	अपेलिषु:
प०	पिपेल	पिपेलतु:	पिपेलु:
आ०	पेल्यात्	पेल्यास्ताम्	पेल्यासु:
श्व०	पेलिता	पेलितारौ	पेलितार:
भ०	पेलिष्यति	पेलिष्यत:	पेलिष्यन्ति
क्रि०	अपेलिष्यत्	अपेलिष्यताम्	अपेलिष्यन्

४३३. फेलृ (फेल्) गतौ।

व०	फेलति	फेलत:	फेलन्ति
स०	फेलेत्	फेलेताम्	फेलेयु:
प०	फेलतु/फेलतात्	फेलताम्	फेलन्तु
ह्य०	अफेलत्	अफेलताम्	अफेलन्
अ०	अफेलीत्	अफेलिष्टाम्	अफेलिषु:
प०	पिफेल	पिफेलतु:	पिफेलु:
आ०	फेल्यात्	फेल्यास्ताम्	फेल्यासु:
श्व०	फेलिता	फेलितारौ	फेलितार:
भ०	फेलिष्यति	फेलिष्यत:	फेलिष्यन्ति
क्रि०	अफेलिष्यत्	अफेलिष्यताम्	अफेलिष्यन्

४३४. शेलृ (शेल्) गतौ।

व०	शेलति	शेलत:	शेलन्ति
स०	शेलेत्	शेलेताम्	शेलेयु:
प०	शेलतु/शेलतात्	शेलताम्	शेलन्तु
ह्य०	अशेलत्	अशेलताम्	अशेलन्
अ०	अशेलीत्	अशेलिष्टाम्	अशेलिषु:
प०	शिशेल	शिशेलतु:	शिशेलु:
आ०	शेल्यात्	शेल्यास्ताम्	शेल्यासु:
श्व०	शेलिता	शेलितारौ	शेलितार:
भ०	शेलिष्यति	शेलिष्यत:	शेलिष्यन्ति
क्रि०	अशेलिष्यत्	अशेलिष्यताम्	अशेलिष्यन्

४३५. षेलृ (सेल्) गतौ।

व०	सेलति	सेलत:	सेलन्ति
स०	सेलेत्	सेलेताम्	सेलेयु:
प०	सेलतु/सेलतात्	सेलताम्	सेलन्तु
ह्य०	असेलत्	असेलताम्	असेलन्
अ०	असेलीत्	असेलिष्टाम्	असेलिषु:
प०	सिषेल	सिषेलतु:	सिषेलु:
आ०	सेल्यात्	सेल्यास्ताम्	सेल्यासु:
श्व०	सेलिता	सेलितारौ	सेलितार:
भ०	सेलिष्यति	सेलिष्यत:	सेलिष्यन्ति
क्रि०	असेलिष्यत्	असेलिष्यताम्	असेलिष्यन्

४३६. सेलृ

(उपरिवत्)

४३७. वेह्लृ (वेह्ल्) गतौ।

व०	वेह्लति	वेह्लत:	वेह्लन्ति
	वेह्लसि	वेह्लथ:	वेह्लथ
	वेह्लामि	वेह्लाव:	वेह्लाम:
स०	वेह्लेत्	वेह्लेताम्	वेह्लेयु:
	वेह्ले:	वेह्लेतम्	वेह्लेत
	वेह्लेयम्	वेह्लेव	वेह्लेम
प०	वेह्लतु/वेह्लतात्	वेह्लताम्	वेह्लन्तु
	वेह्ल/वेह्लतात्	वेह्लतम्	वेह्लत
	वेह्लानि	वेह्लाव	वेह्लाम
ह्य०	अवेह्लत्	अवेह्लताम्	अवेह्लन्
	अवेह्ल:	अवेह्लतम्	अवेह्लत
	अवेह्लम्	अवेह्लाव	अवेह्लाम
अ०	अवेह्लीत्	अवेह्लिष्टाम्	अवेह्लिषु:
	अवेह्ली:	अवेह्लिष्टम्	अवेह्लिष्ट
	अवेह्लिषम्	अवेह्लिष्व	अवेह्लिष्म
आ०	वेह्ल्यात्	वेह्ल्यास्ताम्	वेह्ल्यासु:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	वेह्ल्याः	वेह्ल्यास्तम्	वेह्ल्यास्त
	वेह्ल्यासम्	वेह्ल्यास्व	वेह्ल्यास्म
प०	विवेह्ल	विवेह्लतुः	विवेह्लुः
	विवेह्लिथ	विवेह्लथुः	विवेह्ल
	विवेह्ल	विवेह्लिव	विवेह्लिम
श्व०	वेह्लिता	वेह्लितारौ	वेह्लितारः
	वेह्लितासि	वेह्लितास्थः	वेह्लितास्थ
	वेह्लितास्मि	वेह्लितास्वः	वेह्लितास्मः
भ०	वेह्लिष्यति	वेह्लिष्यतः	वेह्लिष्यन्ति
	वेह्लिष्यसि	वेह्लिष्यथः	वेह्लिष्यथ
	वेह्लिष्यामि	वेह्लिष्यावः	वेह्लिष्यामः
क्रि०	अवेह्लिष्यत्	अवेह्लिष्यताम्	अवेह्लिष्यन्
	अवेह्लिष्यः	अवेह्लिष्यतम्	अवेह्लिष्यत
	अवेह्लिष्यम्	अवेह्लिष्याव	अवेह्लिष्याम

४३८. सल (सल्) गतौ।

व०	सलति	सलतः	सलन्ति
	सलसि	सलथः	सलथ
	सलामि	सलावः	सलामः
स०	सलेत्	सलेताम्	सलेयुः
	सलेः	सलेतम्	सलेत
	सलेयम्	सलेव	सलेम
प०	सलतु/सलतात्	सलताम्	सलन्तु
	सल/सलतात्	सलतम्	सलत
	सलानि	सलाव	सलाम
ह्य०	असलत्	असलताम्	असलन्
	असलः	असलतम्	असलत
	असलम्	असलाव	असलाम
अ०	असालीत्	असालिष्टाम्	असालिषुः
	असालीः	असालिष्टम्	असालिष्ट
	असालिषम्	असालिष्व	असालिष्म
प०	ससाल	सेलतुः	सेलुः
	सेलिथ	सेलथुः	सेल
	ससाल/ससल	सेलिव	सेलिम
आ०	सल्यात्	सल्यास्ताम्	सल्यासुः
	सल्याः	सल्यास्तम्	सल्यास्त
	सल्यासम्	सल्यास्व	सल्यास्म
श्व०	सलिता	सलितारौ	सलितारः
	सलितासि	सलितास्थः	सलितास्थ
	सलितास्मि	सलितास्वः	सलितास्मः
भ०	सलिष्यति	सलिष्यतः	सलिष्यन्ति
	सलिष्यसि	सलिष्यथः	सलिष्यथ
	सलिष्यामि	सलिष्यावः	सलिष्यामः
क्रि०	असलिष्यत्	असलिष्यताम्	असलिष्यन्
	असलिष्यः	असलिष्यतम्	असलिष्यत
	असलिष्यम्	असलिष्याव	असलिष्याम

४३९. तिल (तिल्) गतौ।

व०	तेलति	तेलतः	तेलन्ति
स०	तेलेत्	तेलेताम्	तेलेयुः
प०	तेलतु/तेलतात्	तेलताम्	तेलन्तु
ह्य०	अतेलत्	अतेलताम्	अतेलन्
अ०	अतेलीत्	अतेलिष्टाम्	अतेलिषुः
प०	तितिल	तितिलतुः	तितिलुः
आ०	तिल्यात्	तिल्यास्ताम्	तिल्यासुः
श्व०	तेलिता	तेलितारौ	तेलितारः
भ०	तेलिष्यति	तेलिष्यतः	तेलिष्यन्ति
क्रि०	अतेलिष्यत्	अतेलिष्यताम्	अतेलिष्यन्

४४०. तिल्ल (तिल्ल्) गतौ।

व०	तिल्लति	तिल्लतः	तिल्लन्ति
स०	तिल्लेत्	तिल्लेताम्	तिल्लेयुः
प०	तिल्लतु/तिल्लतात्	तिल्लताम्	तिल्लन्तु
ह्य०	अतिल्लत्	अतिल्लताम्	अतिल्लन्
अ०	अतिल्लीत्	अतिल्लिष्टाम्	अतिल्लिषुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	तितिल्ल	तितिल्लतुः	तितिल्लुः
आ०	तिल्ल्यात्	तिल्ल्यास्ताम्	तिल्ल्यासुः
श्व०	तिल्लिता	तिल्लितारौ	तिल्लितारः
भ०	तिल्लिष्यति	तिल्लिष्यतः	तिल्लिष्यन्ति
क्रि०	अतिल्लिष्यत्	अतिल्लिष्यताम्	अतिल्लिष्यन्

४४१. पल्ल (पल्ल्) गतौ।

व०	पल्लति	पल्लतः	पल्लन्ति
स०	पल्लेत्	पल्लेताम्	पल्लेयुः
प०	पल्लतु/पल्लतात्	पल्लताम्	पल्लन्तु
ह्य०	अपल्लत्	अपल्लताम्	अपल्लन्
अ०	अपल्लीत्	अपल्लिष्टाम्	अपल्लिषुः
प०	पपल्ल	पपल्लतुः	पपल्लुः
आ०	पल्ल्यात्	पल्ल्यास्ताम्	पल्ल्यासुः
श्व०	पल्लिता	पल्लितारौ	पल्लितारः
भ०	पल्लिष्यति	पल्लिष्यतः	पल्लिष्यन्ति
क्रि०	अपल्लिष्यत्	अपल्लिष्यताम्	अपल्लिष्यन्

४४२. वेल्ल (वेल्ल्) गतौ।

व०	वेल्लति	वेल्लतः	वेल्लन्ति
स०	वेल्लेत्	वेल्लेताम्	वेल्लेयुः
प०	वेल्लतु/वेल्लतात्	वेल्लताम्	वेल्लन्तु
ह्य०	अवेल्लत्	अवेल्लताम्	अवेल्लन्
अ०	अवेल्लीत्	अवेल्लिष्टाम्	अवेल्लिषुः
प०	विवेल्ल	विवेल्लतुः	विवेल्लुः
आ०	वेल्ल्यात्	वेल्ल्यास्ताम्	वेल्ल्यासुः
श्व०	वेल्लिता	वेल्लितारौ	वेल्लितारः
भ०	वेल्लिष्यति	वेल्लिष्यतः	वेल्लिष्यन्ति
क्रि०	अवेल्लिष्यत्	अवेल्लिष्यताम्	अवेल्लिष्यन्

४४३. वेलृ (वेल्) चलने।

व०	वेलति	वेलतः	वेलन्ति
स०	वेलेत्	वेलेताम्	वेलेयुः
प०	वेलतु/वेलतात्	वेलताम्	वेलन्तु
ह्य०	अवेलत्	अवेलताम्	अवेलन्
अ०	अवेलीत्	अवेलिष्टाम्	अवेलिषुः
प०	विवेल	विवेलतुः	विवेलुः
आ०	वेल्यात्	वेल्यास्ताम्	वेल्यासुः
श्व०	वेलिता	वेलितारौ	वेलितारः
भ०	वेलिष्यति	वेलिष्यतः	वेलिष्यन्ति
क्रि०	अवेलिष्यत्	अवेलिष्यताम्	अवेलिष्यन्

४४४. चेलृ (चेल्) चलने।

व०	चेलति	चेलतः	चेलन्ति
स०	चेलेत्	चेलेताम्	चेलेयुः
प०	चेलतु/चेलतात्	चेलताम्	चेलन्तु
ह्य०	अचेलत्	अचेलताम्	अचेलन्
अ०	अचेलीत्	अचेलिष्टाम्	अचेलिषुः
प०	चिचेल	चिचेलतुः	चिचेलुः
आ०	चेल्यात्	चेल्यास्ताम्	चेल्यासुः
श्व०	चेलिता	चेलितारौ	चेलितारः
भ०	चेलिष्यति	चेलिष्यतः	चेलिष्यन्ति
क्रि०	अचेलिष्यत्	अचेलिष्यताम्	अचेलिष्यन्

४४५. केलृ (केल्) चलने।

व०	केलति	केलतः	केलन्ति
स०	केलेत्	केलेताम्	केलेयुः
प०	केलतु/केलतात्	केलताम्	केलन्तु
ह्य०	अकेलत्	अकेलताम्	अकेलन्
अ०	अकेलीत्	अकेलिष्टाम्	अकेलिषुः
प०	चिकेल	चिकेलतुः	चिकेलुः
आ०	केल्यात्	केल्यास्ताम्	केल्यासुः
श्व०	केलिता	केलितारौ	केलितारः
भ०	केलिष्यति	केलिष्यतः	केलिष्यन्ति
क्रि०	अकेलिष्यत्	अकेलिष्यताम्	अकेलिष्यन्

४४६. क्वेलृ (क्वेल्) चलने

व०	क्वेलति	क्वेलतः	क्वेलन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स०	क्वेलेत्	क्वेलेताम्	क्वेलेयुः
प०	क्वेलतु/क्वेलतात्	क्वेलताम्	क्वेलन्तु
ह्य०	अक्वेलत्	अक्वेलताम्	अक्वेलन्
अ०	अक्वेलीत्	अक्वेलिष्टाम्	अक्वेलिषुः
प०	चिक्वेल	चिक्वेलतुः	चिक्वेलुः
आ०	क्वेल्यात्	क्वेल्यास्ताम्	क्वेल्यासुः
श्व०	क्वेलिता	क्वेलितारौ	क्वेलितारः
भ०	क्वेलिष्यति	क्वेलिष्यतः	क्वेलिष्यन्ति
क्रि०	अक्वेलिष्यत्	अक्वेलिष्यताम्	अक्वेलिष्यन्

४४७. खेलृ (खेल्) चलने।

व०	खेलति	खेलतः	खेलन्ति
स०	खेलेत्	खेलेताम्	खेलेयुः
प०	खेलतु/खेलतात्	खेलताम्	खेलन्तु
ह्य०	अखेलत्	अखेलताम्	अखेलन्
अ०	अखेलीत्	अखेलिष्टाम्	अखेलिषुः
प०	चिखेल	चिखेलतुः	चिखेलुः
आ०	खेल्यात्	खेल्यास्ताम्	खेल्यासुः
श्व०	खेलिता	खेलितारौ	खेलितारः
भ०	खेलिष्यति	खेलिष्यतः	खेलिष्यन्ति
क्रि०	अखेलिष्यत्	अखेलिष्यताम्	अखेलिष्यन्

४४८. स्खलृ (स्खल्) चलने।

व०	स्खलति	स्खलतः	स्खलन्ति
स०	स्खलेत्	स्खलेताम्	स्खलेयुः
प०	स्खलतु/स्खलतात्	स्खलताम्	स्खलन्तु
ह्य०	अस्खलत्	अस्खलताम्	अस्खलन्
अ०	अस्खालीत्	अस्खालिष्टाम्	अस्खालिषुः
प०	चस्खाल	चस्खलतुः	चस्खलुः
आ०	स्खल्यात्	स्खल्यास्ताम्	स्खल्यासुः
श्व०	स्खलिता	स्खलितारौ	स्खलितारः
भ०	स्खलिष्यति	स्खलिष्यतः	स्खलिष्यन्ति
क्रि०	अस्खलिष्यत्	अस्खलिष्यताम्	अस्खलिष्यन्

४४९. खल (खल्) संचये च।

चकारच्चलने।

व०	खलति	खलतः	खलन्ति
स०	खलेत्	खलेताम्	खलेयुः
प०	खलतु/खलतात्	खलताम्	खलन्तु
ह्य०	अखलत्	अखलताम्	अखलन्
अ०	अखालीत्	अखालिष्टाम्	अखालिषुः
प०	चखाल	चखलतुः	चखलुः
आ०	खल्यात्	खल्यास्ताम्	खल्यासुः
श्व०	खलिता	खलितारौ	खलितारः
भ०	खलिष्यति	खलिष्यतः	खलिष्यन्ति
क्रि०	अखलिष्यत्	अखलिष्यताम्	अखलिष्यन्

४५०. श्वल (श्वल्) आशुगतौ।

व०	ƒवलति	ƒवलतः	ƒवलन्ति
स०	ƒवलेत्	ƒवलेताम्	ƒवलेयुः
प०	ƒवलतु/ƒवलतात्	श्वलताम्	ƒवलन्तु
ह्य०	अश्वलत्	अश्वलताम्	अश्वलन्
अ०	अश्वालीत्	अश्वालिष्टाम्	अश्वालिषुः
प०	शश्वाल	शश्वलतुः	शश्वलुः
आ०	ƒवल्यात्	ƒवल्यास्ताम्	ƒवल्यासुः
श्व०	ƒवलिता	ƒवलितारौ	ƒवलितारः
भ०	ƒवलिष्यति	ƒवलिष्यतः	ƒवलिष्यन्ति
क्रि०	अश्वलिष्यत्	अश्वलिष्यताम्	अश्वलिष्यन्

४५१. श्वल्ल (श्वल्ल्) आशुगतौ।

व०	ƒवल्लति	ƒवल्लतः	ƒवल्लन्ति
स०	ƒवल्लेत्	ƒवल्लेताम्	ƒवल्लेयुः
प०	ƒवल्लतु/ƒवल्लतात्	श्वल्लताम्	ƒवल्लन्तु
ह्य०	अश्वल्लत्	अश्वल्लताम्	अश्वल्लन्
अ०	अश्वल्लीत्	अश्वल्लिष्टाम्	अश्वल्लिषुः
प०	शश्वल्ल	शश्वल्लतुः	शश्वल्लुः
आ०	ƒवल्ल्यात्	ƒवल्ल्यास्ताम्	ƒवल्ल्यासुः
श्व०	ƒवल्लिता	ƒवल्लितारौ	ƒवल्लितारः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	श्वल्लिष्यति	श्वल्लिष्यतः	श्वल्लिष्यन्ति
क्रि०	अश्वल्लिष्यत्	अश्वल्लिष्यताम्	अश्वल्लिष्यन्

४५२. गल (गल्) अदने।

धातूनामनेकार्थत्वात्स्रवणेऽपि।

व०	गलति	गलतः	गलन्ति
स०	गलेत्	गलेताम्	गलेयुः
प०	गलतु/गलतात्	गलताम्	गलन्तु
ह्य०	अगलत्	अगलताम्	अगलन्
अ०	अगालीत्	अगालिष्टाम्	अगालिषुः
प०	जगाल	जगलतुः	जगलुः
आ०	गल्यात्	गल्यास्ताम्	गल्यासुः
श्व०	गलिता	गलितारौ	गलितारः
भ०	गलिष्यति	गलिष्यतः	गलिष्यन्ति
क्रि०	अगलिष्यत्	अगलिष्यताम्	अगलिष्यन्

॥अथ वान्ताः सप्तत्रिंशत्सेटश्च॥

४५३. चर्व (चर्व्) अदने।

लक्षणे इत्यर्थः।

व०	चर्वति	चर्वतः	चर्वन्ति
	चर्वसि	चर्वथः	चर्वथ
	चर्वामि	चर्वावः	चर्वामः
स०	चर्वेत्	चर्वेताम्	चर्वेयुः
	चर्वेः	चर्वेतम्	चर्वेत
	चर्वेयम्	चर्वेव	चर्वेम
प०	चर्वतु/चर्वतात्	चर्वताम्	चर्वन्तु
	चर्व/चर्वतात्	चर्वतम्	चर्वत
	चर्वाणि	चर्वाव	चर्वाम
ह्य०	अचर्वत्	अचर्वताम्	अचर्वन्
	अचर्वः	अचर्वतम्	अचर्वत
	अचर्वम्	अचर्वाव	अचर्वाम
अ०	अचर्वीत्	अचर्विष्टाम्	अचर्विषुः
	अचर्वीः	अचर्विष्टम्	अचर्विष्ट
	अचर्विषम्	अचर्विष्व	अचर्विष्म
प०	चचर्व	चचर्वतुः	चचर्वहः
	चचर्विथ	चचर्वथुः	चचर्व
	चचर्व	चचर्विव	चचर्विम
आ०	चर्व्यात्	चर्व्यास्ताम्	चर्व्यासुः
	चर्व्याः	चर्व्यास्तम्	चर्व्यास्त
	चर्व्यासम्	चर्व्यास्व	चर्व्यास्म
श्व०	चर्विता	चर्वितारौ	चर्वितारः
	चर्वितासि	चर्वितास्थः	चर्वितास्थ
	चर्वितास्मि	चर्वितास्वः	चर्वितास्मः
भ०	चर्विष्यति	चर्विष्यतः	चर्विष्यन्ति
	चर्विष्यसि	चर्विष्यथः	चर्विष्यथ
	चर्विष्यामि	चर्विष्यावः	चर्विष्यामः
क्रि०	अचर्विष्यत्	अचर्विष्यताम्	अचर्विष्यन्
	अचर्विष्यः	अचर्विष्यतम्	अचर्विष्यत
	अचर्विष्यम्	अचर्विष्याव	अचर्विष्याम

४५४. पूर्व (पूर्व्) पूरणे।

व०	पूर्वति	पूर्वतः	पूर्वन्ति
	पूर्वसि	पूर्वथः	पूर्वथ
	पूर्वामि	पूर्वावः	पूर्वामः
स०	पूर्वेत्	पूर्वेताम्	पूर्वेयुः
	पूर्वेः	पूर्वेतम्	पूर्वेत
	पूर्वेयम्	पूर्वेव	पूर्वेम
प०	पूर्वतु/पूर्वतात्	पूर्वताम्	पूर्वन्तु
	पूर्व/पूर्वतात्	पूर्वतम्	पूर्वत
	पूर्वाणि	पूर्वाव	पूर्वाम
ह्य०	अपूर्वत्	अपूर्वताम्	अपूर्वन्
	अपूर्वः	अपूर्वतम्	अपूर्वत
	अपूर्वम्	अपूर्वाव	अपूर्वाम
अ०	अपूर्वीत्	अपूर्विष्टाम्	अपूर्विषुः
	अपूर्वीः	अपूर्विष्टम्	अपूर्विष्ट
	अपूर्विषम्	अपूर्विष्व	अपूर्विष्म
प०	पुपूर्व	पुपूर्वतुः	पुपूर्वुः
	पुपूर्विथ	पुपूर्वथुः	पुपूर्व

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	पुपूर्व	पुपूर्विव	पुपूर्विम
आ०	पूर्व्यात्	पूर्व्यास्ताम्	पूर्व्यासुः
	पूर्व्याः	पूर्व्यास्तम्	पूर्व्यास्त
	पूर्व्यासम्	पूर्व्यास्व	पूर्व्यास्म
श्व०	पूर्विता	पूर्वितारौ	पूर्वितारः
	पूर्वितासि	पूर्वितास्थः	पूर्वितास्थ
	पूर्वितास्मि	पूर्वितास्वः	पूर्वितास्मः
भ०	पूर्विष्यति	पूर्विष्यतः	पूर्विष्यन्ति
	पूर्विष्यसि	पूर्विष्यथः	पूर्विष्यथ
	पूर्विष्यामि	पूर्विष्यावः	पूर्विष्यामः
क्रि०	अपूर्विष्यत्	अपूर्विष्यताम्	अपूर्विष्यन्
	अपूर्विष्यः	अपूर्विष्यतम्	अपूर्विष्यत
	अपूर्विष्यम्	अपूर्विष्याव	अपूर्विष्याम

४५५. पर्व (पर्व्) पूरणे।

व०	पर्वति	पर्वतः	पर्वन्ति
स०	पर्वेत्	पर्वेताम्	पर्वेयुः
प०	पर्वतु/पर्वतात्	पर्वताम्	पर्वन्तु
ह्य०	अपर्वत्	अपर्वताम्	अपर्वन्
अ०	अपर्वीत्	अपर्विष्टाम्	अपर्विषुः
प०	पपर्व	पपर्वतुः	पपर्वहः
आ०	पर्व्यात्	पर्व्यास्ताम्	पर्व्यासुः
श्व०	पर्विता	पर्वितारौ	पर्वितारः
भ०	पर्विष्यति	पर्विष्यतः	पर्विष्यन्ति
क्रि०	अपर्विष्यत्	अपर्विष्यताम्	अपर्विष्यन्

४५६. मर्व (मर्व्) पूरणे।

व०	मर्वति	मर्वतः	मर्वन्ति
स०	मर्वेत्	मर्वेताम्	मर्वेयुः
म०	मर्वतु/मर्वतात्	मर्वताम्	मर्वन्तु
ह्य०	अमर्वत्	अमर्वताम्	अमर्वन्
अ०	अमर्वीत्	अमर्विष्टाम्	अमर्विषुः
म०	ममर्व	ममर्वतुः	ममर्वहः
आ०	मर्व्यात्	मर्व्यास्ताम्	मर्व्यासुः
श्व०	मर्विता	मर्वितारौ	मर्वितारः
भ०	मर्विष्यति	मर्विष्यतः	मर्विष्यन्ति
क्रि०	अमर्विष्यत्	अमर्विष्यताम्	अमर्विष्यन्

४५७. मर्व (मर्व्) गतौ। मर्व (४५६) वद्रूपाणि।

अर्थभेदार्थं पुनः पाठः।

४५८. धवु (धन्व्) गतौ।

व०	धन्वति	धन्वतः	धन्वन्ति
स०	धन्वेत्	धन्वेताम्	धन्वेयुः
म०	धन्वतु/धन्वतात्	धन्वताम्	धन्वन्तु
ह्य०	अधन्वत्	अधन्वताम्	अधन्वन्
अ०	अधन्वीत्	अधन्विष्टाम्	अधन्विषुः
म०	दधन्व	दधन्वतुः	दधन्वुः
आ०	धन्व्यात्	धन्व्यास्ताम्	धन्व्यासुः
श्व०	धन्विता	धन्वितारौ	धन्वितारः
भ०	धन्विष्यति	धन्विष्यतः	धन्विष्यन्ति
क्रि०	अधन्विष्यत्	अधन्विष्यताम्	अधन्विष्यन्

४५९. शव (शव्) गतौ।

व०	शवति	शवतः	शवन्ति
स०	शवेत्	शवेताम्	शवेयुः
प०	शवतु/शवतात्	शवताम्	शवन्तु
ह्य०	अशवत्	अशवताम्	अशवन्
अ०	अशावीत्	अशाविष्टाम्	अशाविषुः
		तथा	
	अशवीत्	अशविष्टाम्	अशविषुः
प०	शशाव	शेवतुः	शेवुः
आ०	शव्यात्	शव्यास्ताम्	शव्यासुः
श्व०	शविता	शवितारौ	शवितारः
भ०	शविष्यति	शविष्यतः	शविष्यन्ति
क्रि०	अशविष्यत्	अशविष्यताम्	अशविष्यन्

४६०. कर्व (कर्व्) दर्पे

व०	कर्वति	कर्वतः	कर्वन्ति
स०	कर्वेत्	कर्वेताम्	कर्वेयुः
प०	कर्वतु/कर्वतात्	कर्वताम्	कर्वन्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	अकर्वत्	अकर्वताम्	अकर्वन्
अ०	अकर्वीत्	अकर्विष्टाम्	अकर्विषुः
प०	चकर्व	चकर्वतुः	चकर्वहः
आ०	कर्व्यात्	कर्व्यास्ताम्	कर्व्यासुः
श्व०	कर्विता	कर्वितारौ	कर्वितारः
भ०	कर्विष्यति	कर्विष्यतः	कर्विष्यन्ति
क्रि०	अकर्विष्यत्	अकर्विष्यताम्	अकर्विष्यन्

४६१. खर्व (खर्व्) दर्पे।

व०	खर्वति	खर्वतः	खर्वन्ति
स०	खर्वेत्	खर्वेताम्	खर्वेयुः
प०	खर्वतु/खर्वतात्	खर्वताम्	खर्वन्तु
ह्य०	अखर्वत्	अखर्वताम्	अखर्वन्
अ०	अखर्वीत्	अखर्विष्टाम्	अखर्विषुः
प०	चखर्व	चखर्वतुः	चखर्वहः
आ०	खर्व्यात्	खर्व्यास्ताम्	खर्व्यासुः
श्व०	खर्विता	खर्वितारौ	खर्वितारः
भ०	खर्विष्यति	खर्विष्यतः	खर्विष्यन्ति
क्रि०	अखर्विष्यत्	अखर्विष्यताम्	अखर्विष्यन्

४६२. गर्व (गर्व्) दर्पे।

व०	गर्वति	गर्वतः	गर्वन्ति
स०	गर्वेत्	गर्वेताम्	गर्वेयुः
प०	गर्वतु/गर्वतात्	गर्वताम्	गर्वन्तु
ह्य०	अगर्वत्	अगर्वताम्	अगर्वन्
अ०	अगर्वीत्	अगर्विष्टाम्	अगर्विषुः
प०	जगर्व	जगर्वतुः	जगर्वहः
आ०	गर्व्यात्	गर्व्यास्ताम्	गर्व्यासुः
श्व०	गर्विता	गर्वितारौ	गर्वितारः
भ०	गर्विष्यति	गर्विष्यतः	गर्विष्यन्ति
क्रि०	अगर्विष्यत्	अगर्विष्यताम्	अगर्विष्यन्

४६३. ष्ठिवू (ष्ठिव्) निरसने।

व०	ष्ठीवति	ष्ठीवतः	ष्ठीवन्ति
	ष्ठीवसि	ष्ठीवथः	ष्ठीवथ
	ष्ठीवामि	ष्ठीवावः	ष्ठीवामः
स०	ष्ठीवेत्	ष्ठीवेताम्	ष्ठीवेयुः
	ष्ठीवेः	ष्ठीवेतम्	ष्ठीवेत
	ष्ठीवेयम्	ष्ठीवेव	ष्ठीवेम
प०	ष्ठीवतु/ष्ठीवतात्	ष्ठीवताम्	ष्ठीवन्तु
	ष्ठीव/ष्ठीवतात्	ष्ठीवतम्	ष्ठीवत
	ष्ठीवानि	ष्ठीवाव	ष्ठीवाम
ह्य०	अष्ठीवत्	अष्ठीवताम्	अष्ठीवन्
	अष्ठीवः	अष्ठीवतम्	अष्ठीवत
	अष्ठीवम्	अष्ठीवाव	अष्ठीवाम
अ०	अष्ठेवीत्	अष्ठेविष्टाम्	अष्ठेविषुः
	अष्ठेवीः	अष्ठेविष्टम्	अष्ठेविष्ट
	अष्ठेविषम्	अष्ठेविष्व	अष्ठेविष्म
प०	तिष्ठेव	तिष्ठिवतुः	तिष्ठिवुः
	तिष्ठेविथ	तिष्ठिवथुः	तिष्ठिव
	तिष्ठेव	तिष्ठिविव	तिष्ठिविम
		तथा	
	टिष्ठेव	टिष्ठिवतुः	टिष्ठिवुः
	टिष्ठेविथ	टिष्ठिवथुः	टिष्ठिव
	टिष्ठेव	टिष्ठिविव	टिष्ठिविम
आ०	ष्ठीव्यात्	ष्ठीव्यास्ताम्	ष्ठीव्यासुः
	ष्ठीव्याः	ष्ठीव्यास्तम्	ष्ठीव्यास्त
	ष्ठीव्यासम्	ष्ठीव्यास्व	ष्ठीव्यास्म
श्व०	ष्ठेविता	ष्ठेवितारौ	ष्ठेवितारः
	ष्ठेवितासि	ष्ठेवितास्थः	ष्ठेवितास्थ
	ष्ठेवितास्मि	ष्ठेवितास्वः	ष्ठेवितास्मः
भ०	ष्ठेविष्यति	ष्ठेविष्यतः	ष्ठेविष्यन्ति
	ष्ठेविष्यसि	ष्ठेविष्यथः	ष्ठेविष्यथ
	ष्ठेविष्यामि	ष्ठेविष्यावः	ष्ठेविष्यामः
क्रि०	अष्ठेविष्यत्	अष्ठेविष्यताम्	अष्ठेविष्यन्
	अष्ठेविष्यः	अष्ठेविष्यतम्	अष्ठेविष्यत
	अष्ठेविष्यम्	अष्ठेविष्याव	अष्ठेविष्याम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४६४. क्षिवू (क्षिव्) निरसने।

व०	क्षेवति	क्षेवत:	क्षेवन्ति
	क्षेवसि	क्षेवथ:	क्षेवथ
	क्षेवाणि	क्षेवाव:	क्षेवाम:
स०	क्षेवेत्	क्षेवेताम्	क्षेवेयु:
	क्षेवे:	क्षेवेतम्	क्षेवेत
	क्षेवेयम्	क्षेवेव	क्षेवेम
प०	क्षेवतु/क्षेवतात्	क्षेवताम्	क्षेवन्तु
	क्षेव/क्षेवतात्	क्षेवतम्	क्षेवत
	क्षेवानि	क्षेवाव	क्षेवाम
ह्य०	अक्षेवत्	अक्षेवताम्	अक्षेवन्
	अक्षेव:	अक्षेवतम्	अक्षेवत
	अक्षेवम्	अक्षेवाव	अक्षेवाम
अ०	अक्षेवीत्	अक्षेविष्टाम्	अक्षेविषु:
	अक्षेवी:	अक्षेविष्टम्	अक्षेविष्ट
	अक्षेविषम्	अक्षेविष्व	अक्षेविष्म
प०	चिक्षेव	चिक्षिवतु:	चिक्षिवु:
	चिक्षेविथ	चिक्षिवथु:	चिक्षिव
	चिक्षेव	चिक्षिविव	चिक्षिविम
आ०	क्षीव्यात्	क्षीव्यास्ताम्	क्षीव्यासु:
	क्षीव्या:	क्षीव्यास्तम्	क्षीव्यास्त
	क्षीव्यासम्	क्षीव्यास्व	क्षीव्यास्म
श्व०	क्षेविता	क्षेवितारौ	क्षेवितार:
	क्षेवितासि	क्षेवितास्थ:	क्षेवितास्थ
	क्षेवितास्मि	क्षेवितास्व:	क्षेवितास्म:
भ०	क्षेविष्यति	क्षेविष्यत:	क्षेविष्यन्ति
	क्षेविष्यसि	क्षेविष्यथ:	क्षेविष्यथ
	क्षेविष्यामि	क्षेविष्याव:	क्षेविष्याम:
क्रि०	अक्षेविष्यत्	अक्षेविष्यताम्	अक्षेविष्यन्
	अक्षेविष्य:	अक्षेविष्यतम्	अक्षेविष्यत
	अक्षेविष्यम्	अक्षेविष्याव	अक्षेविष्याम

४६५. जीव (जीव्) प्राणधारणे।

व०	जीवति	जीवत:	जीवन्ति
	जीवसि	जीवथ:	जीवथ
	जीवामि	जीवाव:	जीवाम:
स०	जीवेत्	जीवेताम्	जीवेयु:
	जीवे:	जीवेतम्	जीवेत
	जीवेयम्	जीवेव	जीवेम
प०	जीवतु/जीवतात्	जीवताम्	जीवन्तु
	जीव/जीवतात्	जीवतम्	जीवत
	जीवानि	जीवाव	जीवाम
ह्य०	अजीवत्	अजीवताम्	अजीवन्
	अजीव:	अजीवतम्	अजीवत
	अजीवम्	अजीवाव	अजीवाम
अ०	अजीवीत्	अजीविष्टाम्	अजीविषु:
	अजीवी:	अजीविष्टम्	अजीविष्ट
	अजीविषम्	अजीविष्व	अजीविष्म
प०	जिजीव	जिजीवतु:	जिजीवु:
	जिजीविथ	जिजीवथु:	जिजीव
	जिजीव	जिजीविव	जिजीविम
आ०	जीव्यात्	जीव्यास्ताम्	जीव्यासु:
	जीव्या:	जीव्यास्तम्	जीव्यास्त
	जीव्यासम्	जीव्यास्व	जीव्यास्म
श्व०	जीविता	जीवितारौ	जीवितार:
	जीवितासि	जीवितास्थ:	जीवितास्थ
	जीवितास्मि	जीवितास्व:	जीवितास्म:
भ०	जीविष्यति	जीविष्यत:	जीविष्यन्ति
	जीविष्यसि	जीविष्यथ:	जीविष्यथ
	जीविष्यामि	जीविष्याव:	जीविष्याम:
क्रि०	अजीविष्यत्	अजीविष्यताम्	अजीविष्यन्
	अजीविष्य:	अजीविष्यतम्	अजीविष्यत
	अजीविष्यम्	अजीविष्याव	अजीविष्याम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४६६. पीव (पीव्) स्थौल्ये।

व०	पीवति	पीवतः	पीवन्ति
स०	पीवेत्	पीवेताम्	पीवेयुः
प०	पीवतु/पीवतात्	पीवताम्	पीवन्तु
ह्य०	अपीवत्	अपीवताम्	अपीवन्
अ०	अपीवीत्	अपीविष्टाम्	अपीविषुः
प०	पिपीव	पिपीवतुः	पिपीवुः
आ०	पीव्यात्	पीव्यास्ताम्	पीव्यासुः
श्व०	पीविता	पीवितारौ	पीवितारः
भ०	पीविष्यति	पीविष्यतः	पीविष्यन्ति
क्रि०	अपीविष्यत्	अपीविष्यताम्	अपीविष्यन्

४६७. मीव (मीव्) स्थौल्ये।

व०	मीवति	मीवतः	मीवन्ति
स०	मीवेत्	मीवेताम्	मीवेयुः
प०	मीवतु/मीवतात्	मीवताम्	मीवन्तु
ह्य०	अमीवत्	अमीवताम्	अमीवन्
अ०	अमीवीत्	अमीविष्टाम्	अमीविषुः
प०	मिमीव	मिमीवतुः	मिमीवुः
आ०	मीव्यात्	मीव्यास्ताम्	मीव्यासुः
श्व०	मीविता	मीवितारौ	मीवितारः
भ०	मीविष्यति	मीविष्यतः	मीविष्यन्ति
क्रि०	अमीविष्यत	अमीविष्यताम्	अमीविष्यन्

४६८. तीव (तीव्) स्थौल्ये।

व०	तीवति	तीवतः	तीवन्ति
स०	तीवेत्	तीवेताम्	तीवेयुः
प०	तीवतु/तीवतात्	तीवताम्	तीवन्तु
ह्य०	अतीवत्	अतीवताम्	अतीवन्
अ०	अतीवीत्	अतीविष्टाम्	अतीविषुः
प०	तितीव	तितीवतुः	तितीवुः
आ०	तीव्यात्	तीव्यास्ताम्	तीव्यासुः
श्व०	तीविता	तीवितारौ	तीवितारः
भ०	तीविष्यति	तीविष्यतः	तीविष्यन्ति
क्रि०	अतीविष्यत	अतीविष्यताम्	अतीविष्यन्

४६९. नीव (नीव्) स्थौल्ये।

व०	नीवति	नीवतः	नीवन्ति
स०	नीवेत्	नीवेताम्	नीवेयुः
प०	नीवतु/नीवतात्	नीवताम्	नीवन्तु
ह्य०	अनीवत्	अनीवताम्	अनीवन्
अ०	अनीवीत्	अनीविष्टाम्	अनीविषुः
प०	निनीव	निनीवतुः	निनीवुः
आ०	नीव्यात्	नीव्यास्ताम्	नीव्यासुः
श्व०	नीविता	नीवितारौ	नीवितारः
भ०	नीविष्यति	नीविष्यतः	नीविष्यन्ति
क्रि०	अनीविष्यत	अनीविष्यताम्	अनीविष्यन्

४७०. ऊर्वै (ऊर्व्) हिंसायाम्।

व०	ऊर्वति	ऊर्वतः	ऊर्वन्ति
स०	ऊर्वेत्	ऊर्वेताम्	ऊर्वेयुः
प०	ऊर्वतु/ऊर्वतात्	ऊर्वताम्	ऊर्वन्तु
ह्य०	और्वत्	और्वताम्	और्वन्
अ०	और्वीत्	और्विष्टाम्	और्विषुः
प०	ऊर्वाञ्चकार	ऊर्वाञ्चक्रतुः	ऊर्वाञ्चक्रुः
	ऊर्वाम्बभूव/ऊर्वामास		
आ०	ऊर्व्यात्	ऊर्व्यास्ताम्	ऊर्व्यासुः
श्व०	ऊर्विता	ऊर्वितारौ	ऊर्वितारः
भ०	ऊर्विष्यति	ऊर्विष्यतः	ऊर्विष्यन्ति
क्रि०	और्विष्यत्	और्विष्यताम्	और्विष्यन्

४७१. तुर्वै (तूर्व्) हिंसायाम्।

व०	तूर्वति	तूर्वतः	तूर्वन्ति
स०	तूर्वेत्	तूर्वेताम्	तूर्वेयुः
प०	तूर्वतु/तूर्वतात्	तूर्वताम्	तूर्वन्तु
ह्य०	अतूर्वत्	अतूर्वताम्	अतूर्वन्
अ०	अतूर्वीत्	अतूर्विष्टाम्	अतूर्विषुः
प०	तुतूर्व	तुतूर्वतुः	तुतूर्वहः
आ०	तूर्व्यात्	तूर्व्यास्ताम्	तूर्व्यासुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	तूर्विता	तूर्वितारौ	तूर्वितारः
भ०	तूर्विष्यति	तूर्विष्यतः	तूर्विष्यन्ति
क्रि०	अतूर्विष्यत्	अतूर्विष्यताम्	अतूर्विष्यन्

४७२. थुर्वै (थूर्व्) हिंसायाम्।

व०	थूर्वति	थूर्वतः	थूर्वन्ति
स०	थूर्वेत्	थूर्वेताम्	थूर्वेयुः
प०	थूर्वथू/थूर्वतात्	थूर्वताम्	थूर्वन्थू
ह्य०	अथूर्वत्	अथूर्वताम्	अथूर्वन्
अ०	अथूर्वीत्	अथूर्विष्टाम्	अथूर्विषुः
प०	तुथूर्व	तुथूर्वथूः	तुथूर्वहः
आ०	थूर्व्यात्	थूर्व्यास्ताम्	थूर्व्यासुः
श्व०	थूर्विता	थूर्वितारौ	थूर्वितारः
भ०	थूर्विष्यति	थूर्विष्यतः	थूर्विष्यन्ति
क्रि०	अथूर्विष्यत्	अथूर्विष्यताम्	अथूर्विष्यन्

४७३. दुर्वै (दूर्व्) हिंसायाम्।

व०	दूर्वति	दूर्वतः	दूर्वन्ति
स०	दूर्वेत्	दूर्वेताम्	दूर्वेयुः
प०	दूर्वतु/दूर्वतात्	दूर्वताम्	दूर्वन्तु
ह्य०	अदूर्वत्	अदूर्वताम्	अदूर्वन्
अ०	अदूर्वीत्	अदूर्विष्टाम्	अदूर्विषुः
प०	दुदूर्व	दुदूर्वतुः	दुदूर्वहः
आ०	दूर्व्यात्	दूर्व्यास्ताम्	दूर्व्यासुः
श्व०	दूर्विता	दूर्वितारौ	दूर्वितारः
भ०	दूर्विष्यति	दूर्विष्यतः	दूर्विष्यन्ति
क्रि०	अदूर्विष्यत्	अदूर्विष्यताम्	अदूर्विष्यन्

४७४. धुर्वै (धूर्व्) हिंसायाम्।

व०	धूर्वति	धूर्वतः	धूर्वन्ति
स०	धूर्वेत्	धूर्वेताम्	धूर्वेयुः
प०	धूर्वतु/धूर्वतात्	धूर्वताम्	धूर्वन्तु
ह्य०	अधूर्वत्	अधूर्वताम्	अधूर्वन्
अ०	अधूर्वीत्	अधूर्विष्टाम्	अधूर्विषुः
प०	दुधूर्व	दुधूर्वतुः	दुधूर्वहः
आ०	धूर्व्यात्	धूर्व्यास्ताम्	धूर्व्यासुः
श्व०	धूर्विता	धूर्वितारौ	धूर्वितारः
भ०	धूर्विष्यति	धूर्विष्यतः	धूर्विष्यन्ति
क्रि०	अधूर्विष्यत्	अधूर्विष्यताम्	अधूर्विष्यन्

४७५. जुर्वै (जूर्व्) हिंसायाम्।

व०	जूर्वति	जूर्वतः	जूर्वन्ति
स०	जूर्वेत्	जूर्वेताम्	जूर्वेयुः
प०	जूर्वतु/जूर्वतात्	जूर्वताम्	जूर्वन्तु
ह्य०	अजूर्वत्	अजूर्वताम्	अजूर्वन्
अ०	अजूर्वीत्	अजूर्विष्टाम्	अजूर्विषुः
प०	जुजूर्व	जुजूर्वतुः	जुजूर्वहः
आ०	जूर्व्यात्	जूर्व्यास्ताम्	जूर्व्यासुः
श्व०	जूर्विता	जूर्वितारौ	जूर्वितारः
भ०	जूर्विष्यति	जूर्विष्यतः	जूर्विष्यन्ति
क्रि०	अजूर्विष्यत्	अजूर्विष्यताम्	अजूर्विष्यन्

४७६. अर्व (अर्व्) हिंसायाम्।

व०	अर्वति	अर्वतः	अर्वन्ति
स०	अर्वेत्	अर्वेताम्	अर्वेयुः
प०	अर्वतु/अर्वतात्	अर्वताम्	अर्वन्तु
ह्य०	आर्वत्	आर्वताम्	आर्वन्
अ०	आर्वीत्	आर्विष्टाम्	आर्विषुः
प०	आनर्व	आनर्वतुः	आनर्वहः
आ०	अर्व्यात्	अर्व्यास्ताम्	अर्व्यासुः
श्व०	अर्विता	अर्वितारौ	अर्वितारः
भ०	अर्विष्यति	अर्विष्यतः	अर्विष्यन्ति
क्रि०	आर्विष्यत्	आर्विष्यताम्	आर्विष्यन्

४७७. लर्व (लर्व्) हिंसायाम्।

व०	लर्वति	लर्वतः	लर्वन्ति
स०	लर्वेत्	लर्वेताम्	लर्वेयुः
प०	लर्वतु/लर्वतात्	लर्वताम्	लर्वन्तु
ह्य०	अलर्वत्	अलर्वताम्	अलर्वन्
अ०	अलर्वीत्	अलर्विष्टाम्	अलर्विषुः
प०	ललर्व	ललर्वतुः	ललर्वहः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	लर्व्यात्	लर्व्यास्ताम्	लर्व्यासुः
श्व०	लर्विता	लर्वितारौ	लर्वितारः
भ०	लर्विष्यति	लर्विष्यतः	लर्विष्यन्ति
क्रि०	अलर्विष्यत्	अलर्विष्यताम्	अलर्विष्यन्

४७८. शर्व (शर्व्) हिंसायाम्।

व०	शर्वति	शर्वतः	शर्वन्ति
स०	शर्वेत्	शर्वेताम्	शर्वेयुः
प०	शर्वतु/शर्वतात्	शर्वताम्	शर्वन्तु
ह्य०	अशर्वत्	अशर्वताम्	अशर्वन्
अ०	अशर्वीत्	अशर्विष्टाम्	अशर्विषुः
प०	शशर्व	शशर्वतुः	शशर्वहः
आ०	शर्व्यात्	शर्व्यास्ताम्	शर्व्यासुः
श्व०	शर्विता	शर्वितारौ	शर्वितारः
भ०	शर्विष्यति	शर्विष्यतः	शर्विष्यन्ति
क्रि०	अशर्विष्यत्	अशर्विष्यताम्	अशर्विष्यन्

४७९. मुर्वै (मूर्व्) बन्धने।

व०	मूर्वति	मूर्वतः	मूर्वन्ति
स०	मूर्वेत्	मूर्वेताम्	मूर्वेयुः
प०	मूर्वतु/मूर्वतात्	मूर्वताम्	मूर्वन्तु
ह्य०	अमूर्वत्	अमूर्वताम्	अमूर्वन्
अ०	अमूर्वीत्	अमूर्विष्टाम्	अमूर्विषुः
प०	मुमूर्व	मुमूर्वतुः	मुमूर्वहः
आ०	मूर्व्यात्	मूर्व्यास्ताम्	मूर्व्यासुः
श्व०	मूर्विता	मूर्वितारौ	मूर्वितारः
भ०	मूर्विष्यति	मूर्विष्यतः	मूर्विष्यन्ति
क्रि०	अमूर्विष्यत	अमूर्विष्यताम्	अमूर्विष्यन्

४८० मव (मव्) बन्धने।

व०	मवति	मवतः	मवन्ति
स०	मवेत्	मवेताम्	मवेयुः
प०	मवतु/मवतात्	मवताम्	मवन्तु
ह्य०	अमवत्	अमवताम्	अमवन्
अ०	अमावीत्	अमाविष्टाम्	अमाविषुः
	तथा		
	अमवीत्	अमविष्टाम्	अमविषुः
प०	ममाव	मेवतुः	मेवुः
आ०	मव्यात्	मव्यास्ताम्	मव्यासुः
श्व०	मविता	मवितारौ	मवितारः
भ०	मविष्यति	मविष्यतः	मविष्यन्ति
क्रि०	अमविष्यत	अमविष्यताम्	अमविष्यन्

४८१. गुर्वे (गूर्व्) उद्यमे।

व०	गूर्वति	गूर्वतः	गूर्वन्ति
स०	गूर्वेत्	गूर्वेताम्	गूर्वेयुः
प०	गूर्वतु/गूर्वतात्	गूर्वताम्	गूर्वन्तु
ह्य०	अगूर्वत्	अगूर्वताम्	अगूर्वन्
अ०	अगूर्वीत्	अगूर्विष्टाम्	अगूर्विषुः
प०	जहगूर्व	जहगूर्वतुः	जहगूर्वहः
आ०	गूर्व्यात्	गूर्व्यास्ताम्	गूर्व्यासुः
श्व०	गूर्विता	गूर्वितारौ	गूर्वितारः
भ०	गूर्विष्यति	गूर्विष्यतः	गूर्विष्यन्ति
क्रि०	अगूर्विष्यत्	अगूर्विष्यताम्	अगूर्विष्यन्

४८२. पिबु (पिन्व्) सेचने।

व०	पिन्वति	पिन्वतः	पिन्वन्ति
स०	पिन्वेत्	पिन्वेताम्	पिन्वेयुः
प०	पिन्वतु/पिन्वतात्	पिन्वताम्	पिन्वन्तु
ह्य०	अपिन्वत्	अपिन्वताम्	अपिन्वन्
अ०	अपिन्वीत्	अपिन्विष्टाम्	अपिन्विषुः
प०	पिपिन्व	पिपिन्वतुः	पिपिन्वुः
आ०	पिन्व्यात्	पिन्व्यास्ताम्	पिन्व्यासुः
श्व०	पिन्विता	पिन्वितारौ	पिन्वितारः
भ०	पिन्विष्यति	पिन्विष्यतः	पिन्विष्यन्ति
क्रि०	अपिन्विष्यत्	अपिन्विष्यताम्	अपिन्विष्यन्

४८३. मिबु (मिन्व्) सेचने।

व०	मिन्वति	मिन्वतः	मिन्वन्ति
स०	मिन्वेत्	मिन्वेताम्	मिन्वेयुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	मिन्वतु/मिन्वतात्	मिन्वताम्	मिन्वन्तु
ह्य०	अमिन्वत्	अमिन्वताम्	अमिन्वन्
अ०	अमिन्वीत्	अमिन्विष्टाम्	अमिन्विषु:
प०	मिमिन्व	मिमिन्वतु:	मिमिन्वु:
आ०	मिन्व्यात्	मिन्व्यास्ताम्	मिन्व्यासु:
श्व०	मिन्विता	मिन्वितारौ	मिन्वितार:
भ०	मिन्विष्यति	मिन्विष्यत:	मिन्विष्यन्ति
क्रि०	अमिन्विष्यत्	अमिन्विष्यताम्	अमिन्विष्यन्

४८४. निबु (निन्व्) सेचने।

व०	निन्वति	निन्वत:	निन्वन्ति
स०	निन्वेत्	निन्वेताम्	निन्वेयु:
प०	निन्वतु/निन्वतात्	निन्वताम्	निन्वन्तु
ह्य०	अनिन्वत्	अनिन्वताम्	अनिन्वन्
अ०	अनिन्वीत्	अनिन्विष्टाम्	अनिन्विषु:
प०	निनिन्व	निनिन्वतु:	निनिन्वु:
आ०	निन्व्यात्	निन्व्यास्ताम्	निन्व्यासु:
श्व०	निन्विता	निन्वितारौ	निन्वितार:
भ०	निन्विष्यति	निन्विष्यत:	निन्विष्यन्ति
क्रि०	अनिन्विष्यत्	अनिन्विष्यताम्	अनिन्विष्यन्

४८५. हिबु (हिन्व्) प्रीणने।

व०	हिन्वति	हिन्वत:	हिन्वन्ति
स०	हिन्वेत्	हिन्वेताम्	हिन्वेयु:
प०	हिन्वतु/हिन्वतात्	हिन्वताम्	हिन्वन्तु
ह्य०	अहिन्वत्	अहिन्वताम्	अहिन्वन्
अ०	अहिन्वीत्	अहिन्विष्टाम्	अहिन्विषु:
प०	जिहिन्व	जिहिन्वतु:	जिहिन्वु:
आ०	हिन्व्यात्	हिन्व्यास्ताम्	हिन्व्यासु:
श्व०	हिन्विता	हिन्वितारौ	हिन्वितार:
भ०	हिन्विष्यति	हिन्विष्यत:	हिन्विष्यन्ति
क्रि०	अहिन्विष्यत्	अहिन्विष्यताम्	अहिन्विष्यन्

४८६. दिबु (दिन्व्) प्रीणने।

व०	दिन्वति	दिन्वत:	दिन्वन्ति
स०	दिन्वेत्	दिन्वेताम्	दिन्वेयु:
प०	दिन्वतु/दिन्वतात्	दिन्वताम्	दिन्वन्तु
ह्य०	अदिन्वत्	अदिन्वताम्	अदिन्वन्
अ०	अदिन्वीत्	अदिन्विष्टाम्	अदिन्विषु:
प०	दिदिन्व	दिदिन्वतु:	दिदिन्वु:
आ०	दिन्व्यात्	दिन्व्या:स्ताम्	दिन्व्यासु:
श्व०	दिन्विता	दिन्वितारौ	दिन्वितार:
भ०	दिन्विष्यति	दिन्विष्यत:	दिन्विष्यन्ति
क्रि०	अदिन्विष्यत्	अदिन्विष्यताम्	अदिन्विष्यन्

४८७. जिबु (जिन्व्) प्रीणने।

व०	जिन्वति	जिन्वत:	जिन्वन्ति
स०	जिन्वेत्	जिन्वेताम्	जिन्वेयु:
प०	जिन्वतु/जिन्वतात्	जिन्वताम्	जिन्वन्तु
ह्य०	अजिन्वत्	अजिन्वताम्	अजिन्वन्
अ०	अजिन्वीत्	अजिन्विष्टाम्	अजिन्विषु:
प०	जिजिन्व	जिजिन्वतु:	जिजिन्वु:
आ०	जिन्व्यात्	जिन्व्यास्ताम्	जिन्व्यासु:
श्व०	जिन्विता	जिन्वितारौ	जिन्वितार:
भ०	जिन्विष्यति	जिन्विष्यत:	जिन्विष्यन्ति
क्रि०	अजिन्विष्यत्	अजिन्विष्यताम्	अजिन्विष्यन्

४८८. इबु (इन्व्) व्याप्तौ च।

चकारात्प्रीणने।

व०	इन्वति	इन्वत:	इन्वन्ति
	इन्वसि	इन्वथ:	इन्वथ
	इन्वामि	इन्वाव:इन्वाम:	
स०	इन्वेत्	इन्वेताम्	इन्वेयु:
	इन्वे:	इन्वेतम्	इन्वेत
	इन्वेयम्	इन्वेव	इन्वेम
प०	इन्वतु/इन्वतात्	इन्वताम्	इन्वन्तु
	इन्व/इन्वतात्	इन्वतम्	इन्वत
	इन्वानि	इन्वाव	इन्वाम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	ऐन्वत्	ऐन्वताम्	ऐन्वन्
	ऐन्वः	ऐन्वतम्	ऐन्वत
	ऐन्वम्	ऐन्वाव	ऐन्वाम
अ०	ऐन्वीत्	ऐन्विष्टाम्	ऐन्विषुः
	ऐन्वीः	ऐन्विष्टम्	ऐन्विष्ट
	ऐन्विषम्	ऐन्विष्व	ऐन्विष्म
प०	इन्वाञ्चकार	इन्वाञ्चक्रतुः	इन्वाञ्चक्रुः
	इन्वाञ्चकथ	इन्वाञ्चक्रथुः	इन्वाञ्चक्र
	इन्वाञ्चकार/इन्वाञ्चकर	इन्वाञ्चकृव	इन्वाञ्चकृम
	इन्वाम्बभूव/इन्वामास		
आ०	इन्व्यात्	इन्व्यास्ताम्	इन्व्यासुः
	इन्व्याः	इन्व्यास्तम्	इन्व्यास्त
	इन्व्यासम्	इन्व्यास्व	इन्व्यास्म
श्व०	इन्विता	इन्वितारौ	इन्वितारः
	इन्वितासि	इन्वितास्थः	इन्वितास्थ
	इन्वितास्मि	इन्वितास्वः	इन्वितास्मः
भ०	इन्विष्यति	इन्विष्यतः	इन्विष्यन्ति
	इन्विष्यसि	इन्विष्यथः	इन्विष्यथ
	इन्विष्यामि	इन्विष्यावः	इन्विष्यामः
क्रि०	ऐन्विष्यत्	ऐन्विष्यताम्	ऐन्विष्यन्
	ऐन्विष्यः	ऐन्विष्यतम्	ऐन्विष्यत
	ऐन्विष्यम्	ऐन्विष्याव	ऐन्विष्याम

४८९. अव (अव्) रक्षणगति कान्ति-प्रीतितृप्त्यवगमन प्रवेशश्रवणस्वाम्यर्थयाचनक्रियेच्छा दीप्त्यवाप्त्यालिङ्गन-हिंसादहनलाववृद्धिषु एकोनविंशतावर्थेषु।

व०	अवति	अवतः	अवन्ति
	अवसि	अवथः	अवथ
	अवामि	अवावः	अवामः
स०	अवेत्	अवेताम्	अवेयुः
	अवेः	अवेतम्	अवेत
	अवेयम्	अवेव	अवेम
प०	अवतु/अवतात्	अवताम्	अवन्तु
	अव/अवतात्	अवतम्	अवत
	अवानि	अवाव	अवाम
ह्य०	आवत्	आवताम्	आवन्
	आवः	आवतम्	आवत
	आवम्	आवाव	आवाम
अ०	आवीत्	आविष्टाम्	आविषुः
	आवीः	आविष्टम्	आविष्ट
	आविषम्	आविष्व	आविष्म
प०	आव	आवतुः	आवुः
	आविथ	आवथुः	आव
	आव	आविव	आविम
आ०	अव्यात्	अव्यास्ताम्	अव्यासुः
	अव्याः	अव्यास्तम्	अव्यास्त
	अव्यासम्	अव्यास्व	अव्यास्म
श्व०	अविता	अवितारौ	अवितारः
	अवितासि	अवितास्थः	अवितास्थ
	अवितास्मि	अवितास्वः	अवितास्मः
भ०	अविष्यति	अविष्यतः	अविष्यन्ति
	अविष्यसि	अविष्यथः	अविष्यथ
	अविष्यामि	अविष्यावः	अविष्यामः
क्रि०	आविष्यत्	आविष्यताम्	आविष्यन्
	आविष्यः	आविष्यतम्	आविष्यत
	आविष्यम्	आविष्याव	आविष्याम

।।अथ शान्ताः सप्त आद्याः पञ्च सेटश्च।।

४९०. कश (कश्) शब्दे।

सौत्रोऽयमित्यन्ये।

व०	कशति	कशतः	कशन्ति
	कशसि	कशथः	कशथ
	कशामि	कशावः	कशामः
स०	कशेत्	कशेताम्	कशेयुः
	कशेः	कशेतम्	कशेत
	कशेयम्	कशेव	कशेम
प०	कशतु/कशतात्	कशताम्	कशन्तु
	कश/कशतात्	कशतम्	कशत
	कशानि	कशाव	कशाम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	अकशत्	अकशताम्	अकशन्
	अकशः	अकशतम्	अकशत
	अकशम्	अकशाव	अकशाम
अ०	अकाशीत्	अकाशिष्टाम्	अकाशिषुः
	अकाशीः	अकाशिष्टम्	अकाशिष्ट
		तथा	
	अकाशिषम्	अकाशिष्व	अकाशिष्म
	अकशीत्	अकशिष्टाम्	अकशिषुः
	अकशीः	अकशिष्टम्	अकशिष्ट
	अकशिषम्	अकशिष्व	अकशिष्म
प०	चकाश	चकशतुः	चकशुः
	चकशिथ	चकशथुः	चकश
	चकाश/चकश	चकशिव	चकशिम
आ०	कश्यात्	कश्यास्ताम्	कश्यासुः
	कश्याः	कश्यास्तम्	कश्यास्त
	कश्यासम्	कश्यास्व	कश्यास्म
श्व०	कशिता	कशितारौ	कशितारः
	कशितासि	कशितास्थः	कशितास्थ
	कशितास्मि	कशितास्वः	कशितास्मः
भ०	कशिष्यति	कशिष्यतः	कशिष्यन्ति
	कशिष्यसि	कशिष्यथः	कशिष्यथ
	कशिष्यामि	कशिष्यावः	कशिष्यामः
क्रि०	अकशिष्यत्	अकशिष्यताम्	अकशिष्यन्
	अकशिष्यः	अकशिष्यतम्	अकशिष्यत
	अकशिष्यम्	अकशिष्याव	अकशिष्याम

४९१. मिश (मिश्) रोषे च।

चकाराच्छब्दे। शब्दने रोषक्रियायां चेत्यर्थः।

व०	मेशति	मेशतः	मेशन्ति
स०	मेशेत्	मेशेताम्	मेशेयुः
प०	मेशतु/मेशतात्	मेशताम्	मेशन्तु
ह्य०	अमेशत्	अमेशताम्	अमेशन्
अ०	अमेशीत्	अमेशिष्टाम्	अमेशिषुः
प०	मिमेश	मिमिशतुः	मिमिशुः
आ०	मिश्यात्	मिश्यास्ताम्	मिश्यासुः
श्व०	मेशिता	मेशितारौ	मेशितारः
भ०	मेशिष्यति	मेशिष्यतः	मेशिष्यन्ति
क्रि०	अमेशिष्यत्	अमेशिष्यताम्	अमेशिष्यन्

४९२. मश (मश्) शब्दने।

रोषक्रियायाञ्च।

व०	मशति	मशतः	मशन्ति
स०	मशेत्	मशेताम्	मशेयुः
प०	मशतु/मशतात्	मशताम्	मशन्तु
ह्य०	अमशत्	अमशताम्	अमशन्
अ०	अमशीत्	अमशिष्टाम्	अमशिषुः
		तथा	
	अमाशीत्	अमाशिष्टाम्	अमाशिषुः
प०	ममाश	मेशतुः	मेशुः
आ०	मश्यात्	मश्यास्ताम्	मश्यासुः
श्व०	मशिता	मशितारौ	मशितारः
भ०	मशिष्यति	मशिष्यतः	मशिष्यन्ति
क्रि०	अमशिष्यत्	अमशिष्यताम्	अमशिष्यन्

४९३. शश (शश्) प्लुतिगतौ।

प्लुतिलिर्गमने उत्प्लुत्य गमने इत्यर्थः।

व०	शशति	शशतः	शशन्ति
स०	शशेत्	शशेताम्	शशेयुः
प०	शशतु/शशतात्	शशताम्	शशन्तु
ह्य०	अशशत्	अशशताम्	अशशन्
अ०	अशाशीत्	अशाशिष्टाम्	अशाशिषुः
		तथा	
	अशशीत्	अशशिष्टाम्	अशशिषुः
प०	शशाश	शेशतुः	शेशुः
आ०	शश्यात्	शश्यास्ताम्	शश्यासुः
श्व०	शशिता	शशितारौ	शशितारः
भ०	शशिष्यति	शशिष्यतः	शशिष्यन्ति
क्रि०	अशशिष्यत्	अशशिष्यताम्	अशशिष्यन्

४९४. णिश (नेश्) समाधौ।

चित्तवृत्तिनिरोध इत्यर्थः।

व०	नेशति	नेशतः	नेशन्ति
स०	नेशेत्	नेशेताम्	नेशेयुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	नेशतु/नेशतात्	नेशताम्	नेशन्तु
ह्य०	अनेशत्	अनेशताम्	अनेशन्
अ०	अनेशीत्	अनेशिष्टाम्	अनेशिषु:
प०	निनेश	निनिशतु:	निनिशु:
आ०	निश्यात्	निश्यास्ताम्	निश्यासु:
श्व०	नेशिता	नेशितारौ	नेशितार:
भ०	नेशिष्यति	नेशिष्यत:	नेशिष्यन्ति
क्रि०	अनेशिष्यत्	अनेशिष्यताम्	अनेशिष्यन्

४९५. दृशृ (दृश्) प्रेक्षणे।

व०	पश्यति	पश्यत:	पश्यन्ति
	पश्यसि	पश्यथ:	पश्यथ
	पश्यामि	पश्याव:	पश्याम:
स०	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयु:
	पश्ये:	पश्येतम्	पश्येत
	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम
प०	पश्यतु/पश्यतात्	पश्यताम्	पश्यन्तु
	पश्य/पश्यतात्	पश्यतम्	पश्यत
	पश्यानि	पश्याव	पश्याम
ह्य०	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
	अपश्य:	अपश्यतम्	अपश्यत
	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम
अ०	अदर्शत्	अदर्शताम्	अदर्शन्
	अदर्श:	अदर्शतम्	अदर्शत
	अदर्शम्	अदर्शाव	अदर्शाव
		तथा	
	अद्राक्षीत्	अद्राष्टाम्	अद्राक्षु:
	अद्राक्षी:	अद्राष्टम्	अद्राष्ट
	अद्राक्षम्	अद्राक्ष्व	अद्राक्ष्म
प०	ददर्श	ददृशतु:	ददृशु:
	ददर्शिथ/दद्रष्ठ	ददृशथु:	ददृश
	ददर्श	ददृशिव	ददृशिम
आ०	दृश्यात्	दृश्यास्ताम्	दृश्यासु:
	दृश्या:	दृश्यास्तम्	दृश्यास्त
	दृश्यासम्	दृश्यास्व	दृश्यास्म
श्व०	द्रष्टा	द्रष्टारौ	द्रष्टार:
	द्रष्टासि	द्रष्टास्थ:	द्रष्टास्थ
	द्रष्टस्म	द्रष्टास्व:	द्रष्टास्म:
भ०	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यत:	द्रक्ष्यन्ति
	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथ:	द्रक्ष्यथ
	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्याव:	द्रक्ष्याम:
क्रि०	अद्रक्ष्यत्	अद्रक्ष्यताम्	अद्रक्ष्यन्
	अद्रक्ष्य:	अद्रक्ष्यतम्	अद्रक्ष्यत
	अद्रक्ष्यम्	अद्रक्ष्याव	अद्रक्ष्याम

४९६. दंशं (दंश्) दशने।

दशनं दन्तकर्म।

व०	दशति	दशत:	दशन्ति
	दशसि	दशथ:	दशथ
	दशामि	दशाव:	दशाम:
स०	दशेत्	दशेताम्	दशेयु:
	दशे:	दशेतम्	दशेत
	दशेयम्	दशेव	दशेम
प०	दशतु/दशतात्	दशताम्	दशन्तु
	दश/दशतात्	दशतम्	दशत
	दशानि	दशाव	दशाम
ह्य०	अदशत्	अदशताम्	अदशन्
	अदश:	अदशतम्	अदशत
	अदशम्	अदशाव	अदशाम
अ०	अदाङ्क्षीत्	अदांष्टाम्	अदाङ्क्षु:
	अदाङ्क्षी:	अदांष्टम्	अदांष्ट
	अदाङ्क्षम्	अदाङ्क्ष्व	अदाङ्क्ष्म
प०	ददंश	ददंशतु:	ददंशु:
	ददंशिथ	ददंशथु:	ददंश
	ददंश	ददंशिव	ददंशिम
आ०	दश्यात्	दश्यास्ताम्	दश्यासु:
	दश्या:	दश्यास्तम्	दश्यास्त
	दश्यासम्	दश्यास्व	दश्यास्म

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	दंष्टा	दंष्टारौ	दंष्टारः
	दंष्टासि	दंष्टास्थः	दंष्टास्थ
	दंष्टास्मि	दंष्टास्वः	दंष्टास्मः
भ०	दङ्क्ष्यति	दङ्क्ष्यतः	दङ्क्ष्यन्ति
	दङ्क्ष्यसि	दङ्क्ष्यथः	दङ्क्ष्यथ
	दङ्क्ष्यामि	दङ्क्ष्यावः	दङ्क्ष्यामः
क्रि०	अदङ्क्ष्यत्	अदङ्क्ष्यताम्	अदङ्क्ष्यन्
	अदङ्क्ष्यः	अदङ्क्ष्यतम्	अदङ्क्ष्यत
	अदङ्क्ष्यम्	अदङ्क्ष्याव	अदङ्क्ष्याम

अथ षान्ता एकचत्वारिंशत् कृषं वर्जाः सेटश्च।

४९७. घुषृ (घुष्) शब्दे।

व०	घोषति	घोषतः	घोषन्ति
स०	घोषेत्	घोषेताम्	घोषेयुः
प०	घोषतु/घोषतात्	घोषताम्	घोषन्तु
ह्य०	अघोषत्	अघोषताम्	अघोषन्
अ०	अघोषीत्	अघोषिष्टाम्	अघोषिषुः
	अघुषम्	अघुषाव	अघुषाम
प०	जुघोष	जुघुषतुः	जुघुषुः
आ०	घुष्यात्	घुष्यास्ताम्	घुष्यासुः
श्व०	घोषिता	घोषितारौ	घोषितारः
भ०	घोषिष्यति	घोषिष्यतः	घोषिष्यन्ति
क्रि०	अघोषिष्यत्	अघोषिष्यताम्	अघोषिष्यन्

४९८. चूष (चूष्) पाने।

व०	चूषति	चूषतः	चूषन्ति
स०	चूषेत्	चूषेताम्	चूषेयुः
प०	चूषतु/चूषतात्	चूषताम्	चूषन्तु
ह्य०	अचूषत्	अचूषताम्	अचूषन्
अ०	अचूषीत्	अचूषिष्टाम्	अचूषिषुः
प०	चुचूष	चुचूषतुः	चुचूषुः
आ०	चूष्यात्	चूष्यास्ताम्	चूष्यासुः
श्व०	चूषिता	चूषितारौ	चूषितारः
भ०	चूषिष्यति	चूषिष्यतः	चूषिष्यन्ति
क्रि०	अचूषिष्यत्	अचूषिष्यताम्	अचूषिष्यन्

४९९. तुष (तुष्) तुष्टौ।

व०	तूषति	तूषतः	तूषन्ति
स०	तूषेत्	तूषेताम्	तूषेयुः
प०	तूषतु/तूषतात्	तूषताम्	तूषन्तु
ह्य०	अतूषत्	अतूषताम्	अतूषन्
अ०	अतूषीत्	अतूषिष्टाम्	अतूषिषुः
प०	तुतूष	तुतूषतुः	तुतूषुः
आ०	तूष्यात्	तूष्यास्ताम्	तूष्यासुः
श्व०	तूषिता	तूषितारौ	तूषितारः
भ०	तूषिष्यति	तूषिष्यतः	तूषिष्यन्ति
क्रि०	अतूषिष्यत्	अतूषिष्यताम्	अतूषिष्यन्

५००. पूष (पूष्) वृद्धौ।

व०	पूषति	पूषतः	पूषन्ति
स०	पूषेत्	पूषेताम्	पूषेयुः
प०	पूषतु/पूषतात्	पूषताम्	पूषन्तु
ह्य०	अपूषत्	अपूषताम्	अपूषन्
अ०	अपूषीत्	अपूषिष्टाम्	अपूषिषुः
प०	पुपूष	पुपूषतुः	पुपूषुः
आ०	पूष्यात्	पूष्यास्ताम्	पूष्यासुः
श्व०	पूषिता	पूषितारौ	पूषितारः
भ०	पूषिष्यति	पूषिष्यतः	पूषिष्यन्ति
क्रि०	अपूषिष्यत्	अपूषिष्यताम्	अपूषिष्यन्

५०१. लुष (लुष्) स्तेये।

व०	लोषति	लोषतः	लोषन्ति
स०	लोषेत्	लोषेताम्	लोषेयुः
प०	लोषतु/लोषतात्	लोषताम्	लोषन्तु
ह्य०	अलोषत्	अलोषताम्	अलोषन्
अ०	अलोषीत्	अलोषिष्टाम्	अलोषिषुः
प०	लुलोष	लुलुषतुः	लुलुषुः
आ०	लुष्यात्	लुष्यास्ताम्	लुष्यासुः
श्व०	लोषिता	लोषितारौ	लोषितारः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	लोषिष्यति	लोषिष्यतः	लोषिष्यन्ति
क्रि०	अलोषिष्यत्	अलोषिष्यताम्	अलोषिष्यन्

५०२. मूष (मूष्) स्तेये।

व०	मूषति	मूषतः	मूषन्ति
स०	मूषेत्	मूषेताम्	मूषेयुः
प०	मूषतु/मूषतात्	मूषताम्	मूषन्तु
ह्य०	अमूषत्	अमूषताम्	अमूषन्
अ०	अमूषीत्	अमूषिष्टाम्	अमूषिषुः
प०	मुमूष	मुमूषतुः	मुमूषुः
आ०	मूष्यात्	मूष्यास्ताम्	मूष्यासुः
श्व०	मूषिता	मूषितारौ	मूषितारः
भ०	मूषिष्यति	मूषिष्यतः	मूषिष्यन्ति
क्रि०	अमूषिष्यत्	अमूषिष्यताम्	अमूषिष्यन्

५०३. सूष (सूष्) प्रसवे।

व०	सूषति	सूषतः	सूषन्ति
स०	सूषेत्	सूषेताम्	सूषेयुः
प०	सूषतु/सूषतात्	सूषताम्	सूषन्तु
ह्य०	असूषत्	असूषताम्	असूषन्
अ०	असूषीत्	असूषिष्टाम्	असूषिषुः
प०	सुसूष	सुसूषतुः	सुसूषुः
आ०	सूष्यात्	सूष्यास्ताम्	सूष्यासुः
श्व०	सूषिता	सूषितारौ	सूषितारः
भ०	सूषिष्यति	सूषिष्यतः	सूषिष्यन्ति
क्रि०	असूषिष्यत्	असूषिष्यताम्	असूषिष्यन्

५०४. ऊष (ऊष्) रुजायाम्।

व०	ऊषति	ऊषतः	ऊषन्ति
स०	ऊषेत्	ऊषेताम्	ऊषेयुः
प०	ऊषतु/ऊषतात्	ऊषताम्	ऊषन्तु
ह्य०	औषत्	औषताम्	औषन्
अ०	औषीत्	औषिष्टाम्	औषिषुः
प०	ऊषाञ्चकार	ऊषाञ्चक्रतुः	ऊषाञ्चक्रुः
	ऊषाम्बभूव/ऊषामास		
आ०	ऊष्यात्	ऊष्यास्ताम्	ऊष्यासुः
श्व०	ऊषिता	ऊषितारौ	ऊषितारः
भ०	ऊषिष्यति	ऊषिष्यतः	ऊषिष्यन्ति
क्रि०	औषिष्यत्	औषिष्यताम्	औषिष्यन्

५०५. ईष (ईष्) उञ्छे उच्चयने।

व०	ईषति	ईषतः	ईषन्ति
स०	ईषेत्	ईषेताम्	ईषेयुः
प०	ईषतु/ईषतात्	ईषताम्	ईषन्तु
ह्य०	ऐषत्	ऐषताम्	ऐषन्
अ०	ऐषीत्	ऐषिष्टाम्	ऐषिषुः
प०	ईषाञ्चकार	ईषाञ्चक्रतुः	ईषाञ्चक्रुः
	ईषाम्बभूव/ईषामास		
आ०	ईष्यात्	ईष्यास्ताम्	ईष्यासुः
श्व०	ईषिता	ईषितारौ	ईषितारः
भ०	ईषिष्यति	ईषिष्यतः	ईषिष्यन्ति
क्रि०	ऐषिष्यत्	ऐषिष्यताम्	ऐषिष्यन्

५०६. कृषं (कृष्) विलेखने।

हलोत्कर्षणम्।

व०	कर्षति	कर्षतः	कर्षन्ति
	कर्षसि	कर्षथः	कर्षथ
	कर्षामि	कर्षावः	कर्षामः
स०	कर्षेत्	कर्षेताम्	कर्षेयुः
	कर्षेः	कर्षेतम्	कर्षेत
	कर्षेयम्	कर्षेव	कर्षेम
प०	कर्षतु/कर्षतात्	कर्षताम्	कर्षन्तु
	कर्ष/कर्षतात्	कर्षतम्	कर्षत
	कर्षानि	कर्षाव	कर्षाम
ह्य०	अकर्षत्	अकर्षताम्	अकर्षन्
	अकर्षः	अकर्षतम्	अकर्षत
	अकर्षम्	अकर्षाव	अकर्षाम
अ०	अकृक्षत	अकृक्षताम्	अकृक्षन्
	अकृक्षः	अकृक्षतम्	अकृक्षत
	अकृक्षम्	अकृक्षाव	अकृक्षाम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

		तथा	
	अक्राक्षीत	अक्राष्टाम्	अक्राक्षुः
	अक्राक्षीः	अक्राष्टम्	अक्राष्ट
	अक्राक्षम्	अक्राक्ष्व	अक्राक्ष्म
		तथा	
	आकर्क्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकार्क्षुः
	अकार्क्षीः	अकार्ष्टम्	अकार्ष्ट
	अकार्क्षम्	अकार्क्ष्व	अकार्क्ष्म
प०	चकर्ष	चकृषतुः	चकृषुः
	चकर्षिथ	चकर्षथुः	चकृर्ष
	चकर्ष	चकृषिव	चकृषिम
आ०	कृष्यात्	कृष्यास्ताम्	कृष्यासुः
	कृष्याः	कृष्यास्तम्	कृष्यास्त
	कृष्यासम्	कृष्यास्व	कृष्यास्म
श्व०	कर्ष्टा	कर्ष्टारौ	कर्ष्टारः
	कर्ष्टासि	कष्टास्थः	कष्टास्थ
	कर्ष्टास्मि	कर्ष्टास्वः	कर्ष्टास्मः
		तथा	
	क्रष्टा	क्रष्टारौ	क्रष्टारः
	क्रष्टासि	क्रष्टास्थः	क्रष्टास्थ
	क्रष्टास्मि	क्रष्टास्वः	क्रष्टास्मः
भ०	कर्क्ष्यति	कर्क्ष्यतः	कर्क्ष्यन्ति
	कर्क्ष्यसि	कर्क्ष्यथः	कर्क्ष्यथ
	कर्क्ष्यामि	कर्क्ष्यावः	कर्क्ष्यामः
		तथा	
	क्रक्ष्यति	क्रक्ष्यतः	क्रक्ष्यन्ति
	क्रक्ष्यसि	क्रक्ष्यथः	क्रक्ष्यथ
	क्रक्ष्यामि	क्रक्ष्यावः	क्रक्ष्यामः
क्रि०	अकर्क्ष्यत्	अकर्क्ष्यताम्	अकर्क्ष्यन्
	अकर्क्ष्यः	अकर्क्ष्यतम्	अकर्क्ष्यत
	अकर्क्ष्यम्	अकर्क्ष्याव	अकर्क्ष्याम
		तथा	
	अक्रक्ष्यत्	अक्रक्ष्यताम्	अक्रक्ष्यन्
	अक्रक्ष्यः	अक्रक्ष्यतम्	अक्रक्ष्यत
	अक्रक्ष्यम्	अक्रक्ष्याव	अक्रक्ष्याम

५०७. कष (कष्) हिंसायाम्।

व०	कषति	कषतः	कषन्ति
स०	कषेत्	कषेताम्	कषेयुः
प०	कषतु/कषतात्	कषताम्	कषन्तु
ह्य०	अकषत्	अकषताम्	अकषन्
अ०	अकाषीत्	अकाषिष्टाम्	अकाषिषुः
		तथा	
	अकषीत्	अकषिष्टाम्	अकषिषुः
प०	चकाष	चकषतुः	चकषुः
आ०	कष्यात्	कष्यास्ताम्	कष्यासुः
श्व०	कषिता	कषितारौ	कषितारः
भ०	कषिष्यति	कषिष्यतः	कषिष्यन्ति
क्रि०	अकषिष्यत्	अकषिष्यताम्	अकषिष्यन्

५०८. शेष (शेष्) हिंसायाम्।

व०	शेषति	शेषतः	शेषन्ति
स०	शेषेत्	शेषेताम्	शेषेयुः
प०	शेषतु/शेषतात्	शेषताम्	शेषन्तु
ह्य०	अशेषत्	अशेषताम्	अशेषन्
अ०	अशेषीत्	अशेषिष्टाम्	अशेषिषुः
प०	शिशेष	शिशिषतुः	शिशिषुः
आ०	शिष्यात्	शिष्यास्ताम्	शिष्यासुः
श्व०	शेषिता	शेषितारौ	शेषितारः
भ०	शेषिष्यति	शेषिष्यतः	शेषिष्यन्ति
क्रि०	अशेषिष्यत्	अशेषिष्यताम्	अशेषिष्यन्

५०९. जष (जष्) हिंसायाम्।

व०	जषति	जषतः	जषन्ति
स०	जषेत्	जषेताम्	जषेयुः
प०	जषतु/जषतात्	जषताम्	जषन्तु
ह्य०	अजषत्	अजषताम्	अजषन्
अ०	अजाषीत्	अजाषिष्टाम्	अजाषिषुः
		तथा	
	अजषीत्	अजषिष्टाम्	अजषिषुः
प०	जजाष	जेषतुः	जेषुः
आ०	जष्यात्	जष्यास्ताम्	जष्यासुः
श्व०	जषिता	जषितारौ	जषितारः
भ०	जषिष्यति	जषिष्यतः	जषिष्यन्ति
क्रि०	अजषिष्यत्	अजषिष्यताम्	अजषिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५१०. झष (झष्) हिंसायाम्।

व०	झषति	झषतः	झषन्ति
स०	झषेत्	झषेताम्	झषेयुः
प०	झषतु/झषतात्	झषताम्	झषन्तु
ह्य०	अझषत्	अझषताम्	अझषन्
अ०	अझाषीत्	अझाषिष्टाम्	अझाषिषुः
		तथा	
	अझषीत्	अझषिष्टाम्	अझषिषुः
प०	जझाष	जझषतुः	जझषुः
आ०	झष्यात्	झष्यास्ताम्	झष्यासुः
श्व०	झषिता	झषितारौ	झषितारः
भ०	झषिष्यति	झषिष्यतः	झषिष्यन्ति
क्रि०	अझषिष्यत्	अझषिष्यताम्	अझषिष्यन्

५११. वष (वष्) हिंसायाम्।

व०	वषति	वषतः	वषन्ति
स०	वषेत्	वषेताम्	वषेयुः
प०	वषतु/वषतात्	वषताम्	वषन्तु
ह्य०	अवषत्	अवषताम्	अवषन्
अ०	अवाषीत्	अवाषिष्टाम्	अवाषिषुः
		तथा	
	अवषीत्	अवषिष्टाम्	अवषिषुः
प०	ववाष	ववषतुः	ववषुः
आ०	वष्यात्	वष्यास्ताम्	वष्यासुः
श्व०	वषिता	वषितारौ	वषितारः
भ०	वषिष्यति	वषिष्यतः	वषिष्यन्ति
क्रि०	अवषिष्यत्	अवषिष्यताम्	अवषिष्यन्

५१२. मष (मष्) हिंसायाम्।

व०	मषति	मषतः	मषन्ति
स०	मषेत्	मषेताम्	मषेयुः
प०	मषतु/मषतात्	मषताम्	मषन्तु
ह्य०	अमषत्	अमषताम्	अमषन्
अ०	अमाषीत्	अमाषिष्टाम्	अमाषिषुः
		तथा	
	अमषीत्	अमषिष्टाम्	अमषिषुः
प०	ममाष	मेषतुः	मेषुः
आ०	मष्यात्	मष्यास्ताम्	मष्यासुः
श्व०	मषिता	मषितारौ	मषितारः
भ०	मषिष्यति	मषिष्यतः	मषिष्यन्ति
क्रि०	अमषिष्यत्	अमषिष्यताम्	अमषिष्यन्

५१३. मुष (मुष्) हिंसायाम्।

व०	मोषति	मोषतः	मोषन्ति
स०	मोषेत्	मोषेताम्	मोषेयुः
प०	मोषतु/मोषतात्	मोषताम्	मोषन्तु
ह्य०	अमोषत्	अमोषताम्	अमोषन्
अ०	अमोषीत्	अमोषिष्टाम्	अमोषिषुः
प०	मुमोष	मुमुषतुः	मुमुषुः
आ०	मुष्यात्	मुष्यास्ताम्	मुष्यासुः
श्व०	मोषिता	मोषितारौ	मोषितारः
भ०	मोषिष्यति	मोषिष्यतः	मोषिष्यन्ति
क्रि०	अमोषिष्यत्	अमोषिष्यताम्	अमोषिष्यन्

५१४. रुष (रुष्) हिंसायाम्।

व०	रोषति	रोषतः	रोषन्ति
स०	रोषेत्	रोषेताम्	रोषेयुः
प०	रोषतु/रोषतात्	रोषताम्	रोषन्तु
ह्य०	अरोषत्	अरोषताम्	अरोषन्
अ०	अरोषीत्	अरोषिष्टाम्	अरोषिषुः
प०	रुरोष	रुरुषतुः	रुरुषुः
आ०	रुष्यात्	रुष्यास्ताम्	रुष्यासुः
श्व०	रोषिता	रोषितारौ	रोषितारः
		तथा	
	रोष्टा	रोष्टारौ	रोष्टारः
भ०	रोषिष्यति	रोषिष्यतः	रोषिष्यन्ति
क्रि०	अरोषिष्यत्	अरोषिष्यताम्	अरोषिष्यन्

५१५. रिष (रिष्) हिंसायाम्।

व०	रेषति	रेषतः	रेषन्ति
स०	रेषेत्	रेषेताम्	रेषेयुः
प०	रेषतु/रेषतात्	रेषताम्	रेषन्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	अरेषत्	अरेषताम्	अरेषन्
अ०	अरेषीत्	अरेषिष्टाम्	अरेषिषु:
प०	रिरेष	रिरिषतु:	रिरिषु:
आ०	रिष्यात्	रिष्यास्ताम्	रिष्यासु:
श्व०	रेषिता	रेषितारौ	रेषितार:
		तथा	
	रेष्टा	रेष्टारौ	रेष्टार:
भ०	रेषिष्यति	रेषिष्यत:	रेषिष्यन्ति
क्रि०	अरेषिष्यत्	अरेषिष्यताम्	अरेषिष्यन्

५१६. यूष (यूष्) हिंसायाम्।

व०	यूषति	यूषत:	यूषन्ति
स०	यूषेत्	यूषेताम्	यूषेयु:
प०	यूषतु/यूषतात्	यूषताम्	यूषन्तु
ह्य०	अयूषत्	अयूषताम्	अयूषन्
अ०	अयूषीत्	अयूषिष्टाम्	अयूषिषु:
प०	युयूष	युयूषतु:	युयूषु:
आ०	यूष्यात्	यूष्यास्ताम्	यूष्यासु:
श्व०	यूषिता	यूषितारौ	यूषितार:
भ०	यूषिष्यति	यूषिष्यत:	यूषिष्यन्ति
क्रि०	अयूषिष्यत्	अयूषिष्यताम्	अयूषिष्यन्

५१७. जूष (जूष्) हिंसायाम्।

व०	जूषति	जूषत:	जूषन्ति
स०	जूषेत्	जूषेताम्	जूषेयु:
प०	जूषतु/जूषतात्	जूषताम्	जूषन्तु
ह्य०	अजूषत्	अजूषताम्	अजूषन्
अ०	अजूषीत्	अजूषिष्टाम्	अजूषिषु:
प०	जुजूष	जुजूषतु:	जुजूषु:
आ०	जूष्यात्	जूष्यास्ताम्	जूष्यासु:
श्व०	जूषिता	जूषितारौ	जूषितार:
भ०	जूषिष्यति	जूषिष्यत:	जूषिष्यन्ति
क्रि०	अजूषिष्यत्	अजूषिष्यताम्	अजूषिष्यन्

५१८. शष (शष्) हिंसायाम्।

व०	शषति	शषत:	शषन्ति
स०	शषेत्	शषेताम्	शषेयु:
प०	शषतु/शषतात्	शषताम्	शषन्तु
ह्य०	अशषत्	अशषताम्	अशषन्
अ०	अशाषीत्	अशाषिष्टाम्	अशाषिषु:
		तथा	
	अशषीत्	अशषिष्टाम्	अशषिषु:
प०	शशाष	शेषतु:	शेषु:
आ०	शष्यात्	शष्यास्ताम्	शष्यासु:
श्व०	शषिता	शषितारौ	शषितार:
भ०	शषिष्यति	शषिष्यत:	शषिष्यन्ति
क्रि०	अशषिष्यत्	अशषिष्यताम्	अशषिष्यन्

५१९. चष (चष्) हिंसायाम्।

व०	चषति	चषत:	चषन्ति
स०	चषेत्	चषेताम्	चषेयु:
प०	चषतु/चषतात्	चषताम्	चषन्तु
ह्य०	अचषत्	अचषताम्	अचषन्
अ०	अचाषीत्	अचाषिष्टाम्	अचाषिषु:
		तथा	
	अचषीत्	अचषिष्टाम्	अचषिषु:
प०	चचाष	चेषतु:	चेषु:
आ०	चष्यात्	चष्यास्ताम्	चष्यासु:
श्व०	चषिता	चषितारौ	चषितार:
भ०	चषिष्यति	चषिष्यत:	चषिष्यन्ति
क्रि०	अचषिष्यत्	अचषिष्यताम्	अचषिष्यन्

५२०. वृष (वृष्) संघाते च।

चकाराद्धिंसायाम्।

व०	वर्षति	वर्षत:	वर्षन्ति
स०	वर्षेत्	वर्षेताम्	वर्षेयु:
प०	वर्षतु/वर्षतात्	वर्षताम्	वर्षन्तु
ह्य०	अवर्षत्	अवर्षताम्	अवर्षन्
अ०	अवर्षीत्	अवर्षिष्टाम्	अवर्षिषु:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	ववर्ष	ववृषतुः	ववृषुः
आ०	वृष्यात्	वृष्यास्ताम्	वृष्यासुः
श्व०	वर्षिता	वर्षितारौ	वर्षितारः
भ०	वर्षिष्यति	वर्षिष्यतः	वर्षिष्यन्ति
क्रि०	अवर्षिष्यत्	अवर्षिष्यताम्	अवर्षिष्यन्

५२१. भष (भष्) भर्त्सने।

भर्त्सनं कुत्सितशब्दकरणम्।

व०	भषति	भषतः	भषन्ति
स०	भषेत्	भषेताम्	भषेयुः
प०	भषतु/भषतात्	भषताम्	भषन्तु
ह्य०	अभषत्	अभषताम्	अभषन्
अ०	अभाषीत्	अभाषिष्टाम्	अभाषिषुः
		तथा	
	अभषीत्	अभषिष्टाम्	अभषिषुः
प०	बभाष	बभषतुः	बभषुः
आ०	भष्यात्	भष्यास्ताम्	भष्यासुः
श्व०	भषिता	भषितारौ	भषितारः
भ०	भषिष्यति	भषिष्यतः	भषिष्यन्ति
क्रि०	अभषिष्यत्	अभषिष्यताम्	अभषिष्यन्

५२२. जिषू (जिष्) सेचने।

व०	जेषति	जेषतः	जेषन्ति
स०	जेषेत्	जेषेताम्	जेषेयुः
प०	जेषतु/जेषतात्	जेषताम्	जेषन्तु
ह्य०	अजेषत्	अजेषताम्	अजेषन्
अ०	अजेषीत्	अजेषिष्टाम्	अजेषिषुः
प०	जिजेष	जिजिषतुः	जिजिषुः
आ०	जिष्यात्	जिष्यास्ताम्	जिष्यासुः
श्व०	जेषिता	जेषितारौ	जेषितारः
भ०	जेषिष्यति	जेषिष्यतः	जेषिष्यन्ति
क्रि०	अजेषिष्यत्	अजेषिष्यताम्	अजेषिष्यन्

५२३. विषू (विष्) सेचने।

व०	वेषति	वेषतः	वेषन्ति
स०	वेषेत्	वेषेताम्	वेषेयुः
प०	वेषतु/वेषतात्	वेषताम्	वेषन्तु
ह्य०	अवेषत्	अवेषताम्	अवेषन्
अ०	अवेषीत्	अवेषिष्टाम्	अवेषिषुः
प०	विवेष	विविषतुः	विविषुः
आ०	विष्यात्	विष्यास्ताम्	विष्यासुः
श्व०	वेषिता	वेषितारौ	वेषितारः
भ०	वेषिष्यति	वेषिष्यतः	वेषिष्यन्ति
क्रि०	अवेषिष्यत्	अवेषिष्यताम्	अवेषिष्यन्

५२४. मिषू (मिष्) सेचने।

व०	मेषति	मेषतः	मेषन्ति
स०	मेषेत्	मेषेताम्	मेषेयुः
प०	मेषतु/मेषतात्	मेषताम्	मेषन्तु
ह्य०	अमेषत्	अमेषताम्	अमेषन्
अ०	अमेषीत्	अमेषिष्टाम्	अमेषिषुः
प०	मिमेष	मिमिषतुः	मिमिषुः
आ०	मिष्यात्	मिष्यास्ताम्	मिष्यासुः
श्व०	मेषिता	मेषितारौ	मेषितारः
भ०	मेषिष्यति	मेषिष्यतः	मेषिष्यन्ति
क्रि०	अमेषिष्यत्	अमेषिष्यताम्	अमेषिष्यन्

५२५. निषू (निष्) सेचने।

व०	नेषति	नेषतः	नेषन्ति
स०	नेषेत्	नेषेताम्	नेषेयुः
प०	नेषतु/नेषतात्	नेषताम्	नेषन्तु
ह्य०	अनेषत्	अनेषताम्	अनेषन्
अ०	अनेषीत्	अनेषिष्टाम्	अनेषिषुः
प०	निनेष	निनिषतुः	निनिषुः
आ०	निष्यात्	निष्यास्ताम्	निष्यासुः
श्व०	नेषिता	नेषितारौ	नेषितारः
भ०	नेषिष्यति	नेषिष्यतः	नेषिष्यन्ति
क्रि०	अनेषिष्यत्	अनेषिष्यताम्	अनेषिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५२६. पृषू (पृष्) सेचने।

व०	पर्षति	पर्षतः	पर्षन्ति
स०	पर्षेत्	पर्षेताम्	पर्षेयुः
प०	पर्षतु/पर्षतात्	पर्षताम्	पर्षन्तु
ह्य०	अपर्षत्	अपर्षताम्	अपर्षन्
अ०	अपर्षीत्	अपर्षिष्टाम्	अपर्षिषुः
प०	पपर्ष	पपृषतुः	पपृषुः
आ०	पृष्यात्	पृष्यास्ताम्	पृष्यासुः
श्व०	पर्षिता	पर्षितारौ	पर्षितारः
भ०	पर्षिष्यति	पर्षिष्यतः	पर्षिष्यन्ति
क्रि०	अपर्षिष्यत्	अपर्षिष्यताम्	अपर्षिष्यन्

५२७. वृषू (वृष्) सेचने।

व०	वर्षति	वर्षतः	वर्षन्ति
स०	वर्षेत्	वर्षेताम्	वर्षेयुः
प०	वर्षतु/वर्षतात्	वर्षताम्	वर्षन्तु
ह्य०	अवर्षत्	अवर्षताम्	अवर्षन्
अ०	अवर्षीत्	अवर्षिष्टाम्	अवर्षिषुः
प०	ववर्ष	ववृषतुः	ववृषुः
आ०	वृष्यात्	वृष्यास्ताम्	वृष्यासुः
श्व०	वर्षिता	वर्षितारौ	वर्षितारः
भ०	वर्षिष्यति	वर्षिष्यतः	वर्षिष्यन्ति
क्रि०	अवर्षिष्यत्	अवर्षिष्यताम्	अवर्षिष्यन्

५२८. मृषू (मृष्) सुने च।

चकारात्सेचने।

व०	मर्षति	मर्षतः	मर्षन्ति
स०	मर्षेत्	मर्षेताम्	मर्षेयुः
प०	मर्षतु/मर्षतात्	मर्षताम्	मर्षन्तु
ह्य०	अमर्षत्	अमर्षताम्	अमर्षन्
अ०	अमर्षीत्	अमर्षिष्टाम्	अमर्षिषुः
प०	ममर्ष	ममृषतुः	ममृषुः
आ०	मृष्यात्	मृष्यास्ताम्	मृष्यासुः
श्व०	मर्षिता	मर्षितारौ	मर्षितारः
भ०	मर्षिष्यति	मर्षिष्यतः	मर्षिष्यन्ति
क्रि०	अमर्षिष्यत्	अमर्षिष्यताम्	अमर्षिष्यन्

५२९. उषू (उष्) दाहे।

व०	ओषति	ओषतः	ओषन्ति
स०	ओषेत्	ओषेताम्	ओषेयुः
प०	ओषतु/ओषतात्	ओषताम्	ओषन्तु
ह्य०	औषत्	औषताम्	औषन्
अ०	औषीत्	औषिष्टाम्	औषिषुः
प०	ओषाञ्चकार	ओषाञ्चक्रतुः	ओषाञ्चक्रुः
		तथा	
	उवोष	ऊषतुः	ऊषुः
आ०	उष्यात्	उष्यास्ताम्	उष्यासुः
श्व०	ओषिता	ओषितारौ	ओषितारः
भ०	ओषिष्यति	ओषिष्यतः	ओषिष्यन्ति
क्रि०	औषिष्यत्	औषिष्यताम्	औषिष्यन्

५३०. श्रिषू (श्रिष्) दाहे।

व०	श्रेषति	श्रेषतः	श्रेषन्ति
स०	श्रेषेत्	श्रेषेताम्	श्रेषेयुः
प०	श्रेषतु/श्रेषतात्	श्रेषताम्	श्रेषन्तु
ह्य०	अश्रेषत्	अश्रेषताम्	अश्रेषन्
अ०	अश्रेषीत्	अश्रेषिष्टाम्	अश्रेषिषुः
प०	शिश्रेष	शिश्रिषतुः	शिश्रिषुः
आ०	श्रिष्यात्	श्रिष्यास्ताम्	श्रिष्यासुः
श्व०	श्रेषिता	श्रेषितारौ	श्रेषितारः
भ०	श्रेषिष्यति	श्रेषिष्यतः	श्रेषिष्यन्ति
क्रि०	अश्रेषिष्यत्	अश्रेषिष्यताम्	अश्रेषिष्यन्

५३१. श्लिषू (श्लिष्) दाहे।

व०	श्लेषति	श्लेषतः	श्लेषन्ति
स०	श्लेषेत्	श्लेषेताम्	श्लेषेयुः
प०	श्लेषतु/श्लेषतात्	श्लेषताम्	श्लेषन्तु
ह्य०	अश्लेषत्	अश्लेषताम्	अश्लेषन्
अ०	अश्लेषीत्	अश्लेषिष्टाम्	अश्लेषिषुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	शिश्लेष	शिश्लिषतु:	शिश्लिषु:
आ०	श्लिष्यात्	श्लिष्यास्ताम्	श्लिष्यासु:
श्व०	श्लेषिता	श्लेषितारौ	श्लेषितार:
भ०	श्लेषिष्यति	श्लेषिष्यत:	श्लेषिष्यन्ति
क्रि०	अश्लेषिष्यत्	अश्लेषिष्यताम्	अश्लेषिष्यन्

५३२. प्रुषू (प्रुष्) दाहे।

व०	प्रोषति	प्रोषत:	प्रोषन्ति
स०	प्रोषेत्	प्रोषेताम्	प्रोषेयु:
प०	प्रोषतु/प्रोषतात्	प्रोषताम्	प्रोषन्तु
ह्य०	अप्रोषत्	अप्रोषताम्	अप्रोषन्
अ०	अप्रोषीत्	अप्रोषिष्टाम्	अप्रोषिषु:
प०	पुप्रोष	पुप्रुषतु:	पुप्रुषु:
आ०	प्रुष्यात्	प्रुष्यास्ताम्	प्रुष्यासु:
श्व०	प्रोषिता	प्रोषितारौ	प्रोषितार:
भ०	प्रोषिष्यति	प्रोषिष्यत:	प्रोषिष्यन्ति
क्रि०	अप्रोषिष्यत्	अप्रोषिष्यताम्	अप्रोषिष्यन्

५३३. प्लुषू (प्लुष्) दाहे।

व०	प्लोषति	प्लोषत:	प्लोषन्ति
स०	प्लोषेत्	प्लोषेताम्	प्लोषेयु:
प०	प्लोषतु/प्लोषतात्	प्लोषताम्	प्लोषन्तु
ह्य०	अप्लोषत्	अप्लोषताम्	अप्लोषन्
अ०	अप्लोषीत्	अप्लोषिष्टाम्	अप्लोषिषु:
प०	पुप्लोष	पुप्लुषतु:	पुप्लुषु:
आ०	प्लुष्यात्	प्लुष्यास्ताम्	प्लुष्यासु:
श्व०	प्लोषिता	प्लोषितारौ	प्लोषितार:
भ०	प्लोषिष्यति	प्लोषिष्यत:	प्लोषिष्यन्ति
क्रि०	अप्लोषिष्यत्	अप्लोषिष्यताम्	अप्लोषिष्यन्

५३४. घृषू (घृष्) संहर्षे।

व०	घर्षति	घर्षत:	घर्षन्ति
स०	घर्षेत्	घर्षेताम्	घर्षेयु:
प०	घर्षतु/घर्षतात्	घर्षताम्	घर्षन्तु
ह्य०	अघर्षत्	अघर्षताम्	अघर्षन्
अ०	अघर्षीत्	अघर्षिष्टाम्	अघर्षिषु:
प०	जघर्ष	जघृषतु:	जघृषु:
आ०	घृष्यात्	घृष्यास्ताम्	घृष्यासु:
श्व०	घर्षिता	घर्षितारौ	घर्षितार:
भ०	घर्षिष्यति	घर्षिष्यत:	घर्षिष्यन्ति
क्रि०	अघर्षिष्यत्	अघर्षिष्यताम्	अघर्षिष्यन्

५३५. हृषू (हृष्) अलीके।

व०	हर्षति	हर्षत:	हर्षन्ति
स०	हर्षेत्	हर्षेताम्	हर्षेयु:
प०	हर्षतु/हर्षतात्	हर्षताम्	हर्षन्तु
ह्य०	अहर्षत्	अहर्षताम्	अहर्षन्
अ०	अहर्षीत्	अहर्षिष्टाम्	अहर्षिषु:
प०	जहर्ष	जहृषतु:	जहृषु:
आ०	हृष्यात्	हृष्यास्ताम्	हृष्यासु:
श्व०	हर्षिता	हर्षितारौ	हर्षितार:
भ०	हर्षिष्यति	हर्षिष्यत:	हर्षिष्यन्ति
क्रि०	अहर्षिष्यत्	अहर्षिष्यताम्	अहर्षिष्यन्

५३६. पुष (पुष्) पुष्टौ।

व०	पोषति	पोषत:	पोषन्ति
स०	पोषेत्	पोषेताम्	पोषेयु:
प०	पोषतु/पोषतात्	पोषताम्	पोषन्तु
ह्य०	अपोषत्	अपोषताम्	अपोषन्
अ०	अपोषीत्	अपोषिष्टाम्	अपोषिषु:
प०	पुपोष	पुपुषतु:	पुपुषु:
आ०	पुष्यात्	पुष्यास्ताम्	पुष्यासु:
श्व०	पोषिता	पोषितारौ	पोषितार:
भ०	पोषिष्यति	पोषिष्यत:	पोषिष्यन्ति
क्रि०	अपोषिष्यत्	अपोषिष्यताम्	अपोषिष्यन्

५३७. भूष (भूष्) अलङ्कारे।

व०	भूषति	भूषत:	भूषन्ति
	भूषसि	भूषथ:	भूषथ
	भूषामि	भूषाव:	भूषाम:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स०	भूषेत्	भूषेताम्	भूषेयुः
	भूषेः	भूषेतम्	भूषेत
	भूषेयम्	भूषेव	भूषेम
प०	भूषतु/भूषतात्	भूषताम्	भूषन्तु
	भूष/भूषतात्	भूषतम्	भूषत
	भूषाणि	भूषाव	भूषाम
ह्य०	अभूषत्	अभूषताम्	अभूषन्
	अभूषः	अभूषतम्	अभूषत
	अभूषम्	अभूषाव	अभूषाम
अ०	अभूषीत्	अभूषिष्टाम्	अभूषिषुः
	अभूषीः	अभूषिष्टम्	अभूषिष्ट
	अभूषिषम्	अभूषिष्व	अभूषिष्म
प०	बुभूष	बुभूषतुः	बुभूषुः
	बुभूषिथ	बुभूषथुः	बुभूष
	बुभूष	बुभूषिव	बुभूषिम
आ०	भूष्यात्	भूष्यास्ताम्	भूष्यासुः
	भूष्याः	भूष्यास्तम्	भूष्यास्त
	भूष्यासम्	भूष्यास्व	भूष्यास्म
श्व०	भूषिता	भूषितारौ	भूषितारः
	भूषितासि	भूषितास्थः	भूषितास्थ
	भूषितास्मि	भूषितास्वः	भूषितास्मः
भ०	भूषिष्यति	भूषिष्यतः	भूषिष्यन्ति
	भूषिष्यसि	भूषिष्यथः	भूषिष्यथ
	भूषिष्यामि	भूषिष्यावः	भूषिष्यामः
क्रि०	अभूषिष्यत्	अभूषिष्यताम्	अभूषिष्यन्
	अभूषिष्यः	अभूषिष्यतम्	अभूषिष्यत
	अभूषिष्यम्	अभूषिष्याव	अभूषिष्याम

अथ सान्तास्त्रयोदश धस्लृंवर्जाः सेटश्च।

५३८. तसु (तंस्) अलङ्कारे।

व०	तंसति	तंसतः	तंसन्ति
	तंससि	तंसथः	तंसथ
	तंसामि	तंसावः	तंसामः
स०	तंसेत्	तंसेताम्	तंसेयुः
	तंसेः	तंसेतम्	तंसेत
	तंसेयम्	तंसेव	तंसेम
प०	तंसतु/तंसतात्	तंसताम्	तंसन्तु
	तंस/तंसतात्	तंसतम्	तंसत
	तंसानि	तंसाव	तंसाम
ह्य०	अतंसत्	अतंसताम्	अतंसन्
	अतंसः	अतंसतम्	अतंसत
	अतंसम्	अतंसाव	अतंसाम
अ०	अतंसीत्	अतंसिष्टाम्	अतंसिषुः
	अतंसीः	अतंसिष्टम्	अतंसिष्ट
	अतंसिषम्	अतंसिष्व	अतंसिष्म
प०	ततंस	ततंसतुः	ततंसुः
	ततंसिथ	ततंसथुः	ततंस
	ततंस	ततंसिव	ततंसिम
आ०	तंस्यात्	तंस्यास्ताम्	तंस्यासुः
	तंस्याः	तंस्यास्तम्	तंस्यास्त
	तंस्यासम्	तंस्यास्व	तंस्यास्म
श्व०	तंसिता	तंसितारौ	तंसितारः
	तंसितासि	तंसितास्थः	तंसितास्थ
	तंसितास्मि	तंसितास्वः	तंसितास्मः
भ०	तंसिष्यति	तंसिष्यतः	तंसिष्यन्ति
	तंसिष्यसि	तंसिष्यथः	तंसिष्यथ
	तंसिष्यामि	तंसिष्यावः	तंसिष्यामः
क्रि०	अतंसिष्यत्	अतंसिष्यताम्	अतंसिष्यन्
	अतंसिष्यः	अतंसिष्यतम्	अतंसिष्यत
	अतंसिष्यम्	अतंसिष्याव	अतंसिष्यामः

५३९. तुस (तुस्) शब्दे।

व०	तोसति	तोसतः	तोसन्ति
स०	तोसेत्	तोसेताम्	तोसेयुः
प०	तोसतु/तोसतात्	तोसताम्	तोसन्तु
ह्य०	अतोसत्	अतोसताम्	अतोसन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	अतोसीत्	अतोसिष्टाम्	अतोसिषुः
प०	तुतोस	तुतुसतुः	तुतुसुः
आ०	तुस्यात्	तुस्यास्ताम्	तुस्यासुः
श्व०	तोसिता	तोसितारौ	तोसितारः
लृ०	तोसिष्यति	तोसिष्यतः	तोसिष्यन्ति
क्रि०	अतोसिष्यत्	अतोसिष्यताम्	अतोसिष्यन्

५४०. ह्रस (ह्रस्) शब्दे।

व०	ह्रसति	ह्रसतः	ह्रसन्ति
स०	ह्रसेत्	ह्रसेताम्	ह्रसेयुः
प०	ह्रसतु/ह्रसतात्	ह्रसताम्	ह्रसन्तु
ह्य०	अह्रसत्	अह्रसताम्	अह्रसन्
अ०	अह्रासीत्	अह्रासिष्टाम्	अह्रासिषुः
		तथा	
	अह्रसीत्	अह्रसिष्टाम्	अह्रसिषुः
प०	जह्रास	जह्रसतुः	जह्रसुः
आ०	ह्रस्यात्	ह्रस्यास्ताम्	ह्रस्यासुः
श्व०	ह्रसिता	ह्रसितारौ	ह्रसितारः
लृ०	ह्रसिष्यति	ह्रसिष्यतः	ह्रसिष्यन्ति
क्रि०	अह्रसिष्यत्	अह्रसिष्यताम्	अह्रसिष्यन्

५४१. ह्लस (ह्लस्) शब्दे।

व०	ह्लसति	ह्लसतः	ह्लसन्ति
स०	ह्लसेत्	ह्लसेताम्	ह्लसेयुः
प०	ह्लसतु/ह्लसतात्	ह्लसताम्	ह्लसन्तु
ह्य०	अह्लसत्	अह्लसताम्	अह्लसन्
अ०	अह्लासीत्	अह्लासिष्टाम्	अह्लासिषुः
		तथा	
	अह्लसीत्	अह्लसिष्टाम्	अह्लसिषुः
प०	जह्लास	जह्लसतुः	जह्लसुः
आ०	ह्लस्यात्	ह्लस्यास्ताम्	ह्लस्यासुः
श्व०	ह्लसिता	ह्लसितारौ	ह्लसितारः
लृ०	ह्लसिष्यति	ह्लसिष्यतः	ह्लसिष्यन्ति
क्रि०	अह्लसिष्यत्	अह्लसिष्यताम्	अह्लसिष्यन्

५४२. रस (रस्) शब्दे।

व०	रसति	रसतः	रसन्ति
स०	रसेत्	रसेताम्	रसेयुः
प०	रसतु/रसतात्	रसताम्	रसन्तु
ह्य०	अरसत्	अरसताम्	अरसन्
अ०	अरासीत्	अरासिष्टाम्	अरासिषुः
		तथा	
	अरसीत्	अरसिष्टाम्	अरसिषुः
प०	ररास	रेसतुः	रेसुः
आ०	रस्यात्	रस्यास्ताम्	रस्यासुः
श्व०	रसिता	रसितारौ	रसितारः
लृ०	रसिष्यति	रसिष्यतः	रसिष्यन्ति
क्रि०	अरसिष्यत्	अरसिष्यताम्	अरसिष्यन्

५४३. लस (लस्) श्लेषणक्रीयनयोः।

व०	लसति	लसतः	लसन्ति
स०	लसेत्	लसेताम्	लसेयुः
प०	लसतु/लसतात्	लसताम्	लसन्तु
ह्य०	अलसत्	अलसताम्	अलसन्
अ०	अलासीत्	अलासिष्टाम्	अलासिषुः
		तथा	
	अलसीत्	अलसिष्टाम्	अलसिषुः
प०	ललास	लेसतुः	लेसुः
आ०	लस्यात्	लस्यास्ताम्	लस्यासुः
श्व०	लसिता	लसितारौ	लसितारः
लृ०	लसिष्यति	लसिष्यतः	लसिष्यन्ति
क्रि०	अलसिष्यत्	अलसिष्यताम्	अलसिष्यन्

५४४. घस्लृ (घस्) अदने।

व०	घसति	घसतः	घसन्ति
स०	घसेत्	घसेताम्	घसेयुः
प०	घसतु/घसतात्	घसताम्	घसन्तु
ह्य०	अघसत्	अघसताम्	अघसन्
अ०	अघसत्	अघसताम्	अघसन्
प०	जघास	जक्षतुः	जक्षुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	घस्यात्	घस्यास्ताम्	घस्यासुः
श्व०	घस्ता	घस्तारौ	घस्तारः
लृ०	घत्स्यति	घत्स्यतः	घत्स्यन्ति
क्रि०	अघत्स्यत्	अघत्स्यताम्	अघत्स्यन्

५४५. हस (हस्) हसने।

व०	हसति	हसतः	हसन्ति
स०	हसेत्	हसेताम्	हसेयुः
प०	हसतु/हसतात्	हसताम्	हसन्तु
ह्य०	अहसत्	अहसताम्	अहसन्
अ०	अहसीत्	अहसिष्टाम्	अहसिषुः
प०	जहास	जहसतुः	जहसुः
आ०	हस्यात्	हस्यास्ताम्	हस्यासुः
श्व०	हसिता	हसितारौ	हसितारः
लृ०	हसिष्यति	हसिष्यतः	हसिष्यन्ति
क्रि०	अहसिष्यत्	अहसिष्यताम्	अहसिष्यन्

५४६. पिसृ (पिस्) गतौ।

व०	पेसति	पेसतः	पेसन्ति
स०	पेसेत्	पेसेताम्	पेसेयुः
प०	पेसतु/पेसतात्	पेसताम्	पेसन्तु
ह्य०	अपेसत्	अपेसताम्	अपेसन्
अ०	अपेसीत्	अपेसिष्टाम्	अपेसिषुः
प०	पिपेस	पिपिसतुः	पिपिसुः
आ०	पिस्यात्	पिस्यास्ताम्	पिस्यासुः
श्व०	पेसिता	पेसितारौ	पेसितारः
लृ०	पेसिष्यति	पेसिष्यतः	पेसिष्यन्ति
क्रि०	अपेसिष्यत्	अपेसिष्यताम्	अपेसिष्यन्

५४७. पेसृ (पेस्) गतौ।

व०	पेसति	पेसतः	पेसन्ति
स०	पेसेत्	पेसेताम्	पेसेयुः
प०	पेसत/पेसतात्	पेसताम्	पेसन्तु
ह्य०	अपेसत्	अपेसताम्	अपेसन्
अ०	अपेसीत्	अपेसिष्टाम्	अपेसिषुः
प०	पिपेस	पिपिसतुः	पिषेसुः
आ०	पेस्यात्	पेस्यास्ताम्	पेस्यासुः
श्व०	पेसिता	पेसितारौ	पेसितारः
लृ०	पेसिष्यति	पेसिष्यतः	पेसिष्यन्ति
क्रि०	अपेसिष्यत्	अपेसिष्यताम्	अपेसिष्यन्

५४८. वेसृ (वेस्) गतौ।

व०	वेसति	वेसतः	वेसन्ति
स०	वेसेत्	वेसेताम्	वेसेयुः
प०	वेसतु/वेसतात्	वेसताम्	वेसन्तु
ह्य०	अवेसत्	अवेसताम्	अवेसन्
अ०	अवेसीत्	अवेसिष्टाम्	अवेसिषुः
प०	विवेस	विवेसतुः	विवेसुः
आ०	वेस्यात्	वेस्यास्ताम्	वेस्यासुः
श्व०	वेसिता	वेसितारौ	वेसितारः
भ०	वेसिष्यति	वेसिष्यतः	वेसिष्यन्ति
क्रि०	अवेसिष्यत्	अवेसिष्यताम्	अवेसिष्यन्

५४९. शसू (शस्) हिंसायाम्।

व०	शसति	शसतः	शसन्ति
स०	शसेत्	शसेताम्	शसेयुः
प०	शसतु/शसतात्	शसताम्	शसन्तु
ह्य०	अशसत्	अशसताम्	अशसन्
अ०	अशसीत्	अशसिष्टाम्	अशसिषुः
प०	शशास	शशसतुः	शशसुः
आ०	शस्यात्	शस्यास्ताम्	शस्यासुः
श्व०	शसिता	शसितारौ	शसितारः
भ०	शसिष्यति	शसिष्यतः	शसिष्यन्ति
क्रि०	अशसिष्यत्	अशसिष्यताम्	अशसिष्यन्

५५०. शंसू (शंस्) स्तुतौच।

चकाराद्धिंसायाम्।

व०	शंसति	शंसतः	शंसन्ति
स०	शंसेत्	शंसेताम्	शंसेयुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	शंसतु/शंसतात	शंसताम्	शंसन्तु
ह्य०	अशंसत्	अशंसताम्	अशंसन्
अ०	अशंसीत्	अशंसिष्टाम्	अशंसिषुः
प०	शशंस	शशंसतुः	शशंसुः
आ०	शस्यात्	शस्यास्ताम्	शस्यासुः
श्व०	शंसिता	शंसितारौ	शंसितारः
भ०	शंसिष्यति	शंसिष्यतः	शंसिष्यन्ति
क्रि०	अशंसिष्यत्	अशंसिष्यताम्	अशंसिष्यन्

५५१. मिहं (मिह) सेचने।

व०	मेहति	मेहतः	मेहन्ति
स०	मेहेत्	मेहेताम्	मेहेयुः
प०	मेहतु/मेहतात्	मेहताम्	मेहन्तु
ह्य०	अमेहत्	अमेहताम्	अमेहन्
अ०	अमिक्षत्	अमिक्षताम्	अमिक्षन
प०	मिमेह	मिमिहतुः	मिमिहुः
आ०	मिह्यात्	मिह्यास्ताम्	मिह्यासुः
श्व०	मेढा	मेढारौ	मेढारः
भ०	मेक्ष्यति	मेक्ष्यतः	मेक्ष्यन्ति
क्रि०	अमेक्ष्यत्	अमेक्ष्यताम्	अमेक्ष्यन्

५५२. दहं (दह) भस्मीकरणे।

व०	दहति	दहतः	दहन्ति
स०	दहेत्	दहेताम्	दहेयुः
प०	दहतु/दहतात्	दहताम्	दहन्तु
ह्य०	अदहत्	अदहताम्	अदहन्
अ०	अधाक्षीत्	अदाग्धाम्	अधाक्षुः
प०	ददाह	देहतुः	देहुः
आ०	दह्यात्	दह्यास्ताम्	दह्यासुः
श्व०	दग्धा	दग्धारौ	दग्धारः
भ०	धक्ष्यति	धक्ष्यतः	धक्ष्यन्ति
क्रि०	अधक्ष्यत	अधक्ष्यताम्	अधक्ष्यन्

५५३. चहं (चह्) कल्कने।

कल्कनं शाठ्यम्।

व०	चहति	चहतः	चहन्ति
स०	चहेत्	चहेताम्	चहेयुः
प०	चहतु/चहतात्	चहताम्	चहन्तु
ह्य०	अचहत्	अचहताम्	अचहन्
अ०	अचहीत्	अचहिष्टाम्	अचहिषुः
प०	चचाह	चेहतुः	चेहुः
आ०	चह्यात्	चह्यास्ताम्	चह्यासुः
श्व०	चहिता	चहितारौ	चहितारः
भ०	चहिष्यति	चहिष्यतः	चहिष्यन्ति
क्रि०	अचहिष्यत्	अचहिष्यताम्	अचहिष्यन्

५५४. रह (रह्) त्यागे।

व०	रहति	रहतः	रहन्ति
स०	रहेत्	रहेताम्	रहेयुः
प०	रहतु/रहतात्	रहताम्	रहन्तु
ह्य०	अरहत्	अरहताम्	अरहन्
अ०	अरहीत्	अरहिष्टाम्	अरहिषुः
प०	रराह	रेहतुः	रेहुः
आ०	रह्यात्	रह्यास्ताम्	रह्यासुः
श्व०	रहिता	रहितारौ	रहितारः
भ०	रहिष्यति	रहिष्यतः	रहिष्यन्ति
क्रि०	अरहिष्यत्	अरहिष्यताम्	अरहिष्यन्

५५५. रंह (रंह्) गतौ।

व०	रंहति	रंहतः	रंहन्ति
स०	रंहेत्	रंहेताम्	रंहेयुः
प०	रंहतु/रंहतात्	रंहताम्	रंहन्तु
ह्य०	अरंहत्	अरंहताम्	अरंहन्
अ०	अरंहीत्	अरंहिष्टाम्	अरंहिषुः
प०	ररंह	ररंहतुः	ररंहुः
आ०	रंह्यात्	रंह्यास्ताम्	रंह्यासुः
श्व०	रंहिता	रंहितारौ	रंहितारः
भ०	रंहिष्यति	रंहिष्यतः	रंहिष्यन्ति
क्रि०	अरंहिष्यत्	अरंहिष्यताम्	अरंहिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५६०. वृह (बृंह) शब्दे च।

चकाराद्वृद्धौ।

व०	वर्हति	वर्हतः	वर्हन्ति
स०	वर्हेत्	वर्हेताम्	वर्हेयुः
प०	वर्हतु/वर्हतात्	वर्हताम्	वर्हन्तु
ह्य०	अवर्हत्	अवर्हताम्	अवर्हन्
अ०	अवृहत्	अवृहताम्	अवृहन्
		तथा	
	अवर्हीत्	अवर्हिष्टाम्	अवर्हिषुः
प०	ववर्ह	ववृहतुः	ववृहुः
आ०	वृह्यात्	वृह्यास्ताम्	वृह्यासुः
श्व०	वर्हिता	वर्हितारौ	वर्हितारः
भ०	वर्हिष्यति	वर्हिष्यतः	वर्हिष्यन्ति
क्रि०	अवर्हिष्यत्	अवर्हिष्यताम्	अवर्हिष्यन्

५५६. दृह (दृह्) वृद्धौ।

व०	दर्हति	दर्हतः	दर्हन्ति
स०	दर्हेत्	दर्हेताम्	दर्हेयुः
प०	दर्हतु/दर्हतात्	दर्हताम्	दर्हन्तु
ह्य०	अदर्हत्	अदर्हताम्	अदर्हन्
अ०	अदर्हीत्	अदर्हिष्टाम्	अदर्हिषुः
प०	ददर्ह	ददृहतुः	ददृहुः
आ०	दृह्यात्	दृह्यास्ताम्	दृह्यासुः
श्व०	दर्हिता	दर्हितारौ	दर्हितारः
भ०	दर्हिष्यति	दर्हिष्यतः	दर्हिष्यन्ति
क्रि०	अदर्हिष्यत्	अदर्हिष्यताम्	अदर्हिष्यन्

५५७. दृहु (दृंह्) वृद्धौ।

व०	दृंहति	दृंहतः	दृंहन्ति
स०	दृंहेत्	दृंहेताम्	दृंहेयुः
प०	दृंहतु/दृंहतात्	दृंहताम्	दृंहन्तु
ह्य०	अदृंहत्	अदृंहताम्	अदृंहन्
अ०	अदृंहीत्	अदृंहिष्टाम्	अदृंहिषुः
प०	ददृंह	ददृंहतुः	ददृंहुः
आ०	दृंह्यात्	दृंह्यास्ताम्	दृंह्यासुः
श्व०	दृंहिता	दृंहितारौ	दृंहितारः
लृ०	दृंहिष्यति	दृंहिष्यतः	दृंहिष्यन्ति
क्रि०	अदृंहिष्यत्	अदृंहिष्यताम्	अदृंहिष्यन्

५५८. वृह (वृह्) वृद्धौ।

व०	वर्हति	वर्हतः	वर्हन्ति
स०	वर्हेत्	वर्हेताम्	वर्हेयुः
प०	वर्हतु/वर्हतात्	वर्हताम्	वर्हन्तु
ह्य०	अवर्हत्	अवर्हताम्	अवर्हन्
अ०	अवर्हीत्	अवर्हिष्टाम्	अवर्हिषुः
प०	ववर्ह	ववृहतुः	ववृहुः
आ०	वृह्यात्	वृह्यास्ताम्	वृह्यासुः
श्व०	वर्हिता	वर्हितारौ	वर्हितारः
भ०	वर्हिष्यति	वर्हिष्यतः	वर्हिष्यन्ति
क्रि०	अवर्हिष्यत्	अवर्हिष्यताम्	अवर्हिष्यन्

५५९. वृंह (वृंह्) शब्दे वृद्धौ च।

व०	वृंहति	वृंहतः	वृंहन्ति
स०	वृंहेत्	वृंहेताम्	वृंहेयुः
प०	वृंहतु/वृंहतात्	वृंहताम्	वृंहन्तु
ह्य०	अवृंहत्	अवृंहताम्	अवृंहन्
अ०	अवृंहीत्	अवृंहिष्टाम्	अवृंहिषुः
प०	ववृंह	ववृंहतुः	ववृंहुः
आ०	वृंह्यात्	वृंह्यास्ताम्	वृंह्यासुः
श्व०	वृंहिता	वृंहितारौ	वृंहितारः
भ०	वृंहिष्यति	वृंहिष्यतः	वृंहिष्यन्ति
क्रि०	अवृंहिष्यत्	अवृंहिष्यताम्	अवृंहिष्यन्

उहृट्ट तुहृट्ट दहृट्ट अर्दने।

५६१. उहृट्ट (उह्) अर्दने।

व०	ओहति	ओहतः	ओहन्ति
	ओहसि	ओहथः	ओहथ
	ओहामि	ओहावः	ओहामः
स०	ओहेत्	ओहेताम्	ओहेयुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	ओहे:	ओहेतम्	ओहेत
	ओहेयम्	ओहेव	ओहेम
प०	ओहतु/ओहतात्	ओहताम्	ओहन्तु
	ओह/ओहतात्	ओहतम्	ओहत
	ओहानि	ओहाव	ओहाम
ह्य०	औहत्	औहताम्	औहन्
	औह:	औहतम्	औहत
	औहम्	औहाव	औहाम
अ०	औहीत्	औहिष्टाम्	औहिषु:
	औही:	औहिष्टम्	औहिष्ट
	औहिषम्	औहिष्व	औहिष्म
		तथा	
	औहत्	औहताम्	औहन्
	औह:	औहतम्	औहत
	औहम्	औहाव	औहाम
प०	उवोह	ऊहतु:	ऊहु:
	ऊहिथ	ऊहथु:	ऊह
	उवोह	ऊहिव	ऊहिम
आ०	उह्यात्	उह्यास्ताम्	उह्यासु:
	उह्या:	उह्यास्तम्	उह्यास्त
	उह्यासम्	उह्यास्व	उह्यास्म
श्व०	ओहिता	ओहितारौ	ओहितार:
	ओहितासि	ओहितास्थ:	ओहितास्थ
	ओहितास्मि	ओहितास्व:	ओहितास्म:
भ०	ओहिष्यति	ओहिष्यत:	ओहिष्यन्ति
	ओहिष्यसि	ओहिष्यथ:	ओहिष्यथ
	ओहिष्यामि	ओहिष्याव:	ओहिष्याम:
क्रि०	औहिष्यत्	औहिष्यताम्	औहिष्यन्
	औहिष्य:	औहिष्यतम्	औहिष्यत
	औहिष्यम्	औहिष्याव	औहिष्याम

५६२. तुहृ (तुह) अर्दने।

व०	तोहति	तोहत:	तोहन्ति
स०	तोहेत्	तोहेताम्	तोहेयु:
प०	तोहतु/तोहतात्	तोहताम्	तोहन्तु
ह्य०	अतोहत्	अतोहताम्	अतोहन्
अ०	अतोहीत्	अतोहिष्टाम्	अतोहिषु:
		तथा	
	अतुहत्	अतुहताम्	अतुहन्
प०	तुतोह	तुतुहतु:	तुतुहु:
आ०	तुह्यात्	तुह्यास्ताम्	तुह्यासु:
श्व०	तोहिता	तोहितारौ	तोहितार:
भ०	तोहिष्यति	तोहिष्यत:	तोहिष्यन्ति
क्रि०	अतोहिष्यत्	अतोहिष्यताम्	अतोहिष्यन्

५६३. दुहृ (दुह) अर्दने।

व०	दोहति	दोहत:	दोहन्ति
स०	दोहेत्	दोहेताम्	दोहेयु:
प०	दोहतु/दोहतात्	दोहताम्	दोहन्तु
ह्य०	अदोहत्	अदोहताम्	अदोहन्
अ०	अदोहीत्	अदोहिष्टाम्	अदोहिषु:
		तथा	
	अदुहत्	अदुहताम्	अदुहन्
प०	दुदोह	दुदुहतु:	दुदुहु:
आ०	दुह्यात्	दुह्यास्ताम्	दुह्यासु:
श्व०	दोहिता	दोहितारौ	दोहितार:
भ०	दोहिष्यति	दोहिष्यत:	दोहिष्यन्ति
क्रि०	अदोहिष्यत्	अदोहिष्यताम्	अदोहिष्यन्

५६४. अर्ह (अर्ह्) पूजायाम्।

व०	अर्हति	अर्हत:	अर्हन्ति
स०	अर्हेत्	अर्हेताम्	अर्हेयु:
प०	अर्हतु/अर्हतात्	अर्हताम्	अर्हन्तु
ह्य०	आर्हत्	आर्हताम्	आर्हन्
अ०	आर्हीत्	आर्हिष्टाम्	आर्हिषु:
प०	आनर्ह	आनर्हतु:	आनर्हु:
आ०	अर्ह्यात्	अर्ह्यास्ताम्	अर्ह्यासु:
श्व०	अर्हिता	अर्हितारौ	अर्हितार:
भ०	अर्हिष्यति	अर्हिष्यत:	अर्हिष्यन्ति
क्रि०	आर्हिष्यत्	आर्हिष्यताम्	आर्हिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५६५. मह (मह्) पूजायाम्

व०	महति	महत:	महन्ति
	महसि	महथ:	महथ
	महामि	महाव:	महाम:
स०	महेत्	महेताम्	महेयु:
	महे:	महेतम्	महेत
	महेयम्	महेव	महेम
प०	महतु/महतात्	महताम्	महन्तु
	मह/महतात्	महतम्	महत
	महानि	महाव	महाम
ह्य०	अमहत्	अमहताम्	अमहन्
	अमह:	अमहतम्	अमहत
	अमहम्	अमहाव	अमहाम
अ०	अमहीत्	अमहिष्टाम्	अमहिषु:
	अमही:	अमहिष्टम्	अमहिष्ट
	अमहिषम्	अमहिष्व	अमहिष्म
प०	ममाह	मेहतु:	मेहु:
	मेहिथ	मेहथु:	मेह
	ममाह/ममह	मेहिव	मेहिम
आ०	मह्यात्	मह्यास्ताम्	मह्यासु:
	मह्या:	मह्यास्तम्	मह्यास्त
	मह्यासम्	मह्यास्व	मह्यास्म
श्व०	महिता	महितारौ	महितार:
	महितासि	महितास्थ:	महितास्थ
	महितास्मि	महितास्व:	महितास्म:
भ०	महिष्यति	महिष्यत:	महिष्यन्ति
	महिष्यसि	महिष्यथ:	महिष्यथ
	महिष्यामि	महिष्याव:	महिष्याम:
क्रि०	अमहिष्यत्	अमहिष्यताम्	अमहिष्यन्
	अमहिष्य:	अमहिष्यतम्	अमहिष्यत
	अमहिष्यम्	अमहिष्याव	अमहिष्याम

५६६. उक्ष (उक्ष्) सेचने।

।।अथ क्षान्ता विंशति: सेटश्च। क्षान्तानां षान्तेषु पाठो युक्तो वैचित्र्यार्थे त्विह कृत:।।

व०	उक्षति	उक्षत:	उक्षन्ति
	उक्षसि	उक्षथ:	उक्षथ
	उक्षामि	उक्षाव:	उक्षाम:
स०	उक्षेत्	उक्षेताम्	उक्षेयु:
	उक्षे:	उक्षेतम्	उक्षेत
	उक्षेयम्	उक्षेव	उक्षेम
प०	उक्षतु/उक्षतात्	उक्षताम्	उक्षन्तु
	उक्ष/उक्षतात्	उक्षतम्	उक्षत
	उक्षानि	उक्षाव	उक्षाम
ह्य०	औक्षत्	औक्षताम्	औक्षन्
	औक्ष:	औक्षतम्	औक्षत
	औक्षम्	औक्षाव	औक्षाम
अ०	औक्षीत्	औक्षिष्टाम्	औक्षिषु:
	औक्षी:	औक्षिष्टम्	औक्षिष्ट
	औक्षिषम्	औक्षिष्व	औक्षिष्म
प०	उक्षाञ्चकार	उक्षाञ्चक्रतु:	उक्षाञ्चक्रु:
	उक्षाञ्चकर्थ	उक्षाञ्चक्रथु:	उक्षाञ्चक्र
	उक्षाञ्चकार/उक्षाञ्चकर	उक्षाञ्चकृव	उक्षाञ्चकृम
	उक्षाम्बभूव/उक्षामास		
आ०	उक्ष्यात्	उक्ष्यास्ताम्	उक्ष्यासु:
	उक्ष्या:	उक्ष्यास्तम्	उक्ष्यास्त
	उक्ष्यासम्	उक्ष्यास्व	उक्ष्यास्म
श्व०	उक्षिता	उक्षितारौ	उक्षितार:
	उक्षितासि	उक्षितास्थ:	उक्षितास्थ
	उक्षितास्मि	उक्षितास्व:	उक्षितास्म:
भ०	उक्षिष्यति	उक्षिष्यत:	उक्षिष्यन्ति
	उक्षिष्यसि	उक्षिष्यथ:	उक्षिष्यथ
	उक्षिष्यामि	उक्षिष्याव:	उक्षिष्याम:
क्रि०	औक्षिष्यत्	औक्षिष्यताम्	औक्षिष्यन्
	औक्षिष्य:	औक्षिष्यतम्	औक्षिष्यत
	औक्षिष्यम्	औक्षिष्याव	औक्षिष्याम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५६७. रक्ष (रक्ष्) पालने।

व०	रक्षति	रक्षत:	रक्षन्ति
	रक्षसि	रक्षथ:	रक्षथ
	रक्षामि	रक्षाव:	रक्षाम:
स०	रक्षेत्	रक्षेताम्	रक्षेयु:
	रक्षे:	रक्षेतम्	रक्षेत
	रक्षेयम्	रक्षेव	रक्षेम
प०	रक्षतु/रक्षतात्	रक्षताम्	रक्षन्तु
	रक्ष/रक्षतात्	रक्षतम्	रक्षत
	रक्षाणि	रक्षाव	रक्षाम
ह्य०	अरक्षत्	अरक्षताम्	अरक्षन्
	अरक्ष:	अरक्षतम्	अरक्षत
	अरक्षम्	अरक्षाव	अरक्षाम
अ०	अरक्षीत्	अरक्षिष्टाम्	अरक्षिषु:
	अरक्षी:	अरक्षिष्टम्	अरक्षिष्ट
	अरक्षिषम्	अरक्षिष्व	अरक्षिष्म
प०	ररक्ष	ररक्षतु:	ररक्षु:
	ररक्षिथ	ररक्षथु:	ररक्ष
	ररक्ष	ररक्षिव	ररक्षिम
आ०	रक्ष्यात्	रक्ष्यास्ताम्	रक्ष्यासु:
	रक्ष्या:	रक्ष्यास्तम्	रक्ष्यास्त
	रक्ष्यासम्	रक्ष्यास्व	रक्ष्यास्म
श्व०	रक्षिता	रक्षितारौ	रक्षितार:
	रक्षितासि	रक्षितास्थ:	रक्षितास्थ
	रक्षितास्मि	रक्षितास्व:	रक्षितास्म:
भ०	रक्षिष्यति	रक्षिष्यत:	रक्षिष्यन्ति
	रक्षिष्यसि	रक्षिष्यथ:	रक्षिष्यथ
	रक्षिष्यामि	रक्षिष्याव:	रक्षिष्याम:
क्रि०	अरक्षिष्यत्	अरक्षिष्यताम्	अरक्षिष्यन्
	अरक्षिष्य:	अरक्षिष्यतम्	अरक्षिष्यत
	अरक्षिष्यम्	अरक्षिष्याव	अरक्षिष्याम

५६८. मक्ष (मक्ष्) सङ्घाते।

व०	मक्षति	मक्षत:	मक्षन्ति
स०	मक्षेत्	मक्षेताम्	मक्षेयु:
प०	मक्षतु/मक्षतात्	मक्षताम्	मक्षन्तु
ह्य०	अमक्षत्	अमक्षताम्	अमक्षन्
अ०	अमक्षीत्	अमक्षिष्टाम्	अमक्षिषु:
प०	ममक्ष	ममक्षतु:	ममक्षु:
आ०	मक्ष्यात्	मक्ष्यास्ताम्	मक्ष्यासु:
श्व०	मक्षिता	मक्षितारौ	मक्षितार:
भ०	मक्षिष्यति	मक्षिष्यत:	मक्षिष्यन्ति
क्रि०	अमक्षिष्यत्	अमक्षिष्यताम्	अमक्षिष्यन्

५६९. मुक्ष (मुक्ष्) सङ्घाते।

व०	मुक्षति	मुक्षत:	मुक्षन्ति
स०	मुक्षेत्	मुक्षेताम्	मुक्षेयु:
प०	मुक्षतु/मुक्षतात्	मुक्षताम्	मुक्षन्तु
ह्य०	अमुक्षत्	अमुक्षताम्	अमुक्षन्
अ०	अमुक्षीत्	अमुक्षिष्टाम्	अमुक्षिषु:
प०	मुमुक्ष	मुमुक्षतु:	मुमुक्षु:
आ०	मुक्ष्यात्	मुक्ष्यास्ताम्	मुक्ष्यासु:
श्व०	मुक्षिता	मुक्षितारौ	मुक्षितार:
भ०	मुक्षिष्यति	मुक्षिष्यत:	मुक्षिष्यन्ति
क्रि०	अमुक्षिष्यत्	अमुक्षिष्यताम्	अमुक्षिष्यन्

५७०. अक्षौ व्याप्तौ च।

चकारात्संघाते।

व०	अक्षति	अक्षत:	अक्षन्ति
व०	अक्ष्णोति	अक्ष्णुत:	अक्ष्णुन्ति
स०	अक्षेत्	अक्षेताम्	अक्षेयु:
स०	अक्ष्णुयात्	अक्ष्णुयाताम्	अक्ष्णुयु:
प०	अक्षतु/अक्षतात्	अक्षताम्	अक्षन्तु
प०	अक्ष्णोतु/अक्ष्णुतात्	अक्ष्णुताम्	अक्ष्णुवन्तु
ह्य०	आक्षत	आक्षताम्	आक्षन्
ह्य०	अक्ष्णोत्	अक्ष्णुताम्	अक्ष्णुवन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	आक्षीत्	आक्षिष्टाम्	आक्षिषुः
		तथा	
	आक्षीत्	आष्टाम्	आक्षुः
प०	आनक्ष	आनक्षतुः	आनक्षुः
आ०	अक्ष्यात्	अक्ष्यास्ताम्	अक्ष्यासुः
श्व०	अक्षिता	अक्षितारौ	अक्षितारः
		तथा	
	अष्टा	अष्टारौ:	अष्टारः
भ०	अक्षिष्यति	अक्षिष्यतः	अक्षिष्यन्ति
		तथा	
	अक्ष्यति	अक्ष्यतः	अक्ष्यन्ति
क्रि०	आक्षिष्यत्	आक्षिष्यताम्	आक्षिष्यन्
		तथा	
	आक्ष्यत्	आक्ष्यताम्	आक्ष्यन्

५७१. तक्षौ (तक्ष्) तनूकरणे।

तनूकरण कार्श्यम्।

व०	तक्षति	तक्षतः	तक्षन्ति
व०	तक्ष्णोति	तक्ष्णुतः	तक्ष्णुन्ति
स०	तक्षेत्	तक्षेताम्	तक्षेयुः
स०	तक्ष्णुयात्	तक्ष्णुयाताम्	तक्ष्णुयुः
प०	तक्षतु/तक्षतात्	तक्षताम्	तक्षन्तु
प०	तक्ष्णोतु/तक्ष्णुतात्	तक्ष्णुताम्	तक्ष्णुवन्तु
ह्य०	अतक्षत	अतक्षताम्	अतक्षन्
ह्य०	अक्ष्णोत्	अक्ष्णुताम्	अक्ष्णुवन्
अ०	अतक्षीत्	अतक्षिष्टाम्	अतक्षिषुः
		तथा	
	अतक्षीत्	अतष्टाम्	अतषुः
प०	ततक्ष	ततक्षतुः	ततक्षुः
आ०	तक्ष्यात्	तक्ष्यास्ताम्	तक्ष्यासुः
श्व०	तक्षिता	तक्षितारौ	तक्षितारः
		तथा	
	तष्टा	तष्टारौ:	तष्टारः
भ०	तक्षिष्यति	तक्षिष्यतः	तक्षिष्यन्ति
		तथा	
	तक्ष्यति	तक्ष्यतः	तक्ष्यन्ति
क्रि०	अतक्षिष्यत्	अतक्षिष्यताम्	अतक्षिष्यन्
		तथा	
	अतक्ष्यत्	अतक्ष्यताम्	अतक्ष्यन्

५७२. त्वक्षौ (त्वक्ष्) तनूकरणे।

कार्श्ये इत्यर्थः।

व०	त्वक्षति	त्वक्षतः	त्वक्षन्ति
स०	त्वक्षेत्	त्वक्षेताम्	त्वक्षेयुः
प०	त्वक्षतु/त्वक्षतात्	त्वक्षताम्	त्वक्षन्तु
ह्य०	अत्वक्षत	अत्वक्षताम्	अत्वक्षन्
अ०	अत्वक्षीत्	अत्वक्षिष्टाम्	अत्वक्षिषुः
		तथा	
	अत्वक्षीत्	अत्वष्टाम्	अत्वक्षुः
प०	तत्वक्ष	तत्वक्षतुः	तत्वक्षुः
आ०	त्वक्ष्यात्	त्वक्ष्यास्ताम्	त्वक्ष्यासुः
श्व०	त्वक्षिता	त्वक्षितारौ	त्वक्षितारः
		तथा	
	त्वष्टा	त्वष्टारौ:	त्वष्टारः
भ०	त्वक्षिष्यति	त्वक्षिष्यतः	त्वक्षिष्यन्ति
		तथा	
	त्वक्ष्यति	त्वक्ष्यतः	त्वक्ष्यन्ति
क्रि०	अत्वक्षिष्यत्	अत्वक्षिष्यताम्	अत्वक्षिष्यन्
		तथा	
	अत्वक्ष्यत्	अत्वक्ष्यताम्	अत्वक्ष्यन्

५७३. णिक्ष (निक्ष्) चुम्बने।

चुम्बनं वक्त्रसंयोगः।

व०	निक्षति	निक्षतः	निक्षन्ति
स०	निक्षेत्	निक्षेताम्	निक्षेयुः
प०	निक्षतु/निक्षतात्	निक्षताम्	निक्षन्तु
ह्य०	अनिक्षत्	अनिक्षताम्	अनिक्षन्
अ०	अनिक्षीत्	अनिक्षिष्टाम्	अनिक्षिषुः
प०	निनिक्ष	निनिक्षतुः	निनिक्षुः
आ०	निक्ष्यात्	निक्ष्यास्ताम्	निक्ष्यासुः
श्व०	निक्षिता	निक्षितारौ	निक्षितारः
भ०	निक्षिष्यति	निक्षिष्यतः	निक्षिष्यन्ति
क्रि०	अनिक्षिष्यत्	अनिक्षिष्यताम्	अनिक्षिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५७४. तृक्ष (तृक्ष्) गतौ।

व०	तृक्षति	तृक्षतः	तृक्षन्ति
स०	तृक्षेत्	तृक्षेताम्	तृक्षेयुः
प०	तृक्षतु/तृक्षतात्	तृक्षताम्	तृक्षन्तु
ह्य०	अतृक्षत्	अतृक्षताम्	अतृक्षन्
अ०	अतृक्षीत्	अतृक्षिष्टाम्	अतृक्षिषुः
प०	ततृक्ष	ततृक्षतुः	ततृक्षुः
आ०	तृक्ष्यात्	तृक्ष्यास्ताम्	तृक्ष्यासुः
श्व०	तृक्षिता	तृक्षितारौ	तृक्षितारः
भ०	तृक्षिष्यति	तृक्षिष्यतः	तृक्षिष्यन्ति
क्रि०	अतृक्षिष्यत्	अतृक्षिष्यताम्	अतृक्षिष्यन्

५७५. स्तृक्ष (स्तृक्ष्) गतौ।

व०	स्तृक्षति	स्तृक्षतः	स्तृक्षन्ति
स०	स्तृक्षेत्	स्तृक्षेताम्	स्तृक्षेयुः
प०	स्तृक्षतु/स्तृक्षतात्	स्तृक्षताम्	स्तृक्षन्तु
ह्य०	अस्तृक्षत्	अस्तृक्षताम्	अस्तृक्षन्
अ०	अस्तृक्षीत्	अस्तृक्षिष्टाम्	अस्तृक्षिषुः
प०	तस्तृक्ष	तस्तृक्षतुः	तस्तृक्षुः
आ०	स्तृक्ष्यात्	स्तृक्ष्यास्ताम्	स्तृक्ष्यासुः
श्व०	स्तृक्षिता	स्तृक्षितारौ	स्तृक्षितारः
भ०	स्तृक्षिष्यति	स्तृक्षिष्यतः	स्तृक्षिष्यन्ति
क्रि०	अस्तृक्षिष्यत्	अस्तृक्षिष्यताम्	अस्तृक्षिष्यन्

५७६. णक्ष (नक्ष्) गतौ।

व०	नक्षति	नक्षतः	नक्षन्ति
स०	नक्षेत्	नक्षेताम्	नक्षेयुः
प०	नक्षतु/नक्षतात्	नक्षताम्	नक्षन्तु
ह्य०	अनक्षत्	अनक्षताम्	अनक्षन्
अ०	अनक्षीत्	अनक्षिष्टाम्	अनक्षिषुः
प०	ननक्ष	ननक्षतुः	ननक्षुः
आ०	नक्ष्यात्	नक्ष्यास्ताम्	नक्ष्यासुः
श्व०	नक्षिता	नक्षितारौ	नक्षितारः
भ०	नक्षिष्यति	नक्षिष्यतः	नक्षिष्यन्ति
क्रि०	अनक्षिष्यत्	अनक्षिष्यताम्	अनक्षिष्यन्

५७७. वक्ष (वक्ष्) रोषे।

संघाते इत्येके।

व०	वक्षति	वक्षतः	वक्षन्ति
स०	वक्षेत्	वक्षेताम्	वक्षेयुः
प०	वक्षतु/वक्षतात्	वक्षताम्	वक्षन्तु
ह्य०	अवक्षत्	अवक्षताम्	अवक्षन्
अ०	अवक्षीत्	अवक्षिष्टाम्	अवक्षिषुः
प०	ववक्ष	ववक्षतुः	ववक्षुः
आ०	वक्ष्यात्	वक्ष्यास्ताम्	वक्ष्यासुः
श्व०	वक्षिता	वक्षितारौ	वक्षितारः
भ०	वक्षिष्यति	वक्षिष्यतः	वक्षिष्यन्ति
क्रि०	अवक्षिष्यत्	अवक्षिष्यताम्	अवक्षिष्यन्

५७८. त्वक्ष (त्वक्ष्) त्वचने।

त्वचनं त्वग्ग्रहणं संवरणं वा।

व०	त्वक्षति	त्वक्षतः	त्वक्षन्ति
स०	त्वक्षेत्	त्वक्षेताम्	त्वक्षेयुः
प०	त्वक्षतु/त्वक्षतात्	त्वक्षताम्	त्वक्षन्तु
ह्य०	अत्वक्षत्	अत्वक्षताम्	अत्वक्षन्
अ०	अत्वक्षीत्	अत्वक्षिष्टाम्	अत्वक्षिषुः
प०	तत्वक्ष	तत्वक्षतुः	तत्वक्षुः
आ०	त्वक्ष्यात्	त्वक्ष्यास्ताम्	त्वक्ष्यासुः
श्व०	त्वक्षिता	त्वक्षितारौ	त्वक्षितारः
भ०	त्वक्षिष्यति	त्वक्षिष्यतः	त्वक्षिष्यन्ति
क्रि०	अत्वक्षिष्यत्	अत्वक्षिष्यताम्	अत्वक्षिष्यन्

५७९. सूर्क्ष (सूर्क्ष्) अनादरे।

व०	सूर्क्षति	सूर्क्षतः	सूर्क्षन्ति
स०	सूर्क्षेत्	सूर्क्षेताम्	सूर्क्षेयुः
प०	सूर्क्षतु/सूर्क्षतात्	सूर्क्षताम्	सूर्क्षन्तु
ह्य०	असूर्क्षत्	असूर्क्षताम्	असूर्क्षन्
अ०	असूर्क्षीत्	असूर्क्षिष्टाम्	असूर्क्षिषुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	सुसूर्क्ष	सुसूर्क्षतुः	सुसूर्क्षुः
आ०	सूर्क्ष्यात्	सूर्क्ष्यास्ताम्	सूर्क्ष्यासुः
श्व०	सूर्क्षिता	सूर्क्षितारौ	सूर्क्षितारः
भ०	सूर्क्षिष्यति	सूर्क्षिष्यतः	सूर्क्षिष्यन्ति
क्रि०	असूर्क्षिष्यत्	असूर्क्षिष्यताम्	असूर्क्षिष्यन्

५८०. काक्षु (काङ्क्ष्) काङ्क्षायाम्।

व०	काङ्क्षति	काङ्क्षतः	काङ्क्षन्ति
स०	काङ्क्षेत्	काङ्क्षेताम्	काङ्क्षेयुः
प०	काङ्क्षतु/काङ्क्षतात्	काङ्क्षताम्	काङ्क्षन्तु
ह्य०	अकाङ्क्षत्	अकाङ्क्षताम्	अकाङ्क्षन्
अ०	अकाङ्क्षीत्	अकाङ्क्षिष्टाम्	अकाङ्क्षिषुः
प०	चकाङ्क्ष	चकाङ्क्षतुः	चकाङ्क्षुः
आ०	काङ्क्ष्यात्	काङ्क्ष्यास्ताम्	काङ्क्ष्यासुः
श्व०	काङ्क्षिता	काङ्क्षितारौ	काङ्क्षितारः
भ०	काङ्क्षिष्यति	काङ्क्षिष्यतः	काङ्क्षिष्यन्ति
क्रि०	अकाङ्क्षिष्यत्	अकाङ्क्षिष्यताम्	अकाङ्क्षिष्यन्

५८१. वाक्षु (वाङ्क्ष्) काङ्क्षायाम्।

व०	वाङ्क्षति	वाङ्क्षतः	वाङ्क्षन्ति
स०	वाङ्क्षेत्	वाङ्क्षेताम्	वाङ्क्षेयुः
प०	वाङ्क्षतु/वाङ्क्षतात्	वाङ्क्षताम्	वाङ्क्षन्तु
ह्य०	अवाङ्क्षत्	अवाङ्क्षताम्	अवाङ्क्षन्
अ०	अवाङ्क्षीत्	अवाङ्क्षिष्टाम्	अवाङ्क्षिषुः
प०	ववाङ्क्ष	ववाङ्क्षतुः	ववाङ्क्षुः
आ०	वाङ्क्ष्यात्	वाङ्क्ष्यास्ताम्	वाङ्क्ष्यासुः
श्व०	वाङ्क्षिता	वाङ्क्षितारौ	वाङ्क्षितारः
भ०	वाङ्क्षिष्यति	वाङ्क्षिष्यतः	वाङ्क्षिष्यन्ति
क्रि०	अवाङ्क्षिष्यत्	अवाङ्क्षिष्यताम्	अवाङ्क्षिष्यन्

५८२. माक्षु (माङ्क्ष्) काङ्क्षायाम्।

व०	माङ्क्षति	माङ्क्षतः	माङ्क्षन्ति
स०	माङ्क्षेत्	माङ्क्षेताम्	माङ्क्षेयुः
प०	माङ्क्षतु/माङ्क्षतात्	माङ्क्षताम्	माङ्क्षन्तु
ह्य०	अमाङ्क्षत्	अमाङ्क्षताम्	अमाङ्क्षन्
अ०	अमाङ्क्षीत्	अमाङ्क्षिष्टाम्	अमाङ्क्षिषुः
प०	ममाङ्क्ष	ममाङ्क्षतुः	ममाङ्क्षुः
आ०	माङ्क्ष्यात्	माङ्क्ष्यास्ताम्	माङ्क्ष्यासुः
श्व०	माङ्क्षिता	माङ्क्षितारौ	माङ्क्षितारः
भ०	माङ्क्षिष्यति	माङ्क्षिष्यतः	माङ्क्षिष्यन्ति
क्रि०	अमाङ्क्षिष्यत्	अमाङ्क्षिष्यताम्	अमाङ्क्षिष्यन्

५८३. द्राक्षु (द्राङ्क्ष्) घोरवाशिते च। चकारात्काङ्क्षायाम्।

व०	द्राङ्क्षति	द्राङ्क्षतः	द्राङ्क्षन्ति
स०	द्राङ्क्षेत्	द्राङ्क्षेताम्	द्राङ्क्षेयुः
प०	द्राङ्क्षतु/द्राङ्क्षतात्	द्राङ्क्षताम्	द्राङ्क्षन्तु
ह्य०	अद्राङ्क्षत्	अद्राङ्क्षताम्	अद्राङ्क्षन्
अ०	अद्राङ्क्षीत्	अद्राङ्क्षिष्टाम्	अद्राङ्क्षिषुः
प०	दद्राङ्क्ष	दद्राङ्क्षतुः	दद्राङ्क्षुः
आ०	द्राङ्क्ष्यात्	द्राङ्क्ष्यास्ताम्	द्राङ्क्ष्यासुः
श्व०	द्राङ्क्षिता	द्राङ्क्षितारौ	द्राङ्क्षितारः
भ०	द्राङ्क्षिष्यति	द्राङ्क्षिष्यतः	द्राङ्क्षिष्यन्ति
क्रि०	अद्राङ्क्षिष्यत्	अद्राङ्क्षिष्यताम्	अद्राङ्क्षिष्यन्

५८४. ध्राक्षु (ध्राङ्क्ष्) घोरवाशिते काङ्क्षायाञ्च।

व०	ध्राङ्क्षति	ध्राङ्क्षतः	ध्राङ्क्षन्ति
स०	ध्राङ्क्षेत्	ध्राङ्क्षेताम्	ध्राङ्क्षेयुः
प०	ध्राङ्क्षतु/ध्राङ्क्षतात्	ध्राङ्क्षताम्	ध्राङ्क्षन्तु
ह्य०	अध्राङ्क्षत्	अध्राङ्क्षताम्	अध्राङ्क्षन्
अ०	अध्राङ्क्षीत्	अध्राङ्क्षिष्टाम्	अध्राङ्क्षिषुः
प०	दध्राङ्क्ष	दध्राङ्क्षतुः	दध्राङ्क्षुः
आ०	ध्राङ्क्ष्यात्	ध्राङ्क्ष्यास्ताम्	ध्राङ्क्ष्यासुः
श्व०	ध्राङ्क्षिता	ध्राङ्क्षितारौ	ध्राङ्क्षितारः
भ०	ध्राङ्क्षिष्यति	ध्राङ्क्षिष्यतः	ध्राङ्क्षिष्यन्ति
क्रि०	अध्राङ्क्षिष्यत्	अध्राङ्क्षिष्यताम्	अध्राङ्क्षिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५८५ ध्वाङ्क्षु (ध्वाङ्क्ष्) घोरवाशिते। काङ्क्षायाञ्च।

व०	ध्वाङ्क्षति	ध्वाङ्क्षतः	ध्वाङ्क्षन्ति
स०	ध्वाङ्क्षेत्	ध्वाङ्क्षेताम्	ध्वाङ्क्षेयुः
प०	ध्वाङ्क्षतु/ध्वाङ्क्षतात्	ध्वाङ्क्षताम्	ध्वाङ्क्षन्तु
ह्य०	अध्वाङ्क्षत्	अध्वाङ्क्षताम्	अध्वाङ्क्षन्
अ०	अध्वाङ्क्षीत्	अध्वाङ्क्षिष्टाम्	अध्वाङ्क्षिषुः
प०	दध्वाङ्क्ष	दध्वाङ्क्षतुः	दध्वाङ्क्षुः
आ०	ध्वाङ्क्ष्यात्	ध्वाङ्क्ष्यास्ताम्	ध्वाङ्क्ष्यासुः
श्व०	ध्वाङ्क्षिता	ध्वाङ्क्षितारौ	ध्वाङ्क्षितारः
भ०	ध्वाङ्क्षिष्यति	ध्वाङ्क्षिष्यतः	ध्वाङ्क्षिष्यन्ति
क्रि०	अध्वाङ्क्षिष्यत्	अध्वाङ्क्षिष्यताम्	अध्वाङ्क्षिष्यन्

एते निरनुबन्धत्वाच्छेषात्कर्त्तरीति परस्मैपदिनः।

।। इति परस्मैपदिनो धातवः।।

।।अथात्मनेपदिनः।।

अथ इङित आत्मनेपदिन आईक्षेर्वर्णसमाम्नायक्रमेण वक्ष्यन्ते।

५८६. गाङ् (गा) गतौ।

व०	गाते	गाते	गाते
	गासे	गाथे	गाध्वे
	गागे	गावहे	गामहे
स०	गेत	गेयाताम्	गेरन्
	गेथाः	गेयाथाम्	गेध्वम्
	गेय	गेवहि	गेमहि
प०	गाताम्	गाताम्	गाताम
	गास्व	गाथाम	गाध्वम्
	गै	गावहै	गामहै
ह्य०	अगात	अगाताम्	अगात
	अगाथाः	अगाथाम्	अगाध्वम्
	अगे	अगावहि	अगामहि
अ०	अगास्त	अगासाताम्	अगासत
	अगास्थाः	अगासाथाम्	अगादध्वम्
	अगासि	अगास्वहि	अगास्महि
प०	जगे	जगाते	जगिरे
	जगिषे	जगाथे	जगिध्वे
	जगे	जगिवहे	जगिमहे
आ०	गासीष्ट	गासीयास्ताम्	गासीरन्
	गासीष्ठाः	गासीयास्थाम्	गासीध्वम्
	गासीय	गासीवहि	गासीमहि
श्व०	गाता	गातारौ	गातारः
	गातासे	गातासाथे	गाताध्वे
	गाताहे	गातास्वहे	गातास्मिहे
भ०	गास्यते	गास्येते	गास्यन्ते
	गास्यसे	गास्येथे	गास्यध्वे
	गास्ये	गास्यावहे	गास्यामहे
क्रि०	अगास्यत	अगास्येताम्	अगास्यन्त
	अगास्यथाः	अगास्येथाम्	अगास्यध्वम्
	अगास्ये	अगास्यावहि	अगास्यामहि

५८७. ष्मिङ् (स्मि) इषद्धसने।

व०	स्मयते	स्मयेते	स्मयन्ते
	स्मयसे	स्मयेथे	स्मयध्वे
	स्मये	स्मयावहे	स्मयामहे
स०	स्मयेत	स्मयेयाताम्	स्मयेरन्
	स्मयेथाः	स्मयेयाथाम्	स्मयेध्वम्
	स्मयेय	स्मयेवहि	स्मयेमहि
प०	स्मयताम्	स्मयेताम्	स्मयन्ताम्
	स्मयस्व	स्मयेथाम्	स्मयध्वम्
	स्मयै	स्मयावहै	स्मयामहै
ह्य०	अस्मयत	अस्मयेताम्	अस्मयन्त
	अस्मयथाः	अस्मयथाम	अस्मयध्वम्
	अस्मये	अस्मयावहि	अस्मयामहि
अ०	अस्मेष्ट	अस्मेषाताम्	अस्मेषत
	अस्मेष्ठाः	अस्मेषाथाम्	अस्मेड्ढ्वम्
	अस्मेषि	अस्मेष्वहि	अस्मेष्महि
प०	सिष्मिये	सिष्मियाते	सिष्मियिरे
	सिष्मियिषे	सिष्मियाथे	सिष्मियिढ्वे/यिध्वे
	सिष्मियिये	सिष्मियिवहे	सिष्मियिमहे
आ०	स्मेषीष्ट	स्मेषीयास्ताम्	स्मेषीरन्
	स्मेषीष्ठाः	स्मेषीयास्थाम्	स्मेषीध्वम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	स्मेषीय	स्मेषीवहि	स्मेषीमहि
श्व०	स्मेता	स्मेतारौ	स्मेतार:
	स्मेतासे	स्मेतासाथे	स्मेताध्वे
	स्मेताहे	स्मेतास्वहे	स्मेतास्मिहे
भ०	स्मेष्यते	स्मेष्येते	स्मेष्यन्ते
	स्मेष्यसे	स्मेष्येथे	स्मेष्यध्वे
	स्मेष्ये	स्मेष्यावहे	स्मेष्यामहे
क्रि०	अस्मेष्यत	अस्मेष्येताम्	अस्मेष्यन्त
	अस्मेष्यथा:	अस्मेष्येथाम्	अस्मेष्यध्वम्
	अस्मेष्ये	अस्मेष्यावहि	अस्मेष्यामहि

५८८. डीङ् (डी) विहायसांगतौ।

व०	डयते	डयेते	डयन्ते
	डयसे	डयेथे	डयध्वे
	डये	डयावहे	डयामहे
स०	डयेत	डयेयाताम्	डयेरन्
	डयेथा:	डयेयाथाम्	डयेध्वम्
	डयेय	डयेवहि	डयेमहि
प०	डयताम्	डयेताम्	डयन्ताम्
	डयस्व	डयेथाम	डयध्वम्
	डयै	डयावहै	डयामहै
ह्य०	अडयत	अडयेताम्	अडयन्त
	अडयथा:	अडयथाम	अडयध्वम्
	अडये	अडयावहि	अडयामहि
अ०	अडयिष्ट	अडयिषाताम्	अडेषत
	अडयिष्ठा:	अडयिषाथाम्	अडयिड्ढ्वम/ध्वम्
	अडयिषि	अडयिष्वहि	अडेष्महि
प०	डिड्ये	डिड्याते	डिड्यरे
	डिड्यषे	डिड्याथे	डिड्यढ्वे/ड़िड्यध्वे
	डिड्ये	डिड्यिावहे	डिड्यिामहे
आ०	डयिषोष्ट	डयिषीयास्ताम्	डयिषीरन्
	डयिषीष्ठा:	डयिषीयास्थाम्	डयिषीढ्वम्/ध्वम्
	डयिषीय	डयिषीवहि	डयिषीमहि
श्व०	डयिता	डयितारौ	डयितार:
	डयतासे	डयितासाथे	डयिताध्वे/ड्ढ्वे
	डयिताहे	डयितास्वहे	डयितास्महे
भ०	डयिष्यते	डयिष्येते	डयिष्यन्ते
	डयिष्यसे	डयिष्येथे	डयिष्यध्वे
	डयिष्ये	डयिष्यावहे	डयिष्यामहे
क्रि०	अडयिष्यत	अडयिष्येताम्	अडयिष्यन्त
	अडयिष्यथा:	अडयिष्येथाम्	अडयिष्यध्वम्
	अडयिष्ये	अडयिष्यावहि	अडयिष्यामहि

अथ उकारान्ता एकादश अनिट्श्च।

५८९. उंङ् (उ) शब्दे।

व०	अवते	अवेते	अवन्ते
	अवसे	अवेथे	अवध्वे
	अवे	अवावहे	अवामहे
स०	अवेत	अवेयाताम्	अवेरन्
	अवेथा:	अवेयाथाम्	अवेध्वम्
	अवेय	अवेवहि	अवेमहि
प०	अवताम्	अवेताम्	अवन्ताम्
	अवस्व	अवेथाम	अवध्वम्
	अवै	अवावहै	अवामहै
ह्य०	आवत	आवेताम्	आवन्त
	आवथा:	आवथाम	आवध्वम्
	आवे	आवावहि	आवामहि
अ०	औष्ट	औषाताम्	औषत
	औष्ठा:	औषाथाम्	औड्ढ्वम्
	औषि	औष्वहि	औष्महि/ढ्वम्
प०	ऊवे	ऊवाते	ऊविरे
	ऊविषे	ऊवाथे	ऊविढ्वे/ध्वे
	ऊवे	ऊविवहे	ऊविमहे
आ०	ओषीष्ट	ओषीयास्ताम्	ओषीरन्
	ओषीष्ठा:	ओषीयास्थाम्	ओषीढ्वम्
	ओषीय	ओषीवहि	ओषीमहि

श्व०	ओता	ओतारौ	ओतार:
	आतासे	ओतासाथे	आताध्वे
	ओताहे	ओतास्वहे	ओतास्मिहे
भ०	ओष्यते	ओष्येते	ओष्यन्ते
	ओष्यसे	ओष्येथे	ओष्यध्वे
	ओष्ये	ओष्यावहे	ओष्यामहे
क्रि०	औष्यत	औष्येताम्	औष्यन्त
	औष्यथा:	औष्येथाम्	औष्यध्वम्
	औष्ये	औष्यावहि	औष्यामहि

५९०. कुंङ् (कु) शब्दे।

व०	कवते	कवेते	कवन्ते
	कवसे	कवेथे	कवध्वे
	कवे	कवावहे	कवामहे
स०	कवेत	कवेयाताम्	कवेरन्
	कवेथा:	कवेयाथाम्	कवेध्वम्
	कवेय	कवेवहि	कवेमहि
प०	कवताम्	कवेताम्	कवन्ताम्
	कवस्व	कवेथाम	कवध्वम्
	कवै	कवावहै	कवामहै
ह्य०	अकवत	अकवेताम्	अकवन्त
	अकवथा:	अकवथाम	अकवध्वम्
	अकवे	अकवावहि	अकवामहि
अ०	अकोष्ट	अकोषाताम्	अकोषत
	अकोष्ठा:	अकोषाथाम्	अकोड्ढवम्/ढ्वम्
	अकोषि	अकोष्वहि	अकोष्महि
प०	चुकुवे	चुकुवाते	चुकुविरे
	चुकुविषे	चुकुवाथे	चुकुविढ्वे/ध्वे
	चुकुवे	चुकुविवहे	चुकुविमहे
आ०	कोषीष्ट	कोषीयास्ताम्	कोषीरन्
	कोषीष्ठा:	कोषीयास्थाम्	कोषीढ्वम्
	कोषीय	कोषीवहि	कोषीमहि
श्व०	कोता	कोतारौ	कोतार:
	कोतासे	कोतासाथे	कोताध्वे
	कोताहे	कोतास्वहे	कोतास्महे
भ०	कोष्यते	कोष्येते	कोष्यन्ते
	कोष्यसे	कोष्येथे	कोष्यध्वे
	कोष्ये	कोष्यावहे	कोष्यामहे
क्रि०	अकोष्यत	अकोष्येताम्	अकोष्यन्त
	अकोष्यथा:	अकोष्येथाम्	अकोष्यध्वम्
	अकोष्ये	अकोष्यावहि	अकोष्यामहि

५९१. गुंङ् (गु) शब्दे।

अव्यक्ते इति केचित्।

व०	गवते	गवेते	गवन्ते
स०	गवेत	गवेयाताम्	गवेरन्
प०	गवताम्	गवेताम्	गवन्ताम्
ह्य०	अगवत	अगवेताम्	अगवन्त
अ०	अगोष्ट	अगोषाताम्	अगोषत
प०	जुगुवे	जुगुवाते	जुगुविरे
आ०	गोषीष्ट	गोषीयास्ताम्	गोषीरन्
श्व०	गोता	गोतारौ	गोतार:
भ०	गोष्यते	गोष्येते	गोष्यन्ते
क्रि०	अगोष्यत	अगोष्येताम्	अगोष्यन्त

५९२. घुंङ् (घु) शब्दे।

व०	घवते	घवेते	घवन्ते
स०	घवेत	घवेयाताम्	घवेरन्
प०	घवताम्	घवेताम्	घवन्ताम्
ह्य०	अघवत	अघवेताम्	अघवन्त
अ०	अघोष्ट	अघोषाताम्	अघोषत
प०	जुघुवे	जुघुवाते	जुघुविरे
आ०	घोषीष्ट	घोषीयास्ताम्	घोषीरन्
श्व०	घोता	घोतारौ	घोतार:
भ०	घोष्यते	घोष्येते	घोष्यन्ते
क्रि०	अघोष्यत	अघोष्येताम्	अघोष्यन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५९३. डुंङ् (डु) शब्दे।

एतत्स्थाने खुङ् इत्येके

व०	डवते	डवेते	डवन्ते
स०	डवेत	डवेयाताम्	डवेरन्
प०	डवताम्	डवेताम्	डवन्ताम्
ह्य०	अडवत	अडवेताम्	अडवन्त
अ०	अडोष्ट	अडोषाताम्	अडोषत
प०	डुडुवे	डुडुवाते	डुडुविरे
आ०	डोषीष्ट	डोषीयास्ताम्	डोषीरन्
श्व०	डोता	डोतारौ	डोतारः
भ०	डोष्यते	डोष्येते	डोष्यन्ते
क्रि०	अडोष्यत	अडोष्येताम्	अडोष्यन्त

५९४. च्युङ् (च्यु) गतौ।

व०	च्यवते	च्यवेते	च्यवन्ते
स०	च्यवेत	च्यवेयाताम्	च्यवेरन्
प०	च्यवताम्	च्यवेताम्	च्यवन्ताम्
ह्य०	अच्यवत	अच्यवेताम्	अच्यवन्त
अ०	अच्योष्ट	अच्योषाताम्	अच्योषत
प०	चुच्युवे	चुच्युवाते	चुच्युविरे
आ०	च्योषीष्ट	च्योषीयास्ताम्	च्योषीरन्
श्व०	च्योता	च्योतारौ	च्योतारः
भ०	च्योष्यते	च्योष्येते	च्योष्यन्ते
क्रि०	अच्योष्यत	अच्योष्येताम्	अच्योष्यन्त

५९५. ज्युङ् (ज्यु) गतौ।

व०	ज्यवते	ज्यवेते	ज्यवन्ते
स०	ज्यवेत	ज्यवेयाताम्	ज्यवेरन्
प०	ज्यवताम्	ज्यवेताम्	ज्यवन्ताम्
ह्य०	अज्यवत	अज्यवेताम्	अज्यवन्त
अ०	अज्योष्ट	अज्योषाताम्	अज्योषत
प०	जुज्युवे	जुज्युवाते	जुज्युविरे
आ०	ज्योषीष्ट	ज्योषीयास्ताम्	ज्योषीरन्
श्व०	ज्योता	ज्योतारौ	ज्योतारः
भ०	ज्योष्यते	ज्योष्येते	ज्योष्यन्ते
क्रि०	अज्योष्यत	अज्योष्येताम्	अज्योष्यन्त

५९६. जुङ् (जु) गतौ।

व०	जवते	जवेते	जवन्ते
स०	जवेत	जवेयाताम्	जवेरन्
प०	जवताम्	जवेताम्	जवन्ताम्
ह्य०	अजवत	अजवेताम्	अजवन्त
अ०	अजोष्ट	अजोषाताम्	अजोषत
प०	जुजुवे	जुजुवाते	जुजुविरे
आ०	जोषीष्ट	जोषीयास्ताम्	जोषीरन्
श्व०	जोता	जोतारौ	जोतारः
भ०	जोष्यते	जोष्येते	जोष्यन्ते
क्रि०	अजोष्यत	अजोष्येताम्	अजोष्यन्त

५९७. प्रुङ् (प्रु) गतौ।

व०	प्रवते	प्रवेते	प्रवन्ते
स०	प्रवेत	प्रवेयाताम्	प्रवेरन्
प०	प्रवताम्	प्रवेताम्	प्रवन्ताम्
ह्य०	अप्रवत	अप्रवेताम्	अप्रवन्त
अ०	अप्रोष्ट	अप्रोषाताम्	अप्रोषत
प०	पुप्रुवे	पुप्रुवाते	पुप्रुविरे
आ०	प्रोषीष्ट	प्रोषीयास्ताम्	प्रोषीरन्
श्व०	प्रोता	प्रोतारौ	प्रोतारः
भ०	प्रोष्यते	प्रोष्येते	प्रोष्यन्ते
क्रि०	अप्रोष्यत	अप्रोष्येताम्	अप्रोष्यन्त

५९८. प्लुंङ् (प्लु) गतौ।

व०	प्लवते	प्लवेते	प्लवन्ते
स०	प्लवेत	प्लवेयाताम्	प्लवेरन्
प०	प्लवताम्	प्लवेताम्	प्लवन्ताम्
ह्य०	अप्लवत	अप्लवेताम्	अप्लवन्त
अ०	अप्लोष्ट	अप्लोषाताम्	अप्लोषत
प०	पुप्लुवे	पुप्लुवाते	पुप्लुविरे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	प्लोषीष्ट	प्लोषीयास्ताम्	प्लोषीरन्
श्व०	प्लोता	प्लोतारौ	प्लोतार:
भ०	प्लोष्यते	प्लोष्येते	प्लोष्यन्ते
क्रि०	अप्लोष्यत	अप्लोष्येताम्	अप्लोष्यन्त

५९९. रुङ् (रु) रेषणे च।

चकाराद्गतौ। रेषणं हिंसाशब्द:।

व०	रवते	रवेते	रवन्ते
स०	रवेत	रवेयाताम्	रवेरन्
प०	रवताम्	रवेताम्	रवन्ताम्
ह्य०	अरवत	अरवेताम्	अरवन्त
अ०	अरोष्ट	अरोषाताम्	अरोषत
प०	रुरुवे	रुरुवाते	रुरुविरे
आ०	रोषीष्ट	रोषीयास्ताम्	रोषीरन्
श्व०	रोता	रोतारौ	रोतार:
भ०	रोष्यते	रोष्येते	रोष्यन्ते
क्रि०	अरोष्यत	अरोष्येताम्	अरोष्यन्त

।।अथ ऊदन्तौ द्वौ सेटौ च।।

६००. पूङ् (पू) पवने।

व०	पवते	पवेते	पवन्ते
स०	पवेत	पवेयाताम्	पवेरन्
प०	पवताम्	पवेताम्	पवन्ताम्
ह्य०	अपवत	अपवेताम्	अपवन्त
अ०	अपविष्ट	अपविषाताम्	अपविषत
प०	पुपुवे	पुपुवाते	पुपुविरे
आ०	पविषीष्ट	पविषीयास्ताम्	पविषीरन्
श्व०	पविता	पवितारौ	पवितार:
भ०	पविष्यते	पविष्येते	पविष्यन्ते
क्रि०	अपविष्यत	अपविष्येताम्	अपविष्यन्त

६०१. मूङ् (मू) बन्धने।

व०	मवते	मवेते	मवन्ते
स०	मवेत	मवेयाताम्	मवेरन्
प०	मवताम्	मवेताम्	मवन्ताम्
ह्य०	अमवत	अमवेताम्	अमवन्त
अ०	अमविष्ट	अमविषाताम्	अमविषत
प०	मुमुवे	मुमुवाते	मुमुविरे
आ०	मविषीष्ट	मविषीयास्ताम्	मविषीरन्
श्व०	मविता	मवितारौ	मवितार:
भ०	मविष्यते	मविष्येते	मविष्यन्ते
क्रि०	अमविष्यत	अमविष्येताम्	अमविष्यन्त

६०२. धृङ् (धृ) अविध्वंसने।

व०	धरते	धरेते	धरन्ते
स०	धरेत	धरेयाताम्	धरेरन्
प०	धरताम्	धरेताम्	धरन्ताम्
ह्य०	अधरत	अधरेताम्	अधरन्त
अ०	अधृत	अधृषाताम्	अधृषत
प०	दध्रे	दध्राते	दध्रिरे
आ०	धृषीष्ट	धृषीयास्ताम्	धृषीरन्
श्व०	धर्ता	धर्तारौ	धर्तार:
भ०	धरिष्यते	धरिष्येते	धरिष्यन्ते
क्रि०	अधरिष्यत	अधरिष्येताम्	अधरिष्यन्त

अत: परावेदन्तौ द्वावनिटौ च।

६०३. मेङ् (मे) प्रतिदाने।

प्रतिदानं प्रत्यर्पणम्।

व०	मयते	मयेते	मयन्ते
स०	मयेत	मयेयाताम्	मयेरन्
प०	मयताम्	मयेताम्	मयन्ताम्
ह्य०	अमयत	अमयेताम्	अमयन्त
अ०	अमास्त	अमासाताम्	अमासत
प०	ममे	ममाते	ममिरे
आ०	मासीष्ट	मासीयास्ताम्	मासीरन्
श्व०	माता	मातारौ	मातार:
भ०	मास्यते	मास्येते	मास्यन्ते
क्रि०	अमास्यत	अमास्येताम्	अमास्यन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६०४. देंङ् (दे) पालने।

व०	दयते	दयेते	दयन्ते
स०	दयेत	दयेयाताम्	दयेरन्
प०	दयताम्	दयेताम्	दयन्ताम्
ह्य०	अदयत	अदयेताम्	अदयन्त
अ०	अदित	अदिषाताम्	अदिषत
प०	दिग्ये	दिग्याते	दिग्यिरे
आ०	दासीष्ट	दासीयास्ताम्	दासीरन्
श्व०	दाता	दातारौ	दातार:
भ०	दास्यते	दास्स्येते	दास्यन्ते
क्रि०	अदास्यत	अदास्येताम्	अदास्यन्त

अथ ऐत्रान्तास्त्रयोऽनिटश्च।

६०५. त्रङ् (त्रै) पालने।

व०	त्रायते	त्रायेते	त्रायन्ते
	त्रायसे	त्रायेथे	त्रायध्वे
	त्राये	त्रायावहे	त्रायामहे
स०	त्रायेत	त्रायेयाताम्	त्रायेरन्
	त्रायेथा:	त्रायेयाथाम्	त्रायेध्वम्
	त्रायेय	त्रायेवहि	त्रायेमहि
प०	त्रायताम्	त्रायेताम्	त्रायन्ताम्
	त्रायस्व	त्रायेथाम्	त्रायध्वम्
	त्रायै	त्रायावहै	त्रायामहै
ह्य०	अत्रायत	अत्रायेताम्	अत्रायन्त
	अत्रायथा:	अत्रायथाम्	अत्रायध्वम्
	अत्राये	अत्रायावहि	अत्रायामहि
अ०	अत्रास्त	अत्रासाताम्	अत्रासत
	अत्रास्था:	अत्रासाथाम्	अत्रासड्ढ्वम्/ध्वम्
	अत्रासि	अत्रास्वहि	अत्रास्महि
प०	तत्रे	तत्राते	तत्रिरे
	तत्रिषे	तत्राथे	तत्रिढ्वे/ध्वे
	तत्रे	तत्रिवहे	तत्रिमहे
आ०	त्रासीष्ट	त्रासीयास्ताम्	त्रासीरन्
	त्रासीष्ठा:	त्रासीयास्थाम्	त्रासीढ्वम्
	त्रासीय	त्रासीवहि	त्रासीमहि
श्व०	त्राता	त्रातारौ	त्रातार:
	त्रातासे	त्रातासाथे	त्राताध्वे
	त्राताहे	त्रातास्वहे	त्रातास्मिहे
भ०	त्रास्यते	त्रास्स्येते	त्रास्यन्ते
	त्रास्यसे	त्रास्स्येथे	त्रास्यध्वे
	त्रास्स्ये	त्रास्यावहे	त्रास्यामहे
क्रि०	अत्रास्यत	अत्रास्येताम्	अत्रास्यन्त
	अत्रास्यथा:	अत्रास्येथाम्	अत्रास्यध्वम्
	अत्रास्ये	अत्रास्यावहि	अत्रास्यामहि

६०६. श्यैङ् (श्यै) गतौ।

व०	श्यायते	श्यायेते	श्यायन्ते
स०	श्यायेत	श्यायेयाताम्	श्यायेरन्
प०	श्यायताम्	श्यायेताम्	श्यायन्ताम्
ह्य०	अश्यायत	अश्यायेताम्	अश्यायन्त
अ०	अश्यास्त	अश्यासाताम्	अश्यासत
प०	शश्ये	शश्याते	शश्यिरे
आ०	श्यासीष्ट	श्यासीयास्ताम्	श्यासीरन्
श्व०	श्याता	श्यातारौ	श्यातार:
भ०	श्यास्यते	श्यास्येते	श्यास्यन्ते
क्रि०	अश्यास्यत	अश्यास्येताम्	अश्यास्यन्त

६०७. प्यैङ् (प्यै) वृद्धौ।

व०	प्यायते	प्यायेते	प्यायन्ते
स०	प्यायेत	प्यायेयाताम्	प्यायेरन्
प०	प्यायताम्	प्यायेताम्	प्यायन्ताम्
ह्य०	अप्यायत	अप्यायेताम्	अप्यायन्त
अ०	अप्यास्त	अप्यासाताम्	अप्यासत
प०	पप्ये	पप्याते	पप्यिरे
आ०	प्यासीष्ट	प्यासीयास्ताम्	प्यासीरन्
श्व०	प्याता	प्यातारौ	प्यातार:
भ०	प्यास्यते	प्यास्स्येते	प्यास्यन्ते
क्रि०	अप्यास्यत	अप्यास्येताम्	अप्यास्यन्त

अथ एकोनत्रिंशत्कान्ता: सेटश्च।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६०८. वकुङ् (वङ्क्) कौटिल्ये।

व०	वङ्कते	वङ्केते	वङ्कन्ते
	वङ्कसे	वङ्केथे	वङ्कध्वे
	वङ्के	वङ्कावहे	वङ्कामहे
स०	वङ्केत	वङ्केयाताम्	वङ्केरन्
	वङ्केथाः	वङ्केयाथाम्	वङ्केध्वम्
	वङ्केय	वङ्केवहि	वङ्केमहि
प०	वङ्कताम्	वङ्केताम्	वङ्कन्ताम्
	वङ्कस्व	वङ्केथाम्	वङ्कध्वम्
	वङ्कै	वङ्कावहै	वङ्कामहै
ह्य०	अवङ्कत	अवङ्केताम्	अवङ्कन्त
	अवङ्कथाः	अवङ्केथाम्	अवङ्कध्वम्
	अवङ्के	अवङ्कावहि	अवङ्कामहि
अ०	अवङ्किष्ट	अवङ्किषाताम्	अवङ्किषत
	अवङ्किष्ठाः	अवङ्किषाथाम्	अवङ्किढ्वम्/ध्वम्
	अवङ्किषि	अवङ्किष्वहि	अवङ्किष्महि
प०	ववङ्के	ववङ्काते	ववङ्किरे
	ववङ्किषे	ववङ्काथे	ववङ्किध्वे
	ववङ्के	ववङ्किवहे	ववङ्किमहे
आ०	वङ्किषीष्ट	वङ्किषीयास्ताम्	वङ्किषीरन्
	वङ्किषीष्ठाः	वङ्किषीयास्थाम्	वङ्किषीढ्वम्
	वङ्किषीय	वङ्किषीवहि	वङ्किषीमहि
श्व०	वङ्किता	वङ्कितारौ	वङ्कितारः
	वङ्कितासे	वङ्कितासाथे	वङ्किताध्वे
	वङ्किताहे	वङ्कितास्वहे	वङ्कितास्मिहे
भ०	वङ्किष्यते	वङ्किष्येते	वङ्किष्यन्ते
	वङ्किष्यसे	वङ्किष्येथे	वङ्किष्ध्वे
	वङ्किष्ये	वङ्किष्यावहे	वङ्किष्यामहे
क्रि०	अवङ्किष्यत	अवङ्किष्येताम्	अप्यास्यन्त
	अवङ्किष्यथाः	अवङ्किष्येथाम्	अवङ्किष्यध्वम्
	अवङ्किष्ये	अवङ्किष्यावहि	अवङ्किष्यामहि

६०९. मकुङ् (मङ्क्) मण्डने।

व०	मङ्कते	मङ्केते	मङ्कन्ते
स०	मङ्केत	मङ्केयाताम्	मङ्केरन्
प०	मङ्कताम्	मङ्केताम्	मङ्कन्ताम्
ह्य०	अमङ्कत	अमङ्केताम्	अमङ्कन्त
अ०	अमङ्किष्ट	अमङ्किषाताम्	अमङ्किषत
प०	ममङ्के	ममङ्काते	ममङ्किरे
आ०	मङ्किषीष्ट	मङ्किषीयास्ताम्	मङ्किषीरन्
श्व०	मङ्किता	मङ्कितारौ	मङ्कितारः
भ०	मङ्किष्यते	मङ्किष्येते	मङ्किष्यन्ते
क्रि०	अमङ्किष्यत	अमङ्किष्येताम्	अप्यास्यन्त

६१०. अकुङ् (अङ्क्) लक्षणे।

लक्षणं चिह्नम्।

व०	अङ्कते	अङ्केते	अङ्कन्ते
स०	अङ्केत	अङ्केयाताम्	अङ्केरन्
प०	अङ्कताम्	अङ्केताम्	अङ्कन्ताम्
ह्य०	आङ्कत	आङ्केताम्	आङ्कन्त
अ०	आङ्किष्ट	आङ्किषाताम्	आङ्किषत
प०	आनङ्के	आनङ्काते	आनङ्किरे
आ०	अङ्किषीष्ट	अङ्किषीयास्ताम्	अङ्किषीरन्
श्व०	अङ्किता	अङ्कितारौ	अङ्कितारः
भ०	अङ्किष्यते	अङ्किष्येते	अङ्किष्यन्ते
क्रि०	आङ्किष्यत	आङ्किष्येताम्	आङ्किष्यन्त

६११. शीकृङ् (शीक्) सेचने।

व०	शीकते	शीकेते	शीकन्ते
स०	शीकेत	शीकेयाताम्	शीकेरन्
प०	शीकताम्	शीकेताम्	शीकन्ताम्
ह्य०	अशीकत	अशीकेताम्	अशीकन्त
अ०	अशीकिष्ट	अशीकिषाताम्	अशीकिषत
प०	शिशीके	शिशीकाते	शिशीकिरे
आ०	शीकिषीष्ट	शीकिषीयास्ताम्	शीकिषीरन्
श्व०	शीकिता	शीकितारौ	शीकितारः
भ०	शीकिष्यते	शीकिष्येते	शीकिष्यन्ते
क्रि०	अशीकिष्यत	अशीकिष्येताम्	अशीकिष्यन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६१२. लोकृङ् (लोक्) दर्शने।

व०	लोकते	लोकेते	लोकन्ते
स०	लोकेत	लोकेयाताम्	लोकेरन्
प०	लोकताम्	लोकेताम्	लोकन्ताम्
ह्य०	अलोकत	अलोकेताम्	अलोकन्त
अ०	अलोकिष्ट	अलोकिषाताम्	अलोकिषत
प०	लुलोके	लुलोकाते	लुलोकिरे
आ०	लोकिषीष्ट	लोकिषीयास्ताम्	लोकिषीरन्
श्व०	लोकिता	लोकितारौ	लोकितार:
भ०	लोकिष्यते	लोकिष्येते	लोकिष्यन्ते
क्रि०	अलोकिष्यत	अलोकिष्येताम्	अलोकिष्यन्त

६१३. श्लोकृङ् (श्लोक्) सङ्घाते।

संघात: संहननं संहन्यमानश्च।

व०	श्लोकते	श्लोकेते	श्लोकन्ते
स०	श्लोकेत	श्लोकेयाताम्	श्लोकेरन्
प०	श्लोकताम्	श्लोकेताम्	श्लोकन्ताम्
ह्य०	अश्लोकत	अश्लोकेताम्	अश्लोकन्त
अ०	अश्लोकिष्ट	अश्लोकिषाताम्	अश्लोकिषत
प०	शुश्लोके	शुश्लोकाते	शुश्लोकिरे
आ०	श्लोकिषीष्ट	श्लोकिषीयास्ताम्	श्लोकिषीरन्
श्व०	श्लोकिता	श्लोकितारौ	श्लोकितार:
भ०	श्लोकिष्यते	श्लोकिष्येते	श्लोकिष्यन्ते
क्रि०	अश्लोकिष्यत	अश्लोकिष्येताम्	अश्लोकिष्यन्त

६१४. द्रेकृङ् (द्रेक्) शब्दोत्साहे।

शब्दस्योत्साह औद्धत्यं वृद्धिश्च।

व०	द्रेकते	द्रेकेते	द्रेकन्ते
स०	द्रेकेत	द्रेकेयाताम्	द्रेकेरन्
प०	द्रेकताम्	द्रेकेताम्	द्रेकन्ताम्
ह्य०	अद्रेकत	अद्रेकेताम्	अद्रेकन्त
अ०	अद्रेकिष्ट	अद्रेकिषाताम्	अद्रेकिषत
प०	दिद्रेके	दिद्रेकाते	दिद्रेकिरे
आ०	द्रेकिषीष्ट	द्रेकिषीयास्ताम्	द्रेकिषीरन्
श्व०	द्रेकिता	द्रेकितारौ	द्रेकितार:
भ०	द्रेकिष्यते	द्रेकिष्येते	द्रेकिष्यन्ते
क्रि०	अद्रेकिष्यत	अद्रेकिष्येताम्	अद्रेकिष्यन्त

६१५. ध्रेकृङ् (ध्रेक्) शब्दोत्साहे।

शब्दस्कोत्साह औद्धत्यं वृद्धिश्च।

व०	ध्रेकते	ध्रेकेते	ध्रेकन्ते
स०	ध्रेकेत	ध्रेकेयाताम्	ध्रेकेरन्
प०	ध्रेकताम्	ध्रेकेताम्	ध्रेकन्ताम्
ह्य०	अध्रेकत	अध्रेकेताम्	अध्रेकन्त
अ०	अध्रेकिष्ट	अध्रेकिषाताम्	अध्रेकिषत
प०	दिध्रेके	दिध्रेकाते	दिध्रेकिरे
आ०	ध्रेकिषीष्ट	ध्रेकिषीयास्ताम्	ध्रेकिषीरन्
श्व०	ध्रेकिता	ध्रेकितारौ	ध्रेकितार:
भ०	ध्रेकिष्यते	ध्रेकिष्येते	ध्रेकिष्यन्ते
क्रि०	अध्रेकिष्यत	अध्रेकिष्येताम्	अध्रेकिष्यन्त

६१६. रेकृङ् (रेक्) शङ्कायाम्।

अत्र शङ्का सन्देह:।

व०	रेकते	रेकेते	रेकन्ते
स०	रेकेत	रेकेयाताम्	रेकेरन्
प०	रेकताम्	रेकेताम्	रेकन्ताम्
ह्य०	अरेकत	अरेकेताम्	अरेकन्त
अ०	अरेकिष्ट	अरेकिषाताम्	अरेकिषत
प०	रिदरेके	रिरेकाते	रिरेकिरे
आ०	रेकिषीष्ट	रेकिषीयास्ताम्	रेकिषीरन्
श्व०	रेकिता	रेकितारौ	रेकितार:
भ०	रेकिष्यते	रेकिष्येते	रेकिष्यन्ते
क्रि०	अरेकिष्यत	अरेकिष्येताम्	अरेकिष्यन्त

६१७. शकुङ् (शङ्क्) शङ्कायाम्।

अत्र शङ्का सन्देह: त्रासश्च।

व०	शङ्कते	शङ्केते	शङ्कन्ते
स०	शङ्केत	शङ्केयाताम्	शङ्केरन्
प०	शङ्कताम्	शङ्केताम्	शङ्कन्ताम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	अशङ्कत	अशङ्केताम्	अशङ्कन्त
अ०	अशङ्किष्ट	अशङ्किषाताम्	अशङ्किषत
प०	शशङ्के	शशङ्काते	शशङ्किरे
आ०	शङ्किषीष्ट	शङ्किषीयास्ताम्	शङ्किषीरन्
श्व०	शङ्किता	शङ्कितारौ	शङ्कितारः
भ०	शङ्किष्यते	शङ्किष्येते	शङ्किष्यन्ते
क्रि०	अशङ्किष्यत	अशङ्किष्येताम्	अशङ्किष्यन्त

६१८. ककि् (कक्) लौल्ये।

लौल्यं गर्धश्चापल्यम्।

व०	ककते	ककेते	ककन्ते
स०	ककेत	ककेयाताम्	ककेरन्
प०	ककताम्	ककेताम्	ककन्ताम्
ह्य०	अककत	अककेताम्	अककन्त
अ०	अककिष्ट	अककिषाताम्	अककिषत
प०	चकके	चककाते	चककिरे
आ०	ककिषीष्ट	ककिषीयास्ताम्	ककिषीरन्
श्व०	ककिता	ककितारौ	ककितारः
भ०	ककिष्यते	ककिष्येते	ककिष्यन्ते
क्रि०	अककिष्यत	अककिष्येताम्	अककिष्यन्त

६१९. कुकि (कुक्) आदाने।

व०	कोकते	कोकेते	कोकन्ते
स०	कोकेत	कोकेयाताम्	कोकेरन्
प०	कोकताम्	कोकेताम्	कोकन्ताम्
ह्य०	अकोकत	अकोकेताम्	अकोकन्त
अ०	अकोकिष्ट	अकोकिषाताम्	अकोकिषत
प०	चुकुके	चुकुकाते	चुकुकिरे
आ०	कोकिषीष्ट	कोकिषीयास्ताम्	कोकिषीरन्
श्व०	कोकिता	कोकितारौ	कोकितारः
भ०	कोकिष्यते	कोकिष्येते	कोकिष्यन्ते
क्रि०	अोकोकिष्यत	अोकोकिष्येताम्	अोकोकिष्यन्त

६२०. वृर्कि (वृर्क्) आदाने।

व०	वर्कते	वर्केते	वर्कन्ते
स०	वर्केत	वर्केयाताम्	वर्केरन्
प०	वर्कताम्	वर्केताम्	वर्कन्ताम्
ह्य०	अवर्कत	अवर्केताम्	अवर्कन्त
अ०	अवर्किष्ट	अवर्किषाताम्	अवर्किषत
प०	ववृके	ववृकाते	ववृकिरे
आ०	वर्किषीष्ट	वर्किषीयास्ताम्	वर्किषीरन्
श्व०	वर्किता	वर्कितारौ	वर्कितारः
भ०	वर्किष्यते	वर्किष्येते	वर्किष्यन्ते
क्रि०	अवर्किष्यत	अवर्किष्येताम्	अवर्किष्यन्त

६२१. चकि (चक्) तृप्तिप्रतीघातयेः।

व०	चकते	चकेते	चकन्ते
स०	चकेत	चकेयाताम्	चकेरन्
प०	चकताम्	चकेताम्	चकन्ताम्
ह्य०	अचकत	अचकेताम्	अचकन्त
अ०	अचकिष्ट	अचकिषाताम्	अचकिषत
प०	चचके	चचकाते	चचकिरे
आ०	चकिषीष्ट	चकिषीयास्ताम्	चकिषीरन्
श्व०	चकिता	चकितारौ	चकितारः
भ०	चकिष्यते	चकिष्येते	चकिष्यन्ते
क्रि०	अचकिष्यत	अचकिष्येताम्	अचकिष्यन्त

६२२. ककुङ् (कङ्क्) गतौ।

व०	कङ्कते	कङ्केते	कङ्कन्ते
स०	कङ्केत	कङ्केयाताम्	कङ्केरन्
प०	कङ्कताम्	कङ्केताम्	कङ्कन्ताम्
ह्य०	अकङ्कत	अकङ्केताम्	अकङ्कन्त
अ०	अकङ्किष्ट	अकङ्किषाताम्	अकङ्किषत
प०	चकङ्के	चकङ्काते	चकङ्किरे
आ०	कङ्किषीष्ट	कङ्किषीयास्ताम्	कङ्किषीरन्
श्व०	कङ्किता	कङ्कितारौ	कङ्कितारः
भ०	कङ्किष्यते	कङ्किष्येते	कङ्किष्यन्ते
क्रि०	अकङ्किष्यत	अकङ्किष्येताम्	अकङ्किष्यन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६२३. श्वकुङ् (वङ्क्) गतौ।

व०	श्वङ्कते	श्वङ्केते	श्वङ्कन्ते
स०	श्वङ्केत	श्वङ्केयाताम्	श्वङ्केरन्
प०	श्वङ्कताम्	श्वङ्केताम्	श्वङ्कन्ताम्
ह्य०	अश्वङ्कत	अश्वङ्केताम्	अश्वङ्कन्त
अ०	अश्वङ्किष्ट	अश्वङ्किषाताम्	अश्वङ्किषत
प०	शश्वङ्के	शश्वङ्काते	शश्वङ्किरे
आ०	श्वङ्किषीष्ट	श्वङ्किषीयास्ताम्	श्वङ्किषीरन्
श्व०	श्वङ्किता	श्वङ्कितारौ	श्वङ्कितारः
भ०	श्वङ्किष्यते	श्वङ्किष्येते	श्वङ्किष्यन्ते
क्रि०	अश्वङ्किष्यत	अश्वङ्किष्येताम्	अश्वङ्किष्यन्त

६२४. त्रकुङ् (त्रङ्क्) गतौ।

व०	त्रङ्कते	त्रङ्केते	त्रङ्कन्ते
स०	त्रङ्केत	त्रङ्केयाताम्	त्रङ्केरन्
प०	त्रङ्कताम्	त्रङ्केताम्	त्रङ्कन्ताम्
ह्य०	अत्रङ्कत	अत्रङ्केताम्	अत्रङ्कन्त
अ०	अत्रङ्किष्ट	अत्रङ्किषाताम्	अत्रङ्किषत
प०	तत्रङ्के	तत्रङ्काते	तत्रङ्किरे
आ०	त्रङ्किषीष्ट	त्रङ्किषीयास्ताम्	त्रङ्किषीरन्
श्व०	त्रङ्किता	त्रङ्कितारौ	त्रङ्कितारः
भ०	त्रङ्किष्यते	त्रङ्किष्येते	त्रङ्किष्यन्ते
क्रि०	अत्रङ्किष्यत	अत्रङ्किष्येताम्	अत्रङ्किष्यन्त

६२५. श्रकुङ् (श्रङ्क्) गतौ।

व०	श्रङ्कते	श्रङ्केते	श्रङ्कन्ते
स०	श्रङ्केत	श्रङ्केयाताम्	श्रङ्केरन्
प०	श्रङ्कताम्	श्रङ्केताम्	श्रङ्कन्ताम्
ह्य०	अश्रङ्कत	अश्रङ्केताम्	अश्रङ्कन्त
अ०	अश्रङ्किष्ट	अश्रङ्किषाताम्	अश्रङ्किषत
प०	शश्रङ्के	शश्रङ्काते	शश्रङ्किरे
आ०	श्रङ्किषीष्ट	श्रङ्किषीयास्ताम्	श्रङ्किषीरन्
श्व०	श्रङ्किता	श्रङ्कितारौ	श्रङ्कितारः
भ०	श्रङ्किष्यते	श्रङ्किष्येते	श्रङ्किष्यन्ते
क्रि०	अश्रङ्किष्यत	अश्रङ्किष्येताम्	अश्रङ्किष्यन्त

६२६. श्लकुङ् (लङ्क्) गतौ।

व०	श्लङ्कते	श्लङ्केते	श्लङ्कन्ते
स०	श्लङ्केत	श्लङ्केयाताम्	श्लङ्केरन्
प०	श्लङ्कताम्	श्लङ्केताम्	श्लङ्कन्ताम्
ह्य०	अश्लङ्कत	अश्लङ्केताम्	अश्लङ्कन्त
अ०	अश्लङ्किष्ट	अश्लङ्किषाताम्	अश्लङ्किषत
प०	शश्लङ्के	शश्लङ्काते	शश्लङ्किरे
आ०	श्लङ्किषीष्ट	श्लङ्किषीयास्ताम्	श्लङ्किषीरन्
श्व०	श्लङ्किता	श्लङ्कितारौ	श्लङ्कितारः
भ०	श्लङ्किष्यते	श्लङ्किष्येते	श्लङ्किष्यन्ते
क्रि०	अश्लङ्किष्यत	अश्लङ्किष्येताम्	अश्लङ्किष्यन्त

६२७. ढौकृङ् (ढौक्) गतौ।

व०	ढौकते	ढौकेते	ढौकन्ते
	ढौकसे	ढौकेथे	ढौकध्वे
	ढौके	ढौकावहे	ढौकामहे
स०	ढौकेत	ढौकेयाताम्	ढौकेरन्
	ढौकेथाः	ढौकेयाथाम्	ढौकेध्वम्
	ढौकेय	ढौकेवहि	ढौकेमहि
प०	ढौकताम्	ढौकेताम्	ढौकन्ताम्
	ढौकस्व	ढौकेथाम्	ढौकध्वम्
	ढौकै	ढौकावहै	ढौकामहै
ह्य०	अढौकत	अढौकेताम्	अढौकन्त
	अढौकथाः	अढौकथाम्	अढौकध्वम्
	अढौके	अढौकावहि	अढौकामहि
अ०	अढौकिष्ट	अढौकिषाताम्	अढौकिषत
	अढौकिष्ठाः	अढौकिषाथाम्	अढौकिड्ढ्वम्/ढ्वम्
	अढौकिषि	अढौकिष्वहि	अढौकिष्महि
प०	डुढौके	डुढौकाते	डुढौकिरे
	डुढौकिषे	डुढौकाथे	डुढौकिध्वे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	डुढौके	डुढौकिवहे	डुढौकिमहे
आ०	ढौकिषीष्ट	ढौकिषीयास्ताम्	ढौकिषीरन्
	ढौकिषीष्ठाः	ढौकिषीयास्थाम्	ढौकिषीध्वम्
	ढौकिषीय	ढौकिषीवहि	ढौकिषीमहि
श्व०	ढौकिता	ढौकितारौ	ढौकितारः
	ढौकितासे	ढौकितासाथे	ढौकिताध्वे
	ढौकिताहे	ढौकितास्वहे	ढौकिताढ्वेहे
भ०	ढौकिष्यते	ढौकिष्येते	ढौकिष्यन्ते
	ढौकिष्यसे	ढौकिष्येथे	ढौकिष्यध्वे
	ढौकिष्ये	ढौकिष्यावहे	ढौकिष्यामहे
क्रि०	अढौकिष्यत	अढौकिष्येताम्	अढौकिष्यन्त
	अढौकिष्यथाः	अढौकिष्येथाम्	अढौकिष्यध्वम्
	अढौकिष्ये	अढौकिष्यावहि	अढौकिष्यामहि

६२८. त्रौकृङ् (त्रौक्) गतौ।

व०	त्रौकते	त्रौकेते	त्रौकन्ते
स०	त्रौकेत	त्रौकेयाताम्	त्रौकेरन्
प०	त्रौकताम्	त्रौकेताम्	त्रौकन्ताम्
ह्य०	अत्रौकत	अत्रौकेताम्	अत्रौकन्त
अ०	अत्रौकिष्ट	अत्रौकिषाताम्	अत्रौकिषत
प०	तुत्रौके	तुत्रौकाते	तुत्रौकिरे
आ०	त्रौकिषीष्ट	त्रौकिषीयास्ताम्	त्रौकिषीरन्
श्व०	त्रौकिता	त्रौकितारौ	त्रौकितारः
भ०	त्रौकिष्यते	त्रौकिष्येते	त्रौकिष्यन्ते
क्रि०	अत्रौकिष्यत	अत्रौकिष्येताम्	अत्रौकिष्यन्त

६२९. ष्वष्कि (ष्वष्क्) गतौ।

व०	ष्वष्कते	ष्वष्केते	ष्वष्कन्ते
स०	ष्वष्केत	ष्वष्केयाताम्	ष्वष्केरन्
प०	ष्वष्कताम्	ष्वष्केताम्	ष्वष्कन्ताम्
ह्य०	अष्वष्कत	अष्वष्केताम्	अष्वष्कन्त
अ०	अष्वष्किष्ट	अष्वष्किषाताम्	अष्वष्किषत
प०	पष्वष्के	षष्वष्काते	षष्वष्किरे
आ०	ष्वष्किषीष्ट	ष्वष्किषीयास्ताम्	ष्वष्किषीरन्
श्व०	ष्वष्किता	ष्वष्कितारौ	ष्वष्कितारः
भ०	ष्वष्किष्यते	ष्वष्किष्येते	ष्वष्किष्यन्ते
क्रि०	अष्वष्किष्यत	अष्वष्किष्येताम्	अष्वष्किष्यन्त

६३०. वस्कि (वस्क्) गतौ।

व०	वस्कते	वस्केते	वस्कन्ते
स०	वस्केत	वस्केयाताम्	वस्केरन्
प०	वस्कताम्	वस्केताम्	वस्कन्ताम्
ह्य०	अवस्कत	अवस्केताम्	अवस्कन्त
अ०	अवस्किष्ट	अवस्किषाताम्	अवस्किषत
प०	ववस्के	पवस्काते	ववस्किरे
आ०	वस्किषीष्ट	वस्किषीयास्ताम्	वस्किषीरन्
श्व०	वस्किता	वस्कितारौ	वस्कितारः
भ०	वस्किष्यते	वस्किष्येते	वस्किष्यन्ते
क्रि०	अवस्किष्यत	अवस्किष्येताम्	अवस्किष्यन्त

६३१. मस्कि (मस्क्) गतौ।

व०	मस्कते	मस्केते	मस्कन्ते
स०	मस्केत	मस्केयाताम्	मस्केरन्
प०	मस्कताम्	मस्केताम्	मस्कन्ताम्
ह्य०	अमस्कत	अमस्केताम्	अमस्कन्त
अ०	अमस्किष्ट	अमस्किषाताम्	अमस्किषत
प०	ममस्के	ममस्काते	ममस्किरे
आ०	मस्किषीष्ट	मस्किषीयास्ताम्	मस्किषीरन्
श्व०	मस्किता	मस्कितारौ	मस्कितारः
भ०	मस्किष्यते	मस्किष्येते	मस्किष्यन्ते
क्रि०	अमस्किष्यत	अमस्किष्येताम्	अमस्किष्यन्त

६३२. तिकि (तिक्) गतौ।

व०	तेकते	तेकेते	तेकन्ते
स०	तेकेत	तेकेयाताम्	तेकेरन्
प०	तेकताम्	तेकेताम्	तेकन्ताम्
ह्य०	अतेकत	अतेकेताम्	अतेकन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	अतेकिष्ट	अतेकिषाताम्	अतेकिषत
प०	तितिके	तितिकाते	तितिकिरे
आ०	तेकिषीष्ट	तेकिषीयास्ताम्	तेकिषीरन्
श्व०	तेकिता	तेकितारौ	तेकितार:
भ०	तेकिष्यते	तेकिष्येते	तेकिष्यन्ते
क्रि०	अतेकिष्यत	अतेकिष्येताम्	अतेकिष्यन्त

६३३. टिकि (टिक्) गतौ।

व०	टेकते	टेकेते	टेकन्ते
स०	टेकेत	टेकेयाताम्	टेकेरन्
प०	टेकताम्	टेकेताम्	टेकन्ताम्
ह्य०	अटेकत	अटेकेताम्	अटेकन्त
अ०	अटेकिष्ट	अटेकिषाताम्	अटेकिषत
प०	टिटिके	टिटिकाते	टिटिकिरे
आ०	टेकिषीष्ट	टेकिषीयास्ताम्	टेकिषीरन्
श्व०	टेकिता	टेकितारौ	टेकितार:
भ०	टेकिष्यते	टेकिष्येते	टेकिष्यन्ते
क्रि०	अटेकिष्यत	अटेकिष्येताम्	अटेकिष्यन्त

६३४. टीकृङ् (टीक्) गतौ।

व०	टीकते	टीकेते	टीकन्ते
स०	टीकेत	टीकेयाताम्	टीकेरन्
प०	टीकताम्	टीकेताम्	टीकन्ताम्
ह्य०	अटीकत	अटीकेताम्	अटीकन्त
अ०	अटीकिष्ट	अटीकिषाताम्	अटीकिषत
प०	टिटीके	टिटीकाते	टिटीकिरे
आ०	टीकिषीष्ट	टीकिषीयास्ताम्	टीकिषीरन्
श्व०	टीकिता	टीकितारौ	टीकितार:
भ०	टीकिष्यते	टीकिष्येते	टीकिष्यन्ते
क्रि०	अटीकिष्यत	अटीकिष्येताम्	अटीकिष्यन्त

६३५. सेकृङ् (सेक्) गतौ।

व०	सेकते	सेकेते	सेकन्ते
स०	सेकेत	सेकेयाताम्	सेकेरन्
प०	सेकताम्	सेकेताम्	सेकन्ताम्
ह्य०	असेकत	असेकेताम्	असेकन्त
अ०	असेकिष्ट	असेकिषाताम्	असेकिषत
प०	सिसेके	सिसेकाते	सिसेकिरे
आ०	सेकिषीष्ट	सेकिषीयास्ताम्	सेकिषीरन्
श्व०	सेकिता	सेकितारौ	सेकितार:
भ०	सेकिष्यते	सेकिष्येते	सेकिष्यन्ते
क्रि०	असेकिष्यत	असेकिष्येताम्	असेकिष्यन्त

६३६. स्रेकृङ् (स्रेक्) गतौ।

व०	स्रेकते	स्रेकेते	स्रेकन्ते
स०	स्रेकेत	स्रेकेयाताम्	स्रेकेरन्
प०	स्रेकताम्	स्रेकेताम्	स्रेकन्ताम्
ह्य०	अस्रेकत	अस्रेकेताम्	अस्रेकन्त
अ०	अस्रेकिष्ट	अस्रेकिषाताम्	अस्रेकिषत
प०	सिस्रेके	सिस्रेकाते	सिस्रेकिरे
आ०	स्रेकिषीष्ट	स्रेकिषीयास्ताम्	स्रेकिषीरन्
श्व०	स्रेकिता	स्रेकितारौ	स्रेकितार:
भ०	स्रेकिष्यते	स्रेकिष्येते	स्रेकिष्यन्ते
क्रि०	अस्रेकिष्यत	अस्रेकिष्येताम्	अस्रेकिष्यन्त

अथ घान्ता नव सेटश्च।

६३७. रघुङ् (रङ्घ) गतौ।

व०	रङ्घते	रङ्घेते	रङ्घन्ते
स०	रङ्घेत	रङ्घेयाताम्	रङ्घेरन्
प०	रङ्घताम्	रङ्घेताम्	रङ्घन्ताम्
ह्य०	अरङ्घत	अरङ्घेताम्	अरङ्घन्त
अ०	अरङ्घिष्ट	अरङ्घिषाताम्	अरङ्घिषत
प०	ररङ्घे	ररङ्घाते	ररङ्घिरे
आ०	रङ्घिषीष्ट	रङ्घिषीयास्ताम्	रङ्घिषीरन्
श्व०	रङ्घिता	रङ्घितारौ	रङ्घितार:
भ०	रङ्घिष्यते	रङ्घिष्येते	रङ्घिष्यन्ते
क्रि०	अरङ्घिष्यत	अरङ्घिष्येताम्	अरङ्घिष्यन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६३८. लघुङ् (लङ्घ) गतौ।

अयं भोजननिवृत्तावपि।

व०	लङ्घते	लङ्घेते	लङ्घन्ते
स०	लङ्घेत	लङ्घेयाताम्	लङ्घेलन्
प०	लङ्घताम्	लङ्घेताम्	लङ्घन्ताम्
ह्य०	अलङ्घत	अलङ्घेताम्	अलङ्घन्त
अ०	अलङ्घिष्ट	अलङ्घिषाताम्	अलङ्घिषत
प०	ललङ्घे	ललङ्घाते	ललङ्घिरे
आ०	लङ्घिषीष्ट	लङ्घिषीयास्ताम्	लङ्घिषीरन्
श्व०	लङ्घिता	लङ्घितारौ	लङ्घितार:
भ०	लङ्घिष्यते	लङ्घिष्येते	लङ्घिष्यन्ते
क्रि०	अलङ्घिष्यत	अलङ्घिष्येताम्	अलङ्घिष्यन्त

६३९. अघुङ् (अङ्घ) गत्याक्षेपे

गतेराक्षेपो वेग आरम्भ उपलम्भो वा।

व०	अङ्घते	अङ्घेते	अङ्घन्ते
स०	अङ्घेत	अङ्घेयाताम्	अङ्घेरन्
प०	अङ्घताम्	अङ्घेताम्	अङ्घन्ताम्
ह्य०	आङ्घत	आङ्घेताम्	आङ्घन्त
अ०	आङ्घिष्ट	आङ्घिषाताम्	आङ्घिषत
प०	आनङ्घे	आनङ्घाते	आनङ्घिरे
आ०	अङ्घिषीष्ट	अङ्घिषीयास्ताम्	अङ्घिषीरन्
श्व०	अङ्घिता	अङ्घितारौ	अङ्घितार:
भ०	अङ्घिष्यते	अङ्घिष्येते	अङ्घिष्यन्ते
क्रि०	आङ्घिष्यत	आङ्घिष्येताम्	आङ्घिष्यन्त

६४०. वघुङ् (वङ्घ) गत्याक्षेपे।

गतेराक्षेपो वेग आरम्भ उपलम्भो वा।

व०	वङ्घते	वङ्घेते	वङ्घन्ते
स०	वङ्घेत	वङ्घेयाताम्	वङ्घेवन्
प०	वङ्घताम्	वङ्घेताम्	वङ्घन्ताम्
ह्य०	अवङ्घत	अवङ्घेताम्	अवङ्घन्त
अ०	अवङ्घिष्ट	अवङ्घिषाताम्	अवङ्घिषत
प०	ववङ्घे	ववङ्घाते	ववङ्घिरे
आ०	वङ्घिषीष्ट	वङ्घिषीयास्ताम्	वङ्घिषीरन्
श्व०	वङ्घिता	वङ्घितारौ	वङ्घितार:
भ०	वङ्घिष्यते	वङ्घिष्येते	वङ्घिष्यन्ते
क्रि०	अवङ्घिष्यत	अवङ्घिष्येताम्	अवङ्घिष्यन्त

६४१. मघुङ् (मङ्घ) कैतवे च।

कैतवं वञ्चना चकाराद्गत्याक्षेपे।

व०	मङ्घते	मङ्घेते	मङ्घन्ते
स०	मङ्घेत	मङ्घेयाताम्	मङ्घेरन्
प०	मङ्घताम्	मङ्घेताम्	मङ्घन्ताम्
ह्य०	अमङ्घत	अमङ्घेताम्	अमङ्घन्त
अ०	अमङ्घिष्ट	अमङ्घिषाताम्	अमङ्घिषत
प०	ममङ्घे	ममङ्घाते	ममङ्घिरे
आ०	मङ्घिषीष्ट	मङ्घिषीयास्ताम्	मङ्घिषीरन्
श्व०	मङ्घिता	मङ्घितारौ	मङ्घितार:
भ०	मङ्घिष्यते	मङ्घिष्येते	मङ्घिष्यन्ते
क्रि०	अमङ्घिष्यत	अमङ्घिष्येताम्	अमङ्घिष्यन्त

६४२. राघृङ् (राघ्) सामर्थ्ये।

व०	राघते	राघेते	राघन्ते
	राघसे	राघेथे	राघध्वे
	राघे	राघावहे	राघामहे
स०	राघेत	राघेयाताम्	राघेरन्
	राघेथा:	राघेयाथाम्	राघेध्वम्
	राघेय	राघेवहि	राघेमहि
प०	राघताम्	राघेताम्	राघन्ताम्
	राघस्व	राघेथाम	राघध्वम्
	राघै	राघावहै	राघामहै
ह्य०	अराघत	अराघेताम्	अराघन्त
	अराघथा:	अराघथाम	अराघध्वम्
	अराघे	अराघावहि	अराघामहि
अ०	अराघिष्ट	अराघिषाताम्	अराघिषत
	अराघिष्ठा:	अराघिषाथाम्	अराघिध्वम्
	अराघिषि	अराघिष्वहि	अराघिष्महि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	रराघे	रराघाते	रराघिरे
	रराघिषे	रराघाथे	रराघिध्वे
	रराघे	रराघिवहे	रराघिमहे
आ०	राघिषीष्ट	राघिषीयास्ताम्	राघिषीरन्
	राघिषीष्ठाः	राघिषीयास्थाम्	राघिषीध्वम्
	राघिषीय	राघिषीवहि	राघिषीमहि
श्व०	राघिता	राघितारौ	राघितारः
	राघितासे	राघितासाथे	राघिताध्वे
	राघिताहे	राघितास्वहे	राघितास्महे
भ०	राघिष्यते	राघिष्येते	राघिष्यन्ते
	राघिष्यसे	राघिष्येथे	राघिष्यध्वे
	राघिष्ये	राघिष्यावहे	राघिष्यामहे
क्रि०	अराघिष्यत	अराघिष्येताम्	अराघिष्यन्त
	अराघिष्यथाः	अराघिष्येथाम्	अराघिष्यध्वम्
	अराघिष्ये	अराघिष्यावहि	अराघिष्यामहि

६४३. लाघृङ् (लाघ्) सामर्थ्ये।

व०	लाघते	लाघेते	लाघन्ते
स०	लाघेत	लाघेयाताम्	लाघेरन्
प०	लाघताम्	लाघेताम्	लाघन्ताम्
ह्य०	अलाघत	अलाघेताम्	अलाघन्त
अ०	अलाघिष्ट	अलाघिषाताम्	अलाघिषत
प०	ललाघे	ललाघाते	ललाघिरे
आ०	लाघिषीष्ट	लाघिषीयास्ताम्	लाघिषीरन्
श्व०	लाघिता	लाघितारौ	लाघितारः
भ०	लाघिष्यते	लाघिष्येते	लाघिष्यन्ते
क्रि०	अलाघिष्यत	अलाघिष्येताम्	अलाघिष्यन्त

६४४. दाघृङ् (दाघ्) आयासे च।

चकारात्सामर्थ्ये।

व०	द्राघते	द्राघेते	द्राघन्ते
स०	द्राघेत	द्राघेयाताम्	द्राघेरन्
प०	द्राघताम्	द्राघेताम्	द्राघन्ताम्
ह्य०	अद्राघत	अद्राघेताम्	अद्राघन्त
अ०	अद्राघिष्ट	अद्राघिषाताम्	अद्राघिषत
प०	दद्राघे	दद्राघाते	दद्राघिरे
आ०	द्राघिषीष्ट	द्राघिषीयास्ताम्	द्राघिषीरन्
श्व०	द्राघिता	द्राघितारौ	द्राघितारः
भ०	द्राघिष्यते	द्राघिष्येते	द्राघिष्यन्ते
क्रि०	अद्राघिष्यत	अद्राघिष्येताम्	अद्राघिष्यन्त

६४५. श्लाघृङ् (श्लाघ्) कत्थने।

कत्थनमुत्कर्षाख्यानम्।

व०	श्लाघते	श्लाघेते	श्लाघन्ते
स०	श्लाघेत	श्लाघेयाताम्	श्लाघेरन्
प०	श्लाघताम्	श्लाघेताम्	श्लाघन्ताम्
ह्य०	अश्लाघत	अश्लाघेताम्	अश्लाघन्त
अ०	अश्लाघिष्ट	अश्लाघिषाताम्	अश्लाघिषत
प०	शश्लाघे	शुश्लाघाते	शश्लाघिरे
आ०	श्लाघिषीष्ट	श्लाघिषीयास्ताम्	श्लाघिषीरन्
श्व०	श्लाघिता	श्लाघितारौ	श्लाघितारः
भ०	श्लाघिष्यते	श्लाघिष्येते	श्लाघिष्यन्ते
क्रि०	अश्लाघिष्यत	अश्लाघिष्येताम्	अश्लाघिष्यन्त

अथ चान्तास्त्रयोदश सेटश्च।

६४६. लोचृङ् (लोच्) दर्शने।

व०	लोचते	लोचेते	लोचन्ते
स०	लोचेत	लोचेयाताम्	लोचेरन्
प०	लोचताम्	लोचेताम्	लोचन्ताम्
ह्य०	अलोचत	अलोचेताम्	अलोचन्त
अ०	अलोचिष्ट	अलोचिषाताम्	अलोचिषत
प०	लुलोचे	लुलोचाते	लुलोचिरे
आ०	लोचिषीष्ट	लोचिषीयास्ताम्	लोचिषीरन्
श्व०	लोचिता	लोचितारौ	लोचितारः
भ०	लोचिष्यते	लोचिष्येते	लोचिष्यन्ते
क्रि०	अलोचिष्यत	अलोचिष्येताम्	अलोचिष्यन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६४७. षचि (सेचृ) सेचने।

सेचनं सेवनं भजनमिति यावत्।

व०	सचते	सचेते	सचन्ते
स०	सचेत	सचेयाताम्	सचेरन्
प०	सचताम्	सचेताम्	सचन्ताम्
ह्य०	असचत	असचेताम्	असचन्त
अ०	असचिष्ट	असचिषाताम्	असचिषत
प०	सेचे	सेचाते	सेचिरे
आ०	सचिषीष्ट	सचिषीयास्ताम्	सचिषीरन्
श्व०	सचिता	सचितारौ	सचितारः
भ०	सचिष्यते	सचिष्येते	सचिष्यन्ते
क्रि०	असचिष्यत	असचिष्येताम्	असचिष्यन्त

६४८. शचि (शच्) व्यक्तायां वाचि।

व०	शचते	शचेते	शचन्ते
स०	शचेत	शचेयाताम्	शचेरन्
प०	शचताम्	शचेताम्	शचन्ताम्
ह्य०	अशचत	अशचेताम्	अशचन्त
अ०	अशचिष्ट	अशचिषाताम्	अशचिषत
प०	शेचे	शेचाते	शेचिरे
आ०	शचिषीष्ट	शचिषीयास्ताम्	शचिषीरन्
श्व०	शचिता	शचितारौ	शचितारः
भ०	शचिष्यते	शचिष्येते	शचिष्यन्ते
क्रि०	अशचिष्यत	अशचिष्येताम्	अशचिष्यन्त

६४९. कचि (कच्) बन्धने।

व०	कचते	कचेते	कचन्ते
स०	कचेत	कचेयाताम्	कचेरन्
प०	कचताम्	कचेताम्	कचन्ताम्
ह्य०	अकचत	अकचेताम्	अकचन्त
अ०	अकचिष्ट	अकचिषाताम्	अकचिषत
प०	चकचे	चकचाते	चकचिरे
आ०	कचिषीष्ट	कचिषीयास्ताम्	कचिषीरन्
श्व०	कचिता	कचितारौ	कचितारः
भ०	कचिष्यते	कचिष्येते	कचिष्यन्ते
क्रि०	अकचिष्यत	अकचिष्येताम्	अकचिष्यन्त

६५०. कचुङ् (कञ्च्) दीप्तौ च।

चकाराद् बन्धने।

व०	कञ्चते	कञ्चेते	कञ्चन्ते
स०	कञ्चेत	कञ्चेयाताम्	कञ्चेरन्
प०	कञ्चताम्	कञ्चेताम्	कञ्चन्ताम्
ह्य०	अकञ्चत	अकञ्चेताम्	अकञ्चन्त
अ०	अकञ्चिष्ट	अकञ्चिषाताम्	अकञ्चिषत
प०	चकञ्चे	चकञ्चाते	चकञ्चिरे
आ०	कञ्चिषीष्ट	कञ्चिषीयास्ताम्	कञ्चिषीरन्
श्व०	कञ्चिता	कञ्चितारौ	कञ्चितारः
भ०	कञ्चिष्यते	कञ्चिष्येते	कञ्चिष्यन्ते
क्रि०	अकञ्चिष्यत	अकञ्चिष्येताम्	अकञ्चिष्यन्त

६५१. श्वचि (श्वच्) गतौ।

व०	श्वचते	श्वचेते	श्वचन्ते
स०	श्वचेत	श्वचेयाताम्	श्वचेरन्
प०	श्वचताम्	श्वचेताम्	श्वचन्ताम्
ह्य०	अश्वचत	अश्वचेताम्	अश्वचन्त
अ०	अश्वचिष्ट	अश्वचिषाताम्	अश्वचिषत
प०	शश्वचे	शश्वचाते	शश्वचिरे
आ०	श्वचिषीष्ट	श्वचिषीयास्ताम्	श्वचिषीरन्
श्व०	श्वचिता	श्वचितारौ	श्वचितारः
भ०	श्वचिष्यते	श्वचिष्येते	श्वचिष्यन्ते
क्रि०	अश्वचिष्यत	अश्वचिष्येताम्	अश्वचिष्यन्त

६५२. श्वचुङ् (श्वञ्च्) गतौ।

व०	श्वञ्चते	श्वञ्चेते	श्वञ्चन्ते
स०	श्वञ्चेत	श्वञ्चेयाताम्	श्वञ्चेरन्
प०	श्वञ्चताम्	श्वञ्चेताम्	श्वञ्चन्ताम्
ह्य०	अश्वञ्चत	अश्वञ्चेताम्	अश्वञ्चन्त
अ०	अश्वञ्चिष्ट	अश्वञ्चिषाताम्	अश्वञ्चिषत
प०	शश्वञ्चे	शश्वञ्चाते	शश्वञ्चिरे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	श्वञ्चिषीष्ट	श्वञ्चिषीयास्ताम्	श्वञ्चिषीरन्
श्व०	श्वञ्चिता	श्वञ्चितारौ	श्वञ्चितारः
भ०	श्वञ्चिष्यते	श्वञ्चिष्येते	श्वञ्चिष्यन्ते
क्रि०	अश्वञ्चिष्यत	अश्वञ्चिष्येताम्	अश्वञ्चिष्यन्त

६५३. वर्चि (वर्च्) दीप्तौ।

व०	वर्चते	वर्चेते	वर्चन्ते
स०	वर्चेत	वर्चेयाताम्	वर्चेरन्
प०	वर्चताम्	वर्चेताम्	वर्चन्ताम्
ह्य०	अवर्चत	अवर्चेताम्	अवर्चन्त
अ०	अवर्चिष्ट	अवर्चिषाताम्	अवर्चिषत
प०	ववर्चे	ववर्चाते	ववर्चिरे
आ०	वर्चिषीष्ट	वर्चिषीयास्ताम्	वर्चिषीरन्
श्व०	वर्चिता	वर्चितारौ	वर्चितारः
भ०	वर्चिष्यते	वर्चिष्येते	वर्चिष्यन्ते
क्रि०	अवर्चिष्यत	अवर्चिष्येताम्	अवर्चिष्यन्त

६५४. मचि (मेच्) कल्कने।

कल्कनं दम्भः शाठ्यं क्वथनं च।

व०	मचते	मचेते	मचन्ते
स०	मचेत	मचेयाताम्	मचेरन्
प०	मचताम्	मचेताम्	मचन्ताम्
ह्य०	अमचत	अमचेताम्	अमचन्त
अ०	अमचिष्ट	अमचिषाताम्	अमचिषत
प०	मेचे	मेचाते	मेचिरे
आ०	मचिषीष्ट	मचिषीयास्ताम्	मचिषीरन्
श्व०	मचिता	मचितारौ	मचितारः
भ०	मचिष्यते	मचिष्येते	मचिष्यन्ते
क्रि०	अमचिष्यत	अमचिष्येताम्	अमचिष्यन्त

६५५. मुचुङ् (मुञ्च्) कल्कने।

कल्कनं दम्भः शाठ्यं क्वथनं च।

व०	मुञ्चते	मुञ्चेते	मुञ्चन्ते
स०	मुञ्चेत	मुञ्चेयाताम्	मुञ्चेरन्
प०	मुञ्चताम्	मुञ्चेताम्	मुञ्चन्ताम्
ह्य०	अमुञ्चत	अमुञ्चेताम्	अमुञ्चन्त
अ०	अमुञ्चिष्ट	अमुञ्चिषाताम्	अमुञ्चिषत
प०	मुमुञ्चे	मुमुञ्चाते	मुमुञ्चिरे
आ०	मुञ्चिषीष्ट	मुञ्चिषीयास्ताम्	मुञ्चिषीरन्
श्व०	मुञ्चिता	मुञ्चितारौ	मुञ्चितारः
भ०	मुञ्चिष्यते	मुञ्चिष्येते	मुञ्चिष्यन्ते
क्रि०	अमुञ्चिष्यत	अमुञ्चिष्येताम्	अमुञ्चिष्यन्त

६५६. मचुङ् (मञ्च्) धारणोच्छ्राय।

पूजनेषु च। चकारात्कल्कने।

व०	मञ्चते	मञ्चेते	मञ्चन्ते
स०	मञ्चेत	मञ्चेयाताम्	मञ्चेरन्
प०	मञ्चताम्	मञ्चेताम्	मञ्चन्ताम्
ह्य०	अमञ्चत	अमञ्चेताम्	अमञ्चन्त
अ०	अमञ्चिष्ट	अमञ्चिषाताम्	अमञ्चिषत
प०	ममञ्चे	ममञ्चाते	ममञ्चिरे
आ०	मञ्चिषीष्ट	मञ्चिषीयास्ताम्	मञ्चिषीरन्
श्व०	मञ्चिता	मञ्चितारौ	मञ्चितारः
भ०	मञ्चिष्यते	मञ्चिष्येते	मञ्चिष्यन्ते
क्रि०	अमञ्चिष्यत	अमञ्चिष्येताम्	अमञ्चिष्यन्त

६५७. पचुङ् (पञ्च्) व्यक्तीकरणे।

व०	पञ्चते	पञ्चेते	पञ्चन्ते
स०	पञ्चेत	पञ्चेयाताम्	पञ्चेरन्
प०	पञ्चताम्	पञ्चेताम्	पञ्चन्ताम्
ह्य०	अपञ्चत	अपञ्चेताम्	अपञ्चन्त
अ०	अपञ्चिष्ट	अपञ्चिषाताम्	अपञ्चिषत
प०	पपञ्चे	पपञ्चाते	पपञ्चिरे
आ०	पञ्चिषीष्ट	पञ्चिषीयास्ताम्	पञ्चिषीरन्
श्व०	पञ्चिता	पञ्चितारौ	पञ्चितारः
भ०	पञ्चिष्यते	पञ्चिष्येते	पञ्चिष्यन्ते
क्रि०	अपञ्चिष्यत	अपञ्चिष्येताम्	अपञ्चिष्यन्त

६५८. ष्टुचि (स्तुच्) प्रसादे।

व०	स्तोचते	स्तोचेते	स्तोचन्ते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	स्तोचसे	स्तोचेथे	स्तोचध्वे
	स्तोचे	स्तोचावहे	स्तोचामहे
स०	स्तोचेत	स्तोचेयाताम्	स्तोचेरन्
	स्तोचेथाः	स्तोचेयाथाम्	स्तोचेध्वम्
	स्तोचेय	स्तोचेवहि	स्तोचेमहि
प०	स्तोचताम्	स्तोचेताम्	स्तोचन्ताम्
	स्तोचस्व	स्तोचेथाम	स्तोचध्वम्
	स्तोचै	स्तोचावहै	स्तोचामहै
ह्य०	अस्तोचत	अस्तोचेताम्	अस्तोचन्त
	अस्तोचथाः	अस्तोचथाम	अस्तोचध्वम्
	अस्तोचे	अस्तोचावहि	अस्तोचामहि
अ०	अस्तोचिष्ट	अस्तोचिषाताम्	अस्तोचिषत
	अस्तोचिष्ठाः	अस्तोचिषाथाम्	अस्तोचिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अस्तोचिषि	अस्तोचिष्वहि	अस्तोचिष्महि
प०	तुष्टुचे	तुष्टुचाते	तुष्टुचिरे
	तुष्टुचिषे	तुष्टुचाथे	तुष्टुचिध्वे
	तुष्टुचे	तुष्टुचिवहे	तुष्टुचिमहे
आ०	स्तोचिषीष्ट	स्तोचिषीयास्ताम्	स्तोचिषीरन्
	स्तोचिषीष्ठाः	स्तोचिषीयास्थाम्	स्तोचिषीध्वम्
	स्तोचिषीय	स्तोचिषीवहि	स्तोचिषीमहि
श्व०	स्तोचिता	स्तोचितारौ	स्तोचितारः
	स्तोचितासे	स्तोचितासाथे	स्तोचिताध्वे
	स्तोचिताहे	स्तोचितास्वहे	स्तोचितास्मिहे
भ०	स्तोचिष्यते	स्तोचिष्येते	स्तोचिष्यन्ते
	स्तोचिष्यसे	स्तोचिष्येथे	स्तोचिष्यध्वे
	स्तोचिष्ये	स्तोचिष्यावहे	स्तोचिष्यामहे
क्रि०	अस्तोचिष्यत	अस्तोचिष्येताम्	अस्तोचिष्यन्त
	अस्तोचिष्यथाः	अस्तोचिष्येथाम्	अस्तोचिष्यध्वम्
	अस्तोचिष्ये	अस्तोचिष्यावहि	अस्तोचिष्यामहि

अथ जान्ता नव सेटश्च।

६५९. एजृङ् (एजृ) दीप्तौ।

व०	एजते	एजेते	एजन्ते
	एजसे	एजेथे	एजध्वे
	एजे	एजावहे	एजामहे
स०	एजेत	एजेयाताम्	एजेरन्
	एजेथाः	एजेयाथाम्	एजेध्वम्
	एजेय	एजेवहि	एजेमहि
प०	एजताम्	एजेताम्	एजन्ताम्
	एजस्व	एजेथाम्	एजध्वम्
	एजै	एजावहै	एजामहै
ह्य०	ऐजत	ऐजेताम्	ऐजन्त
	ऐजथाः	ऐजथाम्	ऐजध्वम्
	ऐजे	ऐजावहि	ऐजामहि
अ०	ऐजिष्ट	ऐजिषाताम्	ऐजिषत
	ऐजिष्ठाः	ऐजिषाथाम्	ऐजिड्ढ्वम/ऐजिध्वम्
	ऐजिषि	ऐजिष्वहि	ऐजिष्महि
प०	एजाञ्चक्रे	एजाञ्चक्राते	एजाञ्चक्रिरे
	एजाञ्चकृषे	एजाञ्चक्राथे	एजाञ्चकृढ्वे
	एजाञ्चक्रे	एजाञ्चकृवहे	एजाञ्चकृमहे
	एजाम्बभूव/एजामास		
आ०	एजिषीष्ट	एजिषीयास्ताम्	एजिषीरन्
	एजिषीष्ठाः	एजिषीयास्थाम्	एजिषीध्वम्
	एजिषीय	एजिषीवहि	एजिषीमहि
श्व०	एजिता	एजितारौ	एजितारः
	एजितासे	एजितासाथे	एजिताध्वे
	एजिताहे	एजितास्वहे	एजितास्मिहे
भ०	एजिष्यते	एजिष्येते	एजिष्यन्ते
	एजिष्यसे	एजिष्येथे	एजिष्यध्वे
	एजिष्ये	एजिष्यावहे	एजिष्यामहे
क्रि०	ऐजिष्यत	ऐजिष्येताम्	ऐजिष्यन्त
	ऐजिष्यथाः	ऐजिष्येथाम्	ऐजिष्यध्वम्
	ऐजिष्ये	ऐजिष्यावहि	ऐजिष्यामहि

६६०. लेजृङ् (लेजृ) दीप्तौ।

व०	लेजते	लेजेते	लेजन्ते
स०	लेजेत	लेजेयाताम्	लेजेरन्
प०	लेजताम्	लेजेताम्	लेजन्ताम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	अलेजत	अलेजेताम्	अलेजन्त
अ०	अलेजिष्ट	अलेजिषाताम्	अलेजिषत
प०	लिलेजे	लिलेजाते	लिलेजिरे
आ०	लेजिषीष्ट	लेजिषीयास्ताम्	लेजिषीरन्
श्व०	लेजिता	लेजितारौ	लेजितारः
भ०	लेजिष्यते	लेजिष्येते	लेजिष्यन्ते
क्रि०	अलेजिष्यत	अलेजिष्येताम्	अलेजिष्यन्त

६६१. भ्राजि (भ्राज्) दीप्तौ।

व०	भ्राजते	भ्राजेते	भ्राजन्ते
स०	भ्राजेत	भ्राजेयाताम्	भ्राजेरन्
प०	भ्राजताम्	भ्राजेताम्	भ्राजन्ताम्
ह्य०	अभ्राजत	अभ्राजेताम्	अभ्राजन्त
अ०	अभ्राजिष्ट	अभ्राजिषाताम्	अभ्राजिषत
प०	बभ्राजे	बभ्राजाते	बभ्राजिरे
आ०	भ्राजिषीष्ट	भ्राजिषीयास्ताम्	भ्राजिषीरन्
श्व०	भ्राजिता	भ्राजितारौ	भ्राजितारः
भ०	भ्राजिष्यते	भ्राजिष्येते	भ्राजिष्यन्ते
क्रि०	अभ्राजिष्यत	अभ्राजिष्येताम्	अभ्राजिष्यन्त

'जृभ्रम..' इत्यत्र राजिसहचरितस्यैव भ्राजेर्ग्रहणादस्य एत्वद्वित्वाभावविकल्पो न।

६६२. इजुङ् (इञ्ज्) गतौ।

व०	इञ्जते	इञ्जेते	इञ्जन्ते
	इञ्जसे	इञ्जेथे	इञ्जध्वे
	इञ्जे	इञ्जावहे	इञ्जामहे
स०	इञ्जेत	इञ्जेयाताम्	इञ्जेरन्
	इञ्जेथाः	इञ्जेयाथाम्	इञ्जेध्वम्
	इञ्जेय	इञ्जेवहि	इञ्जेमहि
प०	इञ्जताम्	इञ्जेताम्	इञ्जन्ताम्
	इञ्जस्व	इञ्जेथाम	इञ्जध्वम्
	इञ्जै	इञ्जावहै	इञ्जामहै
ह्य०	ऐञ्जत	ऐञ्जेताम्	ऐञ्जन्त
	ऐञ्जथाः	ऐञ्जथाम्	ऐञ्जध्वम्
	ऐञ्जे	ऐञ्जावहि	ऐञ्जामहि
अ०	ऐञ्जिष्ट	ऐञ्जिषाताम्	ऐञ्जिषत
	ऐञ्जिष्ठाः	ऐञ्जिषाथाम्	ऐञ्जिड्ढ्वम्/ऐञ्जिध्वम्
	ऐञ्जिषि	ऐञ्जिष्वहि	ऐञ्जिष्महि
प०	इञ्जाञ्चक्रे	इञ्जाञ्चक्राते	इञ्जाञ्चक्रिरे
	इञ्जाञ्चकृषे	इञ्जाञ्चक्राथे	इञ्जाञ्चकृढ्वे
	इञ्जाञ्चक्रे	इञ्जाञ्चकृवहे	इञ्जाञ्चकृमहे
	इञ्जाम्बभूव/इञ्जामास		
आ०	इञ्जिषीष्ट	इञ्जिषीयास्ताम्	इञ्जिषीरन्
	इञ्जिषीष्ठाः	इञ्जिषीयास्थाम्	इञ्जिषीध्वम्
	इञ्जिषीय	इञ्जिषीवहि	इञ्जिषीमहि
श्व०	इञ्जिता	इञ्जितारौ	इञ्जितारः
	इञ्जितासे	इञ्जितासाथे	इञ्जिताध्वे
	इञ्जिताहे	इञ्जितास्वहे	इञ्जितास्मिहे
भ०	इञ्जिष्यते	इञ्जिष्येते	इञ्जिष्यन्ते
	इञ्जिष्यसे	इञ्जिष्येथे	इञ्जिष्यध्वे
	इञ्जिष्ये	इञ्जिष्यावहे	इञ्जिष्यामहे
क्रि०	ऐञ्जिष्यत	ऐञ्जिष्येताम्	ऐञ्जिष्यन्त
	ऐञ्जिष्यथाः	ऐञ्जिष्येथाम्	ऐञ्जिष्यध्वम्
	ऐञ्जिष्ये	ऐञ्जिष्यावहि	ऐञ्जिष्यामहि

६६३. ईजि (ईज्) कुत्सने च चकाराद्गतौ।

व०	ईजते	ईजेते	ईजन्ते
स०	ईजेत	ईजेयाताम्	ईजेरन्
प०	ईजताम्	ईजेताम्	ईजन्ताम्
ह्य०	ऐजत	ऐजेताम्	ऐजन्त
अ०	ऐजिष्ट	ऐजिषाताम्	ऐजिषत
प०	ईजाञ्चक्रे	ईजाञ्चक्राते	ईजाञ्चक्रिरे
	ईजाम्बभूव/ईजामास		
आ०	ईजिषीष्ट	ईजिषीयास्ताम्	ईजिषीरन्
श्व०	ईजिता	ईजितारौ	ईजितारः
भ०	ईजिष्यते	ईजिष्येते	ईजिष्यन्ते
क्रि०	ऐजिष्यत	ऐजिष्येताम्	ऐजिष्यन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६६४. ऋजि (ऋज्) गतिस्थानार्जनोर्जनेषु। ऊर्जनं प्राणनम्।

व०	अर्जते	अर्जेते	अर्जन्ते
स०	अर्जेत	अर्जेयाताम्	अर्जेरन्
प०	अर्जताम्	अर्जेताम्	अर्जन्ताम्
ह्य०	आर्जत	आर्जेताम्	आर्जन्त
अ०	आर्जिष्ट	आर्जिषाताम्	आर्जिषत
प०	आनृजे	आनृजाते	आनृजिरे
आ०	अर्जिषीष्ट	अर्जिषीयास्ताम्	अर्जिषीरन्
श्व०	अर्जिता	अर्जितारौ	अर्जितार:
भ०	अर्जिष्यते	अर्जिष्येते	अर्जिष्यन्ते
क्रि०	आर्जिष्यत	आर्जिष्येताम्	आर्जिष्यन्त

६६५. ऋञ्जुङ् (ऋञ्ज्) भर्जने।

भर्जनं पाकप्रकार:।

व०	ऋञ्जते	ऋञ्जेते	ऋञ्जन्ते
स०	ऋञ्जेत	ऋञ्जेयाताम्	ऋञ्जेरन्
प०	ऋञ्जताम्	ऋञ्जेताम्	ऋञ्जन्ताम्
ह्य०	आर्ञ्जत	आर्ञ्जेताम्	आर्ञ्जन्त
अ०	आर्ञ्जिष्ट	आर्ञ्जिषाताम्	आर्ञ्जिषत
प०	आनृञ्जे	आनृञ्जाते	आनृञ्जिरे
आ०	ऋञ्जिषीष्ट	ऋञ्जिषीयास्ताम्	ऋञ्जिषीरन्
श्व०	ऋञ्जिता	ऋञ्जितारौ	ऋञ्जितार:
भ०	ऋञ्जिष्यते	ऋञ्जिष्येते	ऋञ्जिष्यन्ते
क्रि०	आर्ञ्जिष्यत	आर्ञ्जिष्येताम्	आर्ञ्जिष्यन्त

६६६. भृजैङ् (भृज्) भर्जने।

भर्जनं पाकप्रकार:।

व०	भर्जते	भर्जेते	भर्जन्ते
स०	भर्जेत	लर्जेयाताम्	भर्जेरन्
प०	भर्जताम्	भर्जेताम्	भर्जन्ताम्
ह्य०	अभर्जत	अभर्जेताम्	अभर्जन्त
अ०	अभर्जिष्ट	अभर्जिषाताम्	अभर्जिषत
प०	बभृजे	बभृजाते	बभृजिरे
आ०	भर्जिषीष्ट	भर्जिषीयास्ताम्	भर्जिषीरन्
श्व०	भर्जिता	भर्जितारौ	भर्जितार:
भ०	भर्जिष्यते	भर्जिष्येते	भर्जिष्यन्ते
क्रि०	अभर्जिष्यत	अभर्जिष्येताम्	अभर्जिष्यन्त

६६७. तिक्षि (तिक्ष्-तितिक्ष्) क्षमानिशानयो:। निशानं तीक्ष्णकरणम्। तत्र क्षान्तौ।

व०	तितिक्षते	तितिक्षेते	तितिक्षन्ते
	तितिक्षसे	तितिक्षेथे	तितिक्षध्वे
	तितिक्षे	तितिक्षावहे	तितिक्षामहे
स०	तितिक्षेत	तितिक्षेयाताम्	तितिक्षेरन्
	तितिक्षेथा:	तितिक्षेयाथाम्	तितिक्षेध्वम्
	तितिक्षेय	तितिक्षेवहि	तितिक्षेमहि
प०	तितिक्षताम्	तितिक्षेताम्	तितिक्षन्ताम्
	तितिक्षस्व	तितिक्षेथाम	तितिक्षध्वम्
	तितिक्षै	तितिक्षावहै	तितिक्षामहै
ह्य०	अतितिक्षत	अतितिक्षेताम्	अतितिक्षन्त
	अतितिक्षथा:	अतितिक्षथाम्	अतितिक्षध्वम्
	अतितिक्षे	अतितिक्षावहि	अतितिक्षामहि
अ०	अतितिक्षिष्ट	अतितिक्षिषाताम्	अतितिक्षिषत
	अतितिक्षिष्ठा:	अतितिक्षिषाथाम्	अतितिक्षिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अतितिक्षिषि	अतितिक्षिष्वहि	अतितिक्षिष्महि
प०	तितिक्षाञ्चक्रे	तितिक्षाञ्चक्राते	तितिक्षाञ्चक्रिरे
	तितिक्षाञ्चकृषे	तितिक्षाञ्चक्राथे	तितिक्षाञ्चकृढ्वे
	तितिक्षाञ्चक्रे	तितिक्षाञ्चकृवहे	तितिक्षाञ्चकृमहे
	तितिक्षाम्बभूव/तितिक्षामास		
आ०	तितिक्षिषीष्ट	तितिक्षिषीयास्ताम्	तितिक्षिषीरन्
	तितिक्षिषीष्ठा:	तितिक्षिषीयास्थाम्	तितिक्षिषीध्वम्
	तितिक्षिषीय	तितिक्षिषीवहि	तितिक्षिषीमहि
श्व०	तितिक्षिता	तितिक्षितारौ	तितिक्षितार:
	तितिक्षितासे	तितिक्षितासाथे	तितिक्षिताध्वे
	तितिक्षिताहे	तितिक्षितास्वहे	तितिक्षितास्महे
भ०	तितिक्षिष्यते	तितिक्षिष्येते	तितिक्षिष्यन्ते
	तितिक्षिष्यसे	तितिक्षिष्येथे	तितिक्षिष्यध्वे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	तितिक्षिष्ये	तितिक्षिष्यावहे	तितिक्षिष्यामहे
क्रि०	अतितिक्षिष्यत	अतितिक्षिष्येताम्	अतितिक्षिष्यन्त
	अतितिक्षिष्यथाः	अतितिक्षिष्येथाम्	अतितिक्षिष्यध्वम्
	अतितिक्षिष्ये	अतितिक्षिष्यावहि	अतितिक्षिष्यामहि

६६७-१. तिजि (तिज्) निशाने तु।

व०	तेजते	तेजेते	तेजन्ते
	तेजसे	तेजेथे	तेजध्वे
	तेजे	तेजावहे	तेजामहे
स०	तेजेत	तेजेयाताम्	तेजेरन्
	तेजेथाः	तेजेयाथाम्	तेजेध्वम्
	तेजेय	तेजेवहि	तेजेमहि
प०	तेजताम्	तेजेताम्	तेजन्ताम्
	तेजस्व	तेजेथाम	तेजध्वम्
	तेजै	तेजावहै	तेजामहै
ह्य०	अतेजत	अतेजेताम्	अतेजन्त
	अतेजथाः	अतेजथाम्	अतेजध्वम्
	अतेजे	अतेजावहि	अतेजामहि
अ०	अतेजिष्ट	अतेजिषाताम्	अतेजिषत
	अतेजिष्ठाः	अतेजिषाथाम्	अतेजिड्ढ्वम ध्वम्
	अतेजिषि	अतेजिष्वहि	अतेजिष्महि
प०	तितिजे	तितिजाते	तितिजिरे
	तितिजिषे	तितिजाथे	तितिजिध्वे
	तितिजे	तितिजिवहे	तितिजिमहे
आ०	तेजिषीष्ट	तेजिषीयास्ताम्	तेजिषीरन्
	तेजिषीष्ठाः	तेजिषीयास्थाम्	तेजिषीध्वम्
	तेजिषीय	तेजिषीवहि	तेजिषीमहि
श्व०	तेजिता	तेजितारौ	तेजितारः
	तेजितासे	तेजितासाथे	तेजिताध्वे
	तेजिताहे	तेजितास्वहे	तेजितास्महे
त०	तेजिष्यते	तेजिष्येते	तेजिष्यन्ते
	तेजिष्यसे	तेजिष्येथे	तेजिष्यध्वे
	तेजिष्ये	तेजिष्यावहे	तेजिष्यामहे
क्रि०	अतेजिष्यत	अतेजिष्येताम्	अतेजिष्यन्त
	अतेजिष्यथाः	अतेजिष्येथाम्	अतेजिष्यध्वम्
	अतेजिष्ये	अतेजिष्यावहि	अतेजिष्यामहि

अथ टान्ताः सप्त सेटश्च।

६६८. घट्टि (घट्ट) चलने।

व०	घट्टते	घट्टेते	घट्टन्ते
	घट्टसे	घट्टेथे	घट्टध्वे
	घट्टे	घट्टावहे	घट्टामहे
स०	घट्टेत	घट्टेयाताम्	घट्टेरन्
	घट्टेथाः	घट्टेयाथाम्	घट्टेध्वम्
	घट्टेय	घट्टेवहि	घट्टेमहि
प०	घट्टताम्	घट्टेताम्	घट्टन्ताम्
	घट्टस्व	घट्टेथाम्	घट्टध्वम्
	घट्टै	घट्टावहै	घट्टामहै
ह्य०	अघट्टत	अघट्टेताम्	अघट्टन्त
	अघट्टथाः	अघट्टथाम्	अघट्टध्वम्
	अघट्टे	अघट्टावहि	अघट्टामहि
अ०	अघट्टिष्ट	अघट्टिषाताम्	अघट्टिषत
	अघट्टिष्ठाः	अघट्टिषाथाम्	अघट्टिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अघट्टिषि	अघट्टिष्वहि	अघट्टिष्महि
प०	जघट्टे	जघट्टाते	जघट्टिरे
	जघट्टिषे	जघट्टाथे	जघट्टिध्वे
	जघट्टे	जघट्टिवहे	जघट्टिमहे
आ०	घट्टिषीष्ट	घट्टिषीयास्ताम्	घट्टिषीरन्
	घट्टिषीष्ठाः	घट्टिषीयास्थाम्	घट्टिषीध्वम्
	घट्टिषीय	घट्टिषीवहि	घट्टिषीमहि
श्व०	घट्टिता	घट्टितारौ	घट्टितारः
	घट्टितासे	घट्टितासाथे	घट्टिताध्वे
	घट्टिताहे	घट्टितास्वहे	घट्टितास्महे
भ०	घट्टिष्यते	घट्टिष्येते	घट्टिष्यन्ते
	घट्टिष्यसे	घट्टिष्येथे	घट्टिष्यध्वे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	घट्टिष्ये	घट्टिष्यावहे	घट्टिष्यामहे
क्रि०	अघट्टिष्यत	अघट्टिष्येताम्	अघट्टिष्यन्त
	अघट्टिष्यथाः	अघट्टिष्येथाम्	अघट्टिष्यध्वम्
	अघट्टिष्ये	अघट्टिष्यावहि	अघट्टिष्यामहि

६६९. स्फुटि (स्फुट्) विकसने।

व०	स्फोटते	स्फोटेते	स्फोटन्ते
स०	स्फोटेत	स्फोटेयाताम्	स्फोटेरन्
प०	स्फोटताम्	स्फोटेताम्	स्फोटन्ताम्
ह्य०	अस्फोटत	अस्फोटेताम्	अस्फोटन्त
अ०	अस्फोटिष्ट	अस्फोटिषाताम्	अस्फोटिषत
प०	पुस्फुटे	पुस्फुटाते	पुस्फुटिरे
आ०	स्फोटिषीष्ट	स्फोटिषीयास्ताम्	स्फोटिषीरन्
श्व०	स्फोटिता	स्फोटितारौ	स्फोटितारः
भ०	स्फोटिष्यते	स्फोटिष्येते	स्फोटिष्यन्ते
क्रि०	अस्फोटिष्यत	अस्फोटिष्येताम्	अस्फोटिष्यन्त

६७०. चेष्टि (चेष्ट्) चेष्टायाम् चेष्टेहा।

व०	चेष्टते	चेष्टेते	चेष्टन्ते
स०	चेष्टेत	चेष्टेयाताम्	चेष्टेरन्
प०	चेष्टताम्	चेष्टेताम्	चेष्टन्ताम्
ह्य०	अचेष्टत	अचेष्टेताम्	अचेष्टन्त
अ०	अचेष्टिष्ट	अचेष्टिषाताम्	अचेष्टिषत
प०	चिचेष्टे	चिचेष्टाते	चिचेष्टिरे
आ०	चेष्टिषीष्ट	चेष्टिषीयास्ताम्	चेष्टिषीरन्
श्व०	चेष्टिता	चेष्टितारौ	चेष्टितारः
भ०	चेष्टिष्यते	चेष्टिष्येते	चेष्टिष्यन्ते
क्रि०	अचेष्टिष्यत	अचेष्टिष्येताम्	अचेष्टिष्यन्त

६७१. गोष्टि (गोष्ट्) सङ्घाते।

व०	गोष्टते	गोष्टेते	गोष्टन्ते
स०	गोष्टेत	गोष्टेयाताम्	गोष्टेरन्
प०	गोष्टताम्	गोष्टेताम्	गोष्टन्ताम्
ह्य०	अगोष्टत	अगोष्टेताम्	अगोष्टन्त
अ०	अगोष्टिष्ट	अगोष्टिषाताम्	अगोष्टिषत
प०	जुगोष्टे	जुगोष्टाते	जुगोष्टिरे
आ०	गोष्टिषीष्ट	गोष्टिषीयास्ताम्	गोष्टिषीरन्
श्व०	गोष्टिता	गोष्टितारौ	गोष्टितारः
भ०	गोष्टिष्यते	गोष्टिष्येते	गोष्टिष्यन्ते
क्रि०	अगोष्टिष्यत	अगोष्टिष्येताम्	अगोष्टिष्यन्त

६७२. लोष्टि (लोष्ट्) संघाते।

व०	लोष्टते	लोष्टेते	लोष्टन्ते
स०	लोष्टेत	लोष्टेयाताम्	लोष्टेरन्
प०	लोष्टताम्	लोष्टेताम्	लोष्टन्ताम्
ह्य०	अलोष्टत	अलोष्टेताम्	अलोष्टन्त
अ०	अलोष्टिष्ट	अलोष्टिषाताम्	अलोष्टिषत
प०	लुलोष्टे	लुलोष्टाते	लुलोष्टिरे
आ०	लोष्टिषीष्ट	लोष्टिषीयास्ताम्	लोष्टिषीरन्
श्व०	लोष्टिता	लोष्टितारौ	लोष्टितारः
भ०	लोष्टिष्यते	लोष्टिष्येते	लोष्टिष्यन्ते
क्रि०	अलोष्टिष्यत	अलोष्टिष्येताम्	अलोष्टिष्यन्त

६७३. वेष्टि (वेष्ट्) वेष्टने।
वेष्टनं ग्रन्थनं लोटनं परिहाणिश्च।

व०	वेष्टते	वेष्टेते	वेष्टन्ते
स०	वेष्टेत	वेष्टेयाताम्	वेष्टेरन्
प०	वेष्टताम्	वेष्टेताम्	वेष्टन्ताम्
ह्य०	अवेष्टत	अवेष्टेताम्	अवेष्टन्त
अ०	अवेष्टिष्ट	अवेष्टिषाताम्	अवेष्टिषत
प०	विवेष्टे	विवेष्टाते	विवेष्टिरे
आ०	वेष्टिषीष्ट	वेष्टिषीयास्ताम्	वेष्टिषीरन्
श्व०	वेष्टिता	वेष्टितारौ	वेष्टितारः
भ०	वेष्टिष्यते	वेष्टिष्येते	वेष्टिष्यन्ते
क्रि०	अवेष्टिष्यत	अवेष्टिष्येताम्	अवेष्टिष्यन्त

६७४. अट्टि (अट्ट) हिंसातिक्रमयोः। अतिक्रम उल्लङ्घनम्।

व०	अट्टते	अट्टेते	अट्टन्ते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स०	अट्टेत	अट्टेयाताम्	अट्टेरन्
प०	अट्टताम्	अट्टेताम्	अट्टन्ताम्
ह्य०	आट्टत	आट्टेताम्	आट्टन्त
अ०	आट्टिष्ट	आट्टिषाताम्	आट्टिषत
प०	आनट्टे	आनट्टाते	आनट्टिरे
आ०	अट्टिषीष्ट	अट्टिषीयास्ताम्	अट्टिषीरन्
श्व०	अट्टिता	अट्टितारौ	अट्टितार:
भ०	अट्टिष्यते	अट्टिष्येते	अट्टिष्यन्ते
क्रि०	आट्टिष्यत	आट्टिष्येताम्	आट्टिष्यन्त

६७५. एठि (एठ) विबाधायाम्।

अथ ठान्ता: सप्त सेटश्च।

व०	एठते	एठेते	एठन्ते
	एठसे	एठेथे	एठध्वे
	एठे	एठावहे	एठामहे
स०	एठेत	एठेयाताम्	एठेरन्
	एठेथा:	एठेयाथाम्	एठेध्वम्
	एठेय	एठेवहि	एठेमहि
प०	एठताम्	एठेताम्	एठन्ताम्
	एठस्व	एठेथाम	एठध्वम्
	एठै	एठावहै	एठामहै
ह्य०	ऐठत	ऐठेताम्	ऐठन्त
	ऐठथा:	ऐठथाम	ऐठध्वम्
	ऐठे	ऐठावहि	ऐठामहि
अ०	ऐठिष्ट	ऐठिषाताम्	ऐठिषत
	ऐठिष्ठा:	ऐठिषाथाम्	ऐठिड्ढ्वम्/ध्वम्
	ऐठिषि	ऐठिष्वहि	ऐठिष्महि
प०	एठाञ्चक्रे	एठाञ्चक्राते	एठाञ्चक्रिरे
	एठाञ्चकृषे	एठाञ्चक्राथे	एठाञ्चकृढ्वे
	एठाञ्चक्रे	एठाञ्चकृवहे	एठाञ्चकृमहे
	एठाम्बभूव/एठामास		
आ०	एठिषीष्ट	एठिषीयास्ताम्	एठिषीरन्
	एठिषीष्ठा:	एठिषीयास्थाम्	एठिषीध्वम्
	एठिषीय	एठिषीवहि	एठिषीमहि
श्व०	एठिता	एठितारौ	एठितार:
	एठितासे	एठितासाथे	एठिताध्वे
	एठिताहे	एठितास्वहे	एठितास्मिहे
भ०	एठिष्यते	एठिष्येते	एठिष्यन्ते
	एठिष्यसे	एठिष्येथे	एठिष्यध्वे
	एठिष्ये	एठिष्यावहे	एठिष्यामहे
क्रि०	ऐठिष्यत	ऐठिष्येताम्	ऐठिष्यन्त
	ऐठिष्यथा:	ऐठिष्येथाम्	ऐठिष्यध्वम्
	ऐठिष्ये	ऐठिष्यावहि	ऐठिष्यामहि

६७६. हेठि (हेठ्) विबाधायाम्।

व०	हेठते	हेठेते	हेठन्ते
स०	हेठेत	हेठेयाताम्	हेठेरन्
प०	हेठताम्	हेठेताम्	हेठन्ताम्
ह्य०	अहेठत	अहेठेताम्	अहेठन्त
अ०	अहेठिष्ट	अहेठिषाताम्	अहेठिषत
प०	जिहेठे	जिहेठाते	जिहेठिरे
आ०	हेठिषीष्ट	हेठिषीयास्ताम्	हेठिषीरन्
श्व०	हेठिता	हेठितारौ	हेठितार:
भ०	हेठिष्यते	हेठिष्येते	हेठिष्यन्ते
क्रि०	अहेठिष्यत	अहेठिष्येताम्	अहेठिष्यन्त

६७७. मठुङ् (मण्ठ्) शोके।

शोकोऽत्राध्यानमुत्कण्ठेत्यर्थ:।

व०	मण्ठते	मण्ठेते	मण्ठन्ते
स०	मण्ठेत	मण्ठेयाताम्	मण्ठेरन्
प०	मण्ठताम्	मण्ठेताम्	मण्ठन्ताम्
ह्य०	अमण्ठत	अमण्ठेताम्	अमण्ठन्त
अ०	अमण्ठिष्ट	अमण्ठिषाताम्	अमण्ठिषत
प०	ममण्ठे	ममण्ठाते	ममण्ठिरे
आ०	मण्ठिषीष्ट	मण्ठिषीयास्ताम्	मण्ठिषीरन्
श्व०	मण्ठिता	मण्ठितारौ	मण्ठितार:
भ०	मण्ठिष्यते	मण्ठिष्येते	मण्ठिष्यन्ते
क्रि०	अमण्ठिष्यत	अमण्ठिष्येताम्	अमण्ठिष्यन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६७८. कठुङ् (कण्ठ्) शोके।

शोकोऽत्राध्यानमुत्कण्ठेत्यर्थः।

व०	कण्ठते	कण्ठेते	कण्ठन्ते
स०	कण्ठेत	कण्ठेयाताम्	कण्ठेरन्
प०	कण्ठताम्	कण्ठेताम्	कण्ठन्ताम्
ह्य०	अकण्ठत	अकण्ठेताम्	अकण्ठन्त
अ०	अकण्ठिष्ट	अकण्ठिषाताम्	अकण्ठिषत
प०	चकण्ठे	चकण्ठाते	चकण्ठिरे
आ०	कण्ठिषीष्ट	कण्ठिषीयास्ताम्	कण्ठिषीरन्
श्व०	कण्ठिता	कण्ठितारौ	कण्ठितारः
भ०	कण्ठिष्यते	कण्ठिष्येते	कण्ठिष्यन्ते
क्रि०	अकण्ठिष्यत	अकण्ठिष्येताम्	अकण्ठिष्यन्त

६७९. मुठुङ् (मुण्ठ्) पलायने।

व०	मुण्ठते	मुण्ठेते	मुण्ठन्ते
स०	मुण्ठेत	मुण्ठेयाताम्	मुण्ठेरन्
प०	मुण्ठताम्	मुण्ठेताम्	मुण्ठन्ताम्
ह्य०	अमुण्ठत	अमुण्ठेताम्	अमुण्ठन्त
अ०	अमुण्ठिष्ट	अमुण्ठिषाताम्	अमुण्ठिषत
प०	मुमुण्ठे	मुमुण्ठाते	मुमुण्ठिरे
आ०	मुण्ठिषीष्ट	मुण्ठिषीयास्ताम्	मुण्ठिषीरन्
श्व०	मुण्ठिता	मुण्ठितारौ	मुण्ठितारः
भ०	मुण्ठिष्यते	मुण्ठिष्येते	मुण्ठिष्यन्ते
क्रि०	अमुण्ठिष्यत	अमुण्ठिष्येताम्	अमुण्ठिष्यन्त

६८०. वठुङ् (वण्ठ्) एकचर्यायाम्।

एकस्य असाहयस्य चर्या गतिस्तस्याम्

व०	वण्ठते	वण्ठेते	वण्ठन्ते
स०	वण्ठेत	वण्ठेयाताम्	वण्ठेरन्
प०	वण्ठताम्	वण्ठेताम्	वण्ठन्ताम्
ह्य०	अवण्ठत	अवण्ठेताम्	अवण्ठन्त
अ०	अवण्ठिष्ट	अवण्ठिषाताम्	अवण्ठिषत
प०	ववण्ठे	ववण्ठाते	ववण्ठिरे
आ०	वण्ठिषीष्ट	वण्ठिषीयास्ताम्	वण्ठिषीरन्
श्व०	वण्ठिता	वण्ठितारौ	वण्ठितारः
भ०	वण्ठिष्यते	वण्ठिष्येते	वण्ठिष्यन्ते
क्रि०	अवण्ठिष्यत	अवण्ठिष्येताम्	अवण्ठिष्यन्त

६८१. अठुङ् (अण्ठ्) गतौ।

व०	अण्ठते	अण्ठेते	अण्ठन्ते
स०	अण्ठेत	अण्ठेयाताम्	अण्ठेरन्
प०	अण्ठताम्	अण्ठेताम्	अण्ठन्ताम्
ह्य०	आण्ठत	आण्ठेताम्	आण्ठन्त
अ०	आण्ठिष्ट	आण्ठिषाताम्	आण्ठिषत
प०	आनण्ठे	आनण्ठाते	आनण्ठिरे
आ०	अण्ठिषीष्ट	अण्ठिषीयास्ताम्	अण्ठिषीरन्
श्व०	अण्ठिता	अण्ठितारौ	अण्ठितारः
भ०	अण्ठिष्यते	अण्ठिष्येते	अण्ठिष्यन्ते
क्रि०	आण्ठिष्यत	आण्ठिष्येताम्	आण्ठिष्यन्त

अथ डान्ता स्त्रयोविंशतिः सेटश्च।

६८२. पडुङ् (पण्ड्) गतौ।

व०	पण्डते	पण्डेते	पण्डन्ते
स०	पण्डेत	पण्डेयाताम्	पण्डेरन्
प०	पण्डताम्	पण्डेताम्	पण्डन्ताम्
ह्य०	अपण्डत	अपण्डेताम्	अपण्डन्त
अ०	अपण्डिष्ट	अपण्डिषाताम्	अपण्डिषत
प०	पपण्डे	पपण्डाते	पपण्डिरे
आ०	पण्डिषीष्ट	पण्डिषीयास्ताम्	पण्डिषीरन्
श्व०	पण्डिता	पण्डितारौ	पण्डितारः
भ०	पण्डिष्यते	पण्डिष्येते	पण्डिष्यन्ते
क्रि०	अपण्डिष्यत	अपण्डिष्येताम्	अपण्डिष्यन्त

६८३. हुडुङ् (हुण्ड्) सङ्घाते।

व०	हुण्डते	हुण्डेते	हुण्डन्ते
स०	हुण्डेत	हुण्डेयाताम्	हुण्डेरन्
प०	हुण्डताम्	हुण्डेताम्	हुण्डन्ताम्
ह्य०	अहुण्डत	अहुण्डेताम्	अहुण्डन्त
अ०	अहुण्डिष्ट	अहुण्डिषाताम्	अहुण्डिषत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	जुहुण्डे	जुहुण्डाते	जुहुण्डिरे
आ०	हुण्डिषीष्ट	हुण्डिषीयास्ताम्	हुण्डिषीरन्
श्व०	हुण्डिता	हुण्डितारौ	हुण्डितारः
भ०	हुण्डिष्यते	हुण्डिष्येते	हुण्डिष्यन्ते
क्रि०	अहुण्डिष्यत	अहुण्डिष्येताम्	अहुण्डिष्यन्त

६८४. पिडुङ् (पिण्ड्) सङ्घाते।

व०	पिण्डते	पिण्डेते	पिण्डन्ते
स०	पिण्डेत	पिण्डेयाताम्	पिण्डेरन्
प०	पिण्डताम्	पिण्डेताम्	पिण्डन्ताम्
ह्य०	अपिण्डत	अपिण्डेताम्	अपिण्डन्त
अ०	अपिण्डिष्ट	अपिण्डिषाताम्	अपिण्डिषत
प०	पिपिण्डे	पिपिण्डाते	पिपिण्डिरे
आ०	पिण्डिषीष्ट	पिण्डिषीयास्ताम्	पिण्डिषीरन्
श्व०	पिण्डिता	पिण्डितारौ	पिण्डितारः
भ०	पिण्डिष्यते	पिण्डिष्येते	पिण्डिष्यन्ते
क्रि०	अपिण्डिष्यत	अपिण्डिष्येताम्	अपिण्डिष्यन्त

६८५. शडुङ् (शण्ड्) रुजायाञ्च।

चकारात्संघाते।

व०	शण्डते	शण्डेते	शण्डन्ते
स०	शण्डेत	शण्डेयाताम्	शण्डेरन्
प०	शण्डताम्	शण्डेताम्	शण्डन्ताम्
ह्य०	अशण्डत	अशण्डेताम्	अशण्डन्त
अ०	अशण्डिष्ट	अशण्डिषाताम्	अशण्डिषत
प०	शशण्डे	शशण्डाते	शशण्डिरे
आ०	शण्डिषीष्ट	शण्डिषीयास्ताम्	शण्डिषीरन्
श्व०	शण्डिता	शण्डितारौ	शण्डितारः
भ०	शण्डिष्यते	शण्डिष्येते	शण्डिष्यन्ते
क्रि०	अशण्डिष्यत	अशण्डिष्येताम्	अशण्डिष्यन्त

६८६. तडुङ् (तण्ड्) ताडने।

व०	तण्डते	तण्डेते	तण्डन्ते
स०	तण्डेत	तण्डेयाताम्	तण्डेरन्
प०	तण्डताम्	तण्डेताम्	तण्डन्ताम्
ह्य०	अतण्डत	अतण्डेताम्	अतण्डन्त
अ०	अतण्डिष्ट	अतण्डिषाताम्	अतण्डिषत
प०	ततण्डे	ततण्डाते	ततण्डिरे
आ०	तण्डिषीष्ट	तण्डिषीयास्ताम्	तण्डिषीरन्
श्व०	तण्डिता	तण्डितारौ	तण्डितारः
भ०	तण्डिष्यते	तण्डिष्येते	तण्डिष्यन्ते
क्रि०	अतण्डिष्यत	अतण्डिष्येताम्	अतण्डिष्यन्त

६८७. कडुङ् (कण्ड्) मदे।

व०	कण्डते	कण्डेते	कण्डन्ते
स०	कण्डेत	कण्डेयाताम्	कण्डेरन्
प०	कण्डताम्	कण्डेताम्	कण्डन्ताम्
ह्य०	अकण्डत	अकण्डेताम्	अकण्डन्त
अ०	अकण्डिष्ट	अकण्डिषाताम्	अकण्डिषत
प०	चकण्डे	चकण्डाते	चकण्डिरे
आ०	कण्डिषीष्ट	कण्डिषीयास्ताम्	कण्डिषीरन्
श्व०	कण्डिता	कण्डितारौ	कण्डितारः
भ०	कण्डिष्यते	कण्डिष्येते	कण्डिष्यन्ते
क्रि०	अकण्डिष्यत	अकण्डिष्येताम्	अकण्डिष्यन्त

६८८. खडुङ् (खण्ड्) मन्थे।

व०	खण्डते	खण्डेते	खण्डन्ते
स०	खण्डेत	खण्डेयाताम्	खण्डेरन्
प०	खण्डताम्	खण्डेताम्	खण्डन्ताम्
ह्य०	अखण्डत	अखण्डेताम्	अखण्डन्त
अ०	अखण्डिष्ट	अखण्डिषाताम्	अखण्डिषत
प०	चखण्डे	चखण्डाते	चखण्डिरे
आ०	खण्डिषीष्ट	खण्डिषीयास्ताम्	खण्डिषीरन्
श्व०	खण्डिता	खण्डितारौ	खण्डितारः
भ०	खण्डिष्यते	खण्डिष्येते	खण्डिष्यन्ते
क्रि०	अखण्डिष्यत	अखण्डिष्येताम्	अखण्डिष्यन्त

६८९. खुडुङ् (खुण्ड्) गतिवैकल्ये।

व०	खुण्डते	खुण्डेते	खुण्डन्ते
स०	खुण्डेत	खुण्डेयाताम्	खुण्डेरन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	खुण्डताम्	खुण्डेताम्	खुण्डन्ताम्
ह्य०	अखुण्डत	अखुण्डेताम्	अखुण्डन्त
अ०	अखुण्डिष्ट	अखुण्डिषाताम्	अखुण्डिषत
प०	चुखुण्डे	चुखुण्डाते	चुखुण्डिरे
आ०	खुण्डिषीष्ट	खुण्डिषीयास्ताम्	खुण्डिषीरन्
श्व०	खुण्डिता	खुण्डितारौ	खुण्डितार:
भ०	खुण्डिष्यते	खुण्डिष्येते	खुण्डिष्यन्ते
क्रि०	अखुण्डिष्यत	अखुण्डिष्येताम्	अखुण्डिष्यन्त

६९०. कुडुङ् (कुण्ड्) गतिवैकल्ये।

व०	कुण्डते	कुण्डेते	कुण्डन्ते
स०	कुण्डेत	कुण्डेयाताम्	कुण्डेरन्
प०	कुण्डताम्	कुण्डेताम्	कुण्डन्ताम्
ह्य०	अकुण्डत	अकुण्डेताम्	अकुण्डन्त
अ०	अकुण्डिष्ट	अकुण्डिषाताम्	अकुण्डिषत
प०	चुकुण्डे	चुकुण्डाते	चुकुण्डिरे
आ०	कुण्डिषीष्ट	कुण्डिषीयास्ताम्	कुण्डिषीरन्
श्व०	कुण्डिता	कुण्डितारौ	कुण्डितार:
भ०	कुण्डिष्यते	कुण्डिष्येते	कुण्डिष्यन्ते
क्रि०	अकुण्डिष्यत	अकुण्डिष्येताम्	अकुण्डिष्यन्त

६९१. वडुङ् (वण्ड्) वेष्टने।

विभाजनेऽप्यन्ये। विलाजनं विभागीकरणं चर्माभावश्च।

व०	वण्डते	वण्डेते	वण्डन्ते
स०	वण्डेत	वण्डेयाताम्	वण्डेरन्
प०	वण्डताम्	वण्डेताम्	वण्डन्ताम्
ह्य०	अवण्डत	अवण्डेताम्	अवण्डन्त
अ०	अवण्डिष्ट	अवण्डिषाताम्	अवण्डिषत
प०	ववण्डे	ववण्डाते	ववण्डिरे
आ०	वण्डिषीष्ट	वण्डिषीयास्ताम्	वण्डिषीरन्
श्व०	वण्डिता	वण्डितारौ	वण्डितार:
भ०	वण्डिष्यते	वण्डिष्येते	वण्डिष्यन्ते
क्रि०	अवण्डिष्यत	अवण्डिष्येताम्	अवण्डिष्यन्त

६९२. मडुङ् (मण्ड्) वेष्टने।

विभाजनेऽप्यन्ये। विभाजनं विभागीकरणं चर्माभावश्च।

व०	मण्डते	मण्डेते	मण्डन्ते
स०	मण्डेत	मण्डेयाताम्	मण्डेरन्
प०	मण्डताम्	मण्डेताम्	मण्डन्ताम्
ह्य०	अमण्डत	अमण्डेताम्	अमण्डन्त
अ०	अमण्डिष्ट	अमण्डिषाताम्	अमण्डिषत
प०	ममण्डे	ममण्डाते	ममण्डिरे
आ०	मण्डिषीष्ट	मण्डिषीयास्ताम्	मण्डिषीरन्
श्व०	मण्डिता	मण्डितारौ	मण्डितार:
भ०	मण्डिष्यते	मण्डिष्येते	मण्डिष्यन्ते
क्रि०	अमण्डिष्यत	अमण्डिष्येताम्	अमण्डिष्यन्त

६९३. भडुङ् (भण्ड्) परिभाषणे।

व०	भण्डते	भण्डेते	भण्डन्ते
स०	भण्डेत	भण्डेयाताम्	भण्डेरन्
प०	भण्डताम्	भण्डेताम्	भण्डन्ताम्
ह्य०	अभण्डत	अभण्डेताम्	अभण्डन्त
अ०	अभण्डिष्ट	अभण्डिषाताम्	अभण्डिषत
प०	बभण्डे	बभण्डाते	बभण्डिरे
आ०	भण्डिषीष्ट	भण्डिषीयास्ताम्	भण्डिषीरन्
श्व०	भण्डिता	भण्डितारौ	भण्डितार:
भ०	भण्डिष्यते	भण्डिष्येते	भण्डिष्यन्ते
क्रि०	अभण्डिष्यत	अभण्डिष्येताम्	अभण्डिष्यन्त

६९४. मुडुङ् (मुण्ड्) मज्जने।

मज्जनं शोधनं न्यग्भावश्च।

व०	मुण्डते	मुण्डेते	मुण्डन्ते
स०	मुण्डेत	मुण्डेयाताम्	मुण्डेरन्
प०	मुण्डताम्	मुण्डेताम्	मुण्डन्ताम्
ह्य०	अमुण्डत	अमुण्डेताम्	अमुण्डन्त
अ०	अमुण्डिष्ट	अमुण्डिषाताम्	अमुण्डिषत
प०	मुमुण्डे	मुमुण्डाते	मुमुण्डिरे
आ०	मुण्डिषीष्ट	मुण्डिषीयास्ताम्	मुण्डिषीरन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	मुण्डिता	मुण्डितारौ	मुण्डितार:
श्व०	मुण्डिष्यते	मुण्डिष्येते	मुण्डिष्यन्ते
क्रि०	अमुण्डिष्यत	अमुण्डिष्येताम्	अमुण्डिष्यन्त

६९५. तुडुङ् (तुण्ड्) तोडने।

तोडनं हिंसा।

व०	तुण्डते	तुण्डेते	तुण्डन्ते
स०	तुण्डेत	तुण्डेयाताम्	तुण्डेरन्
प०	तुण्डताम्	तुण्डेताम्	तुण्डन्ताम्
ह्य०	अतुण्डत	अतुण्डेताम्	अतुण्डन्त
अ०	अतुण्डिष्ट	अतुण्डिषाताम्	अतुण्डिषत
प०	तुतुण्डे	तुतुण्डाते	तुतुण्डिरे
आ०	तुण्डिषीष्ट	तुण्डिषीयास्ताम्	तुण्डिषीरन्
श्व०	तुण्डिता	तुण्डितारौ	तुण्डितार:
तु०	तुण्डिष्यते	तुण्डिष्येते	तुण्डिष्यन्ते
क्रि०	अतुण्डिष्यत	अतुण्डिष्येताम्	अतुण्डिष्यन्त

६९६. भुडुङ् (भुण्ड्) वरणे।

वरणं स्वीकरणम्।

व०	भुण्डते	भुण्डेते	भुण्डन्ते
स०	भुण्डेत	भुण्डेयाताम्	भुण्डेरन्
प०	भुण्डताम्	भुण्डेताम्	भुण्डन्ताम्
ह्य०	अभुण्डत	अभुण्डेताम्	अभुण्डन्त
अ०	अभुण्डिष्ट	अभुण्डिषाताम्	अभुण्डिषत
प०	बुभुण्डे	बुभुण्डाते	बुभुण्डिरे
आ०	भुण्डिषीष्ट	भुण्डिषीयास्ताम्	भुण्डिषीरन्
श्व०	भुण्डिता	भुण्डितारौ	भुण्डितार:
भु०	भुण्डिष्यते	भुण्डिष्येते	भुण्डिष्यन्ते
क्रि०	अभुण्डिष्यत	अभुण्डिष्येताम्	अभुण्डिष्यन्त

६९७. चडुङ् (चण्ड्) कोपे।

व०	चण्डते	चण्डेते	चण्डन्ते
स०	चण्डेत	चण्डेयाताम्	चण्डेरन्
प०	चण्डताम्	चण्डेताम्	चण्डन्ताम्
ह्य०	अचण्डत	अचण्डेताम्	अचण्डन्त
अ०	अचण्डिष्ट	अचण्डिषाताम्	अचण्डिषत
प०	चचण्डे	चचण्डाते	चचण्डिरे
आ०	चण्डिषीष्ट	चण्डिषीयास्ताम्	चण्डिषीरन्
श्व०	चण्डिता	चण्डितारौ	चण्डितार:
च०	चण्डिष्यते	चण्डिष्येते	चण्डिष्यन्ते
क्रि०	अचण्डिष्यत	अचण्डिष्येताम्	अचण्डिष्यन्त

६९८. द्राडृङ् (द्राड्) विशरणे।

व०	द्राडते	द्राडेते	द्राडन्ते
स०	द्राडेत	द्राडेयाताम्	द्राडेरन्
प०	द्राडताम्	द्राडेताम्	द्राडन्ताम्
ह्य०	अद्राडत	अद्राडेताम्	अद्राडन्त
अ०	अद्राडिष्ट	अद्राडिषाताम्	अद्राडिषत
प०	दद्राडे	दद्राडाते	दद्राडिरे
आ०	द्राडिषीष्ट	द्राडिषीयास्ताम्	द्राडिषीरन्
श्व०	द्राडिता	द्राडितारौ	द्राडितार:
भ०	द्राडिष्यते	द्राडिष्येते	द्राडिष्यन्ते
क्रि०	अद्राडिष्यत	अद्राडिष्येताम्	अद्राडिष्यन्त

६९९. ध्राडृङ् (ध्राड्) विशरणे।

व०	ध्राडते	ध्राडेते	ध्राडन्ते
स०	ध्राडेत	ध्राडेयाताम्	ध्राडेरन्
प०	ध्राडताम्	ध्राडेताम्	ध्राडन्ताम्
ह्य०	अध्राडत	अध्राडेताम्	अध्राडन्त
अ०	अध्राडिष्ट	अध्राडिषाताम्	अध्राडिषत
प०	दध्राडे	दध्राडाते	दध्राडिरे
आ०	ध्राडिषीष्ट	ध्राडिषीयास्ताम्	ध्राडिषीरन्
श्व०	ध्राडिता	ध्राडितारौ	ध्राडितार:
भ०	ध्राडिष्यते	ध्राडिष्येते	ध्राडिष्यन्ते
क्रि०	अध्राडिष्यत	अध्राडिष्येताम्	अध्राडिष्यन्त

७००. शाडृङ् (शाड्) श्लाघायाम्।

व०	शाडते	शाडेते	शाडन्ते
स०	शाडेत	शाडेयाताम्	शाडेरन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	शाडताम्	शाडेताम्	शाडन्ताम्
ह्य०	अशाडत	अशाडेताम्	अशाडन्त
अ०	अशाडिष्ट	अशाडिषाताम्	अशाडिषत
प०	शशाडे	शशाडाते	शशाडिरे
आ०	शाडिषीष्ट	शाडिषीयास्ताम्	शाडिषीरन्
श्व०	शाडिता	शाडितारौ	शाडितारः
भ०	शाडिष्यते	शाडिष्येते	शाडिष्यन्ते
क्रि०	अशाडिष्यत	अशाडिष्येताम्	अशाडिष्यन्त

७०१. वाड़ङ् (वाड्) आप्लाव्ये।

आप्लाव्यमाप्लावनम्।

व०	वाडते	वाडेते	वाडन्ते
स०	वाडेत	वाडेयाताम्	वाडेरन्
प०	वाडताम्	वाडेताम्	वाडन्ताम्
ह्य०	अवाडत	अवाडेताम्	अवाडन्त
अ०	अवाडिष्ट	अवाडिषाताम्	अवाडिषत
प०	ववाडे	ववाडाते	ववाडिरे
आ०	वाडिषीष्ट	वाडिषीयास्ताम्	वाडिषीरन्
श्व०	वाडिता	वाडितारौ	वाडितारः
भ०	वाडिष्यते	वाडिष्येते	वाडिष्यन्ते
क्रि०	अवाडिष्यत	अवाडिष्येताम्	अवाडिष्यन्त

७०२. हेड़ङ् (हेड्) अनादरे।

व०	हेडते	हेडेते	हेडन्ते
स०	हेडेत	हेडेयाताम्	हेडेरन्
प०	हेडताम्	हेडेताम्	हेडन्ताम्
ह्य०	अहेडत	अहेडेताम्	अहेडन्त
अ०	अहेडिष्ट	अहेडिषाताम्	अहेडिषत
प०	जिहेडे	जिहेडाते	जिहेडिरे
आ०	हेडिषीष्ट	हेडिषीयास्ताम्	हेडिषीरन्
श्व०	हेडिता	हेडितारौ	हेडितारः
भ०	हेडिष्यते	हेडिष्येते	हेडिष्यन्ते
क्रि०	अहेडिष्यत	अहेडिष्येताम्	अहेडिष्यन्त

७०३. होड़ङ् (होड्) अनादरे।

व०	होडते	होडेते	होडन्ते
स०	होडेत	होडेयाताम्	होडेरन्
प०	होडताम्	होडेताम्	होडन्ताम्
ह्य०	अहोडत	अहोडेताम्	अहोडन्त
अ०	अहोडिष्ट	अहोडिषाताम्	अहोडिषत
प०	जुहोडे	जुहोडाते	जुहोडिरे
आ०	होडिषीष्ट	होडिषीयास्ताम्	होडिषीरन्
श्व०	होडिता	होडितारौ	होडितारः
भ०	होडिष्यते	होडिष्येते	होडिष्यन्ते
क्रि०	अहोडिष्यत	अहोडिष्येताम्	अहोडिष्यन्त

७०४. हिडुङ् (हिण्ड्) गतौ च।

चकारादनादरे।

व०	हिण्डते	हिण्डेते	हिण्डन्ते
स०	हिण्डेत	हिण्डेयाताम्	हिण्डेरन्
प०	हिण्डताम्	हिण्डेताम्	हिण्डन्ताम्
ह्य०	अहिण्डत	अहिण्डेताम्	अहिण्डन्त
अ०	अहिण्डिष्ट	अहिण्डिषाताम्	अहिण्डिषत
प०	जिहिण्डे	जिहिण्डाते	जिहिण्डिरे
आ०	हिण्डिषीष्ट	हिण्डिषीयास्ताम्	हिण्डिषीरन्
श्व०	हिण्डिता	हिण्डितारौ	हिण्डितारः
हि०	हिण्डिष्यते	हिण्डिष्येते	हिण्डिष्यन्ते
क्रि०	अहिण्डिष्यत	अहिण्डिष्येताम्	अहिण्डिष्यन्त

अथ णान्ताःषट् सेटश्च।

७०५. घिणुङ् (घिण्ण्) ग्रहणे।

व०	घिण्णते	घिण्णेते	घिण्णन्ते
स०	घिण्णेत	घिण्णेयाताम्	घिण्णेरन्
प०	घिण्णताम्	घिण्णेताम्	घिण्णन्ताम्
ह्य०	अघिण्णत	अघिण्णेताम्	अघिण्णन्त
अ०	अघिण्णिष्ट	अघिण्णिषाताम्	अघिण्णिषत
प०	जिघिण्णे	जिघिण्णाते	जिघिण्णिरे
आ०	घिण्णिषीष्ट	घिण्णिषीयास्ताम्	घिण्णिषीरन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	घिण्णिता	घिण्णितारौ	घिण्णितार:
भि०	घिण्णिष्यते	घिण्णिष्येते	घिण्णिष्यन्ते
क्रि०	अघिण्णिष्यत	अघिण्णिष्येताम्	अघिण्णिष्यन्त

७०६. घुणुङ् (घुण्ण्) ग्रहणे।

व०	घुण्णते	घुण्णेते	घुण्णन्ते
स०	घुण्णेत	घुण्णेयाताम्	घुण्णेरन्
प०	घुण्णताम्	घुण्णेताम्	घुण्णन्ताम्
ह्य०	अघुण्णत	अघुण्णेताम्	अघुण्णन्त
अ०	अघुण्णिष्ट	अघुण्णिषाताम्	अघुण्णिषत
प०	जुघुण्णे	जुघुण्णाते	जुघुण्णिरे
आ०	घुण्णिषीष्ट	घुण्णिषीयास्ताम्	घुण्णिषीरन्
श्व०	घुण्णिता	घुण्णितारौ	घुण्णितार:
भ०	घुण्णिष्यते	घुण्णिष्येते	घुण्णिष्यन्ते
क्रि०	अघुण्णिष्यत	अघुण्णिष्येताम्	अघुण्णिष्यन्त

७०७. घृणुङ् (घृण्ण्) ग्रहणे।

व०	घृण्णते	घृण्णेते	घृण्णन्ते
स०	घृण्णेत	घृण्णेयाताम्	घृण्णेरन्
प०	घृण्णताम्	घृण्णेताम्	घृण्णन्ताम्
ह्य०	अघृण्णत	अघृण्णेताम्	अघृण्णन्त
अ०	अघृण्णिष्ट	अघृण्णिषाताम्	अघृण्णिषत
प०	जघृण्णे	जघृण्णाते	जघृण्णिरे
आ०	घृण्णिषीष्ट	घृण्णिषीयास्ताम्	घृण्णिषीरन्
श्व०	घृण्णिता	घृण्णितारौ	घृण्णितार:
भ०	घृण्णिष्यते	घृण्णिष्येते	घृण्णिष्यन्ते
क्रि०	अघृण्णिष्यत	अघृण्णिष्येताम्	अघृण्णिष्यन्त

७०८. घुणि (घुण्) भ्रमणे।

व०	घोणते	घोणेते	घोणन्ते
स०	घोणेत	घोणेयाताम्	घोणेरन्
प०	घोणताम्	घोणेताम्	घोणन्ताम्
ह्य०	अघोणत	अघोणेताम्	अघोणन्त
अ०	अघोणिष्ट	अघोणिषाताम्	अघोणिषत
प०	जुघुणे	जुघुणाते	जुघुणिरे
आ०	घोणिषीष्ट	घोणिषीयास्ताम्	घोणिषीरन्
श्व०	घोणिता	घोणितारौ	घोणितार:
भ०	घोणिष्यते	घोणिष्येते	घोणिष्यन्ते
क्रि०	अघोणिष्यत	अघोणिष्येताम्	अघोणिष्यन्त

७०९. घूर्णि (घूर्ण्) भ्रमणे।

व०	घूर्णते	घूर्णेते	घूर्णन्ते
स०	घूर्णेत	घूर्णेयाताम्	घूर्णेरन्
प०	घूर्णताम्	घूर्णेताम्	घूर्णन्ताम्
ह्य०	अघूर्णत	अघूर्णेताम्	अघूर्णन्त
अ०	अघूर्णिष्ट	अघूर्णिषाताम्	अघूर्णिषत
प०	जुघुर्णे	जुघुर्णाते	जुघुर्णिरे
आ०	घूर्णिषीष्ट	घूर्णिषीयास्ताम्	घूर्णिषीरन्
श्व०	घूर्णिता	घूर्णितारौ	घूर्णितार:
भ०	घूर्णिष्यते	घूर्णिष्येते	घूर्णिष्यन्ते
क्रि०	अघूर्णिष्यत	अघूर्णिष्येताम्	अघूर्णिष्यन्त

७१०. पणि (पण्–पणाय्) व्यवहारस्तुत्यो:।

व०	पणायति	पणायत:	पणायन्ति
	पणायसि	पणायथ:	पणायथ
	पणायामि	पणायाव:	पणायाम:
स०	पणायेत्	पणायेताम्	पणायेयु:
	पणाये:	पणायेतम्	पणायेत
	पणायेयम्	पणायेव	पणायेम
प०	पणायतु/पणायतात्	पणायताम्	पणायन्तु
	पणाय/पणायतात्	पणायतम्	पणायत
	पणायानि	पणायाव	पणायाम
ह्य०	अपणायत्	अपणायताम्	अपणायन्
	अपणाय:	अपणायतम्	अपणायत
	अपणायम्	अपणायाव	अपणायाम
अ०	अपणायीत्	अपणायिष्टाम्	अपणायिषु:
	अपणायी:	अपणायिष्यम्	अपणायिष्ट
	अपणायिषम्	अपणायिष्व	अपणायिष्म्
अ०	अपणायिष्ट	अपणायिषाताम्	अपणायिषत
	अपणायिष्ठा:	अपणायिषाथाम्	अपणायिढ्वम्/ध्वम्
	अपणायिषि	अपणायिष्वहि	अपणायिष्महि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	पणायाञ्चकार	पणायाञ्चक्रतुः	पणायाञ्चक्रुः
	पणायाञ्चकथ	पणायाञ्चक्रथुः	पणायाञ्चक्र
	पणायाञ्चकार/चकर	पणायाञ्चकृव	पणायाञ्चकृम
	पणायाम्बभूव/पणायामास।		
प०	पेणे	पेणाते	पेणिरे
	पेणिषे	पेणाथे	पेणिध्वे
	पेणे	पेणिवहे	पेणिमहे
आ०	पणाय्यात्	पणाय्यास्ताम्	पणाय्यासुः
	पणाय्याः	पणाय्यास्तम्	पणाय्यास्त
	पणाय्यासम्	पणाय्यास्व	पणाय्यास्म
आ०	पणिषीष्ट	पणिषीयास्ताम्	पणिषीरन्
	पणिषीष्ठाः	पणिषीयास्थाम्	पणिषीध्वम्
	पणिषीय	पणिषीवहि	पणिषीमहि
श्व०	पणायिता	पणायितारौ	पणायितारः
	पणायितासि	पणायितास्थः	पणायितास्थ
	पणायितास्मि	पणायितास्वः	पणायितास्मः
श्व०	पणिता	पणितारौ	पणितारः
	पणितासे	पणितासाथे	पणिताध्वे
	पणिताहे	पणितास्वहे	पणितास्महे
भ०	पणायिष्यति	पणायिष्यतः	पणायिष्यन्ति
	पणायिष्यसि	पणायिष्यथः	पणायिष्यथ
	पणायिष्यामि	पणायिष्यावः	पणायिष्यामः
भ०	पणिष्यते	पणिष्येते	पणिष्यन्ते
	पणिष्यसे	पणिष्येथे	पणिष्यध्वे
	पणिष्ये	पणिष्यावहे	पणिष्यामहे
क्रि०	अपणायिष्यत्	अपणायिष्यताम्	अपणायिष्यन्
	अपणायिष्यः	अपणायिष्यतम्	अपणायिष्यत
	अपणायिष्यम्	अपणायिष्याव	अपणायिष्याम
क्रि०	अपणिष्यत	अपणिष्येताम्	अपणिष्यन्त
	अपणिष्यथाः	अपणिष्येथाम्	अपणिष्यध्वम्
	अपणिष्ये	अपणिष्यावहि	अपणिष्यामहि

स्वार्थिकप्रत्ययान्तस्य प्रकृतिवद्ग्रहणात्पणिरेवायम्। अनुबन्धस्याशवि केवले चारिताथ्योदायप्रत्यान्तात्रात्मनेपदम् किन्तु आयान्तस्य इङित्वाभावात् ''शेषात्-'' इति परस्मैपदम्। ये तु स्तुत्यर्थादेव पणेरायमिच्छन्ति तन्मते व्यवहारार्थाच्छव्यप्या भावे शतस्य पणते इत्यादि॥

अथ तान्तास्त्रयः सेटश्च।

७११. यतैङ् (यत्) प्रयत्ने।

व०	यतते	यतेते	यतन्ते
	यतसे	यतेथे	यतध्वे
	यते	यतावहे	यतामहे
स०	यतेत	यतेयाताम्	यतेरन्
	यतेथाः	यतेयाथाम्	यतेध्वम्
	यतेय	यतेवहि	यतेमहि
प०	यतताम्	यतेताम्	यतन्ताम्
	यतस्व	यतेथाम्	यतध्वम्
	यतै	यतावहै	यतामहै
ह्य०	अयतत	अयतेताम्	अयतन्त
	अयतथाः	अयतेथाम्	अयतध्वम्
	अयते	अयतावहि	अयतामहि
अ०	अयतिष्ट	अयतिषाताम्	अयतिषत
	अयतिष्ठाः	अयतिषाथाम्	अयतिड्ढ्वम्ध्वम्
	अयतिषि	अयतिष्वहि	अयतिष्महि
प०	येते	येताते	येतिरे
	येतिषे	येताथे	येतिध्वे
	येते	येतिवहे	येतिमहे
आ०	यतिषीष्ट	यतिषीयास्ताम्	यतिषीरन्
	यतिषीष्ठाः	यतिषीयास्थाम्	यतिषीध्वम्
	यतिषीय	यतिषीवहि	यतिषीमहि
श्व०	यतिता	यतितारौ	यतितारः
	यतितासे	यतितासाथे	यतिताध्वे
	यतिताहे	यतितास्वहे	यतितास्महे
भ०	यतिष्यते	यतिष्येते	यतिष्यन्ते
	यतिष्यसे	यतिष्येथे	यतिष्यध्वे
	यतिष्ये	यतिष्यावहे	यतिष्यामहे
क्रि०	अयतिष्यत	अयतिष्येताम्	अयतिष्यन्त
	अयतिष्यथाः	अयतिष्येथाम्	अयतिष्यध्वम्
	अयतिष्ये	अयतिष्यावहि	अयतिष्यामहि

७१२. युतृङ् (युत्) भासने।

व०	योतते	योतेते	योतन्ते
स०	योतेत	योतेयाताम्	योतेरन्
प०	योतताम्	योतेताम्	योतन्ताम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	अयोतत	अयोतेताम्	अयोतन्त
अ०	अयोतिष्ट	अयोतिषाताम्	अयोतिषत
प०	युयुते	युयुताते	युयुतिरे
आ०	योतिषीष्ट	योतिषीयास्ताम्	योतिषीरन्
श्व०	योतिता	योतितारौ	योतितार:
भ०	योतिष्यते	योतिष्येते	योतिष्यन्ते
क्रि०	अयोतिष्यत	अयोतिष्येताम्	अयोतिष्यन्त

७१३. जुतृङ् (जुत्) भासने।

व०	जोतते	जोतेते	जोतन्ते
स०	जोतेत	जोतेयाताम्	जोतेरन्
प०	जोतताम्	जोतेताम्	जोतन्ताम्
ह्य०	अजोतत	अजोतेताम्	अजोतन्त
अ०	अजोतिष्ट	अजोतिषाताम्	अजोतिषत
प०	जुजुते	जुजुताते	जुजुतिरे
आ०	जोतिषीष्ट	जोतिषीयास्ताम्	जोतिषीरन्
श्व०	जोतिता	जोतितारौ	जोतितार:
भ०	जोतिष्यते	जोतिष्येते	जोतिष्यन्ते
क्रि०	अजोतिष्यत	अजोतिष्येताम्	अजोतिष्यन्त

अथ थान्ता: षट् सेटश्च।

७१४. विथृङ् (विथ्) याचने।

व०	वेथते	वेथेते	वेथन्ते
स०	वेथेत	वेथेयाताम्	वेथेरन्
प०	वेथताम्	वेथेताम्	वेथन्ताम्
ह्य०	अवेथत	अवेथेताम्	अवेथन्त
अ०	अवेथिष्ट	अवेथिषाताम्	अवेथिषत
प०	विविथे	विविथाते	विविथिरे
आ०	वेथिषीष्ट	वेथिषीयास्ताम्	वेथिषीरन्
श्व०	वेथिता	वेथितारौ	वेथितार:
भ०	वेथिष्यते	वेथिष्येते	वेथिष्यन्ते
क्रि०	अवेथिष्यत	अवेथिष्येताम्	अवेथिष्यन्त

७१५. वेथृङ् (वेथ्) याचने।

व०	वेथते	वेथेते	वेथन्ते
स०	वेथेत	वेथेयाताम्	वेथेरन्
प०	वेथताम्	वेथेताम्	वेथन्ताम्
ह्य०	अवेथत	अवेथेताम्	अवेथन्त
अ०	अवेथिष्ट	अवेथिषाताम्	अवेथिषत
प०	विवेथे	विवेथाते	विवेथिरे
आ०	वेथिषीष्ट	वेथिषीयास्ताम्	वेथिषीरन्
श्व०	वेथिता	वेथितारौ	वेथितार:
भ०	वेथिष्यते	वेथिष्येते	वेथिष्यन्ते
क्रि०	अवेथिष्यत	अवेथिष्येताम्	अवेथिष्यन्त

७१६. नाथङ् उपतापैश्वर्याशी:षु च। चकारात् याचने।

उपताप उपघात:। अत्र याञ्चोपतापौ क्रियार्थत्वादर्थौ। ऐश्वर्याशिषौ तु धर्मत्वाद् द्यौत्ये। यद्वा गण्डति श्वेतते प्रासाद:, घण्टा ध्वनति संयुज्यते अस्ति समवैतीति द्रव्यगुणसंयोगसत्तासमवायानामिव सिद्धानामप्याख्यात-वाच्यत्वेन साध्यतया प्रतीतेरनयोरर्थवत्वमप्यस्तु। यदाह-पूर्वापरीभूतं भावमाख्यातेनाचष्टे ''आशिषि नाथ:'' ३.३.३६ इत्याशिष्येवात्मनेपदनियमाद् अर्थान्तरे परस्मैपदमेव। कथं तर्हि-

एतन्मन्दविपक्वतिन्दुकफलश्यामोदरापाण्डुर-
प्रान्तं हन्त पुलिन्दसुन्दरकरस्पर्शक्षमं लक्ष्यते।
तत्पल्लीपतिपुत्रीकुञ्जरकुलं जीवाभयाभ्यर्थना-
दीनं त्वामनुनाथते कुचयुगं पत्राशुकैर्मा पिधा:।।१।।

तत्राशिषि -

व०	नाथते	नाथेते	नाथन्ते
स०	नाथेत	नाथेयाताम्	नाथेरन्
प०	नाथताम्	नाथेताम्	नाथन्ताम्
ह्य०	अनाथत	अनाथेताम्	अनाथन्त
अ०	अनाथिष्ट	अनाथिषाताम्	अनाथिषत
प०	ननाथे	ननाथाते	ननाथिरे
आ०	नाथिषीष्ट	नाथिषीयास्ताम्	नाथिषीरन्
श्व०	नाथिता	नाथितारौ	नाथितार:
भ०	नाथिष्यते	नाथिष्येते	नाथिष्यन्ते
क्रि०	अनाथिष्यत	अनाथिष्येताम्	अनाथिष्यन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७१६. आशिषोऽन्यत्र।

व०	नाथति	नाथतः	नाथन्ति
स०	नाथेत्	नाथेताम्	नाथेयुः
प०	नाथतु/नाथतात्	नाथताम्	नाथन्तु
ह्य०	अनाथत्	अनाथताम्	अनाथन्
अ०	अनाथीत्	अनाथिष्टाम्	अनाथिषुः
प०	ननाथ	ननाथतुः	ननाथुः
आ०	नाथ्यात्	नाथ्यास्ताम्	नाथ्यासुः
श्व०	नाथिता	नाथितारौ	नाथितारः
भ०	नाथिष्यति	नाथिष्यतः	नाथिष्यन्ति
क्रि०	अनाथिष्यत्	अनाथिष्यताम्	अनाथिष्यन्

७१७. श्रथुङ् (श्रन्थ्) शैथिल्ये।

व०	श्रन्थते	श्रन्थेते	श्रन्थन्ते
स०	श्रन्थेत	श्रन्थेयाताम्	श्रन्थेरन्
प०	श्रन्थताम्	श्रन्थेताम्	श्रन्थन्ताम्
ह्य०	अश्रन्थत	अश्रन्थेताम्	अश्रन्थन्त
अ०	अश्रन्थिष्ट	अश्रन्थिषाताम्	अश्रन्थिषत
प०	शश्रन्थे	शश्रन्थाते	शश्रन्थिरे
आ०	श्रन्थिषीष्ट	श्रन्थिषीयास्ताम्	श्रन्थिषीरन्
श्व०	श्रन्थिता	श्रन्थितारौ	श्रन्थितारः
भ०	श्रन्थिष्यते	श्रन्थिष्येते	श्रन्थिष्यन्ते
क्रि०	अश्रन्थिष्यत	अश्रन्थिष्येताम्	अश्रन्थिष्यन्त

७१८. ग्रथुङ् (ग्रन्थ्) कौटिल्ये। कौटिल्यं कुसृतिः बन्धश्च।

व०	ग्रन्थते	ग्रन्थेते	ग्रन्थन्ते
स०	ग्रन्थेत	ग्रन्थेयाताम्	ग्रन्थेरन्
प०	ग्रन्थताम्	ग्रन्थेताम्	ग्रन्थन्ताम्
ह्य०	अग्रन्थत	अग्रन्थेताम्	अग्रन्थन्त
अ०	अग्रन्थिष्ट	अग्रन्थिषाताम्	अग्रन्थिषत
प०	जग्रन्थे	जग्रन्थाते	जग्रन्थिरे
आ०	ग्रन्थिषीष्ट	ग्रन्थिषीयास्ताम्	ग्रन्थिषीरन्
श्व०	ग्रन्थिता	ग्रन्थितारौ	ग्रन्थितारः
भ०	ग्रन्थिष्यते	ग्रन्थिष्येते	ग्रन्थिष्यन्ते
क्रि०	अग्रन्थिष्यत	अग्रन्थिष्येताम्	अग्रन्थिष्यन्त

७१९. कत्थि (कत्थ्) श्लाघायाम्।

श्लाघा गुणारोपः।

व०	कत्थते	कत्थेते	कत्थन्ते
स०	कत्थेत	कत्थेयाताम्	कत्थेरन्
प०	कत्थताम्	कत्थेताम्	कत्थन्ताम्
ह्य०	अकत्थत	अकत्थेताम्	अकत्थन्त
अ०	अकत्थिष्ट	अकत्थिषाताम्	अकत्थिषत
प०	चकत्थे	चकत्थाते	चकत्थिरे
आ०	कत्थिषीष्ट	कत्थिषीयास्ताम्	कत्थिषीरन्
श्व०	कत्थिता	कत्थितारौ	कत्थितारः
भ०	कत्थिष्यते	कत्थिष्येते	कत्थिष्यन्ते
क्रि०	अकत्थिष्यत	अकत्थिष्येताम्	अकत्थिष्यन्त

अथ दान्ता एकविंशतिर्ह्रदिवर्जाः सेटश्च।

७२०. स्विदुङ् (स्विन्द्) श्वैत्ये।

व०	स्विन्दते	स्विन्देते	स्विन्दन्ते
स०	स्विन्देत	स्विन्देयाताम्	स्विन्देरन्
प०	स्विन्दताम्	स्विन्देताम्	स्विन्दन्ताम्
ह्य०	अस्विन्दत	अस्विन्देताम्	अस्विन्दन्त
अ०	अस्विन्दिष्ट	अस्विन्दिषाताम्	अस्विन्दिषत
प०	सिस्विन्दे	सिस्विन्दाते	सिस्विन्दिरे
आ०	स्विन्दिषीष्ट	स्विन्दिषीयास्ताम्	स्विन्दिषीरन्
श्व०	स्विन्दिता	स्विन्दितारौ	स्विन्दितारः
भ०	स्विन्दिष्यते	स्विन्दिष्येते	स्विन्दिष्यन्ते
क्रि०	अस्विन्दिष्यत	अस्विन्दिष्येताम्	अस्विन्दिष्यन्त

७२१. वदुङ् (वन्द्) स्तुत्यभिवादनयोः।

स्तुतिः गुणैः प्रशंसा अभिवादनं पादयोः प्रणिपातः।।

व०	वन्दते	वन्देते	वन्दन्ते
स०	वन्देत	वन्देयाताम्	वन्देरन्
प०	वन्दताम्	वन्देताम्	वन्दन्ताम्
ह्य०	अवन्दत	अवन्देताम्	अवन्दन्त
अ०	अवन्दिष्ट	अवन्दिषाताम्	अवन्दिषत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	ववन्दे	ववन्दाते	ववन्दिरे
आ०	वन्दिषीष्ट	वन्दिषीयास्ताम्	वन्दिषीरन्
श्व०	वन्दिता	वन्दितारौ	वन्दितार:
भ०	वन्दिष्यते	वन्दिष्येते	वन्दिष्यन्ते
क्रि०	अवन्दिष्यत	अवन्दिष्येताम्	अवन्दिष्यन्त

७२२. भदुङ् (भन्द्) सुखकल्याणयो:। सुखं सद्वेद्यकर्मोदयाच्छुभानुभवनम् कल्याणं श्रेय:। प्रीतावप्यन्ये। प्रीतिर्मोहनीयविपाक:।

व०	भन्दते	भन्देते	भन्दन्ते
स०	भन्देत	भन्देयाताम्	भन्देरन्
प०	भन्दताम्	भन्देताम्	भन्दन्ताम्
ह्य०	अभन्दत	अभन्देताम्	अभन्दन्त
अ०	अभन्दिष्ट	अभन्दिषाताम्	अभन्दिषत
प०	बभन्दे	बभन्दाते	बभन्दिरे
आ०	भन्दिषीष्ट	भन्दिषीयास्ताम्	भन्दिषीरन्
श्व०	भन्दिता	भन्दितारौ	भन्दितार:
भ०	भन्दिष्यते	भन्दिष्येते	भन्दिष्यन्ते
क्रि०	अभन्दिष्यत	अभन्दिष्येताम्	अभन्दिष्यन्त

७२३. मदुङ् (मन्द्) स्तुतिमोदमदस्वप्नगतिषु। मोदो हर्ष:। मदो दर्प:। स्वप्नेनालस्यमपि लक्ष्यते।

व०	मन्दते	मन्देते	मन्दन्ते
स०	मन्देत	मन्देयाताम्	मन्देरन्
प०	मन्दताम्	मन्देताम्	मन्दन्ताम्
ह्य०	अमन्दत	अमन्देताम्	अमन्दन्त
अ०	अमन्दिष्ट	अमन्दिषाताम्	अमन्दिषत
प०	ममन्दे	ममन्दाते	ममन्दिरे
आ०	मन्दिषीष्ट	मन्दिषीयास्ताम्	मन्दिषीरन्
श्व०	मन्दिता	मन्दितारौ	मन्दितार:
भ०	मन्दिष्यते	मन्दिष्येते	मन्दिष्यन्ते
क्रि०	अमन्दिष्यत	अमन्दिष्येताम्	अमन्दिष्यन्त

७२४. स्पदुङ् (स्पन्द्) किञ्चिच्चलने।

व०	स्पन्दते	स्पन्देते	स्पन्दन्ते
स०	स्पन्देत	स्पन्देयाताम्	स्पन्देरन्
प०	स्पन्दताम्	स्पन्देताम्	स्पन्दन्ताम्
ह्य०	अस्पन्दत	अस्पन्देताम्	अस्पन्दन्त
अ०	अस्पन्दिष्ट	अस्पन्दिषाताम्	अस्पन्दिषत
प०	पस्पन्दे	पस्पन्दाते	पस्पन्दिरे
आ०	स्पन्दिषीष्ट	स्पन्दिषीयास्ताम्	स्पन्दिषीरन्
श्व०	स्पन्दिता	स्पन्दितारौ	स्पन्दितार:
भ०	स्पन्दिष्यते	स्पन्दिष्येते	स्पन्दिष्यन्ते
क्रि०	अस्पन्दिष्यत	अस्पन्दिष्येताम्	अस्पन्दिष्यन्त

७२५. क्लिदुङ् (क्लिन्द्) परिदेवने।

परिदेवनं शोचनम्।

व०	क्लिन्दते	क्लिन्देते	क्लिन्दन्ते
स०	क्लिन्देत	क्लिन्देयाताम्	क्लिन्देरन्
प०	क्लिन्दताम्	क्लिन्देताम्	क्लिन्दन्ताम्
ह्य०	अक्लिन्दत	अक्लिन्देताम्	अक्लिन्दन्त
अ०	अक्लिन्दिष्ट	अक्लिन्दिषाताम्	अक्लिन्दिषत
प०	चिक्लिन्दे	चिक्लिन्दाते	चिक्लिन्दिरे
आ०	क्लिन्दिषीष्ट	क्लिन्दिषीयास्ताम्	क्लिन्दिषीरन्
श्व०	क्लिन्दिता	क्लिन्दितारौ	क्लिन्दितार:
भ०	क्लिन्दिष्यते	क्लिन्दिष्येते	क्लिन्दिष्यन्ते
क्रि०	अक्लिन्दिष्यत	अक्लिन्दिष्येताम्	अक्लिन्दिष्यन्त

७२६. मुदि (मुद्) हर्षे।

अकर्मकोऽयम्।

व०	मोदते	मोदेते	मोदन्ते
स०	मोदेत	मोदेयाताम्	मोदेरन्
प०	मोदताम्	मोदेताम्	मोदन्ताम्
ह्य०	अमोदत	अमोदेताम्	अमोदन्त
अ०	अमोदिष्ट	अमोदिषाताम्	अमोदिषत
प०	मुमुदे	मुमुदाते	मुमुदिरे
आ०	मोदिषीष्ट	मोदिषीयास्ताम्	मोदिषीरन्
श्व०	मोदिता	मोदितारौ	मोदितार:
भ०	मोदिष्यते	मोदिष्येते	मोदिष्यते
क्रि०	अमोदिष्यत	अमोदिष्येताम्	अमोदिष्यत

७२७. ददि (दद्) दाने।

धारणे इति कौशिक:।

व०	ददते	ददेते	ददन्ते
स०	ददेत	ददेयाताम्	ददेरन्
प०	ददताम्	ददेताम्	ददन्ताम्
ह्य०	अददत	अददेताम्	अददन्त

अ०	अददिष्ट	अददिषाताम्	अददिषत
प०	ददर्द	ददर्दाते	ददर्दिरे
आ०	ददिषीष्ट	ददिषीयास्ताम्	ददिषीरन्
श्व०	ददिता	ददितारौ	ददितार:
भ०	ददिष्यते	ददिष्येते	ददिष्यन्ते
क्रि०	अददिष्यत	अददिष्येताम्	अददिष्यन्त

७२८. हदि (हद्) पुरीषोत्सर्गे।

व०	हदते	हदेते	हदन्ते
स०	हदेत	हदेयाताम्	हदेरन्
प०	हदताम्	हदेताम्	हदन्ताम्
ह्य०	अहदत	अहदेताम्	अहदन्त
अ०	अहदिष्ट	अहदिषाताम्	अहदिषत
प०	जहदे	जहदाते	जहदिरे
आ०	अहत्त	अहत्साताम्	अहत्सत
श्व०	हत्ता	हत्तारौ	हत्तार:
भ०	हत्स्यते	हत्स्येते	हत्स्यते
क्रि०	अहत्स्यत	अहत्स्येताम्	अहत्स्यत

७२९. ष्वदि (स्वद्) आस्वादने।

आस्वादनं जिह्वया लेह:।

व०	स्वदते	स्वदेते	स्वदन्ते
स०	स्वदेत	स्वदेयाताम्	स्वदेरन्
प०	स्वदताम्	स्वदेताम्	स्वदन्ताम्
ह्य०	अस्वदत	अस्वदेताम्	अस्वदन्त
अ०	अस्वदिष्ट	अस्वदिषाताम्	अस्वदिषत
प०	सस्वदे	सस्वदाते	सस्वदिरे
आ०	स्वदिषीष्ट	स्वदिषीयास्ताम्	स्वदिषीरन्
श्व०	स्वदिता	स्वदितारौ	स्वदितार:
भ०	स्वदिष्यते	स्वदिष्येते	स्वदिष्यन्ते
क्रि०	अस्वदिष्यत	अस्वदिष्येताम्	अस्वदिष्यन्त

७३०. स्वर्दि (स्वर्द्) आस्वादने।

आस्वादनं जिह्वया लेह:।

व०	स्वर्दते	स्वर्देते	स्वर्दन्ते
स०	स्वर्देत	स्वर्देयाताम्	स्वर्देरन्
प०	स्वर्दताम्	स्वर्देताम्	स्वर्दन्ताम्
ह्य०	अस्वर्दत	अस्वर्देताम्	अस्वर्दन्त
अ०	अस्वर्दिष्ट	अस्वर्दिषाताम्	अस्वर्दिषत
प०	सस्वर्दे	सस्वर्दाते	सस्वर्दिरे
आ०	स्वर्दिषीष्ट	स्वर्दिषीयास्ताम्	स्वर्दिषीरन्
श्व०	स्वर्दिता	स्वर्दितारौ	स्वर्दितार:
भ०	स्वर्दिष्यते	स्वर्दिष्येते	स्वर्दिष्यन्ते
क्रि०	अस्वर्दिष्यत	अस्वर्दिष्येताम्	अस्वर्दिष्यन्त

७३१. स्वादि (स्वाद्) आस्वादने।

आस्वादनं जिह्वया लेह:।

व०	स्वादते	स्वादेते	स्वादन्ते
स०	स्वादेत	स्वादेयाताम्	स्वादेरन्
प०	स्वादताम्	स्वादेताम्	स्वादन्ताम्
ह्य०	अस्वादत	अस्वादेताम्	अस्वादन्त
अ०	अस्वादिष्ट	अस्वादिषाताम्	अस्वादिषत
प०	सस्वादे	सस्वादाते	सस्वादिरे
आ०	स्वादिषीष्ट	स्वादिषीयास्ताम्	स्वादिषीरन्
श्व०	स्वादिता	स्वादितारौ	स्वादितार:
भ०	स्वादिष्यते	स्वादिष्येते	स्वादिष्यन्ते
क्रि०	अस्वादिष्यत	अस्वादिष्येताम्	अस्वादिष्यन्त

७३२. उर्दि (ऊर्द्) मानक्रीडयोश्च।

मानं मिति:।

व०	ऊर्दते	ऊर्देते	ऊर्दन्ते
स०	ऊर्देत	ऊर्देयाताम्	ऊर्देरन्
प०	ऊर्दताम्	ऊर्देताम्	ऊर्दन्ताम्
ह्य०	और्दत	और्देताम्	और्दन्त
अ०	और्दिष्ट	और्दिषाताम्	और्दिषत
प०	ऊर्दाञ्चक्रे	ऊर्दाञ्चक्राते	ऊर्दाञ्चक्रिरे
	ऊर्दाम्बभूव।	ऊर्दामास।	
आ०	ऊर्दिषीष्ट	ऊर्दिषीयास्ताम्	ऊर्दिषीरन्
श्व०	ऊर्दिता	ऊर्दितारौ	ऊर्दितार:
भ०	ऊर्दिष्यते	ऊर्दिष्येते	ऊर्दिष्यन्ते
क्रि०	और्दिष्यत	और्दिष्येताम्	और्दिष्यन्त

७३३. कुर्दि (कूर्द्) क्रीडायाम्।

व०	कूर्दते	कूर्देते	कूर्दन्ते
स०	कूर्देत	कूर्देयाताम्	कूर्देरन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	कूर्दताम्	कूर्देताम्	कूर्दन्ताम्
ह्य०	अकूर्दत	अकूर्देताम्	अकूर्दन्त
अ०	अकूर्दिष्ट	अकूर्दिषाताम्	अकूर्दिषत
प०	चुकूर्दे	चुकूर्दाते	चुकूर्दिरे
आ०	कूर्दिषीष्ट	कूर्दिषीयास्ताम्	कूर्दिषीरन्
श्व०	कूर्दिता	कूर्दितारौ	कूर्दितारः
भ०	कूर्दिष्यते	कूर्दिष्येते	कूर्दिष्यन्ते
क्रि०	अकूर्दिष्यत	अकूर्दिष्येताम्	अकूर्दिष्यन्त

७३४. गुर्दि (गूर्द्) क्रीडायाम्।

व०	गूर्दते	गूर्देते	गूर्दन्ते
स०	गूर्देत	गूर्देयाताम्	गूर्देरन्
प०	गूर्दताम्	गूर्देताम्	गूर्दन्ताम्
ह्य०	अगूर्दत	अगूर्देताम्	अगूर्दन्त
अ०	अगूर्दिष्ट	अगूर्दिषाताम्	अगूर्दिषत
प०	जुगूर्दे	जुगूर्दाते	जुगूर्दिरे
आ०	गूर्दिषीष्ट	गूर्दिषीयास्ताम्	गूर्दिषीरन्
श्व०	गूर्दिता	गूर्दितारौ	गूर्दितारः
भ०	गूर्दिष्यते	गूर्दिष्येते	गूर्दिष्यन्ते
क्रि०	अगूर्दिष्यत	अगूर्दिष्येताम्	अगूर्दिष्यन्त

७३५. गुदि (गुद्) क्रीडायाम्।

व०	गोदते	गोदेते	गोदन्ते
स०	गोदेत	गोदेयाताम्	गोदेरन्
प०	गोदताम्	गोदेताम्	गोदन्ताम्
ह्य०	अगोदत	अगोदेताम्	अगोदन्त
अ०	अगोदिष्ट	अगोदिषाताम्	अगोदिषत
प०	जुगुदे	जुगुदाते	जुगुदिरे
आ०	गोदिषीष्ट	गोदिषीयास्ताम्	गोदिषीरन्
श्व०	गोदिता	गोदितारौ	गोदितारः
भ०	गोदिष्यते	गोदिष्येते	गोदिष्यन्ते
क्रि०	अगोदिष्यत	अगोदिष्येताम्	अगोदिष्यन्त

७३६. षुदि (सूद्) क्षरणे।

क्षरणं निरसनम्।

व०	सूदते	सूदेते	सूदन्ते
स०	सूदेत	सूदेयाताम्	सूदेरन्
प०	सूदताम्	सूदेताम्	सूदन्ताम्
ह्य०	असूदत	असूदेताम्	असूदन्त
अ०	असूदिष्ट	असूदिषाताम्	असूदिषत
प०	सुषूदे	सुषूदाते	सुषूदिरे
आ०	सूदिषीष्ट	सूदिषीयास्ताम्	सूदिषीरन्
श्व०	सूदिता	सूदितारौ	सूदितारः
भ०	सूदिष्यते	सूदिष्येते	सूदिष्यन्ते
क्रि०	असूदिष्यत	असूदिष्येताम्	असूदिष्यन्त

७३७. ह्रादि (ह्राद्) शब्दे। अव्यक्ते शब्दे इत्यन्ये। अव्यक्तोऽपरिस्फुटवर्णः।

व०	ह्रादते	ह्रादेते	ह्रादन्ते
स०	ह्रादेत	ह्रादेयाताम्	ह्रादेरन्
प०	ह्रादताम्	ह्रादेताम्	ह्रादन्ताम्
ह्य०	अह्रादत	अह्रादेताम्	अह्रादन्त
अ०	अह्रादिष्ट	अह्रादिषाताम्	अह्रादिषत
प०	जह्रादे	जह्रादाते	जह्रादिरे
आ०	ह्रादिषीष्ट	ह्रादिषीयास्ताम्	ह्रादिषीरन्
श्व०	ह्रादिता	ह्रादितारौ	ह्रादितारः
भ०	ह्रादिष्यते	ह्रादिष्येते	ह्रादिष्यन्ते
क्रि०	अह्रादिष्यत	अह्रादिष्येताम्	अह्रादिष्यन्त

७३८. ह्लादैङ् (ह्लाद्) सुखे च।

चकाराच्छब्दे।

व०	ह्लादते	ह्लादेते	ह्लादन्ते
स०	ह्लादेत	ह्लादेयाताम्	ह्लादेरन्
प०	ह्लादताम्	ह्लादेताम्	ह्लादन्ताम्
ह्य०	अह्लादत	अह्लादेताम्	अह्लादन्त
अ०	अह्लादिष्ट	अह्लादिषाताम्	अह्लादिषत
प०	जह्लादे	जह्लादाते	जह्लादिरे
आ०	ह्लादिषीष्ट	ह्लादिषीयास्ताम्	ह्लादिषीरन्
श्व०	ह्लादिता	ह्लादितारौ	ह्लादितारः
भ०	ह्लादिष्यते	ह्लादिष्येते	ह्लादिष्यन्ते
क्रि०	अह्लादिष्यत	अह्लादिष्येताम्	अह्लादिष्यन्त

७३९. पर्दि (पर्द्) कुत्सिते शब्दे।

पायुध्वनौ वर्तते। अन्ये तु निःशब्दमधोवातं पर्दनं मन्वाना अशब्दे इत्याहुः।

व०	पर्दते	पर्देते	पर्दन्ते
स०	पर्देत	पर्देयाताम्	पर्देरन्
प०	पर्दताम्	पर्देताम्	पर्दन्ताम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	अपर्दत	अपर्देताम्	अपर्दन्त
अ०	अपर्दिष्ट	अपर्दिषाताम्	अपर्दिषत
प०	पपर्दे	पपर्दाते	पपर्दिरे
आ०	पर्दिषीष्ट	पर्दिषीयास्ताम्	पर्दिषीरन्
श्व०	पर्दिता	पर्दितारौ	पर्दितारः
भ०	पर्दिष्यते	पर्दिष्येते	पर्दिष्यन्ते
क्रि०	अपर्दिष्यत	अपर्दिष्येताम्	अपर्दिष्यन्त

७४०. स्कुदुङ् (स्कुन्द्) आप्रवणे।

आप्रवणमुत्प्लुत्य गमनमास्कन्दनं वा।

व०	स्कुन्दते	स्कुन्देते	स्कुन्दन्ते
स०	स्कुन्देत	स्कुन्देयाताम्	स्कुन्देरन्
प०	स्कुन्दताम्	स्कुन्देताम्	स्कुन्दन्ताम्
ह्य०	अस्कुन्दत	अस्कुन्देताम्	अस्कुन्दन्त
अ०	अस्कुन्दिष्ट	अस्कुन्दिषाताम्	अस्कुन्दिषत
प०	चुस्कुन्दे	चुस्कुन्दाते	चुस्कुन्दिरे
आ०	स्कुन्दिषीष्ट	स्कुन्दिषीयास्ताम्	स्कुन्दिषीरन्
श्व०	स्कुन्दिता	स्कुन्दितारौ	स्कुन्दितारः
भ०	स्कुन्दिष्यते	स्कुन्दिष्येते	स्कुन्दिष्यन्ते
क्रि०	अस्कुन्दिष्यत	अस्कुन्दिष्येताम्	अस्कुन्दिष्यन्त

अथ धान्ताः सप्त सेटश्च।

७४१. एधि (एध्) वृद्धौ।

व०	एधते	एधेते	एधन्ते
	एधसे	एधेथे	एधध्वे
	एधे	एधावहे	एधामहे
स०	एधेत	एधेयाताम्	एधेरन्
	एधेथाः	एधेयाथाम्	एधेध्वम्
	एधेय	एधेवहि	एधेमहि
प०	एधताम्	एधेताम्	एधन्ताम्
	एधस्व	एधेथाम्	एधध्वम्
	एधै	एधावहै	एधामहै
ह्य०	ऐधत	ऐधेताम्	ऐधन्त
	ऐधथाः	ऐधेथाम्	ऐधध्वम्
	ऐधे	ऐधावहि	ऐधामहि
अ०	ऐधिष्ट	ऐधिषाताम्	ऐधिषत
	ऐधिष्ठाः	ऐधिषाथाम्	ऐधिड्ढ्वम्/ध्वम्
	ऐधिषि	ऐधिष्वहि	ऐधिष्महि
प०	एधाञ्चक्रे	एधाञ्चक्राते	एधाञ्चक्रिरे
	एधाञ्चकृषे	एधाञ्चक्राथे	एधाञ्चकृढ्वे
	एधाञ्चक्रे	एधाञ्चकृवहे	एधाञ्चकृमहे
	एधाम्बभूव।	एधामास।	
आ०	एधिषीष्ट	एधिषीयास्ताम्	एधिषीरन्
	एधिषीष्ठाः	एधिषीयास्थाम्	एधिषीध्वम्
	एधिषीय	एधिषीवहि	एधिषीमहि
श्व०	एधिता	एधितारौ	एधितारः
	एधितासे	एधितासाथे	एधिताध्वे
	एधिताहे	एधितास्वहे	एधितास्महे
भ०	एधिष्यते	एधिष्येते	एधिष्यन्ते
	एधिष्यसे	एधिष्येथे	एधिष्यध्वे
	एधिष्ये	एधिष्यावहे	एधिष्यामहे
क्रि०	ऐधिष्यत	ऐधिष्येताम्	ऐधिष्यन्त
	ऐधिष्यथाः	ऐधिष्येथाम्	ऐधिष्यध्वम्
	ऐधिष्ये	ऐधिष्यावहि	ऐधिष्यामहि

७४२. स्पर्द्धि (स्पर्द्ध्) सङ्घर्षे।

संघर्षः पराभिभवेच्छा। कर्मणो धात्वर्थेनोपसङ्ग्रहादकर्मकः।

व०	स्पर्द्धते	स्पर्द्धेते	स्पर्द्धन्ते
	स्पर्द्धसे	स्पर्द्धेथे	स्पर्द्धध्वे
	स्पर्द्धे	स्पर्द्धावहे	स्पर्द्धामहे
स०	स्पर्द्धेत	स्पर्द्धेयाताम्	स्पर्द्धेरन्
	स्पर्द्धेथाः	स्पर्द्धेयाथाम्	स्पर्द्धेध्वम्
	स्पर्द्धेय	स्पर्द्धेवहि	स्पर्द्धेमहि
प०	स्पर्द्धताम्	स्पर्द्धेताम्	स्पर्द्धन्ताम्
	स्पर्द्धस्व	स्पर्द्धेथाम्	स्पर्द्धध्वम्
	स्पर्द्धै	स्पर्द्धावहै	स्पर्द्धामहै
ह्य०	अस्पर्द्धत	अस्पर्द्धेताम्	अस्पर्द्धन्त
	अस्पर्द्धथाः	अस्पर्द्धेथाम्	अस्पर्द्धध्वम्
	अस्पर्द्धे	अस्पर्द्धावहि	अस्पर्द्धामहि
अ०	अस्पर्द्धिष्ट	अस्पर्द्धिषाताम्	अस्पर्द्धिषत
	अस्पर्द्धिष्ठाः	अस्पर्द्धिषाथाम्	अस्पर्द्धिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अस्पर्द्धिषि	अस्पर्द्धिष्वहि	अस्पर्द्धिष्महि
प०	पस्पर्द्धे	पस्पर्द्धाते	पस्पर्द्धिरे
	पस्पर्द्धिषे	पस्पर्द्धाथे	पस्पर्द्धिध्वे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	पस्पर्द्धे	पस्पर्द्धिवहे	पस्पर्द्धिमहे
आ०	स्पर्द्धिषीष्ट	स्पर्द्धिषीयास्ताम्	स्पर्द्धिषीरन्
	स्पर्द्धिषीष्ठाः	स्पर्द्धिषीयास्थाम्	स्पर्द्धिषीध्वम्
	स्पर्द्धिषीय	स्पर्द्धिषीवहि	स्पर्द्धिषीमहि
श्व०	स्पर्द्धिता	स्पर्द्धितारौ	स्पर्द्धितारः
	स्पर्द्धितासे	स्पर्द्धितासाथे	स्पर्द्धिताध्वे
	स्पर्द्धिताहे	स्पर्द्धितास्वहे	स्पर्द्धितास्महे
भ०	स्पर्द्धिष्यते	स्पर्द्धिष्येते	स्पर्द्धिष्यन्ते
	स्पर्द्धिष्यसे	स्पर्द्धिष्येथे	स्पर्द्धिष्यध्वे
	स्पर्द्धिष्ये	स्पर्द्धिष्यावहे	स्पर्द्धिष्यामहे
क्रि०	अस्पर्द्धिष्यत	अस्पर्द्धिष्येताम्	अस्पर्द्धिष्यन्त
	अस्पर्द्धिष्यथाः	अस्पर्द्धिष्येथाम्	अस्पर्द्धिष्यध्वम्
	अस्पर्द्धिष्ये	अस्पर्द्धिष्यावहि	अस्पर्द्धिष्यामहि

७४३. गाधृङ् (गाध्) प्रतिष्ठालिप्साग्रन्थेषु।

प्रतिष्ठास्पदम्। लब्धुमिच्छा लिप्सा। ग्रन्थं ग्रन्थः।

प्रतिष्ठायामकर्मकोऽयम् लिप्साग्रन्थयोः सकर्मकः।

व०	गाधते	गाधेते	गाधन्ते
स०	गाधेत	गाधेयाताम्	गाधेरन्
प०	गाधताम्	गाधेताम्	गाधन्ताम्
ह्य०	अगाधत	अगाधेताम्	अगाधन्त
अ०	अगाधिष्ट	अगाधिषाताम्	अगाधिषत
प०	जगाधे	जगाधाते	जगाधिरे
आ०	गाधिषीष्ट	गाधिषीयास्ताम्	गाधिषीरन्
श्व०	गाधिता	गाधितारौ	गाधितारः
भ०	गाधिष्यते	गाधिष्येते	गाधिष्यन्ते
क्रि०	अगाधिष्यत	अगाधिष्येताम्	अगाधिष्यन्त

७४४. बाधृङ् (बाध्) रोटने।

रोटनं प्रतिघातः।

व०	बाधते	बाधेते	बाधन्ते
स०	बाधेत	बाधेयाताम्	बाधेरन्
प०	बाधताम्	बाधेताम्	बाधन्ताम्
ह्य०	अबाधत	अबाधेताम्	अबाधन्त
अ०	अबाधिष्ट	अबाधिषाताम्	अबाधिषत
प०	बबाधे	बबाधाते	बबाधिरे
आ०	बाधिषीष्ट	बाधिषीयास्ताम्	बाधिषीरन्
श्व०	बाधिता	बाधितारौ	बाधितारः
भ०	बाधिष्यते	बाधिष्येते	बाधिष्यन्ते
क्रि०	अबाधिष्यत	अबाधिष्येताम्	अबाधिष्यन्त

७४५. दधि (दध्) धारणे।

दाने इति कौशिकः।

व०	दधते	दधेते	दधन्ते
स०	दधेत	दधेयाताम्	दधेरन्
प०	दधताम्	दधेताम्	दधन्ताम्
ह्य०	अदधत	अदधेताम्	अदधन्त
अ०	अदधिष्ट	अदधिषाताम्	अदधिषत
प०	देधे	देधाते	देधिरे
आ०	दधिषीष्ट	दधिषीयास्ताम्	दधिषीरन्
श्व०	दधिता	दधितारौ	दधितारः
भ०	दधिष्यते	दधिष्येते	दधिष्यन्ते
क्रि०	अदधिष्यत	अदधिष्येताम्	अदधिष्यन्त

७४६. बधि (बध्–बीभत्स) बन्धने।

तस्माद्वैरूप्ये।

व०	बीभित्सते	बीभित्सेते	बीभित्सन्ते
स०	बीभित्सेत	बीभित्सेयाताम्	बीभित्सेरन्
प०	बीभित्सताम्	बीभित्सेताम्	बीभित्सन्ताम्
ह्य०	अबीभित्सत	अबीभित्सेताम्	अबीभित्सन्त
अ०	अबीभित्सिष्ट	अबीभित्सिषाताम्	अबीभित्सिषत
प०	बीभित्साञ्चक्रे	बीभित्साञ्चक्राथे	बीभित्साञ्चक्रिरे
आ०	बीभित्सिषीष्ट	बीभित्सिषीयास्ताम्	बीभित्सिषीरन्
श्व०	बीभित्सिता	बीभित्सितारौ	बीभित्सितारः
भ०	बीभित्सिष्यते	बीभित्सिष्येते	बीभित्सिष्यन्ते
क्रि०	अबीभित्सिष्यत	अबीभित्सिष्येताम्	अबीभित्सिष्यन्त

७४६–१. वैरूप्यादन्यत्र।

व०	बधते	बधेते	बधन्ते
स०	बधेत	बधेयाताम्	बधेरन्
प०	बधताम्	बधेताम्	बधन्ताम्
ह्य०	अबधत	अबधेताम्	अबधन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	अबधिष्ट	अबधिषाताम्	अबधिषत
प०	बेधे	बेधाते	बेधिरे
आ०	बधिषीष्ट	बधिषीयास्ताम्	बधिषीरन्
श्व०	बधिता	बधितारौ	बधितारः
भ०	बधिष्यते	बधिष्येते	बधिष्यन्ते
क्रि०	अबधिष्यत	अबधिष्येताम्	अबधिष्यन्त

७४७. नाथृङ् (नाध्) नाथृङ्वत्।

उपतापैश्वर्याशीर्याञ्चास्वर्थेषु नाथृङ्वदयं वर्तते। लाघवार्थमेवं निर्देशः। वर्णक्रमानुसरणात्तु नैकत्राधीतौ।

व०	नाधते	नाधेते	नाधन्ते
स०	नाधेत	नाधेयाताम्	नाधेरन्
प०	नाधताम्	नाधेताम्	नाधन्ताम्
ह्य०	अनाधत	अनाधेताम्	अनाधन्त
अ०	अनाधिष्ट	अनाधिषाताम्	अनाधिषत
प०	ननाधे	ननाधाते	ननाधिरे
आ०	नाधिषीष्ट	नाधिषीयास्ताम्	नाधिषीरन्
श्व०	नाधिता	नाधितारौ	नाधितारः
भ०	नाधिष्यते	नाधिष्येते	नाधिष्यन्ते
क्रि०	अनाधिष्यत	अनाधिष्येताम्	अनाधिष्यन्त

अथ नान्तौ द्वौ सेटौ च।

७४८. पनि (पन्–पनाय्) स्तुतौ।

व०	पनायति	पनायतः	पनायन्ति
स०	पनायेत्	पनायेताम्	पनायेयुः
प०	पनायतु/पनायतात्	पनायताम्	पनायन्तु
ह्य०	अपनायत्	अपनायताम्	अपनायन्
अ०	अपनायीत्	अपनायिष्टाम्	अपनायिषुः
		तथा	
	अपनिष्ट	अपनिषाताम्	अपनिषत
प०	पनायाञ्चकार	पनायाञ्चक्रतुः	पनायाञ्चक्रुः
	पनायाम्बभूव।	पनायामास।	
प०	पेने	पेनाते	पेनिरे
आ०	पनाय्यात्	पनाय्यास्ताम्	पनाय्यासुः
आ०	पनिषीष्ट	पनिषीयास्ताम्	पनिषीरन्
श्व०	पनायिता	पनायितारौ	पनायितारः
श्व०	पनिता	पनितारौ	पनितारः
भ०	पनायिष्यति	पनायिष्यतः	पनायिष्यन्ति
भ०	पनिष्यते	पनिष्येते	पनिष्यन्ते
क्रि०	अपनायिष्यत्	अपनायिष्यताम्	अपनायिष्यन्
क्रि०	अपनिष्यत	अपनिष्येताम्	अपनिष्यन्त

अत्रायान्तस्येङित्त्वाभावात् 'शेषात्परस्मै' इति परस्मैपदम्। ये तु स्वार्थिकप्रत्ययान्तस्य प्रकृतिवद्ग्रहणाद् यथायप्रत्ययान्तस्य प्रकृत्यर्थवाचित्वं तथेदित्त्वमपीति प्रतिपन्नास्तन्मते 'इङितः कर्तरि' इत्यात्मनेपदे 'पनायते' इत्यादि। ए प्रणिधातावपि ज्ञेयम्। केवलं नकारस्थाने णकारो वाच्यः। तन्मते निम्नगतरूपाणि-

पनायते। पनायेत। पनायताम्। अपनायत।
अपनायिष्ट/अपनिष्ट। पनायाञ्चक्रे/पनायाम्बभूव/
पनायामास। पनायिषीष्ट/पनिषीष्ट।
पनायिता/पनिता। पनायिष्यते। पनिष्यते।।
अपनायिष्यत अपनिष्यत।। इत्यादि।।

७४९. मानि (मान्-मीमांस्) विचारे।

व०	मीमांसते	मीमांसेते	मीमांसन्ते
स०	मीमांसेत	मीमांसेयाताम्	मीमांसेरन्
प०	मीमांसताम्	मीमांसेताम्	मीमांसन्ताम्
ह्य०	अमीमांसत	अमीमांसेताम्	अमीमांसन्त
अ०	अमीमांसिष्ट	अमीमांसिषाताम्	अमीमांसिषत
प०	मीमांसाञ्चक्रे	मीमांसाञ्चक्राते	मीमांसाञ्चक्रिरे
	मीमांसाम्बभूव।	मीमांसामास।	
आ०	मीमांसिषीष्ट	मीमांसिषीयास्ताम्	मीमांसिषीरन्
श्व०	मीमांसिता	मीमांसितारौ	मीमांसितारः
भ०	मीमांसिष्यते	मीमांसिष्येते	मीमांसिष्यन्ते
क्रि०	अमीमांसिष्यत	अमीमांसिष्येताम्	अमीमांसिष्यन्त

अथ पान्ताश्चतुर्दश सेटश्च।

७५०. तिपृङ (तिप्) क्षरणे।

व०	तेपते	तेपेते	तेपन्ते
स०	तेपेत	तेपेयाताम्	तेपेरन्
प०	तेपताम्	तेपेताम्	तेपन्ताम्
ह्य०	अतेपत	अतेपेताम्	अतेपन्त

अ०	अतेपिष्ट	अतेपिषाताम्	अतेपिषत
प०	तितिपे	तितिपाते	तितिपिरे
आ०	तेपिषीष्ट	तेपिषीयास्ताम्	तेपिषीरन्
श्व०	तेपिता	तेपितारौ	तेपितार:
भ०	तेपिष्यते	तेपिष्येते	तेपिष्यन्ते
क्रि०	अतेपिष्यत	अतेपिष्येताम्	अतेपिष्यन्त

७५१. ष्टिपृङ् (स्तिप्) क्षरणे।

व०	स्तेपते	स्तेपेते	स्तेपन्ते
स०	स्तेपेत	स्तेपेयाताम्	स्तेपेरन्
प०	स्तेपताम्	स्तेपेताम्	स्तेपन्ताम्
ह्य०	अस्तेपत	अस्तेपेताम्	अस्तेपन्त
अ०	अस्तेपिष्ट	अस्तेपिषाताम्	अस्तेपिषत
प०	तिष्टिपे	तिष्टिपाते	तिष्टिपिरे
आ०	स्तेपिषीष्ट	स्तेपिषीयास्ताम्	स्तेपिषीरन्
श्व०	स्तेपिता	स्तेपितारौ	स्तेपितार:
भ०	स्तेपिष्यते	स्तेपिष्येते	स्तेपिष्यन्ते
क्रि०	अस्तेपिष्यत	अस्तेपिष्येताम्	अस्तेपिष्यन्त

७५२. ष्टेपृङ् (स्तेप्) क्षरणे।

व०	स्तेपते	स्तेपेते	स्तेपन्ते
स०	स्तेपेत	स्तेपेयाताम्	स्तेपेरन्
प०	स्तेपताम्	स्तेपेताम्	स्तेपन्ताम्
ह्य०	अस्तेपत	अस्तेपेताम्	अस्तेपन्त
अ०	अस्तेपिष्ट	अस्तेपिषाताम्	अस्तेपिषत
प०	तिष्टेपे	तिष्टेपाते	तिष्टेपिरे
आ०	स्तेपिषीष्ट	स्तेपिषीयास्ताम्	स्तेपिषीरन्
श्व०	स्तेपिता	स्तेपितारौ	स्तेपितार:
भ०	स्तेपिष्यते	स्तेपिष्येते	स्तेपिष्यन्ते
क्रि०	अस्तेपिष्यत	अस्तेपिष्येताम्	अस्तेपिष्यन्त

७५३. तेपृङ (तेप्) कम्पने च।
चकारात्क्षरणे।

व०	तेपते	तेपेते	तेपन्ते
स०	तेपेत	तेपेयाताम्	तेपेरन्
प०	तेपताम्	तेपेताम्	तेपन्ताम्
ह्य०	अतेपत	अतेपेताम्	अतेपन्त
अ०	अतेपिष्ट	अतेपिषाताम्	अतेपिषत
प०	तितेपे	तितेपाते	तितेपिरे
आ०	तेपिषीष्ट	तेपिषीयास्ताम्	तेपिषीरन्
श्व०	तेपिता	तेपितारौ	तेपितार:
भ०	तेपिष्यते	तेपिष्येते	तेपिष्यन्ते
क्रि०	अतेपिष्यत	अतेपिष्येताम्	अतेपिष्यन्त

७५४. टुवेपृङ् (वेप्) चलने।

व०	वेपते	वेपेते	वेपन्ते
स०	वेपेत	वेपेयाताम्	वेपेरन्
प०	वेपताम्	वेपेताम्	वेपन्ताम्
ह्य०	अवेपत	अवेपेताम्	अवेपन्त
अ०	अवेपिष्ट	अवेपिषाताम्	अवेपिषत
प०	विवेपे	विवेपाते	विवेपिरे
आ०	वेपिषीष्ट	वेपिषीयास्ताम्	वेपिषीरन्
श्व०	वेपिता	वेपितारौ	वेपितार:
भ०	वेपिष्यते	वेपिष्येते	वेपिष्यन्ते
क्रि०	अवेपिष्यत	अवेपिष्येताम्	अवेपिष्यन्त

७५५. केपृङ् (केप्) चलने।

व०	केपते	केपेते	केपन्ते
स०	केपेत	केपेयाताम्	केपेरन्
प०	केपताम्	केपेताम्	केपन्ताम्
ह्य०	अकेपत	अकेपेताम्	अकेपन्त
अ०	अकेपिष्ट	अकेपिषाताम्	अकेपिषत
प०	चिकेपे	चिकेपाते	चिकेपिरे
आ०	केपिषीष्ट	केपिषीयास्ताम्	केपिषीरन्
श्व०	केपिता	केपितारौ	केपितार:
भ०	केपिष्यते	केपिष्येते	केपिष्यन्ते
क्रि०	अकेपिष्यत	अकेपिष्येताम्	अकेपिष्यन्त

७५६. गेपृङ् (गेप्) चलने।

व०	गेपते	गेपेते	गेपन्ते
स०	गेपेत	गेपेयाताम्	गेपेरन्
प०	गेपताम्	गेपेताम्	गेपन्ताम्
ह्य०	अगेपत	अगेपेताम्	अगेपन्त
अ०	अगेपिष्ट	अगेपिषाताम्	अगेपिषत
प०	जिगेपे	जिगेपाते	जिगेपिरे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	गेपिषीष्ट	गेपिषीयास्ताम्	गेपिषीरन्
श्व०	गेपिता	गेपितारौ	गेपितार:
भ०	गेपिष्यते	गेपिष्येते	गेपिष्यन्ते
क्रि०	अगेपिष्यत	अगेपिष्येताम्	अगेपिष्यन्त

७५७. कपृङ् (कम्प्) चलने।

व०	कम्पते	कम्पेते	कम्पन्ते
स०	कम्पेत	कम्पेयाताम्	कम्पेरन्
प०	कम्पताम्	कम्पेताम्	कम्पन्ताम्
ह्य०	अकम्पत	अकम्पेताम्	अकम्पन्त
अ०	अकम्पिष्ट	अकम्पिषाताम्	अकम्पिषत
प०	चकम्पे	चकम्पाते	चकम्पिरे
आ०	कम्पिषीष्ट	कम्पिषीयास्ताम्	कम्पिषीरन्
श्व०	कम्पिता	कम्पितारौ	कम्पितार:
भ०	कम्पिष्यते	कम्पिष्येते	कम्पिष्यन्ते
क्रि०	अकम्पिष्यत	अकम्पिष्येताम्	अकम्पिष्यन्त

७५८. ग्लेपृङ् (ग्लेप्) दैन्येच। चकाराच्चलने।

व०	ग्लेपते	ग्लेपेते	ग्लेपन्ते
स०	ग्लेपेत	ग्लेपेयाताम्	ग्लेपेरन्
प०	ग्लेपताम्	ग्लेपेताम्	ग्लेपन्ताम्
ह्य०	अग्लेपत	अग्लेपेताम्	अग्लेपन्त
अ०	अग्लेपिष्ट	अग्लेपिषाताम्	अग्लेपिषत
प०	जिग्लेपे	जिग्लेपाते	जिग्लेपिरे
आ०	ग्लेपिषीष्ट	ग्लेपिषीयास्ताम्	ग्लेपिषीरन्
श्व०	ग्लेपिता	ग्लेपितारौ	ग्लेपितार:
भ०	ग्लेपिष्यते	ग्लेपिष्येते	ग्लेपिष्यन्ते
क्रि०	अग्लेपिष्यत	अग्लेपिष्येताम्	अग्लेपिष्यन्त

७५९. मेपृङ् (मेप्) गतौ।

व०	मेपते	मेपेते	मेपन्ते
स०	मेपेत	मेपेयाताम्	मेपेरन्
प०	मेपताम्	मेपेताम्	मेपन्ताम्
ह्य०	अमेपत	अमेपेताम्	अमेपन्त
अ०	अमेपिष्ट	अमेपिषाताम्	अमेपिषत
प०	मिमेपे	मिमेपाते	मिमेपिरे
आ०	मेपिषीष्ट	मेपिषीयास्ताम्	मेपिषीरन्
श्व०	मेपिता	मेपितारौ	मेपितार:
भ०	मेपिष्यते	मेपिष्येते	मेपिष्यन्ते
क्रि०	अमेपिष्यत	अमेपिष्येताम्	अमेपिष्यन्त

७६०. रेपृङ् (रेप्) गतौ।

व०	रेपते	रेपेते	रेपन्ते
स०	रेपेत	रेपेयाताम्	रेपेरन्
प०	रेपताम्	रेपेताम्	रेपन्ताम्
ह्य०	अरेपत	अरेपेताम्	अरेपन्त
अ०	अरेपिष्ट	अरेपिषाताम्	अरेपिषत
प०	रिरेपे	रिरेपाते	रिरेपिरे
आ०	रेपिषीष्ट	रेपिषीयास्ताम्	रेपिषीरन्
श्व०	रेपिता	रेपितारौ	रेपितार:
भ०	रेपिष्यते	रेपिष्येते	रेपिष्यन्ते
क्रि०	अरेपिष्यत	अरेपिष्येताम्	अरेपिष्यन्त

७६१. लेपृङ् (लेप्) गतौ।

व०	लेपते	लेपेते	लेपन्ते
स०	लेपेत	लेपेयाताम्	लेपेरन्
प०	लेपताम्	लेपेताम्	लेपन्ताम्
ह्य०	अलेपत	अलेपेताम्	अलेपन्त
अ०	अलेपिष्ट	अलेपिषाताम्	अलेपिषत
प०	लिलेपे	लिलेपाते	लिलेपिरे
आ०	लेपिषीष्ट	लेपिषीयास्ताम्	लेपिषीरन्
श्व०	लेपिता	लेपितारौ	लेपितार:
भ०	लेपिष्यते	लेपिष्येते	लेपिष्यन्ते
क्रि०	अलेपिष्यत	अलेपिष्येताम्	अलेपिष्यन्त

७६२. त्रपौषि (त्रप्) लज्जायाम्।

व०	त्रपते	त्रपेते	त्रपन्ते
स०	त्रपेत	त्रपेयाताम्	त्रपेरन्
प०	त्रपताम्	त्रपेताम्	त्रपन्ताम्
ह्य०	अत्रपत	अत्रपेताम्	अत्रपन्त
अ०	अत्रपिष्ट	अत्रपिषाताम्	अत्रपिषत

तथा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अत्रप्त	अत्रप्साताम्	अत्रप्सत
प०	त्रेपे	त्रेपाते	त्रेपिरे
आ०	त्रपिषीष्ट	त्रपिषीयास्ताम्	त्रपिषीरन्
		तथा	
	त्रप्सीष्ट	त्रप्सीयास्ताम्	त्रप्सीरन् इत्यादि।
श्व०	त्रपिता	त्रपितारौ	त्रपितार:
		तथा	
	त्रप्ता	त्रप्तारौ	त्रप्तार: इत्यादि।
भ०	त्रपिष्यते	त्रपिष्येते	त्रपिष्यन्ते
		तथा	
	त्रप्स्यते	त्रप्स्येते	त्रप्स्यन्ते इत्यादि।
क्रि०	अत्रपिष्यत	अत्रपिष्येताम्	अत्रपिष्यन्त
		तथा	
	अत्रप्स्यत	अत्रप्स्येताम्	अत्रप्स्यन्त इत्यादि।

७६३. गुपि (गुप् जुगुप्स) गोपन कुत्सनयो:।

अवयवे कृतं लिङ्गं समुदायस्य विशेषकं भवति यं समुदायं सोऽवयवो न व्यभिचरति। न व्यभिचरति च गुपिर्गर्हायां सनन्तसमुदायमिति ''इङ्ति-'' इति आत्मनेपदम्। गर्हायां सनि।

व०	जुगुप्सते	जुगुप्सेते	जुगुप्सन्ते
स०	जुगुप्सेत	जुगुप्सेयाताम्	जुगुप्सेरन्
प०	जुगुप्सताम्	जुगुप्सेताम्	जुगुप्सन्ताम्
ह्य०	अजुगुप्सत	अजुगुप्सेताम्	अजुगुप्सन्त
अ०	अजुगुप्सिष्ट	अजुगुप्सिषाताम्	अजुगुप्सिषत
प०	जुगुप्साञ्चक्रे	जुगुप्साञ्चक्राते	जुगुप्साञ्चक्रिरे
	जुगुप्साम्बभूव।	जुगुप्सामास।	
आ०	जुगुप्सिषीष्ट	जुगुप्सिषीयास्ताम्	जुगुप्सिषीरन्
श्व०	जुगुप्सिता	जुगुप्सितारौ	जुगुप्सितार:
भ०	जुगुप्सिष्यते	जुगुप्सिष्येते	जुगुप्सिष्यन्ते
क्रि०	अजुगुप्सिष्यत	अजुगुप्सिष्येताम्	अजुगुप्सिष्यन्त

गर्हाया अन्यत्र सनोऽभावे अर्थान्तरेऽपि प्रायेण त्यादयोनाभिधीयन्ते इत्यत्र प्रायोग्रहणात् गोपते।

॥अथ बान्ता: षट् सेटश्च॥

७६४ अबुङ् (अम्बू) शब्दे॥

व०	अम्बते	अम्बेते	अम्बन्ते
स०	अम्बेत	अम्बेयाताम्	अम्बेरन्
प०	अम्बताम्	अम्बेताम्	अम्बन्ताम्
ह्य०	आम्बत	आम्बेताम्	आम्बन्त
अ०	आम्बिष्ट	आम्बिषाताम्	आम्बिषत
प०	आनम्बे	आनम्बाते	आनम्बिरे
आ०	अम्बिषीष्ट	अम्बिषीयास्ताम्	अम्बिषीरन्
श्व०	अम्बिता	अम्बितारौ	अम्बितार:
भ०	अम्बिष्यते	अम्बिष्येते	अम्बिष्यन्ते
क्रि०	आम्बिष्यत	आम्बिष्येताम्	आम्बिष्यन्त

७६५. रबु (रम्ब्) शब्दे।

व०	रम्बते	रम्बेते	रम्बन्ते
स०	रम्बेत	रम्बेयाताम्	रम्बेरन्
प०	रम्बताम्	रम्बेताम्	रम्बन्ताम्
ह्य०	अरम्बत	अरम्बेताम्	अरम्बन्त
अ०	अरम्बिष्ट	अरम्बिषाताम्	अरम्बिषत
प०	ररम्बे	ररम्बाते	ररम्बिरे
आ०	रम्बिषीष्ट	रम्बिषीयास्ताम्	रम्बिषीरन्
श्व०	रम्बिता	रम्बितारौ	रम्बितार:
भ०	रम्बिष्यते	रम्बिष्येते	रम्बिष्यन्ते
क्रि०	अरम्बिष्यत	अरम्बिष्येताम्	अरम्बिष्यन्त

७६६. लबुङ् (लम्ब्) अवस्रंसने च। चकाराच्छब्दे।

व०	लम्बते	लम्बेते	लम्बन्ते
स०	लम्बेत	लम्बेयाताम्	लम्बेरन्
प०	लम्बताम्	लम्बेताम्	लम्बन्ताम्
ह्य०	अलम्बत	अलम्बेताम्	अलम्बन्त
अ०	अलम्बिष्ट	अलम्बिषाताम्	अलम्बिषत
प०	ललम्बे	ललम्बाते	ललम्बिरे
आ०	लम्बिषीष्ट	लम्बिषीयास्ताम्	लम्बिषीरन्
श्व०	लम्बिता	लम्बितारौ	लम्बितार:
भ०	लम्बिष्यते	लम्बिष्येते	लम्बिष्यन्ते
क्रि०	अलम्बिष्यत	अलम्बिष्येताम्	अलम्बिष्यन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७६७. कबृङ् (कब्) वर्णे।

वर्णो वर्णनं शुक्कादिश्च।

व०	कबते	कबेते	कबन्ते
स०	कबेत	कबेयाताम्	कबेरन्
प०	कबताम्	कबेताम्	कबन्ताम्
ह्य०	अकबत	अकबेताम्	अकबन्त
अ०	अकबिष्ट	अकबिषाताम्	अकबिषत
प०	चकबे	चकबाते	चकबिरे
आ०	कबिषीष्ट	कबिषीयास्ताम्	कबिषीरन्
श्व०	कबिता	कबितारौ	कबितारः
भ०	कबिष्यते	कबिष्येते	कबिष्यन्ते
क्रि०	अकबिष्यत	अकबिष्येताम्	अकबिष्यन्त

७६८. क्लीबृङ् (क्लीब्) अधाष्टर्ये।

व०	क्लीबते	क्लीबेते	क्लीबन्ते
स०	क्लीबेत	क्लीबेयाताम्	क्लीबेरन्
प०	क्लीबताम्	क्लीबेताम्	क्लीबन्ताम्
ह्य०	अक्लीबत	अक्लीबेताम्	अक्लीबन्त
अ०	अक्लीबिष्ट	अक्लीबिषाताम्	अक्लीबिषत
प०	चिक्लीबे	चिक्लीबाते	चिक्लीबिरे
आ०	क्लीबिषीष्ट	क्लीबिषीयास्ताम्	क्लीबिषीरन्
श्व०	क्लीबिता	क्लीबितारौ	क्लीबितारः
भ०	क्लीबिष्यते	क्लीबिष्येते	क्लीबिष्यन्ते
क्रि०	अक्लीबिष्यत	अक्लीबिष्येताम्	अक्लीबिष्यन्त

७६९. क्षीबृङ् (क्षीब्) मदे।

व०	क्षीबते	क्षीबेते	क्षीबन्ते
स०	क्षीबेत	क्षीबेयाताम्	क्षीबेरन्
प०	क्षीबताम्	क्षीबेताम्	क्षीबन्ताम्
ह्य०	अक्षीबत	अक्षीबेताम्	अक्षीबन्त
अ०	अक्षीबिष्ट	अक्षीबिषाताम्	अक्षीबिषत
प०	चिक्षीबे	चिक्षीबाते	चिक्षीबिरे
आ०	क्षीबिषीष्ट	क्षीबिषीयास्ताम्	क्षीबिषीरन्
श्व०	क्षीबिता	क्षीबितारौ	क्षीबितारः
भ०	क्षीबिष्यते	क्षीबिष्येते	क्षीबिष्यन्ते
क्रि०	अक्षीबिष्यत	अक्षीबिष्येताम्	अक्षीबिष्यन्त

एते च कबृडादयो यद्यपि दन्त्यौष्ठ्यान्ता अपि काव्यादिशब्देषु श्रूयन्ते तथापि वृद्धैरोष्ठ्यान्त्यमध्ये पठितत्वादस्माभिस्तथैव पठिताः।।

अथ भान्ताः सप्तदश रभिंलभिंवर्जाः सेटश्च।

७७०. शीभृङ् (शीभ्) कत्थने।

व०	शीभते	शीभेते	शीभन्ते
स०	शीभेत	शीभेयाताम्	शीभेरन्
प०	शीभताम्	शीभेताम्	शीभन्ताम्
ह्य०	अशीभत	अशीभेताम्	अशीभन्त
अ०	अशीभिष्ट	अशीभिषाताम्	अशीभिषत
प०	शिशीभे	शिशीभाते	शिशीभिरे
आ०	शीभिषीष्ट	शीभिषीयास्ताम्	शीभिषीरन्
श्व०	शीभिता	शीभितारौ	शीभितारः
भ०	शीभिष्यते	शीभिष्येते	शीभिष्यन्ते
क्रि०	अशीभिष्यत	अशीभिष्येताम्	अशीभिष्यन्त

७७१. वीभृङ् (वीभ्) कत्थने।

व०	वीभते	वीभेते	वीभन्ते
स०	वीभेत	वीभेयाताम्	वीभेरन्
प०	वीभताम्	वीभेताम्	वीभन्ताम्
ह्य०	अवीभत	अवीभेताम्	अवीभन्त
अ०	अवीभिष्ट	अवीभिषाताम्	अवीभिषत
प०	विवीभे	विवीभाते	विवीभिरे
आ०	वीभिषीष्ट	वीभिषीयास्ताम्	वीभिषीरन्
श्व०	वीभिता	वीभितारौ	वीभितारः
भ०	वीभिष्यते	वीभिष्येते	वीभिष्यन्ते
क्रि०	अवीभिष्यत	अवीभिष्येताम्	अवीभिष्यन्त

७७२. शल्भि (शल्भ्) कत्थने।

व०	शल्भते	शल्भेते	शल्भन्ते
स०	शल्भेत	शल्भेयाताम्	शल्भेरन्
प०	शल्भताम्	शल्भेताम्	शल्भन्ताम्
ह्य०	अशल्भत	अशल्भेताम्	अशल्भन्त
अ०	अशल्भिष्ट	अशल्भिषाताम्	अशल्भिषत
प०	शशल्भे	शशल्भाते	शशल्भिरे
आ०	शल्भिषीष्ट	शल्भिषीयास्ताम्	शल्भिषीरन्
श्व०	शल्भिता	शल्भितारौ	शल्भितारः
भ०	शल्भिष्यते	शल्भिष्येते	शल्भिष्यन्ते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रि०	अशल्भिष्यत	अशल्भिष्येताम्	अशल्भिष्यन्त

७७३. वल्भि (वल्भ्) भोजने।

व०	वल्भते	वल्भेते	वल्भन्ते
स०	वल्भेत	वल्भेयाताम्	वल्भेरन्
प०	वल्भताम्	वल्भेताम्	वल्भन्ताम्
ह्य०	अवल्भत	अवल्भेताम्	अवल्भन्त
अ०	अवल्भिष्ट	अवल्भिषाताम्	अवल्भिषत
प०	ववल्भे	ववल्भाते	ववल्भिरे
आ०	वल्भिषीष्ट	वल्भिषीयास्ताम्	वल्भिषीरन्
श्व०	वल्भिता	वल्भितारौ	वल्भितार:
भ०	वल्भिष्यते	वल्भिष्येते	वल्भिष्यन्ते
क्रि०	अवल्भिष्यत	अवल्भिष्येताम्	अवल्भिष्यन्त

७७४. गल्भि (गल्भ्) धार्ष्ट्ये।

व०	गल्भते	गल्भेते	गल्भन्ते
स०	गल्भेत	गल्भेयाताम्	गल्भेरन्
प०	गल्भताम्	गल्भेताम्	गल्भन्ताम्
ह्य०	अगल्भत	अगल्भेताम्	अगल्भन्त
अ०	अगल्भिष्ट	अगल्भिषाताम्	अगल्भिषत
प०	जगल्भे	जगल्भाते	जगल्भिरे
आ०	गल्भिषीष्ट	गल्भिषीयास्ताम्	गल्भिषीरन्
श्व०	गल्भिता	गल्भितारौ	गल्भितार:
भ०	गल्भिष्यते	गल्भिष्येते	गल्भिष्यन्ते
क्रि०	अगल्भिष्यत	अगल्भिष्येताम्	अगल्भिष्यन्त

७७५. रेभृङ् (रेभ्) शब्दे।

व०	रेभते	रेभेते	रेभन्ते
स०	रेभेत	रेभेयाताम्	रेभेरन्
प०	रेभताम्	रेभेताम्	रेभन्ताम्
ह्य०	अरेभत	अरेभेताम्	अरेभन्त
अ०	अरेभिष्ट	अरेभिषाताम्	अरेभिषत
प०	रिरेभे	रिरेभाते	रिरेभिरे
आ०	रेभिषीष्ट	रेभिषीयास्ताम्	रेभिषीरन्
श्व०	रेभिता	रेभितारौ	रेभितार:
भ०	रेभिष्यते	रेभिष्येते	रेभिष्यन्ते
क्रि०	अरेभिष्यत	अरेभिष्येताम्	अरेभिष्यन्त

७७६. अभुङ् (अम्भ्) शब्दे।

व०	अम्भते	अम्भेते	अम्भन्ते
स०	अम्भेत	अम्भेयाताम्	अम्भेरन्
प०	अम्भताम्	अम्भेताम्	अम्भन्ताम्
ह्य०	आम्भत	आम्भेताम्	आम्भन्त
अ०	आम्भिष्ट	आम्भिषाताम्	आम्भिषत
प०	आनम्भे	आनम्भाते	आनम्भिरे
आ०	अम्भिषीष्ट	अम्भिषीयास्ताम्	अम्भिषीरन्
श्व०	अम्भिता	अम्भितारौ	अम्भितार:
भ०	अम्भिष्यते	अम्भिष्येते	अम्भिष्यन्ते
क्रि०	आम्भिष्यत	आम्भिष्येताम्	आम्भिष्यन्त

७७७. रभुङ् (रम्भ्) शब्दे।

व०	रम्भते	रम्भेते	रम्भन्ते
स०	रम्भेत	रम्भेयाताम्	रम्भेरन्
प०	रम्भताम्	रम्भेताम्	रम्भन्ताम्
ह्य०	अरम्भत	अरम्भेताम्	अरम्भन्त
अ०	अरम्भिष्ट	अरम्भिषाताम्	अरम्भिषत
प०	ररम्भे	ररम्भाते	ररम्भिरे
आ०	रम्भिषीष्ट	रम्भिषीयास्ताम्	रम्भिषीरन्
श्व०	रम्भिता	रम्भितारौ	रम्भितार:
भ०	रम्भिष्यते	रम्भिष्येते	रम्भिष्यन्ते
क्रि०	अरम्भिष्यत	अरम्भिष्येताम्	अरम्भिष्यन्त

७७८. लभुङ् (लम्भ्) शब्दे।

व०	लम्भते	लम्भेते	लम्भन्ते
स०	लम्भेत	लम्भेयाताम्	लम्भेरन्
प०	लम्भताम्	लम्भेताम्	लम्भन्ताम्
ह्य०	अलम्भत	अलम्भेताम्	अलम्भन्त
अ०	अलम्भिष्ट	अलम्भिषाताम्	अलम्भिषत
प०	ललम्भे	ललम्भाते	ललम्भिरे
ला०	लम्भिषीष्ट	लम्भिषीयास्ताम्	लम्भिषीरन्
श्व०	लम्भिता	लम्भितारौ	लम्भितार:
भ०	लम्भिष्यते	लम्भिष्येते	लम्भिष्यन्ते
क्रि०	अलम्भिष्यत	अलम्भिष्येताम्	अलम्भिष्यन्त

७७९. ष्टभुङ् (स्तम्भ्) स्तम्भे।

स्तम्भ: क्रियानिरोध:।

व०	स्तम्भते	स्तम्भेते	स्तम्भन्ते
स०	स्तम्भेत	स्तम्भेयाताम्	स्तम्भेरन्
प०	स्तम्भताम्	स्तम्भेताम्	स्तम्भन्ताम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	अस्तम्भत	अस्तम्भेताम्	अस्तम्भन्त
अ०	अस्तम्भिष्ट	अस्तम्भिषाताम्	अस्तम्भिषत
प०	तस्तम्भे	तस्तम्भाते	तस्तम्भिरे
आ०	स्तम्भिषीष्ट	स्तम्भिषीयास्ताम्	स्तम्भिषीरन्
श्व०	स्तम्भिता	स्तम्भितारौ	स्तम्भितार:
भ०	स्तम्भिष्यते	स्तम्भिष्येते	स्तम्भिष्यन्ते
क्रि०	अस्तम्भिष्यत	अस्तम्भिष्येताम्	अस्तम्भिष्यन्त

७८०. स्कभुङ् (स्कम्भ्) स्तम्भे।

स्तम्भ: क्रियानिरोध:।

व०	स्कम्भते	स्कम्भेते	स्कम्भन्ते
स०	स्कम्भेत	स्कम्भेयाताम्	स्कम्भेरन्
प०	स्कम्भताम्	स्कम्भेताम्	स्कम्भन्ताम्
ह्य०	अस्कम्भत	अस्कम्भेताम्	अस्कम्भन्त
अ०	अस्कम्भिष्ट	अस्कम्भिषाताम्	अस्कम्भिषत
प०	चस्कम्भे	चस्कम्भाते	चस्कम्भिरे
आ०	स्कम्भिषीष्ट	स्कम्भिषीयास्काम्	स्कम्भिषीरन्
श्व०	स्कम्भिता	स्कम्भितारौ	स्कम्भितार:
भ०	स्कम्भिष्यते	स्कम्भिष्येते	स्कम्भिष्यन्ते
क्रि०	अस्कम्भिष्यत	अस्कम्भिष्येताम्	अस्कम्भिष्यन्त

७८१. ष्टुभुङ् (स्तुभ्) स्तम्भे।

स्तम्भ: क्रियानिरोध:।

व०	स्तोभते	स्तोभेते	स्तोभन्ते
स०	स्तोभेत	स्तोभेयाताम्	स्तोभेरन्
प०	स्तोभताम्	स्तोभेताम्	स्तोभन्ताम्
ह्य०	अस्तोभत	अस्तोभेताम्	अस्तोभन्त
अ०	अस्तोभिष्ट	अस्तोभिषाताम्	अस्तोभिषत
प०	तुष्टुभे	तुष्टुभाते	तुष्टुभिरे
आ०	स्तोभिषीष्ट	स्तोभिषीयास्तोाम्	स्तोभिषीरन्
श्व०	स्तोभिता	स्तोभितारौ	स्तोभितार:
भ०	स्तोभिष्यते	स्तोभिष्येते	स्तोभिष्यन्ते
क्रि०	अस्तोभिष्यत	अस्तोभिष्येताम्	अस्तोभिष्यन्त

७८२. जभुङ् (जम्भ्) गात्रविनामे।

व०	जम्भते	जम्भेते	जम्भन्ते
स०	जम्भेत	जम्भेयाताम्	जम्भेरन्
प०	जम्भताम्	जम्भेताम्	जम्भन्ताम्
ह्य०	अजम्भत	अजम्भेताम्	अजम्भन्त
अ०	अजम्भिष्ट	अजम्भिषाताम्	अजम्भिषत
प०	जजम्भे	जजम्भाते	जजम्भिरे
आ०	जम्भिषीष्ट	जम्भिषीयाजाम्	जम्भिषीरन्
श्व०	जम्भिता	जम्भितारौ	जम्भितार:
भ०	जम्भिष्यते	जम्भिष्येते	जम्भिष्यन्ते
क्रि०	अजम्भिष्यत	अजम्भिष्येताम्	अजम्भिष्यन्त

७८३. जभैङ् (जम्भ्) गात्रविनामे।

व०	जम्भते	जम्भेते	जम्भन्ते
स०	जम्भेत	जम्भेयाताम्	जम्भेरन्
प०	जम्भताम्	जम्भेताम्	जम्भन्ताम्
ह्य०	अजम्भत	अजम्भेताम्	अजम्भन्त
अ०	अजम्भिष्ट	अजम्भिषाताम्	अजम्भिषत
प०	जजम्भे	जजम्भाते	जजम्भिरे
आ०	जम्भिषीष्ट	जम्भिषीयाजाम्	जम्भिषीरन्
श्व०	जम्भिता	जम्भितारौ	जम्भितार:
भ०	जम्भिष्यते	जम्भिष्येते	जम्भिष्यन्ते
क्रि०	अजम्भिष्यत	अजम्भिष्येताम्	अजम्भिष्यन्त

७८४. जृभुङ् (जृम्भ्) गात्रविनामे।

व०	जृम्भते	जृम्भेते	जृम्भन्ते
स०	जृम्भेत	जृम्भेयाताम्	जृम्भेरन्
प०	जृम्भताम्	जृम्भेताम्	जृम्भन्ताम्
ह्य०	अजृम्भत	अजृम्भेताम्	अजृम्भन्त
अ०	अजृम्भिष्ट	अजृम्भिषाताम्	अजृम्भिषत
प०	जजृम्भे	जजृम्भाते	जजृम्भिरे
आ०	जृम्भिषीष्ट	जृम्भिषीयाताम्	जृम्भिषीरन्
श्व०	जृम्भिता	जृम्भितारौ	जृम्भितार:
भ०	जृम्भिष्यते	जृम्भिष्येते	जृम्भिष्यन्ते
क्रि०	अजृम्भिष्यत	अजृम्भिष्येताम्	अजृम्भिष्यन्त

७८५. रभिं (रभ्) राभस्ये।

कार्योद्यम इत्यर्थ:। प्रायेणाङ्पूर्व:॥

व०	आरभते	आरभेते	आरभन्ते
स०	आरभेत	आरभेयाताम्	आरभेरन्
प०	आरभताम्	आरभेताम्	आरभन्ताम्
ह्य०	आरभत	आरभेताम्	आरभन्त
अ०	आरब्ध	आरप्साताम्	आरप्सत
प०	आरेभे	आरेभाते	आरेभिरे

आ०	आरप्सीष्ट	आरप्सीयास्ताम्	आरप्सीरन्
श्व०	आरब्धा	आरब्धारौ	आरब्धार:
भ०	आरप्स्यते	आरप्स्येते	आरप्स्यन्ते
क्रि०	आरप्स्यत	आरप्स्येताम्	आरप्स्यन्त

७८६. डुलभिंष् (लभ्) प्राप्तौ।

व०	लभते	लभेते	लभन्ते
स०	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
प०	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
ह्य०	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
अ०	अलब्ध	अलप्साताम्	अलप्सत
प०	लेभे	लेभाते	लेभिरे
आ०	लप्सीष्ट	लप्सीयास्ताम्	लप्सीरन्
श्व०	लब्धा	लब्धारौ	लब्धार:
भ०	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
क्रि०	अलप्स्यत	अलप्स्येताम्	अलप्स्यन्त

।।अथ मान्तास्त्रय: सेटश्च।।

७८७. भामि (भाम्) क्रोधे।

व०	भामते	भामेते	भामन्ते
स०	भामेत	भामेयाताम्	भामेरन्
प०	भामताम्	भामेताम्	भामन्ताम्
ह्य०	अभामत	अभामेताम्	अभामन्त
अ०	अभामिष्ट	अभामिषाताम्	अभामिषत
प०	बभामे	बभामाते	बभामिरे
आ०	भामिषीष्ट	भामिषीयास्ताम्	भामिषीरन्
श्व०	भामिता	भामितारौ	भामितार:
भ०	भामिष्यते	भामिष्येते	भामिष्यन्ते
क्रि०	अभामिष्यत	अभामिष्येताम्	अभामिष्यन्त

७८८. क्षमौषि (क्षम्) सहने।

व०	क्षमते	क्षमेते	क्षमन्ते
स०	क्षमेत	क्षमेयाताम्	क्षमेरन्
प०	क्षमताम्	क्षमेताम्	क्षमन्ताम्
ह्य०	अक्षमत	अक्षमेताम्	अक्षमन्त
अ०	अक्षमिष्ट	अक्षमिषाताम्	अक्षमिषत
		तथा	
	अक्षंस्त	अक्षंसाताम्	अक्षंसत
प०	चक्षमे	चक्षमाते	चक्षमिरे
आ०	क्षमिषीष्ट	क्षमिषीयास्ताम्	क्षमिषीरन्
		तथा	
	क्षंसीष्ट	क्षंसीयास्ताम्	क्षंसीरन्
श्व०	क्षमिता	क्षमितारौ	क्षमितार:
		तथा	
	क्षन्ता	क्षन्तारौ	क्षन्तार:
भ०	क्षमिष्यते	क्षमिष्येते	क्षमिष्यन्ते
		तथा	
	क्षंस्यते	क्षंस्येते	क्षंस्यन्ते
क्रि०	अक्षमिष्यत	अक्षमिष्येताम्	अक्षमिष्यन्त
		तथा	
	अक्षंस्यत	अक्षंस्येताम्	अक्षंस्यन्त

७८९. कमूङ् (कम् कामय्) कान्तौ।

कान्तिरभिलाष:।

व०	कामयते	कामयेते	कामयन्ते
	कामयसे	कामयेथे	कामयध्वे
	कामये	कामयावहे	कामयामहे
स०	कामयेत	कामयेयाताम्	कामयेरन्
	कामयेथा:	कामयेयाथाम्	कामयेध्वम्
	कामयेय	कामयेवहि	कामयेमहि
प०	कामयताम्	कामयेताम्	कामयन्ताम्
	कामयस्व	कामयेथाम्	कामयध्वम्
	कामयै	कामयावहै	कामयामहै
ह्य०	अकामयत	अकामयेताम्	अकामयन्त
	अकामयथा:	अकामयेथाम्	अकामयध्वम्
	अकामये	अकामयावहि	अकामयामहि
अ०	अचीकमत	अचीकमेताम्	अचीकमन्त
	अचीकमथा:	अचीकमेथाम्	अचीकमयध्वम्
	अचीकमे	अचीकमयावहि	अचीकमयामहि
		तथा	
	अचकमत	अचकमेताम्	अचकमन्त
	अचकमथा:	अचकमेथाम्	अचकमयध्वम्
	अचकमे	अचकमयावहि	अचकमयामहि
प०	कामायाञ्चक्रे	कामायाञ्चक्राते	कामायाञ्चक्रिरे
	कामायाञ्चकृषे	कामायाञ्चक्राथे	कामायाञ्चकृढ्वे
	कामायाञ्चक्रे	कामायाञ्चकृवहे	कामायाञ्चकृमहे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	कामायाम्बभूव।	कामयामास।	
		तथा	
	चकमे	चकमाते	चकमिरे
	चकमिषे	चकमाथे	चकमिध्वे
	चकमे	चकमिवहे	चकमिमहे
आ०	कमिषीष्ट	कमिषीयास्ताम्	कमिषीरन्
	कमिषीष्ठाः	कमिषीयास्थाम्	कमिषीध्वम्
	कमिषीय	कमिषीवहि	कमिषीमहि
		तथा	
	कामयिषीष्ट	कामयिषीयास्ताम्	कामयिषीरन्
	कामयिषीष्ठाः	कामयिषीयास्थाम्	कामयिषीध्वम्
	कामयिषीय	कामयिषीवहि	कामयिषीमहि
श्व०	कामयिता	कामयितारौ	कामयितारः
	कामयितासे	कामयितासाथे	कामयिताध्वे
	कामयिताहे	कामयितास्वहे	कामयितास्महे
		तथा	
	कमिता	कमितारौ	कमितारः
	कमितासे	कमितासाथे	कमिताध्वे
	कमिताहे	कमितास्वहे	कमितास्महे
भ०	कामयिष्यते	कामयिष्येते	कामयिष्यन्ते
	कामयिष्यसे	कामयिष्येथे	कामयिष्यध्वे
	कामयिष्ये	कामयिष्यावहे	कामयिष्यामहे
		तथा	
	कमिष्यते	कमिष्येते	कमिष्यन्ते
	कमिष्यसे	कमिष्येथे	कमिष्यध्वे
	कमिष्ये	कमिष्यावहे	कमिष्यामहे
क्रि०	अकामयिष्यत	अकामयिष्येताम्	अकामयिष्यन्त
	अकामयिष्यथाः	अकामयिष्येथाम्	अकामयिष्येध्वम्
	अकामयिष्ये	अकामयिष्यावहि	अकामयिष्यामहि
		तथा	
	अकमिष्यत	अकमिष्येताम्	अकमिष्यन्त
	अकमिष्यथाः	अकमिष्येथाम्	अकमिष्येध्वम्
	अकमिष्ये	अकमिष्यावहि	अकमिष्यामहि

अथ यान्ताः सप्तदश सेटश्च।

७९०. अयि (अय्) गतौ।

व०	अयते	अयेते	अयन्ते
	अयसे	अयेथे	अयध्वे
	अये	अयावहे	अयामहे
स०	अयेत	अयेयाताम्	अयेरन्
	अयेथाः	अयेयाथाम्	अयेध्वम्
	अयेय	अयेवहि	अयेमहि
प०	अयताम्	अयेताम्	अयन्ताम्
	अयस्व	अयेथाम्	अयध्वम्
	अयै	अयावहै	अयामहै
ह्य०	आयत	आयेताम्	आयन्त
	आयथाः	आयेथाम्	आयध्वम्
	आये	आयावहि	आयामहि
अ०	आयिष्ट	आयिषाताम्	आयिषत
	आयिष्ठाः	आयिषाथाम्	आयिड्ढ्वम/ध्वम्
	आयिषि	आयिष्वहि	आयिष्महि
प०	अयाञ्चक्रे	अयाञ्चक्राते	अयाञ्चक्रिरे
	अयाञ्चकृषे	अयाञ्चक्राथे	अयाञ्चकृढ्वे
	अयाञ्चक्रे	अयाञ्चकृवहे	अयाञ्चकृमहे
	आयाम्बभूव।	आयामास।	
आ०	अयिषीष्ट	अयिषीयास्ताम्	अयिषीरन्
	अयिषीष्ठाः	अयिषीयास्थाम्	अयिषीध्वम्
	अयिषीय	अयिषीवहि	अयिषीमहि
श्व०	अयिता	अयितारौ	अयितारः
	अयितासे	अयितासाथे	अयिताध्वे
	अयिताहे	अयितास्वहे	अयितास्महे
भ०	अयिष्यते	अयिष्येते	अयिष्यन्ते
	अयिष्यसे	अयिष्येथे	अयिष्यध्वे
	अयिष्ये	अयिष्यावहे	अयिष्यामहे
क्रि०	आयिष्यत	आयिष्येताम्	आयिष्यन्त
	आयिष्यथाः	आयिष्येथाम्	आयिष्यध्वम्
	आयिष्ये	आयिष्यावहि	आयिष्यामहि

७९१. वयि (वय्) गतौ।

व०	वयते	वयेते	वयन्ते
	वयसे	वयेथे	वयध्वे
	वये	वयावहे	वयामहे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स०	वयेत	वयेयाताम्	वयेरन्
	वयेथाः	वयेयाथाम्	वयेध्वम्
	वयेय	वयेवहि	वयेमहि
प०	वयताम्	वयेताम्	वयन्ताम्
	वयस्व	वयेथाम्	वयध्वम्
	वयै	वयावहै	वयामहै
ह्य०	अवयत	अवयेताम्	अवयन्त
	अवयथाः	अवयेथाम्	अवयध्वम्
	अवये	अवयावहि	अवयामहि
अ०	अवयिष्ट	अवयिषाताम्	अवयिषत
	अवयिष्ठाः	अवयिषाथाम्	अवयिड्ढ्वम
ध्वम्			
	अवयिषि	अवयिष्वहि	अवयिष्महि
प०	ववये	ववयाते	ववयिरे
	ववयिषे	ववयाथे	ववयिढ्वे ध्वे
	ववये	ववयिवहे	ववयिमहे
आ०	वयिषीष्ट	वयिषीयास्ताम्	वयिषीरन्
	वयिषीष्ठाः	वयिषीयास्थाम्	वयिषीध्वम्
	वयिषीय	वयिषीवहि	वयिषीमहि
श्व०	वयिता	वयितारौ	वयितारः
	वयितासे	वयितासाथे	वयिताध्वे
	वयिताहे	वयितास्वहे	वयितास्महे
भ०	वयिष्यते	वयिष्येते	वयिष्यन्ते
	वयिष्यसे	वयिष्येथे	वयिष्यध्वे
	वयिष्ये	वयिष्यावहे	वयिष्यामहे
क्रि०	अवयिष्यत	अवयिष्येताम्	अवयिष्यन्त
	अवयिष्यथाः	अवयिष्येथाम्	अवयिष्यध्वम्
	अवयिष्ये	अवयिष्यावहि	अवयिष्यामहि

७९२. पयि (पय्) गतौ।

व०	पयते	पयेते	पयन्ते
स०	पयेत	पयेयाताम्	पयेरन्
प०	पयताम्	पयेताम्	पयन्ताम्
ह्य०	अपयत	अपयेताम्	अपयन्त
अ०	अपयिष्ट	अपयिषाताम्	अपयिषत
प०	पेये	पेयाते	पेयिरे
आ०	पयिषीष्ट	पयिषीयास्ताम्	पयिषीरन्
श्व०	पयिता	पयितारौ	पयितारः
भ०	पयिष्यते	पयिष्येते	पयिष्यन्ते
क्रि०	अपयिष्यत	अपयिष्येताम्	अपयिष्यन्त

७९३. मयि (मय्) गतौ।

व०	मयते	मयेते	मयन्ते
स०	मयेत	मयेयाताम्	मयेरन्
प०	मयताम्	मयेताम्	मयन्ताम्
ह्य०	अमयत	अमयेताम्	अमयन्त
अ०	अमयिष्ट	अमयिषाताम्	अमयिषत
प०	मेये	मेयाते	मेयिरे
आ०	मयिषीष्ट	मयिषीयास्ताम्	मयिषीरन्
श्व०	मयिता	मयितारौ	मयितारः
भ०	मयिष्यते	मयिष्येते	मयिष्यन्ते
क्रि०	अमयिष्यत	अमयिष्येताम्	अमयिष्यन्त

७९४. नयि (नय्) गतौ।

व०	नयते	नयेते	नयन्ते
स०	नयेत	नयेयाताम्	नयेरन्
प०	नयताम्	नयेताम्	नयन्ताम्
ह्य०	अनयत	अनयेताम्	अनयन्त
अ०	अनयिष्ट	अनयिषाताम्	अनयिषत
प०	नेये	नेयाते	नेयिरे
आ०	नयिषीष्ट	नयिषीयास्ताम्	नयिषीरन्
श्व०	नयिता	नयितारौ	नयितारः
भ०	नयिष्यते	नयिष्येते	नयिष्यन्ते
क्रि०	अनयिष्यत	अनयिष्येताम्	अनयिष्यन्त

७९५. चयि (चय्) गतौ।

व०	चयते	चयेते	चयन्ते
स०	चयेत	चयेयाताम्	चयेरन्
प०	चयताम्	चयेताम्	चयन्ताम्
ह्य०	अचयत	अचयेताम्	अचयन्त
अ०	अचयिष्ट	अचयिषाताम्	अचयिषत
प०	चेये	चेयाते	चेयिरे
आ०	चयिषीष्ट	चयिषीयास्ताम्	चयिषीरन्
श्व०	चयिता	चयितारौ	चयितारः
भ०	चयिष्यते	चयिष्येते	चयिष्यन्ते
क्रि०	अचयिष्यत	अचयिष्येताम्	अचयिष्यन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७९६. रयि (रय्) गतौ।

व०	रयते	रयेते	रयन्ते
स०	रयेत	रयेयाताम्	रयेरन्
स०	रयताम्	रयेताम्	रयन्ताम्
ह्य०	अरयत	अरयेताम्	अरयन्त
अ०	अरयिष्ट	अरयिषाताम्	अरयिषत
प०	रेये	रेयाते	रेयिरे
आ०	रयिषीष्ट	रयिषीयास्ताम्	रयिषीरन्
श्व०	रयिता	रयितारौ	रयितारः
भ०	रयिष्यते	रयिष्येते	रयिष्यन्ते
क्रि०	अरयिष्यत	अरयिष्येताम्	अरयिष्यन्त

७९७. तयि (तय्) रक्षणे च। चाद्गतौ।

व०	तयते	तयेते	तयन्ते
स०	तयेत	तयेयाताम्	तयेरन्
प०	तयताम्	तयेताम्	तयन्ताम्
ह्य०	अतयत	अतयेताम्	अतयन्त
अ०	अतयिष्ट	अतयिषाताम्	अतयिषत
प०	तेये	तेयाते	तेयिरे
आ०	तयिषीष्ट	तयिषीयास्ताम्	तयिषीरन्
श्व०	तयिता	तयितारौ	तयितारः
भ०	तयिष्यते	तयिष्येते	तयिष्यन्ते
क्रि०	अतयिष्यत	अतयिष्येताम्	अतयिष्यन्त

७९८. णयि (नय्) रक्षणे च। चाद्गतौ। नयि (७९४) वत्। पृथक्पाठस्तु प्रणयते इत्यादौ णत्वार्थः।

७९९. दयि (दय्) दानगतिहिंसादहनेषु च। चकाराद्रक्षणे।

व०	दयते	दयेते	दयन्ते
स०	दयेत	दयेयाताम्	दयेरन्
द०	दयताम्	दयेताम्	दयन्ताम्
ह्य०	अदयत	अदयेताम्	अदयन्त
द०	अदयिष्ट	अदयिषाताम्	अदयिषत
प०	दयाञ्चक्रे	दयाञ्चक्राते	दयाञ्चक्रिरे
आ०	दयिषीष्ट	दयिषीयास्ताम्	दयिषीरन्
श्व०	दयिता	दयितारौ	दयितारः
भ०	दयिष्यते	दयिष्येते	दयिष्यन्ते
क्रि०	अदयिष्यत	अदयिष्येताम्	अदयिष्यन्त

८००. ऊयैङ् (उय्) तन्तुसन्ताने।

व०	ऊयते	ऊयेते	ऊयन्ते
स०	ऊयेत	ऊयेयाताम्	ऊयेरन्
प०	ऊयताम्	ऊयेताम्	ऊयन्ताम्
ह्य०	औयत	औयेताम्	औयन्त
अ०	औयिष्ट	औयिषाताम्	औयिषत
प०	ऊयाञ्चक्रे	ऊयाञ्चक्राते	ऊयाञ्चक्रिरे
	ऊयाम्बभूव।	ऊयामास।	
आ०	ऊयिषीष्ट	ऊयिषीयास्ताम्	ऊयिषीरन्
श्व०	ऊयिता	ऊयितारौ	ऊयितारः
भ०	ऊयिष्यते	ऊयिष्येते	ऊयिष्यन्ते
क्रि०	औयिष्यत	औयिष्येताम्	औयिष्यन्त

८०१ पूयैङ् (पूय्) दुर्गन्धविशरणयोः।

व०	पूयते	पूयेते	पूयन्ते
स०	पूयेत	पूयेयाताम्	पूयेरन्
प०	पूयताम्	पूयेताम्	पूयन्ताम्
ह्य०	अपूयत	अपूयेताम्	अपूयन्त
अ०	अपूयिष्ट	अपूयिषाताम्	अपूयिषत
प०	पुपूये	पुपूयाते	पुपूयिरे
आ०	पूयिषीष्ट	पूयिषीयास्ताम्	पूयिषीरन्
श्व०	पूयिता	पूयितारौ	पूयितारः
भ०	पूयिष्यते	पूयिष्येते	पूयिष्यन्ते
क्रि०	अपूयिष्यत	अपूयिष्येताम्	अपूयिष्यन्त

८०२. क्नूयैङ् (क्नूय्) शब्दोन्दनयोः। उन्दनं क्लेदनम्।

व०	क्नूयते	क्नूयेते	क्नूयन्ते
स०	क्नूयेत	क्नूयेयाताम्	क्नूयेरन्
प०	क्नूयताम्	क्नूयेताम्	क्नूयन्ताम्
ह्य०	अक्नूयत	अक्नूयेताम्	अक्नूयन्त
अ०	अक्नूयिष्ट	अक्नूयिषाताम्	अक्नूयिषत
प०	चुक्नूये	चुक्नूयाते	चुक्नूयिरे
आ०	क्नूयिषीष्ट	क्नूयिषीयास्ताम्	क्नूयिषीरन्
श्व०	क्नूयिता	क्नूयितारौ	क्नूयितारः
भ०	क्नूयिष्यते	क्नूयिष्येते	क्नूयिष्यन्ते
क्रि०	अक्नूयिष्यत	अक्नूयिष्येताम्	अक्नूयिष्यन्त

८०३. क्ष्मायैङ् (क्ष्माय्) विधूनने।

व०	क्ष्मायते	क्ष्मायेते	क्ष्मायन्ते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स०	क्ष्मायेत	क्ष्मायेयाताम्	क्ष्मायेरन्
प०	क्ष्मायताम्	क्ष्मायेताम्	क्ष्मायन्ताम्
ह्य०	अक्ष्मायत	अक्ष्मायेताम्	अक्ष्मायन्त
अ०	अक्ष्मायिष्ट	अक्ष्मायिषाताम्	अक्ष्मायिषत
प०	चक्ष्माये	चक्ष्मायाते	चक्ष्मायिरे
आ०	क्ष्मायिषीष्ट	क्ष्मायिषीयास्ताम्	क्ष्मायिषीरन्
श्व०	क्ष्मायिता	क्ष्मायितारौ	क्ष्मायितारः
भ०	क्ष्मायिष्यते	क्ष्मायिष्येते	क्ष्मायिष्यन्ते
क्रि०	अक्ष्मायिष्यत	अक्ष्मायिष्येताम्	अक्ष्मायिष्यन्त

८०४. स्फायैङ् (स्फाय्) वृद्धौ।

व०	स्फायते	स्फायेते	स्फायन्ते
स०	स्फायेत	स्फायेयाताम्	स्फायेरन्
प०	स्फायताम्	स्फायेताम्	स्फायन्ताम्
ह्य०	अस्फायत	अस्फायेताम्	अस्फायन्त
अ०	अस्फायिष्ट	अस्फायिषाताम्	अस्फायिषत
प०	पस्फाये	पस्फायाते	पस्फायिरे
आ०	स्फायिषीष्ट	स्फायिषीयास्ताम्	स्फायिषीरन्
श्व०	स्फायिता	स्फायितारौ	स्फायितारः
भ०	स्फायिष्यते	स्फायिष्येते	स्फायिष्यन्ते
क्रि०	अस्फायिष्यत	अस्फायिष्येताम्	अस्फायिष्यन्त

८०५. ओप्यायैङ् (प्याय्) वृद्धौ।

व०	प्यायते	प्यायेते	प्यायन्ते
स०	प्यायेत	प्यायेयाताम्	प्यायेरन्
प०	प्यायताम्	प्यायेताम्	प्यायन्ताम्
ह्य०	अप्यायत	अप्यायेताम्	अप्यायन्त
अ०	अप्यायिष्ट	अप्यायिषाताम्	अप्यायिषत
प०	पिप्ये	पिप्याते	पिप्यिरे
आ०	प्यायिषीष्ट	प्यायिषीयास्ताम्	प्यायिषीरन्
श्व०	प्यायिता	प्यायितारौ	प्यायितारः
भ०	प्यायिष्यते	प्यायिष्येते	प्यायिष्यन्ते
क्रि०	अप्यायिष्यत	अप्यायिष्येताम्	अप्यायिष्यन्त

८०६. तायृङ् (ताय्) सन्तानपालनयोः।

सन्तानप्रबन्धः।

व०	तायते	तायेते	तायन्ते
स०	तायेत	तायेयाताम्	तायेरन्
प०	तायताम्	तायेताम्	तायन्ताम्
ह्य०	अतायत	अतायेताम्	अतायन्त
अ०	अतायिष्ट	अतायिषाताम्	अतायिषत
प०	तताये	ततायाते	ततायिरे
आ०	तायिषीष्ट	तायिषीयास्ताम्	तायिषीरन्
श्व०	तायिता	तायितारौ	तायितारः
भ०	तायिष्यते	तायिष्येते	तायिष्यन्ते
क्रि०	अतायिष्यत	अतायिष्येताम्	अतायिष्यन्त

८०७. वलि (वल्) संवरणे।

अथ लान्ता नव सेटश्च।

व०	वलते	वलेते	वलन्ते
स०	वलेत	वलेयाताम्	वलेरन्
प०	वलताम्	वलेताम्	वलन्ताम्
ह्य०	अवलत	अवलेताम्	अवलन्त
अ०	अवलिष्ट	अवलिषाताम्	अवलिषत
प०	ववले	ववलाते	ववलिरे
आ०	वलिषीष्ट	वलिषीयास्ताम्	वलिषीरन्
श्व०	वलिता	वलितारौ	वलितारः
ल०	वलिष्यते	वलिष्येते	वलिष्यन्ते
क्रि०	अवलिष्यत	अवलिष्येताम्	अवलिष्यन्त

८०८ वल्लि (वल्ल्) संवरणे।

व०	वल्लते	वल्लेते	वल्लन्ते
स०	वल्लेत	वल्लेयाताम्	वल्लेरन्
प०	वल्लताम्	वल्लेताम्	वल्लन्ताम्
ह्य०	अवल्लत	अवल्लेताम्	अवल्लन्त
अ०	अवल्लिष्ट	अवल्लिषाताम्	अवल्लिषत
प०	ववल्ले	ववल्लाते	ववल्लिरे
आ०	वल्लिषीष्ट	वल्लिषीयास्ताम्	वल्लिषीरन्
श्व०	वल्लिता	वल्लितारौ	वल्लितारः
ल०	वल्लिष्यते	वल्लिष्येते	वल्लिष्यन्ते
क्रि०	अवल्लिष्यत	अवल्लिष्येताम्	अवल्लिष्यन्त

८०९. शलि (शल) चलने च।

चकारात्संवरणे।

व०	शलते	शलेते	शलन्ते
स०	शलेत	शलेयाताम्	शलेरन्
प०	शलताम्	शलेताम्	शलन्ताम्
ह्य०	अशलत	अशलेताम्	अशलन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	अशलिष्ट	अशलिषाताम्	अशलिषत
प०	शेले	शेलाते	शेलिरे
आ०	शलिषीष्ट	शलिषीयास्ताम्	शलिषीरन्
श्व०	शलिता	शलितारौ	शलितार:
भ०	शलिष्यते	शलिष्येते	शलिष्यन्ते
क्रि०	अशलिष्यत	अशलिष्येताम्	अशलिष्यन्त

८१०. मलि (मल) धारणे।

व०	मलते	मलेते	मलन्ते
स०	मलेत	मलेयाताम्	मलेरन्
प०	मलताम्	मलेताम्	मलन्ताम्
ह्य०	अमलत	अमलेताम्	अमलन्त
अ०	अमलिष्ट	अमलिषाताम्	अमलिषत
प०	मेले	मेलाते	मेलिरे
आ०	मलिषीष्ट	मलिषीयास्ताम्	मलिषीरन्
श्व०	मलिता	मलितारौ	मलितार:
भ०	मलिष्यते	मलिष्येते	मलिष्यन्ते
क्रि०	अमलिष्यत	अमलिष्येताम्	अमलिष्यन्त

८११. मल्लि (मल्ल) धारणे।

व०	मल्लते	मल्लेते	मल्लन्ते
स०	मल्लेत	मल्लेयाताम्	मल्लेरन्
प०	मल्लताम्	मल्लेताम्	मल्लन्ताम्
ह्य०	अमल्लत	अमल्लेताम्	अमल्लन्त
अ०	अमल्लिष्ट	अमल्लिषाताम्	अमल्लिषत
प०	ममल्ले	ममल्लाते	ममल्लिरे
आ०	मल्लिषीष्ट	मल्लिषीयास्ताम्	मल्लिषीरन्
श्व०	मल्लिता	मल्लितारौ	मल्लितार:
भ०	मल्लिष्यते	मल्लिष्येते	मल्लिष्यन्ते
क्रि०	अमल्लिष्यत	अमल्लिष्येताम्	अमल्लिष्यन्त

८१२. भलि (भल) परिभाषणहिंसादानेषु।

व०	भलते	भलेते	भलन्ते
स०	भलेत	भलेयाताम्	भलेरन्
प०	भलताम्	भलेताम्	भलन्ताम्
ह्य०	अभलत	अभलेताम्	अभलन्त
अ०	अभलिष्ट	अभलिषाताम्	अभलिषत
प०	बभले	बभलाते	बभलिरे
आ०	भलिषीष्ट	भलिषीयास्ताम्	भलिषीरन्
श्व०	भलिता	भलितारौ	भलितार:
भ०	भलिष्यते	भलिष्येते	भलिष्यन्ते
क्रि०	अभलिष्यत	अभलिष्येताम्	अभलिष्यन्त

८१३. भल्लि (भल्ल) परिभाषणहिंसादानेषु।

व०	भल्लते	भल्लेते	भल्लन्ते
स०	भल्लेत	भल्लेयाताम्	भल्लेरन्
प०	भल्लताम्	भल्लेताम्	भल्लन्ताम्
ह्य०	अभल्लत	अभल्लेताम्	अभल्लन्त
अ०	अभल्लिष्ट	अभल्लिषाताम्	अभल्लिषत
प०	बभल्ले	बभल्लाते	बभल्लिरे
आ०	भल्लिषीष्ट	भल्लिषीयास्ताम्	भल्लिषीरन्
श्व०	भल्लिता	भल्लितारौ	भल्लितार:
भ०	भल्लिष्यते	भल्लिष्येते	भल्लिष्यन्ते
क्रि०	अभल्लिष्यत	अभल्लिष्येताम्	अभल्लिष्यन्त

८१४. कलि (कल्) शब्दसङ्ख्यानयो:।

व०	कलते	कलेते	कलन्ते
स०	कलेत	कलेयाताम्	कलेरन्
प०	कलताम्	कलेताम्	कलन्ताम्
ह्य०	अकलत	अकलेताम्	अकलन्त
अ०	अकलिष्ट	अकलिषाताम्	अकलिषत
प०	चकले	चकलाते	चकलिरे
आ०	कलिषीष्ट	कलिषीयास्ताम्	कलिषीरन्
श्व०	कलिता	कलितारौ	कलितार:
क०	कलिष्यते	कलिष्येते	कलिष्यन्ते
क्रि०	अकलिष्यत	अकलिष्येताम्	अकलिष्यन्त

८१५. कल्लि (कल्ल) अशब्दे।

शब्दस्याभावोऽशब्दं तूष्णींभाव:।

व०	कल्लते	कल्लेते	कल्लन्ते
स०	कल्लेत	कल्लेयाताम्	कल्लेरन्
प०	कल्लताम्	कल्लेताम्	कल्लन्ताम्
ह्य०	अकल्लत	अकल्लेताम्	अकल्लन्त
अ०	अकल्लिष्ट	अकल्लिषाताम्	अकल्लिषत
प०	चकल्ले	चकल्लाते	चकल्लिरे
आ०	कल्लिषीष्ट	कल्लिषीयास्ताम्	कल्लिषीरन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	कल्लिता	कल्लितारौ	कल्लितारः
भ०	कल्लिष्यते	कल्लिष्येते	कल्लिष्यन्ते
क्रि०	अकल्लिष्यत	अकल्लिष्येताम्	अकल्लिष्यन्त

अथ वान्ताश्चतुर्दश सेटश्च।

८१६. तेवृङ् (तेव्) देवने।

व०	तेवते	तेवेते	तेवन्ते
स०	तेवेत	तेवेयाताम्	तेवेरन्
प०	तेवताम्	तेवेताम्	तेवन्ताम्
ह्य०	अतेवत	अतेवेताम्	अतेवन्त
अ०	अतेविष्ट	अतेविषाताम्	अतेविषत
प०	तितेवे	तितेवाते	तितेविरे
आ०	तेविषीष्ट	तेविषीयास्ताम्	तेविषीरन्
श्व०	तेविता	तेवितारौ	तेवितारः
भ०	तेविष्यते	तेविष्येते	तेविष्यन्ते
क्रि०	अतेविष्यत	अतेविष्येताम्	अतेविष्यन्त

८१७. देवृङ् (देव्) देवने।

व०	देवते	देवेते	देवन्ते
स०	देवेत	देवेयाताम्	देवेरन्
प०	देवताम्	देवेताम्	देवन्ताम्
ह्य०	अदेवत	अदेवेताम्	अदेवन्त
अ०	अदेविष्ट	अदेविषाताम्	अदेविषत
प०	दिदेवे	दिदेवाते	दिदेविरे
आ०	देविषीष्ट	देविषीयास्ताम्	देविषीरन्
श्व०	देविता	देवितारौ	देवितारः
भ०	देविष्यते	देविष्येते	देविष्यन्ते
क्रि०	अदेविष्यत	अदेविष्येताम्	अदेविष्यन्त

८१८. षेवृङ् (सेव्) सेवने।

व०	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
स०	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
प०	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
ह्य०	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
अ०	असेविष्ट	असेविषाताम्	असेविषत
प०	सिषेवे	सिषेवाते	सिषेविरे
आ०	सेविषीष्ट	सेविषीयास्ताम्	सेविषीरन्
श्व०	सेविता	सेवितारौ	सेवितारः
भ०	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
क्रि०	असेविष्यत	असेविष्येताम्	असेविष्यन्त

८१९. सेवृङ् (सेव्) सेवने।

व०	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
स०	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
प०	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
ह्य०	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
अ०	असेविष्ट	असेविषाताम्	असेविषत
प०	सिसेवे	सिसेवाते	सिसेविरे
आ०	सेविषीष्ट	सेविषीयास्ताम्	सेविषीरन्
श्व०	सेविता	सेवितारौ	सेवितारः
भ०	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
क्रि०	असेविष्यत	असेविष्येताम्	असेविष्यन्त

८२०. केवृङ् (केव्) सेवने।

व०	केवते	केवेते	केवन्ते
स०	केवेत	केवेयाताम्	केवेरन्
प०	केवताम्	केवेताम्	केवन्ताम्
ह्य०	अकेवत	अकेवेताम्	अकेवन्त
अ०	अकेविष्ट	अकेविषाताम्	अकेविषत
प०	चिकेवे	चिकेवाते	चिकेविरे
आ०	केविषीष्ट	केविषीयास्ताम्	केविषीरन्
श्व०	केविता	केवितारौ	केवितारः
भ०	केविष्यते	केविष्येते	केविष्यन्ते
क्रि०	अकेविष्यत	अकेविष्येताम्	अकेविष्यन्त

८२१. खेवृङ् (खेव्) सेवने।

व०	खेवते	खेवेते	खेवन्ते
स०	खेवेत	खेवेयाताम्	खेवेरन्
प०	खेवताम्	खेवेताम्	खेवन्ताम्
ह्य०	अखेवत	अखेवेताम्	अखेवन्त
अ०	अखेविष्ट	अखेविषाताम्	अखेविषत
प०	चिखेवे	चिखेवाते	चिखेविरे
आ०	खेविषीष्ट	खेविषीयास्ताम्	खेविषीरन्
श्व०	खेविता	खेवितारौ	खेवितारः
भ०	खेविष्यते	खेविष्येते	खेविष्यन्ते
क्रि०	अखेविष्यत	अखेविष्येताम्	अखेविष्यन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८२२. गेवृङ् (गेव्) सेवने।

व०	गेवते	गेवेते	गेवन्ते
स०	गेवेत	गेवेयाताम्	गेवेरन्
प०	गेवताम्	गेवेताम्	गेवन्ताम्
ह्य०	अगेवत	अगेवेताम्	अगेवन्त
अ०	अगेविष्ट	अगेविषाताम्	अगेविषत
प०	जिगेवे	जिगेवाते	जिगेविरे
आ०	गेविषीष्ट	गेविषीयास्ताम्	गेविषीरन्
श्व०	गेविता	गेवितारौ	गेवितारः
भ०	गेविष्यते	गेविष्येते	गेविष्यन्ते
क्रि०	अगेविष्यत	अगेविष्येताम्	अगेविष्यन्त

८२३. ग्लेवृङ् (ग्लेव्) सेवने।

व०	ग्लेवते	ग्लेवेते	ग्लेवन्ते
स०	ग्लेवेत	ग्लेवेयाताम्	ग्लेवेरन्
प०	ग्लेवताम्	ग्लेवेताम्	ग्लेवन्ताम्
ह्य०	अग्लेवत	अग्लेवेताम्	अग्लेवन्त
अ०	अग्लेविष्ट	अग्लेविषाताम्	अग्लेविषत
प०	जिग्लेवे	जिग्लेवाते	जिग्लेविरे
आ०	ग्लेविषीष्ट	ग्लेविषीयास्ताम्	ग्लेविषीरन्
श्व०	ग्लेविता	ग्लेवितारौ	ग्लेवितारः
भ०	ग्लेविष्यते	ग्लेविष्येते	ग्लेविष्यन्ते
क्रि०	अग्लेविष्यत	अग्लेविष्येताम्	अग्लेविष्यन्त

८२४. पेवृङ् (पेव्) सेवने।

व०	पेवते	पेवेते	पेवन्ते
स०	पेवेत	पेवेयाताम्	पेवेरन्
प०	पेवताम्	पेवेताम्	पेवन्ताम्
ह्य०	अपेवत	अपेवेताम्	अपेवन्त
अ०	अपेविष्ट	अपेविषाताम्	अपेविषत
प०	पिपेवे	पिपेवाते	पिपेविरे
आ०	पेविषीष्ट	पेविषीयास्ताम्	पेविषीरन्
श्व०	पेविता	पेवितारौ	पेवितारः
भ०	पेविष्यते	पेविष्येते	पेविष्यन्ते
क्रि०	अपेविष्यत	अपेविष्येताम्	अपेविष्यन्त

८२५. प्लेवृङ् (प्लेव्) सेवने।

व०	प्लेवते	प्लेवेते	प्लेवन्ते
स०	प्लेवेत	प्लेवेयाताम्	प्लेवेरन्
प०	प्लेवताम्	प्लेवेताम्	प्लेवन्ताम्
ह्य०	अप्लेवत	अप्लेवेताम्	अप्लेवन्त
अ०	अप्लेविष्ट	अप्लेविषाताम्	अप्लेविषत
प०	पिप्लेवे	प्लिप्लेवाते	पिप्लेविरे
आ०	प्लेविषीष्ट	प्लेविषीयास्ताम्	प्लेविषीरन्
श्व०	प्लेविता	प्लेवितारौ	प्लेवितारः
भ०	प्लेविष्यते	प्लेविष्येते	प्लेविष्यन्ते
क्रि०	अप्लेविष्यत	अप्लेविष्येताम्	अप्लेविष्यन्त

८२६. मेवृङ् (मेव्) सेवने।

व०	मेवते	मेवेते	मेवन्ते
स०	मेवेत	मेवेयाताम्	मेवेरन्
प०	मेवताम्	मेवेताम्	मेवन्ताम्
ह्य०	अमेवत	अमेवेताम्	अमेवन्त
अ०	अमेविष्ट	अमेविषाताम्	अमेविषत
प०	मिमेवे	मिमेवाते	मिमेविरे
आ०	मेविषीष्ट	मेविषीयास्ताम्	मेविषीरन्
श्व०	मेविता	मेवितारौ	मेवितारः
भ०	मेविष्यते	मेविष्येते	मेविष्यन्ते
क्रि०	अमेविष्यत	अमेविष्येताम्	अमेविष्यन्त

८२७. म्लेवृङ् (म्लेव्) सेवने।

व०	म्लेवते	म्लेवेते	म्लेवन्ते
स०	म्लेवेत	म्लेवेयाताम्ल्	म्लेवेरन्
प०	म्लेवताम्ल्	म्लेवेताम्ल्	म्लेवन्ताम्ल
ह्य०	अम्लेवत	अम्लेवेताम्	अम्लेवन्त
अ०	अम्लेविष्ट	अम्लेविषाताम्	अम्लेविषत
प०	मिम्लेवे	मिम्लेवाते	मिम्लेविरे
आ०	म्लेविषीष्ट	म्लेविषीयास्ताम्	म्लेविषीरन्
श्व०	म्लेविता	म्लेवितारौ	म्लेवितारः
भ०	म्लेविष्यते	म्लेविष्येते	म्लेविष्यन्ते
क्रि०	अम्लेविष्यत	अम्लेविष्येताम्	अम्लेविष्यन्त

८२८. रेवृङ् (रेव्) गतौ।

व०	रेवते	रेवेते	रेवन्ते
स०	रेवेत	रेवेयाताम्	रेवेरन्
प०	रेवताम्	रेवेताम्	रेवन्ताम्
ह्य०	अरेवत	अरेवेताम्	अरेवन्त
अ०	अरेविष्ट	अरेविषाताम्	अरेविषत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	रिरेवे	रिरेवाते	रिरेविरे
आ०	रेविषीष्ट	रेविषीयास्ताम्	रेविषीरन्
श्व०	रेविता	रेवितारौ	रेवितार:
भ०	रेविष्यते	रेविष्येते	रेविष्यन्ते
क्रि०	अरेविष्यत	अरेविष्येताम्	अरेविष्यन्त

८२९. पवि (पव्) गतौ।

प्लुतिगतावित्यन्ये।

व०	पवते	पवेते	पवन्ते
स०	पवेत	पवेयाताम्	पवेरन्
प०	पवताम्	पवेताम्	पवन्ताम्
ह्य०	अपवत	अपवेताम्	अपवन्त
अ०	अपविष्ट	अपविषाताम्	अपविषत
प०	पेवे	पेवाते	पेविरे
आ०	पविषीष्ट	पविषीयास्ताम्	पविषीरन्
श्व०	पविता	पवितारौ	पवितार:
भ०	पविष्यते	पविष्येते	पविष्यन्ते
क्रि०	अपविष्यत	अपविष्येताम्	अपविष्यन्त

अथ शान्तौ द्वौ सेटौ च।

८३०. काशृङ् (काश्) दीप्तौ।

व०	काशते	काशेते	काशन्ते
स०	काशेत	काशेयाताम्	काशेरन्
प०	काशताम्	काशेताम्	काशन्ताम्
ह्य०	अकाशत	अकाशेताम्	अकाशन्त
अ०	अकाशिष्ट	अकाशिषाताम्	अकाशिषत
प०	चकाशे	चकाशाते	चकाशिरे
आ०	काशिषीष्ट	काशिषीयास्ताम्	काशिषीरन्
श्व०	काशिता	काशितारौ	काशितार:
भ०	काशिष्यते	काशिष्येते	काशिष्यन्ते
क्रि०	अकाशिष्यत	अकाशिष्येताम्	अकाशिष्यन्त

८३१. क्लेशि (क्लेश्) विबाधने।

व०	क्लेशते	क्लेशेते	क्लेशन्ते
स०	क्लेशेत	क्लेशेयाताम्	क्लेशेरन्
प०	क्लेशताम्	क्लेशेताम्	क्लेशन्ताम्
ह्य०	अक्लेशत	अक्लेशेताम्	अक्लेशन्त
अ०	अक्लेशिष्ट	अक्लेशिषाताम्	अक्लेशिषत
प०	चिक्लेशे	चिक्लेशाते	चिक्लेशिरे
आ०	क्लेशिषीष्ट	क्लेशिषीयास्ताम्	क्लेशिषीरन्
श्व०	क्लेशिता	क्लेशितारौ	क्लेशितार:
भ०	क्लेशिष्यते	क्लेशिष्येते	क्लेशिष्यन्ते
क्रि०	अक्लेशिष्यत	अक्लेशिष्येताम्	अक्लेशिष्यन्त

अथ षान्ता द्वादश सेटश्च।

८३२. भाषि (भाष्) च व्यक्तायां वाचि। प्रकृते: परश्चकार: प्रकृतिमनुकर्षति। तेन क्लेशिर्भाषिश्च व्यक्तायां वाचि। क्लेशिरुदाहृत एव। भाषि

व०	भाषते	भाषेते	भाषन्ते
	भाषसे	भाषेथे	भाषध्वे
	भाषे	भाषावहे	भाषामहे
स०	भाषेत	भाषेयाताम्	भाषेरन्
	भाषेथा:	भाषेयाथाम्	भाषेध्वम्
	भाषेय	भाषेवहि	भाषेमहि
प०	भाषताम्	भाषेताम्	भाषन्ताम्
	भाषस्व	भाषेथाम्	भाषध्वम्
	भाषै	भाषावहै	भाषामहै
ह्य०	अभाषत	अभाषेताम्	अभाषन्त
	अभाषथा:	अभाषथाम्	अभाषध्वम्
	अभाषे	अभाषावहि	अभाषामहि
अ०	अभाषिष्ट	अभाषिषाताम्	अभाषिषत
	अभाषिष्ठा:	अभाषिषाथाम्	अभाषिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अभाषिषि	अभाषिष्वहि	अभाषिष्महि
प०	बभाषे	बभाषाते	बभाषिरे
	बभाषिषे	बभाषाथे	बभाषिध्वे
	बभाषे	बभाषिवहे	बभाषिमहे
आ०	भाषिषीष्ट	भाषिषीयास्ताम्	भाषिषीरन्
	भाषिषीष्ठा:	भाषिषीयास्थाम्	भाषिषीध्वम्
	भाषिषीय	भाषिषीवहि	भाषिषीमहि
श्व०	भाषिता	भाषितारौ	भाषितार:
	भाषितासे	भाषितासाथे	भाषिताध्वे
	भाषिताहे	भाषितास्वहे	भाषितास्महे
भ०	भाषिष्यते	भाषिष्येते	भाषिष्यन्ते
	भाषिष्यसे	भाषिष्येथे	भाषिष्यध्वे
	भाषिष्ये	भाषिष्यावहे	भाषिष्यामहे
क्रि०	अभाषिष्यत	अभाषिष्येताम्	अभाषिष्यन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अभाषिष्यथा:	अभाषिष्येथाम्	अभाषिष्यध्वम्
	अभाषिष्ये	अभाषिष्यावहि	अभाषिष्यामहि

८३३ ईषि (ईष्) गतिहिंसादर्शनेषु।

व०	ईषते	ईषेते	ईषन्ते
	ईषसे	ईषेथे	ईषध्वे
	ईषे	ईषावहे	ईषामहे
स०	ईषेत	ईषेयाताम्	ईषेरन्
	ईषेथा:	ईषेयाथाम्	ईषेध्वम्
	ईषेय	ईषेवहि	ईषेमहि
प०	ईषताम्	ईषेताम्	ईषन्ताम्
	ईषस्व	ईषेथाम्	ईषध्वम्
	ईषै	ईषावहै	ईषामहै
ह्य०	ऐषत	ऐषेताम्	ऐषन्त
	ऐषथा:	ऐषथाम्	ऐषध्वम्
	ऐषे	ऐषावहि	ऐषामहि
अ०	ऐषिष्ट	ऐषिषाताम्	ऐषिषत
	ऐषिष्ठा:	ऐषिषाथाम्	ऐषिषृद्वम्/ध्वम्
	ऐषिषि	ऐषिष्वहि	ऐषिष्महि
प०	ईषाञ्चक्रे	ईषाञ्चक्राते	ईषाञ्चक्रिरे
	ईषाञ्चकृषे	ईषाञ्चक्राथे	ईषाञ्चकृद्वे
	ईषाञ्चक्रे	ईषाञ्चकृवहे	ईषाञ्चकृमहे
	इषाम्बभूव/इषामास।		
आ०	ईषिषीष्ट	ईषिषीयास्ताम्	ईषिषीरन्
	ईषिषीष्ठा:	ईषिषीयास्थाम्	ईषिषीध्वम्
	ईषिषीय	ईषिषीवहि	ईषिषीमहि
श्व०	ईषिता	ईषितारौ	ईषितार:
	ईषितासे	ईषितासाथे	ईषिताध्वे
	ईषिताहे	ईषितास्वहे	ईषितास्महे
भ०	ईषिष्यते	ईषिष्येते	ईषिष्यन्ते
	ईषिष्यसे	ईषिष्येथे	ईषिष्यध्वे
	ईषिष्ये	ईषिष्यावहे	ईषिष्यामहे
क्रि०	ऐषिष्यत	ऐषिष्येताम्	ऐषिष्यन्त
	ऐषिष्यथा:	ऐषिष्येथाम्	ऐषिष्यध्वम्
	ऐषिष्ये	ऐषिष्यावहि	ऐषिष्यामहि

८३४. गेषृङ् (गेष्) अन्विच्छायाम्।

अन्विच्छान्वेषणम्।

व०	गेषते	गेषेते	गेषन्ते
स०	गेषेत	गेषेयाताम्	गेषेरन्
प०	गेषताम्	गेषेताम्	गेषन्ताम्
ह्य०	अगेषत	अगेषेताम्	अगेषन्त
अ०	अगेषिष्ट	अगेषिषाताम्	अगेषिषत
प०	जिगेषे	जिगेषाते	जिगेषिरे
आ०	गेषिषीष्ट	गेषिषीयास्ताम्	गेषिषीरन्
श्व०	गेषिता	गेषितारौ	गेषितार:
भ०	गेषिष्यते	गेषिष्येते	गेषिष्यन्ते
क्रि०	अगेषिष्यत	अगेषिष्येताम्	अगेषिष्यन्त

८३५. येषृङ् (येष्) प्रयत्ने।

व०	येषते	येषेते	येषन्ते
स०	येषेत	येषेयाताम्	येषेरन्
प०	येषताम्	येषेताम्	येषन्ताम्
ह्य०	अयेषत	अयेषेताम्	अयेषन्त
अ०	अयेषिष्ट	अयेषिषाताम्	अयेषिषत
प०	यियेषे	यियेषाते	यियेषिरे
आ०	येषिषीष्ट	येषिषीयास्ताम्	येषिषीरन्
श्व०	येषिता	येषितारौ	येषितार:
भ०	येषिष्यते	येषिष्येते	येषिष्यन्ते
क्रि०	अयेषिष्यत	अयेषिष्येताम्	अयेषिष्यन्त

८३६. जेषृङ् (जेष्) गतौ।

व०	जेषते	जेषेते	जेषन्ते
स०	जेषेत	जेषेयाताम्	जेषेरन्
प०	जेषताम्	जेषेताम्	जेषन्ताम्
ह्य०	अजेषत	अजेषेताम्	अजेषन्त
अ०	अजेषिष्ट	अजेषिषाताम्	अजेषिषत
प०	जिजेषे	जिजेषाते	जिजेषिरे
आ०	जेषिषीष्ट	जेषिषीयास्ताम्	जेषिषीरन्
श्व०	जेषिता	जेषितारौ	जेषितार:
भ०	जेषिष्यते	जेषिष्येते	जेषिष्यन्ते
क्रि०	अजेषिष्यत	अजेषिष्येताम्	अजेषिष्यन्त

८३७. णेषृङ् (नेष्) गतौ।

व०	नेषते	नेषेते	नेषन्ते
स०	नेषेत	नेषेयाताम्	नेषेरन्
प०	नेषताम्	नेषेताम्	नेषन्ताम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	अनेषत	अनेषेताम्	अनेषन्त
अ०	अनेषिष्ट	अनेषिषाताम्	अनेषिषत
प०	निनेषे	निनेषाते	निनेषिरे
आ०	नेषिषीष्ट	नेषिषीयास्ताम्	नेषिषीरन्
श्व०	नेषिता	नेषितारौ	नेषितार:
भ०	नेषिष्यते	नेषिष्येते	नेषिष्यन्ते
क्रि०	अनेषिष्यत	अनेषिष्येताम्	अनेषिष्यन्त

८३८ एषृङ् (एष्) गतौ।

व०	एषते	एषेते	एषन्ते
स०	एषेत	एषेयाताम्	एषेरन्
प०	एषताम्	एषेताम्	एषन्ताम्
ह्य०	ऐषत	ऐषेताम्	ऐषन्त
अ०	ऐषिष्ट	ऐषिषाताम्	ऐषिषत
प०	एषाञ्चक्रे	एषाञ्चक्राते	एषाञ्चक्रिरे
आ०	एषिषीष्ट	एषिषीयास्ताम्	एषिषीरन्
श्व०	एषिता	एषितारौ	एषितार:
भ०	एषिष्यते	एषिष्येते	एषिष्यन्ते
क्रि०	ऐषिष्यत	ऐषिष्येताम्	ऐषिष्यन्त

८३९. ह्रेषृङ् (ह्रेष्) गतौ।

व०	ह्रेषते	ह्रेषेते	ह्रेषन्ते
स०	ह्रेषेत	ह्रेषेयाताम्	ह्रेषेरन्
प०	ह्रेषताम्	ह्रेषेताम्	ह्रेषन्ताम्
ह्य०	अह्रेषत	अह्रेषेताम्	अह्रेषन्त
अ०	अह्रेषिष्ट	अह्रेषिषाताम्	अह्रेषिषत
प०	जिह्रेषे	जिह्रेषाते	जिह्रेषिरे
आ०	ह्रेषिषीष्ट	ह्रेषिषीयास्ताम्	ह्रेषिषीरन्
श्व०	ह्रेषिता	ह्रेषितारौ	ह्रेषितार:
भ०	ह्रेषिष्यते	ह्रेषिष्येते	ह्रेषिष्यन्ते
क्रि०	अह्रेषिष्यत	अह्रेषिष्येताम्	अह्रेषिष्यन्त

८४०. रेषृङ् (रेष्) अव्यक्ते शब्दे।

व०	रेषते	रेषेते	रेषन्ते
स०	रेषेत	रेषेयाताम्	रेषेरन्
प०	रेषताम्	रेषेताम्	रेषन्ताम्
ह्य०	अरेषत	अरेषेताम्	अरेषन्त
अ०	अरेषिष्ट	अरेषिषाताम्	अरेषिषत
प०	रिरेषे	रिरेषाते	रिरेषिरे
आ०	रेषिषीष्ट	रेषिषीयास्ताम्	रेषिषीरन्
श्व०	रेषिता	रेषितारौ	रेषितार:
भ०	रेषिष्यते	रेषिष्येते	रेषिष्यन्ते
क्रि०	अरेषिष्यत	अरेषिष्येताम्	अरेषिष्यन्त

८४१. हेषृङ् (हेष्) अव्यक्ते शब्दे।

व०	हेषते	हेषेते	हेषन्ते
स०	हेषेत	हेषेयाताम्	हेषेरन्
प०	हेषताम्	हेषेताम्	हेषन्ताम्
ह्य०	अहेषत	अहेषेताम्	अहेषन्त
अ०	अहेषिष्ट	अहेषिषाताम्	अहेषिषत
प०	जिहेषे	जिहेषाते	जिहेषिरे
आ०	हेषिषीष्ट	हेषिषीयास्ताम्	हेषिषीरन्
श्व०	हेषिता	हेषितारौ	हेषितार:
भ०	हेषिष्यते	हेषिष्येते	हेषिष्यन्ते
क्रि०	अहेषिष्यत	अहेषिष्येताम्	अहेषिष्यन्त

८४२. पर्षि (पर्ष्) स्नेहने।

व०	पर्षते	पर्षेते	पर्षन्ते
स०	पर्षेत	पर्षेयाताम्	पर्षेरन्
प०	पर्षताम्	पर्षेताम्	पर्षन्ताम्
ह्य०	अपर्षत	अपर्षेताम्	अपर्षन्त
अ०	अपर्षिष्ट	अपर्षिषाताम्	अपर्षिषत
प०	पपर्षे	पपर्षाते	पपर्षिरे
आ०	पर्षिषीष्ट	पर्षिषीयास्ताम्	पर्षिषीरन्
श्व०	पर्षिता	पर्षितारौ	पर्षितार:
भ०	पर्षिष्यते	पर्षिष्येते	पर्षिष्यन्ते
क्रि०	अपर्षिष्यत	अपर्षिष्येताम्	अपर्षिष्यन्त

८४३. घुषुङ् (घुंष्) कान्तीकरणे।

व०	घुंषते	घुंषेते	घुंषन्ते
स०	घुंषेत	घुंषेयाताम्	घुंषेरन्
प०	घुंषताम्	घुंषेताम्	घुंषन्ताम्
ह्य०	अघुंषत	अघुंषेताम्	अघुंषन्त
अ०	अघुंषिष्ट	अघुंषिषाताम्	अघुंषिषत
प०	जुघुंषे	जुघुंषाते	जुघुंषिरे
आ०	घुंषिषीष्ट	घुंषिषीयास्ताम्	घुंषिषीरन्
श्व०	घुंषिता	घुंषितारौ	घुंषितार:
भ०	घुंषिष्यते	घुंषिष्येते	घुंषिष्यन्ते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रि०	अघुंषिष्यत	अघुंषिष्येताम्	अघुंषिष्यन्त

अथ सान्तास्त्रयोदश सेटश्च।

८४४. स्रंसूङ् (स्रंस्) प्रमादे।

प्रमादोऽवलेपः।

व०	स्रंसते	स्रंसेते	स्रंसन्ते
स०	स्रंसेत	स्रंसेयाताम्	स्रंसेरन्
प०	स्रंसताम्	स्रंसेताम्	स्रंसन्ताम्
ह्य०	अस्रंसत	अस्रंसेताम्	अस्रंसन्त
अ०	अस्रंसिष्ट	अस्रंसिषाताम्	अस्रंसिषत
प०	सस्रंसे	सस्रंसाते	सस्रंसिरे
आ०	स्रंसिषीष्ट	स्रंसिषीयास्ताम्	स्रंसिषीरन्
श्व०	स्रंसिता	स्रंसितारौ	स्रंसितारः
भ०	स्रंसिष्यते	स्रंसिष्येते	स्रंसिष्यन्ते
क्रि०	अस्रंसिष्यत	अस्रंसिष्येताम्	अस्रंसिष्यन्त

८४५. कासृङ् (कास्) शब्दकुत्सायाम्।

शब्दस्य कुत्सारोगः।

व०	कासते	कासेते	कासन्ते
स०	कासेत	कासेयाताम्	कासेरन्
प०	कासताम्	कासेताम्	कासन्ताम्
ह्य०	अकासत	अकासेताम्	अकासन्त
अ०	अकासिष्ट	अकासिषाताम्	अकासिषत
प०	कासाञ्चक्रे	कासाञ्चक्राते	कासाञ्चक्रिरे
	कासाम्बभूव/कासामास।		
आ०	कासिषीष्ट	कासिषीयास्ताम्	कासिषीरन्
श्व०	कासिता	कासितारौ	कासितारः
भ०	कासिष्यते	कासिष्येते	कासिष्यन्ते
क्रि०	अकासिष्यत	अकासिष्येताम्	अकासिष्यन्त

८४६. भासि (भास्) दीप्तौ।

व०	भासते	भासेते	भासन्ते
स०	भासेत	भासेयाताम्	भासेरन्
प०	भासताम्	भासेताम्	भासन्ताम्
ह्य०	अभासत	अभासेताम्	अभासन्त
अ०	अभासिष्ट	अभासिषाताम्	अभासिषत
प०	बभासे	बभासाते	बभासिरे
आ०	भासिषीष्ट	भासिषीयास्ताम्	भासिषीरन्
श्व०	भासिता	भासितारौ	भासितारः
भ०	भासिष्यते	भासिष्येते	भासिष्यन्ते
क्रि०	अभासिष्यत	अभासिष्येताम्	अभासिष्यन्त

८४७. टुभ्रासि (भ्रास्) दीप्तौ।

व०	भ्रासते	भ्रासेते	भ्रासन्ते
		तथा	
	भ्रास्यते	भ्रास्येते	भ्रास्यन्ते
स०	भ्रासेत	भ्रासेयाताम्	भ्रासेरन्
		तथा	
	भ्रास्येत	भ्रास्येयाताम्	भ्रास्येरन्
प०	भ्रासताम्	भ्रासेताम्	भ्रासन्ताम्
		तथा	
	भ्रास्यताम्	भ्रास्येताम्	भ्रास्यन्ताम्
ह्य०	अभ्रासत	अभ्रासेताम्	अभ्रासन्त
		तथा	
	अभ्रास्यत	अभ्रास्येताम्	अभ्रास्यन्त
अ०	अभ्रासिष्ट	अभ्रासिषाताम्	अभ्रासिषत
प०	बभ्रासे	बभ्रासाते	बभ्रासिरे
		तथा	
	भ्रेसे	भ्रेसाते	भ्रेसिरे
आ०	भ्रासिषीष्ट	भ्रासिषीयास्ताम्	भ्रासिषीरन्
श्व०	भ्रासिता	भ्रासितारौ	भ्रासितारः
भ०	भ्रासिष्यते	भ्रासिष्येते	भ्रासिष्यन्ते
क्रि०	अभ्रासिष्यत	अभ्रासिष्येताम्	अभ्रासिष्यन्त

८४८. टुभ्लासृङ् (भ्लास्) दीप्तौ।

व०	भ्लासते	भ्लासेते	भ्लासन्ते
		तथा	
	भ्लास्यते	भ्लास्येते	भ्लास्यन्ते
स०	भ्लासेत	भ्लासेयाताम्	भ्लासेरन्
		तथा	
	भ्लास्येत	भ्लास्येयाताम्	भ्लास्येरन्
प०	भ्लासताम्	भ्लासेताम्	भ्लासन्ताम्
		तथा	
	भ्लास्यताम्	भ्लास्येताम्	भ्लास्यन्ताम्
ह्य०	अभ्लासत	अभ्लासेताम्	अभ्लासन्त
		तथा	
	अभ्लास्यत	अभ्लास्येताम्	अभ्लास्यन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	अभ्लासिष्ट	अभ्लासिषाताम्	अभ्लासिषत
प०	बभ्लासे	बभ्लासाते	बभ्लासिरे
		तथा	
	भ्लेसे	भ्लेसाते	भ्लेसिरे
आ०	भ्लासिषीष्ट	भ्लासिषीयास्ताम्	भ्लासिषीरन्
श्व०	भ्लासिता	भ्लासितारौ	भ्लासितार:
भ०	भ्लासिष्यते	भ्लासिष्येते	भ्लासिष्यन्ते
क्रि०	अभ्लासिष्यत	अभ्लासिष्येताम्	अभ्लासिष्यन्त

८४९. रासृङ् (रास्) शब्दे।

व०	रासते	रासेते	रासन्ते
स०	रासेत	रासेयाताम्	रासेरन्
प०	रासताम्	रासेताम्	रासन्ताम्
ह्य०	अरासत	अरासेताम्	अरासन्त
अ०	अरासिष्ट	अरासिषाताम्	अरासिषत
प०	ररासे	ररासाते	ररासिरे
आ०	रासिषीष्ट	रासिषीयास्ताम्	रासिषीरन्
श्व०	रासिता	रासितारौ	रासितार:
भ०	रासिष्यते	रासिष्येते	रासिष्यन्ते
क्रि०	अरासिष्यत	अरासिष्येताम्	अरासिष्यन्त

८५०. णासृङ् (नास्) शब्दे।

पाठे धात्वादेरिति नत्वे।

व०	नासते	नासेते	नासन्ते
स०	नासेत	नासेयाताम्	नासेरन्
प०	नासताम्	नासेताम्	नासन्ताम्
ह्य०	अनासत	अनासेताम्	अनासन्त
अ०	अनासिष्ट	अनासिषाताम्	अनासिषत
प०	ननासे	ननासाते	ननासिरे
आ०	नासिषीष्ट	नासिषीयास्ताम्	नासिषीरन्
श्व०	नासिता	नासितारौ	नासितार:
भ०	नासिष्यते	नासिष्येते	नासिष्यन्ते
क्रि०	अनासिष्यत	अनासिष्येताम्	अनासिष्यन्त

८५१. णसि (नस्) कौटिल्ये।

व०	नसते	नसेते	नसन्ते
स०	नसेत	नसेयाताम्	नसेरन्
प०	नसताम्	नसेताम्	नसन्ताम्
ह्य०	अनसत	अनसेताम्	अनसन्त
अ०	अनसिष्ट	अनसिषाताम्	अनसिषत
प०	नेसे	नेसाते	नेसिरे
आ०	नसिषीष्ट	नसिषीयास्ताम्	नसिषीरन्
श्व०	नसिता	नसितारौ	नसितार:
भ०	नसिष्यते	नसिष्येते	नसिष्यन्ते
क्रि०	अनसिष्यत	अनसिष्येताम्	अनसिष्यन्त

८५२. भ्यसि (भ्यस्) भये।

व०	भ्यसते	भ्यसेते	भ्यसन्ते
स०	भ्यसेत	भ्यसेयाताम्	भ्यसेरन्
प०	भ्यसताम्	भ्यसेताम्	भ्यसन्ताम्
ह्य०	अभ्यसत	अभ्यसेताम्	अभ्यसन्त
अ०	अभ्यसिष्ट	अभ्यसिषाताम्	अभ्यसिषत
प०	बभ्यसे	बभ्यसाते	बभ्यसिरे
आ०	भ्यसिषीष्ट	भ्यसिषीयास्ताम्	भ्यसिषीरन्
श्व०	भ्यसिता	भ्यसितारौ	भ्यसितार:
भ०	भ्यसिष्यते	भ्यसिष्येते	भ्यसिष्यन्ते
क्रि०	अभ्यसिष्यत	अभ्यसिष्येताम्	अभ्यसिष्यन्त

८५३. आङः शसुङ् (आशंस्) इच्छायाम्। आङ इति आङः पर एवायं प्रयुज्यते नान्योपसर्गात्रापि केवल इति ज्ञापनार्थम्।

व०	आशंसते	आशंसेते	आशंसन्ते
स०	आशंसेत	आशंसेयाताम्	आशंसेरन्
प०	आशंसताम्	आशंसेताम्	आशंसन्ताम्
ह्य०	आशंसत	आशंसेताम्	आशंसन्त
अ०	आशंसिष्ट	आशंसिषाताम्	आशंसिषत
प०	आशशंसे	आशशंसाते	आशशंसिरे
आ०	आशंसिषीष्ट	आशंसिषीयास्ताम्	आशंसिषीरन्
श्व०	आशंसिता	आशंसितारौ	आशंसितार:
भ०	आशंसिष्यते	आशंसिष्येते	आशंसिष्यन्ते
क्रि०	आशंसिष्यत	आशंसिष्येताम्	आशंसिष्यन्त

८५४. ग्रसुङ् (ग्रस्) अदने।

व०	ग्रसते	ग्रसेते	ग्रसन्ते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स०	ग्रसेत	ग्रसेयाताम्	ग्रसेरन्
प०	ग्रसताम्	ग्रसेताम्	ग्रसन्ताम्
ह्य०	अग्रसत	अग्रसेताम्	अग्रसन्त
अ०	अग्रसिष्ट	अग्रसिषाताम्	अग्रसिषत
प०	जग्रसे	जग्रसाते	जग्रसिरे
आ०	ग्रसिषीष्ट	ग्रसिषीयास्ताम्	ग्रसिषीरन्
श्व०	ग्रसिता	ग्रसितारौ	ग्रसितारः
भ०	ग्रसिष्यते	ग्रसिष्येते	ग्रसिष्यन्ते
क्रि०	अग्रसिष्यत	अग्रसिष्येताम्	अग्रसिष्यन्त

८५५. ग्लसूङ् (ग्लस्) अदने।

व०	ग्लसते	ग्लसेते	ग्लसन्ते
स०	ग्लसेत	ग्लसेयाताम्	ग्लसेरन्
प०	ग्लसताम्	ग्लसेताम्	ग्लसन्ताम्
ह्य०	अग्लसत	अग्लसेताम्	अग्लसन्त
अ०	अग्लसिष्ट	अग्लसिषाताम्	अग्लसिषत
प०	जग्लसे	जग्लसाते	जग्लसिरे
आ०	ग्लसिषीष्ट	ग्लसिषीयास्ताम्	ग्लसिषीरन्
श्व०	ग्लसिता	ग्लसितारौ	ग्लसितारः
भ०	ग्लसिष्यते	ग्लसिष्येते	ग्लसिष्यन्ते
क्रि०	अग्लसिष्यत	अग्लसिष्येताम्	अग्लसिष्यन्त

८५६. घसुङ् (घंस्) करणे।

व०	घंसते	घंसेते	घंसन्ते
स०	घंसेत	घंसेयाताम्	घंसेरन्
प०	घंसताम्	घंसेताम्	घंसन्ताम्
ह्य०	अघंसत	अघंसेताम्	अघंसन्त
अ०	अघंसिष्ट	अघंसिषाताम्	अघंसिषत
प०	जघंसे	जघंसाते	जघंसिरे
आ०	घंसिषीष्ट	घंसिषीयास्ताम्	घंसिषीरन्
श्व०	घंसिता	घंसितारौ	घंसितारः
भ०	घंसिष्यते	घंसिष्येते	घंसिष्यन्ते
क्रि०	अघंसिष्यत	अघंसिष्येताम्	अघंसिष्यन्त

अथ हान्ता अष्टादश सेटश्च।

८५७ ईहि (ईह्) चेष्टायाम्।

व०	ईहते	ईहेते	ईहन्ते
स०	ईहेत	ईहेयाताम्	ईहेरन्
प०	ईहताम्	ईहेताम्	ईहन्ताम्
ह्य०	ऐहत	ऐहेताम्	ऐहन्त
अ०	ऐहिष्ट	ऐहिषाताम्	ऐहिषत
प०	ईहाञ्चक्रे	ईहाञ्चक्राते	ईहाञ्चक्रिरे
	ईहाम्बभूव/ईहामास।		
आ०	ईहिषीष्ट	ईहिषीयास्ताम्	ईहिषीरन्
श्व०	ईहिता	ईहितारौ	ईहितारः
भ०	ईहिष्यते	ईहिष्येते	ईहिष्यन्ते
क्रि०	ऐहिष्यत	ऐहिष्येताम्	ऐहिष्यन्त

८५८. अहुङ् (अंह्) गतौ।

व०	अंहते	अंहेते	अंहन्ते
स०	अंहेत	अंहेयाताम्	अंहेरन्
प०	अंहताम्	अंहेताम्	अंहन्ताम्
ह्य०	आंहत	आंहेताम्	आंहन्त
अ०	आंहिष्ट	आंहिषाताम्	आंहिषत
प०	आनंहे	आनंहाते	आनंहिरे
आ०	अंहिषीष्ट	अंहिषीयास्ताम्	अंहिषीरन्
श्व०	अंहिता	अंहितारौ	अंहितारः
भ०	अंहिष्यते	अंहिष्येते	अंहिष्यन्ते
क्रि०	आंहिष्यत	आंहिष्येताम्	आंहिष्यन्त

८५९ प्लेहि (प्लेह्) गतौ।

व०	प्लेहते	प्लेहेते	प्लेहन्ते
स०	प्लेहेत	प्लेहेयाताम्	प्लेहेरन्
प०	प्लेहताम्	प्लेहेताम्	प्लेहन्ताम्
ह्य०	अप्लेहत	अप्लेहेताम्	अप्लेहन्त
अ०	अप्लेहिष्ट	अप्लेहिषाताम्	अप्लेहिषत
प०	पिप्लिहे	पिप्लिहाते	पिप्लिहिस्वे
आ०	प्लेहिषीष्ट	प्लेहिषीयास्ताम्	प्लेहिषीरन्
श्व०	प्लेहिता	प्लेहितारौ	प्लेहितारः
भ०	प्लेहिष्यते	प्लेहिष्येते	प्लेहिष्यन्ते
क्रि०	अप्लेहिष्यत	अप्लेहिष्येताम्	अप्लेहिष्यन्त

८६०. गर्हि (गर्ह्) कुत्सने।

व०	गर्हते	गर्हेते	गर्हन्ते
स०	गर्हेत	गर्हेयाताम्	गर्हेरन्
प०	गर्हताम्	गर्हेताम्	गर्हन्ताम्
ह्य०	अगर्हत	अगर्हेताम्	अगर्हन्त
अ०	अगर्हिष्ट	अगर्हिषाताम्	अगर्हिषत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	जगर्हे	जगर्हाते	जगर्हिरे
आ०	गर्हिषीष्ट	गर्हिषीयास्ताम्	गर्हिषीरन्
श्व०	गर्हिता	गर्हितारौ	गर्हितारः
भ०	गर्हिष्यते	गर्हिष्येते	गर्हिष्यन्ते
क्रि०	अगर्हिष्यत	अगर्हिष्येताम्	अगर्हिष्यन्त

८६१ गल्हि (गल्ह्) कुत्सने।

व०	गल्हते	गल्हेते	गल्हन्ते
स०	गल्हेत	गल्हेयाताम्	गल्हेरन्
प०	गल्हताम्	गल्हेताम्	गल्हन्ताम्
ह्य०	अगल्हत	अगल्हेताम्	अगल्हन्त
अ०	अगल्हिष्ट	अगल्हिषाताम्	अगल्हिषत
प०	जगल्हे	जगल्हाते	जगल्हिरे
आ०	गल्हिषीष्ट	गल्हिषीयास्ताम्	गल्हिषीरन्
श्व०	गल्हिता	गल्हितारौ	गल्हितारः
भ०	गल्हिष्यते	गल्हिष्येते	गल्हिष्यन्ते
क्रि०	अगल्हिष्यत	अगल्हिष्येताम्	अगल्हिष्यन्त

८६२. वर्हि (वर्ह्) प्राधान्ये।

व०	वर्हते	वर्हेते	वर्हन्ते
स०	वर्हेत	वर्हेयाताम्	वर्हेरन्
प०	वर्हताम्	वर्हेताम्	वर्हन्ताम्
ह्य०	अवर्हत	अवर्हेताम्	अवर्हन्त
अ०	अवर्हिष्ट	अवर्हिषाताम्	अवर्हिषत
प०	ववर्हे	ववर्हाते	ववर्हिरे
आ०	वर्हिषीष्ट	वर्हिषीयास्ताम्	वर्हिषीरन्
श्व०	वर्हिता	वर्हितारौ	वर्हितारः
भ०	वर्हिष्यते	वर्हिष्येते	वर्हिष्यन्ते
क्रि०	अवर्हिष्यत	अवर्हिष्येताम्	अवर्हिष्यन्त

८६३ वल्हि (वल्ह्) प्राधान्ये।

व०	वल्हते	वल्हेते	वल्हन्ते
स०	वल्हेत	वल्हेयाताम्	वल्हेरन्
प०	वल्हताम्	वल्हेताम्	वल्हन्ताम्
ह्य०	अवल्हत	अवल्हेताम्	अवल्हन्त
अ०	अवल्हिष्ट	अवल्हिषाताम्	अवल्हिषत
प०	ववल्हे	ववल्हाते	ववल्हिरे
आ०	वल्हिषीष्ट	वल्हिषीयास्ताम्	वल्हिषीरन्
श्व०	वल्हिता	वल्हितारौ	वल्हितारः
भ०	वल्हिष्यते	वल्हिष्येते	वल्हिष्यन्ते
क्रि०	अवल्हिष्यत	अवल्हिष्येताम्	अवल्हिष्यन्त

८६४. बर्हि (बर्ह्) परिभाषणहिंसाच्छादनेषु।

व०	बर्हते	बर्हेते	बर्हन्ते
स०	बर्हेत	बर्हेयाताम्	बर्हेरन्
प०	बर्हताम्	बर्हेताम्	बर्हन्ताम्
ह्य०	अबर्हत	अबर्हेताम्	अबर्हन्त
अ०	अबर्हिष्ट	अबर्हिषाताम्	अबर्हिषत
प०	बबर्हे	बबर्हाते	बबर्हिरे
आ०	बर्हिषीष्ट	बर्हिषीयास्ताम्	बर्हिषीरन्
श्व०	बर्हिता	बर्हितारौ	बर्हितारः
भ०	बर्हिष्यते	बर्हिष्येते	बर्हिष्यन्ते
क्रि०	अबर्हिष्यत	अबर्हिष्येताम्	अबर्हिष्यन्त

८६५ बल्हि (बल्ह्) परिभाषणहिंसाच्छादनेषु।

व०	बल्हते	बल्हेते	बल्हन्ते
स०	बल्हेत	बल्हेयाताम्	बल्हेरन्
प०	बल्हताम्	बल्हेताम्	बल्हन्ताम्
ह्य०	अबल्हत	अबल्हेताम्	अबल्हन्त
अ०	अबल्हिष्ट	अबल्हिषाताम्	अबल्हिषत
प०	बबल्हे	बबल्हाते	बबल्हिरे
आ०	बल्हिषीष्ट	बल्हिषीयास्ताम्	बल्हिषीरन्
श्व०	बल्हिता	बल्हितारौ	बल्हितारः
भ०	बल्हिष्यते	बल्हिष्येते	बल्हिष्यन्ते
क्रि०	अबल्हिष्यत	अबल्हिष्येताम्	अबल्हिष्यन्त

८६६ वेहङ् (वेह्) प्रयत्ने।

व०	वेहते	वेहेते	वेहन्ते
स०	वेहेत	वेहेयाताम्	वेहेरन्
प०	वेहताम्	वेहेताम्	वेहन्ताम्
ह्य०	अवेहत	अवेहेताम्	अवेहन्त
अ०	अवेहिष्ट	अवेहिषाताम्	अवेहिषत
प०	विवेहे	विवेहाते	विवेहिरे
आ०	वेहिषीष्ट	वेहिषीयास्ताम्	वेहिषीरन्
श्व०	वेहिता	वेहितारौ	वेहितारः
भ०	वेहिष्यते	वेहिष्येते	वेहिष्यन्ते
क्रि०	अवेहिष्यत	अवेहिष्येताम्	अवेहिष्यन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८६७ जेहङ् (जेह्) प्रयत्ने।

व०	जेहते	जेहेते	जेहन्ते
स०	जेहेत	जेहेयाताम्	जेहेरन्
प०	जेहताम्	जेहेताम्	जेहन्ताम्
ह्य०	अजेहत	अजेहेताम्	अजेहन्त
अ०	अजेहिष्ट	अजेहिषाताम्	अजेहिषत
प०	जिजेहे	जिजेहाते	जिजेहिरे
आ०	जेहिषीष्ट	जेहिषीयास्ताम्	जेहिषीरन्
श्व०	जेहिता	जेहितारौ	जेहितारः
भ०	जेहिष्यते	जेहिष्येते	जेहिष्यन्ते
क्रि०	अजेहिष्यत	अजेहिष्येताम्	अजेहिष्यन्त

८६८ वाहङ् (वाह्) प्रयत्ने।

व०	वाहते	वाहेते	वाहन्ते
स०	वाहेत	वाहेयाताम्	वाहेरन्
प०	वाहताम्	वाहेताम्	वाहन्ताम्
ह्य०	अवाहत	अवाहेताम्	अवाहन्त
अ०	अवाहिष्ट	अवाहिषाताम्	अवाहिषत
प०	ववाहे	ववाहाते	ववाहिरे
आ०	वाहिषीष्ट	वाहिषीयास्ताम्	वाहिषीरन्
श्व०	वाहिता	वाहितारौ	वाहितारः
भ०	वाहिष्यते	वाहिष्येते	वाहिष्यन्ते
क्रि०	अवाहिष्यत	अवाहिष्येताम्	अवाहिष्यन्त

८६९ द्राहङ् (द्राह्) निक्षेपे।

निद्राक्षेपे इत्येके।

व०	द्राहते	द्राहेते	द्राहन्ते
स०	द्राहेत	द्राहेयाताम्	द्राहेरन्
प०	द्राहताम्	द्राहेताम्	द्राहन्ताम्
ह्य०	अद्राहत	अद्राहेताम्	अद्राहन्त
अ०	अद्राहिष्ट	अद्राहिषाताम्	अद्राहिषत
प०	दद्राहे	दद्राहाते	दद्राहिरे
आ०	द्राहिषीष्ट	द्राहिषीयास्ताम्	द्राहिषीरन्
श्व०	द्राहिता	द्राहितारौ	द्राहितारः
भ०	द्राहिष्यते	द्राहिष्येते	द्राहिष्यन्ते
क्रि०	अद्राहिष्यत	अद्राहिष्येताम्	अद्राहिष्यन्त

८७०. ऊहि (ऊह्) तर्के। तर्क उत्प्रेक्षा।

व०	ऊहते	ऊहेते	ऊहन्ते
स०	ऊहेत	ऊहेयाताम्	ऊहेरन्
प०	ऊहताम्	ऊहेताम्	ऊहन्ताम्
ह्य०	औहत	औहेताम्	औहन्त
अ०	औहिष्ट	औहिषाताम्	औहिषत
प०	ऊहाञ्चक्रे	ऊहाञ्चक्राते	ऊहाञ्चक्रिरे
	ऊहाम्बभूव/ऊहामास।		
आ०	ऊहिषीष्ट	ऊहिषीयास्ताम्	ऊहिषीरन्
श्व०	ऊहिता	ऊहितारौ	ऊहितारः
भ०	ऊहिष्यते	ऊहिष्येते	ऊहिष्यन्ते
क्रि०	औहिष्यत	औहिष्येताम्	औहिष्यन्त

८७१. गाहौङ् (गाह्) विलोडने।

विलोडनं परिमलनम्।

व०	गाहते	गाहेते	गाहन्ते
	गाहसे	गाहेथे	गाहध्वे
	गाहे	गाहावहे	गाहामहे
स०	गाहेत	गाहेयाताम्	गाहेरन्
	गाहेथाः	गाहेयाथाम्	गाहेध्वम्
	गाहेय	गाहेवहि	गाहेमहि
प०	गाहताम्	गाहेताम्	गाहन्ताम्
	गाहस्व	गाहेथाम्	गाहध्वम्
	गाहै	गाहावहै	गाहामहै
ह्य०	अगाहत	अगाहेताम्	अगाहन्त
	अगाहथाः	अगाहथाम्	अगाहध्वम्
	अगाहे	अगाहावहि	अगाहामहि
अ०	अगाहिष्ट	अगाहिषाताम्	अगाहिषत
	अगाहिष्ठाः	अगाहिषाथाम्	अगाहिड्ढ्वम्
ध्वम्			
	अगाहिषि	अगाहिष्वहि	अगाहिष्महि
	अगाढ	अघाक्षाताम्	अघाक्षत
	अगाढाः	अघाक्षाथाम्	अघाग्ड्ढ्वम्
			अघाढ्वम्
	अघाक्षि	अघाक्ष्वहि	अघाक्ष्महि
प०	जगाहे	जगाहाते	जगाहिरे
	जगाहिषे	जगाहाथे	जगाहिध्वे/ढ्वे
	जगाहे	जगाहिवहे	जगाहिमहे
आ०	गाहिषीष्ट	गाहिषीयास्ताम्	गाहिषीरन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	गाहिषीष्ठाः	गाहिषीयास्थाम्	गाहिषीध्वम
	गाहिषीय	गाहिषीवहि	गाहिषीमहि
		तथा	
	घाक्षीष्ट	घाक्षीयास्ताम्	घाक्षीरन्
	घाक्षीष्ठाः	घाक्षीयास्थाम्	घाक्षीध्वम्
	घाक्षीय	घाक्षीवहि	घाक्षीमहि
श्व०	गाहिता	गाहितारौ	गाहितारः
	गाहितासे	गाहितासाथे	गाहिताध्वे
	गाहिताहे	गाहितास्वहे	गाहितास्महे
		तथा	
	गाढा	गाढारौ	गाढारः
	गाढासे	गाढासाथे	गाढाध्वे
	गाढहे	गाढास्वहे	गाढास्महे
भ०	गाहिष्यते	गाहिष्येते	गाहिष्यन्ते
	गाहिष्यसे	गाहिष्येथे	गाहिष्यध्वे
	गाहिष्ये	गाहिष्यावहे	गाहिष्यामहे
		तथा	
	घाक्ष्यते	घाक्ष्येते	घाक्ष्यन्ते
	घाक्ष्यसे	घाक्ष्येथे	घाक्ष्यध्वे
	घाक्ष्ये	घाक्ष्यावहे	घाक्ष्यामहे
क्रि०	अगाहिष्यत	अगाहिष्येताम्	अगाहिष्यन्त
	अगाहिष्यथाः	अगाहिष्येथाम्	अगाहिष्यध्वम्
	अगाहिष्ये	अगाहिष्यावहि	अगाहिष्यामहि
		तथा	
	अघाक्ष्यत	अघाक्ष्येताम्	अघाक्ष्यन्त
	अघाक्ष्यथाः	अघाक्ष्येथाम्	अघाक्ष्यध्वम्
	अघाक्ष्ये	अघाक्ष्यावहि	अघाक्ष्यामहि

८७२. ग्लहौङ् (ग्लह्) ग्रहणे।

व०	ग्लहते	ग्लहेते	ग्लहन्ते
	ग्लहसे	ग्लहेथे	ग्लहध्वे
	ग्लहे	ग्लहावहे	ग्लहामहे
स०	ग्लहेत	ग्लहेयाताम्	ग्लहेरन्
	ग्लहेथाः	ग्लहेयाथाम्	ग्लहेध्वम्
	ग्लहेय	ग्लहेवहि	ग्लहेमहि
प०	ग्लहताम्	ग्लहेताम्	ग्लहन्ताम्
	ग्लहस्व	ग्लहेथाम्	ग्लहध्वम्
	ग्लहै	ग्लहावहै	ग्लहामहै
ह्य०	अग्लहत	अग्लहेताम्	अग्लहन्त
	अग्लहथाः	अग्लहथाम्	अग्लहध्वम्
	अग्लहे	अग्लहावहि	अग्लहामहि
अ०	अग्लहिष्ट	अग्लहिषाताम्	अग्लहिषत
	अग्लहिष्ठाः	अग्लहिषाथाम	अग्लहिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अग्लहिषि	अग्लहिष्वहि	अग्लहिष्महि
		तथा	
	अग्लाढ	अघ्लक्षाताम्	अघ्लक्षत
	अग्लाढाः	अघ्लक्षाथाम्	अघ्लाड्ढ्वम्
			अघ्लढ्वम्
	अघ्लक्षि	अघ्लक्ष्वहि	अघ्लक्ष्महि
प०	जग्लहे	जग्लहाते	जग्लहिरे
	जग्लहिषे	जग्लहाथे	जग्लहिध्वे/ढ्वे
	जग्लहे	जग्लहिवहे	जग्लहिमहे
आ०	ग्लहिषीष्ट	ग्लहिषीयास्ताम्	ग्लहिषीरन्
	ग्लहिषीष्ठाः	ग्लहिषीयास्थाम्	ग्लहिषीध्वम्
	ग्लहिषीय	ग्लहिषीवहि	ग्लहिषीमहि
		तथा	
	घ्लक्षीष्ट	घ्लक्षीयास्ताम्	घ्लक्षीरन्
	घ्लक्षीष्ठाः	घ्लक्षीयास्थाम्	घ्लक्षीध्वम्
	घ्लक्षीय	घ्लक्षीवहि	घ्लक्षीमहि
श्व०	ग्लहिता	ग्लहितारौ	ग्लहितारः
	ग्लहितासे	ग्लहितासाथे	ग्लहिताध्वे
	ग्लहिताहे	ग्लहितास्वहे	ग्लहितास्महे
	ग्लाढा	ग्लाढारौ	ग्लाढारः
	ग्लाढासे	ग्लाढासाथे	ग्लाढाध्वे
	ग्लाढहे	ग्लाढास्वहे	ग्लाढास्महे
भ०	ग्लहिष्यते	ग्लहिष्येते	ग्लहिष्यन्ते
	ग्लहिष्यसे	ग्लहिष्येथे	ग्लहिष्यध्वे
	ग्लहिष्ये	ग्लहिष्यावहे	ग्लहिष्यामहे
		तथा	
	घ्लक्ष्यते	घ्लक्ष्येते	घ्लक्ष्यन्ते
	घ्लक्ष्यसे	घ्लक्ष्येथे	घ्लक्ष्यध्वे
	घ्लक्ष्ये	घ्लक्ष्यावहे	घ्लक्ष्यामहे
क्रि०	अग्लहिष्यत	अग्लहिष्येताम्	अग्लहिष्यन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अग्लहिष्यथा:	अग्लहिष्येथाम्	अग्लहिष्यध्वम्
अग्लहिष्ये	अग्लहिष्यावहि	अग्लहिष्यामहि

तथा

अघ्लक्ष्यत	अघ्लक्ष्येताम्	अघ्लक्ष्यन्त
अघ्लक्ष्यथा:	अघ्लक्ष्येथाम्	अघ्लक्ष्यध्वम्
अघ्लक्ष्ये	अघ्लक्ष्यावहि	अघ्लक्ष्यामहि

८७३. बहुङ् (बंह्) वृद्धौ।

व०	बंहते	बंहेते	बंहन्ते
स०	बंहेत	बंहेयाताम्	बंहेरन्
प०	बंहताम्	बंहेताम्	बंहन्ताम्
ह्य०	अबंहत	अबंहेताम्	अबंहन्त
अ०	अबंहिष्ट	अबंहिषाताम्	अबंहिषत
प०	बबंहे	बबंहाते	बबंहिरे
आ०	बंहिषीष्ट	बंहिषीयास्ताम्	बंहिषीरन्
श्व०	बंहिता	बंहितारौ	बंहितार:
भ०	बंहिष्यते	बंहिष्येते	बंहिष्यन्ते
क्रि०	अबंहिष्यत	अबंहिष्येताम्	अबंहिष्यन्त

८७४. महुङ् (मंह्) वृद्धौ।

व०	मंहते	मंहेते	मंहन्ते
स०	मंहेत	मंहेयाताम्	मंहेरन्
प०	मंहताम्	मंहेताम्	मंहन्ताम्
ह्य०	अमंहत	अमंहेताम्	अमंहन्त
अ०	अमंहिष्ट	अमंहिषाताम्	अमंहिषत
प०	ममंहे	ममंहाते	ममंहिरे
आ०	मंहिषीष्ट	मंहिषीयास्ताम्	मंहिषीरन्
श्व०	मंहिता	मंहितारौ	मंहितार:
भ०	मंहिष्यते	मंहिष्येते	मंहिष्यन्ते
क्रि०	अमंहिष्यत	अमंहिष्येताम्	अमंहिष्यन्त

अथ क्षान्ता अष्टौ सेटश्च। एतेषां च षान्तेषु पाठो युक्तो, वैचित्र्यार्थं त्विह कृत:।

८७५. दक्षि (दक्ष्) शैघ्र्येच।

शैघ्र्यं शीघ्रता। चकाराद्वृद्धौ।

व०	दक्षते	दक्षेते	दक्षन्ते
स०	दक्षेत	दक्षेयाताम्	दक्षेरन्
प०	दक्षताम्	दक्षेताम्	दक्षन्ताम्
ह्य०	अदक्षत	अदक्षेताम्	अदक्षन्त
अ०	अदक्षिष्ट	अदक्षिषाताम्	अदक्षिषत
प०	ददक्षे	ददक्षाते	ददक्षिरे
आ०	दक्षिषीष्ट	दक्षिषीयास्ताम्	दक्षिषीरन्
श्व०	दक्षिता	दक्षितारौ	दक्षितार:
भ०	दक्षिष्यते	दक्षिष्येते	दक्षिष्यन्ते
क्रि०	अदक्षिष्यत	अदक्षिष्येताम्	अदक्षिष्यन्त

८७६. धुक्षि (धक्ष्) संदीपनक्लेशनजीवनेषु।

व०	धुक्षते	धुक्षेते	धुक्षन्ते
स०	धुक्षेत	धुक्षेयाताम्	धुक्षेरन्
प०	धुक्षताम्	धुक्षेताम्	धुक्षन्ताम्
ह्य०	अधुक्षत	अधुक्षेताम्	अधुक्षन्त
अ०	अधुक्षिष्ट	अधुक्षिषाताम्	अधुक्षिषत
प०	दुधुक्षे	दुधुक्षाते	दुधुक्षिरे
आ०	धुक्षिषीष्ट	धुक्षिषीयास्ताम्	धुक्षिषीरन्
श्व०	धुक्षिता	धुक्षितारौ	धुक्षितार:
भ०	धुक्षिष्यते	धुक्षिष्येते	धुक्षिष्यन्ते
क्रि०	अधुक्षिष्यत	अधुक्षिष्येताम्	अधुक्षिष्यन्त

८७७. धिक्षि (धिक्ष्) संदीपनक्लेशनजीवनेषु।

व०	धिक्षते	धिक्षेते	धिक्षन्ते
स०	धिक्षेत	धिक्षेयाताम्	धिक्षेरन्
प०	धिक्षताम्	धिक्षेताम्	धिक्षन्ताम्
ह्य०	अधिक्षत	अधिक्षेताम्	अधिक्षन्त
अ०	अधिक्षिष्ट	अधिक्षिषाताम्	अधिक्षिषत
प०	दिधिक्षे	दिधिक्षाते	दिधिक्षिरे
आ०	धिक्षिषीष्ट	धिक्षिषीयास्ताम्	धिक्षिषीरन्
श्व०	धिक्षिता	धिक्षितारौ	धिक्षितार:
भ०	धिक्षिष्यते	धिक्षिष्येते	धिक्षिष्यन्ते
क्रि०	अधिक्षिष्यत	अधिक्षिष्येताम्	अधिक्षिष्यन्त

८७८. वृक्षि (वृक्ष्) वरणे।

व०	वृक्षते	वृक्षेते	वृक्षन्ते
स०	वृक्षेत	वृक्षेयाताम्	वृक्षेरन्
प०	वृक्षताम्	वृक्षेताम्	वृक्षन्ताम्
ह्य०	अवृक्षत	अवृक्षेताम्	अवृक्षन्त
अ०	अवृक्षिष्ट	अवृक्षिषाताम्	अवृक्षिषत
प०	ववृक्षे	ववृक्षाते	ववृक्षिरे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	वृक्षिषीष्ट	वृक्षिषीयास्ताम्	वृक्षिषीरन्
श्व०	वृक्षिता	वृक्षितारौ	वृक्षितार:
भ०	वृक्षिष्यते	वृक्षिष्येते	वृक्षिष्यन्ते
क्रि०	अवृक्षिष्यत	अवृक्षिष्येताम्	अवृक्षिष्यन्त

८७९. शिक्षि (शिक्ष्) विद्योपादने।

व०	शिक्षते	शिक्षेते	शिक्षन्ते
स०	शिक्षेत	शिक्षेयाताम्	शिक्षेरन्
प०	शिक्षताम्	शिक्षेताम्	शिक्षन्ताम्
ह्य०	अशिक्षत	अशिक्षेताम्	अशिक्षन्त
अ०	अशिक्षिष्ट	अशिक्षिषाताम्	अशिक्षिषत
प०	शिशिक्षे	शिशिक्षाते	शिशिक्षिरे
आ०	शिक्षिषीष्ट	शिक्षिषीयास्ताम्	शिक्षिषीरन्
श्व०	शिक्षिता	शिक्षितारौ	शिक्षितार:
भ०	शिक्षिष्यते	शिक्षिष्येते	शिक्षिष्यन्ते
क्रि०	अशिक्षिष्यत	अशिक्षिष्येताम्	अशिक्षिष्यन्त

८८०. भिक्षि (भिक्ष्) याञ्चायाम्।

व०	भिक्षते	भिक्षेते	भिक्षन्ते
स०	भिक्षेत	भिक्षेयाताम्	भिक्षेरन्
प०	भिक्षताम्	भिक्षेताम्	भिक्षन्ताम्
ह्य०	अभिक्षत	अभिक्षेताम्	अभिक्षन्त
अ०	अभिक्षिष्ट	अभिक्षिषाताम्	अभिक्षिषत
प०	बिभिक्षे	बिभिक्षाते	बिभिक्षिरे
आ०	भिक्षिषीष्ट	भिक्षिषीयास्ताम्	भिक्षिषीरन्
श्व०	भिक्षिता	भिक्षितारौ	भिक्षितार:
भ०	भिक्षिष्यते	भिक्षिष्येते	भिक्षिष्यन्ते
क्रि०	अभिक्षिष्यत	अभिक्षिष्येताम्	अभिक्षिष्यन्त

८८१. दीक्षि (दीक्ष्) मौण्ड्येज्योपनयननियमव्रतादेशेषु। मौण्ड्यं वपनम्। इज्या यजनम्। उपनयनं मौञ्जीबन्ध:। नियम: संयम:। व्रतादेश: संस्कारादेश:।

व०	दीक्षते	दीक्षेते	दीक्षन्ते
स०	दीक्षेत	दीक्षेयाताम्	दीक्षेरन्
प०	दीक्षताम्	दीक्षेताम्	दीक्षन्ताम्
ह्य०	अदीक्षत	अदीक्षेताम्	अदीक्षन्त
अ०	अदीक्षिष्ट	अदीक्षिषाताम्	अदीक्षिषत
प०	दिदीक्षे	दिदीक्षाते	दिदीक्षिरे
आ०	दीक्षिषीष्ट	दीक्षिषीयास्ताम्	दीक्षिषीरन्
श्व०	दीक्षिता	दीक्षितारौ	दीक्षितार:
भ०	दीक्षिष्यते	दीक्षिष्येते	दीक्षिष्यन्ते
क्रि०	अदीक्षिष्यत	अदीक्षिष्येताम्	अदीक्षिष्यन्त

८८२. ईक्षि (ईक्ष्) दर्शने।

व०	ईक्षते	ईक्षेते	ईक्षन्ते
स०	ईक्षेत	ईक्षेयाताम्	ईक्षेरन्
प०	ईक्षताम्	ईक्षेताम्	ईक्षन्ताम्
ह्य०	ऐक्षत	ऐक्षेताम्	ऐक्षन्त
अ०	ऐक्षिष्ट	ऐक्षिषाताम्	ऐक्षिषत
प०	ईक्षाञ्चक्रे	ईक्षाञ्चक्राते	ईक्षाञ्चक्रिरे
आ०	ईक्षिषीष्ट	ईक्षिषीयास्ताम्	ईक्षिषीरन्
श्व०	ईक्षिता	ईक्षितारौ	ईक्षितार:
भ०	ईक्षिष्यते	ईक्षिष्येते	ईक्षिष्यन्ते
क्रि०	ऐक्षिष्यत	ऐक्षिष्येताम्	ऐक्षिष्यन्त

।।इति आत्मनेपदिन:।।

अथोभयपदिन:

श्लक्षीपर्यन्ता वर्णक्रमेण।

८८३. श्रिगॄ (श्रि) सेवायाम्।

गित्वात्फलवति कर्तरि "ईगित:" इत्यात्मनेपदेऽन्यत्र वा "शेषात्परस्मै" इति परस्मैपदमेवं सर्वत्र भावनीयम्।

व०	श्रयति	श्रयत:	श्रयन्ति
	श्रयसि	श्रयथ:	श्रयथ
	श्रयामि	श्रयाव:	श्रयाम:
स०	श्रयेत्	श्रयेताम्	श्रयेयु:
	श्रये:	श्रयेतम्	श्रयेत
	श्रयेयम्	श्रयेव	श्रयेम
प०	श्रयतु/श्रयतात	श्रयताम्	श्रयन्तु
	श्रय/श्रयतात्	श्रयतम्	श्रयत
	श्रयानि	श्रयाव	श्रयाम
ह्य०	अश्रयत्	अश्रयताम्	अश्रयन्

	अश्रय:	अश्रयतम्	अश्रयत
	अश्रयम्	अश्रयाव	अश्रयाम
अ०	अशिश्रियत्	अशिश्रियताम्	अशिश्रियन्
	अशिश्रिय:	अशिश्रियतम्	अशिश्रियत
	अशिश्रियम्	अशिश्रियाव	अशिश्रियाम
प०	शिश्राय	शिश्रियतु:	शिश्रियु:
	शिश्रियिथ	शिश्रियथु:	शिश्रिय
	शिश्रिय	शिश्रियिव	शिश्रियिम
आ०	श्रीयात्	श्रीयास्ताम्	श्रीयासु:
	श्रीया:	श्रीयास्तम्	श्रीयास्त
	श्रीयासम्	श्रीयास्व	श्रीयास्म
श्व०	श्रयिता	श्रयितारौ	श्रयितार:
	श्रयितासि	श्रयितास्थ:	श्रयितास्थ
	श्रयितास्मि	श्रयितास्व:	श्रयितास्म:
भ०	श्रयिष्यति	श्रयिष्यत:	श्रयिष्यन्ति
	श्रयिष्यसि	श्रयिष्यथ:	श्रयिष्यथ
	श्रयिष्यामि	श्रयिष्याव:	श्रयिष्याम:
क्रि०	अश्रयिष्यत्	अश्रयिष्यताम्	अश्रयिष्यन्
	अश्रयिष्य:	अश्रयिष्यतम्	अश्रयिष्यत
	अश्रयिष्यम्	अश्रयिष्याव	अश्रयिष्याम
व०	श्रयते	श्रयेते	श्रयन्ते
	श्रयसे	श्रयेथे	श्रयध्वे
	श्रये	श्रयावहे	श्रयामहे
स०	श्रयेत	श्रयेयाताम्	श्रयेरन्
	श्रयेथा:	श्रयेयाथाम्	श्रयेध्वम्
	श्रयेय	श्रयेवहि	श्रयेमहि
प०	श्रयताम्	श्रयेताम्	श्रयन्ताम्
	श्रयस्व	श्रयेथाम्	श्रयध्वम्
	श्रयै	श्रयावहै	श्रयामहै
ह्य०	अश्रयत	अश्रयेताम्	अश्रयन्त
	अश्रयथा:	अश्रयेथाम्	अश्रयध्वम्
	अश्रये	अश्रयावहि	अश्रयामहि
अ०	अशिश्रियत	अशिश्रियेताम्	अशिश्रियन्त
	अशिश्रियथा:	अशिश्रियेथाम्	अशिश्रिय/ध्वम्
	अशिश्रिये	अशिश्रियावहि	अशिश्रियामहि
प०	शिश्रिये	शिश्रियाते	शिश्रियिरे
	शिश्रियिषे	शिश्रियाथे	शिश्रियिढ्वे/ध्वे
	शिश्रिये	शिश्रियिवहे	शिश्रियिमहे
आ०	श्रयिषीष्ट	श्रयिषीयास्ताम्	श्रयिषीरन्
	श्रयिषीष्ठा:	श्रयिषीयास्थाम्	श्रयिषीध्वम्
	श्रयिषीय	श्रयिषीवहि	श्रयिषीमहि
श्व०	श्रयिता	श्रयितारौ	श्रयितार:
	श्रयितासे	श्रयितासाथे	श्रयिताध्वे
	श्रयिताहे	श्रयितास्वहे	श्रयितास्महे
भ०	श्रयिष्यते	श्रयिष्येते	श्रयिष्यन्ते
	श्रयिष्यसे	श्रयिष्येथे	श्रयिष्यध्वे
	श्रयिष्ये	श्रयिष्यावहे	श्रयिष्यामहे
क्रि०	अश्रयिष्यत	अश्रयिष्येताम्	अश्रयिष्यन्त
	अश्रयिष्यथा:	अश्रयिष्येथाम्	अश्रयिष्यध्वम्
	अश्रयिष्ये	अश्रयिष्यावहि	अश्रयिष्यामहि

८८४. णींग् (नी) प्रापणे।

व०	नयति	नयत:	नयन्ति
	नयसि	नयथ:	नयथ
	नयामि	नयाव:	नयाम:
स०	नयेत्	नयेताम्	नयेयु:
	नये:	नयेतम्	नयेत
	नयेयम्	नयेव	नयेम
प०	नयतु/नयतात्	नयताम्	नयन्तु
	नय/नयतात्	नयतम्	नयत
	नयानि	नयाव	नयाम
ह्य०	अनयत्	अनयताम्	अनयन्
	अनय:	अनयतम्	अनयत
	अनयम्	अनयाव	अनयाम
अ०	अनैषीत्	अनैष्टाम्	अनैषु:
	अनैषी:	अनैष्टम्	अनैष्ट
	अनैषम्	अनैष्व	अनैष्म
प०	निनाय	निन्यतु:	निन्यु:
	निनयिथ	निनेथ/निन्यथु:	निन्य
	निनाय/निनय	निन्यिव	निन्यिम
आ०	नीयात्	नीयास्ताम्	नीयासु:
	नीया:	नीयास्तम्	नीयास्त
	नीयासम्	नीयास्व	नीयास्म

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	नेता	नेतारौ	नेतारः
	नेतासि	नेतास्थः	नेतास्थ
	नेतास्मि	नेतास्वः	नेतास्मः
भ०	नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति
	नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ
	नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः
क्रि०	अनेष्यत्	अनेष्यताम्	अनेष्यन्
	अनेष्यः	अनेष्यतम्	अनेष्यत
	अनेष्यम्	अनेष्याव	अनेष्याम
व०	नयते	नयेते	नयन्ते
	नयसे	नयेथे	नयध्वे
	नये	नयावहे	नयामहे
स०	नयेत	नयेयाताम्	नयेरन्
	नयेथाः	नयेयाथाम्	नयेध्वम्
	नयेय	नयेवहि	नयेमहि
प०	नयताम्	नयेताम्	नयन्ताम्
	नयस्व	नयेथाम्	नयध्वम्
	नयै	नयावहै	नयामहै
ह्य०	अनयत	अनयेताम्	अनयन्त
	अनयथाः	अनयेथाम्	अनयध्वम्
	अनये	अनयावहि	अनयामहि
अ०	अनेष्ट	अनेषाताम्	अनेषत
	अनेष्ठाः	अनेषाथाम्	अनेढ्वम्/ड्ढ्वम्
	अनेषि	अनेष्वहि	अनेष्महि
प०	निन्ये	निन्याते	निन्यिरे
	निन्यिषे	निन्याथे	निन्यिढ्वे/ध्वे
	निन्ये	निन्यिवहे	निन्यिमहे
आ०	नेषीष्ट	नेषीयास्ताम्	नेषीरन्
	नेषीष्ठाः	नेषीयास्थाम्	नेषीध्वम्
	नेषीय	नेषीवहि	नेषीमहि
श्व०	नेता	नेतारौ	नेतारः
	नेतासे	नेतासाथे	नेताध्वे
	नेताहे	नेतास्वहे	नेतास्महे
भ०	नेष्यते	नेष्येते	नेष्यन्ते
	नेष्यसे	नेष्येथे	नेष्यध्वे
	नेष्ये	नेष्यावहे	नेष्यामहे
क्रि०	अनेष्यत	अनेष्येताम्	अनेष्यन्त
	अनेष्यथाः	अनेष्येथाम्	अनेष्यध्वम्
	अनेष्ये	अनेष्यावहि	अनेष्यामहि

अथ ऋदन्ताश्चत्वारोऽनिटश्च।

८८५. हंग् (हृ) हरणे।

व०	हरति	हरतः	हरन्ति
स०	हरेत्	हरेताम्	हरेयुः
प०	हरतु/हरतात्	हरताम्	हरन्तु
ह्य०	अहरत्	अहरताम्	अहरन्
अ०	अहार्षीत्	अहार्ष्टाम्	अहार्षुः
प०	जहार	जह्रतुः	जह्रुः
आ०	ह्रियात्	ह्रियास्ताम्	ह्रियासुः
श्व०	हर्ता	हर्तारौ	हर्तारः
भ०	हरिष्यति	हरिष्यतः	हरिष्यन्ति
क्रि०	अहरिष्यत्	अहरिष्यताम्	अहरिष्यन्

आत्मनेपद

व०	हरते	हरेते	हरन्ते
स०	हरेत	हरेयाताम्	हरेरन्
प०	हरताम्	हरेताम्	हरन्ताम्
ह्य०	अहरत	अहरेताम्	अहरन्त
अ०	अहृत	अहृषाताम्	अहृषत
प०	जह्रे	जह्राते	जह्रिरे
आ०	हृषीष्ट	हृषीयास्ताम्	हृषीरन्
श्व०	हर्ता	हर्तारौ	हर्तारः
भ०	हरिष्यते	हरिष्येते	हरिष्यन्ते
क्रि०	अहरिष्यत	अहरिष्येताम्	अहरिष्यन्त

८८६. भृंग् (भृ) भरणे।

व०	भरति	भरतः	भरन्ति
स०	भरेत्	भरेताम्	भरेयुः
प०	भरतु/भरतात्	भरताम्	भरन्तु
ह्य०	अभरत्	अभरताम्	अभरन्
अ०	अभार्षीत्	अभार्ष्टाम्	अभार्षुः
प०	बभार	बभ्रतुः	बभ्रुः
आ०	भ्रियात्	भ्रियास्ताम्	भ्रियासुः
श्व०	भर्ता	भर्तारौ	भर्तारः
भ०	भरिष्यति	भरिष्यतः	भरिष्यन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रि०	अभरिष्यत्	अभरिष्यताम्	अभरिष्यन्

आत्मनेपद

व०	भरते	भरेते	भरन्ते
स०	भरेत	भरेयाताम्	भरेरन्
प०	भरताम्	भरेताम्	भरन्ताम्
ह्य०	अभरत	अभरेताम्	अभरन्त
अ०	अभृत	अभृषाताम्	अभृषत
प०	बभ्रे	बभ्राते	बभ्रिरे
आ०	भृषीष्ट	भृषीयास्ताम्	भृषीरन्
श्व०	भर्ता	भर्तारौ	भर्तारः
भ०	भरिष्यते	भरिष्येते	भरिष्यन्ते
क्रि०	अभरिष्यत	अभरिष्येताम्	अभरिष्यन्त

८८७. धृंग् (धृ) धारणे।

व०	धरति	धरतः	धरन्ति
स०	धरेत्	धरेताम्	धरेयुः
प०	धरतु/धरतात्	धरताम्	धरन्तु
ह्य०	अधरत्	अधरताम्	अधरन्
अ०	अधार्षीत्	अधार्ष्टाम्	अधार्षुः
प०	दधार	दध्रतुः	दध्रुः
आ०	ध्रियात्	ध्रियास्ताम्	ध्रियासुः
श्व०	धर्ता	धर्तारौ	धर्तारः
भ०	धरिष्यति	धरिष्यतः	धरिष्यन्ति
क्रि०	अधरिष्यत्	अधरिष्यताम्	अधरिष्यन्

आत्मनेपद

व०	धरते	धरेते	धरन्ते
स०	धरेत	धरेयाताम्	धरेरन्
प०	धरताम्	धरेताम्	धरन्ताम्
ह्य०	अधरत	अधरेताम्	अधरन्त
अ०	अधृत	अधृषाताम्	अधृषत
प०	दध्रे	दध्राते	दध्रिरे
आ०	धृषीष्ट	धृषीयास्ताम्	धृषीरन्
श्व०	धर्ता	धर्तारौ	धर्तारः
भ०	धरिष्यते	धरिष्येते	धरिष्यन्ते
क्रि०	अधरिष्यत	अधरिष्येताम्	अधरिष्यन्त

८८८. डुकृंग् (कृ) करणे।

व०	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
स०	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
प०	करोतु/कुरुतात्	कुरुताम्	कुर्वन्तु
ह्य०	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
अ०	अकार्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकार्षुः
प०	चकार	चक्रतुः	चक्रुः
आ०	क्रियात्	क्रियास्ताम्	क्रियासुः
श्व०	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः
भ०	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
क्रि०	अकरिष्यत्	अकरिष्यताम्	अकरिष्यन्

आत्मनेपद

व०	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
स०	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
प०	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
ह्य०	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
अ०	अकृत	अकृषाताम्	अकृषत
प०	चक्रे	चक्राते	चक्रिरे
आ०	कृषीष्ट	कृषीयास्ताम्	कृषीरन्
श्व०	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः
भ०	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
क्रि०	अकरिष्यत	अकरिष्येताम्	अकरिष्यन्त

अथ कान्ताः।

८८९. हिक्की (हिक्क्) अव्यक्ते शब्दे।

व०	हिक्कति	हिक्कतः	हिक्कन्ति
स०	हिक्केत्	हिक्केताम्	हिक्केयुः
प०	हिक्कतु/हिक्कतात्	हिक्कताम्	हिक्कन्तु
ह्य०	अहिक्कत्	अहिक्कताम्	अहिक्कन्
अ०	अहिक्कीत्	अहिक्किष्टाम्	अहिक्किषुः
प०	जिहिक्क	जिहिक्कतुः	जिहिक्कुः
आ०	हिक्क्यात्	हिक्क्यास्ताम्	हिक्क्यासुः
श्व०	हिक्किता	हिक्कितारौ	हिक्कितारः
भ०	हिक्किष्यति	हिक्किष्यतः	हिक्किष्यन्ति
क्रि०	अहिक्किष्यत्	अहिक्किष्यताम्	अहिक्किष्यन्

आत्मनेपद

व०	हिक्कते	हिक्केते	हिक्कन्ते
स०	हिक्केत	हिक्केयाताम्	हिक्केक्कन्
प०	हिक्कताम्	हिक्केताम्	हिक्कन्ताम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	अहिक्कत	अहिक्केताम्	अहिक्कन्त
अ०	अहिक्किष्ट	अहिक्किषाताम्	अहिक्किषत
प०	जिहिक्के	जिहिक्काते	जिहिक्करे
आ०	हिक्किषीष्ट	हिक्किषीयास्ताम्	हिक्किषीक्कन्
श्व०	हिक्किता	हिक्कितारौ	हिक्कितार:
भ०	हिक्किष्यते	हिक्किष्येते	हिक्किष्यन्ते
क्रि०	अहिक्किष्यत	अहिक्किष्येताम्	अहिक्किष्यन्त

अथ चान्तास्त्रयस्तत्राद्यौ सेटावन्त्योऽनिट् गतिपूजयोरयं परस्मैपदिषु पठित:। स चास्य पाठो गतौ फलवति कर्तरि परस्मैपदार्थ:।

८९०. अञ्चू (अञ्च्) गतौ च। चकारादव्यक्ते शब्दे।

व०	अञ्चति	अञ्चत:	अञ्चन्ति
स०	अञ्चेत्	अञ्चेताम्	अञ्चेयु:
प०	अञ्चतु/अञ्चतात्	अञ्चताम्	अञ्चन्तु
ह्य०	आञ्चत्	आञ्चताम्	आञ्चन्
अ०	आञ्चीत्	आञ्चिष्टाम्	आञ्चिषु:
प०	आनञ्च	आनञ्चतु:	आनञ्चु:
आ०	अच्यात्	अच्यास्ताम्	अच्यासु:
श्व०	अञ्चिता	अञ्चितारौ	अञ्चितार:
भ०	अञ्चिष्यति	अञ्चिष्यत:	अञ्चिष्यन्ति
क्रि०	आञ्चिष्यत्	आञ्चिष्यताम्	आञ्चिष्यन्

आत्मनेपद

व०	अञ्चते	अञ्चेते	अञ्चन्ते
स०	अञ्चेत	अञ्चेयाताम्	अञ्चेञ्चन्
प०	अञ्चताम्	अञ्चेताम्	अञ्चन्ताम्
ह्य०	आञ्चत	आञ्चेताम्	आञ्चन्त
अ०	आञ्चिष्ट	आञ्चिषाताम्	आञ्चिषत्
प०	आनञ्चे	आनञ्चाते	आनञ्चरे
आ०	अञ्चिषीष्ट	अञ्चिषीयास्ताम्	अञ्चिषीञ्चन्
श्व०	अञ्चिता	अञ्चितारौ	अञ्चितार:
अ०	अञ्चिष्यते	अञ्चिष्येते	अञ्चिष्यन्ते
क्रि०	आञ्चिष्यत	आञ्चिष्येताम्	आञ्चिष्यन्त

८९१. डुयाचृग् (याच्) याच्ञायाम्।

व०	याचति	याचत:	याचन्ति
स०	याचेत्	याचेताम्	याचेयु:
प०	याचतु/याचतात्	याचताम्	याचन्तु
ह्य०	अयाचत्	अयाचताम्	अयाचन्
अ०	अयाचीत्	अयाचिष्टाम्	अयाचिषु:
प०	ययाच	ययाचतु:	ययाचु:
आ०	याच्यात्	याच्यास्ताम्	याच्यासु:
श्व०	याचिता	याचितारौ	याचितार:
भ०	याचिष्यति	याचिष्यत:	याचिष्यन्ति
क्रि०	अयाचिष्यत्	अयाचिष्यताम्	अयाचिष्यन्

आत्मनेपद

व०	याचते	याचेते	याचन्ते
स०	याचेत	याचेयाताम्	याचेचन्
प०	याचताम्	याचेताम्	याचन्ताम्
ह्य०	अयाचत	अयाचेताम्	अयाचन्त
अ०	अयाचिष्ट	अयाचिषाताम्	अयाचिषत्
प०	ययाचे	ययाचाते	ययाचिरे
आ०	याचिषीष्ट	याचिषीयास्ताम्	याचिषीरन्
श्व०	याचिता	याचितारौ	याचितार:
भ०	याचिष्यते	याचिष्येते	याचिष्यन्ते
क्रि०	अयाचिष्यत	अयाचिष्येताम्	अयाचिष्यन्त

८९२. डुपचींष् (पच्) पाके।

व०	पचति	पचत:	पचन्ति
स०	पचेत्	पचेताम्	पचेयु:
प०	पचतु/पचतात्	पचताम्	पचन्तु
ह्य०	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
अ०	अपाक्षीत्	अपाक्ताम्	अपाक्षु:
प०	पपाच	पेचतु:	पेचु:
आ०	पच्यात्	पच्यास्ताम्	पच्यासु:
श्व०	पक्ता	पक्तारौ	पक्तार:
भ०	पक्ष्यति	पक्ष्यत:	पक्ष्यन्ति
क्रि०	अपक्ष्यत्	अपक्ष्यताम्	अपक्ष्यन्

आत्मनेपद

व०	पचते	पचेते	पचन्ते
स०	पचेत	पचेयाताम्	पचेरन्
प०	पचताम्	पचेताम्	पचन्ताम्
ह्य०	अपचत	अपचेताम्	अपचन्त
अ०	अपक्त	अपक्षाताम्	अपक्षत्
प०	पेचे	पेचाते	पेचिरे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	पक्षीष्ट	पक्षीयास्ताम्	पक्षीरन्
श्व०	पक्ता	पक्तारौ	पक्तार:
भ०	पक्ष्यते	पक्ष्येते	पक्ष्यन्ते
क्रि०	अपक्ष्यत	अपक्ष्येताम्	अपक्ष्यन्त

अथ जान्ताश्चत्वारस्तत्राद्यौ सेटावन्त्यौ त्वनिटौ।

८९३. राजृग् (राज्) दीप्तौ।

व०	राजति	राजत:	राजन्ति
	राजसि	राजथ:	राजथ
	राजामि	राजाव:	राजाम:
स०	राजेत्	राजेताम्	राजेयु:
	राजे:	राजेतम्	राजेत
	राजेयम्	राजेव	राजेम
प०	राजतु/राजतात्	राजताम्	राजन्तु
	राज/राजतात्	राजतम्	राजत
	राजानि	राजाव	राजाम
ह्य०	अराजत्	अराजताम्	अराजन्
	अराज:	अराजतम्	अराजत
	अराजम्	अराजाव	अराजाम
अ०	अराजीत्	अराजिष्टाम्	अराजिषु:
	अराजी:	अराजिष्टम्	अराजिष्ट
	अराजिषम्	अराजिष्व	अराजिष्म
प०	रराज	रेजतु:/रराजतु:	रेजु:/रराजु:
	रेजिथ/रराजिथ	रेजथु:/रराजथु:	रराज/रेज
	रराज	रराजिव/ रेजिव	रराजिम/रेजिम
आ०	राज्यात्	राज्यास्ताम्	राज्यासु:
	राज्या:	राज्यास्तम्	राज्यास्त
	राज्यासम्	राज्यास्व	राज्यास्म
श्व०	राजिता	राजितारौ	राजितार:
	राजितासि	राजितास्थ:	राजितास्थ
	राजितास्मि	राजितास्व:	राजितास्म:
भ०	राजिष्यति	राजिष्यत:	राजिष्यन्ति
	राजिष्यसि	राजिष्यथ:	राजिष्यथ
	राजिष्यामि	राजिष्याव:	राजिष्याम:
क्रि०	अराजिष्यत्	अराजिष्यताम्	अराजिष्यन्
	अराजिष्य:	अराजिष्यतम्	अराजिष्यत
	अराजिष्यम्	अराजिष्याव	अराजिष्याम

आत्मनेपद

व०	राजते	राजेते	राजन्ते
	राजसे	राजेथे	राजध्वे
	राजे	राजावहे	राजामहे
स०	राजेत	राजेयाताम्	राजेरन्
	राजेथा:	राजेयाथाम्	राजेध्वम्
	राजेय	राजेवहि	राजेमहि
प०	राजताम्	राजेताम्	राजन्ताम्
	राजस्व	राजेथाम्	राजध्वम्
	राजै	राजावहै	राजामहै
ह्य०	अराजत	अराजेताम्	अराजन्त
	अराजथा:	अराजेथाम्	अराजध्वम्
	अराजे	अराजावहि	अराजामहि
अ०	अराजिष्ट	अराजिषाताम्	अराजिषत्
	अराजिष्ठा:	अराजिषाथाम्	अराजिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अराजिषि	अराजिष्वहि	अराजिष्महि
प०	रेजे	रेजाते	रेजिरे
	रेजिषे	रेजाथे	रेजिध्वे
	रेजे	रेजिवहे	रेजिमहे
		तथा	
	रराजे	रराजाते	रराजिरे
	रराजिषे	रराजाथे	रराजिध्वे
	रराजे	रराजिवहे	रराजिमहे
आ०	राजिषीष्ट	राजिषीयास्ताम्	राजिषीरन्
	राजिषीष्ठा:	राजिषीयास्थाम्	राजिषीध्वम्
	राजिषीय	राजिषीवहि	राजिषीमहि
श्व०	राजिता	राजितारौ	राजितार:
	राजितासे	राजितासाथे:	राजिताध्वे
	राजिताहे	राजितास्वहे	राजितास्महे
भ०	राजिष्यते	राजिष्येते	राजिष्यन्ते
	राजिष्यसे	राजिष्येथे	राजिष्यध्वे
	राजिष्ये	राजिष्यावहे	राजिष्यामहे
क्रि०	अराजिष्यत	अराजिष्येताम्	अराजिष्यन्त
	अराजिष्यथा:	अराजिष्येथाम्	अराजिष्यध्वम्
	अराजिष्ये	अराजिष्यावहि	अराजिष्यामहि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८९४ टुभ्राजि (भ्राज्) दीप्तौ।

अस्यात्मनेपदिनोऽपि पुनरिह पाठो राजसाहचर्य-प्रदर्शनार्थः। तेन जभ्रम-इत्यत्र 'यजसृज'-इत्यत्र चास्यैव ग्रहणात् एत्वद्वित्वाभावविकल्पः षत्वञ्चास्यैव तथा चास्य भ्रेजे, बभ्राजे, बाभ्राष्टि। पूर्वस्य तु बभ्राजे, बाभ्राक्ति, इति। ट्विच्चायं, तेनास्य भ्राजथुः। पूर्वस्य तु भ्राज इति रूपम्। ननु एत्वद्वित्वाभावविकल्पने प्रयोजनं तु भ्रेजे बभ्राजे इति रूपद्वयसिद्धिः। सा तु अन्यथापि भविष्यति। बाभ्राष्टि, बाभ्राक्ति इति रूपद्वयार्थं तु षत्वमेव विकल्प्यतां किं पुनः पाठेन? सत्यम्, अस्यात्मनेपदाव्यभिचारोपदर्शनद्वाराऽन्येषां यथादर्शन-मात्मनेपदानित्यत्वज्ञापनार्थः पाठः। पुनः तेन लभते, लभति, सेवते, सेवति। श्रोतारमुपलभति न प्रशंसितारम्। ''स्वाधीने विभवेऽप्यहो नरपतिं सेवन्ति किं मानिनः'' इत्यादयः प्रयोगाः साधव इति—

व०	भ्राजते	स०	भ्राजेत।
प०	भ्राजताम्।	ह्य०	अभ्राजत।
अ०	अभ्राजिष्ट।	प०	भ्रेजे बभ्राजे।
आ०	भ्राजिषीष्ट	श्व०	भ्राजिता।
भ०	भ्राजिष्यते।	क्रि०	अभ्राजिष्यत।

८९५. भजीं (भज्) सेवायाम्।

व०	भजति	भजतः	भजन्ति
स०	भजेत्	भजेताम्	भजेयुः
प०	भजतु/भजतात्	भजताम्	भजन्तु
ह्य०	अभजत्	अभजताम्	अभजन्
अ०	अभाक्षीत्	अभाक्ताम्	अभाक्षुः
प०	बभाज	भेजतुः	भेजुः
	भेभजिथ/बभक्थ	भेजथुः	भेज
	बभाज/बभज	भेजिव	भेजिम
आ०	भज्यात्	भज्यास्ताम्	भज्यासुः
श्व०	भक्ता	भक्तारौ	भक्तारः
भ०	भक्ष्यति	भक्ष्यतः	भक्ष्यन्ति
क्रि०	अभक्ष्यत्	अभक्ष्यताम्	अभक्ष्यन्

आत्मनेपद

व०	भजते	भजेते	भजन्ते
स०	भजेत	भजेयाताम्	भजेरन्
प०	भजताम्	भजेताम्	भजन्ताम्
ह्य०	अभजत	अभजेताम्	अभजन्त
अ०	अभक्त	अभक्षाताम्	अभक्षत
प०	भेजे	भेजाते	भेजिरे
आ०	भक्षीष्ट	भक्षीयास्ताम्	भक्षीरन्
श्व०	भक्ता	भक्तारौ	भक्तारः
भ०	भक्ष्यते	भक्ष्येते	भक्ष्यन्ते
क्रि०	अभक्ष्यत	अभक्ष्येताम्	अभक्ष्यन्त

८९६. रञ्जी (रञ्ज्) रागे।

व०	रजति	रजतः	रजन्ति
स०	रजेत्	रजेताम्	रजेयुः
प०	रजतु/रजतात्	रजताम्	रजन्तु
ह्य०	अरजत्	अरजताम्	अरजन्
अ०	अरङ्क्षीत्	अराङ्क्ताम्	अराङ्क्षुः
प०	ररञ्ज	ररञ्जतुः	ररञ्जुः
आ०	रज्यात्	रज्यास्ताम्	रज्यासुः
श्व०	रङ्क्ता	रङ्क्तारौ	रङ्क्तारः
भ०	रङ्क्ष्यति	रङ्क्ष्यतः	रङ्क्ष्यन्ति
क्रि०	अरङ्क्ष्यत्	अरङ्क्ष्यताम्	अरङ्क्ष्यन्

आत्मनेपद

व०	रजते	रजेते	रजन्ते
स०	रजेत	रजेयाताम्	रजेरन्
प०	रजताम्	रजेताम्	रजन्ताम्
ह्य०	अरजत	अरजेताम्	अरजन्त
अ०	अरङ्क्त	अरङ्क्षाताम्	अरङ्क्षत
प०	ररञ्जे	ररञ्जाते	ररञ्जिरे
आ०	रङ्क्षीष्ट	रङ्क्षीयास्ताम्	रङ्क्षीरन्
श्व०	रङ्क्ता	रङ्क्तारौ	रङ्क्तारः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	रङ्क्ष्यते	रङ्क्ष्येते	रङ्क्ष्यन्ते
क्रि०	अरङ्क्ष्यत	अरङ्क्ष्येताम्	अरङ्क्ष्यन्त

अथ टान्तः सेट् च।

८९७ रेटृङ् (रेट्) परिभाषणयाचनयोः।

व०	रेटति	रेटतः	रेटन्ति
स०	रेटेत्	रेटेताम्	रेटेयुः
प०	रेटतु/रेटतात्	रेटताम्	रेटन्तु
ह्य०	अरेटत्	अरेटताम्	अरेटन्
अ०	अरेटीत्	अरेटिष्टाम्	अरेटिषुः
प०	रिरेट	रिरेटतुः	रिरेटुः
आ०	रेट्यात्	रेट्यास्ताम्	रेट्यासुः
श्व०	रेटिता	रेटितारौ	रेटितारः
भ०	रेटिष्यति	रेटिष्यतः	रेटिष्यन्ति
क्रि०	अरेटिष्यत्	अरेटिष्यताम्	अरेटिष्यन्

आत्मनेपद

व०	रेटते	रेटेते	रेटन्ते
स०	रेटेत	रेटेयाताम्	रेटेरन्
प०	रेटताम्	रेटेताम्	रेटन्ताम्
ह्य०	अरेटत	अरेटेताम्	अरेटन्त
अ०	अरेटिष्ट	अरेटिषाताम्	अरेटिषत
प०	रिरेटे	रिरेटाते	भेजिरे
आ०	रेटिषीष्ट	रेटिषीयास्ताम्	रेटिषीरन्
श्व०	रेटिता	रेटितारौ	रेटितारः
भ०	रेटिष्यते	रेटिष्येते	रेटिष्यन्ते
क्रि०	अरेटिष्यत	अरेटिष्येताम्	अरेटिष्यन्त

अथ णान्तः सेट् च।

वेणृग् (वेण्) गतिज्ञानचिन्तानिशामनवादित्रग्रहणेषु।

व०	वेणति	वेणतः	वेणन्ति
स०	वेणेत्	वेणेताम्	वेणेयुः
प०	वेणतु/वेणतात्	वेणताम्	वेणन्तु
ह्य०	अवेणत्	अवेणताम्	अवेणन्
अ०	अवेणीत्	अवेणिष्टाम्	अवेणिषुः
प०	विवेण	विवेणतुः	विवेणुः
आ०	वेण्यात्	वेण्यास्ताम्	वेण्यासुः
श्व०	वेणिता	वेणितारौ	वेणितारः
भ०	वेणिष्यति	वेणिष्यतः	वेणिष्यन्ति
क्रि०	अवेणिष्यत्	अवेणिष्यताम्	अवेणिष्यन्

आत्मनेपद

व०	वेणते	वेणेते	वेणन्ते
स०	वेणेत	वेणेयाताम्	वेणेरन्
प०	वेणताम्	वेणेताम्	वेणन्ताम्
ह्य०	अवेणत	अवेणेताम्	अवेणन्त
अ०	अवेणिष्ट	अवेणिषाताम्	अवेणिषत
प०	विवेणे	विवेणाते	विवेणिरे
आ०	वेणिषीष्ट	वेणिषीयास्ताम्	वेणिषीरन्
श्व०	वेणिता	वेणितारौ	वेणितारः
भ०	वेणिष्यते	वेणिष्येते	वेणिष्यन्ते
क्रि०	अवेणिष्यत	अवेणिष्येताम्	अवेणिष्यन्त

अथ तान्तः सेट् च।

८९९ चतेग् (चत्) याचने।।

व०	चतति	चततः	चतन्ति
स०	चतेत्	चतेताम्	चतेयुः
प०	चततु/चततात्	चतताम्	चतन्तु
ह्य०	अचतत्	अतताम्	अचतन्
अ०	अचतीत्	अचतिष्टाम्	अचतिषुः
प०	चचत	चेततुः	चेतुः
आ०	चत्यात्	चत्यास्ताम्	चत्यासुः
श्व०	चतिता	चतितारौ	चतितारः
भ०	चतिष्यति	चतिष्यतः	चतिष्यन्ति
क्रि०	अचतिष्यत्	अचतिष्यताम्	अचतिष्यन्

आत्मनेपद

व०	चतते	चतेते	चतन्ते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स०	चतेत	चतेयाताम्	चतेरन्
प०	चतताम्	चतेताम्	चतन्ताम्
ह्य०	अचतत	अचतेताम्	अचतन्त
अ०	अचतिष्ट	अचतिषाताम्	अचतिषत
प०	चेते	चेताते	चेतिरे
आ०	चतिषीष्ट	चतिषीयास्ताम्	चतिषीरन्
श्व०	चतिता	चतितारौ	चतितार:
भ०	चतिष्यते	चतिष्येते	चतिष्यन्ते
क्रि०	अचतिष्यत	अचतिष्येताम्	अचतिष्यन्त

अथ थान्तास्त्रय: सेटश्च।

९०० प्रोथृग् (प्रोथ्) पर्याप्तौ। पर्याप्ति: पूर्णता।

व०	प्रोथति	प्रोथत:	प्रोथन्ति
स०	प्रोथेत्	प्रोथेताम्	प्रोथेयु:
प०	प्रोथतु/प्रोथतात्	प्रोथताम्	प्रोथन्तु
ह्य०	अप्रोथत्	अप्रोथताम्	अप्रोथन्
अ०	अप्रोथीत्	अप्रोथिष्टाम्	अप्रोथिषु:
प०	पुप्रोथ	पुप्रोथतु:	पुप्रोथु:
आ०	प्रोथ्यात्	प्रोथ्यास्ताम्	प्रोथ्यासु:
श्व०	प्रोथिता	प्रोथितारौ	प्रोथितार:
भ०	प्रोथिष्यति	प्रोथिष्यत:	प्रोथिष्यन्ति
क्रि०	अप्रोथिष्यत्	अप्रोथिष्यताम्	अप्रोथिष्यन्

आत्मनेपद

व०	प्रोथते	प्रोथेते	प्रोथन्ते
स०	प्रोथेत	प्रोथेयाताम्	प्रोथेरन्
प०	प्रोथताम्	प्रोथेताम्	प्रोथन्ताम्
ह्य०	अप्रोथत	अप्रोथेताम्	अप्रोथन्त
अ०	अप्रोथिष्ट	अप्रोथिषाताम्	अप्रोथिषत
प०	पुप्रोथे	पुप्रोथाते	पुप्रोथिरे
आ०	प्रोथिषीष्ट	प्रोथिषीयास्ताम्	प्रोथिषीरन्
श्व०	प्रोथिता	प्रोथितारौ	प्रोथितार:
भ०	प्रोथिष्यते	प्रोथिष्येते	प्रोथिष्यन्ते
क्रि०	अप्रोथिष्यत	अप्रोथिष्येताम्	अप्रोथिष्यन्त

९०१ मिथृग (मिथ्) मेधाहिंसयो:।

व०	मेथति	मेथत:	मेथन्ति
स०	मेथेत्	मेथेताम्	मेथेयु:
प०	मेथतु/मेथतात्	मेथताम्	मेथन्तु
ह्य०	अमेथत्	अमेथताम्	अमेथन्
अ०	अमेथीत्	अमेथिष्टाम्	अमेथिषु:
प०	मिमेथ	मिमेथतु:	मिमेथु:
आ०	मिथ्यात्	मिथ्यास्ताम्	मिथ्यासु:
श्व०	मेथिता	मेथितारौ	मेथितार:
भ०	मेथिष्यति	मेथिष्यत:	मेथिष्यन्ति
क्रि०	अमेथिष्यत्	अमेथिष्यताम्	अमेथिष्यन्

आत्मनेपद

व०	मेथते	मेथेते	मेथन्ते
स०	मेथेत	मेथेयाताम्	मेथेरन्
प०	मेथताम्	मेथेताम्	मेथन्ताम्
ह्य०	अमेथत	अमेथेताम्	अमेथन्त
अ०	अमेथिष्ट	अमेथिषाताम्	अमेथिषत
प०	मिमेथे	मिमेथाते	मिमेथिरे
आ०	मेथिषीष्ट	मेथिषीयास्ताम्	मेथिषीरन्
श्व०	मेथिता	मेथितारौ	मेथितार:
भ०	मेथिष्यते	मेथिष्येते	मेथिष्यन्ते
क्रि०	अमेथिष्यत	अमेथिष्येताम्	अमेथिष्यन्त

९०२ मेथृग् (मेथ्) संगमे च।

चकारान्मेधाहिंसयो:।

व०	मेथति	मेथत:	मेथन्ति
स०	मेथेत्	मेथेताम्	मेथेयु:
प०	मेथतु/मेथतात्	मेथताम्	मेथन्तु
ह्य०	अमेथत्	अमेथताम्	अमेथन्
अ०	अमेथीत्	अमेथिष्टाम्	अमेथिषु:
प०	मिमेथ	मिमेथतु:	मिमेथु:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	मेथ्यात्	मेथ्यास्ताम्	मेथ्यासुः
श्व०	मेथिता	मेथितारौ	मेथितारः
भ०	मेथिष्यति	मेथिष्यतः	मेथिष्यन्ति
क्रि०	अमेथिष्यत्	अमेथिष्यताम्	अमेथिष्यन्

आत्मनेपद

व०	मेथते	मेथेते	मेथन्ते
स०	मेथेत	मेथेयाताम्	मेथेरन्
प०	मेथताम्	मेथेताम्	मेथन्ताम्
ह्य०	अमेथत	अमेथेताम्	अमेथन्त
अ०	अमेथिष्ट	अमेथिषाताम्	अमेथिषत
प०	मिमेथे	मिमेथाते	मिमेथिरे
आ०	मेथिषीष्ट	मेथिषीयास्ताम्	मेथिषीरन्
श्व०	मेथिता	मेथितारौ	मेथितारः
भ०	मेथिष्यते	मेथिष्येते	मेथिष्यन्ते
क्रि०	अमेथिष्यत	अमेथिष्येताम्	अमेथिष्यन्त

अथ दान्ताः षट् सेटश्च।

१०३ चदेग् (चद्) याचने।

व०	चदति	चदतः	चदन्ति
	चदसि	चदथः	चदथ
	चदामि	चदावः	चदामः
स०	चदेत्	चदेताम्	चदेयुः
	चदेः	चदेतम्	चदेत
	चदेयम्	चदेव	चदेम
प०	चदतु/चदतात्	चदताम्	चदन्तु
	चद/चदतात्	चदतम्	चदत
	चदानि	चदाव	चदाम
ह्य०	अचदत्	अचदताम्	अचदन्
	अचदः	अचदतम्	अचदत
	अचदम्	अचदाव	अचदाम
अ०	अचदीत्	अचदिष्टाम्	अचदिषुः
	अचदीः	अचदिष्टम्	अचदिष्ट
	अचदिषम्	अचदिष्व	अचदिष्म
प०	चचाद	चेदतुः	चेदुः
	चेदिथ	चेदथुः	चेद
	चेद	चेदिव	चेदिम
आ०	चद्यात्	चद्यास्ताम्	चद्यासुः
	चद्याः	चद्यास्तम्	चद्यास्त
	चद्यासम्	चद्यास्व	चद्यास्म
श्व०	चदिता	चदितारौ	चदितारः
	चदितासि	चदितास्थः	चदितास्थ
	चदितास्मि	चदितास्वः	चदितास्मः
भ०	चदिष्यति	चदिष्यतः	चदिष्यन्ति
	चदिष्यसि	चदिष्यथः	चदिष्यथ
	चदिष्यामि	चदिष्यावः	चदिष्यामः
क्रि०	अचदिष्यत्	अचदिष्यताम्	अचदिष्यन्
	अचदिष्यः	अचदिष्यतम्	अचदिष्यत
	अचदिष्यम्	अचदिष्याव	अचदिष्याम

आत्मनेपद

व०	चदते	चदेते	चदन्ते
स०	चदेत	चदेयाताम्	चदेरन्
प०	चदताम्	चदेताम्	चदन्ताम्
ह्य०	अचदत	अचदेताम्	अचदन्त
अ०	अचदिष्ट	अचदिषाताम्	अचदिषत
प०	चेदे	चेदाते	चेदिरे
आ०	चदिषीष्ट	चदिषीयास्ताम्	चदिषीरन्
श्व०	चदिता	चदितारौ	चदितारः
भ०	चदिष्यते	चदिष्येते	चदिष्यन्ते
क्रि०	अचदिष्यत	अचदिष्येताम्	अचदिष्यन्त

१०४ ऊबुन्दृग् (बुन्द्) निशामने।

निशामनमलोचनम्।

व०	बुन्दति	बुन्दतः	बुन्दन्ति
स०	बुन्देत्	बुन्देताम्	बुन्देयुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	बुन्दतु/बुन्दतात्	बुन्दताम्	बुन्दन्तु
ह्य०	अबुन्दत्	अबुन्दताम्	अबुन्दन्
अ०	अबदत्	अबुदताम्	अबुदन
प०	बुबुन्द	बुबुन्दतुः	बुबुन्दुः
आ०	बुण्यात्	बुण्यास्ताम्	बुण्यासुः
श्व०	बुन्दिता	बुन्दितारौ	बुन्दितारः
भ०	बुन्दिष्यति	बुन्दिष्यतः	बुन्दिष्यन्ति
क्रि०	अबुन्दिष्यत्	अबुन्दिष्यताम्	अबुन्दिष्यन्

आत्मनेपद

व०	बुन्दते	बुन्देते	बुन्दन्ते
स०	बुन्देत	बुन्देयाताम्	बुन्देरन्
प०	बुन्दताम्	बुन्देताम्	बुन्दन्ताम्
ह्य०	अबुन्दत	अबुन्देताम्	अबुन्दन्त
अ०	अबुन्दिष्ट	अबुन्दिषाताम्	अबुन्दिषत
प०	बुबुन्दे	बुबुन्दाते	बुबुन्दिरे
आ०	बुन्दिषीष्ट	बुन्दिषीयास्ताम्	बुन्दिषीरन्
श्व०	बुन्दिता	बुन्दितारौ	बुन्दितारः
भ०	बुन्दिष्यते	बुन्दिष्येते	बुन्दिष्यन्ते
क्रि०	अबुन्दिष्यत	अबुन्दिष्येताम्	अबुन्दिष्यन्त

९०५ णिदृग् (निद्) कुत्सासंनिकर्षयोः।

व०	नेदति	नेदतः	नेदन्ति
स०	नेदेत्	नेदेताम्	नेदेयुः
प०	नेदतु/नेदतात्	नेदताम्	नेदन्तु
ह्य०	अनेदत्	अनेदताम्	अनेदन्
अ०	अनेदीत्	अनेदिष्टाम्	अनेदिषुः
प०	निनेद	निनिदतुः	निनिदुः
आ०	निद्यात्	निद्यास्ताम्	निद्यासुः
श्व०	नेदिता	नेदितारौ	नेदितारः
भ०	नेदिष्यति	नेदिष्यतः	नेदिष्यन्ति
क्रि०	अनेदिष्यत्	अनेदिष्यताम्	अनेदिष्यन्

आत्मनेपद

व०	नेदते	नेदेते	नेदन्ते
स०	नेदेत	नेदेयाताम्	नेदेरन्
प०	नेदताम्	नेदेताम्	नेदन्ताम्
ह्य०	अनेदत	अनेदेताम्	अनेदन्त
अ०	अनेदिष्ट	अनेदिषाताम्	अनेदिषत
प०	निनिदे	निनिदाते	निनिदिरे
आ०	नेदिषीष्ट	नेदिषीयास्ताम्	नेदिषीरन्
श्व०	नेदिता	नेदितारौ	नेदितारः
भ०	नेदिष्यते	नेदिष्येते	नेदिष्यन्ते
क्रि०	अनेदिष्यत	अनेदिष्येताम्	अनेदिष्यन्त

९०६ णेदृग् (नेद्) कुत्सासंनिकर्षयोः।

व०	नेदति	नेदतः	नेदन्ति
स०	नेदेत्	नेदेताम्	नेदेयुः
प०	नेदतु/नेदतात्	नेदताम्	नेदन्तु
ह्य०	अनेदत्	अनेदताम्	अनेदन्
अ०	अनेदीत्	अनेदिष्टाम्	अनेदिषुः
प०	निनेद	निनिदतुः	निनिदुः
आ०	निद्यात्	निद्यास्ताम्	निद्यासुः
श्व०	नेदिता	नेदितारौ	नेदितारः
भ०	नेदिष्यति	नेदिष्यतः	नेदिष्यन्ति
क्रि०	अनेदिष्यत्	अनेदिष्यताम्	अनेदिष्यन्

आत्मनेपद

व०	नेदते	नेदेते	नेदन्ते
स०	नेदेत	नेदेयाताम्	नेदेरन्
प०	नेदताम्	नेदेताम्	नेदन्ताम्
ह्य०	अनेदत	अनेदेताम्	अनेदन्त
अ०	अनेदिष्ट	अनेदिषाताम्	अनेदिषत
प०	निनिदे	निनिदाते	निनिदिरे
आ०	नेदिषीष्ट	नेदिषीयास्ताम्	नेदिषीरन्
श्व०	नेदिता	नेदितारौ	नेदितारः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	नेदिष्यते	नेदिष्येते	नेदिष्यन्ते
क्रि०	अनेदिष्यत	अनेदिष्येताम्	अनेदिष्यन्त

९०७ मिदृग् (मिद्) मेधाहिंसयोः।

व०	मेदति	मेदतः	मेदन्ति
स०	मेदेत्	मेदेताम्	मेदेयुः
प०	मेदतु/मेदतात्	मेदताम्	मेदन्तु
ह्य०	अमेदत्	अमेदताम्	अमेदन्
अ०	अमेदीत्	अमेदिष्टाम्	अमेदिषुः
प०	मिमेद	मिमेदतुः	मिमेदुः
आ०	मिद्यात्	मिद्यास्ताम्	मिद्यासुः
श्व०	मेदिता	मेदितारौ	मेदितारः
भ०	मेदिष्यति	मेदिष्यतः	मेदिष्यन्ति
क्रि०	अमेदिष्यत्	अमेदिष्यताम्	अमेदिष्यन्

आत्मनेपद

व०	मेदते	मेदेते	मेदन्ते
स०	मेदेत	मेदेयाताम्	मेदेरन्
प०	मेदताम्	मेदेताम्	मेदन्ताम्
ह्य०	अमेदत	अमेदेताम्	अमेदन्त
अ०	अमेदिष्ट	अमेदिषाताम्	अमेदिषत
प०	मिमेदे	मिमेदाते	मिमेदिरे
आ०	मेदिषीष्ट	मेदिषीयास्ताम्	मेदिषीरन्
श्व०	मेदिता	मेदितारौ	मेदितारः
भ०	मेदिष्यते	मेदिष्येते	मेदिष्यन्ते
क्रि०	अमेदिष्यत	अमेदिष्येताम्	अमेदिष्यन्त

९०८ मेदृग् (मेद्) मेधाहिसयोः।

व०	मेदति	मेदतः	मेदन्ति
स०	मेदेत्	मेदेताम्	मेदेयुः
प०	मेदतु/मेदतात्	मेदताम्	मेदन्तु
ह्य०	अमेदत्	अमेदताम्	अमेदन्
अ०	अमेदीत्	अमेदिष्टाम्	अमेदिषुः
प०	मिमेद	मिमेदतुः	मिमेदुः
आ०	मिद्यात्	मिद्यास्ताम्	मिद्यासुः
श्व०	मेदिता	मेदितारौ	मेदितारः
भ०	मेदिष्यति	मेदिष्यतः	मेदिष्यन्ति
क्रि०	अमेदिष्यत्	अमेदिष्यताम्	अमेदिष्यन्

आत्मनेपद

व०	मेदते	मेदेते	मेदन्ते
स०	मेदेत	मेदेयाताम्	मेदेरन्
प०	मेदताम्	मेदेताम्	मेदन्ताम्
ह्य०	अमेदत	अमेदेताम्	अमेदन्त
अ०	अमेदिष्ट	अमेदिषाताम्	अमेदिषत
प०	मिमेदे	मिमेदाते	मिमेदिरे
आ०	मेदिषीष्ट	मेदिषीयास्ताम्	मेदिषीरन्
श्व०	मेदिता	मेदितारौ	मेदितारः
भ०	मेदिष्यते	मेदिष्येते	मेदिष्यन्ते
क्रि०	अमेदिष्यत	अमेदिष्येताम्	अमेदिष्यन्त

अथ धान्ताश्चत्वारः सेटश्च।

९०९ मेधृग् (मेध्) संगमे च। चकारान्मेधाहिंसयोः।

व०	मेधति	मेधतः	मेधन्ति
स०	मेधेत्	मेधेताम्	मेधेयुः
प०	मेधतु/मेधतात्	मेधताम्	मेधन्तु
ह्य०	अमेधत्	अमेधताम्	अमेधन्
अ०	अमेधीत्	अमेधिष्टाम्	अमेधिषुः
प०	मिमेध	मिमेधतुः	मिमेधुः
आ०	मिध्यात्	मिध्यास्ताम्	मिध्यासुः
श्व०	मेधिता	मेधितारौ	मेधितारः
भ०	मेधिष्यति	मेधिष्यतः	मेधिष्यन्ति
क्रि०	अमेधिष्यत्	अमेधिष्यताम्	अमेधिष्यन्

आत्मनेपद

व०	मेधते	मेधेते	मेधन्ते
स०	मेधेत	मेधेयाताम्	मेधेरन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	मेधताम्	मेधेताम्	मेधन्ताम्
ह्य०	अमेधत	अमेधेताम्	अमेधन्त
अ०	अमेधिष्ट	अमेधिषाताम्	अमेधिषत
प०	मिमेधे	मिमेधाते	मिमेधिरे
आ०	मेधिषीष्ट	मेधिषीयास्ताम्	मेधिषीरन्
श्व०	मेधिता	मेधितारौ	मेधितार:
भ०	मेधिष्यते	मेधिष्येते	मेधिष्यन्ते
क्रि०	अमेधिष्यत	अमेधिष्येताम्	अमेधिष्यन्त

९१० शृधूग् (शृध्) उन्दे। उन्दः क्लेदनम्।

व०	शर्धति	शर्धत:	शर्धन्ति
स०	शर्धेत्	शर्धेताम्	शर्धेयु:
प०	शर्धतु/शर्धतात्	शर्धताम्	शर्धन्तु
ह्य०	अशर्धत्	अशर्धताम्	अशर्धन्
अ०	अशर्धीत्	अशर्धिष्टाम्	अशर्धिषु:
प०	शशर्ध	शशर्धतु:	शशर्धु:
आ०	शध्यात्	शध्यास्ताम्	शध्यासु:
श्व०	शर्धिता	शर्धितारौ	शर्धितार:
भ०	शर्धिष्यति	शर्धिष्यत:	शर्धिष्यन्ति
क्रि०	अशर्धिष्यत्	अशर्धिष्यताम्	अशर्धिष्यन्

आत्मनेपद

व०	शर्धते	शर्धेते	शर्धन्ते
स०	शर्धेत	शर्धेयाताम्	शर्धेरन्
प०	शर्धताम्	शर्धेताम्	शर्धन्ताम्
ह्य०	अशर्धत	अशर्धेताम्	अशर्धन्त
अ०	अशर्धिष्ट	अशर्धिषाताम्	अशर्धिषत
प०	शशृधे	शशृधाते	शशृधिरे
आ०	शर्धिषीष्ट	शर्धिषीयास्ताम्	शर्धिषीरन्
श्व०	शर्धिता	शर्धितारौ	शर्धितार:
भ०	शर्धिष्यते	शर्धिष्येते	शर्धिष्यन्ते
क्रि०	अशर्धिष्यत	अशर्धिष्येताम्	अशर्धिष्यन्त

९११ मृधूग् (मृध्) उन्दे। उन्दः क्लेदनम्।

व०	मर्धति	मर्धत:	मर्धन्ति
स०	मर्धेत्	मर्धेताम्	मर्धेयु:
प०	मर्धतु/मर्धतात्	मर्धताम्	मर्धन्तु
ह्य०	अमर्धत्	अमर्धताम्	अमर्धन्
अ०	अमर्धीत्	अमर्धिष्टाम्	अमर्धिषु:
प०	ममर्ध	ममर्धतु:	ममर्धु:
आ०	मध्यात्	मध्यास्ताम्	मध्यासु:
श्व०	मर्धिता	मर्धितारौ	मर्धितार:
भ०	मर्धिष्यति	मर्धिष्यत:	मर्धिष्यन्ति
क्रि०	अमर्धिष्यत्	अमर्धिष्यताम्	अमर्धिष्यन्

आत्मनेपद

व०	मर्धते	मर्धेते	मर्धन्ते
स०	मर्धेत	मर्धेयाताम्	मर्धेरन्
प०	मर्धताम्	मर्धेताम्	मर्धन्ताम्
ह्य०	अमर्धत	अमर्धेताम्	अमर्धन्त
अ०	अमर्धिष्ट	अमर्धिषाताम्	अमर्धिषत
प०	ममृधे	ममृधाते	ममृधिरे
आ०	मर्धिषीष्ट	मर्धिषीयास्ताम्	मर्धिषीरन्
श्व०	मर्धिता	मर्धितारौ	मर्धितार:
भ०	मर्धिष्यते	मर्धिष्येते	मर्धिष्यन्ते
क्रि०	अमर्धिष्यत	अमर्धिष्येताम्	अमर्धिष्यन्त

९१२ बुधृग् (बुध्) बोधने।

९१० शृधूग् (शृध्) उन्दे। उन्दः क्लेदनम्।

व०	बोधति	बोधत:	बोधन्ति
स०	बोधेत्	बोधेताम्	बोधेयु:
प०	बोधतु/बोधतात्	बोधताम्	बोधन्तु
ह्य०	अबोधत्	अबोधताम्	अबोधन्
अ०	अबोधीत्	अबोधिष्टाम्	अबोधिषु:
प०	बुबोध	बुबुधतु:	बुबुधु:
आ०	बुध्यात्	बुध्यास्ताम्	बुध्यासु:
श्व०	बोधिता	बोधितारौ	बोधितार:
भ०	बोधिष्यति	बोधिष्यत:	बोधिष्यन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रि०	अबोधिष्यत्	अबोधिष्यताम्	अबोधिष्यन्

आत्मनेपद

व०	बोधते	बोधेते	बोधन्ते
स०	बोधेत	बोधेयाताम्	बोधेरन्
प०	बोधताम्	बोधेताम्	बोधन्ताम्
ह्य०	अबोधत	अबोधेताम्	अबोधन्त
अ०	अबोधिष्ट	अबोधिषाताम्	अबोधिषत
प०	बुबुधे	बुबुधाते	बुबुधिरे
आ०	बोधिषीष्ट	बोधिषीयास्ताम्	बोधिषीरन्
श्व०	बोधिता	बोधितारौ	बोधितार:
भ०	बोधिष्यते	बोधिष्येते	बोधिष्यन्ते
क्रि०	अबोधिष्यत	अबोधिष्येताम्	अबोधिष्यन्त

। अथ नान्तास्त्रय: सेटश्च।

११३ खनूग् (खन्) अवदारणे।

व०	खनति	खनत:	खनन्ति
स०	खनेत्	खनेताम्	खनेयु:
प०	खनतु/खनतात्	खनताम्	खनन्तु
ह्य०	अखनत्	अखनताम्	अखनन्
अ०	अखनीत्	अखनिष्टाम्	अखनिषु:
प०	चखान	चख्नतु:	चख्नु:
आ०	खन्यात्	खन्यास्ताम्	खन्यासु:
श्व०	खनिता	खनितारौ	खनितार:
भ०	खनिष्यति	खनिष्यत:	खनिष्यन्ति
क्रि०	अखनिष्यत्	अखनिष्यताम्	अखनिष्यन्

आत्मनेपद

व०	खनते	खनेते	खनन्ते
स०	खनेत	खनेयाताम्	खनेरन्
प०	खनताम्	खनेताम्	खनन्ताम्
ह्य०	अखनत	अखनेताम्	अखनन्त
अ०	अखनिष्ट	अखनिषाताम्	अखनिषत
प०	चख्ने	चख्नाते	चख्निरे
आ०	खनिषीष्ट	खनिषीयास्ताम्	खनिषीरन्
श्व०	खनिता	खनितारौ	खनितार:
भ०	खनिष्यते	खनिष्येते	खनिष्यन्ते
क्रि०	अखनिष्यत	अखनिष्येताम्	अखनिष्यन्त

११४ दानी (दान्-दीदांस्) अवखण्डने आर्जवे।

व०	दीदांसति	दीदांसत:	दीदांसन्ति
	दीदांससि	दीदांसथ:	दीदांसथ
	दीदांसामि	दीदांसाव:	दीदांसाम:
स०	दीदांसेत्	दीदांसेताम्	दीदांसेयु:
	दीदांसे:	दीदांसेतम्	दीदांसेत
	दीदांसेयम्	दीदांसेव	दीदांसेम
प०	दीदांसतु/दीदांसतात्	दीदांसताम्	दीदांसन्तु
	दीदांस/दीदांसतात्	दीदांसतम्	दीदांसत
	दीदांसानि	दीदांसाव	दीदांसाम
ह्य०	अदीदांसत्	अदीदांसताम्	अदीदांसन्
	अदीदांस:	अदीदांसतम्	अदीदांसत
	अदीदांसम्	अदीदांसाव	अदीदांसाम
अ०	अदीदांसीत्	अदीदांसिष्टाम्	अदीदांसिषु:
	अदीदांसी:	अदीदांसिष्टम्	अदीदांसिष्ट
	अदीदांसिषम्	अदीदांसिष्व	अदीदांसिष्म
प०	दीदांसाञ्चकार	दीदांसाञ्चक्रतु:	दीदांसाञ्चक्रु:
	दीदांसाञ्चकर्थ	दीदांसाञ्चक्रथु:	दीदासाञ्चक्र
	दीदांसाञ्चकार/चकर	दीदांसाञ्चकृव	दीदांसाञ्चकृम
	दीदांसाम्बभूव/दीदांसामास		
आ०	दीदांस्यात्	दीदांस्यास्ताम्	दीदांस्यासु:
	दीदांस्या:	दीदांस्यास्तम्	दीदांस्यास्त
	दीदांस्यासम्	दीदांस्यास्व	दीदांस्यास्म
श्व०	दीदांसिता	दीदांसितारौ	दीदांसितार:
	दीदांसितासि	दीदांसितास्थ:	दीदांसितास्थ
	दीदांसितास्मि	दीदांसितास्व:	दीदांसितास्म:
भ०	दीदांसिष्यति	दीदांसिष्यत:	दीदांसिष्यन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	दीदांसिष्यसि	दीदांसिष्यथ:	दीदांसिष्यथ
	दीदांसिष्यामि	दीदांसिष्याव:	दीदांसिष्याम:
क्रि०	अदीदांसिष्यत्	अदीदांसिष्यताम्	अदीदांसिष्यन्
	अदीदांसिष्य:	अदीदांसिष्यतम्	अदीदांसिष्यत
	अदीदांसिष्यम्	अदीदांसिष्याव	अदीदांसिष्याम्

आत्मनेपद

व०	दीदांसते	दीदांसेते	दीदांसन्ते
	दीदांससे	दीदांसेथे	दीदांसध्वे
	दीदांसे	दीदांसावहे	दीदांसामहे
स०	दीदांसेत	दीदांसेयाताम्	दीदांसेरन्
	दीदांसेथा:	दीदांसेयाथाम्	दीदांसेध्वम्
	दीदांसेय	दीदांसेवहि	दीदांसेमहि
प०	दीदांसताम्	दीदांसेताम्	दीदांसन्ताम्
	दीदांसस्व	दीदांसेथाम्	दीदांसध्वम्
	दीदांसै	दीदांसावहै	दीदांसामहै
ह्य०	अदीदांसत	अदीदांसेताम्	अदीदांसन्त
	अदीदांसथा:	अदीदांसेथाम	अदीदांसध्वम्
	अदीदांसे	अदीदांसावहि	अदीदांसामहि
अ०	अदीदांसिष्ट	अदीदांसिषाताम्	अदीदांसिषत
	अदीदांसिष्ठा:	अदीदांसिषाथाम्	अदीदांसिड्ढवम्/ध्वम्
	अदीदांसिषि	अदीदांसिष्वहि	अदीदांसिष्महि
प०	दीदांसाञ्चक्रे	दीदांसाञ्चक्राते	दीदांसाञ्चक्रिरे
	दीदांसाञ्चकृषे	दीदांसाञ्चक्राथे	दीदांसाञ्चकृढ्वे
	दीदांसाञ्चक्रे	दीदांसाञ्चकृवहे	दीदांसाञ्चकृमहे
	दीदांसाम्बभूव/दीदांसामास		
आ०	दीदांसिषीष्ट	दीदांसिषीयास्ताम्	दीदांसिषीरन्
	दीदांसिषीष्ठा:	दीदांसिषीयास्थाम्	दीदांसिषीध्वम्
	दीदांसिषीय	दीदांसिषीवहि	दीदांसिषीमहि
श्व०	दीदांसिता	दीदांसितारौ	दीदांसितार:
	दीदांसितासे	दीदांसितासाथे	दीदांसिताध्वे
	दीदांसिताहे	दीदांसितास्वहे	दीदांसितास्महे
भ०	दीदांसिष्यते	दीदांसिष्येते	दीदांसिष्यन्ते
	दीदांसिष्यसे	दीदांसिष्येथे	दीदांसिष्यध्वे
	दीदांसिष्ये	दीदांसिष्यावहे	दीदांसिष्यामहे
क्रि०	अदीदांसिष्यत	अदीदांसिष्येताम्	अदीदांसिष्यन्त
	अदीदांसिष्यथा:	अदीदांसिष्येथाम्	अदीदांसिष्यध्वम्
	अदीदांसिष्ये	अदीदांसिष्यावहि	अदीदांसिष्यामहि

९१५ शानी (शान्-शीशांसू) तेजने निशाने सनि।

व०	शीशांसति	श्रीश्रांसत:	श्रीश्रांसन्ति
स०	श्रीश्रांसेत्	श्रीश्रांसेताम्	श्रीश्रांसेयु:
प०	श्रीश्रांसतु/श्रीश्रांसतात्	श्रीश्रांसताम्	श्रीश्रांसन्तु
ह्य०	अश्रीश्रांसत्	अशीशांसताम्	अशीशांसन्
अ०	अशीशांसीत्	अशीशांसिष्टाम्	अशीशांसिषु:
प०	श्रीश्रांसाञ्चकार	श्रीश्रांसाञ्चक्रतु:	श्रीश्रांसाञ्चक्रु:
आ०	शीशांस्यात्	शीशांस्यास्ताम्	शीशांस्यासु:
श्व०	शीशांसिता	शीशांसितारौ	शीशांसितार:
भ०	शीशांसिष्यति	शीशांसिष्यत:	शीशांसिष्यन्ति
क्रि०	अशीशांसिष्यत्	अशीशांसिष्यताम्	अशीशांसिष्यन्

आत्मनेपद

व०	शीशांसते	शीशांसेते	शीशांसन्ते
स०	शीशांसेत	शीशांसेयाताम्	शीशांसेरन्
प०	शीशांसताम्	शीशांसेताम्	शीशांसन्ताम्
ह्य०	अशीशांसत	अशीशांसेताम्	अशीशांसन्त
अ०	अशीशांसिष्ट	अशीशांसिषाताम्	अशीशांसिषत
प०	शीशांसाञ्चक्रे	शीशांसाञ्चक्राते	श्रीश्रांसाञ्चक्रिरे
	श्रीश्रांसाम्बभूव/श्रीश्रांसामास		
आ०	शीशांसिषीष्ट	शीशांसिषीयास्ताम्	शीशांसिषीरन्
श्व०	शीशांसिता	शीशांसितारौ	शीशांसितार:
भ०	श्रीशांसिष्यते	श्रीशांसिष्येते	श्रीशांसिष्यन्ते
क्रि०	अश्रीशांसिष्यत	अश्रीशांसिष्येताम्	अश्रीशांसिष्यन्त

अथ पान्तोऽनिट् च।

९१६ शपीं (शप्) आक्रोशे।

आक्रोशो विरुद्धानुध्यानम्। अनेकार्थत्वादुपलम्भनेऽपि।

व०	शपति	शपतः	शपन्ति
	शपसि	शपथः	शपथ
	शपामि	शपावः	शपामः
स०	शपेत्	शपेताम्	शपेयुः
	शपेः	शपेतम्	शपेत
	शपेयम्	शपेव	शपेम
प०	शपतु/शपतात्	शपताम्	शपन्तु
	शप/शपतात्	शपतम्	शपत
	शपानि	शपाव	शपाम
ह्य०	अशपत्	अशपताम्	अशपन्
	अशपः	अशपतम्	अशपत
	अशपम्	अशपाव	अशपाम
अ०	अशाप्सीत्	अशाप्ताम्	अशाप्सुः
	अशाप्सीः	अशाप्तम्	अशाप्त
	अशाप्सम्	अशाप्स्व	अशाप्स्म
प०	शशाप	शेपतुः	शेपुः
	शेशपिथ/शशप्थ	शेपथुः	शेप
	शशाप/शशप	शेपिव	शेपिम
आ०	शप्यात्	शप्यास्ताम्	शप्यासुः
	शप्याः	शप्यास्तम्	शप्यास्त
	शप्यासम्	शप्यास्व	शप्यास्म
श्व०	शप्ता	शप्तारौ	शप्तारः
	शप्तासि	शप्तास्थः	शप्तास्थ
	शप्तास्मि	शप्तास्वः	शप्तास्मः
भ०	शप्स्यति	शप्स्यतः	शप्स्यन्ति
	शप्स्यसि	शप्स्यथः	शप्स्यथ
	शप्स्यामि	शप्स्यावः	शप्स्यामः
क्रि०	अशप्स्यत्	अशप्स्यताम्	अशप्स्यन्
	अशप्स्यः	अशप्स्यतम्	अशप्स्यत
	अशप्स्यम्	अशप्स्याव	अशप्स्याम्

आत्मनेपद

व०	शपते	शपेते	शपन्ते
	शपसे	शपेथे	शपध्वे
	शपे	शपावहे	शपामहे
स०	शपेत	शपेयाताम्	शपेरन्
	शपेथाः	शपेयाथाम्	शपेध्वम्
	शपेय	शपेवहि	शपेमहि
प०	शपताम्	शपेताम्	शपन्ताम्
	शपस्व	शपेथाम्	शपध्वम्
	शपै	शपावहै	शपामहै
ह्य०	अशपत	अशपेताम्	अशपन्त
	अशपथाः	अशपेथाम	अशपध्वम्
	अशपे	अशपावहि	अशपामहि
अ०	अशप्त	अशप्साताम्	अशप्सत
	अशप्थाः	अशप्साथाम्	अशबद्ध्वम/बध्वम्
	अशप्सि	अशप्स्वहि	अशप्स्महि
प०	शेपे	शेपाते	शेपिरे
	शेपिषे	शेपाथे	शेपिध्वे
	शेपे	शेपिवहे	शेपिमहे
आ०	शप्सीष्ट	शप्सीयास्ताम्	शप्सीरन्
	शप्सीष्ठाः	शप्सीयास्थाम्	शप्सीध्वम्
	शप्सीय	शप्सीवहि	शप्सीमहि
श्व०	शप्ता	शप्तारौ	शप्तारः
	शप्तासे	शप्तासाथे	शप्ताध्वे
	शप्ताहे	शप्तास्वहे	शप्तास्महे
भ०	शप्स्यते	शप्स्येते	शप्स्यन्ते
	शप्स्यसे	शप्स्येथे	शप्स्यध्वे
	शप्स्ये	शप्स्यावहे	शप्स्यामहे
क्रि०	अशप्स्यत	अशप्स्येताम्	अशप्स्यन्त
	अशप्स्यथाः	अशप्स्येथाम्	अशप्स्यध्वम्
	अशप्स्ये	अशप्स्यावहि	अशप्स्यामहि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ यान्तौ सेटौ च।

९१७ चायृग् (चाय्) पूजानिशामनयोः।

व०	चायति	चायतः	चायन्ति
	चायसि	चायथः	चायथ
	चायामि	चायावः	चायामः
स०	चायेत्	चायेताम्	चायेयुः
	चायेः	चायेतम्	चायेत
	चायेयम्	चायेव	चायेम
प०	चायतु/चायतात्	चायताम्	चायन्तु
	चाय/चायतात्	चायतम्	चायत
	चायानि	चायाव	चायाम
ह्य०	अचायत्	अचायताम्	अचायन्
	अचायः	अचायतम्	अचायत
	अचायम्	अचायाव	अचायाम
अ०	अचायीत्	अचायिष्टाम्	अचायिषुः
	अचायीः	अचायिष्टम्	अचायिष्ट
	अचायिषम्	अचायिष्व	अचायिष्म
प०	चचाय	चचायतुः	चचायुः
	चचायिथ	चचायथुः	चचाय
	चचाय	चचायिव	चचायिम
आ०	चाय्यात्	चाय्यास्ताम्	चाय्यासुः
	चाय्याः	चाय्यास्तम्	चाय्यास्त
	चाय्यासम्	चाय्यास्व	चाय्यास्म
श्व०	चायिता	चायितारौ	चायितारः
	चायितासि	चायितास्थः	चायितास्थ
	चायितास्मि	चायितास्वः	चायितास्मः
भ०	चायिष्यति	चायिष्यतः	चायिष्यन्ति
	चायिष्यसि	चायिष्यथः	चायिष्यथ
	चायिष्यामि	चायिष्यावः	चायिष्यामः
क्रि०	अचायिष्यत्	अचायिष्यताम्	अचायिष्यन्
	अचायिष्यः	अचायिष्यतम्	अचायिष्यत
	अचायिष्यम्	अचायिष्याव	अचायिष्याम्

आत्मनेपद

व०	चायते	चायेते	चायन्ते
	चायसे	चायेथे	चायध्वे
	चाये	चायावहे	चायामहे
स०	चायेत	चायेयाताम्	चायेरन्
	चायेथाः	चायेयाथाम्	चायेध्वम्
	चायेय	चायेवहि	चायेमहि
प०	चायताम्	चायेताम्	चायन्ताम्
	चायस्व	चायेथाम्	चायध्वम्
	चायै	चायावहै	चायामहै
ह्य०	अचायत	अचायेताम्	अचायन्त
	अचायथाः	अचायेथाम	अचायध्वम्
	अचाये	अचायावहि	अचायामहि
अ०	अचायिष्ट	अचायिषाताम्	अचायिषत
	अचायिष्ठाः	अचायिषाथाम्	अचायिड्ढवम्/ध्वम्
	अचायिषि	अचायिष्वहि	अचायिष्महि
प०	चचाये	चचायाते	चचायिरे
	चचायिषे	चचायाथे	चचायिध्वे
	चचाये	चचायिवहे	चचायिमहे
आ०	चायिषीष्ट	चायिषीयास्ताम्	चायिषीरन्
	चायिषीष्ठाः	चायिषीयास्थाम्	चायिषीध्वम्
	चायिषीय	चायिषीवहि	चायिषीमहि
श्व०	चायिता	चायितारौ	चायितारः
	चायितासे	चायितासाथे	चायिताध्वे
	चायिताहे	चायितास्वहे	चायितास्महे
भ०	चायिष्यते	चायिष्येते	चायिष्यन्ते
	चायिष्यसे	चायिष्येथे	चायिष्यध्वे
	चायिष्ये	चायिष्यावहे	चायिष्यामहे
क्रि०	अचायिष्यत	अचायिष्येताम्	अचायिष्यन्त
	अचायिष्यथाः	अचायिष्येथाम्	अचायिष्यध्वम्
	अचायिष्ये	अचायिष्यावहि	अचायिष्यामहि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९१८ व्ययी (व्यय्) गतौ।

व०	व्ययति	व्ययत:	व्ययन्ति
स०	व्ययेत्	व्ययेताम्	व्ययेयु:
प०	व्ययतु/व्ययतात्	व्ययताम्	व्ययन्तु
ह्य०	अव्ययत्	अव्ययताम्	अव्ययन्
अ०	अव्ययीत्	अव्ययिष्टाम्	अव्ययिषु:
प०	वव्याय	व्यव्ययतु:	व्यव्यु:
आ०	व्यय्यात्	व्यय्यास्ताम्	व्यय्यासु:
श्व०	व्ययिता	व्ययितारौ	व्ययितार:
भ०	व्ययिष्यति	व्ययिष्यत:	व्ययिष्यन्ति
क्रि०	अव्ययिष्यत्	अव्ययिष्यताम्	अव्ययिष्यन्

आत्मनेपद

व०	व्ययते	व्ययेते	व्ययन्ते
स०	व्ययेत	व्ययेयाताम्	व्ययेरन्
प०	व्ययताम्	व्ययेताम्	व्ययन्ताम्
ह्य०	अव्ययत	अव्ययेताम्	अव्ययन्त
अ०	अव्ययिष्ट	अव्ययिषाताम्	अव्ययिषत
प०	व्यव्यये	व्यव्ययाते	व्यव्ययिरे
आ०	व्ययिषीष्ट	व्ययिषीयास्ताम्	व्ययिषीरन्
श्व०	व्ययिता	व्ययितारौ	व्ययितार:
भ०	व्ययिष्यते	व्ययिष्येते	व्ययिष्यन्ते
क्रि०	अव्ययिष्यत	अव्ययिष्येताम्	अव्ययिष्यन्त

अथ लान्त: सेट् च।

९१९ अली (अल्) भूषणपर्याप्तिवारणेषु।

व०	अलति	अलत:	अलन्ति
स०	अलेत्	अलेताम्	अलेयु:
प०	अलतु/अलतात्	अलताम्	अलन्तु
ह्य०	आलत्	आलताम्	आलन्
अ०	आलीत्	आलिष्टाम्	आलिषु:
प०	आल	आलतु:	आलु:
आ०	आल्यात्	आल्यास्ताम्	आल्यासु:
श्व०	अलिता	अलितारौ	अलितार:
भ०	अलिष्यति	अलिष्यत:	अलिष्यन्ति
क्रि०	आलिष्यत्	आलिष्यताम्	आलिष्यन्

आत्मनेपद

व०	अलते	अलेते	अलन्ते
स०	अलेत	अलेयाताम्	अलेरन्
प०	अलताम्	अलेताम्	अलन्ताम्
ह्य०	आलत	आलेताम्	आलन्त
अ०	आलिष्ट	आलिषाताम्	आलिषत
प०	आले	आलाते	आलिरे
आ०	अलिषीष्ट	अलिषीयास्ताम्	अलिषीरन्
श्व०	अलिता	अलितारौ	अलितार:
भ०	अलिष्यते	अलिष्येते	अलिष्यन्ते
क्रि०	आलिष्यत	आलिष्येताम्	आलिष्यन्त

अथ वान्तौ सेटौ च।

९२० धावूग् (धाव्) गतिशुद्ध्यो:।

व०	धावति	धावत:	धावन्ति
स०	धावेत्	धावेताम्	धावेयु:
प०	धावतु/धावतात्	धावताम्	धावन्तु
ह्य०	अधावत्	अधावताम्	अधावन्
अ०	अधावीत्	अधाविष्टाम्	अधाविषु:
प०	दधाव	दधावतु:	दधावु:
आ०	धाव्यात्	धाव्यास्ताम्	धाव्यासु:
श्व०	धाविता	धावितारौ	धावितार:
भ०	धाविष्यति	धाविष्यत:	धाविष्यन्ति
क्रि०	अधाविष्यत्	अधाविष्यताम्	अधाविष्यन्

आत्मनेपद

व०	धावते	धावेते	धावन्ते
स०	धावेत	धावेयाताम्	धावेरन्
प०	धावताम्	धावेताम्	धावन्ताम्
ह्य०	अधावत	अधावेताम्	अधावन्त
अ०	अधाविष्ट	अधाविषाताम्	अधाविषत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	दधावे	दधावाते	दधाविरे
आ०	धाविषीष्ट	धाविषीयास्ताम्	धाविषीरन्
श्व०	धाविता	धावितारौ	धावितार:
भ०	धाविष्यते	धाविष्येते	धाविष्यन्ते
क्रि०	अधाविष्यत	अधाविष्येताम्	अधाविष्यन्त

९२१ चीवृग् (चीव्) झषीवत्।

झषी आदानसंवरणयोर्वक्ष्यते तद्वदयमप्यादानसंवरणयोरित्यर्थ:।

व०	चीवति	चीवत:	चीवन्ति
स०	चीवेत्	चीवेताम्	चीवेयु:
प०	चीवतु/चीवतात्	चीवताम्	चीवन्तु
ह्य०	अचीवत्	अचीवताम्	अचीवन्
अ०	अचीवीत्	अचीविष्टाम्	अचीविषु:
प०	चिचीव	चिचीवतु:	चिचीवु:
आ०	चीव्यात्	चीव्यास्ताम्	चीव्यासु:
श्व०	चीविता	चीवितारौ	चीवितार:
भ०	चीविष्यति	चीविष्यत:	चीविष्यन्ति
क्रि०	अचीविष्यत्	अचीविष्यताम्	अचीविष्यन्

आत्मनेपद

व०	चीवते	चीवेते	चीवन्ते
स०	चीवेत	चीवेयाताम्	चीवेरन्
प०	चीवताम्	चीवेताम्	चीवन्ताम्
ह्य०	अचीवत	अचीवेताम्	अचीवन्त
अ०	अचीविष्ट	अचीविषाताम्	अचीविषत
प०	चिचीवे	चिचीवाते	चिचीविरे
आ०	चीविषीष्ट	चीविषीयास्ताम्	चीविषीरन्
श्व०	चीविता	चीवितारौ	चीवितार:
भ०	चीविष्यते	चीविष्येते	चीविष्यन्ते
क्रि०	अचीविष्यत	अचीविष्येताम्	अचीविष्यन्त

अथ शान्त: सेट् च।

९२२ दाशृङ् (दाश्) दाने।

व०	दाशति	दाशत:	दाशन्ति
स०	दाशेत्	दाशेताम्	दाशेयु:
प०	दाशतु/दाशतात्	दाशताम्	दाशन्तु
ह्य०	अदाशत्	अदाशताम्	अदाशन्
अ०	अदाशीत्	अदाशिष्टाम्	अदाशिषु:
प०	ददाश	ददाशतु:	ददाशु:
आ०	दाश्यात्	दाश्यास्ताम्	दाश्यासु:
श्व०	दाशिता	दाशितारौ	दाशितार:
भ०	दाशिष्यति	दाशिष्यत:	दाशिष्यन्ति
क्रि०	अदाशिष्यत्	अदाशिष्यताम्	अदाशिष्यन्

आत्मनेपद

व०	दाशते	दाशेते	दाशन्ते
स०	दाशेत	दाशेयाताम्	दाशेरन्
प०	दाशताम्	दाशेताम्	दाशन्ताम्
ह्य०	अदाशत	अदाशेताम्	अदाशन्त
अ०	अदाशिष्ट	अदाशिषाताम्	अदाशिषत
प०	ददाशे	ददाशाते	ददिशरे
आ०	दाशिषीष्ट	दाशिषीयास्ताम्	दाशिषीरन्
श्व०	दाशिता	दाशितारौ	दाशितार:
भ०	दाशिष्यते	दाशिष्येते	दाशिष्यन्ते
क्रि०	अदाशिष्यत	अदाशिष्येताम्	अदाशिष्यश्त

अथ षान्ता नव त्विषींवर्जा: सेटश्च।

९२३ झषि (झष्) आदानसंवरणयो:।

व०	झषति	झषत:	झषन्ति
स०	झषेत्	झषेताम्	झषेयु:
प०	झषतु/झषतात्	झषताम्	झषन्तु
ह्य०	अझषत्	अझषताम्	अझषन्
अ०	अझषीत्	अझषिष्टाम्	अझषिषु:
		तथा	
	अझाषीत्	अझाषिष्टाम्	अझाषिषु:
प०	जझष	जझषतु:	जझषु:
आ०	झष्यात्	झष्यास्ताम्	झष्यासु:
श्व०	झषिता	झषितारौ	झषितार:
भ०	झषिष्यति	झषिष्यत:	झषिष्यन्ति
क्रि०	अझषिष्यत्	अझषिष्यताम्	अझषिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आत्मनेपद

व०	झषते	झषेते	झषन्ते
स०	झषेत	झषेयाताम्	झषेरन्
प०	झषताम्	झषेताम्	झषन्ताम्
ह्य०	अझषत	अझषेताम्	अझषन्त
अ०	अझषिष्ट	अझषिषाताम्	अझषिषत
प०	जझषे	जझषाते	जझषिरे
आ०	झषिषीष्ट	झषिषीयास्ताम्	झषिषीरन्
श्व०	झषिता	झषितारौ	झषितारः
भ०	झषिष्यते	झषिष्येते	झषिष्यन्ते
क्रि०	अझषिष्यत	अझषिष्येताम्	अझषिष्यष्त

९२४ भेषृग् (भेषृ) भये।

व०	भेषति	भेषतः	भेषन्ति
स०	भेषेत्	भेषेताम्	भेषेयुः
प०	भेषतु/भेषतात्	भेषताम्	भेषन्तु
ह्य०	अभेषत्	अभेषताम्	अभेषन्
अ०	अभेषीत्	अभेषिष्टाम्	अभेषिषुः
प०	बिभेष	बिभेषतुः	बिभेषुः
आ०	भेष्यात्	भेष्यास्ताम्	भेष्यासुः
श्व०	भेषिता	भेषितारौ	भेषितारः
भ०	भेषिष्यति	भेषिष्यतः	भेषिष्यन्ति
क्रि०	अभेषिष्यत्	अभेषिष्यताम्	अभेषिष्यन्

आत्मनेपद

व०	भेषते	भेषेते	भेषन्ते
स०	भेषेत	भेषेयाताम्	भेषेरन्
प०	भेषताम्	भेषेताम्	भेषन्ताम्
ह्य०	अभेषत	अभेषेताम्	अभेषन्त
अ०	अभेषिष्ट	अभेषिषाताम्	अभेषिषत
प०	बिभेषे	बिभेषाते	बिभेषिरे
आ०	भेषिषीष्ट	भेषिषीयास्ताम्	भेषिषीरन्
श्व०	भेषिता	भेषितारौ	भेषितारः
भ०	भेषिष्यते	भेषिष्येते	भेषिष्यन्ते
क्रि०	अभेषिष्यत	अभेषिष्येताम्	अभेषिष्यष्त

९२५ भ्रेषृग् (भ्रेषृ) चलने च। चकराद्भये।

व०	भ्रेषति	भ्रेषतः	भ्रेषन्ति
स०	भ्रेषेत्	भ्रेषेताम्	भ्रेषेयुः
प०	भ्रेषतु/भ्रेषतात्	भ्रेषताम्	भ्रेषन्तु
ह्य०	अभ्रेषत्	अभ्रेषताम्	अभ्रेषन्
अ०	अभ्रेषीत्	अभ्रेषिष्टाम्	अभ्रेषिषुः
प०	बिभ्रेष	बिभ्रेषतुः	बिभ्रेषुः
आ०	भ्रेष्यात्	भ्रेष्यास्ताम्	भ्रेष्यासुः
श्व०	भ्रेषिता	भ्रेषितारौ	भ्रेषितारः
भ०	भ्रेषिष्यति	भ्रेषिष्यतः	भ्रेषिष्यन्ति
क्रि०	अभ्रेषिष्यत्	अभ्रेषिष्यताम्	अभ्रेषिष्यन्

आत्मनेपद

व०	भ्रेषते	भ्रेषेते	भ्रेषन्ते
स०	भ्रेषेत	भ्रेषेयाताम्	भ्रेषेरन्
प०	भ्रेषताम्	भ्रेषेताम्	भ्रेषन्ताम्
ह्य०	अभ्रेषत	अभ्रेषेताम्	अभ्रेषन्त
अ०	अभ्रेषिष्ट	अभ्रेषिषाताम्	अभ्रेषिषत
प०	बिभ्रेषे	बिभ्रेषाते	भ्रेंभ्रेषरे
आ०	भ्रेषिषीष्ट	भ्रेषिषीयास्ताम्	भ्रेषिषीरन्
श्व०	भ्रेषिता	भ्रेषितारौ	भ्रेषितारः
भ०	भ्रेषिष्यते	भ्रेषिष्येते	भ्रेषिष्यन्ते
क्रि०	अभ्रेषिष्यत	अभ्रेषिष्येताम्	अभ्रेषिष्यष्त

९२६ पषि (पष्) बाधनस्पर्शनयोः। स्पर्शनं ग्रन्थनम्॥

व०	पषति	पषतः	पषन्ति
स०	पषेत्	पषेताम्	पषेयुः
प०	पषतु/पषतात्	पषताम्	पषन्तु
ह्य०	अपषत्	अपषताम्	अपषन्
अ०	अपाषीत्	अपाषिष्टाम्	अपाषिषुः

तथा

	अपषीत्	अपाषिष्टाम्	अपाषिषुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	पपष	पपषतुः	पपषुः
आ०	पष्यात्	पष्यास्ताम्	पष्यासुः
श्व०	पषिता	पषितारौ	पषितारः
भ०	पषिष्यति	पषिष्यतः	पषिष्यन्ति
क्रि०	अपषिष्यत्	अपषिष्यताम्	अपषिष्यन्

आत्मनेपद

व०	पषते	पषेते	पषन्ते
स०	पषेत	पषेयाताम्	पषेरन्
प०	पषताम्	पषेताम्	पषन्ताम्
ह्य०	अपषत	अपषेताम्	अपषन्त
अ०	अपषिष्ट	अपषिषाताम्	अपषिषत
प०	पपषे	पपषाते	पपषिरे
आ०	पषिषीष्ट	पषिषीयास्ताम्	पषिषीरन्
श्व०	पषिता	पषितारौ	पषितारः
भ०	पषिष्यते	पषिष्येते	पषिष्यन्ते
क्रि०	अपषिष्यत	अपषिष्येताम्	अपषिष्यन्त

९२७ लषी (लष्) कान्तौ।

कान्तिरिच्छा।

व०	लष्यति	लष्यतः	लष्यन्ति
स०	लष्येत्	लष्येताम्	लष्येयुः
प०	लष्यतु/लष्यतात्	लष्यताम्	लष्यन्तु
ह्य०	अलष्यत्	अलष्यताम्	अलष्यन्
व०	लषति	लषतः	लषन्ति
स०	लषेत्	लषेताम्	लषेयुः
प०	लषतु/लषतात्	लषताम्	लषन्तु
ह्य०	अलषत्	अलषताम्	अलषन्
अ०	अलाषीत्	अलाषिष्टाम्	अलाषिषुः
		तथा	
	अलषीत्	अलषिष्टाम्	अलषिषुः
प०	ललाष	लेषतुः	लेषुः
आ०	लष्यात्	लष्यास्ताम्	लष्यासुः
श्व०	लषिता	लषितारौ	लषितारः
भ०	लषिष्यति	लषिष्यतः	लषिष्यन्ति
क्रि०	अलषिष्यत्	अलषिष्यताम्	अलषिष्यन्

आत्मनेपद

व०	लष्यते	लष्येते	लष्यन्ते
स०	लष्येत	लष्येयाताम्	लष्येरन्
प०	लष्यताम्	लष्येताम्	लष्यन्ताम्
ह्य०	अलष्यत	अलष्येताम्	अलष्यन्त
व०	लषते	लषेते	लषन्ते
स०	लषेत	लषेयाताम्	लषेरन्
प०	लषताम्	लषेताम्	लषन्ताम्
ह्य०	अलषत	अलषेताम्	अलषन्त
अ०	अलषिष्ट	अलषिषाताम्	अलषिषत
प०	लेषे	लेषाते	लेषिरे
आ०	लषिषीष्ट	लषिषीयास्ताम्	लषिषीरन्
श्व०	लषिता	लषितारौ	लषितारः
भ०	लषिष्यते	लषिष्येते	लषिष्यन्ते
क्रि०	अलषिष्यत	अलषिष्येताम्	अलषिष्यन्त

९२८ चषी (चष्) भक्षणे।

व०	चषति	चषतः	चषन्ति
स०	चषेत्	चषेताम्	चषेयुः
प०	चषतु/चषतात्	चषताम्	चषन्तु
ह्य०	अचषत्	अचषताम्	अचषन्
अ०	अचषीत्	अचषिष्टाम्	अचषिषुः
	अचाषीत्	अचाषिष्टाम्	अचाषिषुः इत्यादि
प०	चचाष	चेषतुः	चेषुः
आ०	चष्यात्	चष्यास्ताम्	चष्यासुः
श्व०	चषिता	चषितारौ	चषितारः
भ०	चषिष्यति	चषिष्यतः	चषिष्यन्ति
क्रि०	अचषिष्यत्	अचषिष्यताम्	अचषिष्यन्

आत्मनेपद

व०	चषते	चषेते	चषन्ते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स०	चषेत	चषेयाताम्	चषेरष्
प०	चषताम्	चषेताम्	चषष्ताम्
ह्य०	अचषत	अचषेताम्	अचषन्त
अ०	अचषिष्ट	अचषिषाताम्	अचषिषत
प०	चेषे	चेषाते	चेषिरे
आ०	चषिषीष्ट	चषिषीयास्ताम्	चषिषीरन्
श्व०	चषिता	चषितारौ	चषितारः
भ०	चषिष्यते	चषिष्येते	चषिष्यन्ते
क्रि०	अचषिष्यत	अचषिष्येताम्	अचषिष्यष्त

९२९ छषी (छष्) हिंसायाम्।

व०	छषति	छषतः	छषन्ति
स०	छषेत्	छषेताम्	छषेयुः
प०	छषतु/छषतात्	छषताम्	छषन्तु
ह्य०	अच्छषत्	अच्छषताम्	अच्छषन्
अ०	अच्छाषीत्	अच्छाषिष्टाम्	अच्छाषिषुः
		तथा	
	अच्छषीत्	अच्छाषिष्टाम्	अच्छाषिषुः
प०	चच्छष	चच्छषतुः	चच्छषुः
आ०	छष्यात्	छष्यास्ताम्	छष्यासुः
श्व०	छषिता	छषितारौ	छषितारः
भ०	छषिष्यति	छषिष्यतः	छषिष्यन्ति
क्रि०	अछषिष्यत्	अछषिष्यताम्	अछषिष्यन्

आत्मनेपद

व०	छषते	छषेते	छषन्ते
स०	छषेत	छषेयाताम्	छषेरन्
प०	छषताम्	छषेताम्	छषन्ताम्
ह्य०	अच्छषत	अच्छषेताम्	अच्छषन्त
अ०	अच्छषिष्ट	अच्छषिषाताम्	अच्छषिषत
प०	चच्छषे	चच्छषाते	चच्छषिरे
आ०	छषिषीष्ट	छषिषीयास्ताम्	छषिषीरन्
श्व०	छषिता	छषितारौ	छषितारः
भ०	छषिष्यते	छषिष्येते	छषिष्यन्ते
क्रि०	अच्छषिष्यत	अच्छषिष्येताम्	अच्छषिष्यष्त

९३० त्विषीं (त्विष्) दीप्तौ।

व०	त्वेषति	त्वेषतः	त्वेषन्ति
स०	त्वेषेत्	त्वेषेताम्	त्वेषेयुः
प०	त्वेषतु/त्वेषतात्	त्वेषताम्	त्वेषन्तु
ह्य०	अत्वेषत्	अत्वेषताम्	अत्वेषन्
अ०	अत्विक्षत्	अत्विाक्षतम्	अत्विक्षन्
प०	त्विवेष	तित्विषतुः	तित्विषुः
आ०	त्विष्यात्	त्विष्यास्ताम्	त्विष्यासुः
श्व०	त्वेषिता	त्वेषितारौ	त्वेषितारः
भ०	त्वेषिक्ष्यति	त्वेक्ष्यतः	त्वेक्ष्यन्ति
क्रि०	अत्वेक्ष्यत्	अत्वेक्ष्यताम्	अत्वेक्ष्यन्

आत्मनेपद

व०	त्वेषते	त्वेषेते	त्वेषन्ते
स०	त्वेषेत	त्वेषेयाताम्	त्वेषेरन्
प०	त्वेषताम्	त्वेषेताम्	त्वेषन्ताम्
ह्य०	अत्वेषत	अत्वेषेताम्	अत्वेषन्त
अ०	अत्विक्षत	अत्विक्षाताम्	अत्विक्षन्त
प०	तित्विषे	तित्विषाते	तित्विषिरे
आ०	त्विक्षीष्ट	त्विक्षीयास्ताम्	त्विक्षीरन्
श्व०	त्वेषिता	त्वेषितारौ	त्वेषितारः
भ०	त्वेक्ष्यते	त्वेक्ष्येते	त्वेक्ष्यन्ते
क्रि०	अत्वेक्ष्यत	अत्वेक्ष्येताम्	अत्वेक्ष्यष्त

९३१ अषी (अष्) गत्यादानयोश्च चकाराद्दीप्तौ।

व०	अषति	अषतः	अषन्ति
स०	अषेत्	अषेताम्	अषेयुः
प०	अषतु/अषतात्	अषताम्	अषन्तु
ह्य०	आषत्	आषताम्	आषन्
अ०	आषीत्	आषिष्टाम्	आषिषुः
प०	आष	आषतुः	आषुः
आ०	अष्यात्	अष्यास्ताम्	अष्यासुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	अषिता	अषितारौ	अषितार:
भ०	अषिष्यति	अषिष्यत:	अषिष्यन्ति
क्रि०	आषिष्यत्	आषिष्यताम्	आषिष्यन्

आत्मनेपद

व०	अषते	अषेते	अषन्ते
स०	अषेत	अषेयाताम्	अषेरन्
प०	अषताम्	अषेताम्	अषन्ताम्
ह्य०	आषत	आषेताम्	आषन्त
अ०	आषिष्ट	आषिषाताम्	आषिषत
प०	आषे	आषाते	आषिरे
आ०	अषिषीष्ट	अषिषीयास्ताम्	अषिषीरन्
श्व०	अषिता	अषितारौ	अषितार:
भ०	अषिष्यते	अषिष्येते	अषिष्यन्ते
क्रि०	आषिष्यत	आषिष्येताम्	आषिष्यन्त

अथ सान्तौ सेटौ च।

९३२ असी (अस्) गत्यादानयोश्च। चकाराद्दीप्तौ।

व०	असति	असत:	असन्ति
स०	असेत्	असेताम्	असेयु:
प०	असतु/असतात्	असताम्	असन्तु
ह्य०	आसत्	आसताम्	आसन्
अ०	आसीत्	आसिष्टाम्	आसिषु:
प०	आस	आसतु:	आसु:
आ०	अस्यात्	अस्यास्ताम्	अस्यासु:
श्व०	असिता	असितारौ	असितार:
भ०	असिष्यति	असिष्यत:	असिष्यन्ति
क्रि०	आसिष्यत्	आसिष्यताम्	आसिष्यन्

आत्मनेपद

व०	असते	असेते	असन्ते
स०	असेत	असेयाताम्	असेरन्
प०	असताम्	असेताम्	असन्ताम्
ह्य०	आसत	आसेताम्	आसन्त
अ०	आसिष्ट	आसिषाताम्	आसिषत
प०	आसे	असाते	आसिरे
आ०	असिषीष्ट	असिषीयास्ताम्	असिषीरन्
श्व०	असिता	असितारौ	असितार:
भ०	असिष्यते	असिष्येते	असिष्यन्ते
क्रि०	आसिष्यत	आसिष्येताम्	आसिष्यन्त

९३३ दासृग् (दास्) दाने।

व०	दासति	दासत:	दासन्ति
स०	दासेत्	दासेताम्	दासेयु:
प०	दासतु/दासतात्	दासताम्	दासन्तु
ह्य०	अदासत्	अदासताम्	अदासन्
अ०	अदासीत्	अदासिष्टाम्	अदासिषु:
प०	ददास	ददासतु:	ददासु:
आ०	दास्यात्	दास्यास्ताम्	दास्यासु:
श्व०	दासिता	दासितारौ	दासितार:
भ०	दासिष्यति	दासिष्यत:	दासिष्यन्ति
क्रि०	अदासिष्यत्	अदासिष्यताम्	अदासिष्यन्

आत्मनेपद

व०	दासते	दासेते	दासन्ते
स०	दासेत	दासेयाताम्	दासेरन्
प०	दासताम्	दासेताम्	दासन्ताम्
ह्य०	अदासत	अदासेताम्	अदासन्त
अ०	अदासिष्ट	अदासिषाताम्	अदासिषत
प०	ददासे	असाते	ददासिरे
आ०	दासिषीष्ट	दासिषीयास्ताम्	दासिषीरन्
श्व०	दासिता	दासितारौ	दासितार:
भ०	दासिष्यते	दासिष्येते	दासिष्यन्ते
क्रि०	अदासिष्यत	अदासिष्येताम्	अदासिष्यन्त

अथ हान्तौ सेटौ च।

९३४ माहृग् (माह्) माने। मानं वर्तनम्।

व०	माहति	माहत:	माहन्ति
स०	माहेत्	माहेताम्	माहेयु:
प०	माहतु/माहतात्	माहताम्	माहन्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	अमाहत्	अमाहताम्	अमाहन्
अ०	अमाहीत्	अमाहिष्टाम्	अमाहिषुः
प०	ममाह	ममाहतुः	ममाहुः
आ०	माह्यात्	माह्यास्ताम्	माह्यासुः
श्व०	माहिता	माहितारौ	माहितारः
भ०	माहिष्यति	माहिष्यतः	माहिष्यन्ति
क्रि०	अमाहिष्यत्	अमाहिष्यताम्	अमाहिष्यन्

आत्मनेपद

व०	माहते	माहेते	माहन्ते
स०	माहेत	माहेयाताम्	माहेरन्
प०	माहताम्	माहेताम्	माहन्ताम्
ह्य०	अमाहत	अमाहेताम्	अमाहन्त
अ०	अमाहिष्ट	अमाहिषाताम्	अमाहिषत
प०	ममाहे	ममाहाते	ममाहिरे
आ०	माहिषीष्ट	माहिषीयास्ताम्	माहिषीरन्
श्व०	माहिता	माहितारौ	माहितारः
भ०	माहिष्यते	माहिष्येते	माहिष्यन्ते
क्रि०	अमाहिष्यत	अमाहिष्येताम्	अमाहिष्यन्त

९३५ गुहौग् (गुह्) संवरणे।

व०	गूहति	गूहतः	गूहन्ति
	गूहसि	गूहथः	गूहथ
	गूहामि	गूहावः	गूहामः
स०	गूहेत्	गूहेताम्	गूहेयुः
	गूहेः	गूहेतम्	गूहेत
	गूहेयम्	गूहेव	गूहेम
प०	गूहतु/गूहतात्	गूहताम्	गूहन्तु
	गूह/गूहतात्	गूहतम्	गूहत
	गूहानि	गूहाव	गूहाम
ह्य०	अगूहत्	अगूहताम्	अगूहन्
	अगूहः	अगूहतम्	अगूहत
	अगूहम्	अगूहाव	अगूहाम
अ०	अगूहीत्	अगूहिष्टाम्	अगूहिषुः
	अगूहीः	अगूहिष्टम्	अगूहिष्ट
	अगूहिषम्	अगूहिष्व	अगूहिष्म

तथा

	अघुक्षत्	अघुक्षताम्	अघुक्षन्
	अघुक्षः	अघुक्षतम्	अघुक्षत
	अघुक्षम्	अघुक्षाव	अघुक्षाम
प०	जुगूह	जुगूहतुः	जुगुहुः
	जुगूहिथ	जुगुहथुः	जुगुह
	जुगूह	जुगुहिव	जुगुहिम
आ०	गुह्यात्	गुह्यास्ताम्	गुह्यासुः
	गुह्याः	गुह्यास्तम्	गुह्यास्त
	गुह्यासम्	गुह्यास्व	गुह्यास्म
श्व०	गूहिता	गूहितारौ	गूहितारः
	गूहितासि	गूहितास्थः	गूहितास्थ
	गूहितास्मि	गूहितास्वः	गूहितास्मः

तथा

	गोढा	गोढारौ	गोढारः
	गोढासि	गोढास्थः	गोढास्थ
	गोढास्मि	गोढास्वः	गोढास्मः
भ०	गूहिष्यति	गूहिष्यतः	गूहिष्यन्ति
	गूहिष्यसि	गूहिष्यथः	गूहिष्यथ
	गूहिष्यामि	गूहिष्यावः	गूहिष्यामः

तथा

	घोक्ष्यति	घोक्ष्यतः	घोक्ष्यन्ति
	घोक्ष्यसि	घोक्ष्यथः	घोक्ष्यथ
	घोक्ष्यामि	घोक्ष्यावः	घोक्ष्यामः
क्रि०	अगूहिष्यत्	अगूहिष्यताम्	अगूहिष्यन्
	अगूहिष्यः	अमाहिष्यतम्	अमाहिष्यत
	अमाहिष्यम्	अमाहिष्याव	अमाहिष्याम्

तथा

	अघोक्ष्यत्	अघोक्ष्यताम्	अघोक्ष्यन्
	अगूहिष्य:	अघोक्ष्यतम्	अघोक्ष्यत
	अघोक्ष्यम्	अघोक्ष्याव	अघोक्ष्याम्

आत्मनेपद

व०	गूहते	गूहेते	गूहन्ते
	गूहसे	गूहेथे	गूहध्वे
	गूहे	गूहावहे	गूहामहे
स०	गूहेत	गूहेयाताम्	गूहेरन्
	गूहेथा:	गूहेयाथाम्	गूहेध्वम्
	गूहेय	गूहेवहि	गूहेमहि
प०	गूहताम्	गूहेताम्	गूहन्ताम्
	गूहस्व	गूहेथाम्	गूहध्वम्
	गूहै	गूहावहै	गूहामहै
ह्य०	अगूहत	अगूहेताम्	अगूहन्त
	अगूहथा:	अगूहेथाम	अगूहध्वम्
	अगूहे	अगूहावहि	अगूहामहि
अ०	अगूहिष्ट	अगूहिषाताम्	अगूहिषत
	अगूहिष्ठा:	अगूहिषाथाम्	अगूहिड्ढ्वमढवम्/ध्वम्
	अगूहिषि	अगूहिष्वहि	अगूहिष्महि

तथा

	अगूढ/अघुक्षत	अघुक्षाताम्	अघुक्षन्त
	अगूढा:/अघुक्षथा:	अघुक्षाथाम्	अघूढ्वम्/अघुक्षध्वम्
	अघुक्षि	अगुह्वहि/अघुक्षावहि	अघुह्महि/अघुक्षामहि
प०	जुगुहे	जुगुहाते	जुगुहिरे
	जुगुहिषे	जुगुहाथे	जुगुहिध्वे
	जुगुहे	जुगुहिवहे	जुगुहिमहे
आ०	गूहिषीष्ट	गूहिषीयास्ताम्	गूहिषीरन्
	गूहिषीष्ठा:	गूहिषीयास्थाम्	गूहिषीध्वम्
	गूहिषीय	गूहिषीवहि	गूहिषीमहि
आ०	घुक्षीष्ट	घुक्षीयास्ताम्	घुक्षीरन्
	घुक्षीष्ठा:	घुक्षीयास्थाम्	घुक्षीध्वम्
	घुक्षीय	घुक्षीवहि	घुक्षीमहि
श्व०	गूहिता	गूहितारौ	गूहितार:
	गूहितासे	गूहितासाथे	गूहिताध्वे
	गूहिताहे	गूहितास्वहे	गूहितास्महे
श्व०	गोढा	गोढारौ	गोढार:
	गोढासे	गोढासाथे	गोढाध्वे
	गोढाहे	गोढास्वहे:	गोढास्महे:
भ०	गूहिष्यते	गूहिष्येते	गूहिष्यन्ते
	गूहिष्यसे	गूहिष्येथे	गूहिष्यध्वे
	गूहिष्ये	गूहिष्यावहे	गूहिष्यामहे
भ०	घोक्ष्यते	घोक्ष्येते	घोक्ष्यन्ते
	घोक्ष्यसे	घोक्ष्येथे	घोक्ष्यध्वे
	घोक्ष्ये	घोक्ष्यावहे	घोक्ष्यामहे
क्रि०	अगूहिष्यत	अगूहिष्येताम्	अगूहिष्यन्त
	अगूहिष्यथा:	अगूहिष्येथाम्	अगूहिष्यध्वम्
	अगूहिष्ये	अगूहिष्यावहि	अगूहिष्यामहि
क्रि०	अघोक्ष्यत	अघोक्ष्येताम्	अघोक्ष्यन्त
	अघोक्ष्यथा:	अघोक्ष्येथाम्	अघोक्ष्यध्वम्
	अघोक्ष्ये	अघोक्ष्यावहि	अघोक्ष्यामहि

१३६ भ्लक्षी (भ्लक्ष्) भक्षणे।

व०	भ्लक्षति	भ्लक्षत:	भ्लक्षन्ति
स०	भ्लक्षेत्	भ्लक्षेताम्	भ्लक्षेयु:
प०	भ्लक्षतु/भ्लक्षतात्	भ्लक्षताम्	भ्लक्षन्तु
ह्य०	अभ्लक्षत्	अभ्लक्षताम्	अभ्लक्षन्
अ०	अभ्लक्षीत्	अभ्लक्षिष्टाम्	अभ्लक्षिषु:
प०	बभ्लक्ष	बभ्लक्षतु:	बभ्लक्षु:
आ०	भ्लक्ष्यात्	भ्लक्ष्यास्ताम्	भ्लक्ष्यासु:
श्व०	भ्लक्षिता	भ्लक्षितारौ	भ्लक्षितार:
भ०	भ्लक्षिष्यति	भ्लक्षिष्यत:	भ्लक्षिष्यन्ति
क्रि०	अभ्लक्षिष्यत्	अभ्लक्षिष्यताम्	अभ्लक्षिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आत्मनेपद

व०	भ्लक्षते	भ्लक्षेते	भ्लक्षन्ते
स०	भ्लक्षेत	भ्लक्षेयाताम्	भ्लक्षेरन्
प०	भ्लक्षताम्	भ्लक्षेताम्	भ्लक्षन्ताम्
ह्य०	अभ्लक्षत	अभ्लक्षेताम्	अभ्लक्षन्त
अ०	अभ्लक्षिष्ट	अभ्लक्षिषाताम्	अभ्लक्षिषत
प०	बभ्लक्षे	अक्षाते	बभ्लक्षिरे
आ०	भ्लक्षिषीष्ट	भ्लक्षिषीयास्ताम्	भ्लक्षिषीरन्
श्व०	भ्लक्षिता	भ्लक्षितारौ	भ्लक्षितार:
भ०	भ्लक्षिष्यते	भ्लक्षिष्येते	भ्लक्षिष्यन्ते
क्रि०	अभ्लक्षिष्यत	अभ्लक्षिष्येताम्	अभ्लक्षिष्यन्त

९३७. द्युति (द्युत्) दीप्तौ।

व०	द्योतते	द्योतेते	द्योतन्ते
	द्योतसे	द्योतेथे	द्योतध्वे
	द्योते	द्योतावहे	द्योतामहे
स०	द्योतेत	द्योतेयाताम्	द्योतेरन्
	द्योतेथा:	द्योतेयाथाम्	द्योतेध्वम्
	द्योतेय	द्योतेवहि	द्योतेमहि
प०	द्योतताम्	द्योतेताम्	द्योतन्ताम्
	द्योतस्व	द्योतेथाम्	द्योतध्वम्
	द्योतै	द्योतावहै	द्योतामहै
ह्य०	अद्योतत	अद्योतेताम्	अद्योतन्त
	अद्योतथा:	अद्योतेथाम	अद्योतध्वम्
	अद्योते	अद्योतावहि	अद्योतामहि
अ०	अद्योतिष्ट	अद्योतिषाताम्	अद्योतिषत
	अद्योतिष्ठा:	अद्योतिषाथाम्	अद्योतिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अद्योतिषि	अद्योतिष्वहि	अद्योतिष्महि
		तथा	
	अद्युतत्	अद्युतताम्	अद्युतन्
	अद्युत:	अद्युततम्	अद्युतत
	अद्युतम्	अद्युताव	अद्युताम
प०	दिद्यते	दिद्यताते	दिद्युतिरे
	दिद्युतिषे	दिद्युताथे	दिद्युतिध्वे
	दिद्युते	दिद्युतिवहे	दिद्युतिमहे
आ०	द्योतिषीष्ट	द्योतिषीयास्ताम्	द्योतिषीरन्
	द्योतिषीष्ठा:	द्योतिषीयास्थाम्	द्योतिषीध्वम्
	द्योतिषीय	द्योतिषीवहि	द्योतिषीमहि
श्व०	द्योतिता	द्योतितारौ	द्योतितार:
	द्योतितासे	द्योतितासाथे	द्योतिताध्वे
	द्योतिताहे	द्योतितास्वहे	द्योतितास्मिहे
भ०	द्योतिष्यते	द्योतिष्येते	द्योतिष्यन्ते
	द्योतिष्यसे	द्योतिष्येथे	द्योतिष्यध्वे
	द्योतिष्ये	द्योतिष्यावहे	द्योतिष्यामहे
क्रि०	अद्योतिष्यत	अद्योतिष्येताम्	अद्योतिष्यन्त
	अद्योतिष्यथा:	अद्योतिष्येथाम्	अद्योतिष्यध्वम्
	अद्योतिष्ये	अद्योतिष्यावहि	अद्योतिष्यामहि

९३८. रुचि (रुच्) अभिप्रीत्यां च।

चकाराद्दीप्तौ। अभिप्रीतिरभिलाष:।।

व०	रोचते	रोचेते	रोचन्ते
स०	रोचेत	रोचेयाताम्	रोचेरन्
प०	रोचताम्	रोचेताम्	रोचन्ताम्
ह्य०	अरोचत	अरोचेताम्	अरोचन्त
अ०	अरोचिष्ट	अरोचिषाताम्	अरोचिषत
		तथा	
	अरुचत्	अरुचताम्	अरुचन्
प०	रुरुचे	रुरुचाते	रुरुचिरे
आ०	रोचिषीष्ट	रोचिषीयास्ताम्	रोचिषीरन्
श्व०	रोचिता	रोचितारौ	रोचितार:
भ०	रोचिष्यते	रोचिष्येते	रोचिष्यन्ते
	रोचिष्यसे	रोचिष्येथे	रोचिष्यध्वे
	रोचिष्ये	रोचिष्यावहे	रोचिष्यामहे
क्रि०	अरोचिष्यत	अरोचिष्येताम्	अरोचिष्यन्त
	अरोचिष्यथा:	अरोचिष्येथाम्	अरोचिष्यध्वम्
	अरोचिष्ये	अरोचिष्यावहि	अरोचिष्यामहि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

।। अथ टान्तास्त्रयः।।

९३९. घुटि (घुट्) परिवर्तने।

व०	घोटते	घोटेते	घोटन्ते
स०	घोटेत	घोटेयाताम्	घोटेरन्
प०	घोटताम्	घोटेताम्	घोटन्ताम्
ह्य०	अघोटत	अघोटेताम्	अघोटन्त
अ०	अघोटिष्ट	अघोटिषाताम्	अघोटिषत
	तथा		
	अघुटत्	अघुटताम्	अघुटन्
प०	जुघुटे	जुघुटाते	जुघुटिरे
आ०	घोटिषीष्ट	घोटिषीयास्ताम्	घोटिषीरन्
श्व०	घोटिता	घोटितारौ	घोटितारः
भ०	घोटिष्यते	घोटिष्येते	घोटिष्यन्ते
क्रि०	अघोटिष्यत	अघोटिष्येताम्	अघोटिष्यन्त

९४०. रुटि (रुट्) प्रतीघाते।

व०	रोटते	रोटेते	रोटन्ते
स०	रोटेत	रोटेयाताम्	रोटेरन्
प०	रोटताम्	रोटेताम्	रोटन्ताम्
ह्य०	अरोटत	अरोटेताम्	अरोटन्त
अ०	अरोटिष्ट	अरोटिषाताम्	अरोटिषत
	तथा		
	अरुटत्	अरुटताम्	अरुटन्
प०	रुरुटे	रुरुटाते	रुरुटिरे
आ०	रोटिषीष्ट	रोटिषीयास्ताम्	रोटिषीरन्
श्व०	रोटिता	रोटितारौ	रोटितारः
भ०	रोटिष्यते	रोटिष्येते	रोटिष्यन्ते
क्रि०	अरोटिष्यत	अरोटिष्येताम्	अरोटिष्यन्त

९४१. लुटि (लुट्) प्रतिघाते।

आद्योदित्पावित्यन्ये।

व०	लोटते	लोटेते	लोटन्ते
स०	लोटेत	लोटेयाताम्	लोटेरन्
प०	लोटताम्	लोटेताम्	लोटन्ताम्
ह्य०	अलोटत	अलोटेताम्	अलोटन्त
अ०	अलोटिष्ट	अलोटिषाताम्	अलोटिषत
	तथा		
	अलुटत्	अलुटताम्	अलुटन्
प०	लुलुटे	लुलुटाते	लुलुटिरे
आ०	लोटिषीष्ट	लोटिषीयास्ताम्	लोटिषीरन्
श्व०	लोटिता	लोटितारौ	लोटितारः
भ०	लोटिष्यते	लोटिष्येते	लोटिष्यन्ते
क्रि०	अलोटिष्यत	अलोटिष्येताम्	अलोटिष्यन्त

९४२. लुठि (लुठ्) प्रतिघाते।

व०	लोठते	लोठेते	लोठन्ते
स०	लोठेत	लोठेयाताम्	लोठेरन्
प०	लोठताम्	लोठेताम्	लोठन्ताम्
ह्य०	अलोठत	अलोठेताम्	अलोठन्त
अ०	अलोठिष्ठ	अलोठिषाताम्	अलोठिषत
	तथा		
	अलुठत्	अलुठताम्	अलुठन्
प०	लुलुठे	लुलुठाते	लुलुठिरे
आ०	लोठिषीष्ट	लोठिषीयास्ताम्	लोठिषीरन्
श्व०	लोठिता	लोठितारौ	लोठितारः
भ०	लोठिष्यते	लोठिष्येते	लोठिष्यन्ते
क्रि०	अलोठिष्यत	अलोठिष्येताम्	अलोठिष्यन्त

।।अथ तान्तः।।

९४३. श्विताङ् (श्वित्) वर्णे।

व०	श्वेतते	श्वेतेते	श्वेतन्ते
स०	श्वेतेत	श्वेतेयाताम्	श्वेतेरन्
प०	श्वेतताम्	श्वेतेताम्	श्वेतन्ताम्
ह्य०	अश्वेतत	अश्वेतेताम्	अश्वेतन्त
अ०	अश्वेतिष्ट	अश्वेतिषाताम्	अश्वेतिषत
	तथा		
	अश्वितत्	अश्वितताम्	अश्वितन्
प०	शिश्विते	शिश्विताते	शिश्वितिरे
आ०	श्वेतिषीष्ट	श्वेतिषीयास्ताम्	श्वेतिषीरन्
श्व०	श्वेतिता	श्वेतितारौ	श्वेतितारः
भ०	श्वेतिष्यते	श्वेतिष्येते	श्वेतिष्यन्ते
क्रि०	अश्वेतिष्यत	अश्वेतिष्येताम्	अश्वेतिष्यन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ दान्तास्त्रय:।

९४४. जिमिदाङ् (मिद्) स्नेहने।

स्नेहनं स्नेहयोग:।

व०	मेदते	मेदेते	मेदन्ते
स०	मेदेत	मेदेयाताम्	मेदेरन्
प०	मेदताम्	मेदेताम्	मेदन्ताम्
ह्य०	अमेदत	अमेदेताम्	अमेदन्त
अ०	अमेदिष्ट	अमेदिषाताम्	अमेदिषत
	अमिदत्	अमिदताम्	अमिदन्
प०	मिमिदे	मिमिदाते	मिमिदिरे
आ०	मेदिषीष्ट	मेदिषीयास्ताम्	मेदिषीरन्
श्व०	मेदिता	मेदितारौ	मेदितार:
भ०	मेदिष्यते	मेदिष्येते	मेदिष्यन्ते
क्रि०	अमेदिष्यत	अमेदिष्येताम्	अमेदिष्यन्त

९४५. ञिक्ष्विदाङ् (क्ष्विद्) मोचने च। चकारात्स्नेहने।

व०	क्ष्वेदते	क्ष्वेदेते	क्ष्वेदन्ते
स०	क्ष्वेदेत	क्ष्वेदेयाताम्	क्ष्वेदेरत्
प०	क्ष्वेदताम्	क्ष्वेदेताम्	क्ष्वेदन्ताम्
ह्य०	अक्ष्वेदत	अक्ष्वेदेताम्	अक्ष्वेदन्त
अ०	अक्ष्वेदिष्ट	अक्ष्वेदिषाताम्	अक्ष्वेदिषत
		तथा	
	अक्ष्विदत	अक्ष्विदताम्	अक्ष्विदन्
प०	चिक्ष्विदे	चिक्ष्विदाते	चिक्ष्विदिरे
आ०	क्ष्वेदिषीष्ट	क्ष्वेदिषीयास्ताम्	क्ष्वेदिषीरन्
श्व०	क्ष्वेदिता	क्ष्वेदितारौ	क्ष्वेदितार:
भ०	क्ष्वेदिष्यते	क्ष्वेदिष्येते	क्ष्वेदिष्यन्ते
क्रि०	अक्ष्वेदिष्यत	अक्ष्वेदिष्येताम्	अक्ष्वेदिष्यन्त

९४६. ञिष्विदाङ् (स्विद्) मोचने।

स्नेहने च।

व०	स्वेदते	स्वेदेते	स्वेदन्ते
स०	स्वेदेत	स्वेदेयाताम्	स्वेदेरन्
प०	स्वेदताम्	स्वेदेताम्	स्वेदन्ताम्
ह्य०	अस्वेदत	अस्वेदेताम्	अस्वेदन्त
अ०	अस्वेदिष्ट	अस्वेदिषाताम्	अस्वेदिषत
		तथा	
	अस्विदत	अस्विदताम्	अस्विदन्
प०	सिष्विदे	सिष्विदाते	सिष्विदिरे
आ०	स्वेदिषीष्ट	स्वेदिषीयास्ताम्	स्वेदिषीरन्
श्व०	स्वेदिता	स्वेदितारौ	स्वेदितार:
भ०	स्वेदिष्यते	स्वेदिष्येते	स्वेदिष्यन्ते
क्रि०	अस्वेदिष्यत	अस्वेदिष्येताम्	अस्वेदिष्यन्त

।।अथ लान्ता: पञ्च।।

९४७. शुलि (शुल्) दीप्तौ।

व०	शोभते	शोभेते	शोभन्ते
स०	शोभेत	शोभेयाताम्	शोभेरन्
प०	शोभताम्	शोभेताम्	शोभन्ताम्
ह्य०	अशोभत	अशोभेताम्	अशोभन्त
अ०	अशोभिष्ट	अशोभिषाताम्	अशोभिषत
		तथा	
	अशुभत	अशुभताम्	अशुभान्
प०	शुशुभे	शुशुभाते	शुशुभिरे
आ०	शोभिषीष्ट	शोभिषीयास्ताम्	शोभिषीरन्
श्व०	शोभिता	शोभितारौ	शोभितार:
भ०	शोभिष्यते	शोभिष्येते	शोभिष्यन्ते
क्रि०	अशोभिष्यत	अशोभिष्येताम्	अशोभिष्यन्त

९४८. क्षुलि (क्षुल्) संचलने।

संचलनं रूपान्यथात्वम्

व०	क्षोभते	क्षोभेते	क्षोभन्ते
स०	क्षोभेत	क्षोभेयाताम्	क्षोभेरन्
प०	क्षोभताम्	क्षोभेताम्	क्षोभन्ताम्
ह्य०	अक्षोभत	अक्षोभेताम्	अक्षोभन्त
अ०	अक्षोभिष्ट	अक्षोभिषाताम्	अक्षोभिषत
		तथा	
	अक्षुभत्	अक्षुभताम्	अक्षुभन्
प०	चुक्षुभे	चुक्षुभाते	चुक्षुभिरे
आ०	क्षोभिषीष्ट	क्षोभिषीयास्ताम्	क्षोभिषीरन्
श्व०	क्षोभिता	क्षोभितारौ	क्षोभितार:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	क्षोभिष्यते	क्षोभिष्येते	क्षोभिष्यन्ते
क्रि०	अक्षोभिष्यत	अक्षोभिष्येताम्	अक्षोभिष्यन्त

९४९ णभि (नभ्) हिंसायाम्।।

व०	नभते	नभेते	नभन्ते
स०	नभेत	नभेयाताम्	नभेरन्
प०	नभताम्	नभेताम्	नभन्ताम्
ह्य०	अनभत	अनभेताम्	अनभन्त
अ०	अनभिष्ट	अनभिषाताम्	अनभिषत
	अनभत्	अनभताम्	अनभन्
प०	नेभे	नेभाते	नेभिरे
आ०	नभिषीष्ट	नभिषीयास्ताम्	नभिषीरन्
श्व०	नभिता	नभितारौ	नभितार:
भ०	नभिष्यते	नभिष्येते	नभिष्यन्ते
क्रि०	अनभिष्यत	अनभिष्येताम्	अनभिष्यन्त

९५० तुभि (तुभ्) हिंसायाम्।।

व०	तोभते	तोभेते	तोभन्ते
स०	तोभेत	तोभेयाताम्	तोभेरन्
प०	तोभताम्	तोभेताम्	तोभन्ताम्
ह्य०	अतोभत	अतोभेताम्	अतोभन्
अ०	अतोभिष्ट	अतोभिषाताम्	अतोभिषत
		तथा	
	अतोभत्	अतोभताम्	अतोभन्
प०	तुतुभे	तुतुभाते	तुतुभिरे
आ०	तोभिषीष्ट	तोभिषीयास्ताम्	तोभिषीरन्
श्व०	तोभिता	तोभितारौ	तोभितार:
भ०	तोभिष्यते	तोभिष्येते	तोभिष्यन्ते
क्रि०	अतोभिष्यत	अतोभिष्येताम्	अतोभिष्यन्त

९५१. स्रम्भुङ् (स्रम्भ्) वि श्वासे।

व०	स्रम्भते	स्रम्भेते	स्रम्भन्ते
स०	स्रम्भेत	स्रम्भेयाताम्	स्रम्भेरन्
प०	स्रम्भताम्	स्रम्भेताम्	स्रम्भन्ताम्
ह्य०	अस्रम्भत	अस्रम्भेताम्	अस्रम्भन्त
अ०	अस्रम्भिष्ट	अस्रम्भिषाताम्	अस्रम्भिषत
		तथा	
	अस्रभत्	अस्रभताम्	अस्रभन्
प०	सस्रम्भे	सस्रम्भाते	सस्रम्भिरे
आ०	स्रम्भिषीष्ट	स्रम्भिषीयास्ताम्	स्रम्भिषीरन्
श्व०	स्रम्भिता	स्रम्भितारौ	स्रम्भितार:
भ०	स्रम्भिष्यते	स्रम्भिष्येते	स्रम्भिष्यन्ते
क्रि०	अस्रम्भिष्यत	अस्रम्भिष्येताम्	अस्रम्भिष्यन्त

।।अथ शान्ता:।।

९५२. भ्रंशूङ् (भ्रंश्) अवस्रंसने।

व०	भ्रंशते	भ्रंशेते	भ्रंशन्ते
स०	भ्रंशेत	भ्रंशेयाताम्	भ्रंशेरन्
प०	भ्रंशताम्	भ्रंशेताम्	भ्रंशन्ताम्
ह्य०	अभ्रंशत	अभ्रंशेताम्	अभ्रंशन्त
अ०	अभ्रंशिष्ट	अभ्रंशिषाताम्	अभ्रंशिषत
		तथा	
	अभ्रशत्	अभ्रशताम्	अभ्रशन्
प०	बभ्रंशे	बभ्रंशाते	बभ्रंशिरे
आ०	भ्रंशिषीष्ट	भ्रंशिषीयास्ताम्	भ्रंशिषीरन्
श्व०	भ्रंशिता	भ्रंशितारौ	भ्रंशितार:
भ०	भ्रंशिष्यते	भ्रंशिष्येते	भ्रंशिष्यन्ते
क्रि०	अभ्रंशिष्यत	अभ्रंशिष्येताम्	अभ्रंशिष्यन्त

९५३. स्रंसूङ् (स्रंस्) अवस्रंसने।

व०	स्रंसते	स्रंसेते	स्रंसन्ते
स०	स्रंसेत	स्रंसेयाताम्	स्रंसेरन्
प०	स्रंसताम्	स्रंसेताम्	स्रंसन्ताम्
ह्य०	अस्रंसेत	अस्रंसेताम्	अस्रंसन्त
अ०	अस्रसत्	अस्रसताम्	अस्रसन्
		तथा	
	अस्रंसिष्ट	अस्रंसिषाताम्	अस्रंसिषत
प०	सस्रंसे	सस्रंसाते	सस्रंसिरे
आ०	स्रंसिषीष्ट	स्रंसिषीयास्ताम्	स्रंसिषीरन्
श्व०	स्रंसिता	स्रंसितारौ	स्रंसितार:
भ०	स्रंसिष्यते	स्रंसिष्येते	स्रंसिष्यन्ते
क्रि०	अस्रंसिष्यत	अस्रंसिष्येताम्	अस्रंसिष्यन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९५४. ध्वंसूङ् (ध्वंस्) गतौ च।

चकारादवस्रंसने।

व०	ध्वंसते	ध्वंसेते	ध्वंसन्ते
स०	ध्वंसेत	ध्वंसेयाताम्	ध्वंसेरन्
प०	ध्वंसताम्	ध्वंसेताम्	ध्वंसन्ताम्
ह्य०	अध्वंसेत	अध्वंसेताम्	अध्वंसन्त
अ०	अध्वसत्	अध्वसताम्	अध्वसन्
		तथा	
	अध्वंसिष्ट	अध्वंसिषाताम्	अध्वंसिषत
प०	दध्वंसे	दध्वंसाते	दध्वंसिरे
आ०	ध्वंसिषीष्ट	ध्वंसिषीयास्ताम्	ध्वंसिषीरन्
श्व०	ध्वंसिता	ध्वंसितारौ	ध्वंसितारः
भ०	ध्वंसिष्यते	ध्वंसिष्येते	ध्वंसिष्यन्ते
क्रि०	अध्वंसिष्यत	अध्वंसिष्येताम्	अध्वंसिष्यन्त

अथ द्युताद्यन्तर्गणो वृतादिः पञ्चकः

९५५. वृतूङ् (वृतू) वर्तने।

वर्तनं स्थितिः।

व०	वर्तते	वर्तेते	वर्तन्ते
	वर्तसे	वर्तेथे	वर्तध्वे
	वर्ते	वर्तावहे	वर्तामहे
स०	वर्तेत	वर्तेयाताम्	वर्तेरन्
	वर्तेथाः	वर्तेयाथाम्	वर्तेध्वम्
	वर्तेय	वर्तेवहि	वर्तेमहि
प०	वर्तताम्	वर्तेताम्	वर्तन्ताम्
	वर्तस्व	वर्तेथाम	वर्तध्वम्
	वर्तै	वर्तावहै	वर्तामहै
ह्य०	अवर्तत	अवर्तेताम्	अवर्तन्त
	अवर्तथाः	अवर्तेथाम	अवर्तध्वम्
	अवर्ते	अवर्तावहि	अवर्तामहि
अ०	अवर्तिष्ट	अवर्तिषाताम्	अवर्तिषत
	अवर्तिष्ठाः	अवर्तिषाथाम्	अवर्तिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अवर्तिषि	अवर्तिष्वहि	अवर्तिष्महि
		तथा	
	अवृतत्	अवृतताम्	अवृतन्
	अवृतः	अवृततम्	अवृतत
	अवृतम्	अवृताव	अवृताम
प०	ववृते	ववृताते	ववृतिरे
	ववृतिषे	ववृताथे	ववृतिध्वे
	ववृते	ववृतिहे	ववृतिमहे
आ०	वर्तिषीष्ट	वर्तिषीयास्ताम्	वर्तिषीरन्
	वर्तिषीष्ठाः	वर्तिषीयास्थाम्	वर्तिषीध्वम्
	वर्तिषीय	वर्तिषीवहि	वर्तिषीमहि
श्व०	वर्तिता	वर्तितारौ	वर्तितारः
	वर्तितासे	वर्तितासाथे	वर्तिताध्वे
	वर्तिताहे	वर्तितास्वहे	वर्तितास्मिहे
भ०	वर्तिष्यते	वर्तिष्येते	वर्तिष्यन्ते
	वर्तिष्यसे	वर्तिष्येथे	वर्तिष्यध्वे
	वर्तिष्ये	वर्तिष्यावहे	वर्तिष्यामहे
		तथा	
	वर्त्स्यति	वर्त्स्यतः	वर्त्स्यन्ति इत्यादि
क्रि०	अवर्तिष्यत	अवर्तिष्येताम्	अवर्तिष्यन्त
	अवर्तिष्यथाः	अवर्तिष्येथाम्	अवर्तिष्यध्वम्
	अवर्तिष्ये	अवर्तिष्यावहि	अवर्तिष्यामहि
		तथा	
	अवर्त्स्यत्	अवर्त्स्यताम्	अवर्त्स्यन् इत्यादि

।।अथ दान्ताः।।

९५६. स्यन्दौङ् (स्यन्द्) स्रवणे।

व०	स्यन्दते	स्यन्देते	स्यन्दन्ते
	स्यन्दसे	स्यन्देथे	स्यन्दध्वे
	स्यन्दे	स्यन्दावहे	स्यन्दामहे
स०	स्यन्देत	स्यन्देयाताम्	स्यन्देरन्
	स्यन्देथाः	स्यन्देयाथाम्	स्यन्देध्वम्
	स्यन्देय	स्यन्देवहि	स्यन्देमहि
प०	स्यन्दताम्	स्यन्देताम्	स्यन्दन्ताम्
	स्यन्दस्व	स्यन्देथाम	स्यन्दध्वम्
	स्यन्दै	स्यन्दावहै	स्यन्दामहै
ह्य०	अस्यन्दत	अस्यन्देताम्	अस्यन्दन्त
	अस्यन्दथाः	अस्यन्दथाम	अस्यन्दध्वम्
	अस्यन्दे	अस्यन्दावहि	अस्यन्दामहि
अ०	अस्यन्दिष्ट	अस्यन्दिषाताम्	अस्यन्दिषत
	अस्यन्दिष्ठाः	अस्यन्दिषाथाम्	अस्यन्दिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अस्यन्दिषि	अस्यन्दिष्वहि	अस्यन्दिष्महि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तथा

अ०	अस्यदत्	अस्यदताम्	अस्यदन्
	अस्यदः	अस्यदतम्	अस्यदत
	अस्यदम्	अस्यदाव	अस्यदाम
	अस्यन्त	अस्यन्त्साताम्	अस्यन्त्सत
	अस्यन्थाः	अस्यन्त्साथाम्	अस्यन्द्ध्वम्/न्ध्वम्/न्द्द्ध्वम्
	अस्यन्त्सि	अस्यन्त्सवहि	अस्यन्त्समहि
प०	सस्यन्दे	सस्यन्दाते	सस्यन्दिरे
	सस्यन्दिषे	सस्यन्त्से सस्यन्दाथे	सस्यन्दिध्वे
	सस्यन्दे	सस्यन्दिवहे	सस्यन्दिमहे
आ०	स्यन्दिषीष्ट	स्यन्दिषीयास्ताम्	स्यन्दिषीरन्
	स्यन्दिषीष्ठाः	स्यन्दिषीयास्थाम्	स्यन्दिषीध्वम्
	स्यन्दिषीय	स्यन्दिषीवहि	स्यन्दिषीमहि

तथा

	स्यन्त्सीष्ट	स्यन्त्सीयास्ताम्	स्यन्त्सीरन्
	स्यन्त्सीष्ठाः	स्यन्त्सीयास्थाम्	स्यन्त्सीध्वम्
	स्यन्त्सीय	स्यन्त्सीवहि	स्यन्त्सीमहि
श्व०	स्यन्दिता	स्यन्दितारौ	स्यन्दितारः
	स्यन्दितासे	स्यन्दितासाथे	स्यन्दिताध्वे
	स्यन्दिताहे	स्यन्दितास्वहे	स्यन्दितास्महे

तथा

	स्यन्ता	स्यन्तारौ	स्यन्तारः
	स्यन्तासे	स्यन्तासाथे	स्यन्ताध्वे
	स्यन्ताहे	स्यन्तास्वहे	स्यन्तास्महे
भ०	स्यन्दिष्यते	स्यन्दिष्येते	स्यन्दिष्यन्ते
	स्यन्दिष्यसे	स्यन्दिष्येथे	स्यन्दिष्यध्वे
	स्यन्दिष्ये	स्यन्दिष्यावहे	स्यन्दिष्यामहे

तथा

	स्यन्त्स्यते	स्यन्त्स्येते	स्यन्त्स्यन्ते
	स्यन्त्स्यसे	स्यन्त्स्येथे	स्यन्त्स्यध्वे
	स्यन्त्स्ये	स्यन्त्स्यावहे	स्यन्त्स्यामहे

तथा

	स्यन्त्स्यति	स्यन्त्स्यतः	स्यन्त्स्यन्ति
	स्यन्त्स्यसि	स्यन्त्स्यथः	स्यन्त्स्यथ
	स्यन्त्स्यामि	स्यन्त्स्यावः	स्यन्त्स्यामः
क्रि०	अस्यन्दिष्यत	अस्यन्दिष्येताम्	अस्यन्दिष्यन्त
	अस्यन्दिष्यथाः	अस्यन्दिष्येथाम्	अस्यन्दिष्यध्वम्
	अस्यन्दिष्ये	अस्यन्दिष्यावहि	अस्यन्दिष्यामहि

तथा

	अस्यन्त्स्यत्	अस्यन्त्स्येताम्	अस्यन्त्स्यन्त
	अस्यन्त्स्यथाः	अस्यन्त्स्येथाम्	अस्यन्त्स्यध्वम्
	अस्यन्त्स्ये	अस्यन्त्स्यावहि	अस्यन्त्स्यामहि

तथा

	अस्यन्त्स्यत्	अस्यन्त्स्यताम्	अस्यन्त्स्यन्
	अस्यन्त्स्यः	अस्यन्त्स्यतम्	अस्यन्त्स्यत
	अस्यन्त्स्यम्	अस्यन्त्स्याव	अस्यन्त्स्याम

॥अथ धान्तौः॥

१५७. वृधूङ् (वृध्) वृद्धौ।

व०	वर्धते	वर्धेते	वर्धन्ते
स०	वर्धेत	वर्धेयाताम्	वर्धेरन्
प०	वर्धताम्	वर्धेताम्	वर्धन्ताम्
ह्य०	अवर्धत	अवर्धेताम्	अवर्धन्त
अ०	अवर्धिष्ट	अवर्धिषाताम्	अवर्धिषत

तथा

	अवृधत्	अवृधताम्	अवृधन्
प०	ववृधे	ववृधाते	ववृधिरे
आ०	वर्धिषीष्ट	वर्धिषीयास्ताम्	वर्धिषीरन्
श्व०	वर्धिता	वर्धितारौ	वर्धितारः
भ०	वर्धिष्यते	वर्धिष्येते	वर्धिष्यन्ते
भ०	वर्त्स्यति	वर्त्स्यतः	वर्त्स्यन्ति
क्रि०	अवर्धिष्यत	अवर्धिष्येताम्	अवर्धिष्यन्त

तथा

	अवर्त्स्यत्	अवर्त्स्यताम्	अवर्त्स्यन्

१५८. शृधूङ् (शृध्) शब्दकुत्सायाम्॥

शब्दकुत्सा वायुशब्दत्वात्।

व०	शर्धते	शर्धेते	शर्धन्ते
स०	शर्धेत	शर्धेयाताम्	शर्धेरन्
प०	शर्धताम्	शर्धेताम्	शर्धन्ताम्
ह्य०	अशर्धत	अशर्धेताम्	अशर्धन्त
अ०	अशर्धिष्ट	अशर्धिषाताम्	अशर्धिषत

तथा

	अशृधत्	अशृधताम्	अशृधन्
प०	शशृधे	शशृधाते	शशृधिरे
आ०	शर्धिषीष्ट	शर्धिषीयास्ताम्	शर्धिषीरन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	शर्धिता	शर्धितारौ	शर्धितारः
भ०	शर्धिष्यते	शर्धिष्येते	शर्धिष्यते
भ०	शर्त्स्यति	शर्त्स्यतः	शर्त्स्यन्ति
क्रि०	अशर्धिष्यत	अशर्धिष्येताम्	अशर्धिष्यन्त
		तथा	
	अशर्त्स्यत्	अशर्त्स्यताम्	अशर्त्स्यन्

९५९. कृपौङ् (कृप्) सामर्थ्ये।

व०	कल्पते	कल्पेते	कल्पन्ते
	कल्पसे	कल्पेथे	कल्पध्वे
	कल्पे	कल्पावहे	कल्पामहे
स०	कल्पेत	कल्पेयाताम्	कल्पेरन्
	कल्पेथाः	कल्पेयाथाम्	कल्पेध्वम्
	कल्पेय	कल्पेवहि	कल्पेमहि
प०	कल्पताम्	कल्पेताम्	कल्पन्ताम्
	कल्पस्व	कल्पेथाम	कल्पध्वम्
	कल्पै	कल्पावहै	कल्पामहै
ह्य०	अकल्पत	अकल्पेताम्	अकल्पन्त
	अकल्पथाः	अकल्पथाम	अकल्पध्वम्
	अकल्पे	अकल्पावहि	अकल्पामहि
अ०	अकल्पिष्ट	अकल्पिषाताम्	अकल्पिषत
	अकल्पिष्ठाः	अकल्पिषाथाम्	अकल्पिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अकल्पिषि	अकल्पिष्वहि	अकल्पिष्महि
		तथा	
अ०	अक्लृपत्	अक्लृपताम्	अक्लृपन्
	अक्लृपः	अक्लृपतम्	अक्लृपत
	अक्लृपम्	अक्लृपाव	अक्लृपाम
		तथा	
	अक्लृप्त	अक्लृप्साताम्	अक्लृप्सत
	अक्लृप्थाः	अक्लृप्साथाम्	अक्लृब्दध्वम्/ब्ध्वम्
	अक्लृप्सि	अक्लृप्सवहि	अक्लृप्समहि
प०	चक्लृपे	चक्लृपाते	चक्लृपिरे
	चक्लृपिषे/चक्लृप्से	चक्लृपाथे	चक्लृपिध्वे
	चक्लृपे	चक्लृपिवहे	चक्लृपिमहे
आ०	कल्पिषीष्ट	कल्पिषीयास्ताम्	कल्पिषीरन्
	कल्पिषीष्ठाः	कल्पिषीयास्थाम्	कल्पिषीध्वम्
	कल्पिषीय	कल्पिषीवहि	कल्पिषीमहि
		तथा	
	क्लृप्सीष्ट	क्लृप्सीयास्ताम्	क्लृप्सीरन्
	क्लृप्सीष्ठाः	क्लृप्सीयास्थाम्	क्लृप्सीध्वम्
	क्लृप्सीय	क्लृप्सीवहि	क्लृप्सीमहि
श्व०	कल्पिता	कल्पितारौ	कल्पितारः
	कल्पितासे	कल्पितासाथे	कल्पिताध्वे
	कल्पिताहे	कल्पितास्वहे	कल्पितास्मिहे
		तथा	
	कल्प्ता	कल्प्तारौ	कल्प्तारः
	कल्प्तासे	कल्प्तासाथे	कल्प्ताध्वे
	कल्प्ताहे	कल्प्तास्वहे	कल्प्तास्मिहे
		तथा	
	कल्प्ता	कल्प्तारौ	कल्प्तारः
	कल्प्तासि	कल्प्तास्थः	कल्प्तास्थ
	कल्प्तास्मि	कल्प्तास्वः	कल्प्तास्मः
भ०	कल्पिष्यते	कल्पिष्येते	कल्पिष्यन्ते
	कल्पिष्यसे	कल्पिष्येथे	कल्पिष्यध्वे
	कल्पिष्ये	कल्पिष्यावहे	कल्पिष्यामहे
		तथा	
	कल्प्स्यते	कल्प्स्येते	कल्प्स्यन्ते
	कल्प्स्ये	कल्प्स्येथे	कल्प्स्यध्वे
	कल्प्स्ये	कल्प्स्यावहे	कल्प्स्यामहे
		तथा	
	कल्प्स्यति	कल्प्स्यतः	कल्प्स्यन्ति
	कल्प्स्यसि	कल्प्स्यथः	कल्प्स्यथ
	कल्प्स्यामि	कल्प्स्यावः	कल्प्स्यामः
क्रि०	अकल्पिष्यत	अकल्पिष्येताम्	अकल्पिष्यन्त
	अकल्पिष्यथाः	अकल्पिष्येथाम्	अकल्पिष्यध्वम्
	अकल्पिष्ये	अकल्पिष्यावहि	अकल्पिष्यामहि
		तथा	
	अकल्प्स्यत्	अकल्प्स्येताम्	अकल्प्स्यन्त
	अकल्प्स्यथाः	अकल्प्स्येथाम्	अकल्प्स्यध्वम्
	अकल्प्स्ये	अकल्प्स्यावहि	अकल्प्स्यामहि
		तथा	
	अकल्प्स्यत्	अकल्प्स्यताम्	अकल्प्स्यन्
	अकल्प्स्यः	अकल्प्स्यतम्	अकल्प्स्यत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अकल्प्स्यम्	अकल्प्स्याव	अकल्प्स्याम

वृत् वर्तनम्। वृत् द्युतादि २३ वृतादि-५ श्चान्तर्गणौ वर्तितौ समाप्ताविल्यर्थः। वृधेः क्विपि वृत् वर्धितौ पूर्णावित्येके अथ ज्वलादयो यजादेः प्राक् षद्लृं शद्लृं क्रुशं रुहं रमिं वर्जाः सेटश्च।

वर्णक्रमेण निर्दिश्यन्ते तत्रापि पूर्वाचार्यानुरोधेन पूर्वं

९६०. ज्वल (ज्वल्) दीप्तौ।

व०	ज्वलति	ज्वलतः	ज्वलन्ति
	ज्वलसि	ज्वलथः	ज्वलथ
	ज्वलामि	ज्वलावः	ज्वलामः
स०	ज्वलेत्	ज्वलेताम्	ज्वलेयुः
	ज्वलेः	ज्वलेतम्	ज्वलेत
	ज्वलेयम्	ज्वलेव	ज्वलेम
प०	ज्वलतु/ज्वलतात्	ज्वलताम्	ज्वलन्तु
	ज्वल/ज्वलतात्	ज्वलतम्	ज्वलत
	ज्वलानि	ज्वलाव	ज्वलाम
ह्य०	अज्वलत्	अज्वलताम्	अज्वलन्
	अज्वलः	अज्वलतम्	अज्वलत
	अज्वलम्	अज्वलाव	अज्वलाम
अ०	अज्वालीत्	अज्वालिष्टाम्	अज्वालिषुः
	अज्वालीः	अज्वालिष्टम्	अज्वालिष्ट
	अज्वालिषम्	अज्वालिष्व	अज्वालिष्म
प०	जज्वाल	जज्वलतुः	जज्वलुः
	जज्वलिथ	जज्वलथुः	जज्वल
	जज्वाल/जज्वल	जज्वलिव	जज्वलिम
आ०	ज्वल्यात्	ज्वल्यास्ताम्	ज्वल्यासुः
	ज्वल्याः	ज्वल्यास्तम्	ज्वल्यास्त
	ज्वल्यासम्	ज्वल्यास्व	ज्वल्यास्म
श्व०	ज्वलिता	ज्वलितारौ	ज्वलितारः
	ज्वलितासि	ज्वलितास्थः	ज्वलितास्थ
	ज्वलितास्मि	ज्वलितास्वः	ज्वलितास्मः
भ०	ज्वलिष्यति	ज्वलिष्यतः	ज्वलिष्यन्ति
	ज्वलिष्यसि	ज्वलिष्यथः	ज्वलिष्यथ
	ज्वलिष्यामि	ज्वलिष्यावः	ज्वलिष्यामः
क्रि०	अज्वलिष्यत्	अज्वलिष्यताम्	अज्वलिष्यन्
	अज्वलिष्यः	अज्वलिष्यतम्	अज्वलिष्यत
	अज्वलिष्यम्	अज्वलिष्याव	अज्वलिष्याम

।।अथ चान्तः।।

९६१. कुच (कुच्) सम्पर्च

नकौटिल्यप्रतिष्टम्भविलेखनेषु। सम्पर्चनं मिश्रता। प्रतिष्टम्भो रोधनम्। विलेखनं कर्षणम् कुच शब्दे तारे इति पठितोऽपि अर्थविशेषेषु ज्वलादिकार्यार्थमिह पुनः पठितः। अस्य रूपाणि च कुच शब्दे तारे १०० इतिवज्ज्ञेयानि।

।।अथ तान्तः।।

९६२. पत्लृ (पत्) गतौ।

व०	पतति	पततः	पतन्ति
स०	पतेत्	पतेताम्	पतेयुः
प०	पततु/पततात्	पतताम्	पतन्तु
ह्य०	अपतत्	अपतताम्	अपतन्
अ०	अपप्तत्	अपप्तताम्	अपप्तन
प०	पपात	पेततुः	पेतुः
आ०	पत्यात्	पत्यास्ताम्	पत्यासुः
श्व०	पतिता	पतितारौ	पतितारः
भ०	पतिष्यति	पतिष्यतः	पतिष्यन्ति
क्रि०	अपतिष्यत्	अपतिष्यताम्	अपतिष्यन्

।।अथ थान्तास्त्रयः सेटश्च।।

९६३. पथे (पथ्) गतौ।

व०	पथति	पथतः	पथन्ति
स०	पथेत्	पथेताम्	पथेयुः
प०	पथतु/पथतात्	पथताम्	पथन्तु
ह्य०	अपथत्	अपथताम्	अपथन्
अ०	अपथीत्	अपथिष्टाम्	अपथिषुः
प०	पपाथ	पेथतुः	पेथुः
आ०	पथ्यात्	पथ्यास्ताम्	पथ्यासुः
श्व०	पथिता	पथितारौ	पथितारः
भ०	पथिष्यथि	पथिष्यतः	पथिष्यन्ति
क्रि०	अपथिष्यत्	अपथिष्यताम्	अपथिष्यन्

९६४. क्वथे (क्वथ्) निष्पाके।

व०	क्वथति	क्वथतः	क्वथन्ति
स०	क्वथेत्	क्वथेताम्	क्वथेयुः
प०	क्वथतु/क्वथतात्	क्वथताम्	क्वथन्तु
ह्य०	अक्वथत्	अक्वथताम्	अक्वथन्
अ०	अक्वथीत्	अक्वथिष्टाम्	अक्वथिषुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	चक्वाथ	चक्वथतु:	चक्वथु:
आ०	क्वथ्यात्	क्वथ्यास्ताम्	क्वथ्यासु:
श्व०	क्वथिता	क्वथितारौ	क्वथितार:
भ०	क्वथिष्यथि	क्वथिष्यत:	क्वथिष्यन्ति
क्रि०	अक्वथिष्यत्	अक्वथिष्यताम्	अक्वथिष्यन्

९६५. मथे (मथ्) विलोडने।

व०	मथति	मथत:	मथन्ति
स०	मथेत्	मथेताम्	मथेयु:
प०	मथतु/मथतात्	मथताम्	मथन्तु
ह्य०	अमथत्	अमथताम्	अमथन्
अ०	अमथीत्	अमथिष्टाम्	अमथिषु:
प०	ममाथ	मेथतु:	मेथु:
आ०	मथ्यात्	मथ्यास्ताम्	मथ्यासु:
श्व०	मथिता	मथितारौ	मथितार:
भ०	मथिष्यथि	मथिष्यत:	मथिष्यन्ति
क्रि०	अमथिष्यत्	अमथिष्यताम्	अमथिष्यन्

॥अथ दान्तौ॥

९६६. षद्लृं (सद्) विशरणगत्यवसादनेषु। विशरणं शटनम्। अवसादोऽनुत्साह:।

व०	सीदति	सीदत:	सीदन्ति
स०	सीदेत्	सीदेताम्	सीदेयु:
प०	सीदतु/सीदतात्	सीदताम्	सीदन्तु
ह्य०	असीदत्	असीदताम्	असीदन्
अ०	असदत्	असदताम्	असदन्
प०	ससाद	सेदतु:	सेदु:
आ०	सद्यात्	सद्यास्ताम्	सद्यासु:
श्व०	सत्ता	सत्तारौ	सत्तार:
भ०	सत्स्यति	सत्स्यत:	सत्स्यन्ति
क्रि०	असत्स्यत्	असत्स्यताम्	असत्स्यन्

९६७. शद्लृं (शद्) शातने।

शातनं तनूकरणम्।

व०	शीयते	शीयेते	शीयन्ते
स०	शीयेत	शीयेयाताम्	शीयेरन्
प०	शीयताम्	शीयेताम्	शीयन्ताम्
ह्य०	अशीयत	अशीयेताम्	अशीयन्त
अ०	अशदत्	अशदताम्	अशदन्
प०	शशाद	शेदतु:	शेदु:
आ०	शद्यात्	शद्यास्ताम्	शद्यासु:
श्व०	शत्ता	शत्तारौ	शत्तार:
भ०	शत्स्यति	शत्स्यत:	शत्स्यन्ति
क्रि०	अशत्स्यत्	अशत्स्यताम्	अशत्स्यन्

॥अथ धान्त:॥

९६८. बुध (बुध्) अवगमने।

अवगमनं ज्ञापनम् बुधृग् बोधने इत्युभयपदिषु पठितोऽपि अवगमने ज्वलादिकार्यार्थं पुन: पठ्यते।

व०	बोधति	बोधत:	बोधन्ति
स०	बोधेत्	बोधेताम्	बोधेयु:
प०	बोधतु/बोधतात्	बोधताम्	बोधन्तु
ह्य०	अबोधत्	अबोधताम्	अबोधन्
अ०	अबोधीत्	अबोधिष्टाम्	अबोधिषु:
प०	बुबोध	बुबुधतु:	बुबुधु:
आ०	बुध्यात्	बुध्यास्ताम्	बुध्यासु:
श्व०	बोधिता	बोधितारौ	बोधितार:
भ०	बोधिष्यति	बोधिष्यत:	बोधिष्यन्ति
क्रि०	अबोधिष्यत्	अबोधिष्यताम्	अबोधिष्यन्

॥अथ मान्तौ॥

९६९. टुवमू (वम्) उद्गिरणे।

उद्गिरणं भुक्तस्योर्ध्वगति:।

व०	वमति	वमत:	वमन्ति
स०	वमेत्	वमेताम्	वमेयु:
प०	वमतु/वमतात्	वमताम्	वमन्तु
ह्य०	अवमत्	अवमताम्	अवमन्
अ०	अवमीत्	अवमिष्टाम्	अवमिषु:
प०	ववाम	वेमतु:/ववमतु:	वेमु:/ववमु:
आ०	वम्यात्	वम्यास्ताम्	वम्यासु:
श्व०	वमिता	वमितारौ	वमितार:
भ०	वमिष्यति	वमिष्यत:	वमिष्यन्ति
क्रि०	अवमिष्यत्	अवमिष्यताम्	अवमिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९७०. भ्रमू (भ्रम) चभने।

व०	भ्रम्यति	भ्रम्यतः	भ्रम्यन्ति
	भ्रम्यसि	भ्रम्यथः	भ्रम्यथ
		तथा	
	भ्रम्यामि	भ्रम्यावः	भ्रम्यामः
व०	भ्रमति	भ्रमतः	भ्रमन्ति
स०	भ्रम्येत्	भ्रम्येताम्	भ्रम्येयुः
	भ्रम्येः	भ्रम्येतम्	भ्रम्येत
	भ्रम्येयम्	भ्रम्येव	भ्रम्येम
		तथा	
स०	भ्रमेत्	भ्रमेताम्	भ्रमेयुः
प०	भ्रम्यतु/भ्रम्यतात्	भ्रम्यताम्	भ्रम्यन्तु
	भ्रम्य/भ्रम्यतात्	भ्रम्यम्	भ्रम्यत
	भ्रम्यानि	भ्रम्याव	भ्रम्याम
		तथा	
प०	भ्रमतु	भ्रमतात् भ्रमताम्	भ्रमन्तु
ह्य०	अभ्रम्यत्	अभ्रम्यताम्	अभ्रम्यन्
	अभ्रम्यः	अभ्रम्यतम्	अभ्रम्यत
	अभ्रम्यम्	अभ्रम्याव	अभ्रम्याम
		तथा	
ह्य०	अभ्रमत्	अभ्रमताम्	अभ्रमन्
अ०	अभ्रमीत्	अभ्रमिष्टाम्	अभ्रामिषुः
	अभ्रमीः	अभ्रमिष्टम्	अभ्रमिष्ट
	अभ्रमिषम्	अभ्रमिष्व	अभ्रमिष्म
प०	बभ्राम	भ्रेमतुः	भ्रेमहः
	भ्रेमिथ	भ्रेमथुः	भ्रेम
	बभ्राम/बभ्रम	भ्रेमिव	भ्रेमिम
		तथा	
प०	बभ्राम	बभ्रमतुः	बभ्रमहः
आ०	भ्रम्यात्	भ्रम्यास्ताम्	भ्रम्यासुः
	भ्रम्याः	भ्रम्यास्तम्	भ्रम्यास्त
	भ्रम्यासम्	भ्रम्यास्व	भ्रम्यास्म
श्व०	भ्रमिता	भ्रमितारौ	भ्रमितारः
	भ्रमितासि	भ्रमितास्थः	भ्रमितास्थ
	भ्रमितास्मि	भ्रमितास्वः	भ्रमितास्मः
भ०	भ्रमिष्यति	भ्रमिष्यतः	भ्रमिष्यन्ति
	भ्रमिष्यसि	भ्रमिष्यथः	भ्रमिष्यथ
	भ्रमिष्यामि	भ्रमिष्यावः	भ्रमिष्यामः
क्रि०	अभ्रमिष्यत्	अभ्रमिष्यताम्	अभ्रमिष्यन्
	अभ्रमिष्यः	अभ्रमिष्यतम्	अभ्रमिष्यत
	अभ्रमिष्यम्	अभ्रमिष्याव	अभ्रमिष्याम

॥अथ रान्ताः॥

९७१. क्षर (क्षर्) संचलने।

व०	क्षरति	क्षरतः	क्षरन्ति
	क्षरसि	क्षरथः	क्षरथ
	क्षरामि	क्षरावः	क्षरामः
स०	क्षरेत्	क्षरेताम्	क्षरेयुः
	क्षरेः	क्षरेतम्	क्षरेत
	क्षरेयम्	क्षरेव	क्षरेम
प०	क्षरतु/क्षरतात्	क्षरताम्	क्षरन्तु
	क्षर/क्षरतात्	क्षरम्	क्षरत
	क्षराणि	क्षराव	क्षराम
ह्य०	अक्षरत्	अक्षरताम्	अक्षरन्
	अक्षरः	अक्षरतम्	अक्षरत
	अक्षरम्	अक्षराव	अक्षराम
अ०	अक्षारीत्	अक्षारिष्टाम्	अक्षारिषुः
	अक्षारीः	अक्षारिष्टम्	अक्षारिष्ट
	अक्षारिषम्	अक्षारिष्व	अक्षारिष्म
प०	चक्षार	चक्षरतुः	चक्षरुः
	चक्षरिथ	चक्षरथुः	चक्षर
	चक्षार/चक्षर	चक्षरिव	चक्षरिम
आ०	क्षर्यात्	क्षर्यास्ताम्	क्षर्यासुः
	क्षर्याः	क्षर्यास्तम्	क्षर्यास्त
	क्षर्यासम्	क्षर्यास्व	क्षर्यास्म
श्व०	क्षरिता	क्षरितारौ	क्षरितारः
	क्षरितासि	क्षरितास्थः	क्षरितास्थ
	क्षरितास्मि	क्षरितास्वः	क्षरितास्मः
भ०	क्षरिष्यति	क्षरिष्यतः	क्षरिष्यन्ति
	क्षरिष्यसि	क्षरिष्यथः	क्षरिष्यथ
	क्षरिष्यामि	क्षरिष्यावः	क्षरिष्यामः
क्रि०	अक्षरिष्यत्	अक्षरिष्यताम्	अक्षरिष्यन्
	अक्षरिष्यः	अक्षरिष्यतम्	अक्षरिष्यत
	अक्षरिष्यम्	अक्षरिष्याव	अक्षरिष्याम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सकर्मकश्चायमकर्मकः। क्षरति गौः पयो मुञ्चतीत्यर्थः। क्षरति जलं स्रवतीत्यर्थः।

।।अथ लान्ताश्चतुर्दश।।

१७२. चल (चलू) कम्पने।

व०	चलति	चलतः	चलन्ति
	चलसि	चलथः	चलथ
	चलामि	चलावः	चलामः
स०	चलेत्	चलेताम्	चलेयुः
	चलेः	चलेतम्	चलेत
	चलेयम्	चलेव	चलेम
प०	चलतु/चलतात्	चलताम्	चलन्तु
	चल/चलतात्	चलतम्	चलत
	चलानि	चलाव	चलाम
ह्य०	अचलत्	अचलताम्	अचलन्
	अचलः	अचलतम्	अचलत
	अचलम्	अचलाव	अचलाम
अ०	अचालीत्	अचालिष्टाम्	अचालिषुः
	अचालीः	अचालिष्टम्	अचालिष्ट
	अचालिषम्	अचालिष्व	अचालिष्म
प०	चचाल	चेलतुः	चेलुः
	चेलिथ	चेलथुः	चेल
	चचाल/चचल	चेलिव	चेलिम
आ०	चल्यात्	चल्यास्ताम्	चल्यासुः
	चल्याः	चल्यास्तम्	चल्यास्त
	चल्यासम्	चल्यास्व	चल्यास्म
श्व०	चलिता	चलितारौ	चलितारः
	चलितासि	चलितास्थः	चलितास्थ
	चलितास्मि	चलितास्वः	चलितास्मः
भ०	चलिष्यति	चलिष्यतः	चलिष्यन्ति
	चलिष्यसि	चलिष्यथः	चलिष्यथ
	चलिष्यामि	चलिष्यावः	चलिष्यामः
क्रि०	अचलिष्यत्	अचलिष्यताम्	अचलिष्यन्
	अचलिष्यः	अचलिष्यतम्	अचलिष्यत
	अचलिष्यम्	अचलिष्याव	अचलिष्याम

१७३. जल (जलू) घात्ये।

घात्यं जडत्वमतैक्ष्ण्यमित्यर्थः।

व०	जलति	जलतः	जलन्ति
	जलसि	जलथः	जलथ
	जलामि	जलावः	जलामः
स०	जलेत्	जलेताम्	जलेयुः
	जलेः	जलेतम्	जलेत
	जलेयम्	जलेव	जलेम
प०	जलतु/जलतात्	जलताम्	जलन्तु
	जल/जलतात्	जलतम्	जलत
	जलानि	जलाव	जलाम
ह्य०	अजलत्	अजलताम्	अजलन्
	अजलः	अजलतम्	अजलत
	अजलम्	अजलाव	अजलाम
अ०	अजालीत्	अजालिष्टाम्	अजालिषुः
	अजालीः	अजालिष्टम्	अजालिष्ट
	अजालिषम्	अजालिष्व	अजालिष्म
प०	ज्जाल	जेलतुः	जेलुः
	जेलिथ	जेलथुः	जेल
	ज्जाल/ज्जल	जेलिव	जेलिम
आ०	जल्यात्	जल्यास्ताम्	जल्यासुः
	जल्याः	जल्यास्तम्	जल्यास्त
	जल्यासम्	जल्यास्व	जल्यास्म
श्व०	जलिता	जलितारौ	जलितारः
	जलितासि	जलितास्थः	जलितास्थ
	जलितास्मि	जलितास्वः	जलितास्मः
भ०	जलिष्यति	जलिष्यतः	जलिष्यन्ति
	जलिष्यसि	जलिष्यथः	जलिष्यथ
	जलिष्यामि	जलिष्यावः	जलिष्यामः
क्रि०	अजलिष्यत्	अजलिष्यताम्	अजलिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अजलिष्य:	अजलिष्यतम्	अजलिष्यत
	अजलिष्यम्	अजलिष्याव	अजलिष्याम

१७४. ट्वल (टवल्) वैक्लव्ये।

विक्ल एव वैक्लव्यम्।

व०	टलति	टलत:	टलन्ति
	टलसि	टलथ:	टलथ
	टलामि	टलाव:	टलाम:
स०	टलेत्	टलेताम्	टलेयु:
	टले:	टलेतम्	टलेत
	टलेयम्	टलेव	टलेम
प०	टलतु/टलतात्	टलताम्	टलन्तु
	टल/टलतात्	टलतम्	टलत
	टलानि	टलाव	टलाम
ह्य०	अटलत्	अटलताम्	अटलन्
	अटल:	अटलतम्	अटलत
	अटलम्	अटलाव	अटलाम
अ०	अटालीत्	अटालिष्टाम्	अटालिषु:
	अटाली:	अटालिष्टम्	अटालिष्ट
	अटालिषम्	अटालिष्व	अटालिष्म
प०	टटाल	टेलतु:	टेलु:
	टेलिथ	टेलथु:	टेल
	टटाल/टटल	टेलिव	टेलिम
आ०	टल्यात्	टल्यास्ताम्	टल्यासु:
	टल्या:	टल्यास्तम्	टल्यास्त
	टल्यासम्	टल्यास्व	टल्यास्म
श्व०	टलिता	टलितारौ	टलितार:
	टलितासि	टलितास्थ:	टलितास्थ
	टलितास्मि	टलितास्व:	टलितास्म:
भ०	टलिष्यति	टलिष्यत:	टलिष्यन्ति
	टलिष्यसि	टलिष्यथ:	टलिष्यथ
	टलिष्यामि	टलिष्याव:	टलिष्याम:
क्रि०	अटलिष्यत्	अटलिष्यताम्	अटलिष्यन्

	अटलिष्य:	अटलिष्यतम्	अटलिष्यत
	अटलिष्यम्	अटलिष्याव	अटलिष्याम

१७५. ट्वल (ट्वल्) वैक्लव्ये।

क्विलव एव वैक्लव्यम्।

व०	ट्वलति	ट्वलत:	ट्वलन्ति
	ट्वलसि	ट्वलथ:	ट्वलथ
	ट्वलामि	ट्वलाव:	ट्वलाम:
स०	ट्वलेत्	ट्वलेताम्	ट्वलेयु:
	ट्वले:	ट्वलेतम्	ट्वलेत
	ट्वलेयम्	ट्वलेव	ट्वलेम
प०	ट्वलतु/ट्वलतात्	ट्वलताम्	ट्वलन्तु
	ट्वल/ट्वलतात्	ट्वलतम्	ट्वलत
	ट्वलानि	ट्वलाव	ट्वलाम
ह्य०	अट्वलत्	अट्वलताम्	अट्वलन्
	अट्वल:	अट्वलतम्	अट्वलत
	अट्वलम्	अट्वलाव	अट्वलाम
अ०	अट्वालीत्	अट्वालिष्टाम्	अट्वालिषु:
	अट्वाली:	अट्वालिष्टम्	अट्वालिष्ट
	अट्वालिषम्	अट्वालिष्व	अट्वालिष्म
प०	टट्वाल	टट्वलतु:	टट्वलु:
	टट्वलिथ	टट्वलथु:	टट्वल
	टट्वाल/टट्वल	टट्वलिव	टट्वलिम
आ०	ट्वल्यात्	ट्वल्यास्ताम्	ट्वल्यासु:
	ट्वल्या:	ट्वल्यास्तम्	ट्वल्यास्त
	ट्वल्यासम्	ट्वल्यास्व	ट्वल्यास्म
श्व०	ट्वलिता	ट्वलितारौ	ट्वलितार:
	ट्वलितासि	ट्वलितास्थ:	ट्वलितास्थ
	ट्वलितास्मि	ट्वलितास्व:	ट्वलितास्म:
भ०	ट्वलिष्यति	ट्वलिष्यत:	ट्वलिष्यन्ति
	ट्वलिष्यसि	ट्वलिष्यथ:	ट्वलिष्यथ
	ट्वलिष्यामि	ट्वलिष्याव:	ट्वलिष्याम:
क्रि०	अट्वलिष्यत्	अट्वलिष्यताम्	अट्वलिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अट्वलिष्य:	अट्वलिष्यतम्	अट्वलिष्यत
	अट्वलिष्यम्	अट्वलिष्याव	अट्वलिष्याम

१७६. ष्ठल (स्थलू) स्थाने।

व०	स्थलति	स्थलत:	स्थलन्ति
	स्थलसि	स्थलथ:	स्थलथ
	स्थलामि	स्थलाव:	स्थलाम:
स०	स्थलेत्	स्थलेताम्	स्थलेयु:
	स्थले:	स्थलेतम्	स्थलेत
	स्थलेयम्	स्थलेव	स्थलेम
प०	स्थलतु/स्थलतात्	स्थलताम्	स्थलन्तु
	स्थल/स्थलतात्	स्थलतम्	स्थलत
	स्थलानि	स्थलाव	स्थलाम
ह्य०	अस्थलत्	अस्थलताम्	अस्थलन्
	अस्थल:	अस्थलतम्	अस्थलत
	अस्थलम्	अस्थलाव	अस्थलाम
अ०	अस्थालीत्	अस्थालिष्टाम्	अस्थालिषु:
	अस्थाली:	अस्थालिष्टम्	अस्थालिष्ट
	अस्थालिषम्	अस्थालिष्व	अस्थालिष्म
प०	तस्थाल	तस्थलतु:	तस्थलु:
	तस्थलिथ	तस्थलथु:	तस्थल
	तस्थाल/तस्थल	तस्थलिव	तस्थलिम
आ०	स्थल्यात्	स्थल्यास्ताम्	स्थल्यासु:
	स्थल्या:	स्थल्यास्तम्	स्थल्यास्त
	स्थल्यासम्	स्थल्यास्व	स्थल्यास्म
श्व०	स्थलिता	स्थलितारौ	स्थलितार:
	स्थलितासि	स्थलितास्थ:	स्थलितास्थ
	स्थलितास्मि	स्थलितास्व:	स्थलितास्म:
भ०	स्थलिष्यति	स्थलिष्यत:	स्थलिष्यन्ति
	स्थलिष्यसि	स्थलिष्यथ:	स्थलिष्यथ
	स्थलिष्यामि	स्थलिष्याव:	स्थलिष्याम:
क्रि०	अस्थलिष्यत्	अस्थलिष्यताम्	अस्थलिष्यन्
	अस्थलिष्य:	अस्थलिष्यतम्	अस्थलिष्यत
	अस्थलिष्यम्	अस्थलिष्याव	अस्थलिष्याम

१७७. हल (हलू) विलेखने।

विलेखनं कर्षणम्।

व०	हलति	हलत:	हलन्ति
	हलसि	हलथ:	हलथ
	हलामि	हलाव:	हलाम:
स०	हलेत्	हलेताम्	हलेयु:
	हले:	हलेतम्	हलेत
	हलेयम्	हलेव	हलेम
प०	हलतु/हलतात्	हलताम्	हलन्तु
	हल/हलतात्	हलतम्	हलत
	हलानि	हलाव	हलाम
ह्य०	अहलत्	अहलताम्	अहलन्
	अहल:	अहलतम्	अहलत
	अहलम्	अहलाव	अहलाम
अ०	अहालीत्	अहालिष्टाम्	अहालिषु:
	अहाली:	अहालिष्टम्	अहालिष्ट
	अहालिषम्	अहालिष्व	अहालिष्म
प०	जहाल	जहलतु:	जहलु:
	जहुलिथ	जुलथु:	जहल
	जहाल/जहल	जहलिव	जहलिम
आ०	हल्यात्	हल्यास्ताम्	हल्यासु:
	हल्या:	हल्यास्तम्	हल्यास्त
	हल्यासम्	हल्यास्व	हल्यास्म
श्व०	हलिता	हलितारौ	हलितार:
	हलितासि	हलितास्थ:	हलितास्थ
	हलितास्मि	हलितास्व:	हलितास्म:
भ०	हलिष्यति	हलिष्यत:	हलिष्यन्ति
	हलिष्यसि	हलिष्यथ:	हलिष्यथ
	हलिष्यामि	हलिष्याव:	हलिष्याम:
क्रि०	अहलिष्यत्	अहलिष्यताम्	अहलिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अहलिष्य:	अहलिष्यतम्	अहलिष्यत
	अहलिष्यम्	अहलिष्याव	अहलिष्याम

१७८. णल (नलॅ) गन्धे।

गन्धोर्दनम्।

व०	नलति	नलत:	नलन्ति
	नलसि	नलथ:	नलथ
	नलामि	नलाव:	नलाम:
स०	नलेत्	नलेताम्	नलेयु:
	नले:	नलेतम्	नलेत
	नलेयम्	नलेव	नलेम
प०	नलतु/नलतात्	नलताम्	नलन्तु
	नल/नलतात्	नलतम्	नलत
	नलानि	नलाव	नलाम
ह्य०	अनलत्	अनलताम्	अनलन्
	अनल:	अनलतम्	अनलत
	अनलम्	अनलाव	अनलाम
अ०	अनालीत्	अनालिष्टाम्	अनालिषु:
	अनाली:	अनालिष्टम्	अनालिष्ट
	अनालिषम्	अनालिष्व	अनालिष्म
प०	ननाल	नेलतु:	नेलु:
	नेलिथ	नेलथु:	नेल
	ननाल/ननल	नेलिव	नेलिम
आ०	नल्यात्	नल्यास्ताम्	नल्यासु:
	नल्या:	नल्यास्तम्	नल्यास्त
	नल्यासम्	नल्यास्व	नल्यास्म
श्व०	नलिता	नलितारौ	नलितार:
	नलितासि	नलितास्थ:	नलितास्थ
	नलितास्मि	नलितास्व:	नलितास्म:
भ०	नलिष्यति	नलिष्यत:	नलिष्यन्ति
	नलिष्यसि	नलिष्यथ:	नलिष्यथ
	नलिष्यामि	नलिष्याव:	नलिष्याम:
क्रि०	अनलिष्यत्	अनलिष्यताम्	अनलिष्यन्
	अनलिष्य:	अनलिष्यतम्	अनलिष्यत
	अनलिष्यम्	अनलिष्याव	अनलिष्याम

१७९. बल (बलॅ) प्राणनधान्यावरोधयो:

प्राणनं जीवनम् धान्यमवरुध्यते यत्रेति धान्यावरोध: कुसूल:।

व०	बलति	बलत:	बलन्ति
	बलसि	बलथ:	बलथ
	बलामि	बलाव:	बलाम:
स०	बलेत्	बलेताम्	बलेयु:
	बले:	बलेतम्	बलेत
	बलेयम्	बलेव	बलेम
प०	बलतु/बलतात्	बलताम्	बलन्तु
	बल/बलतात्	बलतम्	बलत
	बलानि	बलाव	बलाम
ह्य०	अबलत्	अबलताम्	अबलन्
	अबल:	अबलतम्	अबलत
	अबलम्	अबलाव	अबलाम
अ०	अबालीत्	अबालिष्टाम्	अबालिषु:
	अबाली:	अबालिष्टम्	अबालिष्ट
	अबालिषम्	अबालिष्व	अबालिष्म
प०	बबाल	बेलतु:	बेलु:
	बेलिथ	बेलथु:	बेल
	बबाल/बबल	बेलिव	बेलिम
आ०	बल्यात्	बल्यास्ताम्	बल्यासु:
	बल्या:	बल्यास्तम्	बल्यास्त
	बल्यासम्	बल्यास्व	बल्यास्म
श्व०	बलिता	बलितारौ	बलितार:
	बलितासि	बलितास्थ:	बलितास्थ
	बलितास्मि	बलितास्व:	बलितास्म:
भ०	बलिष्यति	बलिष्यत:	बलिष्यन्ति
	बलिष्यसि	बलिष्यथ:	बलिष्यथ
	बलिष्यामि	बलिष्याव:	बलिष्याम:
क्रि०	अबलिष्यत्	अबलिष्यताम्	अबलिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अबलिष्य:	अबलिष्यतम्	अबलिष्यत
	अबलिष्यम्	अबलिष्याव	अबलिष्याम

९८०. पुल (पुलृ) महत्वे।

व०	पोलति	पोलत:	पोलन्ति
	पोलसि	पोलथ:	पोलथ
	पोलामि	पोलाव:	पोलाम:
स०	पोलेत्	पोलेताम्	पोलेयु:
	पोले:	पोलेतम्	पोलेत
	पोलेयम्	पोलेव	पोलेम
प०	पोलतु/पोलतात्	पोलताम्	पोलन्तु
	पोल/पोलतात्	पोलतम्	पोलत
	पोलानि	पोलाव	पोलाम
ह्य०	अपोलत्	अपोलताम्	अपोलन्
	अपोल:	अपोलतम्	अपोलत
	अपोलम्	अपोलाव	अपोलाम
अ०	अपोलीत्	अपोलिष्टाम्	अपोलिषु:
	अपोली:	अपोलिष्टम्	अपोलिष्ट
	अपोलिषम्	अपोलिष्व	अपोलिष्म
प०	पुपोल	पुपुलतु:	पुपुलु:
	पुपोलिथ	पुपुलथु:	पुपुल
	पुपोल	पुपुलिव	पुपुलिम
आ०	पुल्यात्	पुल्यास्ताम्	पुल्यासु:
	पुल्या:	पुल्यास्तम्	पुल्यास्त
	पुल्यासम्	पुल्यास्व	पुल्यास्म
श्व०	पोलिता	पोलितारौ	पोलितार:
	पोलितासि	पोलितास्थ:	पोलितास्थ
	पोलितास्मि	पोलितास्व:	पोलितास्म:
भ०	पोलिष्यति	पोलिष्यत:	पोलिष्यन्ति
	पोलिष्यसि	पोलिष्यथ:	पोलिष्यथ
	पोलिष्यामि	पोलिष्याव:	पोलिष्याम:
क्रि०	अपोलिष्यत्	अपोलिष्यताम्	अपोलिष्यन्
	अपोलिष्य:	अपोलिष्यतम्	अपोलिष्यत
	अपोलिष्यम्	अपोलिष्याव	अपोलिष्याम

९८१. कुल (कुलृ) बन्धुसंस्त्यनयो:।

संस्त्यानं संघात:।

व०	कोलति	कोलत:	कोलन्ति
	कोलसि	कोलथ:	कोलथ
	कोलामि	कोलाव:	कोलाम:
स०	कोलेत्	कोलेताम्	कोलेयु:
	कोले:	कोलेतम्	कोलेत
	कोलेयम्	कोलेव	कोलेम
प०	कोलतु/कोलतात्	कोलताम्	कोलन्तु
	कोल/कोलतात्	कोलतम्	कोलत
	कोलानि	कोलाव	कोलाम
ह्य०	अकोलत्	अकोलताम्	अकोलन्
	अकोल:	अकोलतम्	अकोलत
	अकोलम्	अकोलाव	अकोलाम
अ०	अकोलीत्	अकोलिष्टाम्	अकोलिषु:
	अकोली:	अकोलिष्टम्	अकोलिष्ट
	अकोलिषम्	अकोलिष्व	अकोलिष्म
प०	चुकोल	चुकुलतु:	चुकुलु:
	चुकोलिथ	चुकुलथु:	चुकुल
	चुकोल	चुकुलिव	चुकुलिम
आ०	कुल्यात्	कुल्यास्ताम्	कुल्यासु:
	कुल्या:	कुल्यास्तम्	कुल्यास्त
	कुल्यासम्	कुल्यास्व	कुल्यास्म
श्व०	कोलिता	कोलितारौ	कोलितार:
	कोलितासि	कोलितास्थ:	कोलितास्थ
	कोलितास्मि	कोलितास्व:	कोलितास्म:
भ०	कोलिष्यति	कोलिष्यत:	कोलिष्यन्ति
	कोलिष्यसि	कोलिष्यथ:	कोलिष्यथ
	कोलिष्यामि	कोलिष्याव:	कोलिष्याम:
क्रि०	अकोलिष्यत्	अकोलिष्यताम्	अकोलिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अकोलिष्य:	अकोलिष्यतम्	अकोलिष्यत
	अकोलिष्यम्	अकोलिष्याव	अकोलिष्याम

९८२. पल (पल्) गतौ।

व०	पलति	पलत:	पलन्ति
	पलसि	पलथ:	पलथ
	पलामि	पलाव:	पलाम:
स०	पलेत्	पलेताम्	पलेयु:
	पले:	पलेतम्	पलेत
	पलेयम्	पलेव	पलेम
प०	पलतु/पलतात्	पलताम्	पलन्तु
	पल/पलतात्	पलतम्	पलत
	पलानि	पलाव	पलाम
ह्य०	अपलत्	अपलताम्	अपलन्
	अपल:	अपलतम्	अपलत
	अपलम्	अपलाव	अपलाम
अ०	अपालीत्	अपालिष्टाम्	अपालिषु:
	अपाली:	अपालिष्टम्	अपालिष्ट
	अपालिषम्	अपालिष्व	अपालिष्म
प०	पपाल	पेलतु:	पेलु:
	पेलिथ	पेलथु:	पेल
	पपाल/पपल	पेलिव	पेलिम
आ०	पल्यात्	पल्यास्ताम्	पल्यासु:
	पल्या:	पल्यास्तम्	पल्यास्त
	पल्यासम्	पल्यास्व	पल्यास्म
श्व०	पलिता	पलितारौ	पलितार:
	पलितासि	पलितास्थ:	पलितास्थ
	पलितास्मि	पलितास्व:	पलितास्म:
भ०	पलिष्यति	पलिष्यत:	पलिष्यन्ति
	पलिष्यसि	पलिष्यथ:	पलिष्यथ
	पलिष्यामि	पलिष्याव:	पलिष्याम:
क्रि०	अपलिष्यत्	अपलिष्यताम्	अपलिष्यन्

	अपलिष्य:	अपलिष्यतम्	अपलिष्यत
	अपलिष्यम्	अपलिष्याव	अपलिष्याम

९८३. फल (फल्) गतौ। पूर्वमधीतस्यापीह पाठो गतौ ज्वलादिकार्यार्थ:। एतद्रूपाणि च त्रिफला विशरणे ४१४ इतिवज्ज्ञेयानि।

९८४. शल (शल्) गतौ।

पूर्वमधीतस्यापीह पाठो गतौ ज्वलादिकार्यार्थ: परस्मैपदार्थश्च।

व०	शलति	शलत:	शलन्ति
	शलसि	शलथ:	शलथ
	शलामि	शलाव:	शलाम:
स०	शलेत्	शलेताम्	शलेयु:
	शले:	शलेतम्	शलेत
	शलेयम्	शलेव	शलेम
प०	शलतु/शलतात्	शलताम्	शलन्तु
	शल/शलतात्	शलतम्	शलत
	शलानि	शलाव	शलाम
ह्य०	अशलत्	अशलताम्	अशलन्
	अशल:	अशलतम्	अशलत
	अशलम्	अशलाव	अशलाम
अ०	अशालीत्	अशालिष्टाम्	अशालिषु:
	अशाली:	अशालिष्टम्	अशालिष्ट
	अशालिषम्	अशालिष्व	अशालिष्म
प०	शशाल	शेलतु:	शेलु:
	शेलिथ	शेलथु:	शेल
	शशाल/शशल	शेलिव	शेलिम
आ०	शल्यात्	शल्यास्ताम्	शल्यासु:
	शल्या:	शल्यास्तम्	शल्यास्त
	शल्यासम्	शल्यास्व	शल्यास्म
श्व०	शलिता	शलितारौ	शलितार:
	शलितासि	शलितास्थ:	शलितास्थ
	शलितास्मि	शलितास्व:	शलितास्म:
भ०	शलिष्यति	शलिष्यत:	शलिष्यन्ति
	शलिष्यसि	शलिष्यथ:	शलिष्यथ
	शलिष्यामि	शलिष्याव:	शलिष्याम:
क्रि०	अशलिष्यत्	अशलिष्यताम्	अशलिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अशलिष्यः	अशलिष्यतम्	अशलिष्यत
	अशलिष्यम्	अशलिष्याव	अशलिष्याम

९८५. हुल (हुल्) हिंसासंवरणयोश्च। चकाराद्गतौ।

व०	होलति	होलतः	होलन्ति
	होलसि	होलथः	होलथ
	होलामि	होलावः	होलामः
स०	होलेत्	होलेताम्	होलेयुः
	होलेः	होलेतम्	होलेत
	होलेयम्	होलेव	होलेम
प०	होलतु/होलतात्	होलताम्	होलन्तु
	होल/होलतात्	होलतम्	होलत
	होलानि	होलाव	होलाम
ह्य०	अहोलत्	अहोलताम्	अहोलन्
	अहोलः	अहोलतम्	अहोलत
	अहोलम्	अहोलाव	अहोलाम
अ०	अहोलीत्	अहोलिष्टाम्	अहोलिषुः
	अहोलीः	अहोलिष्टम्	अहोलिष्ट
	अहोलिषम्	अहोलिष्व	अहोलिष्म
प०	जुहोल	जुहुलतुः	जुहुलुः
	जुहोलिथ	जुहुलथुः	जुहुल
	जुहोल	जुहुलिव	जुहुलिम
आ०	हुल्यात्	हुल्यास्ताम्	हुल्यासुः
	हुल्याः	हुल्यास्तम्	हुल्यास्त
	हुल्यासम्	हुल्यास्व	हुल्यास्म
श्व०	होलिता	होलितारौ	होलितारः
	होलितासि	होलितास्थः	होलितास्थ
	होलितास्मि	होलितास्वः	होलितास्मः
भ०	होलिष्यति	होलिष्यतः	होलिष्यन्ति
	होलिष्यसि	होलिष्यथः	होलिष्यथ
	होलिष्यामि	होलिष्यावः	होलिष्यामः
क्रि०	अहोलिष्यत्	अहोलिष्यताम्	अहोलिष्यन्
	अहोलिष्यः	अहोलिष्यतम्	अहोलिष्यत
	अहोलिष्यम्	अहोलिष्याव	अहोलिष्याम

।।अथ शान्ताः।।

९८६. क्रुशं (क्रुश्) आह्वानरोदनयोः।

व०	क्रोशति	क्रोशतः	क्रोशन्ति
	क्रोशसि	क्रोशथः	क्रोशथ
	क्रोशामि	क्रोशावः	क्रोशामः
स०	क्रोशेत्	क्रोशेताम्	क्रोशेयुः
	क्रोशेः	क्रोशेतम्	क्रोशेत
	क्रोशेयम्	क्रोशेव	क्रोशेम
प०	क्रोशतु/क्रोशतात्	क्रोशताम्	क्रोशन्तु
	क्रोश/क्रोशतात्	क्रोशतम्	क्रोशत
	क्रोशानि	क्रोशाव	क्रोशाम
ह्य०	अक्रोशत्	अक्रोशताम्	अक्रोशन्
	अक्रोशः	अक्रोशतम्	अक्रोशत
	अक्रोशम्	अक्रोशाव	अक्रोशाम
अ०	अक्रुक्षत्	अक्रुक्षताम्	अक्रुक्षन्
	अक्रुक्षः	अक्रुक्षतम्	अक्रुक्षत
	अक्रुक्षम्	अक्रुक्षाव	अक्रुक्षाम
प०	चुक्रोश	चुक्रुशतुः	चुक्रुशुः
	चुक्रोशिथ	चुक्रुशथुः	चुक्रुश
	चुक्रोश	चुक्रुशिव	चुक्रुशिम
आ०	क्रुश्यात्	क्रुश्यास्ताम्	क्रुश्यासुः
	क्रुश्याः	क्रुश्यास्तम्	क्रुश्यास्त
	क्रुश्यासम्	क्रुश्यास्व	क्रुश्यास्म
श्व०	क्रोष्टा	क्रोष्टारौ	क्रोष्टारः
	क्रोष्टासि	क्रोष्टास्थः	क्रोष्टास्थ
	क्रोष्टास्मि	क्रोष्टास्वः	क्रोष्टास्मः
भ०	क्रोक्ष्यति	क्रोक्ष्यतः	क्रोक्ष्यन्ति
	क्रोक्ष्यसि	क्रोक्ष्यथः	क्रोक्ष्यथ
	क्रोक्ष्यामि	क्रोक्ष्यावः	क्रोक्ष्यामः
क्रि०	अक्रोक्ष्यत्	अक्रोक्ष्यताम्	अक्रोक्ष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अक्रोक्ष्य:	अक्रोक्ष्यतम्	अक्रोक्ष्यत
	अक्रोक्ष्यम्	अक्रोक्ष्याव	अक्रोक्ष्याम

९८७. कस (कस्) गतौ।

व०	कसति	कसत:	कसन्ति
	कससि	कसथ:	कसथ
	कसामि	कसाव:	कसाम:
स०	कसेत्	कसेताम्	कसेयु:
	कसे:	कसेतम्	कसेत
	कसेयम्	कसेव	कसेम
प०	कसतु/कसतात्	कसताम्	कसन्तु
	कस/कसतात्	कसतम्	कसत
	कसानि	कसाव	कसाम
ह्य०	अकसत्	अकसताम्	अकसन्
	अकस:	अकसतम्	अकसत
	अकसम्	अकसाव	अकसाम
अ०	अकासीत्	अकासिष्टाम्	अकासिषु:
	अकासी:	अकासिष्टम्	अकासिष्ट
	अकासिषम्	अकासिष्व	अकासिष्म
अ०	अकसीत्	अकसिष्टाम्	अकासिषु:
	अकसी:	अकसिष्टम्	अकसिष्ट
	अकसिषम्	अकसिष्व	अकसिष्म
प०	चकास	चकसतु:	चकसु:
	चकसिथ	चकसथु:	चकस
	चकास/चकस	चकसिव	चकसिम
आ०	कस्यात्	कस्यास्ताम्	कस्यासु:
	कस्या:	कस्यास्तम्	कस्यास्त
	कस्यासम्	कस्यास्व	कस्यास्म
श्व०	कसिता	कसितारौ	कसितार:
	कसितासि	कसितास्थ:	कसितास्थ
	कसितास्मि	कसितास्व:	कसितास्म:
भ०	कसिष्यति	कसिष्यत:	कसिष्यन्ति
	कसिष्यसि	कसिष्यथ:	कसिष्यथ
	कसिष्यामि	कसिष्याव:	कसिष्याम:
क्रि०	अकसिष्यत्	अकसिष्यताम्	अकसिष्यन्
	अकसिष्य:	अकसिष्यतम्	अकसिष्यत
	अकसिष्यम्	अकसिष्याव	अकसिष्याम

९८८. रुहं (रुह्) जन्मनि।

बीजजन्मनीत्यन्ये। भीजन्माङ्कु रोत्पत्ति:।

व०	रोहति	रोहत:	रोहन्ति
	रोहसि	रोहथ:	रोहथ
	रोहामि	रोहाव:	रोहाम:
स०	रोहेत्	रोहेताम्	रोहेयु:
	रोहे:	रोहेतम्	रोहेत
	रोहेयम्	रोहेव	रोहेम
प०	रोहतु/रोहतात्	रोहताम्	रोहन्तु
	रोह/रोहतात्	रोहतम्	रोहत
	रोहाणि	रोहाव	रोहाम
ह्य०	अरोहत्	अरोहताम्	अरोहन्
	अरोह:	अरोहतम्	अरोहत
	अरोहम्	अरोहाव	अरोहाम
अ०	अरुक्षत्	अरुक्षताम्	अरुक्षन्
	अरुक्ष:	अरुक्षतम्	अरुक्षत
	अरुक्षम्	अरुक्षाव	अरुक्षाम
प०	रुरोह	रुरुहतु:	रुरुहु:
	रुरोहिथ	रुरुहथु:	रुरुह
	रुरोह	रुरुहिव	रुरुहिम
आ०	रुह्यात्	रुह्यास्ताम्	रुह्यासु:
	रुह्या:	रुह्यास्तम्	रुह्यास्त
	रुह्यासम्	रुह्यास्व	रुह्यास्म
श्व०	रोढा	रोढारौ	रोढार:
	रोढासि	रोढास्थ:	रोढास्थ
	रोढास्मि	रोढास्व:	रोढास्म:
भ०	रोक्ष्यति	रोक्ष्यत:	रोक्ष्यन्ति
	रोक्ष्यसि	रोक्ष्यथ:	रोक्ष्यथ
	रोक्ष्यामि	रोक्ष्याव:	रोक्ष्याम:
क्रि०	अरोक्ष्यत्	अरोक्ष्यताम्	अरोक्ष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अरोक्ष्य:	अरोक्ष्यतम्	अरोक्ष्यत
	अरोक्ष्यम्	अरोक्ष्याव	अरोक्ष्याम

अथात्मनेपदिनौ।

९८९. रमिं (रम्) क्रीडायाम्।

व०	रमते	रमेते	रमन्ते
	रमसे	रमेथे	रमध्वे
	रमे	रमावहे	रमामहे
स०	रमेत	रमेयाताम्	रमेरन्
	रमेथा:	रमेयाथाम्	रमेध्वम्
	रमेय	रमेवहि	रमेमहि
प०	रमताम्	रमेताम्	रमन्ताम्
	रमस्व	रमेथाम	रमध्वम्
	रमै	रमावहै	रमामहै
ह्य०	अरमत	अरमेताम्	अरमन्त
	अरमथा:	अरमेथाम	अरमध्वम्
	अरमे	अरमावहि	अरमामहि
अ०	अरंस्त	अरंसाताम्	अरंसत
	अरंस्था:	अरंसाथाम्	अरन्ध्वम्/न्द्ध्वम्
	अरंसि	अरंस्वहि	अरंस्महि
प०	रेमे	रेमाते	रेमिरे
	रेमिषे	रेमाथे	रेमिध्वे
	रेमे	रेमिवहे	रेमिमहे
आ०	रंसीष्ट	रंसीयास्ताम्	रंसीरन्
	रंसीष्ठा:	रंसीयास्थाम्	रंसीध्वम्
	रंसीय	रंसीवहि	रंसीमहि
श्व०	रन्ता	रन्तारौ	रन्तार:
	रन्तासे	रन्तासाथे	रन्ताध्वे
	रन्ताहे	रन्तास्वहे	रन्तास्मिहे
भ०	रंस्यते	रंस्येते	रंस्यन्ते
	रंस्यसे	रंस्येथे	रंस्यध्वे
	रंस्ये	रंस्यावहे	रंस्यामहे
क्रि०	अरंस्यत	अरंस्येताम्	अरंस्यन्त
	अरंस्यथा:	अरंस्येथाम्	अरंस्यध्वम्
	अरंस्ये	अरंस्यावहि	अरंस्यामहि

व्याङ्परेति परस्मैपदे

	विरमति	आरमति	परिरमति
व०	आरमति	आरमत:	आरमन्ति
	आरमसि	आरमथ:	आरमथ
	आरमामि	आरमाव:	आरमाम:
स०	आरमेत्	आरमेताम्	आरमेयु:
	आरमे:	आरमेतम्	आरमेत
	आरमेयम्	आरमेव	आरमेम
प०	आरमतु/आरमतात्	आरमताम्	आरमन्तु
	आरम/आरमतात्	आरमतम्	आरमत
	आरमाणि	आरमाव	आरमाम
ह्य०	आरमत्	आरमताम्	आरमन्
	आरम:	आरमतम्	आरमत
	आरमतम्	आरमाव	आरमाम
अ०	आरंसीत्	आरंसिष्टाम्	आरंसिषु:
	आरंसी:	आरंसिष्टम्	आरंसिष्ट
	आरंसिषम्	आरंसिष्व	आरंसिष्म
प०	आरराम	आरेमतु:	आरेमु:
	आरेमिथ/आररन्थ	आरेमथु:	आरेम
	आरराम/आररम	आरेमिव	आरेमिम
आ०	आरम्यात्	आरम्यास्ताम्	आरम्यासु:
	आरम्या:	आरम्यास्तम्	आरम्यास्त
	आरम्यासम्	आरम्यास्व	आरम्यास्म
श्व०	आरन्ता	आरन्तारौ	आरन्तार:
	आरन्तासि	आरन्तास्थ:	आरन्तास्थ
	आरन्तास्मि	आरन्तास्व:	आरन्तास्म:
भ०	आरंस्यति	आरंस्यत:	आरंस्यन्ति
	आरंस्यसि	आरंस्यथ:	आरंस्यथ
	आरंस्यामि	आरंस्याव:	आरंस्याम:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रि०	आरंस्यत्	आरंस्यताम्	आरंस्यन्
	आरंस्यः	आरंस्यतम्	आरंस्यत
	आरंस्यम्	आरंस्याव	आरंस्याम

९९०. षहि (सह) मर्षणे। मर्षणं क्षमा।

व०	सहते	सहेते	सहन्ते
स०	सहेत	सहेयाताम्	सहेरन्
प०	सहताम्	सहेताम्	सहन्ताम्
ह्य०	असहत	असहेताम्	असहन्त
अ०	असहिष्ट	असहिषाताम्	असहिषत
प०	सेहे	सेहाते	सेहिरे
आ०	सहिषीष्ट	सहिषीयास्ताम्	सहिषीरन्
श्व०	सहिता	सहितारौ	सहितारः
श्व०	सोढा	सोढारौ	सोढारः
भ०	सहिष्यते	सहिष्येते	सहिष्यन्ते
क्रि०	असहिष्यत	असहिष्येताम्	असहिष्यन्त

अथ यजादयो नव श्विवदवर्जा अनिटश्च वर्णक्रमेण दर्श्यन्ते। तत्रापि पूर्वाचार्यानुरोधेनादौ

९९१. यजीं (यज्) देवपूजासंगतिकरणदानेषु।

व०	यजति	यजतः	यजन्ति
	यजसि	यजथः	यजथ
	यजामि	यजावः	यजामः
स०	यजेत्	यजेताम्	यजेयुः
	यजेः	यजेतम्	यजेत
	यजेयम्	यजेव	यजेम
प०	यजतु/यजतात्	यजताम्	यजन्तु
	यज/यजतात्	यजतम्	यजत
	यजानि	यजाव	यजाम
ह्य०	अयजत्	अयजताम्	अयजन्
	अयजः	अयजतम्	अयजत
	अयजम्	अयजाव	अयजाम
अ०	अयाक्षीत्	अयाष्टाम्	अयाक्षुः
	अयाक्षीः	अयाष्टम्	अयाष्ट
	अयाक्षम्	अयाक्ष्व	अयाक्ष्म
प०	इयाज	ईजतुः	ईजुः
	इयजिथ/इयष्ठ	ईजथुः	ईज
	इयाज/इयज	ईजिव	ईजिम
आ०	इज्यात्	इज्यास्ताम्	इज्यासुः
	इज्याः	इज्यास्तम्	इज्यास्त
	इज्यासम्	इज्यास्व	इज्यास्म
श्व०	यष्टा	यष्टारौ	यष्टारः
	यष्टासि	यष्टास्थः	यष्टास्थ
	यष्टास्मि	यष्टास्वः	यष्टास्मः
भ०	यक्ष्यति	यक्ष्यतः	यक्ष्यन्ति
	यक्ष्यसि	यक्ष्यथः	यक्ष्यथ
	यक्ष्यामि	यक्ष्यावः	यक्ष्यामः
क्रि०	अयक्ष्यत्	अयक्ष्यताम्	अयक्ष्यन्
	अयक्ष्यः	अयक्ष्यतम्	अयक्ष्यत
	अयक्ष्यम्	अयक्ष्याव	अयक्ष्याम

आत्मनेपद

व०	यजते	यजेते	यजन्ते
	यजसे	यजेथे	यजध्वे
	यजे	यजावहे	यजामहे
स०	यजेत	यजेयाताम्	यजेरन्
	यजेथाः	यजेयाथाम्	यजेध्वम्
	यजेय	यजेवहि	यजेमहि
प०	यजताम्	यजेताम्	यजन्ताम्
	यजस्व	यजेथाम्	यजध्वम्
	यजै	यजावहै	यजामहै
ह्य०	अयजत	अयजेताम्	अयजन्त
	अयजथाः	अयजेथाम	अयजध्वम्
	अयजे	अयजावहि	अयजामहि
अ०	अयष्ट	अयक्षाताम्	अयक्षत
	अयष्ठाः	अयक्षाथाम्	अयड्ढ्वम्/ध्वम्
	अयक्षि	अयक्ष्वहि	अयक्ष्महि
प०	ईजे	ईजाते	ईजिरे
	ईजिषे	ईजाथे	ईजिध्वे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	ईजे	ईजिवहे	ईजिमहे
आ०	यक्षीष्ट	यक्षीयास्ताम्	यक्षीरन्
	यक्षीष्ठाः	यक्षीयास्थाम्	यक्षीध्वम्
	यक्षीय	यक्षीवहि	यक्षीमहि
श्व०	यष्टा	यष्टारौ	यष्टारः
	यष्टासे	यष्टासाथे	यष्टाध्वे
	यष्टाहे	यष्टास्वहे	यष्टास्महे
भ०	यक्ष्यते	यक्ष्येते	यक्ष्यन्ते
	यक्ष्यसे	यक्ष्येथे	यक्ष्यध्वे
	यक्ष्ये	यक्ष्यावहे	यक्ष्यामहे
क्रि०	अयक्ष्यत	अयक्ष्येताम्	अयक्ष्यन्त
	अयक्ष्यथाः	अयक्ष्येथाम्	अयक्ष्यध्वम्
	अयक्ष्ये	अयक्ष्यावहि	अयक्ष्यामहि

॥अथैदन्तास्त्रयः॥

९९२. वेंग् (वे) तन्तुसन्ताने।

व०	वयति	वयतः	वयन्ति
	वयसि	वयथः	वयथ
	वयामि	वयावः	वयामः
स०	वयेत्	वयेताम्	वयेयुः
	वयेः	वयेतम्	वयेत
	वयेयम्	वयेव	वयेम
प०	वयतु/वयतात्	वयताम्	वयन्तु
	वय/वयतात्	वयतम्	वयत
	वयानि	वयाव	वयाम
ह्य०	अवयत्	अवयताम्	अवयन्
	अवयः	अवयतम्	अवयत
	अवयम्	अवयाव	अवयाम
अ०	अवासीत्	अवासिष्टाम्	अवासिषुः
	अवासीः	अवासिष्टम्	अवासिष्ट
	अवासिषम्	अवासिष्व	अवासिष्म
प०	उवाय	ऊवयतुः	ऊयुः
	उवयिथ	ऊयथुः	ऊय
	उवाय/उवय	ऊयिव	ऊयिम
		तथा	
	ववौ	ऊवतुः	ऊवुः
	वविथ/ववाथ	ऊवथुः	ऊव
	ववौ	ऊविव	ऊविम
		तथा	
	ववौ	ववतुः	ववुः
	वविथ/ववाथ	ववथुः	वव
	ववौ	वविव	वविम
आ०	ऊयात्	ऊयास्ताम्	ऊयासुः
	ऊयाः	ऊयास्तम्	ऊयास्त
	ऊयासम्	ऊयास्व	ऊयास्म
श्व०	वाता	वातारौ	वातारः
	वातासि	वातास्थः	वातास्थ
	वातास्मि	वातास्वः	वातास्मः
भ०	वास्यति	वास्यतः	वास्यन्ति
	वास्यसि	वास्यथः	वास्यथ
	वास्यामि	वास्यावः	वास्यामः
क्रि०	अवास्यत्	अवास्यताम्	अवास्यन्
	अवास्यः	अवास्यतम्	अवास्यत
	अवास्यम्	अवास्याव	अवास्याम
व०	वयते	वयेते	वयन्ते
	वयसे	वयेथे	वयध्वे
	वये	वयावहे	वयामहे
स०	वयेत	वयेयाताम्	वयेरन्
	वयेथाः	वयेयाथाम्	वयेध्वम्
	वयेय	वयेवहि	वयेमहि
प०	वयताम्	वयेताम्	वयन्ताम्
	वयस्व	वयेथाम	वयध्वम्
	वयै	वयावहै	वयामहै
ह्य०	अवयत	अवयेताम्	अवयन्त
	अवयथाः	अवयेथाम	अवयध्वम्
	अवये	अवयावहि	अवयामहि
अ०	अवास्त	अवासाताम्	अवासत
	अवास्थाः	अवासाथाम्	अवाद्ध्वम्/ध्वम्
	अवासि	अवास्वहि	अवास्महि
प०	ऊये	ऊयाते	ऊयिरे
	ऊयिषे	ऊयाथे	ऊयिध्वे/ढ्वे
	ऊये	ऊयिवहे	ऊयिमहे
		तथा	
	ववे	ववाते	वविरे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	ववि‍षे	ववाथे	वविध्वे/ढ्वे
	ववे	वविवहे	वविमहे

तथा

	ऊवे	ऊवाते	ऊविरे
	ऊविषे	ऊवाथे	ऊविध्वे/ढ्वे
	ऊवे	ऊविवहे	ऊविमहे
आ०	वासीष्ट	वासीयास्ताम्	वासीरन्
	वासीष्ठाः	वासीयास्थाम्	वासीध्वम्
	वासीय	वासीवहि	वासीमहि
श्व०	वाता	वातारौ	वातारः
	वातासे	वातासाथे	वाताध्वे
	वाताहे	वातास्वहे	वातास्मिहे
भ०	वास्यते	वास्येते	वास्यन्ते
	वास्यसे	वास्येथे	वास्यध्वे
	वास्ये	वास्यावहे	वास्यामहे
क्रि०	अवास्यत	अवास्येताम्	अवास्यन्त
	अवास्यथाः	अवास्येथाम्	अवास्यध्वम्
	अवास्ये	अवास्यावहि	अवास्यामहि

९९३. व्येंग् (व्ये) संवरणे।

संवरणमाच्छादनम्।

व०	व्ययति	व्ययतः	व्ययन्ति
स०	व्ययेत्	व्ययेताम्	व्ययेयुः
प०	व्ययतु/व्ययतात्	व्ययताम्	व्ययन्तु
ह्य०	अव्ययत्	अव्ययताम्	अव्ययन्
अ०	अव्यासीत्	अव्यासिष्टाम्	अव्यासिषुः
प०	विव्याय	विव्यतुः	विव्युः
आ०	वीयात्	वीयास्ताम्	वीयासुः
श्व०	व्याता	व्यातारौ	व्यातारः
भ०	व्यास्यति	व्यास्यतः	व्यास्यन्ति
क्रि०	अव्यास्यत्	अव्यास्यताम्	अव्यास्यन्

आत्मनेपद

व०	व्ययते	व्ययेते	व्ययन्ते
स०	व्ययेत	व्ययेयाताम्	व्ययेरन्
प०	व्ययताम्	व्ययेताम्	व्ययन्ताम्
ह्य०	अव्ययत	अव्ययेताम्	अव्ययन्त
अ०	अव्यास्त	अव्यासाताम्	अव्यासत
प०	विव्ये	विव्याते	विव्यिरे
आ०	व्यासीष्ट	व्यासीयास्ताम्	व्यासीरन्
श्व०	व्याता	व्यातारौ	व्यातारः
भ०	व्यास्यते	व्यास्येते	व्यास्यन्ते
क्रि०	अव्यास्यत	अव्यास्येताम्	अव्यास्यन्त

९९४. ह्वेंग् (ह्वे) स्पर्धाशब्दयोः।

व०	ह्वयति	ह्वयतः	ह्वयन्ति
	ह्वयसि	ह्वयथः	ह्वयथ
	ह्वयामि	ह्वयावः	ह्वयामः
स०	ह्वयेत्	ह्वयेताम्	ह्वयेयुः
	ह्वयेः	ह्वयेतम्	ह्वयेत
	ह्वयेयम्	ह्वयेव	ह्वयेम
प०	ह्वयतु/ह्वयतात्	ह्वयताम्	ह्वयन्तु
	ह्वय/ह्वयतात्	ह्वयतम्	ह्वयत
	ह्वयानि	ह्वयाव	ह्वयाम
ह्य०	अह्वयत्	अह्वयताम्	अह्वयन्
	अह्वयः	अह्वयतम्	अह्वयत
	अह्वयम्	अह्वयाव	अह्वयाम
अ०	अह्वयत्	अह्वयताम्	अह्वयन्
	अह्वयः	अह्वयतम्	अह्वयत
	अह्वयम्	अह्वयाव	अह्वयाम
प०	जुहाव	जुहुवतुः	जुहुवुः
	जुहोथ/जुहुविथ	जुहुवथुः	जुहुव
	जुहाव/जुहुव	जुहुविव	जुहुविम
आ०	हूयात्	हूयास्ताम्	हूयासुः
	हूयाः	हूयास्तम्	हूयास्त
	हूयासम्	हूयास्व	हूयास्म
श्व०	ह्वाता	ह्वातारौ	ह्वातारः
	ह्वातासि	ह्वातास्थः	ह्वातास्थ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	ह्वातास्मि	ह्वातास्वः	ह्वातास्मः
भ०	ह्वास्यति	ह्वास्यतः	ह्वास्यन्ति
	ह्वास्यसि	ह्वास्यथः	ह्वास्यथ
	ह्वास्यामि	ह्वास्यावः	ह्वास्यामः
क्रि०	अह्वास्यत्	अह्वास्यताम्	अह्वास्यन्
	अह्वास्यः	अह्वास्यतम्	अह्वास्यत
	अह्वास्यम्	अह्वास्याव	अह्वास्याम

आत्मनेपद

व०	ह्वयते	ह्वयेते	ह्वयन्ते
	ह्वयसे	ह्वयेथे	ह्वयध्वे
	ह्वये	ह्वयावहे	ह्वयामहे
स०	ह्वयेत	ह्वयेयाताम्	ह्वयेरन्
	ह्वयेथाः	ह्वयेयाथाम्	ह्वयेध्वम्
	ह्वयेय	ह्वयेवहि	ह्वयेमहि
प०	ह्वयताम्	ह्वयेताम्	ह्वयन्ताम्
	ह्वयस्व	ह्वयेथाम	ह्वयध्वम्
	ह्वयै	ह्वयावहै	ह्वयामहै
ह्य०	अह्वयत	अह्वयेताम्	अह्वयन्त
	अह्वयथाः	अह्वयेथाम	अह्वयध्वम्
	अह्वये	अह्वयावहि	अह्वयामहि
अ०	अह्वास्त	अह्वासाताम्	अह्वासत
	अह्वास्थाः	अह्वासाथाम्	अह्वाद्ध्वम्/ध्वम्
	अह्वासि	अह्वास्वहि	अह्वास्महि

तथा

	अह्वत	अह्वेताम्	अह्वन्त
	अह्वथाः	अह्वेथाम्	अह्वध्वम्
	अह्वे	अह्वावहि	अह्वामहि
प०	जुहुवे	जुहुवाते	जुहुविरे
	जुहुविषे	जुहुवाथे	जुहुविध्वे/ढ्वे
	जुहुवे	जुहुविवहे	जुहुविमहे
आ०	ह्वासीष्ट	ह्वासीयास्ताम्	ह्वासीरन्
	ह्वासीष्ठाः	ह्वासीयास्थाम्	ह्वासीध्वम्
	ह्वासीय	ह्वासीवहि	ह्वासीमहि
श्व०	ह्वाता	ह्वातारौ	ह्वातारः
	ह्वातासे	ह्वातासाथे	ह्वाताध्वे
	ह्वाताहे	ह्वातास्वहे	ह्वातास्महे
भ०	ह्वास्यते	ह्वास्येते	ह्वास्यन्ते
	ह्वास्यसे	ह्वास्येथे	ह्वास्यध्वे
	ह्वास्ये	ह्वास्यावहे	ह्वास्यामहे
क्रि०	अह्वास्यत	अह्वास्येताम्	अह्वास्यन्त
	अह्वास्यथाः	अह्वास्येथाम्	अह्वास्यध्वम्
	अह्वास्ये	अह्वास्यावहि	अह्वास्यामहि

॥अथ पान्ताः॥

१९५. डुवपीं (वप्) बीजसंताने।

बीजानां संतानः क्षेत्रे विस्तारणम्।

व०	वपति	वपतः	वपन्ति
	वपसि	वपथः	वपथ
	वपामि	वपावः	वपामः
स०	वपेत्	वपेताम्	वपेयुः
	वपेः	वपेतम्	वपेत
	वपेयम्	वपेव	वपेम
प०	वपतु/वपतात्	वपताम्	वपन्तु
	वप/वपतात्	वपतम्	वपत
	वपानि	वपाव	वपाम
ह्य०	अवपत्	अवपताम्	अवपन्
	अवपः	अवपतम्	अवपत
	अवपतम्	अवपाव	अवपाम
अ०	अवाप्सीत्	अवाप्ताम्	अवाप्सुः
	अवाप्सीः	अवाप्तम्	अवाप्त
	अवाप्सम्	अवाप्स्व	अवाप्स्म
प०	उवाप	ऊपतुः	ऊपुः
	उवपिथ/उवाथ	ऊपथुः	ऊप
	उवाप/उवप	ऊपिव	ऊपिम
आ०	उप्यात्	उप्यास्ताम्	उप्यासुः
	उप्याः	उप्यास्तम्	उप्यास्त
	उप्यासम्	उप्यास्व	उप्यास्म

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	वप्ता	वप्तारौ	वप्तार:
	वप्तासि	वप्तास्थ:	वप्तास्थ
	वप्तास्मि	वप्तास्व:	वप्तास्म:
भ०	वप्स्यति	वप्स्यत:	वप्स्यन्ति
	वप्स्यसि	वप्स्यथ:	वप्स्यथ
	वप्स्यामि	वप्स्याव:	वप्स्याम:
क्रि०	अवप्स्यत्	अवप्स्यताम्	अवप्स्यन्
	अवप्स्य:	अवप्स्यतम्	अवप्स्यत
	अवप्स्यम्	अवप्स्याव	अवप्स्याम

आत्मनेपद

व०	वपते	वपेते	वपन्ते
	वपसे	वपेथे	वपध्वे
	वपे	वपावहे	वपामहे
स०	वपेत	वपेयाताम्	वपेरन्
	वपेथा:	वपेयाथाम्	वपेध्वम्
	वपेय	वपेवहि	वपेमहि
प०	वपताम्	वपेताम्	वपन्ताम्
	वपस्व	वपेथाम	वपध्वम्
	वपै	वपावहै	वपामहै
ह्य०	अवपत	अवपेताम्	अवपन्त
	अवपथा:	अवपथाम	अवपध्वम्
	अवपे	अवपावहि	अवपामहि
अ०	अवप्त	अवप्साताम्	अवप्सत
	अवप्था:	अवप्साथाम्	अवब्ध्वम्/ब्द्ध्वम्
	अवप्सि	अवप्स्वहि	अवप्स्महि
प०	ऊपे	ऊपाते	ऊपिरे
	ऊपिषे	ऊपाथे	ऊपिध्वे
	ऊपे	ऊपिवहे	ऊपिमहे
आ०	वप्सीष्ट	वप्सायास्ताम्	वप्सीरन्
	वप्सीष्ठा:	वप्सीयास्थाम्	वप्सीध्वम्
	वप्सीय	वप्सीवहि	वप्सीमहि
श्व०	वप्ता	वप्तारौ	वप्तार:
	वप्तासे	वप्तासाथे	वप्ताध्वे
	वप्ताहे	वप्तास्वहे	वप्तास्मिहे
भ०	वप्स्यते	वप्स्येते	वप्स्यन्ते
	वप्स्यसे	वप्स्येथे	वप्स्यध्वे
	वप्स्ये	वप्स्यावहे	वप्स्यामहे
क्रि०	अवप्स्यत	अवप्स्येताम्	अवप्स्यन्त
	अवप्स्यथा:	अवप्स्येथाम्	अवप्स्यध्वम्
	अवप्स्ये	अवप्स्यावहि	अवप्स्यामहि

॥ अथ हान्ता:॥

९९६. वहीं (वह्) प्राहणे।

व०	वहति	वहत:	वहन्ति
	वहसि	वहथ:	वहथ
	वहामि	वहाव:	वहाम:
स०	वहेत्	वहेताम्	वहेयु:
	वहे:	वहेतम्	वहेत
	वहेयम्	वहेव	वहेम
ह०	वहतु/वहतात्	वहताम्	वहन्तु
	वह/वहतात्	वहतम्	वहत
	वहानि	वहाव	वहाम
ह्य०	अवहत्	अवहताम्	अवहन्
	अवह:	अवहतम्	अवहत
	अवहम्	अवहाव	अवहाम
अ०	अवाक्षीत्	अवोढाम्	अवाक्षु:
	अवाक्षी:	अवोढम्	अवोढ
	अवाक्षम्	अवाक्ष्व	अवाक्ष्म
ह०	उवाह	ऊहतु:	ऊहु:
	उवहिथ/उवोढ	ऊहथु:	ऊह
	उवाह/उवह	ऊहिव	ऊहिम
आ०	उह्यात्	उह्यास्ताम्	उह्यासु:
	उह्या:	उह्यास्तम्	उह्यास्त
	उह्यासम्	उह्यास्व	उह्यास्म

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	वोढा	वोढारौ	वोढारः
	वोढासि	वोढास्थः	वोढास्थ
	वोढास्मि	वोढास्वः	वोढास्मः
भ०	वक्ष्यति	वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति
	वक्ष्यसि	वक्ष्यथः	वक्ष्यथ
	वक्ष्यामि	वक्ष्यावः	वक्ष्यामः
क्रि०	अवक्ष्यत्	अवक्ष्यताम्	अवक्ष्यन्
	अवक्ष्यः	अवक्ष्यतम्	अवक्ष्यत
	अवक्ष्यम्	अवक्ष्याव	अवक्ष्याम

आत्मनेपद

व०	वहते	वहेते	वहन्ते
	वहसे	वहेथे	वहध्वे
	वहे	वहावहे	वहामहे
स०	वहेत	वहेयाताम्	वहेरन्
	वहेथाः	वहेयाथाम्	वहेध्वम्
	वहेय	वहेवहि	वहेमहि
प०	वहताम्	वहेताम्	वहन्ताम्
	वहस्व	वहेथाम	वहध्वम्
	वहै	वहावहै	वहामहै
ह्य०	अवहत	अवहेताम्	अवहन्त
	अवहथाः	अवहथाम	अवहध्वम्
	अवहे	अवहावहि	अवहामहि
अ०	अवोढ	अवक्षाताम्	अवक्षत
	अवोढाः	अवक्षाथाम्	अवोढ्वम्/अवग्ढ्वम्
	अवक्षि	अवक्ष्वहि	अवक्ष्महि
प०	ऊहे	ऊहाते	ऊहिरे
	ऊहिषे	ऊहाथे	ऊहिध्वे/ढ्वे
	ऊहे	ऊहिवहे	ऊहिमहे
आ०	वक्षीष्ट	वक्षीयास्ताम्	वक्षीरन्
	वक्षीष्ठाः	वक्षीयास्थाम्	वक्षीध्वम्
	वक्षीय	वक्षीवहि	वक्षीमहि
श्व०	वोढा	वोढारौ	वोढारः
	वोढासे	वोढासाथे	वोढाध्वे
	वोढाहे	वोढास्वहे	वोढास्महे
भ०	वक्ष्यते	वक्ष्येते	वक्ष्यन्ते
	वक्ष्यसे	वक्ष्येथे	वक्ष्यध्वे
	वक्ष्ये	वक्ष्यावहे	वक्ष्यामहे
क्रि०	अवक्ष्यत	अवक्ष्येताम्	अवक्ष्यन्त
	अवक्ष्यथाः	अवक्ष्येथाम्	अवक्ष्यध्वम्
	अवक्ष्ये	अवक्ष्यावहि	अवक्ष्यामहि

॥अथ परस्मैपदिनस्त्रयः॥

११७. ट्वोश्वि (श्वि) गतिवृद्ध्योः।

व०	श्वयति	श्वयतः	श्वयन्ति
	श्वयसि	श्वयथः	श्वयथ
	श्वयामि	श्वयावः	श्वयामः
स०	श्वयेत्	श्वयेताम्	श्वयेयुः
	श्वयेः	श्वयेतम्	श्वयेत
	श्वयेयम्	श्वयेव	श्वयेम
प०	श्वयतु/श्वयतात्	श्वयताम्	श्वयन्तु
	श्वय/श्वयतात्	श्वयतम्	श्वयत
	श्वयानि	श्वयाव	श्वयाम
ह्य०	अश्वयत्	अश्वयताम्	अश्वयन्
	अश्वयः	अश्वयतम्	अश्वयत
	अश्वयम्	अश्वयाव	अश्वयाम
अ०	अश्वत्	अश्वताम्	अश्वन्
	अश्वः	अश्वतम्	अश्वत
	अश्वम्	अश्वाव	अश्वाम
		तथा	
	अशिश्वियत्	अशिश्वियताम्	अशिश्वियन्, इत्यादि
	अश्वयीत्	अश्वयिष्टाम्	अश्वयिषुः, इत्यादि
प०	शुशाव	शुशुवतुः	शुशुवुः
	शुशुविथ	शुशुवथुः	शुशुव
	शुशाव/शुशव	शुशुविव	शुशुविम
		तथा	
	शिश्वाय	शिश्वियतुः	शिश्वियुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	शिश्वाय/शिश्वय	शिश्वियिव	शिश्वियिम
आ०	शुयात्	शुयास्ताम्	शुयासुः
	शुयाः	शुयास्तम्	शुयास्त
	शुयासम्	शुयास्व	शुयास्म
श्व०	श्वयिता	श्वयितारौ	श्वयितारः
	श्वयितासि	श्वयितास्थः	श्वयितास्थ
	श्वयितास्मि	श्वयितास्वः	श्वयितास्मः
भ०	श्वयिष्यति	श्वयिष्यतः	श्वयिष्यन्ति
	श्वयिष्यसि	श्वयिष्यथः	श्वयिष्यथ
	श्वयिष्यामि	श्वयिष्यावः	श्वयिष्यामः
क्रि०	अश्वयिष्यत्	अश्वयिष्यताम्	अश्वयिष्यन्
	अश्वयिष्यः	अश्वयिष्यतम्	अश्वयिष्यत
	अश्वयिष्यम्	अश्वयिष्याव	अश्वयिष्याम

९९८. वद (वद्) व्यक्तायां वाचि।

व०	वदति	वदतः	वदन्ति
	वदसि	वदथः	वदथ
	वदामि	वदावः	वदामः
स०	वदेत्	वदेताम्	वदेयुः
	वदेः	वदेतम्	वदेत
	वदेयम्	वदेव	वदेम
प०	वदतु/वदतात्	वदताम्	वदन्तु
	वद/वदतात्	वदतम्	वदत
	वदानि	वदाव	वदाम
ह्य०	अवदत्	अवदताम्	अवदन्
	अवदः	अवदतम्	अवदत
	अवदम्	अवदाव	अवदाम
अ०	अवादीत्	अवादिष्टाम्	अवादिषुः
	अवादीः	अवादिष्टम्	अवादिष्ट
	अवादिषम्	अवादिष्व	अवादिष्म
प०	उवाद	ऊदतुः	ऊदुः
	उवदिथ	ऊदथुः	ऊद
	उवाद/उवद	ऊदिव	ऊदिम
आ०	उद्यात्	उद्यास्ताम्	उद्यासुः
	उद्याः	उद्यास्तम्	उद्यास्त
	उद्यासम्	उद्यास्व	उद्यास्म
श्व०	वदिता	वदितारौ	वदितारः
	वदितासि	वदितास्थः	वदितास्थ
	वदितास्मि	वदितास्वः	वदितास्मः
भ०	वदिष्यति	वदिष्यतः	वदिष्यन्ति
	वदिष्यसि	वदिष्यथः	वदिष्यथ
	वदिष्यामि	वदिष्यावः	वदिष्यामः
क्रि०	अवदिष्यत्	अवदिष्यताम्	अवदिष्यन्
	अवदिष्यः	अवदिष्यतम्	अवदिष्यत
	अवदिष्यम्	अवदिष्याव	अवदिष्याम

९९९. वसं (वस्) निवासे।

व०	वसति	वसतः	वसन्ति
	वससि	वसथः	वसथ
	वसामि	वसावः	वसामः
स०	वसेत्	वसेताम्	वसेयुः
	वसेः	वसेतम्	वसेत
	वसेयम्	वसेव	वसेम
प०	वसतु/वसतात्	वसताम्	वसन्तु
	वस/वसतात्	वसतम्	वसत
	वसानि	वसाव	वसाम
ह्य०	अवसत्	अवसताम्	अवसन्
	अवसः	अवसतम्	अवसत
	अवसम्	अवसाव	अवसाम
अ०	अवात्सीत्	अवात्ताम्	अवात्सुः
	अवात्सीः	अवात्तम्	अवात्त
	अवात्सम्	अवात्स्व	अवात्स्म
प०	उवास	ऊषतुः	ऊषुः
	उवस्थ/उवसिथ	ऊषथुः	ऊष
	उवास उवस	ऊषिव	ऊषिम
आ०	उष्यात्	उष्यास्ताम्	उष्यासुः
	उष्याः	उष्यास्तम्	उष्यास्त
	उष्यासम्	उष्यास्व	उष्यास्म
श्व०	वस्ता	वस्तारौ	वस्तारः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	वस्तासि	वस्तास्थः	वस्तास्थ
	वस्तास्मि	वस्तास्वः	वस्तास्मः
भ०	वत्स्यति	वत्स्यतः	वत्स्यन्ति
	वत्स्यसि	वत्स्यथः	वत्स्यथ
	वत्स्यामि	वत्स्यावः	वत्स्यामः
क्रि०	अवत्स्यत्	अवत्स्यताम्	अवत्स्यन्
	अवत्स्यः	अवत्स्यतम्	अवत्स्यत
	अवत्स्यम्	अवत्स्याव	अवत्स्याम

अथ घटादयो वर्णक्रमणाध्वादिसमाप्तेवेक्ष्यन्ते। तत्र घटेः पूर्वाचार्यप्रसिद्ध्या पूर्वनिर्देशः। घटादित्वफलं तु घटयतीत्यादौ। ह्रस्वादिकम्। क्षञ्ज्यादेः स्वरस्यानुपान्त्यत्वेऽपि पाठसामर्थ्याद्विभाषादीर्घो भवत्येव। अक्षञ्जि अक्षाञ्जि इह

१०००. घटिष् (घट्) चेष्टायाम्। चेष्टेहा।

व०	घटते	घटेते	घटन्ते
	घटसे	घटेथे	घटध्वे
	घटे	घटावहे	घटामहे
स०	घटेत	घटेयाताम्	घटेरन्
	घटेथाः	घटेयाथाम्	घटेध्वम्
	घटेय	घटेवहि	घटेमहि
प०	घटताम्	घटेताम्	घटन्ताम्
	घटस्व	घटेथाम्	घटध्वम्
	घटै	घटावहै	घटामहै
ह्य०	अघटत	अघटेताम्	अघटन्त
	अघटथाः	अघटेथाम्	अघटध्वम्
	अघटे	अघटावहि	अघटामहि
अ०	अघटिष्ट	अघटिषाताम्	अघटिषत
	अघटिष्ठाः	अघटिषाथाम्	अघटिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अघटिषि	अघटिष्वहि	अघटिष्महि
प०	जघटे	जघटाते	जघटिरे
	जघटिषे	जघटाथे	जघटिध्वे
	जघटे	जघटिवहे	जघटिमहे
आ०	घटिषीष्ट	घटिषीयास्ताम्	घटिषीरन्
	घटिषीष्ठाः	घटिषीयास्थाम्	घटिषीध्वम्
	घटिषीय	घटिषीवहि	घटिषीमहि
श्व०	घटिता	घटितारौ	घटितारः
	घटितासे	घटितासाथे	घटिताध्वे
	घटिताहे	घटितास्वहे	घटितास्महे
भ०	घटिष्यते	घटिष्येते	घटिष्यन्ते
	घटिष्यसे	घटिष्येथे	घटिष्यध्वे
	घटिष्ये	घटिष्यावहे	घटिष्यामहे
क्रि०	अघटिष्यत	अघटिष्येताम्	अघटिष्यन्त
	अघटिष्यथाः	अघटिष्येथाम्	अघटिष्यध्वम्
	अघटिष्ये	अघटिष्यावहि	अघटिष्यामहि

अथ जान्ताः।

१००१. क्षजुङ् (क्षञ्ज) गतिदानयोः।[1]

व०	क्षञ्जते	क्षञ्जेते	क्षञ्जन्ते
	क्षञ्जसे	क्षञ्जेथे	क्षञ्जध्वे
	क्षञ्जे	क्षञ्जावहे	क्षञ्जामहे
स०	क्षञ्जेत	क्षञ्जेयाताम्	क्षञ्जेरन्
	क्षञ्जेथाः	क्षञ्जेयाथाम्	क्षञ्जेध्वम्
	क्षञ्जेय	क्षञ्जेवहि	क्षञ्जेमहि
प०	क्षञ्जताम्	क्षञ्जेताम्	क्षञ्जन्ताम्
	क्षञ्जस्व	क्षञ्जेथाम्	क्षञ्जध्वम्
	क्षञ्जै	क्षञ्जावहै	क्षञ्जामहै
ह्य०	अक्षञ्जत	अक्षञ्जेताम्	अक्षञ्जन्त
	अक्षञ्जथाः	अक्षञ्जेथाम्	अक्षञ्जध्वम्
	अक्षञ्जे	अक्षञ्जावहि	अक्षञ्जामहि
अ०	अक्षञ्जिष्ट	अक्षञ्जिषाताम्	अक्षञ्जिषत
	अक्षञ्जिष्ठाः	अक्षञ्जिषाथाम्	अक्षञ्जिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अक्षञ्जिषि	अक्षञ्जिष्वहि	अक्षञ्जिष्महि
प०	चक्षञ्जे	चक्षञ्जाते	चक्षञ्जिरे
	चक्षञ्जिषे	चक्षञ्जाथे	चक्षञ्जिध्वे/ढ्वे
	चक्षञ्जे	चक्षञ्जिवहे	चक्षञ्जिमहे
आ०	क्षञ्जिषीष्ट	क्षञ्जिषीयास्ताम्	क्षञ्जिषीरन्
	क्षञ्जिषीष्ठाः	क्षञ्जिषीयास्थाम्	क्षञ्जिषीध्वम्
	क्षञ्जिषीय	क्षञ्जिषीवहि	क्षञ्जिषीमहि
श्व०	क्षञ्जिता	क्षञ्जितारौ	क्षञ्जितारः

१. क्षजुण् कृच्छ्रजीवने इति पठिष्यमाणत्वेऽपि गतिदानयोः घटादिकार्यार्थमात्मनेपदार्थं णिचूरहितशब्रत्ययार्थञ्चात्र पाठः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	क्षञ्जितासे	क्षञ्जितासाथे	क्षञ्जिताध्वे
	क्षञ्जिताहे	क्षञ्जितास्वहे	क्षञ्जितास्महे
भ०	क्षञ्जिष्यते	क्षञ्जिष्येते	क्षञ्जिष्यन्ते
	क्षञ्जिष्यसे	क्षञ्जिष्येथे	क्षञ्जिष्यध्वे
	क्षञ्जिष्ये	क्षञ्जिष्यावहे	क्षञ्जिष्यामहे
क्रि०	अक्षञ्जिष्यत	अक्षञ्जिष्येताम्	अक्षञ्जिष्यन्त
	अक्षञ्जिष्यथाः	अक्षञ्जिष्येथाम्	अक्षञ्जिष्यध्वम्
	अक्षञ्जिष्ये	अक्षञ्जिष्यावहि	अक्षञ्जिष्यामहि

॥अथ थान्तौ॥

१००२. व्यथिषृ (व्यथ्) भयचलनयोः।

दुःखेऽप्यन्ये।

व०	व्यथते	व्यथेते	व्यथन्ते
	व्यथसे	व्यथेथे	व्यथध्वे
	व्यथे	व्यथावहे	व्यथामहे
स०	व्यथेत	व्यथेयाताम्	व्यथेरन्
	व्यथेथाः	व्यथेयाथाम्	व्यथेध्वम्
	व्यथेय	व्यथेवहि	व्यथेमहि
प०	व्यथताम्	व्यथेताम्	व्यथन्ताम्
	व्यथस्व	व्यथेथाम्	व्यथध्वम्
	व्यथै	व्यथावहै	व्यथामहै
ह्य०	अव्यथत	अव्यथेताम्	अव्यथन्त
	अव्यथथाः	अव्यथेथाम	अव्यथध्वम्
	अव्यथे	अव्यथावहि	अव्यथामहि
अ०	अव्यथिष्ट	अव्यथिषाताम्	अव्यथिषत
	अव्यथिष्ठाः	अव्यथिषाथाम्	अव्यथिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अव्यथिषि	अव्यथिष्वहि	अव्यथिष्महि
प०	विव्यथे	विव्यथाते	विव्यथिरे
	विव्यथिषे	विव्यथाथे	विव्यथिध्वे
	विव्यथे	विव्यथिवहे	विव्यथिमहे
आ०	व्यथिषीष्ट	व्यथिषीयास्ताम्	व्यथिषीरन्
	व्यथिषीष्ठाः	व्यथिषीयास्थाम्	व्यथिषीध्वम्
	व्यथिषीय	व्यथिषीवहि	व्यथिषीमहि
श्व०	व्यथिता	व्यथितारौ	व्यथितारः
	व्यथितासे	व्यथितासाथे	व्यथिताध्वे
	व्यथिताहे	व्यथितास्वहे	व्यथितास्महे
भ०	व्यथिष्यते	व्यथिष्येते	व्यथिष्यन्ते
	व्यथिष्यसे	व्यथिष्येथे	व्यथिष्यध्वे
	व्यथिष्ये	व्यथिष्यावहे	व्यथिष्यामहे
क्रि०	अव्यथिष्यत	अव्यथिष्येताम्	अव्यथिष्यन्त
	अव्यथिष्यथाः	अव्यथिष्येथाम्	अव्यथिष्यध्वम्
	अव्यथिष्ये	अव्यथिष्यावहि	अव्यथिष्यामहि

१००३. प्रथिषृ (प्रथ्) प्रख्याने।

प्रख्यानं प्रसिद्धिः।

व०	प्रथते	प्रथेते	प्रथन्ते
स०	प्रथेत	प्रथेयाताम्	प्रथेरन्
प०	प्रथताम्	प्रथेताम्	प्रथन्ताम्
ह्य०	अप्रथत	अप्रथेताम्	अप्रथन्त
अ०	अप्रथिष्ट	अप्रथिषाताम्	अप्रथिषत
प०	पप्रथे	पप्रथाते	पप्रथिरे
आ०	प्रथिषीष्ट	प्रथिषीयास्ताम्	प्रथिषीरन्
श्व०	प्रथिता	प्रथितारौ	प्रथितारः
भ०	प्रथिष्यते	प्रथिष्येते	प्रथिष्यन्ते
क्रि०	अप्रथिष्यत	अप्रथिष्येताम्	अप्रथिष्यन्त[1]

॥अथ दान्ताः पञ्च॥

१००४. म्रदिषृ (म्रद्) मर्दने।

व०	म्रदते	म्रदेते	म्रदन्ते
	म्रदसे	म्रदेथे	म्रदध्वे
	म्रदे	म्रदावहे	म्रदामहे
स०	म्रदेत	म्रदेयाताम्	म्रदेरन्
	म्रदेथाः	म्रदेयाथाम्	म्रदेध्वम्
	म्रदेय	म्रदेवहि	म्रदेमहि
प०	म्रदताम्	म्रदेताम्	म्रदन्ताम्
	म्रदस्व	म्रदेथाम्	म्रदध्वम्
	म्रदै	म्रदावहै	म्रदामहै
ह्य०	अम्रदत	अम्रदेताम्	अम्रदन्त

१. प्रथण् प्रख्याने इति पठिष्यमाणत्त्वेऽपि घटादिकार्यार्थमात्मने-पदार्थणिचूरहितशब्प्रत्ययार्थं चात्र पाठः॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अम्प्रदथाः	अम्प्रदेथाम्	अम्प्रदध्वम्
	अम्प्रदे	अम्प्रदावहि	अम्प्रदामहि
अ०	अम्प्रदिष्ट	अम्प्रदिषाताम्	अम्प्रदिषत
	अम्प्रदिष्ठाः	अम्प्रदिषाथाम्	अम्प्रदिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अम्प्रदिषि	अम्प्रदिष्वहि	अम्प्रदिष्महि
प०	मम्प्रदे	मम्प्रदाते	मम्प्रदिरे
	मम्प्रदिषे	मम्प्रदाथे	मम्प्रदिध्वे
	मम्प्रदे	मम्प्रदिवहे	मम्प्रदिमहे
आ०	म्प्रदिषीष्ट	म्प्रदिषीयास्ताम्	म्प्रदिषीरन्
	म्प्रदिषीष्ठाः	म्प्रदिषीयास्थाम्	म्प्रदिषीध्वम्
	म्प्रदिषीय	म्प्रदिषीवहि	म्प्रदिषीमहि
श्व०	म्प्रदिता	म्प्रदितारौ	म्प्रदितारः
	म्प्रदितासे	म्प्रदितासाथे	म्प्रदिताध्वे
	म्प्रदिताहे	म्प्रदितास्वहे	म्प्रदितास्मिहे
भ०	म्प्रदिष्यते	म्प्रदिष्येते	म्प्रदिष्यन्ते
	म्प्रदिष्यसे	म्प्रदिष्येथे	म्प्रदिष्यध्वे
	म्प्रदिष्ये	म्प्रदिष्यावहे	म्प्रदिष्यामहे
क्रि०	अम्प्रदिष्यत	अम्प्रदिष्येताम्	अम्प्रदिष्यन्त
	अम्प्रदिष्यथाः	अम्प्रदिष्येथाम्	अम्प्रदिष्यध्वम्
	अम्प्रदिष्ये	अम्प्रदिष्यावहि	अम्प्रदिष्यामहि

१००५. स्खदिषू (स्खद्) खदने।

खदनं विदारणम्।

व०	स्खदते	स्खदेते	स्खदन्ते
स०	स्खदेत	स्खदेयाताम्	स्खदेरन्
प०	स्खदताम्	स्खदेताम्	स्खदन्ताम
ह्य०	अस्खदत	अस्खदेताम्	अस्खदन्त
अ०	अस्खदिष्ट	अस्खदिषाताम्	अस्खदिषत
प०	चस्खदे	चस्खदाते	चस्खदिरे
आ०	स्खदिषीष्ट	स्खदिषीयास्ताम्	स्खदिषीरन्
श्व०	स्खदिता	स्खदितारौ	स्खदितारः
भ०	स्खदिष्यते	स्खदिष्येते	स्खदिष्यन्ते
क्रि०	अस्खदिष्यत	अस्खदिष्येताम्	अस्खदिष्यन्त

१००६. कदुङ् (कन्द्) वैक्लव्ये।[1]

व०	कन्दते	कन्देते	कन्दन्ते
स०	कन्देत	कन्देयाताम्	कन्देरन्
प०	कन्दताम्	कन्देताम्	कन्दन्ताम्
ह्य०	अकन्दत	अकन्देताम्	अकन्दन्त
अ०	अकन्दिष्ट	अकन्दिषाताम्	अकन्दिषत
प०	चकन्दे	चकन्दाते	चकन्दिरे
आ०	कन्दिषीष्ट	कन्दिषीयास्ताम्	कन्दिषीरन्
श्व०	कन्दिता	कन्दितारौ	कन्दितारः
भ०	कन्दिष्यते	कन्दिष्येते	कन्दिष्यन्ते
क्रि०	अकन्दिष्यत	अकन्दिष्येताम्	अकन्दिष्यन्त[2]

१००७. क्रदुङ् (क्रन्द्) वैक्लव्ये।[3]

व०	क्रन्दते	क्रन्देते	क्रन्दन्ते
स०	क्रन्देत	क्रन्देयाताम्	क्रन्देरन्
प०	क्रन्दताम्	क्रन्देताम्	क्रन्दन्ताम्
ह्य०	अक्रन्दत	अक्रन्देताम्	अक्रन्दन्त
अ०	अक्रन्दिष्ट	अक्रन्दिषाताम्	अक्रन्दिषत
प०	चक्रन्दे	चक्रन्दाते	चक्रन्दिरे
आ०	क्रन्दिषीष्ट	क्रन्दिषीयास्ताम्	क्रन्दिषीरन्
श्व०	क्रन्दिता	क्रन्दितारौ	क्रन्दितारः
भ०	क्रन्दिष्यते	क्रन्दिष्येते	क्रन्दिष्यन्ते
क्रि०	अक्रन्दिष्यत	अक्रन्दिष्येताम्	अक्रन्दिष्यन्त[4]

१००८. क्लदूङ् (क्लन्द्) वैक्लव्ये।

व०	क्लन्दते	क्लन्देते	क्लन्दन्ते
स०	क्लन्देत	क्लन्देयाताम्	क्लन्देरन्
प०	क्लन्दताम्	क्लन्देताम्	क्लन्दन्ताम्
ह्य०	अक्लन्दत	अक्लन्देताम्	अक्लन्दन्त
अ०	अक्लन्दिष्ट	अक्लन्दिषाताम्	अक्लन्दिषत

१. विक्लवः कातरस्तस्य भावः कर्म वा वैक्लव्यम्।

२. कदु रोदानाह्वानयोरिति पठितत्वेऽपि वैक्लव्ये घटादिकार्यार्थमात्मनेपदार्थश्चात्राधीतः।

३. विक्लवः कातरस्तस्य भावः कर्म वा वैक्लव्यम्।

४. क्रदु रोदनाह्वानयोरिति पठित्वेऽपि वैक्लव्ये घटादिकार्यार्थमात्मनेपदार्थश्चेहाधीतः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	चक्लन्दे	चक्लन्दाते	चक्लन्दिरे
आ०	क्लन्दिषीष्ट	क्लन्दिषीयास्ताम्	क्लन्दिषीरन्
श्व०	क्लन्दिता	क्लन्दितारौ	क्लन्दितारः
भ०	क्लन्दिष्यते	क्लन्दिष्येते	क्लन्दिष्यन्ते
क्रि०	अक्लन्दिष्यत	अक्लन्दिष्येताम्	अक्लन्दिष्यन्त

॥ अथ पान्ताः॥

१००९. ऋपि (ऋप्) कृपायाम्॥

व०	ऋपते	ऋपेते	ऋपन्ते
	ऋपसे	ऋपेथे	ऋपध्वे
	ऋपे	ऋपावहे	ऋपामहे
स०	ऋपेत	ऋपेयाताम्	ऋपेरन्
	ऋपेथाः	ऋपेयाथाम्	ऋपेध्वम्
	ऋपेय	ऋपेवहि	ऋपेमहि
प०	ऋपताम्	ऋपेताम्	ऋपन्ताम्
	ऋपस्व	ऋपेथाम्	ऋपध्वम्
	ऋपै	ऋपावहै	ऋपामहै
ह्य०	अऋपत	अऋपेताम्	अऋपन्त
	अऋपथाः	अऋपथाम्	अऋपध्वम्
	अऋपे	अऋपावहि	अऋपामहि
अ०	अऋपिष्ट	अऋपिषाताम्	अऋपिषत
	अऋपिष्ठाः	अऋपिषाथाम्	अऋपिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अऋपिषि	अऋपिष्वहि	अऋपिष्महि
प०	वऋपे	वऋपाते	वऋपिरे
	वऋपिषे	वऋपाथे	वऋपिध्वे
	वऋपे	वऋपिवहे	वऋपिमहे
आ०	ऋपिषीष्ट	ऋपिषीयास्ताम्	ऋपिषीरन्
	ऋपिषीष्ठाः	ऋपिषीयास्थाम्	ऋपिषीध्वम्
	ऋपिषीय	ऋपिषीवहि	ऋपिषीमहि
श्व०	ऋपिता	ऋपितारौ	ऋपितारः
	ऋपितासे	ऋपितासाथे	ऋपिताध्वे
	ऋपिताहे	ऋपितास्वहे	ऋपितास्मिहे
भ०	ऋपिष्यते	ऋपिष्येते	ऋपिष्यन्ते
	ऋपिष्यसे	ऋपिष्येथे	ऋपिष्यध्वे
	ऋपिष्ये	ऋपिष्यावहे	ऋपिष्यामहे
क्रि०	अऋपिष्यत	अऋपिष्येताम्	अऋपिष्यन्त
	अऋपिष्यथाः	अऋपिष्येथाम्	अऋपिष्यध्वम्
	अऋपिष्ये	अऋपिष्यावहि	अऋपिष्यामहि

॥अथ रान्ताः॥

१०१०. ञित्वरिप् (त्वर्) संभ्रमे।[१]

व०	त्वरते	त्वरेते	त्वरन्ते
	त्वरसे	त्वरेथे	त्वरध्वे
	त्वरे	त्वरावहे	त्वरामहे
स०	त्वरेत	त्वरेयाताम्	त्वरेरन्
	त्वरेथाः	त्वरेयाथाम्	त्वरेध्वम्
	त्वरेय	त्वरेवहि	त्वरेमहि
प०	त्वरताम्	त्वरेताम्	त्वरन्ताम्
	त्वरस्व	त्वरेयाथाम्	त्वरेध्वम्
	त्वरै	त्वरावहै	त्वरामहै
ह्य०	अत्वरत	अत्वरेताम्	अत्वरन्त
	अत्वरथाः	अत्वरेथाम्	अत्वरध्वम्
	अत्वरे	अत्वरावहि	अत्वरामहि
अ०	अत्वरिष्ट	अत्वरिषाताम्	अत्वरिषत
	अत्वरिष्ठाः	अत्वरिषाथाम्	अत्वरिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अत्वरिषि	अत्वरिष्वहि	अत्वरिष्महि
प०	तत्वरे	तत्वराते	तत्वरिरे
	तत्वरिषे	तत्वराथे	तत्वरिध्वे
	तत्वरे	तत्वरिवहे	तत्वरिमहे
आ०	त्वरिषीष्ट	त्वरिषीयास्ताम्	त्वरिषीरन्
	त्वरिषीष्ठाः	त्वरिषीयास्थाम्	त्वरिषीध्वम्
	त्वरिषीय	त्वरिषीवहि	त्वरिषीमहि
श्व०	त्वरिता	त्वरितारौ	त्वरितारः
	त्वरितासे	त्वरितासाथे	त्वरिताध्वे
	त्वरिताहे	त्वरितास्वहे	त्वरितास्मिहे

१. संभ्रमोऽत्राशुकारिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	त्वरिष्यते	त्वरिष्येते	त्वरिष्यन्ते
	त्वरिष्यसे	त्वरिष्येथे	त्वरिष्यध्वे
	त्वरिष्ये	त्वरिष्यावहे	त्वरिष्यामहे
क्रि०	अत्वरिष्यत	अत्वरिष्येताम्	अत्वरिष्यन्त
	अत्वरिष्यथाः	अत्वरिष्येथाम्	अत्वरिष्यध्वम्
	अत्वरिष्ये	अत्वरिष्यावहि	अत्वरिष्यामहि

॥ अथ सान्तः॥

१०११. प्रसिषू (प्रस्) विस्तारे।

व०	प्रसते	प्रसेते	प्रसन्ते
	प्रससे	प्रसेथे	प्रसध्वे
	प्रसे	प्रसावहे	प्रसामहे
स०	प्रसेत	प्रसेयाताम्	प्रसेरन्
	प्रसेथाः	प्रसेयाथाम्	प्रसेध्वम्
	प्रसेय	प्रसेवहि	प्रसेमहि
प०	प्रसताम्	प्रसेताम्	प्रसन्ताम्
	प्रसस्व	प्रसेथाम्	प्रसध्वम्
	प्रसै	प्रसावहै	प्रसामहै
ह्य०	अप्रसत	अप्रसेताम्	अप्रसन्त
	अप्रसथाः	अप्रसेथाम्	अप्रसध्वम्
	अप्रसे	अप्रसावहि	अप्रसामहि
अ०	अप्रसिष्ट	अप्रसिषाताम्	अप्रसिषत
	अप्रसिष्ठाः	अप्रसिषाथाम्	अप्रसिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अप्रसिषि	अप्रसिष्वहि	अप्रसिष्महि
प०	पप्रसे	पप्रसाते	पप्रसिरे
	पप्रसिषे	पप्रसाथे	पप्रसिध्वे
	पप्रसे	पप्रसिवहे	पप्रसिमहे
आ०	प्रसिषीष्ट	प्रसिषीयास्ताम्	प्रसिषीरन्
	प्रसिषीष्ठाः	प्रसिषीयास्थाम्	प्रसिषीध्वम्
	प्रसिषीय	प्रसिषीवहि	प्रसिषीमहि
श्व०	प्रसिता	प्रसितारौ	प्रसितारः
	प्रसितासे	प्रसितासाथे	प्रसिताध्वे
	प्रसिताहे	प्रसितास्वहे	प्रसितास्मिहे
भ०	प्रसिष्यते	प्रसिष्येते	प्रसिष्यन्ते
	प्रसिष्यसे	प्रसिष्येथे	प्रसिष्यध्वे
	प्रसिष्ये	प्रसिष्यावहे	प्रसिष्यामहे
क्रि०	अप्रसिष्यत	अप्रसिष्येताम्	अप्रसिष्यन्त
	अप्रसिष्यथाः	अप्रसिष्येथाम्	अप्रसिष्यध्वम्
	अप्रसिष्ये	अप्रसिष्यावहि	अप्रसिष्यामहि

॥अथ क्षान्तः॥

१०१२. दक्षि (दक्ष्) हिंसागत्योः।[1]

॥अथ परस्मैपदिनः॥

१०१३. श्रां (श्रै श्रा) पाके।[2]

॥अथ ऋदन्ताः॥

१०१४. स्मृ (स्मृ) आध्याने।[3]

॥अथ ऋदन्तौ॥

१०१५ दृ भये।

व०	दरति	दरतः	दरन्ति
	दरसि	दरथः	दरथ
	दरामि	दरावः	दरामः
स०	दरेत्	दरेताम्	दरेयुः
	दरेः	दरेतम्	दरेत
	दरेयम्	दरेव	दरेम
प०	दरतु/दरतात्	दरताम्	दरन्तु
	दर/दरतात्	दरतम्	दरत
	दराणि	दराव	दराम
ह्य०	अदरत्	अदरताम्	अदरन्
	अदरः	अदरतम्	अदरत

---

१. दक्षि शैघ्र्य च इत्यस्यैवार्थभेदाद् घटादिकार्यार्थं पुनरिह पाठः। एतद्रूपाणि च दक्षि शैघ्र्ये च ८७५ इति वज्ज्ञेयानि।

२. श्रै पाके इति पठितस्य श्रांक् पाके इति पठिष्यमाणस्य चेह घटादिकार्यार्थं पाठः। ततोऽस्य रूपाणि एकदा श्रैं पाके ४६ इति वत्, एकदा च श्रांक् पाके १०६५ इति वज्ज्ञेयानि।

३. आध्यानमुत्कण्ठा। अन्यत्रोक्तस्यार्थविशेषे घटादिकार्यार्थमिह पाठः। एतद्रूपाणि चव स्मृं चिन्तायाम् १८ इति वज्ज्ञेयानि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अदरम्	अदराव	अदराम
अ०	अदारीत्	अदारिष्टाम्	अदारिषु:
	अदारी:	अदारिष्टम्	अदारिष्ट
	अदारिषम्	अदारिष्व	अदारिष्म
प०	ददार	ददरतु:/दद्रतु:	ददरु:/दद्रु:
	ददरिथ	ददरथु:/दद्रथु:	ददर/दद्र
	ददार/ददर	ददरिव/दद्रिव	ददरिम/दद्रिम
आ०	दीर्यात्	दीर्यास्ताम्	दीर्यासु:
	दीर्या:	दीर्यास्तम्	दीर्यास्त
	दीर्यासम्	दीर्यास्व	दीर्यास्म
श्व०	दरीता	दरीतारौ	दरीतार:
	दरीतासि	दरीतास्थ:	दरीतास्थ
	दरीतास्मि	दरीतास्व:	दरीतास्म:
		तथा	
	दरिता	दरितारौ	दरितार:
	दरितासि	दरितास्थ:	दरितास्थ
	दरितास्मि	दरितास्व:	दरितास्म:
भ०	दरीष्यति	दरीष्यत:	दरीष्यन्ति
	दरीष्यसि	दरीष्यथ:	दरीष्यथ
	दरीष्यामि	दरीष्याव:	दरीष्याम:
		तथा	
	दरिष्यति	दरिष्यत:	दरिष्यन्ति
	दरिष्यसि	दरिष्यथ:	दरिष्यथ
	दरिष्यामि	दरिष्याव:	दरिष्याम:
क्रि०	अदरीष्यत्	अदरीष्यताम्	अदरीष्यन्
	अदरीष्य:	अदरीष्यतम्	अदरीष्यत
	अदरीष्यम्	अदरीष्याव	अदरीष्याम
		तथा	
	अदरिष्यत्	अदरिष्यताम्	अदरिष्यन्
	अदरिष्य:	अदरिष्यतम्	अदरिष्यत
	अदरिष्यम्	अदरिष्याव	अदरिष्याम

दृश् विदारणे इति पठिष्यमाणत्वेऽपि भये घटादिकार्यार्थं शक्त्यार्थश्च पाठः॥

१०१६ नृ नये। त्रयादेर्घटादिकार्यार्थं विरलोऽस्य पाठः। एतद्रूपाणि च नृश् नये १५३७ इति वदवसेयानि॥

१०१७. ष्टक (स्तक) प्रतीघाते।

व०	स्तकति	स्तकत:	स्तकन्ति
	स्तकसि	स्तकथ:	स्तकथ
	स्तकामि	स्तकाव:	स्तकाम:
स०	स्तकेत्	स्तकेताम्	स्तकेयु:
	स्तके:	स्तकेतम्	स्तकेत
	स्तकेयम्	स्तकेव	स्तकेम
प०	स्तकतु/स्तकतात्	स्तकताम्	स्तकन्तु
	स्तक/स्तकतात्	स्तकतम्	स्तकत
	स्तकानि	स्तकाव	स्तकाम
ह्य०	अस्तकत्	अस्तकताम्	अस्तकन्
	अस्तक:	अस्तकतम्	अस्तकत
	अस्तकम्	अस्तकाव	अस्तकाम
अ०	अस्तकिष्ट	अस्तकिषाताम्	अस्तकिषत
	अस्तकिष्ठा:	अस्तकिषाथाम	अस्तकिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अस्तकिषि	अस्तकिष्वहि	अस्तकिष्महि
प०	तस्ताक	तस्तकतु:	तस्तकु:
	तस्तकिथ	तस्तकथु:	तस्तक
	तस्ताक	तस्तकिव	तस्तकिम
आ०	स्तक्यात्	स्तक्यास्ताम्	स्तक्यासु:
	स्तक्या:	स्तक्यास्तम्	स्तक्यास्त
	स्तक्यासम्	स्तक्यास्व	स्तक्यास्म
श्व०	स्तकिता	स्तकितारौ	स्तकितार:
	स्तकितासि	स्तकितास्थ:	स्तकितास्थ
	स्तकितास्मि	स्तकितास्व:	स्तकितास्म:
भ०	स्तकिष्यति	स्तकिष्यत:	स्तकिष्यन्ति
	स्तकिष्यसि	स्तकिष्यथ:	स्तकिष्यथ
	स्तकिष्यामि	स्तकिष्याव:	स्तकिष्याम:
क्रि०	अस्तकिष्यत्	अस्तकिष्यताम्	अस्तकिष्यन्
	अस्तकिष्य:	अस्तकिष्यतम्	अस्तकिष्यत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अस्तकिष्यम्	अस्तकिष्याव	अस्तकिष्याम

१०१८. स्तक (स्तक्) प्रतीघाते। एतद्रूपाणि च ष्टक प्रतीघाते। १०१७ इतिवज्ज्ञेयानि। उभयपाठस्तु तिष्टकयिषति तिस्तकयिषतीति षत्वविकल्पार्थः।

१०१९. चक (चक्) तृप्तौ च। चकारात्प्रतीघाते॥[१]

व०	चकति	चकतः	चकन्ति
स०	चकेत्	चकेताम्	चकेयुः
प०	चकतु/चकतात्	चकताम्	चकन्तु
ह्य०	अचकत्	अचकताम्	अचकन्
अ०	अचाकीत	अचाकिष्टाम्	अचकिषुः
अ०	अचकीत्	अचकिष्टाम्	अचकिषुः
प०	चचाक	चेकतुः	चेकुः
आ०	चक्यात्	चक्यास्ताम्	चक्यासुः
श्व०	चकिता	चकितारौ	चकितारः
भ०	चकिष्यति	चकिष्यतः	चकिष्यन्ति
क्रि०	अचकिष्यत्	अचकिष्यताम्	अचकिष्यन्

१०२० अक (अक्) कुटिलायां गतौ।

व०	अकति	अकतः	अकन्ति
स०	अकेत्	अकेताम्	अकेयुः
प०	अकतु/अकतात्	अकताम्	अकन्तु
ह्य०	आकत्	आकताम्	आकन्
अ०	आकीत्	आकिष्टाम्	आकिषुः
प०	आक	आकतुः	आकुः
आ०	अक्यात्	अक्यास्ताम्	अक्यासुः
श्व०	अकिता	अकितारौ	अकितारः
भ०	अकिष्यति	अकिष्यतः	अकिष्यन्ति
क्रि०	आकिष्यत्	आकिष्यताम्	आकिष्यन्

॥अथ खान्ताः॥

१०२१. कखे (कख) हसने॥

व०	कखति	कखतः	कखन्ति
	कखसि	कखथः	कखथ
	कखामि	कखावः	कखामः
स०	कखेत्	कखेताम्	कखेयुः
	कखेः	कखेतम्	कखेत
	कखेयम्	कखेव	कखेम
प०	कखतु/कखतात्	कखताम्	कखन्तु
	कख/कखतात्	कखतम्	कखत
	कखानि	कखाव	कखाम
ह्य०	अकखत्	अकखताम्	अकखन्
	अकखः	अकखतम्	अकखत
	अकखम्	अकखाव	अकखाम
अ०	अकखीत्	अकखिष्टाम्	अकखिषुः
	अकखीः	अकखिष्टम्	अकखिष्ट
	अकखिषम्	अकखिष्व	अकखिष्म
प०	चकाख	चकखतुः	चकखुः
	चकखिथ	चकखथुः	चकख
	चकाख/चकख	चकखिव	चकखिम
आ०	कख्यात्	कख्यास्ताम्	कख्यासुः
	कख्याः	कख्यास्तम्	कख्यास्त
	कख्यासम्	कख्यास्व	कख्यास्म
श्व०	कखिता	कखितारौ	कखितारः
	कखितासि	कखितास्थः	कखितास्थ
	कखितास्मि	कखितास्वः	कखितास्मः
भ०	कखिष्यति	कखिष्यतः	कखिष्यन्ति
	कखिष्यसि	कखिष्यथः	कखिष्यथ
	कखिष्यामि	कखिष्यावः	कखिष्यामः
क्रि०	अकखिष्यत्	अकखिष्यताम्	अकखिष्यन्
	अकखिष्यः	अकखिष्यतम्	अकखिष्यत
	अकखिष्यम्	अकखिष्याव	अकखिष्याम

॥ अथ गान्ता नव सेटश्च॥

१०२२. अग (अग) अकवत्।[२]

व०	अगति	अगतः	अगन्ति
	अगसि	अगथः	अगथ

१. चकि तृप्तिप्रतीघातयोरिति पठितत्वेऽपि घटादिकार्यार्थं परस्मैपदार्थश्चेह पाठः।

२. अक गुटिलायां गतौ पठितोऽयमपि तदर्थो लाघवार्थं तथा निर्दिश्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अगामि	अगाव:	अगाम:
स०	अगेत्	अगेताम्	अगेयु:
	अगे:	अगेतम्	अगेत
	अगेयम्	अगेव	अगेम
प०	अगतु/अगतात्	अगताम्	अगन्तु
	अग/अगतात्	अगतम्	अगत
	अगानि	अगाव	अगाम
ह्य०	आगत्	आगताम्	आगन्
	आग:	आगतम्	आगत
	आगम्	आगाव	आगाम
अ०	आगीत्	आगिष्टाम्	आगिषु:
	आगी:	आगिष्टम्	आगिष्ट
	आगिषम्	आगिष्व	आगिष्म
प०	आग	आगतु:	आगु:
	आगिथ	आगथु:	आग
	आग	आगिव	आगिम
आ०	अग्यात्	अग्यास्ताम्	अग्यासु:
	अग्या:	अग्यास्तम्	अग्यास्त
	अग्यासम्	अग्यास्व	अग्यास्म
श्व०	अगिता	अगितारौ	अगितार:
	अगितासि	अगितास्थ:	अगितास्थ
	अगितास्मि	अगितास्व:	अगितास्म:
भ०	अगिष्यति	अगिष्यत:	अगिष्यन्ति
	अगिष्यसि	अगिष्यथ:	अगिष्यथ
	अगिष्यामि	अगिष्याव:	अगिष्याम:
क्रि०	आगिष्यत्	आगिष्यताम्	आगिष्यन्
	आगिष्य:	आगिष्यतम्	आगिष्यत
	आगिष्यम्	आगिष्याव	आगिष्याम

१०२३. रगे (रग) शङ्कायाम्।

व०	रगति	रगत:	रगन्ति
स०	रगेत्	रगेताम्	रगेयु:
प०	रगतु/रगतात्	रगताम्	रगन्तु
ह्य०	अरगत्	अरगताम्	अरगन्
अ०	अरगीत्	अरगिष्टाम्	अरगिषु:
प०	रराग	रेगतु:	रेगु:
आ०	रग्यात्	रग्याअरम्	रग्यासु:
श्व०	रगिता	रगितारौ	रगितार:
भ०	रगिष्यति	रगिष्यत:	रगिष्यन्ति
क्रि०	अरगिष्यत्	अरगिष्यताम्	अरगिष्यन्[1]

१०२४. लगे (लग) सङ्गे।

व०	लगति	लगत:	लगन्ति
स०	लगेत्	लगेताम्	लगेयु:
प०	लगतु/लगतात्	लगताम्	लगन्तु
ह्य०	अलगत्	अलगताम्	अलगन्
अ०	अलगीत्	अलगिष्टाम्	अलगिषु:
प०	ललाग	लेगतु:	लेगु:
आ०	लग्यात्	लग्यास्ताम्	लग्यासु:
श्व०	लगिता	लगितारौ	लगितार:
भ०	लगिष्यति	लगिष्यत:	लगिष्यन्ति
क्रि०	अलगिष्यत्	अलगिष्यताम्	अलगिष्यन्

लगण् आस्वादने इति पठिष्यमाणत्वेऽपि अर्थविशेषे घटादिकार्यार्थं णिच् रहितशब्रत्ययार्थं चात्र पाठ:।

१०२५. ह्लगे (ह्लग) संवरणे।

संवरणमाच्छादनम्।

व०	ह्लगति	ह्लगत:	ह्लगन्ति
स०	ह्लगेत्	ह्लगेताम्	ह्लगेयु:
प०	ह्लगतु/ह्लगतात्	ह्लगताम्	ह्लगन्तु
ह्य०	अह्लगत्	अह्लगताम्	अह्लगन्
अ०	अह्लगीत्	अह्लगिष्टाम्	अह्लगिषु:
प०	जह्लाग	जह्लगतु:	जह्लगु:
आ०	ह्लग्यात्	ह्लग्यास्ताम्	ह्लग्यासु:
श्व०	ह्लगिता	ह्लगितारौ	ह्लगितार:
भ०	ह्लगिष्यति	ह्लगिष्यत:	ह्लगिष्यन्ति
क्रि०	अह्लगिष्यत्	अह्लगिष्यताम्	अह्लगिष्यन्

१. रगण् आस्वादने इति पठिष्यमाणत्वेऽपि अर्थविशेषे घटादिकार्यार्थं णिच्रहितशब्रत्ययार्थं चेह पाठ:।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०२६. ह्लगे (ह्लग) संवरणे।

संवरणमाच्छादनम्।

व०	ह्लगति	ह्लगत:	ह्लगन्ति
स०	ह्लगेत्	ह्लगेताम्	ह्लगेयु:
प०	ह्लगतु/ह्लगतात्	ह्लगताम्	ह्लगन्तु
ह्य०	अह्लगत्	अह्लगताम्	अह्लगन्
अ०	अह्लगीत्	अह्लगिष्टाम्	अह्लगिषु:
प०	जह्लाग	जह्लगतु:	जह्लगु:
आ०	ह्लग्यात्	ह्लग्यास्ताम्	ह्लग्यासु:
श्व०	ह्लगिता	ह्लगितारौ	ह्लगितार:
भ०	ह्लगिष्यति	ह्लगिष्यत:	ह्लगिष्यन्ति
क्रि०	अह्लगिष्यत्	अह्लगिष्यताम्	अह्लगिष्यन्

१०२७. षगे (सग) संवरणे।

संवरणमाच्छादनम्।

व०	सगति	सगत:	सगन्ति
स०	सगेत्	सगेताम्	सगेयु:
प०	सगतु/सगतात्	सगताम्	सगन्तु
ह्य०	असगत्	असगताम्	असगन्
अ०	असगीत्	असगिष्टाम्	असगिषु:
प०	ससाग	सेगतु:	सेगु:
आ०	सग्यात्	सग्यास्ताम्	सग्यासु:
श्व०	सगिता	सगितारौ	सगितार:
भ०	सगिष्यति	सगिष्यत:	सगिष्यन्ति
क्रि०	असगिष्यत्	असगिष्यताम्	असगिष्यन्

१०२८. ष्ठगे (स्थग) संवरणे।

संवरणमाच्छादनम्।

व०	स्थगति	स्थगत:	स्थगन्ति
स०	स्थगेत्	स्थगेताम्	स्थगेयु:
प०	स्थगतु/स्थगतात्	स्थगताम्	स्थगन्तु
ह्य०	अस्थगत्	अस्थगताम्	अस्थगन्
अ०	अस्थगीत्	अस्थगिष्टाम्	अस्थगिषु:
प०	तस्थाग	तस्थगतु:	तस्थगु:
आ०	स्थग्यात्	स्थग्यास्ताम्	स्थग्यासु:
श्व०	स्थगिता	स्थगितारौ	स्थगितार:
भ०	स्थगिष्यति	स्थगिष्यत:	स्थगिष्यन्ति
क्रि०	अस्थगिष्यत्	अस्थगिष्यताम्	अस्थगिष्यन्

१०३०. स्थगे (स्थग्) संवरणे।

संवरणमाच्छादनम्।

एतद्रूपाणि तु ष्ठगे संवरणे १०२९ इतिवदवसेयानि। उभयपाठस्तु तिष्ठगयिषति तिस्थगयिषतीति षत्वविकल्पार्थ:।

।। अथ टान्तास्त्रय: सेटश्च।।

१०३१. वट (वट्) परिभाषणे।

वट वेष्टने इति पठितत्वेऽपि वटण् ग्रन्थे इति पठिष्यमाणत्वेऽपि अर्थविशेषे घटादिकार्यार्थमस्य पाठ:। एतद्रूपाणि च वट वेष्टने। १७६ इतिवज्ज्ञेयानि।

१०३२. भट (भट्) परिभाषणे।

भट भृतौ इति पठितत्वेऽपि घटादिकार्यार्थमिह पाठ:।

एतद्रूपाणि च भट भृतौ १८४ इतिवदवसेयानि।

१०३३. णट (नट) नृत्तौ।

नट नृत्तौ इति पठितत्वेऽपि नटण् अवस्यन्दने इति पठिष्यमाणत्वेऽपि अर्थविशेषे घटादिकार्यार्थमिह पाठ:। एतद्रूपाणि च नट नृत्तौ १८७ इतिवज्ज्ञेयानि।

।।अथ डान्तास्त्रय: सेटश्च।।

१०३४. गड (गड्) सेचने।

व०	गडति	गडत:	गडन्ति
	गडसि	गडथ:	गडथ
	गडामि	गडाव:	गडाम:
स०	गडेत्	गडेताम्	गडेयु:
	गडे:	गडेतम्	गडेत
	गडेयम्	गडेव	गडेम
प०	गडतु/गडतात्	गडताम्	गडन्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	गड/गडतात्	गडतम्	गडत
	गडानि	गडाव	गडाम
ह्य०	अगडत्	अगडताम्	अगडन्
	अगडः	अगडतम्	अगडत
	अगडम्	अगडाव	अगडाम
अ०	अगाडीत्	अगाडिष्टाम्	अगाडिषुः
	अगाडीः	अगाडिष्टम्	अगाडिष्ट
		तथा	
	अगाडिषम्	अगाडिष्व	अगाडिष्म
अ०	अगडीत्	अगडिष्टाम्	अगडिषुः, इत्यादि।
प०	जगाड	जगडतुः	जगडुः
	जगडिथ	जगडथुः	जगड
	जगाड/जगड	जगडिव	जगडिम
आ०	गड्यात्	गड्यास्ताम्	गड्यासुः
	गड्याः	गड्यास्तम्	गड्यास्त
	गड्यासम्	गड्यास्व	गड्यास्म
श्व०	गडिता	गडितारौ	गडितारः
	गडितासि	गडितास्थः	गडितास्थ
	गडितास्मि	गडितास्वः	गडितास्मः
भ०	गडिष्यति	गडिष्यतः	गडिष्यन्ति
	गडिष्यसि	गडिष्यथः	गडिष्यथ
	गडिष्यामि	गडिष्यावः	गडिष्यामः
क्रि०	अगडिष्यत्	अगडिष्यताम्	अगडिष्यन्
	अगडिष्यः	अगडिष्यतम्	अगडिष्यत
	अगडिष्यम्	अगडिष्याव	अगडिष्याम

डकारस्य लत्वे।

व०	गलति	गलतः	गलन्ति
स०	गलेत्	गलेताम्	गलेयुः
प०	गलतु/गलतात्	गलताम्	गलन्तु
ह्य०	अगलत्	अगलताम्	अगलन्
अ०	अगालीत्	अगालिष्टाम्	अगालिषुः
प०	जगाल	जगलतुः	जगलुः
आ०	गल्यात्	गल्यास्ताम्	गल्यासुः
श्व०	गलिता	गलितारौ	गलितारः
भ०	गलिष्यति	गलिष्यतः	गलिष्यन्ति
क्रि०	अगलिष्यत्	अगलिष्यताम्	अगलिष्यन्

१०३५. हेड (हेड्) वेष्टने।

हेड्ङ् अनादरे इति पठितत्वेऽपि अर्थविशेषे घटादिकार्यार्थं परस्मैपदार्थश्चात्र पाठः।

व०	हेडति	हेडतः	हेडन्ति
स०	हेडेत्	हेडेताम्	हेडेयुः
प०	हेडतु/हेडतात्	हेडताम्	हेडन्तु
ह्य०	अहेडत्	अहेडताम्	अहेडन्
अ०	अहेडीत्	अहेडिष्टाम्	अहेडिषुः
प०	जिहेड	जिहेडतुः	जिहेडुः
आ०	हेड्यात्	हेड्यास्ताम्	हेड्यासुः
श्व०	हेडिता	हेडितारौ	हेडितारः
भ०	हेडिष्यति	हेडिष्यतः	हेडिष्यन्ति
क्रि०	अहेडिष्यत्	अहेडिष्यताम्	अहेडिष्यन्

१०३६. लड (लड्) जिह्वोन्मथने।

जिह्वाया उन्मथनं जिह्वोन्मथनम्।

लडयति जिह्वां कुक्कुरः। लत्वे जिह्वाशतान्युल्ललयत्यभिक्ष्णम्। जिह्वोन्मथनयोरित्येके। तन्मते संग्रहार्थं जिह्वा च जिह्वाविषया क्रिया उन्मथनञ्चेति समाहारः। लडयति जिह्वाम्। ललयति दधि। लडण् उपसेवायाम्। लाडयति। लड विलासे इत्यस्यैवार्थविशेषे घटादिकार्यार्थमिह पाठः। लडयति जिह्वामित्यादिलक्ष्यानुरोधात् णिप्रत्यये एव जिह्वोन्मथनरूपार्थो भवति तेन जिह्वोन्मथनार्थस्यास्य रूपाणि लडयतीत्यादीनि वक्ष्यमाणानि ज्ञेयानि नातु लडतीत्यादीनि।

॥अथ णान्ताः षट् सेटश्च॥

१०३७. फण (फण्) गतौ।

व०	फणति	फणतः	फणन्ति
	फणसि	फणथः	फणथ
	फणामि	फणावः	फणामः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स०	फणेत्	फणेताम्	फणेयुः
	फणेः	फणेतम्	फणेत
	फणेयम्	फणेव	फणेम
प०	फणतु/फणतात्	फणताम्	फणन्तु
	फण/फणतात्	फणतम्	फणत
	फणानि	फणाव	फणाम
ह्य०	अफणत्	अफणताम्	अफणन्
	अफणः	अफणतम्	अफणत
	अफणतम्	अफणाव	अफणाम
अ०	अफणीत्	अफणिष्टाम्	अफणिषुः
	अफणीः	अफणिष्टम्	अफणिष्ट
	अफणिषम्	अफणिष्व	अफणिष्म
अ०	अफाणीत्	अफाणिष्टाम्	अफाणिषुः
	अफाणीः	अफाणिष्टम्	अफाणिष्ट
	अफाणिषम्	अफाणिष्व	अफाणिष्म
		तथा	
प०	पफाण	फेणतुः	फेणुः
	फेणिथ	फेणथुः	फेण
	पफाण/पफण	फेणिव	फेणिम
		तथा	
प०	पफाण	पफणतुः	पफणुः
	पफणिथ	पफणथुः	पफण
	पफाण/पफण	पफणिव	पफणिम
आ०	फण्यात्	फण्यास्ताम्	फण्यासुः
	फण्याः	फण्यास्तम्	फण्यास्त
	फण्यासम्	फण्यास्व	फण्यास्म
श्व०	फणिता	फणितारौ	फणितारः
	फणितासि	फणितास्थः	फणितास्थ
	फणितास्मि	फणितास्वः	फणितास्मः
भ०	फणिष्यति	फणिष्यतः	फणिष्यन्ति
	फणिष्यसि	फणिष्यथः	फणिष्यथ
	फणिष्यामि	फणिष्यावः	फणिष्यामः
क्रि०	अफणिष्यत्	अफणिष्यताम्	अफणिष्यन्
	अफणिष्यः	अफणिष्यतम्	अफणिष्यत
	अफणिष्यम्	अफणिष्याव	अफणिष्याम

१०३८. कण (कण्) गतौ।

कण शब्दे इति पठितत्वेऽपि फणण् निमीलने इति पठिष्यमाणत्वेऽपि अर्थविशेषे घटादिकार्यार्थमिह पाठः। अस्य रूपाणि कण शब्दे २७० इतिवज्ज्ञेयानि।

१०३९. रण (रण्) गतौ।

रण शब्द इति पठितोऽपि अर्थविशेषे घटादिकार्यार्थमिह पठितः। रूपाणि चास्य रण शब्दे २६० इतिवज्ज्ञेयानि।

१०४०. चण (चण्) हिंसादानयोश्च।

हिंसायां दाने काराद्गतौ। चण शब्दे इति पठितोऽपि अर्थविशेषे घटादिकार्यार्थमिह पठितः। एतद्रूपाणि चण शब्दे २७२ इतिवज्ज्ञेयानि।

१०४१. शण (शण्) दाने।

व०	शणति	शणतः	शणन्ति
स०	शणेत्	शणेताम्	शणेयुः
प०	शणतु/शणतात्	शणताम्	शणन्तु
ह्य०	अशणत्	अशणताम्	अशणन्
अ०	अशाणीत्	अशाणिष्टाम्	अशाणिषुः
	अशणीत्	अशणिष्टाम्	अशणिषुः
प०	शशाण	शेणतुः	शेणुः
आ०	शण्यात्	शण्यास्ताम्	शण्यासुः
श्व०	शणिता	शणितारौ	शणितारः
भ०	शणिष्यति	शणिष्यतः	शणिष्यन्ति
क्रि०	अशणिष्यत्	अशणिष्यताम्	अशणिष्यन्

१०४२. श्रण (श्रण्) दाने।

व०	श्रणति	श्रणतः	श्रणन्ति
स०	श्रणेत्	श्रणेताम्	श्रणेयुः
प०	श्रणतु/श्रणतात्	श्रणताम्	श्रणन्तु
ह्य०	अश्रणत्	अश्रणताम्	अश्रणन्
अ०	अश्राणीत्	अश्राणिष्टाम्	अश्राणिषुः
	अश्रणीत्	अश्रणिष्टाम्	अश्रणिषुः
प०	शश्राण	शश्रणतुः	शश्रणुः
आ०	श्रण्यात्	श्रण्यास्ताम्	श्रण्यासुः
श्व०	श्रणिता	श्रणितारौ	श्रणितारः
भ०	श्रणिष्यति	श्रणिष्यतः	श्रणिष्यन्ति
क्रि०	अश्रणिष्यत्	अश्रणिष्यताम्	अश्रणिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

।।अथ थान्ताश्चत्वारः सेटश्च।।

१०४३. स्नथ (स्नथ्) हिंसार्थः।

व०	स्नथति	स्नथतः	स्नथन्ति
	स्नथसि	स्नथथः	स्नथथ
	स्नथामि	स्नथावः	स्नथामः
स०	स्नथेत्	स्नथेताम्	स्नथेयुः
	स्नथेः	स्नथेतम्	स्नथेत
	स्नथेयम्	स्नथेव	स्नथेम
प०	स्नथतु/स्नथतात्	स्नथताम्	स्नथन्तु
	स्नथ/स्नथतात्	स्नथतम्	स्नथत
	स्नथानि	स्नथाव	स्नथाम
ह्य०	अस्नथत्	अस्नथताम्	अस्नथन्
	अस्नथः	अस्नथतम्	अस्नथत
	अस्नथतम्	अस्नथाव	अस्नथाम
अ०	अस्नाथीत्	अस्नाथिष्टाम्	अस्नाथिषुः
	अस्नाथीः	अस्नाथिष्टम्	अस्नाथिष्ट
	अस्नाथिषम्	अस्नाथिष्व	अस्नाथिष्म
		तथा	
	अस्नथीत्	अस्नथिष्टाम्	अस्नथिषुः इत्यादि।
प०	सस्नाथ	सस्नथतुः	सस्नथुः
	सस्नथिथ	सस्नथथुः	सस्नथ
	सस्नाथ/सस्नथ	सस्नथिव	सस्नथिम
आ०	स्नथ्यात्	स्नथ्यास्ताम्	स्नथ्यासुः
	स्नथ्याः	स्नथ्यास्तम्	स्नथ्यास्त
	स्नथ्यासम्	स्नथ्यास्व	स्नथ्यास्म
श्व०	स्नथिता	स्नथितारौ	स्नथितारः
	स्नथितासि	स्नथितास्थः	स्नथितास्थ
	स्नथितास्मि	स्नथितास्वः	स्नथितास्मः
भ०	स्नथिष्यति	स्नथिष्यतः	स्नथिष्यन्ति
	स्नथिष्यसि	स्नथिष्यथः	स्नथिष्यथ
	स्नथिष्यामि	स्नथिष्यावः	स्नथिष्यामः
क्रि०	अस्नथिष्यत्	अस्नथिष्यताम्	अस्नथिष्यन्
	अस्नथिष्यः	अस्नथिष्यतम्	अस्नथिष्यत
	अस्नथिष्यम्	अस्नथिष्याव	अस्नथिष्याम

१०४४. क्नथ (क्नथ्) हिंसार्थः।

व०	क्नथति	क्नथतः	क्नथन्ति
स०	क्नथेत्	क्नथेताम्	क्नथेयुः
प०	क्नथतु/क्नथतात्	क्नथताम्	क्नथन्तु
ह्य०	अक्नथत्	अक्नथताम्	अक्नथन्
अ०	अक्नाथीत्	अक्नाथिष्टाम्	अक्नाथिषुः
प०	चक्नाथ	चक्नथतुः	चक्नथुः
आ०	क्नथ्यात्	क्नथ्याक्ताम्	क्नथ्यासुः
श्व०	क्नथिता	क्नथितारौ	क्नथितारः
भ०	क्नथिष्यति	क्नथिष्यतः	क्नथिष्यन्ति
क्रि०	अक्नथिष्यत्	अक्नथिष्यताम्	अक्नथिष्यन्

१०४५. क्रथ (क्रथ्) हिंसायाम्।

व०	क्रथति	क्रथतः	क्रथन्ति
स०	क्रथेत्	क्रथेताम्	क्रथेयुः
प०	क्रथतु/क्रथतात्	क्रथताम्	क्रथन्तु
ह्य०	अक्रथत्	अक्रथताम्	अक्रथन्
अ०	अक्राथीत्	अक्राथिष्टाम्	अक्राथिषुः
प०	चक्राथ	चक्रथतुः	चक्रथुः
आ०	क्रथ्यात्	क्रथ्याक्ताम्	क्रथ्यासुः
श्व०	क्रथिता	क्रथितारौ	क्रथितारः
भ०	क्रथिष्यति	क्रथिष्यतः	क्रथिष्यन्ति
क्रि०	अक्रथिष्यत्	अक्रथिष्यताम्	अक्रथिष्यन्

१०४६. क्लथ (क्लथ्) हिंसार्थः।

व०	क्लथति	क्लथतः	क्लथन्ति
स०	क्लथेत्	क्लथेताम्	क्लथेयुः
प०	क्लथतु/क्लथतात्	क्लथताम्	क्लथन्तु
ह्य०	अक्लथत्	अक्लथताम्	अक्लथन्
अ०	अक्लाथीत्	अक्लाथिष्टाम्	अक्लाथिषुः
प०	चक्लाथ	चक्लथतुः	चक्लथुः
आ०	क्लथ्यात्	क्लथ्यास्ताम्	क्लथ्यासुः
श्व०	क्लथिता	क्लथितारौ	क्लथितारः
भ०	क्लथिष्यति	क्लथिष्यतः	क्लथिष्यन्ति
क्लि०	अक्लथिष्यत्	अक्लथिष्यताम्	अक्लथिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ दान्तौ सेटौ च।

१०४७. छद (छद्) ऊर्जने। ऊर्जनं प्राणनं बलनञ्च।[१]

१०४८. मदै (मद्) हर्षग्लपनयोः।[२]

१०४९. ष्टन (स्तन्) शब्दे।

एतद्रूपाणि च स्तन शब्दे ३२३ इति वज्ञेयानि षोपदेशत्वात। तिष्टनयिषति।

१०५०. स्तन (स्तन्) शब्दे।

स्तन शब्दे इति पठितत्वेऽपि स्तनण् गर्जे इति पठिष्यमाणत्वेऽपि घटादिकार्यार्थमस्य पाठः। एतद्रूपाणि च स्तन शब्दे ३२३ इतिवज्ज्ञेयानि, अषोपदेशत्वात्। तिस्थनयिषति।

१०५१. ध्वन (ध्वन्) शब्दे।

ध्वन शब्दे इति पठितत्वेऽपि ध्वनण् शब्दे इति पठिष्यमाणत्वेऽपि घटादिकार्यार्थमिह पाठः। रूपाणि चास्य ध्वन शब्दे ३२५ इतिवज्ज्ञेयानि।

१०५२. स्वन (स्वन्) अवतंसे।

पूर्वपठितस्यापि घटादिकार्यार्थमिह पाठः। एतद्रूपाणि च स्वन शब्दे ३२७ इतिवज्ज्ञेयानि।

१०५३. चन (चन्) हिंसायाम।

पूर्वपठितस्यापि घटादिकार्यार्थमर्थविशेषे पाठः। चन शब्दे ३२६ इतिवद्रूपाणि ।

अथ रान्तः सेट् च।

१०५४. ज्वर (ज्वर्) रोगे।

व०	ज्वरति	ज्वरतः	ज्वरन्ति
	ज्वरसि	ज्वरथः	ज्वरथ
	ज्वरामि	ज्वरावः	ज्वरामः
स०	ज्वरेत्	ज्वरेताम्	ज्वरेयुः
	ज्वरेः	ज्वरेतम्	ज्वरेत
	ज्वरेयम्	ज्वरेव	ज्वरेम
पं०	ज्वरतु/ज्वरतात्	ज्वरताम्	ज्वरन्तु
	ज्वर/ज्वरतात्	ज्वरतम्	ज्वरत
	ज्वरानि	ज्वराव	ज्वराम
ह्य०	अज्वरत्	अज्वरताम्	अज्वरन्
	अज्वरः	अज्वरतम्	अज्वरत
	अज्वरम्	अज्वराव	अज्वराम
अ०	अज्वारीत्	अज्वारिष्टाम्	अज्वारिषुः
	अज्वारीः	अज्वारिष्टम्	अज्वारिष्ट
	अज्वारिषम्	अज्वारिष्व	अज्वारिष्म
प०	जज्वार	जज्वरतुः	जज्वरुः
	जज्वरिथ	जज्वरथुः	जज्वर
	जज्वार/जज्वर	जज्वरिव	जज्वरिम
आ०	ज्वर्यात्	ज्वर्यास्ताम्	ज्वर्यासुः
	ज्वर्याः	ज्वर्यास्तम्	ज्वर्यास्त
	ज्वर्यासम्	ज्वर्यास्व	ज्वर्यास्म
श्व०	ज्वरिता	ज्वरितारौ	ज्वरितारः
	ज्वरितासि	ज्वरितास्थः	ज्वरितास्थ
	ज्वरितास्मि	ज्वरितास्वः	ज्वरितास्मः
भ०	ज्वरिष्यति	ज्वरिष्यतः	ज्वरिष्यन्ति
	ज्वरिष्यसि	ज्वरिष्यथः	ज्वरिष्यथ
	ज्वरिष्यामि	ज्वरिष्यावः	ज्वरिष्यामः
क्रि०	अज्वरिष्यत्	अज्वरिष्यताम्	अज्वरिष्यन्
	अज्वरिष्यः	अज्वरिष्यतम्	अज्वरिष्यत
	अज्वरिष्यम्	अज्वरिष्याव	अज्वरिष्याम

१. छदण् संवरणे इति पठिष्यमाणोऽप्यूर्जने घटादिकार्यार्थमिह पठितः छदयत्यग्निः स्वार्थे णिच् छादयन्त प्रयुङ्क्ते इति णिग् वा। छदयत्यग्निरित्यादि लक्ष्या नुरोधात् णिप्रत्यये एव ऊर्जनार्थो भवति तेन ऊर्जनार्थस्यास्य रूपाणि छदयतीत्यादीनि वक्ष्यमाणानि नतु छदतीत्यादीनि।

२. मदंच। हर्षे इत्ययमनयोरर्थयोर्घटादिकार्यार्थमिह पठितः। एतद्रूपाणि च हर्षार्थे मदैच। हर्षे इतिवज्ज्ञेयानि ग्लपनर्थेतु मदतीत्यादीनि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०५५. चल (चल्) कम्पने।

चल कम्पने इति पठितत्वेऽपि चलत् विलसने इति चलण् भृतौ इति च पठिष्यमाणत्वेऽपि घटादिकार्यार्थमस्येह पाठः। रूपाणि चास्य चल कम्पने ९७२ इतिवज्ज्ञेयानि।

१०५६. ह्वले (ह्वल्) चलने।

व०	ह्वलति	ह्वलतः	ह्वलन्ति
	ह्वलसि	ह्वलथः	ह्वलथ
	ह्वलामि	ह्वलावः	ह्वलामः
स०	ह्वलेत्	ह्वलेताम्	ह्वलेयुः
	ह्वलेः	ह्वलेतम्	ह्वलेत
	ह्वलेयम्	ह्वलेव	ह्वलेम
प०	ह्वलतु/ह्वलतात्	ह्वलताम्	ह्वलन्तु
	ह्वल/ह्वलतात्	ह्वलतम्	ह्वलत
	ह्वलानि	ह्वलाव	ह्वलाम
ह्य०	अह्वलत्	अह्वलताम्	अह्वलन्
	अह्वलः	अह्वलतम्	अह्वलत
	अह्वलम्	अह्वलाव	अह्वलाम
अ०	अह्वालीत्	अह्वालिष्टाम्	अह्वालिषुः
	अह्वालीः	अह्वालिष्टम्	अह्वालिष्ट
	अह्वालिषम्	अह्वालिष्व	अह्वालिष्म
प०	जह्वाल	जह्वलतुः	जह्वलुः
	जह्वलिथ	जह्वलथुः	जह्वल
	जह्वाल/जह्वल	जह्वलिव	जह्वलिम
आ०	ह्वल्यात्	ह्वल्यास्ताम्	ह्वल्यासुः
	ह्वल्याः	ह्वल्यास्तम्	ह्वल्यास्त
	ह्वल्यासम्	ह्वल्यास्व	ह्वल्यास्म
श्व०	ह्वलिता	ह्वलितारौ	ह्वलितारः
	ह्वलितासि	ह्वलितास्थः	ह्वलितास्थ
	ह्वलितास्मि	ह्वलितास्वः	ह्वलितास्मः
भ०	ह्वलिष्यति	ह्वलिष्यतः	ह्वलिष्यन्ति
	ह्वलिष्यसि	ह्वलिष्यथः	ह्वलिष्यथ
	ह्वलिष्यामि	ह्वलिष्यावः	ह्वलिष्यामः
क्रि०	अह्वलिष्यत्	अह्वलिष्यताम्	अह्वलिष्यन्
	अह्वलिष्यः	अह्वलिष्यतम्	अह्वलिष्यत
	अह्वलिष्यम्	अह्वलिष्याव	अह्वलिष्याम

१०५७. ह्मल (ह्मल्) चलने।

व०	ह्मलति	ह्मलतः	ह्मलन्ति
स०	ह्मलेत्	ह्मलेताम्	ह्मलेयुः
प०	ह्मलतु/ह्मलतात्	ह्मलताम्	ह्मलन्तु
ह्य०	अह्मलत्	अह्मलताम्	अह्मलन्
अ०	अह्मालीत्	अह्मालिष्टाम्	अह्मालिषुः
प०	जह्माल	जह्मलतुः	जह्मलुः
आ०	ह्मल्यात्	ह्मल्यास्ताम्	ह्मल्यासुः
श्व०	ह्मलिता	ह्मलितारौ	ह्मलितारः
भ०	ह्मलिष्यति	ह्मलिष्यतः	ह्मलिष्यन्ति
क्रि०	अह्मलिष्यत्	अह्मलिष्यताम्	अह्मलिष्यन्

१०५८. ज्वल (ज्वल्) दीप्तौ च।

चकाराच्चलने ज्वलादौ पठितोऽप्ययं घटादिकार्यार्थमिहाधीतः। एतद्रूपाणि च ज्वल दीप्तौ ९६० इतिवज्ज्ञेयानि। केचित्तु दलिवलिस्खलिक्षपित्रपीणामपि घटादित्वमिच्छन्ति। तन्मते दलयति स्खलयति क्षपयति त्रपयतीत्यपि भवति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥अथ अदादि:॥

इहाविकरणेषु वर्णक्रमेण धातुषु पठितेषु पूर्वाचार्य-प्रसिद्ध्यनुसरणेनादेरदादावुपन्यास:।

१०५९. अदंक् (अद्) भक्षणे।

व०	अत्ति	अत्त:	अदन्ति
	अत्सि	अत्थ:	अत्थ
	अद्मि	अद्व:	अद्म:
स०	अद्यात्	अद्याताम्	अद्यु:
	अद्या:	अद्यातम्	अद्यात
	अद्याम्	अद्याव	अद्याम
प०	अत्तु/अत्तात्	अत्ताम्	अदन्तु
	अद्धि/अत्तात्	अत्तम्	अत्त
	अदानि	अदाव	अदाम
ह्य०	आदत्	आत्ताम्	आदन्
	आद:	आत्तम्	आत्त
	आदम्	आद्व	आद्म
अ०	अघसत्	अघसताम्	अघसन्
	अघस:	अघसतम्	अघसत
	अघसम्	अघसाव	अघसाम
प०	जघास	जक्षतु:	जक्षु:
	जघसिथ	जक्षथु:	जक्ष
	जघास/जघस	जक्षिव	जक्षिम
		तथा	
	आद	आदतु:	आदु:
	आदिथ	आदथु:	आद
	आद	आदिव	आदिम
आ०	अद्यात्	अद्यास्ताम्	अद्यासु:
	अद्या:	अद्यास्तम्	अद्यास्त
	अद्यासम्	अद्यास्व	अद्यास्म
श्व०	अत्ता	अत्तारौ	अत्तार:
	अत्तासि	अत्तास्थ:	अत्तास्थ
	अत्तास्मि	अत्तास्व:	अत्तास्म:
भ०	अत्स्यति	अत्स्यत:	अत्स्यन्ति
	अत्स्यसि	अत्स्यथ:	अत्स्यथ
	अत्स्यामि	अत्स्याव:	अत्स्याम:
क्रि०	आत्स्यत्	आत्स्यताम्	आत्स्यन्
	आत्स्य:	आत्स्यतम्	आत्स्यत
	आत्स्यम्	आत्स्याव	आत्स्याम

॥अथादन्ताश्चतुर्दशानिट्श्च॥

१०६०. प्सांक् (प्सा) भक्षणे।

व०	प्साति	प्सात:	प्सान्ति
	प्सासि	प्साथ:	प्साथ
	प्सामि	प्साव:	प्साम:
स०	प्सायात्	प्सायाताम्	प्सायु:
	प्साया:	प्सायातम्	प्सायात
	प्सायाम्	प्सायाव	प्सायाम
प०	प्सातु/प्सातात्	प्साताम्	प्सान्तु
	प्साहि/प्सातात्	प्सातम्	प्सात
	प्सानि	प्साव	प्साम
ह्य०	अप्सात्	अप्साताम्	अप्सान्
	अप्सा:	अप्सातम्	अप्सात
	अप्साम्	अप्साव	अप्साम
अ०	अप्सासीत्	अप्सासिष्टाम्	अप्सासिषु:
	अप्सासी:	अप्सासिष्टम्	अप्सासिष्ट
	अप्सासिषम्	अप्सासिष्व	अप्सासिष्म
प०	पप्सौ	पप्सतु:	पप्सु:
	पप्सिथ/पप्साथ	पप्सथु:	पप्स
	पप्सौ	पप्सिव	पप्सिम
आ०	प्सेयात्	प्सेयास्ताम्	प्सेयासु:
	प्सेया:	प्सेयास्तम्	प्सेयास्त
	प्सेयासम्	प्सेयास्व	प्सेयास्म
		तथा	
	प्सायात्	प्सायास्ताम्	प्सायासु:
	प्साया:	प्सायास्तम्	प्सायासु:
	प्सायासम्	प्सायास्व	प्सायास्म
श्व०	प्साता	प्सातारौ	प्सातार:
	प्सातासि	प्सातास्थ:	प्सातास्थ
	प्सातास्मि	प्सातास्व:	प्सातास्म:
भ०	प्सास्यति	प्सास्यत:	प्सास्यन्ति
	प्सास्यसि	प्सास्यथ:	प्सास्यथ
	प्सास्यामि	प्सास्याव:	प्सास्याम:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रि०	अप्सास्यत्	अप्सास्यताम्	अप्सास्यन्
	अप्सास्य:	अप्सास्यतम्	अप्सास्यत
	अप्सास्यम्	अप्सास्याव	अप्सास्याम

१०६१. भांक् (भा) दीप्तौ।

व०	भाति	भात:	भान्ति
	भासि	भाथ:	भाथ
	भामि	भाव:	भाम:
स०	भायात्	भायाताम्	भायु:
	भाया:	भायातम्	भायात
	भायाम्	भायाव	भायाम
प०	भातु/भातात्	भाताम्	भान्तु
	भाहि/भातात्	भातम्	भात
	भानि	भाव	भाम
ह्य०	अभात्	अभाताम्	अभु:/अभान्
	अभा:	अभातम्	अभात
	अभाम्	अभाव	अभाम
अ०	अभासीत्	अभासिष्टाम्	अभासिषु:
	अभासी:	अभासिष्टम्	अभासिष्ट
	अभासिषम्	अभासिष्व	अभासिष्म
प०	बभौ	बभतु:	बभु:
	बभिथ/बभाथ	बभथु:	बभ
	बभौ	बभिव	बभिम
आ०	भायात्	भायास्ताम्	भायासु:
	भाया:	भायास्तम्	भायास्त
	भायासम्	भायास्व	भायास्म
श्व०	भाता	भातारौ	भातार:
	भातासि	भातास्थ:	भातास्थ
	भातास्मि	भातास्व:	भातास्म:
भ०	भास्यति	भास्यत:	भास्यन्ति
	भास्यसि	भास्यथ:	भास्यथ
	भास्यामि	भास्याव:	भास्याम:
क्रि०	अभास्यत्	अभास्यताम्	अभास्यन्
	अभास्य:	अभास्यतम्	अभास्यत
	अभास्यम्	अभास्याव	अभास्याम

१०६२. यांक् (या) प्रापणे।

व०	याति	यात:	यान्ति
स०	यायात्	यायाताम्	यायु:
प०	यातु/यातात्	याताम्	यान्तु
ह्य०	अयात्/अयाताम्	अयु:	अयान्
अ०	अयासीत्	अयासिष्टाम्	अयासिषु:
प०	ययौ	ययतु:	ययु:
आ०	यायात्	यायास्ताम्	यायासु:
श्व०	याता	यातारौ	यातार:
भ०	यास्यति	यास्यत:	यास्यन्ति
क्रि०	अयास्यत्	अयास्यताम्	अयास्यन्

१०६३. वांक् (वा) गतिगन्धनयो:।

व०	वाति	वात:	वान्ति
स०	वायात्	वायाताम्	वायु:
प०	वातु/वातात्	वाताम्	वान्तु
ह्य०	अवात्	अवाताम्	अवान्
अ०	अवासीत्	अवासिष्टाम्	अवासिषु:
प०	ववौ	ववतु:	ववु:
आ०	वायात्	वायास्ताम्	वायासु:
श्व०	वाता	वातारौ	वातार:
भ०	वास्यति	वास्यत:	वास्यन्ति
क्रि०	अवास्यत्	अवास्यताम्	अवास्यन्

१०६४. ष्णांक् (स्ना) शौचे।

व०	स्नाति	स्नात:	स्नान्ति
स०	स्नायात्	स्नायाताम्	स्नायु:
प०	स्नातु/स्नातात्	स्नाताम्	स्नान्तु
ह्य०	अस्नात्	अस्नाताम्	अस्नान्
अ०	अस्नासीत्	अस्नासिष्टाम्	अस्नासिषु:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	सस्नौ	सस्नतुः	सस्नुः
आ०	स्नेयात्	स्नेयास्ताम्	स्नेयासुः
	स्नायात्	स्नायास्ताम्	स्नायासुः इत्यादि
श्व०	स्नाता	स्नातारौ	स्नातारः
भ०	स्नास्यति	स्नास्यतः	स्नास्यन्ति
क्रि०	अस्नास्यत्	अस्नास्यताम्	अस्नास्यन्

१०६५. श्रांकू (श्रा) पाके।

व०	श्राति	श्रातः	श्रान्ति
स०	श्रायात्	श्रायाताम्	श्रायुः
प०	श्रातु/श्रातात्	श्राताम्	श्रान्तु
ह्य०	अश्रात्/अश्राताम्	अश्रुः	अश्रान्
अ०	अश्रासीत्	अश्रासिष्टाम्	अश्रासिषुः
प०	शश्रौ	शश्रतुः	शश्रुः
आ०	श्रेयात्	श्रेयास्ताम्	श्रेयासुः

तथा

	श्रायात्	श्रायास्ताम्	श्रायासुः इत्यादि।
श्व०	श्राता	श्रातारौ	श्रातारः
भ०	श्रास्यति	श्रास्यत.	श्रास्यन्ति
क्रि०	अश्रास्यत्	अश्रास्यताम्	अश्रास्यन्

१०६६. द्रांक् (द्रा) कुत्सितगतौ।

कुत्सिता गतिः पलायनं स्वप्नश्च।

व०	द्राति	द्रातः	द्रान्ति
स०	द्रायात्	द्रायाताम्	द्रायुः
प०	द्रातु/द्रातात्	द्राताम्	द्रान्तु
ह्य०	अद्रात्	अद्राताम्	अद्रान्
अ०	अद्रासीत्	अद्रासिष्टाम्	अद्रासिषुः
प०	दद्रौ	दद्रतुः	दद्रुः
आ०	द्रायात्	द्रायास्ताम्	द्रायासुः

तथा

	द्रेयात्	द्रेयास्ताम्	द्रेयासुः इत्यादि।
श्व०	द्राता	द्रातारौ	द्रातारः
भ०	द्रास्यति	द्रास्यतः	द्रास्यन्ति
क्रि०	अद्रास्यत्	अद्रास्यताम्	अद्रास्यन्

१०६७. पांक् (पा) रक्षणे।

व०	पाति	पातः	पान्ति
स०	पायात्	पायाताम्	पायुः
प०	पातु/पातात्	पाताम्	पान्तु
ह्य०	अपात्	अपाताम्	अपुः अपान्
अ०	अपासीत्	अपासिष्टाम्	अपासिषुः
प०	पपौ	पपतुः	पपुः
आ०	पायात्	पायास्ताम्	पायासुः
श्व०	पाता	पातारौ	पातारः
भ०	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
क्रि०	अपास्यत्	अपास्यताम्	अपास्यन्

१०६८. लांक् (ला) आदाने।

व०	लाति	लातः	लान्ति
स०	लायात्	लायाताम्	लायुः
प०	लातु/लातात्	लाताम्	लान्तु
ह्य०	अलात्	अलाताम्	अलान्
अ०	अलासीत्	अलासिष्टाम्	अलासिषुः
प०	ललौ	ललतुः	ललुः
आ०	लायात्	लायास्ताम्	लायासुः
श्व०	लाता	लातारौ	लातारः
भ०	लास्यति	लास्यतः	लास्यन्ति
क्रि०	अलास्यत्	अलास्यताम्	अलास्यन्

१०६९. रांक् (रा) दाने।

व०	राति	रातः	रान्ति
स०	रायात्	रायाताम्	रायुः
प०	रातु/रातात्	राताम्	रान्तु
ह्य०	अरात्	अराताम्	अरान्
अ०	अरासीत्	अरासिष्टाम्	अरासिषुः
प०	ररौ	ररतुः	ररुः
आ०	रायात्	रायास्ताम्	रायासुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	राता	रातारौ	रातारः
भ०	रास्यति	रास्यतः	रास्यन्ति
क्रि०	अरास्यत्	अरास्यताम्	अरास्यन्

१०७०. दां वृक् (दा) लवने।

व०	दाति	दातः	दान्ति
स०	दायात्	दायाताम्	दायुः
प०	दातु/दातात्	दाताम्	दान्तु
ह्य०	अदात्/अदाताम्	अदु	अदान्
अ०	अदासीत्	अदासिष्टाम्	अदासिषुः
प०	ददौ	ददतुः	ददुः
आ०	दायात्	दायास्ताम्	दायासुः
श्व०	दाता	दातारौ	दातारः
भ०	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
क्रि०	अदास्यत्	अदास्यताम्	अदास्यन्

१०७१. ख्यांक् (ख्या) प्रथने।

व०	ख्याति	ख्यातः	ख्यान्ति
स०	ख्यायात्	ख्यायाताम्	ख्यायुः
प०	ख्यातु/ख्यातात्	ख्याताम्	ख्यान्तु
ह्य०	अख्यात्/अख्याताम्	अख्युः	अख्यान्
अ०	अख्यत्	अख्यताम्	अख्यन्
प०	चख्यौ	चख्यतुः	चख्युः
आ०	ख्येयात्	ख्येयास्ताम्	ख्येयासुः
	ख्यायात्	ख्यायास्ताम्	ख्यायासुः, इत्यादि
श्व०	ख्याता	ख्यातारौ	ख्यातारः
भ०	ख्यास्यति	ख्यास्यतः	ख्यास्यन्ति
क्रि०	अख्यास्यत्	अख्यास्यताम्	अख्यास्यन्

१०७२. प्रांकृ (प्रा) पूरणे।

व०	प्राति	प्रातः	प्रान्ति
स०	प्रायात्	प्रायाताम्	प्रायुः
प०	प्रातु/प्रातात्	प्राताम्	प्रान्तु
ह्य०	अप्रात्	अप्राताम्	अप्रान्/अप्रुः
अ०	अप्रासीत्	अप्रासिष्टाम्	अप्रासिषुः
प०	पप्रौ	पप्रतुः	पप्रुः
आ०	प्रेयात्	प्रेयास्ताम्	प्रेयासुः
	प्रायात्	प्रायास्ताम्	प्रायासुः
श्व०	प्राता	प्रातारौ	प्रातारः
भ०	प्रास्यति	प्रास्यतः	प्रास्यन्ति
क्रि०	अप्रास्यत्	अप्रास्यताम्	अप्रास्यन्

१०७३. मांक् (मा) माने।

मानं वर्तनम्।

व०	माति	मातः	मान्ति
स०	मायात्	मायाताम्	मायुः
प०	मातु/मातात्	माताम्	मान्तु
ह्य०	अमात्	अमाताम्	अमान्/अमुः
अ०	अमासीत्	अमासिष्टाम्	अमासिषुः
प०	ममौ	ममतुः	ममुः
आ०	मेयात्	मेयास्ताम्	मेयासुः
श्व०	माता	मातारौ	मातारः
भ०	मास्यति	मास्यतः	मास्यन्ति
क्रि०	अमास्यत्	अमास्यताम्	अमास्यन्

।।अदेथेन्तावनिटौ च।।

१०७४. इंक् (इ) स्मरणे

इङिकावधिनैव प्रयुज्येते।

व०	अध्येति	अधीतः	अधियन्ति/अधीयन्ति
	अध्येषि	अधीथः	अधीथ
	अध्येमि	अधीवः	अधीमः
स०	अधीयात्	अधीयाताम्	अधीयुः
	अधीयाः	अधीयातम्	अधीयात
	अधीयाम्	अधीयाव	अधीयाम
प०	अध्येतु/अधीतात्	अधीताम्	अधियन्तु/अधीयन्तु
	अधीहि/अधीतात्	अधीतम्	अधीत
	अध्ययानि	अध्ययाव	अध्ययाम
ह्य०	अध्यैत्	अध्यैताम्	अध्यैयन्/अध्यायन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अध्यै:	अध्यैतम्	अध्यैत
	अध्यायम्	अध्यैव	अध्यैम
अ०	अध्यगात्	अध्यगाताम्	अध्यगु:
	अध्यगा:	अध्यगातम्	अध्यगात
	अध्यगाम्	अध्यगाव	अध्यगाम
प०	अधीयाय	अधीयतु:	अधीयु:
	अधीयेथ/अधीययिथ	अधीयथु:	अधीय
	अधीयाय/अधीयय	अधीयिव	अधीयिम
आ०	अधीयात्	अधीयास्ताम्	अधीयासु:
	अधीया:	अधीयास्तम्	अधीयास्त
	अधीयासम्	अधीयास्व	अधीयास्म
श्व०	अध्येता	अध्येतारौ	अध्येतार:
	अध्येतासि	अध्येतास्थ:	अध्येतास्थ
	अध्येतास्मि	अध्येतास्व:	अध्येतास्म:
भ०	अध्येष्यति	अध्येष्यत:	अध्येष्यन्ति
	अध्येष्यसि	अध्येष्यथ:	अध्येष्यथ
	अध्येष्यामि	अध्येष्याव:	अध्येष्याम:
क्रि०	अध्यैष्यत्	अध्यैष्यताम्	अध्यैष्यन्
	अध्यैष्य:	अध्यैष्यतम्	अध्यैष्यत
	अध्यैष्यम्	अध्यैष्याव	अध्यैष्याम

१०७५. ईण्क् (इ) गतौ।

व०	एति	इत:	यन्ति
	एषि	इथ:	इथ
	एमि	इव:	इम:
स०	इयात्	इयाताम्	इयु:
	इया:	इयातम्	इयात
	इयाम्	इयाव	इयाम
प०	एतु/इतात्	इताम्	यन्तु
	इहि/इतात्	इतम्	इत
	अयानि	अयाव	अयाम
ह्य०	ऐत्	ऐताम्	आयन्
	ऐ:	ऐतम्	ऐत
	आयम्	ऐव	ऐम
अ०	अगात्	अगाताम्	अगु:
	अगा:	अगातम्	अगात
	अगाम्	अगाव	अगाम
प०	इयाय	ईयतु:	ईयु:
	इययिथ/इयेथ	ईयथु:	ईय
	इयाय/इयय	ईयिव	ईयिम
आ०	ईयात्	ईयास्ताम्	ईयासु:
	ईया:	ईयास्तम्	ईयास्त
	ईयासम्	ईयास्व	ईयास्म
श्व०	एता	एतारौ	एतार:
	एतासि	एतास्थ:	एतास्थ
	एतास्मि	एतास्व:	एतास्म:
भ०	एष्यति	एष्यत:	एष्यन्ति
	एष्यसि	एष्यथ:	एष्यथ
	एष्यामि	एष्याव:	एष्याम:
क्रि०	ऐष्यत्	ऐष्यताम्	ऐष्यन्
	ऐष्य:	ऐष्यतम्	ऐष्यत
	ऐष्यम्	ऐष्याव	ऐष्याम

।।अथेदन्तोऽनिट् च।।

१०७६. वींक् (वी) प्रजनकान्त्यसनखादनेषु। चकाराद्गतौ। प्रजन: प्रथमगर्भग्रहणम्। असनं क्षेप:।

व०	वेति	वीत:	वियन्ति
	वेषि	वीथ:	वीथ
	वेमि	वीव:	वीम:
स०	वीयात्	वीयाताम्	वीयु:
	वीया:	वीयातम्	वीयात
	वीयाम्	वीयाव	वीयाम
प०	वेतु/वीतात्	वीताम्	वियन्तु
	वीहि/वीतात्	वीतम्	वीत
	वयानि	वयाव	वयाम
ह्य०	अवेत्	अवेताम्	अवियन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अवेः	अवेतम्	अवीत
	अवयम्	अवीव	अवीम
अ०	अवैषीत्	अवैष्टाम्	अवैषुः
	अवैषीः	अवैष्टम्	अवैष्ट
	अवैषम्	अवैष्व	अवैष्म
प०	विवाय	विव्यतुः	विव्युः
	विवयिथ/विवेथ	विव्यिव	विव्यिम
	विवाय/विवय	विव्यथु	विव्य
आ०	वीयात्	वीयास्ताम्	वीयासुः
	वीयाः	वीयास्तम्	वीयास्त
	वीयासम्	वीयास्व	वीयास्म
श्व०	वेता	वेतारौ	वेतारः
	वेतासि	वेतास्थः	वेतास्थ
	वेतास्मि	वेतास्वः	वेतास्मः
भ०	वेष्यति	वेष्यतः	वेष्यन्ति
	वेष्यसि	वेष्यथः	वेष्यथ
	वेष्यामि	वेष्यावः	वेष्यामः
क्रि०	अवेष्यत्	अवेष्यताम्	अवेष्यन्
	अवेष्यः	अवेष्यतम्	अवेष्यत
	अवेष्यम्	अवेष्याव	अवेष्याम

१०७६. वींक् (वी) ईंक् इति।

धात्वन्तरप्रश्लेष इति केचित्।

व०	एति	ईतः	इयन्ति
स०	इयात्	ईयाताम्	ईयुः
प०	एतु/ईतात्	ईताम्	ईयन्तु
ह्य०	ऐत्	ऐताम्	आयन्
अ०	ऐषीत्	ऐष्टाम्	ऐषुः
प०	अयाञ्चकार	अयाञ्चक्रतुः	अयाञ्चक्रुः
आ०	ईयात्	ईयास्ताम्	ईयासुः
श्व०	एता	एतारौ	एतारः
भ०	एष्यति	एष्यतः	एष्यन्ति
क्रि०	ऐष्यत्	ऐष्यताम्	ऐष्यन्

।।अथोदन्ता दश।।

१०७७. द्युंक् (द्यु) अभिगमने।

व०	द्यौति	द्युतः	द्युवन्ति
	द्यौषि	द्युथः	द्युथ
	द्यौमि	द्युवः	द्युमः
स०	द्युयात्	द्युयाताम्	द्युयुः
	द्युयाः	द्युयातम्	द्युयात
	द्युयाम्	द्युयाव	द्युयाम
प०	द्यौतु/द्युतात्	द्युताम्	द्युवन्तु
	द्युहि/द्युतात	द्युतम्	द्युत
	द्यवानि	द्यवाव	द्यवाम
ह्य०	अद्यौत्	अद्युताम्	अद्युवन्
	अद्यौः	अद्युतम्	अद्युत
	अद्यवम्	अद्युव	अद्युम
अ०	अद्यौषीत्	अद्यौष्टाम्	अद्यौषुः
	अद्यौषीः	अद्यौष्टम्	अद्यौष्ट
	अद्यौषम्	अद्यौष्व	अद्यौष्म
प०	दुद्याव	दुद्युवतुः	दुद्युवुः
	दुद्यविथ/दुद्योथ	दुद्युवथुः	दुद्युव
	दुद्याव/दुद्यव	दुद्युविव	दुद्युविम
आ०	द्यूयात्	द्यूयास्ताम्	द्यूयासुः
	द्यूयाः	द्यूयास्तम्	द्यूयास्त
	द्यूयासम्	द्यूयास्व	द्यूयास्म
श्व०	द्योता	द्योतारौ	द्योतारः
	द्योतासि	द्योतास्थः	द्योतास्थ
	द्योतास्मि	द्योतास्वः	द्योतास्मः
भ०	द्योष्यति	द्योष्यतः	द्योष्यन्ति
	द्योष्यसि	द्योष्यथः	द्योष्यथ
	द्योष्यामि	द्योष्यावः	द्योष्यामः
क्रि०	अद्योष्यत्	अद्योष्यताम्	अद्योष्यन्
	अद्योष्यः	अद्योष्यतम्	अद्योष्यत
	अद्योष्यम्	अद्योष्याव	अद्योष्याम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०७८. षुंक् (सु) प्रसवैश्वर्ययोः।

व०	सौति	सुतः	सुवन्ति
	सौषि	सुथः	सुथ
	सौमि	सुवः	सुमः
स०	सुयात्	सुयाताम्	सुयुः
	सुयाः	सुयातम्	सुयात
	सुयाम्	सुयाव	सुयाम
प०	सौतु/सुतात्	सुताम्	सुवन्तु
	सुहि/सुतात्	सुतम्	सुत
	सवानि	सवाव	सवाम
ह्य०	असौत्	असुताम्	असुवन्
	असौः	असुतम्	असुत
	असवम्	असुव	असुम
अ०	असावीत्	असाविष्टाम्	असाविषुः
	असावीः	असाविष्टम्	असाविष्ट
	असाविषम्	असाविष्व	असाविष्म
प०	सुषाव	सुषुवतुः	सुषुवुः
	सुषविथ/सुषोथ	सुषुवथुः	सुषुव
	सुषाव/सुषव	सुषुविव	सुषुविम
आ०	सूयात्	सूयास्ताम्	सूयासुः
	सूयाः	सूयास्तम्	सूयास्त
	सूयासम्	सूयास्व	सूयास्म
श्व०	सोता	सोतारौ	सोतारः
	सोतासि	सोतास्थः	सोतास्थ
	सोतास्मि	सोतास्वः	सोतास्मः
भ०	सोष्यति	सोष्यतः	सोष्यन्ति
	सोष्यसि	सोष्यथः	सोष्यथ
	सोष्यामि	सोष्यावः	सोष्यामः
क्रि०	असोष्यत्	असोष्यताम्	असोष्यन्
	असोष्यः	असोष्यतम्	असोष्यत
	असोष्यम्	असोष्याव	असोष्याम

१०७९. तुंक् (तु) वृत्तिहिंसापूरणेषु।

व०	तवीति/तौति	तुतः	तुवन्ति
	तवीषि/तौषि	तुथः	तुथ
	तवीमितौमि	तुवः	तुमः
स०	तुयात्	तुयाताम्	तुयुः
	तुयाः	तुयातम्	तुयात
	तुयाम्	तुयाव	तुयाम
प०	तवीतु/तौतु/तुतात्	तुताम्	तुवन्तु
	तुहि/तुतात्	तुतम्	तुत
	तवानि	तवाव	तवाम
ह्य०	अतवीत्/अतौत्	अतुताम्	अतुवन्
	अतवीः/अतौः	अतुतम्	अतुत
	अतवम्	अतुव	अतुम
अ०	अतौषीत्	अतौष्टाम्	अतौषुः
	अतौषीः	अतौष्टम्	अतौष्ट
	अतौषम्	अतौष्व	अतौष्म
प०	तुताव	तुतुवतुः	तुतुवुः
	तुतविथ/तुतोथ	तुतुवथुः	तुतुव
	तुताव/तुतव	तुतुविव	तुतुविम
आ०	तूयात्	तूयास्ताम्	तूयासुः
	तूयाः	तूयास्तम्	तूयास्त
	तूयासम्	तूयास्व	तूयास्म
श्व०	तोता	तोतारौ	तोतारः
	तोतासि	तोतास्थः	तोतास्थ
	तोतास्मि	तोतास्वः	तोतास्मः
भ०	तोष्यति	तोष्यतः	तोष्यन्ति
	तोष्यसि	तोष्यथः	तोष्यथ
	तोष्यामि	तोष्यावः	तोष्यामः
क्रि०	अतोष्यत्	अतोष्यताम्	अतोष्यन्
	अतोष्यः	अतोष्यतम्	अतोष्यत
	अतोष्यम्	अतोष्याव	अतोष्याम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०८०. युंक् (यु) मिश्रणे।

व०	यौति	युतः	युवन्ति
	यौषि	युथः	युथ
	यौमि	युवः	युमः
स०	युयात्	युयाताम्	युयुः
	युयाः	युयातम्	युयात
	युयाम्	युयाव	युयाम
प०	यौतु/युतात्	युताम्	युवन्तु
	युहि/युतात्	युतम्	युत
	यवानि	यवाव	यवाम
ह्य०	अयौत्	अयुताम्	अयुवन्
	अयौः	अयुतम्	अयुत
	अयवम्	अयुव	अयुम
अ०	अयावीत्	अयाविष्टाम्	अयाविषुः
	अयावीः	अयाविष्टम्	अयाविष्ट
	अयाविषम्	अयाविष्व	अयाविष्म
प०	युयाव	युयुवतुः	युयुवुः
	युयविथ	युयुवथुः	युयुव
	युयाव/युयव	युयुविव	युयुविम
आ०	यूयात्	यूयास्ताम्	यूयासुः
	यूयाः	यूयास्तम्	यूयास्त
	यूयासम्	यूयास्व	यूयास्म
श्व०	यविता	यवितारौ	यवितारः
	यवितासि	यवितास्थः	यवितास्थ
	यवितास्मि	यवितास्वः	यवितास्मः
भ०	यविष्यति	यविष्यतः	यविष्यन्ति
	यविष्यसि	यविष्यथः	यविष्यथ
	यविष्यामि	यविष्यावः	यविष्यामः
क्रि०	अयविष्यत्	अयविष्यताम्	अयविष्यन्
	अयविष्यः	अयविष्यतम्	अयविष्यत
	अयविष्यम्	अयविष्याव	अयविष्याम

१०८१. णुंक् (नु) स्तुतौ।

व०	नौति	नुतः	नुवन्ति
स०	नुयात्	नुयाताम्	नुयुः
प०	नौतु/नुतात्	नुताम्	नुवन्तु
ह्य०	अनौत्	अनुताम्	अनुवन्
अ०	अनावीत्	अनाविष्टाम्	अनाविषुः
प०	नुनाव	नुनुवतुः	नुनुवुः
आ०	नूयात्	नूयास्ताम्	नूयासुः
श्व०	नविता	नवितारौ	नवितारः
भ०	नविष्यति	नविष्यतः	नविष्यन्ति
क्रि०	अनविष्यत्	अनविष्यताम्	अनविष्यन्

१०८२. क्ष्णुक् (क्ष्णु) तेजने।

व०	क्ष्णौति	क्ष्णुतः	क्ष्णुवन्ति
स०	क्ष्णुयात्	क्ष्णुताम्	क्ष्णुयुः
प०	क्ष्णौतु/क्ष्णुतात्	क्ष्णुताम्	क्ष्णुवन्तु
ह्य०	अक्ष्णौत्	अक्ष्णुताम्	अक्ष्णुवन्
अ०	अक्ष्णावीत्	अक्ष्णाविष्टाम्	अक्ष्णाविषुः
प०	चुक्ष्णाव	चुक्ष्णुवतुः	चुक्ष्णुवुः
आ०	क्ष्णूयात्	क्ष्णूयास्ताम्	क्ष्णूयासुः
श्व०	क्ष्णविता	क्ष्णवितारौ	क्ष्णवितारः
भ०	क्ष्णविष्यति	क्ष्णविष्यतः	क्ष्णविष्यन्ति
क्रि०	अक्ष्णविष्यत्	अक्ष्णविष्यताम्	अक्ष्णविष्यन्

१०८३. स्नुंक् (स्नु) प्रस्रवणे।

प्रस्रवणं क्षरणम्।

व०	स्नौति	स्नुतः	स्नुवन्ति
स०	स्नुयात्	स्नुयाताम्	स्नुयुः
प०	स्नौतु/स्नुतात्	स्नुताम्	स्नुवन्तु
ह्य०	अस्नौत्	अस्नुताम्	अस्नुवन्
अ०	अस्नावीत्	अस्नाविष्टाम्	अस्नाविषुः
प०	सुस्नाव	सुस्नुवतुः	सुस्नुवुः
आ०	स्नूयात्	स्नूयास्ताम्	स्नूयासुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	स्नविता	स्नवितारौ	स्नवितारः
भ०	स्नविष्यति	स्नविष्यतः	स्नविष्यन्ति
क्रि०	अस्नविष्यत्	अस्नविष्यताम्	अस्नविष्यन्

१०८४. टुक्षुक् (क्षु) शब्दे।

व०	क्षौति	क्षुतः	क्षुवन्ति
स०	क्षुयात्	क्षुयाताम्	क्षुयुः
प०	क्षौतु/क्षुतात्	क्षुताम्	क्षुवन्तु
ह्य०	अक्षौत्	अक्षुताम्	अक्षुवन्
अ०	अक्षावीत्	अक्षाविष्टाम्	अक्षाविषुः
प०	चुक्षाव	चुक्षुवतुः	चुक्षुवुः
आ०	क्षूयात्	क्षूयास्ताम्	क्षूयासुः
श्व०	क्षविता	क्षवितारौ	क्षवितारः
भ०	क्षविष्यति	क्षविष्यतः	क्षविष्यन्ति
क्रि०	अक्षविष्यत्	अक्षविष्यताम्	अक्षविष्यन्

१०८५. रुक् (रु) शब्दे।

व०	रौति	रवीति	रुतः
स०	रुयात्	रुयाताम्	रुयुः
प०	रौतु/रवीतु/रुतात्	रुताम्	रुवन्तु
ह्य०	अरौत/अरवीत्	अरुताम्	अरुवन्
अ०	अरावीत्	अराविष्टाम्	अराविषुः
प०	रुराव	रुरुवतुः	रुरुवुः
आ०	रूयात्	रूयास्ताम्	रूयासुः
श्व०	रविता	रवितारौ	रवितारः
भ०	रविष्यति	रविष्यतः	रविष्यन्ति
क्रि०	अरविष्यत्	अरविष्यताम्	अरविष्यन्

१०८६. कुंक् (कु) शब्दे।

व०	कौति	कुतः	कुवन्ति
स०	कुयात्	कुयाताम्	कुयुः
प०	कौतु/कुतात्	कुताम्	कुवन्तु
ह्य०	अकौत्	अकुताम्	अकुवन्
अ०	अकौषीत्	अकौष्टाम्	अकौषुः
प०	चुकाव	चुकुवतुः	चुकुवुः
आ०	कूयात्	कूयास्ताम्	कूयासुः
श्व०	कोता	कोतारौ	कोतारः
भ०	कोष्यति	कोष्यतः	कोष्यन्ति
क्रि०	अकोष्यत्	अकोष्यताम्	अकोष्यन्

॥अथान्तर्गणो रुदादिपञ्चकः॥

१०८७. रुदृक् (रुद्) अश्रुविमोचने।

व०	रोदिति	रुदितः	रुदन्ति
	रोदिषि	रुदिथः	रुदिथ
	रोदिमि	रुदिवः	रुदिमः
स०	रुद्यात्	रुद्याताम्	रुद्युः
	रुद्याः	रुद्यातम्	रुद्यात
	रुद्याम	रुद्याव	रुद्याम
प०	रोदितु/रुदितात्	रुदिताम्	रुदन्तु
	रुदिहि/रुदितात्	रुदितम्	रुदित
	रोदानि	रोदाव	रोदाम
ह्य०	अरोदीत्/अरोदत्	अरुदिताम्	अरुदन्
	अरोदीः/अरोदः	अरुदितम्	अरुदित
	अरोदम्	अरुदिव	अरुदिम
अ०	अरुदत्	अरुदताम्	अरुदन
	अरुदः	अरुदतम्	अरुदत
	अरुदम्	अरुदाव	अरुदाम

तथा

	अरोदीत्	अरोदिष्टाम्	अरोदिषुः
	अरोदीः	अरोदिष्टम्	अरोदिष्ट
	अरोदिषम्	अरोदिष्व	अरोदिष्म
प०	रुरोद	रुरुदतुः	रुरुदुः
	रुरोदिथ	रुरुदथुः	रुरुद
	रुरोद	रुरुदिव	रुरुदिम
आ०	रुद्यात्	रुद्यास्ताम्	रुद्यासुः
	रुद्याः	रुद्यास्तम्	रुद्यास्त
	रुद्यासम्	रुद्यास्व	रुद्यास्म
श्व०	रोदिता	रोदितारौ	रोदितारः
	रोदितासि	रोदितास्थः	रोदितास्थ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	रोदितास्मि	रोदितास्वः	रोदितास्मः
भ०	रोदिष्यति	रोदिष्यतः	रोदिष्यन्ति
	रोदिष्यसि	रोदिष्यथः	रोदिष्यथ
	रोदिष्यामि	रोदिष्यावः	रोदिष्यामः
क्रि०	अरोदिष्यत्	अरोदिष्यताम्	अरोदिष्यन्
	अरोदिष्यः	अरोदिष्यतम्	अरोदिष्यत
	अरोदिष्यम्	अरोदिष्याव	अरोदिष्याम

१०८८. ञिष्वपंक् (स्वप्) शये।

व०	स्वपिति	स्वपितः	स्वपन्ति
	स्वपिषि	स्वपिथः	स्वपिथ
	स्वपिमि	स्वपिवः	स्वपिमः
स०	स्वप्यात्	स्वप्याताम्	स्वप्युः
	स्वप्याः	स्वप्यातम्	स्वप्यात
	स्वप्याम्	स्वप्याव	स्वप्याम
प०	स्वपितु/स्वपतात्	स्वपिताम्	स्वपन्तु
	स्वपिहि/स्वपतात्	स्वपितम्	स्वपित
	स्वपानि	स्वपाव	स्वपाम
ह्य०	अस्वपत्/अस्वपीत्	अस्वपिताम्	अस्वपन्
	अस्वपीः/अस्वपः	अस्वपितम्	अस्वपित
	अस्वपतम्	अस्वपिव	अस्वपिम
अ०	अस्वाप्सीत्	अस्वाप्ताम्	अस्वाप्सुः
	अस्वाप्सीः	अस्वाप्तम्	अस्वाप्त
	अस्वाप्सम्	अस्वाप्स्व	अस्वाप्स्म
प०	सुष्वाप	सुषुपतुः	सुषुपुः
	सुष्वपिथ/सुष्वप्थ	सुषुपथुः	सुष्वप
	मुष्वाप/सुष्वप	सुषुपिव	सषुपिम
आ०	सुप्यात्	सुप्यास्ताम्	सुप्यासुः
	सुप्याः	सुप्यास्तम्	सुप्यास्त
	सुप्यासम्	सुप्यास्व	सुप्यास्म
श्व०	स्वप्ता	स्वप्तारौ	स्वप्तारः
	स्वप्तासि	स्वप्तास्थः	स्वप्तास्थ
	स्वप्तास्मि	स्वप्तास्वः	स्वप्तास्मः
भ०	स्वप्स्यति	स्वप्स्यतः	स्वप्स्यन्ति
	स्वप्स्यसि	स्वप्स्यथः	स्वप्स्यथ
	स्वप्स्यामि	स्वप्स्यावः	स्वप्स्यामः
क्रि०	अस्वप्स्यत्	अस्वप्स्यताम्	अस्वप्स्यन्
	अस्वप्स्यः	अस्वप्स्यतम्	अस्वप्स्यत
	अस्वप्स्यम्	अस्वप्स्याव	अस्वप्स्याम

१०८९. अनक् (अन्) प्राणने।

प्राणनं जीवनम्। वर्णक्रमस्य प्रतिज्ञानात्स्वपः प्रागेव निर्देशे प्राप्तेऽपि लाघवार्थमिह पाठः।

व०	अनिति	अनितः	अनन्ति
	अनिषि	अनिथः	अनिथ
	अनिमि	अनिवः	अनिमः
स०	अन्यात्	अन्याताम्	अन्युः
	अन्याः	अन्यातम्	अन्यात
	अन्याम्	अन्याव	अन्याम
प०	अनितु/अनितात्	अनिताम्	अनन्तु
	अनिहि/अनितात्	अनितम्	अनित
	अनानि	अनाव	अनाम
ह्य०	आनत्/आनीत्	आनिताम्	आनन्
	आनः/आनीः	आनितम्	आनित
	आनम्	आनिव	आनिम
अ०	आनीत्	आनिष्टाम्	आनिषुः
	आनीः	आनिष्टम्	आनिष्ट
	आनिषम्	आनिष्व	आनिष्म
प०	आन	आनतुः	आनुः
	आनिथ	आनथुः	आन
	आन	आनिव	आनिम
आ०	अन्यात्	अन्यास्ताम्	अन्यासुः
	अन्याः	अन्यास्तम्	अन्यास्त
	अन्यासम्	अन्यास्व	अन्यास्म
श्व०	अनिता	अनितारौ	अनितारः
	अनितासि	अनितास्थः	अनितास्थ
	अनितास्मि	अनितास्वः	अनितास्मः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	अनिष्यति	अनिष्यतः	अनिष्यन्ति
	अनिष्यसि	अनिष्यथः	अनिष्यथ
	अनिष्यामि	अनिष्यावः	अनिष्यामः
क्रि०	आनिष्यत्	आनिष्यताम्	आनिष्यन्
	आनिष्यः	आनिष्यतम्	आनिष्यत
	आनिष्यम्	आनिष्याव	आनिष्याम

१०९०. श्वसक् (श्वस्) प्राणने।

प्राणनं जीवनम्।

व०	श्वसिति	श्वसितः	श्वसन्ति
	श्वसिषि	श्वसिथः	श्वसिथ
	श्वसिमि	श्वसिवः	श्वसिमः
स०	श्वस्यात्	श्वस्याताम्	श्वस्युः
	श्वस्याः	श्वस्यातम्	श्वस्यात
	श्वस्याम्	श्वस्याव	श्वस्याम
प०	श्वसितु/श्वसितात्	श्वसिताम्	श्वसन्तु
	श्वसिहि/श्वसितात्	श्वसितम्	श्वसित
	श्वसानि	श्वसाव	श्वसाम
ह्य०	अश्वसत्/अश्वसीत्	अश्वसिताम्	अश्वसन्
	अश्वसः/अश्वसीः	अश्वसितम्	अश्वसित
	अश्वसम्	अश्वसिव	अश्वसिम
अ०	अश्वासीत्	अश्वासिष्टाम्	अश्वासिषुः
	अश्वासीः	अश्वासिष्टम्	अश्वासिष्ट
	अश्वासिषम्	अश्वासिष्व	अश्वासिष्म
अ०	अश्वसीत्	अश्वसिष्टाम्	अश्वसिषुः, इत्यादि
प०	शश्वास	शश्वसतुः	शश्वसुः
	शश्वसिथ	शश्वसथुः	शश्वस
	शश्वस/शश्वास	शश्वसिव	शश्वसिम
आ०	श्वस्यात्	श्वस्यास्ताम्	श्वस्यासुः
	श्वस्याः	श्वस्यास्तम्	श्वस्यास्त
	श्वस्यासम्	श्वस्यास्व	श्वस्यास्म
श्व०	श्वसिता	श्वसितारौ	श्वसितारः
	श्वसितासि	श्वसितास्थः	श्वसितास्थ
	श्वसितास्मि	श्वसितास्वः	श्वसितास्मः

भ०	श्वसिष्यति	श्वसिष्यतः	श्वसिष्यन्ति
	श्वसिष्यसि	श्वसिष्यथः	श्वसिष्यथ
	श्वसिष्यामि	श्वसिष्यावः	श्वसिष्यामः
क्रि०	अश्वसिष्यत्	अश्वसिष्यताम्	अश्वसिष्यन्
	अश्वसिष्यः	अश्वसिष्यतम्	अश्वसिष्यत
	अश्वसिष्यम्	अश्वसिष्याव	अश्वसिष्याम

१०९१. जक्षक् (जक्ष्) भक्षहसनयोः।

अयं रुत्पञ्चकस्य पञ्चमो जक्षपञ्चकस्य त्वाद्य इत्युभयकार्यभाक्॥

व०	जक्षिति	जक्षितः	जक्षति
	जक्षिषि	जक्षिथः	जक्षिथ
	जक्षिमि	जक्षिवः	जक्षिमः
स०	जक्ष्यात्	जक्ष्याताम्	जक्ष्युः
	जक्ष्याः	जक्ष्यातम्	जक्ष्यात
	जक्ष्याम्	जक्ष्याव	जक्ष्याम
प०	जक्षितु/जक्षितात्	जक्षिताम्	जक्षतु
	जक्षिहि/जक्षितात्	जक्षितम्	जक्षित
	जक्षाणि	जक्षाव	जक्षाम
ह्य०	अजक्षत्/अजक्षीत्	अजक्षिताम्	अजक्षुः
	अजक्षः/अजक्षीः	अजक्षितम्	अजक्षित
	अजक्षम	अजक्षिव	अजक्षिम
अ०	अजक्षीत्	अजक्षिष्टाम्	अजक्षिषुः
	अजक्षीः	अजक्षिष्टम्	अजक्षिष्ट
	अजक्षिषम्	अजक्षिष्व	अजक्षिष्म
प०	जजक्ष	जजक्षतुः	जजक्षुः
	जजक्षिथ	जजक्षथुः	जजक्ष
	जजक्ष	जजक्षिव	जजक्षिम
आ०	जक्ष्यात्	जक्ष्यास्ताम्	जक्ष्यासुः
	जक्ष्याः	जक्ष्यास्तम्	जक्ष्यास्त
	जक्ष्यासम्	जक्ष्यास्व	जक्ष्यास्म
श्व०	जक्षिता	जक्षितारौ	जक्षितारः
	जक्षितासि	जक्षितास्थः	जक्षितास्थ
	जक्षितास्मि	जक्षितास्वः	जक्षितास्मः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	जक्षिष्यति	जक्षिष्यतः	जक्षिष्यन्ति
	जक्षिष्यसि	जक्षिष्यथः	जक्षिष्यथ
	जक्षिष्यामि	जक्षिष्यावः	जक्षिष्यामः
क्रि०	अजक्षिष्यत्	अजक्षिष्यताम्	अजक्षिष्यन्
	अजक्षिष्यः	अजक्षिष्यतम्	अजक्षिष्यत
	अजक्षिष्यम्	अजक्षिष्याव	अजक्षिष्याम

१०९२. दरिद्राक् (दरिद्रा) दुर्गतौ।

व०	दरिद्राति	दरिद्रितः	दरिद्रति
	दरिद्रासि	दरिद्रिथः	दरिद्रिथ
	दरिद्रामि	दरिद्रिवः	दरिद्रिमः
स०	दरिद्रियात्	दरिद्रियाताम्	दरिद्रियुः
	दरिद्रियाः	दरिद्रियातम्	दरिद्रियात
	दरिद्रियाम्	दरिद्रियाव	दरिद्रियाम
प०	दरिद्रातु/दरिद्रितात्	दरिद्रिताम्	दरिद्रतु
	दरिद्रिहि/दरिद्रितात्	दरिद्रितम्	दरिद्रित
	दरिद्राणि	दरिद्राव	दरिद्राम
ह्य०	अदरिद्रात्	अदरिद्रिताम्	अदरिद्रुः
	अदरिद्राः	अदरिद्रितम्	अदरिद्रित
	अदरिद्राम्	अदरिद्रिव	अदरिद्रिम
अ०	अदरिद्रीत्	अदरिद्रिष्टाम्	अदरिद्रिषुः
	अदरिद्रीः	अदरिद्रिष्टम्	अदरिद्रिष्ट
	अदरिद्रिषम्	अदरिद्रिष्व	अदरिद्रिष्म

तथा

अदरिद्रासीत् अदरिद्रासिष्टाम् अदरिद्रासिषुः इत्यादि।

प०	दरिद्राञ्चकार	दरिद्राञ्चक्रतु	दरिद्राञ्चक्रुः
	दरिद्राञ्चकर्थ	दरिद्राञ्चकथुः	दरिद्राञ्चक्र
	दरिद्राञ्चकार/चकर	दरिद्राञ्चकृव	दरिद्राञ्चकृम
	दरिद्राम्बभूव/दरिद्रामास		
	ददरिद्रौ	ददरिद्रतुः	ददरिद्रुः
	ददरिद्रिथ	ददरिद्रथुः	ददरिद्र
	ददरिद्रौ	ददरिद्रिव	ददरिद्रिम
आ०	दरिद्र्यात्	दरिद्र्यास्ताम्	दरिद्र्यासुः
	दरिद्र्याः	दरिद्र्यास्तम्	दरिद्र्यास्त
	दरिद्र्यासम्	दरिद्र्यास्व	दरिद्र्यास्म
श्व०	दरिद्रिता	दरिद्रितारौ	दरिद्रितारः
	दरिद्रितासि	दरिद्रितास्थः	दरिद्रितास्थ
	दरिद्रितास्मि	दरिद्रितास्वः	दरिद्रितास्मः
भ०	दरिद्रिष्यति	दरिद्रिष्यतः	दरिद्रिष्यन्ति
	दरिद्रिष्यसि	दरिद्रिष्यथः	दरिद्रिष्यथ
	दरिद्रिष्यामि	दरिद्रिष्यावः	दरिद्रिष्यामः
क्रि०	अदरिद्रिष्यत्	अदरिद्रिष्यताम्	अदरिद्रिष्यन्
	अदरिद्रिष्यः	अदरिद्रिष्यतम्	अदरिद्रिष्यत
	अदरिद्रिष्यम्	अदरिद्रिष्याव	अदरिद्रिष्याम

१०९३. जागृक् (जागृ) निद्राक्षये।

व०	जागर्त्ति	जागृतः	जाग्रति
	जागर्षि	जागृथः	जागृथ
	जागर्मि	जागृवः	जागृमः
स०	जागृयात्	जागृयाताम्	जागृयुः
	जागृयाः	जागृयातम्	जागृयात
	जागृयाम्	जागृयाव	जागृयाम
प०	जागर्त्तु/जागृतात्	जागृताम्	जागृतु
	जागृहि/जागृतात्	जागृतम्	जागृत
	जागराणि	जागराव	जागराम
ह्य०	अजागः	अजागृताम्	अजागरुः
	अजागः	अजागृतम्	अजागृत
	अजागरम्	अजागृव	अजागृम
अ०	अजागरीत्	अजागरिष्टाम्	अजागरिषुः
	अजागरीः	अजागरिष्टम्	अजागरिष्ट
	अजागरिषम्	अजागरिष्व	अजागरिष्म
प०	जजागार	जजागरतुः	जजागरुः
	जजागरिथ	जजागरथुः	जजागर
	जजागार/जजागर	जजागरिव	जजागरिम
	जागरांचकार	जागरामास	जागराम्बभूव।
आ०	जागर्यात्	जागर्यास्ताम्	जागर्यासुः
	जागर्याः	जागर्यास्तम्	जागर्यास्त
	जागर्यासम्	जागर्यास्व	जागर्यास्म
श्व०	जागरिता	जागरितारौ	जागरितारः
	जागरितासि	जागरितास्थः	जागरितास्थ
	जागरितास्मि	जागरितास्वः	जागरितास्मः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	जागरिष्यति	जागरिष्यत:	जागरिष्यन्ति
	जागरिष्यसि	जागरिष्यथ:	जागरिष्यथ
	जागरिष्यामि	जागरिष्याव:	जागरिष्याम:
क्रि०	अजागरिष्यत्	अजागरिष्यताम्	अजागरिष्यन्
	अजागरिष्य:	अजागरिष्यतम्	अजागरिष्यत
	अजागरिष्यम्	अजागरिष्याव	अजागरिष्याम

१०९४. चकासृक् (चकास्) दीप्तौ।

व०	चकास्ति	चकास्त:	चकासति
	चकास्सि	चकास्थ:	चकास्थ
	चकास्मि	चकास्व:	चकास्म:
स०	चकास्यात्	चकास्याताम्	चकास्यु:
	चकास्या:	चकास्यातम्	चकास्यात
	चकास्याम्	चकास्याव	चकास्याम
प०	चकास्तु/चकास्तात्	चकास्ताम्	चकास्तु
	चकासतु/चकाद्धि	चकाधि	चकास्तम्/चकास्त
	चकासानि	चकासाव	चकासाम
ह्य०	अचकात्	अचकास्ताम्	अचकासु:
	अचका:/अचकात्(द्)	अचकास्तम्	अचकास्त
	अचकासम्	अचकास्व	अचकास्म
अ०	अचकासीत्	अचकासिष्टाम्	अचकासिषु:
	अचकासी:	अचकासिष्टम्	अचकासिष्ट
	अचकासिषम्	अचकासिष्व	अचकासिष्म
प०	चकासाञ्चकार	चकासाञ्चक्रतु:	चकासाञ्चक्रु:
	चकासाञ्चकर्थ	चकासाञ्चक्रथु:	चकासाञ्चक्र
	चकासाञ्चकार/चकर	चकासाञ्चकृव	चकासाञ्चकृम
आ०	चकास्यात्	चकास्यास्ताम्	चकास्यासु:
	चकास्या:	चकास्यास्तम्	चकास्यास्त
	चकास्यासम्	चकास्यास्व	चकास्यास्म
श्व०	चकासिता	चकासितारौ	चकासितार:
	चकासितासि	चकासितास्थ:	चकासितास्थ
	चकासितास्मि	चकासितास्व:	चकासितास्म:
भ०	चकासिष्यति	चकासिष्यत:	चकासिष्यन्ति
	चकासिष्यसि	चकासिष्यथ:	चकासिष्यथ
	चकासिष्यामि	चकासिष्याव:	चकासिष्याम:
क्रि०	अचकासिष्यत्	अचकासिष्यताम्	अचकासिष्यन्
	अचकासिष्य:	अचकासिष्यतम्	अचकासिष्यत
	अचकासिष्यम्	अचकासिष्याव	अचकासिष्याम

१०९५. शासूक् (शासू) अनुशिष्टौ।

अनुशिष्टिर्नियोग:।

व०	शास्ति	शास्त:	शासति
	शास्सि	शिष्ट:	शिष्ट
	शास्मि	शिष्व:	शिष्म:
स०	शिष्यात्	शिष्याताम्	शिष्यु:
	शिष्या:	शिष्यातम्	शिष्यात
	शिष्याम्	शिष्याव	शिष्याम
प०	शास्तु/शिष्टात्	शिष्टाम्	शासतु
	शाधि/शिष्टात्	शिष्टम्	शिष्ट
	शासानि	शासाव	शासाम
ह्य०	अशात्	अशिष्टाम्	अशासु:
	अशासत्	अशिष्टम्	अशिष्ट
	अशासम्	अशिष्व	अशिष्म
अ०	अशिषत्	अशिषताम्	अशिषन्
	अशिष:	अशिषतम्	अशिषत
	अशिषम्	अशिषाव	अशिषाम
प०	शशास	शशासतु:	शशासु:
	शशासिथ	शशासथु:	शशास
	शशास/शशस	शशासिव	शशासिम
आ०	शिष्यात्	शिष्यास्ताम्	शिष्यासु:
	शिष्या:	शिष्यास्तम्	शिष्यास्त
	शिष्यासम्	शिष्यास्व	शिष्यास्म
श्व०	शासिता	शासितारौ	शासितार:
	शासितासि	शासितास्थ:	शासितास्थ
	शासितास्मि	शासितास्व:	शासितास्म:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	शासिष्यति	शासिष्यतः	शासिष्यन्ति
	शासिष्यसि	शासिष्यथः	शासिष्यथ
	शासिष्यामि	शासिष्यावः	शासिष्यामः
क्रि०	अशासिष्यत्	अशासिष्यताम्	अशासिष्यन्
	अशासिष्यः	अशासिष्यतम्	अशासिष्यत
	अशासिष्यम्	अशासिष्याव	अशासिष्याम

अथ चान्ताः।

१०९६. वचंक् (वच्) भाषणे।

व०	वक्ति	वक्तः	वचन्ति
	वक्षि	वक्थः	वक्थ
	वच्मि	वच्वः	वच्मः
स०	वच्यात्	वच्याताम्	वच्युः
	वच्याः	वच्यातम्	वच्यात
	वच्याम्	वच्याव	वच्याम
प०	वक्तु/वक्तात्	वक्ताम्	वचन्तु
	वग्धि/वक्तात्	वक्तम्	वक्त
	वचानि	वचाव	वचाम
ह्य०	अवक्,ग्	अवक्ताम्	अवचन्
	अवक्,ग्	अवक्तम्	अवक्त
	अवचम्	अवच्व	अवच्म
अ०	अवोचत्	अवोचताम्	अवोचन्
	अवोचः	अवोचतम्	अवोचत
	अवोचम्	अवोचाव	अवोचाम्
प०	उवाच	ऊचतुः	ऊचुः
	उवचिथ/उवक्थ	ऊचथुः	ऊच
	उवाच/उवच	ऊचिव	ऊचिम
आ०	उच्यात्	उच्यास्ताम्	उच्यासुः
	उच्याः	उच्यास्तम्	उच्यास्त
	उच्यासम्	उच्यास्व	उच्यास्म
श्व०	वक्ता	वक्तारौ	वक्तारः
	वक्तासि	वक्तास्थः	वक्तास्थ
	वक्तास्मि	वक्तास्वः	वक्तास्मः

भ०	वक्ष्यति	वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति
	वक्ष्यसि	वक्ष्यथः	वक्ष्यथ
	वक्ष्यामि	वक्ष्यावः	वक्ष्यामः
क्रि०	अवक्ष्यत्	अवक्ष्यताम्	अवक्ष्यन्
	अवक्ष्यः	अवक्ष्यतम्	अवक्ष्यत
	अवक्ष्यम्	अवक्ष्याव	अवक्ष्याम

अथ मान्ताः

१०९७. मृजौक् (मृज्) भुद्धौ।

व०	मार्ष्टि	मृष्टः	मृजन्ति/मार्जन्ति
	मार्क्षि	मृष्टः	मृष्ट
	मार्ज्मि	मृज्वः	मृज्मः
स०	मृज्यात्	मृज्याताम्	मृज्युः
	मृज्याः	मृज्यातम्	मृज्यात
	मृज्याम्	मृज्याव	मृज्याम
प०	मार्ष्टु/मृष्टात्	मृष्टाम्	मृजन्तु/मार्जन्तु
	मृड्ढि/मृष्टात्	मृष्टम्	मृष्ट
	मार्जानि	मार्जाव	मार्जाम
ह्य०	अमार्ट्-ड्	अमृष्टाम्	अमार्जन्/अमृजन्
	अमार्ट्-ड्	अमृष्टम्	अमृष्ट
	अमार्जम्	अमृज्व	अमृज्म
अ०	अमार्क्षीत्	अमार्ष्टाम्	अमार्क्षुः
	अमार्क्षीः	अमार्ष्टम्	अमार्ष्ट
		तथा	
	अमार्क्षम्	अमार्क्ष्व	अमार्क्ष्म
	अमार्जीत्	अमार्जिष्टाम्	अमार्जिषुः इत्यादि
प०	ममार्ज	ममार्जतुः/ममृजतुः	ममार्जुः/ममृजुः
	ममार्जिथ	ममार्जथुः/ममृजथुः	ममार्ज/ममृज
	ममार्ज	ममार्जिव/ममृजिव	ममार्जिम/ममृजिम
आ०	मृज्यात्	मृज्यास्ताम्	मृज्यासुः
	मृज्याः	मृज्यास्तम्	मृज्यास्त
	मृज्यासम्	मृज्यास्व	मृज्यास्म
श्व०	मार्ष्टा	मार्ष्टारौ	मार्ष्टारः
	मार्ष्टासि	मार्ष्टास्थः	मार्ष्टास्थ
	मार्ष्टास्मि	मार्ष्टास्वः	मार्ष्टास्मः
		तथा	
	मार्जिता	मार्जितारौ	मार्जितारः इत्यादि
भ०	मार्क्ष्यति	मार्क्ष्यतः	मार्क्ष्यन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	माक्ष्यसि	माक्ष्यथः	माक्ष्यथ
	माक्ष्यामि	माक्ष्यावः	माक्ष्यामः

तथा

	मार्जिष्यति	मार्जिष्यतः	मार्जिष्यन्ति इ०
क्रि०	अमाक्ष्यत्	अमाक्ष्यताम्	अमाक्ष्यन्
	अमाक्ष्यः	अमाक्ष्यतम्	अमाक्ष्यत
	अमाक्ष्यम्	अमाक्ष्याव	अमाक्ष्याम

तथा

	अमार्जिष्यत्	अमार्जिष्यताम्	अमार्जिष्यन् इत्यादि।

अथ तान्ताः।

१०९८. सस्तुक् (संस्त्) स्वप्ने।

व०	संस्ति/संस्ति	संस्तः/संस्तः	संस्तन्ति
	संस्मिस/संस्तिस	संस्थः/संस्थः	संस्थ/संस्थ
	संस्मि	संस्वः	संस्मः
स०	संस्यात्	संस्याताम्	संस्युः
प०	संस्तु/तु/संस्तात्/तात्	संस्ताम्	संस्तन्तु
	संन्धि/द्धि/संस्तात्/तात्	संस्तम्	संस्त
	संस्तानि	संस्ताव	संस्ताम
ह्य०	असन्	असंस्ताम्/स्ताम्	असंस्तन्
अ०	असंस्तीत्	असंस्तिष्टाम्	असंस्तिषुः
प०	ससंस्त	ससंस्ततुः	ससंस्तुः
आ०	संस्यात्	संस्यास्ताम्	संस्यासुः
श्व०	संस्तिता	संस्तितारौ	संस्तितारः
भ०	संस्तिष्यति	संस्तिष्यतः	संस्तिष्यन्ति
क्रि०	असंस्तिष्यत्	असंस्तिष्यताम्	असंस्तिष्यन्

अथ दान्ताः।

१०९९. विदक् (विद्) ज्ञाने।

व०	वेत्ति	वित्तः	विदन्ति
व०	वेद	विदतुः	विदुः
स०	विद्यात्	विद्याताम्	विद्युः
प०	वेत्तु/वित्तात्	वित्ताम्	विदन्तु
	विद्धि/वित्तात्	वित्तम्	वित्त
	वेदानि	वेदाव	वेदाम
	विदाङ्करोतु/कुरुताम्	विदाङ्कुर्वन्तु	विदाङ्कुरुतात् इ०
ह्य०	अवेत्-द्	अवित्ताम्	अविदुः
	अवेः/अवेत्-द्	अवित्तम्	अवित्त
	अवेदम्	अविद्व	अविद्म
अ०	अवेदीत्	अवेदिष्टाम्	अवेदिषुः
	अवेदीः	अवेदिष्टम्	अवेदिष्ट
	अवेदिषम्	अवेदिष्व	अवेदिष्म
प०	विदाञ्चकार	विदाञ्चक्रतुः	विदाञ्चक्रुः इत्यादि

तथा

प०	विवेद	विविदतुः	विविदुः
आ०	विद्यात्	विद्यास्ताम्	विद्यासुः
श्व०	वेदिता	वेदितारौ	वेदितारः
भ०	वेदिष्यति	वेदिष्यतः	वेदिष्यन्ति
क्रि०	अवेदिष्यत्	अवेदिष्यताम्	अवेदिष्यन्

अथ नान्तोऽनिट् च।

११००. हनंक् (हन्) हिंसागत्योः।

व०	हन्ति	हतः	हनन्ति
	हंसि	हथः	हथ
	हन्मि	हन्वः	हन्मः
स०	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
	हन्याम्	हन्याव	हन्याम
प०	हन्तु/हतात्	हताम्	हनन्तु
	जहि/हतात्	हतम्	हत
	हनानि	हनाव	हनाम
ह्य०	अहन्	अहताम्	अहनन्
	अहन्	अहतम्	अहत
	अहनतम्	अहन्व	अहन्म
अ०	अवधीत्	अवधिष्टाम्	अवधिषुः
	अवधीः	अवधिष्टम्	अवधिष्ट
	अवधिषम्	अवधिष्व	अवधिष्म
प०	जघान	जघ्नतु	जघ्नुः
	जघनिथ/जघन्य	जघ्नथुः	जघ्न
	जघान/जघन	जघ्निव	जघ्निम
आ०	वध्यात्	वध्यास्ताम्	वध्यासुः
	वध्याः	वध्यास्तम्	वध्यास्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	वध्यासम्	वध्यास्व	वध्यास्म
श्व०	हन्ता	हन्तारौ	हन्तारः
	हन्तासि	हन्तास्थः	हन्तास्थ
	हन्तास्मि	हन्तास्वः	हन्तास्मः
भ०	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः
क्रि०	अहनिष्यत्	अहनिष्यताम्	अहनिष्यन्
	अहनिष्यः	अहनिष्यतम्	अहनिष्यत
	अहनिष्यम्	अहनिष्याव	अहनिष्याम

अथ शान्तः सेट् च।

११०१. वशक् (वश्) कान्तिरिच्छा।

व०	वष्टि	उष्टः	उशन्ति
	वक्षि	उष्टः	उष्ट
	वश्मि	उश्वः	उश्मः
स०	उश्यात्	उश्याताम्	उश्युः
	उश्याः	उश्यातम्	उश्यात
	उश्याम्	उश्याव	उश्याम
प०	वष्टु/उष्टात्	उष्टाम्	उशन्तु
	उड्ढि/उष्टात्	उष्टम्	उष्ट
	वशानि	वशाव	वशाम
ह्य०	अवट्/ड्	औष्टाम्	औशन्
	अवट्/ड्	औष्टम्	औष्ट
	अवशम्	औश्व	औश्म
अ०	अवाशीत्	अवाशिष्टाम्	अवाशिषुः
	अवाशीः	अवाशिष्टम्	अवाशिष्ट
	अवाशिषम्	अवाशिष्व	अवाशिष्म
		तथा	
	अवशीत्	अवशिष्टाम्	अवशिषुः
	अवशीः	अवशिष्टम्	अवशिष्ट
	अवशिषम्	अवशिष्व	अवशिष्म
प०	उवाश	ऊशतुः	ऊशुः
	उवशिथ	ऊशथुः	ऊश
	उवाश/उवश	ऊशिव	ऊशिम
आ०	उश्यात्	उश्यास्ताम्	उश्यासुः
	उश्याः	उश्यास्तम्	उश्यास्त
	उश्यासम्	उश्यास्व	उश्यास्म
श्व०	वशिता	वशितारौ	वशितारः
	वशितासि	वशितास्थः	वशितास्थ
	वशितास्मि	वशितास्वः	वशितास्मः
भ०	वशिष्यति	वशिष्यतः	वशिष्यन्ति
	वशिष्यसि	वशिष्यथः	वशिष्यथ
	वशिष्यामि	वशिष्यावः	वशिष्यामः
क्रि०	अवशिष्यत्	अवशिष्यताम्	अवशिष्यन्
	अवशिष्यः	अवशिष्यतम्	अवशिष्यत
	अवशिष्यम्	अवशिष्याव	अवशिष्याम

अथ सान्तौ द्वौ सेटौ च।

११०२. असक् (अस्) भुवि।

भवनं भूः सत्ता।

व०	अस्ति	स्तः	सन्ति
स०	स्यात्	स्याताम्	स्युः
प०	अस्तु/स्तात्	स्ताम्	सन्तु
	एधि/स्तात्	स्तम्	स्त
	असानि	असाव	असाम
ह्य०	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
अ०	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
प०	बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
आ०	भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः
श्व०	भविता	भवितारौ	भवितारः
भ०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
क्रि०	अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्

११०३. षसक् (सस्) स्वप्ने।

व०	सस्ति	सस्तः	ससन्ति
स०	सस्यात्	सस्याताम्	सस्युः
प०	सस्तु/सस्तात्	सस्ताम्	ससन्तु
ह्य०	असत्-द्	असस्ताम्	अससन्
अ०	असासीत्	असासिष्टाम्	असासिषुः
	अससीत्	अससिष्टाम्	अससिषुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	ससास	सेसतुः	सेसुः
आ०	सस्यात्	सस्यास्ताम्	सस्यासुः
श्व०	ससिता	ससितारौ	ससितारः
भ०	ससिष्यति	ससिष्यतः	ससिष्यन्ति
क्रि०	असससिष्यत्	असससिष्यताम्	असससिष्यन्[1]

॥अथात्मनेपदिनः॥

११०४. ईङ्क् (इ) अध्ययने।

इङिकोरधिनावश्यंभावी योगः। यदाह- कश्चित्तमनुवर्तते।

व०	अधीते	अधीते	अधीयते
	अधीषे	अधीथे	अधीध्वे
	अधीये	अधीवहे	अधीमहे
स०	अधीयीत	अधीयीयाताम्	अधीयीरन्
	अधीयीथाः	अधीयीयाथाम्	अधीयीध्वम्
	अधीयीय	अधीयीवहि	अधीयीमहि
प०	अधीताम्	अधीयाताम्	अधीयताम
	अधीष्व	अधीयाथाम	अधीध्वम
	अध्ययै:	अध्यायवहै	अध्यायमहै
ह्य०	अध्यैत	अध्यैयाताम्	अध्यैयत
	अध्यैथाः	अध्यैयाथाम	अध्यैध्वम्
	अध्यैयि	अध्यैवहि	अध्यैमहि
अ०	अध्यगीष्ट	अध्यगीषाताम्	अध्यगीषत
	अध्यगीष्ठाः	अध्यगीषाथाम्	अध्यगीढ्वम्/ध्वम्
	अध्यगीषि	अध्यगीष्वहि	अध्यगीष्महि
		तथा	
	अध्यैष्ट	अध्यैषाताम्	अध्यैषत
	अध्यैष्ठाः	अध्यैषाथाम्	अध्यैढ्वम्/ध्वम्
	अध्यैषि	अध्यैष्वहि	अध्यैष्महि
प०	अधिजगे	अधिजगाते	अधिजगिरे
	अधिजगिषे	अधिजगाथे	अधिजगिध्वे
	अधिजगे	अधिजगिवहे	अधिजगिमहे
आ०	अध्येषीष्ट	अध्येषीयास्ताम्	अध्येषीरन्
	अध्येषीष्ठाः	अध्येषीयास्थाम्	अध्येषीध्वम्
	अध्येषीय	अध्येषीवहि	अध्येषीमहि
श्व०	अध्येता	अध्येतारौ	अध्येतारः
	अध्येतासे	अध्येतासाथे	अध्येताध्वे
	अध्येताहे	अध्येतास्वहे	अध्येतास्महे
भ०	अध्येष्यते	अध्येष्येते	अध्येष्यते
	अध्येष्यसे	अध्येष्येथे	अध्येष्यध्वे
	अध्येष्ये	अध्येष्यावहे	अध्येष्यामहे
क्रि०	अध्यगीष्यत	अध्यगीष्येताम्	अध्यगीष्यत
	अध्यगीष्यथाः	अध्यगीष्येथाम्	अध्यगीष्यध्वम्
	अध्यगीष्ये	अध्यगीष्यावहि	अध्यगीष्यामहि
क्रि०	अध्यैष्यत	अध्यैष्यताम्	अध्यैष्यन्त,इत्यादि

११०५. शिङ् (शि) स्वप्ने।

व०	शेते	शेयाते	शेरते
	शेषे	शथे	शेध्वे
	शेये	शेवहे	शेमहे
स०	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्
	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
	शयीय	शयीवहि	शयीमहि
प०	शेताम्	शयाताम्	शेरताम
	शेष्व	शयाथाम	शेध्वम
	शयै:	शयावहै	शयामहै
ह्य०	अशेत	अशयाताम्	अशेरत
	अशेथाः	अशयाथाम	अशेध्वम्
	अशयि	अशेवहि	अशेमहि
अ०	अशयिष्ट	अशयिषाताम्	अशयिषत
	अशयिष्ठाः	अशयिषाथाम्	अशयिढ्वम्/ध्वम्
	अशयिषि	अशयिष्वहि	अशयिष्महि
प०	शिशाय	शिश्यतुः	शिश्युः
	शिशयिथ	शिश्यथुः	शिश्य
	शिशाय/शिशय	शिश्यिव	शिश्यिम
आ०	शयिषीष्ट	शयिषीयास्ताम्	शयिषीरन्
	शयिषीष्ठाः	शयिषीयास्थाम्	शयिषीध्वम्
	शयिषीय	शयिषीवहि	शयिषीमहि
श्व०	शयिता	शयितारौ	शयितारः
	शयितासे	शयितासाथे	शयिताध्वे

---

१. यङ्लुक् च। सर्वे धातवो यङ्लुबन्ताः कित्करणाददादौ परस्मैपदिनश्च विज्ञेयाः। तेषां रूपाणि च प्रक्रियाप्रकरणे प्रकटिष्यन्ते इति अदादौ परस्मैभाषाः॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	शयिताहे	शयितास्वहे	शयितास्मिहे
भ०	शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यते
	शयिष्यसे	शयिष्येथे	शयिष्यध्वे
	शयिष्ये	शयिष्यावहे	शयिष्यामहे
क्रि०	अशयिष्यत	अशयिष्येताम्	अशयिष्यत
	अशयिष्यथा:	अशयिष्येथाम्	अशयिष्यध्वम्
	अशयिष्ये	अशयिष्यावहि	अशयिष्यामहि

दीधीङ् दीप्तिदेवनयो:। वेवीङ्वीसमानार्थ एतावपि केचित्पठन्ति। छान्दसत्वादुपेक्षितौ।

११०६. ह्नुङक् (ह्नु) अपनयने।

अपनयनमपलाप:।

व०	ह्नुते	ह्नुवाते	ह्नुवते
	ह्नुषे	ह्नुवाथे	ह्नुध्वे
	ह्नुवे	ह्नुवहे	ह्नुमहे
स०	ह्नुवीत	ह्नुवीयाताम्	ह्नुवीरन्
	ह्नुवीथा:	ह्नुवीयाथाम्	ह्नुवीध्वम्
	ह्नुवीय	ह्नुवीवहि	ह्नुवीमहि
प०	ह्नुताम्	ह्नुवाताम्	ह्नुवताम्
	ह्नुष्व	ह्नुवाथाम्	ह्नुध्वम
	ह्नवै:	ह्नवावहै	ह्नवामहै
ह्य०	अह्नुत	अह्नुवाताम्	अह्नुवत
	अह्नुथा:	अह्नुवाथाम्	अह्नुध्वम्
	अह्नुवि	अह्नुवहि	अह्नुमहि
अ०	अह्नोष्ट	अह्नोषाताम्	अह्नोषत
	अह्नोयिष्ठा:	अह्नोषाथाम्	अह्नोड्वम्/ध्वम्
	अह्नोषि	अह्नोष्वहि	अह्नोष्महि
प०	जुह्नुवे	जुह्नुवाते	जुह्नुविरे
	जुह्नुविषे	जुह्नुवाथे	जुह्नुविढ्वे/जुह्नुविध्वे
	जुह्नुवे	जुह्नुविहे	जुह्नुमिहे
आ०	ह्नोषीष्ट	ह्नोषीयास्ताम्	ह्नोषीरन्
	ह्नोषीष्ठा:	ह्नोषीयास्थाम्	ह्नोषीध्वम्
	ह्नोषीय	ह्नोषीवहि	ह्नोषीमहि
श्व०	ह्नोता	ह्नोतारौ	ह्नोतार:
	ह्नोतासे	ह्नोतासाथे	ह्नोताध्वे
	ह्नोताहे	ह्नोतास्वहे	ह्नोतास्मिहे
भ०	ह्नोष्यते	ह्नोष्येते	ह्नोष्यते
	ह्नोष्यसे	ह्नोष्येथे	ह्नोष्यध्वे
	ह्नोष्ये	ह्नोष्यावहे	ह्नोष्यामहे
क्रि०	अह्नोष्यत	अह्नोष्येताम्	अह्नोष्यत
	अह्नोष्यथा:	अह्नोष्येथाम्	अह्नोष्यध्वम्
	अह्नोष्ये	अह्नोष्यावहि	अह्नोष्यामहि

अत: परमूदन्त: सेट् च।

११०७. षूङैक् (सु) प्राणिगर्भविमोचने।

व०	सूते	सूवाते	सूवते
स०	सूवीत	सूवीयाताम्	सूवीरन्
प०	सूताम्	सूवाताम्	सूवताम्
ह्य०	असूत	असूवाताम्	असूवत
अ०	असविष्ट	असविषाताम्	असविषत
	असोष्ट	असोषाताम्	असोषत
प०	सुषुवे	सुषुवाते	सुषुविरे
आ०	सविषीष्ट	सविषीयास्ताम्	सविषीरन्
	सोषीष्ट	सोषीयास्ताम्	सोषीरन्
श्व०	सविता	सवितारौ	सवितार:
	सोता	सोतारौ	सोतार:
भ०	सविष्यते	सविष्येते	सविष्यते
	सोष्यते	सोष्येते	सोष्यते
क्रि०	असविष्यत	असविष्येताम्	असविष्यत
	असोष्यत	असोष्येताम्	असोष्यत

अथ चान्त: सेट् च।

११०८. पृचैङ् (पृच्) सम्पर्चने

सम्पर्चनं मिश्रणम्।

व०	पृक्ते	पृचाते	पृचते
स०	पृचीत	पृचीयाताम्	पृचीरन्
प०	पृक्ताम्	पृचाताम्	पृचताम
ह्य०	अपृक्त	अपृचाताम्	अपृचत
अ०	अपर्चिष्ट	अपर्चिषाताम्	अपर्चिषत
प०	पपृचे	पपृचाते	पपृचिरे
आ०	पर्चिषीष्ट	पर्चिषीयास्ताम्	पर्चिषीरन्
श्व०	पर्चिता	पर्चितारौ	पर्चितार:
भ०	पर्चिष्यते	पर्चिष्येते	पर्चिष्यते
क्रि०	अपर्चिष्यत	अपर्चिष्येताम्	अपर्चिष्यत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ जान्त: सेट्श्च।

११०९. पृजुङक् (पृञ्ज्) सम्पचने।

मिश्रण इत्यर्थ:।

व०	पृङ्क्ते	पृञ्जाते	पृञ्जते
स०	पृञ्जीत	पृञ्जीयाताम्	पृञ्जीरन्
पृ०	पृङ्क्ताम्	पृञ्जाताम्	पृञ्जताम्
ह्य०	अपृङ्क्त	अपृञ्जाताम्	अपृञ्जत
अ०	अपृञ्जिष्ट	अपृञ्जिषाताम्	अपृञ्जिषत
प०	पपृञ्जे	पपृञ्जाते	पपृञ्जिरे
आ०	पृञ्जिषीष्ट	पृञ्जिषीयास्ताम्	पृञ्जिषीरन्
श्व०	पृञ्जिता	पृञ्जितारौ	पृञ्जितार:
भ०	पृञ्जिष्यते	पृञ्जिष्येते	पृञ्जिष्यते
क्रि०	अपृञ्जिष्यत	अपृञ्जिष्येताम्	अपृञ्जिष्यत

१११०. पिजुक् (पिञ्ज्) सम्पचने।

मिश्रण इत्यर्थ:।

व०	पिङ्क्ते	पिञ्जाते	पिञ्जते
स०	पिञ्जीत	पिञ्जीयाताम्	पिञ्जीरन्
पि०	पिङ्क्ताम्	पिञ्जाताम्	पिञ्जताम्
ह्य०	अपिङ्क्त	अपिञ्जाताम्	अपिञ्जत
अ०	अपिञ्जिष्ट	अपिञ्जिषाताम्	अपिञ्जिषत
प०	पिपिञ्जे	पिपिञ्जाते	पिपिञ्जिरे
आ०	पिञ्जिषीष्ट	पिञ्जिषीयास्ताम्	पिञ्जिषीरन्
श्व०	पिञ्जिता	पिञ्जितारौ	पिञ्जितार:
भ०	पिञ्जिष्यते	पिञ्जिष्येते	पिञ्जिष्यते
क्रि०	अपिञ्जिष्यत	अपिञ्जिष्येताम्	अपिञ्जिष्यत

११११. वृजैकि (वृज्) वर्जने।

व०	वृक्ते	वृजाते	वृजते
	वृक्षे	वृजाथे	वृग्ध्वे
	वृजे	वृज्वहे	वृज्महे
स०	वृजीत	वृजीयाताम्	वृजीरन्
	वृजीथा:	वृजीयाथाम्	वृजीध्वम्
	वृजीय	वृजीवहि	वृजीमहि
प०	वृक्ताम्	वृजाताम्	वृजताम्
	वृक्ष्व	वृजाथाम्	वृग्ध्वम
	वर्जै	वर्जावहै	वर्जामहै
ह्य०	अवृक्त	अवृजाताम्	अवृजत
	अवृक्था:	अवृजाथाम्	अवृग्ध्वम्
	अवृजि	अवृज्वहि	अवृज्महि
अ०	अवर्जिष्ट	अवर्जिषाताम्	अवर्जिषत
	अवर्जियिष्ठा:	अवर्जिषाथाम्	अवर्जिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अवर्जिषि	अवर्जिष्वहि	अवर्जिष्महि
व०	ववृजे	ववृजाते	ववृजिरे
	ववृजिषे	ववृजाथे	ववृजिध्वे
	ववृजे	ववृजिवहे	ववृजिमहे
आ०	वर्जिषीष्ट	वर्जिषीयास्ताम्	वर्जिषीरन्
	वर्जिषीष्ठा:	वर्जिषीयास्थाम्	वर्जिषीध्वम्
	वर्जिषीय	वर्जिषीवहि	वर्जिषीमहि
श्व०	वर्जिता	वर्जितारौ	वर्जितार:
	वर्जितासे	वर्जितासाथे	वर्जिताध्वे
	वर्जिताहे	वर्जितास्वहे	वर्जितास्मिहे
भ०	वर्जिष्यते	वर्जिष्येते	वर्जिष्यते
	वर्जिष्यसे	वर्जिष्येथे	वर्जिष्यध्वे
	वर्जिष्ये	वर्जिष्यावहे	वर्जिष्यामहे
क्रि०	अवर्जिष्यत	अवर्जिष्येताम्	अवर्जिष्यत
	अवर्जिष्यथा:	अवर्जिष्येथाम्	अवर्जिष्यध्वम्
	अवर्जिष्ये	अवर्जिष्यावहि	अवर्जिष्यामहि

१११२. णिजुकि (निज्) शुद्धौ।

व०	निङ्क्ते	निञ्जाते	निञ्जते
स०	निञ्जीत	निञ्जीयाताम्	निञ्जीरन्
नि०	निङ्क्ताम्	निञ्जाताम्	निञ्जताम्
ह्य०	अनिङ्क्त	अनिञ्जाताम्	अनिञ्जत
अ०	अनिञ्जिष्ट	अनिञ्जिषाताम्	अनिञ्जिषत
प०	निनिञ्जे	निनिञ्जाते	निनिञ्जिरे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	निञ्जिषीष्ट	निञ्जिषीयास्ताम्	निञ्जिषीरन्
श्व०	निञ्जिता	निञ्जितारौ	निञ्जितार:
भ०	निञ्जिष्यते	निञ्जिष्येते	निञ्जिष्यते
क्रि०	अनिञ्जिष्यत	अनिञ्जिष्येताम्	अनिञ्जिष्यत

१११३. शिजुकि (शिञ्ज्) अव्यक्ते शब्दे।

व०	शिङ्क्ते	शिञ्जाते	शिञ्जते
स०	शिञ्जीत	शिञ्जीयाताम्	शिञ्जीरन्
प०	शिङ्क्ताम्	शिञ्जाताम्	शिञ्जताम्
ह्य०	अशिङ्क्त	अशिञ्जाताम्	अशिञ्जत
अ०	अशिञ्जिष्ट	अशिञ्जिषाताम्	अशिञ्जिषत
प०	शिशिञ्जे	शिशिञ्जाते	शिशिञ्जिरे
आ०	शिञ्जिषीष्ट	शिञ्जिषीयास्ताम्	शिञ्जिषीरन्
श्व०	शिञ्जिता	शिञ्जितारौ	शिञ्जितार:
भ०	शिञ्जिष्यते	शिञ्जिष्येते	शिञ्जिष्यते
क्रि०	अशिञ्जिष्यत	अशिञ्जिष्येताम्	अशिञ्जिष्यत

॥अथ डान्त: सेट् च॥

१११४. ईडिक् (ईड्) स्तुतौ।

व०	ईट्टे	ईडाते	ईडते
	ईडिषे	ईडाथे	ईडिध्वे
	ईडे	ईड्वहे	ईड्महे
स०	ईडीत	ईडीयाताम्	ईडीरन्
	ईडीथा:	ईडीयाथाम्	ईडीध्वम्
	ईडीय	ईडीवहि	ईडीमहि
प०	ईट्टाम्	ईडाताम्	ईडताम्
	ईडिष्व	ईडाथाम्	ईडिध्वम्
	ईडै	ईडावहै	ईडामहै
ह्य०	ऐट्ट	ऐडाताम्	ऐडत
	ऐट्टा:	ऐडाथाम्	ऐड्ढ्वम्
	ऐडिषि	ऐडिष्वहि	ऐडिष्महि
अ०	ऐडिष्ट	ऐडिषाताम्	ऐडिषत
	ऐडिष्ठा:	ऐडिषाथाम्	ऐडिड्ढ्वम्/ध्वम्
	ऐडिषि	ऐडिष्वहि	ऐडिष्महि
प०	ईडाञ्चक्रे	ईडाञ्चक्राते	ईडाञ्चक्रिरे
	ईडाञ्चकृषे	ईडाञ्चक्राथे	ईडाञ्चकृढ्वे
	ईडाञ्चक्रे	ईडाञ्चकृवहे	ईडाञ्चकृमहे
	इडाम्बभूव/इडामास		
आ०	ईडिषीष्ट	ईडिषीयास्ताम्	ईडिषीरन्
	ईडिषीष्ठा:	ईडिषीयास्थाम्	ईडिषीध्वम्
	ईडिषीय	ईषिषीवहि	ईडिषीमहि
श्व०	ईडिता	ईडितारौ	ईडितार:
	ईडितासे	ईडितासाथे	ईडिताध्वे
	ईडिताहे	ईडितास्वहे	ईडितास्मिहे
भ०	ईडिष्यते	ईडिष्येते	ईडिष्यन्ते
	ईडिष्यसे	ईडिष्येथे	ईडिष्यध्वे
	ईडिष्ये	ईडिष्यावहे	ईडिष्यामहे
क्रि०	ऐडिष्यत	ऐडिष्येताम्	ऐडिष्यन्त
	ऐडिष्यथा:	ऐडिष्येथाम्	ऐडिष्यध्वम्
	ऐडिष्ये	ऐडिष्यावहि	ऐडिष्यामहि

॥अथ रान्त: सेट् च॥

१११४. ईरिक् (ईर्) गतिकम्पनयो:।

व०	ईर्त्ते	ईराते	ईरते
	ईर्षे	ईराथे	ईर्ध्वे
	ईरे	ईर्वहे	ईर्महे
स०	ईरीत	ईरीयाताम्	ईरीरन्
	ईरीथा:	ईरीयाथाम्	ईरीध्वम्
	ईरीय	ईरीवहि	ईरीमहि
प०	ईर्ताम्	ईराताम्	ईरताम्
	ईर्ष्व	ईराथाम्	ईर्ध्वम
	ईरै	ईरावहै	ईरामहै
ह्य०	ऐर्त्त	ऐराताम्	ऐरत
	ऐर्था:	ऐराथाम्	ऐर्द्वम्
	ऐरि	ऐर्वहि	ऐर्महि
अ०	ऐरिष्ट	ऐरिषाताम्	ऐरिषत
	ऐरिष्ठा:	ऐरिषाथाम्	ऐरिड्ढ्वम्/ध्वम्
	ऐरिषि	ऐरिष्वहि	ऐरिष्महि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	ईराञ्चक्रे	ईराञ्चक्राते	ईराञ्चक्रिरे
	ईराञ्चकृषे	ईराञ्चक्राथे	ईराञ्चकृढ्वे
	ईराञ्चक्रे	ईराञ्चकृवहे	ईराञ्चकृमहे
	ईरांबभूव/ईरामास		
आ०	ईरिषीष्ट	ईरिषीयास्ताम्	ईरिषीरन्
	ईरिषीष्ठाः	ईरिषीयास्थाम्	ईरिषीध्वम्
	ईरिषीय	ईषिषीवहि	ईरिषीमहि
श्व०	ईरिता	ईरितारौ	ईरितारः
	ईरितासे	ईरितासाथे	ईरिताध्वे
	ईरिताहे	ईरितास्वहे	ईरितास्मिहे
भ०	ईरिष्यते	ईरिष्येते	ईरिष्यन्ते
	ईरिष्यसे	ईरिष्येथे	ईरिष्यध्वे
	ईरिष्ये	ईरिष्यावहे	ईरिष्यामहे
क्रि०	ऐरिष्यत	ऐरिष्येताम्	ऐरिष्यन्त
	ऐरिष्यथाः	ऐरिष्येथाम्	ऐरिष्यध्वम्
	ऐरिष्ये	ऐरिष्यावहि	ऐरिष्यामहि

॥अथ शान्तः सेट् च॥

१११४. ईशिक् (ईश्) स्तुतौ।

व०	ईष्टे	ईशाते	ईशते
	ईशिषे	ईशाथे	ईशिध्वे
	ईशे	ईश्वहे	ईश्महे
स०	ईशीत	ईशीयाताम्	ईशीरन्
	ईशीथाः	ईशीयाथाम्	ईशीध्वम्
	ईशीय	ईशीवहि	ईशीमहि
प०	ईष्टाम्	ईशाताम्	ईशताम्
	ईशिष्व	ईशाथाम्	ईशिध्वम्
	ईशै	ईशावहै	ईशामहै
ह्य०	ऐष्ट	ऐशाताम्	ऐशत
	ऐष्ठाः	ऐशाथाम	ऐड्ढ्वम्
	ऐशि	ऐश्वहि	ऐश्महि
अ०	ऐशिष्ट	ऐशिषाताम्	ऐशिषत
	ऐशिष्ठाः	ऐशिषाथाम्	ऐशिड्ढ्वम्/ध्वम्
	ऐशिषि	ऐशिष्वहि	ऐशिष्महि

प०	ईशाञ्चक्रे	ईशाञ्चक्राते	ईशाञ्चक्रिरे
	ईशाञ्चकृषे	ईशाञ्चक्राथे	ईशाञ्चकृढ्वे
	ईशाञ्चक्रे	ईशाञ्चकृवहे	ईशाञ्चकृमहे
	ईशांबभूव/ईशामास		
आ०	ईशिषीष्ट	ईशिषीयास्ताम्	ईशिषीरन्
	ईशिषीष्ठाः	ईशिषीयास्थाम्	ईशिषीध्वम्
	ईशिषीय	ईषिषीवहि	ईशिषीमहि
श्व०	ईशिता	ईशितारौ	ईशितारः
	ईशितासे	ईशितासाथे	ईशिताध्वे
	ईशिताहे	ईशितास्वहे	ईशितास्मिहे
भ०	ईशिष्यते	ईशिष्येते	ईशिष्यन्ते
	ईशिष्यसे	ईशिष्येथे	ईशिष्यध्वे
	ईशिष्ये	ईशिष्यावहे	ईशिष्यामहे
क्रि०	ऐशिष्यत	ऐशिष्येताम्	ऐशिष्यन्त
	ऐशिष्यथाः	ऐशिष्येथाम्	ऐशिष्यध्वम्
	ऐशिष्ये	ऐशिष्यावहि	ऐशिष्यामहि

॥अथ सान्ताः पञ्च सेटश्च॥

१११७. वसिक् (वस्) आच्छादने।

व०	वस्ते	वसाते	वसते
	वस्से	वसाथे	वद्ध्वे/ध्वे
	वसे	वस्वहे	वस्महे
स०	वसीत	वसीयाताम्	वसीरन्
	वसीथाः	वसीयाथाम्	वसीध्वम्
	वसीय	वसीवहि	वसीमहि
प०	वस्ताम्	वसाताम्	वसताम्
	वस्स्व	वसाथाम्	वद्ध्वम्/ध्वम्
	वसै:	वसावहै	वसामहै
ह्य०	अवस्त	अवसाताम्	अवसत
	अवस्थाः	अवसाथाम	अवद्ध्वम्/ध्वम्
	अवसि	अवस्वहि	अवस्महि
अ०	अवसिष्ट	अवसिषाताम्	अवसिषत
	अवसिष्ठाः	अवसिषाथाम्	अवसिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अवसिषि	अवसिस्वहि	अवसिस्महि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	ववसे	ववसाते	ववसिरे
	ववसिषे	ववसाथे	ववसिध्वे
	ववसे	ववसिवहे	ववसिमहे
आ०	वसिषीष्ट	वसिषीयास्ताम्	वसिषीरन्
	वसिषीष्ठाः	वसिषीयास्थाम्	वसिषीध्वम्
	वसिषीय	वसिषीवहि	वसिषीमहि
श्व०	वसिता	वसितारौ	वसितारः
	वसितासे	वसितासाथे	वसिताध्वे
	वसिताहे	वसितास्वहे	वसितास्मिहे
भ०	वसिष्यते	वसिष्येते	वसिष्यते
	वसिष्यसे	वसिष्येथे	वसिष्यध्वे
	वसिष्ये	वसिष्यावहे	वसिष्यामहे
क्रि०	अवसिष्यत	अवसिष्येताम्	अवसिष्यत
	अवसिष्यथाः	अवसिष्येथाम्	अवसिष्यध्वम्
	अवसिष्ये	अवसिष्यावहि	अवसिष्यामहि

११९८. आङः शासूकि (आ-शास्) इच्छायाम्।

आङ् इत्याङ्पूर्व एवायं प्रयोज्यो न केवलो नाप्यन्योपसर्गपूर्व इत्येवमर्थम्

व०	आशास्ते	आशासाते	आशासते
	आशास्से	आशासाथे	आशाद्ध्वे/ध्वे
	आशासे	आशास्वहे	आशास्महे
स०	आशासीत	आशासीयाताम्	आशासीरन्
	आशासीथाः	आशासीयाथाम्	आशासीध्वम्
	आशासीय	आशासीवहि	आशासीमहि
प०	आशास्ताम्	आशासाताम्	आशासताम्
	आशास्स्व	आशासाथाम्	आशाद्ध्वम्/ध्वम्
	आशासै	आशासावहै	आशासामहै
ह्य०	आशास्त	आशासाताम्	आशासत
	आशास्थाः	आशासाथाम्	आशाद्ध्वम्/ध्वम्
	आशासि	आशास्वहि	आशास्महि
अ०	आशासिष्ट	आशासिषाताम्	आशासिषत
	आशासिष्ठाः	आशासिषाथाम्	आशासिड्ढ्वम्/ध्वम्
	आशासिषि	आशासिष्वहि	आशासिष्महि
प०	आशशासे	आशशासाते	आशशासिरे
	आशशासिषे	आशशासाथे	आशशासिध्वे
	आशशासे	आशशासिवहे	आशशासिमहे
आ०	आशासिषीष्ट	आशासिषीयास्ताम्	आशासिषीरन्
	आशासिषीष्ठाः	आशासिषीयास्थाम्	आशासिषीध्वम्
	आशासिषीय	आशासिषीवहि	आशासिषीमहि
श्व०	आशासिता	आशासितारौ	आशासितारः
	आशासितासे	आशासितासाथे	आशासिताध्वे
	आशासिताहे	आशासितास्वहे	आशासितास्मिहे
भ०	आशासिष्यते	आशासिष्येते	आशासिष्यते
	आशासिष्यसे	आशासिष्येथे	आशासिष्यध्वे
	आशासिष्ये	आशासिष्यावहे	आशासिष्यामहे
क्रि०	आशासिष्यत	आशासिष्येताम्	आशासिष्यत
	आशासिष्यथाः	आशासिष्येथाम्	आशासिष्यध्वम्
	आशासिष्ये	आशासिष्यावहि	आशासिष्यामहि

११९९. आसिक् (आस्) उपवेने।

व०	आस्ते	आसाते	आसते
स०	आसीत	आसीयाताम्	आसीरन्
प०	आस्ताम्	आसाताम्	आसताम्
ह्य०	आस्त	आसाताम्	आसत
अ०	आसिष्ट	आसिषाताम्	आसिषत
प०	आसांचक्रे	आसांचक्राते	आसांचक्रिरे
आ०	आसिषीष्ट	आसिषीयास्ताम्	आसिषीरन्
श्व०	आसिता	आसितारौ	आसितारः
भ०	आसिष्यते	आसिष्येते	आसिष्यते
क्रि०	आसिष्यत	आसिष्येताम्	आसिष्यत

११२०. कसुकि (कंस्) गतिशातनयोः।

व०	कंस्ते	कंसाते	कंसते
स०	कंसीत	कंसीयाताम्	कंसीरन्
प०	कंस्ताम्	कंसाताम्	कंसताम्
ह्य०	अकंस्त	अकंसाताम्	अकंसत
अ०	अकंसिष्ट	अकंसिषाताम्	अकंसिषत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	चकंसे	चकंसाते	चकंसिरे
आ०	कंसिषीष्ट	कंसिषीयास्ताम्	कंसिषीरन्
श्व०	कंसिता	कंसितारौ	कंसितार:
भ०	कंसिष्यते	कंसिष्येते	कंसिष्यते
क्रि०	अकंसिष्यत	अकंसिष्येताम्	अकंसिष्यत

अनुदित्पक्षे (कस्)।

व०	कस्ते	कसाते	कसते, इत्यादि।

तालव्यान्तोऽपीति पक्षे (कश्)।

व०	कष्टे	कशाते	कशते, इत्यादि।

११२१. णिसुकि (निस्) चुम्बने।

व०	निंस्ते	निंसाते	निंसते
	निंस्से	निंसाथे	निंद्ध्वे/ध्वे
	निंसे	निंस्वहे	निंस्महे
स०	निंसीत	निंसीयाताम्	निंसीरन्
	निंसीथा:	निंसीयाथाम्	निंसीध्वम्
	निंसीय	निंसीवहि	निंसीमहि
प०	निंस्ताम्	निंसाताम्	निंसताम्
	निंस्स्व	निंसाथाम्	निंद्ध्वम्/ध्वम्
	निंसै:	निंसावहै	निंसामहै
ह्य०	अनिंस्त	अनिंसाताम्	अनिंसत
	अनिंस्था:	अनिंसाथाम्	अनिंद्ध्वम्/ध्वम्
	अनिंसि	अनिंस्वहि	अनिंस्महि
अ०	अनिंसिष्ट	अनिंसिषाताम्	अनिंसिषत
	अनिंसिष्ठा:	अनिंसिषाथाम्	अनिंसिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अनिंसिषि	अनिंसिष्वहि	अनिंसिष्महि
प०	निनिंसे	निनिंसाते	निनिंसिरे
	निनिंसिषे	निनिंसाथे	निनिंसिध्वे
	निनिंसे	निनिंसिवहे	निनिंसिमहे
आ०	निंसिषीष्ट	निंसिषीयास्ताम्	निंसिषीरन्
	निंसिषीष्ठा:	निंसिषीयास्थाम्	निंसिषीध्वम्
	निंसिषीय	निंसिषीवहि	निंसिषीमहि
श्व०	निंसिता	निंसितारौ	निंसितार:
	निंसितासे	निंसितासाथे	निंसिताध्वे
	निंसिताहे	निंसितास्वहे	निंसितास्महे
भ०	निंसिष्यते	निंसिष्येते	निंसिष्यते
	निंसिष्यसे	निंसिष्येथे	निंसिष्यध्वे
	निंसिष्ये	निंसिष्यावहे	निंसिष्यामहे
क्रि०	अनिंसिष्यत	अनिंसिष्येताम्	अनिंसिष्यत
	अनिंसिष्यथा:	अनिंसिष्येथाम्	अनिंसिष्यध्वम्
	अनिंसिष्ये	अनिंसिष्यावहि	अनिंसिष्यामहि

११२४. ष्टंगूक् (स्तु) स्तुतौ।

व०	स्तौति/स्तवीति	स्तुत:	स्तुवन्ति
	स्तौषि/स्तवीषि:	स्तुथ:	स्तथ
	स्तौमि/स्तवीमि	स्तुव:	स्तुम:
स०	स्तुयात्	स्तुयाताम्	स्तुयायु:
	स्तुया:	स्तुयातम्	स्तुयात
	स्तुयाम्	स्तुयाव	स्तुयाम
प०	स्तवीतु/स्तुतात्	स्तुताम्/स्तुवन्तु	स्तौतु
	स्तुहि/स्तुतात्	स्तुतम्	स्तुत
	स्तवानि	स्तवाव	स्तवाम
ह्य०	अस्तौत्/अस्तवीत्	अस्तुताम्	अस्तुवन्
	अस्तौ:/अस्तवी:	अस्तुतम्	अस्तुत
	अस्तवम्	अस्तुव	अस्तुम
अ०	अस्तावीत्	अस्ताविष्टाम्	अस्ताविषु:
	अस्तावी:	अस्ताविष्टम्	अस्ताविष्ट
	अस्ताविषम्	अस्ताविष्व	अस्ताविष्म
प०	तुष्टाव	तुष्टुवतु:	तुष्टुवु:
	तुष्टोथ	तुष्टुवथु:	तुष्टुव
	तुष्टाव/तुष्टुव	तुष्टुव	तुष्टुम
आ०	स्तूयात्	स्तूयास्ताम्	स्तूयासु:
	स्तूया:	स्तूयास्तम्	स्तूयास्त
	स्तूयासम्	स्तूयास्व	स्तूयास्म
श्व०	स्तोता	स्तोतारौ	स्तोतार:
	स्तोतासि	स्तोतास्थ:	स्तोतास्थ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	स्तोतास्मि	स्तोतास्व:	स्तोतास्म:
भ०	स्तोष्यति	स्तोष्यत:	स्तोष्यन्ति
	स्तोष्यसि	स्तोष्यथ:	स्तोष्यथ
	स्तोष्यामि	स्तोष्याव:	स्तोष्याम:
क्रि०	अस्तोष्यत्	अस्तोष्यताम्	अस्तोष्यन्
	अस्तोष्य:	अस्तोष्यतम्	अस्तोष्यत
	अस्तोष्यम्	अस्तोष्याव	अस्तोष्याम
व०	स्तुते	स्तुवाते	स्तुवते
	स्तुषे	स्तुवाथे	स्तुध्वे
	स्तुवे	स्तुवहे	स्तुमहे
स०	स्तुवीत	स्तुवीयाताम्	स्तुवीरन्
	स्तुवीथा:	स्तुवीयाथाम्	स्तुवीध्वम्
	स्तुवीय	स्तुवीवहि	स्तुवीमहि
प०	स्तुताम्	स्तुवाताम्	स्तुवताम्
	स्तुष्व	स्तुवाथाम्	स्तुध्वम्
	स्तवै	स्तवावहै	स्तवामहै
ह्य०	अस्तुत	अस्तुवाताम्	अस्तुवत
	अस्तुथा:	अस्तुवाथाम्	अस्तुध्वम्
	अस्तुवि	अस्तुवहि	अस्तुमहि
अ०	अस्तोष्ट	अस्तोषाताम्	अस्तोषत
	अस्तोष्ठा:	अस्तोषाथाम्	अस्तोड्ढ्वम्/ध्वम्
	अस्तोषि	अस्तोष्वहि	अस्तोष्महि
प०	तुष्टुवे	तुष्टुवाते	तुष्टुविरे
	तुष्टुविषे	तुष्टुवाथे	तुष्टुविध्वे-ढ्वे
	तुष्टुवे	तुष्टुवहे	तुष्टुमहे
आ०	स्तोषीष्ट	स्तोषीयास्ताम्	स्तोषीरन्
	स्तोषीष्ठा:	स्तोषीयास्थाम्	स्तोषीध्वम्
	स्तोषीय	स्तोषीवहि	स्तोषीमहि
श्व०	स्तोता	स्तोतारौ	स्तोतार:
	स्तोतासे	स्तोतासाथे	स्तोताध्वे
	स्तोताहे	स्तोतास्वहे	स्तोतास्मिहे
भ०	स्तोष्यते	स्तोष्येते	स्तोष्यन्ते
	स्तोष्यसे	स्तोष्येथे	स्तोष्यध्वे
	स्तोष्ये	स्तोष्यावहे	स्तोष्यामहे
क्रि०	अस्तोष्यत	अस्तोष्येताम्	अस्तोष्यन्त
	अस्तोष्यथा:	अस्तोष्येथाम्	अस्तोष्यध्वम्
	अस्तोष्ये	अस्तोष्यावहि	अस्तोष्यामहि

अथादन्तोऽनिट् च।

११२५. ब्रूंग्क् (ब्रू) व्यक्तायां वाचि।

व०	ब्रवीति/आह	ब्रूत:/आहतु:	ब्रुवन्ति/आहु:
	ब्रवीषि/आत्थ	ब्रूथ:/आहथु:	ब्रूथ
	ब्रवीमि	ब्रूव:	ब्रूम:
स०	ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयायु:
	ब्रूया:	ब्रूयातम्	ब्रूयात
	ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम
प०	ब्रवीतु/ब्रूतात्	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु
	ब्रूहि/ब्रूतात्	ब्रूतम्	ब्रूत
	ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम
ह्य०	अब्रवीत्	अब्रूताम्	अब्रुवन्
	अब्रवी:	अब्रूतम्	अब्रूत
	अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम
अ०	अवोचत्	अवोचताम्	अवोचन्
	अवोच:	अवोचतम्	अवोचत
	अवोचम्	अवोचाव	अवोचाम
प०	उवाच	ऊचतु:	ऊचु:
	उवचिथ/उवक्थ	ऊचथु:	ऊच
	उवाच/उवच	ऊचिव	ऊचिम
आ०	उच्यात्	उच्यास्ताम्	उच्यासु:
	उच्या:	उच्यास्तम्	उच्यास्त
	उच्यासम्	उच्यास्व	उच्यास्म
श्व०	वक्ता	वक्तारौ	वक्तार:
	वक्तासि	वक्तास्थ:	वक्तास्थ
	वक्तास्मि	वक्तास्व:	वक्तास्म:
भ०	वक्ष्यति	वक्ष्यत:	वक्ष्यन्ति
	वक्ष्यसि	वक्ष्यथ:	वक्ष्यथ
	वक्ष्यामि	वक्ष्याव:	वक्ष्याम:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रि०	अवक्ष्यत्	अवक्ष्यताम्	अवक्ष्यन्
	अवक्ष्य:	अवक्ष्यतम्	अवक्ष्यत
	अवक्ष्यम्	अवक्ष्याव	अवक्ष्याम
व०	ब्रूते	ब्रूवाते	ब्रुवते
	ब्रूषे	ब्रूवाथे	ब्रूध्वे
	ब्रूवे	ब्रूवहे	ब्रूमहे
स०	ब्रूवीत	ब्रूवीयाताम्	ब्रूवीरन्
	ब्रूवीथा:	ब्रूवीयाथाम्	ब्रूवीध्वम्
	ब्रूवीय	ब्रूवीवहि	ब्रूवीमहि
प०	ब्रूताम्	ब्रूवाताम्	ब्रूवताम्
	ब्रूष्व	ब्रूवाथाम्	ब्रूध्वम
	ब्रवै	ब्रवावहै	ब्रवामहै
ह्य०	अब्रूत	अब्रूवाताम्	अब्रूवत
	अब्रूथा:	अब्रूवाथाम्	अब्रूध्वम्
	अब्रूवि	अब्रूवहि	अब्रूमहि
अ०	अवोचत	अवोचेताम्	अवोचन्त
	अवोचथा:	अवोचेथाम्	अवोचध्वम्
	अवोचे	अवोचावहि	अवोचामहि
प०	ऊचे	ऊचाते	ऊचिरे
	ऊचिषे	ऊचाथे	ऊचिध्वे
	ऊचे	ऊचिवहे	ऊचिमहे
आ०	वक्षीष्ट	वक्षीयास्ताम्	वक्षीरन्
	वक्षीष्ठा:	वक्षीयास्थाम्	वक्षीध्वम्
	वक्षीय	वक्षीवहि	वक्षीमहि
श्व०	वक्ता	वक्तारौ	वक्तार:
	वक्तासे	वक्तासाथे	वक्ताध्वे
	वक्ताहे	वक्तास्वहे	वक्तास्महे
भ०	वक्ष्यते	वक्ष्येते	वक्ष्यन्ते
	वक्ष्यसे	वक्ष्येथे	वक्ष्यध्वे
	वक्ष्ये	वक्ष्यावहे	वक्ष्यामहे
क्रि०	अवक्ष्यत	अवक्ष्येताम्	अवक्ष्यन्त
	अवक्ष्यथा:	अवक्ष्येथाम्	अवक्ष्यध्वम्
	अवक्ष्ये	अवक्ष्यावहि	अवक्ष्यामहि

॥अथ षान्तोऽनिट् च॥

११२६. द्विषींक् (द्विष्) अप्रीतौ।

व०	द्वेष्टि	द्विष्ट:	द्विषन्ति
	द्वेक्षि	द्विष्ट:	द्विष्ट
	द्वेष्मि	द्विष्व:	द्विष्म:
स०	द्विष्यात्	द्विष्याताम्	द्विष्यायु:
	द्विष्या:	द्विष्यातम्	द्विष्यात
	द्विष्याम्	द्विष्याव	द्विष्याम
प०	द्वेष्टु/द्विष्टात्	द्विष्टाम्	द्विषन्तु
	द्विड्ढि/द्विष्टात्	द्विष्टम्	द्विष्ट
	द्वेषाणि	द्वेषाव	द्वेषाम
ह्य०	अद्वेट्/अद्वेड्	अद्विष्टाम्	अद्विषु:/अद्विषन्
	अद्वेट/अद्वेड्	अद्विष्टम्	अद्विष्ट
	अद्वेषम्	अद्विष्व	अद्विष्म
अ०	अद्विक्षत	अद्विक्षताम्	अद्विक्षन्
	अद्विक्ष:	अद्विक्षतम्	अद्विक्षत
	अद्विक्षम्	अद्विक्षाव	अद्विक्षाम
प०	दिद्वेष	दिद्विषतु:	दिद्विषु:
	दिद्वेषिथ	दिद्विषथु:	दिद्विष
	दिद्वेष	दिद्विषिव	दिद्विषिम
आ०	द्विष्यात्	द्विष्यास्ताम्	द्विष्यासु:
	द्विष्या:	द्विष्यास्तम्	द्विष्यास्त
	द्विष्यासम्	द्विष्यास्व	द्विष्यास्म
श्व०	द्वेष्टा	द्वेष्टारौ	द्वेष्टार:
	द्वेष्टासि	द्वेष्टास्थ:	द्वेष्टास्थ
	द्वेष्टास्मि	द्वेष्टास्व:	द्वेष्टास्म:
भ०	द्वेक्ष्यति	द्वेक्ष्यत:	द्वेक्ष्यन्ति
	द्वेक्ष्यसि	द्वेक्ष्यथ:	द्वेक्ष्यथ
	द्वेक्ष्यामि	द्वेक्ष्याव:	द्वेक्ष्याम:
क्रि०	अद्वेक्ष्यत्	अद्वेक्ष्यताम्	अद्वेक्ष्यन्
	अद्वेक्ष्य:	अद्वेक्ष्यतम्	अद्वेक्ष्यत
	अद्वेक्ष्यम्	अद्वेक्ष्याव	अद्वेक्ष्याम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व०	द्विष्टे	द्विषाते	द्विषते
	द्विक्षे	द्विषाथे	द्विड्ढ्वे
	द्विषे	द्विष्वहे	द्विष्महे
स०	द्विषीत	द्विषीयाताम्	द्विषीरन्
	द्विषीथाः	द्विषीयाथाम्	द्विषीध्वम्
	द्विषीय	द्विषीवहि	द्विषीमहि
प०	द्विष्टाम्	द्विषाताम्	द्विषताम
	द्विक्ष्व	द्विषाथाम्	द्विड्ढ्वम
	द्वेषै	दवेषावहै	द्वेषामहै
ह्य०	अद्विष्ट	अद्विषाताम्	अद्विषत
	अद्विष्ठाः	अद्विषाथाम्	अद्विड्ढ्वम्
	अद्विषि	अद्विष्वहि	अद्विष्महि
अ०	अद्विक्षत	अद्विक्षताम्	अद्विक्षन्त
	अद्विक्षथाः	अद्विक्षाथाम्	अद्विक्षध्वम्
	अद्विक्षि	अद्विक्षावहि	अद्विक्षामहि
प०	दिद्विषे	दिद्विषाते	दिद्विषिरे
	दिद्विषिषे	दिद्विषाथे	दिद्विविध्वे
	दिद्विषे	दिद्विषिवहे	दिद्विषिमहे
आ०	द्विक्षीष्ट	द्विक्षीयास्ताम्	द्विक्षीरन्
	द्विक्षीष्ठाः	द्विक्षीयास्थाम्	द्विक्षीध्वम्
	द्विक्षीय	द्विक्षीवहि	द्विक्षीमहि
श्व०	द्वेष्टा	द्वेष्टारौ	द्वेष्टारः
	द्वेष्टासे	द्वेष्टासाथे	द्वेष्टाध्वे
	द्वेष्टाहे	द्वेष्टास्वहे	द्वेष्टास्महे
भ०	द्वेक्ष्यते	द्वेक्ष्येते	द्वेक्ष्यन्ते
	द्वेक्ष्यसे	द्वेक्ष्येथे	द्वेक्ष्यध्वे
	द्वेक्ष्ये	द्वेक्ष्यावहे	द्वेक्ष्यामहे
क्रि०	अद्वेक्ष्यत	अद्वेक्ष्येताम्	अद्वेक्ष्यन्त
	अद्वेक्ष्यथाः	अद्वेक्ष्येथाम्	अद्वेक्ष्यध्वम्
	अद्वेक्ष्ये	अद्वेक्ष्यावहि	अद्वेक्ष्यामहि

॥अथ हान्तास्त्रयोऽनिटश्च॥

११२७. दुहींक् (दुह्) क्षरणे।

व०	दोग्धि	दुग्धः	दुहन्ति
	धोक्षि	दुग्धः	दुग्ध
	दोह्मि	दुह्वः	दुह्मः
स०	दुह्यात्	दुह्याताम्	दुह्यायुः
	दुह्याः	दुह्यातम्	दुह्यात
	दुह्याम्	दुह्याव	दुह्याम
प०	दोग्धु/दुग्धात्	दुग्धाम्	दुहन्तु
	दुग्धि/दुग्धात्	दुग्धम्	दुग्ध
	दोहानि	दोहाव	दोहाम
ह्य०	अधोक्/ग्	अदुग्धताम्	अदुहन्
	अधोक्/ग्	अदुग्धम्	अदुग्ध
	अदोहम्	अदुह्व	अदुह्म
अ०	अधुक्षत	अधुक्षताम्	अधुक्षन्
	अधुक्षः	अधुक्षतम्	अधुक्षत
	अधुक्षम्	अधुक्षाव	अधुक्षाम
प०	दुदोह	दुदुहतु	दुदुहुः
	दुदुहिथ	दुदुहथुः	दुदुह
	दुदोह	दुदुहिव	दुदुहिम
आ०	दुह्यात्	दुह्यास्ताम्	दुह्यासुः
	दुह्याः	दुह्यास्तम्	दुह्यास्त
	दुह्यासम्	दुह्यास्व	दुह्यास्म
श्व०	दोग्धा	दोग्धारौ	दोग्धारः
	दोग्धासि	दोग्धास्थः	दोग्धास्थ
	दोग्धास्मि	दोग्धास्वः	दोग्धास्मः
भ०	धोक्ष्यति	धोक्ष्यतः	धोक्ष्यन्ति
	धोक्ष्यसि	धोक्ष्यथः	धोक्ष्यथ
	धोक्ष्यामि	धोक्ष्यावः	धोक्ष्यामः
क्रि०	अधोक्ष्यत्	अधोक्ष्यताम्	अधोक्ष्यन्
	अधोक्ष्यः	अधोक्ष्यतम्	अधोक्ष्यत
	अधोक्ष्यम्	अधोक्ष्याव	अधोक्ष्याम
व०	दुग्धे	दुहाते	दुहते
	धुक्षे	दुहाथे	धुग्ध्वे
	दुहे	दुह्वहे	दुह्महे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स० दुहीत	दुहीयाताम्	दुहीरन्
दुहीथाः	दुहीयाथाम्	दुहीध्वम्
दुहीय	दुहीवहि	दुहीमहि
प० दुग्धाम्	दुहाताम्	दुहताम्
धुक्ष्व	दुहाथाम्	दुहड्ढ्वम्
दोहै	दोहावहै	दोहामहै
ह्य० अदुग्ध	अदुहाताम्	अदुहत
अदुग्धाः	अदुहाथाम	अधुग्ध्वम्
अदुहि	अदुह्वहि	अदुह्महि
अ० अदुग्ध/अधुक्षत	अधुक्षाताम्	अधुक्षन्त
अधुक्षथाः	अधुक्षाथाम्	अधुक्षध्वम्
अधुक्षि	अधुक्षावहि	अधुक्षामहि
प० दुदुहे	दुहाते	दुदुहिरे
दुदुहिषे	दुदुहाथे	दुदुहिढ्वे/ध्वे
दुदुहे	दुदुहिवहे	दुदुहिमहे
आ० धुक्षीष्ट	धुक्षीयास्ताम्	धुक्षीरन्
धुक्षीष्ठाः	धुक्षीयास्थाम्	धुक्षीध्वम्
धुक्षीय	धुक्षीवहि	धुक्षीमहि
श्व० दोग्धा	दोग्धारौ	दोग्धारः
दोग्धासे	दोग्धासाथे	दोग्धाध्वे
दोग्धाहे	दोग्धास्वहे	दोग्धास्महे
भ० धोक्ष्यते	धोक्ष्येते	धोक्ष्यन्ते
धोक्ष्यसे	धोक्ष्येथे	धोक्ष्यध्वे
धोक्ष्ये	धोक्ष्यावहे	धोक्ष्यामहे
क्रि० अधोक्ष्यत	अधोक्ष्येताम्	अधोक्ष्यन्त
अधोक्ष्यथाः	अधोक्ष्येथाम्	अधोक्ष्यध्वम्
अधोक्ष्ये	अधोक्ष्यावहि	अधोक्ष्यामहि

११२८. दिहींक् (दिह्) लेपे।

व० देग्धि	दिग्धः	दिहन्ति
स० दिह्यात्	दिह्याताम्	दिह्युः
प० देग्धि/दिग्धात्	दिग्धाम्	दिहन्तु
ह्य० अधेक्/ग्	अदिग्धाम्	अदिहन्
अ० अधिक्षत	अधिक्षताम्	अधिक्षन्
प० दिदेह	दिदिहतु	दिदिहुः
आ० दिह्यात्	दिह्यास्ताम्	दिह्यासुः
श्व० देग्धा	देग्धारौ	देग्धारः
भ० धोक्ष्यति	धोक्ष्यतः	धोक्ष्यन्ति
क्रि० अधोक्ष्यत्	अधोक्ष्यताम्	अधोक्ष्यन्
व० दिग्धे	दिहाते	दिहते
स० दिहीत	दिहीयाताम्	दिहीरन्
प० दिग्धाम्	दिहाताम्	दिहताम
ह्य० अदिग्ध	अदिहाताम्	अदिहत
अ० अदिग्ध/अधिक्षत	अधिक्षताम्	अधिक्षन्त
प० दिदिहे	दिहाते	दिदिहिरे
आ० धिक्षीष्ट	धिक्षीयास्ताम्	धिक्षीरन्
श्व० देग्धा	देग्धारौ	देग्धारः
भ० धोक्ष्यते	धोक्ष्येते	धोक्ष्यन्ते
क्रि० अधोक्ष्यत	अधोक्ष्येताम्	अधोक्ष्यन्त

११२९. लिहींक् (लिह्) आस्वादने।

व० लेढि	लिढः	लिहन्ति
लेक्षि	लीढः	लीढ
लेह्मि	लिह्वः	लिह्मः
स० लिह्यात्	लिह्याताम्	लिह्युः
लिह्याः	लिह्यातम्	लिह्यात
लिह्याम्	लिह्याव	लिह्याम
प० लेढु/लिढात्	लीढाम्	लीहन्तु
लीढि/लीढात	लीढम्	लीढ
लेहानि	लेहाव	लेहाम
ह्य० अलेड्/ट्	अलीढाम्	अलिहन्
अलेड्/ट्	अलीढम्	अलीढ
अलेहम्	अलिह्व	अलिह्म

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	अलिक्षत	अलिक्षताम्	अलिक्षन्
	अलिक्ष:	अलिक्षतम्	अलिक्षत
	अलिक्षम्	अलिक्षाव	अलिक्षाम
प०	लिलेह	लिलिहतु	लिलिहु:
	लिलिहिथ	लिलिहथु:	लिलिह
	लिलेह	लिलिहिव	लिलिहिम
आ०	लिह्यात्	लिह्यास्ताम्	लिह्यासु:
	लिह्या:	लिह्यास्तम्	लिह्यास्त
	लिह्यासम्	लिह्यास्व	लिह्यास्म
श्व०	लेढा	लेढारौ	लेढार:
	लेढासि	लेढास्थ:	लेढास्थ
	लेढास्मि	लेढास्व:	लेढास्म:
भ०	लेक्ष्यति	लेक्ष्यत:	लेक्ष्यन्ति
	लेक्ष्यसि	लेक्ष्यथ:	लेक्ष्यथ
	लेक्ष्यामि	लेक्ष्याव:	लेक्ष्याम:
क्रि०	अलेक्ष्यत्	अलेक्ष्यताम्	अलेक्ष्यन्
	अलेक्ष्य:	अलेक्ष्यतम्	अलेक्ष्यत
	अलेक्ष्यम्	अलेक्ष्याव	अलेक्ष्याम
व०	लीढे	लिहाते	लिहते
	लिक्षे	लिहाथे	लिग्ध्वे
	लिहे	लिह्वहे	लिह्महे
स०	लिहीत	लिहीयाताम्	लिहीरन्
	लिहीथा:	लिहीयाथाम्	लिहीध्वम्
	लिहीय	लिहीवहि	लिहीमहि
प०	लीढाम्	लिहाताम्	लिहताम्
	लिक्ष्व	लिहाथाम्	लिहड्ढ्वम
	लेहै	लिहावहै	लिहामहै
ह्य०	अलीढ	अलिहाताम्	अलिहत
	अलीढा:	अलिहाथाम	अलिग्ध्वम्
	अलिहि	अलिह्वहि	अलिह्महि
अ०	अलीढ/अलिक्षत	अलिक्षाताम्	अलिक्षन्त
	अलीढा:	अलिक्षाथाम्	अलिक्षध्वम्
	अलिक्षि	अलिक्षावहि	अलिक्षामहि
प०	लिलिहे	लिहाते	लिलिहिरे
	लिलिहिषे	लिलिहाथे	लिलिहिढ्वे/ध्वे
	लिलिहे	लिलिहिवहे	लिलिहिमहे
आ०	लिक्षीष्ट	लिक्षीयास्ताम्	लिक्षीरन्
	लिक्षीष्ठा:	लिक्षीयास्थाम्	लिक्षीध्वम्
	लिक्षीय	लिक्षीवहि	लिक्षीमहि
श्व०	लेढा	लेढारौ	लेढार:
	लेढासे	लेढासाथे	लेढाध्वे
	लेढाहे	लेढास्वहे	लेढास्महे
भ०	लेक्ष्यते	लेक्ष्येते	लेक्ष्यन्ते
	लेक्ष्यसे	लेक्ष्येथे	लेक्ष्यध्वे
	लेक्ष्ये	लेक्ष्यावहे	लेक्ष्यामहे
क्रि०	अलेक्ष्यत	अलेक्ष्येताम्	अलेक्ष्यन्त
	अलेक्ष्यथा:	अलेक्ष्येथाम्	अलेक्ष्यध्वम्
	अलेक्ष्ये	अलेक्ष्यावहि	अलेक्ष्यामहि

॥अथादाद्यन्तर्गणो ह्वादि:॥

११३०. हुक् (हु) दानादनयो:।

दानमत्र हविप्रक्षेप:। अदनं भक्षणम्।

व०	जुहोति	जुहुत:	जुह्वन्ति
	जुहोषि	जुहुथ:	जुहुथ
	जुहोमि	जुहुव:	जुहुम:
स०	जुहुयात्	जुहुयाताम्	जुहुयायु:
	जुहुया:	जुहुयातम्	जुहुयात
	जुहुयायम्	जुहुयाव	जुहुयाम
जु०	जुहोतु/जुहुतात्	जुहुताम्	जुह्वतु
	जुहुधि/जुहुतात्	जुहुतम्	जुहुत
	जुहवानि	जुहवाव	जुहवाम
ह्य०	अजुहोत्	अजुहुताम्	अजुहवु:
	अजुहो:	अजुहुतम्	अजुहुत
	अजुहवम्	अजुहुव	अजुहुम
अ०	अहौषीत्	अहौष्टाम्	अहौषु:

	अहौषीः	अहौष्टम्	अहौष्ट
	अहौषम्	अहौष्व	अहौष्म
प०	जुहवाञ्चकार	जुहवाञ्चक्रतुः	जुहवाञ्चक्रिरे
	जुहवाञ्चकर्थ	जुहवाञ्चक्रथुः	जुहवाञ्चक्र
	जुहवाञ्चकार/चकर	जुहवाञ्चकृव	जुहवाञ्चकृम
	जुहवाबभूव/जुहवामास		

तथा

	जुहाव	जुहुवतुः	जुहुवुः, इत्यादि।
आ०	हूयात्	हूयास्ताम्	हूयासुः
	हूयाः	हूयास्तम्	हूयास्त
	हूयासम्	हूयास्व	हूयास्म
श्व०	होता	होतारौ	होतारः
	होतासि	होतास्थः	होतास्थ
	होतास्मि	होतास्वः	होतास्मः
भ०	होष्यति	होष्यतः	होष्यन्ति
	होष्यसि	होष्यथः	होष्यथ
	होष्यामि	होष्यावः	होष्यामः
क्रि०	अहोष्यत्	अहोष्यताम्	अहोष्यन्
	अहोष्यः	अहोष्यतम्	अहोष्यत
	अहोष्यम्	अहोष्याव	अहोष्याम

अथादन्तोऽनिट् च।

११३१. ओहांक् (हा) त्यागे।

व०	जहाति	जहितः/जहीतः	जहति
	जहासि	जहिथः/जहीथः	जहिथ/जहीथ
	जहामि	जहिवः/जहीवः	जहिमः/जहीमः
स०	जह्यात्	जह्याताम्	जह्युः
	जह्याः	जह्यातम्	जह्यात
	जह्यायम्	जह्याव	जह्याम
प०	जहातु/जहितात्/जहिताम्	जहीतात्/जहीताम्	जहतु
	जहाहि/जहीहि/जहिहि	जहितम्/जहीतम्	जहित/जहीत
	जहानि	जहाव	जहाम
ह्य०	अजहात्	अजहिताम्/अजहीताम्	अजहुः
	अजहाः	अजहीतम्/अजहितम्	अजहीत/अजहित
	अजहाम्	अजहिव/अजहीव	अजहिम/अजहीम
अ०	अहासीत्	अहासिष्टाम्	अहासिषुः
	अहासीः	अहासिष्टम्	अहासिष्ट
	अहासिषम्	अहासिष्व	अहासिष्म
ज०	जहौ	जहतुः	जहुः
	जहिथ/जहाथ	जहथुः	जह
	जहौ	जहिव	जहिम
आ०	हेयात्	हेयास्ताम्	हेयासुः
	हेयाः	हेयास्तम्	हेयास्त
	हेयासम्	हेयास्व	हेयास्म
श्व०	हाता	हातारौ	हातारः
	हातासि	हातास्थः	हातास्थ
	हातास्मि	हातास्वः	हातास्मः
भ०	हास्यति	हास्यतः	हास्यन्ति
	हास्यसि	हास्यथः:	हास्यथ
	हास्यामि	हास्यावः	हास्यामः
क्रि०	अहास्यत्	अहास्यताम्	अहास्यन्
	अहास्यः	अहास्यतम्	अहास्यत
	अहास्यम्	अहास्याव	अहास्याम

अथेदन्तावनिटौ च।

११३२. ञिभींक् (भी) भये।

व०	बिभेति/बिभीतः	बिभित	बिभ्यति
	बिभेषि	बिभिथः/बिभीथः	बिभिथ/बिभीथ
	बिभेमि	बिभिवः/बिभीवः	बिभिमः/बिभीमः
स०	बिभियात्	बिभियाताम्	बिभियायुः
	बिभियाः	बिभियातम्	बिभियात
	बिभियाम्	बिभियाव	बिभियाम

तथा

	बिभीयात्	बिभीयाताम्	बिभीयायुः
	बिभीयाः	बिभीयातम्	बिभीयात
	बिभीयाम्	बिभीयाव	बिभीयाम
प०	बिभेतु/बिभितात्	बिभिताम्	बिभ्यतु
	बिभीतात्	बिभीताम्	
	बिभिहि/बिभितात्	बिभितम्	बिभित
	बिभीहि/बिभीतात्	बिभीतम्	बिभीत
	बिभयानि	बिभयाव	बिभयाम
ह्य०	अबिभेत्(द्)	अबिभिताम्/अबिभीताम्	अबिभयुः
	अबिभेः	अबिभितम्	अबिभित
		अबिभीतम्	अबिभीत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अबिभयम्	अबिभिव	अबिभिम
		अबिभीव	अबिभीम
अ०	अभैषीत्	अभैष्टाम्	अभैषुः
	अभैषीः	अभैष्टम्	अभैष्ट
	अभैषम्	अभैष्व	अभैष्म
प०	बिभयाञ्चकार	बिभयाञ्चक्रतुः	बिभयाञ्चक्रिरे
	बिभयाञ्चकर्थ	बिभयाञ्चक्रथुः	बिभयाञ्चक्र
	बिभयाञ्चकार/चकर	बिभयाञ्चकृव	बिभयाञ्चकृम

तथा

	बिभाय	बिभ्यतुः	बिभ्युः इत्यादि।
आ०	भीयात्	भीयास्ताम्	भीयासुः
	भीयाः	भीयास्तम्	भीयास्त
	भीयासम्	भीयास्व	भीयास्म
श्व०	भेता	भेतारौ	भेतारः
	भेतासि	भेतास्थः	भेतास्थ
	भेतास्मि	भेतास्वः	भेतास्मः
भ०	भेष्यति	भेष्यतः	भेष्यन्ति
	भेष्यसि	भेष्यथः:	भेष्यथ
	भेष्यामि	भेष्यावः	भेष्यामः
क्रि०	अभेष्यत्	अभेष्यताम्	अभेष्यन्
	अभेष्यः	अभेष्यतम्	अभेष्यत
	अभेष्यम्	अभेष्याव	अभेष्याम

११३३. ह्रींक् (ह्री) लज्जायाम्।

व०	जिह्रेति	जिह्रीतः	जिह्रियति
	जिह्रेषि	जिह्रीथः	जिह्रीथ
	जिह्रेमि	जिह्रीवः	जिह्रीमः
स०	जिह्रीयात्	जिह्रीयाताम्	जिह्रीयायुः
	जिह्रीयाः	जिह्रीयातम्	जिह्रीयात
	जिह्रीयम्	जिह्रीयाव	जिह्रीयाम
प०	जिह्रेतु/जिह्रीतात्	जिह्रीताम्	जिह्रतु
	जिह्रीहि/जिह्रीतात्	जिह्रीतम्	जिह्रीत
	जिह्रयाणि	जिह्रयाव	जिह्रयाम
ह्य०	अजिह्रेत्	अजिह्रीताम्	अजिह्रवुः
	अजिह्रेः	अजिह्रीतम्	अजिह्रीत
	अजिह्रयम्	अजिह्रीव	अजिह्रीम
अ०	अह्रैषीत्	अह्रैष्टाम्	अह्रैषुः
	अह्रैषीः	अह्रैष्टम्	अह्रैष्ट
	अह्रैषम्	अह्रैष्व	अह्रैष्म
प०	जिह्रयाञ्चकार	जिह्रयाञ्चक्रतुः	जिह्रयाञ्चक्रिरे
	जिह्रयाञ्चकर्थ	जिह्रयाञ्चक्रथुः	जिह्रयाञ्चक्र
	जिह्रयाञ्चकार/चकर	जिह्रयाञ्चकृव	जिह्रयाञ्चकृम
	जिह्रयांबभूव/जिह्रयामास		

तथा

	जिह्राय	जिह्रियतुः	जिह्रियुः, इत्यादि।
आ०	ह्रीयात्	ह्रीयास्ताम्	ह्रीयासुः
	ह्रीयाः	ह्रीयास्तम्	ह्रीयास्त
	ह्रीयासम्	ह्रीयास्व	ह्रीयास्म
श्व०	ह्रेता	ह्रेतारौ	ह्रेतारः
	ह्रेतासि	ह्रेतास्थः	ह्रेतास्थ
	ह्रेतास्मि	ह्रेतास्वः	ह्रेतास्मः
भ०	ह्रेष्यति	ह्रेष्यतः	ह्रेष्यन्ति
	ह्रेष्यसि	ह्रेष्यथः	ह्रेष्यथ
	ह्रेष्यामि	ह्रेष्यावः	ह्रेष्यामः
क्रि०	अह्रेष्यत्	अह्रेष्यताम्	अह्रेष्यन्
	अह्रेष्यः	अह्रेष्यतम्	अह्रेष्यत
	अह्रेष्यम्	अह्रेष्याव	अह्रेष्याम

अथ ऋदन्तावनिटौ च।

११३४. पृंक् (पृ) पालनपूरणयोः।

व०	पिपर्ति	पिपृतः	पिप्रति
	पिपर्षि	पिपृथः	पिपृथ
	पिपर्मि	पिपृवः	पिपृमः
स०	पिपृयात्	पिपृयाताम्	पिपृयायुः
	पिपृयाः	पिपृयातम्	पिपृयात
	पिपृयम्	पिपृयाव	पिपृयाम
प०	पिपर्तु/पिपृतात्	पिपृताम्	पिप्रतु
	पिपृहि/पिपृतात्	पिपृतम्	पिपृत
	पिपराणि	पिपराव	पिपराम
ह्य०	अपिपः	अपिपृताम्	अपिपरुः
	अपिपः	अपिपृतम्	अपिपृत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अपिपरम्	अपिपृव	अपिपृम
अ०	अपार्षीत्	अपार्ष्टाम्	अपार्षुः
	अपार्षीः	अपार्ष्टम्	अपार्ष्ट
	अपार्षम्	अपार्ष्व	अपार्ष्म
प०	पपार	पप्रतुः	पप्रुः
	पपर्थ	पप्रथुः	पप्र
	पपार/पपर	पप्रिव	पप्रिम
आ०	प्रियात्	प्रियास्ताम्	प्रियासुः
	प्रियाः	प्रियास्तम्	प्रियास्त
	प्रियासम्	प्रियास्व	प्रियास्म
श्व०	पर्त्ता	पर्त्तारौ	पर्त्तारः
	पर्त्तासि	पर्त्तास्थः	पर्त्तास्थ
	पर्त्तास्मि	पर्त्तास्वः	पर्त्तास्मः
भ०	परिष्यति	परिष्यतः	परिष्यन्ति
	परिष्यसि	परिष्यथः	परिष्यथ
	परिष्यामि	परिष्यावः	परिष्यामः
क्रि०	अपरिष्यत्	अपरिष्यताम्	अपरिष्यन्
	अपरिष्यः	अपरिष्यतम्	अपरिष्यत
	अपरिष्यम्	अपरिष्याव	अपरिष्याम

ऋदन्तोऽयं सेट् इत्येके (पृ)

व०	पिपर्त्ति	पिपूर्त्तः	पिपुरति
	पिपर्षि	पिपूर्थः	पिपूर्थ
	पिपर्मि	पिपूर्वः	पिपूर्मः
स०	पिपूर्यात्	पिपूर्याताम्	पिपूर्युः
	पिपूर्याः	पिपूर्यातम्	पिपूर्यात
	पिपूर्याम्	पिपूर्याव	पिपूर्याम
प०	पिपर्त्तु/पिपूर्तात्	पिपूर्ताम्	पिपरतु
	पिपूर्हि/पिपूर्तात्	पिपूर्तम्	पिपूर्त
	पिपराणि	पिपराव	पिपराम
ह्य०	अपिपः	अपिपूर्ताम्	अपिपरुः
	अपिपः	अपिपूर्तम्	अपिपूर्त
	अपिपरम्	अपिपूर्व	अपिपूर्म
अ०	अपारीत्	अपारिष्टाम्	अपारिषुः
	अपारीः	अपारिष्टम्	अपारिष्ट
	अपारिषम्	अपारिष्व	अपारिष्म
प०	पपार	पप्रतुः/पपरतुः	पप्रुः/पपरुः
	पपरिथ	पप्रथुः/पपरथुः	पप्र/पपर
	पपार/पपर	पपरिव/पप्रिव	पपरिम/पप्रिम
आ०	पूर्यात्	पूर्यास्ताम्	पूर्यासुः
	पूर्याः	पूर्यास्तम्	पूर्यास्त
	पूर्यासम्	पूर्यास्व	पूर्यास्म
श्व०	परिता	परितारौ	परितारः
	परितासि	परितास्थः	परितास्थ
	परितास्मि	परितास्वः	परितास्मः
भ०	परिष्यति	परिष्यतः	परिष्यन्ति
	परिष्यसि	परिष्यथः	परिष्यथ
	परिष्यामि	परिष्यावः	परिष्यामः

तथा

परीष्यति परीष्यतः, इत्यादि।

क्रि०	अपरिष्यत्	अपरिष्यताम्	अपरिष्यन्
	अपरिष्यः	अपरिष्यतम्	अपरिष्यत
	अपरिष्यम्	अपरिष्याव	अपरिष्याम

तथा

अपरीष्यत् अपरीष्यताम्, इत्यादि।

११३५. ऋंक् (ऋ) गतौ।

व०	इयर्त्ति	इयृतः	इय्रति
	इयर्षि	इयृथः	इयृथ
	इयर्मि	इयृवः	इयृमः
स०	इयृयात्	इयृयाताम्	इयृयुः
	इयृयाः	इयृयातम्	इयृयात
	इयृयाम्	इयृयाव	इयृयाम
प०	इयर्त्तु/इयृतात्	इयृताम्	इय्रतु
	इयृहि/इयृतात्	इयृतम्	इयृत
	इयराणि	इयराव	इयराम
ह्य०	ऐयः	ऐयृताम्	ऐयरुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	ऐय:	ऐयृतम्	ऐयृत
	ऐयरम्	ऐयृव	ऐयृम
अ०	आरत्	आरताम्	आरन्
	आर:	आरतम्	आरत
	आरम्	आराव	आराम

तथा

	आर्षीत्	आर्ष्टाम्	आर्षुः
	आर्षीः	आर्ष्टम्	आर्ष्ट
	आर्षम्	आर्ष्व	आर्ष्म
प०	आर	आरतुः	आरुः
	आरिथ	आरथुः	आर
	आर	आरिव	आरिम
आ०	अर्यात्	अर्यास्ताम्	अर्यासुः
	अर्याः	अर्यास्तम्	अर्यास्त
	अर्यासम्	अर्यास्व	अर्यास्म
श्व०	अर्त्ता	अर्त्तारौ	अर्त्तारः
	अर्त्तासि	अर्त्तास्थः	अर्त्तास्थ
	अर्त्तास्मि	अर्त्तास्वः	अर्त्तास्मः
भ०	अरिष्यति	अरिष्यतः	अरिष्यन्ति
	अरिष्यसि	अरिष्यथः	अरिष्यथ
	अरिष्यामि	अरिष्यावः	अरिष्यामः
क्रि०	आरिष्यत्	आरिष्यताम्	आरिष्यन्
	आरिष्यः	आरिष्यतम्	आरिष्यत
	आरिष्यम्	आरिष्याव	आरिष्याम

॥अथात्मनेपदिनावादन्तावनिटौ च॥

११३६. ओहांङ्क् (हा) गतौ।

व०	जिहीते	जिहाते	जिहते
	जिहीषे	जिहाथे	जिहीध्वे
	जिहे	जिहीवहे	जिहीमहे
स०	जिहीत	जिहीयाताम्	जिहीरन्
	जिहीथाः	जिहीयाथाम्	जिहीध्वम्
	जिहीय	जिहीवहि	जिहीमहि
प०	जिहीताम्	जिहीताम्	जिहीन्ताम
	जिहीस्व	जिहीथाम	जिहीध्वम
	जिहै	जिहावहै	जिहामहै
ह्य०	अजिहीत	अजिहीताम्	अजिहीन्त
	अजिहीथाः	अजिहीथाम	अजिहीध्वम्
	अजिही	अजिहीवहि	अजिहीमहि
अ०	अहास्त	अहासाताम्	अहासत
	अहास्थाः	अहासाथाम्	अहाध्वम्/अहाध्ववम्
	अहासि	अहास्वहि	अहास्महि
प०	जहे	जहाते	जहिरे
	जहिषे	जहाथे	जहिध्वे/ढ्वे
	जहे	जहिवहे	जहिमहे
आ०	हासीष्ट	हासीयास्ताम्	हासीरन्
	हासीष्ठाः	हासीयास्थाम्	हासीध्वम्
	हासीय	हासीवहि	हासमिहि
श्व०	हाता	हातारौ	हातारः
	हातासे	हातासाथे	हाताध्वे
	हाताहे	हातास्वहे	हातास्मिहे
भ०	हास्यते	हास्येते	हास्यन्ते
	हास्यसे	हास्येथे	हास्यध्वे
	हास्ये	हास्यावहे	हास्यामहे
क्रि०	अहास्यत	अहास्येताम्	अहास्यन्त
	अहास्यथाः	अहास्येथाम्	अहास्यध्वम्
	अहास्ये	अहास्यावहि	अहास्यामहि

११३७. माङ्क् (मा) मानशब्दयोः।

व०	मिमीते	मिमाते	मिमते
स०	मिमीत	मिमीयाताम्	मिमीरन्
प०	मिमीताम्	मिमिताम्	मिमताम्
ह्य०	अमिमीत	अमिमाताम्	अमिमन
अ०	आमास्त	अमासाताम्	अमासत
प०	ममे	ममाते	ममिरे
आ०	मासीष्ट	मासीयास्ताम्	मासीरन्
श्व०	माता	मातारौ	मातारः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	मास्यते	मास्येते	मास्यन्ते
क्रि०	अमास्यत	अमास्येताम्	अमास्यन्त

अथोभयपदिनः षडनिट्श्च तत्रादन्तौ।

११३८. डुदांग्क् (दा) दाने।

व०	ददाति	दत्तः	ददति
	ददासि	दत्थः	दत्थ
	ददामि	दद्वः	दद्मः
स०	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
	दद्याम्	दद्याव	दद्याम
प०	ददातु/दत्तात्	दत्ताम्	ददतु
	देहि/दत्तात्	दत्तम्	दत्त
	ददानि	ददाव	ददाम
ह्य०	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
	अददाम्	अदद्व	अदद्म
अ०	अदात्	अदाताम्	अदुः
	अदाः	अदातम्	अदात
	अदाम्	अदाव	अदाम
प०	ददौ	ददतुः	ददुः
	ददिथ/ददाथ	ददथुः	दद
	दद/ददौ	ददिव	ददिम
आ०	देयात्	देयास्ताम्	देयासुः
	देयाः	देयास्तम्	देयास्त
	देयासम्	देयास्व	देयास्म
श्व०	दाता	दातारौ	दातारः
	दातासि	दातास्वः	दातास्ह
	दातास्मि	दातास्वः	दातास्मः
भ०	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
	दास्यसि	दास्यथः:	दास्यथ
	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः
क्रि०	अदास्यत्	अदास्यताम्	अदास्यन्
	अदास्यः	अदास्यतम्	अदास्यत
	अदास्यम्	अदास्याव	अदास्याम
व०	दत्ते	ददाते	ददते
	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
	ददे	दद्वहे	दद्महे
स०	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
	ददीय	ददीवहि	ददीमहि
प०	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
	ददै	ददावहै	ददामहै
ह्य०	अदत्त	अददाताम्	अददत
	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
	अददि	अदद्वहि	अदद्महि
अ०	अदित	अदिषाताम्	अदिषत्
	अदिथाः	अदिषाथाम्	अदिड्ढ्वम्/ढ्वम्
	अदिषि	अदिष्वहि	अदिष्महि
प०	ददे	ददाते	ददिरे
	ददिषे	ददाथे	ददिध्वे
	ददे	ददिवहे	ददिमहे
आ०	दासीष्ट	दासीयास्ताम्	दासीरन्
	दासीष्ठाः	दासीयास्थाम्	दासीध्वम्
	दासीय	दासीवहि	दासीमहि
श्व०	दाता	दातारौ	दातारः
	दातासे	दातासाथे	दाताध्वे
	दाताहे	दातास्वहे	दातास्मिहे
भ०	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे
क्रि०	अदास्यत	अदास्येताम्	अदास्यन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अदास्यथाः	अदास्येथाम्	अदास्यध्वम्
	अदास्ये	अदास्यावहि	अदास्यामहि

११३९. डुधांगृक् (धा) धारणे च।

चकाराद्दाने।

व०	दधाति	धत्तः	दधति
स०	दध्यात्	दध्याताम्	दध्यायुः
प०	दधातु/धत्तात्	धत्ताम्	दधतु
ह्य०	अदधात्	अधत्ताम्	अदधुः
अ०	अधात्	अधाताम्	अधुः
प०	दधौ	दधतुः	दधुः
आ०	धेयात्	धेयास्ताम्	धेयासुः
श्व०	धाता	धातारौ	धातारः
भ०	धास्यति	धास्यतः	धास्यन्ति
क्रि०	अधास्यत्	अधास्यताम्	अधास्यन्
व०	दधत्ते	दधाते	दधते
स०	दधीत	दधीयाताम्	दधीरन्
प०	धत्ताम्	दधाताम्	दधताम्
ह्य०	अधत्त	अदधाताम्	अदधत
अ०	अधित	अधिषाताम्	अधिषत्
प०	दधे	दधाते	दधिरे
आ०	धासीष्ट	धासीयास्ताम्	धासीरन्
श्व०	धाता	धातारौ	धातारः
भ०	धास्यते	धास्येते	धास्यन्ते
क्रि०	अधास्यत	अधास्येताम्	अधास्यन्त

अथ ऋदन्ताः।

११४०. टुडुभृग्क् (भृ) भोषणे च।

चकाराद्धारणे।

व०	बिभर्ति	बिभृतः	बिभ्रति
	बिभर्षि	बिभृथः	बिभृथ
	बिभर्मि	बिभृवः	बिभृमः
स०	बिभृयात्	बिभृयाताम्	बिभृयुः
	बिभृयाः	बिभृयातम्	बिभृयात
	बिभृयम्	बिभृयाव	बिभृयाम
प०	बिभर्त्तु/बिभृतात्	बिभृताम्	बिभ्रतु
	बिभृहि/बिभृतात्	बिभृतम्	बिभृत
	बिभराणि	बिभराव	बिभराम
ह्य०	अबिभः	अबिभृताम्	अबिभरुः
	अबिभः	अबिभृतम्	अबिभृत
	अबिभरम्	अबिभृव	अबिभृम
अ०	अभार्षीत्	अभार्ष्टाम्	अभार्षुः
	अभार्षीः	अभार्ष्टम्	अभार्ष्ट
	अभार्षम्	अभार्ष्व	अभार्ष्म
प०	बिभराञ्चकार	बिभराञ्चक्रतुः	बिभराञ्चक्रुः, इ०
		तथा	
	बभार	बभ्रतुः	बभ्रुः
	बभर्थ	बभ्रथुः	बभ्र
	बभार/बभर	बभृव	बभृम
आ०	भ्रियात्	भ्रियास्ताम्	भ्रियासुः
	भ्रियाः	भ्रियास्तम्	भ्रियास्त
	भ्रियासम्	भ्रियास्व	भ्रियास्म
श्व०	भर्त्ता	भर्त्तारौ	भर्त्तारः
	भर्त्तासि	भर्त्तास्थः	भर्त्तास्थ
	भर्त्तास्मि	भर्त्तास्वः	भर्त्तास्मः
भ०	भरिष्यति	भरिष्यतः	भरिष्यन्ति
	भरिष्यसि	भरिष्यथः	भरिष्यथ
	भरिष्यामि	भरिष्यावः	भरिष्यामः
क्रि०	अभरिष्यत्	अभरिष्यताम्	अभरिष्यन्
	अभरिष्यः	अभरिष्यतम्	अभरिष्यत
	अभरिष्यम्	अभरिष्याव	अभरिष्याम
व०	बिभृते	बिभ्राते	बिभ्रते
	बिभृषे	बिभ्राथे	बिभृध्वे
	बिभ्रे	बिभृवहे	बिभृमहे
स०	बिभ्रीत	बिभ्रीयाताम्	बिभ्रीरन्
	बिभ्रीथाः	बिभ्रीयाथाम्	बिभ्रीध्वम्
	बिभ्रीय	बिभ्रीवहि	बिभ्रीमहि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	बिभृताम्	बिभ्राताम्	बिभ्रताम्
	बिभृष्व	बिभ्राथाम्	बिभृध्वम्
	बिभरै	बिभरावहै	बिभरामहै
ह्य०	अबिभृत	अबिभ्राताम्	अबिभ्रत
	अबिभृथाः	अबिभ्राथाम्	अबिभृध्वम्
	अबिभ्रि	अबिभृवहि	अबिभृमहि
अ०	अभृत	अभृषाताम्	अभृषत
	अभृथाः	अभृषाथाम्	अभृड्ढ्वम्/ध्वम्
	अभृषि	अभृष्वहि	अभृष्महि
प०	बिभराञ्चक्रे	बिभराञ्चक्राते	बिभराञ्चक्रिरे, इ०
	बभ्रे	बभ्राते	बभ्रिरे
	बभृषे	बभ्राथे	बभृढ्वे
	बभ्रे	बभृवहे	बभृमहे
आ०	भृषीष्ट	भृषीयास्ताम्	भृषीरन्
	भृषीष्ठाः	भृषीयास्थाम्	भृषीध्वम्
	भृषीय	भृषीवहि	भृषीमहि
श्व०	भर्ता	भर्तारौ	भर्तारः
	भर्तासे	भर्तासाथे	भर्ताध्वे
	भर्ताहे	भर्तास्वहे	भर्तास्महे
भ०	भरिष्यते	भरिष्येते	भरिष्यन्ते
	भरिष्यसे	भरिष्येथे	भरिष्यध्वे
	भरिष्ये	भरिष्यावहे	भरिष्यामहे
क्रि०	अभरिष्यत	अभरिष्येताम्	अभरिष्यन्त
	अभरिष्यथाः	अभरिष्येथाम्	अभरिष्यध्वम्
	अभरिष्ये	अभरिष्यावहि	अभरिष्यामहि

अथ जान्तौ

११४१. णिजृकी (निज्) शौचे च चकारात्पोषणे।

व०	नेनेक्ति	नेनिक्तः	नेनिजति
	नेनेक्षि	नेनिक्थः	नेनिक्थ
	नेनज्मि	नेनिज्वः	नेनिज्मः
स०	नेनिज्यात्	नेनिज्याताम्	नेनिज्युः
	नेनिज्याः	नेनिज्यातम्	नेनिज्यात
	नेनिज्याम्	नेनिज्याव	नेनिज्याम
प०	नेनेक्तु/नेनिक्तात्	नेनिक्ताम्	नेनिजतु
	नेनिग्धि/नेनिक्तात्	नेनिक्तम्	नेनिक्त
	नेनिजानि	नेनिजाव	नेनिजाम
ह्य०	अनेनेक्/अनेनेग्	अनेनिक्ताम्	अनेनिजुः
	अनेनेक्/अनेनेग्	अनेनिक्तम्	अनेनिक्त
	अनेनिजम्	अनेनिज्व	अनेनिज्म
अ०	अनिजत्	अनिजताम्	अनिजन्
	अनिजः	अनिजतम्	अनिजत
	अनिजम्	अनिजाव	अनिजाम

तथा

अ०	अनैक्षीत्	अनक्ताम्	अनेक्षुः
	अनैक्षीः	अनैक्तम्	अनैक्त
	अनैक्षम्	अनैक्ष्व	अनैक्ष्म
प०	निनेज	निनिजतुः	निनिजुः
	निनेजिथ	निनिजथुः	निनिज
	निनेज	निनिजिव	निनिजिम
आ०	निज्यात्	निज्यास्ताम्	निज्यासुः
	निज्याः	निज्यास्तम्	निज्यास्त
	निज्यासम्	निज्यास्व	निज्यास्म
श्व०	नेक्ता	नेक्तारौ	नेक्तारः
	नेक्तासि	नेक्तास्थः	नेक्तास्थ
	नेक्तास्मि	नेक्तास्वः	नेक्तास्मः
भ०	नेक्ष्यति	नेक्ष्यतः	नेक्ष्यन्ति
	नेक्ष्यसि	नेक्ष्यथः	नेक्ष्यथ
	नेक्ष्यामि	नेक्ष्यावः	नेक्ष्यामः
क्रि०	अनेक्ष्यत्	अनेक्ष्यताम्	अनेक्ष्यन्
	अनेक्ष्यः	अनेक्ष्यतम्	अनेक्ष्यत
	अनेक्ष्यम्	अनेक्ष्याव	अनेक्ष्याम
व०	नेनिक्ते	नेनिजाते	नेनिजते
	नेनिक्षे	नेनिजाथे	नेनिग्ध्वे
	नेनिजे	नेनिज्वहे	नेनिज्महे
स०	नेनिजीत	नेनिजीयाताम्	नेनिजीरन्
	नेनिजीथाः	नेनिजीयाथाम्	नेजीनिग्ध्वम्
	नेनिजीय	नेनिजीवहि	नेनिजीमहि
प०	नेनिक्ताम्	नेनिजाताम्	नेनिजताम्

	नेनिक्ष्व	नेनिजाथाम्	नेनिग्ध्वम्
	नेनिजै	नेनिजावहै	नेनिजामहै
ह्य०	अनेनिक्त	अनेनिजाताम्	अनेनिजत
	अनेनिक्थाः	अनेनिजाथाम्	अनेनिग्ध्वम्
	अनेनिजि	अनेनिज्वहि	अनेनिज्महि
अ०	अनिक्त	अनिक्षाताम्	अनिक्षत
	अनिक्थाः	अनिक्षाथाम्	अनिग्ध्वम्/ग्ड्ढ्वम्
	अनिक्षि	अनिक्ष्वहि	अनिक्ष्महि
प०	निनिजे	निनिजाते	निनिजिरे
	निनिजिषे	निनिजाथे	निनिजिध्वे
	निनिजे	निनिजिवहे	निनिजिमहे
आ०	निक्षीष्ट	निक्षीयास्ताम्	निक्षीरन्
	निक्षीष्ठाः	निक्षीयास्थाम्	निक्षीध्वम्
	निक्षीय	निक्षीवहि	निक्षीमहि
श्व०	नेक्ता	नेक्तारौ	नेक्तारः
	नेक्तासे	नेक्तासाथे	नेक्ताध्वे
	नेक्ताहे	नेक्तास्वहे	नेक्तास्मिहे
भ०	नेक्ष्यते	नेक्ष्येते	नेक्ष्यन्ते
	नेक्ष्यसे	नेक्ष्येथे	नेक्ष्यध्वे
	नेक्ष्ये	नेक्ष्यावहे	नेक्ष्यामहे
क्रि०	अनेक्ष्यत	अनेक्ष्येताम्	अनेक्ष्यन्त
	अनेक्ष्यथाः	अनेक्ष्येथाम्	अनेक्ष्यध्वम्
	अनेक्ष्ये	अनेक्ष्यावहि	अनेक्ष्यामहि

११४२. विजृकी (विज्) पृथग्भावे।

व०	वेवेक्ति	वेविक्तः	वेविजति
	वेवेक्षि	वेविक्थः	वेविक्थ
	वेवज्मि	वेवज्वः	वेवज्मिः
स०	वेविज्यात्	वेविज्याताम्	वेविज्युः
	वेविज्याः	वेविज्यातम्	वेविज्यात
	वेविज्याम्	वेविज्याव	वेविज्याम
प०	वेवेक्तु/वेविक्तात्	वेविक्ताम्	वेविजतु
	वेविग्धि/वेविक्तात्	वेविक्तम्	वेविक्त
	वेविजानि	वेविजाव	वेविजाम
ह्य०	अवेवेक्/अवेवेग्	अवेविक्ताम्	अवेविजुः
	अवेवेक्/अवेवेग्	अवेविक्तम्	अवेविक्त
	अवेविजम्	अवेविज्व	अवेविज्म
अ०	अविजत्	अविजताम्	अविजन्
	अविजः	अविजतम्	अविजत
	अविजम्	अविजाव	अविजाम
		तथा	
अ०	अवैक्षीत्	अवक्ताम्	अवैक्षुः
	अवैक्षीः	अवैक्तम्	अवैक्त
	अवैक्षम्	अवैक्ष्व	अवैक्ष्म
प०	विवेज	विविजतुः	विविजुः
	विवेजिथ	विविजथुः	विविज
	विवेज	विविजिव	विविजिम
आ०	विज्यात्	विज्यास्ताम्	विज्यासुः
	विज्याः	विज्यास्तम्	विज्यास्त
	विज्यासम्	विज्यास्व	विज्यास्म
श्व०	वेक्ता	वेक्तारौ	वेक्तारः
	वेक्तासि	वेक्तास्थः	वेक्तास्थ
	वेक्तास्मि	वेक्तास्वः	वेक्तास्मः
भ०	वेक्ष्यति	वेक्ष्यतः	वेक्ष्यान्ति
	वेक्ष्यसि	वेक्ष्यथः	वेक्ष्यथ
	वेक्ष्यामि	वेक्ष्यावः	वेक्ष्यामः
क्रि०	अवेक्ष्यत्	अवेक्ष्यताम्	अवेक्ष्यन्
	अवेक्ष्यः	अवेक्ष्यतम्	अवेक्ष्यत
	अवेक्ष्यम्	अवेक्ष्याव	अवेक्ष्याम
व०	वेविक्ते	वेविजाते	वेविजते
	वेविक्षे	वेविजाथे	वेविग्ध्वे
	वेविजे	वेविज्वहे	वेविज्महे
स०	वेविजीत	वेविजीयाताम्	वेविजीरन्
	वेविजीथाः	वेविजीयाथाम्	वेविजीग्ध्वम्
	वेविजीय	वेविजीवहि	वेविजीमहि
प०	वेविक्ताम्	वेविजाताम्	वेविजताम्
	वेविक्ष्व	वेविजाथाम्	वेविग्ध्वम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	वेविजै	वेविजावहै	वेविजामहै
ह्य०	अवेविक्त	अवेविजाताम्	अवेविजत
	अवेविक्थाः	अवेविजाथाम्	अवेविग्ध्वम्
	अवेविजि	अवेविज्वहि	अवेविज्महि
अ०	अविक्त	अविक्षाताम्	अविक्षत
	अविक्थाः	अविक्षाथाम्	अविग्ध्वम्/ड्ढ्वम्
	अविक्षि	अविक्ष्वहि	अविक्ष्महि
प०	विविजे	विविजाते	विविजिरे
	विविजिषे	विविजाथे	विविजिध्वे
	विविजे	विविजिवहे	विविजिमहे
आ०	विक्षीष्ट	विक्षीयास्ताम्	विक्षीरन्
	विक्षीष्ठाः	विक्षीयास्थाम्	विक्षीध्वम्
	विक्षीय	विक्षीवहि	विक्षीमहि
श्व०	वेक्ता	वेक्तारौ	वेक्तारः
	वेक्तासे	वेक्तासाथे	वेक्ताध्वे
	वेक्ताहे	वेक्तास्वहे	वेक्तास्महे
भ०	वेक्ष्यते	वेक्ष्येते	वेक्ष्यन्ते
	वेक्ष्यसे	वेक्ष्येथे	वेक्ष्यध्वे
	वेक्ष्ये	वेक्ष्यावहे	वेक्ष्यामहे
क्रि०	अवेक्ष्यत	अवेक्ष्येताम्	अवेक्ष्यन्त
	अवेक्ष्यथाः	अवेक्ष्येथाम्	अवेक्ष्यध्वम्
	अवेक्ष्ये	अवेक्ष्यावहि	अवेक्ष्यामहि

अथ षान्ताः।

११४३. विष्लृंकी (विष्) व्याप्तौ।

व०	वेवेष्टि	वेविष्टः	वेविषति
	वेवेक्षि	वेविष्टः	वेविष्ट
	वेवेष्मि	वेविष्वः	वेविष्मः
स०	वेविष्यात्	वेविष्याताम्	वेविष्युः
	वेविष्याः	वेविष्यातम्	वेविष्यात
	वेविष्याम्	वेविष्याव	वेविष्याम
प०	वेवेष्टु/वेविष्टात्	वेविष्टाम्	वेविषतु
	वेविड्ढि/ष्टात्	वेविष्टम्	वेविष्ट
	वेविषाणि	वेविषाव	वेविषाम
ह्य०	अवेवेट्/अवेवेड्	अवेविष्टाम्	अवेविषुः
	अवेवेट्/अवेवेड्	अवेविष्टम्	अवेविष्ट
	अवेविषम्	अवेविष्व	अवेविष्म
अ०	अविषत्	अविषताम्	अविषन्
	अविषः	अविषतम्	अविषत
	अविषम	अविषाव	अविषाम
प०	विवेष	विविषतुः	विविषुः
	विवेषिथ	विविषथुः	विविष
	विवेष	विविषिव	विविषिम
आ०	विष्यात्	विष्यास्ताम्	विष्यासुः
	विष्याः	विष्यास्तम्	विष्यास्त
	विष्यासम्	विष्यास्व	विष्यास्म
श्व०	वेष्टा	वेष्टारौ	वेष्टारः
	वेष्टासि	वेष्टास्थः	वेष्टास्थ
	वेष्टास्मि	वेष्टास्वः	वेष्टास्मः
भ०	वेक्ष्यति	वेक्ष्यतः	वेक्ष्यन्ति
	वेक्ष्यसि	वेक्ष्यथः	वेक्ष्यथ
	वेक्ष्यामि	वेक्ष्यावः	वेक्ष्यामः
क्रि०	अवेक्ष्यत्	अवेक्ष्यताम्	अवेक्ष्यन्
	अवेक्ष्यः	अवेक्ष्यतम्	अवेक्ष्यत
	अवेक्ष्यम्	अवेक्ष्याव	अवेक्ष्याम
व०	वेविष्टे	वेविषाते	वेविषते
	वेविक्षे	वेविषाथे	वेविड्ढ्वे
	वेविषे	वेविष्वहे	वेविष्महे
स०	वेविषीत	वेविषीयाताम्	वेविषीरन्
	वेषीविथाः	वेविषीयाथाम्	वेविषिध्वम्
	वेविषीय	वेविषीवहि	वेविषीमहि
प०	वेविष्टाम्	वेविषाताम्	वेविषताम्
	वेविक्ष्व	वेविषाथाम्	वेविड्ढ्वम्
	वेविषै	वेविषावहै	वेविषामहै
ह्य०	अवेविष्ट	अवेविषाताम्	अवेविषत
	अवेविष्ठाः	अवेविषाथाम्	अवेविड्ढ्वम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अवेविषि	अवेविष्वहि	अवेविष्महि
अ०	अविक्षत	अविक्षाताम्	अविक्षन्त
	अविक्षथा:	अविक्षाथाम्	अविक्षध्वम्
	अविक्षि	अविक्षावहि	अविक्षामहि
प०	विविषे	विविषाते	विविषिरे
	विविषिषे	विविषाथे	विविषिध्वे
	विविषे	विविषिवहे	विविषिमहे
आ०	विक्षीष्ट	विक्षीयास्ताम्	विक्षीरन्
	विक्षीष्ठा:	विक्षीयास्थाम्	विक्षीध्वम्
	विक्षीय	विक्षीवहि	विक्षीमहि
श्व०	वेष्टा	वेष्टारौ	वेष्टार:
	वेष्टासे	वेष्टासाथे	वेष्टाध्वे
	वेष्टाहे	वेष्टास्वहे	वेष्टास्महे
भ०	वेक्ष्यते	वेक्ष्येते	वेक्ष्यन्ते
	वेक्ष्यसे	वेक्ष्येथे	वेक्ष्यध्वे
	वेक्ष्ये	वेक्ष्यावहे	वेक्ष्यामहे
क्रि०	अवेक्ष्यत	अवेक्ष्येताम्	अवेक्ष्यन्त
	अवेक्ष्यथा:	अवेक्ष्येथाम्	अवेक्ष्यध्वम्
	अवेक्ष्ये	अवेक्ष्यावहि	अवेक्ष्यामहि

इत्युभयपदिन:। वृत् ह्लादय:। समाप्ता इत्यर्थ:। केचित्तु परानपि एकादश धातूनत्राभिदधति। अलौकिकत्वाल्लोकोत्तमैरुपेक्षितानामप्येषां विनेयानुग्रहार्थं रूपाणि नामग्राहं दर्श्यन्ते।

११४३-२. घृंक् (घृ) क्षरणदीप्त्यो:।

व०	जिघर्त्ति	जिघृत:	जिघ्रति
	जिघर्षि	जिघृथ:	जिघृथ
	जिघर्मि	जिघृव:	जिघृम:
स०	जिघृयात्	जिघृयाताम्	जिघृयु:
	जिघृया:	जिघृयातम्	जिघृयात
	जिघृयाम्	जिघृयाव	जिघृयाम
प०	जिघर्त्तु/जिघृतात्	जिघृताम्	जिघ्रतु
	जिघृहि/जिघृतात्	जिघृतम्	जिघृत
	जिघराणि	जिघराव	जिघराम
ह्य०	अजिघ:	अजिघृताम्	अजिघरु:
	अजिघ:	अजिघृतम्	अजिघृत
	अजिघरम्	अजिघृव	अजिघृम
अ०	अघार्षीत्	अघार्ष्टाम्	अघार्षु:
	अघार्षी:	अघार्ष्टम्	अघार्ष्ट
	अघार्षम्	अघार्ष्व	अघार्ष्म
प०	जघार	जघ्रतु:	जघ्रु:
	जघर्थ	जघ्रथु:	जघ्र
	जघार/जघर	जघ्रिव	जघ्रिम
आ०	घ्रियात्	घ्रियास्ताम्	घ्रियासु:
	घ्रिया:	घ्रियास्तम्	घ्रियास्त
	घ्रियासम्	घ्रियास्व	घ्रियास्म
श्व०	घर्त्ता	घर्त्तारौ	घर्त्तार:
	घर्त्तासि	घर्त्तास्थ:	घर्त्तास्थ
	घर्त्तास्मि	घर्त्तास्व:	घर्त्तास्म:
भ०	घरिष्यति	घरिष्यत:	घरिष्यन्ति
	घरिष्यसि	घरिष्यथ:	घरिष्यथ
	घरिष्यामि	घरिष्याव:	घरिष्याम:
क्रि०	अघरिष्यत्	अघरिष्यताम्	अघरिष्यन्
	अघरिष्य:	अघरिष्यतम्	अघरिष्यत
	अघरिष्यम्	अघरिष्याव	अघरिष्याम

११४३-३. ह्रंक् (हृ) प्रसह्यकरणे।

व०	जिहर्ति	जिहृत:	जिह्रति
स०	जिहृयात्	जिहृयाताम्	जिहृयु:
प०	जिहर्त्तु/जिहृतात्	जिहृताम्	जिह्रतु
ह्य०	अजिह:	अजिहृताम्	अजिहरु:
अ०	अहार्षीत्	अहार्ष्टाम्	अहार्षु:
प०	जहार	जह्रतु:	जह्रु:
आ०	ह्रियात्	ह्रियास्ताम्	ह्रियासु:
श्व०	हर्त्ता	हर्त्तारौ	हर्त्तार:
भ०	हरिष्यति	हरिष्यत:	हरिष्यन्ति
क्रि०	अहरिष्यत्	अहरिष्यताम्	अहरिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११४३-४. सृंक् (सृ) गतौ-

व०	ससर्ति	ससृत:	सस्रति
स०	ससृयात्	ससृयाताम्	ससृयु:
प०	ससर्तु/ससृतात्	ससृताम्	सस्रतु
ह्य०	अससः	अससृताम्	अससरु:
अ०	असार्षीत्	असार्ष्टाम्	असार्षु:
प०	ससार	सस्रतु:	सस्रु:
आ०	स्रियात्	स्रियास्ताम्	स्रियासु:
श्व०	सर्त्ता	सर्त्तारौ	सर्त्तार:
भ०	सरिष्यति	सरिष्यत:	सरिष्यन्ति
क्रि०	असरिष्यत्	असरिष्यताम्	असरिष्यन्

११४३-५. भसक् (भस्) भर्त्सनदीप्त्यो:।

व०	बभस्ति	बब्ध:	बप्सति
स०	बप्स्यात्	बप्स्याताम्	बप्स्यु:
प०	बभस्तु/बब्धात्	बब्धाम्	बप्सतु
ह्य०	अबभत्	अबब्धाम्	अबप्सु:
अ०	अभासीत्	अभासिष्टाम्	अभासिषु:
		तथा	
	अभसीत्	अभसिष्टाम्	अभसिषु:
प०	बभास	बप्सतु:	बप्सु:
आ०	भप्स्यात्	भप्स्यास्ताम्	भप्स्यासु:
श्व०	भसिता	भसितारौ	भसितार:
भ०	भसिष्यति	भसिष्यत:	भसिष्यन्ति
क्रि०	अभसिष्यत्	अभसिष्यताम्	अभसिष्यन्

११४३-६. किंक् (कि) ज्ञाने।

व०	चिकेत्ति	चिकित्त:	चिक्तिति
स०	चिकियात्	चिकियाताम्	चिकियु:
प०	चिकेतु चिक्यतु	चिकितात्	चिकिताम्
ह्य०	अचिकेत्	अचिकिताम्	अचिकयु:
अ०	अकैषीत्	अकैष्टाम्	अकैषु:
प०	चिकाय	चिक्यतु:	चिक्यु:
आ०	कीयात्	कीयास्ताम्	कीयासु:
श्व०	केता	केतारौ	केतार:
भ०	केष्यति	केष्यत:	केष्यन्ति
क्रि०	अकेष्यत्	अकेष्यताम्	अकेष्यन्

११४३-७. कितक् (कित्) ज्ञाने।

व०	चिकेत्ति	चिकित्त:	चिकितति
स०	चिकित्यात्	चिकित्याताम्	चिकित्यु:
प०	चिकेतु/चिकित्तात्	चिकित्ताम्	चिक्तितु
ह्य०	अचिकेत्	अचिकित्ताम्	अचितिकतु:
अ०	अकेतीत्	अकेतिष्टाम्	अकेतिषु:
प०	चिकेत	चिकिततु:	चिकितु:
आ०	कित्यात्	कित्यास्ताम्	कित्यासु:
श्व०	केतिता	केतारौ	केतितार:
भ०	केतिष्यति	केतिष्यत:	केतिष्यन्ति
क्रि०	अकेतिष्यत्	अकेतिष्यताम्	अकेतिष्यन्

११४३-८. तुरक् (तुर्) त्वरणे।

व०	तुतोर्त्ति	तुतूर्त्त:	तुतुरति
स०	तुतूर्यात्	तुतूर्याताम्	तुतूर्यु:
प०	तुतोर्त्तु	तुतूर्त्तात्/तुतूर्त्ताम्	तुतुरतु
ह्य०	अतुतो:	अतुतूर्त्ताम्	अतुतुरु:
अ०	अतोरीत्	अतोरिष्टाम्	अतोरिषु:
प०	तुतोर	तुतुरतु:	तुतुरु:
आ०	तूर्यात्	तूर्यास्ताम्	तूर्यासु:
श्व०	तोरिता	तोरितारौ	तोरितार:
भ०	तोरिष्यति	तोरिष्यत:	तोरिष्यन्ति
क्रि०	अतोरिष्यत्	अतोरिष्यताम्	अतोरिष्यन्

११४३-९. धिषक् (धिष्) शब्दे।

व०	दिधेष्टि	दिधिष्ट:	दिधिषति
स०	दिधिष्यात्	दिधिष्याताम्	दिधिष्यु:
प०	दिधेष्टु/दिधिष्टात्	दिधिषाम्	दिधिषतु
ह्य०	अदिधेट्	धेड्	अदिधिष्टाम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	अधेषीत्	अधेषिष्टाम्	अधेषिषुः
प०	दिधेष	दिधिषतुः	दिधिषुः
आ०	धिष्यात्	धिष्यास्ताम्	धिष्यासुः
श्व०	धेषिता	धेषितारौ	धेषितारः
भ०	धेषिष्यति	धेषिष्यतः	धेषिष्यन्ति
क्रि०	अधेषिष्यत्	अधेषिष्यताम्	अधेषिष्यन्

११४३-१०. धनक् (धन्) धनन्ये।

व०	दधन्ति	दधन्तः	दधनति
स०	दधन्यात्	दधन्याताम्	दधन्युः
प०	दधन्तु/दधन्तात्	दधन्ताम्	दधनतु
ह्य०	अदधत्	अदधन्ताम्	अदधनुः
अ०	अधानीत्	अधानिष्टाम्	अधानिषुः
		तथा	
	अधनीत्	अधनिष्टाम्	अधनिषुः
प०	दधान	दधनतुः	दधनुः
आ०	धन्यात्	धन्यास्ताम्	धन्यासुः
श्व०	धनिता	धनितारौ	धनितारः
भ०	धनिष्यति	धनिष्यतः	धनिष्यन्ति
क्रि०	अधनिष्यत्	अधनिष्यताम्	अधनिष्यन्

११४३-११. जनक् (जन्) जनने।

व०	जजन्ति	जजातः	जजज्ञति
	जजंसि	जजाथः	जजाथ
	जजन्मि	जजन्वः	जजन्मः
स०	जजन्यात्	जजन्याताम्	जजन्युः
	ज्जन्याः	जजन्यातम्	जजन्यात
	जजन्याम्	जजन्याव	जजन्याम
प०	जजन्तु/जजातात्	जजाताम्	जज्ञतु
	जजाहि/जजातात्	जजातम्	जजात
	जजनानि	जजनाव	जजनाम
ह्य०	अजजन्	अजजाताम्	अजज्ञुः
	अजजन्	अजजातम्	अजजात
	अजजनम्	अजजन्व	अजजन्म
अ०	अजानीत्	अजानिष्टाम्	अजानिषुः
	अजानीः	अजानिष्टम्	अजानिष्ट
	अजानिषम्	अजानिष्व	अजानिष्म
		तथा	
	अजनीत्	अजनिष्टाम्	अजनिषुः
	अजनीः	अजनिष्टम्	अजनिष्ट
	अजनिषम्	अजनिष्व	अजनिष्म
प०	जजान	जज्ञतुः	जज्ञुः
	जजनिथ	जज्ञथुः	जज्ञ
	जजान/जजन	जज्ञिव	जज्ञिम
आ०	जन्यात्	जन्यास्ताम्	जन्यासुः
	जन्याः	जन्यास्तम्	जन्यास्त
	जन्यासम्	जन्यास्व	जन्यास्म
श्व०	जनिता	जनितारौ	जनितारः
	जनितासि	जनितास्थः	जनितास्थ
	जनितास्मि	जनितास्वः	जनितास्मः
भ०	जनिष्यति	जनिष्यतः	जनिष्यन्ति
	जनिष्यसि	जनिष्यथः	जनिष्यथ
	जनिष्यामि	जनिष्यावः	जनिष्यामः
क्रि०	अजनिष्यत्	अजनिष्यताम्	अजनिष्यन्
	अजनिष्यः	अजनिष्यतम्	अजनिष्यत
	अजनिष्यम्	अजनिष्याव	अजनिष्याम

११४३-१२. गांक् (गा) स्तुतौ।

व०	जिगाति	जिगीतः	जिगति
	जिगासि	जिगीथः	जिगीथ
	जिगामि	जिगीवः	जगीमः
स०	जिगीयात्	जिगीयाताम्	जिगीयुः
	जिगीयाः	जिगीयातम्	जिगीयात
	जिगीयाम्	जिगीयाव	जिगीयाम
प०	जिगीतु/जिगीतात्	जिगीताम्	जिगतु
	जिगीहि/जिगीतात्	जिगीतम्	जिगीत
	जिगानि	जिगाव	जिगाम
ह्य०	अजिगात्	अजिगीताम्	अजिगुः
	अजिगाः	अजिगीतम्	अजिगीत
	अजिगाम्	अजिगीव	अजिगीम
अ०	अगासीत्	अगासिष्टाम्	अगासिषुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अगासीः	अगासिष्टम्	अगासिष्ट
	अगासिषम्	अगासिष्व	अगासिष्म
प०	जगौ	जगतुः	जगुः
	जगिथ/जगाथ	जगथुः	जग
	जगौ	जगिव	जगिम
आ०	गेयात्	गेयास्ताम्	गेयासुः
	गेयाः	गेयास्तम्	गेयास्त
	गेयासम्	गेयास्व	गेयास्म
श्व०	गाता	गातारौ	गातारः
	गातासि	गातास्थः	गातास्थ
	गातास्मि	गातास्वः	गातास्मः
भ०	गास्यति	गास्यतः	गास्यन्ति
	गास्यसि	गास्यथः	गास्यथ
	गास्यामि	गास्यावः	गास्यामः
क्रि०	अगास्यत्	अगास्यताम्	अगास्यन्
	अगास्यः	अगास्यतम्	अगास्यत
	अगास्यम्	अगास्याव	अगास्याम

इति ह्लादयः।

।।समाप्ता निरनुबन्धा अदादयः।।

♣♣♣

।।अथ दिवादिः।।

अथ श्यविकरणा दिवादयो वर्णक्रमेण निर्दिश्यन्तेतत्रापि पूर्वाचार्यप्रसिद्ध्यनुरोधेनादौ जयेच्छा विजिगीषा। पणिर्व्यवहारः क्रयादिः।

११४४. दिवुच् (दिव्) क्रीडाजयेच्छापणिद्युतिस्तुतिगतिषु।

व०	दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति
	दीव्यसि	दीव्यथः	दीव्यथ
	दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः
स०	दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयुः
	दीव्येः	दीव्येतम्	दीव्येत
	दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम
प०	दीव्यतु/दीव्यतात्	दीव्यताम्	दीव्यन्तु
	दीव्य/दीव्यतात्	दीव्यतम्	दीव्यत
	दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम
ह्य०	अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्
	अदीव्यः	अदीव्यतम्	अदीव्यत
	अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम
अ०	अदेवीत्	अदेविष्टाम्	अदेविषुः
	अदेवीः	अदेविष्टम्	अदेविष्ट
	अदेविषम्	अदेविष्व	अदेविष्म
प०	दिदेव	दिदिवतुः	दिदिवुः
	दिदेविथ	दिदिवथुः	दिदिव
	दिदेव	दिदिविव	दिदिविम
आ०	दीव्यात्	दीव्यास्ताम्	दीव्यासुः
	दीव्याः	दीव्यास्तम्	दीव्यास्त
	दीव्यासम्	दीव्यास्व	दीव्यास्म
श्व०	देविता	देवितारौ	देवितारः
	देवितासि	देवितास्थः	देवितास्थ
	देवितास्मि	देवितास्वः	देवितास्मः
भ०	देविष्यति	देविष्यतः	देविष्यन्ति
	देविष्यसि	देविष्यथः	देविष्यथ
	देविष्यामि	देविष्यावः	देविष्यामः
क्रि०	अदेविष्यत्	अदेविष्यताम्	अदेविष्यन्
	अदेविष्यः	अदेविष्यतम्	अदेविष्यत
	अदेविष्यम्	अदेविष्याव	अदेविष्याम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ ऋदन्तौ सेटौ च।

११४५. जृष् (जृ) जरसि।[१]

व०	जीर्यति	जीर्यत:	जीर्यन्ति
	जीर्यसि	जीर्यथ:	जीर्यथ
	जीर्यामि	जीर्याव:	जीर्याम:
स०	जीर्येत्	जीर्येताम्	जीर्येयु:
	जीर्ये:	जीर्येतम्	जीर्येत
	जीर्येयम्	जीर्येव	जीर्येम
प०	जीर्यतु/जीर्यतात्	जीर्यताम्	जीर्यन्तु
	जीर्य/जीर्यतात्	जीर्यतम्	जीर्यत
	जीर्याणि	जीर्याव	जीर्याम
ह्य०	अजीर्यत्	अजीर्यताम्	अजीर्यन्
	अजीर्य:	अजीर्यतम्	अजीर्यत
	अजीर्यम्	अजीर्याव	अजीर्याम
अ०	अजरत्	अजरताम्	अजरन्
	अजर:	अजरतम्	अजरत
	अजरम्	अजराव	अजराम
		तथा	
	अजारीत्	अजारिष्टाम्	अजारिषु:
	अजारी:	अजारिष्टम्	अजारिष्ट
	अजारिषम्	अजारिष्व	अजारिष्म
प०	जजार	जजरतु:/जेरतु	जजरु:/जेरु:
	जजरिथ/जेरिथ	जजरथु/जेरथु:	जजर/जेर
	जजार/जजर	जजरिव/जजरिम	जेरिव/जेरिम
आ०	जीर्यात्	जीर्यास्ताम्	जीर्यासु:
	जीर्या:	जीर्यास्ताम्	जीर्यास्त
	जीर्यासम्	जीर्यास्व	जीर्यास्म
श्व०	जरिता	जरितारौ	जरितार:
	जरितासि	जरितास्थ:	जरितास्थ
	जरितास्मि	जरितास्व:	जरितास्म:
		तथा	
	जरीता	जरीतारौ	जरीतार:
	जरीतासि	जरीतास्थ:	जरीतास्थ
	जरीतास्मि	जरीतास्व:	जरीतास्म:
भ०	जरिष्यति	जरिष्यत:	जरिष्यन्ति
	जरिष्यसि	जरिष्यथ:	जरिष्यथ
	जरिष्यामि	जरिष्याव:	जरिष्याम:
		तथा	
भ०	जरीष्यति	जरीष्यत:	जरीष्यन्ति
	जरीष्यसि	जरीष्यथ:	जरीष्यथ
	जरीष्यामि	जरीष्याव:	जरीष्याम:
क्रि०	अजरिष्यत्	अजरिष्यताम्	अजरिष्यन्
	अजरिष्य:	अजरिष्यतम्	अजरिष्यत
	अजरिष्यम्	अजरिष्याव	अजरिष्याम
		तथा	
क्रि०	अजरीष्यत्	अजरीष्यताम्	अजरीष्यन्
	अजरीष्य:	अजरीष्यतम्	अजरीष्यत
	अजरीष्यम्	अजरीष्याव	अजरीष्याम

११४६. झृष्च् (झृ) जरसि।[२]

व०	झीर्यति	झीर्यत:	झीर्यन्ति
स०	झीर्येत्	झीर्येताम्	झीर्येयु:
प०	झीर्यतु/झीर्यतात्	झीर्यताम्	झीर्यन्तु
ह्य०	अझीर्यत्	अझीर्यताम्	अझीर्यन्
अ०	अझारीत्	अझारिष्टाम्	अझारिषु:
प०	जझार	जझरतु:	जझरु:
आ०	झीर्यात्	झीर्यास्ताम्	झीर्यासु:
श्व०	झरिता	झरितारौ	झरितार:
		तथा	
	झरीता	झरीतारौ	झरीतार:

१. वयोहानावित्यर्थ:।

२. झरा वयोहानि:।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	झरिष्यति	झरिष्यतः	झरिष्यन्ति

तथा

भ०	झरीष्यति	झरीष्यतः	झरीष्यन्ति
क्रि०	अझरिष्यत्	अझरिष्यताम्	अझरिष्यन्

तथा

क्रि०	अझरीष्यत्	अझरीष्यताम्	अझरीष्यन्

अथोदन्ताश्चत्वारोऽनिट्श्च।

११४७. शोच् (शो) तक्षणे। तनुकरणे इत्यर्थः।

व०	श्यति	श्यतः	श्यन्ति
स०	श्येत्	श्येताम्	श्येयुः
प०	श्यतु/श्यतात्	श्यताम्	श्यन्तु
ह्य०	अश्यत्	अश्यताम्	अश्यन्
अ०	अशात्	अशाताम्	अशुः
अ०	अशासीत्	अशासिष्टाम्	अशासिषुः
प०	शशौ	शशतुः	शशुः
आ०	शायात्	शायास्ताम्	शायासुः
श्व०	शाता	शातारौ	शातारः
भ०	शास्यति	शास्यतः	शास्यन्ति
क्रि०	अशास्यत्	अशास्यताम्	अशास्यन्

११४८. दोंच् (दो) छेदने।

व०	द्यति	द्यतः	द्यन्ति
	द्यसि	द्यथः	द्यथ
	द्यामि	द्यावः	द्यामः
स०	द्येत्	द्येताम्	द्येयुः
	द्येः	द्येतम्	द्येत
	द्येयम्	द्येव	द्येम
प०	द्यतु/द्यतात्	द्यताम्	द्यन्तु
	द्य/द्यतात्	द्यतम्	द्यत
	द्यानि	द्याव	द्याम
ह्य०	अद्यत्	अद्यताम्	अद्यन्
	अद्यः	अद्यतम्	अद्यत
	अद्यम्	अद्याव	अद्याम
अ०	अदात्	अदाताम्	अदुः
	अदाः	अदातम्	अदात
	अदाम्	अदाव	अदाम
प०	ददौ	ददतुः	ददुः
	ददिथ/ददाथ	ददथुः	दद
	ददौ	ददिव	ददिम
आ०	देयात्	देयास्ताम्	देयासुः
	देयाः	देयास्तम्	देयास्त
	देयासम्	देयास्व	देयास्म
श्व०	दाता	दातारौ	दातारः
	दातासि	दातास्थः	दातास्थ
	दातास्मि	दातास्वः	दातास्मः
भ०	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः
क्रि०	अदास्यत्	अदास्यताम्	अदास्यन्
	अदास्यः	अदास्यतम्	अदास्यत
	अदास्यम्	अदास्याव	अदास्याम

११४९. छोंच् (छो) छेदने।

व०	छ्यति	छ्यतः	छ्यन्ति
स०	छ्येत्	छ्येताम्	छ्येयुः
प०	छ्यतु/छ्यतात्	छ्यताम्	छ्यन्तु
ह्य०	अछ्यत्	अछ्यताम्	अछ्यन्
अ०	अच्छात्	अच्छाताम्	अच्छुः
	अच्छासीत्	अच्छासिष्टाम्	अच्छासिषुः
प०	चच्छौ	चच्छतुः	चच्छुः
आ०	छायात्	छायास्ताम्	छायासुः
श्व०	छाता	छातारौ	छातारः
भ०	छास्यति	छास्यतः	छास्यन्ति
क्रि०	अछास्यत्	अछास्यताम्	अछास्यन्

११५०. षोंच् (सो) अन्तकर्मणि, विनाश इत्यर्थः।

व०	स्यति	स्यतः	स्यन्ति
स०	स्येत्	स्येताम्	स्येयुः
प०	स्यतु/स्यतात्	स्यताम्	स्यन्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	अस्यत्	अस्यताम्	अस्यन्
अ०	असात्	असाताम्	असुः
अ०	असासीत्	असासिष्टाम्	असासिषुः
प०	ससौ	ससतुः	ससुः
आ०	सेयात्	सेयास्ताम्	सेयासुः
श्व०	साता	सातारौ	सातारः
भ०	सास्यति	सास्यतः	सास्यन्ति
क्रि०	असास्यत्	असास्यताम्	असास्यन्

अथ डान्तः सेट् च।

११५१. व्रीड (व्रीड्च्) लज्जायाम्।

व०	व्रीड्यति	व्रीड्यतः	व्रीड्यन्ति
स०	व्रीड्येत्	व्रीड्येताम्	व्रीड्येयुः
प०	व्रीड्यतु/व्रीड्यतात्	व्रीड्यताम्	व्रीड्यन्तु
ह्य०	अव्रीड्यत्	अव्रीड्यताम्	अव्रीड्यन्
अ०	अव्रीडीत्	अव्रीडिष्टाम्	अव्रीडिषुः
प०	विव्रीड	विव्रीडतुः	विव्रीडुः
आ०	व्रीड्यात्	व्रीड्यास्ताम्	व्रीड्यासुः
श्व०	व्रीडिता	व्रीडितारौ	व्रीडितारः
भ०	व्रीडिष्यति	व्रीडिष्यतः	व्रीडिष्यन्ति
क्रि०	अव्रीडिष्यत्	अव्रीडिष्यताम्	अव्रीडिष्यन्

ऋफिडादित्वाल्लत्वे व्रील्यति।

अथ तान्तः सेट् च।

११५२. नृतैच् (नृत्) नर्त्तने।
नर्तनं नाट्यम्।

व०	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः
स०	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः
	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत
	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम
प०	नृत्यतु/नृत्यतात्	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
	नृत्य/नृत्यतात्	नृत्यतम्	नृत्यत
	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम
ह्य०	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
	अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत
	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम
अ०	अनर्त्तीत्	अनर्त्तिष्टाम्	अनर्त्तिषुः
	अनर्त्तीः	अनर्त्तिष्टम्	अनर्त्तिष्ट
	अनर्त्तिषम्	अनर्त्तिष्व	अनर्त्तिष्म
प०	ननर्त्त	ननृततुः	ननृतुः
	ननर्त्तिथ	ननृतथुः	ननृत
	ननर्त्त	ननृतिव	ननृतिम
आ०	नृत्यात्	नृत्यास्ताम्	नृत्यासुः
	नृत्याः	नृत्यास्तम्	नृत्यास्त
	नृत्यासम्	नृत्यास्व	नृत्यास्म
श्व०	नर्त्तिता	नर्त्तितारौ	नर्त्तितारः
	नर्त्तितासि	नर्त्तितास्थः	नर्त्तितास्थ
	नर्त्तितास्मि	नर्त्तितास्वः	नर्त्तितास्मः
भ०	नर्त्स्यति	नर्त्स्यतः	नर्त्स्यन्ति
	नर्त्स्यसि	नर्त्स्यथः	नर्त्स्यथ
	नर्त्स्यामि	नर्त्स्यावः	नर्त्स्यामः

तथा

भ०	नर्त्तिष्यति	नर्त्तिष्यतः	नर्त्तिष्यन्ति
	नर्त्तिष्यसि	नर्त्तिष्यथः	नर्त्तिष्यथ
	नर्त्तिष्यामि	नर्त्तिष्यावः	नर्त्तिष्यामः
क्रि०	अनर्त्तिष्यत्	अनर्त्तिष्यताम्	अनर्त्तिष्यन्
	अनर्त्तिष्यः	अनर्त्तिष्यतम्	अनर्त्तिष्यत
	अनर्त्तिष्यम्	अनर्त्तिष्याव	अनर्त्तिष्याम

तथा

क्रि०	अनर्त्स्यत्	अनर्त्स्यताम्	अनर्त्स्यन्
	अनर्त्स्यः	अनर्त्स्यतम्	अनर्त्स्यत
	अनर्त्स्यम्	अनर्त्स्याव	अनर्त्स्याम

अथ थान्तौ सेटौ च।

११५३. कुथच् (कुथ्) पूतिभावे।

पूतिभावो दुर्गन्धः क्लेदः।

व०	कुथ्यति	कुथ्यतः	कुथ्यन्ति
स०	कुथ्येत्	कुथ्येताम्	कुथ्येयुः
प०	कुथ्यतु/कुथ्यतात्	कुथ्यताम्	कुथ्यन्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	अकुथ्यत्	अकुथ्यताम्	अकुथ्यन्
अ०	अकोथीत्	अकोथिष्टाम्	अकोथिषुः
प०	चुकोथ	चुकुथतुः	चुकुथुः
आ०	कुथ्यात्	कुथ्यास्ताम्	कुथ्यासुः
श्व०	कोथिता	कोथितारौ	कोथितारः
भ०	कोथिष्यति	कोथिष्यतः	कोथिष्यन्ति
क्रि०	अकोथिष्यत्	अकोथिष्यताम्	अकोथिष्यन्

११५४. पुथच् (पुथ्) हिंसायाम्।

व०	पुथ्यति	पुथ्यतः	पुथ्यन्ति
स०	पुथ्येत्	पुथ्येताम्	पुथ्येयुः
प०	पुथ्यतु/पुथ्यतात्	पुथ्यताम्	पुथ्यन्तु
ह्य०	अपुथ्यत्	अपुथ्यताम्	अपुथ्यन्
अ०	अपोथीत्	अपोथिष्टाम्	अपोथिषुः
प०	पुपोथ	पुपुथतुः	पुपुथुः
आ०	पुथ्यात्	पुथ्यास्ताम्	पुथ्यासुः
श्व०	पोथिता	पोथितारौ	पोथितारः
भ०	पोथिष्यति	पोथिष्यतः	पोथिष्यन्ति
क्रि०	अपोथिष्यत्	अपोथिष्यताम्	अपोथिष्यन्

अथ धान्तास्त्रयः।

११५५. गुधच् (गुध्) परिवेष्टने।

व०	गुध्यति	गुध्यतः	गुध्यन्ति
स०	गुध्येत्	गुध्येताम्	गुध्येयुः
प०	गुध्यतु/गुध्यतात्	गुध्यताम्	गुध्यन्तु
ह्य०	अगुध्यत्	अगुध्यताम्	अगुध्यन्
अ०	अगोधीत्	अगोधिष्टाम्	अगोधिषुः
प०	जुगोध	जुगुधतुः	जुगुधुः
आ०	गुध्यात्	गुध्यास्ताम्	गुध्यासुः
श्व०	गोधिता	गोधितारौ	गोधितारः
भ०	गोधिष्यति	गोधिष्यतः	गोधिष्यन्ति
क्रि०	अगोधिष्यत्	अगोधिष्यताम्	अगोधिष्यन्

११५६. राधंच् (राध्) वृद्धौ।[१]

व०	राध्यति	राध्यतः	राध्यन्ति
स०	राध्येत्	राध्येताम्	राध्येयुः
प०	राध्यतु/राध्यतात्	राध्यताम्	राध्यन्तु
ह्य०	अराध्यत्	अराध्यताम्	अराध्यन्
अ०	अरात्सीत्	अराद्धाम्	अरात्सुः
प०	रराध	रराधतुः	रराधुः
आ०	राध्यात्	राध्यास्ताम्	राध्यासुः
श्व०	राद्धा	राद्धारौ	राद्धारः
भ०	रात्स्यति	रात्स्यतः	रात्स्यन्ति
क्रि०	अरात्स्यत्	अरात्स्यताम्	अरात्स्यन्

११५७. व्यधंच् (व्यध्) ताडने।

व०	विध्यति	विध्यतः	विध्यन्ति
स०	विध्येत्	विध्येताम्	विध्येयुः
प०	विध्यतु/विध्यतात्	विध्यताम्	विध्यन्तु
ह्य०	अविध्यत्	अविध्यताम्	अविध्यन्
अ०	अव्यात्सीत्	अव्याद्धाम्	अव्यात्सुः
प०	विव्याध	विविधतुः	विविधुः
आ०	विध्यात्	विध्यास्ताम्	विध्यासुः
श्व०	व्यद्धा	व्यद्धारौ	व्यद्धारः
भ०	व्यत्स्यति	व्यत्स्यतः	व्यत्स्यन्ति
क्रि०	अव्यत्स्यत्	अव्यत्स्यताम्	अव्यत्स्यन्

११५८. क्षिपंच् (क्षिप्) प्ररणे।

व०	क्षिप्यति	क्षिप्यतः	क्षिप्यन्ति
स०	क्षिप्येत्	क्षिप्येताम्	क्षिप्येयुः
प०	क्षिप्यतु/क्षिप्यतात्	क्षिप्यताम्	क्षिप्यन्तु
ह्य०	अक्षिप्यत्	अक्षिप्यताम्	अक्षिप्यन्
अ०	अक्षैप्सीत्	अक्षैप्ताम्	अक्षैप्सुः
प०	चिक्षेप	चिक्षिपतुः	चिक्षिपुः
आ०	क्षिप्यात्	क्षिप्यास्ताम्	क्षिप्यासुः

१. स्वादिषु पठिष्यमाणस्याप्यस्येहपाठो वृद्धावेव श्यविकरणार्थः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	क्षप्ता	क्षप्तारौ	क्षेप्तार:
भ०	क्षेप्स्यति	क्षेप्स्यत:	क्षेप्स्यन्ति
क्रि०	अक्षेप्स्यत्	अक्षेप्स्यताम्	अक्षेप्स्यन्

११५९. पुष्पच् (पुष्प्) विकसने।

व०	पुष्प्यति	पुष्प्यत:	पुष्प्यन्ति
स०	पुष्प्येत्	पुष्प्येताम्	पुष्प्येयु:
प०	पुष्प्यतु/पुष्प्यतात्	पुष्प्यताम्	पुष्प्यन्तु
ह्य०	अपुष्प्यत्	अपुष्प्यताम्	अपुष्प्यन्
अ०	अपुष्पीत्	अपुष्पिष्टाम्	अपुष्पिषु:
प०	पुपुष्प	पुपुष्पतु:	पुपुष्पु:
आ०	पुष्प्यात्	पुष्प्यास्ताम्	पुष्प्यासु:
श्व०	पुष्पिता	पुष्पितारौ	पुष्पितार:
भ०	पुष्पिष्यति	पुष्पिष्यत:	पुष्पिष्यन्ति
क्रि०	अपुष्पिष्यत्	अपुष्पिष्यताम्	अपुष्पिष्यन्

अथ मान्ताश्चत्वार: सेटश्च।

११६०. तिमच् (तिम्) आर्द्रभावे।

व०	तिम्यति	तिम्यत:	तिम्यन्ति
स०	तिम्येत्	तिम्येताम्	तिम्येयु:
प०	तिम्यतु/तिम्यतात्	तिम्यताम्	तिम्यन्तु
ह्य०	अतिम्यत्	अतिम्यताम्	अतिम्यन्
अ०	अतेमीत्	अतेमिष्टाम्	अतेमिषु:
प०	तितेम	तितिमतु:	तितिमु:
आ०	तिम्यात्	तिम्यास्ताम्	तिम्यासु:
श्व०	तेमिता	तेमितारौ	तेमितार:
भ०	तेमिष्यति	तेमिष्यत:	तेमिष्यन्ति
क्रि०	अतेमिष्यत्	अतेमिष्यताम्	अतेमिष्यन्

११६१. तीमच् (तीम्) आर्द्रभावे।

व०	तीम्यति	तीम्यत:	तीम्यन्ति
स०	तीम्येत्	तीम्येताम्	तीम्येयु:
प०	तीम्यतु/तीम्यतात्	तीम्यताम्	तीम्यन्तु
ह्य०	अतीम्यत्	अतीम्यताम्	अतीम्यन्
अ०	अतीमीत्	अतीमिष्टाम्	अतीमिषु:
प०	तितीम	तितीमतु:	तितीमु:
आ०	तीम्यात्	तीम्यास्ताम्	तीम्यासु:
श्व०	तीमिता	तीमितारौ	तीमितार:
भ०	तीमिष्यती	तीमिष्यत:	तीमिष्यन्ति
क्रि०	अतीमिष्यत्	अतीमिष्यताम्	अतीमिष्यन्

११६२. ष्टिमच् (स्तिम्) आर्द्रभावे।

व०	स्तिम्यति	स्तिम्यत:	स्तिम्यन्ति
स०	स्तिम्येत्	स्तिम्येताम्	स्तिम्येयु:
प०	स्तिम्यतु/स्तिम्यतात्	स्तिम्यताम्	स्तिम्यन्तु
ह्य०	अस्तिम्यत्	अस्तिम्यताम्	अस्तिम्यन्
अ०	अस्तेमीत्	अस्तेमिष्टाम्	अस्तेमिषु:
प०	तिष्टेम	तिष्टिमतु:	तिष्टिमु:
आ०	स्तिम्यात्	स्तिम्यास्ताम्	स्तिम्यासु:
श्व०	स्तेमिता	स्तेमितारौ	स्तेमितार:
भ०	स्तेमिष्यति	स्तेमिष्यत:	स्तेमिष्यन्ति
क्रि०	अस्तेमिष्यत्	अस्तेमिष्यताम्	अस्तेमिष्यन्

११६३. ष्टीमच् (तिस्तीम्) आर्द्रभावे।

व०	स्तीम्यति	स्तीम्यत:	स्तीम्यन्ति
स०	स्तीम्येत्	स्तीम्येताम्	स्तीम्येयु:
प०	स्तीम्यतु/स्तीम्यताते	स्तीम्यताम्	स्तीम्यन्तु
ह्य०	अस्तीम्यत्	अस्तीम्यताम्	अस्तीम्यन्
अ०	अस्तीमीत्	अस्तीमिष्टाम्	अस्तीमिषु:
प०	तिष्टीम	तिष्टीमतु:	तिष्टीमु:
आ०	स्तीम्यात्	स्तीम्यास्ताम्	स्तीम्यासु:
श्व०	स्तीमिता	स्तीमितारौ	स्तीमितार:
भ०	स्तीमिष्यती	स्तीमिष्यत:	स्तीमिष्यन्ति
क्रि०	अस्तीमिष्यत्	अस्तीमिष्यताम्	अस्तीमिष्यन्

अथ वान्ता श्चत्वार: सेटश्च।

११६४. षिवूच् (सिव्) उतौ डतिर्वानम्। तन्तुसन्तान इत्यर्थ:।

व०	सीव्यति	सीव्यत:	सीव्यन्ति
	सीव्यसि	सीव्यथ:	सीव्यथ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	सीव्यामि	सीव्याव:	सीव्याम:
स०	सीव्येत्	सीव्येताम्	सीव्येयु:
	सीव्ये:	सीव्येतम्	सीव्येत
	सीव्येयम्	सीव्येव	सीव्येम
प०	सीव्यतु/सीव्यतात्	सीव्यताम्	सीव्यन्तु
	सीव्य:/सीव्यतात्	सीव्यतम्	सीव्यत
	सीव्यानि	सीव्याव	सीव्याम
ह्य०	असीव्यत्	असीव्यताम्	असीव्यन्
	असीव्य:	असीव्यतम्	असीव्यत
	असीव्यम्	असीव्याव	असीव्याम
अ०	असेवीत्	असेविष्टाम्	असेविषु:
	असेवी:	असेविष्टम्	असेविष्ट
	असेविषम्	असेविष्व	असेविष्म
प०	सिषेव	सिषिवतु:	सिषिवु:
	सिषिविथ	सिषिवथु:	सिषिव
	सिषेव	सिषिविव	सिषिविम
आ०	सीव्यात्	सीव्यास्ताम्	सीव्यासु:
	सीव्या:	सीव्यास्तम्	सीव्यास्त
	सीव्यासम्	सीव्यास्व	सीव्यास्म
श्व०	सेविता	सेवितारौ	सेवितार:
	सेवितासि	सेवितास्थ:	सेवितास्थ
	सेवितास्मि	सेवितास्व:	सेवितास्म:
भ०	सेविष्यति	सेविष्यत:	सेविष्यन्ति
	सेविष्यसि	सेविष्यथ:	सेविष्यथ
	सेविष्यामि	सेविष्याव:	सेविष्याम:
क्रि०	असेविष्यत्	असेविष्यताम्	असेविष्यन्
	असेविष्य:	असेविष्यतम्	असेविष्यत
	असेविष्यम्	असेविष्याव	असेविष्याम

११६५. श्रिवूच् (श्रिव्) गतिशोषणयो:।

व०	श्रीव्यति	श्रीव्यत:	श्रीव्यन्ति
स०	श्रीव्येत्	श्रीव्येताम्	श्रीव्येयु:
प०	श्रीव्यतु/श्रीव्यतात्	श्रीव्यताम्	श्रीव्यन्तु
ह्य०	अश्रीव्यत्	अश्रीव्यताम्	अश्रीव्यन्
अ०	अश्रेवीत्	अश्रेविष्टाम्	अश्रेविषु:
प०	शिश्रेव	शिश्रिवतु:	शिश्रिवु:
आ०	श्रीव्यात्	श्रीव्यास्ताम्	श्रीव्यासु:
श्व०	श्रेविता	श्रेवितारौ	श्रेवितार:
भ०	श्रेविष्यति	श्रेविष्यत:	श्रेविष्यन्ति
क्रि०	अश्रेविष्यत्	अश्रेविष्यताम्	अश्रेविष्यन्

११६६. ष्ठिवूच् (ष्ठिव्) निरसने।

व०	ष्ठीव्यति	ष्ठीव्यत:	ष्ठीव्यन्ति
स०	ष्ठीव्येत्	ष्ठीव्येताम्	ष्ठीव्येयु:
प०	ष्ठीव्यतु/ष्ठीव्यतात्	ष्ठीव्यताम्	ष्ठीव्यन्तु
ह्य०	अष्ठीव्यत्	अष्ठीव्यताम्	अष्ठीव्यन्
अ०	अष्ठेवीत्	अष्ठेविष्टाम्	अष्ठेविषु:
प०	टिष्ठेव	टिष्ठिवतु:	टिष्ठिवु:
आ०	ष्ठीव्यात्	ष्ठीव्यास्ताम्	ष्ठीव्यासु:
श्व०	ष्ठेविता	ष्ठेवितारौ	ष्ठेवितार:
भ०	ष्ठेविष्यति	ष्ठेविष्यत:	ष्ठेविष्यन्ति
क्रि०	अष्ठेविष्यत्	अष्ठेविष्यताम्	अष्ठेविष्यन्

११६७. क्षिवूच् (क्षिव्) निरसने।

व०	क्षीव्यति	क्षीव्यत:	क्षीव्यन्ति
स०	क्षीव्येत्	क्षीव्येताम्	क्षीव्येयु:
प०	क्षीव्यतु/क्षीव्यतात्	क्षीव्यताम्	क्षीव्यन्तु
ह्य०	अक्षीव्यत्	अक्षीव्यताम्	अक्षीव्यन्
अ०	अक्षेवीत्	अक्षेविष्टाम्	अक्षेविषु:
प०	चिक्षेव	चिक्षिवतु:	चिक्षिवु:
आ०	क्षीव्यात्	क्षीव्यास्ताम्	क्षीव्यासु:
श्व०	क्षेविता	क्षेवितारौ	क्षेवितार:
भ०	क्षेविष्यति	क्षेविष्यत:	क्षेविष्यन्ति
क्रि०	अक्षेविष्यत्	अक्षेविष्यताम्	अक्षेविष्यन्

।।अथ षान्त: सेट् च।।

११६८. इषच् (इष्) गतौ।

व०	इष्यति	इष्यत:	इष्यन्ति
	इष्यसि	इष्यथ:	इष्यथ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	इष्यामि	इष्याव:	इष्याम:
स०	इष्येत्	इष्येताम्	इष्येयु:
	इष्ये:	इष्येतम्	इष्येत
	इष्येयम्	इष्येव	इष्येम
प०	इष्यतु/इष्यतात्	इष्यताम्	इष्यन्तु
	इष्य:/इष्यतात्	इष्यतम्	इष्यत
	इष्याणि	इष्याव	इष्याम
ह्य०	ऐष्यत्	ऐष्यताम्	ऐष्यन्
	ऐष्य:	ऐष्यतम्	ऐष्यत
	ऐष्यम्	ऐष्याव	ऐष्याम
अ०	ऐषीत्	ऐषिष्टाम्	ऐषिषु:
	ऐषी:	ऐषिष्टम्	ऐषिष्ट
	ऐषिषम्	ऐषिष्व	ऐषिष्म
प०	इयेष	ईषतु:	इषु:
	इयेषिथ	ईषथु:	ईष
	इयेष	ईषिव	ईषिम
आ०	इष्यात्	इष्यास्ताम्	इष्यासु:
	इष्या:	इष्यास्तम्	इष्यास्त
	इष्यासम्	इष्यास्व	इष्यास्म
श्व०	एषिता	एषितारौ	एषितार:
	एषितासि	एषितास्थ:	एषितास्थ
	एषितास्मि	एषितास्व:	एषितास्म:
भ०	एषिष्यति	एषिष्यत:	एषिष्यन्ति
	एषिष्यसि	एषिष्यथ:	एषिष्यथ
	एषिष्यामि	एषिष्याव:	एषिष्याम:
क्रि०	ऐषिष्यत्	ऐषिष्यताम्	ऐषिष्यन्
	ऐषिष्य:	ऐषिष्यतम्	ऐषिष्यत
	ऐषिष्यम्	ऐषिष्याव	ऐषिष्याम

।।अथ सान्ताश्चत्वार: सेटश्च।।

११६९. ष्णसूच् (स्नस्) निरसने।

व०	स्नस्यति	स्नस्यत:	स्नस्यन्ति
	स्नस्यसि	स्नस्यथ:	स्नस्यथ
	स्नस्यामि	स्नस्याव:	स्नस्याम:
स०	स्नस्येत्	स्नस्येताम्	स्नस्येयु:
	स्नस्ये:	स्नस्येतम्	स्नस्येत
	स्नस्येयम्	स्नस्येव	स्नस्येम
प०	स्नस्यतु/स्नस्यतात्	स्नस्यताम्	स्नस्यन्तु
	स्नस्य:/स्नस्यतात्	स्नस्यतम्	स्नस्यत
	स्नस्यानि	स्नस्याव	स्नस्याम
ह्य०	अस्नस्यत्	अस्नस्यताम्	अस्नस्यन्
	अस्नस्य:	अस्नस्यतम्	अस्नस्यत
	अस्नस्यम्	अस्नस्याव	अस्नस्याम
अ०	अस्नासीत्	अस्नासिष्टाम्	अस्नासिषु:
	अस्नासी:	अस्नासिष्टम्	अस्नासिष्ट
	अस्नासिषम्	अस्नासिष्व	अस्नासिष्म
		तथा	
	अस्नसीत्	अस्नसिष्टाम्	अस्नसिषु:
	अस्नसी:	अस्नसिष्टम्	अस्नसिष्ट
	अस्नसिषम्	अस्नसिष्व	अस्नसिष्म
प०	सस्नास	सस्नसतु:	सस्नसु:
	सस्नसिथ	सस्नसथु:	सस्नस
	सस्नास/सस्नस	सस्नसिव	सस्नसिम
आ०	स्नस्यात्	स्नस्यास्ताम्	स्नस्यासु:
	स्नस्या:	स्नस्यास्तम्	स्नस्यास्त
	स्नस्यासम्	स्नस्यास्व	स्नस्यास्म
श्व०	स्नसिता	स्नसितारौ	स्नसितार:
	स्नसितासि	स्नसितास्थ:	स्नसितास्थ
	स्नसितास्मि	स्नसितास्व:	स्नसितास्म:
भ०	स्नसिष्यति	स्नसिष्यत:	स्नसिष्यन्ति
	स्नसिष्यसि	स्नसिष्यथ:	स्नसिष्यथ
	स्नसिष्यामि	स्नसिष्याव:	स्नसिष्याम:
क्रि०	अस्नसिष्यत्	अस्नसिष्यताम्	अस्नसिष्यन्
	अस्नसिष्य:	अस्नसिष्यतम्	अस्नसिष्यत
	अस्नसिष्यम्	अस्नसिष्याव	अस्नसिष्याम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११७०. क्नसूच् (क्नस्) ह्रुतिदीप्त्योः।

ह्रुतिः कौटिल्यम्।

व०	क्नस्यति	क्नस्यतः	क्नस्यन्ति
स०	क्नस्येत्	क्नस्येताम्	क्नस्येयुः
प०	क्नस्यतु/क्नस्यतात्	क्नस्यताम्	क्नस्यन्तु
ह्य०	अक्नस्यत्	अक्नस्यताम्	अक्नस्यन्
अ०	अक्नासीत्	अक्नासिष्टाम्	अक्नासिषुः
	अक्नसीत्	अक्नसिष्टाम्	अक्नसिषुः
प०	चक्नास	चक्नसतुः	चक्नसुः
आ०	क्नस्यात्	क्नस्यास्ताम्	क्नस्यासुः
श्व०	क्नसिता	क्नसितारौ	क्नसितारः
भ०	क्नसिष्यति	क्नसिष्यतः	क्नसिष्यन्ति
क्रि०	अक्नसिष्यत्	अक्नसिष्यताम्	अक्नसिष्यन्

११७१. त्रसूच् (त्रस्) भये।

व०	त्रस्यति	त्रस्यतः	त्रस्यन्ति
	त्रसति	त्रसतः	त्रसन्ति
स०	त्रस्येत्	त्रस्येताम्	त्रस्येयुः
	त्रसेत्	त्रसेताम्	त्रसेयुः
प०	त्रस्यतु/त्रस्यतात्	त्रस्यताम्	त्रस्यन्तु
	त्रसतु/त्रसतात्	त्रसताम्	त्रसन्तु
ह्य०	अत्रस्यत्	अत्रस्यताम्	अत्रस्यन्
	अत्रसत्	अत्रसताम्	अत्रसन्
अ०	अत्रासीत्	अत्रासिष्टाम्	अत्रासिषुः
	अत्रसीत्	अत्रसिष्टाम्	अत्रसिषुः
प०	तत्रास	त्रेसतुः/तत्रसतुः	त्रेसुः/तत्रसुः
आ०	त्रस्यात्	त्रस्यास्ताम्	त्रस्यासुः
श्व०	त्रसिता	त्रसितारौ	त्रसितारः
भ०	त्रसिष्यति	त्रसिष्यतः	त्रसिष्यन्ति
क्रि०	अत्रसिष्यत्	अत्रसिष्यताम्	अत्रसिष्यन्

११७२. प्युसूच् (प्युस्) दाहे।

व०	प्युस्यति	प्युस्यतः	प्युस्यन्ति
स०	प्युस्येत्	प्युस्येताम्	प्युस्येयुः
प०	प्युस्यतु/प्युस्यतात्	प्युस्यताम्	प्युस्यन्तु
ह्य०	अप्युस्यत्	अप्युस्यताम्	अप्युस्यन्
अ०	अप्योसीत्	अप्योसिष्टाम्	अप्योसिषुः
प०	पुप्योस	पुप्युसतुः	पुप्युसुः
आ०	प्युस्यात्	प्युस्यास्ताम्	प्युस्यासुः
श्व०	प्योसिता	प्योसितारौ	प्योसितारः
भ०	प्योसिष्यति	प्योसिष्यतः	प्योसिष्यन्ति
क्रि०	अप्योसिष्यत्	अप्योसिष्यताम्	अप्योसिष्यन्

॥अथ हान्तौ सेटौ च।

११७३. षहच् (सह्) शक्तौ।

व०	सह्यति	सह्यतः	सह्यन्ति
	सह्यसि	सह्यथः	सह्यथ
	सह्यामि	सह्यावः	सह्यामः
स०	सह्येत्	सह्येताम्	सह्येयुः
	सह्येः	सह्येतम्	सह्येत
	सह्येयम्	सह्येव	सह्येम
प०	सह्यतु/सह्यतात्	सह्यताम्	सह्यन्तु
	सह्यः/सह्यतात्	सह्यतम्	सह्यत
	सह्यानि	सह्याव	सह्याम
ह्य०	असह्यत्	असह्यताम्	असह्यन्
	असह्यः	असह्यतम्	असह्यत
	असह्यम्	असह्याव	असह्याम
अ०	असहीत्	असहिष्टाम्	असहिषुः
	असहीः	असहिष्टम्	असहिष्ट
	असहिषम्	असहिष्व	असहिष्म
प०	ससाह	सेहतुः	सेहुः
	सेहिथ	सेहथुः	सेह
	ससाह/ससह	सेहिव	सेहिम
आ०	सह्यात्	सह्यास्ताम्	सह्यासुः
	सह्याः	सह्यास्तम्	सह्यास्त
	सह्यासम्	सह्यास्व	सह्यास्म
श्व०	सहिता	सहितारौ	सहितारः
	सहितासि	सहितास्थः	सहितास्थ
	सहितास्मि	सहितास्वः	सहितास्मः
भ०	सहिष्यति	सहिष्यतः	सहिष्यन्ति
	सहिष्यसि	सहिष्यथः	सहिष्यथ
	सहिष्यामि	सहिष्यावः	सहिष्यामः
क्रि०	असहिष्यत्	असहिष्यताम्	असहिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	असहिष्यः	असहिष्यतम्	असहिष्यत
	असहिष्यम्	असहिष्याव	असहिष्याम

११७४. षुहच् (सुह) शक्तौ।

व०	सुह्यति	सुह्यतः	सुह्यन्ति
स०	सुह्येत्	सुह्येताम्	सुह्येयुः
प०	सुह्यतु/सुह्यतात्	सुह्यताम्	सुह्यन्तु
ह्य०	असुह्यत्	असुह्यताम्	असुह्यन्
अ०	असोहीत्	असोहिष्टाम्	असोहिषुः
प०	सुषोह	सुषुहतुः	सुषुहुः
आ०	सुह्यात्	सुह्यास्ताम्	सुह्यासुः
श्व०	सोहिता	सोहितारौ	सोहितारः
भ०	सोहिष्यति	सोहिष्यतः	सोहिष्यन्ति
क्रि०	असोहिष्यत्	असोहिष्यताम्	असोहिष्यन्

॥अथ दिवाद्यन्तर्गणः पुषादिः परस्मैपद्येव। तत्रापि प्रसिद्ध्यनुरोधादादौ॥

११७५. पुषंच् (पुष्) पुष्टौ। अकर्मकोऽयम्।

व०	पुष्यति	पुष्यतः	पुष्यन्ति
स०	पुष्येत्	पुष्येताम्	पुष्येयुः
प०	पुष्यतु/पुष्यतात्	पुष्यताम्	पुष्यन्तु
ह्य०	अपुष्यत्	अपुष्यताम्	अपुष्यन्
अ०	अपुषत्	अपुषताम्	अपुषन्
प०	पुपोष	पुपुषतुः	पुपुषुः
आ०	पुष्यात्	पुष्यास्ताम्	पुष्यासुः
श्व०	पोष्टा	पोष्टारौ	पोष्टारः
भ०	पोक्ष्यति	पोक्ष्यतः	पोक्ष्यन्ति
क्रि०	अपोक्ष्यत्	अपोक्ष्यताम्	अपोक्ष्यन्

अथ चान्तः सेट् च।

११७६ उचच् (उच्) समवाये।[1]

व०	उच्यति	उच्यतः	उच्यन्ति
स०	उच्येत्	उच्येताम्	उच्येयुः
प०	उच्यतु/उच्यतात्	उच्यताम्	उच्यन्तु
ह्य०	औच्यत्	औच्यताम्	औच्यन्
अ०	औचत्	औचताम्	औचन्
प०	उवोच	ऊचतुः	ऊचुः
आ०	उच्यात्	उच्यास्ताम्	उच्यासुः
श्व०	ओचिता	ओचितारौ	ओचितारः
भ०	ओचिष्यति	ओचिष्यतः	ओचिष्यन्ति
क्रि०	औचिष्यत्	औचिष्यताम्	औचिष्यन्

अथ टान्तः सेट च।

११७७. लुटच् (लुट्) विलोटने।

व०	लुट्यति	लुट्यतः	लुट्यन्ति
स०	लुट्येत्	लुट्येताम्	लुट्येयुः
प०	लुट्यतु/लुट्यतात्	लुट्यताम्	लुट्यन्तु
ह्य०	अलुट्यत्	अलुट्यताम्	अलुट्यन्
अ०	अलुटत	अलुटताम्	अलुटन्
प०	लुलोट	लुलुटतुः	लुलुटुः
आ०	लुट्यात्	लुट्यास्ताम्	लुट्यासुः
श्व०	लोटिता	लोटितारौ	लोटितारः
भ०	लोटिष्यति	लोटिष्यतः	लोटिष्यन्ति
क्रि०	अलोटिष्यत्	अलोटिष्यताम्	अलोटिष्यन्

अथ दान्ताश्चत्वारः।

११७८. ष्विदांच् (स्विद्) गात्रप्रक्षरणे। गात्रप्रक्षरणं घर्मस्रुतिः।

व०	स्विद्यति	स्विद्यतः	स्विद्यन्ति
	स्विद्यसि	स्विद्यथः	स्विद्यथ
	स्विद्यामि	स्विद्यावः	स्विद्यामः
स०	स्विद्येत्	स्विद्येताम्	स्विद्येयुः
	स्विद्येः	स्विद्येतम्	स्विद्येत
	स्विद्येयम्	स्विद्येव	स्विद्येम
प०	स्विद्यतु/स्विद्यतात्	स्विद्यताम्	स्विद्यन्तु
	स्विद्यः/स्विद्यतात्	स्विद्यतम्	स्विद्यत
	स्विद्यानि	स्विद्याव	स्विद्याम
ह्य०	अस्विद्यत्	अस्विद्यताम्	अस्विद्यन्

१. समवाय ऐक्यम्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अस्विद्यः	अस्विद्यतम्	अस्विद्यत
	अस्विद्यम्	अस्विद्याव	अस्विद्याम
अ०	अस्विदत	अस्विदताम्	अस्विदटन्
	अस्विदः	अस्विदतम्	अस्विदटत
	अस्विदम	अस्विदाव	अस्विदाम
प०	सिष्वेद	सिष्विदतुः	सिष्विदुः
	सिष्विदिथ	सिष्विदथुः	सिष्विद
	सिष्वेद	सिष्विदिव	सिष्विदिम
आ०	स्विद्यात्	स्विद्यास्ताम्	स्विद्यासुः
	स्विद्याः	स्विद्यास्तम्	स्विद्यास्त
	स्विद्यासम्	स्विद्यास्व	स्विद्यास्म
श्व०	स्वेत्ता	स्वेत्तारौ	स्वेत्तारः
	स्वेत्तासि	स्वेत्तास्थः	स्वेत्तास्थ
	स्वेत्तास्मि	स्वेत्तास्वः	स्वेत्तास्मः
भ०	स्वेत्स्यति	स्वेत्स्यतः	स्वेत्स्यन्ति
	स्वेत्स्यसि	स्वेत्स्यथः	स्वेत्स्यथ
	स्वेत्स्यामि	स्वेत्स्यावः	स्वेत्स्यामः
क्रि०	अस्वेत्स्यत्	अस्वेत्स्यताम्	अस्वेत्स्यन्
	अस्वेत्स्यः	अस्वेत्स्यतम्	अस्वेत्स्यत
	अस्वेत्स्यम्	अस्वेत्स्याव	अस्वेत्स्याम

११७९. क्लिदौच् (क्लिद्) आर्द्रभावे।

व०	क्लिद्यति	क्लिद्यतः	क्लिद्यन्ति
स०	क्लिद्येत्	क्लिद्येताम्	क्लिद्येयुः
प०	क्लिद्यतु/क्लिद्यतात्	क्लिद्यताम्	क्लिद्यन्तु
ह्य०	अक्लिद्यत्	अक्लिद्यताम्	अक्लिद्यन्
अ०	अक्लिदत	अक्लिदताम्	अक्लिदन
प०	चिक्लेद	चिक्लिदतुः	चिक्लिदुः
आ०	क्लिद्यात्	क्लिद्यास्ताम्	क्लिद्यासुः
श्व०	क्लेदिता	क्लेदितारौ	क्लेदितारः

तथा

श्व०	क्लेत्ता	क्लेत्तारौ	क्लेत्तारः
भ०	क्लेदिष्यति	क्लेदिष्यतः	क्लेदिष्यन्ति

तथा

भ०	क्लेत्स्यति	क्लेत्स्यतः	क्लेत्स्यन्ति
क्रि०	अक्लेदिष्यत्	अक्लेदिष्यताम्	अक्लेदिष्यन्

तथा

क्रि०	अक्लेत्स्यत्	अक्लेत्स्यताम्	अक्लेत्स्यन्

११८०. ञिमिदाच् (मिद्) स्नेहने।

व०	मेद्यति	मेद्यतः	मेद्यन्ति
स०	मेद्येत्	मेद्येताम्	मेद्येयुः
प०	मेद्यतु/मेद्यतात्	मेद्यताम्	मेद्यन्तु
ह्य०	अमेद्यत्	अमेद्यताम्	अमेद्यन्
अ०	अमिदत्	अमिदताम्	अमिदन्
प०	मिमेद	मिमिदतुः	मिमिदुः
आ०	मिद्यात्	मिद्यास्ताम्	मिद्यासुः
श्व०	मेदिता	मेदितारौ	मेदितारः
भ०	मेदिष्यति	मेदिष्यतः	मेदिष्यन्ति
क्रि०	अमेदिष्यत्	अमेदिष्यताम्	अमेदिष्यन्

११८१. ञिक्ष्विदाच् (क्ष्विद्) मोचने च। चकारात्स्नेहने।

व०	क्ष्विद्यति	क्ष्विद्यतः	क्ष्विद्यन्ति
स०	क्ष्विद्येत्	क्ष्विद्येताम्	क्ष्विद्येयुः
प०	क्ष्विद्यतु/क्ष्विद्यतात्	क्ष्विद्यताम्	क्ष्विद्यन्तु
ह्य०	अक्ष्विद्यत्	अक्ष्विद्यताम्	अक्ष्विद्यन्
अ०	अक्ष्विदत्	अक्ष्विदताम्	अक्ष्विदन्
प०	चिक्ष्वेद	चिक्ष्विदतुः	चिक्ष्विदुः
आ०	क्ष्विद्यात्	क्ष्विद्यास्ताम्	क्ष्विद्यासुः
श्व०	क्ष्वेदिता	क्ष्वेदितारौ	क्ष्वेदितारः
भ०	क्ष्वेदिष्यति	क्ष्वेदिष्यतः	क्ष्वेदिष्यन्ति
क्रि०	अक्ष्वेदिष्यत्	अक्ष्वेदिष्यताम्	अक्ष्वेदिष्यन्

अथ धान्ताः सप्त।

११८२. क्षुधंच् (क्षुध्) बुभुक्षायाम्।

व०	क्षुध्यति	क्षुध्यतः	क्षुध्यन्ति
	क्षुध्यसि	क्षुध्यथः	क्षुध्यथ
	क्षुध्यामि	क्षुध्यावः	क्षुध्यामः
स०	क्षुध्येत्	क्षुध्येताम्	क्षुध्येयुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	क्षुध्ये:	क्षुध्येतम्	क्षुध्येत
	क्षुध्येयम्	क्षुध्येव	क्षुध्येम
प०	क्षुध्यतु/क्षुध्यतात्	क्षुध्यताम्	क्षुध्यन्तु
	क्षुध्य:/क्षुध्यतात्	क्षुध्यतम्	क्षुध्यत
	क्षुध्यानि	क्षुध्याव	क्षुध्याम
ह्य०	अक्षुध्यत्	अक्षुध्यताम्	अक्षुध्यन्
	अक्षुध्य:	अक्षुध्यतम्	अक्षुध्यत
	अक्षुध्यम्	अक्षुध्याव	अक्षुध्याम
अ०	अक्षुधत्	अक्षुधाम्	अक्षुधन्
	अक्षुध:	अक्षुधतम्	अक्षुधत
	अक्षुधम्	अक्षुधाव	अक्षुधाम
प०	चुक्षोध	चुक्षुधतु:	चुक्षुधु:
	चुक्षोधिथ	चुक्षुधथु:	चुक्षुध
	चुक्षोध	चुक्षुधिव	चुक्षुधिम
आ०	क्षुध्यात्	क्षुध्यास्ताम्	क्षुध्यासु:
	क्षुध्या:	क्षुध्यास्तम्	क्षुध्यास्त
	क्षुध्यासम्	क्षुध्यास्व	क्षुध्यास्म
श्व०	क्षोद्धा	क्षोद्धारौ	क्षोद्धार:
	क्षोद्धासि	क्षोद्धास्थ:	क्षोद्धास्थ
	क्षोद्धास्मि	क्षोद्धास्व:	क्षोद्धास्म:
भ०	क्षोत्स्यति	क्षोत्स्यत:	क्षोत्स्यन्ति
	क्षोत्स्यसि	क्षोत्स्यथ:	क्षोत्स्यथ
	क्षोत्स्यामि	क्षोत्स्याव:	क्षोत्स्याम:
क्रि०	अक्षोत्स्यत्	अक्षोत्स्यताम्	अक्षोत्स्यन्
	अक्षोत्स्य:	अक्षोत्स्यतम्	अक्षोत्स्यत
	अक्षोत्स्यम्	अक्षोत्स्याव	अक्षोत्स्याम

११८३. शुधंच् (शुध्) शौचे। शौचं नैर्मल्यम्।

व०	शुध्यति	शुध्यत:	शुध्यन्ति
स०	शुध्येत्	शुध्येताम्	शुध्येयु:
प०	शुध्यतु/शुध्यतात्	शुध्यताम्	शुध्यन्तु
ह्य०	अशुध्यत्	अशुध्यताम्	अशुध्यन्
अ०	अशुधत्	अशुधताम्	अशुधन्
प०	शुशोध	शुशुधतु:	शुशुधु:
आ०	शुध्यात्	शुध्यास्ताम्	शुध्यासु:
श्व०	शोद्धा	शोद्धारौ	शोद्धार:
भ०	शोत्स्यति	शोत्स्यत:	शोत्स्यन्ति
क्रि०	अशोत्स्यत्	अशोत्स्यताम्	अशोत्स्यन्

११८४. क्रुधंच् (क्रुध्) कोपे।

व०	क्रुध्यति	क्रुध्यत:	क्रुध्यन्ति
स०	क्रुध्येत्	क्रुध्येताम्	क्रुध्येयु:
प०	क्रुध्यतु/क्रुध्यतात्	क्रुध्यताम्	क्रुध्यन्तु
ह्य०	अक्रुध्यत्	अक्रुध्यताम्	अक्रुध्यन्
अ०	अक्रुधत्	अक्रुधताम्	अक्रुधन्
प०	चुक्रोध	चुक्रुधतु:	चुक्रुधु:
आ०	क्रुध्यात्	क्रुध्यास्ताम्	क्रुध्यासु:
श्व०	क्रोद्धा	क्रोद्धारौ	क्रोद्धार:
भ०	क्रोत्स्यति	क्रोत्स्यत:	क्रोत्स्यन्ति
क्रि०	अक्रोत्स्यत्	अक्रोत्स्यताम्	अक्रोत्स्यन्

११८५. षिधंच् (सिध्) संराद्धौ। संराद्धिर्निष्पत्ति:।

व०	सिध्यति	सिध्यत:	सिध्यन्ति
स०	सिध्येत्	सिध्येताम्	सिध्येयु:
प०	सिध्यतु/सिध्यतात्	सिध्यताम्	सिध्यन्तु
ह्य०	असिध्यत्	असिध्यताम्	असिध्यन्
अ०	असिधत्	असिधताम्	असिधन्
प०	सिषेध	सिषिधतु:	सिषिधु:
आ०	सिध्यात्	सिध्यास्ताम्	सिध्यासु:
श्व०	सेद्धा	सेद्धारौ	सेद्धार:
भ०	सेत्स्यति	सेत्स्यत:	सेत्स्यन्ति
क्रि०	असेत्स्यत्	असेत्स्यताम्	असेत्स्यन्

११८६. ऋधंच् (ऋध्) वृद्धौ।

व०	ऋध्यति	ऋध्यत:	ऋध्यन्ति
स०	ऋध्येत्	ऋध्येताम्	ऋध्येयु:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	ऋध्यतु/ऋध्यतात्	ऋध्यताम्	ऋध्यन्तु
ह्य०	आर्ध्यत्	आर्ध्यताम्	आर्ध्यन्
अ०	आर्धत्	आर्धताम्	आर्धन्
प०	आनर्ध	आनृधतुः	आनृधुः
आ०	ऋध्यात्	ऋध्यास्ताम्	ऋध्यासुः
श्व०	अर्धिता	अर्धितारौ	अर्धितारः
भ०	अर्धिष्यति	अर्धिष्यतः	अर्धिष्यन्ति
क्रि०	आर्धिष्यत्	आर्धिष्यताम्	आर्धिष्यन्

११८७. गृधूच् (गृध्) अभिकांक्षायाम्।

व०	गृध्यति	गृध्यतः	गृध्यन्ति
स०	गृध्येत्	गृध्येताम्	गृध्येयुः
प०	गृध्यतु/गृध्यतात्	गृध्यताम्	गृध्यन्तु
ह्य०	अगृध्यत्	अगृध्यताम्	अगृध्यन्
अ०	अगृधत्	अगृधताम्	अगृधन्
प०	जगर्ध	जगृधतुः	जगृधुः
आ०	गृध्यात्	गृध्यास्ताम्	गृध्यासुः
श्व०	गर्धिता	गर्धितारौ	गर्धितारः
भ०	गर्धिष्यति	गर्धिष्यतः	गर्धिष्यन्ति
क्रि०	अगर्धिष्यत्	अगर्धिष्यताम्	अगर्धिष्यन्

११८८. रधोच् (रध्) हिंसासंराद्ध्योः। संराद्धिः पाकः।

व०	रध्यति	रध्यतः	रध्यन्ति
स०	रध्येत्	रध्येताम्	रध्येयुः
प०	रध्यतु/रध्यतात्	रध्यताम्	रध्यन्तु
ह्य०	अरध्यत्	अरध्यताम्	अरध्यन्
अ०	अरधत्	अरधताम्	अरधन्
प०	ररन्ध	ररन्धतुः	ररन्धुः
आ०	रध्यात्	रध्यास्ताम्	रध्यासुः
श्व०	रद्धा	रद्धारौ	रद्धारः
		तथा	
श्व०	रधिता	रधितारौ	रधितारः
भ०	रधिष्यति	रधिष्यतः	रधिष्यन्ति
भ०	रत्स्यति	रत्स्यतः	रत्स्यन्ति
क्रि०	अरधिष्यत्	अरधिष्यताम्	अरधिष्यन्
		तथा	
क्रि०	अरत्स्यत्	अरत्स्यताम्	अरत्स्यन्

अथ पान्ता नव सेटश्च।

११८९. तृपौच् (तृप्) प्रीतौ। तृप्तिः सौहित्यम्।

व०	तृप्यति	तृप्यतः	तृप्यन्ति
	तृप्यसि	तृप्यथः	तृप्यथ
	तृप्यामि	तृप्यावः	तृप्यामः
स०	तृप्येत्	तृप्येताम्	तृप्येयुः
	तृप्येः	तृप्येतम्	तृप्येत
	तृप्येयम्	तृप्येव	तृप्येम
प०	तृप्यतु/तृप्यतात्	तृप्यताम्	तृप्यन्तु
	तृप्यः/तृप्यतात्	तृप्यतम्	तृप्यत
	तृप्यानि	तृप्याव	तृप्याम
ह्य०	अतृप्यत्	अतृप्यताम्	अतृप्यन्
	अतृप्यः	अतृप्यतम्	अतृप्यत
	अतृप्यम्	अतृप्याव	अतृप्याम
अ०	अतृपत्	अतृपताम्	अतृपन्
	अतृपः	अतृपतम्	अतृपत
	अतृपतम्	अतृपाव	अतृपाम
		तथा	
	अतर्पीत्	अतर्पिष्टाम्	अतर्पिषुः
	अतर्पीः	अतर्पिष्टम्	अतर्पिष्ट
	अतर्पिषम्	अतर्पिष्व	अतर्पिष्म
	अत्राप्सीत्	अत्राप्ताम्	अत्राप्सुः
	अत्राप्सीः	अत्राप्तम्	अत्राप्त
	अत्राप्सम्	अत्राप्स्व	अत्राप्स्म
		तथा	
	अतार्प्सीत्	अतार्प्ताम्	अतार्प्सुः
	अतार्प्सीः	अतार्प्तम्	अतार्प्त
	अतार्प्सम्	अतार्प्स्व	अतार्प्स्म
प०	ततर्प	ततृपतुः	ततृपुः
	ततर्पिथ	ततृपथुः	ततृप

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	ततर्प	ततृपिव	ततृपिम
आ०	तृप्यात्	तृप्यास्ताम्	तृप्यासुः
	तृप्याः	तृप्यास्तम्	तृप्यास्त
	तृप्यासम्	तृप्यास्व	तृप्यास्म
श्व०	त्रप्ता	त्रप्तारौ	त्रप्तारः
	त्रप्तासि	त्रप्तास्थः	त्रप्तास्थ
	त्रप्तास्मि	त्रप्तास्वः	त्रप्तास्मः
		तथा	
	तर्प्ता	तर्प्तारौ	तर्प्तारः
	तर्प्तासि	तर्प्तास्थः	तर्प्तास्थ
	तर्प्तास्म	तर्प्तास्वः	तर्प्तास्मः
		तथा	
	तर्पिता	तर्पितारौ	तर्पितारः
	तर्पितासि	तर्पितास्थः	तर्पितास्थ
	तर्पितास्मि	तर्पितास्वः	तर्पितास्मः
भ०	त्रप्स्यति	त्रप्स्यतः	त्रप्स्यन्ति
	त्रप्स्यसि	त्रप्स्यथः	त्रप्स्यथ
	त्रप्स्यामि	त्रप्स्यावः	त्रप्स्यामः
		तथा	
	तर्प्स्यति	तर्प्स्यतः	तर्प्स्यन्ति
	तर्प्स्यसि	तर्प्स्यथः	तर्प्स्यथ
	तर्प्स्यामि	तर्प्स्यावः	तर्प्स्यामः
	तर्पिष्यति	तर्पिष्यतः	तर्पिष्यन्ति
	तर्पिष्यसि	तर्पिष्यथः	तर्पिष्यथ
	तर्पिष्यामि	तर्पिष्यावः	तर्पिष्यामः
क्रि०	अत्रप्स्यत्	अत्रप्स्यताम्	अत्रप्स्यन्
	अत्रप्स्यः	अत्रप्स्यतम्	अत्रप्स्यत
	अत्रप्स्यम्	अत्रप्स्याव	अत्रप्स्याम
		तथा	
	अतर्प्स्यत्	अतर्प्स्यताम्	अतर्प्स्यन्
	अतर्प्स्यः	अतर्प्स्यतम्	अतर्प्स्यत
	अतर्प्स्यम्	अतर्प्स्याव	अतर्प्स्याम
		तथा	
	अतर्पिष्यत्	अतर्पिष्यताम्	अतर्पिष्यन्
	अतर्पिष्यः	अतर्पिष्यतम्	अतर्पिष्यत
	अतर्पिष्यम्	अतर्पिष्याव	अतर्पिष्याम

११९०. दृपौच् (दृप्) हर्षमोहनयोः। मोहनं गर्वः।

व०	दृप्यति	दृप्यतः	दृप्यन्ति
स०	दृप्येत्	दृप्येताम्	दृप्येयुः
प०	दृप्यतु/दृप्यतात्	दृप्यताम्	दृप्यन्तु
ह्य०	अदृप्यत्	अदृप्यताम्	अदृप्यन्
अ०	अदृपत्	अदृपताम्	अदृपन्
	अदर्पीत्	अदर्पिष्टाम्	अदर्पिषुः
	अद्राप्सीत्	अद्राप्ताम्	अद्राप्सुः
	अदार्प्सीत्	अदार्प्ताम्	अदार्प्सुः
प०	ददर्प	ददृपतुः	ददृपुः
आ०	दृप्यात्	दृप्यास्ताम्	दृप्यासुः
श्व०	द्रप्ता	द्रप्तारौ	द्रप्तारः
	दर्प्ता	दर्प्तारौ	दर्प्तारः
	दर्पिता	दर्पितारौ	दर्पितारः
भ०	द्रप्स्यति	द्रप्स्यतः	द्रप्स्यन्ति
	दर्प्स्यति	दर्प्स्यतः	दर्प्स्यन्ति
	दर्पिष्यति	दर्पिष्यतः	दर्पिष्यन्ति
क्रि०	अद्रप्स्यत्	अद्रप्स्यताम्	अद्रप्स्यन्
	अदर्प्स्यत्	अदर्प्स्यताम्	अदर्प्स्यन्
	अदर्पिष्यत्	अदर्पिष्यताम्	अदर्पिष्यन्

११९१. कुपच् (कुप्) कोपे।

व०	कुप्यति	कुप्यतः	कुप्यन्ति
स०	कुप्येत्	कुप्येताम्	कुप्येयुः
प०	कुप्यतु/कुप्यतात्	कुप्यताम्	कुप्यन्तु
ह्य०	अकुप्यत्	अकुप्यताम्	अकुप्यन्
अ०	अकुपत्	अकुपताम्	अकुपन्
प०	चुकोप	चुकुपतुः	चुकुपुः
आ०	कुप्यात्	कुप्यास्ताम्	कुप्यासुः
श्व०	कोपिता	कोपितारौ	कोपितारः
भ०	कोपिष्यति	कोपिष्यतः	कोपिष्यन्ति
क्रि०	अकोपिष्यत्	अकोपिष्यताम्	अकोपिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११९२. गुपच् (गुप्) व्याकुलत्वे।

व०	गुप्यति	गुप्यतः	गुप्यन्ति
स०	गुप्येत्	गुप्येताम्	गुप्येयुः
प०	गुप्यतु/गुप्यतात्	गुप्यताम्	गुप्यन्तु
ह्य०	अगुप्यत्	अगुप्यताम्	अगुप्यन्
अ०	अगुपत्	अगुपताम्	अगुपन्
प०	जुगोप	जुगुपतुः	जुगुपुः
आ०	गुप्यात्	गुप्यास्ताम्	गुप्यासुः
श्व०	गोपिता	गोपितारौ	गोपितारः
भ०	गोपिष्यति	गोपिष्यतः	गोपिष्यन्ति
क्रि०	अगोपिष्यत्	अगोपिष्यताम्	अगोपिष्यन्

११९३. युपच् (युप्) विमोहने।

व०	युप्यति	युप्यतः	युप्यन्ति
स०	युप्येन्	युप्येताम्	युप्येयुः
प०	युप्यतु/युप्यतात्	युप्यताम्	युप्यन्तु
ह्य०	अयुप्यत्	अयुप्यताम्	अयुप्यन्
अ०	अयुपत्	अयुपताम्	अयुपन्
प०	युयोप	युयुपतुः	युयुपुः
आ०	युप्यात्	युप्यास्ताम्	युप्यासुः
श्व०	योपिता	योपितारौ	योपितारः
भ०	योपिष्यति	योपिष्यतः	योपिष्यन्ति
क्रि०	अयोपिष्यत्	अयोपिष्यताम्	अयोपिष्यन्

११९४. रुपच् (रुप्) विमोहने।

व०	रुप्यति	रुप्यतः	रुप्यन्ति
स०	रुप्येत्	रुप्येताम्	रुप्येयुः
प०	रुप्यतु/रुप्यतात्	रुप्यताम्	रुप्यन्तु
ह्य०	अरुप्यत्	अरुप्यताम्	अरुप्यन्
अ०	अरुपत्	अरुपताम्	अरुपन्
प०	रुरोप	रुरुपतुः	रुरुपुः
आ०	रुप्यात्	रुप्यास्ताम्	रुप्यासुः
श्व०	रोपिता	रोपितारौ	रोपितारः
भ०	रोपिष्यति	रोपिष्यतः	रोपिष्यन्ति
क्रि०	अरोपिष्यत्	अरोपिष्यताम्	अरोपिष्यन्

११९५. लुपच् (लुप्) विमोहने।

व०	लुप्यति	लुप्यतः	लुप्यन्ति
स०	लुप्येत्	लुप्येताम्	लुप्येयुः
प०	लुप्यतु/लुप्यतात्	लुप्यताम्	लुप्यन्तु
ह्य०	अलुप्यत्	अलुप्यताम्	अलुप्यन्
अ०	अलुपत्	अलुपताम्	अलुपन्
प०	लुलोप	लुलुपतुः	लुलुपुः
आ०	लुप्यात्	लुप्यास्ताम्	लुप्यासुः
श्व०	लोपिता	लोपितारौ	लोपितारः
भ०	लोपिष्यति	लोपिष्यतः	लोपिष्यन्ति
क्रि०	अलोपिष्यत्	अलोपिष्यताम्	अलोपिष्यन्

११९६. डिपच् (डिप्) क्षेपे।

व०	डिप्यति	डिप्यतः	डिप्यन्ति
स०	डिप्येत्	डिप्येताम्	डिप्येयुः
प०	डिप्यतु/डिप्यतात्	डिप्यताम्	डिप्यन्तु
ह्य०	अडिप्यत्	अडिप्यताम्	अडिप्यन्
अ०	अडिपत्	अडिपताम्	अडिपन्
प०	डिडेप	डिडिपतुः	डिडिपुः
आ०	डिप्यात्	डिप्यास्ताम्	डिप्यासुः
श्व०	डेपिता	डेपितारौ	डेपितारः
भ०	डेपिष्यति	डेपिष्यतः	डेपिष्यन्ति
क्रि०	अडेपिष्यत्	अडेपिष्यताम्	अडेपिष्यन्

११९७. ष्टुपच् (स्तुप्) समुच्छाये।

व०	स्तुप्यति	स्तुप्यतः	स्तुप्यन्ति
स०	स्तुप्येत्	स्तुप्येताम्	स्तुप्येयुः
प०	स्तुप्यतु/स्तुप्यतात्	स्तुप्यताम्	स्तुप्यन्तु
ह्य०	अस्तुप्यत्	अस्तुप्यताम्	अस्तुप्यन्
अ०	अस्तुपत्	अस्तुपताम्	अस्तुपन्
प०	तुष्टोप	तुष्टुपतुः	तुष्टुपुः
आ०	स्तुप्यात्	स्तुप्यास्ताम्	स्तुप्यासुः
श्व०	स्तोपिता	स्तोपितारौ	स्तोपितारः
भ०	स्तोपिष्यति	स्तोपिष्यतः	स्तोपिष्यन्ति
क्रि०	अस्तोपिष्यत्	अस्तोपिष्यताम्	अस्तोपिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ भान्ताश्चत्वारः सेटश्च।

११९८. लुभच् (लुभ्) गार्ध्ये।

गार्ध्यमभिकाङ्क्षा।

व०	लुभ्यति	लुभ्यतः	लुभ्यन्ति
	लुभ्यसि	लुभ्यथः	लुभ्यथ
	लुभ्यामि	लुभ्यावः	लुभ्यामः
स०	लुभ्येत्	लुभ्येताम्	लुभ्येयुः
	लुभ्येः	लुभ्येतम्	लुभ्येत
	लुभ्येयम्	लुभ्येव	लुभ्येम
प०	लुभ्यतु/लुभ्यतात्	लुभ्यताम्	लुभ्यन्तु
	लुभ्य:/लुभ्यतात्	लुभ्यतम्	लुभ्यत
	लुभ्यानि	लुभ्याव	लुभ्याम
ह्य०	अलुभ्यत्	अलुभ्यताम्	अलुभ्यन्
	अलुभ्यः	अलुभ्यतम्	अलुभ्यत
	अलुभ्यम्	अलुभ्याव	अलुभ्याम
अ०	अलुभत्	अलुभताम्	अलुभन्
	अलुभः	अलुभतम्	अलुभत
	अलुभतम्	अलुभाव	अलुभाम
प०	लुलोभ	लुलुभतुः	लुलुभुः
	लुलोभिथ	लुलुभथुः	लुलुभ
	लुलोभ	लुलुभिव	लुलुभिम
आ०	लुभ्यात्	लुभ्यास्ताम्	लुभ्यासुः
	लुभ्याः	लुभ्यास्तम्	लुभ्यास्त
	लुभ्यासम्	लुभ्यास्व	लुभ्यास्म
श्व०	लोभिता	लोभितारौ	लोभितारः
	लोभितासि	लोभितास्थः	लोभितास्थ
	लोभितास्मि	लोभितास्वः	लोभितास्मः
		तथा	
	लोब्धा	लोब्धारौ	लोब्धारः
	लोब्धासि	लोब्धास्थः	लोब्धास्थ
	लोब्धास्मि	लोब्धास्वः	लोब्धास्मः
भ०	लोभिष्यति	लोभिष्यतः	लोभिष्यन्ति
	लोभिष्यसि	लोभिष्यथः	लोभिष्यथ
	लोभिष्यामि	लोभिष्यावः	लोभिष्यामः
क्रि०	अलोभिष्यत्	अलोभिष्यताम्	अलोभिष्यन्
	अलोभिष्यः	अलोभिष्यतम्	अलोभिष्यत
	अलोभिष्यम्	अलोभिष्याव	अलोभिष्याम

११९९. क्षुभच् (क्षुभ्) सञ्चलने

संचलनं रूपान्यथात्वम्।

व०	क्षुभ्यति	क्षुभ्यतः	क्षुभ्यन्ति
स०	क्षुभ्येत्	क्षुभ्येताम्	क्षुभ्येयुः
प०	क्षुभ्यतु/क्षुभ्यतात्	क्षुभ्यताम्	क्षुभ्यन्तु
ह्य०	अक्षुभ्यत्	अक्षुभ्यताम्	अक्षुभ्यन्
अ०	अक्षुभत्	अक्षुभताम्	अक्षुभन्
प०	चुक्षोभ	चुक्षुभतुः	चुक्षुभुः
आ०	क्षुभ्यात्	क्षुभ्यास्ताम्	क्षुभ्यासुः
श्व०	क्षोभिता	क्षोभितारौ	क्षोभितारः
भ०	क्षोभिष्यति	क्षोभिष्यतः	क्षोभिष्यन्ति
क्रि०	अक्षोभिष्यत्	अक्षोभिष्यताम्	अक्षोभिष्यन्

द्युतादिपठितेनवाक्षुभदिति सिद्धम् श्यविकरणार्थं तु दिवादावयमवश्यं पठितव्य इति पुषादावपि पठति

१२००. णभच् (नभ्) हिंसायाम्।

व०	नभ्यति	नभ्यतः	नभ्यन्ति
स०	नभ्येत्	नभ्येताम्	नभ्येयुः
प०	नभ्यतु/नभ्यतात्	नभ्यताम्	नभ्यन्तु
ह्य०	अनभ्यत्	अनभ्यताम्	अनभ्यन्
अ०	अनभत्	अनभताम्	अनभन्
प०	ननाभ	नेभतुः	नेभुः
आ०	नभ्यात्	नभ्यास्ताम्	नभ्यासुः
श्व०	नभिता	नभितारौ	नभितारः
भ०	नभिष्यति	नभिष्यतः	नभिष्यन्ति
क्रि०	अनभिष्यत्	अनभिष्यताम्	अनभिष्यन्

१२०१. तुभच् (तुभ्) हिंसायाम्।

व०	तुभ्यति	तुभ्यतः	तुभ्यन्ति
स०	तुभ्येत्	तुभ्येताम्	तुभ्येयुः
प०	तुभ्यतु/तुभ्यतात्	तुभ्यताम्	तुभ्यन्तु
ह्य०	अतुभ्यत्	अतुभ्यताम्	अतुभ्यन्
अ०	अतुभत्	अतुभताम्	अतुभन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	तुतोभ	तुतुभतुः	तुतुभुः
आ०	तुभ्यात्	तुभ्यास्ताम्	तुभ्यासुः
श्व०	तोभिता	तोभितारौ	तोभितारः
भ०	तोभिष्यति	तोभिष्यतः	तोभिष्यन्ति
क्रि०	अतोभिष्यत्	अतोभिष्यताम्	अतोभिष्यन्

अथ शान्ताः षट् सेटश्च।

१२०२. नशौच् (नश्) अदर्शने। अदर्शनमनुपलब्धिः।

व०	नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति
	नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ
	नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः
स०	नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः
	नश्येः	नश्येतम्	नश्येत
	नश्येयम्	नश्येव	नश्येम
प०	नश्यतु/नश्यतात्	नश्यताम्	नश्यन्तु
	नश्यः/नश्यतात्	नश्यतम्	नश्यत
	नश्यानि	नश्याव	नश्याम
ह्य०	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्
	अनश्यः	अनश्यतम्	अनश्यत
	अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम
अ०	अनेशत्	अनेशताम्	अनेशन्
	अनेशः	अनेशतम्	अनेशत
	अनेशम्	अनेशाव	अनेशाम
		तथा	
	अनशत्	अनशताम्	अनशन्
	अनशः	अनशतम्	अनशत
	अनशम्	अनशाव	अनशाम
प०	ननाश	नेशतुः	नेशुः
	नेशिथ	नेशथुः	नेश
	ननाश/ननश	नेशिव	नेशिम
आ०	नश्यात्	नश्यास्ताम्	नश्यासुः
	नश्याः	नश्यास्तम्	नश्यास्त
	नश्यासम्	नश्यास्व	नश्यास्म
श्व०	नशिता	नशितारौ	नशितारः
	नशितासि	नशितास्थः	नशितास्थ
	नशितास्मि	नशितास्वः	नशितास्मः
		तथा	
	नंष्टा	नंष्टारौ	नंष्टारः
	नंष्टासि	नंष्टास्थः	नंष्टास्थ
	नंष्टास्मि	नंष्टास्वः	नंष्टास्मः
भ०	नशिष्यति	नशिष्यतः	नशिष्यन्ति
	नशिष्यसि	नशिष्यथः	नशिष्यथ
	नशिष्यामि	नशिष्यावः	नशिष्यामः
		तथा	
	नङ्क्ष्यति	नङ्क्ष्यतः	नङ्क्ष्यन्ति
	नङ्क्ष्यसि	नङ्क्ष्यथः	नङ्क्ष्यथ
	नङ्क्ष्यामि	नङ्क्ष्यावः	नङ्क्ष्यामः
क्रि०	अनशिष्यत्	अनशिष्यताम्	अनशिष्यन्
	अनशिष्यः	अनशिष्यतम्	अनशिष्यत
	अनशिष्यम्	अनशिष्याव	अनशिष्याम
		तथा	
	अनङ्क्ष्यत्	अनङ्क्ष्यताम्	अनङ्क्ष्यन्
	अनङ्क्ष्यः	अनङ्क्ष्यतम्	अनङ्क्ष्यत
	अनङ्क्ष्यम्	अनङ्क्ष्याव	अनङ्क्ष्याम

१२०३. कुशच् (कुश्) श्लेषणे।

व०	कुश्यति	कुश्यतः	कुश्यन्ति
स०	कुश्येत्	कुश्येताम्	कुश्येयुः
प०	कुश्यतु/कुश्यतात्	कुश्यताम्	कुश्यन्तु
ह्य०	अकुश्यत्	अकुश्यताम्	अकुश्यन्
अ०	अकुशत्	अकुशताम्	अकुशन्
प०	चुकोश	चुकुशतुः	चुकुशुः
आ०	कुश्यात्	कुश्यास्ताम्	कुश्यासुः
श्व०	कोशिता	कोशितारौ	कोशितारः
भ०	कोशिष्यति	कोशिष्यतः	कोशिष्यन्ति
क्रि०	अकोशिष्यत्	अकोशिष्यताम्	अकोशिष्यन्

१२०४. भृशूच् (भृश्) अधःपतने।

व०	भृश्यति	भृश्यतः	भृश्यन्ति
स०	भृश्येत्	भृश्येताम्	भृश्येयुः
प०	भृश्यतु/भृश्यतात्	भृश्यताम्	भृश्यन्तु
ह्य०	अभृश्यत्	अभृश्यताम्	अभृश्यन्
अ०	अभृशत्	अभृशताम्	अभृशन्
प०	बभर्श	बभृशतुः	बभृशुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ० भृश्यात्	भृश्यास्ताम्	भृश्यासुः
श्व० भर्शिता	भर्शितारौ	भर्शितारः
भ० भर्शिष्यति	भर्शिष्यतः	भर्शिष्यन्ति
क्रि० अभर्शिष्यत्	अभर्शिष्यताम्	अभर्शिष्यन्

१२०५. भ्रंशूच् (भ्रंश्) अधःपतने।

व० भ्रश्यति	भ्रश्यतः	भ्रश्यन्ति
स० भ्रश्येत्	भ्रश्येताम्	भ्रश्येयुः
प० भ्रश्यतु/भ्रश्यतात्	भ्रश्यताम्	भ्रश्यन्तु
ह्य० अभ्रश्यत्	अभ्रश्यताम्	अभ्रश्यन्
अ० अभ्रशत्	अभ्रशताम्	अभ्रशन्
प० बभ्रंश	बभ्रंशतुः	बभ्रंशुः
आ० भ्रश्यात्	भ्रश्यास्ताम्	भ्रश्यासुः
श्व० भ्रंशिता	भ्रंशितारौ	भ्रंशितारः
भ० भ्रंशिष्यति	भ्रंशिष्यतः	भ्रंशिष्यन्ति
क्रि० अभ्रंशिष्यत्	अभ्रंशिष्यताम्	अभ्रंशिष्यन्

१२०६. वृशूच् (वृश्) वरणे।

व० वृश्यति	वृश्यतः	वृश्यन्ति
स० वृश्येत्	वृश्येताम्	वृश्येयुः
प० वृश्यतु/वृश्यतात्	वृश्यताम्	वृश्यन्तु
ह्य० अवृश्यत्	अवृश्यताम्	अवृश्यन्
अ० अवृशत्	अवृशताम्	अवृशन्
प० ववर्श	ववृशतुः	ववृशुः
आ० वृश्यात्	वृश्यास्ताम्	वृश्यासुः
श्व० वर्शिता	वर्शितारौ	वर्शितारः
भ० वर्शिष्यति	वर्शिष्यतः	वर्शिष्यन्ति
क्रि० अवर्शिष्यत्	अवर्शिष्यताम्	अवर्शिष्यन्

१२०७. कृशूच् (कृश्) तनुत्वे।

व० कृश्यति	कृश्यतः	कृश्यन्ति
स० कृश्येत्	कृश्येताम्	कृश्येयुः
प० कृश्यतु/कृश्यतात्	कृश्यताम्	कृश्यन्तु
ह्य० अकृश्यत्	अकृश्यताम्	अकृश्यन्
अ० अकृशत्	अकृशताम्	अकृशन्
प० चकर्श	चकृशतुः	चकृशुः
आ० कृश्यात्	कृश्यास्ताम्	कृश्यासुः
श्व० कर्शिता	कर्शितारौ	कर्शितारः
भ० कर्शिष्यति	कर्शिष्यतः	कर्शिष्यन्ति
क्रि० अकर्शिष्यत्	अकर्शिष्यताम्	अकर्शिष्यन्

अथ षान्ता नव

१२०८. शुषंच् (शुष्) शोषणे।

व० शुष्यति	शुष्यतः	शुष्यन्ति
शुष्यसि	शुष्यथः	शुष्यथ
शुष्यामि	शुष्यावः	शुष्यामः
स० शुष्येत्	शुष्येताम्	शुष्येयुः
शुष्येः	शुष्येतम्	शुष्येत
शुष्येयम्	शुष्येव	शुष्येम
प० शुष्यतु/शुष्यतात्	शुष्यताम्	शुष्यन्तु
शुष्यः/शुष्यतात्	शुष्यतम्	शुष्यत
शुष्याणि	शुष्याव	शुष्याम
ह्य० अशुष्यत्	अशुष्यताम्	अशुष्यन्
अशुष्यः	अशुष्यतम्	अशुष्यत
अशुष्यम्	अशुष्याव	अशुष्याम
अ० अशुषत्	अशुषताम्	अशुषन्
अशुषः	अशुषतम्	अशुषत
अशुषम्	अशुषाव	अशुषाम
प० शुशोष	शुशुषतुः	शुशुषुः
शुशोषिथ	शुशुषथुः	शुशुष
शुशोष	शुशुषिव	शुशुषिम
आ० शुष्यात्	शुष्यास्ताम्	शुष्यासुः
शुष्याः	शुष्यास्तम्	शुष्यास्त
शुष्यासम्	शुष्यास्व	शुष्यास्म
श्व० शोष्टा	शोष्टारौ	शोष्टारः
शोष्टासि	शोष्टास्थः	शोष्टास्थ
शोष्टास्मि	शोष्टास्वः	शोष्टास्मः

भ०	शोक्ष्यति	शोक्ष्यतः	शोक्ष्यन्ति
	शोक्ष्यसि	शोक्ष्यथः	शोक्ष्यथ
	शोक्ष्यामि	शोक्ष्यावः	शोक्ष्यामः
क्रि०	अशोक्ष्यत्	अशोक्ष्यताम्	अशोक्ष्यन्
	अशोक्ष्यः	अशोक्ष्यतम्	अशोक्ष्यत
	अशोक्ष्यम्	अशोक्ष्याव	अशोक्ष्याम

१२०९. दुषंच् (दुष्) वैकृत्ये। रूपभङ्ग इत्यर्थः।

व०	दुष्यति	दुष्यतः	दुष्यन्ति
स०	दुष्येत्	दुष्येताम्	दुष्येयुः
प०	दुष्यतु/दुष्यतात्	दुष्यताम्	दुष्यन्तु
ह्य०	अदुष्यत्	अदुष्यताम्	अदुष्यन्
अ०	अदुषत्	अदुषताम्	अदुषन्
प०	दुदोष	दुदुषतुः	दुदुषुः
आ०	दुष्यात्	दुष्यास्ताम्	दुष्यासुः
श्व०	दोष्टा	दोष्टारौ	दोष्टारः
भ०	दोक्ष्यति	दोक्ष्यतः	दोक्ष्यन्ति
क्रि०	अदोक्ष्यत्	अदोक्ष्यताम्	अदोक्ष्यन्

१२१०. शिलषंच् (शिलष्) आलिङ्गने।

व०	शिलष्यति	शिलष्यतः	शिलष्यन्ति
स०	शिलष्येत्	शिलष्येताम्	शिलष्येयुः
प०	शिलष्यतु/शिलष्यतात्	शिलष्यताम्	शिलष्यन्तु
ह्य०	अशिलष्यत्	अशिलष्यताम्	अशिलष्यन्
अ०	अशिलक्षत्	अशिलक्षताम्	अशिलक्षन्
	अशिलषत्	अशिलषताम्	अशिलषन्
प०	शिश्लेष	शिश्लिषतुः	शिश्लिषुः
आ०	शिलष्यात्	शिलष्यास्ताम्	शिलष्यासुः
श्व०	श्लेष्टा	श्लेष्टारौ	श्लेष्टारः
भ०	श्लेक्ष्यति	श्लेक्ष्यतः	श्लेक्ष्यन्ति
क्रि०	अश्लेक्ष्यत्	अश्लेक्ष्यताम्	अश्लेक्ष्यन्

१२११. प्लुषूच् (प्लुष्) दाहे।

व०	प्लुष्यति	प्लुष्यतः	प्लुर्ष्यन्ति
स०	प्लुष्येत्	प्लुष्येताम्	प्लुष्येयुः
प०	प्लुष्यतु/प्लुष्यतात्	प्लुष्यताम्	प्लुष्यन्तु
ह्य०	अप्लुष्यत्	अप्लुष्यताम्	अप्लुष्यन्
अ०	अप्लुषत्	अप्लुषताम्	अप्लुषन्
प०	पुप्लोष	पुप्लुषतुः	पुप्लुषुः
आ०	प्लुष्यात्	प्लुष्यास्ताम्	प्लुष्यासुः
श्व०	प्लोषिता	प्लोषितारौ	प्लोषितारः
भ०	प्लोषिष्यति	प्लोषिष्यतः	प्लोषिष्यन्ति
क्रि०	अप्लोषिष्यत्	अप्लोषिष्यताम्	अप्लोषिष्यन्

१२१२. ञितृषच् (तृष्) पिपासायाम्।

व०	तृष्यति	तृष्यतः	तृष्यन्ति
स०	तृष्येत्	तृष्येताम्	तृष्येयुः
प०	तृष्यतु/तृष्यतात्	तृष्यताम्	तृष्यन्तु
ह्य०	अतृष्यत्	अतृष्यताम्	अतृष्यन्
अ०	अतृषत्	अतृषताम्	अतृषन्
प०	ततर्ष	ततृषतुः	ततृषुः
आ०	तृष्यात्	तृष्यास्ताम्	तृष्यासुः
श्व०	तर्षिता	तर्षितारौ	तर्षितारः
भ०	तर्षिष्यति	तर्षिष्यतः	तर्षिष्यन्ति
क्रि०	अतर्षिष्यत्	अतर्षिष्यताम्	अतर्षिष्यन्

१२१३. तुषच् (तुष्) तुष्टौ। तुष्टिः प्रीतिः।

व०	तुष्यति	तुष्यतः	तुष्यन्ति
स०	तुष्येत्	तुष्येताम्	तुष्येयुः
प०	तुष्यतु/तुष्यतात्	तुष्यताम्	तुष्यन्तु
ह्य०	अतुष्यत्	अतुष्यताम्	अतुष्यन्
अ०	अतुषत्	अतुषताम्	अतुषन्
प०	तुतोष	तुतुषतुः	तुतुषुः
आ०	तुष्यात्	तुष्यास्ताम्	तुष्यासुः
श्व०	तोष्टा	तोष्टारौ	तोष्टारः
भ०	तोक्ष्यति	तोक्ष्यतः	तोक्ष्यन्ति
क्रि०	अतोक्ष्यत्	अतोक्ष्यताम्	अतोक्ष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२१४. हृषच् (हृष्) तुष्टौ। तुष्टिः प्रीतिः।

व०	हृष्यति	हृष्यतः	हृष्यन्ति
स०	हृष्येत्	हृष्येताम्	हृष्येयुः
प०	हृष्यतु/हृष्यतात्	हृष्यताम्	हृष्यन्तु
ह्य०	अहृष्यत्	अहृष्यताम्	अहृष्यन्
अ०	अहृषत्	अहृषताम्	अहृषन्
प०	जहर्ष	जहृषतुः	जहृषुः
आ०	हृष्यात्	हृष्यास्ताम्	हृष्यासुः
श्व०	हर्षिता	हर्षितारौ	हर्षितारः
भ०	हर्षिष्यति	हर्षिष्यतः	हर्षिष्यन्ति
क्रि०	अहर्षिष्यत्	अहर्षिष्यताम्	अहर्षिष्यन्

१२१५. रुषच् (रुष्) रोषे।

व०	रुष्यति	रुष्यतः	रुष्यन्ति
स०	रुष्येत्	रुष्येताम्	रुष्येयुः
प०	रुष्यतु/रुष्यतात्	रुष्यताम्	रुष्यन्तु
ह्य०	अरुष्यत्	अरुष्यताम्	अरुष्यन्
अ०	अरुषत्	अरुषताम्	अरुषन्
प०	रुरोष	रुरुषतुः	रुरुषुः
आ०	रुष्यात्	रुष्यास्ताम्	रुष्यासुः
श्व०	रोष्टा	रोष्टारौ	रोष्टारः
	रोषिता	रोषितारौ	रोषितारः
भ०	रोषिष्यति	रोषिष्यतः	रोषिष्यन्ति
क्रि०	अरोषिष्यत्	अरोषिष्यताम्	अरोषिष्यन्

१२१६. प्युषूच् (प्युष्) विभागे।

व०	प्युष्यति	प्युष्यतः	प्युष्यन्ति
स०	प्युष्येत्	प्युष्येताम्	प्युष्येयुः
प०	प्युष्यतु/प्युष्यतात्	प्युष्यताम्	प्युष्यन्तु
ह्य०	अप्युष्यत्	अप्युष्यताम्	अप्युष्यन्
अ०	अप्युषत्	अप्युषताम्	अप्युषन्
प०	पुप्योष	पुप्युषतुः	पुप्युषुः
आ०	प्युष्यात्	प्युष्यास्ताम्	प्युष्यासुः
श्व०	प्योषिता	प्योषितारौ	प्योषितारः
भ०	प्योषिष्यति	प्योषिष्यतः	प्योषिष्यन्ति
क्रि०	अप्योषिष्यत्	अप्योषिष्यताम्	अप्योषिष्यन्

अथ सान्तास्त्रयोदश सेटश्च।

१२१७. प्युसूच् (प्युस्) विभागे।

व०	प्युस्यति	प्युस्यतः	प्युस्यन्ति
	प्युस्यसि	प्युस्यथः	प्युस्यथ
	प्युस्यामि	प्युस्यावः	प्युस्यामः
स०	प्युस्येत्	प्युस्येताम्	प्युस्येयुः
	प्युस्येः	प्युस्येतम्	प्युस्येत
	प्युस्येयम्	प्युस्येव	प्युस्येम
प०	प्युस्यतु/प्युस्यतात्	प्युस्यताम्	प्युस्यन्तु
	प्युस्यः/प्युस्यतात्	प्युस्यतम्	प्युस्यत
	प्युस्यानि	प्युस्याव	प्युस्याम
ह्य०	अप्युस्यत्	अप्युस्यताम्	अप्युस्यन्
	अप्युस्यः	अप्युस्यतम्	अप्युस्यत
	अप्युस्यम्	अप्युस्याव	अप्युस्याम
अ०	अप्युसत्	अप्युसताम्	अप्युसन्
	अप्युसः	अप्युसतम्	अप्युसत
	अप्युसम्	अप्युसाव	अप्युसाम
प०	पुप्योस	पुप्युसतुः	पुप्युसुः
	पुप्योसिथ	पुप्युसथुः	पुप्युस
	पुप्योस	पुप्योसिव	पुप्योसिम
आ०	प्युस्यात्	प्युस्यास्ताम्	प्युस्यासुः
	प्युस्याः	प्युस्यास्तम्	प्युस्यास्त
	प्युस्यासम्	प्युस्यास्व	प्युस्यास्म
श्व०	प्योसिता	प्योसितारौ	प्योसितारः
	प्योसितासि	प्योसितास्थः	प्योसितास्थ
	प्योसितास्मि	प्योसितास्वः	प्योसितास्मः
भ०	प्योसिष्यति	प्योसिष्यतः	प्योसिष्यन्ति
	प्योसिष्यसि	प्योसिष्यथः	प्योसिष्यथ
	प्योसिष्यामि	प्योसिष्यावः	प्योसिष्यामः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रि०	अप्योसिष्यत्	अप्योसिष्यताम्	अप्योसिष्यन्
	अप्योसिष्यः	अप्योसिष्यतम्	अप्योसिष्यत
	अप्योसिष्यम्	अप्योसिष्याव	अप्योसिष्याम

१२१८. पुषूच् (पुष्) विभागे।

व०	पुस्यति	पुस्यतः	पुस्यन्ति, इत्यादि।

१२१९. विसच् (विस्) प्रेरणे।

व०	विस्यति	विस्यतः	विस्यन्ति, इत्यादि

१२२०. कुसच् (कुस्) श्लेषे।

व०	कुस्यति	कुस्यतः	कुस्यन्ति, इत्यादि।

१२२१. असूच् (अस्) क्षेपणे।

व०	अस्यति	अस्यतः	अस्यन्ति
स०	अस्येत्	अस्येताम्	अस्येयुः
प०	अस्यतु/अस्यतात्	अस्यताम्	अस्यन्तु
ह्य०	आस्यत्	आस्यताम्	आस्यन्
अ०	आस्थत्	आस्थताम्	आस्थन्
प०	आस	आसतुः	आसुः
आ०	अस्यात्	अस्यास्ताम्	अस्यासुः
श्व०	असिता	असितारौ	असितारः
भ०	असिष्यति	असिष्यतः	असिष्यन्ति
क्रि०	आसिष्यत्	आसिष्यताम्	आसिष्यन्

संपूर्वस्यानुपसर्गस्य च वा श्यः।

१२२२. यसूच् (यस्) प्रयत्ने।

व०	संयस्यति	संयस्यतः	संयस्यन्ति
	संयसति	संयसतः	संयसन्ति
स०	संयस्येत्	संयस्येताम्	संयस्येयुः
	संयसेत्	संयसेताम्	संयसेयुः
प०	संयस्यतु/संयस्यतात्	संयस्यताम्	संयस्यन्तु
	संयसतु/संयसतात्	संयसताम्	संयसन्तु
ह्य०	समयस्यत्	समयस्यताम्	समयस्यन्
	समयसत्	समयसताम्	समयसन्
व०	यस्यति	यस्यतः	यस्यन्ति
	यसति	यसतः	यसन्ति
स०	यस्येत्	यस्येताम्	यस्येयुः
	यसेत्	यसेताम्	यसेयुः
प०	यस्यतु/यस्यतात्	यस्यताम्	यस्यन्तु
	यसतु/यसतात्	यसताम्	यसन्तु
ह्य०	अयस्यत्	अयस्यताम्	अयस्यन्
	अयसत्	अयसताम्	अयसन्

अन्योपसर्गपूर्वस्तु नित्यं श्यभाक्, यथा-

व०	प्रयस्यति	प्रयस्यतः	प्रयस्यन्ति
स०	प्रयस्येत्	प्रयस्येताम्	प्रयस्येयुः
प०	प्रयस्यतु/प्रयस्यतात्	प्रयस्यताम्	प्रयस्यन्तु
ह्य०	प्रायस्यत्	प्रायस्यताम्	प्रायस्यन्
अ०	अयसत्	अयसताम्	अयसन्
प०	ययास	येसतुः	येसुः
आ०	यस्यात्	यस्यास्ताम्	यस्यासुः
श्व०	यसिता	यसितारौ	यसितारः
भ०	यसिष्यति	यसिष्यतः	यसिष्यन्ति
क्रि०	अयसिष्यत्	अयसिष्यताम्	अयसिष्यन्

१२२३. जसूच् (जस्) मोक्षणे।

व०	जस्यति	जस्यतः	जस्यन्ति
स०	जस्येत्	जस्येताम्	जस्येयुः
प०	जस्यतु/जस्यतात्	जस्यताम्	जस्यन्तु
ह्य०	अजस्यत्	अजस्यताम्	अजस्यन्
अ०	अजसत्	अजसताम्	अजसन्
प०	जजास	जेसतुः	जेसुः
आ०	जस्यात्	जस्यास्ताम्	जस्यासुः
श्व०	जसिता	जसितारौ	जसितारः
भ०	जसिष्यति	जसिष्यतः	जसिष्यन्ति
क्रि०	अजसिष्यत्	अजसिष्यताम्	अजसिष्यन्

१२२४. तसू (तस्च्) उपक्षये।

व०	तस्यति	तस्यतः	तस्यन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स० तस्येत्	तस्येताम्	तस्येयुः
प० तस्यतु/तस्यतात्	तस्यताम्	तस्यन्तु
ह्य० अतस्यत्	अतस्यताम्	अतस्यन्
अ० अतसत्	अतसताम्	अतसन्
प० ततास	तेसतुः	तेसुः
आ० तस्यात्	तस्यास्ताम्	तस्यासुः
श्व० तसिता	तसितारौ	तसितारः
भ० तसिष्यति	तसिष्यतः	तसिष्यन्ति
क्रि० अतसिष्यत्	अतसिष्यताम्	अतसिष्यन्

१२२५. दसूच् (दस्) उपक्षये।

व० दस्यति	दस्यतः	दस्यन्ति
स० दस्येत्	दस्येताम्	दस्येयुः
प० दस्यतु/दस्यतात्	दस्यताम्	दस्यन्तु
ह्य० अदस्यत्	अदस्यताम्	अदस्यन्
अ० अदसत्	अदसताम्	अदसन्
प० ददास	देसतुः	देसुः
आ० दस्यात्	दस्यास्ताम्	दस्यासुः
श्व० दसिता	दसितारौ	दसितारः
भ० दसिष्यति	दसिष्यतः	दसिष्यन्ति
क्रि० अदसिष्यत्	अदसिष्यताम्	अदसिष्यन्

१२२६. वसूच् (वस्) स्तम्भे।

व० वस्यति	वस्यतः	वस्यन्ति
स० वस्येत्	वस्येताम्	वस्येयुः
प० वस्यतु/वस्यतात्	वस्यताम्	वस्यन्तु
ह्य० अवस्यत्	अवस्यताम्	अवस्यन्
अ० अवसत्	अवसताम्	अवसन्
प० ववास	ववसतुः	ववसुः
आ० वस्यात्	वस्यास्ताम्	वस्यासुः
श्व० वसिता	वसितारौ	वसितारः
भ० वसिष्यति	वसिष्यतः	वसिष्यन्ति
क्रि० अवसिष्यत्	अवसिष्यताम्	अवसिष्यन्

१२२७. वुसच् (वुस्) उत्सर्गे। उत्सर्गस्त्यागः।

व० वुस्यति	वुस्यतः	वुस्यन्ति
स० वुस्येत्	वुस्येताम्	वुस्येयुः
प० वुस्यतु/वुस्यतात्	वुस्यताम्	वुस्यन्तु
ह्य० अवुस्यत्	अवुस्यताम्	अवुस्यन्
अ० अवुसत्	अवुसताम्	अवुसन्
प० वुवोस	वुवुसतुः	वुवुसुः
आ० वुस्यात्	वुस्यास्ताम्	वुस्यासुः
श्व० वोसिता	वोसितारौ	वोसितारः
भ० वोसिष्यति	वोसिष्यतः	वोसिष्यन्ति
क्रि० अवोसिष्यत्	अवोसिष्यताम्	अवोसिष्यन्

१२२८. मुसच् (मुस्) खण्डने।

व० मुस्यति	मुस्यतः	मुस्यन्ति
स० मुस्येत्	मुस्येताम्	मुस्येयुः
प० मुस्यतु/मुस्यतात्	मुस्यताम्	मुस्यन्तु
ह्य० अमुस्यत्	अमुस्यताम्	अमुस्यन्
अ० अमुसत्	अमुसताम्	अमुसन्
प० मुमोस	मुमुसतुः	मुमुसुः
आ० मुस्यात्	मुस्यास्ताम्	मुस्यासुः
श्व० मोसिता	मोसितारौ	मोसितारः
भ० मोसिष्यति	मोसिष्यतः	मोसिष्यन्ति
क्रि० अमोसिष्यत्	अमोसिष्यताम्	अमोसिष्यन्

१२२९. मसैच् (मस्) परिणामे। परिणामो विकारः।

व० मस्यति	मस्यतः	मस्यन्ति, इत्यादि।

अथ शमादीनां सेटां सप्तकं श्ये दीर्घार्थं मदैच्पर्यन्तं चाष्टकं घिनणर्थं प्रदर्श्यते। तत्र च बहुत्वा। मान्ताः षडादौ

१२३०. शमूच् (शम्) उपशमे।

व० शाम्यति	शाम्यतः	शाम्यन्ति
शाम्यसि	शाम्यथः	शाम्यथ
शाम्यामि	शाम्यावः	शाम्यामः
स० शाम्येत्	शाम्येताम्	शाम्येयुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	शाम्येः	शाम्येतम्	शाम्येत
	शाम्येयम्	शाम्येव	शाम्येम
प०	शाम्यतु/शाम्यतात्	शाम्यताम्	शाम्यन्तु
	शाम्यः/शाम्यतात्	शाम्यतम्	शाम्यत
	शाम्यानि	शाम्याव	शाम्याम
ह्य०	अशाम्यत्	अशाम्यताम्	अशाम्यन्
	अशाम्यः	अशाम्यतम्	अशाम्यत
	अशाम्यम्	अशाम्याव	अशाम्याम
अ०	अशमत्	अशमताम्	अशमन्
	अशमः	अशमतम्	अशमत
	अशमम्	अशमाव	अशमाम
प०	शशाम	शेमतुः	शेमुः
	शेमिथ	शेमथुः	शेम
	शशाम/शशम	शेमिव	शेमिम
आ०	शम्यात्	शम्यास्ताम्	शम्यासुः
	शम्याः	शम्यास्तम्	शम्यास्त
	शम्यासम्	शम्यास्व	शम्यास्म
श्व०	शसिता	शमितारौ	शमितारः
	शमितासि	शमितास्थः	शमितास्थ
	शमितास्मि	शमितास्वः	शमितास्मः
भ०	शमिष्यति	शमिष्यतः	शमिष्यन्ति
	शमिष्यसि	शमिष्यथः	शमिष्यथ
	शमिष्यामि	शमिष्यावः	शमिष्यामः
क्रि०	अशमिष्यत्	अशमिष्यताम्	अशमिष्यन्
	अशमिष्यः	अशमिष्यतम्	अशमिष्यत
	अशमिष्यम्	अशमिष्याव	अशमिष्याम

१२३१. दमूच् (दम्) उपशमे।

व०	दाम्यति	दाम्यतः	दाम्यन्ति
स०	दाम्येत्	दाम्येताम्	दाम्येयुः
प०	दाम्यतु/दाम्यतात्	दाम्यताम्	दाम्यन्तु
ह्य०	अदाम्यत्	अदाम्यताम्	अदाम्यन्
अ०	अदमत्	अदमताम्	अदमन्
प०	ददाम	देमतुः	देमुः
आ०	दम्यात्	दम्यास्ताम्	दम्यासुः
श्व०	दमिता	दमितारौ	दमितारः
भ०	दमिष्यति	दमिष्यतः	दमिष्यन्ति
क्रि०	अदमिष्यत्	अदमिष्यताम्	अदमिष्यन्

१२३२. तमूच् (तम्) काङ्क्षायाम्।

व०	ताम्यति	ताम्यतः	ताम्यन्ति
स०	ताम्येत्	ताम्येताम्	ताम्येयुः
प०	ताम्यतु/ताम्यतात्	ताम्यताम्	ताम्यन्तु
ह्य०	अताम्यत्	अताम्यताम्	अताम्यन्
अ०	अतमत्	अतमताम्	अतमन्
प०	तताम	तेमतुः	तेमुः
आ०	तम्यात्	तम्यास्ताम्	तम्यासुः
श्व०	तमिता	तमितारौ	तमितारः
भ०	तमिष्यति	तमिष्यतः	तमिष्यन्ति
क्रि०	अतमिष्यत्	अतमिष्यताम्	अतमिष्यन्

१२३३. श्रमूच् (श्रम्) खेदतपसोः।

व० श्राम्यति, श्राम्यतः, श्राम्यन्ति, इत्यादि

१२३४. भ्रमूच् (भ्रम्) अनवस्थाने।[1]

व०	भ्राम्यति	भ्राम्यतः	भ्राम्यन्ति
	भ्राम्यसि	भ्राम्यथः	भ्राम्यथ
	भ्राम्यामि	भ्राम्यावः	भ्राम्यामः
		तथा	
	भ्रमति	भ्रमतः	भ्रमन्ति
	भ्रमसि	भ्रमथः	भ्रमथ
	भ्रमामि	भ्रमावः	भ्रमावः
स०	भ्राम्येत्	भ्राम्येताम्	भ्राम्येयुः
	भ्राम्येः	भ्राम्येतम्	भ्राम्येत
	भ्राम्येयम्	भ्राम्येव	भ्राम्येम
		तथा	

१. अनवस्थानं देशान्तरगमनं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	भ्रमेत्	भ्रमेताम्	भ्रमेयुः
	भ्रमेः	भ्रमेतम्	भ्रमेत
	भ्रमेयम्	भ्रमेव	भ्रमेम
प०	भ्राम्यतु/भ्राम्यतात्	भ्राम्यताम्	भ्राम्यन्तु
	भ्राम्यः/भ्राम्यतात्	भ्राम्यतम्	भ्राम्यत
	भ्राम्याणि	भ्राम्याव	भ्राम्याम
		तथा	
	भ्रमतु/भ्रमतात्	भ्रमताम्	भ्रमन्तु
	भ्रम/भ्रमतात्	भ्रमतम्	भ्रमत
	भ्रमाणि	भ्रमाव	भ्रमाम
ह्य०	अभ्राम्यत्	अभ्राम्यताम्	अभ्राम्यन्
	अभ्राम्यः	अभ्राम्यतम्	अभ्राम्यत
	अभ्राम्यम्	अभ्राम्याव	अभ्राम्याम
		तथा	
	अभ्रमत्	अभ्रमताम्	अभ्रमन्
	अभ्रमः	अभ्रमतम्	अभ्रमत
	अभ्रमम्	अभ्रमाव	अभ्रमाम
अ०	अभ्रमत्	अभ्रमताम्	अभ्रमन्
	अभ्रमः	अभ्रमतम्	अभ्रमत
	अभ्रमम्	अभ्रमाव	अभ्रमाम
प०	बभ्राम	बभ्रमतुः	बभ्रमुः
	बभ्रमिथ	बभ्रमथुः	बभ्रम
	भ्रेमिथ	भ्रेमिथुः	भ्रेम
	बभ्राम/बभ्रम	बभ्रमिव	बभ्रमिम
आ०	भ्रम्यात्	भ्रम्यास्ताम्	भ्रम्यासुः
	भ्रम्याः	भ्रम्यास्तम्	भ्रम्यास्त
	भ्रम्यासम्	भ्रम्यास्व	भ्रम्यास्म
श्व०	भ्रमिता	भ्रमितारौ	भ्रमितारः
	भ्रमितासि	भ्रमितास्थः	भ्रमितास्थ
	भ्रमितास्मि	भ्रमितास्वः	भ्रमितास्मः
भ०	भ्रमिष्यति	भ्रमिष्यतः	भ्रमिष्यन्ति
	भ्रमिष्यसि	भ्रमिष्यथः	भ्रमिष्यथ
	भ्रमिष्यामि	भ्रमिष्यावः	भ्रमिष्यामः
क्रि०	अभ्रमिष्यत्	अभ्रमिष्यताम्	अभ्रमिष्यन्
	अभ्रमिष्यः	अभ्रमिष्यतम्	अभ्रमिष्यत
	अभ्रमिष्यम्	अभ्रमिष्याव	अभ्रमिष्याम

१२३५. क्षमौच् (क्षम्) सहने।

व०	क्षाम्यति	क्षाम्यतः	क्षाम्यन्ति
स०	क्षाम्येत्	क्षाम्येताम्	क्षाम्येयुः
प०	क्षाम्यतु/क्षाम्यतात्	क्षाम्यताम्	क्षाम्यन्तु
ह्य०	अक्षाम्यत्	अक्षाम्यताम्	अक्षाम्यन्
अ०	अक्षमत्	अक्षमताम्	अक्षमन्
प०	चक्षाम	चक्षमतुः	चक्षमुः
आ०	क्षम्यात्	क्षम्यास्ताम्	क्षम्यासुः
श्व०	क्षमिता	क्षमितारौ	क्षमितारः
	क्षन्ता	क्षन्तारौ	क्षन्तारः
भ०	क्षमिष्यति	क्षमिष्यतः	क्षमिष्यन्ति
	क्षंस्यति	क्षंस्यतः	क्षंस्यन्ति
क्रि०	अक्षमिष्यत्	अक्षमिष्यताम्	अक्षमिष्यन्
	अक्षंस्यत्	अक्षंस्यताम्	अक्षंस्यन्

अथ दान्ताः।

१२३६. मदैच् (मद्) हर्षे।

व०	माद्यति	माद्यतः	माद्यन्ति
	माद्यसि	माद्यथः	माद्यथ
	माद्यामि	माद्यावः	माद्यामः
स०	माद्येत्	माद्येताम्	माद्येयुः
	माद्येः	माद्येतम्	माद्येत
	माद्येयम्	माद्येव	माद्येम
प०	माद्यतु/माद्यतात्	माद्यताम्	माद्यन्तु
	माद्यः/माद्यतात्	माद्यतम्	माद्यत
	माद्यानि	माद्याव	माद्याम
ह्य०	अमाद्यत्	अमाद्यताम्	अमाद्यन्
	अमाद्यः	अमाद्यतम्	अमाद्यत
	अमाद्यम्	अमाद्याव	अमाद्याम
अ०	अमदत्	अमदताम्	अमदन्
	अमदः	अमदतम्	अमदत
	अमदम्	अमदाव	अमदाम
प०	ममाद	मेदतुः	मेदुः
	मेदिथ	मेदथुः	मेद

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	ममाद	मेदिव	मेदिम
आ०	मद्यात्	मद्यास्ताम्	मद्यासु:
	मद्या:	मद्यास्तम्	मद्यास्त
	मद्यासम्	मद्यास्व	मद्यास्म
श्व०	मदिता	मदितारौ	मदितार:
	मदितासि	मदितास्थ:	मदितास्थ
	मदितास्मि	मदितास्व:	मदितास्म:
भ०	मदिष्यति	मदिष्यत:	मदिष्यन्ति
	मदिष्यसि	मदिष्यथ:	मदिष्यथ
	मदिष्याम	मदिष्याव:	मदिष्याम:
क्रि०	अमदिष्यत्	अमदिष्यताम्	अमदिष्यन्
	अमदिष्य:	अमदिष्यतम्	अमदिष्यत
	अमदिष्यम्	अमदिष्याव	अमदिष्याम

१२३७. क्लमूच् (क्लम्) ग्लानौ।

व०	क्लाम्यति	क्लाम्यत:	क्लाम्यन्ति
	क्लाम्यसि	क्लाम्यथ:	क्लाम्यथ
	क्लाम्यामि	क्लाम्याव:	क्लाम्याम:
स०	क्लाम्येत्	क्लाम्येताम्	क्लाम्येयु:
	क्लाम्ये:	क्लाम्येतम्	क्लाम्येत
	क्लाम्येयम्	क्लाम्येव	क्लाम्येम
प०	क्लाम्यतु/क्लाम्यतात्	क्लाम्यताम्	क्लाम्यन्तु
	क्लाम्य:/क्लाम्यतात्	क्लाम्यतम्	क्लाम्यत
	क्लाम्यानि	क्लाम्याव	क्लाम्याम
ह्य०	अक्लाम्यत्	अक्लाम्यताम्	अक्लाम्यन्
	अक्लाम्य:	अक्लाम्यतम्	अक्लाम्यत
	अक्लाम्यम्	अक्लाम्याव	अक्लाम्याम
अ०	अक्लमत्	अक्लमताम्	अक्लमन्
	अक्लम:	अक्लमतम्	अक्लमत
	अक्लमम्	अक्लमाव	अक्लमाम
प०	चक्लाम	चक्लमतु:	चक्लमु:
	चक्लमिथ	चक्लमथु:	चक्लम
	चक्लाम/चक्लम	चक्लमिव	चक्लमिम
आ०	क्लम्यात्	क्लम्यास्ताम्	क्लम्यासु:
	क्लम्या:	क्लम्यास्तम्	क्लम्यास्त
	क्लम्यासम्	क्लम्यास्व	क्लम्यास्म
श्व०	क्लमिता	क्लमितारौ	क्लमितार:
	क्लमितासि	क्लमितास्थ:	क्लमितास्थ
	क्लमितास्मि	क्लमितास्व:	क्लमितास्म:
भ०	क्लमिष्यति	क्लमिष्यत:	क्लमिष्यन्ति
	क्लमिष्यसि	क्लमिष्यथ:	क्लमिष्यथ
	क्लमिष्यामि	क्लमिष्याव:	क्लमिष्याम:
क्रि०	अक्लमिष्यत्	अक्लमिष्यताम्	अक्लमिष्यन्
	अक्लमिष्य:	अक्लमिष्यतम्	अक्लमिष्यत
	अक्लमिष्यम्	अक्लमिष्याव	अक्लमिष्याम

अथ प्रकृतवर्णक्रमेण हान्तश्चत्वार:।

१२३८. मुहौच् (मुह) वैचित्ये। वैचित्त्यमविवेक:

व०	मुह्यति	मुह्यत:	मुह्यन्ति
	मुह्यसि	मुह्यथ:	मुह्यथ
	मुह्याम	मुह्याव:	मुह्याम:
स०	मुह्येत्	मुह्येताम्	मुह्येयु:
	मुह्ये:	मुह्येतम्	मुह्येत
	मुह्येयम्	मुह्येव	मुह्येम
प०	मुह्यतु/मुह्यतात्	मुह्यताम्	मुह्यन्तु
	मुह्य:/मुह्यतात्	मुह्यतम्	मुह्यत
	मुह्यानि	मुह्याव	मुह्याम
ह्य०	अमुह्यत्	अमुह्यताम्	अमुह्यन्
	अमुह्य:	अमुह्यतम्	अमुह्यत
	अमुह्यम्	अमुह्याव	अमुह्याम
अ०	अमुहत्	अमुहताम्	अमुहन्
	अमुह:	अमुहतम्	अमुहत
	अमुहम्	अमुहाव	अमुहाम
प०	मुमोह	मुमुहतु:	मुमुहु:
	मुमोहिथ	मुमुहथु:	मुमुह
	मुमोह	मुमुहिव	मुमुहिम
आ०	मुह्यात्	मुह्यास्ताम्	मुह्यासु:
	मुह्या:	मुह्यास्तम्	मुह्यास्त
	मुह्यासम्	मुह्यास्व	मुह्यास्म

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	मोग्धा	मोग्धारौ	मोग्धार:
	मोग्धासि	मोग्धास्थ:	मोग्धास्थ
	मोग्धास्मि	मोग्धास्व:	मोग्धास्म:
		तथा	
	मोढा	मोढारौ	मोढार:
	मोढासि	मोढास्थ:	मोढास्थ
	मोढास्मि	मोढास्व:	मोढास्म:
		तथा	
	मोहिता	मोहितारौ	मोहितार:
	मोहितासि	मोहितास्थ:	मोहितास्थ
	मोहितास्मि	मोहितास्व:	मोहितास्म:
भ०	मोहिष्यति	मोहिष्यत:	मोहिष्यन्ति
	मोहिष्यसि	मोहिष्यथ:	मोहिष्यथ
	मोहिष्याम	मोहिष्याव:	मोहिष्याम:
		तथा	
	मोक्ष्यति	मोक्ष्यत:	मोक्ष्यन्ति
	मोक्ष्यसि	मोक्ष्यथ:	मोक्ष्यथ
	मोक्ष्याम	मोक्ष्याव:	मोक्ष्याम:
क्रि०	अमोहिष्यत्	अमोहिष्यताम्	अमोहिष्यन्
	अमोहिष्य:	अमोहिष्यतम्	अमोहिष्यत
	अमोहिष्यम्	अमोहिष्याव	अमोहिष्याम
		तथा	
	अमोक्ष्यत्	अमोक्ष्यताम्	अमोक्ष्यन्
	अमोक्ष्य:	अमोक्ष्यतम्	अमोक्ष्यत
	अमोक्ष्यम्	अमोक्ष्याव	अमोक्ष्याम

१२३९. दुहौच् (दुह्) जिघांसायाम्।

व०	दुह्यति	दुह्यत:	दुह्यन्ति
स०	दुह्येत्	दुह्येताम्	दुह्येयु:
प०	दुह्यतु/दुह्यतात्	दुह्यताम्	दुह्यन्तु
ह्य०	अदुह्यत्	अदुह्यताम्	अदुह्यन्
अ०	अदुहत्	अदुहताम्	अदुहन्
प०	दुद्रोह	दुदुहतु:	दुदुहु:
आ०	दुह्यात्	दुह्यास्ताम्	दुह्यासु:
श्व०	द्रोग्धा	द्रोग्धारौ	द्रोग्धार:
	द्रोढा	द्रोढारौ	द्रोढार:
	द्रोहिता	द्रोहितारौ	द्रोहितार:
भ०	द्रोहिष्यति	द्रोहिष्यत:	द्रोहिष्यन्ति
	ध्रोक्ष्यति	ध्रोक्ष्यत:	ध्रोक्ष्यन्ति
क्रि०	अद्रोहिष्यत्	अद्रोहिष्यताम्	अद्रोहिष्यन्
	अध्रोक्ष्यत्	अध्रोक्ष्यताम्	अध्रोक्ष्यन्

१२४०. ष्णुहौच् (स्नुह्) उद्गिरणे।

व०	स्नुह्यति	स्नुह्यत:	स्नुह्यन्ति
स०	स्नुह्येत्	स्नुह्येताम्	स्नुह्येयु:
प०	स्नुह्यतु/स्नुह्यतात्	स्नुह्यताम्	स्नुह्यन्तु
ह्य०	अस्नुह्यत्	अस्नुह्यताम्	अस्नुह्यन्
अ०	अस्नुहत्	अस्नुहताम्	अस्नुहन्
प०	सुष्णोह	सुष्णुहतु:	सुष्णुहु:
आ०	स्नुह्यात्	स्नुह्यास्ताम्	स्नुह्यासु:
श्व०	स्नोग्धा	स्नोग्धारौ	स्नोग्धार:
		तथा	
	स्नोढा	स्नोढारौ	स्नोढार:
	स्नोहिता	स्नोहितारौ	स्नोहितार:
भ०	स्नोहिष्यति	स्नोहिष्यत:	स्नोहिष्यन्ति
	स्नोक्ष्यति	स्नोक्ष्यत:	स्नोक्ष्यन्ति
क्रि०	अस्नोहिष्यत्	अस्नोहिष्यताम्	अस्नोहिष्यन्
	अस्नोक्ष्यत्	अस्नोक्ष्यताम्	अस्नोक्ष्यन्

१२४१. ष्णिहौच् (स्निह्) प्रीतौ।

व०	स्निह्यति	स्निह्यत:	स्निह्यन्ति
स०	स्निह्येत्	स्निह्येताम्	स्निह्येयु:
प०	स्निह्यतु/स्निह्यतात्	स्निह्यताम्	स्निह्यन्तु
ह्य०	अस्निह्यत्	अस्निह्यताम्	अस्निह्यन्
अ०	अस्निहत्	अस्निहताम्	अस्निहन्
प०	सुष्णेह	सुष्णिहतु:	सुष्णिहु:
आ०	स्निह्यात्	स्निह्यास्ताम्	स्निह्यासु:
श्व०	स्नोग्धा	स्नोग्धारौ	स्नोग्धार:
	स्नोढा	स्नोढारौ	स्नोढार:
	स्नोहिता	स्नोहितारौ	स्नोहितार:
भ०	स्नोहिष्यति	स्नोहिष्यत:	स्नोहिष्यन्ति
	स्नेक्ष्यति	स्नेक्ष्यत:	स्नेक्ष्यन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रि० अस्नोहिष्यत्	अस्नोहिष्यताम्	अस्नोहिष्यन्
अस्नेक्ष्यत्	अस्नेक्ष्यताम्	अस्नेक्ष्यन्

केचित्तु शमू-दमू-तमू श्रमू-भ्रमू-क्षमौ-मदै-असू-यसू-जसू-दसू-वसू-प्युष-प्युस-पुस-प्लुषू-विस-कुस-कुश-बुस-मुस-मसै-लुट-उच-भृशू-भ्रशू-वृश-कृश-ञितृष-हृष-रुष-डिप-ष्टूप-कुप-गुप-युप-रुप-लुप-लुभ-णभ-तुभ-क्लिदौ-ञिमिदा-ञिक्ष्विदा-ऋधू-गृधूनां-पुष्यादित्वं नेच्छन्ति। तन्मते पुषाद्यङभावे सिचि-

अ० अशमीत्	अशमिष्टाम्	अशमिषुः
अशमीः	अशमिष्टम्	अशमिष्ट
अशमिषम्	अशमिष्व	अशमिष्म
अदमीत्	अदमिष्टाम्	अदमिषुः
अदमीः	अदमिष्टम्	अदमिष्ट
अदमिषम्	अदमिष्व	अदमिष्म
अतमीत्	अतमिष्टाम्	अतमिषुः
अतमीः	अतमिष्टम्	अतमिष्ट
अतमिषम्	अतमिष्व	अतमिष्म
अश्रमीत्	अश्रमिष्टाम्	अश्रमिषुः
अश्रमीः	अश्रमिष्टम्	अश्रमिष्ट
अश्रमिषम्	अश्रमिष्व	अश्रमिष्म
अभ्रमीत्	अभ्रमिष्टाम्	अभ्रमिषुः
अभ्रमीः	अभ्रमिष्टम्	अभ्रमिष्ट
अभ्रमिषम्	अभ्रमिष्व	अभ्रमिष्म
अक्षमीत्	अक्षमिष्टाम्	अक्षमिषुः
अक्षमीः	अक्षमिष्टम्	अक्षमिष्ट
अक्षमिषम्	अक्षमिष्व	अक्षमिष्म
अक्षांसीत्	अक्षांस्ताम्	अक्षांसुः
अक्षांसीः	अक्षांस्तम्	अक्षांस्त
अक्षांसम्	अक्षांस्व	अक्षांस्म
अमादीत्	अमादिष्टाम्	अमादिषुः
अमादीः	अमादिष्टम्	अमादिष्ट
अमादिषम्	अमादिष्व	अमादिष्म
अमदीत्	अमदिष्टाम्	अमदिषुः
अमदीः	अमदिष्टम्	अमदिष्ट
अमदिषम्	अमदिष्व	अमदिष्म
आसीत्	आसिष्टाम्	आसिषुः
आसीः	आसिष्टम्	आसिष्ट
आसिषम्	आसिष्व	आसिष्म
अयासीत्	अयासिष्टाम्	अयासिषुः
अयासीः	अयासिष्टम्	अयासिष्ट
अयासिषम्	अयासिष्व	अयासिष्म
अयसीत्	अयसिष्टाम्	अयसिषुः
अयसीः	अयसिष्टम्	अयसिष्ट
अयसिषम्	अयसिष्व	अयसिष्म
अजासीत्	अजासिष्टाम्	अजासिषुः
अजासीः	अजासिष्टम्	अजासिष्ट
अजासिषम्	अजासिष्व	अजासिष्म
अजसीत्	अजसिष्टाम्	अजसिषुः
अजसीः	अजसिष्टम्	अजसिष्ट
अजसिषम्	अजसिष्व	अजसिष्म
अदासीत्	अदासिष्टाम्	अदासिषुः
अदासीः	अदासिष्टम्	अदासिष्ट
अदासिषम्	अदासिष्व	अदासिष्म
अदसीत्	अदसिष्टाम्	अदसिषुः
अदसीः	अदसिष्टम्	अदसिष्ट
अदसिषम्	अदसिष्व	अदसिष्म
अवासीत्	अवासिष्टाम्	अवासिषुः
अवासीः	अवासिष्टम्	अवासिष्ट
अवासिषम्	अवासिष्व	अवासिष्म
अवसीत्	अवसिष्टाम्	अवसिषुः
अवसीः	अवसिष्टम्	अवसिष्ट
अवसिषम्	अवसिष्व	अवसिष्म
अप्योषीत्	अप्योषिष्टाम्	अप्योषिषुः
अप्योषीः	अप्योषिष्टम्	अप्योषिष्ट
अप्योषिषम्	अप्योषिष्व	अप्योषिष्म
अप्योसीत्	अप्योसिष्टाम्	अप्योसिषुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अप्योसीः	अप्योसिष्टम्	अप्योसिष्ट
	अप्योसिषम्	अप्योसिष्व	अप्योसिष्म
	अपोसीत्	अपोसिष्टाम्	अपोसिषुः
	अपोसीः	अपोसिष्टम्	अपोसिष्ट
	अपोसिषम्	अपोसिष्व	अपोसिष्म
	अप्लोसीत्	अप्लोसिष्टाम्	अप्लोसिषुः
	अप्लोसीः	अप्लोसिष्टम्	अप्लोसिष्ट
	अप्लोसिषम्	अप्लोसिष्व	अप्लोसिष्म
	अवेसीत्	अवेसिष्टाम्	अवेसिषुः
	अवेसीः	अवेसिष्टम्	अवेसिष्ट
	अवेसिषम्	अवेसिष्व	अवेसिष्म
	अकोसीत्	अकोसिष्टाम्	अकोसिषुः
	अकोसीः	अकोसिष्टम्	अकोसिष्ट
	अकोसिषम्	अकोसिष्व	अकोसिष्म
	अकोशीत्	अकोशिष्टाम्	अकोशिषुः
	अकोशीः	अकोशिष्टम्	अकोशिष्ट
	अकोशिषम्	अकोशिष्व	अकोशिष्म
अ०	अवोसीत्	अवोसिष्टाम्	अवोसिषुः
	अवोसीः	अवोसिष्टम्	अवोसिष्ट
	अवोसिषम्	अवोसिष्व	अवोसिष्म
	अमोसीत्	अमोसिष्टाम्	अमोसिषुः
	अमोसीः	अमोसिष्टम्	अमोसिष्ट
	अमोसिषम्	अमोसिष्व	अमोसिष्म
	अमासीत्	अमासिष्टाम्	अमासिषुः
	अमासीः	अमासिष्टम्	अमासिष्ट
	अमासिषम्	अमासिष्व	अमासिष्म
	अमसीत्	अमसिष्टाम्	अमसिषुः
	अमसीः	अमसिष्टम्	अमसिष्ट
	अमसिषम्	अमसिष्व	अमसिष्म
	अलोटीत्	अलोटिष्टाम्	अलोटिषुः
	अलोटीः	अलोटिष्टम्	अलोटिष्ट
	अलोटिषम्	अलोटिष्व	अलोटिष्म

औचीत्	औचिष्टाम्	औचिषुः
औचीः	औचिष्टम्	औचिष्ट
औचिषम	औचिष्व	औचिष्म
अभर्शीत्	अभर्शिष्टाम्	अभर्शिषुः
अभर्शीः	अभर्शिष्टम्	अभर्शिष्ट
अभर्शिषम्	अभर्शिष्व	अभर्शिष्म
अभ्रंशीत्	अभ्रंशिष्टाम्	अभ्रंशिषुः
अभ्रंशीः	अभ्रंशिष्टम्	अभ्रंशिष्ट
अभ्रंशिषम्	अभ्रंशिष्व	अभ्रंशिष्म
अवर्शीत्	अवर्शिष्टाम्	अवर्शिषुः
अवर्शीः	अवर्शिष्टम्	अवर्शिष्ट
अवर्शिषम्	अवर्शिष्व	अवर्शिष्म
अकर्शीत्	अकर्शिष्टाम्	अकर्शिषुः
अकर्शीः	अकर्शिष्टम्	अकर्शिष्ट
अकर्शिषम्	अकर्शिष्व	अकर्शिष्म
अतर्षीत्	अतर्षिष्टाम्	अतर्षिषुः
अतर्षीः	अतर्विष्टिम्	अतर्षिष्ट
अतर्षिषम्	अतर्षिष्व	अतर्षिष्म
अहर्षीत्	अहर्षिष्टाम्	अहर्षिषुः
अतीर्ष	अतर्षिष्टम्	अहर्षिष्ट
अतर्षिषम्	अतर्षिष्व	अतर्षिष्म
अहर्षीत्	अहर्षिष्टाम्	अहर्षिषुः
अहर्षीः	अहर्षिष्टम्	अहर्षिष्ट
अहर्षिषम्	अहर्षिष्व	अहर्षिष्म
अहषीत्	अरोषिष्टाम्	अरोषिषुः
अरोषीः	अरोषिष्टम्	अरोषिष्ट
अरोषिषम्	अरोषिष्व	अरोषिष्म
अडेषीत्	अडेषिष्टाम्	अडेषिषुः
अडेषीः	अडेषिष्टम्	अडेषिष्ट
अडेषिषम्	अडेषिष्व	अडेषिष्म
अस्तूपीत्	अस्तूपिष्टाम्	अस्तूपिषुः
अस्तूपीः	अस्तूपिष्टम्	अस्तूपिष्ट

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अस्तूपिषम्	अस्तूपिष्व	अस्तूपिष्म
अकोपीत्	अकोपिष्टाम्	अकोपिषुः
अकोपीः	अकोपिष्टम्	अकोपिष्ट
अकोपिषम्	अकोपिष्व	अकोपिष्म
अगोपीत्	अगोपिष्टाम्	अगोपिषुः
अगोपीः	अगोपिष्टम्	अगोपिष्ट
अगोपिषम्	अगोपिष्व	अगोपिष्म
अयोपीत्	अयोपिष्टाम्	अयोपिषुः
अयोपीः	अयोपिष्टम्	अयोपिष्ट
अयोपिषम्	अयोपिष्व	अयोपिष्म
अरोपीत्	अरोपिष्टाम्	अरोपिषुः
अरोपीः	अरोपिष्टम्	अरोपिष्ट
अरोपिषम्	अरोपिष्व	अरोपिष्म
अलोपीत्	अलोपिष्टाम्	अलोपिषुः
अलोपीः	अलोपिष्टम्	अलोपिष्ट
अलोपिषम्	अलोपिष्व	अलोपिष्म
अलोभीत्	अलोभिष्टाम्	अलोभिषुः
अलोभीः	अलोभिष्टम्	अलोभिष्ट
अलोभिषम्	अलोभिष्व	अलोभिष्म
अनाभीत्	अनाभिष्टाम्	अनाभिषुः
अनाभीः	अनाभिष्टम्	अनाभिष्ट
अनाभिषम्	अनाभिष्व	अनाभिष्म
अनभीत्	अनभिष्टाम्	अनभिषुः
अनभीः	अनभिष्टम्	अनभिष्ट
अनभिषम्	अनभिष्व	अनभिष्म
अतोभीत्	अतोभिष्टाम्	अतोभिषुः
अतोभीः	अतोभिष्टम्	अतोभिष्ट
अतोभिषम्	अतोभिष्व	अतोभिष्म
अक्लेदीत्	अक्लेदिष्टाम्	अक्लेदिषुः
अक्लेदीः	अक्लेदिष्टम्	अक्लेदिष्ट
अक्लेदिषम्	अक्लेदिष्व	अक्लेदिष्म
अक्लैत्सीत्	अक्लैत्ताम्	अक्लैत्सुः
अक्लैत्सीः	अक्लैत्तम्	अक्लैत्त
अक्लैत्सम्	अक्लैत्स्व	अक्लैत्स्म
अमेदीत्	अमेदिष्टाम्	अमेदिषुः
अमेदीः	अमेदिष्टम्	अमेदिष्ट
अमेदिषम्	अमेदिष्व	अमेदिष्म
अक्ष्वेदीत्	अक्ष्वेदिष्टाम्	अक्ष्वेदिषुः
अक्ष्वेदीः	अक्ष्वेदिष्टम्	अक्ष्वेदिष्ट
अक्ष्वेदिषम्	अक्ष्वेदिष्व	अक्ष्वेदिष्म
आर्धीत्	आर्धिष्टाम्	आर्धिषुः
आर्धीः	आर्धिष्टम्	आर्धिष्ट
आर्धिषम्	आर्धिष्व	आर्धिष्म
अगर्धीत्	अगर्धिष्टाम्	अगर्धिषुः
अगर्धीः	अगर्धिष्टम्	अगर्धिष्ट
अगर्धिषम्	अगर्धिष्व	अगर्धिष्म

वृत पुषादिः। पुषादिर्दिवाद्यन्तर्गणो वर्तितः सम्पूर्णः इत्यर्थः।

अथात्मनेपदिषु सूयत्यादिर्नवकः क्तयोस्तस्य नत्वार्थं प्रदर्श्यते।

तत्र लाघवार्थमादावूदन्तौ सेटौ च।

१२४१. षूङ्‌ौच् (सू) प्राणिप्रसवे।

व०	सूयते	सूयेते	सूयन्ते
	सूयसे	सूयेथे	सूयध्वे
	सूये	सूयावहे	सूयामहे
स०	सूयेत	सूयेयाताम्	सूयेरन्
	सूयेथाः	सूयेयाथाम्	सूयेध्वम्
	सूयेय	सूयेवहि	सूयेमहि
प०	सूयताम्	सूयेताम्	सूयन्ताम्
	सूयस्व	सूयेथाम्	सूयध्वम्
	सूयै	सूयावहै	सूयामहै
ह्य०	असूयत	असूयेताम्	असूयन्त
	असूयथाः	असूयेथाम्	असूयध्वम्
	असूये	असूयावहि	असूयामहि
अ०	असविष्ट	असविषाताम्	असविषत
	असविष्ठाः	असविषाथाम्	असविड्ढ्वम्/ध्वम्
	असविषि	असविष्वहि	असविष्महि

तथा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	असोष्ट	असोषाताम्	असोषत
	असोष्ठाः	असोषाथाम्	असोढ्वम्/ड्ढ्वम्/ध्वम्
	असोषि	असोष्वहि	असोष्महि
प०	सुषुवे	सुषुवाते	सुषुविरे
	सुषुविषे	सुषुवाथे	सुषुविढ्वे/विध्वे
	सुषुवे	सुषुविवहे	सुषुविमहे
आ०	सविषीष्ट	सविषीयास्ताम्	सविषीरन्
	सविषीष्ठाः	सविषीयास्थाम्	सविषीध्वम्
	सविषीय	सविषीवहि	सविषीमहि
		तथा	
	सोषिष्ट	सोषीयास्ताम्	सोषीरन्
	सोषीष्ठाः	सोषीयास्थाम्	सोषीढ्वम्
	सोषीय	सोषीवहि	सोषीमहि
श्व०	सविता	सवितारौ	सवितारः
	सवितासे	सवितासाथे	सविताध्वे
	सविताहे	सवितास्वहे	सवितास्मिहे
		तथा	
	सोता	सोतारौ	सोतारः
	सोतासे	सोतासाथे	सोताध्वे
	सोताहे	सोतास्वहे	सोतास्मिहे
भ०	सविष्यते	सविष्येते	सविष्यन्ते
	सविष्यसे	सविष्येथे	सविष्यध्वे
	सविष्ये	सविष्यावहे	सविष्यामहे
		तथा	
	सोष्यते	सोष्येते	सोष्यन्ते
	सोष्यसे	सोष्येथे	सोष्यध्वे
	सोष्ये	सोष्यावहे	सोष्यामहे
क्रि०	असविष्यत	असविष्येताम्	असविष्यन्त
	असविष्यथाः	असविष्येथाम्	असविष्यध्वम्
	असविष्ये	असविष्यावहि	असविष्यामहि
		तथा	
	असोष्यत	असोष्येताम्	असोष्यन्त
	असोष्यथाः	असोष्येथाम्	असोष्यध्वम्
	असोष्ये	असोष्यावहि	असोष्यामहि

१२४३. दूङ्च् (दू) परितापे। खेदे इत्यर्थः।

व०	दूयते	दूयेते	दूयन्ते
स०	दूयेत	दूयेयाताम्	दूयेरन्
प०	दूयताम्	दूयेताम्	दूयन्ताम्
ह्य०	अदूयत	अदूयेताम्	अदूयन्त
अ०	अदविष्ट	अदविषाताम्	अदविषत
प०	दुदुवे	दुदुवाते	दुदुविरे
आ०	दविषीष्ट	दविषीयास्ताम्	दविषीरन्
श्व०	दविता	दवितारौ	दवितारः
भ०	दविष्यते	दविष्येते	दविष्यन्ते
क्रि०	अदविष्यत	अदविष्येताम्	अदविष्यन्त

अथेदन्ताः सप्त डीङोऽन्येऽनिटश्च।

१२४४. दींङ्च् (दी) क्षये।

व०	दीयते	दीयेते	दीयन्ते
	दीयसे	दीयेथे	दीयध्वे
	दीये	दीयावहे	दीयामहे
स०	दीयेत	दीयेयाताम्	दीयेरन्
	दीयेथाः	दीयेयाथाम्	दीयेध्वम्
	दीयेय	दीयेवहि	दीयेमहि
प०	दीयताम्	दीयेताम्	दीयन्ताम्
	दीयस्व	दीयेथाम्	दीयध्वम्
	दीयै	दीयावहै	दीयामहै
ह्य०	अदीयत	अदीयेताम्	अदीयन्त
	अदीयथाः	अदीयेथाम	अदीयध्वम्
	अदीये	अदीयावहि	अदीयामहि
अ०	अदास्त	अदासाताम्	अदासत
	अदास्थाः	अदासाथाम्	अदाध्वम्/द्ध्वम्
	अदासि	अदास्वहि	अदास्महि
प०	दिदीये	दिदीयाते	दिदीयिरे
	दिदीयिषे	दिदीयाथे	दिदीयिध्वे/यिढ्वे
	दिदीये	दिदीयिवहे	दिदीयिमहे
आ०	दासीष्ट	दासीयास्ताम्	दासीरन्
	दासीष्ठाः	दासीयास्थाम्	दासीध्वम्
	दासीय	दासीवहि	दासीमहि
श्व०	दाता	दातारौ	दातारः
	दातासे	दातासाथे	दाताध्वे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	दाताहे	दातास्वहे	दातास्मिहे
भ०	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे
क्रि०	अदास्यत	अदास्येताम्	अदास्यन्त
	अदास्यथाः	अदास्येथाम्	अदास्यध्वम्
	अदास्ये	अदास्यावहि	अदास्यामहि

१२४५. धीङ्च् (धी) अनादरे।

व०	धीयते	धीयेते	धीयन्ते
स०	धीयेत	धीयेयाताम्	धीयेरन्
प०	धीयताम्	धीयेताम्	धीयन्ताम्
ह्य०	अधीयत	अधीयेताम्	अधीयन्त
अ०	अधेष्ट	अधेषाताम्	अधेषत
प०	दिध्ये	दिध्याते	दिध्यिरे
आ०	धेषीष्ट	धेषीयास्ताम्	धेषीरन्
श्व०	धेता	धेतारौ	धेतारः
भ०	धेष्यते	धेष्येते	धेष्यन्ते
क्रि०	अधेष्यत	अधेष्येताम्	अधेष्यन्त

१२४६. मीङ्च् (मी) हिंसायाम्।

व०	मीयते	मीयेते	मीयन्ते
स०	मीयेत	मीयेयाताम्	मीयेरन्
प०	मीयताम्	मीयेताम्	मीयन्ताम्
ह्य०	अमीयत	अमीयेताम्	अमीयन्त
अ०	अमेष्ट	अमेषाताम्	अमेषत
प०	मिम्ये	मिम्याते	मिम्यिरे
आ०	मेषीष्ट	मेषीयास्ताम्	मेषीरन्
श्व०	मेता	मेतारौ	मेतारः
भ०	मेष्यते	मेष्येते	मेष्यन्ते
क्रि०	अमेष्यत	अमेष्येताम्	अमेष्यन्त

१२४७. रीङ्च् (री) स्रवणे।

व०	रीयते	रीयेते	रीयन्ते
स०	रीयेत	रीयेयाताम्	रीयेरन्
प०	रीयताम्	रीयेताम्	रीयन्ताम
ह्य०	अरीयत	अरीयेताम्	अरीयन्त
अ०	अरेष्ट	अरेषाताम्	अरेषत
प०	रिर्ये	रिर्याते	रिर्यिरे
आ०	रेषीष्ट	रेषीयास्ताम्	रेषीरन्
श्व०	रेता	रेतारौ	रेतारः
भ०	रेष्यते	रेष्येते	रेष्यन्ते
क्रि०	अरेष्यत	अरेष्येताम्	अरेष्यन्त

१२४८. लीङ्च् (ली) श्लवणे।

व०	लीयते	लीयेते	लीयन्ते
स०	लीयेत	लीयेयाताम्	लीयेरन्
प०	लीयताम्	लीयेताम्	लीयन्ताम्
ह्य०	अलीयत	अलीयेताम्	अलीयन्त
अ०	अलास्त	अलासाताम्	अलासत
प०	अलेष्ट	अलेषाताम्	अलेषत
आ०	लिल्ये	लिल्याते	लिल्यिरे
श्व०	लेषीष्ट	लेषीयास्ताम्	लेषीरन्
	लासीष्टाः	लासीयास्ताम्	लाषीरन्
भ०	लेष्यते	लेष्येते	लेष्यन्ते
	लास्यते	लास्येते	लास्यन्ते
क्रि०	अलेष्यत	अलेष्येताम्	अलेष्यन्त
	अलास्यत	अलास्येताम्	अलास्यन्त

१२४९. डीङ्च् (डी) गतौ। विहायसा गतावित्यन्ये।

व०	डीयते	डीयेते	डीयन्ते
स०	डीयेत	डीयेयाताम्	डीयेरन्
प०	डीयताम्	डीयेताम्	डीयन्ताम्
ह्य०	अडीयत	अडीयेताम्	अडीयन्त
अ०	अडयिष्ट	अडयिषाताम्	अडयिषत
प०	डिड्ये	डिड्याते	डिड्यिरे
आ०	डयिष्ट	डयिषीयास्ताम्	डयिषीरन्
श्व०	डयिता	डयितारौ	डयितारः
भ०	डयिष्यते	डयिष्येते	डयिष्यन्ते
क्रि०	अडयिष्यत	अडयिष्येताम्	अडयिष्यन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२५०. व्रीङ्च् (व्री) वरणे।

व०	व्रीयते	व्रीयेते	व्रीयन्ते
स०	व्रीयेत	व्रीयेयाताम्	व्रीयेरन्
प०	व्रीयताम्	व्रीयेताम्	व्रीयन्ताम्
ह्य०	अव्रीयत	अव्रीयेताम्	अव्रीयन्त
अ०	अव्रेष्ट	अव्रेषाताम्	अव्रेषत
प०	विव्रिये	विव्रियाते	विव्रियिरे
आ०	व्रेषीष्ट	व्रेषीयास्ताम्	व्रेषीरन्
श्व०	व्रेता	व्रेतारौ	व्रेतारः
भ०	व्रेष्यते	व्रेष्येते	व्रेष्यन्ते
क्रि०	अव्रेष्यत	अव्रेष्येताम्	अव्रेष्यन्त

वृत् स्वादिः। सूयत्यादिर्दिवाद्यन्तर्गणो नवको वर्तितः सम्पूर्ण इत्यर्थः।

अथेदन्तास्त्रयोऽनिटश्च।

१२५१. पीङ्च् (पी) पाने।

व०	पीयते	पीयेते	पीयन्ते
	पीयसे	पीयेथे	पीयध्वे
	पीये	पीयावहे	पीयामहे
स०	पीयेत	पीयेयाताम्	पीयेरन्
	पीयेथाः	पीयेयाथाम्	पीयेध्वम्
	पीयेय	पीयेवहि	पीयेमहि
प०	पीयताम्	पीयेताम्	पीयन्ताम्
	पीयस्व	पीयेथाम्	पीयध्वम्
	पीयै	पीयावहै	पीयामहै
ह्य०	अपीयत	अपीयेताम्	अपीयन्त
	अपीयथाः	अपीयेथाम्	अपीयध्वम्
	अपीये	अपीयावहि	अपीयामहि
अ०	अपेष्ट	अपेषाताम्	अपेषत
	अपेष्ठाः	अपेषाथाम्	अपेड्ढ्वम्, ध्वम्
	अपेषि	अपेष्वहि	अपेष्महि
प०	पिप्ये	पिप्याते	पिप्यिरे
	पिप्यिषे	पिप्याथे	पिप्यिड्ढ्वे/ध्वे
	पिप्ये	पिप्यिवहे	पिप्यिमहे
आ०	पेषीष्ट	पेषीयास्ताम्	पेषीरन्
	पेषीष्ठाः	पेषीयास्थाम्	पेषीध्वम्
	पेषीय	पेषीवहि	पेषीमहि
श्व०	पेता	पेतारौ	पेतारः
	पेतासे	पेतासाथे	पेताध्वे
	पेताहे	पेतास्वहे	पेतास्महे
भ०	पेष्यते	पेष्येते	पेष्यन्ते
	पेष्यसे	पेष्येथे	पेष्यध्वे
	पेष्ये	पेष्यावहे	पेष्यामहे
क्रि०	अपेष्यत	अपेष्येताम्	अपेष्यन्त
	अपेष्यथाः	अपेष्येथाम्	अपेष्यध्वम्
	अपेष्ये	अपेष्यावहि	अपेष्यामहि

१२५२. ईङ्च् (ई) गतौ।

व०	ईयते	ईयेते	ईयन्ते
	ईयसे	ईयेथे	ईयध्वे
	ईये	ईयावहे	ईयामहे
स०	ईयेत	ईयेयाताम्	ईयेरन्
	ईयेथाः	ईयेयाथाम्	ईयेध्वम्
	ईयेय	ईयेवहि	ईयेमहि
प०	ईयताम्	ईयेताम्	ईयन्ताम्
	ईयस्व	ईयेथाम्	ईयध्वम्
	ईयै	ईयावहै	ईयामहै
ह्य०	ऐयत	ऐयेताम्	ऐयन्त
	ऐयथाः	ऐयेथाम्	ऐयध्वम्
	ऐये	ऐयावहि	ऐयामहि
अ०	ऐष्ट	ऐषाताम्	ऐषत
	ऐष्ठाः	ऐषाथाम्	ऐड्ढ्वम्/ध्वम्
	ऐषि	ऐष्वहि	ऐष्महि
प०	अयाञ्चक्रे	अयाञ्चक्राते	अयाञ्चक्रिरे
	अयाञ्चकृषे	अयाञ्चक्राथे	अयाञ्चकृध्वे
	अयाञ्चक्रे	अयाञ्चकृवहे	अयाञ्चकृमहे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अयाम्बभूव/अयामास, इत्यादि

आ०	एषीष्ट	एषीयास्ताम्	एषीरन्
	एषीष्ठा:	एषीयास्थाम्	एषीध्वम्
	एषीय	एषीवहि	एषीमहि
श्व०	एता	एतारौ	एतार:
	एतासे	एतासाथे	एताध्वे
	एताहे	एतास्वहे	एतास्महे
भ०	एष्यते	एष्येते	एष्यन्ते
	एष्यसे	एष्येथे	एष्यध्वे
	एष्ये	एष्यावहे	एष्यामहे
क्रि०	ऐष्यत	ऐष्येताम्	ऐष्यन्त
	ऐष्यथा:	ऐष्येथाम्	ऐष्यध्वम्
	ऐष्ये	ऐष्यावहि	ऐष्यामहि
	अपेष्ये	अपेष्यावहि	अपेष्यामहि

१२५३. प्रींङ्च् (प्री) प्रीतौ।

व०	प्रीयते	प्रीयेते	प्रीयन्ते
स०	प्रीयेत	प्रीयेयाताम्	प्रीयेरन्
प०	प्रीयताम्	प्रीयेताम्	प्रीयन्ताम्
ह्य०	अप्रीयत	अप्रीयेताम्	अप्रीयन्त
अ०	अप्रेष्ट	अप्रेषाताम्	अप्रेषत
प०	पिप्रिये	पिप्रियाते	पिप्रियिरे
आ०	प्रेषीष्ट	प्रेषीयास्ताम्	प्रेषीरन्
श्व०	प्रेता	प्रेतारौ	प्रेतार:
भ०	प्रेष्यते	प्रेष्येते	प्रेष्यन्ते
क्रि०	अप्रेष्यत	अप्रेष्येताम्	अप्रेष्यन्त

अथ जान्तावनिटौ च।

१२५४. युजिंच् (युज्) समाधौ।[1]

व०	युज्यते	युज्येते	युज्यन्ते
	युज्यसे	युज्येथे	युज्यध्वे
	युज्ये	युज्यावहे	युज्यामहे
स०	युज्येत	युज्येयाताम्	युज्येरन्
	युज्येथा:	युज्येयाथाम्	युज्येध्वम्
	युज्येय	युज्येवहि	युज्येमहि
प०	युज्यताम्	युज्येताम्	युज्यन्ताम्
	युज्यस्व	युज्येथाम्	युज्यध्वम्
	युज्यै	युज्यावहै	युज्यामहै
ह्य०	अयुज्यत	अयुज्येताम्	अयुज्यन्त
	अयुज्यथा:	अयुज्येथाम्	अयुज्यध्वम्
	अयुज्ये	अयुज्यावहि	अयुज्यामहि
अ०	अयुक्त	अयुक्षाताम्	अयुक्षत
	अयुक्था:	अयुक्षाथाम्	अयुग्ध्वम्/अयुग्ड्ढ्वम्
	अयुक्षि	अयुक्ष्वहि	अयुक्ष्महि
प०	युयुजे	युयुजाते	युयुजिरे
	युयुजिषे	युयुजाथे	युयुजिध्वे
	युयुजे	युयुजिवहे	युयुजिमहे
आ०	युक्षीष्ट	युक्षीयास्ताम्	युक्षीरन्
	युक्षीष्ठा:	युक्षीयास्थाम्	युक्षीध्वम्
	युक्षीय	युक्षीवहि	युक्षीमहि
श्व०	योक्ता	योक्तारौ	योक्तार:
	योक्तासे	योक्तासाथे	योक्ताध्वे
	योक्ताहे	योक्तास्वहे	योक्तास्महे
भ०	योक्ष्यते	योक्ष्येते	योक्ष्यन्ते
	योक्ष्यसे	योक्ष्येथे	योक्ष्यध्वे
	योक्ष्ये	योक्ष्यावहे	योक्ष्यामहे
क्रि०	अयोक्ष्यत	अयोक्ष्येताम्	अयोक्ष्यन्त
	अयोक्ष्यथा:	अयोक्ष्येथाम्	अयोक्ष्यध्वम्
	अयोक्ष्ये	अयोक्ष्यावहि	अयोक्ष्यामहि

१२५५. सृजिंच् (सृज्) विसर्गे।

व०	सृज्यते	सृज्येते	सृज्यन्ते
स०	सृज्येत	सृज्येयाताम्	सृज्येरन्
प०	सृज्यताम्	सृज्येताम्	सृज्यन्ताम्
ह्य०	असृज्यत	असृज्येताम्	असृज्यन्त
अ०	असृष्ट	असृक्षाताम्	असृक्षत

१. समाधिश्चित्तवृत्तिनिरोध:।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्र०	ससृजे	ससृजाते	ससृजिरे
आ०	सृक्षीष्ट	सृक्षीयास्ताम्	सृक्षीरन्
श्व०	स्रष्टा	स्रष्टारौ	स्रष्टारः
भ०	स्रक्ष्यते	स्रक्ष्येते	स्रक्ष्यन्ते
क्रि०	अस्रक्ष्यत	अस्रक्ष्येताम्	अस्रक्ष्यन्त

अथ तान्तः सेट् च।

१२५६. वृतूचि (वृत्) वरणे।

व०	वृत्यते	वृत्येते	वृत्यन्ते
स०	वृत्येत	वृत्येयाताम्	वृत्येरन्
प०	वृत्यताम्	वृत्येताम्	वृत्यन्ताम्
ह्य०	अवृत्यत	अवृत्येताम्	अवृत्यन्त
अ०	अवर्त्तिष्ट	अवर्त्तिषाताम्	अवर्त्तिषत
प०	ववृते	ववृताते	ववृतिरे
आ०	वर्त्तिषीष्ट	वर्त्तिषीयास्ताम्	वर्त्तिषीरन्
श्व०	वर्त्तिता	वर्त्तितारौ	वर्त्तितारः
भ०	वर्त्तिष्यते	वर्त्तिष्येते	वर्त्तिष्यन्ते
क्रि०	अवर्त्तिष्यत	अवर्त्तिष्येताम्	अवर्त्तिष्यन्त

वावृतू इति केचित्; तन्मते।

व०	वावृत्यते	वावृत्येते	वावृत्यन्ते
	वावृत्यसे	वावृत्येथे	वावृत्यध्वे
	वावृत्ये	वावृत्यावहे	वावृत्यामहे
स०	वावृत्येत	वावृत्येयाताम्	वावृत्येरन्
	वावृत्येथाः	वावृत्येयाथाम्	वावृत्येध्वम्
	वावृत्येय	वावृत्येवहि	वावृत्येमहि
प०	वावृत्यताम्	वावृत्येताम्	वावृत्यन्ताम्
	वावृत्यस्व	वावृत्येथाम्	वावृत्यध्वम्
	वावृत्यै	वावृत्यावहै	वावृत्यामहै
ह्य०	अवावृत्यत	अवावृत्येताम्	अवावृत्यन्त
	अवावृत्यथाः	अवावृत्येथाम्	अवावृत्यध्वम्
	अवावृत्ये	अवावृत्यावहि	अवावृत्यामहि
अ०	अवावर्त्तिष्ट	अवावर्त्तिषाताम्	अवावर्त्तिषत
	अवावर्त्तिष्ठाः	अवावर्त्तिषाथाम्	अवावर्त्तिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अवावर्त्तिषि	अवावर्त्तिष्वहि	अवावर्त्तिष्महि
प०	वावृताञ्चक्रे	वावृताञ्चक्राते	वावृताञ्चक्रिरे
	वावृताञ्चकृषे	वावृताञ्चक्राथे	वावृताञ्चकृढ्वे
	वावृताञ्चक्रे	वावृताञ्चकृवहे	वावृताञ्चकृमहे
	वावताम्बभूव	वावतामास, इत्यादि।	
आ०	वावर्त्तिषीष्ट	वावर्त्तिषीयास्ताम्	वावर्त्तिषीरन्
	वावर्त्तिषीष्ठाः	वावर्त्तिषीयास्थाम्	वावर्त्तिषीध्वम्
	वावर्त्तिषीय	वावर्त्तिषीवहि	वावर्त्तिषीमहि
श्व०	वावर्त्तिता	वावर्त्तितारौ	वावर्त्तितारः
	वावर्त्तितासे	वावर्त्तितासाथे	वावर्त्तिताध्वे
	वावर्त्तिताहे	वावर्त्तितास्वहे	वावर्त्तितास्मिहे
भ०	वावर्त्तिष्यते	वावर्त्तिष्येते	वावर्त्तिष्यन्ते
	वावर्त्तिष्यसे	वावर्त्तिष्येथे	वावर्त्तिष्यध्वे
	वावर्त्तिष्ये	वावर्त्तिष्यावहे	वावर्त्तिष्यामहे
क्रि०	अवावर्त्तिष्यत	अवावर्त्तिष्येताम्	अवावर्त्तिष्यन्त
	अवावर्त्तिष्यथाः	अवावर्त्तिष्येथाम्	अवावर्त्तिष्यध्वम्
	अवावर्त्तिष्ये	अवावर्त्तिष्यावहि	अवावर्त्तिष्यामहि

॥ अथ दान्तास्त्रयोऽनिटश्च॥

१२५७. पदिच् (पद्) गतौ।

गतिर्यानं ज्ञानञ्च।

व०	पद्यते	पद्येते	पद्यन्ते
	पद्यसे	पद्येथे	पद्यध्वे
	पद्ये	पद्यावहे	पद्यामहे
स०	पद्येत	पद्येयाताम्	पद्येरन्
	पद्येथाः	पद्येयाथाम्	पद्येध्वम्
	पद्येय	पद्येवहि	पद्येमहि
प०	पद्यताम्	पद्येताम्	पद्यन्ताम्
	पद्यस्व	पद्येथाम्	पद्यध्वम्
	पद्यै	पद्यावहै	पद्यामहै
ह्य०	अपद्यत	अपद्येताम्	अपद्यन्त
	अपद्यथाः	अपद्यथाम्	अपद्यध्वम्
	अपद्ये	अपद्यावहि	अपद्यामहि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	अपादि	अपत्साताम्	अपत्सत
	अपत्थाः	अपत्साथाम्	अपद्ध्वम्/ध्वम्
	अपत्सि	अपत्स्वहि	अपत्स्महि
प०	पेदे	पेदाते	पेदिरे
	पेदिषे	पेदाथे	पेदिध्वे
	पेदे	पेदिवहे	पेदिमहे
आ०	पत्सीष्ट	पत्सीयास्ताम्	पत्सीरन्
	पत्सीष्ठाः	पत्सीयास्थाम्	पत्सीध्वम्
	पत्सीय	पत्सीवहि	पत्सीमहि
श्व०	पत्ता	पत्तारौ	पत्तारः
	पत्तासे	पत्तासाथे	पत्ताध्वे
	पत्ताहे	पत्तास्वहे	पत्तास्महे
भ०	पत्स्यते	पत्स्येते	पत्स्यते
	पत्स्यसे	पत्स्येथे	पत्स्यध्वे
	पत्स्ये	पत्स्यावहे	पत्स्यामहे
क्रि०	अपत्स्यत	अपत्स्येताम्	अपत्स्यत
	अपत्स्यथाः	अपत्स्येथाम्	अपत्स्यध्वम्
	अपत्स्ये	अपत्स्यावहि	अपत्स्यामहि

१२५८. विदिंच् (विद्) सत्तायाम्।

सत्ता भावः।

व०	विद्यते	विद्येते	विद्यन्ते
स०	विद्येत	विद्येयाताम्	विद्येरन्
प०	विद्यताम्	विद्येताम्	विद्यन्ताम्
ह्य०	अविद्यत	अविद्येताम्	अविद्यन्त
अ०	अवित्त	अवित्साताम्	अवित्सत
प०	विविदे	विविदाते	विविदिरे
आ०	वित्सीष्ट	वित्सीयास्ताम्	वित्सीरन्
श्व०	वेत्ता	वेत्तारौ	वेत्तारः
भ०	वेत्स्यते	वेत्स्येते	वेत्स्यन्ते
क्रि०	अवेत्स्यत	अवेत्स्येताम्	अवेत्स्यन्ते

१२५९. खिदिंच् (खिद) दैन्ये।

व०	खिद्यते	खिद्यते	खिद्यन्ते
स०	खिद्येत	खिद्येयाताम्	खिद्येरन्
प०	खिद्यताम्	खिद्येताम्	खिद्यन्ताम्
ह्य०	अखिद्यत	अखिद्येताम्	अखिद्यन्त
अ०	अखित्त	अखित्साताम्	अखित्सत
प०	चिखिदे	चिखिदाते	चिखिदिरे
आ०	खित्सीष्ट	खित्सीयास्ताम्	खित्सीरन्
श्व०	खेत्ता	खेत्तारौ	खेत्तारः
भ०	खेत्स्यते	खेत्स्येते	खेत्स्यन्ते
क्रि०	अखेत्स्यत	अखेत्स्येताम्	अखेत्स्यन्ते

अथ धान्तास्त्रयोऽनिटश्च।

१२६०. युधिंच् (युध्) सम्प्रहारे

सम्प्रहारो हननम्।

व०	युध्यते	युध्येते	युध्यन्ते
	युध्यसे	युध्येथे	युध्यध्वे
	युध्ये	युध्यावहे	युध्यामहे
स०	युध्येत	युध्येयाताम्	युध्येरन्
	युध्येथाः	युध्येयाथाम्	युध्येध्वम्
	युध्येय	युध्येवहि	युध्येमहि
प०	युध्यताम्	युध्येताम्	युध्यन्ताम्
	युध्यस्व	युध्येथाम्	युध्यध्वम्
	युध्यै	युध्यावहै	युध्यामहै
ह्य०	अयुध्यत	अयुध्येताम्	अयुध्यन्त
	अयुध्यथाः	अयुध्येथाम्	अयुध्यध्वम्
	अयुध्ये	अयुध्यावहि	अयुध्यामहि
अ०	अयुद्ध	अयुत्साताम्	अयुत्सत
	अयुद्धाः	अयुत्साथाम्	अयुद्ध्वम्/ध्वम्
	अयुत्सि	अयुत्स्वहि	अयुत्स्महि
प०	युयुधे	युयुधाते	युयुधिरे
	युयुधिषे	युयुधाथे	युयुधिध्वे
	युयुधे	युयुधिवहे	युयुधिमहे
आ०	युत्सीष्ट	युत्सीयास्ताम्	युत्सीरन्
	युत्सीष्ठाः	युत्सीयास्थाम्	युत्सीध्वम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	युत्सीय	युत्सीवहि	युत्सीमहि
श्व०	योद्धा	योद्धारौ	योद्धारः
	योद्धासे	योद्धासाथे	योद्धाध्वे
	योद्धाहे	योद्धास्वहे	योद्धास्महे
भ०	योत्स्यते	योत्स्येते	योत्स्यन्ते
	योत्स्यसे	योत्स्येथे	योत्स्यध्वे
	योत्स्ये	योत्स्यावहे	योत्स्यामहे
क्रि०	अयोत्स्यत	अयोत्स्येताम्	अयोत्स्यन्त
	अयोत्स्यथाः	अयोत्स्येथाम्	अयोत्स्यध्वम्
	अयोत्स्ये	अयोत्स्यावहि	अयोत्स्यामहि

१२६१. अनोरुधिंच् (अनु-रुध्) कामे।

काम इच्छा। अनुपूर्वो रुधिः कामे दिवादिः।

व०	अनुरुध्यते	अनुरुध्येते	अनुरुध्यन्ते
	अनुरुध्यसे	अनुरुध्येथे	अनुरुध्यध्वे
	अनुरुध्ये	अनुरुध्यावहे	अनुरुध्यामहे
स०	अनुरुध्येत	अनुरुध्येयाताम्	अनुरुध्येरन्
	अनुरुध्येथाः	अनुरुध्येयाथाम्	अनुरुध्येध्वम्
	अनुरुध्येय	अनुरुध्येवहि	अनुरुध्येमहि
प०	अनुरुध्यताम्	अनुरुध्येताम्	अनुरुध्यन्ताम्
	अनुरुध्यस्व	अनुरुध्येथाम्	अनुरुध्यध्वम्
	अनुरुध्यै	अनुरुध्यावहै	अनुरुध्यामहै
ह्य०	अन्वरुध्यत	अन्वरुध्येताम्	अन्वरुध्यन्त
	अन्वरुध्यथाः	अन्वरुध्येथाम्	अन्वरुध्यध्वम्
	अन्वरुध्ये	अन्वरुध्यावहि	अन्वरुध्यामहि
अ०	अन्वरुद्ध	अन्वरुत्साताम्	अन्वरुत्सत
	अन्वरुद्धाः	अन्वरुत्साथाम्	अन्वरुद्ध्वम्/ध्वम्
	अन्वरुत्सि	अन्वरुत्स्वहि	अन्वरुत्स्महि
प०	अनुरुरुधे	अनुरुरुधाते	अनुरुरुधिरे
	अनुरुरुधिषे	अनुरुरुधाथे	अनुरुरुधिध्वे
	अनुरुरुधे	अनुरुरुधिवहे	अनुरुरुधिमहे
आ०	अनुरुत्सीष्ट	अनुरुत्सीयास्ताम्	अनुरुत्सीरन्
	अनुरुत्सीष्ठाः	अनुरुत्सीयास्थाम्	अनुरुत्सीध्वम्
	अनुरुत्सीय	अनुरुत्सीवहि	अनुरुत्सीमहि
श्व०	अनुरोद्धा	अनुरोद्धारौ	अनुरोद्धारः
	अनुरोद्धासे	अनुरोद्धासाथे	अनुरोद्धाध्वे
	अनुरोद्धाहे	अनुरोद्धास्वहे	अनुरोद्धास्महे
भ०	अनुरोत्स्यते	अनुरोत्स्येते	अनुरोत्स्यन्ते
	अनुरोत्स्यसे	अनुरोत्स्येथे	अनुरोत्स्यध्वे
	अनुरोत्स्ये	अनुरोत्स्यावहे	अनुरोत्स्यामहे
क्रि०	अन्वरोत्स्यत	अन्वरोत्स्येताम्	अन्वरोत्स्यन्त
	अन्वरोत्स्यथाः	अन्वरोत्स्येथाम्	अन्वरोत्स्यध्वम्
	अन्वरोत्स्ये	अन्वरोत्स्यावहि	अन्वरोत्स्यामहि

१२६२. बुधिंच् (बुध्) ज्ञाने।

व०	बुध्यते	बुध्येते	बुध्यन्ते
स०	बुध्येत	बुध्येयाताम्	बुध्येरन्
प०	बुध्यताम्	बुध्येताम्	बुध्यन्ताम्
ह्य०	अबुध्यत	अबुध्येताम्	अबुध्यन्त
अ०	अबुद्ध/अबोधि	अभुत्साताम्	अभुत्सत
प०	बुबुधे	बुबुधाते	बुबुधिरे
आ०	भुत्सीष्ट	भुत्सीयास्ताम्	भुत्सीरन्
श्व०	बोद्धा	बोद्धारौ	बोद्धारः
भ०	भोत्स्यते	भोत्स्येते	भोत्स्यन्ते
क्रि०	अभोत्स्यत	अभोत्स्येताम्	अभोत्स्यन्त

१२६३. मनिंच् (मन्) ज्ञाने।

व०	मन्यते	मन्येते	मन्यन्ते
	मन्यसे	मन्येथे	मन्यध्वे
	मन्ये	मन्यावहे	मन्यामहे
स०	मन्येत	मन्येयाताम्	मन्येरन्
	मन्येथाः	मन्येयाथाम्	मन्येध्वम्
	मन्येय	मन्येवहि	मन्येमहि
प०	मन्यताम्	मन्येताम्	मन्यन्ताम्
	मन्यस्व	मन्येथाम्	मन्यध्वम्
	मन्यै	मन्यावहै	मन्यामहै

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	अमन्यत	अमन्येताम्	अमन्यन्त
	अमन्यथाः	अमन्येथाम्	अमन्यध्वम्
	अमन्ये	अमन्यावहि	अमन्यामहि
अ०	अमंस्त	अमंसाताम्	अमंसत्
	अमंस्थाः	अमंसाथाम्	अमन्द्ध्वम्/ध्वम्
	अमंसि	अमंस्वहि	अमंस्महि
प०	मेने	मेनाते	मेनिरे
	मेनिषे	मेनाथे	मेनिध्वे
	मेने	मेनिवहे	मेनिमहे
आ०	मंसीष्ट	मंसीयास्ताम्	मंसीरन्
	मंसीष्ठाः	मंसीयास्थाम्	मंसीध्वम्
	मंसीय	मंसीवहि	मंसीमहि
श्व०	मन्ता	मन्तारौ	मन्तारः
	मन्तासे	मन्तासाथे	मन्ताध्वे
	मन्ताहे	मन्तास्वहे	मन्तास्मिहे
भ०	मंस्यते	मंस्येते	मंस्यन्ते
	मंस्यसे	मंस्येथे	मंस्यध्वे
	मंस्ये	मंस्यावहे	मंस्यामहे
क्रि०	अमंस्यत	अमंस्येताम्	अमंस्यन्त
	अमंस्यथाः	अमंस्येथाम्	अमंस्यध्वम्
	अमंस्ये	अमंस्यावहि	अमंस्यामहि

१२६४. अनिच् (अन्) प्राणने।

व०	अन्यते	अन्येते	अन्यन्ते
स०	अन्येत	अन्येयाताम्	अन्येरन्
प०	अन्यताम्	अन्येताम्	अन्यन्ताम्
ह्य०	आन्यत	आन्येताम्	आन्यन्त
अ०	आनिष्ट	आनिषाताम्	आनिषत
प०	आने	आनाते	आनिरे
आ०	अनिषीष्ट	अनिषीयास्ताम्	अनिषीरन्
श्व०	अनिता	अनितारौ	अनितारः
भ०	अनिष्यते	अनिष्येते	अनिष्यन्ते
क्रि०	आनिष्यत	आनिष्येताम्	आनिष्यन्त

१२६५. जनैच् (जन्) प्रादुर्भावे

प्रादुर्भाव उत्पत्तिः।

व०	जायते	जायेते	जायन्ते
स०	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
प०	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
ह्य०	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
अ०	अजनिष्ट	अजनिषाताम्	अजनिषत
प०	जज्ञे	जज्ञाते	जज्ञिरे
आ०	जनिषीष्ट	जनिषीयास्ताम्	जनिषीरन्
श्व०	जनिता	जनितारौ	जनितारः
भ०	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
क्रि०	अजनिष्यत	अजनिष्येताम्	अजनिष्यन्त

अथ पान्तौ।

१२६६. दीपैचि (दीप्) दीप्तौ।

व०	दीप्यते	दीप्येते	दीप्यन्ते
	दीप्यसे	दीप्येथे	दीप्यध्वे
	दीप्ये	दीप्यावहे	दीप्यामहे
स०	दीप्येत	दीप्येयाताम्	दीप्येरन्
	दीप्येथाः	दीप्येयाथाम्	दीप्येध्वम्
	दीप्येय	दीप्येवहि	दीप्येमहि
प०	दीप्यताम्	दीप्येताम्	दीप्यन्ताम्
	दीप्यस्व	दीप्येथाम्	दीप्यध्वम्
	दीप्यै	दीप्यावहै	दीप्यामहै
ह्य०	अदीप्यत	अदीप्येताम्	अदीप्यन्त
	अदीप्यथाः	अदीप्येथाम्	अदीप्यध्वम्
	अदीप्ये	अदीप्यावहि	अदीप्यामहि
अ०	अदीपिष्ट	अदीपिषाताम्	अदीपिषत
	अदीपिष्ठाः	अदीपिषाथाम्	अदीपिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अदीपिषि	अदीपिष्वहि	अदीपिष्महि
प०	दिदीपे	दिदीपाते	दिदीपिरे
	दिदीपिषे	दिदीपाथे	दिदीपिध्वे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	दिदीपे	दिदीपिवहे	दिदीपिमहे
आ०	दीपिषीष्ट	दीपिषीयास्ताम्	दीपिषीरन्
	दीपिषीष्ठा:	दीपिषीयास्थाम्	दीपिषीध्वम्
	दीपिषीय	दीपिषीवहि	दीपिषीमहि
श्व०	दीपिता	दीपितारौ	दीपितार:
	दीपितासे	दीपितासाथे	दीपिताध्वे
	दीपिताहे	दीपितास्वहे	दीपितास्मिहे
भ०	दीपिष्यते	दीपिष्येते	दीपिष्यन्ते
	दीपिष्यसे	दीपिष्येथे	दीपिष्यध्वे
	दीपिष्ये	दीपिष्यावहे	दीपिष्यामहे
क्रि०	अदीपिष्यत	अदीपिष्येताम्	अदीपिष्यन्त
	अदीपिष्यथा:	अदीपिष्येथाम्	अदीपिष्यध्वम्
	अदीपिष्ये	अदीपिष्यावहि	अदीपिष्यामहि

१२६७. तपिंच् (तप्) ऐश्वर्ये वा।

तपं धूप संतापे इत्यस्यैवैश्वर्येऽर्थे दिवादित्वमात्मनेपदं च वा विधीयते। पक्षे ऐश्वर्येऽपि भ्वादित्वात्, प्रतपति।

व०	तप्यते	तप्येते	तप्यन्ते
स०	तप्येत	तप्येयाताम्	तप्येरन्
प०	तप्यताम्	तप्येताम्	तप्यन्ताम्
ह्य०	अतप्यत	अतप्येताम्	अतप्यन्त
अ०	अतप्त	अतप्साताम्	अतप्सत
प०	तेपे	तेपाते	तेपिरे
आ०	तप्सीष्ट	तप्सीयास्ताम्	तप्सीरन्
श्व०	तप्ता	तप्तारौ	तप्तार:
भ०	तप्स्यते	तप्स्येते	तप्स्यन्ते
क्रि०	अतप्स्यत	अतप्स्येताम्	अतप्स्यन्त

अथ रान्ता अष्टौ सेटश्च।

१२६८. पूरैचि (पुर्) आप्यायने:[१]।

व०	पूर्यते	पूर्येते	पूर्यन्ते
स०	पूर्येत	पूर्येयाताम्	पूर्येरन्
प०	पूर्यताम्	पूर्येताम्	पूर्यन्ताम्
ह्य०	अपूर्यत	अपूर्येताम्	अपूर्यन्त
अ०	अपूरि/अपूरिष्ट	अपूरिषाताम्	अपूरिषत
प०	पुपुरे	पुपुराते	पुपुरिरे
आ०	पूरिषीष्ट	पूरिषीयास्ताम्	पूरिषीरन्
श्व०	पूरिता	पूरितारौ	पूरितार:
भ०	पूरिष्यते	पूरिष्येते	पूरिष्यन्ते
क्रि०	अपूरिष्यत	अपूरिष्येताम्	अपूरिष्यन्त

१२६९. घूरैङ्च (घूर) गतौ।

व०	घूर्यते	घूर्येते	घूर्यन्ते
स०	घूर्येत	घूर्येयाताम्	घूर्येरन्
प०	घूर्यताम्	घूर्येताम्	घूर्यन्ताम्
ह्य०	अघूर्यत	अघूर्येताम्	अघूर्यन्त
अ०	अघूरिष्ट	अघूरिषाताम्	अघूरिषत
प०	जुघुरे	जुघुराते	जुघुरिरे
आ०	घूरिषीष्ट	घूरिषीयास्ताम्	घूरिषीरन्
श्व०	घूरिता	घूरितारौ	घूरितार:
भ०	घूरिष्यते	घूरिष्येते	घूरिष्यन्ते
क्रि०	अघूरिष्यत	अघूरिष्येताम्	अघूरिष्यन्त

१२७०. गूरैचि (गूर्) गतौ।

व०	गूर्यते	गूर्येते	गूर्यन्ते
स०	गूर्येत	गूर्येयाताम्	गूर्येरन्
प०	गूर्यताम्	गूर्येताम्	गूर्यन्ताम्
ह्य०	अगूर्यत	अगूर्येताम्	अगूर्यन्त
अ०	अगूरिष्ट	अगूरिषाताम्	अगूरिषत
प०	जुगुरे	जुगुराते	जुगुरिरे
आ०	गूरिषीष्ट	गूरिषीयास्ताम्	गूरिषीरन्
श्व०	गूरिता	गूरितारौ	गूरितार:
भ०	गूरिष्यते	गूरिष्येते	गूरिष्यन्ते
क्रि०	अगूरिष्यत	अगूरिष्येताम्	अगूरिष्यन्त

१२७१. शूरैचि (शूर्) स्तम्भे।

व०	शूर्यते	शूर्येते	शूर्यन्ते
स०	शूर्येत	शूर्येयाताम्	शूर्येरन्

१. वृद्धावित्यर्थ:।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	शूर्यताम्	शूर्येताम्	शूर्यन्ताम्
ह्य०	अशूर्यत	अशूर्येताम्	अशूर्यन्त
अ०	अशूरिष्ट	अशूरिषाताम्	अशूरिषत
प०	शुशूरे	शुशूराते	शुशूरिरे
आ०	शूरिषीष्ट	शूरिषीयास्ताम्	शूरिषीरन्
श्व०	शूरिता	शूरितारौ	शूरितार:
भ०	शूरिष्यते	शूरिष्येते	शूरिष्यन्ते
क्रि०	अशूरिष्यत	अशूरिष्येताम्	अशूरिष्यन्त

१२७२. जूरैचि (जूर्) जरायाम्[1]

व०	जूर्यते	जूर्येते	जूर्यन्ते
स०	जूर्येत	जूर्येयाताम्	जूर्येरन्
प०	जूर्यताम्	जूर्येताम्	जूर्यन्ताम्
ह्य०	अजूर्यत	अजूर्येताम्	अजूर्यन्त
अ०	अजूरिष्ट	अजूरिषाताम्	अजूरिषत
प०	जुजूरे	जुजूराते	जुजूरिरे
आ०	जूरिषीष्ट	जूरिषीयास्ताम्	जूरिषीरन्
श्व०	जूरिता	जूरितारौ	जूरितार:
भ०	जूरिष्यते	जूरिष्येते	जूरिष्यन्ते
क्रि०	अजूरिष्यत	अजूरिष्येताम्	अजूरिष्यन्त

१२७३. धूरैङ्च् (धूर्) गतौ।

व०	धूर्यते	धूर्येते	धूर्यन्ते
स०	धूर्येत	धूर्येयाताम्	धूर्येरन्
प०	धूर्यताम्	धूर्येताम्	धूर्यन्ताम्
ह्य०	अधूर्यत	अधूर्येताम्	अधूर्यन्त
अ०	अधूरिष्ट	अधूरिषाताम्	अधूरिषत
प०	दुधूरे	दुधूराते	दुधूरिरे
आ०	धूरिषीष्ट	धूरिषीयास्ताम्	धूरिषीरन्
श्व०	धूरिता	धूरितारौ	धूरितार:
भ०	धूरिष्यते	धूरिष्येते	धूरिष्यन्ते
क्रि०	अधूरिष्यत	अधूरिष्येताम्	अधूरिष्यन्त

१. जरा वयोहानि:।

१२७४. तूरैचि (तूर्) त्वरायाम्।

व०	तूर्यते	तूर्येते	तूर्यन्ते
स०	तूर्येत	तूर्येयाताम्	तूर्येरन्
प०	तूर्यताम्	तूर्येताम्	तूर्यन्ताम्
ह्य०	अतूर्यत	अतूर्येताम्	अतूर्यन्त
अ०	अतूरिष्ट	अतूरिषाताम्	अतूरिषत
प०	तुतूरे	तुतूराते	तुतूरिरे
आ०	तूरिषीष्ट	तूरिषीयास्ताम्	तूरिषीरन्
श्व०	तूरिता	तूरितारौ	तूरितार:
भ०	तूरिष्यते	तूरिष्येते	तूरिष्यन्ते
क्रि०	अतूरिष्यत	अतूरिष्येताम्	अतूरिष्यन्त

तान्येवोदाहरणानि।

१२७५. चूरैचि (चूर्) दाहे।

व०	चूर्यते	चूर्येते	चूर्यन्ते
स०	चूर्येत	चूर्येयाताम्	चूर्येरन्
प०	चूर्यताम्	चूर्येताम्	चूर्यन्ताम्
ह्य०	अचूर्यत	अचूर्येताम्	अचूर्यन्त
अ०	अचूरिष्ट	अचूरिषाताम्	अचूरिषत
प०	चुचूरे	चुचूराते	चुचूरिरे
आ०	चूरिषीष्ट	चूरिषीयास्ताम्	चूरिषीरन्
श्व०	चूरिता	चूरितारौ	चूरितार:
भ०	चूरिष्यते	चूरिष्येते	चूरिष्यन्ते
क्रि०	अचूरिष्यत	अचूरिष्येताम्	अचूरिष्यन्त

अथ शान्ताश्चत्वारो लिशिंच्; वर्जा सेट्श्च।

१२७६. क्लिशिच् (क्लिश्) उपतापे।

व०	क्लिश्यते	क्लिश्येते	क्लिश्यन्ते
	क्लिश्यसे	क्लिश्येथे	क्लिश्यध्वे
	क्लिश्ये	क्लिश्यावहे	क्लिश्यामहे
स०	क्लिश्येत	क्लिश्येयाताम्	क्लिश्येरन्
	क्लिश्येथा:	क्लिश्येयाथाम्	क्लिश्येध्वम्
	क्लिश्येय	क्लिश्येवहि	क्लिश्येमहि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	क्लिश्यताम्	क्लिश्येताम्	क्लिश्यन्ताम्
	क्लिश्यस्व	क्लिश्येथाम्	क्लिश्यध्वम्
	क्लिश्यै	क्लिश्यावहै	क्लिश्यामहै
ह्य०	अक्लिश्यत	अक्लिश्येताम्	अक्लिश्यन्त
	अक्लिश्यथाः	अक्लिश्येथाम्	अक्लिश्यध्वम्
	अक्लिश्ये	अक्लिश्यावहि	अक्लिश्यामहि
अ०	अक्लेशिष्ट	अक्लेशिषाताम्	अक्लेशिषत
	अक्लेशिष्ठाः	अक्लेशिषाथाम्	अक्लेशिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अक्लेशिषि	अक्लेशिष्वहि	अक्लेशिष्महि
प०	चिक्लिशे	चिक्लिशाते	चिक्लिशिरे
	चिक्लिशिषे	चिक्लिशाथे	चिक्लिशिध्वे/ढ्वे
	चिक्लिशे	चिक्लिशिवहे	चिक्लिशिमहे
आ०	क्लेशिषीष्ट	क्लेशिषीयास्ताम्	क्लेशिषीरन्
	क्लेशिषीष्ठाः	क्लेशिषीयास्थाम्	क्लेशिषीध्वम्
	क्लेशिषीय	क्लेशिषीवहि	क्लेशिषीमहि
श्व०	क्लेशिता	क्लेशितारौ	क्लेशितारः
	क्लेशितासे	क्लेशितासाथे	क्लेशिताध्वे
	क्लेशिताहे	क्लेशितास्वहे	क्लेशितास्महे
भ०	क्लेशिष्यते	क्लेशिष्येते	क्लेशिष्यन्ते
	क्लेशिष्यसे	क्लेशिष्येथे	क्लेशिष्यध्वे
	क्लेशिष्ये	क्लेशिष्यावहे	क्लेशिष्यामहे
क्रि०	अक्लेशिष्यत	अक्लेशिष्येताम्	अक्लेशिष्यन्त
	अक्लेशिष्यथाः	अक्लेशिष्येथाम्	अक्लेशिष्यध्वम्
	अक्लेशिष्ये	अक्लेशिष्यावहि	अक्लेशिष्यामहि

१२७७. लिशिच् (लिश्) अल्पत्वे।

व०	लिश्यते	लिश्येते	लिश्यन्ते
स०	लिश्येत	लिश्येयाताम्	लिश्येरन्
प०	लिश्यताम्	लिश्येताम्	लिश्यन्ताम्
ह्य०	अलिश्यत	अलिश्येताम्	अलिश्यन्त
अ०	अलिक्षत	अलिक्षाताम्	अलिक्षन्त
प०	लिलिशे	लिलिशाते	लिलिशिरे
आ०	लिक्षीष्ट	लिक्षीयास्ताम्	लिक्षीरन्
श्व०	लेष्टा	लेष्टारौ	लेष्टारः
भ०	लेक्ष्यते	लेक्ष्येते	लेक्ष्यन्ते
क्रि०	अलेक्ष्यत	अलेक्ष्येताम्	अलेक्ष्यन्त

१२७८. काशिच् (काश्) दीप्तौ।

व०	काश्यते	काश्येते	काश्यन्ते
स०	काश्येत	काश्येयाताम्	काश्येरन्
प०	काश्यताम्	काश्येताम्	काश्यन्ताम्
ह्य०	अकाश्यत	अकाश्येताम्	अकाश्यन्त
अ०	अकाशिष्ट	अकाशिषाताम्	अकाशिषत
प०	चकाशे	चकाशाते	चकाशिरे
आ०	काशिषीष्ट	काशिषीयास्ताम्	काशिषीरन्
श्व०	काशिता	काशितारौ	काशितारः
भ०	काशिष्यते	काशिष्येते	काशिष्यन्ते
क्रि०	अकाशिष्यत	अकाशिष्येताम्	अकाशिष्यन्त

१२७९. वाशिच् (वाश्) शब्दे।

व०	वाश्यते	वाश्येते	वाश्यन्ते
स०	वाश्येत	वाश्येयाताम्	वाश्येरन्
प०	वाश्यताम्	वाश्येताम्	वाश्यन्ताम्
ह्य०	अवाश्यत	अवाश्येताम्	अवाश्यन्त
अ०	अवाशिष्ट	अवाशिषाताम्	अवाशिषत
प०	ववाशे	ववाशाते	ववाशिरे
आ०	वाशिषीष्ट	वाशिषीयास्ताम्	वाशिषीरन्
श्व०	वाशिता	वाशितारौ	वाशितारः
भ०	वाशिष्यते	वाशिष्येते	वाशिष्यन्ते
क्रि०	अवाशिष्यत	अवाशिष्येताम्	अवाशिष्यन्त

अथोभयपदिषु कान्तोऽनिट्च

१२८०. शकींच् (शक्) मर्षणे, मर्षणं क्षमा।

व०	शक्यते	शक्येते	शक्यन्ते
स०	शक्येत	शक्येयाताम्	शक्येरन्
प०	शक्यताम्	शक्येताम्	शक्यन्ताम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	अशक्यत	अशक्येताम्	अशक्यन्त
अ०	अशक्त	अशक्षाताम्	अशक्षत
प०	शेके	शेकाते	शेकिरे
आ०	शक्षीष्ट	शक्षीयास्ताम्	शक्षीरन्
श्व०	शक्ता	शक्तारौ	शक्तारः
भ०	शक्ष्यते	शक्ष्येते	शक्ष्यन्ते
क्रि०	अशक्ष्यत	अशक्ष्येताम्	अशक्ष्यन्त
व०	शक्यति	शक्यतः	शक्यन्ति
स०	शक्येत्	शक्येताम्	शक्येयुः
प०	शक्यतु/शक्यतात्	शक्यताम्	शक्यन्तु
ह्य०	अशक्यत्	अशक्यताम्	अशक्यन्
अ०	अशाक्षीत्	अशाक्ताम्	अशाक्षुः
प०	शशाक	शेकतुः	शेकुः
आ०	शक्यात्	शक्यास्ताम्	शक्यासुः
श्व०	शक्ता	शक्तारौ	शक्तारः
भ०	शक्ष्यति	शक्ष्यतः	शक्ष्यन्ति
क्रि०	अशक्ष्यत्	अशक्ष्यताम्	अशक्ष्यन्

अथ चान्तः सेट् च।

१२८१. शुचृगैच् (शुच्) पूतिभावे। पूतिभावः क्लेदः।

व०	शुच्यते	शुच्येते	शुच्यन्ते
स०	शुच्येत	शुच्येयाताम्	शुच्येरन्
प०	शुच्यताम्	शुच्येताम्	शुच्यन्ताम्
ह्य०	अशुच्यत	अशुच्येताम्	अशुच्यन्त
अ०	अशोचिष्ट	अशोचिषाताम्	अशोचिषत
प०	शशुचे	शशुचाते	शशुचिरे
आ०	शोचिषीष्ट	शोचिषीयास्ताम्	शोचिषीरन्
श्व०	शोचिता	शोचितारौ	शोचितारः
भ०	शोचिष्यते	शोचिष्येते	शोचिष्यन्ते
क्रि०	अशोचिष्यत	अशोचिष्येताम्	अशोचिष्यन्त
व०	शुच्यति	शुच्यतः	शुच्यतः
स०	शुच्येत्	शुच्येताम्	शुच्येयुः
प०	शुच्यतु/शुच्यतात्	शुच्यताम्	शुच्यन्तु
ह्य०	अशुच्यत्	अशुच्यताम्	अशुच्यन्
अ०	अशोचीत्	अशोचिष्टाम्	अशोचिषुः
	अशुचत्	अशुचताम्	अशुचन्
प०	शुशोच	शुशुचतुः	शुशुचुः
आ०	शुच्यात्	शुच्यास्ताम्	शुच्यासुः
श्व०	शोचिता	शोचितारौ	शोचितारः
भ०	शोचिष्यति	शोचिष्यतः	शोचिष्यन्ति
क्रि०	अशोचिष्यत्	अशोचिष्यताम्	अशोचिष्यन्

अथ जान्तोऽनिट् च।

१२८२. रञ्जींच् (रञ्ज्) रागे।

व०	रज्यते	रज्येते	रज्यन्ते
स०	रज्येत	रज्येयाताम्	रज्येरन्
प०	रज्यताम्	रज्येताम्	रज्यन्ताम्
ह्य०	अरज्यत	अरज्येताम्	अरंज्यन्त
अ०	अरङ्क्त	अरङ्क्षाताम्	अरङ्क्षत
प०	ररञ्जे	ररञ्जाते	ररञ्जिरे
आ०	रङ्क्षीष्ट	रङ्क्षीयास्ताम्	रङ्क्षीरन्
श्व०	रङ्क्ता	रङ्क्तारौ	रङ्क्तारः
भ०	रङ्क्ष्यते	रङ्क्ष्येते	रङ्क्ष्यन्ते
क्रि०	अरङ्क्ष्यत	अरङ्क्ष्येताम्	अरङ्क्ष्यन्त
व०	रज्यति	रज्यतः	रज्यन्ति
स०	रज्येत्	रज्येताम्	रज्येयुः
प०	रज्यतु/रज्यतात्	रज्यताम्	रज्यन्तु
ह्य०	अरज्यत्	अरज्यताम्	अरज्यन्
अ०	अराङ्क्षीत्	अराङ्क्ताम्	अराङ्क्षुः
प०	ररञ्ज	ररञ्जतुः	ररञ्जुः
आ०	रज्यात्	रज्यास्ताम्	रज्यासुः
श्व०	रङ्क्ता	रङ्क्तारौ	रङ्क्तारः
भ०	रङ्क्ष्यति	रङ्क्ष्यतः	रङ्क्ष्यन्ति
क्रि०	अरङ्क्ष्यत्	अरङ्क्ष्यताम्	अरङ्क्ष्यन्

अथ पान्तोऽनिट् च।

१२८३. शपींच् (शप्) आक्रोशे।

व०	शप्यते	शप्येते	शप्यन्ते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स०	शप्येत	शप्येयाताम्	शप्येरन्
प०	शप्यताम्	शप्येताम्	शप्यन्ताम्
ह्य०	अशप्यत	अशप्येताम्	अशप्यन्त
अ०	अशप्त	अशप्साताम्	अशप्सत
प०	शेपे	शेपाते	शेपिरे
आ०	शप्सीष्ट	शप्सीयास्ताम्	शप्सीरन्
श्व०	शप्ता	शप्तारौ	शप्तार:
भ०	शप्स्यते	शप्स्येते	शप्स्यन्ते
क्रि०	अशप्स्यत	अशप्स्येताम्	अशप्स्यन्त
व०	शप्यति	शप्यत:	शप्यन्ति
स०	शप्येत्	शप्येताम्	शप्येयु:
प०	शप्यतु/शप्यतात्	शप्यताम्	शप्यन्तु
ह्य०	अशप्यत्	अशप्यताम्	अशप्यन्
अ०	अशाप्सीत्	अशाप्ताम्	अशाप्सु:
प०	शशाप	शेपतु:	शेपु:
आ०	शप्यात्	शप्यास्ताम्	शप्यासु:
श्व०	शप्ता	शप्तारौ	शप्तार:
भ०	शप्स्यति	शप्स्यत:	शप्स्यन्ति
क्रि०	अशप्स्यत्	अशप्स्यताम्	अशप्स्यन्

अथ षान्त: सेट् च।

१२८४. मृषींच् (मृष्) तितिक्षायाम्। तितिक्षा क्षमा।।

व०	मृष्यते	मृष्येते	मृष्यन्ते
	मृष्यसे	मृष्येथे	मृष्यध्वे
	मृष्ये	मृष्यावहे	मृष्यामहे
स०	मृष्येत	मृष्येयाताम्	मृष्येरन्
	मृष्येथा:	मृष्येयाथाम्	मृष्येध्वम्
	मृष्येय	मृष्येवहि	मृष्येमहि
प०	मृष्यताम्	मृष्येताम्	मृष्यन्ताम्
	मृष्यस्व	मृष्येथाम्	मृष्यध्वम्
	मृष्यै	मृष्यावहै	मृष्यामहै
ह्य०	अमृष्यत	अमृष्येताम्	अमृष्यन्त
	अमृष्यथा:	अमृष्येथाम्	अमृष्यध्वम्
	अमृष्ये	अमृष्यावहि	अमृष्यामहि
अ०	अमर्षिष्ट	अमर्षिषाताम्	अमर्षिषत
	अमर्षिष्ठा:	अमर्षिषाथाम्	अमर्षिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अमर्षिषि	अमर्षिष्वहि	अमर्षिष्महि
प०	ममर्षे	ममृषाते	ममृषिरे
	ममृषिषे	ममृषाथे	ममृषिध्वे
	ममृषे	ममृषिवहे	ममृषिमहे
आ०	मर्षिषीष्ट	मर्षिषीयास्ताम्	मर्षिषीरन्
	मर्षिषीष्ठा:	मर्षिषीयास्थाम्	मर्षिषीध्वम्
	मर्षिषीय	मर्षिषीवहि	मर्षिषीमहि
श्व०	मर्षिता	मर्षितारौ	मर्षितार:
	मर्षितासे	मर्षितासाथे	मर्षिताध्वे
	मर्षिताहे	मर्षितास्वहे	मर्षितास्महे
भ०	मर्षिष्यते	मर्षिष्येते	मर्षिष्यन्ते
	मर्षिष्यसे	मर्षिष्येथे	मर्षिष्यध्वे
	मर्षिष्ये	मर्षिष्यावहे	मर्षिष्यामहे
क्रि०	अमर्षिष्यत	अमर्षिष्येताम्	अमर्षिष्यन्त
	अमर्षिष्यथा:	अमर्षिष्येथाम्	अमर्षिष्यध्वम्
	अमर्षिष्ये	अमर्षिष्यावहि	अमर्षिष्यामहि
व०	मृष्यति	मृष्यत:	मृष्यन्ति
	मृष्यसि	मृष्यथ:	मृष्यथ
	मृष्यामि	मृष्याव:	मृष्याम:
स०	मृष्येत्	मृष्येताम्	मृष्येयु:
	मृष्ये:	मृष्येतम्	मृष्येत
	मृष्येयम्	मृष्येव	मृष्येम
प०	मृष्यतु/मृष्यतात्	मृष्यताम्	मृष्यन्तु
	मृष्य:/मृष्यतात्	मृष्यतम्	मृष्यत
	मृष्याणि	मृष्याव	मृष्याम
ह्य०	अमृष्यत्	अमृष्यताम्	अमृष्यन्
	अमृष्य:	अमृष्यतम्	अमृष्यत
	अमृष्यम्	अमृष्याव	अमृष्याम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	अमर्षीत्	अमर्षिष्टाम्	अमर्षिषुः
	अमर्षीः	अमर्षिष्टम्	अमर्षिष्ट
	अमर्षिषम्	अमर्षिष्व	अमर्षिष्म
प०	ममर्ष	ममृषतुः	ममृषुः
	ममर्षिथ	ममृषथुः	ममृष
	ममर्ष	ममृषिव	ममृषिम
आ०	मृष्यात्	मृष्यास्ताम्	मृष्यासुः
	मृष्याः	मृष्यास्तम्	मृष्यास्त
	मृष्यासम्	मृष्यास्व	मृष्यास्म
श्व०	मर्षिता	मर्षितारौ	मर्षितारः
	मर्षितासि	मर्षितास्थः	मर्षितास्थ
	मर्षितास्मि	मर्षितास्वः	मर्षितास्मः
भ०	मर्षिष्यति	मर्षिष्यतः	मर्षिष्यन्ति
	मर्षिष्यसि	मर्षिष्यथः	मर्षिष्यथ
	मर्षिष्यामि	मर्षिष्यावः	मर्षिष्यामः
क्रि०	अमर्षिष्यत्	अमर्षिष्यताम्	अमर्षिष्यन्
	अमर्षिष्यः	अमर्षिष्यतम्	अमर्षिष्यत
	अमर्षिष्यम्	अमर्षिष्याव	अमर्षिष्याम

अथ हान्तोऽनिट् च।

१२८५. णहींच् (नह) बन्धने।

व०	नह्यते	नह्येते	नह्यन्ते
	नह्यसे	नह्येथे	नह्यध्वे
	नह्ये	नह्यावहे	नह्यामहे
स०	नह्येत	नह्येयाताम्	नह्येरन्
	नह्येथाः	नह्येयाथाम्	नह्येध्वम्
	नह्येय	नह्येवहि	नह्येमहि
प०	नह्यताम्	नह्येताम्	नह्यन्ताम्
	नह्यस्व	नह्येथाम्	नह्यध्वम्
	नह्यै	नह्यावहै	नह्यामहै
ह्य०	अनह्यत	अनह्येताम्	अनह्यन्त
	अनह्यथाः	अनह्येथाम्	अनह्यध्वम्
	अनह्ये	अनह्यावहि	अनह्यामहि
अ०	अनद्ध	अनत्साताम्	अनत्सत
	अनद्धाः	अनत्सताम्	अनद्ध्वम्/द्ध्वम्
	अनात्सि	अनत्स्वहि	अनत्स्महि
प०	नेहे	नेहाते	नेहिरे
	नेहिषे	नेहाथे	नेहिढ्वे/ध्वे
	नेहे	नेहिवहे	नेहिमहे
आ०	नत्सीष्ट	नत्सीयास्ताम्	नत्सीरन्
	नत्सीष्ठाः	नत्सीयास्थाम्	नत्सीध्वम्
	नत्सीय	नत्सीवहि	नत्सीमहि
श्व०	नद्धा	नद्धारौ	नद्धारः
	नद्धासे	नद्धासाथे	नद्धाध्वे
	नद्धाहे	नद्धास्वहे	नद्धास्महे
भ०	नत्स्यते	नत्स्येते	नत्स्यन्ते
	नत्स्यसे	नत्स्येथे	नत्स्यध्वे
	नत्स्ये	नत्स्यावहे	नत्स्यामहे
क्रि०	अनत्स्यत	अनत्स्येताम्	अनत्स्यन्त
	अनत्स्यथाः	अनत्स्येथाम्	अनत्स्यध्वम्
	अनत्स्ये	अनत्स्यावहि	अनत्स्यामहि
व०	नह्यति	नह्यतः	नह्यन्ति
	नह्यसि	नह्यथः	नह्यथ
	नह्यामि	नह्यावः	नह्यामः
स०	नह्येत्	नह्येताम्	नह्येयुः
	नह्येः	नह्येतम्	नह्येत
	नह्येयम्	नह्येव	नह्येम
प०	नह्यतु/नह्यतात्	नह्यताम्	नह्यन्तु
	नह्य:/नह्यतात्	नह्यतम्	नह्यत
	नह्यानि	नह्याव	नह्याम
ह्य०	अनह्यत्	अनह्यताम्	अनह्यन्
	अनह्यः	अनह्यतम्	अनह्यत
	अनह्यम्	अनह्याव	अनह्याम
अ०	अनात्सीत्	अनाद्धाम्	अनात्सुः
	अनात्सीः	अनाद्धम्	अनाद्ध
	अनात्सम्	अनात्स्व	अनात्स्म

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	ननाह	नेहतुः	नेहुः
	नेहिथ/ननद्ध	नेहथुः	नेह
	ननाह/ननह	नेहिव	नेहिम
आ०	नह्यात्	नह्यास्ताम्	नह्यासुः
	नह्याः	नह्यास्तम्	नह्यास्त
	नह्यासम्	नह्यास्व	नह्यास्म
श्व०	नद्धा	नद्धारौ	नद्धारः
	नद्धासि	नद्धास्थः	नद्धास्थ
	नद्धास्मि	नद्धास्वः	नद्धास्मः
भ०	नत्स्यति	नत्स्यतः	नत्स्यन्ति
	नत्स्यसि	नत्स्यथः	नत्स्यथ
	नत्स्यामि	नत्स्यावः	नत्स्यामः
क्रि०	अनत्स्यत्	अनत्स्यताम्	अनत्स्यन्
	अनत्स्यः	अनत्स्यतम्	अनत्स्यत
	अनत्स्यम्	अनत्स्याव	अनत्स्याम

॥इति उभयतो भाषा॥

॥इति दिवादयश्चितो धातवः॥

अथ स्वादयो वर्णक्रमेण निर्दिश्यन्ते।

तत्रापि प्रसिद्ध्यनुरोधेनादौ

१२८६. षुंगट् (सु) अभिषवे। अभिषवः क्लेदनं सन्धनाख्यं पीडनं मन्थनं वा। स्नानमिति चान्द्राः।

व०	सुनोति	सुनुतः	सुन्वन्ति
	सुनोषि	सुनुथः	सुनुथ
	सुनोमि	सुनुवः/सुन्वः	सुनुमः/सुन्मः
स०	सुनुयात्	सुनुयाताम्	सुनुयुः
	सुनुयाः	सुनुयातम्	सुनुयात
	सुनुयाम्	सुनुयाव	सुनुयाम
प०	सुनोतु/सुनुतात्	सुनुताम्	सुन्वन्तु
	सुनु/सुनुतात्	सुनुतम्	सुनुत
	सनवानि	सनवाव	सनवाम
ह्य०	असुनोत्	असुनुताम्	असुन्वन्
	असुनोः	असुनुतम्	असुनुत
	असवम्	असुनुव, न्व	असुनुम, न्म
अ०	असावीत्	असाविष्टाम्	असाविषुः
	असावीः	असाविष्टम्	असाविष्ट
	असाविषम्	असाविष्व	असाविष्म
प०	सुषाव	सुषुवतुः	सुषुवुः
	सुषविथ/सुषोथ	सुषुवथुः	सुषुव
	सुषाव/सुषव	सुषुविव	सुषुविम
आ०	सूयात्	सूयास्ताम्	सूयासुः
	सूयाः	सूयास्तम्	सूयास्त
	सूयासम्	सूयास्व	सूयास्म
श्व०	सोता	सोतारौ	सोतारः
	सोतासि	सोतास्थः	सोतास्थ
	सोतास्मि	सोतास्वः	सोतास्मः
भ०	सोष्यति	सोष्यतः	सोष्यन्ति
	सोष्यसि	सोष्यथः	सोष्यथ
	सोष्यामि	सोष्यावः	सोष्यामः
क्रि०	असोष्यत्	असोष्यताम्	असोष्यन्
	असोष्यः	असोष्यतम्	असोष्यत
	असोष्यम्	असोष्याव	असोष्याम
व०	सुनुते	सुन्वाते	सुन्वते
	सुनुषे	सुन्वाथे	सुनुध्वे
	सुन्वे	सुनुवहे/सुन्वहे	सुनुमहे/सुन्महे
स०	सुन्वीत	सुन्वीयाताम्	सुन्वीरन्
	सुन्वीथाः	सुन्वीयाथाम्	सुन्वीध्वम्
	सुन्वीय	सुन्वीवहि	सुन्वीमहि
प०	सुनुताम्	सुन्वताम्	सुन्वताम्
	सुनुष्व	सुन्वाथाम्	सुनुध्वम्
	सुनुवै	सुनवावहै	सुनवामहै
ह्य०	असुनुत	असुन्वाताम्	असुवन्त
	असुनुथाः	असुन्वाथाम्	असुनुध्वम्
	असुन्वि	असुनुवहि/न्वहि	असुनुमहि/न्महि
अ०	असोष्ट	असोषाताम्	असोषत
	असोष्ठाः	असोषाथाम्	असोढ्वम्/ध्वम्
	असोषि	असोष्वहि	असोष्महि

प०	सुषुवे	सुषुवाते	सुषुविरे
	सुषुविषे	सुषुवाथे	सुषुविढ्वे/ध्वे
	सुषुवे	सुषुविवहे	सुषुविमहे
आ०	सोषीष्ट	सोषीयास्ताम्	सोषीरन्
	सोषीष्ठाः	सोषीयास्थाम्	सोषीध्वम्
	सोषीय	सोषीवहि	सोषीमहि
श्व०	सोता	सोतारौ	सोतारः
	सोतासे	सोतासाथे	सोताध्वे
	सोताहे	सोतास्वहे	सोतास्मिहे
भ०	सोष्यते	सोष्येते	सोष्यन्ते
	सोष्यसे	सोष्येथे	सोष्यध्वे
	सोष्ये	सोष्यावहे	सोष्यामहे
क्रि०	असोष्यत	असोष्येताम्	असोष्यन्त
	असोष्यथाः	असोष्येथाम्	असोष्यध्वम्
	असोष्ये	असोष्यावहि	असोष्यामहि

अथेदन्ताश्चत्वारोऽनिटश्च।

१२८७. षिंगट् (सि) बन्धने।

व०	सिनोति	सिनुतः	सिन्वन्ति
स०	सिनुयात्	सिनुयाताम्	सिनुयुः
प०	सिनोतु/सिनुतात्	सिनुताम्	सिन्वन्तु
ह्य०	असिनोत्	असिनुताम्	असिन्वन्
अ०	असैषीत्	असैष्टाम्	असैषुः
प०	सिषाय	सिष्यतुः	सिष्युः
आ०	सीयात्	सियास्ताम्	सियासुः
श्व०	सेता	सेतारौ	सेतारः
भ०	सेष्यति	सेष्यतः	सेष्यन्ति
क्रि०	असेष्यत्	असेष्यताम्	असेष्यन्
व०	सिनुते	सिन्वाते	सिन्वते
स०	सिन्वीत	सिन्वीयाताम्	सिन्वीरन्
प०	सिनुताम्	सिन्वताम्	सिन्वताम्
ह्य०	असिनुत	असिन्वाताम्	असिवन्त
अ०	असेष्ट	असेषाताम्	असेषत
प०	सिष्ये	सिष्याते	सिष्यिरे
आ०	सेषीष्ट	सेषीयास्ताम्	सेषीरन्
श्व०	सेता	सेतारौ	सेतारः
भ०	सेष्यते	सेष्येते	सेष्यन्ते
क्रि०	असेष्यत	असेष्येताम्	असेष्यन्त

१२८८. शिंगट् (शि) निशाने। निशानं तनूकरणम्।

व०	शिनुते	शिन्वातेः	शिन्वन्ते
	शिनुषि	शिन्वाथेः	शिनुथ
	शिन्वे	शिनुवहे/न्वहे	शिनुमहे/न्महे
स०	शिन्वीत	शिन्वीयाताम्	शिन्वीरन्
	शिन्वीथाः	शिन्वीयाथाम्	शिन्वीध्वम्
	शिन्वीय	शिन्वीवहि	शिन्वीमहि
प०	शिनुताम्	शिन्वताम्	शिन्वताम्
	शिनुष्व	शिन्वाथाम्	शिनुध्वम्
	शिनुवै	शिनवावहै	शिनवामहै
ह्य०	अशिनुत	अशिन्वाताम्	अशिवन्त
	अशिनुथाः	अशिन्वाथाम्	अशिनुध्वम्
	अशिन्वि	अशिनुवहि/न्वहि	अशिनुमहि
अ०	अशेष्ट	अशेषाताम्	अशेषत
	अशेष्ठाः	अशेषाथाम्	अशेड्ढ्वम्
	अशेषि	अशेष्वहि	अशेष्महि
प०	शिश्ये	शिश्याते	शिश्यिरे
	शिश्यिषे	शिश्याथे	शिश्यध्वे
	शिश्ये	शिश्यिवहि	शिश्यिमहि
आ०	शेषीष्ट	शेषीयास्ताम्	शेषीरन्
	शेषीष्ठाः	शेषीयास्थाम्	शेषीध्वम्
	शेषीय	शेषीवहि	शेषीमहि
श्व०	शेता	शेतारौ	शेतारः
	शेतासे	शेतासाथे	शेताध्वे
	शेताहे	शेतास्वहे	शेतास्मिहे
भ०	शेष्यते	शेष्येते	शेष्यन्ते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	शेष्यसे	शेष्येथे	शेष्यध्वे
	शेष्ये	शेष्यावहे	शेष्यामहे
क्रि०	अशेष्यत	अशेष्येताम्	अशेष्यन्त
	अशेष्यथाः	अशेष्येथाम्	अशेष्यध्वम्
	अशेष्ये	अशेष्यावहि	अशेष्यामहि
व०	शिनुते	शिन्वाते	शिन्वते
	शिनुषे	शिन्वाथे	शिनुध्वे
	शिन्वे	शिनुवहे/शिन्वहे	शिनुमहे/शिन्महे
स०	शिन्वीत	शिन्वीयाताम्	शिन्वीरन्
	शिन्वीथाः	शिन्वीयाथाम्	शिन्वीध्वम्
	शिन्वीय	शिन्वीवहि	शिन्वीमहि
प०	शिनुताम्	शिन्वताम्	शिन्वताम्
	शिनुष्व	शिन्वाथाम्	शिनुध्वम्
	शिनुवै	शिनवावहै	शिनवामहै
ह्य०	अशिनुत	अशिन्वाताम्	अशिवन्त
	अशिनुथाः	अशिन्वाथाम्	अशिनुध्वम्
	अशिन्वि	अशिनुवहि/न्वहि	अशिनुमहि/न्महि
अ०	अशेष्ट	अशेषाताम्	अशेषत
	अशेष्ठाः	अशेषाथाम्	अशेड्ढ्वम्
	अशेषि	अशेष्वहि	अशेष्महि
प०	शिश्ये	शिश्याते	शिश्यिरे
	शिश्यिषे	शिश्याथे	शिश्यध्वे/ढ्वे
	शिश्ये	शिश्यिवहि	शिश्यिमहि
आ०	शेषीष्ट	शेषीयास्ताम्	शेषीरन्
	शेषीष्ठाः	शेषीयास्थाम्	शेषीध्वम्
	शेषीय	शेषीवहि	शेषीमहि
श्व०	शेता	शेतारौ	शेतारः
	शेतासे	शेतासाथे	शेताध्वे
	शेताहे	शेतास्वहे	शेतास्मिहे
भ०	शेष्यते	शेष्येते	शेष्यन्ते
	शेष्यसे	शेष्येथे	शेष्यध्वे
	शेष्ये	शेष्यावहे	शेष्यामहे
क्रि०	अशेष्यत	अशेष्येताम्	अशेष्यन्त
	अशेष्यथाः	अशेष्येथाम्	अशेष्यध्वम्
	अशेष्ये	अशेष्यावहि	अशेष्यामहि

१२८९. डुमिंग्ट् (मि) प्रक्षेपणे।

व०	मिनोति	मिनुतः	मिन्वन्ति
स०	मिनुयात्	मिनुयाताम्	मिनुयुः
प०	मिनोतु/मिनुतात्	मिनुताम्	मिन्वन्तु
ह्य०	अमिनोत्	अमिनुताम्	अमिन्वन्
अ०	अमासीत्	अमासिष्टाम्	अमासिषुः
प०	ममौ	मिम्यतुः	मिम्युः
आ०	मीयात्	मीयास्ताम्	मीयासुः
श्व०	माता	मातारौ	मातारः
भ०	मास्यति	मास्यतः	मास्यन्ति
क्रि०	अमास्यत्	अमास्यताम्	अमास्यन्
व०	मिनुते	मिन्वाते	मिन्वते
स०	मिन्वीत	मिन्वीयाताम्	मिन्वीरन्
प०	मिनुताम्	मिन्वताम्	मिन्वताम
ह्य०	अमिनुत	अमिन्वाताम्	अमिवन्त
अ०	अमास्त	अमासाताम्	अमासत
प०	मिम्ये	मिम्याते	मिम्यिरे
आ०	मासीष्ट	मासीयास्ताम्	मासीरन्
श्व०	माता	मातारौ	मातारः
भ०	मास्यते	मास्येते	मास्यन्ते
क्रि०	अमास्यत	अमास्येताम्	अमास्यन्त

१२९०. चिंग्ट् (चि) चयने।

व०	चिनोति	चिनुतः	चिन्वन्ति
	चिनोषि	चिनुथः	चिनुथ
	चिनोमि	चिनुवः/चिन्वः	चिनुमः/चिन्मः
स०	चिनुयात्	चिनुयाताम्	चिनुयुः
	चिनुयाः	चिनुयातम्	चिनुयात

	चिनुयाम्	चिनुयाव	चिनुयाम
प०	चिनोतु/चिनुतात्	चिनुताम्	चिन्वन्तु
	चिनु/चिनुतात्	चिनुतम्	चिनुत
	चिनवानि	चिनवाव	चिनवाम
ह्य०	अचिनोत्	अचिनुताम्	अचिन्वन्
	अचिनोः	अचिनुतम्	अचिनुत
	अचिनवम्	अचिनुव/न्व	अचिनुम/न्म
अ०	अचैषीत्	अचैष्टाम्	अचैषुः
	अचैषीः	अचैष्टम्	अचैष्ट
	अचैषम्	अचैष्व	अचैष्म
प०	चिचाय	चिचयतुः	चिचयुः
	चिचयिथ/चिचेथ	चिचयथुः	चिचय
	चिचाय/चिचय	चिच्यिव	चिच्यिम
		तथा	
	चिकाय	चिक्यतुः	चिक्युः
	चिकयिथ/चिकेथ	चिक्यथुः	चिक्य
	चिकाय/चिकय	चिक्यिव	चिक्यिम
आ०	चीयात्	चीयास्ताम्	चीयासुः
	चीयाः	चीयास्तम्	चीयास्त
	चीयासम्	चीयास्व	चीयास्म
श्व०	चेता	चेतारौ	चेतारः
	चेतासि	चेतास्थः	चेतास्थ
	चेतास्मि	चेतास्वः	चेतास्मः
भ०	चेष्यति	चेष्यतः	चेष्यन्ति
	चेष्यसि	चेष्यथः	चेष्यथ
	चेष्यामि	चेष्यावः	चेष्यामः
क्रि०	अचेष्यत्	अचेष्यताम्	अचेष्यन्
	अचेष्यः	अचेष्यतम्	अचेष्यत
	अचेष्यम्	अचेष्याव	अचेष्याम
व०	चिनुते	चिन्वाते	चिन्वते
	चिनुषे	चिन्वाथे	चिनुध्वे
	चिन्वे	चिनुवह/चिन्वहे	चिनुमहे/चिन्महे
स०	चिन्वीत	चिन्वीयाताम्	चिन्वीरन्
	चिन्वीथाः	चिन्वीयाथाम्	चिन्वीध्वम्

	चिन्वीय	चिन्वीवहि	चिन्वीमहि
प०	चिनुताम्	चिन्वताम्	चिन्वताम्
	चिनुष्व	चिन्वाथाम्	चिनुध्वम्
	चिनवै	चिनवावहै	चिनवामहै
ह्य०	अचिनुत	अचिन्वाताम्	अचिवन्त
	अचिनुथाः	अचिन्वाथाम्	अचिनुध्वम्
	अचिन्वि	अचिनुवहि/न्वहि	अचिनुमहि/न्महि
अ०	अचेष्ट	अचेषाताम्	अचेषत
	अचेष्ठाः	अचेषाथाम्	अचेड्ढ्वम्
	अचेषि	अचेष्वहि	अचेष्महि
प०	चिच्ये	चिच्याते	चिच्यिरे
	चिच्यिषे	चिच्याथे	चिच्यध्वे/ढ्वे
	चिच्ये	चिच्यिवहि	चिच्यिमहि
		तथा	
	चिक्ये	चिक्याते	चिक्यिरे
	चिक्यिषे	चिक्याथे	चिक्यध्वे/ढ्वे
	चिक्ये	चिक्यिवहे	चिक्यिमहे
आ०	चेषीष्ट	चेषीयास्ताम्	चेषीरन्
	चेषीष्ठाः	चेषीयास्थाम्	चेषीध्वम्
	चेषीय	चेषीवहि	चेषीमहि
श्व०	चेता	चेतारौ	चेतारः
	चेतासे	चेतासाथे	चेताध्वे
	चेताहे	चेतास्वहे	चेतास्महे
भ०	चेष्यते	चेष्येते	चेष्यन्ते
	चेष्यसे	चेष्येथे	चेष्यध्वे
	चेष्ये	चेष्यावहे	चेष्यामहे
क्रि०	अचेष्यत	अचेष्येताम्	अचेष्यन्त
	अचेष्यथाः	अचेष्येथाम्	अचेष्यध्वम्
	अचेष्ये	अचेष्यावहि	अचेष्यामहि

अथोदन्तः सेट् च।

१२९१. धूगङ् (धू) कम्पने।

व०	धूनुते	धून्वाते	धून्वते
	धूनुषे	धून्वाथे	धूनुध्वे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धून्वे	धूनुवहे/धून्वहे	धूनुमहे/धून्महे
स०	धून्वीत	धून्वीयाताम्	धून्वीरन्
	धून्वीथाः	धून्वीयाथाम्	धून्वीध्वम्
	धून्वीय	धून्वीवहि	धून्वीमहि
प०	धूनुताम्	धून्वताम्	धून्वताम्
	धूनुष्व	धून्वाथाम्	धूनुध्वम्
	धूनवै	धूनवावहै	धूनवामहै
ह्य०	अधूनुत	अधून्वाताम्	अधून्वत
	अधूनुथाः	अधून्वाथाम्	अधूनुध्वम्
	अधून्वि	अधूनुवहि/न्वहि	अधूनुमहि/न्महि
अ०	अधविष्ट	अधविषाताम्	अधविषत
	अधविष्ठाः	अधविषाथाम्	अधविड्ढ्वम्/ध्वम्
		तथा	
	अधविषि	अधविष्वहि	अधविष्महि
	अधोष्ट	अधोषाताम्	अधोषत
	अधोष्ठाः	अधोषाथाम्	अधोड्ढ्वम, ध्वम्
	अधोषि	अधोष्वहि	अधोष्महि
प०	दुधुवे	दुधुवाते	दुधुविरे
	दुधुविषे	दुधुवाथे	दुधुविढ्वे/ध्वे
	दुधुवे	दुधुविवहे	दुधुविमहे
आ०	धविषीष्ट	धविषीयास्ताम्	धविषीरन्
	धविषीष्ठाः	धविषीयास्थाम्	धविषीध्वम्
	धविषीय	धविषीवहि	धविषीमहि
		तथा	
	धोषीष्ट	धोषीयास्ताम्	धोषीरन्
	धोषीष्ठाः	धोषीयास्थाम्	धोषीध्वम्
	धोषीय	धोषीवहि	धोषीमहि
श्व०	धोविता	धोवितारौ	धोवितारः
	धोवितासे	धोवितासाथे	धोविताध्वे
	धोविताहे	धोवितास्वहे	धोवितास्मिहे
		तथा	
	धोता	धोतारौ	धोतारः

	धोतासे	धोतासाथे	धोताध्वे
	धोताहे	धोतास्वहे	धोतास्मिहे
भ०	धविष्यते	धविष्येते	धविष्यन्ते
	धविष्यसे	धविष्येथे	धविष्यध्वे
	धविष्ये	धविष्यावहे	धविष्यामहे
		तथा	
	धोष्यते	धोष्येते	धोष्यन्ते
	धोष्यसे	धोष्येथे	धोष्यध्वे
	धोष्ये	धोष्यावहे	धोष्यामहे
क्रि०	अधविष्यत	अधविष्येताम्	अधविष्यन्त
	अधविष्यथाः	अधविष्येथाम्	अधविष्यध्वम्
	अधविष्ये	अधविष्यावहि	अधविष्यामहि
		तथा	
	अधोष्यत	अधोष्येताम्	अधोष्यन्त
	अधोष्यथाः	अधोष्येथाम्	अधोष्यध्वम्
	अधोष्ये	अधोष्यावहि	अधोष्यामहि
व०	धूनोति	धूनुतः	धून्वन्ति
	धूनोषि	धूनुथः	धूनुथ
	धूनोमि	धूनुवः/धून्वः	धूनुमः/धून्मः
स०	धूनुयात्	धूनुयाताम्	धूनुयुः
	धूनुयाः	धूनुयातम्	धूनुयात
	धूनुयाम्	धूनुयाव	धूनुयाम
प०	धूनोतु/धूनुतात्	धूनुताम्	धून्वन्तु
	धूनु/धूनुतात्	धूनुतम्	धूनुत
	धूनवानि	धूनवाव	धूनवाम
ह्य०	अधूनोत्	अधूनुताम्	अधून्वन्
	अधूनोः	अधूनुतम्	अधूनुत
	अधूनवम्	अधूनुव/न्व	अधूनुम/न्म
अ०	अधावीत्	अधाविष्टाम्	अधाविषुः
	अधावीः	अधाविष्टम्	अधाविष्ट
	अधाविषम्	अधाविष्व	अधाविष्म
प०	दुधाव	दुधुवतुः	दुधुवुः

	दुधविथ	दुधुवथुः	दुधुव
	दुधाव/दुधव	दुधुविव	दुधुविम
आ०	धूयात्	धूयास्ताम्	धूयासुः
	धूयाः	धूयास्तम्	धयास्त
	धूयासम्	धूयास्व	धूयास्म
श्व०	धविता	धोतारौ	धवितारः
	धवितासि	धवितास्थः	धवितास्थ
	धवितास्मि	धवितास्वः	धवितास्मः

तथा

	धोता	धोतारौ	धोतारः
	धोतासि	धोतास्थः	धोतास्थ
	धोतास्मि	धोतास्वः	धोतास्मः
भ०	धविष्यति	धविष्यतः	धविष्यन्ति
	धविष्यसि	धविष्यथः	धविष्यथ
	धविष्यामि	धविष्यावः	धविष्यामः

तथा

	धोष्यति	धोष्यतः	धोष्यन्ति
	धोष्यसि	धोष्यथः	धोष्यथ
	धोष्यामि	धोष्यावः	धोष्यामः
क्रि०	अधविष्यत्	अधविष्यताम्	अधविष्यन्
	अधविष्यः	अधविष्यतम्	अधविष्यत
	अधविष्यम्	अधविष्याव	अधविष्याम

तथा

	अधोष्यत्	अधोष्यताम्	अधोष्यन्
	अधोष्यः	अधोष्यतम्	अधोष्यत
	अधोष्यम्	अधोष्याव	अधोष्याम

अथ ऋदन्तास्त्रयो वृग्वर्जा अनिट्का।

१२९२. स्तृंगट् (स्तृ) आच्छादने।

व०	स्तृणोति	स्तृणुतः	स्तृण्वन्ति
स०	स्तृणुयात्	स्तृणुयाताम्	स्तृणुयुः
प०	स्तृणोतु	स्तृणुतात्/स्तृणुताम्	स्तृण्वन्तु
ह्य०	अस्तृणोत्	अस्तृणुताम्	अस्तृण्वन्
अ०	अस्तार्षीत्	अस्तार्ष्टाम्	अस्तार्षुः
प०	तस्तार	तस्तरतुः	तस्तरुः
आ०	स्तर्यात्	स्तर्यास्ताम्	स्तर्यासुः
श्व०	स्तर्ता	स्तर्तारौ	स्तर्तारः
भ०	स्तरिष्यति	स्तरिष्यतः	स्तरिष्यन्ति
क्रि०	अस्तरिष्यत्	अस्तरिष्यताम्	अस्तरिष्यन्
व०	स्तृणुते	स्तृण्वाते	स्तृण्वते
स०	स्तृण्वीत	स्तृण्वीयाताम्	स्तृण्वीरन्
प०	स्तृणुताम्	स्तृण्वाताम्	स्तृण्वताम
ह्य०	अस्तृणुत	अस्तृण्वाताम्	अस्तृवण्त
अ०	अस्तृत	अस्तृषाताम्	अस्तृषत
प०	तस्तरे	तस्तराते	तस्तरिरे
आ०	स्तृषीष्ट	स्तृषीयास्ताम्	स्तृषीरण्
श्व०	स्तर्ता	स्तर्तारौ	स्तर्तारः
भ०	स्तरिष्यते	स्तरिष्येते	स्तरिष्यण्ज्ञते
क्रि०	अस्तरिष्यत	अस्तरिष्येताम्	अस्तरिष्यण्ज्ञत

१२९३. कृंगट् (कृ) हिंसायाम्।

व०	कृणोति	कृणुतः	कृण्वन्ति
स०	कृणुयात्	कृणुयाताम्	कृणुयुः
प०	कृणोतु	कृणुतात्/कृणुताम्	कृण्वन्तु
ह्य०	अकृणोत्	अकृणुताम्	अकृण्वन्
अ०	अकार्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकार्षुः
प०	चकार	चक्रतुः	चक्रुः
आ०	क्रियात्	क्रियास्ताम्	क्रियासुः
श्व०	कर्त्ता	कर्त्तारौ	कर्त्तारः
भ०	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
क्रि०	अकरिष्यत्	अकरिष्यताम्	अकरिष्यन्
व०	कृणुते	कृण्वाते	कृण्वते
स०	कृण्वीत	कृण्वीयाताम्	कृण्वीरण्
प०	कृणुताम्	कृण्वाताम्	कृण्वताम
ह्य०	अकृणुत	अकृण्वाताम्	अकृवण्त
अ०	अकृत	अकृषाताम्	अकृषत
प०	चक्रे	चक्राते	चक्रिरे
आ०	कृषीष्ट	कृषीयास्ताम्	कृषीरण्
श्व०	कर्त्ता	कत्तारौ	कत्तारः
भ०	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
क्रि०	अकरिष्यत	अकरिष्येताम्	अकरिष्यन्ते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२९४. वृंग्द् (वृ) वरणे।

व०	वृणोति	वृणुतः	वृण्वन्ति
स०	वृणुयात्	वृणुयाताम्	वृणुयुः
प०	वृणोतु/वृणुतात्	वृणुताम्	वृण्वन्तु
ह्य०	अवृणोत्	अवृणुताम्	अवृण्वन्
अ०	अवारीत्	अवारिष्टाम्	अवारिषुः
प०	ववार	वव्रतुः	वव्रुः
आ०	व्रियात्	व्रियास्ताम्	व्रियासुः
श्व०	वरिता	वरितारौ	वरितारः
	वरीता	वरीतारौ	वरीतारः इ०
भ०	वरिष्यति	वरिष्यतः	वरिष्यन्ति
क्रि०	अवरिष्यत्	अवरिष्यताम्	अवरिष्यन्
	अवरीष्यत्	अवरीष्यताम्	अवरीष्यन् इ०
व०	वृणुते	वृण्वाते	वृण्वते
स०	वृण्वीत	वृण्वीयाताम्	वृण्वीरण्
प०	वृणुताम्	वृण्वाताम्	वृण्वताम
ह्य०	अवृणुत	अवृण्वाताम्	अवृवण्त
अ०	अवृत	अवृषाताम्	अवृषत
	अवरिष्ट	अवरिषाताम्	अवरिषत् इत्यादि।
	अवरीष्ट	अवरीषाताम्	अवरीषत् इत्यादि।
प०	वव्रे	वव्राते	वव्रिरे
आ०	वरिषीष्ट	वरिषीयास्ताम्	वरिषीरण्
	वृषीष्ट	वृषीयास्ताम्	वृषीरन् इ०
श्व०	वरिता	वरितारौ	वरितारः
भ०	वरिष्यते	वरिष्येते	वरिष्यण्ज्ञते
क्रि०	अवरिष्यत	अवरिष्येताम्	अवरिष्यण्ज्ञत
	अवरिष्यत	अवहीष्येताम्	अवरीष्यन्त इ०

॥इत्युभयपदिनः॥

अथ परस्मैपदिध्विदन्तोऽनिट् च।

१२९५. हिंद् (हि) गतिवृद्ध्योः।

व०	हिनोति	हिनुतः	हिन्वन्ति
	हिनोषि	हिनुथः	हिनुथ
	हिनोमि	हिनुवः/न्वः	हिनुमः/न्मः
स०	हिनुयात्	हिनुयाताम्	हिनुयुः
	हिनुयाः	हिनुयातम्	हिनुयात
	हिनुयाम्	हिनुयाव	हिनुयाम
प०	हिनोतु/हिनुतात्	हिनुताम्	हिनुवन्तु
	हिनु/हिनुतात्	हिनुतम्	हिनुत
	हिनवानि	हिनवाव	हिनवाम
ह्य०	अहिनोत्	अहिनुताम्	अहिनुवन्
	अहिनोः	अहिनुतम्	अहिनुत
	अहिनवम्	अहिनुव/न्व	अहिनुम/न्म
अ०	अहैषीत्	अहैष्टाम्	अहैषुः
	अहैषीः	अहैष्टम्	अहैष्ट
	अहैषम्	अहैष्व	अहैष्म
प०	जिघाय	जिघ्यतुः	जिघ्युः
	जिघयिथ/जिघेथ	जिघ्यथुः	जिघ्य
	जिघाय/जिघय	जिघ्यिव	जिघ्यिम
आ०	हीयात्	हीयास्ताम्	हीयासुः
	हीयाः	हीयास्तम्	हीयास्त
	हीयासम्	हीयास्व	हीयास्म
श्व०	हेता	हेतारौ	हेतारः
	हेतासि	हेतास्थः	हेतास्थ
	हेतास्मि	हेतास्वः	हेतास्मः
भ०	हेष्यति	हेष्यतः	हेष्यन्ति
	हेष्यसि	हेष्यथः	हेष्यथ
	हेष्यामि	हेष्यावः	हेष्यामः
क्रि०	अहेष्यत्	अहेष्यताम्	अहेष्यन्
	अहेष्यः	अहेष्यतम्	अहेष्यत
	अहेष्यम्	अहेष्याव	अहेष्याम

अथोदन्तावनिटौ च।

१२९६. श्रुद् (श्रु) श्रवणे। गतावित्यन्ये।

व०	शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति
	शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ
	शृणोमि	शृणुवः/ण्वः	शृणुमः/ण्मः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स०	शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः
	शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात
	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम
प०	शृणोतु/शृणुतात्	शृणुताम्	शृण्वन्तु
	शृणु/शृणुतात्	शृणुतम्	शृणुत
	शृणवानि	शृणवाव	शृणवाम
ह्य०	अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्
	अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत
	अशृणवम्	अशृणुव/ण्व	अशृणुम/ण्म
अ०	अश्रौषीत्	अश्रौष्टाम्	अश्रौषुः
	अश्रौषीः	अश्रौष्टम्	अश्रौष्ट
	अश्रौषम्	अश्रौष्व	अश्रौष्म
प०	शुश्राव	शुश्रुवतुः	शुश्रुवुः
	शुश्रोथ	शुश्रुवथुः	शुश्रुव
	शुश्राव/शुश्रव	शुश्रुव	शुश्रुम
आ०	श्रूयात्	श्रूयास्ताम्	श्रूयासुः
	श्रूयाः	श्रूयास्तम्	श्रूयास्त
	श्रूयासम्	श्रूयास्व	श्रूयास्म
श्व०	श्रोता	श्रोतारौ	श्रोतारः
	श्रोतासि	श्रोतास्थः	श्रोतास्थ
	श्रोतास्मि	श्रोतास्वः	श्रोतास्मः
भ०	श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति
	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ
	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः
क्रि०	अश्रोष्यत्	अश्रोष्यताम्	अश्रोष्यन्
	अश्रोष्यः	अश्रोष्यतम्	अश्रोष्यत
	अश्रोष्यम्	अश्रोष्याव	अश्रोष्याम

१२९७. टुदुंद् (दु) उपतापे।

व०	दुनोति	दुनुतः	दुन्वन्ति
	दुनोषि	दुनुथः	दुनुथ
	दुनोमि	दुनुवः/न्वः	दुनुमः/न्मः
स०	दुनुयात्	दुनुयाताम्	दुनुयुः
	दुनुयाः	दुनुयातम्	दुनुत
	दुनुयाम्	दुनुयाव	दुनुयाम
प०	दुनोतु/दुनुतात्	दुनुताम्	दुन्वन्तु
	दुनु/दुनुतात्	दुनुतम्	दुनुत
	दुनवानि	दुनवाव	दुनवाम
ह्य०	अदुनोत्	अदुनुताम्	अदुन्वन्
	अदुनोः	अदुनुतम्	अदुनुत
	अदुनवम्	अदुनुव/न्व	अदुनुम/न्म
अ०	अदौषीत्	अदौष्टाम्	अदौषुः
	अदौषीः	अदौष्टम्	अदौष्ट
	अदौषम्	अदौष्व	अदौष्म
प०	दुदाव	दुदुवतुः	दुदुवुः
	दुदविथ/दुदोथ	दुदुवथुः	दुदुव
	दुदाव/दुदव	दुदुविव	दुदुविम
आ०	दूयात्	दूयास्ताम्	दूयासुः
	दूयाः	दूयास्तम्	दूयास्त
	दूयासम्	दूयास्व	दूयास्म
श्व०	दोता	दोतारौ	दोतारः
	दोतासि	दोतास्थः	दोतास्थ
	दोतास्मि	दोतास्वः	दोतास्मः
भ०	दोष्यति	दोष्यतः	दोष्यन्ति
	दोष्यसि	दोष्यथः	दोष्यथ
	दोष्यामि	दोष्यावः	दोष्यामः
क्रि०	अदोष्यत्	अदोष्यताम्	अदोष्यन्
	अदोष्यः	अदोष्यतम्	अदोष्यत
	अदोष्यम्	अदोष्याव	अदोष्याम

अथ ऋदन्तावनिटौ च।

१२९८. पृट् (पृ) प्रीतौ।

व०	पृणोति	पृणुतः	पृण्वन्ति
	पृणोषि	पृणुथः	पृणुथ
	पृणोमि	पृणुवः/ण्वः	पृणुमः/ण्मः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स०	पृणुयात्	पृणुयाताम्	पृणुयुः
	पृणुयाः	पृणुयातम्	पृणुयात
	पृणुयाम्	पृणुयाव	पृणुयाम
प०	पृणोतु/पृणुतात्	पृणुताम्	पृणुवन्तु
	पृणु/पृणुतात	पृणुतम्	पृणुत
	पृणवानि	पृणवाव	पृणवाम
ह्य०	अपृणोत्	अपृणुताम्	अपृणुवन्
	अपृणोः	अपृणुतम्	अपृणुत
	अपृणवम्	अपृणुव/ण्व	अपृणुम/ण्म
अ०	अपार्षीत्	अपार्ष्टाम्	अपार्षुः
	अपार्षीः	अपार्ष्टम्	अपार्ष्ट
	अपार्षम्	अपार्ष्व	अपार्ष्म
प०	पपार	पप्रतुः	पप्रुः
	पपर्थ	पप्रथुः	पप्र
	पपार/पपर	पप्रिव	पप्रिम
आ०	प्रियात्	प्रियास्ताम्	प्रियासुः
	प्रियाः	प्रियास्तम्	प्रियास्त
	प्रियासम्	प्रियास्व	प्रियास्म
श्व०	पर्ता	पर्तारौ	पर्तारः
	पर्तासि	पर्तास्थः	पर्तास्थ
	पर्तास्मि	पर्तास्वः	पर्तास्मः
भ०	परिष्यति	परिष्यतः	परिष्यन्ति
	परिष्यसि	परिष्यथः	परिष्यथ
	परिष्यामि	परिष्यावः	परिष्यामः
क्रि०	अपरिष्यत्	अपरिष्यताम्	अपरिष्यन्
	अपरिष्यः	अपरिष्यतम्	अपरिष्यत
	अपरिष्यम्	अपरिष्याव	अपरिष्याम

१२९९. स्मृट (स्मृ) पालने च।

चकारात्प्रीतौ। जीवनेऽप्यन्ये।

व०	स्मृणोति	स्मृणुतः	स्मृण्वन्ति
स०	स्मृणुयात्	स्मृणुयाताम्	स्मृणुयुः
प०	स्मृणोतु/स्मृणुतात्	स्मृणुताम्	स्मृणुवन्तु
ह्य०	अस्मृणोत्	अस्मृणुताम्	अस्मृणुवन्
अ०	अस्मार्षीत्	अस्मार्ष्टाम्	अस्मार्षुः
प०	सस्मार	सस्मरतुः	सस्मरुः
आ०	स्मर्यात्	स्मर्यास्ताम्	स्मर्यासुः
श्व०	स्मर्ता	स्मर्तारौ	स्मर्तारः
भ०	स्मरिष्यति	स्मरिष्यतः	स्मरिष्यन्ति
क्रि०	अस्मरिष्यत्	अस्मरिष्यताम्	अस्मरिष्यन्

अथ कान्तौ।

१३००. शक्लृंट् (शक्) शक्तौ।

व०	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति
	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ
	शक्नोमि	शक्नुवः/न्वः	शक्नुमः/न्मः
स०	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः
	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम
प०	शक्नोतु/शक्नुतात्	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
	शक्नुहि/शक्नुतात्	शक्नुतम्	शक्नुत
	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम
ह्य०	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत
	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम
अ०	अशकत्	अशकताम्	अशकन्
	अशकः	अशकतम्	अशकत
	अशकम्	अशकाव	अशकाम
प०	शशाक	शेकतुः	शेकुः
	शेकिथ/शशक्थ	शेकथुः	शेक
	शशाक/शशक	शेकिव	शेकिम
आ०	शक्यात्	शक्यास्ताम्	शक्यासुः
	शक्याः	शक्यास्तम्	शक्यास्त
	शक्यासम्	शक्यास्व	शक्यास्म
श्व०	शक्ता	शक्तारौ	शक्तारः
	शक्तासि	शक्तास्थः	शक्तास्थ
	शक्तास्मि	शक्तास्वः	शक्तास्मः
भ०	शक्ष्यति	शक्ष्यतः	शक्ष्यन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	शक्ष्यसि	शक्ष्यथः	शक्ष्यथ
	शक्ष्यामि	शक्ष्यावः	शक्ष्यामः
क्रि०	अशक्ष्यत्	अशक्ष्यताम्	अशक्ष्यन्
	अशक्ष्यः	अशक्ष्यतम्	अशक्ष्यत
	अशक्ष्यम्	अशक्ष्याव	अशक्ष्याम

ये तु शक्यते: पुषादित्वं प्रतिपन्नास्तेषां पुषादित्वादेवाङि सिद्धे लृदित्वमात्मनेपदेऽप्यङर्थम्। तेन क्रियाव्यतिहार इत्यात्मनेपदेऽङि व्यत्यशकत-

१३०१. तिकट् (तिक्) हिंसायाम्।

आस्कन्दने ऽपीत्येके।

व०	तिक्नोति	तिक्नुतः	तिक्न्वन्ति
स०	तिक्नुयात्	तिक्नुयाताम्	तिक्नुयुः
प०	तिक्नोतु/तिक्नुतात्	तिक्नुताम्	तिक्नुवन्तु
ह्य०	अतिक्नोत्	अतिक्नुताम्	अतिक्नुवन्
अ०	अतेकीत्	अतेकिष्टाम्	अतेकिषुः
प०	तितेक	तितिकतुः	तितिकुः
आ०	तिक्यात्	तिक्यास्ताम्	तिक्यासुः
श्व०	तेकिता	तेकितारौ	तेकितारः
भ०	तेकिष्यति	तेकिष्यतः	तेकिष्यन्ति
क्रि०	अतेकिष्यत्	अतेकिष्यताम्	अतेकिष्यन्

अथ गान्ता: सेट् च।

१३०२. तिगट् (तिग्) हिंसायाम्।

आस्कदनेऽपि केचित्।

व०	तिग्नोति	तिग्नुतः	तिग्नुवन्ति
स०	तिग्नुयात्	तिग्नुयाताम्	तिग्नुयुः
प०	तिग्नोतु/तिग्नुतात्	तिग्नुताम्	तिग्नुवन्तु
ह्य०	अतिग्नोत्	अतिग्नुताम्	अतिग्नुवन्
अ०	अतेगीत्	अतेगिष्टाम्	अतेगिषुः
प०	तितेग	तितिगतुः	तितिगुः
आ०	तिग्यात्	तिग्यास्ताम्	तिग्यासुः
श्व०	तेगिता	तेगितारौ	तेगितारः
भ०	तेगिष्गति	तेगिष्यतः	तेगिष्यन्ति
क्रि०	अतेगिष्यत्	अतेगिष्यताम्	अतेगिष्यन्

अथ घान्त: सेट् च।

१३०३. षघट् (सघ्) हिंसायाम्।

व०	सघ्नोति	सघ्नुतः	सघ्नुवन्ति
स०	सघ्नुयात्	सघ्नुयाताम्	सघ्नुयुः
प०	सघ्नोतु/सघ्नुतात्	सघ्नुताम्	सघ्नुवन्तु
ह्य०	असघ्नोत्	असघ्नुताम्	असघ्नुवन्
अ०	असाघीत्	असाघिष्टाम्	असाघिषुः
	असघीत्	असघिष्टाम्	असघिषुः इत्यादि।
प०	ससाव	सेघतुः	सेघुः
आ०	सघ्यात्	सघ्यास्ताम्	सघ्यासुः
श्व०	सघिता	सघितारौ	सघितारः
भ०	सघिष्यति	सघिष्यतः	सघिष्यन्ति
क्रि०	असघिष्यत्	असघिष्यताम्	असघिष्यन्

अथ धान्तास्त्रयः

१३०४. राधंट् (राध्) संसिद्धौ। संसिद्धिः फलनिष्पत्तिः।

व०	राध्नोति	राध्नुतः	राध्नुवन्ति
	राध्नोषि	राध्नुथः	राध्नुथ
	राध्नोमि	राध्नुवः	राध्नुमः
स०	राध्नुयात्	राध्नुयाताम्	राध्नुयुः
	राध्नुयाः	राध्नुयातम्	राध्नुयात
	राध्नुयाम्	राध्नुयाव	राध्नुयाम
प०	राध्नोतु/राध्नुतात्	राध्नुताम्	राध्नुवन्तु
	राध्नोहि/राध्नुतात्	राध्नुतम्	राध्नुत
	राध्नवानि	राध्नवाव	राध्नवाम
ह्य०	अराध्नोत्	अराध्नुताम्	अराध्नुवन्
	अराध्नोः	अराध्नुतम्	अराध्नुत
	अराध्नवम्	अराध्नुव	अराध्नुम
अ०	अरात्सीत्	अराद्धाम्	अरात्सुः
	अरात्सीः	अराद्धम्	अराद्ध
	अरात्सम्	अरात्स्व	अरात्स्म
प०	रराध	राधतुः	रराधुः
	रराधिथ	राधथुः	रराध
	रराध	रराधिव	रराधिम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिंसार्थत्वे

	अपरराध	अपरेधतुः	अपरेधुः
	अपरेधिथ	अपरेधथुः	अपरेध
	अपरराध	अपरेधिव	अपरेधिम
आ०	राध्यात्	राध्यास्ताम्	राध्यासुः
	राध्याः	राध्यास्तम्	राध्यास्त
	राध्यासम्	राध्यास्व	राध्यास्म
श्व०	राद्धा	राद्धारौ	राद्धारः
	राद्धासि	राद्धास्थः	राद्धास्थ
	राद्धास्मि	राद्धास्वः	राद्धास्मः
भ०	रात्स्यति	रात्स्यतः	रात्स्यन्ति
	रात्स्यसि	रात्स्यथः	रात्स्यथ
	रात्स्यामि	रात्स्यावः	रात्स्यामः
क्रि०	अरात्स्यत्	अरात्स्यताम्	अरात्स्यन्
	अरात्स्यः	अरात्स्यतम्	अरात्स्यत
	अरात्स्यम्	अरात्स्याव	अरात्स्याम

१३०५. साधंद् (साध्) संसिद्धौ

संसिद्धिः फलनिष्पत्तिः। सोपदेशोऽयमित्येके तन्मतेऽपि नात्र विशेषः, अपि तु सिषाधयिषतीत्यत्र।

व०	साध्नोति	साध्नुतः	साध्नुवन्ति
स०	साध्नुयात्	साध्नुयाताम्	साध्नुयुः
प०	साध्नोतु/साध्नुतात्	साध्नुताम्	साध्नुवन्तु
ह्य०	असाध्नोत्	असाध्नुताम्	असाध्नुवन्
अ०	असात्सीत्	असाद्धाम्	असात्सुः
प०	ससाध	ससाधतुः	ससाधुः
आ०	साध्यात्	साध्यास्ताम्	साध्यासुः
श्व०	साद्धा	साद्धारौ	साद्धारः
भ०	सात्स्यति	सात्स्यतः	सात्स्यन्ति
क्रि०	असात्स्यत्	असात्स्यताम्	असात्स्यन्

१३०६. ऋधूद् (ऋध्) वृद्धौ

व०	ऋध्नोति	ऋध्नुतः	ऋध्नुवन्ति
स०	ऋध्नुयात्	ऋध्नुयाताम्	ऋध्नुयुः
प०	ऋध्नोतु/ऋध्नुतात्	ऋध्नुताम्	ऋध्नुवन्तु
ह्य०	आर्ध्नोत्	आर्ध्नुताम्	आर्ध्नुवन्
अ०	आर्धीत्	आर्धिष्टाम्	आर्धिषुः
प०	आनर्ध	आनृधतुः	आनृधुः
आ०	ऋध्यात्	ऋध्यास्ताम्	ऋध्यासुः
श्व०	अर्धिता	अर्धितारौ	अर्धितारः
भ०	अर्धिष्यति	अर्धिष्यतः	अर्धिष्यन्ति
क्रि०	आर्धिष्यत्	आर्धिष्यताम्	आर्धिष्यन्

अथ पान्तौ।

१३०७. आप्लृंद् (आप्) व्याप्तौ।

व०	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति
स०	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः
प०	आप्नोतु/आप्नुतात्	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु
ह्य०	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्
अ०	आपत्	आपताम्	आपन्
प०	आप	आपतुः	आपुः
आ०	आप्यात्	आप्यास्ताम्	आप्यासुः
श्व०	आप्ता	आप्तारौ	आप्तारः
भ०	आप्स्यति	आप्स्यतः	आप्स्यन्ति
क्रि०	आप्स्यत्	आप्स्यताम्	आप्स्यन्

१३०८. तृपद् (तृप्) प्रीणने। क्षुम्नादित्वाण्णत्वाभावः।

व०	तृप्नोति	तृप्नुतः	तृप्नुवन्ति
स०	तृप्नुयात्	तृप्नुयाताम्	तृप्नुयुः
प०	तृप्नोतु/तृप्नुतात्	तृप्नुताम्	तृप्नुवन्तु
ह्य०	अतृप्नोत्	अतृप्नुताम्	अतृप्नुवन्
अ०	अतर्पीत	अतर्पिष्टाम्	अतर्पिषुः
प०	ततर्प	ततृपतुः	ततृपुः
आ०	तृप्यात्	तृप्यास्ताम्	तृप्यासुः
श्व०	तर्पिता	तर्पितारौ	तर्पितारः
भ०	तर्पिष्यति	तर्पिष्यतः	तर्पिष्यन्ति
क्रि०	अतर्पिष्यत्	अतर्पिष्यताम्	अतर्पिष्यन्

अथ भान्तः सेट् च।

१३०९. दम्भुद् (दम्भ्) दम्भे।

व०	दभ्नोति	दभ्नुतः	दभ्नुवन्ति
स०	दभ्नुयात्	दभ्नुयाताम्	दभ्नुयुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	दभ्नोतु/दभ्नुतात्	दभ्नुताम्	दभ्नुवन्तु
ह्य०	अदभ्नोत्	अदभ्नुताम्	अदभ्नुवन्
अ०	अदम्भीत	अदम्भिष्टाम्	अदम्भिषु:
प०	ददम्भ	देभतु:	देभु:
आ०	दभ्यात्	दभ्यास्ताम्	दभ्यासु:
श्व०	दम्भिता	दम्भितारौ	दम्भितार:
भ०	दम्भिष्यति	दम्भिष्यत:	दम्भिष्यन्ति
क्रि०	अदम्भिष्यत्	अदम्भिष्यताम्	अदम्भिष्यन्

अथ वान्तौ सेटौ च।

१३१०. कृंवूट् (कृन्व्) हिंसाकरणयो:।

व०	कृणोति	कृणुत:	कृण्वन्ति
स०	कृणुयात्	कृणुयाताम्	कृणुयु:
प०	कृणोतु/कृणुतात्	कृणुताम्	कृण्वन्तु
ह्य०	अकृणोत्	अकृणुताम्	अकृण्वन्
अ०	अकृण्वीत्	अकृण्विष्टाम्	अकृण्विषु:
प०	चकृण्व	चकृण्वतु:	चकृण्वु:
आ०	कृण्व्यात्	कृण्व्यास्ताम्	कृण्व्यासु:
श्व०	कृण्विता	कृण्वितारौ	कृण्वितार:
भ०	कृण्विष्यति	कृण्विष्यत:	कृण्विष्यन्ति
क्रि०	अकृण्विष्यत्	अकृण्विष्यताम्	अकृण्विष्यन्

१३११. धिवुट् (धिन्व्) गतौ।

प्रीणनेऽप्यन्ये।

व०	धिनोति	धिनुत:	धिन्वन्ति
	धिनोषि	धिनुथ:	धिनुथ
	धिनोमि	धिनुव:	धिनुम:
स०	धिनुयात्	धिनुयाताम्	धिनुयु:
	धिनुया:	धिनुयातम्	धिनुयात
	धिनुयाम्	धिनुयाव	धिनुयाम
प०	धिनोतु/धिनुतात्	धिनुताम्	धिनुवन्तु
	धिनु/धिनुतात्	धिनुतम्	धिनुत
	धिनवानि	धिनवाव	धिनवाम
ह्य०	अधिनोत्	अधिनुताम्	अधिनुवन्
	अधिनो:	अधिनुतम्	अधिनुत
	अधिनवम्	अधिनुव	अधिनुम
अ०	अधिन्वीत्	अधिन्विष्टाम्	अधिन्विषु:
	अधिन्वी:	अधिन्विष्टम्	अधिन्विष्ट
	अधिन्विषम्	अधिन्विष्व	अधिन्विष्म
प०	दिधिन्व	दिधिन्वतु:	दिधिन्वु:
	दिधिन्विथ	दिधिन्वथु:	दिधिन्व
	दिधिन्व	दिधिन्विव	दिधिन्विम
आ०	धिन्व्यात्	धिन्व्यास्ताम्	धिन्व्यासु:
	धिन्व्या:	धिन्व्यास्तम्	धिन्व्यास्त
	धिन्व्यासम्	धिन्व्यास्व	धिन्व्यास्म
श्व०	धिन्विता	धिन्वितारौ	धिन्वितार:
	धिन्वितासि	धिन्वितास्थ:	धिन्वितास्थ
	धिन्वितास्मि	धिन्वितास्व:	धिन्वितास्म:
भ०	धिन्विष्यति	धिन्विष्यत:	धिन्विष्यन्ति
	धिन्विष्यसि	धिन्विष्यथ:	धिन्विष्यथ
	धिन्विष्यामि	धिन्विष्याव:	धिन्विष्याम:
क्रि०	अधिन्विष्यत्	अधिन्विष्यताम्	अधिन्विष्यन्
	अधिन्विष्य:	अधिन्विष्यतम्	अधिन्विष्यत
	अधिन्विष्यम्	अधिन्विष्याव	अधिन्विष्याम

येऽन्यैरिहाष्टौ पठिता अङ्व्याप्तौ दघ घातने ऋक्षि चिरि जिरि दास दु हिंसायामित्युदाहृताश्च अड्णोति दघ्नोति ऋक्ष्णोति। केचित्तु ऋक्षिं छिन्दन्ति ऋणोति क्षिणोति चिरिणोति जिरिणोति इति ते लौकिका इत्यस्माभिरुपेक्षिता:।

अथ षान्त: सेट च।

१३१२. ञिधृषाद् प्रागल्भ्ये।

व०	धृष्णोति	धृष्णुत:	धृष्णुवन्ति
	धृष्णोषि	धृष्णुथ:	धृष्णुथ
	धृष्णोमि	धृष्णुव:	धृष्णुम:
स०	धृष्णुयात्	धृष्णुयाताम्	धृष्णुयु:
	धृष्णुया:	धृष्णुयातम्	धृष्णुयात
	धृष्णुयाम्	धृष्णुयाव	धृष्णुयाम
प०	धृष्णोत/धृष्णुतात्	धृष्णुताम्	धृष्णुवन्तु
	धृष्णुहि/धृष्णुतात्	धृष्णुतम्	धृष्णुत
	धृष्णवानि	धृष्णवाव	धृष्णवाम
ह्य०	अधृष्णोत्	अधृष्णुताम्	अधृष्णुवन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अधृष्णोः	अधृष्णुतम्	अधृष्णुत
	अधृष्णवम्	अधृष्णुव	अधृष्णुम
अ०	अधर्षीत्	अधर्षिष्टाम्	अधर्षिषुः
	अधर्षीः	अधर्षिष्टम्	अधर्षिष्ट
	अधर्षिषम्	अधर्षिष्व	अधर्षिष्म
प०	दधर्ष	दधृषतुः	दधृषुः
	दधर्षिथ	दधृषथुः	दधृष
	दधर्ष	दधृषिव	दधृषिम
आ०	धृष्यात्	धृष्यास्ताम्	धृष्यासुः
	धृष्याः	धृष्यास्तम्	धृष्यास्त
	धृष्यासम्	धृष्यास्व	धृष्यास्म
श्व०	धर्षिता	धर्षितारौ	धर्षितारः
	धर्षितासि	धर्षितास्थः	धर्षितास्थ
	धर्षितास्मि	धर्षितास्वः	धर्षितास्मः
भ०	धर्षिष्यति	धर्षिष्यतः	धर्षिष्यन्ति
	धर्षिष्यसि	धर्षिष्यथः	धर्षिष्यथ
	धर्षिष्यामि	धर्षिष्यावः	धर्षिष्यामः
क्रि०	अधर्षिष्यत्	अधर्षिष्यताम्	अधर्षिष्यन्
	अधर्षिष्यः	अधर्षिष्यतम्	अधर्षिष्यत
	अधर्षिष्यम्	अधर्षिष्याव	अधर्षिष्याम

॥इति परस्मैपदिनः॥

॥अथात्मनेपदिनौ सेटौ च॥

१३१३. ष्टिघिट् (स्तिघ्) आस्कन्दने।

व०	स्तिघ्नुते	स्तिघ्नुवाते	स्तिघ्नुवते
	स्तिघ्नुषे	स्तिघ्नुवाथे	स्तिघ्नुध्वे
	स्तिघ्नुवे	स्तिघ्नुवहे	स्तिघ्नुमहे
स०	स्तिघ्नुवीत	स्तिघ्नुवीयाताम्	स्तिघ्नुवीरन्
	स्तिघ्नुवीथाः	स्तिघ्नुवीयाथाम्	स्तिघ्नुवीध्वम्
	स्तिघ्नुवीय	स्तिघ्नुवीवहि	स्तिघ्नुवीमहि
प०	स्तिघ्नुताम्	स्तिघ्नुवताम्	स्तिघ्नुवताम्
	स्तिघ्नुष्व	स्तिघ्नुवाथाम्	स्तिघ्नुध्वम्
	स्तिघ्नुवै	स्तिघ्नुवावहै	स्तिघ्नुवामहै
ह्य०	अस्तिघ्नुत	अस्तिघ्नुवाताम्	अस्तिघ्नुवत
	अस्तिघ्नुथाः	अस्तिघ्नुवाथाम्	अस्तिघ्नुध्वम्
	अस्तिघ्नुवि	अस्तिघ्नुवहि	अस्तिघ्नुमहि
अ०	अस्तेघिष्ट	अस्तेघिषाताम्	अस्तेघिषत
	अस्तेघिष्ठाः	अस्तेघिषाथाम्	अस्तेघिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अस्तेघिषि	अस्तेघिष्वहि	अस्तेघिष्महि
प०	तिष्टिघे	तिष्टिघाते	तिष्टिघिरे
	तिष्टिघिषे	तिष्टिघाथे	तिष्टिघिध्वे
	तिष्टिघे	तिष्टिघिवहे	तिष्टिघिमहे
आ०	स्तेघिषीष्ट	स्तेघिषीयास्ताम्	स्तेघिषीरन्
	स्तेघिषीष्ठाः	स्तेघिषीयास्थाम्	स्तेघिषीध्वम्
	स्तेघिषीय	स्तेघिषीवहि	स्तेघिषीमहि
श्व०	स्तेघिता	स्तेघितारौ	स्तेघितारः
	स्तेघितासे	स्तेघितासाथे	स्तेघिताध्वे
	स्तेघिताहे	स्तेघितास्वहे	स्तेघितास्मिहे
भ०	स्तेघिष्यते	स्तेघिष्येते	स्तेघिष्यन्ते
	स्तेघिष्यसे	स्तेघिष्येथे	स्तेघिष्यध्वे
	स्तेघिष्ये	स्तेघिष्यावहे	स्तेघिष्यामहे
क्रि०	अस्तेघिष्यत	अस्तेघिष्येताम्	अस्तेघिष्यन्त
	अस्तेघिष्यथाः	अस्तेघिष्येथाम्	अस्तेघिष्यध्वम्
	अस्तेघिष्ये	अस्तेघिष्यावहि	अस्तेघिष्यामहि

१३१४. अशौटि (अश्) व्याप्तौ। संघातेऽप्यन्ये।

व०	अश्नुते	अश्नुवाते	अश्नुवते
स०	अश्नुवीत	अश्नुवीयाताम्	अश्नुवीरन्
प०	अश्नुताम्	अश्नुवाताम्	अश्नुवताम्
ह्य०	आश्नुत	आश्नुवाताम्	आश्नुवत
अ०	आशिष्ट	आशिषाताम्	आशिषत
	आष्ट	आक्षाताम्	आक्षात, इत्यादि
प०	आनशे	आनशाते	आनशिरे
आ०	अशिषीष्ट	अशिषीयास्ताम्	अशिषीरन्
	अक्षीष्ट	अक्षीयास्ताम्	अक्षीरन् इत्यादि।
श्व०	अष्टा	अष्टारौ	अष्टारः
	अशिता	अशितारौ	अशितारः इत्यादि
भ०	अशिष्यते	अशिष्येते	अशिष्यन्ते
क्रि०	आशिष्यत	आशिष्येताम्	आशिष्यन्त
	आक्ष्यत	आक्ष्येताम्	आक्ष्यन्त, इत्यादि

॥स्वादिगणश्नुविकरणः सम्पूर्णः॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥अथ तुदादयस्ततो वर्णक्रमेण प्रदर्श्यन्ते।

तत्र प्रसिद्धयनुरोधेनादौ॥

१३१५. तुदींत् (तुद्) व्यथने।

व०	तुदति	तुदतः	तुदन्ति
स०	तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः
प०	तुदतु/तुदतात्	तुदताम्	तुदन्तु
ह्य०	अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्
अ०	अतौत्सीत्	अतौत्ताम्	अतौत्सुः
प०	तुतोद	तुतुदतुः	तुतुदुः
आ०	तुद्यात्	तुद्यास्ताम्	तुद्यासुः
श्व०	तोत्ता	तोत्तारौ	तोत्तारः
भ०	तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति
क्रि०	अतोत्स्यत्	अतोत्स्यताम्	अतोत्स्यन्
व०	तुदते	तुदेते	तुदन्ते
स०	तुदेत	तुदेयाताम्	तुदेरन्
प०	तुदताम्	तुदेताम्	तुदन्ताम्
ह्य०	अतुदत	अतुदेताम्	अतुदन्त
अ०	अतुत्त	अतुत्साताम्	अतुत्सत
प०	तुतुदे	तुतुदाते	तुतुदिरे
आ०	तुत्सीष्ट	तुत्सीयास्ताम्	तुत्सीरन्
श्व०	तोत्ता	तोत्तारौ	तोत्तारः
भ०	तोत्स्यते	तोत्स्येते	तोत्स्यन्ते
क्रि०	अतोत्स्यत	अतोत्स्येताम्	अतोत्स्यन्त

अथ जान्तोऽनिट् च।

१३१६. भ्रस्जींत् (भ्रस्ज्) पाके।२

व०	भृज्जति	भृज्जतः	भृज्जन्ति
स०	भृज्जेत्	भृज्जेताम्	भृज्जेयुः
प०	भृज्जतु/भृज्जतात्	भृज्जताम्	भृज्जन्तु
ह्य०	अभृज्जत्	अभृज्जताम्	अभृज्जन्
अ०	अभार्क्षीत्	अभार्ष्टाम्	अभार्क्षुः
	अभ्राक्षीत्	अभ्राष्टाम्	अभ्राक्षुः, इत्यादि।
प०	बभ्रज्ज	बभ्रज्जतुः	बभ्रज्जुः
	बभर्ज	बभर्जतु	बभर्जु, इत्यादि।
आ०	भृज्ज्यात्	भृज्ज्यास्ताम्	भृज्ज्यासुः
श्व०	भर्ष्टा	भर्ष्टारौ	भर्ष्टारः
भ०	भर्क्ष्यति	भर्क्ष्यतः	भर्क्ष्यन्ति
क्रि०	अभर्क्ष्यत्	अभर्क्ष्यताम्	अभर्क्ष्यन्
	अभ्रक्ष्यत	अभ्रक्ष्यताम्	अभ्रक्ष्यन्, इत्यादि
व०	भृज्जते	भृज्जेते	भृज्जन्ते
स०	भृज्जेत	भृज्जेयाताम्	भृज्जेरन्
प०	भृज्जताम्	भृज्जेताम्	भृज्जन्ताम्
ह्य०	अभृज्जत	अभृज्जेताम्	अभृज्जन्त
अ०	अभर्ष्ट	अभर्क्षाताम्	अभर्क्षत्
	अभ्रष्ट	अभ्रक्षाताम्	अभ्रक्षत, इत्यादि।
प०	बभ्रज्जे	बभ्रज्जाते	बभ्रज्जिरे
	बभर्जे	बभर्जाते	बभर्जिरे, इत्यादि।
आ०	भर्क्षीष्ट	भर्क्षीयास्ताम्	भर्क्षीरन्
	भ्रक्षीष्ट	भ्रक्षीयास्ताम्	भ्रक्षीरन्, इत्यादि।
श्व०	भर्ष्टा	भर्ष्टारौ	भर्ष्टारः
	भ्रष्टा	भ्रष्टारौ	भ्रष्टारः, इत्यादि
भ०	भर्क्ष्यते	भर्क्ष्येते	भर्क्ष्यन्ते
	भ्रक्ष्यते	भ्रक्ष्येत	भ्रक्षयन्ते, इ०
क्रि०	अभर्क्ष्यत	अभर्क्ष्येताम्	अभर्क्ष्यन्त
	अभ्रक्ष्यत	अभ्रक्ष्येताम्	अभ्रक्ष्यन्त, इ०

१३१७. क्षिपींत् (क्षिप्) प्रेरणे।१

व०	क्षिपति	क्षिपतः	क्षिपन्ति
स०	क्षिपेत्	क्षिपेताम्	क्षिपेयुः
प०	क्षिपतु/क्षिपतात्	क्षिपताम्	क्षिपन्तु
ह्य०	अक्षिपत्	अक्षिपताम्	अक्षिपन्
अ०	अक्षैप्सीत्	अक्षैप्ताम्	अक्षैप्सुः
प०	चिक्षेप	चिक्षिपतुः	चिक्षिपुः
आ०	क्षिप्यात्	क्षिप्यास्ताम्	क्षिप्यासुः
श्व०	क्षेप्ता	क्षेप्तारौ	क्षेप्तारः
भ०	क्षेप्स्यति	क्षेप्स्यतः	क्षेप्स्यन्ति
क्रि०	अक्षेप्स्यत्	अक्षेप्स्यताम्	अक्षेप्स्यन्
व०	क्षिपते	क्षिपेते	क्षिपन्ते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स० क्षिपेत	क्षिपेयाताम्	क्षिपेरन्
प० क्षिपताम्	क्षिपेताम्	क्षिपन्ताम्
ह्य० अक्षिपत	अक्षिपेताम्	अक्षिपन्त
अ० अक्षिप्त	अक्षिप्साताम्	अक्षिप्सत
प० चिक्षिपे	चिक्षिपाते	चिक्षिपिरे
आ० क्षिप्सीष्ट	क्षिप्सीयास्ताम्	क्षिप्सीरन्
श्व० क्षेप्ता	क्षेप्तारौ	क्षेप्तार:
भ० क्षेप्स्यते	क्षेप्स्येते	क्षेप्स्यन्ते
क्रि० अक्षेप्स्यत	अक्षेप्स्येताम्	अक्षेप्स्यन्त

अथ शान्तोऽनिट् च।

१३१८. दिशींत् (दिश्) अतिसर्जने। अतिसर्जनं त्याग:।

व० दिशति	दिशत:	दिशन्ति
स० दिशेत्	दिशेताम्	दिशेयु:
प० दिशतु/दिशतात्	दिशताम्	दिशन्तु
ह्य० अदिशत्	अदिशताम्	अदिशन्
अ० अदिक्षत्	अदिक्षताम्	अदिक्षन्
प० दिदेश	दिदिशतु:	दिदिशु:
आ० दिश्यात्	दिश्यास्ताम्	दिश्यासु:
श्व० देष्टा	देष्टारौ	देष्टार:
भ० दक्ष्यति	दक्ष्यत:	दक्ष्यन्ति
क्रि० अदक्ष्यत्	अदक्ष्यताम्	अदक्ष्यन्
व० दिशते	दिशेते	दिशन्ते
स० दिशेत	दिशेयाताम्	दिशेरन्
प० दिशताम्	दिशेताम्	दिशन्ताम्
ह्य० अदिशत	अदिशेताम्	अदिशन्त
अ० अदिक्षत	अदिक्षाताम्	अदिक्षन्त
प० दिदिशे	दिदिशाते	दिदिशिरे
आ० दिक्षीष्ट	दिक्षीयास्ताम्	दिक्षीरन्
श्व० देष्टा	देष्टारौ	देष्टार:
भ० देक्ष्यते	देक्ष्येते	देक्ष्यन्ते
क्रि० अदेक्ष्यत	अदेक्ष्येताम्	अदेक्ष्यन्त

अथ षान्तोऽनिट् च।

१३१९. कृषींत् (कृष्) विलेखने। ५

व० कृषति	कृषत:	कृषन्ति
स० कृषेत्	कृषेताम्	कृषेयु:
प० कृषतु/कृषतात्	कृषताम्	कृषन्तु
ह्य० अकृषत्	अकृषताम्	अकृषन्
अ० अक्राक्षीत्	अक्राष्टाम्	अक्राक्षु:
अकार्क्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकार्क्षु:, इत्यादि
अकृक्षत्	अकृक्षताम्	अकृक्षन्, इत्यादि।
प० चकर्ष	चकृषतु:	चकृषु:
आ० कृष्यात्	कृष्यास्ताम्	कृष्यासु:
श्व० कर्ष्टा	कर्ष्टारौ	कर्ष्टार:
भ० कर्क्ष्यति	कर्क्ष्यत:	कर्क्ष्यन्ति
क्रि० अकर्क्ष्यत्	अकर्क्ष्यताम्	अकर्क्ष्यन्
अक्रक्ष्यत्	अक्रक्ष्यताम्	अक्रक्ष्यन्, इत्यादि
व० कृषते	कृषेते	कृषन्ते
स० कृषेत	कृषेयाताम्	कृषेरन्
प० कृषताम्	कृषेताम्	कृषन्ताम
ह्य० अकृषत	अकृषेताम्	अकृषन्त
अ० अकृष्ट	अकृक्षाताम्	अकृक्षन्त
अकृक्षत	अकृक्षाताम्	अकृक्षन्त, इत्यादि
प० चकृषे	चकृषाते	चकृषिरे
आ० कृक्षीष्ट	कृक्षीयास्ताम्	कृक्षीरन्
श्व० क्रष्टा	क्रष्टारौ	क्रष्टार:
भ० क्रक्ष्यते	क्रक्ष्येते	क्रक्ष्यन्ते
कर्क्षये	कर्क्ष्येते	कर्क्ष्यन्ते, इ०
क्रि० अक्रक्ष्यत	अक्रक्ष्येताम्	अक्रक्ष्यन्त
अकर्क्ष्यत	अकर्क्ष्येताम्	अकर्क्ष्यन्त, इ०

अथ मुचादयोऽष्टौ, तत्राद्याः पञ्चानिट उभयपदिनश्च तत्र त्रय: परस्मैपदिन: खिदंवर्जा: सेटश्च। तत्र चान्तौ।

१३२०. मुच्लृंती (मुच्) मोक्षणे। ६

व० मुञ्चति	मुञ्चत:	मुञ्चन्ति
स० मुञ्चेत्	मुञ्चेताम्	मुञ्चेयु:
प० मुञ्चतु/मुञ्चतात्	मुञ्चताम्	मुञ्चन्तु

ह्य० अमुञ्चत्	अमुञ्चताम्	अमुञ्चन्
अ० अमुचत्	अमुचताम्	अमुचन्
प० मुमोच	मुमुचतुः	मुमुचुः
आ० मुच्यात्	मुच्यास्ताम्	मुच्यासुः
श्व० मोक्ता	मोक्तारौ	मोक्तारः
भ० मोक्ष्यति	मोक्ष्यतः	मोक्ष्यन्ति
क्रि० अमोक्ष्यत्	अमोक्ष्यताम्	अमोक्ष्यन्
व० मुञ्चते	मुञ्चेते	मुञ्चन्ते
स० मुञ्चेत	मुञ्चेयाताम्	मुञ्चेरन्
प० मुञ्चताम्	मुञ्चेताम्	मुञ्चन्ताम्
ह्य० अमुञ्चत	अमुञ्चेताम्	अमुञ्चन्त
अ० अमुक्त	अमुक्षाताम्	अमुक्षत
प० मुमुचे	मुमुचाते	मुमुचिरे
आ० मुक्षीष्ट	मुक्षीयास्ताम्	मुक्षीरन्
श्व० मोक्ता	मोक्तारौ	मोक्तारः
भ० मोक्ष्यते	मोक्ष्येते	मोक्ष्यन्ते
क्रि० अमोक्ष्यत	अमोक्ष्येताम्	अमोक्ष्यन्त

१३२१. षिचींत् (सिच्) क्षरणे। ६

व० सिञ्चति	सिञ्चतः	सिञ्चन्ति
स० सिञ्चेत्	सिञ्चेताम्	सिञ्चेयुः
प० सिञ्चतु/सिञ्चतात्	सिञ्चताम्	सिञ्चन्तु
ह्य० असिञ्चत्	असिञ्चताम्	असिञ्चन्
अ० असिचत्	असिचताम्	असिचन्
प० सिषेच	सिषिचतुः	सिषिचुः
आ० सिच्यात्	सिच्यास्ताम्	सिच्यासुः
श्व० सेक्ता	सेक्तारौ	सेक्तारः
भ० सेक्ष्यति	सेक्ष्यतः	सेक्ष्यन्ति
क्रि० असेक्ष्यत्	असेक्ष्यताम्	असेक्ष्यन्
व० सिञ्चते	सिञ्चेते	सिञ्चन्ते
स० सिञ्चेत	सिञ्चेयाताम्	सिञ्चेरन्
प० सिञ्चताम्	सिञ्चेताम्	सिञ्चन्ताम्
ह्य० असिञ्चत	असिञ्चेताम्	असिञ्चन्त
अ० असिचत	असिचेताम्	असिचन्त
असिक्त	असिक्षाताम्	असिक्षत, इत्यादि।
प० सिषिचे	सिषिचाते	सिषिचिरे
आ० सिक्षीष्ट	सिक्षीयास्ताम्	सिक्षीरन्
श्व० सेक्ता	सेक्तारौ	सेक्तारः
भ० सेक्ष्यते	सेक्ष्येते	सेक्ष्यन्ते
क्रि० असेक्ष्यत	असेक्ष्येताम्	असेक्ष्यन्त

अथ दान्तः

१३२२. विद्लृंती (विद्) लाभे। ८

व० विन्दति	विन्दतः	विन्दन्ति
स० विन्देत्	विन्देताम्	विन्देयुः
प० विन्दतु/विन्दतात्	विन्दताम्	विन्दन्तु
ह्य० अविन्दत्	अविन्दताम्	अविन्दन्
अ० अविदतु	अविदताम्	अविदन्
प० विवेद	विविदतुः	विविदुः
आ० विद्यात्	विद्यास्ताम्	विद्यासुः
श्व० वेत्ता	वेत्तारौ	वेत्तारः
भ० वेत्स्यति	वेत्स्यतः	वेत्स्यन्ति
क्रि० अवेत्स्यत्	अवेत्स्यताम्	अवेत्स्यन्

वेत्तेः किदिति परोक्षायां वा विन्दतेरप्येके। तन्मते विदाञ्चकार विवेद– इत्यादि

व० विन्दते	विन्देते	विन्दन्ते
स० विन्देत	विन्देयाताम्	विन्देरन्
प० विन्दताम्	विन्देताम्	विन्दन्ताम्
ह्य० अविन्दत	अविन्देताम्	अविन्दन्त
अ० अवित्त	अवित्साताम्	अवित्सत
प० विविदे	विविदाते	विविदिरे
आ० वित्सीष्ट	वित्सीयास्ताम्	वित्सीरन्
श्व० वेत्ता	वेत्तारौ	वेत्तारः
भ० वेत्स्यते	वेत्स्येते	वेत्स्यन्ते
क्रि० अवेत्स्यत	अवेत्स्येताम्	अवेत्स्यन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ पान्तौ।

१३२३. लुप्लृंती (लुप्) छेदने। ९

व० लुम्पति	लुम्पतः	लुम्पन्ति
स० लुम्पेत्	लुम्पेताम्	लुम्पेयुः
प० लुम्पतु/लुम्पतात्	लुम्पताम्	लुम्पन्तु
ह्य० अलुम्पत्	अलुम्पताम्	अलुम्पन्
अ० अलुपत्	अलुपताम्	अलुपन्
प० लुलोप	लुलुपतुः	लुलुपुः
आ० लुप्यात्	लुप्यास्ताम्	लुप्यासुः
श्व० लोप्ता	लोप्तारौ	लोप्तारः
भ० लोप्स्यति	लोप्स्यतः	लोप्स्यन्ति
क्रि० अलोप्स्यत्	अलोप्स्यताम्	अलोप्स्यन्
व० लुम्पते	लुम्पेते	लुम्पन्ते
स० लुम्पेत	लुम्पेयाताम्	लुम्पेरन्
प० लुम्पताम्	लुम्पेताम्	लुम्पन्ताम्
ह्य० अलुम्पत	अलुम्पेताम्	अलुम्पन्त
अ० अलुप्त	अलुप्साताम्	अलुप्सत
प० लुलुपे	लुलुपाते	लुलुपिरे
आ० लुप्सीष्ट	लुप्सीयास्ताम्	लुप्सीरन्
श्व० लोप्ता	लोप्तारौ	लोप्तारः
भ० लोप्स्यते	लोप्स्येते	लोप्स्यन्ते
क्रि० अलोप्स्यत	अलोप्स्येताम्	अलोप्स्यन्त

१३२४. लिपींत् (लिप्) उपदेहे। उपदेहो वृद्धिः। १०

व० लिम्पति	लिम्पतः	लिम्पन्ति
स० लिम्पेत्	लिम्पेताम्	लिम्पेयुः
प० लिम्पतु/लिम्पतात्	लिम्पताम्	लिम्पन्तु
ह्य० अलिम्पत्	अलिम्पताम्	अलिम्पन्
अ० अलिपत्	अलिपताम्	अलिपन्
प० लिलेप	लिलिपतुः	लिलिपुः
आ० लिप्यात्	लिप्यास्ताम्	लिप्यासुः
श्व० लेप्ता	लेप्तारौ	लेप्तारः
भ० लेप्स्यति	लेप्स्यतः	लेप्स्यन्ति
क्रि० अलेप्स्यत्	अलेप्स्यताम्	अलेप्स्यन्
व० लिम्पते	लिम्पेते	लिम्पन्ते
स० लिम्पेत	लिम्पेयाताम्	लिम्पेरन्
प० लिम्पताम्	लिम्पेताम्	लिम्पन्ताम्
ह्य० अलिम्पत	अलिम्पेताम्	अलिम्पन्त
अ० अलिपत	अलिपेताम्	अलिपन्त
अलिप्त	अलिप्साताम्	अलिप्सत इ०
प० लिलिपे	लिलिपाते	लिलिपिरे
आ० लिप्सीष्ट	लिप्सीयास्ताम्	लिप्सीरन्
श्व० लेप्ता	लेप्तारौ	लेप्तारः
भ० लेप्स्यते	लेप्स्येते	लेप्स्यन्ते
क्रि० अलेप्स्यत	अलेप्स्येताम्	अलेप्स्यन्त

अथ परस्मैपदिषु तान्तः।

१३२५. कृतेत् (कृत्) छेदने। ११

व० कृन्तति	कृन्ततः	कृन्तन्ति
स० कृन्तेत्	कृन्तेताम्	कृन्तेयुः
प० कृन्ततु/कृन्ततात्	कृन्तताम्	कृन्तन्तु
ह्य० अकृन्तत्	अकृन्तताम्	अकृन्तन्
अ० अकर्त्तीत्	अकर्त्तिष्टाम्	अकर्त्तिषु
प० चकर्त	चकृततुः	चकृतुः
आ० कृत्यात्	कृत्यास्ताम्	कृत्यासुः
श्व० कर्त्तिता	कर्त्तितारौ	कर्त्तितारः
भ० कर्त्तिष्यति	कर्त्तिष्यतः	कर्त्तिष्यन्ति
क्रि० अकर्त्तिष्यत्	अकर्त्तिष्यताम्	अकर्त्तिष्यन्

अथ दान्तः।

१३२६. खिदंत् (खिद्) परिघाते। परितापे केचित्। १२

व० खिन्दति	खिन्दतः	खिन्दन्ति
स० खिन्देत्	खिन्देताम्	खिन्देयुः
प० खिन्दतु/खिन्दतात्	खिन्दताम्	खिन्दन्तु
ह्य० अखिन्दत्	अखिन्दताम्	अखिन्दन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	अखैत्सीत्	अखैत्ताम्	अखैत्सुः
प०	चिखेद	चिखिदतुः	चिखिदुः
आ०	खिद्यात्	खिद्यास्ताम्	खिद्यासुः
श्व०	खेत्ता	खेत्तारौ	खेत्तारः
भ०	खेत्स्यति	खेत्स्यतः	खेत्स्यन्ति
क्रि०	अखेत्स्यत्	अखेत्स्यताम्	अखेत्स्यन्

अथ शान्तः।

१३२७. पिशत् (पिश्) अवयवे। १३

व०	पिंशति	पिंशतः	पिंशन्ति
स०	पिंशेत्	पिंशेताम्	पिंशेयुः
प०	पिंशतु/पिंशतात्	पिंशताम्	पिंशन्तु
ह्य०	अपिंशत्	अपिंशताम्	अपिंशन्
अ०	अपेशीत्	अपेशिष्टाम्	अपेशिषुः
प०	पिपेश	पिपेशतुः	पिपेशुः
आ०	पिश्यात्	पिश्यास्ताम्	पिश्यासुः
श्व०	पेशिता	पेशितारौ	पेशितारः
भ०	पेशिष्यति	पेशिष्यतः	पेशिष्यन्ति
क्रि०	अपेशिष्यत्	अपेशिष्यताम्	अपेशिष्यन्

॥वृत् मुचादिः॥

मुचादिस्तुदाद्यन्तर्गणोऽष्टकः सम्पूर्णः।

अथ प्रकृतवर्णक्रमेणेदन्ताश्चत्वारोऽनिट्श्च।

१३२८. रित् (रि) गतौ। १४

व०	रियति	रियतः	रियन्ति
स०	रियेत्	रियेताम्	रियेयुः
प०	रियतु/रियतात्	रियताम्	रियन्तु
ह्य०	अरियत्	अरियताम्	अरियन्
अ०	अरैषीत्	अरैष्टाम्	अरैषुः
प०	रिराय	रिर्यतुः	रिर्युः
आ०	रीयात्	रीयास्ताम्	रीयासुः
श्व०	रेता	रेतारौ	रेतारः
भ०	रेष्यति	रेष्यतः	रेष्यन्ति
क्रि०	अरेष्यत्	अरेष्यताम्	अरेष्यन्

१३२९. पित् (पि) गतौ। १५

व०	पियति	पियतः	पियन्ति
स०	पियेत्	पियेताम्	पियेयुः
प०	पियतु/पियतात्	पियताम्	पियन्तु
ह्य०	अपियत्	अपियताम्	अपियन्
अ०	अपैषीत्	अपैष्टाम्	अपैषुः
प०	पिपाय	पिप्यतुः	पिप्युः
आ०	पीयात्	पीयास्ताम्	पीयासुः
श्व०	पेता	पेतारौ	पेतारः
भ०	पेष्यति	पेष्यतः	पेष्यन्ति
क्रि०	अपेष्यत्	अपेष्यताम्	अपेष्यन्

१३३०. धित् (धि) धारणे। १६

व०	धियति	धियतः	धियन्ति
स०	धियेत्	धियेताम्	धियेयुः
प०	धियतु/धियतात्	धियताम्	धियन्तु
ह्य०	अधियत्	अधियताम्	अधियन्
अ०	अधैषीत्	अधैष्टाम्	अधैषुः
प०	दिधाय	दिध्यतुः	दिध्युः
आ०	धीयात्	धीयास्ताम्	धीयासुः
श्व०	धेता	धेतारौ	धेतारः
भ०	धेष्यति	धेष्यतः	धेष्यन्ति
क्रि०	अधेष्यत्	अधेष्यताम्	अधेष्यन्

१३३१. क्षिंत् (क्षि) निवासगत्योः। १७

व०	क्षियति	क्षियतः	क्षियन्ति
स०	क्षियेत्	क्षियेताम्	क्षियेयुः
प०	क्षियतु/क्षियतात्	क्षियताम्	क्षियन्तु
ह्य०	अक्षियत्	अक्षियताम्	अक्षियन्
अ०	अक्षैषीत्	अक्षैष्टाम्	अक्षैषुः
प०	चिक्षाय	चिक्षियतुः	चिक्षियुः
आ०	क्षीयात्	क्षीयास्ताम्	क्षीयासुः
श्व०	क्षेता	क्षेतारौ	क्षेतारः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	क्षेष्यति	क्षेष्यतः	क्षेष्यन्ति
क्रि०	अक्षेष्यत्	अक्षेष्यताम्	अक्षेष्यन्

अथोदन्तः सेट् च।

१३३२. षूत् (सू) प्रेरणे।१८

व०	सुवति	सुवतः	सुवन्ति
स०	सुवेत्	सुवेताम्	सुवेयुः
प०	सुवतु/सुवतात्	सुवताम्	सुवन्तु
ह्य०	असुवत्	असुवताम्	असुवन्
अ०	असावीत्	असाविष्टाम्	असाविषुः
प०	सुषाव	सुषुवतुः	सुषुवुः
आ०	सूयात्	सूयास्ताम्	सूयासुः
श्व०	सविता	सवितारौ	सवितारः
भ०	सविष्यति	सविष्यतः	सविष्यन्ति
क्रि०	असविष्यत्	असविष्यताम्	असविष्यन्

अथ ऋदन्तोऽनिट् च।

१३३३. मृंत् (मृ) प्राणत्यागे। १९

व०	म्रियते	म्रियेते	म्रियन्ते
	म्रियसे	म्रियेथे	म्रियध्वे
	म्रिये	म्रियावहे	म्रियामहे
स०	म्रियेत	म्रियेयाताम्	म्रियेरन्
	म्रियेथाः	म्रियेयाथाम्	म्रियेध्वम्
	म्रियेय	म्रियेवहि	म्रियेमहि
प०	म्रियताम्	म्रियेताम्	म्रियन्ताम्
	म्रियस्व	म्रियेथाम्	म्रियध्वम्
	म्रियै	म्रियावहै	म्रियामहै
ह्य०	अम्रियत	अम्रियेताम्	अम्रियन्त
	अम्रियथाः	अम्रियेथाम्	अम्रियध्वम्
	अम्रिये	अम्रियावहि	अम्रियामहि
अ०	अमृत	अमृषाताम्	अमृषत
	अमृथाः	अमृषाथाम्	अमृड्ढ्वम्/ध्वम्
	अमृषि	अमृष्वहि	अमृष्महि
प०	ममार	मम्रतुः	मम्रुः
	ममर्थ	मम्रथुः	मम्र
	ममार/ममर	मम्रिव	मम्रिम
आ०	मृषीष्ट	मृषीयास्ताम्	मृषीरन्
	मृषीष्ठाः	मृषीयास्थाम्	मृषीध्वम्
	मृषीय	मृषीवहि	मृषीमहि
श्व०	मर्ता	मर्तारौ	मर्तारः
	मर्तासे	मर्तासाथे	मर्ताध्वे
	मर्ताहे	मर्तास्वहे	मर्तास्महे
भ०	मरिष्यति	मरिष्यतः	मरिष्यन्ति
	मरिष्यसि	मरिष्यथः	मरिष्यथ
	मरिष्यामि	मरिष्यावः	मरिष्यामः
क्रि०	अमरिष्यत्	अमरिष्यताम्	अमरिष्यन्
	अमरिष्यः	अमरिष्यतम्	अमरिष्यत
	अमरिष्यम्	अमरिष्याव	अमरिष्याम

अथ ॠदन्तौ सेटौ च।

१३३४. कृत् (कृ) निक्षेपे। २०

व०	किरति	किरतः	किरन्ति
	किरसि	किरथः	किरथ
	किरामि	किरावः	किरामः
स०	किरेत्	किरेताम्	किरेयुः
	किरेः	किरेतम्	किरेत
	किरेयम्	किरेव	किरेम
प०	किरतु/किरतात्	किरताम्	किरन्तु
	किरः/किरतात्	किरतम्	किरत
	किराणि	किराव	किराम
ह्य०	अकिरत्	अकिरताम्	अकिरन्
	अकिरः	अकिरतम्	अकिरत
	अकिरम्	अकिराव	अकिराम
अ०	अकारीत्	अकारिष्टाम्	अकारिषुः
	अकारीः	अकारिष्टम्	अकारिष्ट
	अकारिषम्	अकारिष्व	अकारिष्म
प०	चकार	चकरतुः	चकरुः
	चकरिथ	चकरथुः	चकर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	चकार/चकर	चकरिव	चकरिम
आ०	कीर्यात्	कीर्यास्ताम्	कीर्यासुः
	कीर्याः	कीर्यास्तम्	कीर्यास्त
	कीर्यासम्	कीर्यास्व	कीर्यास्म
श्व०	करिता	करितारौ	करितारः
	करितासि	करितास्थः	करितास्थ
	करितास्मि	करितास्वः	करितास्मः
		तथा	
	करीता	करीतारौ	करीतारः, इत्यादि
भ०	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः
	करीष्यति	करिष्यतः	करीष्यन्ति, इ०
क्रि०	अकरिष्यत्	अकरिष्यताम्	अकरिष्यन्
	अकरिष्यः	अकरिष्यतम्	अकरिष्यत
	अकरिष्यम्	अकरिष्याव	अकरिष्याम
		तथा	
	अकरीष्यत्	अकरीष्यताम्	अकरीष्यन्, इ०

१३३५. गॄत् (गॄ) निगरणे। निगरणं भोजनम्। २१

व०	गिरति	गिरतः	गिरन्ति
व०	गिलति	गिलतः	गिलन्ति
स०	गिरेत्	गिरेताम्	गिरेयुः
स०	गिलेत्	गिलेताम्	गिलेयुः
प०	गिरतु/गिरतात्	गिरताम्	गिरन्तु
प०	गिलतु/गिलतात्	गिलताम्	गिलन्तु
ह्य०	अगिरत्	अगिरताम्	अगिरन्
ह्य०	अगिलत्	अगिलताम्	अगिलन्
अ०	अगारीत्	अगारिष्टाम्	अगारिषुः
अ०	अगालीत्	अगालिष्टाम्	अगालिषुः
प०	जगार	जगरतुः	जगरुः
प०	जगाल	जगलतुः	जगलुः
आ०	गीर्यात्	गीर्यास्ताम्	गीर्यासुः
श्व०	गरिता	गरितारौ	गरितारः
श्व०	गलिता	गलितारौ	गलितारः
भ०	गरिष्यति	गरिष्यतः	गरिष्यन्ति
भ०	गलिष्यति	गलिष्यतः	गलिष्यन्ति
	गरीष्यति	गलीष्यतः	गलिष्यन्ति इ०
क्रि०	अगरिष्यत्	अगरिष्यताम्	अगरिष्यन्
क्रि०	अगलिष्यत्	अगलिष्यताम्	अगलिष्यन्
	अगलीष्यत्	अगलीष्यताम्	अगलीष्यन् इ०

अथ लान्तः सेट् च।

१३३६. लिखत् (लिख्) अक्षरविन्यासे। २२

व०	लिखति	लिखतः	लिखन्ति
	लिखसि	लिखथः	लिखथ
	लिखामि	लिखावः	लिखामः
स०	लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयुः
	लिखेः	लिखेतम्	लिखेत
	लिखेयम्	लिखेव	लिखेम
प०	लिखतु/लिखतात्	लिखताम्	लिखन्तु
	लिखः/लिखतात्	लिखतम्	लिखत
	लिखानि	लिखाव	लिखाम
ह्य०	अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्
	अलिखः	अलिखतम्	अलिखत
	अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम
अ०	अलेखीत्	अलेखिष्टाम्	अलेखिषुः
	अलेखीः	अलेखिष्टम्	अलेखिष्ट
	अलेखिषम्	अलेखिष्व	अलेखिष्म
प०	लिलेख	लिलिखतुः	लिलिखुः
	लिलेखिथ	लिलिखथुः	लिलिख
	लिलेख	लिलिखिव	लिलिखिम
आ०	लिख्यात्	लिख्यास्ताम्	लिख्यासुः
	लिख्याः	लिख्यास्तम्	लिख्यास्त
	लिख्यासम्	लिख्यास्व	लिख्यास्म
श्व०	लेखिता	लेखितारौ	लेखितारः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	लेखितासि	लेखितास्थ:	लेखितास्थ
	लेखितास्मि	लेखितास्व:	लेखितास्म:
भ०	लेखिष्यति	लेखिष्यत:	लेखिष्यन्ति
	लेखिष्यसि	लेखिष्यथ:	लेखिष्यथ
	लेखिष्यामि	लेखिष्याव:	लेखिष्याम:
क्रि०	अलेखिष्यत्	अलेखिष्यताम्	अलेखिष्यन्
	अलेखिष्य:	अलेखिष्यतम्	अलेखिष्यत
	अलेखिष्यम्	अलेखिष्याव	अलेखिष्याम

अथ चान्त: पञ्च सेट्का।

१३३७. जर्च (जर्च्) परिभाषणे। तर्जनेऽपीत्येके। २३

व०	जर्चति	जर्चत:	जर्चन्ति
	जर्चसि	जर्चथ:	जर्चथ
	जर्चामि	जर्चाव:	जर्चाम:
स०	जर्चेत्	जर्चेताम्	जर्चेयु:
	जर्चे:	जर्चेतम्	जर्चेत
	जर्चेयम्	जर्चेव	जर्चेम
प०	जर्चतु/जर्चतात्	जर्चताम्	जर्चन्तु
	जर्च:/जर्चतात्	जर्चतम्	जर्चत
	जर्चानि	जर्चाव	जर्चाम
ह्य०	अजर्चत्	अजर्चताम्	अजर्चन्
	अजर्च:	अजर्चतम्	अजर्चत
	अजर्चम्	अजर्चाव	अजर्चाम
अ०	अजर्चीत्	अजर्चिष्टाम्	अजर्चिषु:
	अजर्ची:	अजर्चिष्टम्	अजर्चिष्ट
	अजर्चिषम्	अजर्चिष्व	अजर्चिष्म
प०	जजर्च	जजर्चतु:	जजर्चु:
	जजर्चिथ	जजर्चथु:	जजर्च
	जजर्च	जजर्चिव	जजर्चिम
आ०	जर्च्यात्	जर्च्यास्ताम्	जर्च्यासु:
	जर्च्या:	जर्च्यास्तम्	जर्च्यास्त
	जर्च्यासम्	जर्च्यास्व	जर्च्यास्म
श्व०	जर्चिता	जर्चितारौ	जर्चितार:
	जर्चितासि	जर्चितास्थ:	जर्चितास्थ
	जर्चितास्मि	जर्चितास्व:	जर्चितास्म:
भ०	जर्चिष्यति	जर्चिष्यत:	जर्चिष्यन्ति
	जर्चिष्यसि	जर्चिष्यथ:	जर्चिष्यथ
	जर्चिष्यामि	जर्चिष्याव:	जर्चिष्याम:
क्रि०	अजर्चिष्यत्	अजर्चिष्यताम्	अजर्चिष्यन्
	अजर्चिष्य:	अजर्चिष्यतम्	अजर्चिष्यत
	अजर्चिष्यम्	अजर्चिष्याव	अजर्चिष्याम

१३३८. झर्च (झर्च्) परिभाषणे। तर्झनेऽपीत्येके। २४

व०	झर्चति	झर्चत:	झर्चन्ति
स०	झर्चेत्	झर्चेताम्	झर्चेयु:
प०	झर्चतु/झर्चतात्	झर्चताम्	झर्चन्तु
ह्य०	अझर्चत्	अझर्चताम्	अझर्चन्
अ०	अझर्चीत्	अझर्चिष्टाम्	अझर्चिषु:
प०	जझर्च	जझर्चतु:	जझर्चु:
आ०	झर्च्यात्	झर्च्यास्ताम्	झर्च्यासु:
श्व०	झर्चिता	झर्चितारौ	झर्चितार:
भ०	झर्चिष्यति	झर्चिष्यत:	झर्चिष्यन्ति
क्रि०	अझर्चिष्यत्	अझर्चिष्यताम्	अझर्चिष्यन्

१३३९. त्वचत् (त्वच्) संवरणे। संवरणमाच्छादनम्। २५

व०	त्वचति	त्वचत:	त्वचन्ति
स०	त्वचेत्	त्वचेताम्	त्वचेयु:
प०	त्वचतु/त्वचतात्	त्वचताम्	त्वचन्तु
ह्य०	अत्वचत्	अत्वचताम्	अत्वचन्
अ०	अत्वचीत्	अत्वचिष्टाम्	अत्वचिषु:
	अत्वाचीत्	अत्वाचिष्टाम्	अत्वाचिषु:, इ०
प०	तत्वाच	तत्वचतु:	तत्वचु:
आ०	त्वच्यात्	त्वच्यास्ताम्	त्वच्यासु:
श्व०	त्वचिता	त्वचितारौ	त्वचितार:
भ०	त्वचिष्यति	त्वचिष्यत:	त्वचिष्यन्ति
क्रि०	अत्वचिष्यत्	अत्वचिष्यताम्	अत्वचिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३४०. ऋचत् (ऋच) स्तुतौ। २६

व०	ऋचति	ऋचतः	ऋचन्ति
स०	ऋचेत्	ऋचेताम्	ऋचेयुः
प०	ऋचतु/ऋचतात्	ऋचताम्	ऋचन्तु
ह्य०	आर्चत्	आर्चताम्	आर्चन्
अ०	आर्चीत्	आर्चिष्टाम्	आर्चिषुः
प०	आनर्च	आनृचतुः	आनृचुः
आ०	ऋच्यात्	ऋच्यास्ताम्	ऋच्यासुः
श्व०	अर्चिता	अर्चितारौ	अर्चितारः
भ०	अर्चिष्यति	अर्चिष्यतः	अर्चिष्यन्ति
क्रि०	आर्चिष्यत्	आर्चिष्यताम्	आर्चिष्यन्

१३४१. ओव्रश्चौत् (व्रश्च्-व्रश्च) छेदने। २७

व०	वृश्चति	वृश्चतः	वृश्चन्ति
स०	वृश्चेत्	वृश्चेताम्	वृश्चेयुः
प०	वृश्चतु/वृश्चतात्	वृश्चताम्	वृश्चन्तु
ह्य०	अवृश्चत्	अवृश्चताम्	अवृश्चन्
अ०	अव्रश्चीत्	अव्रश्चिष्टाम्	अव्रश्चिषुः
प०	अवाक्षीत्	अव्राष्टाम्	अव्राक्षु, इत्यादि
आ०	वृश्च्यात्	वृश्च्यास्ताम्	वृश्च्यासुः
श्व०	व्रश्चिता	व्रश्चितारौ	व्रश्चितारः
भ०	व्रश्चिष्यति	व्रश्चिष्यतः	व्रश्चिष्यन्ति
	व्रक्ष्यति	व्रक्ष्यतः	व्रक्ष्यन्ति, इत्यादि।
क्रि०	अव्रक्ष्यत्	अव्रक्ष्यताम्	अव्रक्ष्यन्
	अव्रश्चिष्यत्	अव्रश्चिष्यताम्	अव्रश्चिष्यन्, इ०

अथ छान्ताः षट् मच्छंवर्जाः सेटश्च।

१३४२. ऋछत् (ऋच्छ) इन्द्रियप्रलयमूर्तिभावयोः। इन्द्रियाणां प्रलये मोहे मूर्तिभावे च। २८

व०	ऋच्छति	ऋच्छतः	ऋच्छन्ति
स०	ऋच्छेत्	ऋच्छेताम्	ऋच्छेयुः
प०	ऋच्छतु/ऋच्छतात्	ऋच्छताम्	ऋच्छन्तु
ह्य०	आर्च्छत्	आर्च्छताम्	आर्च्छन्
अ०	आर्च्छीत्	आर्च्छीष्टाम्	आर्च्छीषुः
प०	आनर्च्छ	आनर्च्छतुः	आनर्च्छुः
आ०	ऋच्छ्यात्	ऋच्छ्यास्ताम्	ऋच्छ्यासुः
श्व०	ऋच्छिता	ऋच्छितारौ	ऋच्छितारः
भ०	ऋच्छिष्यति	ऋच्छिष्यतः	ऋच्छिष्यन्ति
क्रि०	अऋच्छिष्यत्	अऋच्छिष्यताम्	अऋच्छिष्यन्

१३४३. विछत् (विच्छ) गतौ। २९

व०	विच्छायति	विच्छायतः	विच्छायन्ति
स०	विच्छायेत्	विच्छायेताम्	विच्छायेयुः
प०	विच्छायतु/विच्छायतात्	विच्छायताम्	विच्छायन्तु
ह्य०	अविच्छायत्	अविच्छायताम्	अविच्छायन्
अ०	अविच्छायीत्	अविच्छायिष्टाम्	अविच्छायिषुः
	अविच्छीत्	अविच्छीष्टाम्	अविच्छिषुः इ०
प०	विच्छायाञ्चकार	विच्छायाञ्चक्रतुः	विच्छायाञ्चक्रुः
	विविच्छ	विविच्छतुः	विविच्छुः इत्यादि।
आ०	विच्छाय्यात्	विच्छाय्यास्ताम्	विच्छाय्यासुः
	विच्छ्यात्	विच्छ्यास्ताम्	विच्छ्यासुः इ०
श्व०	विच्छिता	विच्छितारौ	विच्छितारः
भ०	विच्छिष्यति	विच्छिष्यतः	विच्छिष्यन्ति
क्रि०	अविच्छिष्यत्	अविच्छिष्यताम्	अविच्छिष्यन्

१३४४. उछत् (उच्छ) विवासे। विवासोऽतिक्रमः। ३०

व०	उच्छति	उच्छतः	उच्छन्ति
स०	उच्छेत्	उच्छेताम्	उच्छेयुः
प०	उच्छतु/उच्छतात्	उच्छताम्	उच्छन्तु
ह्य०	औच्छत्	औच्छताम्	औच्छन्
अ०	औच्छीत्	औच्छिष्टाम्	औच्छिषुः
प०	उच्छाञ्चकार	उच्छाञ्चक्रतुः	उच्छाञ्चक्रुः
आ०	उच्छ्यात्	उच्छ्यास्ताम्	उच्छ्यासुः
श्व०	उच्छिता	उच्छितारौ	उच्छितारः
भ०	उच्छिष्यति	उच्छिष्यतः	उच्छिष्यन्ति
क्रि०	औच्छिष्यत्	औच्छिष्यताम्	औच्छिष्यन्, इ०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३४५. मिछत् (मिच्छ्) उत्क्लेशे उत्क्लेशो बाधनतम्। ३१

व०	मिच्छति	मिच्छत:	मिच्छन्ति
स०	मिच्छेत्	मिच्छेताम्	मिच्छेयु:
प०	मिच्छतु/मिच्छतात्	मिच्छताम्	मिच्छन्तु
ह्य०	अमिच्छत्	अमिच्छताम्	अमिच्छन्
अ०	अमिच्छीत्	अमिच्छिष्टाम्	अमिच्छिषु:
प०	मिमिच्छ	मिमिच्छतु:	मिमिच्छु:
आ०	मिच्छ्यात्	मिच्छ्यास्ताम्	मिच्छ्यासु:
श्व०	मिच्छिता	मिच्छितारौ	मिच्छितार:
भ०	मिच्छिष्यति	मिच्छिष्यत:	मिच्छिष्यन्ति
क्रि०	अमिच्छिष्यत्	अमिच्छिष्यताम्	अमिच्छिष्यन्

१३४६. उछुत् (उञ्छ्) उञ्छे। उञ्छ उञ्चय:। ३२

व०	उञ्छति	उञ्छत:	उञ्छन्ति
स०	उञ्छेत्	उञ्छेताम्	उञ्छेयु:
प०	उञ्छतु/उञ्छतात्	उञ्छताम्	उञ्छन्तु
ह्य०	औञ्छत्	औञ्छताम्	औञ्छन्
अ०	औञ्छीत्	औञ्छिष्टाम्	औञ्छिषु:
प०	उञ्छाञ्चकार	उञ्छाञ्चक्रतु:	उञ्छाञ्चक्रु:
आ०	उञ्छ्यात्	उञ्छ्यास्ताम्	उञ्छ्यासु:
श्व०	उञ्छिता	उञ्छितारौ	उञ्छितार:
भ०	उञ्छिष्यति	उञ्छिष्यत:	उञ्छिष्यन्ति
क्रि०	औञ्छिष्यत्	औञ्छिष्यताम्	औञ्छिष्यन्

१३४७. प्रछंत् (प्रच्छ्) ज्ञीप्सायाम्। ज्ञीप्सा जिज्ञासा। ३३

व०	पृच्छति	पृच्छत:	पृच्छन्ति
स०	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयु:
प०	पृच्छतु/पृच्छतात्	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
ह्य०	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
अ०	अप्राक्षीत्	अप्राष्टाम्	अप्राक्षु:
प०	पप्रच्छ	पप्रच्छतु:	पप्रच्छु:
आ०	पृच्छ्यात्	पृच्छ्यास्ताम्	पृच्छ्यासु:
श्व०	प्रष्टा	प्रष्टारौ	प्रष्टार:
भ०	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यत:	प्रक्ष्यन्ति
क्रि०	अप्रक्ष्यत्	अप्रक्ष्यताम्	अप्रक्ष्यन्

अथ जान्ता: षट्।

१३४८. उब्जत् (उब्ज्) आर्जवे। ३४

व०	उब्जति	उब्जत:	उब्जन्ति
स०	उब्जेत्	उब्जेताम्	उब्जेयु:
प०	उब्जतु/उब्जतात्	उब्जताम्	उब्जन्तु
ह्य०	औब्जत्	औब्जताम्	औब्जन्
अ०	औब्जीत्	औब्जिष्टाम्	औब्जिषु:
प०	उब्जाञ्चकार	उब्जाञ्चक्रतु:	उब्जाञ्चक्रु:
आ०	उब्ज्यात्	उब्ज्यास्ताम्	उब्ज्यासु:
श्व०	उब्जिता	उब्जितारौ	उब्जितार:
भ०	उब्जिष्यति	उब्जिष्यत:	उब्जिष्यन्ति
क्रि०	औब्जिष्यत्	औब्जिष्यताम्	औब्जिष्यन्

१३४९. सृजंत् (सृज्) विसर्गे।३५

व०	सृजति	सृजत:	सृजन्ति
स०	सृजेत्	सृजेताम्	सृजेयु:
प०	सृजतु/सृजतात्	सृजताम्	सृजन्तु
ह्य०	असृजत्	असृजताम्	असृजन्
अ०	अस्राक्षीत्	अस्राष्टाम्	अस्राक्षु:
प०	ससर्ज	ससृजतु:	ससृजु:
आ०	सृज्यात्	सृज्यास्ताम्	सृज्यासु:
श्व०	स्रष्टा	स्रष्टारौ	स्रष्टार:
भ०	स्रक्ष्यति	स्रक्ष्यत:	स्रक्ष्यन्ति
क्रि०	अस्रक्ष्यत्	अस्रक्ष्यताम्	अस्रक्ष्यन्

१३५०. रुजींत् (रुज्) भङ्गे। ३६

व०	रुजति	रुजत:	रुजन्ति
स०	रुजेत्	रुजेताम्	रुजेयु:
प०	रुजतु/रुजतात्	रुजताम्	रुजन्तु
ह्य०	अरुजत्	अरुजताम्	अरुजन्
अ०	अरौक्षीत्	अरौक्ताम्	अरौक्षु:
प०	रुरोज	रुरुजतु:	रुरुजु:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	रुज्यात्	रुज्यास्ताम्	रुज्यासुः
श्व०	रोक्ता	रोक्तारौ	रोक्तारः
भ०	रोक्ष्यति	रोक्ष्यतः	रोक्ष्यन्ति
क्रि०	अरोक्ष्यत्	अरोक्ष्यताम्	अरोक्ष्यन्

१३५१. भुजींत् (भुज्) कौटिल्ये। ३७

व०	भुजति	भुजतः	भुजन्ति
स०	भुजेत्	भुजेताम्	भुजेयुः
प०	भुजतु/भुजतात्	भुजताम्	भुजन्तु
ह्य०	अभुजत्	अभुजताम्	अभुजन्
अ०	अभौक्षीत्	अभौक्ताम्	अभौक्षुः
प०	बुभोज	बुभुजतुः	बुभुजुः
आ०	भुज्यात्	भुज्यास्ताम्	भुज्यासुः
श्व०	भोक्ता	भोक्तारौ	भोक्तारः
भ०	भोक्ष्यति	भोक्ष्यतः	भोक्ष्यन्ति
क्रि०	अभोक्ष्यत्	अभोक्ष्यताम्	अभोक्ष्यन्

१३५२. टुमस्जींत् (मस्ज्-मज्ज्) शुद्धौ। शुद्ध्यां स्नानं बुडनं च लक्ष्यते। ३८

व०	मज्जति	मज्जतः	मज्जन्ति
स०	मज्जेत्	मज्जेताम्	मज्जेयुः
प०	मज्जतु/मज्जतात्	मज्जताम्	मज्जन्तु
ह्य०	अमज्जत्	अमज्जताम्	अमज्जन्
अ०	अमाङ्क्षीत्	अमाङ्क्ताम्	अमाङ्क्षुः
प०	ममज्ज	ममज्जतुः	ममज्जुः
आ०	मज्ज्यात्	मज्ज्यास्ताम्	मज्ज्यासुः
श्व०	मङ्क्ता	मङ्क्तारौ	मङ्क्तारः
भ०	मङ्क्ष्यति	मङ्क्ष्यतः	मङ्क्ष्यन्ति
क्रि०	अमङ्क्ष्यत्	अमङ्क्ष्यताम्	अमङ्क्ष्यन्

१३५३. जर्जत् (जर्ज्) परिभाषणे। ३९

व०	जर्जति	जर्जतः	जर्जन्ति
स०	जर्जेत्	जर्जेताम्	जर्जेयुः
प०	जर्जतु/जर्जतात्	जर्जताम्	जर्जन्तु
ह्य०	अजर्जत्	अजर्जताम्	अजर्जन्
अ०	अजर्जीत्	अजर्जिष्टाम्	अजर्जिषुः
प०	जजर्ज	जजर्जतुः	जजर्जुः
आ०	जर्ज्यात्	जर्ज्यास्ताम्	जर्ज्यासुः
श्व०	जर्जिता	जर्जितारौ	जर्जितारः
भ०	जर्जिष्यति	जर्जिष्यतः	जर्जिष्यन्ति
क्रि०	अजर्जिष्यत्	अजर्जिष्यताम्	अजर्जिष्यन्

१३५४. झर्झ (झर्झ्) परिभाषणे। ४०

व०	झर्झति	झर्झतः	झर्झन्ति
स०	झर्झेत्	झर्झेताम्	झर्झेयुः
प०	झर्झतु/झर्झतात्	झर्झताम्	झर्झन्तु
ह्य०	अझर्झत्	अझर्झताम्	अझर्झन्
अ०	अझर्झीत्	अझर्झिष्टाम्	अझर्झिषुः
प०	जझर्झ	जझर्झतुः	जझर्झुः
आ०	झर्झ्यात्	झर्झ्यास्ताम्	झर्झ्यासुः
श्व०	झर्झिता	झर्झितारौ	झर्झितारः
भ०	झर्झिष्यति	झर्झिष्यतः	झर्झिष्यन्ति
क्रि०	अझर्झिष्यत्	अझर्झिष्यताम्	अझर्झिष्यन्

१३५५. उद्झत् (उज्झ्) उत्सर्गे। ४१

व०	उज्झति	उज्झतः	उज्झन्ति
स०	उज्झेत्	उज्झेताम्	उज्झेयुः
प०	उज्झतु/उज्झतात्	उज्झताम्	उज्झन्तु
ह्य०	औज्झत्	औज्झताम्	औज्झन्
अ०	औज्झीत्	औज्झिष्टाम्	औज्झिषुः
प०	उज्झाञ्चकार	उज्झाञ्चक्रतुः	उज्झाञ्चक्रुः
आ०	उज्झयात्	उज्झयास्ताम्	उज्झयासुः
श्व०	उज्झिता	उज्झितारौ	उज्झितारः
भ०	उज्झिष्यति	उज्झिष्यतः	उज्झिष्यन्ति
क्रि०	औज्झिष्यत्	औज्झिष्यताम्	औज्झिष्यन्

अथ डान्ताश्चत्वारः सेटश्च।

१३५६. जुडत् (जुड) गतौ। ४२

व०	जुडति	जुडतः	जुडन्ति
स०	जुडेत्	जुडेताम्	जुडेयुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	जुडतु/जुडतात्	जुडताम्	जुडन्तु
ह्य०	अजुडत्	अजुडताम्	अजुडन्
अ०	अजोडीत्	अजोडिष्टाम्	अजोडिषुः
प०	जुजोड	जुजुडतुः	जुजुडुः
आ०	जुड्यात्	जुड्यास्ताम्	जुड्यासुः
श्व०	जोडिता	जोडितारौ	जोडितारः
भ०	जोडिष्यति	जोडिष्यतः	जोडिष्यन्ति
क्रि०	अजोडिष्यत्	अजोडिष्यताम्	अजोडिष्यन्

१३५७. पृडत् (पृड्) सुखने। ४३

व०	पृडति	पृडतः	पृडन्ति
स०	पृडेत्	पृडेताम्	पृडेयुः
प०	पृडतु/पृडतात्	पृडताम्	पृडन्तु
ह्य०	अपृडत्	अपृडताम्	अपृडन्
अ०	अपर्डीत्	अपर्डिष्टाम्	अपर्डिषुः
प०	पपर्ड	पपृडतुः	पपृडुः
आ०	पृड्यात्	पृड्यास्ताम्	पृड्यासुः
श्व०	पर्डिता	पर्डितारौ	पर्डितारः
भ०	पर्डिष्यति	पर्डिष्यतः	पर्डिष्यन्ति
क्रि०	अपर्डिष्यत्	अपर्डिष्यताम्	अपर्डिष्यन्

१३५८. मृडत् (मृड्) सुखने। ४४

व०	मृडति	मृडतः	मृडन्ति
स०	मृडेत्	मृडेताम्	मृडेयुः
प०	मृडतु/मृडतात्	मृडताम्	मृडन्तु
ह्य०	अमृडत्	अमृडताम्	अमृडन्
अ०	अमर्डीत्	अमर्डिष्टाम्	अमर्डिषुः
प०	ममर्ड	ममृडतुः	ममृडुः
आ०	मृड्यात्	मृड्यास्ताम्	मृड्यासुः
श्व०	मर्डिता	मर्डितारौ	मर्डितारः
भ०	मर्डिष्यति	मर्डिष्यतः	मर्डिष्यन्ति
क्रि०	अमर्डिष्यत्	अमर्डिष्यताम्	अमर्डिष्यन्

१३५९. कडत् (कड्) मदे। भक्षणेऽपीत्येके। ४५

व०	कडति	कडतः	कडन्ति
स०	कडेत्	कडेताम्	कडेयुः
प०	कडतु/कडतात्	कडताम्	कडन्तु
ह्य०	अकडत्	अकडताम्	अकडन्
अ०	अकडीत्	अकडिष्टाम्	अकडिषुः
	अकाडीत्	अकाडिष्टाम्	अकाडिषु, इत्यादि
प०	चकाड	चकडतुः	चकडुः
आ०	कड्यात्	कड्यास्ताम्	कड्यासुः
श्व०	कडिता	कडितारौ	कडितारः
भ०	कडिष्यति	कडिष्यतः	कडिष्यन्ति
क्रि०	अकडिष्यत्	अकडिष्यताम्	अकडिष्यन्

अथ णान्ता नव सेटश्च।

१३६०. पृणत् (पृण्) प्रीणने। ४६

व०	पृणति	पृणतः	पृणन्ति
स०	पृणेत्	पृणेताम्	पृणेयुः
प०	पृणतु/पृणतात्	पृणताम्	पृणन्तु
ह्य०	अपृणत्	अपृणताम्	अपृणन्
अ०	अपर्णीत्	अपर्णिष्टाम्	अपर्णिषुः
प०	पपर्ण	पपृणतुः	पपृणुः
आ०	पृण्यात्	पृण्यास्ताम्	पृण्यासुः
श्व०	पर्णिता	पर्णितारौ	पर्णितारः
भ०	पर्णिष्यति	पर्णिष्यतः	पर्णिष्यन्ति
क्रि०	अपर्णिष्यत्	अपर्णिष्यताम्	अपर्णिष्यन्

१३६१. तुणत् (तुण्) कौटिल्ये। ४७

व०	तुणति	तुणतः	तुणन्ति
स०	तुणेत्	तुणेताम्	तुणेयुः
प०	तुणतु/तुणतात्	तुणताम्	तुणन्तु
ह्य०	अतुणत्	अतुणताम्	अतुणन्
अ०	अतोणीत्	अतोणिष्टाम्	अतोणिषुः
प०	तुतोण	तुतुणतुः	तुतुणुः
आ०	तुण्यात्	तुण्यास्ताम्	तुण्यासुः
श्व०	तोणिता	तोणितारौ	तोणितारः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ० तोणिष्यति	तोणिष्यतः	तोणिष्यन्ति
क्रि० अतोणिष्यत्	अतोणिष्यताम्	अतोणिष्यन्

१३६२. मृणत् (मृण्) हिंसायाम्। ४८

व० मृणति	मृणतः	मृणन्ति
स० मृणेत्	मृणेताम्	मृणेयुः
प० मृणतु/मृणतात्	मृणताम्	मृणन्तु
ह्य० अमृणत्	अमृणताम्	अमृणन्
अ० अमर्णीत्	अमर्णिष्टाम्	अमर्णिषुः
प० ममर्ण	ममृणतुः	ममृणुः
आ० मृण्यात्	मृण्यास्ताम्	मृण्यासुः
श्व० मर्णिता	मर्णितारौ	मर्णितारः
भ० मर्णिष्यति	मर्णिष्यतः	मर्णिष्यन्ति
क्रि० अमर्णिष्यत्	अमर्णिष्यताम्	अमर्णिष्यन्

१३६३. दुणत् (दुण्) गतिकौटिल्ययोश्च।

चकाराद्धिंसायाम्। ४९

व० दुणति	दुणतः	दुणन्ति
स० दुणेत्	दुणेताम्	दुणेयुः
प० दुणतु/दुणतात्	दुणताम्	दुणन्तु
ह्य० अदुणत्	अदुणताम्	अदुणन्
अ० अद्रोणीत्	अद्रोणिष्टाम्	अद्रोणिषुः
प० दुद्रोण	दुद्रुणतुः	दुद्रुणुः
आ० दुण्यात्	दुण्यास्ताम्	दुण्यासुः
श्व० द्रोणिता	द्रोणितारौ	द्रोणितारः
भ० द्रोणिष्यति	द्रोणिष्यतः	द्रोणिष्यन्ति
क्रि० अद्रोणिष्यत्	अद्रोणिष्यताम्	अद्रोणिष्यन्

१३६४. पुणत् (पुण्) शुभे।

शुभं शुभविषया क्रिया। ५०

व० पुणति	पुणतः	पुणन्ति
स० पुणेत्	पुणेताम्	पुणेयुः
प० पुणतु/पुणतान्	पुणताम्	पुणन्तु
ह्य० अपुणत्	अपुणताम्	अपुणन्
अ० अपोणीत्	अपोणिष्टाम्	अपोणिषुः
प० पुपोण	पुपुणतुः	पुपुणुः
आ० पुण्यात्	पुण्यास्ताम्	पुण्यासुः
श्व० पोणिता	पोणितारौ	पोणितारः
भ० पोणिष्यति	पोणिष्यतः	पोणिष्यन्ति
क्रि० अपोणिष्यत्	अपोणिष्यताम्	अपोणिष्यन्

१३६५. मुणत् (मुण्) प्रतिज्ञाने। ५१

व० मुणति	मुणतः	मुणन्ति
स० मुणेत्	मुणेताम्	मुणेयुः
प० मुणतु/मुणतात्	मुणताम्	मुणन्तु
ह्य० अमुणत्	अमुणताम्	अमुणन्
अ० अमोणीत्	अमोणिष्टाम्	अमोणिषुः
प० मुमोण	मुमुणतुः	मुमुणुः
आ० मुण्यात्	मुण्यास्ताम्	मुण्यासुः
श्व० मोणिता	मोणितारौ	मोणितारः
भ० मोणिष्यति	मोणिष्यतः	मोणिष्यन्ति
क्रि० अमोणिष्यत्	अमोणिष्यताम्	अमोणिष्यन्

१३६६. कुणत् (कुण्) शब्दोपकरणयोः। ५२

व० कुणति	कुणतः	कुणन्ति
स० कुणेत्	कुणेताम्	कुणेयुः
क० कुणतु/कुणतात्	कुणताम्	कुणन्तु
ह्य० अकुणत्	अकुणताम्	अकुणन्
अ० अकोणीत्	अकोणिष्टाम्	अकोणिषुः
प० चुकोण	चुकुणतुः	चुकुणुः
आ० कुण्यात्	कुण्यास्ताम्	कुण्यासुः
श्व० कोणिता	कोणितारौ	कोणितारः
भ० कोणिष्यति	कोणिष्यतः	कोणिष्यन्ति
क्रि० अकोणिष्यत्	अकोणिष्यताम्	अकोणिष्यन्

१३६७. घुणत् (घुण्) भ्रमणे। ५३

व० घुणति	घुणतः	घुणन्ति
स० घुणेत्	घुणेताम्	घुणेयुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घ०	घुणतु/घुणतात्	घुणताम्	घुणन्तु
ह्य०	अघुणत्	अघुणताम्	अघुणन्
अ०	अघोणीत्	अघोणिष्टाम्	अघोणिषुः
प०	जुघोण	जुघुणतुः	जुघुणुः
आ०	घुण्यात्	घुण्यास्ताम्	घुण्यासुः
श्व०	घोणिता	घोणितारौ	घोणितारः
भ०	घोणिष्यति	घोणिष्यतः	घोणिष्यन्ति
क्रि०	अघोणिष्यत्	अघोणिष्यताम्	अघोणिष्यन्

१३६८. घूर्णत् (घूर्ण्) भ्रमणे। ५४

व०	घूर्णति	घूर्णतः	घूर्णन्ति
स०	घूर्णेत्	घूर्णेताम्	घूर्णेयुः
म०	घूर्णतु/घूर्णतात्	घूर्णताम्	घूर्णन्तु
ह्य०	अघूर्णत्	अघूर्णताम्	अघूर्णन्
अ०	अघूर्णीत्	अघूर्णिष्टाम्	अघूर्णिषुः
प०	जुघूर्ण	जुघूर्णतुः	जुघूर्णुः
आ०	घूर्ण्यात्	घूर्ण्यास्ताम्	घूर्ण्यासुः
श्व०	घूर्णिता	घूर्णितारौ	घूर्णितारः
भ०	घूर्णिष्यति	घूर्णिष्यतः	घूर्णिष्यन्ति
क्रि०	अघूर्णिष्यत्	अघूर्णिष्यताम्	अघूर्णिष्यन्

अथ तान्तः सेट् च। ५५

१३६९. चृतैत् (चृत्) हिंसाग्रन्थयोः।

व०	चृतति	चृततः	चृतन्ति
स०	चृतेत्	चृतेताम्	चृतेयुः
प०	चृततु/चृततात्	चृतताम्	चृतन्तु
ह्य०	अचृतत्	अचृतताम्	अचृतन्
अ०	अचर्तीत्	अचर्तिष्टाम्	अचर्तिषुः
म०	चचर्त	चचृततुः	चचृतुः
आ०	चृत्यात्	चृत्यास्ताम्	चृत्यासुः
श्व०	चर्तिता	चर्तितारौ	चर्तितारः
भ०	चर्तिष्यति	चर्तिष्यतः	चर्तिष्यन्ति
क्रि०	अचर्तिष्यत्	अचर्तिष्यताम्	अचर्तिष्यन्

अथ दान्तावनिटौ च।

१३७०. णुदंत् (नुद्) प्रेरणे। ५६

व०	नुदति	नुदतः	नुदन्ति
	नुदसि	नुदथः	नुदथ
	नुदामि	नुदावः	नुदामः
स०	नुदेत्	नुदेताम्	नुदेयुः
	नुदेः	नुदेतम्	नुदेत
	नुदेयम्	नुदेव	नुदेम
प०	नुदतु/नुदतात्	नुदताम्	नुदन्तु
	नुदः/नुदतात्	नुदतम्	नुदत
	नुदानि	नुदाव	नुदाम
ह्य०	अनुदत्	अनुदताम्	अनुदन्
	अनुदः	अनुदतम्	अनुदत
	अनुदम्	अनुदाव	अनुदाम
अ०	अनौत्सीत्	अनौत्ताम्	अनौत्सुः
	अनौत्सीः	अनौत्तम्	अनौत्त
	अनौत्सम्	अनौत्स्व	अनौत्स्म
प०	नुनोद	नुनुदतुः	नुनुदुः
	नुनोदिथ	नुनुदथुः	नुनुद
	नुनोद	नुनुदिव	नुनुदिम
आ०	नुद्यात्	नुद्यास्ताम्	नुद्यासुः
	नुद्याः	नुद्यास्तम्	नुद्यास्त
	नुद्यासम्	नुद्यास्व	नुद्यास्म
श्व०	नोत्ता	नोत्तारौ	नोत्तारः
	नोत्तासि	नोत्तास्थः	नोत्तास्थ
	नोत्तास्मि	नोत्तास्वः	नोत्तास्मः
भ०	नोत्स्यति	नोत्स्यतः	नोत्स्यन्ति
	नोत्स्यसि	नोत्स्यथः	नोत्स्यथ
	नोत्स्यामि	नोत्स्यावः	नोत्स्यामः
क्रि०	अनोत्स्यत्	अनोत्स्यताम्	अनोत्स्यन्
	अनोत्स्यः	अनोत्स्यतम्	अनोत्स्यत
	अनोत्स्यम्	अनोत्स्याव	अनोत्स्याम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३७१. षद्लृंत् (सद्) अवसादने। ५७

व०	सीदति	सीदत:	सीदन्ति
	सीदसि	सीदथ:	सीदथ
	सीदामि	सीदाव:	सीदाम:
स०	सीदेत्	सीदेताम्	सीदेयु:
	सीदे:	सीदेतम्	सीदेत
	सीदेयम्	सीदेव	सीदेम
प०	सीदतु/सीदतात्	सीदताम्	सीदन्तु
	सीद:/सीदतात्	सीदतम्	सीदत
	सीदानि	सीदाव	सीदाम
ह्य०	असीदत्	असीदताम्	असीदन्
	असीद:	असीदतम्	असीदत
	असीदम्	असीदाव	असीदाम
अ०	असदत्	असदताम्	असदन्
	असद:	असदतम्	असदत
	असदम्	असदाव	असदाम
प०	ससाद	सेदतु:	सेदु:
	सेदिथ/ससत्थ	सेदथु:	सेद
	ससाद/ससद	सेदिव	सेदिम
आ०	सद्यात्	सद्यास्ताम्	सद्यासु:
	सद्या:	सद्यास्तम्	सद्यास्त
	सद्यासम्	सद्यास्व	सद्यास्म
श्व०	सत्ता	सत्तारौ	सत्तार:
	सत्तासि	सत्तास्थ:	सत्तास्थ
	सत्तास्मि	सत्तास्व:	सत्तास्म:
भ०	सत्स्यति	सत्स्यत:	सत्स्यन्ति
	सत्स्यसि	सत्स्यथ:	सत्स्यथ
	सत्स्यामि	सत्स्याव:	सत्स्याम:
क्रि०	असत्स्यत्	असत्स्यताम्	असत्स्यन्
	असत्स्य:	असत्स्यतम्	असत्स्यत
	असत्स्यम्	असत्स्याव	असत्स्याम

ज्वलादिपठितेनैव सिद्धे इहास्य पाठोऽवर्णादश्न इति वान्तादेशार्थ:; सीदती सीदन्ती स्त्री कुले वा। ज्वालादिपाठोऽपि णविकल्पार्थ:; सद: साद:। शद्लृंत् शातने इति तु न पठितव्य एव शित्यात्मनेपदित्वेन शतुरभावेऽन्तादेश-विकल्पाप्राप्ते:। अशददित्यादेस्तु तेनैव सिद्धे:।

अथ धान्त: सेट् च।

१३७२. विधत् (विध्) विधाने। ५८

व०	विधति	विधत:	विधन्ति
	विधसि	विधथ:	विधथ
	विधामि	विधाव:	विधाम:
स०	विधेत्	विधेताम्	विधेयु:
	विधे:	विधेतम्	विधेत
	विधेयम्	विधेव	विधेम
प०	विधतु/विधतात्	विधताम्	विधन्तु
	विध/विधतात्	विधतम्	विधत
	विधानि	विधाव	विधाम
ह्य०	अविधत्	अविधताम्	अविधन्
	अविध:	अविधतम्	अविधत
	अविधम्	अविधाव	अविधाम
अ०	अवेधीत्	अवेधिष्टाम्	अवेधिषु:
	अवेधी:	अवेधिष्टम्	अवेधिष्ट
	अवेधिषम्	अवेधिष्व	अवेधिष्म
प०	विवेध	विविधतु:	विविधु:
	विवेधिथ	विविधथु:	विविध
	विवेध	विविधिव	विविधिम
आ०	विध्यात्	विध्यास्ताम्	विध्यासु:
	विध्या:	विध्यास्तम्	विध्यास्त
	विध्यासम्	विध्यास्व	विध्यास्म
श्व०	वेधिता	वेधितारौ	वेधितार:
	वेधितासि	वेधितास्थ:	वेधितास्थ
	वेधितास्मि	वेधितास्व:	वेधितास्म:
भ०	वेधिष्यति	वेधिष्यत:	वेधिष्यन्ति
	वेधिष्यसि	वेधिष्यथ:	वेधिष्यथ
	वेधिष्यामि	वेधिष्याव:	वेधिष्याम:
क्रि०	अवेधिष्यत्	अवेधिष्यताम्	अवेधिष्यन्
	अवेधिष्य:	अवेधिष्यतम्	अवेधिष्यत
	अवेधिष्यम्	अवेधिष्याव	अवेधिष्याम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ नान्तौ सेटौ च।

१३७३. जुनत् (जुन्) गतौ। ५९

व०	जुनति	जुनतः	जुनन्ति
	जुनसि	जुनथः	जुनथ
	जुनामि	जुनावः	जुनामः
स०	जुनेत्	जुनेताम्	जुनेयुः
	जुनेः	जुनेतम्	जुनेत
	जुनेयम्	जुनेव	जुनेम
प०	जुनतु/जुनतात्	जुनताम्	जुनन्तु
	जुनः/जुनतात्	जुनतम्	जुनत
	जुनानि	जुनाव	जुनाम
ह्य०	अजुनत्	अजुनताम्	अजुनन्
	अजुनः	अजुनतम्	अजुनत
	अजुनतम्	अजुनाव	अजुनाम
अ०	अजोनीत्	अजोनिष्टाम्	अजोनिषुः
	अजोनीः	अजोनिष्टम्	अजोनिष्ट
	अजोनिषम्	अजोनिष्व	अजोनिष्म
प०	जुजोन	जुजुनतुः	जुजुनुः
	जुजोनिथ	जुजुनथुः	जुजुन
	जुजोन	जुजुनिव	जुजुनिम
आ०	जुन्यात्	जुन्यास्ताम्	जुन्यासुः
	जुन्याः	जुन्यास्तम्	जुन्यास्त
	जुन्यासम्	जुन्यास्व	जुन्यास्म
श्व०	जोनिता	जोनितारौ	जोनितारः
	जोनितासि	जोनितास्थः	जोनितास्थ
	जोनितास्मि	जोनितास्वः	जोनितास्मः
भ०	जोनिष्यति	जोनिष्यतः	जोनिष्यन्ति
	जोनिष्यसि	जोनिष्यथः	जोनिष्यथ
	जोनिष्यामि	जोनिष्यावः	जोनिष्यामः
क्रि०	अजोनिष्यत्	अजोनिष्यताम्	अजोनिष्यन्
	अजोनिष्यः	अजोनिष्यतम्	अजोनिष्यत
	अजोनिष्यम्	अजोनिष्याव	अजोनिष्याम

१३७४. शुनत् (शुन्) गतौ। ६०

व०	शुनति	शुनतः	शुनन्ति
स०	शुनेत्	शुनेताम्	शुनेयुः
प०	शुनतु/शुनतात्	शुनताम्	शुनन्तु
ह्य०	अशुनत्	अशुनताम्	अशुनन्
अ०	अशोनीत्	अशोनिष्टाम्	अशोनिषुः
प०	शुशोन	शुशुनतुः	शुशुनुः
आ०	शुन्यात्	शुन्यास्ताम्	शुन्यासुः
श्व०	शोनिता	शोनितारौ	शोनितारः
भ०	शोनिष्यति	शोनिष्यतः	शोनिष्यन्ति
क्रि०	अशोनिष्यत्	अशोनिष्यताम्	अशोनिष्यन्

अथ पान्तोऽनिट् च।

१३७५. छुपंत् (छुप्) स्पर्शे। ६१

व०	छुपति	छुपतः	छुपन्ति
स०	छुपेत्	छुपेताम्	छुपेयुः
प०	छुपतु/छुपतात्	छुपताम्	छुपन्तु
ह्य०	अच्छुपत्	अच्छुपताम्	अच्छुपन्
अ०	अच्छौप्सीत्	अच्छौप्ताम्	अच्छौप्सुः
प०	चुच्छोप	चुच्छुपतुः	चुच्छुपुः
आ०	छुप्यात्	छुप्यास्ताम्	छुप्यासुः
श्व०	छोप्ता	छोप्तारौ	छोप्तारः
भ०	छोप्स्यति	छोप्स्यतः	छोप्स्यन्ति
क्रि०	अछोप्स्यत्	अछोप्स्यताम्	अछोप्स्यन्

अथ फान्ता नव सेटश्च।

१३७६. रिफत् (रिफ्) कथनयुद्धहिंसादानेषु। ६२

व०	रिफति	रिफतः	रिफन्ति
	रिफसि	रिफथः	रिफथ
	रिफामि	रिफावः	रिफामः
स०	रिफेत्	रिफेताम्	रिफेयुः
	रिफेः	रिफेतम्	रिफेत
	रिफेयम्	रिफेव	रिफेम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	रिफतु/रिफतात्	रिफताम्	रिफन्तु
	रिफ/रिफतात्	रिफतम्	रिफत
	रिफाणि	रिफाव	रिफाम
ह्य०	अरिफत्	अरिफताम्	अरिफन्
	अरिफः	अरिफतम्	अरिफत
	अरिफतम्	अरिफाव	अरिफाम
अ०	अरेफीत्	अरेफिष्टाम्	अरेफिषुः
	अरेफीः	अरेफिष्टम्	अरेफिष्ट
	अरेफिषम्	अरेफिष्व	अरेफिष्म
प०	रिरेफ	रिरिफतुः	रिरिफुः
	रिरेफिथ	रिरिफथुः	रिरिफ
	रिरेफ	रिरिफिव	रिरिफिम
आ०	रिफ्यात्	रिफ्यास्ताम्	रिफ्यासुः
	रिफ्याः	रिफ्यास्तम्	रिफ्यास्त
	रिफ्यासम्	रिफ्यास्व	रिफ्यास्म
श्व०	रेफिता	रेफितारौ	रेफितारः
	रेफितासि	रेफितास्थः	रेफितास्थ
	रेफितास्मि	रेफितास्वः	रेफितास्मः
भ०	रेफिष्यति	रेफिष्यतः	रेफिष्यन्ति
	रेफिष्यसि	रेफिष्यथः	रेफिष्यथ
	रेफिष्यामि	रेफिष्यावः	रेफिष्यामः
क्रि०	अरेफिष्यत्	अरेफिष्यताम्	अरेफिष्यन्
	अरेफिष्यः	अरेफिष्यतम्	अरेफिष्यत
	अरेफिष्यम्	अरेफिष्याव	अरेफिष्याम

१३७६-२. ऋफत् (ऋफ्) पक्षे।

व०	ऋफति	ऋफतः	ऋफन्ति
स०	ऋफेत्	ऋफेताम्	ऋफेयुः
प०	ऋफतु/ऋफतात्	ऋफताम्	ऋफन्तु
ह्य०	आर्फत्	आर्फताम्	आर्फन्
अ०	आर्फीत्	आर्फिष्टाम्	आर्फिषुः
प०	आनर्फ	आनृफतुः	आनृफुः
आ०	ऋफ्यात्	ऋफ्यास्ताम्	ऋफ्यासुः
श्व०	अर्फिता	अर्फितारौ	अर्फितारः
भ०	अर्फिष्यति	अर्फिष्यतः	अर्फिष्यन्ति
क्रि०	आर्फिष्यत्	आर्फिष्यताम्	आर्फिष्यन्

अथ फान्ता नव सेटश्च।

१३७७. तृफत् (तृफ्) तृप्तौ। ६३

व०	तृम्फति	तृम्फतः	तृम्फन्ति
स०	तृम्फेत्	तृम्फेताम्	तृम्फेयुः
प०	तृम्फतु/तृम्फतात्	तृम्फताम्	तृम्फन्तु
ह्य०	अतृम्फत्	अतृम्फताम्	अतृम्फन्
अ०	अतर्फीत्	अतर्फिष्टाम्	अतर्फिषुः
प०	ततर्फ	ततृफतुः	ततृफुः
आ०	तृफ्यात्	तृफ्यास्ताम्	तृफ्यासुः
श्व०	तर्फिता	तर्फितारौ	तर्फितारः
भ०	तर्फिष्यति	तर्फिष्यतः	तर्फिष्यन्ति
क्रि०	अतर्फिष्यत्	अतर्फिष्यताम्	अतर्फिष्यन्

१३७८. तृम्फत् (तृम्फ्) तृप्तौ। ६४

व०	तृफति	तृफतः	तृफन्ति
स०	तृफेत्	तृफेताम्	तृफेयुः
प०	तृफतु/तृफतात्	तृफताम्	तृफन्तु
ह्य०	अतृफत्	अतृफताम्	अतृफन्
अ०	अतृम्फीत्	अतृम्फिष्टाम्	अतृम्फिषुः
प०	ततृम्फ	ततृम्फतुः	ततृम्फुः
आ०	तृफ्यात्	तृफ्यास्ताम्	तृफ्यासुः
श्व०	तृम्फिता	तृम्फितारौ	तृम्फितारः
भ०	तृम्फिष्यति	तृम्फिष्यतः	तृम्फिष्यन्ति
क्रि०	अतृम्फिष्यत्	अतृम्फिष्यताम्	अतृम्फिष्यन्

पान्ताविमाविति केचित् शेनलुकं नेच्छान्तिच॥

१३७९. ऋफत् (ऋफ्) हिंसायाम्। ६५

व०	ऋफति	ऋफतः	ऋफन्ति
स०	ऋफेत्	ऋफेताम्	ऋफेयुः
प०	ऋफतु/ऋफतात्	ऋफताम्	ऋफन्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	आर्फत्	आर्फताम्	आर्फन्
अ०	आर्फीत्	आर्फिष्टाम्	आर्फिषु:
प०	आनर्फ	आनृफतु:	आनृफु:
आ०	ऋफ्यात्	ऋफ्यास्ताम्	ऋफ्यासु:
श्व०	अर्फिता	अर्फितारौ	अर्फितार:
भ०	अर्फिष्यति	अर्फिष्यत:	अर्फिष्यन्ति
क्रि०	आर्फिष्यत्	आर्फिष्यताम्	आर्फिष्यन्

१३८०. ऋम्फत् (ऋम्फ्) हिंसायाम्। ६९

व०	ऋफति	ऋफत:	ऋफन्ति
स०	ऋफेत्	ऋफेताम्	ऋफेयु:
प०	ऋफतु/ऋफतात्	ऋफताम्	ऋफन्तु
ह्य०	आर्फत्	आर्फताम्	आर्फन्
अ०	आर्म्फीत्	आर्म्फिष्टाम्	आर्म्फिषु:
प०	ऋम्फायाञ्चकार	ऋम्फायाञ्चक्रतु:	ऋम्फायाञ्चक्रु:
	ऋम्फायाञ्चकर्थ	ऋम्फायाञ्चक्रथु:	ऋम्फायाञ्चक्र

ऋम्फायाञ्चकार/चकर ऋम्फायाञ्चकृव ऋम्फायाञ्चकृम

ऋम्फायाम्बभूव। ऋम्फायामास।

आ०	ऋफ्यात्	ऋफ्यास्ताम्	ऋफ्यासु:
श्व०	ऋम्फिता	ऋम्फितारौ	ऋम्फितार:
भ०	ऋम्फिष्यति	ऋम्फिष्यत:	ऋम्फिष्यन्ति
क्रि०	आर्म्फिष्यत्	आर्म्फिष्यताम्	आर्म्फिष्यन्

अनात इत्यात्वे ने चे आनृम्फ नुलकं नेच्छन्त्येके रिफ इति केचित्।

१३८१. दृफत् (दृफ्) उत्क्लेशे। ६७

व०	दृम्फति	दृम्फत:	दृम्फन्ति
स०	दृम्फेत्	दृम्फेताम्	दृम्फेयु:
प०	दृम्फतु/दृम्फतात्	दृम्फताम्	दृम्फन्तु
ह्य०	अदृम्फत्	अदृम्फताम्	अदृम्फन्
अ०	अदर्फीत्	अदर्फिष्टाम्	अदर्फिषु:
प०	ददर्फ	ददृफतु:	ददृफु:
आ०	दृफ्यात्	दृफ्यास्ताम्	दृफ्यासु:
श्व०	दर्फिता	दर्फितारौ	दर्फितार:
भ०	दर्फिष्यति	दर्फिष्यत:	दर्फिष्यन्ति
क्रि०	अदर्फिष्यत्	अदर्फिष्यताम्	अदर्फिष्यन्

१३८२. दृम्फत् (दृम्फ्) उत्क्लेशे। ६८

व०	दृफति	दृफत:	दृफन्ति
स०	दृफेत्	दृफेताम्	दृफेयु:
प०	दृफतु/दृफतात्	दृफताम्	दृफन्तु
ह्य०	अदृफत्	अदृफताम्	अदृफन्
अ०	अदृम्फीत्	अदृम्फिष्टाम्	अदृम्फिषु:
प०	ददृम्फ	ददृम्फतु:	ददृम्फु:
आ०	दृफ्यात्	दृफ्यास्ताम्	दृफ्यासु:
श्व०	दृम्फिता	दृम्फितारौ	दृम्फितार:
भ०	दृम्फिष्यति	दृम्फिष्यत:	दृम्फिष्यन्ति
क्रि०	अदृम्फिष्यत्	अदृम्फिष्यताम्	अदृम्फिष्यन्

१३८३. गुफत् (गुफ्) उत्क्लेशे। ६७

व०	गुम्फति	गुम्फत:	गुम्फन्ति
स०	गुम्फेत्	गुम्फेताम्	गुम्फेयु:
प०	गुम्फतु/गुम्फतात्	गुम्फताम्	गुम्फन्तु
ह्य०	अगुम्फत्	अगुम्फताम्	अगुम्फन्
अ०	अगोफीत्	अगोफिष्टाम्	अगोफिषु:
प०	जुगोफ	जुगुफतु:	जुगुफु:
आ०	गुफ्यात्	गुफ्यास्ताम्	गुफ्यासु:
श्व०	गोफिता	गोफितारौ	गोफितार:
भ०	गोफिष्यति	गोफिष्यत:	गोफिष्यन्ति
क्रि०	अगोफिष्यत्	अगोफिष्यताम्	अगोफिष्यन्

१३८४. गुम्फत् (गुम्फ्) ग्रन्थने। ७०

व०	गुफति	गुफत:	गुफन्ति
स०	गुफेत्	गुफेताम्	गुफेयु:
प०	गुफतु/गुफतात्	गुफताम्	गुफन्तु
ह्य०	अगुफत्	अगुफताम्	अगुफन्
अ०	अगुम्फीत्	अगुम्फिष्टाम्	अगुम्फिषु:
प०	जुगुम्फ	जुगुम्फतु:	जुगुम्फु:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	गुफ्यात्	गुफ्यास्ताम्	गुफ्यासुः
श्व०	गुम्फिता	गुम्फितारौ	गुम्फितारः
भ०	गुम्फिष्यति	गुम्फिष्यतः	गुम्फिष्यन्ति
क्रि०	अगुम्फिष्यत्	अगुम्फिष्यताम्	अगुम्फिष्यन्

अथ भान्ताः षट् सेट्श्च

१३८५. उभत् (उभ्) पूरणे। ७१

व०	उम्भति	उम्भतः	उम्भन्ति
	उम्भसि	उम्भथः	उम्भथ
	उम्भामि	उम्भावः	उम्भामः
स०	उम्भेत्	उम्भेताम्	उम्भेयुः
	उम्भेः	उम्भेतम्	उम्भेत
	उम्भेयम्	उम्भेव	उम्भेम
प०	उम्भतु/उम्भतात्	उम्भताम्	उम्भन्तु
	उम्भ/उम्भतात्	उम्भतम्	उम्भत
	उम्भाणि	उम्भाव	उम्भाम
ह्य०	औम्भत्	औम्भताम्	औम्भन्
	औम्भः	औम्भतम्	औम्भत
	औम्भतम्	औम्भाव	औम्भाम
अ०	औभीत्	औभिष्टाम्	औभिषुः
	औभीः	औभिष्टम्	औभिष्ट
	औभिषम्	औभिष्व	औभिष्म
प०	उवोभ	ऊभतुः	ऊभुः
	उवोभिथ	ऊभथुः	ऊभ
	उवोभ	ऊभिव	ऊभिम
आ०	उभ्यात्	उभ्यास्ताम्	उभ्यासुः
	उभ्याः	उभ्यास्तम्	उभ्यास्त
	उभ्यासम्	उभ्यास्व	उभ्यास्म
श्व०	ओभिता	ओभितारौ	ओभितारः
	ओभितासि	ओभितास्थः	ओभितास्थ
	ओभितास्मि	ओभितास्वः	ओभितास्मः
भ०	ओभिष्यति	ओभिष्यतः	ओभिष्यन्ति
	ओभिष्यसि	ओभिष्यथः	ओभिष्यथ
	ओभिष्यामि	ओभिष्यावः	ओभिष्यामः
क्रि०	ओभिष्यत्	ओभिष्यताम्	ओभिष्यन्
	ओभिष्यः	ओभिष्यतम्	ओभिष्यत
	ओभिष्यम्	ओभिष्याव	ओभिष्याम

१३८२. उभत् (उभ्) पूरणे। ७२

व०	उभति	उभतः	उभन्ति
स०	उभेत्	उभेताम्	उभेयुः
प०	उभतु/उभतात्	उभताम्	उभन्तु
ह्य०	औभत्	औभताम्	औभन्
अ०	औम्भीत्	औम्भिष्टाम्	औम्भिषुः
प०	उम्भाञ्चकार	उम्भाञ्चक्रतुः	उम्भाञ्चक्रुः
	उम्भाञ्चकर्थ	उम्भाञ्चक्रथुः	उम्भाञ्चक्र
	उम्भाञ्चकार/चकर	उम्भाञ्चकृव	उम्भाञ्चकृम
	उम्भाम्बभूव/उम्भामास।		
आ०	उभ्यात्	उभ्यास्ताम्	उभ्यासुः
श्व०	उम्भिता	उम्भितारौ	उम्भितारः
भ०	उम्भिष्यति	उम्भिष्यतः	उम्भिष्यन्ति
क्रि०	औम्भिष्यत्	औम्भिष्यताम्	औम्भिष्यन्

१३८७. शुभत् (शुभ्) शोभार्थे। ७३

व०	शुम्भति	शुम्भतः	शुम्भन्ति
स०	शुम्भेत्	शुम्भेताम्	शुम्भेयुः
प०	शुम्भतु/शुम्भतात्	शुम्भताम्	शुम्भन्तु
ह्य०	अशुम्भत्	अशुम्भताम्	अशुम्भन्
अ०	अशोभीत्	अशोभिष्टाम्	अशोभिषुः
प०	शुशोभ	शुशुभतुः	शुशुभुः
आ०	शुभ्यात्	शुभ्यास्ताम्	शुभ्यासुः
श्व०	शोभिता	शोभितारौ	शोभितारः
भ०	शोभिष्यति	शोभिष्यतः	शोभिष्यन्ति
क्रि०	अशोभिष्यत्	अशोभिष्यताम्	अशोभिष्यन्

१३८८. शुम्भत् (शुम्भ्) शोभार्थे। ७४

व०	शुभति	शुभतः	शुभन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स०	शुभेत्	शुभेताम्	शुभेयुः
प०	शुभतु/शुभतात्	शुभताम्	शुभन्तु
ह्य०	अशुभत्	अशुभताम्	अशुभन्
अ०	अशुम्भीत्	अशुम्भिष्टाम्	अशुम्भिषुः
प०	शुशुम्भ	शुशुम्भतुः	शुशुम्भुः
आ०	शुभ्याद्	शुभ्यास्ताम्	शुभ्यासुः
श्व०	शुम्भिता	शुम्भितारौ	शुम्भितारः
भ०	शुम्भिष्यति	शुम्भिष्यतः	शुम्भिष्यन्ति
क्रि०	अशुम्भिष्यत्	अशुम्भिष्यताम्	अशुम्भिष्यन्

१३८९. दृभैत् (दृभ्) ग्रन्थने। ७५

व०	दृभति	दृभतः	दृभन्ति
स०	दृभेत्	दृभेताम्	दृभेयुः
प०	दृभतु/दृभतात्	दृभताम्	दृभन्तु
ह्य०	अदृभत्	अदृभताम्	अदृभन्
अ०	अदर्भीत्	अदर्भिष्टाम्	अदर्भिषुः
प०	ददर्भ	ददृभतुः	ददृभुः
आ०	दृभ्यात्	दृभ्यास्ताम्	दृभ्यासुः
श्व०	दर्भिता	दर्भितारौ	दर्भितारः
भ०	दर्भिष्यति	दर्भिष्यतः	दर्भिष्यन्ति
क्रि०	अदर्भिष्यत्	अदर्भिष्यताम्	अदर्भिष्यन्

१३९०. लुभत् (लुभ्) विमोहने।[1] ७६

व०	लुभति	लुभतः	लुभन्ति
	लुभसि	लुभथः	लुभथ
	लुभामि	लुभावः	लुभामः
स०	लुभेत्	लुभेताम्	लुभेयुः
	लुभेः	लुभेतम्	लुभेत
	लुभेयम्	लुभेव	लुभेम
प०	लुभतु/लुभतात्	लुभताम्	लुभन्तु
	लुभ/लुभतात्	लुभतम्	लुभत
	लुभानि	लुभाव	लुभाम
ह्य०	अलुभत्	अलुभताम्	अलुभन्
	अलुभः	अलुभतम्	अलुभत
	अलुभतम्	अलुभाव	अलुभाम
अ०	अलोभीत्	अलोभिष्टाम्	अलोभिषुः
	अलोभीः	अलोभिष्टम्	अलोभिष्ट
	अलोभिषम्	अलोभिष्व	अलोभिष्म
प०	लुलोभ	लुलुभतुः	लुलुभुः
	लुलोभिथ	लुलुभथुः	लुलुभ
	लुलोभ	लुलुभिव	लुलुभिम
आ०	लुभ्यात्	लुभ्यास्ताम्	लुभ्यासुः
	लुभ्याः	लुभ्यास्तम्	लुभ्यास्त
	लुभ्यासम्	लुभ्यास्व	लुभ्यास्म
श्व०	लोभिता	लोभितारौ	लोभितारः
	लोभितासि	लोभितास्थः	लोभितास्थ
	लोभितास्मि	लोभितास्वः	लोभितास्मः
	लोब्धा	लोब्धारौ	लोब्धारः, इत्यादि
भ०	लोभिष्यति	लोभिष्यतः	लोभिष्यन्ति
	लोभिष्यसि	लोभिष्यथः	लोभिष्यथ
	लोभिष्यामि	लोभिष्यावः	लोभिष्यामः
क्रि०	अलोभिष्यत्	अलोभिष्यताम्	अलोभिष्यन्
	अलोभिष्यः	अलोभिष्यतम्	अलोभिष्यत
	अलोभिष्यम्	अलोभिष्याव	अलोभिष्याम

अथ रान्ता अष्टौ सेटश्च।

१३९१. कुरत् (कुर्) शब्दे। ७७

व०	कुरति	कुरतः	कुरन्ति
	कुरसि	कुरथः	कुरथ
	कुरामि	कुरावः	कुरामः
स०	कुरेत्	कुरेताम्	कुरेयुः
	कुरेः	कुरेतम्	कुरेत
	कुरेयम्	कुरेव	कुरेम
प०	कुरतु/कुरतात्	कुरताम्	कुरन्तु
	कुर/कुरतात्	कुरतम्	कुरत
	कुराणि	कुराव	कुराम

१. विमोहनं व्याकुलीकरणतम्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	अकुरत्	अकुरताम्	अकुरन्
	अकुरः	अकुरतम्	अकुरत
	अकुरम्	अकुराव	अकुराम
अ०	अकोरीत्	अकोरिष्टाम्	अकोरिषुः
	अकोरीः	अकोरिष्टम्	अकोरिष्ट
	अकोरिषम्	अकोरिष्व	अकोरिष्म
प०	चुकोर	चुकुरतुः	चुकुरुः
	चुकोरिथ	चुकुरथुः	चुकुर
	चुकोर	चुकुरिव	चुकुरिम
आ०	कूर्यात्	कूर्यास्ताम्	कूर्यासुः
	कूर्याः	कूर्यास्तम्	कूर्यास्त
	कूर्यासम्	कूर्यास्व	कूर्यास्म
श्व०	कोरिता	कोरितारौ	कोरितारः
	कोरितासि	कोरितास्थः	कोरितास्थ
	कोरितास्मि	कोरितास्वः	कोरितास्मः
भ०	कोरिष्यति	कोरिष्यतः	कोरिष्यन्ति
	कोरिष्यसि	कोरिष्यथः	कोरिष्यथ
	कोरिष्यामि	कोरिष्यावः	कोरिष्यामः
क्रि०	अकोरिष्यत्	अकोरिष्यताम्	अकोरिष्यन्
	अकोरिष्यः	अकोरिष्यतम्	अकोरिष्यत
	अकोरिष्यम्	अकोरिष्याव	अकोरिष्याम

कुरुच्छुर इत्यत्र कुग एव ग्रहणाद् भ्वादेरिति दीर्घे कूर्यते; आशिषि कूर्यात्; अस्यापि न दीर्घ इत्येके; कुर्यात्।

१३९२. क्षुरत् (क्षुर्) विखनने। ७८

व०	क्षुरति	क्षुरतः	क्षुरन्ति
स०	क्षुरेत्	क्षुरेताम्	क्षुरेयुः
प०	क्षुरतु/क्षुरतात्	क्षुरताम्	क्षुरन्तु
ह्य०	अक्षुरत्	अक्षुरताम्	अक्षुरन्
अ०	अक्षोरीत्	अक्षोरिष्टाम्	अक्षोरिषुः
प०	चुक्षोर	चुक्षुरतुः	चुक्षुरुः
आ०	क्षूर्यात्	क्षूर्यास्ताम्	क्षूर्यासुः
श्व०	क्षोरिता	क्षोरितारौ	क्षोरितारः
भ०	क्षोरिष्यति	क्षोरिष्यतः	क्षोरिष्यन्ति
क्रि०	अक्षोरिष्यत्	अक्षोरिष्यताम्	अक्षोरिष्यन्

१३९३. खुरत् (खुर्) छेदने च।[1] ७९

व०	खुरति	खुरतः	खुरन्ति
स०	खुरेत्	खुरेताम्	खुरेयुः
प०	खुरतु/खुरतात्	खुरताम्	खुरन्तु
ह्य०	अखुरत्	अखुरताम्	अखुरन्
अ०	अखोरीत्	अखोरिष्टाम्	अखोरिषुः
प०	चुखोर	चुखुरतुः	चुखुरुः
आ०	खूर्यात्	खूर्यास्ताम्	खूर्यासुः
श्व०	खोरिता	खोरितारौ	खोरितारः
भ०	खोरिष्यति	खोरिष्यतः	खोरिष्यन्ति
क्रि०	अखोरिष्यत्	अखोरिष्यताम्	अखोरिष्यन्

१३९४. घुरत् (घुर्) भीमार्थ। शब्दयोः। ८०

व०	घुरति	घुरतः	घुरन्ति
स०	घुरेत्	घुरेताम्	घुरेयुः
प०	घुरतु/घुरतात्	घुरताम्	घुरन्तु
ह्य०	अघुरत्	अघुरताम्	अघुरन्
अ०	अघोरीत्	अघोरिष्टाम्	अघोरिषुः
प०	जुघोर	जुघुरतुः	जुघुरुः
आ०	घूर्यात्	घूर्यास्ताम्	घूर्यासुः
श्व०	घोरिता	घोरितारौ	घोरितारः
भ०	घोरिष्यति	घोरिष्यतः	घोरिष्यन्ति
क्रि०	अघोरिष्यत्	अघोरिष्यताम्	अघोरिष्यन्

१३९५. पुरत् (पुर्) अग्रगमने। ८१

व०	पुरति	पुरतः	पुरन्ति
स०	पुरेत्	पुरेताम्	पुरेयुः
प०	पुरतु/पुरतात्	पुरताम्	पुरन्तु
ह्य०	अपुरत्	अपुरताम्	अपुरन्
अ०	अपोरीत्	अपोरिष्टाम्	अपोरिषुः

१. छेदनं विलेखनतम् चकाराद् विखनने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	पुपोर	पुपुरतुः	पुपुरुः
आ०	पूर्यात्	पूर्यास्ताम्	पूर्यासुः
श्व०	पोरिता	पोरितारौ	पोरितारः
भ०	पोरिष्यति	पोरिष्यतः	पोरिष्यन्ति
क्रि०	अपोरिष्यत्	अपोरिष्यताम्	अपोरिष्यन्

१३९६. मुरत् (मुर्) संवेष्टने। ८२

व०	मुरति	मुरतः	मुरन्ति
स०	मुरेत्	मुरेताम्	मुरेयुः
प०	मुरतु/मुरतात्	मुरताम्	मुरन्तु
ह्य०	अमुरत्	अमुरताम्	अमुरन्
अ०	अमोरीत्	अमोरिष्टाम्	अमोरिषुः
प०	मुमोर	मुमुरतुः	मुमुरुः
आ०	मूर्यात्	मूर्यास्ताम्	मूर्यासुः
श्व०	मोरिता	मोरितारौ	मोरितारः
भ०	मोरिष्यति	मोरिष्यतः	मोरिष्यन्ति
क्रि०	अमोरिष्यत्	अमोरिष्यताम्	अमोरिष्यन्

१३९७. सुरत् (सुर्) ऐश्वर्यदीत्योः। ८३

व०	सुरति	सुरतः	सुरन्ति
स०	सुरेत्	सुरेताम्	सुरेयुः
प०	सुरतु/सुरतात्	सुरताम्	सुरन्तु
ह्य०	असुरत्	असुरताम्	असुरन्
अ०	असोरीत्	असोरिष्टाम्	असोरिषुः
प०	सुसोर	सुसुरतुः	सुसुरुः
आ०	सूर्यात्	सूर्यास्ताम्	सूर्यासुः
श्व०	सोरिता	सोरितारौ	सोरितारः
भ०	सोरिष्यति	सोरिष्यतः	सोरिष्यन्ति
क्रि०	असोरिष्यत्	असोरिष्यताम्	असोरिष्यन्

षोपदेशोषऽयमिति केचित्।

१३९८. स्फरत् (स्फर्) स्फुरणे। चलने इत्यके। ८४

व०	स्फरति	स्फरतः	स्फरन्ति
स०	स्फरेत्	स्फरेताम्	स्फरेयुः
प०	स्फरतु/स्फरतात्	स्फरताम्	स्फरन्तु
ह्य०	अस्फरत्	अस्फरताम्	अस्फरन्
अ०	अस्फारीत्	अस्फारिष्टाम्	अस्फारिषुः
प०	पस्फार	पस्फरतुः	पस्फरुः
आ०	स्फर्यात्	स्फर्यास्ताम्	स्फर्यासुः
श्व०	स्फरिता	स्फरितारौ	स्फरितारः
भ०	स्फरिष्यति	स्फरिष्यतः	स्फरिष्यन्ति
क्रि०	अस्फरिष्यत्	अस्फरिष्यताम्	अस्फरिष्यन्

अथ लान्तास्त्रयोदश सेटश्च।

१३९९. स्फलत् (स्फल्) स्फुरणे। ८५

व०	स्फलति	स्फलतः	स्फलन्ति
स०	स्फलेत्	स्फलेताम्	स्फलेयुः
प०	स्फलतु/स्फलतात्	स्फलताम्	स्फलन्तु
ह्य०	अस्फलत्	अस्फलताम्	अस्फलन्
अ०	अस्फालीत्	अस्फालिष्टाम्	अस्फालिषुः
प०	पस्फाल	पस्फलतुः	पस्फलुः
आ०	स्फल्यात्	स्फल्यास्ताम्	स्फल्यासुः
श्व०	स्फलिता	स्फलितारौ	स्फलितारः
भ०	स्फलिष्यति	स्फलिष्यतः	स्फलिष्यन्ति
क्रि०	अस्फलिष्यत्	अस्फलिष्यताम्	अस्फलिष्यन्

१४००. किलत् (किल्) श्वैत्यक्रीडनयोः। ८६

व०	किलति	किलतः	किलन्ति
स०	किलेत्	किलेताम्	किलेयुः
प०	किलतु/किलतात्	किलताम्	किलन्तु
ह्य०	अकिलत्	अकिलताम्	अकिलन्
अ०	अकेलीत्	अकेलिष्टाम्	अकेलिषुः
प०	चिकेल	चिकिलतुः	चिकिलुः
आ०	किल्यात्	किल्यास्ताम्	किल्यासुः
श्व०	केलिता	केलितारौ	केलितारः
भ०	केलिष्यति	केलिष्यतः	केलिष्यन्ति
क्रि०	अकेलिष्यत्	अकेलिष्यताम्	अकेलिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४०१. इलत् (इल्) गतिस्वप्नक्षेपणेषु। ८७

व०	इलति	इलत:	इलन्ति
स०	इलेत्	इलेताम्	इलेयु:
प०	इलतु/इलतात्	इलताम्	इलन्तु
ह्य०	ऐलत्	ऐलताम्	ऐलन्
अ०	ऐलीत्	ऐलिष्टाम्	ऐलिषु:
प०	इयेल	ईलतु:	ईलु:
आ०	इल्यात्	इल्यास्ताम्	इल्यासु:
श्व०	एलिता	एलितारौ	एलितार:
भ०	एलिष्यति	एलिष्यत:	एलिष्यन्ति
क्रि०	ऐलिष्यत्	ऐलिष्यताम्	ऐलिष्यन्

१४९२. हिलत् (हिल्) हावहरणे। ८८

व०	हिलति	हिलत:	हिलन्ति
स०	हिलेत्	हिलेताम्	हिलेयु:
प०	हिलतु/हिलतात्	हिलताम्	हिलन्तु
ह्य०	अहिलत्	अहिलताम्	अहिलन्
अ०	अहेलीत्	अहेलिष्टाम्	अहेलिषु:
प०	जिहेल	जिहिलतु:	जिहिलु:
आ०	हिल्यात्	हिल्यास्ताम्	हिल्यासु:
श्व०	हेलिता	हेलितारौ	हेलितार:
भ०	हेलिष्यति	हेलिष्यत:	हेलिष्यन्ति
क्रि०	अहेलिष्यत्	अहेलिष्यताम्	अहेलिष्यन्

१४०३. शिलत् (शिल्) उञ्छे। ८९

व०	शिलति	शिलत:	शिलन्ति
स०	शिलेत्	शिलेताम्	शिलेयु:
प०	शिलतु/शिलतात्	शिलताम्	शिलन्तु
ह्य०	अशिलत्	अशिलताम्	अशिलन्
अ०	अशेलीत्	अशेलिष्टाम्	अशेलिषु:
प०	शिशेल	शिशिलतु:	शिशिलु:
आ०	शिल्यात्	शिल्यास्ताम्	शिल्यासु:
श्व०	शेलिता	शेलितारौ	शेलितार:
भ०	शेलिष्यति	शेलिष्यत:	शेलिष्यन्ति
क्रि०	अशेलिष्यत्	अशेलिष्यताम्	अशेलिष्यन्

१४०४. सिलत् (सिल्) उञ्छे। ९०

षिलत् इति केचित्, तन्मते परोक्षायां विशेष:, सिषेल इत्यादि।

व०	सिलति	सिलत:	सिलन्ति
स०	सिलेत्	सिलेताम्	सिलेयु:
प०	सिलतु/सिलतात्	सिलताम्	सिलन्तु
ह्य०	असिलत्	असिलताम्	असिलन्
अ०	असेलीत्	असेलिष्टाम्	असेलिषु:
प०	सिसेल	सिसिलतु:	सिसिलु:
आ०	सिल्यात्	सिल्यास्ताम्	सिल्यासु:
श्व०	सेलिता	सेलितारौ	सेलितार:
भ०	सेलिष्यति	सेलिष्यत:	सेलिष्यन्ति
क्रि०	असेलिष्यत्	असेलिष्यताम्	असेलिष्यन्

१४०५. तिलत् (तिल्) स्नेहने। ९१

व०	तिलति	तिलत:	तिलन्ति
स०	तिलेत्	तिलेताम्	तिलेयु:
प०	तिलतु/तिलतात्	तिलताम्	तिलन्तु
ह्य०	अतिलत्	अतिलताम्	अतिलन्
अ०	अतेलीत्	अतेलिष्टाम्	अतेलिषु:
प०	तितेल	तितिलतु:	तितिलु:
आ०	तिल्यात्	तिल्यास्ताम्	तिल्यासु:
श्व०	तेलिता	तेलितारौ	तेलितार:
भ०	तेलिष्यति	तेलिष्यत:	तेलिष्यन्ति
क्रि०	अतेलिष्यत्	अतेलिष्यताम्	अतेलिष्यन्

१४०६. चलत् (चल्) विलसने। ९२

व०	चलति	चलत:	चलन्ति
स०	चलेत्	चलेताम्	चलेयु:
प०	चलतु/चलतात्	चलताम्	चलन्तु
ह्य०	अचलत्	अचलताम्	अचलन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	अचालीत्	अचालिष्टाम्	अचालिषुः
प०	चचाल	चेलतुः	चेलुः
आ०	चल्यात्	चल्यास्ताम्	चल्यासुः
श्व०	चलिता	चलितारौ	चलितारः
भ०	चलिष्यति	चलिष्यतः	चलिष्यन्ति
क्रि०	अचलिष्यत्	अचलिष्यताम्	अचलिष्यन्

१४०७. चिलत् (चिल्) वसने। ९३

व०	चिलति	चिलतः	चिलन्ति
स०	चिलेत्	चिलेताम्	चिलेयुः
प०	चिलतु/चिलतात्	चिलताम्	चिलन्तु
ह्य०	अचिलत्	अचिलताम्	अचिलन्
अ०	अचेलीत्	अचेलिष्टाम्	अचेलिषुः
प०	चिचेल	चिचिलतुः	चिचिलुः
आ०	चिल्यात्	चिल्यास्ताम्	चिल्यासुः
श्व०	चेलिता	चेलितारौ	चेलितारः
भ०	चेलिष्यति	चेलिष्यतः	चेलिष्यन्ति
क्रि०	अचेलिष्यत्	अचेलिष्यताम्	अचेलिष्यन्

१४०८. विलत् (विल्) वरणे। ९४

व०	विलति	विलतः	विलन्ति
स०	विलेत्	विलेताम्	विलेयुः
प०	विलतु/विलतात्	विलताम्	विलन्तु
ह्य०	अविलत्	अविलताम्	अविलन्
अ०	अवेलीत्	अवेलिष्टाम्	अवेलिषुः
प०	विवेल	विविलतुः	विविलुः
आ०	विल्यात्	विल्यास्ताम्	विल्यासुः
श्व०	वेलिता	वेलितारौ	वेलितारः
भ०	वेलिष्यति	वेलिष्यतः	वेलिष्यन्ति
क्रि०	अवेलिष्यत्	अवेलिष्यताम्	अवेलिष्यन्

१४०९. बिलत् (बिल्) भेदने। ९५

व०	बिलति	बिलतः	बिलन्ति
स०	बिलेत्	बिलेताम्	बिलेयुः
प०	बिलतु/बिलतात्	बिलताम्	बिलन्तु
ह्य०	अबिलत्	अबिलताम्	अबिलन्
अ०	अबेलीत्	अबेलिष्टाम्	अबेलिषुः
प०	बिबेल	बिबिलतुः	बिबिलुः
आ०	बिल्यात्	बिल्यास्ताम्	बिल्यासुः
श्व०	बेलिता	बेलितारौ	बेलितारः
भ०	बेलिष्यति	बेलिष्यतः	बेलिष्यन्ति
क्रि०	अबेलिष्यत्	अबेलिष्यताम्	अबेलिष्यन्

१४१०. णिलत् (निल्) गहने। ९६

व०	निलति	निलतः	निलन्ति
स०	निलेत्	निलेताम्	निलेयुः
प०	निलतु/निलतात्	निलताम्	निलन्तु
ह्य०	अनिलत्	अनिलताम्	अनिलन्
अ०	अनेलीत्	अनेलिष्टाम्	अनेलिषुः
प०	निनेल	निनिलतुः	निनिलुः
आ०	निल्यात्	निल्यास्ताम्	निल्यासुः
श्व०	नेलिता	नेलितारौ	नेलितारः
भ०	नेलिष्यति	नेलिष्यतः	नेलिष्यन्ति
क्रि०	अनेलिष्यत्	अनेलिष्यताम्	अनेलिष्यन्

१४११. मिलत् (मिल्) श्लेषणे। ९७

व०	मिलति	मिलतः	मिलन्ति
स०	मिलेत्	मिलेताम्	मिलेयुः
प०	मिलतु/मिलतात्	मिलताम्	मिलन्तु
ह्य०	अमिलत्	अमिलताम्	अमिलन्
अ०	अमेलीत्	अमेलिष्टाम्	अमेलिषुः
प०	मिमेल	मिमिलतुः	मिमिलुः
आ०	मिल्यात्	मिल्यास्ताम्	मिल्यासुः
श्व०	मेलिता	मेलितारौ	मेलितारः
भ०	मेलिष्यति	मेलिष्यतः	मेलिष्यन्ति
क्रि०	अमेलिष्यत्	अमेलिष्यताम्	अमेलिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ शान्ताः षडनिट्छ।

१४१२. स्पृशत् (स्पृश्) स्पर्शे। ९८

व०	स्पृशति	स्पृशतः	स्पृशन्ति
स०	स्पृशेत्	स्पृशेताम्	स्पृशेयुः
प०	स्पृशतु/स्पृशतात्	स्पृशताम्	स्पृशन्तु
ह्य०	अस्पृशत्	अस्पृशताम्	अस्पृशन्
	अस्पार्क्षित्	अस्पार्ष्टाम्	अस्पार्क्षुः, इत्यादि
अ०	अस्प्राक्षीत्	अस्प्राष्टाम्	अस्प्राक्षुः
	अस्पृक्षत्	अस्पृक्षताम्	अस्पृक्षन्, इ०
प०	पस्पर्श	पस्पृशतुः	पस्पृशुः
आ०	स्पृश्यात्	स्पृश्यास्ताम्	स्पृश्यासुः
श्व०	स्प्रष्टा	स्प्रष्टारौ	स्प्रष्टारः
	स्पर्ष्टा	स्पर्ष्टारौ	स्पर्ष्टारः, इत्यादि।
भ०	स्प्रक्ष्यति	स्प्रक्ष्यतः	स्प्रक्ष्यन्ति
	स्पर्क्ष्यति	स्पर्क्ष्यतः	स्पर्क्ष्यन्ति, इत्यादि
क्रि०	अस्प्रक्ष्यत्	अस्प्रक्ष्यताम्	अस्प्रक्ष्यन्
	अस्पर्क्ष्यत्	अस्पर्क्ष्यताम्	अस्पर्क्ष्यन्, इ०

१४१३ रुशत् (रुश्) हिंसायाम्। ९९

व०	रुशति	रुशतः	रुशन्ति
स०	रुशेत्	रुशेताम्	रुशेयुः
प०	रुशतु/रुशतात्	रुशताम्	रुशन्तु
ह्य०	अरुशत्	अरुशताम्	अरुशन्
अ०	अरुक्षत्	अरुक्षताम्	अरुक्षन्
	अरुक्षत्	अरुक्षताम्	अरुक्षन्
प०	रुरोश	रुरुशतुः	रुरुशुः
आ०	रुश्यात्	रुश्यास्ताम्	रुश्यासुः
श्व०	रोष्टा	रोष्टारौ	रोष्टारः
भ०	रोक्ष्यति	रोक्ष्यतः	रोक्ष्यन्ति
क्रि०	अरोक्ष्यत्	अरोक्ष्यताम्	अरोक्ष्यन्

१४१४. रिशत् (रिश्) हिंसायाम्। १००

व०	रिशति	रिशतः	रिशन्ति
स०	रिशेत्	रिशेताम्	रिशेयुः
प०	रिशतु/रिशतात्	रिशताम्	रिशन्तु
ह्य०	अरिशत्	अरिशताम्	अरिशन्
अ०	अरिक्षत्	अरिक्षताम्	अरिक्षन्
प०	रिरेश	रिरिशतुः	रिरिशुः
आ०	रिश्यात्	रिश्यास्ताम्	रिश्यासुः
श्व०	रेष्टा	रेष्टारौ	रेष्टारः
भ०	रेक्ष्यति	रेक्ष्यतः	रेक्ष्यन्ति
क्रि०	अरेक्ष्यत्	अरेक्ष्यताम्	अरेक्ष्यन्

१४१५. विशंत् (विश्) प्रवेशने। १०१

व०	विशति	विशतः	विशन्ति
स०	विशेत्	विशेताम्	विशेयुः
प०	विशतु/विशतात्	विशताम्	विशन्तु
ह्य०	अविशत्	अविशताम्	अविशन्
अ०	अविक्षत्	अविक्षताम्	अविक्षन्
प०	विवेश	विविशतुः	विविशुः
आ०	विश्यात्	विश्यास्ताम्	विश्यासुः
श्व०	वेष्टा	वेष्टारौ	वेष्टारः
भ०	वेक्ष्यति	वेक्ष्यतः	वेक्ष्यन्ति
क्रि०	अवेक्ष्यत्	अवेक्ष्यताम्	अवेक्ष्यन्

१४१६. मृशंत् (मृश्) आमर्शने।

आमर्शनं स्पर्शः। १०२

व०	मृशति	मृशतः	मृशन्ति
स०	मृशेत्	मृशेताम्	मृशेयुः
प०	मृशतु/मृशतात्	मृशताम्	मृशन्तु
ह्य०	अमृशत्	अमृशताम्	अमृशन्
अ०	अम्राक्षीत्	अम्राष्टाम्	अम्राक्षुः
	अमार्क्षीत्	अमार्ष्टाम्	अमार्क्षुः, इत्यादि।
	अमृक्षत्	अमृक्षताम्	अमृक्षन्, इत्यादि।
प०	ममर्श	ममृशतुः	ममृशुः
आ०	मृश्यात्	मृश्यास्ताम्	मृश्यासुः
श्व०	मर्ष्टा	मर्ष्टारौ	मर्ष्टारः
भ०	मर्क्ष्यति	मर्क्ष्यतः	मर्क्ष्यन्ति
क्रि०	अमर्क्ष्यत्	अमर्क्ष्यताम्	अमर्क्ष्यन्
	अम्रक्ष्यत्	अम्रक्ष्यताम्	अम्रयक्षन्, इत्यादि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४१७. लिशंत् (लिश्) गतौ। १०३

व०	लिशति	लिशत:	लिशन्ति
स०	लिशेत्	लिशेताम्	लिशेयु:
प०	लिशतु/लिशतात्	लिशताम्	लिशन्तु
ह्य०	अलिशत्	अलिशताम्	अलिशन्
अ०	अलिक्षत्	अलिक्षताम्	अलिक्षन्
प०	लिलेशं	लिलिशतु:	लिलिशु:
आ०	लिश्यात्	लिश्यास्ताम्	लिश्यासु:
श्व०	लेष्टा	लेष्टारौ	लेष्टार:
भ०	लेक्ष्यति	लेक्ष्यत:	लेक्ष्यन्ति
क्रि०	अलेक्ष्यत्	अलेक्ष्यताम्	अलेक्ष्यन्

अथ षान्तास्त्रय: सेटश्च।

१४१८. ऋषैत् (ऋष्) गतौ। १०४

व०	ऋषति	ऋषत:	ऋषन्ति
स०	ऋषेत्	ऋषेताम्	ऋषेयु:
प०	ऋषतु/ऋषतात्	ऋषताम्	ऋषन्तु
ह्य०	आर्षत्	आर्षताम्	आर्षन्
अ०	आर्षीत्	आर्षिष्टाम्	आर्षिषु:
प०	आनर्ष	आनृषतु:	आनृषु:
आ०	ऋष्यात्	ऋष्यास्ताम्	ऋष्यासु:
श्व०	अर्षिता	अर्षितारौ	अर्षितार:
भ०	अर्षिष्यति	अर्षिष्यत:	अर्षिष्यन्ति
क्रि०	आर्षिष्यत्	आर्षिष्यताम्	आर्षिष्यन्

१४१९. इषत् (इष्) इच्छायाम्। १०५

व०	इच्छति	इच्छत:	इच्छन्ति
स०	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयु:
प०	इच्छतु/इच्छतात्	इच्छताम्	इच्छन्तु
ह्य०	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
अ०	ऐषीत्	ऐषिष्टाम्	ऐषिषु:
प०	इयेष	ईषतु:	ईषु:
आ०	इष्यात्	इष्यास्ताम्	इष्यासु:
श्व०	एष्टा	एष्टारौ	एष्टार:
भ०	एषिष्यति	एषिष्यत:	एषिष्यन्ति
क्रि०	ऐषिष्यत्	ऐषिष्यताम्	ऐषिष्यन्

१४२०. मिषत् (मिष्) स्पर्धायाम्। १०६

व०	मिषति	मिषत:	मिषन्ति
स०	मिषेत्	मिषेताम्	मिषेयु:
प०	मिषतु/मिषतात्	मिषताम्	मिषन्तु
ह्य०	अमिषत्	अमिषताम्	अमिषन्
अ०	अमेषीत्	अमेषिष्टाम्	अमेषिषु:
प०	मिमेष	मिमिषतु:	मिमिषु:
आ०	मिष्यात्	मिष्यास्ताम्	मिष्यासु:
श्व०	मेषिता	मेषितारौ	मेषितार:
भ०	मेषिष्यति	मेषिष्यत:	मेषिष्यन्ति
क्रि०	अमेषिष्यत्	अमेषिष्यताम्	अमेषिष्यन्

१४२१. वृहौत् (वृह्) उद्यमे।

उद्यम उद्धरणम्। १०७

अथ हान्ता: पञ्च सेटश्च।

व०	वृहति	वृहत:	वृहन्ति
स०	वृहेत्	वृहेताम्	वृहेयु:
प०	वृहतु/वृहतात्	वृहताम्	वृहन्तु
ह्य०	अवृहत्	अवृहताम्	अवृहन्
अ०	अवृक्षत्	अवृक्षताम्	अवृक्षन्
	अवर्हीत्	अवर्हिष्टाम्	अवर्हिषु:, इत्यादि
प०	ववर्ह	ववृहतु:	ववृहु:
आ०	वृह्यात्	वृह्यास्ताम्	वृह्यासु:
श्व०	वर्हिता	वर्हितारौ	वर्हितार:
भ०	वर्क्ष्यति	वर्क्ष्यत:	वर्क्ष्यन्ति
	वर्हिष्यति	वर्हिष्यत:	वर्हिष्यन्ति, इ०
क्रि०	अवर्क्ष्यत्	अवर्क्ष्यताम्	अवर्क्ष्यन्
	अवर्हिष्यत्	अवर्हिष्यताम्	अवर्हिष्यन्

१४२२. तृहौत् (तृह्) हिंसायाम्। १०८

व०	तृहति	तृहत:	तृहन्ति
स०	तृहेत्	तृहेताम्	तृहेयु:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	तृहतु/तृहतात्	तृहताम्	तृहन्तु
ह्य०	अतृहत्	अतृहताम्	अतृहन्
अ०	अतर्हीत्	अतर्हिष्टाम्	अतर्हिषुः
	अतृक्षत्	अतृक्षताम्	अतृक्षन्, इत्यादि।
प०	ततर्ह	ततृहतुः	ततृहुः
आ०	तृह्यात्	तृह्यास्ताम्	तृह्यासुः
श्व०	तर्हिता	तर्हितारौ	तर्हितारः
	तर्ढा	तर्ढारौ	तर्ढारः, इत्यादि।
भ०	तर्हिष्यति	तर्हिष्यतः	तर्हिष्यन्ति
	तर्क्ष्यति	तर्क्ष्यतः	तर्क्ष्यन्ति, इत्यादि।
क्रि०	अतर्हिष्यत्	अतर्हिष्यताम्	अतर्हिष्यन्
	अतर्क्ष्यत्	अतर्क्ष्यताम्	अतर्क्ष्यन्, इत्यादि।

१४२३. तृंहौत् (तृंह्) हिंसायाम्। १०९

व०	तृंहति	तृंहतः	तृंहन्ति
स०	तृंहेत्	तृंहेताम्	तृंहेयुः
प०	तृंहतु/तृंहतात्	तृंहताम्	तृंहन्तु
ह्य०	अतृंहत्	अतृंहताम्	अतृंहन्
अ०	अतृंहीत्	अतृंहिष्टाम्	अतृंहिषुः
	अताङ्क्षीत्	अतार्ण्ढाम्	अताङ्क्षुः, इत्यादि
प०	ततृंह	ततृंहतुः	ततृंहुः
आ०	तृंह्यात्	तृंह्यास्ताम्	तृंह्यासुः
श्व०	तृंहिता	तृंहितारौ	तृंहितारः
	तण्ढा	तण्ढारौ	तण्ढारः, इत्यादि।
भ०	तृंहिष्यति	तृंहिष्यतः	तृंहिष्यन्ति
	तृङ्क्ष्यति	तृङ्क्ष्यतः	तृङ्क्ष्यन्ति, इ०
क्रि०	अतृंहिष्यत्	अतृंहिष्यताम्	अतृंहिष्यन्
	अतृङ्क्ष्यत्	अतृङ्क्ष्यताम्	अतृङ्क्ष्यन्, इ०

१४२४. स्तृहौत् (स्तृह्) हिंसायाम्। ११०

व०	स्तृहति	स्तृहतः	स्तृहन्ति
स०	स्तृहेत्	स्तृहेताम्	स्तृहेयुः
प०	स्तृहतु/स्तृहतात्	स्तृहताम्	स्तृहन्तु
ह्य०	अस्तृहत्	अस्तृहताम्	अस्तृहन्
अ०	अस्तर्हीत्	अस्तर्हिष्टाम्	अस्तर्हिषुः
	अस्तृक्षत्	अस्तृक्षताम्	अस्तृक्षन्, इत्यादि
प०	तस्तर्ह	तस्तृहतुः	तस्तृहुः
आ०	स्तृह्यात्	स्तृह्यास्ताम्	स्तृह्यासुः
श्व०	स्तर्हिता	स्तर्हितारौ	स्तर्हितारः
	स्तर्ढा	स्तर्ढारौ	स्तर्ढारः, इत्यादि।
भ०	स्तर्हिष्यति	स्तर्हिष्यतः	स्तर्हिष्यन्ति
	स्तर्क्ष्यति	स्तर्क्ष्यतः	स्तर्क्ष्यन्ति, इत्यादि
क्रि०	अस्तर्हिष्यत्	अस्तर्हिष्यताम्	अस्तर्हिष्यन्
	अस्तर्क्ष्यत्	अस्तर्क्ष्यताम्	अस्तर्क्ष्यन् इत्यादि

१४२५. स्तृंहौत् (स्तृंह्) हिंसायाम्। १११

व०	स्तृंहति	स्तृंहतः	स्तृंहन्ति
स०	स्तृंहेत्	स्तृंहेताम्	स्तृंहेयुः
प०	स्तृंहतु/स्तृंहतात्	स्तृंहताम्	स्तृंहन्तु
ह्य०	अस्तृंहत्	अस्तृंहताम्	अस्तृंहन्
अ०	अस्तृंहीत्	अस्तृंहिष्टाम्	अस्तृंहिषुः
	अस्ताङ्क्षीत्	अस्तार्ण्ढाम्	अस्ताङ्क्षुः, इ०
प०	तस्तृंह	तस्तृंहतुः	तस्तृंहुः
आ०	स्तृंह्यात्	स्तृंह्यास्ताम्	स्तृंह्यासुः
श्व०	स्तृंहिता	स्तृंहितारौ	स्तृंहितारः
	स्तृण्ढा	स्तृण्ढारौ	स्तृण्ढारः, इत्यादि
भ०	स्तृंहिष्यति	स्तृंहिष्यतः	स्तृंहिष्यन्ति
	स्तृङ्क्ष्यति	स्तृङ्क्ष्यतः	स्तृङ्क्ष्यन्ति, इ०
क्रि०	अस्तृंहिष्यत्	अस्तृंहिष्यताम्	अस्तृंहिष्यन्
	अस्तृङ्क्ष्यत्	अस्तृङ्क्ष्यताम्	अस्तृङ्क्ष्यन्, इ०

अथ तुदाद्यन्तगणः कुटादिस्तत्र प्रसिद्ध्यनुरोधेनादौ।

१४२६. कुटत् (कुट्) कौटिल्ये। ११२

व०	कुटति	कुटतः	कुटन्ति
स०	कुटेत्	कुटेताम्	कुटेयुः
प०	कुटतु/कुटतात्	कुटताम्	कुटन्तु
ह्य०	अकुटत्	अकुटताम्	अकुटन्
अ०	अकुटीत्	अकुटिष्टाम्	अकुटिषुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	चुकोट	चुकुटतुः	चुकुटुः
आ०	कुट्यात्	कुट्यास्ताम्	कुट्यासुः
श्व०	कुटिता	कुटितारौ	कुटितारः
भ०	कुटिष्यति	कुटिष्यतः	कुटिष्यन्ति
क्रि०	अकुटिष्यत्	अकुटिष्यताम्	अकुटिष्यन्

१४२७. गुंत् (गु) पुरिषोत्सर्गे। ११३

व०	गुवति	गुवतः	गुवन्ति
स०	गुवेत्	गुवेताम्	गुवेयुः
प०	गुवतु/गुवतात्	गुवताम्	गुवन्तु
ह्य०	अगुवत्	अगुवताम्	अगुवन्
अ०	अगुषीत्	अगुष्टाम्	अगुषुः
प०	जुगाव	जुगुवतुः	जुगुवुः
आ०	गूयात्	गूयास्ताम्	गूयासुः
श्व०	गुता	गुतारौ	गुतारः
भ०	गुष्यति	गुष्यतः	गुष्यन्ति
क्रि०	अगुष्यत्	अगुष्यताम्	अगुष्यन्

१४२८. ध्रुंत् (ध्रु) गतिस्थैर्ययोः। ११४

व०	ध्रुवति	ध्रुवतः	ध्रुवन्ति
स०	ध्रुवेत्	ध्रुवेताम्	ध्रुवेयुः
प०	ध्रुवतु/ध्रुवतात्	ध्रुवताम्	ध्रुवन्तु
ह्य०	अध्रुवत्	अध्रुवताम्	अध्रुवन्
अ०	अध्रुषीत्	अध्रुताम्	अध्रुषुः
प०	दुध्राव	दुध्रुवतुः	दुध्रुवुः
आ०	ध्रूयात्	ध्रूयास्ताम्	ध्रूयासुः
श्व०	ध्रुता	ध्रुतारौ	ध्रुतारः
भ०	ध्रुष्यति	ध्रुष्यतः	ध्रुष्यन्ति
क्रि०	अध्रुष्यत्	अध्रुष्यताम्	अध्रुष्यन्

१४२९. णूत् (णु) स्तवने ११५

व०	नुवति	नुवतः	नुवन्ति
स०	नुवेत्	नुवेताम्	नुवेयुः
प०	नुवतु/नुवतात्	नुवताम्	नुवन्तु
ह्य०	अनुवत्	अनुवताम्	अनुवन्
अ०	अनुवीत्	अनुविष्टाम्	अनुविषुः
प०	नुनाव	नुनुवतुः	नुनुवुः
आ०	नूयात्	नूयास्ताम्	नूयासुः
श्व०	नुविता	नुवितारौ	नुवितारः
भ०	नुविष्यति	नुविष्यतः	नुविष्यन्ति
क्रि०	अनुविष्यत्	अनुविष्यताम्	अनुविष्यन्

१४३०. धूत् (धू) विधूनने। ११६

व०	धुवति	धुवतः	धुवन्ति
स०	धुवेत्	धुवेताम्	धुवेयुः
प०	धुवतु/धुवतात्	धुवताम्	धुवन्तु
ह्य०	अधुवत्	अधुवताम्	अधुवन्
अ०	अधुवीत्	अधुविष्टाम्	अधुविषुः
प०	दुधाव	दुधुवतुः	दुधुवुः
आ०	धूयात्	धूयास्ताम्	धूयासुः
श्व०	धुविता	धुवितारौ	धुवितारः
भ०	धुविष्यति	धुविष्यतः	धुविष्यन्ति
क्रि०	अधुविष्यत्	अधुविष्यताम्	अधुविष्यन्

१४३१. कुचत् (कुच्) संकोचने। ११७

व०	कुचति	कुचतः	कुचन्ति
स०	कुचेत्	कुचेताम्	कुचेयुः
प०	कुचतु/कुचतात्	कुचताम्	कुचन्तु
ह्य०	अकुचत्	अकुचताम्	अकुचन्
अ०	अकुचीत्	अकुचिष्टाम्	अकुचिषुः
प०	चुकोच	चुकुचतुः	चुकुचुः
आ०	कुच्यात्	कुच्यास्ताम्	कुच्यासुः
श्व०	कुचिता	कुचितारौ	कुचितारः
भ०	कुचिष्यति	कुचिष्यतः	कुचिष्यन्ति
क्रि०	अकुचिष्यत्	अकुचिष्यताम्	अकुचिष्यन्

१४३२. व्यचत् (व्यच्) व्याजीकरणे। ११८

व०	विचति	विचतः	विचन्ति
स०	विचेत्	विचेताम्	विचेयुः
प०	विचतु/विचतात्	विचताम्	विचन्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	अविचत्	अविचताम्	अविचन्
अ०	अविचीत्	अविचिष्टाम्	अविचिषुः
प०	विव्याच	विविचतुः	विविचुः
आ०	विच्यात्	विच्यास्ताम्	विच्यासुः
श्व०	विचिता	विचितारौ	विचितारः
भ०	विचिष्यति	विचिष्यतः	विचिष्यन्ति
क्रि०	अविचिष्यत्	अविचिष्यताम्	अविचिष्यन्

अथ गान्तः सेट् च

१४३३. गुजत् (गुज्) शब्दे। ११८

व०	गुजति	गुजतः	गुजन्ति
स०	गुजेत्	गुजेताम्	गुजेयुः
प०	गुजतु/गुजतात्	गुजताम्	गुजन्तु
ह्य०	अगुजत्	अगुजताम्	अगुजन्
अ०	अगुजीत्	अगुजिष्टाम्	अगुजिषुः
प०	जुगोज	जुगुजतुः	जुगुजुः
आ०	गुज्यात्	गुज्यास्ताम्	गुज्यासुः
श्व०	गुजिता	गुजितारौ	गुजितारः
भ०	गुजिष्यति	गुजिष्यतः	गुजिष्यन्ति
क्रि०	अगुजिष्यत्	अगुजिष्यताम्	अगुजिष्यन्

अथ टान्ता अष्टौ सेटश्च।

१४३४. घुटत् (घुट्) प्रतीघाते।

गुडत् इति केचित्। १२०

व०	घुटति	घुटतः	घुटन्ति
स०	घुटेत्	घुटेताम्	घुटेयुः
प०	घुटतु/घुटतात्	घुटताम्	घुटन्तु
ह्य०	अघुटत्	अघुटताम्	अघुटन्
अ०	अघुटीत्	अघुटिष्टाम्	अघुटिषुः
प०	जुघोट	जुघुटतुः	जुघुटुः
आ०	घुट्यात्	घुट्यास्ताम्	घुट्यासुः
श्व०	घुटिता	घुटितारौ	घुटितारः
भ०	घुटिष्यति	घुटिष्यतः	घुटिष्यन्ति
क्रि०	अघुटिष्यत्	अघुटिष्यताम्	अघुटिष्यन्

१४३५. चुटत् (चुट्) छेदने। १२१

व०	चुटति	चुटतः	चुटन्ति
स०	चुटेत्	चुटेताम्	चुटेयुः
प०	चुटतु/चुटतात्	चुटताम्	चुटन्तु
ह्य०	अचुटत्	अचुटताम्	अचुटन्
अ०	अचुटीत्	अचुटिष्टाम्	अचुटिषुः
प०	चुचोट	चुचुटतुः	चुचुटुः
आ०	चुट्यात्	चुट्यास्ताम्	चुट्यासुः
श्व०	चुटिता	चुटितारौ	चुटितारः
भ०	चुटिष्यति	चुटिष्यतः	चुटिष्यन्ति
क्रि०	अचुटिष्यत्	अचुटिष्यताम्	अचुटिष्यन्

१४३६. छुटत् (छुट्) छेदने। १२२

व०	छुटति	छुटतः	छुटन्ति
स०	छुटेत्	छुटेताम्	छुटेयुः
प०	छुटतु/छुटतात्	छुटताम्	छुटन्तु
ह्य०	अच्छुटत्	अच्छुटताम्	अच्छुटन्
अ०	अच्छुटीत्	अच्छुटिष्टाम्	अच्छुटिषुः
प०	चुच्छोट	चुच्छुटतुः	चुच्छुटुः
आ०	छुट्यात्	छुट्यास्ताम्	छुट्यासुः
श्व०	छुटिता	छुटितारौ	छुटितारः
भ०	छुटिष्यति	छुटिष्यतः	छुटिष्यन्ति
क्रि०	अछुटिष्यत्	अछुटिष्यताम्	अछुटिष्यन्

१४३७. त्रुटत् (त्रुट्) छेदने। १२३

व०	त्रुटति	त्रुटतः	त्रुटन्ति
स०	त्रुटेत्	त्रुटेताम्	त्रुटेयुः
प०	त्रुटतु/त्रुटतात्	त्रुटताम्	त्रुटन्तु
ह्य०	अत्रुटत्	अत्रुटताम्	अत्रुटन्
अ०	अत्रुटीत्	अत्रुटिष्टाम्	अत्रुटिषुः
प०	तुत्रोट	तुत्रुटतुः	तुत्रुटुः
आ०	त्रुट्यात्	त्रुट्यास्ताम्	त्रुट्यासुः
श्व०	त्रुटिता	त्रुटितारौ	त्रुटितारः
भ०	त्रुटिष्यति	त्रुटिष्यतः	त्रुटिष्यन्ति
क्रि०	अत्रुटिष्यत्	अत्रुटिष्यताम्	अत्रुटिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४३८. तुटत् (तुट्) कलहकर्मणि। १२४

व०	तुटति	तुटतः	तुटन्ति
स०	तुटेत्	तुटेताम्	तुटेयुः
प०	तुटतु/तुटतात्	तुटताम्	तुटन्तु
ह्य०	अतुटत्	अतुटताम्	अतुटन्
अ०	अतुटीत्	अतुटिष्टाम्	अतुटिषुः
प०	तुतोट	तुतुटतुः	तुतुटुः
आ०	तुट्यात्	तुट्यास्ताम्	तुट्यासुः
श्व०	तुटिता	तुटितारौ	तुटितारः
भ०	तुटिष्यति	तुटिष्यतः	तुटिष्यन्ति
क्रि०	अतुटिष्यत्	अतुटिष्यताम्	अतुटिष्यन्

१४३९. मुटत् (मुट्) आक्षेपप्रमर्दनयोः। १२५

व०	मुटति	मुटतः	मुटन्ति
स०	मुटेत्	मुटेताम्	मुटेयुः
प०	मुटतु/मुटतात्	मुटताम्	मुटन्तु
ह्य०	अमुटत्	अमुटताम्	अमुटन्
अ०	अमुटीत्	अमुटिष्टाम्	अमुटिषुः
प०	मुमोट	मुमुटतुः	मुमुटुः
आ०	मुट्यात्	मुट्यास्ताम्	मुट्यासुः
श्व०	मुटिता	मुटितारौ	मुटितारः
भ०	मुटिष्यति	मुटिष्यतः	मुटिष्यन्ति
क्रि०	अमुटिष्यत्	अमुटिष्यताम्	अमुटिष्यन्

१४४०. स्फुटत् (स्फुट्) विकसने। १२६

व०	स्फुटति	स्फुटतः	स्फुटन्ति
स०	स्फुटेत्	स्फुटेताम्	स्फुटेयुः
प०	स्फुटतु/स्फुटतात्	स्फुटताम्	स्फुटन्तु
	स्फुटानि	स्फुटाव	स्फुटाम
ह्य०	अस्फुटत्	अस्फुटताम्	अस्फुटन्
अ०	अस्फुटीत्	अस्फुटिष्टाम्	अस्फुटिषुः
प०	पुस्फोट	पुस्फुटतुः	पुस्फुटुः
आ०	स्फुट्यात्	स्फुट्यास्ताम्	स्फुट्यासुः
श्व०	स्फुटिता	स्फुटितारौ	स्फुटितारः
भ०	स्फुटिष्यति	स्फुटिष्यतः	स्फुटिष्यन्ति
क्रि०	अस्फुटिष्यत्	अस्फुटिष्यताम्	अस्फुटिष्यन्

१४४१. पुटत् (पुट्) संश्लेषणे। १२७

व०	पुटति	पुटतः	पुटन्ति
स०	पुटेत्	पुटेताम्	पुटेयुः
प०	पुटतु/पुटतात्	पुटताम्	पुटन्तु
ह्य०	अपुटत्	अपुटताम्	अपुटन्
अ०	अपुटीत्	अपुटिष्टाम्	अपुटिषुः
प०	पुपोट	पुपुटतुः	पुपुटुः
आ०	पुट्यात्	पुट्यास्ताम्	पुट्यासुः
श्व०	पुटिता	पुटितारौ	पुटितारः
भ०	पुटिष्यति	पुटिष्यतः	पुटिष्यन्ति
क्रि०	अपुटिष्यत्	अपुटिष्यताम्	अपुटिष्यन्

१४४२. लुठत् (लुठ्) संश्लेषणे। १२८

डान्तोऽयमित्यन्ये

व०	लुठति	लुठतः	लुठन्ति
स०	लुठेत्	लुठेताम्	लुठेयुः
प०	लुठतु/लुठतात्	लुठताम्	लुठन्तु
ह्य०	अलुठत्	अलुठताम्	अलुठन्
अ०	अलुठम्	अलुठिष्टाम्	अलुठिषुः
प०	लुलोठ	लुलुठतुः	लुलुठुः
आ०	लुठ्यात्	लुठ्यास्ताम्	लुठ्यासुः
श्व०	लुठिता	लुठितारौ	लुठितारः
भ०	लुठिष्यति	लुठिष्यतः	लुठिष्यन्ति
क्रि०	अलुठिष्यत्	अलुठिष्यताम्	अलुठिष्यन्

अथ डान्ता श्चतुर्दश सेटश्च।

१४४३. कुडत् (कुड्) घसने। १२९

घसने भक्षणम्। घनत्वे इति केचित् घनत्वं सान्द्रता।

व०	कुडति	कुडतः	कुडन्ति
	कुडसि	कुडथः	कुडथ
	कुडामि	कुडावः	कुडामः
स०	कुडेत्	कुडेताम्	कुडेयुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	कृडेः	कृडेतम्	कृडेत
	कृडेयम्	कृडेव	कृडेम
प०	कृडतु/कृडतात्	कृडताम्	कृडन्तु
	कृड/कृडतात्	कृडतम्	कृडत
	कृडानि	कृडाव	कृडाम
ह्य०	अकृडत्	अकृडताम्	अकृडन्
	अकृडः	अकृडतम्	अकृडत
	अकृडम्	अकृडाव	अकृडाम
अ०	अकृडीत्	अकृडिष्टाम्	अकृडिषुः
	अकृडीः	अकृडिष्टम्	अकृडिष्ट
	अकृडिषम्	अकृडिष्व	अकृडिष्म
प०	चकर्ड	चकृडतुः	चकृडुः
	चकृडिथ	चकृडथुः	चकृड
	चकर्ड/चकृड	चकृडिव	चकृडिम
आ०	कृड्यात्	कृड्यास्ताम्	कृड्यासुः
	कृड्याः	कृड्यास्तम्	कृड्यास्त
	कृड्यासम्	कृड्यास्व	कृड्यास्म
श्व०	कृडिता	कृडितारौ	कृडितारः
	कृडितासि	कृडितास्थः	कृडितास्थ
	कृडितास्मि	कृडितास्वः	कृडितास्मः
भ०	कृडिष्यति	कृडिष्यतः	कृडिष्यन्ति
	कृडिष्यसि	कृडिष्यथः	कृडिष्यथ
	कृडिष्यामि	कृडिष्यावः	कृडिष्यामः
क्रि०	अकृडिष्यत्	अकृडिष्यताम्	अकृडिष्यन्
	अकृडिष्यः	अकृडिष्यतम्	अकृडिष्यत
	अकृडिष्यम्	अकृडिष्याव	अकृडिष्याम

१४४४. कुडत् (कुड्) बाल्ये च।

चकाराद् घसने। १३०

व०	कुडति	कुडतः	कुडन्ति
स०	कुडेत्	कुडेताम्	कुडेयुः
प०	कुडतु/कुडतात्	कुडताम्	कुडन्तु
ह्य०	अकुडत्	अकुडताम्	अकुडन्
अ०	अकुडीत्	अकुडिष्टाम्	अकुडिषुः
प०	चुकोड	चुकुडतुः	चुकुडुः
आ०	कुड्यात्	कुड्यास्ताम्	कुड्यासुः
श्व०	कुडिता	कुडितारौ	कुडितारः
भ०	कुडिष्यति	कुडिष्यतः	कुडिष्यन्ति
क्रि०	अकुडिष्यत्	अकुडिष्यताम्	अकुडिष्यन्

१४४५. गुडत् (गुड्) रक्षायाम्। १३१

व०	गुडति	गुडतः	गुडन्ति
स०	गुडेत्	गुडेताम्	गुडेयुः
प०	गुडतु/गुडतात्	गुडताम्	गुडन्तु
ह्य०	अगुडत्	अगुडताम्	अगुडन्
अ०	अगुडीत्	अगुडिष्टाम्	अगुडिषुः
प०	जुगोड	जुगुडतुः	जुगुडुः
आ०	गुड्यात्	गुड्यास्ताम्	गुड्यासुः
श्व०	गुडिता	गुडितारौ	गुडितारः
भ०	गुडिष्यति	गुडिष्यतः	गुडिष्यन्ति
क्रि०	अगुडिष्यत्	अगुडिष्यताम्	अगुडिष्यन्

१४४६. जुडत् (जुड्) बन्धे। १३२

व०	जुडति	जुडतः	जुडन्ति
स०	जुडेत्	जुडेताम्	जुडेयुः
प०	जुडतु/जुडतात्	जुडताम्	जुडन्तु
ह्य०	अजुडत्	अजुडताम्	अजुडन्
अ०	अजुडीत्	अजुडिष्टाम्	अजुडिषुः
प०	जुजोड	जुजुडतुः	जुजुडुः
आ०	जुड्यात्	जुड्यास्ताम्	जुड्यासुः
श्व०	जुडिता	जुडितारौ	जुडितारः
भ०	जुडिष्यति	जुडिष्यतः	जुडिष्यन्ति
क्रि०	अजुडिष्यत्	अजुडिष्यताम्	अजुडिष्यन्

१४४७. तुडत् (तुड्) तोडने।

तोडनं भेदः। १३३

व०	तुडति	तुडतः	तुडन्ति
स०	तुडेत्	तुडेताम्	तुडेयुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प० तुडतु/तुडतात्	तुडताम्	तुडन्तु
ह्य० अतुडत्	अतुडताम्	अतुडन्
अ० अतुडीत्	अतुडिष्टाम्	अतुडिषुः
प० तुतोड	तुतुडतुः	तुतुडुः
आ० तुड्यात्	तुड्यास्ताम्	तुड्यासुः
श्व० तुडिता	तुडितारौ	तुडितारः
भ० तुडिष्यति	तुडिष्यतः	तुडिष्यन्ति
क्रि० अतुडिष्यत्	अतुडिष्यताम्	अतुडिष्यन्

१४४८. लुडत् (लुड्) संवरणे। १३४

व० लुडति	लुडतः	लुडन्ति
स० लुडेत्	लुडेताम्	लुडेयुः
प० लुडतु/लुडतात्	लुडताम्	लुडन्तु
ह्य० अलुडत्	अलुडताम्	अलुडन्
अ० अलुडीत्	अलुडिष्टाम्	अलुडिषुः
प० लुलोड	लुलुडतुः	लुलुडुः
आ० लुड्यात्	लुड्यास्ताम्	लुड्यासुः
श्व० लुडिता	लुडितारौ	लुडितारः
भ० लुडिष्यति	लुडिष्यतः	लुडिष्यन्ति
क्रि० अलुडिष्यत्	अलुडिष्यताम्	अलुडिष्यन्

१४४९. थुडत् (थुड्) संवरणे। १३५

व० थुडति	थुडतः	थुडन्ति
स० थुडेत्	थुडेताम्	थुडेयुः
प० थुडतु/थुडतात्	थुडताम्	थुडन्तु
ह्य० अथुडत्	अथुडताम्	अथुडन्
अ० अथुडीत्	अथुडिष्टाम्	अथुडिषुः
प० तुथोड	तुथुडतुः	तुथुडुः
आ० थुड्यात्	थुड्यास्ताम्	थुड्यासुः
श्व० थुडिता	थुडितारौ	थुडितारः
भ० थुडिष्यति	थुडिष्यतः	थुडिष्यन्ति
क्रि० अथुडिष्यत्	अथुडिष्यताम्	अथुडिष्यन्

१४५०. स्थुडत् (स्थुड्) संवरणे। १३६

व० स्थुडति	स्थुडतः	स्थुडन्ति
स० स्थुडेत्	स्थुडेताम्	स्थुडेयुः
प० स्थुडतु/स्थुडतात्	स्थुडताम्	स्थुडन्तु
ह्य० अस्थुडत्	अस्थुडताम्	अस्थुडन्
अ० अस्थुडीत्	अस्थुडिष्टाम्	अस्थुडिषुः
प० तुस्थोड	तुस्थुडतुः	तुस्थुडुः
आ० स्थुड्यात्	स्थुड्यास्ताम्	स्थुड्यासुः
श्व० स्थुडिता	स्थुडितारौ	स्थुडितारः
भ० स्थुडिष्यति	स्थुडिष्यतः	स्थुडिष्यन्ति
क्रि० अस्थुडिष्यत्	अस्थुडिष्यताम्	अस्थुडिष्यन्

१४५१. वुडत् (वुड्) उत्सर्गे च। १३७ चकारात्संवरणे।

व० वुडति	वुडतः	वुडन्ति
स० वुडेत्	वुडेताम्	वुडेयुः
प० वुडतु/वुडतात्	वुडताम्	वुडन्तु
ह्य० अवुडत्	अवुडताम्	अवुडन्
अ० अवुडीत्	अवुडिष्टाम्	अवुडिषुः
प० वुवोड	वुवुडतुः	वुवुडुः
आ० वुड्यात्	वुड्यास्ताम्	वुड्यासुः
श्व० वुडिता	वुडितारौ	वुडितारः
भ० वुडिष्यति	वुडिष्यतः	वुडिष्यन्ति
क्रि० अवुडिष्यत्	अवुडिष्यताम्	अवुडिष्यन्

१४५२. व्रुडत् (व्रुड्) संघाते। १३८

व० व्रुडति	व्रुडतः	व्रुडन्ति
स० व्रुडेत्	व्रुडेताम्	व्रुडेयुः
प० व्रुडतु/व्रुडतात्	व्रुडताम्	व्रुडन्तु
ह्य० अव्रुडत्	अव्रुडताम्	अव्रुडन्
अ० अव्रुडीत्	अव्रुडिष्टाम्	अव्रुडिषुः
प० वुव्रोड	वुव्रुडतुः	वुव्रुडुः
आ० व्रुड्यात्	व्रुड्यास्ताम्	व्रुड्यासुः
श्व० व्रुडिता	व्रुडितारौ	व्रुडितारः
भ० व्रुडिष्यति	व्रुडिष्यतः	व्रुडिष्यन्ति
क्रि० अव्रुडिष्यत्	अव्रुडिष्यताम्	अव्रुडिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४५३. भ्रुडत् (भ्रुड्) संघाते। १३९

व०	भ्रुडति	भ्रुडतः	भ्रुडन्ति
स०	भ्रुडेत्	भ्रुडेताम्	भ्रुडेयुः
प०	भ्रुडतु/भ्रुडतात्	भ्रुडताम्	भ्रुडन्तु
ह्य०	अभ्रुडत्	अभ्रुडताम्	अभ्रुडन्
अ०	अभ्रुडीत्	अभ्रुडिष्टाम्	अभ्रुडिषुः
प०	बुभ्रोड	बुभ्रुडतुः	बुभ्रुडुः
आ०	भ्रुड्यात्	भ्रुड्यास्ताम्	भ्रुड्यासुः
श्व०	भ्रुडिता	भ्रुडितारौ	भ्रुडितारः
भ०	भ्रुडिष्यति	भ्रुडिष्यतः	भ्रुडिष्यन्ति
क्रि०	अभ्रुडिष्यत्	अभ्रुडिष्यताम्	अभ्रुडिष्यन्

१४५४. दुडत् (दुड्) निमज्जने। १४१

व०	दुडति	दुडतः	दुडन्ति
स०	दुडेत्	दुडेताम्	दुडेयुः
प०	दुडतु/दुडतात्	दुडताम्	दुडन्तु
ह्य०	अदुडत्	अदुडताम्	अदुडन्
अ०	अदुडीत्	अदुडिष्टाम्	अदुडिषुः
प०	दुदोड	दुदुडतुः	दुदुडुः
आ०	दुड्यात्	दुड्यास्ताम्	दुड्यासुः
श्व०	दुडिता	दुडितारौ	दुडितारः
भ०	दुडिष्यति	दुडिष्यतः	दुडिष्यन्ति
क्रि०	अदुडिष्यत्	अदुडिष्यताम्	अदुडिष्यन्

१४५५. हुडत् (हुड्) निमज्जने। १४१

व०	हुडति	हुडतः	हुडन्ति
स०	हुडेत्	हुडेताम्	हुडेयुः
प०	हुडतु/हुडतात्	हुडताम्	हुडन्तु
ह्य०	अहुडत्	अहुडताम्	अहुडन्
अ०	अहुडीत्	अहुडिष्टाम्	अहुडिषुः
प०	जुहोड	जुहुडतुः	जुहुडुः
आ०	हुड्यात्	हुड्यास्ताम्	हुड्यासुः
श्व०	हुडिता	हुडितारौ	हुडितारः
भ०	हुडिष्यति	हुडिष्यतः	हुडिष्यन्ति
क्रि०	अहुडिष्यत्	अहुडिष्यताम्	अहुडिष्यन्

१४५६. त्रुडत् (त्रुड्) निमज्जने। १४२

व०	त्रुडति	त्रुडतः	त्रुडन्ति
स०	त्रुडेत्	त्रुडेताम्	त्रुडेयुः
प०	त्रुडतु/त्रुडतात्	त्रुडताम्	त्रुडन्तु
ह्य०	अत्रुडत्	अत्रुडताम्	अत्रुडन्
अ०	अत्रुडीत्	अत्रुडिष्टाम्	अत्रुडिषुः
प०	तुत्रोड	तुत्रुडतुः	तुत्रुडुः
आ०	त्रुड्यात्	त्रुड्यास्ताम्	त्रुड्यासुः
श्व०	त्रुडिता	त्रुडितारौ	त्रुडितारः
भ०	त्रुडिष्यति	त्रुडिष्यतः	त्रुडिष्यन्ति
क्रि०	अत्रुडिष्यत्	अत्रुडिष्यताम्	अत्रुडिष्यन्

॥अथ णान्तः सेट् च॥

१४५७. चुणत् (चुण्) छेदने। १४३

व०	चुणति	चुणतः	चुणन्ति
स०	चुणेत्	चुणेताम्	चुणेयुः
प०	चुणतु/चुणतात्	चुणताम्	चुणन्तु
ह्य०	अचुणत्	अचुणताम्	अचुणन्
अ०	अचुणीत्	अचुणिष्टाम्	अचुणिषुः
प०	चुचोण	चुचुणतुः	चुचुणुः
आ०	चुण्यात्	चुण्यास्ताम्	चुण्यासुः
श्व०	चुणिता	चुणितारौ	चुणितारः
भ०	चुणिष्यति	चुणिष्यतः	चुणिष्यन्ति
क्रि०	अचुणिष्यत्	अचुणिष्यताम्	अचुणिष्यन्

अथ पान्तः सेट्श्च।

१४५८. डिपत् (डिप्) क्षेपे १४४

व०	डिपति	डिपतः	डिपन्ति
स०	डिपेत्	डिपेताम्	डिपेयुः
प०	डिपतु/डिपतात्	डिपताम्	डिपन्तु
ह्य०	अडिपत्	अडिपताम्	अडिपन्
अ०	अडिपीत्	अडिपिष्टाम्	अडिपिषुः
प०	डिडेप	डिडिपतुः	डिडिपुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	डिप्यात्	डिप्यास्ताम्	डिप्यासुः
श्व०	डिपिता	डिपितारौ	डिपितारः
भ०	डिपिष्यति	डिपिष्यतः	डिपिष्यन्ति
क्रि०	अडिपिष्यत्	अडिपिष्यताम्	अडिपिष्यन्

१४५९. छुरत् (छुर्) छेदने। १४५

व०	छुरति	छुरतः	छुरन्ति
स०	छुरेत्	छुरेताम्	छुरेयुः
प०	छुरतु/छुरतात्	छुरताम्	छुरन्तु
ह्य०	अच्छुरत्	अच्छुरताम्	अच्छुरन्
अ०	अच्छुरीत्	अच्छुरिष्टाम्	अच्छुरिषुः
प०	चुच्छोर	चुच्छुरतुः	चुच्छुरुः
आ०	छुर्यात्	छुर्यास्ताम्	छुर्यासुः
श्व०	छुरिता	छुरितारौ	छुरितारः
भ०	छुरिष्यति	छुरिष्यतः	छुरिष्यन्ति
क्रि०	अच्छुरिष्यत्	अच्छुरिष्यताम्	अच्छुरिष्यन्

१४६०. स्फुरत् (स्फुर्) स्फुरणे। १४६

व०	स्फुरति	स्फुरतः	स्फुरन्ति
स०	स्फुरेत्	स्फुरेताम्	स्फुरेयुः
प०	स्फुरतु/स्फुरतात्	स्फुरताम्	स्फुरन्तु
ह्य०	अस्फुरत्	अस्फुरताम्	अस्फुरन्
अ०	अस्फुरीत्	अस्फुरिष्टाम्	अस्फुरिषुः
प०	पुस्फोर	पुस्फुरतुः	पुस्फुरुः
आ०	स्फूर्यात्	स्फूर्यास्ताम्	स्फूर्यासुः
श्व०	स्फुरिता	स्फुरितारौ	स्फुरितारः
भ०	स्फुरिष्यति	स्फुरिष्यतः	स्फुरिष्यन्ति
क्रि०	अस्फुरिष्यत्	अस्फुरिष्यताम्	अस्फुरिष्यन्

॥अथ लान्तः सेट्श्च॥

१४६१. स्फुलत् (स्फुल्) संचये च। १४७

चकारात्स्फुरणे। चलने केचित्।

व०	स्फुलति	स्फुलतः	स्फुलन्ति
स०	स्फुलेत्	स्फुलेताम्	स्फुलेयुः
प०	स्फुलतु/स्फुलतात्	स्फुलताम्	स्फुलन्तु
ह्य०	अस्फुलत्	अस्फुलताम्	अस्फुलन्
अ०	अस्फुलीत्	अस्फुलिष्टाम्	अस्फुलिषुः
प०	पुस्फोल	पुस्फुलतुः	पुस्फुलुः
आ०	स्फुल्यात्	स्फुल्यास्ताम्	स्फुल्यासुः
श्व०	स्फुलिता	स्फुलितारौ	स्फुलितारः
भ०	स्फुलिष्यति	स्फुलिष्यतः	स्फुलिष्यन्ति
क्रि०	अस्फुलिष्यत्	अस्फुलिष्यताम्	अस्फुलिष्यन्

अथात्मनेपदिघूदन्तोऽनिट् च।

१४६२. कुङ्त् (कु) शब्दे। १४८

व०	कुवते	कुवेते	कुवन्ते
स०	कुवेत	कुवेयाताम्	कुवेरन्
प०	कुवताम्	कुवेताम्	कुवन्ताम्
ह्य०	अकुवत	अकुवेताम्	अकुवन्त
अ०	अकुत	अकुषाताम्	अकुषत
प०	चुकुवे	चुकुवाते	चुकुविरे
आ०	कुषीष्ट	कुषीयास्ताम्	कुषीरन्
श्व०	कुता	कुतारौ	कुतारः
भ०	कुष्यते	कुष्येते	कुष्यन्ते
क्रि०	अकुष्यत	अकुष्येताम्	अकुष्यन्त

अथोदन्तः सेट् च।

१४६३. कुङ्त् (कु) शब्दे। १४९

व०	कुवते	कुवेते	कुवन्ते
स०	कुवेत	कुवेयाताम्	कुवेरन्
प०	कुवताम्	कुवेताम्	कुवन्ताम्
ह्य०	अकुवत	अकुवेताम्	अकुवन्त
अ०	अकुविष्ट	अकुविषाताम्	अकुविषत
प०	चुकुवे	चुकुवाते	चुकुविरे
आ०	कुविषीष्ट	कुविषीयास्ताम्	कुविषीरन्
श्व०	कुविता	कुवितारौ	कुवितारः
भ०	कुविष्यते	कुविष्येते	कुविष्यन्ते
क्रि०	अकुविष्यत	अकुविष्येताम्	अकुविष्यन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ रान्तः सेट् च।

१४६४. गुरैति (गुर्) उद्यमे। १५०

व०	गुरते	गुरेते	गुरन्ते
	गुरसे	गुरेथे	गुरध्वे
	गुरे	गुरावहे	गुरामहे
स०	गुरेत	गुरेयाताम्	गुरेरन्
	गुरेथाः	गुरेयाथाम्	गुरेध्वम्
	गुरेय	गुरेवहि	गुरेमहि
प०	गुरताम्	गुरेताम्	गुरन्ताम्
	गुरस्व	गुरेथाम्	गुरध्वम्
	गुरै	गुरावहै	गुरामहै
ह्य०	अगुरत	अगुरेताम्	अगुरन्त
	अगुरथाः	अगुरेथाम्	अगुरध्वम्
	अगुरे	अगुरावहि	अगुरामहि
अ०	अगुरिष्ट	अगुरिषाताम्	अगुरिषत
	अगुरिष्ठाः	अगुरिषाथाम्	अगुरिड्ढ्वम्/ढ्वम्
	अगुरिषि	अगुरिष्वहि	अगुरिष्महि
प०	जुगुरे	जुगुराते	जुगुरिरे
	जुगुरिषे	जुगुराथे	जुगुरिध्वे
	जुगुरे	जुगुरिवहे	जुगुरिमहे
आ०	गुरिषीष्ट	गुरिषीयास्ताम्	गुरिषीरन्
	गुरिषीष्ठाः	गुरिषीयास्थाम्	गुरिषीध्वम्
	गुरिषीय	गुरिषीवहि	गुरिषीमहि
श्व०	गुरिता	गुरितारौ	गुरितारः
	गुरितासे	गुरितासाथे	गुरिताध्वे
	गुरिताहे	गुरितास्वहे	गुरितास्मिहे
भ०	गुरिष्यते	गुरिष्येते	गुरिष्यन्ते
	गुरिष्यसे	गुरिष्येथे	गुरिष्यध्वे
	गुरिष्ये	गुरिष्यावहे	गुरिष्यामहे
क्रि०	अगुरिष्यत	अगुरिष्येताम्	अगुरिष्यन्त
	अगुरिष्यथाः	अगुरिष्येथाम्	अगुरिष्यध्वम्
	अगुरिष्ये	अगुरिष्यावहि	अगुरिष्यामहि

अथ प्रकृतवर्णक्रमेण ऋदन्तास्त्रयोऽनिटश्च। १५१

१४६५. पृंङ्त् (पृ) व्यायामे।

प्रायेणायं व्याङ्पूर्वः। व्यायाम उद्योगः।

व०	प्रियते	प्रियेते	प्रियन्ते
स०	प्रियेत	प्रियेयाताम्	प्रियेरन्
प०	प्रियताम्	प्रियेताम्	प्रियन्ताम्
ह्य०	अप्रियत	अप्रियेताम्	अप्रियन्त
अ०	अपृत	अपृषाताम्	अपृषत
प०	पप्रे	पप्राते	पप्रिरे
आ०	पृषीष्ट	पृषीयास्ताम्	पृषीरन्
श्व०	पर्ता	पर्तारौ	पर्तारः
भ०	परिष्यते	परिष्येते	परिष्यन्ते
क्रि०	अपरिष्यत	अपरिष्येताम्	अपरिष्यन्त

१४६५. दृङ्त् (दृ) आदरे। १५२

व०	द्रियते	द्रियेते	द्रियन्ते
स०	द्रियेत	द्रियेयाताम्	द्रियेरन्
प०	द्रियताम्	द्रियेताम्	द्रियन्ताम्
ह्य०	अद्रियत	अद्रियेताम्	अद्रियन्त
अ०	अदृत	अदृषाताम्	अदृषत
प०	दद्रे	दद्राते	दद्रिरे
आ०	दृषीष्ट	दृषीयास्ताम्	दृषीरन्
श्व०	दर्ता	दर्तारौ	दर्तारः
भ०	दरिष्यते	दरिष्येते	दरिष्यन्ते
क्रि०	अदरिष्यत	अदरिष्येताम्	अदरिष्यन्त

१४६७. धृङ्त् (धृ) स्थाने।

।।धारणेन्ये।। १५३

व०	ध्रियते	ध्रियेते	ध्रियन्ते
स०	ध्रियेत	ध्रियेयाताम्	ध्रियेरन्
प०	ध्रियताम्	ध्रियेताम्	ध्रियन्ताम्
ह्य०	अध्रियत	अध्रियेताम्	अध्रियन्त
अ०	अधृत	अधृषाताम्	अधृषत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	दध्रे	दध्राते	दध्रिरे
आ०	धृषीष्ट	धृषीयास्ताम्	धृषीरन्
श्व०	धर्ता	धर्तारौ	धर्तारः
भ०	धरिष्यते	धरिष्येते	धरिष्यन्ते
क्रि०	अधरिष्यत	अधरिष्येताम्	अधरिष्यन्त

।।अथ जान्ताश्चत्वारः।।

१४६८. औविजैति (विज्) भवचलनयोः।

प्रायेणायमुत्पूर्वः। १५४

व०	विजते	विजेते	विजन्ते
	विजसे	विजेथे	विजध्वे
	विजे	विजावहे	विजामहे
स०	विजेत	विजेयाताम्	विजेरन्
	विजेथाः	विजेयाथाम्	विजेध्वम्
	विजेय	विजेवहि	विजेमहि
प०	विजताम्	विजेताम्	विजन्ताम्
	विजस्व	विजेथाम्	विजध्वम्
	विजै	विजावहै	विजामहै
ह्य०	अविजत	अविजेताम्	अविजन्त
	अविजथाः	अविजेथाम	अविजध्वम्
	अविजे	अविजावहि	अविजामहि
अ०	अविजिष्ट	अविजिषाताम्	अविजिषत
	अविजिष्ठाः	अविजिषाथाम्	अविजिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अविजिषि	अविजिष्वहि	अविजिष्महि
प०	विविजे	विविजाते	विविजिरे
	विविजिषे	विविजाथे	विविजिध्वे
	विविजे	विविजिवहे	विविजिमहे
आ०	विजिषीष्ट	विजिषीयास्ताम्	विजिषीरन्
	विजिषीष्ठाः	विजिषीयास्थाम्	विजिषीध्वम्
	विजिषीय	विजिषीवहि	विजिषीमहि
श्व०	विजिता	विजितारौ	विजितारः
	विजितासे	विजितासाथे	विजिताध्वे
	विजिताहे	विजितास्वहे	विजितास्मिहे
भ०	विजिष्यते	विजिष्येते	विजिष्यन्ते
	विजिष्यसे	विजिष्येथे	विजिष्यध्वे
	विजिष्ये	विजिष्यावहे	विजिष्यामहे
क्रि०	अविजिष्यत	अविजिष्येताम्	अविजिष्यन्त
	अविजिष्यथाः	अविजिष्येथाम्	अविजिष्यध्वम्
	अविजिष्ये	अविजिष्यावहि	अविजिष्यामहि

१४६९. ओलजैङ् (लज्) व्रीडे। १५५

व०	लजते	लजेते	लजन्ते
स०	लजेत	लजेयाताम्	लजेरन्
प०	लजताम्	लजेताम्	लजन्ताम्
ह्य०	अलजत	अलजेताम्	अलजन्त
अ०	अलजिष्ट	अलजिषाताम्	अलजिषत
प०	लेजे	लेजाते	लेजिरे
आ०	लजिषीष्ट	लजिषीयास्ताम्	लजिषीरन्
श्व०	लजिता	लजितारौ	लजितारः
भ०	लजिष्यते	लजिष्येते	लजिष्यन्ते
क्रि०	अलजिष्यत	अलजिष्येताम्	अलजिष्यन्त

भ्वादौ युक्तपाठोऽपि प्रसिद्ध्यनुरोधादिहपठितः

१४७०. ओलस्जै (लज्ज्) व्रीडे। १५६

व०	लज्जते	लज्जेते	लज्जन्ते
स०	लज्जेत	लज्जेयाताम्	लज्जेरन्
प०	लज्जताम्	लज्जेताम्	लज्जन्ताम्
ह्य०	अलज्जत	अलज्जेताम्	अलज्जन्त
अ०	अलज्जिष्ट	अलज्जिषाताम्	अलज्जिषत
प०	ललज्जे	ललज्जाते	ललज्जिरे
आ०	लज्जिषीष्ट	लज्जिषीयास्ताम्	लज्जिषीरन्
श्व०	लज्जिता	लज्जितारौ	लज्जितारः
भ०	लज्जिष्यते	लज्जिष्येते	लज्जिष्यन्ते
क्रि०	अलज्जिष्यत	अलज्जिष्येताम्	अलज्जिष्यन्त

१४७१. ष्वञ्जिंत् (स्वञ्ज्) सङ्गे। १५७

व०	स्वजते	स्वजेते	स्वजन्ते
	स्वजसे	स्वजेथे	स्वजध्वे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	स्वजे	स्वजावहे	स्वजामहे
स०	स्वजेत	स्वजेयाताम्	स्वजेरन्
	स्वजेथाः	स्वजेयाथाम्	स्वजेध्वम्
	स्वजेय	स्वजेवहि	स्वजेमहि
प०	स्वजताम्	स्वजेताम्	स्वजन्ताम्
	स्वजस्व	स्वजेथाम्	स्वजध्वम
	स्वजै	स्वजावहै	स्वजामहै
ह्य०	अस्वजत	अस्वजेताम्	अस्वजन्त
	अस्वजथाः	अस्वजेथाम्	अस्वजध्वम्
	अस्वजे	अस्वजावहि	अस्वजामहि
अ०	अस्वञ्जिष्ट	अस्वञ्जिषाताम्	अस्वञ्जिषत
	अस्वञ्जिष्ठाः	अस्वञ्जिषाथाम्	अस्वञ्जिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अस्वञ्जिषि	अस्वञ्जिष्वहि	अस्वञ्जिष्महि
प०	सस्वजे	सस्वजाते	सस्वजिरे
	सस्वजिषे	सस्वजाथे	सस्वजिध्वे
	सस्वजे	सस्वजिवहे	सस्वजिमहे
		तथा	
	सस्वञ्जे	सस्वञ्जाते	सस्वञ्जिरे, इत्यादि
आ०	स्वङ्क्षीष्ट	स्वङ्क्षीयास्ताम्	स्वङ्क्षीरन्
	स्वङ्क्षीष्ठाः	स्वङ्क्षीयास्थाम्	स्वङ्क्षीध्वम्
	स्वङ्क्षीय	स्वङ्क्षीवहि	स्वङ्क्षीमहि
श्व०	स्वङ्क्ता	स्वङ्क्तारौ	स्वङ्क्तारः
	स्वङ्क्तासे	स्वङ्क्तासाथे	स्वङ्क्ताध्वे
	स्वङ्क्ताहे	स्वङ्क्तास्वहे	स्वङ्क्तास्महे
भ०	स्वङ्क्ष्यते	स्वङ्क्ष्येते	स्वङ्क्ष्यन्ते
	स्वङ्क्ष्यसे	स्वङ्क्ष्येथे	स्वङ्क्ष्यध्वे
	स्वङ्क्ष्ये	स्वङ्क्ष्यावहे	स्वङ्क्ष्यामहे
क्रि०	अस्वङ्क्ष्यत	अस्वङ्क्ष्येताम्	अस्वङ्क्ष्यन्त
	अस्वङ्क्ष्यथाः	अस्वङ्क्ष्येथाम्	अस्वङ्क्ष्यध्वम्
	अस्वङ्क्ष्ये	अस्वङ्क्ष्यावहि	अस्वङ्क्ष्यामहि

१४७२. जुषैति (जुष्) प्रीतिसेवनयोः।

अथ षान्तः सेट् च। १५८

व०	जुषते	जुषेते	जुषन्ते
	जुषसे	जुषेथे	जुषध्वे
	जुषे	जुषावहे	जुषामहे
स०	जुषेत	जुषेयाताम्	जुषेरन्
	जुषेथाः	जुषेयाथाम्	जुषेध्वम्
	जुषेय	जुषेवहि	जुषेमहि
प०	जुषताम्	जुषेताम्	जुषन्ताम्
	जुषस्व	जुषेथाम्	जुषध्वम्
	जुषै	जुषावहै	जुषामहै
ह्य०	अजुषत	अजुषेताम्	अजुषन्त
	अजुषथाः	अजुषेथाम्	अजुषध्वम्
	अजुषे	अजुषावहि	अजुषामहि
अ०	अजोषिष्ट	अजोषिषाताम्	अजोषिषत
	अजोषिष्ठाः	अजोषिषाथाम्	अजोषिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अजोषिषि	अजोषिष्वहि	अजोषिष्महि
प०	जुजुषे	जुजुषाते	जुजुषिरे
	जुजुषिषे	जुजुषाथे	जुजुषिध्वे
	जुजुषे	जुजुषिवहे	जुजुषिमहे
आ०	जोषिषीष्ट	जोषिषीयास्ताम्	जोषिषीरन्
	जोषिषीष्ठाः	जोषिषीयास्थाम्	जोषिषीध्वम्
	जोषिषीय	जोषिषीवहि	जोषिषीमहि
श्व०	जोषिता	जोषितारौ	जोषितारः
	जोषितासे	जोषितासाथे	जोषिताध्वे
	जोषिताहे	जोषितास्वहे	जोषितास्महे
भ०	जोषिष्यते	जोषिष्येते	जोषिष्यन्ते
	जोषिष्यसे	जोषिष्येथे	जोषिष्यध्वे
	जोषिष्ये	जोषिष्यावहे	जोषिष्यामहे
क्रि०	अजोषिष्यत	अजोषिष्येताम्	अजोषिष्यन्त
	अजोषिष्यथाः	अजोषिष्येथाम्	अजोषिष्यध्वम्
	अजोषिष्ये	अजोषिष्यावहि	अजोषिष्यामहि

॥इति आत्मनेभाषाः। इति तुदादयस्तितो धातवः॥

॥तुदादिगणः सम्पूर्णः॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

।।अथ रुधादयः श्नविकरणा वर्णक्रमेण प्रदर्श्यन्ते।।

१४७३. रुधृंपी (रुध्) आवरणे।[१]

व०	रुणद्धि	रुन्धः	रुन्धन्ति
	रुणत्सि	रुन्द्धः	रुन्द्ध
	रुणध्मि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः
स०	रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्युः
	रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात
	रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम
प०	रुणद्धु/रुन्द्धात्	रुन्द्धाम्	रुन्धन्तु
	रुन्द्धि/रुन्द्धात्	रुन्द्धम्	रुन्द्ध
	रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम
ह्य०	अरुणत्/णद्	अरुन्द्धाम्	अरुन्धन्
	अरुणः/अरुणत्(णद्)	अरुन्द्धम्	अरुन्द्ध
	अरुणधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म
अ०	अरुधत्	अरुधताम्	अरुधन्
	अरुधः	अरुधतम्	अरुधत
	अरुधम्	अरुधाव	अरुधाम
		तथा	
	अरौत्सीत्	अरौद्धाम्	अरौत्सुः, इत्यादि।
प०	रुरोध	रुरुधतुः	रुरुधुः
	रुरोधिथ	रुरुधथुः	रुरुध
	रुरोध	रुरुधिव	रुरुधिम
आ०	रुध्यात्	रुध्यास्ताम्	रुध्यासुः
	रुध्याः	रुध्यास्तम्	रुध्यास्त
	रुध्यासम्	रुध्यास्व	रुध्यास्म
श्व०	रोद्धा	रोद्धारौ	रोद्धारः
	रोद्धासि	रोद्धास्थः	रोद्धास्थ
	रोद्धास्मि	रोद्धास्वः	रोद्धास्मः
भ०	रोत्स्यति	रोत्स्यतः	रोत्स्यन्ति
	रोत्स्यसि	रोत्स्यथः	रोत्स्यथ
	रोत्स्यामि	रोत्स्यावः	रोत्स्यामः
क्रि०	अरोत्स्यत्	अरोत्स्यताम्	अरोत्स्यन्
	अरोत्स्यः	अरोत्स्यतम्	अरोत्स्यत
	अरोत्स्यम्	अरोत्स्याव	अरोत्स्याम
व०	रुन्द्धे	रुन्धाते	रुन्धते
	रुन्त्से	रुन्धाथे	रुन्द्ध्वे
	रुन्धे	रुन्ध्वहे	रुन्ध्महे
स०	रुन्धीत	रुन्धीयाताम्	रुन्धीरन्
	रुन्धीथाः	रुन्धीयाथाम्	रुन्धीध्वम्
	रुन्धीय	रुन्धीवहि	रुन्धीमहि
प०	रुन्द्धाम्	रुन्धाताम्	रुन्धताम्
	रुन्त्स्व	रुन्धाथाम्	रुन्द्ध्वम्
	रुणधै	रुणधावहै	रुणधामहै
ह्य०	अरुन्द्ध	अरुन्धाताम्	अरुन्धत
	अरुन्द्धाः	अरुन्धाथाम्	अरुन्द्ध्वम्
	अरुन्धि	अरुन्ध्वहि	अरुन्ध्महि
अ०	अरुद्ध	अरुत्साताम्	अरुत्सत
	अरुद्धाः	अरुत्साथाम्	अरुद्ध्वम्/ध्वम्
	अरुत्सि	अरुत्स्वहि	अरुत्स्महि
प०	रुरुधे	रुरुधाते	रुरुधिरे
	रुरुधिषे	रुरुधाथे	रुरुधिध्वे
	रुरुधे	रुरुधिवहे	रुरुधिमहे
आ०	रुत्सीष्ट	रुत्सीयास्ताम्	रुत्सीरन्
	रुत्सीष्ठाः	रुत्सीयास्थाम्	रुत्सीध्वम्
	रुत्सीय	रुत्सीवहि	रुत्सीमहि
श्व०	रोद्धा	रोद्धारौ	रोद्धारः
	रोद्धासे	रोद्धासाथे	रोद्धाध्वे
	रोद्धाहे	नद्धास्वहे	रोद्धास्महे
भ०	रोत्स्यते	रोत्स्येते	रोत्स्यन्ते
	रोत्स्यसे	रोत्स्येथे	रोत्स्यध्वे
	रोत्स्ये	रोत्स्यावहे	रोत्स्यामहे
क्रि०	अरोत्स्यत	अरोत्स्येताम्	अरोत्स्यन्त
	अरोत्स्यथाः	अरोत्स्येथाम्	अरोत्स्यध्वम्
	अरोत्स्ये	अरोत्स्यवहि	अरोत्स्यामहि

१. आवरणं व्यापित्वम् पित्त्वं रुधादित्वज्ञापनार्थम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

म्नामिति बहुवचनाण्णत्वापवादे रुन्द्धे।

अथ चान्तावनिटौ च।

१४७४. रिचूंपी (रिच्) विरेचने। २

विरेचनं निःसारणम्।

व०	रिणक्ति	रिङ्क्तः	रिञ्चन्ति
	रिणक्षि	रिङ्क्थः	रिङ्क्थ
	रिणच्मि	रिञ्च्वः	रिञ्च्मः
स०	रिञ्चयात्	रिञ्चयाताम्	रिञ्चयुः
	रिञ्चयाः	रिञ्चयातम्	रिञ्चयात
	रिञ्चयाम्	रिञ्चयाव	रिञ्चयाम
प०	रिणक्तु/रिङ्क्तात्	रिङ्क्ताम्	रिञ्चन्तु
	रिङ्ग्धि/रिङ्क्तात्	रिङ्क्तम्	रिङ्क्त
	रिणचानि	रिणचाव	रिणचाम
ह्य०	अरिणक्/अरिणग्	अरिङ्क्ताम्	अरिञ्चन्
	अरिणक्/अरिणग्	अरिङ्क्तम्	अरिङ्क्त
	अरिणचम्	अरिञ्च्व	अरिञ्च्म
अ०	अरिचत्	अरिचताम्	अरिचन्
	अरिचः	अरिचतम्	अरिचत
	अरिचम्	अरिचाव	अरिचाम
प०	रिरेच	रिरिचतुः	रिरिचुः
	रिरेचिथ	रिरिचथुः	रिरिच
	रिरेच	रिरिचिव	रिरिचिम
आ०	रिच्यात्	रिच्यास्ताम्	रिच्यासुः
	रिच्याः	रिच्यास्तम्	रिच्यास्त
	रिच्यासम्	रिच्यास्व	रिच्यास्म
श्व०	रेक्ता	रेक्तारौ	रेक्तारः
	रेक्तासि	रेक्तास्थः	रेक्तास्थ
	रेक्तास्मि	रेक्तास्वः	रेक्तास्मः
भ०	रेक्ष्यति	रेक्ष्यतः	रेक्ष्यन्ति
	रेक्ष्यसि	रेक्ष्यथः	रेक्ष्यथ
	रेक्ष्यामि	रेक्ष्यावः	रेक्ष्यामः
क्रि०	अरेक्ष्यत्	अरेक्ष्यताम्	अरेक्ष्यन्
	अरेक्ष्यः	अरेक्ष्यतम्	अरेक्ष्यत
	अरेक्ष्यम्	अरेक्ष्याव	अरेक्ष्याम
व०	रिङ्क्ते	रिञ्चाते	रिञ्चते
	रिङ्क्षे	रिञ्चाथे	रिङ्ग्ध्वे
	रिञ्चे	रिञ्चवहे	रिञ्चमहे
स०	रिञ्चीत	रिञ्चीयाताम्	रिञ्चीरन्
	रिञ्चीथाः	रिञ्चीयाथाम्	रिञ्चीध्वम्
	रिञ्चीय	रिञ्चीवहि	रिञ्चीमहि
प०	रिङ्क्ताम्	रिञ्चाताम्	रिञ्चताम्
	रिङ्क्ष्व	रिञ्चाथाम्	रिग्ङ्ध्वम्
	रिणचै	रिणचावहै	रिणचामहै
ह्य०	अरिङ्क्तम्	अरिञ्चाताम्	अरिञ्चत
	अरिङ्क्थाः	अरिञ्चाथाम्	अरिङ्ग्ध्वम्
	अरिञ्चि	अरिञ्च्वहि	अरिञ्च्महि
अ०	अरिक्त	अरिक्षाताम्	अरिक्षत
	अरिक्थाः	अरिक्षाथाम्	अरिग्ध्वम्
	अरिक्षि	अरिक्ष्वहि	अरिक्ष्महि
प०	रिरिचे	रिरिचाते	रिरिचिरे
	रिरिचिषे	रिरिचाथे	रिरिचिध्वे
	रिरिचे	रिरिचिवहे	रिरिचिमहे
आ०	रिक्षीष्ट	रिक्षीयास्ताम्	रिक्षीरन्
	रिक्षीष्ठाः	रिक्षीयास्थाम्	रिक्षीध्वम्
	रिक्षीय	रिक्षीवहि	रिक्षीमहि
श्व०	रेक्ता	रेक्तारौ	रेक्तारः
	रेक्तासे	रेक्तासाथे	रेक्ताध्वे
	रेक्ताहे	रेक्तास्वहे	रेक्तास्मिहे
भ०	रेक्ष्यते	रेक्ष्येते	रेक्ष्यन्ते
	रेक्ष्यसे	रेक्ष्येथे	रेक्ष्यध्वे
	रेक्ष्ये	रेक्ष्यावहे	रेक्ष्यामहे
क्रि०	अरेक्ष्यत	अरेक्ष्येताम्	अरेक्ष्यन्त
	अरेक्ष्यथाः	अरेक्ष्येथाम्	अरेक्ष्यध्वम्
	अरेक्ष्ये	अरेक्ष्यावहि	अरेक्ष्यामहि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४७५. विचृंपी (विच्) पृथग्भावे। ३

व०	विनक्ति	विङ्क्तः	विञ्चन्ति
स०	विञ्च्यात्	विञ्च्याताम्	विञ्च्युः
प०	विनक्तु/विङ्क्तात्	विङ्क्ताम्	विञ्चन्तु
ह्य०	अविनक्/अविनग्	अविङ्क्ताम्	अविञ्चन्
अ०	अविचत्	अविचताम्	अविचन्
	अवैक्षीत्	अवैक्ताम्	अवैक्षुः
प०	विवेच	विविचतुः	विविचुः
आ०	विच्यात्	विच्यास्ताम्	विच्यासुः
श्व०	वेक्ता	वेक्तारौ	वेक्तारः
भ०	वेक्ष्यति	वेक्ष्यतः	वेक्ष्यन्ति
क्रि०	अवेक्ष्यत्	अवेक्ष्यताम्	अवेक्ष्यन्
व०	विङ्क्ते	विञ्चाते	विञ्चते
स०	विञ्चीत	विञ्चीयाताम्	विञ्चीरन्
प०	विङ्क्ताम्	विञ्चाताम्	विञ्चताम्
ह्य०	अविङ्क्त	अविञ्चाताम्	अविञ्चत
अ०	अविक्त	अविक्षाताम्	अविक्षत
प०	विविचे	विविचाते	विविचिरे
आ०	विक्षीष्ट	विक्षीयास्ताम्	विक्षीरन्
श्व०	वेक्ता	वेक्तारौ	वेक्तारः
भ०	वेक्ष्यते	वेक्ष्येते	वेक्ष्यन्ते
क्रि०	अवेक्ष्यत	अवेक्ष्येताम्	अवेक्ष्यन्त

अथ जान्तोऽनिट् च।

१४७६. युजृंपी (युज्) योगे। ४

व०	युनक्ति	युङ्क्तः	युञ्जन्ति
	युनक्षि	युङ्क्थः	युङ्क्थ
	युनज्मि	युञ्ज्वः	युञ्ज्मः
स०	युञ्ज्यात्	युञ्ज्याताम्	युञ्ज्युः
	युञ्ज्याः	युञ्ज्यातम्	युञ्ज्यात
	युञ्ज्याम्	युञ्ज्याव	युञ्ज्याम
प०	युनक्तु/युङ्क्तात्	युङ्क्ताम्	युञ्जन्तु
	युङ्ग्धि/युङ्क्तात्	युङ्क्तम्	युङ्क्त
	युनजानि	युनजाव	युनजाम
ह्य०	अयुनक्/अयुनग्	अयुङ्क्ताम्	अयुञ्जन्
	अयुनक्/अयुनग्	अयुङ्क्तम्	अयुङ्क्त
	अयुनजम्	अयुञ्ज्व	अयुञ्ज्म
अ०	अयुजत्	अयुजताम्	अयुजन्
	अयुजः	अयुजतम्	अयुजत
	अयुजम्	अयुजाव	अयुजाम
		तथा	
	अयौक्षीत्	अयौक्ताम्	अयौक्षुः, इत्यादि।
प०	युयोज	युयुजतुः	युयुजुः
	युयोजिथ	युयुजथुः	युयुज
	युयोज	युयुजिव	युयुजिम
आ०	युज्यात्	युज्यास्ताम्	युज्यासुः
	युज्याः	युज्यास्तम्	युज्यास्त
	युज्यासम्	युज्यास्व	युज्यास्म
श्व०	योक्ता	योक्तारौ	योक्तारः
	योक्तासि	योक्तास्थः	योक्तास्थ
	योक्तास्मि	योक्तास्वः	योक्तास्मः
भ०	योक्ष्यति	योक्ष्यतः	योक्ष्यन्ति
	योक्ष्यसि	योक्ष्यथः	योक्ष्यथ
	योक्ष्यामि	योक्ष्यावः	योक्ष्यामः
क्रि०	अयोक्ष्यत्	अयोक्ष्यताम्	अयोक्ष्यन्
	अयोक्ष्यः	अयोक्ष्यतम्	अयोक्ष्यत
	अयोक्ष्यम्	अयोक्ष्याव	अयोक्ष्याम
व०	युङ्क्ते	युञ्जाते	युञ्जते
	युङ्क्षे	युञ्जाथे	युङ्ग्ध्वे
	युञ्जे	युञ्ज्वहे	युञ्ज्महे
स०	युञ्जीत	युञ्जीयाताम्	युञ्जीरन्
	युञ्जीथाः	युञ्जीयाथाम्	युञ्जीध्वम्
	युञ्जीय	युञ्जीवहि	युञ्जीमहि
प०	युङ्क्ताम्	युञ्जाताम्	युञ्जताम्
	युङ्क्ष्व	युञ्जाथाम्	युङ्ग्ध्वम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	युनजै	युनजावहै	युनजामहै
ह्य०	अयुङ्क्त	अयुञ्जाताम्	अयुञ्जत
	अयुङ्क्था:	अयुञ्जाथाम्	अयुङ्ग्ध्वम्
	अयुञ्जि	अयुञ्ज्वहि	अयुञ्ज्महि
अ०	अयुक्त	अयुक्षाताम्	अयुक्षत
	अयुक्था:	अयुक्षाथाम	अयुग्ध्वम्/अयुग्ढ्वम्
	अयुक्षि	अयुक्ष्वहि	अयुक्ष्महि
प०	युयुजे	युयुजाते	युयुजिरे
	युयुजिषे	युयुजाथे	युयुजिध्वे
	युयुजे	युयुजिवहे	युयुजिमहे
आ०	युक्षीष्ट	युक्षीयास्ताम्	युक्षीरन्
	युक्षीष्ठा:	युक्षीयास्थाम्	युक्षीध्वम्
	युक्षीय	युक्षीवहि	युक्षीमहि
श्व०	योक्ता	योक्तारौ	योक्तार:
	योक्तासे	योक्तासाथे	योक्ताध्वे
	योक्ताहे	योक्तास्वहे	योक्तास्मिहे
भ०	योक्ष्यते	योक्ष्येते	योक्ष्यन्ते
	योक्ष्यसे	योक्ष्येथे	योक्ष्यध्वे
	योक्ष्ये	योक्ष्यावहे	योक्ष्यामहे
क्रि०	अयोक्ष्यत	अयोक्ष्येताम्	अयोक्ष्यन्त
	अयोक्ष्यथा:	अयोक्ष्येथाम्	अयोक्ष्यध्वम्
	अयोक्ष्ये	अयोक्ष्यावहि	अयोक्ष्यामहि

१४७७. भिदृंपी (भिद्) विदारणे। ५

व०	भिनत्ति	भिन्त:	भिन्दन्ति
	भिनत्सि	भिन्त्थ:	भिन्त्थ
	भिनद्मि	भिन्द्व:	भिन्द्म:
स०	भिन्द्यात्	भिन्द्याताम्	भिन्द्यु:
	भिन्द्या:	भिन्द्यातम्	भिन्द्यात
	भिन्द्याम्	भिन्द्याव	भिन्द्याम
प०	भिनत्तु/भिन्तात्	भिन्ताम्	भिन्दन्तु
	भिन्द्धि:/भिन्तात्	भिन्तम्	भिन्त
	भिनदानि	भिनदाव	भिनदाम
ह्य०	अभिनत्-नद्	अभिन्ताम्	अभिन्दन्
	अभिनत्/नद/अभिन:	अभिन्तम्	अभिन्त
	अभिन्दम्	अभिन्दव	अभिन्दम
अ०	अभिदत्	अभिदताम्	अभिदन्
	अभिद:	अभिदतम्	अभिदत
	अभिदम्	अभिदाव	अभिदाम
	अभैत्सीत्	अभैत्ताम्	अभैत्सु: इ०
प०	बिभेद	बिभिदतु:	बिभिदु:
	बिभेदिथ	बिभिदथु:	बिभिद
	बिभेद	बिभिदिव	बिभिदिम
आ०	भिद्यात्	भिद्यास्ताम्	भिद्यासु:
	भिद्या:	भिद्यास्तम्	भिद्यास्त
	भिद्यासम्	भिद्यास्व	भिद्यास्म
श्व०	भेत्ता	भेत्तारौ	भेत्तार:
	भेत्तासि	भेत्तास्थ:	भेत्तास्थ
	भेत्तास्मि	भेत्तास्व:	भेत्तास्म:
भ०	भेत्स्यति	भेत्स्यत:	भेत्स्यन्ति
	भेत्स्यसि	भेत्स्यथ:	भेत्स्यथ
	भेत्स्यामि	भेत्स्याव:	भेत्स्याम:
क्रि०	अभेत्स्यत्	अभेत्स्यताम्	अभेत्स्यन्
	अभेत्स्य:	अभेत्स्यतम्	अभेत्स्यत
	अभेत्स्यम्	अभेत्स्याव	अभेत्स्याम
व०	भिन्ते	भिन्दाते	भिन्दते
	भिन्त्से	भिन्दाथे	भिन्द्ध्वे
	भिन्दे	भिन्द्वहे	भिन्द्महे
स०	भिन्दीत	भिन्दीयाताम्	भिन्दीरन्
	भिन्दीथा:	भिन्दीयाथाम्	भिन्दीध्वम्
	भिन्दीय	भिन्दीवहि	भिन्दीमहि
प०	भिन्ताम्	भिन्दाताम्	भिन्दताम्
	भिन्त्स्व	भिन्दाथाम्	भिन्द्ध्वम्
	भिनदै	भिनदावहै	भिनदामहै
ह्य०	अभिन्त	अभिन्दाताम्	अभन्दत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अभिन्त्था:	अभिन्दाथाम्	अभिन्द्ध्वम्
	अभिन्दि	अभिन्द्वहि	अभिन्द्महि
अ०	अभित्त	अभित्साताम्	अभित्सत
	अभित्था:	अभित्साथाम्	अभिद्ध्वम्/अभिद्द्ध्वम्
	अभित्सि	अभित्स्वहि	अभित्स्महि
प०	बिभिदे	बिभिदाते	बिभिदिरे
	बिभिदिषे	बिभिदाथे	बिभिदिध्वे
	बिभिदे	बिभिदिवहे	बिभिदिमहे
आ०	भित्सीष्ट	भित्सीयास्ताम्	भित्सीरन्
	भित्सीष्ठा:	भित्सीयास्थाम्	भित्सीध्वम्
	भित्सीय	भित्सीवहि	भित्सीमहि
श्व०	भेत्ता	भेत्तारौ	भेत्तार:
	भेत्तासे	भेत्तासाथे	भेत्ताध्वे
	भेत्ताहे	भेत्तास्वहे	भेत्तास्महे
भ०	भेत्स्यते	भेत्स्येते	भेत्स्यन्ते
	भेत्स्यसे	भेत्स्येथे	भेत्स्यध्वे
	भेत्स्ये	भेत्स्यावहे	भेत्स्यामहे
क्रि०	अभेत्स्यत	अभेत्स्येताम्	अभेत्स्यन्त
	अभेत्स्यथा:	अभेत्स्येथाम्	अभेत्स्यध्वम्
	अभेत्स्ये	अभेत्स्यावहि	अभेत्स्यामहि

१४७८. छिदृंपी (छिद्) द्वैधीकरणे। ६

अद्वैधस्य पृथक्त्वे।

व०	छिनत्ति	छिन्त:	छिन्दन्ति
स०	छिन्द्यात्	छिन्द्याताम्	छिन्द्यु:
प०	छिनत्तु/छिन्तात्	छिन्ताम्	छिन्दन्तु
ह्य०	अच्छिनत्/नद्	अच्छिन्ताम्	अच्छिन्दन्
अ०	अच्छिदत्	अच्छिदताम्	अच्छिदन्
	अच्छैत्सीत्	अच्छैत्ताम्	अच्छैत्सु:, इत्यादि
प०	चिच्छेद	चिच्छिदतु:	चिच्छिदु:
आ०	छिद्यात्	छिद्यास्ताम्	छिद्यासु:
श्व०	छेत्ता	छेत्तारौ	छेत्तार:
भ०	छेत्स्यति	छेत्स्यत:	छेत्स्यन्ति
क्रि०	अच्छेत्स्यत्	अच्छेत्स्यताम्	अच्छेत्स्यन्
व०	छिन्ते	छिन्दाते	छिन्दते
स०	छिन्दीत	छिन्दीयाताम्	छिन्दीरन्
प०	छिन्ताम्	छिन्दाताम्	छिन्दताम्
ह्य०	अच्छिन्त	अच्छिन्दाताम्	अच्छिन्दत
अ०	अच्छित्त	अच्छित्साताम्	अच्छित्सत
प०	चिच्छिदे	चिच्छिदाते	चिच्छिदिरे
आ०	छित्सीष्ट	छित्सीयास्ताम्	छित्सीरन्
श्व०	छेत्ता	छेत्तारौ	छेत्तार:
भ०	छेत्स्यते	छेत्स्येते	छेत्स्यन्ते
क्रि०	अच्छेत्स्यत	अच्छेत्स्येताम्	अच्छेत्स्यन्त

१४७९. क्षुदृंपी (क्षुद्) संपेषे। ७

व०	क्षुणत्ति	क्षुन्त:	क्षुन्दन्ति
स०	क्षुन्द्यात्	क्षुन्द्याताम्	क्षुन्द्यु:
प०	क्षुणत्तु/क्षुन्तात्	क्षुन्ताम्	क्षुन्दन्तु
ह्य०	अक्षुणत्/णद्	अक्षुन्ताम्	अक्षुन्दन्
अ०	अक्षुदत्	अक्षुदताम्	अक्षुदन्
	अक्षौत्सीत्	अक्षौत्ताम्	अक्षौत्सु:, इत्यादि
प०	चुक्षोद	चुक्षुदतु:	चुक्षुदु:
आ०	क्षुद्यात्	क्षुद्यास्ताम्	क्षुद्यासु:
श्व०	क्षोत्ता	क्षोत्तारौ	क्षोत्तार:
भ०	क्षोत्स्यति	क्षोत्स्यत:	क्षोत्स्यन्ति
क्रि०	अक्षोत्स्यत्	अक्षोत्स्यताम्	अक्षोत्स्यन्
व०	क्षुन्ते	क्षुन्दाते	क्षुन्दते
स०	क्षुन्दीत	क्षुन्दीयाताम्	क्षुन्दीरन्
प०	क्षुन्ताम्	क्षुन्दाताम्	क्षुन्दताम्
ह्य०	अक्षुन्त	अक्षुन्दाताम्	अक्षुन्दत
अ०	अक्षुत्त	अक्षुत्साताम्	अक्षुत्सत
प०	चुक्षुदे	चुक्षुदाते	चुक्षुदिरे
आ०	क्षुत्सीष्ट	क्षुत्सीयास्ताम्	क्षुत्सीरन्
श्व०	क्षोत्ता	क्षोत्तारौ	क्षोत्तार:
भ०	क्षोत्स्यते	क्षोत्स्येते	क्षोत्स्यन्ते
क्रि०	अक्षोत्स्यत	अक्षोत्स्येताम्	अक्षोत्स्यन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४८०. उछृदृपी (छृद्) दीप्तिदेवनयोः। वमनेऽपीत्यन्ये। ८

व०	छृणत्ति	छृन्तः	छृन्दन्ति
स०	छृन्द्यात्	छृन्द्याताम्	छृन्द्युः
प०	छृणत्तु/छृन्तात्	छृन्ताम्	छृन्दन्तु
ह्य०	अच्छृणत्/णद्	अच्छृन्ताम्	अच्छृन्दन्
अ०	अच्छृदत्	अच्छृदताम्	अच्छृदन्
	अच्छर्दीत्	अच्छर्दिष्टाम्	अच्छर्दिषुः, इ०
प०	चच्छर्द	चच्छृदतुः	चच्छृदुः
आ०	छृद्यात्	छृद्यास्ताम्	छृद्यासुः
श्व०	छर्दिता	छर्दितारौ	छर्दितारः
भ०	छर्दिष्यति	छर्दिष्यतः	छर्दिष्यन्ति
	छर्त्स्यति	छर्त्स्यतः	छर्त्स्यन्ति, इत्यादि
क्रि०	अच्छर्दिष्यत्	अच्छर्दिष्यताम्	अच्छर्दिष्यन्
	अछर्त्स्यत्	अछर्त्स्यताम्	अछर्त्स्यन्, इ०
व०	छृन्ते	छृन्दाते	छृन्दते
स०	छृन्दीत	छृन्दीयाताम्	छृन्दीरन्
प०	छृन्ताम्	छृन्दाताम्	छृन्दताम्
ह्य०	अछृन्त	अछृन्दाताम्	अछृन्दत
अ०	अच्छर्दिष्ट	अच्छर्दिषाताम्	अच्छर्दिषत
प०	चच्छृदे	चच्छृदाते	चच्छृदिरे
आ०	छर्दिषीष्ट	छर्दिषीयास्ताम्	छर्दिषीरन्
श्व०	छर्दिता	छर्दितारौ	छर्दितारः
भ०	छर्दिष्यते	छर्दिष्येते	छर्दिष्यन्ते
	छर्त्स्यते	छर्त्स्येते	छर्त्स्यन्ते, इत्यादि।
क्रि०	अच्छर्दिष्यत	अच्छर्दिष्येताम्	अच्छर्दिष्यन्त
	अछर्त्स्यत्	अछर्त्स्यताम्	अछर्त्स्यन्त, इ०

१४८१. ऊतृदृपी (तृद्) हिंसानादरयोः। ९

व०	तृणत्ति	तृन्तः	तृन्दन्ति
स०	तृन्द्यात्	तृन्द्याताम्	तृन्द्युः
प०	तृणत्तु/तृन्तात्	तृन्ताम्	तृन्दन्तु
ह्य०	अतृणत्	अतृन्ताम्	अतृन्दन्
अ०	अतृदत्	अतृदताम्	अतृदन्
	अतर्दीत्	अतर्दिष्टाम्	अतर्दिषुः, इत्यादि
प०	ततर्द	ततृदतुः	ततृदुः
आ०	तृद्यात्	तृद्यास्ताम्	तृद्यासुः
श्व०	तर्दिता	तर्दितारौ	तर्दितारः
भ०	तर्दिष्यति	तर्दिष्यतः	तर्दिष्यन्ति
	तर्त्स्यति	तर्त्स्यतः	तर्त्स्यन्ति, इत्यादि
क्रि०	अतर्दिष्यत्	अतर्दिष्यताम्	अतर्दिष्यन्
	अतर्त्स्यत्	अतर्त्स्यताम्	अतर्त्स्यन्, इत्यादि
व०	तृन्ते	तृन्दाते	तृन्दते
स०	तृन्दीत	तृन्दीयाताम्	तृन्दीरन्
प०	तृन्ताम्	तृन्दाताम्	तृन्दताम
ह्य०	अतृन्त	अतृन्दाताम्	अतृन्दत
अ०	अतर्दिष्ट	अतर्दिषाताम्	अतर्दिषत
प०	ततृदे	ततृदाते	ततृदिरे
आ०	तर्दिषीष्ट	तर्दिषीयास्ताम्	तर्दिषीरन्
श्व०	तर्दिता	तर्दितारौ	तर्दितारः
भ०	तर्दिष्यते	तर्दिष्येते	तर्दिष्यन्ते
	तर्त्स्यते	तर्त्स्येते	तर्त्स्यन्ते, इत्यादि।
क्रि०	अतर्दिष्यत	अतर्दिष्येताम्	अतर्दिष्यन्त
	अतर्त्स्यत्	अतर्त्स्यताम्	अतर्त्स्यन्त, इ०

अथ परस्मैपदिषु चान्तास्त्रयः सेटश्च।

१४८२. पृचैप् (पृच्) सम्पर्के। १०

व०	पृणक्ति	पृङ्क्तः	पृञ्चन्ति
स०	पृञ्च्यात्	पृञ्च्याताम्	पृञ्च्युः
प०	पृणक्तु/पृङ्क्तात्	पृङ्क्ताम्	पृञ्चन्तु
ह्य०	अपृणक्/अपृणग्	अपृङ्क्ताम्	अपृञ्चन्
अ०	अपर्चीत्	अपर्चिष्टाम्	अपर्चिषुः
प०	पपर्च	पपृचतुः	पपृचुः
आ०	पृच्यात्	पृच्यास्ताम्	पृच्यासुः
श्व०	पर्चिता	पर्चितारौ	पर्चितारः
भ०	पर्चिष्यति	पर्चिष्यतः	पर्चिष्यन्ति
क्रि०	अपर्चिष्यत्	अपर्चिष्यताम्	अपर्चिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४८३. वृचैप्। (वृच्) वरणे। ११

व०	वृणक्ति	वृङ्क्तः	वृञ्चन्ति
स०	वृञ्च्यात्	वृञ्च्याताम्	वृञ्च्युः
प०	वृणक्तु/वृङ्क्तात्	वृङ्क्ताम्	वृञ्चन्तु
ह्य०	अवृणक्/अवृणग्	अवृङ्क्ताम्	अवृञ्चन्
अ०	अवर्चीत्	अवर्चिष्टाम्	अवर्चिषुः
व०	ववर्च	ववृचतुः	ववृचुः
	ववर्च	ववृचिव	ववृचिम
आ०	वृच्यात्	वृच्यास्ताम्	वृच्यासुः
श्व०	वर्चिता	वर्चितारौ	वर्चितारः
भ०	वर्चिष्यति	वर्चिष्यतः	वर्चिष्यन्ति
क्रि०	अवर्चिष्यत्	अवर्चिष्यताम्	अवर्चिष्यन्

१४८४. तञ्चू (तञ्च्) संकोचने। १२

व०	तनक्ति	तङ्क्तः	तञ्चन्ति
स०	तञ्च्यात्	तञ्च्याताम्	तञ्च्युः
प०	तनक्तु/तङ्क्तात्	तङ्क्ताम्	तञ्चन्तु
ह्य०	अतनक्/अतनग्	अतङ्क्ताम्	अतञ्चन्
अ०	अतञ्चीत्	अतञ्चिष्टाम्	अतञ्चिषुः
प०	ततञ्च	ततञ्चतुः	ततञ्चुः
आ०	तच्यात्	तच्यास्ताम्	तच्यासुः
श्व०	तञ्चिता	तञ्चितारौ	तञ्चितारः
भ०	तञ्चिष्यति	तञ्चिष्यतः	तञ्चिष्यन्ति
क्रि०	अतञ्चिष्यत्	अतञ्चिष्यताम्	अतञ्चिष्यन्

अथ जान्ताः पञ्च।

१४८५. तञ्जौप् (तञ्ज्) संकोचने १३

व०	तनक्ति	तङ्क्तः	तञ्जन्ति
स०	तञ्ज्यात्	तञ्ज्याताम्	तञ्ज्तः
प०	तनक्तु/तङ्क्तात्	तङ्क्ताम्	तञ्जन्तु
ह्य०	अतनक्/अतनग्	अतङ्क्ताम्	अतञ्जन्
अ०	अतञ्जीत्	अतञ्जिष्टाम्	अतञ्जिषुः
	अताङ्क्षीत्	अताङ्क्ताम्	अताङ्क्षुः, इत्यादि
प०	ततञ्ज	ततञ्जतुः	ततञ्जुः
आ०	तज्यात्	तज्यास्ताम्	तज्यासुः
श्व०	तञ्जिता	तञ्जितारौ	तञ्जितारः
भ०	तञ्जिष्यति	तञ्जिष्यतः	तञ्जिष्यन्ति
	तङ्क्ष्यति	तङ्क्ष्यतः	तङ्क्ष्यन्ति, इ०
क्रि०	अतञ्जिष्यत्	अतञ्जिष्यताम्	अतञ्जिष्यन्
	अतङ्क्ष्यत्	अतङ्क्ष्यताम्	अतङ्क्ष्यन्, इ०

१४८६. भञ्जोंप् (भज्) आमर्दने। १४

व०	भनक्ति	भङ्क्तः	भञ्जन्ति
स०	भञ्ज्यात्	भञ्ज्याताम्	भञ्ज्युः
प०	भनक्तु/भङ्क्तात्	भङ्क्ताम्	भञ्जन्तु
ह्य०	अभक्/अभग्	अभङ्क्ताम्	अभञ्जन्
अ०	अभाङ्क्षीत्	अभाङ्क्ताम्	अभाङ्क्षुः
प०	बभञ्ज	बभञ्जतुः	बभञ्जुः
आ०	भज्यात्	भज्यास्ताम्	भज्यासुः
श्व०	भङ्क्ता	भङ्क्तारौ	भङ्क्तारः
भ०	भङ्क्ष्यति	भङ्क्ष्यतः	भङ्क्ष्यन्ति
क्रि०	अभङ्क्ष्यत्	अभङ्क्ष्यताम्	अभङ्क्ष्यन्

१४८७. भुजंपू (भुञ्ज्) पालनाभ्यवहारयोः। अभ्यवहारो भोजनम्। तत्र पालने। १५

व०	भुनक्ति	भुङ्क्तः	भुञ्जन्ति
स०	भुञ्ज्यात्	भुञ्ज्याताम्	भुञ्ज्युः
प०	भुनक्तु/भुङ्क्तात्	भुङ्क्ताम्	भुञ्जन्तु
ह्य०	अभुनक्/अभुनग्	अभुङ्क्ताम्	अभुञ्जन्
अ०	अभौक्षीत्	अभौक्ताम्	अभौक्षुः
प०	बुभोज	बुभुजतुः	बुभुजुः
आ०	भुज्यात्	भुज्यास्ताम्	भुज्यासुः
श्व०	भोक्ता	भोक्तारौ	भोक्तारः
भ०	भोक्ष्यति	भोक्ष्यतः	भोक्ष्यन्ति
क्रि०	अभोक्ष्यत्	अभोक्ष्यताम्	अभोक्ष्यन्

त्राणादन्यत्र भुनज इत्यात्मनेपदे।

व०	भुङ्क्ते	भुञ्जाते	भुञ्जते
स०	भुञ्जीत	भुञ्जीयाताम्	भुञ्जीरन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	भुङ्क्ताम्	भुञ्जाताम्	भुञ्जताम्
ह्य०	अभुङ्क्त	अभुञ्जाताम्	अभुञ्जत
अ०	अभुक्त	अभुक्षाताम्	अभुक्षत
प०	बुभुजे	बुभुजाते	बुभुजिरे
आ०	भुक्षीष्ट	भुक्षीयास्ताम्	भुक्षीरन्
श्व०	भोक्ता	भोक्तारौ	भोक्तारः
भ०	भोक्ष्यते	भोक्ष्येते	भोक्ष्यन्ते
क्रि०	अभोक्ष्यत	अभोक्ष्येताम्	अभोक्ष्यन्त

१४८८. अञ्जौप् (अञ्ज्) व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु।

व्यक्तिः प्रकटता, म्रक्षणं घृतादिसेकः॥

व०	अनक्ति	अङ्क्तः	अञ्जन्ति
	अनक्षि	अङ्क्थः	अङ्क्थ
	अनज्मि	अञ्ज्वः	अञ्ज्मः
स०	अञ्ज्यात्	अञ्ज्याताम्	अञ्ज्युः
	अञ्ज्याः	अञ्ज्यातम्	अञ्ज्यात
	अञ्ज्याम्	अञ्ज्याव	अञ्ज्याम
प०	अनक्तु/अङ्क्तात्	अङ्क्ताम्	अञ्जन्तु
	अङ्ग्धि/अङ्क्तात्	अङ्क्तम्	अङ्क्त
	अनजानि	अनजाव	अनजाम
ह्य०	आनक्/आनग्	आङ्क्ताम्	आञ्जन्
	आनक्/आनग्	आङ्क्तम्	आङ्क्त
	आनजम्	आञ्ज्व	आञ्ज्म
अ०	आञ्जीत्	आञ्जिष्टाम्	आञ्जिषुः
	आञ्जीः	आञ्जिष्टम्	आञ्जिष्ट
	आञ्जिषम्	आञ्जिष्व	आञ्जिष्म
प०	आनञ्ज	आनञ्जतुः	आनञ्जुः
	आनञ्जिथ	आनञ्जथुः	आनञ्ज
	आनञ्ज	आनञ्जिव	आनञ्जिम
आ०	अज्यात्	अज्यास्ताम्	अज्यासुः
	अज्याः	अज्यास्तम्	अज्यास्त
	अज्यासम्	अज्यास्व	अज्यास्म
श्व०	अञ्जिता	अञ्जितारौ	अञ्जितारः
	अञ्जितासि	अञ्जितास्थः	अञ्जितास्थ
	अञ्जितास्मि	अञ्जितास्वः	अञ्जितास्मः
		तथा	
	अङ्क्ता	अङ्क्तारौ	अङ्क्तारः, इत्यादि
भ०	अञ्जिष्यति	अञ्जिष्यतः	अञ्जिष्यन्ति
	अञ्जिष्यसि	अञ्जिष्यथः	अञ्जिष्यथ
	अञ्जिष्यामि	अञ्जिष्यावः	अञ्जिष्यामः
क्रि०	आञ्जिष्यत्	आञ्जिष्यताम्	आञ्जिष्यन्
	आञ्जिष्यः	आञ्जिष्यतम्	आञ्जिष्यत
	आञ्जिष्यम्	आञ्जिष्याव	आञ्जिष्याम
	आङ्क्ष्यत्	आङ्क्ष्यताम्	आङ्क्ष्यन्, इत्यादि

१४८९. ओविजप् (विज्) भयजलनयोः। १७

व०	विनक्ति	विङ्क्तः	विञ्जन्ति
स०	विञ्ज्यात्	विञ्ज्याताम्	विञ्ज्युः
प०	विनक्तु/विङ्क्तात्	विङ्क्ताम्	विञ्जन्तु
ह्य०	अविनक्/अविनग्	अविङ्क्ताम्	अविञ्जन्
अ०	अविजीत्	अविजिष्टाम्	अविजिषुः
प०	विवेज	विविजतुः	विविजुः
आ०	विज्यात्	विज्यास्ताम्	विज्यासुः
श्व०	विजिता	विजितारौ	विजितारः
भ०	विजिष्यति	विजिष्यतः	विजिष्यन्ति
क्रि०	अविजिष्यत्	अविजिष्यताम्	अविजिष्यन्

अथ तान्तः सेट् च।

१४९०. कृतैप् (कृत्) वेष्टने। १८

व०	कृणत्ति	कृन्तः	कृन्तन्ति
	कृणत्सि	कृन्थः	कृन्थ
	कृणत्मि	कृन्त्वः	कृन्त्मः
स०	कृन्त्यात्	कृन्त्याताम्	कृन्त्युः
	कृन्त्याः	कृन्त्यातम्	कृन्त्यात
	कृन्त्याम्	कृन्त्याव	कृन्त्याम
प०	कृणत्तु/कृन्तात्	कृन्ताम्	कृन्तन्तु
	कृन्द्धि/कृन्तात्	कृन्तम्	कृन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	कृणतानि	कृणताव	कृणताम
ह्य०	अकृणत्/णद्	अकृन्ताम्	अकृन्तन्
	अकृणत्/णद्	अकृन्तम्	अकृन्त
	अकृणतम्	अकृन्त्व	अकृन्त्म
अ०	अकर्तीत्	अकर्तिष्टाम्	अकर्तिषुः
	अकर्तीः	अकर्तिष्टम्	अकर्तिष्ट
	अकर्तिषम्	अकर्तिष्व	अकर्तिष्म
प०	चकर्त	चकृततुः	चकृतुः
	चकर्तिथ	चकृतथुः	चकृत
	चकर्त	चकृतिव	चकृतिम
आ०	कृत्यात्	कृत्यास्ताम्	कृत्यासुः
	कृत्याः	कृत्यास्तम्	कृत्यास्त
	कृत्यासम्	कृत्यास्व	कृत्यास्म
श्व०	कर्तिता	कर्तितारौ	कर्तितारः
	कर्तितासि	कर्तितास्थः	कर्तितास्थ
	कर्तितास्मि	कर्तितास्वः	कर्तितास्मः
भ०	कर्तिष्यति	कर्तिष्यतः	कर्तिष्यन्ति
	कर्तिष्यसि	कर्तिष्यथः	कर्तिष्यथ
	कर्तिष्यामि	कर्तिष्यावः	कर्तिष्यामः
क्रि०	अकर्तिष्यत्	अकर्तिष्यताम्	अकर्तिष्यन्
	अकर्तिष्यः	अकर्तिष्यतम्	अकर्तिष्यत
	अकर्तिष्यम्	अकर्तिष्याव	अकर्तिष्याम
	अकर्त्स्यत्	अकर्त्स्यताम्	अकर्त्स्यन्, इ०

अथ दान्तः सेट् च।

१४९१. उन्दैप् (उन्द्) क्लेदने। १९

व०	उनत्ति	उन्तः	उन्दन्ति
	उनत्सि	उन्त्थः	उन्त्थ
	उनद्मि	उन्द्वः	उन्द्मः
स०	उन्द्यात्	उन्द्याताम्	उन्द्युः
	उन्द्याः	उन्द्यातम्	उन्द्यात
	उन्द्याम्	उन्द्याव	उन्द्याम
प०	उनत्तु/उन्तात्	उन्ताम्	उन्दन्तु
	उन्द्धि/उन्तात्	उन्तम्	उन्त
	उनदानि	उनदाव	उनदाम
ह्य०	औनत्/नद्	औन्ताम्	औन्दन्
	औनत्/औनद्/औनः	औन्तम्	औन्त
	औन्दम्	औन्द्व	औन्द्म
अ०	औन्दीत्	औन्दिष्टाम्	औन्दिषुः
	औन्दीः	औन्दिष्टम्	औन्दिष्ट
	औन्दिषम्	औन्दिष्व	औन्दिष्म
प०	उन्दाञ्चकार	उन्दाञ्चक्रतुः	उन्दाञ्चक्रुः
	उन्दाञ्चकर्थ	उन्दाञ्चक्रथुः	उन्दाञ्चक्र
	उन्दाञ्चकार/कर	उन्दाञ्चकृव	उन्दाञ्चकृम
	उन्दाम्बभूव/उन्दामास।		
आ०	उद्यात्	उद्यास्ताम्	उद्यासुः
	उद्याः	उद्यास्तम्	उद्यास्त
	उद्यासम्	उद्यास्व	उद्यास्म
श्व०	उन्दिता	उन्दितारौ	उन्दितारः
	उन्दितासि	उन्दितास्थः	उन्दितास्थ
	उन्दितास्मि	उन्दितास्वः	उन्दितास्मः
भ०	उन्दिष्यति	उन्दिष्यतः	उन्दिष्यन्ति
	उन्दिष्यसि	उन्दिष्यथः	उन्दिष्यथ
	उन्दिष्यामि	उन्दिष्यावः	उन्दिष्यामः
क्रि०	औन्दिष्यत्	औन्दिष्यताम्	औन्दिष्यन्
	औन्दिष्यः	औन्दिष्यतम्	औन्दिष्यत
	औन्दिष्यम्	औन्दिष्याव	औन्दिष्याम

अथ षान्तावनिटौ च।

१४९२. शिष्लृंप् (शिष्) विशेषणे। २०

विशेषणं गुणान्तरोत्पादनम्।

व०	शिनष्टि	शिंष्टः	शिंषन्ति
	शिनक्षि	शिंष्ठः	शिंष्ठ
	शिंनष्मि	शिंष्वः	शिंष्मः
स०	शिंष्यात्	शिंष्याताम्	शिंष्युः
	शिंष्याः	शिंष्यातम्	शिंष्यात

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	शिंष्याम्	शिंष्याव	शिंष्याम
प०	शिनष्टु/शिंष्टात्	शिंष्टाम्	शिषन्तु
	शिड्ण्ढि/शिण्ढि	शिंष्टम्	शिष्ट
	शिनषाणि	शिनषाव	शिनषाम
ह्य०	अशिनट्/नड्	अशिंष्टाम्	अशिंषन्
	अशिनट्/नड्	अशिंष्टम्	अशिंष्ट
	अशिनषम्	अशिंष्व	अशिंष्म
अ०	अशिषत्	अशिषताम्	अशिषन्
	अशिषः	अशिषतम्	अशिषत
	अशिषम्	अशिषाव	अशिषाम
प०	शिशेष	शिशिषतुः	शिशिषुः
	शिशेषिथ	शिशिषथुः	शिशिष
	शिशेष	शिशिषिव	शिशिषिम
आ०	शिष्यात्	शिष्यास्ताम्	शिष्यासुः
	शिष्याः	शिष्यास्तम्	शिष्यास्त
	शिष्यासम्	शिष्यास्व	शिष्यास्म
श्व०	शेष्टा	शेष्टारौ	शेष्टारः
	शेष्टासि	शेष्टास्थः	शेष्टास्थ
	शेष्टास्मि	शेष्टास्वः	शेष्टास्मः
भ०	शेक्ष्यति	शेक्ष्यतः	शेक्ष्यन्ति
	शेक्ष्यसि	शेक्ष्यथः	शेक्ष्यथ
	शेक्ष्यामि	शेक्ष्यावः	शेक्ष्यामः
क्रि०	अशेक्ष्यत्	अशेक्ष्यताम्	अशेक्ष्यन्
	अशेक्ष्यः	अशेक्ष्यतम्	अशेक्ष्यत
	अशेक्ष्यम्	अशेक्ष्याव	अशेक्ष्याम

१४९३. पिष्लृंप् (पिष्) संचूर्णने। २१

व०	पिनष्टि	पिंष्टः	पिंषन्ति
स०	पिंष्यात्	पिंष्याताम्	पिंष्युः
प०	पिनष्टु/पिंष्टात्	पिंष्टाम्	पिंषन्तु
ह्य०	अपिनट्/नड्	अपिंष्टाम्	अपिंषन्
अ०	अपिषत्	अपिषताम्	अपिषन्
प०	पिपेष	पिपिषतुः	पिपिषुः
आ०	पिष्यात्	पिष्यास्ताम्	पिष्यासुः
श्व०	पेष्टा	पेष्टारौ	पेष्टारः
भ०	पेक्ष्यति	पेक्ष्यतः	पेक्ष्यन्ति
क्रि०	अपेक्ष्यत्	अपेक्ष्यताम्	अपेक्ष्यन्

अथ सान्तः सेट् च।

१४९४. हिसुप् (हिंस्) हिंसायाम्। २२

व०	हिंनस्ति	हिंस्तः	हिंसन्ति
स०	हिंस्यात्	हिंस्याताम्	हिंस्युः
ह०	हिंनस्तु/हिंस्तात्	हिंस्ताम्	हिंषन्तु
ह्य०	अहिनत्/नद्	अहिंस्ताम्	अहिंसन्
अ०	अहिंसीत्	अहिंसिष्टाम्	अहिंसिषुः
प०	जिहिंस	जिहिंसतुः	जिहिंसुः
आ०	हिंस्यात्	हिंस्यास्ताम्	हिंस्यासुः
श्व०	हिंसिता	हिंसितारौ	हिंसितारः
भ०	हिंसिष्यति	हिंसिष्यतः	हिंसिष्यन्ति
क्रि०	अहिंसिष्यत्	अहिंसिष्यताम्	अहिंसिष्यन्

॥अथ हान्तः सेट् च॥

१४९५ तृहप् (तृह्) हिंसायाम्। २३

व०	तृणेढि	तृण्ढः	तृंहन्ति
	तृणेक्षि	तृण्ठः	तृण्ठ
	तृणेह्मि	तृह्वः	तृंह्मः
स०	तृंह्यात्	तृह्यास्ताम्	तृंह्युः
	तृह्याः	तृंह्यातम्	तृंह्यात
	तृंह्याम्	तृंह्याव	तृंह्याम
प०	तृणढु/तृण्ढात्	तृण्ढाम्	तृंहन्तु
	तृण्ढि/तृण्ढात्	तृण्ढाम्	तृण्ढ
	तृणहानि	तृणहाव	तृणहाम
ह्य०	अतृणेट्/णेड्	अतृण्ढाम्	अतृंहन्
	अतृणेट्/णेड्	अतृण्ढम्	अतृण्ढ
	अतृणहम्	अतृंह्व	अतृंह्म
अ०	अतर्हीत्	अतर्हिष्टाम्	अतर्हिषु
	अतर्हीः	अतर्हिष्टम्	अतर्हिष्ट

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अतर्हिषम्	अतिर्हिष्व	अतर्हिष्म
प०	ततर्ह	ततृहतुः	ततृहुः
	ततर्हिथ	ततर्हिष्टम्	ततर्हिष्ट
	ततर्हिषम्	ततर्हिष्व	ततर्हिष्म
आ०	तृह्यात्	तृह्यास्ताम्	तृह्यासुः
	तृह्याः	तृह्यास्तम्	तृह्यास्त
	तृह्यासम्	तृह्यास्व	तृह्यास्म
श्व०	तर्हिता	तर्हितारौ	तर्हितारः
	तर्हितासि	तर्हितास्थः	तर्हितास्थ
	तर्हितास्मि	तर्हितास्वः	तर्हितास्मः
भ०	तर्हिष्यति	तर्हिष्यतः	तर्हिष्यन्ति
	तर्हिष्यसि	तर्हिष्यथः	तर्हिष्यथ
	तर्हिष्यामि	तर्हिष्यावः	तर्हिष्यामः
क्रि०	अतर्हिष्यत्	अतर्हिष्यताम्	अतर्हिष्यन्
	अतर्हिष्यः	अतर्हिष्यतम्	अतर्हिष्यत
	अतर्हिष्यम्	अतर्हिष्याव	अतर्हिष्याम

॥ इति परस्मैपदिनः॥

॥अथात्मनेपदिषु दान्तावनिटौ च॥

१४९६ खिदिंप् (खिद्) दैन्ये।२४

व०	खिन्ते	खिन्दाते	खिन्दते
	खिन्त्से	खिन्दाथे	खिन्द्ध्वे
	खिन्दे	खिन्द्वहे	खिन्द्महे
स०	खिन्दीत्	खिन्दीयाताम्	खिन्दीरन्
	खिन्दीथाः	खिन्दीयाथाम्	खिन्दीध्वम्
	खिन्दीय	खिन्दीवहि	खिन्दीमहि
प०	खिन्ताम्	खिन्दाताम्	खिन्दताम्
	खिन्त्स्व	खिन्दाथाम्	खिन्द्ध्वम्
	खिनदै	खिनदावहै	खिनदामहै
ह्य०	अखिन्त	अखिन्दाताम्	अखिन्दत
	अखिन्त्थाः	अखिन्दाथाम्	अखिन्द्ध्वम्
	अखिन्दि	अखिन्द्वहि	अखिन्द्महि
अ०	अखित्त	अखित्साताम्	अखित्सत
	अखित्थाः	अखित्साथाम्	अखिद्ध्वम्
	अखित्सि	अखित्स्वहै	अखित्स्महि
प०	चिखिदे	चिखिदाते	चिखिदिरे
	चिखिदिषे	चिखिदाथे	चिखिदिध्वे
	चिखिदे	चिखिदिवहे	चिखिदिमहे
आ०	खित्सीष्ट	खित्सीयास्ताम्	खित्सीरन्
	खित्सीष्ठाः	खित्सीयास्थाम्	खित्सीध्वम्
	खित्सीय	खित्सीवहि	खित्सीमहि
श्व०	खेत्ता	खेत्तारौ	खेत्तारः
	खेत्तासे	खेत्तासाथे	खेत्ताध्वे
	खेत्ताहे	खेत्तास्वहे	खेत्तास्महे
भ०	खेत्स्यते	खेत्स्येते	खेत्स्यन्ते
	खेत्स्यसे	खेत्स्येथेः	खेत्स्यध्वे
	खेत्स्ये	खेत्स्यावहे	खेत्स्यामहे
क्रि०	अखेत्स्यत्	अखेत्स्येताम्	अखेत्स्यन्त
	अखेत्स्यथा	अखेत्स्येथाम्	अखेत्स्यध्वम्
	अखेत्स्ये	अखेत्स्यावहि	अखेत्स्यामहि

१४७९ विदिंप् (विद्) विचारणे। २५

व०	विन्ते	विन्दातेः	विन्दते
	विन्त्से	विन्दाथेः	विन्द्ध्वे
	विन्दे	विन्द्वहे	विन्द्महे
स०	विन्दीत	विन्दीयाताम्	विन्दीरन्
	विन्दीथाः	विन्दीयाथाम्	विन्दीध्वम्
	विन्दीय	विन्दीवहि	विन्दीमहि
प०	विन्ताम्	विन्दाताम्	विन्दताम्
	विन्त्स्व	विन्दाथाम्	विन्द्ध्वम्
	विनदै	विनदावहै	विनदामहै
ह्य०	अविन्त	अविन्दाताम्	अविन्दत
	अविन्त्थाः	अविन्दाथाम्	अविन्द्ध्वम्
	अविन्दि	अविन्द्वहि	अविन्द्महि
अ०	अवित्त	अवित्साताम्	अवित्सत
	अवित्थाः	अवित्साथाम्	अविद्ध्वम्/द्ध्वम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अवित्सि	अवित्स्वहे	अवित्स्महि
प०	विविदे	विविदाते	विविदिरे
	विविदिषे	विविदाथे	विविदिध्वे
	विविदे	विविदिवहे	विविदिमहे
आ०	वित्सीष्ट	वित्सीयास्ताम्	वित्सीरन्
	वित्सीष्ठाः	वित्सीयास्थाम्	वित्सीध्वम्
	वित्सीय	वित्सीवहि	वित्सीमहि
श्व०	वेत्ता	वेत्तारौ	वेत्तारः
	वेत्तासे	वेत्तासाथे	वेत्ताध्वे
	वेत्ताहे	वेत्तास्वहे	वेत्तास्महे
भ०	वेत्स्यते	वेत्स्येते	वेत्स्यन्ते
	वेत्स्यसे	वेत्स्येथेः	वेत्स्यध्वे
	वेत्स्ये	वेत्स्यावहे	वेत्स्यामहे
क्रि०	अवेत्स्यत	अवेत्स्येताम्	अवेत्स्यन्त
	अवेत्स्यथाः	अवेत्स्येथाम्	अवेत्स्यध्वम्
	अवेत्स्ये	अवेत्स्यावहि	अवेत्स्यामहि

॥अथ धान्तः सेट् च॥

१४९८ जिइन्धैपि (इन्ध्) दीप्तौ। २६

व०	इन्धे	इन्धातेः	इन्धते
	इन्त्से	इन्धाथेः	इन्द्ध्वे
	इन्धे	इन्ध्वहे	इन्ध्महे
स०	इन्धीत	इन्धीयाताम्	इन्धीरन्
	इन्धीथाः	इन्धीयाथाम्	इन्धीध्वम्
	इन्धीय	इन्धीवहि	इन्धीमहि
प०	इन्द्धाम्	इन्धाताम्,	इन्धताम्
	इन्त्स्व	इन्धाथाम्	इन्द्ध्वम्
	इनधै	इनधावहै	इनधामहै
ह्य०	ऐन्ध	ऐन्धाताम्	ऐन्धतध
	ऐन्द्धाः,	ऐन्धाथाम्	ऐन्द्ध्वम्
	ऐन्धि	ऐन्ध्वहि	ऐन्ध्महि
अ०	ऐन्धिष्ट	ऐन्धिषाताम्	ऐन्धिषत
	एन्धिष्ठाः	ऐन्धिषाथाम्	ऐन्धिड्ढ्वम्/ऐन्धिध्वम्
	ऐन्धिषि	ऐन्धिषाथाम्	ऐन्धिष्महि
प०	इन्धाञ्चक्रे	इन्धाञ्चक्राते	इन्धाञ्चक्रिरे
	इन्धाञ्चकषे	इन्धाञ्चक्राथे	इन्धाञ्चकृढ्वे
	इन्धाञ्चक्रे	इन्धाञ्चकृवहे	इन्धाञ्चकृमहे
	इन्धाम्बभूव/इन्धामास		

सम्पूर्वकस्य तु वा-

समिन्धांचक्रे समिन्धांचक्राते समिन्धांचक्रिरे, इत्यादि।

समिन्धाम्बभूव। समिन्धामास

आ०	इन्धिषीष्ट	इन्धिषीयास्थाम्	इन्धिषीरन्
	इन्धिषीष्ठाः	इन्धिषीयास्थाम्	इन्धिषीध्वम्
	इन्धिषीय	इन्धिषीवहि	इन्धिषीमहि
श्व०	इन्धिता	इन्धितारौ	इन्धितारः
	इन्धितासे	इन्धितासाथे	इन्धिताध्वे
	इन्धिताहे	इन्धितास्वहे	इन्धितास्महे
भ०	इन्धिष्यते	इन्धिष्येते	इन्धिष्यन्ते
	इन्धिष्यसे	इन्धिष्येथेः	इन्धिष्यध्वे
	इन्धिष्ये	इन्धिष्यावहे	इन्धिष्यामहे
क्रि०	ऐन्धिष्यध	ऐन्धिष्येधाम्	ऐन्धिष्यन्ध
	ऐन्धिष्यथाः	ऐन्धिष्येथाम्	ऐन्धिष्यध्वम्
	ऐन्धिष्ये	ऐन्धिष्यावहि	ऐन्धिष्यामहि

॥रुधादिगणः सम्पूर्णः॥

॥अथ तनादय उविकरणा वर्णक्रमेण प्रदर्श्यन्ते॥

तत्रोभयपदिष्वादौ नान्ताः सप्त सेटश्च॥

१४९९. तनूपी (तन्) विस्तारे।

पित्त्वं तनादित्वज्ञापनार्थम्।

व०	तनोति	तनुतः	तन्वन्ति
	तनोषि	तनुथः	तनुथ
	तनोमि	तन्वः/तनुवः	तन्मः/तनुमः
स०	तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः
	तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात
	तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम
प०	तनोतु/तनुतात्	तनुताम्	तन्वन्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	तनु/तनुतात्	तनुतम्	तनुत
	तनवानि	तनवाव	तनवाम
ह्य०	अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्
	अतनोः	अतनुतम्	अतनुत
	अतनवम्	अतन्व/अतनुव	अतन्म/अतनुम
अ०	अतानीत्	अतानिष्टाम्	अतानिषुः
	अतानीः	अतानिष्टम्	अतानिष्ट
	अतानिषम्	अतानिष्व	अतानिष्म
		तथा	
	अतनीत्	अतनिष्टाम्	अतनिषुः
	अतनीः	अतनिष्टम्	अतनिष्ट
	अतनिषम्	अतनिष्व	अतनिष्म
प०	ततान	तेनतुः	तेनुः
	तेनिथ	तेनथुः	तेन
	ततान/ततन	तेनिव	तेनिम
आ०	तन्यात्	तन्यास्ताम्	तन्यासुः
	तन्याः	तन्यास्तम्	तन्यास्त
	तन्यासम्	तन्यास्व	तन्यास्म
श्व०	तनिता	तनितारौ	तनितारः
	तनितासि	तनितास्थः	तनितास्थ
	तनितास्मि	तनितास्वः	तनितास्मः
भ०	तनिष्यति	तनिष्यतः	तनिष्यन्ति
	तनिष्यसि	तनिष्यथः	तनिष्यथ
	तनिष्यामि	तनिष्यावः	तनिष्यामः
क्रि०	अतनिष्यत्	अतनिष्यताम्	अतनिष्यन्
	अतनिष्यः	अतनिष्यतम्	अतनिष्यत
	अतनिष्यम्	अतनिष्याव	अतनिष्याम
व०	तनुते	तन्वाते	तन्वते
	तनुषे	तन्वाथे	तनुध्वे
	तन्वे	तनुवहे/तन्वहे	तनुमहे/तन्महे
स०	तन्वीत	तन्वीयाताम्	तन्वीरन्
	तन्वीथाः	तन्वीयाथाम्	तन्वीध्वम्
	तन्वीय	तन्वीवहि	तन्वीमहि
प०	तनुताम्	तन्वाताम्	तन्वताम्
	तनुष्व	तन्वाथाम्	तनुध्वम्
	तनवै	तनवावहै	तनवामहै
ह्य०	अतनुत	अतन्वाताम्	अतन्वत
	अतनुथाः	अतन्वाथाम्	अतनुध्वम्
	अतन्वि	अतनुवहि/न्वहि	अतनुमहि/न्महि
अ०	अतत/अतनिष्ट	अतनिषाताम्	अतनिषत
	अतथाः/अतनिष्ठाः	अतनिषाताम्	अतनिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अतनिषि	अतनिष्वहि	अतनिष्महि
प०	तेने	तेनाते	तेनिरे
	तेनिषे	तेनाथे	तेनिध्वे
	तेने	तेनिवहे	तेनिमहे
आ०	तनिषीष्ट	तनिषीयास्ताम्	तनिषीरन्
	तनिषीष्ठाः	तनिषीयास्थाम्	तनिषीध्वम्
	तनिषीय	तनिषीवहि	तनिषीमहि
श्व०	तनिता	तनितारौ	तनितारः
	तनितासे	तनितासाथे	तनिताध्वे
	तनिताहे	तनितास्वहे	तनितास्महे
भ०	तनिष्यते	तनिष्येते	तनिष्यन्ते
	तनिष्यसे	तनिष्येथे	तनिष्यध्वे
	तनिष्ये	तनिष्यावहे	तनिष्यामहे
क्रि०	अतनिष्यत	अतनिष्येताम्	अतनिष्यन्त
	अतनिष्यथाः	अतनिष्येथाम्	अतनिष्यध्वम्
	अतनिष्ये	अतनिष्यावहि	अतनिष्यामहि

१५००. षणुयी (सन्) दाने। २

व०	सनोति	सनुतः	सन्वन्ति
स०	सनुयात्	सनुयाताम्	सनुयुः
प०	सनोतु/सनुतात्	सनुताम्	सन्वन्तु
ह्य०	असनोत्	असनुताम्	असन्वन्
अ०	असानीत्	असानिष्टाम्	असानिषुः
	असनीत्	असनिष्टाम्	असनिषुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प० ससान	सेनतुः	सेनुः
आ० सन्यात्	सन्यास्ताम्	सन्यासः
श्व० सनिता	सनितारौ	सनितारः
भ० सनिष्यति	सनिष्यतः	सनिष्यन्ति
क्रि० असनिष्यत्	असनिष्यताम्	असनिष्यन्
व० सनुते	सन्वाते	सन्वते
स० सन्वीत	सन्वीयाताम्	सन्वीरन्
प० सनुताम्	सन्वाताम्	सन्वताम
ह्य० असनुत	असन्वाताम्	असन्वत
अ० असात	असत	असनिष्ट
प० सेने	सेनाते	सेनिरे
आ० सनिषीष्ट	सनिषीयास्ताम्	सनिषीरन्
श्व० सनिता	सनितारौ	सनितारः
भ० सनिष्यते	सनिष्येते	सनिष्यन्ते
क्रि० असनिष्यत	असनिष्येताम्	असनिष्यन्त

१५०१. क्षणूयी (क्षण्) हिंसायाम्। ३

व० क्षणोति	क्षणुतः	क्षण्वन्ति
स० क्षणुयात्	क्षणुयाताम्	क्षणुयुः
प० क्षणोतु/क्षणुतात्	क्षणुताम्	क्षण्वन्तु
ह्य० अक्षणोत्	अक्षणुताम्	अक्षण्वन्
अ० अक्षणीत्	अक्षणिष्टाम्	अक्षणिषुः
प० चक्षाण	चक्षणतुः	चक्षणुः
आ० क्षण्यात्	क्षण्यास्ताम्	क्षण्यासुः
श्व० क्षणिता	क्षणितारौ	क्षणितारः
भ० क्षणिष्यति	क्षणिष्यतः	क्षणिष्यन्ति
क्रि० अक्षणिष्यत्	अक्षणिष्यताम्	अक्षणिष्यन्
व० क्षणुते	क्षण्वाते	क्षण्वते
स० क्षण्वीत	क्षण्वीयाताम्	क्षण्वीरन्
प० क्षणुताम्	क्षण्वाताम्	क्षण्वताम
ह्य० अक्षणुत	अक्षण्वाताम्	अक्षवण्त
अ० अक्षत	अक्षणिष्ट	अक्षणिषाताम्
अक्षणिषि	अक्षणिष्वहि	अक्षणिष्महि

प० चक्षणे	चक्षणाते	चक्षणिरे
आ० क्षणिषीष्ट	क्षणिषीयास्ताम्	क्षणिषीरण्
श्व० क्षणिता	क्षणितारौ	क्षणितारः
भ० क्षणिष्यते	क्षणिष्येते	क्षणिष्यन्ते
क्रि० अक्षणिष्यत	अक्षणिष्येताम्	अक्षणिष्यन्त

१५०२. क्षिणूयी (क्षिण्) हिंसायाम्। ४

व० क्षेणोति	क्षेणुतः	क्षेण्वन्ति
स० क्षेणुयात्	क्षेणुयाताम्	क्षेणुयुः
प० क्षेणोतु/क्षेणुतात्	क्षेणुताम्	क्षेण्वन्तु
ह्य० अक्षेणोत्	अक्षेणुताम्	अक्षेण्वन्
अ० अक्षेणीत्	अक्षेणिष्टाम्	अक्षेणिषुः
प० चिक्षेण	चिक्षिणतुः	चिक्षिणुः
आ० क्षिण्यात्	क्षिण्यास्ताम्	क्षिण्यासुः
श्व० क्षेणिता	क्षेणितारौ	क्षेणितारः
भ० क्षेणिष्यति	क्षेणिष्यतः	क्षेणिष्यन्ति
क्रि० अक्षेणिष्यत्	अक्षेणिष्यताम्	अक्षेणिष्यन्
व० क्षेणुते	क्षेण्वाते	क्षेण्वते
स० क्षेण्वीत	क्षेण्वीयाताम्	क्षेण्वीरन्
प० क्षेणुताम्	क्षेण्वाताम्	क्षेण्वताम्
ह्य० अक्षेणुत	अक्षेण्वाताम्	अक्षेवण्त
अ० अक्षित	अक्षेणिष्ट	अक्षेणिषाताम्
अक्षेणिषत्	अक्षेणिष्ठाः	अक्षिथाः
प० चिक्षिणे	चिक्षिणाते	चिक्षिणिरे
आ० क्षेणिषीष्ट	क्षेणिषीयास्ताम्	क्षेणिषीरन्
श्व० क्षेणिता	क्षेणितारौ	क्षेणितारः
भ० क्षेणिष्यते	क्षेणिष्येते	क्षेणिष्यन्ते
क्रि० अक्षेणिष्यत	अक्षेणिष्येताम्	अक्षेणिष्यन्त

संज्ञापूर्वको विधिरनित्य इति उनिमत्तं गुणं नेच्छन्त्येके।

१५०३. ऋणूयी (ऋण्) गतौ। ५

व० अर्णोति	अर्णुतः	अर्ण्वन्ति
स० अर्णुयात्	अर्णुयाताम्	अर्णुयुः
प० अर्णोतु/अर्णुतात्	अर्णुताम्	अर्ण्वन्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	आर्णोत्	आर्णुताम्	आर्ण्वन्
अ०	आर्णीत्	आर्णिष्टाम्	आर्णिषुः
प०	आनर्ण	आनृणतुः	आनृणुः
आ०	ऋण्यात्	ऋण्यास्ताम्	ऋण्यासुः
श्व०	अर्णिता	अर्णितारौ	अर्णितारः
भ०	अर्णिष्यति	अर्णिष्यतः	अर्णिष्यन्ति
क्रि०	आर्णिष्यत्	आर्णिष्यताम्	आर्णिष्यन्
व०	अर्णुते	अर्ण्वाते	अर्ण्वते
स०	अर्ण्वीत	अर्ण्वीयाताम्	अर्ण्वीरन्
प०	अर्णुताम्	अर्ण्वाताम्	अर्ण्वताम
ह्य०	आर्णुत	आर्ण्वाताम्	आर्ण्वत
अ०	आर्ण/आर्णिष्ट	आर्णिषाताम्	आर्णिषत्
प०	आनृणे	आनृणाते	आनृणिरे
आ०	अर्णिषीष्ट	अर्णिषीयास्ताम्	अर्णिषीरन्
श्व०	अर्णिता	अर्णितारौ	अर्णितारः
भ०	अर्णिष्यते	अर्णिष्येते	अर्णिष्यन्ते
क्रि०	आर्णिष्यत	आर्णिष्येताम्	आर्णिष्यन्त

१५०४. तृणूयी (तृण्) अदने।

अदाने इत्यन्ये। ६

व०	तर्णोति	तर्णुतः	तर्ण्वन्ति
	तर्णोषि	तर्णुथः	तर्णुथ
	तर्णोमि	तर्णुवः	तर्णुमः
स०	तर्णुयात्	तर्णुयाताम्	तर्णुयुः
	तर्णुयाः	तर्णुयातम्	तर्णुयात
	तर्णुयाम्	तर्णुयाव	तर्णुयाम
प०	तर्णोतु/तर्णुतात्	तर्णुताम्	तर्ण्वन्तु
	तर्णुहि/तर्णुतात्	तर्णुतम्	तर्णुत
	तर्णवानि	तर्णवाव	तर्णवाम
ह्य०	अतर्णोत्	अतर्णुताम्	अतर्ण्वन्
	अतर्णोः	अतर्णुतम्	अतर्णुत
	अतर्णवम्	अतर्णुव,	अतर्णुम,
अ०	अतर्णीत्	अतर्णिष्टाम्	अतर्णिषुः
	अतर्णीः	अतर्णिष्टम्	अतर्णिष्ट
	अतर्णिषम्	अतर्णिष्व	अतर्णिष्म
प०	ततर्ण	ततृणतुः	ततृणुः
	ततर्णिथ	ततृणथुः	ततृण
	ततर्ण	ततृणिव	ततृणिम
आ०	तृण्यात्	तृण्यास्ताम्	तृण्यासुः
	तृण्याः	तृण्यास्तम्	तृण्यास्त
	तृण्यासम्	तृण्यास्व	तृण्यास्म
श्व०	तर्णिता	तर्णितारौ	तर्णितारः
	तर्णितासि	तर्णितास्थः	तर्णितास्थ
	तर्णितास्मि	तर्णितास्वः	तर्णितास्मः
भ०	तर्णिष्यति	तर्णिष्यतः	तर्णिष्यन्ति
	तर्णिष्यसि	तर्णिष्यथः	तर्णिष्यथ
	तर्णिष्यामि	तर्णिष्यावः	तर्णिष्यामः
क्रि०	अतर्णिष्यत्	अतर्णिष्यताम्	अतर्णिष्यन्
	अतर्णिष्यः	अतर्णिष्यतम्	अतर्णिष्यत
	अतर्णिष्यम्	अतर्णिष्याव	अतर्णिष्याम
व०	तर्णुते	तर्ण्वाते	तर्ण्वते
	तर्णुषे	तर्ण्वाथे	तर्णुध्वे
	तर्ण्वे	तर्णुवहे	तर्णुमहे
स०	तर्ण्वीत	तर्ण्वीयाताम्	तर्ण्वीरन्
	तर्ण्वीथाः	तर्ण्वीयाथाम्	तर्ण्वीध्वम्
	तर्ण्वीय	तर्ण्वीवहि	तर्ण्वीमहि
प०	तर्णुताम्	तर्ण्वाताम्	तर्ण्वताम्
	तर्णुष्व	तर्ण्वाथाम्	तर्णुध्वम्
	तर्णवै	तर्णवावहै	तर्णवामहै
ह्य०	अतर्णुत	अतर्ण्वाताम्	अतर्ण्वत
	अतर्णुथाः	अतर्ण्वाथाम्	अतर्णुध्वम्
	अतर्ण्वि	अतर्णुवहि	अतर्णुमहि
अ०	अतृत/अतर्णिष्ट	अतर्णिषाताम्	अतर्णिषत
	अतृथाः/अतर्णिष्ठाः	अतर्णिषाथाम्	अतर्णिध्वम्/ढ्वम्
	अतर्णिषि	अतर्णिष्वहि	अतर्णिष्महि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	ततृणे	ततृणाते	ततृणिरे
	ततृणिषे	ततृणाथे	ततृणिध्वे
	ततृणे	ततृणिवहे	ततृणिमहे
आ०	तर्णिषीष्ट	तर्णिषीयास्ताम्	तर्णिषीरन्
	तर्णिषीष्ठाः	तर्णिषीयास्थाम्	तर्णिषीध्वम्
	तर्णिषीय	तर्णिषीवहि	तर्णिषीमहि
श्व०	तर्णिता	तर्णितारौ	तर्णितारः
	तर्णितासे	तर्णितासाथे	तर्णिताध्वे
	तर्णिताहे	तर्णितास्वहे	तर्णितास्मिहे
भ०	तर्णिष्यते	तर्णिष्येते	तर्णिष्यण्ड्ते
	तर्णिष्यसे	तर्णिष्येथे	तर्णिष्यध्वे
	तर्णिष्ये	तर्णिष्यावहे	तर्णिष्यामहे
क्रि०	अतर्णिष्यत	अतर्णिष्येताम्	अतर्णिष्यन्त
	अतर्णिष्यथाः	अतर्णिष्येथाम्	अतर्णिष्यध्वम्
	अतर्णिष्ये	अतर्णिष्यावहि	अतर्णिष्यामहि

१५०५. घृणूयी (घृण्) दीप्तौ।

व०	घर्णोति	घर्णुतः	घर्ण्वन्ति
स०	घर्णुयात्	घर्णुयाताम्	घर्णुयुः
प०	घर्णोतु/घर्णुतात्	घर्णुताम्	घर्ण्वन्तु
ह्य०	अघर्णोत्	अघर्णुताम्	अघर्ण्वन्
अ०	अघर्णीत्	अघर्णिष्टाम्	अघर्णिषुः
प०	जघर्ण	जघृणतुः	जघृणुः
आ०	घृण्यात्	घृण्यास्ताम्	घृण्यासुः
श्व०	घर्णिता	घर्णितारौ	घर्णितारः
भ०	घर्णिष्यति	घर्णिष्यतः	घर्णिष्यन्ति
क्रि०	अघर्णिष्यत्	अघर्णिष्यताम्	अघर्णिष्यन्
व०	घर्णुते	घर्ण्वाते	घर्ण्वते
स०	घर्ण्वीत	घर्ण्वीयाताम्	घर्ण्वीरन्
प०	घर्णुताम्	घर्ण्वाताम्	घर्ण्वताम्
ह्य०	अघर्णुत	अघर्ण्वाताम्	अघर्ण्वत
अ०	अघृत	अघर्णिष्ट	अघर्णिषाथाम्
प०	जघृणे	जघृणाते	जघृणिरे
आ०	घर्णिषीष्ट	घर्णिषीयास्ताम्	घर्णिषीरण्
श्व०	घर्णिता	घर्णितारौ	घर्णितारः
भ०	घर्णिष्यते	घर्णिष्येते	घर्णिष्यण्ड्ते
क्रि०	अघर्णिष्यत	अघर्णिष्येताम्	अघर्णिष्यन्त

णान्तोऽयमित्येके। तन्मते 'तकि घृण्टि।

अकारोपान्त्यो णान्तश्चायमिति शिवः।

क्षणू क्षिणू ऋणू तृणू घृणू धातूनां नकारस्थाने रषृवर्णादिति णकारं कृत्वा णकारो दत्तः। इतरथा क्षनू इत्यादिः नकारवान् पाठो वक्तव्यो भवेत्, अत एव-रषृवर्णादिति नस्य णत्वे क्षणुते क्षिणुते अर्णोति तर्णोति घर्णोति तिक्कृताविति तिकि न तिकीति दीर्घनलुकोरभावे म्नामिति णत्वापवादे नस्य ने क्षन्तिः क्षिन्तिः तृन्तिः घृन्तिः। सन्ययिर। इति रस्य प्रतिषेधः स्वरादेरिति। नेरेव द्वित्वे अर्णिनिषति इति धातुपारायणसङ्गति अत एव "र्षाट्टवर्गस्तवर्गजः" इत्यभियुक्ता अभिदधति। उविकरणे ऋणू तृणू घृणू धातूनां गुणं नेच्छन्त्येके।

ऋणुते ऋणोति तृणुते तृणोति घृणुते घृणोति।

इत्युभयता भाषाः।

अथात्मनेपदिनौ नान्तौ सेटौ च:

१५०६. वनूयि (वन्) याचने। ४

व०	वनुते	वन्वाते	वन्वते
	वनुषे	वन्वाथे	वनुध्वे
	वन्वे/वनुवहे	वन्वहे/वनुमहे	वन्महे
स०	वन्वीत	वन्वीयाताम्	वन्वीरन्
	वन्वीथाः	वन्वीयाथाम्	वन्वीध्वम्
	वन्वीय	वन्वीवहि	वन्वीमहि
प०	वनुताम्	वन्वाताम्	वन्वताम्
	वनुष्व	वन्वाथाम्	वनुध्वम्
	वनवै	वनवावहै	वनवामहै
ह्य०	अवनुत	अवन्वाताम्	अवन्वत
	अवनुथाः	अवन्वाथाम्	अवनुध्वम्
	अवन्वि	अवनुवहि/अवन्वहि	अवनुमहि/अवन्महि
अ०	अवत/अवनिष्ट	अवनिषाताम्	अवनिषत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अवथाः/अवनिष्ठाः	अवनिषाथाम्	अवनिड्ढ्वम्/ध्वम्
	अवनिषि	अवनिष्वहि	अवनिष्महि
प०	ववने	ववनाते	ववनिरे
	ववनिषे	ववनाथे	ववनिध्वे
	ववने	ववनिवहे	ववनिमहे
आ०	वनिषीष्ट	वनिषीयास्ताम्	वनिषीरन्
	वनिषीष्ठाः	वनिषीयास्थाम्	वनिषीध्वम्
	वनिषीय	वनिषीवहि	वनिषीमहि
श्व०	वनिता	वनितारौ	वनितारः
	वनितासे	वनितासाथे	वनिताध्वे
	वनिताहे	वनितास्वहे	वनितास्मिहे
भ०	वनिष्यते	वनिष्येते	वनिष्यन्ते
	वनिष्यसे	वनिष्येथे	वनिष्यध्वे
	वनिष्ये	वनिष्यावहे	वनिष्यामहे
क्रि०	अवनिष्यत	अवनिष्येताम्	अवनिष्यन्त
	अवनिष्यथाः	अवनिष्येथाम्	अवनिष्यध्वम्
	अवनिष्ये	अवनिष्यावहि	अवनिष्यामहि

१५०७. मनूयि (मन्) बोधने। ९

व०	मनुते	मन्वाते	मन्वते
स०	मन्वीत	मन्वीयाताम्	मन्वीरन्
प०	मनुताम्	मन्वाताम्	मन्वताम्
ह्य०	अमनुत	अमन्वाताम्	अमन्वत
अ०	अमत/अमनिष्ट	अमनिषाताम्	अमनिषत
प०	मेने	मेनाते	मेनिरे
आ०	मनिषीष्ट	मनिषीयास्ताम्	मनिषीरन्
श्व०	मनिता	मनितारौ	मनितारः
भ०	मनिष्यते	मनिष्येते	मनिष्यन्ते
क्रि०	अमनिष्यत	अमनिष्येताम्	अमनिष्यन्त

॥इति आत्मनेपदिनौ॥

॥तनादिगणः सम्पूर्णः॥

अथ क्र्यादयः श्नाविकरणा वर्णक्रमेण प्रस्तूयन्ते। तत्रादौ

१५०८. डुक्रींगश् (क्री) द्रव्यविनिमये। विनिमयः परिवर्त्त इत्यर्थः। शित्त्वं क्र्यादित्वज्ञापनार्थम्॥

व०	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः
स०	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः
	क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात
	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम
प०	क्रीणातु/क्रीणीतात्	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु
	क्रीणीहि/क्रीणीतात्	क्रीणीतम्	क्रीणीत
	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम
ह्य०	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम
अ०	अक्रैषीत्	अक्रैष्टाम्	अक्रैषुः
	अक्रैषीः	अक्रैष्टम्	अक्रैष्ट
	अक्रैषम्	अक्रैष्व	अक्रैष्म
प०	चिक्राय	चिक्रियतुः	चिक्रियुः
	चिक्रयिथ/चिक्रेथ	चिक्रियथुः	चिक्रिय
	चिक्राय/चिक्रय	चिक्रियिव	चिक्रियिम
आ०	क्रीयात्	क्रीयास्ताम्	क्रीयासुः
	क्रीयाः	क्रीयास्तम्	क्रीयास्त
	क्रीयासम्	क्रीयास्व	क्रीयास्म
श्व०	क्रेता	क्रेतारौ	क्रेतारः
	क्रेतासि	क्रेतास्थः	क्रेतास्थ
	क्रेतास्मि	क्रेतास्वः	क्रेतास्मः
भ०	क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति
	क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ
	क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः
क्रि०	अक्रेष्यत्	अक्रेष्यताम्	अक्रेष्यन्
	अक्रेष्यः	अक्रेष्यतम्	अक्रेष्यत
	अक्रेष्यम्	अक्रेष्याव	अक्रेष्याम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व०	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते
	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे
	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे
स०	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
	क्रीणीथा:	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि
प०	क्रीणीताम्	क्रीणाताम्	क्रीणताम्
	क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्
	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै
ह्य०	अक्रीणीत	अक्रीणाताम्	अक्रीणत
	अक्रीणीथा:	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीध्वम्
	अक्रीणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि
अ०	अक्रेष्ट	अक्रेषाताम्	अक्रेषत्
	अक्रेष्ठा:	अक्रेषाथाम	अक्रेध्वम्/अक्रेढ्वम्
	अक्रेषि	अक्रेष्वहि	अक्रेष्महि
प०	चिक्रिये	चिक्रियाते	चिक्रियिरे
	चिक्रियिषे	चिक्रियाथे	चिक्रियिध्वे/चिक्रियिढ्वे
	चिक्रिये	चिक्रियिवहे	चिक्रियिमहे
आ०	क्रेषीष्ट	क्रेषीयास्ताम्	क्रेषीरन्
	क्रेषीष्ठा:	क्रेषीयास्थाम्	क्रेषीध्वम्
	क्रेषीय	क्रेषीवहि	क्रेषीमहि
श्व०	क्रेता	क्रेतारौ	क्रेतार:
	क्रेतासे	क्रेतासाथे	क्रेताध्वे
	क्रेताहे	क्रेतास्वहे	क्रेतास्मिहे
भ०	क्रेष्यते	क्रेष्येते	क्रेष्यन्ते
	क्रेष्यसे	क्रेष्येथे	क्रेष्यध्वे
	क्रेष्ये	क्रेष्यावहे	क्रेष्यामहे
क्रि०	अक्रेष्यत	अक्रेष्येताम्	अक्रेष्यन्त
	अक्रेष्यथा:	अक्रेष्येथाम्	अक्रेष्यध्वम्
	अक्रेष्ये	अक्रेष्यावहि	अक्रेष्यामहि

अथेदन्तोऽनिट् च।

१५०९. षिंग्‌श् (सि) बन्धने। २

व०	सिनाति	सिनीत:	सिनन्ति
स०	सिनीयात्	सिनीयाताम्	सिनीयु:
प०	सिनातु/सिनीतात्	सिनीताम्	सिनन्तु
ह्य०	असिनात्	असिनीताम्	असिनन्
अ०	असैषीत्	असैष्टाम्	असैषु:
प०	सिषाय	सिष्यतु:	सिष्यु:
आ०	सीयात्	सीयास्ताम्	सीयासु:
श्व०	सेता	सेतारौ	सेतार:
भ०	सेष्यति	सेष्यत:	सेष्यन्ति
क्रि०	असेष्यत्	असेष्यताम्	असेष्यन्
व०	सिनीते	सिनाते	सिनते
स०	सिनीत	सिनीयाताम्	सिनीरन्
प०	सिनीताम्	सिनाताम्	सिनताम
ह्य०	असिनीत	असिनाताम्	असिनत
अ०	असेष्ट	असेषाताम्	असेषत्
प०	सिष्ये	सिष्याते	सिष्यिरे
आ०	सेषीष्ट	सेषीयास्ताम्	सेषीरन्
श्व०	सेता	सेतारौ	सेतार:
भ०	सेष्यते	सेष्येते	सेष्यन्ते
क्रि०	असेष्यत	असेष्येताम्	असेष्यन्त

अथेदन्तास्त्रयोऽनिटश्च।

१५१०. प्रींगूश् (प्री) तृप्तिकान्त्योः।

कान्तिरभिलाप:। ३

व०	प्रीणाति	प्रीणीत:	प्रीणन्ति
स०	प्रीणीयात्	प्रीणीयाताम्	प्रीणीयु:
प०	प्रीणातु/प्रीणीतात्	प्रीणीताम्	प्रीणन्तु
ह्य०	अप्रीणात्	अप्रीणीताम्	अप्रीणन्
अ०	अप्रैषीत्	अप्रैष्टाम्	अप्रैषु:
प०	पिप्राय	पिप्रियतु:	पिप्रियु:
आ०	प्रीयात्	प्रीयास्ताम्	प्रीयासु:
श्व०	प्रेता	प्रेतारौ	प्रेतार:
भ०	प्रेष्यति	प्रेष्यत:	प्रेष्यन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रि०	अप्रेष्यत्	अप्रेष्यताम्	अप्रेष्यन्
व०	प्रीणीते	प्रीणाते	प्रीणते
स०	प्रीणीत	प्रीणीयाताम्	प्रीणीरन्
प०	प्रीणीताम्	प्रीणाताम्	प्रीणताम
ह्य०	अप्रीणीत	अप्रीणाताम्	अप्रीणत
अ०	अप्रेष्ट	अप्रेषाताम्	अप्रेषत्
प०	पिप्रिये	पिप्रियाते	पिप्रियिरे
आ०	प्रेषीष्ट	प्रेषीयास्ताम्	प्रेषीरण्
श्व०	प्रेता	प्रेतारौ	प्रेतार:
भ०	प्रेष्यते	प्रेष्येते	प्रेष्यन्ते
क्रि०	अप्रेष्यत	अप्रेष्येताम्	अप्रेष्यन्त

१५११. श्रींगूश् (श्री) पाके। ४

व०	श्रीणाति	श्रीणीत:	श्रीणन्ति
स०	श्रीणीयात्	श्रीणीयाताम्	श्रीणीयु:
प०	श्रीणातु/श्रीणीतात्	श्रीणीताम्	श्रीणन्तु
ह्य०	अश्रीणात्	अश्रीणीताम्	अश्रीणन्
अ०	अश्रैषीत्	अश्रैष्टाम्	अश्रैषु:
प०	शिश्राय	शिश्रियतु:	शिश्रियु:
आ०	श्रीयात्	श्रीयास्ताम्	श्रीयासु:
श्व०	श्रेता	श्रेतारौ	श्रेतार:
भ०	श्रेष्यति	श्रेष्यत:	श्रेष्यन्ति
क्रि०	अश्रेष्यत्	अश्रेष्यताम्	अश्रेष्यन्
व०	श्रीणीते	श्रीणाते	श्रीणते
स०	श्रीणीत	श्रीणीयाताम्	श्रीणीरन्
प०	श्रीणीताम्	श्रीणाताम्	श्रीणताम
ह्य०	अश्रीणीत	अश्रीणाताम्	अश्रीणत
अ०	अश्रेष्ट	अश्रेषाताम्	अश्रेषत्
प०	शिश्रिये	शिश्रियाते	शिश्रियिरे
आ०	श्रेषीष्ट	श्रेषीयास्ताम्	श्रेषीरन्
श्व०	श्रेता	श्रेतारौ	श्रेतार:
भ०	श्रेष्यते	श्रेष्येते	श्रेष्यन्ते
क्रि०	अश्रेष्यत	अश्रेष्येताम्	अश्रेष्यन्त

१५१२. मींग्श् (मी) हिंसायाम्। ५

व०	मीनाति	मीनीत:	मीनन्ति
स०	मीनीयात्	मीनीयाताम्	मीनीयु:
प०	मीनातु/मीनीतात्	मीनीताम्	मीनन्तु
ह्य०	अमीनात्	अमीनीताम्	अमीनन्
अ०	अमासीत्	अमासिष्टाम्	अमासिषु:
प०	ममौ	मिम्यतु:	मिम्यु:
आ०	मीयात्	मीयास्ताम्	मीयासु:
श्व०	माता	मातारौ	मातार:
भ०	मास्यति	मास्यत:	मास्यन्ति
क्रि०	अमास्यत्	अमास्यताम्	अमास्यन्
व०	मीनीते	मीनाते	मीनते
स०	मीनीत	मीनीयाताम्	मीनीरन्
प०	मीनीताम्	मीनाताम्	मीनताम
ह्य०	अमीनीत	अमीनाताम्	अमीनत
अ०	अमास्त	अमासाताम्	अमासत
प०	मिम्ये	मिम्याते	मिम्यिरे
आ०	मासीष्ट	मासीयास्ताम्	मासीरन्
श्व०	माता	मातारौ	मातार:
भ०	मास्यते	मास्येते	मास्यन्ते
क्रि०	अमास्यत	अमास्येताम्	अमास्यन्त

अथोदन्तावनिटौ च।

१५१३. युंग्श् (यु) बन्धने।

व०	युनाति	युनीत:	युनन्ति
स०	युनीयात्	युनीयाताम्	युनीयु:
प०	युनातु/युनीतात्	युनीताम्	युनन्तु
ह्य०	अयुनात्	अयुनीताम्	अयुणन्
अ०	अयौषीत्	अयौष्टाम्	अयौषु:
प०	युयाव	युयुवतु:	युयुवु:
आ०	यूयात्	यूयास्ताम्	यूयासु:
श्व०	योता	योतारौ	योतार:
भ०	योष्यति	योष्यत:	योष्यन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रि०	अयोष्यत्	अयोष्यताम्	अयोष्यन्
व०	युनीते	युनाते	युनते
स०	युनीत	युनीयाताम्	युनीरन्
प०	युनीताम्	युनाताम्	युनताम
ह्य०	अयुनीत	अयुनाताम्	अयुनत
अ०	अयोष्ट	अयोषाताम्	अयोषत्
प०	युयुवे	युयुवाते	युयुविरे
आ०	योषीष्ट	योषीयास्ताम्	योषीरन्
श्व०	योता	योतारौ	योतार:
भ०	योष्यते	योष्येते	योष्यन्ते
क्रि०	अयोष्यत	अयोष्येताम्	अयोष्यन्त

१५१४. स्कुंग्श् (स्कु) आप्रवणे।

आप्रवणमुद्धरणतम्। ७

व०	स्कुनाति	स्कुनीत:	स्कुनन्ति
	स्कुनोति	स्कुनुत:	स्कुन्वन्ति, इत्यादि
स०	स्कुनीयात्	स्कुनीयाताम्	स्कुनीयु:
	स्कुनुयात्	स्कुनुयाताम्	स्कुनुयु:, इत्यादि।
प०	स्कुनातु/स्कुनीतात्	स्कुनीताम्	स्कुनन्तु
	स्कुनोतु	स्कुनुतात्	स्कुनुताम्, इत्यादि
ह्य०	अस्कुनात्	अस्कुनीताम्	अस्कुनन्
	अस्कुनोत्	अस्कुनुताम्	अस्कुन्वन, इ०
अ०	अस्कौषीत्	अस्कौष्टाम्	अस्कौषु:
प०	चुस्काव	चुस्कुवतु:	चुस्कुवु:
आ०	स्कूयात्	स्कूयास्ताम्	स्कूयासु:
श्व०	स्कोता	स्कोतारौ	स्कोतार:
भ०	स्कोष्यति	स्कोष्यत:	स्कोष्यन्ति
क्रि०	अस्कोष्यत्	अस्कोष्यताम्	अस्कोष्यन्
व०	स्कुनीते	स्कुनाते	स्कुनते
	स्कुनुते	स्कुन्वाते	स्कुन्वते
स०	स्कुनीत	स्कुनीयाताम्	स्कुनीरन्
	स्कुन्वीत	स्कुन्वीयाताम्	स्कुन्वीरन्
प०	स्कुनीताम्	स्कुनाताम्	स्कुनताम्
	स्कुनुताम्	स्कुन्वाताम्	स्कुन्वताम्
ह्य०	अस्कुनीत	अस्कुनाताम्	अस्कुनत
	अस्कुनुत	अस्कुन्वाताम्	अस्कुन्वत
अ०	अस्कोष्ट	अस्कोषाताम्	अस्कोषत्
प०	चुस्कुवे	चुस्कुवाते	चुस्कुविरे
आ०	स्कोषीष्ट	स्कोषीयास्ताम्	स्कोषीरन्
श्व०	स्कोता	स्कोतारौ	स्कोतार:
भ०	स्कोष्यते	स्कोष्येते	स्कोष्यन्ते
क्रि०	अस्कोष्यत	अस्कोष्येताम्	अस्कोष्यन्त

अथोदन्तौ सेटौ च।

१५१५. क्नूग्श् (क्नु) शब्दे। ८

व०	क्नूनाति	क्नूनीत:	क्नूनन्ति
	क्नूनासि	क्नूनीथ:	क्नूनीथ
	क्नूनामि	क्नूनीव:	क्नूनीम:
स०	क्नूनीयात्	क्नूनीयाताम्	क्नूनीयु:
	क्नूनीया:	क्नूनीयातम्	क्नूनीयात
	क्नूनीयाम्	क्नूनीयाव	क्नूनीयाम
प०	क्नूनातु/क्नूनीतात्	क्नूनीताम्	क्नूनन्तु
	क्नूनीहि/क्नूनीतात्	क्नूनीतम्	क्नूनीत
	क्नूनानि	क्नूनाव	क्नूनाम
		तथा	
	क्नूनोतु	क्नूनुतात्	क्नूनुताम्, इत्यादि
ह्य०	अक्नूनात्	अक्नूनीताम्	अक्नून्
	अक्नूना:	अक्नूनीतम्	अक्नूनीत
	अक्नूनाम्	अक्नूनीव	अक्नूनीम
अ०	अक्नावीत्	अक्नाविष्टाम्	अक्नाविषु:
	अक्नावी:	अक्नाविष्टम्	अक्नाविष्ट
	अक्नाविषम्	अक्नाविष्व	अक्नाविष्म
प०	चुक्नाव	चुक्नुवतु:	चुक्नवु:
	चुक्नविथ	चुक्नुवथु:	चुक्नुव
	चुक्नाव/चुक्नव	चुक्नुविव	चुक्नुविम
आ०	क्नूयात्	क्नूयास्ताम्	क्नूयासु:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	क्नूयाः	क्नूयास्तम्	क्नूयास्त
	क्नूयासम्	क्नूयास्व	क्नूयास्म
श्व०	क्नविता	क्नवितारौ	क्नवितारः
	क्नवितासि	क्नवितास्थः	क्नवितास्थ
	क्नवितास्मि	क्नवितास्वः	क्नवितास्मः
भ०	क्नविष्यति	क्नविष्यतः	क्नविष्यन्ति
	क्नविष्यसि	क्नविष्यथः	क्नविष्यथ
	क्नविष्यामि	क्नविष्यावः	क्नविष्यामः
क्रि०	अक्नविष्यत्	अक्नविष्यताम्	अक्नविष्यन्
	अक्नविष्यः	अक्नविष्यतम्	अक्नविष्यत
	अक्नविष्यम्	अक्नविष्याव	अक्नविष्याम
व०	क्नूनीते	क्नूनाते	क्नूनते
	क्नूनीषे	क्नूनाथे	क्नूनीध्वे
	क्नूने	क्नूनीवहे	क्नूनीमहे
स०	क्नूनीत	क्नूनीयाताम्	क्नूनीरन्
	क्नूनीथाः	क्नूनीयाथाम्	क्नूनीध्वम्
	क्नूनीय	क्नूनीवहि	क्नूनीमहि
प०	क्नूनीताम्	क्नूनाताम्	क्नूनताम्
	क्नूनीष्व	क्नूनाथाम्	क्नूनीध्वम्
	क्नूनै	क्नूनावहै	क्नूनामहै
ह्य०	अक्नूनीत	अक्नूनाताम्	अक्नूनत
	अक्नूनीथाः	अक्नूनाथाम्	अक्नूनीध्वम्
	अक्नूनि	अक्नूनीवहि	अक्नूनीमहि
अ०	अक्नविष्ट	अक्नविषाताम्	अक्नविषत्
	अक्नविष्ठाः	अक्नविषाताम्	अक्नविध्वम्/ अक्नविड्ढ्वम्/ढ्वम्
	अक्नविषि	अक्नविष्वहि	अक्नविष्महि
प०	चुक्नुवे	चुक्नुवाते	चुक्नुविरे
	चुक्नुविषे	चुक्नुवाथे	चुक्नुविढ्वे/विध्वे
	चुक्नुवे	चुक्नुविवहे	चुक्नुविमहे
आ०	क्नविषीष्ट	क्नविषीयास्ताम्	क्नविषीरन्
	क्नविषीष्ठाः	क्नविषीयास्थाम्	क्नविषीध्वम्
	क्नविषीय	क्नविषीवहि	क्नविषीमहि
श्व०	क्नविता	क्नवितारौ	क्नवितारः
	क्नवितासे	क्नवितासाथे	क्नविताध्वे
	क्नविताहे	क्नवितास्वहे	क्नवितास्मिहे
भ०	क्नविष्यते	क्नविष्येते	क्नविष्यन्ते
	क्नविष्यसे	क्नविष्येथे	क्नविष्यध्वे
	क्नविष्ये	क्नविष्यावहे	क्नविष्यामहे
क्रि०	अक्नविष्यत	अक्नविष्येताम्	अक्नविष्यत
	अक्नविष्यथाः	अक्नविष्येथाम्	अक्नविष्यध्वम्
	अक्नविष्ये	अक्नविष्यावहि	अक्नविष्यामहि

१५१६. दॄंगृश् (दॄ) हिंसायाम्। ९

व०	दृणाति	दृणीतः	दृणन्ति
स०	दृणीयात्	दृणीयाताम्	दृणीयुः
प०	दृणातु/दृणीतात्	दृणीताम्	दृणन्तु
ह्य०	अदृणात्	अदृणीताम्	अदृणन्
अ०	अद्रावीत्	अद्राविष्टाम्	अद्राविषुः
प०	दुद्राव	दुद्रुवतुः	दुद्रुवुः
आ०	दूयात्	दूयास्ताम्	दूयासुः
श्व०	द्रविता	द्रवितारौ	द्रवितारः
भ०	द्रविष्यति	द्रविष्यतः	द्रविष्यन्ति
क्रि०	अद्रविष्यत्	अद्रविष्यताम्	अद्रविष्यन्
व०	दृणीते	दृणाते	दृणते
स०	दृणीत	दृणीयाताम्	दृणीरन्
प०	दृणीताम्	दृणाताम्	दृणताम्
ह्य०	अदृणीत	अदृणाताम्	अदृणत
अ०	अद्रविष्ट	अद्रविषाताम्	अद्रविषत्
प०	दुद्रुवे	दुद्रुवाते	दुद्रुविरे
आ०	द्रविषीष्ट	द्रविषीयास्ताम्	द्रविषीरन्
श्व०	द्रविता	द्रवितारौ	द्रवितारः
भ०	द्रविष्यते	द्रविष्येते	द्रविष्यन्ते
क्रि०	अद्रविष्यत	अद्रविष्येताम्	अद्रविष्यन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ हान्तः सेट् च।

१५१७. ग्रहीश् (ग्रह्) उपादाने।

उपादानं स्वीकारः।

व०	गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति
	गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ
	गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः
स०	गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः
	गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात
	गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम
प०	गृह्णातु/गृह्णीतात्	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु
	गृहाणहि/गृह्णीतात्	गृह्णीतम्	गृह्णीत
	गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम
ह्य०	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
	अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
	अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम
अ०	अग्रहीत्	अग्रहीष्टाम्	अग्रहीषुः
	अग्रहीः	अग्रहीष्टम्	अग्रहीष्ट
	अग्रहीषम्	अग्रहीष्व	अग्रहीष्म
प०	जग्राह	जगृहतुः	जगृहुः
	जग्रहिथ	जगृहथुः	जगृह
	जग्राह/जग्रह	जगृहिव	जगृहिम
आ०	गृह्यात्	गृह्यास्ताम्	गृह्यासुः
	गृह्याः	गृह्यास्तम्	गृह्यास्त
	गृह्यासम्	गृह्यास्व	गृह्यास्म
श्व०	ग्रहीता	ग्रहीतारौ	ग्रहीतारः
	ग्रहीतासि	ग्रहीतास्थः	ग्रहीतास्थ
	ग्रहीतास्मि	ग्रहीतास्वः	ग्रहीतास्मः
भ०	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यन्ति
	ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यथः	ग्रहीष्यथ
	ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्यावः	ग्रहीष्यामः
क्रि०	अग्रहीष्यत्	अग्रहीष्यताम्	अग्रहीष्यन्
	अग्रहीष्यः	अग्रहीष्यतम्	अग्रहीष्यत
	अग्रहीष्यम्	अग्रहीष्याव	अग्रहीष्याम
व०	गृह्णीते	गृह्णाते	गृह्णते
	गृह्णीषे	गृह्णाथे	गृह्णीध्वे
	गृह्णे	गृह्णीवहे	गृह्णीमहे
स०	गृह्णीत	गृह्णीयाताम्	गृह्णीरन्
	गृह्णीथाः	गृह्णीयाथाम्	गृह्णीध्वम्
	गृह्णीय	गृह्णीवहि	गृह्णीमहि
प०	गृह्णीताम्	गृह्णाताम्	गृह्णताम्
	गृह्णीष्व	गृह्णाथाम्	गृह्णीध्वम्
	गृह्णै	गृह्णावहै	गृह्णामहै
ह्य०	अगृह्णीत	अगृह्णाताम्	अगृह्णत
	अगृह्णीथाः	अगृह्णाथाम्	अगृह्णीध्वम्
	अगृह्णि	अगृह्णीवहि	अगृह्णीमहि
अ०	अग्रहीष्ट	अग्रहीषाताम्	अग्रहीषत्
	अग्रहीष्ठाः	अग्रहीषाथाम्	अग्रहीध्वम्/अग्रहीढ्वम्
	अग्रहीषि	अग्रहीष्वहि	अग्रहीष्महि
प०	जगृहे	जगृहाते	जगृहिरे
	जगृहिषे	जगृहाथे	जगृहिढ्वे/ध्वे
	जगृहे	जगृहिवहे	जगृहिमहे
आ०	ग्रहीषीष्ट	ग्रहीषीयास्ताम्	ग्रहीषीरन्
	ग्रहीषीष्ठाः	ग्रहीषीयास्थाम्	ग्रहीषीध्वम्
	ग्रहीषीय	ग्रहीषीवहि	ग्रहीषीमहि
श्व०	ग्रहीता	ग्रहीतारौ	ग्रहीतारः
	ग्रहीतासे	ग्रहीतासाथे	ग्रहीताध्वे
	ग्रहीताहे	ग्रहीतास्वहे	ग्रहीतास्महे
भ०	ग्रहीष्यते	ग्रहीष्येते	ग्रहीष्यन्ते
	ग्रहीष्यसे	ग्रहीष्येथे	ग्रहीष्यध्वे
	ग्रहीष्ये	ग्रहीष्यावहे	ग्रहीष्यामहे
क्रि०	अग्रहीष्यत	अग्रहीष्येताम्	अग्रहीष्यन्त
	अग्रहीष्यथाः	अग्रहीष्येथाम्	अग्रहीष्यध्वम्
	अग्रहीष्ये	अग्रहीष्यावहि	अग्रहीष्यामहि

अथ क्र्याद्यन्तर्गणः प्वादिः ''प्वादेर्ह्रस्व इति ह्रस्वप्रयोजनः प्रदर्श्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्रोदन्तास्त्रय सेटश्च।

१५१८. पूगृश् (पू) पवने। पवनं शुद्धिः।

व०	पुनाति	पुनीतः	पुनन्ति
	पुनासि	पुनीथः	पुनीथ
	पुनामि	पुनीवः	पुनीमः
स०	पुनीयात्	पुनीयाताम्	पुनीयुः
	पुनीयाः	पुनीयातम्	पुनीयात
	पुनीयाम्	पुनीयाव	पुनीयाम
प०	पुनातु/पुनीतात्	पुनीताम्	पुनन्तु
	पुनीहि/पुनीतात्	पुनीतम्	पुनीत
	पुनानि	पुनाव	पुनाम
ह्य०	अपुनात्	अपुनीताम्	अपुनन्
	अपुनाः	अपुनीतम्	अपुनीत
	अपुनाम्	अपुनीव	अपुनीम
अ०	अपावीत्	अपाविष्टाम्	अपाविषुः
	अपावीः	अपाविष्टम्	अपाविष्ट
	अपाविषम्	अपाविष्व	अपाविष्म
प०	पुपाव	पुपुवतुः	पुपुवुः
	पुपविथ	पुपुवथुः	पुपुव
	पुपाव/पुपव	पुपुविव	पुपुविम
आ०	पूयात्	पूयास्ताम्	पूयासुः
	पूयाः	पूयास्तम्	पूयास्त
	पूयासम्	पूयास्व	पूयास्म
श्व०	पविता	पवितारौ	पवितारः
	पवितासि	पवितास्थः	पवितास्थ
	पवितास्मि	पवितास्वः	पवितास्मः
भ०	पविष्यति	पविष्यतः	पविष्यन्ति
	पविष्यसि	पविष्यथः	पविष्यथ
	पविष्यामि	पविष्यावः	पविष्यामः
क्रि०	अपविष्यत्	अपविष्यताम्	अपविष्यन्
	अपविष्यः	अपविष्यतम्	अपविष्यत
	अपविष्यम्	अपविष्याव	अपविष्याम

व०	पुनीते	पुनाते	पुनते
	पुनीषे	पुनाथे	पुनीध्वे
	पुने	पुनीवहे	पुनीमहे
स०	पुनीत	पुनीयाताम्	पुनीरन्
	पुनीथाः	पुनीयाथाम्	पुनीध्वम्
	पुनीय	पुनीवहि	पुनीमहि
प०	पुनीताम्	पुनाताम्	पुनताम्
	पुनीष्व	पुनाथाम्	पुनीध्वम्
	पुनै	पुनावहै	पुनामहै
ह्य०	अपुनीत	अपुनाताम्	अपुनत
	अपुनीथाः	अपुनाथाम्	अपुनीध्वम्
	अपुनि	अपुनीवहि	अपुनीमहि
अ०	अपविष्ट	अपविषाताम्	अपविषत्
	अपविष्ठाः	अपविषाथाम्	अपविध्वम्/अपविढ्वम्
	अपविषि	अपविष्वहि	अपविष्महि
प०	पुपुवे	पुपुवाते	पुपुविरे
	पुपुविषे	पुपुवाथे	पुपुविढ्वे/विध्वे
	पुपुवे	पुपुविवहे	पुपुविमहे
आ०	पविषीष्ट	पविषीयास्ताम्	पविषीरन्
	पविषीष्ठाः	पविषीयास्थाम्	पविषीध्वम्/पविषीढ्वम्
	पविषीय	पविषीवहि	पविषीमहि
श्व०	पविता	पवितारौ	पवितारः
	पवितासे	पवितासाथे	पविताध्वे
	पविताहे	पवितास्वहे	पवितास्महे
भ०	पविष्यते	पविष्येते	पविष्यन्ते
	पविष्यसे	पविष्येथे	पविष्यध्वे
	पविष्ये	पविष्यावहे	पविष्यामहे
क्रि०	अपविष्यत	अपविष्येताम्	अपविष्यन्त
	अपविष्यथाः	अपविष्येथाम्	अपविष्यध्वम्
	अपविष्ये	अपविष्यावहि	अपविष्यामहि

अथ प्वाद्यन्तर्गणः ल्वादिः। ऋ ल्वादेरिति नत्वार्थः प्रदर्श्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५१९. लूग्श् (लू) छेदने। १२

व०	लुनाति	लुनीत:	लुनन्ति
	लुनासि	लुनीथ:	लुनीथ
	लुनामि	लुनीव:	लुनीम:
स०	लुनीयात्	लुनीयाताम्	लुनीयु:
	लुनीया:	लुनीयातम्	लुनीयात
	लुनीयाम्	लुनीयाव	लुनीयाम
प०	लुनातु/लुनीतात्	लुनीताम्	लुनन्तु
	लुनीहि/लुनीतात्	लुनीतम्	लुनीत
	लुनानि	लुनाव	लुनाम
ह्य०	अलुनात्	अलुनीताम्	अलुनन्
	अलुना:	अलुनीतम्	अलुनीत
	अलुनाम्	अलुनीव	अलुनीम
अ०	अलावीत्	अलाविष्टाम्	अलाविषु:
	अलावी:	अलाविष्टम्	अलाविष्ट
	अलाविषम्	अलाविष्व	अलाविष्म
प०	लुलाव	लुलुवतु:	लुलुवु:
	लुलविथ	लुलुवथु:	लुलुव
	लुलाव/लुलव	लुलुविव	लुलुविम
आ०	लूयात्	लूयास्ताम्	लूयासु:
	लूया:	लूयास्तम्	लूयास्त
	लूयासम्	लूयास्व	लूयास्म
श्व०	लविता	लवितारौ	लवितार:
	लवितासि	लवितास्थ:	लवितास्थ
	लवितास्मि	लवितास्व:	लवितास्म:
भ०	लविष्यति	लविष्यत:	लविष्यन्ति
	लविष्यसि	लविष्यथ:	लविष्यथ
	लविष्यामि	लविष्याव:	लविष्याम:
क्रि०	अलविष्यत्	अलविष्यताम्	अलविष्यन्
	अलविष्य:	अलविष्यतम्	अलविष्यत
	अलविष्यम्	अलविष्याव	अलविष्याम
व०	लुनीते	लुनाते	लुनते
	लुनीषे	लुनाथे	लुनीध्वे
	लुने	लुनीवहे	लुनीमहे
स०	लुनीत	लुनीयाताम्	लुनीरन्
	लुनीथा:	लुनीयाथाम्	लुनीध्वम्
	लुनीय	लुनीवहि	लुनीमहि
प०	लुनीताम्	लुनाताम्	लुनताम्
	लुनीष्व	लुनाथाम्	लुनीध्वम्
	लुनै	लुनावहै	लुनामहै
ह्य०	अलुनीत	अलुनाताम्	अलुनत
	अलुनीथा:	अलुनाथाम्	अलुनीध्वम्
	अलुनि	अलुनीवहि	अलुनीमहि
अ०	अलविष्ट	अलविषाताम्	अलविषत्
	अलविष्ठा:	अलविषाथाम्	अलविध्वम्/ अलविड्ढ्वम्/अलिविद्वम्
	अलविषि	अलविष्वहि	अलविष्महि
प०	लुलुवे	लुलुवाते	लुलुविरे
	लुलुविषे	लुलुवाथे	लुलुविद्वे/विध्वे
	लुलुवे	लुलुविवहे	लुलुविमहे
आ०	लविषीष्ट	लविषीयास्ताम्	लविषीरन्
	लविषीष्ठा:	लविषीयास्थाम्	लविषीध्वम
	लविषीय	लविषीवहि	लविषीमहि
श्व०	लविता	लवितारौ	लवितार:
	लवितासे	लवितासाथे	लविताध्वे
	लविताहे	लवितास्वहे	लवितास्मिहे
भ०	लविष्यते	लविष्येते	लविष्यन्ते
	लविष्यसे	लविष्येथे	लविष्यध्वे
	लविष्ये	लविष्यावहे	लविष्यामहे
क्रि०	अलविष्यत	अलविष्येताम्	अलविष्यन्त
	अलविष्यथा:	अलविष्येथाम्	अलविष्यध्वम्
	अलविष्ये	अलविष्यावहि	अलविष्यामहि

१५२०. धूग्श् (धू) कम्पने। १३

व०	धुनाति	धुनीत:	धुनन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धुनासि	धुनीथः	धुनीथ
	धुनामि	धुनीवः	धुनीमः
स०	धुनीयात्	धुनीयाताम्	धुनीयुः
	धुनीयाः	धुनीयातम्	धुनीयात
	धुनीयाम्	धुनीयाव	धुनीयाम
प०	धुनातु/धुनीतात्	धुनीताम्	धुनन्तु
	धुनीहि/धुनीतात्	धुनीतम्	धुनीत
	धुनानि	धुनाव	धुनाम
ह्य०	अधुनात्	अधुनीताम्	अधुनन्
	अधुनाः	अधुनीतम्	अधुनीत
	अधुनाम्	अधुनीव	अधुनीम
अ०	अधावीत्	अधाविष्टाम्	अधाविषुः
	अधावीः	अधाविष्टम्	अधाविष्ट
	अधाविषम्	अधाविष्व	अधाविष्म
प०	दुधाव	दुधुवतुः	दुधुवुः
	दुधविथ	दुधुवथुः	दुधुव
	दुधाव/दुधव	दुधुविव	दुधुविम
आ०	धूयात्	धूयास्ताम्	धूयासुः
	धूयाः	धूयास्तम्	धूयास्त
	धूयासम्	धूयास्व	धूयास्म
श्व०	धविता	धवितारौ	धवितारः
	धवितासि	धवितास्थः	धवितास्थ
	धवितास्मि	धवितास्वः	धवितास्मः
	धोता	धोतारौ	धोतारः, इत्यादि।
भ०	धविष्यति	धविष्यतः	धविष्यन्ति
	धविष्यसि	धविष्यथः	धविष्यथ
	धविष्यामि	धविष्यावः	धविष्यामः
	धोष्यति	धोष्यतः	धोष्यन्ति, इत्यादि।
क्रि०	अधविष्यत्	अधविष्यताम्	अधविष्यन्
	अधविष्यः	अधविष्यतम्	अधविष्यत
	अधविष्यम्	अधविष्याव	अधविष्याम
	अधोष्यत	अधोष्यताम्	अधोष्यन्, इत्यादि

व०	धुनीते	धुनाते	धुनते
	धुनीषे	धुनाथे	धुनीध्वे
	धुने	धुनीवहे	धुनीमहे
स०	धुनीत	धुनीयाताम्	धुनीरन्
	धुनीथाः	धुनीयाथाम्	धुनीध्वम्
	धुनीय	धुनीवहि	धुनीमहि
प०	धुनीताम्	धुनाताम्	धुनताम्
	धुनीष्व	धुनाथाम्	धुनीध्वम्
	धुनै	धुनावहै	धुनामहै
ह्य०	अधुनीत	अधुनाताम्	अधुनत
	अधुनीथाः	अधुनाथाम्	अधुनीध्वम्
	अधुनि	अधुनीवहि	अधुनीमहि
अ०	अधविष्ट	अधविषाताम्	अधविषत्
	अधविष्ठाः	अधविषाथाम्	अधविध्वम्/ अधविड्वम्/ढ्वम्
	अधविषि	अधविष्वहि	अधविष्महि
		तथा	
	अधोष्ट	अधोषाताम्	अधोषत, इत्यादि।
प०	दुधुवे	दुधुवाते	दुधुविरे
	दुधुविषे	दुधुवाथे	दुधुविढ्वे/विध्वे
	दुधुवे	दुधुविवहे	दुधुविमहे
आ०	धविषीष्ट	धविषीयास्ताम्	धविषीरन्
	धविषीष्ठाः	धविषीयास्थाम्	धविषीध्वम्/ढ्वम्
	धविषीय	धविषीवहि	धविषीमहि
		तथा	
	धोषीष्ट	धोषीयास्ताम्	धोषीरन्, इत्यादि।
श्व०	धविता	धवितारौ	धवितारः
	धवितासे	धवितासाथे	धविताध्वे
	धविताहे	धवितास्वहे	धवितास्मिहे
		तथा	
	धोता	धोतारौ	धोतारः, इत्यादि।
भ०	धविष्यते	धविष्येते	धविष्यन्ते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	धविष्यसे	धविष्येथे	धविष्यध्वे
	धविष्ये	धविष्यावहे	धविष्यामहे
		तथा	
	धोष्यते	धोष्येते	धोष्यन्ते, इत्यादि।
क्रि०	अधविष्यत	अधविष्येताम्	अधविष्यन्त
	अधविष्यथा:	अधविष्येथाम्	अधविष्यध्वम्
	अधविष्ये	अधविष्यावहि	अधविष्यामहि
		तथा	
	अधोष्यत	अधोष्येताम्	अधोष्यन्त, इ०

॥अथ ऋदन्तास्त्रय: सेटश्च॥

१५२१. स्तृञ्शू (स्तृ) आच्छादने। १४

व०	स्तृणाति	स्तृणीत:	स्तृणन्ति
	स्तृणासि	स्तृणीथ:	स्तृणीथ
	स्तृणामि	स्तृणीव:	स्तृणीम:
स०	स्तृणीयात्	स्तृणीयाताम्	स्तृणीयु:
	स्तृणीया:	स्तृणीयातम्	स्तृणीयात
	स्तृणीयाम्	स्तृणीयाव	स्तृणीयाम
प०	स्तृणातु/स्तृणीतात्	स्तृणीताम्	स्तृणन्तु
	स्तृणीहि/स्तृणीतात	स्तृणीतम्	स्तृणीत
	स्तृणानि	स्तृणाव	स्तृणाम
ह्य०	अस्तृणात्	अस्तृणीताम्	अस्तृनन्
	अस्तृणा:	अस्तृणीतम्	अस्तृणीत
	अस्तृणाम्	अस्तृणीव	अस्तृणीम
अ०	अस्तारीत्	अस्तारिष्टाम्	अस्तारिषु:
	अस्तारी:	अस्तारिष्टम्	अस्तारिष्ट
	अस्तारिषम्	अस्तारिष्व	अस्तारिष्म
प०	तस्तार	तस्तरतु:	तस्तरु:
	तस्तरिथ	तस्तरथु:	तस्तर
	तस्तार/तस्तर	तस्तरिव	तस्तरिम
आ०	स्तीर्यात्	स्तीर्यास्ताम्	स्तीर्यासु:
	स्तीर्या:	स्तीर्यास्तम्	स्तीर्यास्त
	स्तीर्यासम्	स्तीर्यास्व	स्तीर्यास्म

श्व०	स्तरिता	स्तरितारौ	स्तरितार:
	स्तरितासि	स्तरितास्थ:	स्तरितास्थ
	स्तरितास्मि	स्तरितास्व:	स्तरितास्म:
भ०	स्तरिष्यति	स्तरिष्यत:	स्तरिष्यन्ति
	स्तरिष्यसि	स्तरिष्यथ:	स्तरिष्यथ
	स्तरिष्यामि	स्तरिष्याव:	स्तरिष्याम:
क्रि०	अस्तरिष्यत्	अस्तरिष्यताम्	अस्तरिष्यन्
	अस्तरिष्य:	अस्तरिष्यतम्	अस्तरिष्यत
	अस्तरिष्यम्	अस्तरिष्याव	अस्तरिष्याम
	अस्तरीष्यत्	अस्तरीष्यताम्	अस्तरीष्यन्, इ०
व०	स्तृणीते	स्तृणाते	स्तृणते
	स्तृणीषे	स्तृणाथे	स्तृणीध्वे
	स्तृणे	स्तृणीवहे	स्तृणीमहे
स०	स्तृणीत	स्तृणीयाताम्	स्तृणीरन्
	स्तृणीथा:	स्तृणीयाथाम्	स्तृणीध्वम्
	स्तृणीय	स्तृणीवहि	स्तृणीमहि
प०	स्तृणीताम्	स्तृणाताम्	स्तृणताम्
	स्तृणीष्व	स्तृणाथाम्	स्तृणीध्वम्
	स्तृणै	स्तृणावहै	स्तृणामहै
ह्य०	अस्तृणीत	अस्तृणाताम्	अस्तृणत
	अस्तृणीथा:	अस्तृणाथाम्	अस्तृणीध्वम्
	अस्तृणि	अस्तृणीवहि	अस्तृणीमहि
अ०	अस्तरिष्ट	अस्तरिषाताम्	अस्तरिषत्
	अस्तरिष्ठा:	अस्तरिषाथाम्	अस्तरिध्वम्/अस्तरिढ्वम्
	अस्तरिषि	अस्तरिष्वहि	अस्तरिष्महि
		तथा	
	अस्तरीष्ट	अस्तरीषाताम्	अस्तरीषत, इ०
		तथा	
	अस्तीर्ष्ट	अस्तीर्षाताम्	अस्तीर्षत, इत्यादि
प०	तस्तरे	तस्तराते	तस्तरिरे
	तस्तरिषे	तस्तराथे	तस्तरिध्वे/तस्तरिढ्वे
	तस्तरे	तस्तरिवहे	तस्तरिमहे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	स्तरिषीष्ट	स्तरिषीयास्ताम्	स्तरिषीरन्
	स्तरिषीष्ठाः	स्तरिषीयास्थाम्	स्तरिषीध्वम्/ढ्वम्
	स्तरिषीय	स्तरिषीवहि	स्तरिषीमहि
		तथा	
	स्तीर्षीष्ट	स्तीर्षीयास्ताम्	स्तीर्षीरन्, इत्यादि
श्व०	स्तरिता	स्तरितारौ	स्तरितारः
	स्तरितासे	स्तरितासाथे	स्तरिताध्वे
	स्तरिताहे	स्तरितास्वहे	स्तरितास्मिहे
		तथा	
	स्तरीता	स्तरीतारौ	स्तरीतारः, इत्यादि
भ०	स्तरिष्यते	स्तरिष्येते	स्तरिष्यन्ते
	स्तरिष्यसे	स्तरिष्येथे	स्तरिष्यध्वे
	स्तरिष्ये	स्तरिष्यावहे	स्तरिष्यामहे
		तथा	
	स्तरीष्यते	स्तरीष्येते	स्तरीष्यन्ते, इ०
क्रि०	अस्तरिष्यत	अस्तरिष्येताम्	अस्तरिष्यन्त
	अस्तरिष्यथाः	अस्तरिष्येथाम्	अस्तरिष्यध्वम्
	अस्तरिष्ये	अस्तरिष्यावहि	अस्तरिष्यामहि
		तथा	
	अस्तरीष्यत्	अस्तरीष्येताम्	अस्तरीष्यन्त, इ०

१५२२. कॄञ् (कॄ) हिंसायाम्। १५

व०	कृणाति	कृणीतः	कृणन्ति
स०	कृणीयात्	कृणीयाताम्	कृणीयुः
प०	कृणातु/कृणीतात्	कृणीताम्	कृणन्तु
ह्य०	अकृणात्	अकृणीताम्	अकृणन्
अ०	अकारीत्	अकारिष्टाम्	अकारिषुः
प०	चकार	चकरतुः	चकरुः
आ०	कीर्यात्	कीर्यास्ताम्	कीर्यासुः
श्व०	करिता	करितारौ	करितारः
	करीता	करीतारौ	करीतारः, इत्यादि।
भ०	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
	करीष्यति	करीष्यतः	करीष्यन्ति, इ०
क्रि०	अकरिष्यत्	अकरिष्यताम्	अकरिष्यन्
	अकरीष्यत्	अकरीष्यताम्	अकरीष्यन्, इ०
व०	कृणीते	कृणाते	कृणते
स०	कृणीत	कृणीयाताम्	कृणीरन्
प०	कृणीताम्	कृणाताम्	कृणताम्
ह्य०	अकृणीत	अकृणाताम्	अकृणत
अ०	अकरिष्ट	अकरिषाताम्	अकरिषत्
	अकरीष्ट	अकरीषाताम्	अकरीषत, इत्यादि
	अकीर्ष्ट	अकीर्षाताम्	अकीर्षत, इत्यादि।
प०	चकरे	चकराते	चकरिरे
आ०	करिषीष्ट	करिषीयास्ताम्	करिषीरन्
	कीर्षीष्ट	कीर्षीयास्ताम्	कीर्षीरन्, इत्यादि।
श्व०	करिता	करितारौ	करितारः
	करीता	करीतारौ	करीतारः, इत्यादि।
भ०	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
	करीष्यते	करीष्येते	करीष्यन्ते, इत्यादि
क्रि०	अकरिष्यत	अकरिष्येताम्	अकरिष्यन्त
	अकरीष्यत्	अकरीष्येताम्	अकरीष्यन्त, इ०

१५२३. वृञ् (वृ) वरणे। १६

व०	वृणाति	वृणीतः	वृणन्ति
स०	वृणीयात्	वृणीयाताम्	वृणीयुः
प०	वृणातु/वृणीतात्	वृणीताम्	वृणन्तु
ह्य०	अवृणात्	अवृणीताम्	अवृणन्
अ०	अवारीत्	अवारिष्टाम्	अवारिषुः
प०	ववार	ववरतुः	ववरुः
आ०	वूर्यात्	वूर्यास्ताम्	वूर्यासुः
श्व०	वरिता	वरितारौ	वरितारः
	वरीता	वरीतारौ	वरीतारः, इत्यादि।
भ०	वरिष्यति	वरिष्यतः	वरिष्यन्ति
	वरीष्यति	वरीष्यतः	वरीष्यन्ति, इत्यादि
क्रि०	अवरिष्यत्	अवरिष्यताम्	अवरिष्यन्
	अवरीष्यत्	अवरीष्यताम्	अवरीष्यन्, इ०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व०	वृणीते	वृणाते	वृणते
स०	वृणीत	वृणीयाताम्	वृणीरन्
प०	वृणीताम्	वृणाताम्	वृणताम
ह्य०	अवृणीत	अवृणाताम्	अवृणत
अ०	अवरिष्ट	अवरिषाताम्	अवरिषत्
	अवरीष्ट	अवरीषाताम्	अवरीषत, इत्यादि
	अवृर्ष्ट	अवृर्षाताम्	अवृर्षत, इत्यादि।
प०	ववरे	ववराते	ववतिरे
आ०	वरिषीष्ट	वरिषीयास्ताम्	वरिषीरन्
	वृर्षीष्ट	वृर्षीयास्ताम्	वृर्षीरन्, इत्यादि।
श्व०	वरिता	वरितारौ	वरितार:
	वरीता	वरीतारौ	वरीतार:, इत्यादि।
भ०	वरिष्यते	वरिष्येते	वरिष्यन्ते
	वरीष्यते	वरीष्येते	वरीष्यन्ते, इत्यादि
क्रि०	अवरिष्यत	अवरिष्येताम्	अवरिष्यन्त
	अवरीष्यत्	अवरीष्येताम्	अवरीष्यन्त, इ०

अथ परस्मैपदिप्वादन्तोऽनिट् च।

१५२४. ज्यांश् (ज्या) हानौ। १७

।।वयोहानावित्येके।।

व०	जिनाति	जिनीत:	जिनन्ति
स०	जिनीयात्	जिनीयाताम्	जिनीयु:
प०	जिनातु/जिनीतात्	जिनीताम्	जिनन्तु
ह्य०	अजिनात्	अजिनीताम्	अजिणन्
अ०	अज्यासीत्	अज्यासिष्टाम्	अज्यासिषु:
प०	जिज्यौ	जिज्यतु:	जिज्यु:
आ०	जीयात्	जीयास्ताम्	जीयासु:
श्व०	ज्याता	ज्यातारौ	ज्यातार:
भ०	ज्यास्यति	ज्यास्यत:	ज्यास्यन्ति
क्रि०	अज्यास्यत्	अज्यास्यताम्	अज्यास्यन्

अथेदन्ताश्चत्वारोऽनिटश्च।

१५२५. रींशू (री) गतिरेषणयो:। रेषणं हिंसा। १८

व०	रिणाति	रिणीत:	रिणन्ति
स०	रिणीयात्	रिणीयाताम्	रिणीयु:
प०	रिणातु/रिणीतात्	रिणीताम्	रिणन्तु
ह्य०	अरिणात्	अरिणीताम्	अरिणन्
अ०	अरैषीत्	अरैष्टाम्	अरैषु:
प०	रिराय	रिर्यतु:	रिर्यु:
आ०	रीयात्	रीयास्ताम्	रीयासु:
श्व०	रेता	रेतारौ	रेतार:
भ०	रेष्यति	रेष्यत:	रेष्यन्ति
क्रि०	अरेष्यत्	अरेष्यताम्	अरेष्यन्

योऽनेकस्वरस्येति यत्वस्य बहिरङ्गत्त्वेन ध्वादेरिति दीर्घमन्तरङ्गं प्रत्यसिद्धत्वात्पूर्वस्य दीर्घाभावे, रिर्यतु:।

१५२६. लींश् (ली) श्लेषणे। १९

व०	लिनाति	लिनीत:	लिनन्ति
स०	लिनीयात्	लिनीयाताम्	लिनीयु:
प०	लिनातु/लिनीतात्	लिनीताम्	लिनन्तु
ह्य०	अलिनात्	अलिनीताम्	अलिनन्
अ०	अलैषीत्	अलैष्टाम्	अलैषु:
	अलासीत्	अलासिष्टाम्	अलासिषु:, इ०
प०	लिलाय/ललौ	लिल्यतु:	लिल्यु:
	ललौ	लिल्यिव	लिल्यिम
आ०	लीयात्	लीयास्ताम्	लीयासु:
श्व०	लाता	लातारौ	लातार:
	लेता	लेतारौ	लेतार:, इत्यादि।
भ०	लेष्यति	लेष्यत:	लेष्यन्ति
	लास्यति	लास्यत:	लास्यन्ति, इत्यादि
क्रि०	अलेष्यत्	अलेष्यताम्	अलेष्यन्
	अलास्यत्	अलास्यताम्	अलास्यन्, इत्यादि

१५२७. व्लींश् (व्ली) वरणे। २०

व०	व्लिनाति	व्लिनीत:	व्लिनन्ति
स०	व्लिनीयात्	व्लिनीयाताम्	व्लिनीयु:
प०	व्लिनातु/व्लिनीतात्	व्लिनीताम्	व्लिनन्तु
ह्य०	अव्लिनात्	अव्लिनीताम्	अव्लिनन्

अ०	अव्लषीत्	अव्लैष्टाम्	अव्लैषुः
प०	विव्लाय	विव्लियतुः	विव्लियुः
आ०	व्लीयात्	व्लीयास्ताम्	व्लीयासुः
श्व०	व्लेता	व्लेतारौ	व्लेतारः
भ०	व्लेष्यति	व्लेष्यतः	व्लेष्यन्ति
क्रि०	अव्लेष्यत्	अव्लेष्यताम्	अव्लेष्यन्

१५२८. ल्वींश् (ल्वी) गतौ। २१

व०	ल्विनाति	ल्विनीतः	ल्विनन्ति
स०	ल्विनीयात्	ल्विनीयाताम्	ल्विनीयुः
प०	ल्विनातु/ल्विनीतात्	ल्विनीताम्	ल्विनन्तु
ह्य०	अल्विनात्	अल्विनीताम्	अल्विनन्
अ०	अल्वैषीत्	अल्वैष्टाम्	अल्वैषुः
प०	लिल्वाय	लिल्वियतुः	लिल्वियुः
आ०	ल्वीयात्	ल्वीयास्ताम्	ल्वीयासुः
श्व०	ल्वेता	ल्वेतारौ	ल्वेतारः
भ०	ल्वेष्यति	ल्वेष्यतः	ल्वेष्यन्ति
क्रि०	अल्वेष्यत्	अल्वेष्यताम्	अल्वेष्यन्

१५२८-२. प्लीश् (प्ली) गतौ।

श्लेषणे इत्येके पठन्ति।

व०	प्लिनाति	प्लिनीतः	प्लिनन्ति
स०	प्लिनीयात्	प्लिनीयाताम्	प्लिनीयुः
प०	प्लिनातु/प्लिनीतात्	प्लिनीताम्	प्लिनन्तु
ह्य०	अप्लिनात्	अप्लिनीताम्	अप्लिनन्
अ०	अप्लैषीत्	अप्लैष्टाम्	अप्लैषुः
प०	पिप्लाय	पिप्लियतुः	पिप्लियुः
आ०	प्लीयात्	प्लीयास्ताम्	प्लीयासुः
श्व०	प्लेता	प्लेतारौ	प्लेतारः
भ०	प्लेष्यति	प्लेष्यतः	प्लेष्यन्ति
क्रि०	अप्लेष्यत्	अप्लेष्यताम्	अप्लेष्यन्

॥अथ ॠदन्ता एकादश सेट्श्च॥

१५२९. कॄश् (कॄ) हिंसायाम्। २२

व०	कृणाति	कृणीतः	कृणन्ति
स०	कृणीयात्	कृणीयाताम्	कृणीयुः
प०	कृणातु/कृणीतात्	कृणीताम्	कृणन्तु
ह्य०	अकृणात्	अकृणीताम्	अकृनन्
अ०	अकारीत्	अकारिष्टाम्	अकारिषुः
प०	चकार	चकरतुः	चकरुः
आ०	कीर्यात्	कीर्यास्ताम्	कीर्यासुः
श्व०	करिता	करितारौ	करितारः
	करीता	करीतारौ	करीतारः, इत्यादि।
भ०	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
	करीष्यति	करीष्यतः	करीष्यन्ति, इ०
क्रि०	अकरिष्यत्	अकरिष्यताम्	अकरिष्यन्
	अकरीष्यत्	अकरीष्यताम्	अकरीष्यन्, इ०

१५३०. मॄश् (मॄ) हिंसायाम्। २३

व०	मृणाति	मृणीतः	मृणन्ति
स०	मृणीयात्	मृणीयाताम्	मृणीयुः
प०	मृणातु/मृणीतात्	मृणीताम्	मृणन्तु
ह्य०	अमृणात्	अमृणीताम्	अमृणन्
अ०	अमारीत्	अमारिष्टाम्	अमारिषुः
प०	ममार	ममरतुः	ममरुः
आ०	मूर्यात्	मूर्यास्ताम्	मूर्यासुः
श्व०	मरिता	मरितारौ	मरितारः
	मरीता	मरीतारौ	मरीतारः, इत्यादि।
भ०	मरिष्यति	मरिष्यतः	मरिष्यन्ति
	मरीष्यति	मरीष्यतः	मरीष्यन्ति, इत्यादि
क्रि०	अमरिष्यत्	अमरिष्यताम्	अमरिष्यन्
	अमरीष्यत्	अमरीष्यताम्	अमरीष्यन्, इ०

१५३१. शॄश् (शॄ) हिंसायाम्। २४

व०	शृणाति	शृणीतः	शृणन्ति
स०	शृणीयात्	शृणीयाताम्	शृणीयुः
प०	शृणातु/शृणीतात्	शृणीताम्	शृणन्तु
ह्य०	अशृणात्	अशृणीताम्	अशृणन्
अ०	अशारीत्	अशारिष्टाम्	अशारिषुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	शशार	शशरतुः	शशरुः
	शशार	शश्रतुः	शश्रुः, इत्यादि।
आ०	शीर्यात्	शीर्यास्ताम्	शीर्यासुः
श्व०	शरिता	शरितारौ	शरितारः
	शरीता	शरीतारौ	शरीतारः, इत्यादि।
भ०	शरिष्यति	शरिष्यतः	शरिष्यन्ति
	शरीष्यति	शरीष्यतः	शरीष्यन्ति, इ०
क्रि०	अशरिष्यत्	अशरिष्यताम्	अशरिष्यन्
	अशरीष्यत्	अशरीष्यताम्	अशरीष्यन्, इ०

१५३२. पृश् (पृ) पालनपूरणयोः। २५

व०	पृणाति	पृणीतः	पृणन्ति
स०	पृणीयात्	पृणीयाताम्	पृणीयुः
प०	पृणातु/पृणीतात्	पृणीताम्	पृणन्तु
ह्य०	अपृणात्	अपृणीताम्	अपृणन्
अ०	अपारीत्	अपारिष्टाम्	अपारिषुः
प०	पपार	पपरतुः	पपरुः
	पपार	पप्रतुः	पप्रुः, इत्यादि।
आ०	पूर्यात्	पूर्यास्ताम्	पूर्यासुः
श्व०	परिता	परितारौ	परितारः
	परीता	परीतारौ	परीतारः, इत्यादि।
भ०	परिष्यति	परिष्यतः	परिष्यन्ति
	परीष्यति	परीष्यतः	परीष्यन्ति, इत्यादि
क्रि०	अपरिष्यत्	अपरिष्यताम्	अपरिष्यन्
	अपरीष्यत्	अपरीष्यताम्	अपरीष्यन्, इ०

१५३३. बृश् (बृ) भरणे। वरणे इत्यन्ये। २६

व०	बृणाति	बृणीतः	बृणन्ति
स०	बृणीयात्	बृणीयाताम्	बृणीयुः
प०	बृणातु/बृणीतात्	बृणीताम्	बृणन्तु
ह्य०	अबृणात्	अबृणीताम्	अबृणन्
अ०	अबारीत्	अबारिष्टाम्	अबारिषुः
प०	बबार	बबरतुः	बबरुः
आ०	बूर्यात्	बूर्यास्ताम्	बूर्यासुः
श्व०	बरिता	बरितारौ	बरितारः
	बरीता	बरीतारौ	बरीतारः, इत्यादि।
भ०	बरिष्यति	बरिष्यतः	बरिष्यन्ति
	बरीष्यति	बरीष्यतः	बरीष्यन्ति, इत्यादि
क्रि०	अबरिष्यत्	अबरिष्यताम्	अबरिष्यन्
	अबरीष्यत्	अबरीष्यताम्	अबरीष्यन्, इ०

१५३४. भृश् (भृ) भर्जने च।
चकाराद्भरणे भर्जनं पाकः। २७

व०	भृणाति	भृणीतः	भृणन्ति
स०	भृणीयात्	भृणीयाताम्	भृणीयुः
प०	भृणातु/भृणीतात्	भृणीताम्	भृणन्तु
ह्य०	अभृणात्	अभृणीताम्	अभृणन्
अ०	अभारीत्	अभारिष्टाम्	अभारिषुः
प०	बभार	बभरतुः	बभरुः
आ०	भूर्यात्	भूर्यास्ताम्	भूर्यासुः
श्व०	भरिता	भरितारौ	भरितारः
	भरीता	भरीतारौ	भरीतारः, इत्यादि।
भ०	भरिष्यति	भरिष्यतः	भरिष्यन्ति
	भरीष्यति	भरीष्यतः	भरीष्यन्ति, इत्यादि
क्रि०	अभरिष्यत्	अभरिष्यताम्	अभरिष्यन्
	अभरीष्यत्	अभरीष्यताम्	अभरीष्यन्, इ०

१५३५. दृश् (दृ) विदारणे। २८

व०	दृणाति	दृणीतः	दृणन्ति
स०	दृणीयात्	दृणीयाताम्	दृणीयुः
प०	दृणातु/दृणीतात्	दृणीताम्	दृणन्तु
ह्य०	अदृणात्	अदृणीताम्	अदृणन्
अ०	अदारीत्	अदारिष्टाम्	अदारिषुः
प०	ददार	ददरतुः	ददरुः
	ददार	दद्रतुः	दद्रुः, इत्यादि।
आ०	दीर्यात्	दीर्यास्ताम्	दीर्यासुः
श्व०	दरिता	दरितारौ	दरितारः
	दरीता	दरीतारौ	दरीतारः, इत्यादि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	दरिष्यति	दरिष्यतः	दरिष्यन्ति
	दरीष्यति	दरीष्यतः	दरीष्यन्ति, इत्यादि
क्रि०	अदरिष्यत्	अदरिष्यताम्	अदरिष्यन्
	अदरीष्यत्	अदरीष्यताम्	अदरीष्यन्, इ०

१५३६. जृश् (जॄ) वयोहानौ। २९

व०	जृणाति	जृणीतः	जृणन्ति
स०	जृणीयात्	जृणीयाताम्	जृणीयुः
प०	जृणातु/जृणीतात्	जृणीताम्	जृणन्तु
ह्य०	अजृणात्	अजृणीताम्	अजृणन्
अ०	अजारीत्	अजारिष्टाम्	अजारिषुः
	अजरत्	अजरताम्	अजरन्, इत्यादि।
प०	जजार/जजरतुः	जेरतुः	ज्जरुः
आ०	जीर्यात्	जीर्यास्ताम्	जीर्यासुः
श्व०	जरिता	जरितारौ	जरितारः
	जरीता	जरीतारौ	जरीतारः, इत्यादि।
भ०	जरिष्यति	जरिष्यतः	जरिष्यन्ति
	जरीष्यति	जरीष्यतः	जरीष्यन्ति, इत्यादि
क्रि०	अजरिष्यत्	अजरिष्यताम्	अजरिष्यन्
	अजरीष्यत्	अजरीष्यताम्	अजरीष्यन्, इ०

१५३७. नृश् (नॄ) नये। ३०

व०	नृणाति	नृणीतः	नृणन्ति
स०	नृणीयात्	नृणीयाताम्	नृणीयुः
प०	नृणातु/नृणीतात्	नृणीताम्	नृणन्तु
ह्य०	अनृणात्	अनृणीताम्	अनृणन्
अ०	अनारीत्	अनारिष्टाम्	अनारिषुः
प०	ननार	ननरतुः	ननरुः
आ०	नीर्यात्	नीर्यास्ताम्	नीर्यासुः
श्व०	नरिता	नरितारौ	नरितारः
	नरीता	नरीतारौ	नरीतारः, इत्यादि।
भ०	नरिष्यति	नरिष्यतः	नरिष्यन्ति
	नरीष्यति	नरीष्यतः	नरीष्यन्ति, इत्यादि
क्रि०	अनरिष्यत्	अनरिष्यताम्	अनरिष्यन्
	अनरीष्यत्	अनरीष्यताम्	अनरीष्यन्, इ०

१५३९. गृश् (गॄ) शब्दे। ३१

व०	गृणाति	गृणीतः	गृणन्ति
स०	गृणीयात्	गृणीयाताम्	गृणीयुः
प०	गृणातु/गृणीतात्	गृणीताम्	गृणन्तु
ह्य०	अगृणात्	अगृणीताम्	अगृणन्
अ०	अगारीत्	अगारिष्टाम्	अगारिषुः
प०	जगार	जगरतुः	जगरुः
आ०	गीर्यात्	गीर्यास्ताम्	गीर्यासुः
श्व०	गरिता	गरितारौ	गरितारः
	गरीता	गरीतारौ	गरीतारः, इत्यादि।
भ०	गरिष्यति	गरिष्यतः	गरिष्यन्ति
	गरीष्यति	गरीष्यतः	गरीष्यन्ति, इत्यादि
क्रि०	अगरिष्यत्	अगरिष्यताम्	अगरिष्यन्
	अगरीष्यत्	अगरीष्यताम्	अगरीष्यन्, इ०

१५३९. ऋश् (ॠ) गतौ। ३२

व०	ऋणाति	ऋणीतः	ऋणन्ति
स०	ऋणीयात्	ऋणीयाताम्	ऋणीयुः
प०	ऋणातु/ऋणीतात्	ऋणीताम्	ऋणन्तु
ह्य०	आर्णात्	आर्णीताम्	आर्णन्
अ०	आरीत्	आरिष्टाम्	आरिषुः
प०	आर	आरतुः	आरुः

यद्यपि गुरुर्नाम्येति सूत्रवृत्तौ श्रीमद्भिः हेमचन्द्रसूरीश्वरैः, इडस्तु व्यपदेशिवद्भावद्भवति। अयाञ्चक्र इत्यभ्यधायि तदनुसारेणात्रापि अयाञ्चक्रे इत्यादिना भवितव्यम्, तथापि, तैरेव स्वोपज्ञपारायणे आर इत्यादीनि रूपाण्यभिहितानि। तत्रेदं भावयामि एवं विधस्थले व्यपदेशिवद्भावो नेष्टः पारायणकृताम्, अत एवायाञ्चक्रे इत्यत्र न्यासकृतोक्तम्, पारायणकृतां व्यपदेशिवद्भावो नेष्टस्तन्मते ईये इत्येव भवति। सूत्रवृत्तौ तु अयाञ्चक्रे इति प्रदर्शनं मतान्तरसंग्रहादिति निमित्तकमिति।

आ०	ईर्यात्	ईर्यास्ताम्	ईर्यासुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	अरिता	अरितारौ	अरितार:
	अरीता	अरीतारौ	अरीतार:
भ०	अरिष्यति	अरिष्यत:	अरिष्यन्ति
	अरीष्यति	अरीष्यत:	अरीष्यन्ति
क्रि०	आरिष्यत्	आरिष्यताम्	आरिष्यन्
	आरीष्यत्	आरीष्यताम्	आरीष्यन्

आशिषि क्ययङाशीय इत्यत्र ह्रस्वस्य ऋधातोर्ग्रहणान्न गुण:, अत एव धातुपारायणे क्ये, ईर्यते।

प्लादिर्ल्वादिश्च वृत् वर्त्तित:, सम्पूर्ण इत्यर्थ:, अथ परस्मैपदिषु एवादन्तोऽनिट् च।

१५४०. ज्ञांश् (ज्ञा) अवबोधने। ३३

व०	जानाति	जानीत:	जानन्ति
	जानासि	जानीथ:	जानीथ
	जानामि	जानीव:	जानीम:
स०	जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयु:
	जानीया:	जानीयातम्	जानीयात
	जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम
प०	जानातु/जानीतात्	जानीताम्	जानन्तु
	जानीहि/जानीतात्	जानीतम्	जानीत
	जानानि	जानाव	जानाम
ह्य०	अजानात्	अजानीताम्	अजाणन्
	अजाना:	अजानीतम्	अजानीत
	अजानाम्	अजानीव	अजानीम
अ०	अज्ञासीत्	अज्ञासिष्टाम्	अज्ञासिषु:
	अज्ञासी:	अज्ञासिष्टम्	अज्ञासिष्ट
	अज्ञासिषम्	अज्ञासिष्व	अज्ञासिष्म
प०	जज्ञौ	जज्ञतु:	जज्ञु:
	जज्ञिथ/जज्ञाथ	जज्ञथु:	जज्ञ
	जज्ञौ	जज्ञिव	जज्ञिम
आ०	ज्ञायात्	ज्ञायास्ताम्	ज्ञायासु:
	ज्ञाया:	ज्ञायास्तम्	ज्ञायास्त
	ज्ञायासम्	ज्ञायास्व	ज्ञायास्म

तथा

	ज्ञेयात्	ज्ञेयास्ताम्	ज्ञेयासु:, इत्यादि।
श्व०	ज्ञाता	ज्ञातारौ	ज्ञातार:
	ज्ञातासि	ज्ञातास्थ:	ज्ञातास्थ
	ज्ञातास्मि	ज्ञातास्व:	ज्ञातास्म:
भ०	ज्ञास्यति	ज्ञास्यत:	ज्ञास्यन्ति
	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथ:	ज्ञास्यथ
	ज्ञास्यामि	ज्ञास्याव:	ज्ञास्याम:
क्रि०	अज्ञास्यत्	अज्ञास्यताम्	अज्ञास्यन्
	अज्ञास्य:	अज्ञास्यतम्	अज्ञास्यत
	अज्ञास्यम्	अज्ञास्याव	अज्ञास्याम

अथेदन्तोऽनिट् च।

१५४१. क्षिंषश् (क्षि) हिंसायाम्। ३४

व०	क्षिणाति	क्षिणीत:	क्षिणन्ति
	क्षिणासि	क्षिणीथ:	क्षिणीथ
	क्षिणामि	क्षिणीव:	क्षिणीम:
स०	क्षिणीयात्	क्षिणीयाताम्	क्षिणीयु:
	क्षिणीया:	क्षिणीयातम्	क्षिणीयात
	क्षिणीयाम्	क्षिणीयाव	क्षिणीयाम
प०	क्षिणातु/क्षिणीतात्	क्षिणीताम्	क्षिणन्तु
	क्षिणीहि/क्षिणीतात्	क्षिणीतम्	क्षिणीत
	क्षिणानि	क्षिणाव	क्षिणाम
ह्य०	अक्षिणात्	अक्षिणीताम्	अक्षिणन्
	अक्षिणा:	अक्षिणीतम्	अक्षिणीत
	अक्षिणाम्	अक्षिणीव	अक्षिणीम
अ०	अक्षैषीत्	अक्षैष्टाम्	अक्षैषु:
	अक्षैषी:	अक्षैष्टम्	अक्षैष्ट
	अक्षैषम्	अक्षैष्व	अक्षैष्म
प०	चिक्षाय	चिक्षियतु:	चिक्षियु:
	चिक्षयिथ/ चिक्षेथ	चिक्षियथु:	चिक्षिय
	चिक्षाय/चिक्षय	चिक्षियिव	चिक्षियिम
आ०	क्षीयात्	क्षीयास्ताम्	क्षीयासु:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	क्षीयाः	क्षीयास्तम्	क्षीयास्त
	क्षीयासम्	क्षीयास्व	क्षीयास्म
श्व०	क्षेता	क्षेतारौ	क्षेतारः
	क्षेतासि	क्षेतास्थः	क्षेतास्थ
	क्षेतास्मि	क्षेतास्वः	क्षेतास्मः
भ०	क्षेष्यति	क्षेष्यतः	क्षेष्यन्ति
	क्षेष्यसि	क्षेष्यथः	क्षेष्यथ
	क्षेष्यामि	क्षेष्यावः	क्षेष्यामः
क्रि०	अक्षेष्यत्	अक्षेष्यताम्	अक्षेष्यन्
	अक्षेष्यः	अक्षेष्यतम्	अक्षेष्यत
	अक्षेष्यम्	अक्षेष्याव	अक्षेष्याम

१५४२. व्रींश् (व्री) वरणे। ३५

व०	व्रीणाति	व्रीणीतः	व्रीणन्ति
	व्रीणासि	व्रीणीथः	व्रीणीथ
	व्रीणामि	व्रीणीवः	व्रीणीमः
स०	व्रीणीयात्	व्रीणीयाताम्	व्रीणीयुः
	व्रीणीयाः	व्रीणीयातम्	व्रीणीयात
	व्रीणीयाम्	व्रीणीयाव	व्रीणीयाम
प०	व्रीणातु/व्रीणीतात्	व्रीणीताम्	व्रीणन्तु
	व्रीणीहि/व्रीणीतात्	व्रीणीतम्	व्रीणीत
	व्रीणानि	व्रीणाव	व्रीणाम
ह्य०	अव्रीणात्	अव्रीणीताम्	अव्रीणन्
	अव्रीणाः	अव्रीणीतम्	अव्रीणीत
	अव्रीणाम्	अव्रीणीव	अव्रीणीम
अ०	अव्रैषीत्	अव्रैष्टाम्	अव्रैषुः
	अव्रैषीः	अव्रैष्टम्	अव्रैष्ट
	अव्रैषम्	अव्रैष्व	अव्रैष्म
प०	विव्राय	विव्रियतुः	विव्रियुः
	विव्रयिथ/विव्रेथ	विव्रियथुः	विव्रिय
	विव्राय/विव्रय	विव्रियिव	विव्रियिम
आ०	व्रीयात्	व्रीयास्ताम्	व्रीयासुः
	व्रीयाः	व्रीयास्तम्	व्रीयास्त
	व्रीयासम्	व्रीयास्व	व्रीयास्म
श्व०	व्रेता	व्रेतारौ	व्रेतारः
	व्रेतासि	व्रेतास्थः	व्रेतास्थ
	व्रेतास्मि	व्रेतास्वः	व्रेतास्मः
भ०	व्रेष्यति	व्रेष्यतः	व्रेष्यन्ति
	व्रेष्यसि	व्रेष्यथः	व्रेष्यथ
	व्रेष्यामि	व्रेष्यावः	व्रेष्यामः
क्रि०	अव्रेष्यत्	अव्रेष्यताम्	अव्रेष्यन्
	अव्रेष्यः	अव्रेष्यतम्	अव्रेष्यत
	अव्रेष्यम्	अव्रेष्याव	अव्रेष्याम

१५४३. भ्रींश् (भ्री) भरणे। ३६

व०	भ्रीणाति	भ्रीणीतः	भ्रीणन्ति
	भ्रीणासि	भ्रीणीथः	भ्रीणीथ
	भ्रीणामि	भ्रीणीवः	भ्रीणीमः
स०	भ्रीणीयात्	भ्रीणीयाताम्	भ्रीणीयुः
	भ्रीणीयाः	भ्रीणीयातम्	भ्रीणीयात
	भ्रीणीयाम्	भ्रीणीयाव	भ्रीणीयाम
प०	भ्रीणातु/भ्रीणीतात्	भ्रीणीताम्	भ्रीणन्तु
	भ्रीणीहि/भ्रीणीतात्	भ्रीणीतम्	भ्रीणीत
	भ्रीणानि	भ्रीणाव	भ्रीणाम
ह्य०	अभ्रीणात्	अभ्रीणीताम्	अभ्रीणन्
	अभ्रीणाः	अभ्रीणीतम्	अभ्रीणीत
	अभ्रीणाम्	अभ्रीणीव	अभ्रीणीम
अ०	अभ्रैषीत्	अभ्रैष्टाम्	अभ्रैषुः
	अभ्रैषीः	अभ्रैष्टम्	अभ्रैष्ट
	अभ्रैषम्	अभ्रैष्व	अभ्रैष्म
प०	बिभ्राय	बिभ्रियतुः	बिभ्रियुः
	बिभ्रयिथ/बिभ्रेथ	बिभ्रियथुः	बिभ्रिय
	बिभ्राय/बिभ्रय	बिभ्रियिव	बिभ्रियिम
आ०	भ्रीयात्	भ्रीयास्ताम्	भ्रीयासुः
	भ्रीयाः	भ्रीयास्तम्	भ्रीयास्त
	भ्रीयासम्	भ्रीयास्व	भ्रीयास्म

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	भ्रेता	भ्रेतारौ	भ्रेतार:
	भ्रेतासि	भ्रेतास्थ:	भ्रेतास्थ
	भ्रेतास्मि	भ्रेतास्व:	भ्रेतास्म:
भ०	भ्रेष्यति	भ्रेष्यत:	भ्रेष्यन्ति
	भ्रेष्यसि	भ्रेष्यथ:	भ्रेष्यथ
	भ्रेष्यामि	भ्रेष्याव:	भ्रेष्याम:
क्रि०	अभ्रेष्यत्	अभ्रेष्यताम्	अभ्रेष्यन्
	अभ्रेष्य:	अभ्रेष्यतम्	अभ्रेष्यत
	अभ्रेष्यम्	अभ्रेष्याव	अभ्रेष्याम

।।अथ ठान्त: सेट् च।।

१५४४. हेठश् (हेठ्) भूतप्रादुर्भावे।

भूतप्रादुर्भावोऽतिक्रान्तोत्पत्ति:। ३७

व०	हेठ्णाति	हेठ्णीत:	हेठ्णन्ति
स०	हेठ्णीयात्	हेठ्णीयाताम्	हेठ्णीयु:
प०	हेठ्णातु/हेठ्णीतात्	हेठ्णीताम्	हेठ्णन्तु
ह्य०	अहेठ्णात्	अहेठ्णीताम्	अहेठ्णन्
अ०	अहेठीत्	अहेठिष्टाम्	अहेठिषु:
प०	जिहेठ	जिहेठतु:	जिहेठु:
आ०	हेठ्यात्	हेठ्यास्ताम्	हेठ्यासु:
श्व०	हेठिता	हेठितारौ	हेठितार:
भ०	हेठिष्यति	हेठिष्यत:	हेठिष्यन्ति
क्रि०	अहेठिष्यत्	अहेठिष्यताम्	अहेठिष्यन्

।।अथ डान्त: सेट् च।।

१५४५. मृड्श् (मृड्) सुखने। ३८

व०	मृड्णाति	मृड्णीत:	मृड्णन्ति
स०	मृड्णीयात्	मृड्णीयाताम्	मृड्णीयु:
प०	मृड्णातु/मृड्णीतात्	मृड्णीताम्	मृड्णन्तु
ह्य०	अमृड्णात्	अमृड्णीताम्	अमृड्णन्
अ०	अमर्डीत्	अमर्डिष्टाम्	अमर्डिषु:
प०	ममर्ड	ममृडतु:	ममृडु:
आ०	मृड्यात्	मृड्यास्ताम्	मृड्यासु:
श्व०	मर्डिता	मर्डितारौ	मर्डितार:
भ०	मर्डिष्यति	मर्डिष्यत:	मर्डिष्यन्ति
क्रि०	अमर्डिष्यत्	अमर्डिष्यताम्	अमर्डिष्यन्

अथ थान्ताश्चत्वार: सेटश्च।

१५४६. श्रन्थश् (श्रन्थ्) मोचनप्रतिहर्षणयो:। ३९

व०	श्रथ्नाति	श्रथ्नीत:	श्रथ्नन्ति
स०	श्रथ्नीयात्	श्रथ्नीयाताम्	श्रथ्नीयु:
प०	श्रथ्नातु/श्रथ्नीतात्	श्रथ्नीताम्	श्रथ्नन्तु
ह्य०	अश्रथ्नात्	अश्रथ्नीताम्	अश्रथ्नन्
अ०	अश्रन्थीत्	अश्रन्थिष्टाम्	अश्रन्थिषु:
प०	शश्रन्थ	शश्रन्थतु:/श्रेथतु	शश्रन्थु:/श्रेथु:
आ०	श्रथ्यात्	श्रथ्यास्ताम्	श्रथ्यासु:
श्व०	श्रन्थिता	श्रन्थितारौ	श्रन्थितार:
भ०	श्रन्थिष्यति	श्रन्थिष्यत:	श्रन्थिष्यन्ति
क्रि०	अश्रन्थिष्यत्	अश्रन्थिष्यताम्	अश्रन्थिष्यन्

१५४७. मन्थश् (मन्थ्) विलोडने। ४०

व०	मथ्नाति	मथ्नीत:	मथ्नन्ति
स०	मथ्नीयात्	मथ्नीयाताम्	मथ्नीयु:
प०	मथ्नातु/मथ्नीतात्	मथ्नीताम्	मथ्नन्तु
ह्य०	अमथ्नात्	अमथ्नीताम्	अमथ्नन्
अ०	अमन्थीत्	अमन्थिष्टाम्	अमन्थिषु:
प०	ममन्थ	ममन्थतु:	ममन्थु:
आ०	मथ्यात्	मथ्यास्ताम्	मथ्यासु:
श्व०	मन्थिता	मन्थितारौ	मन्थितार:
भ०	मन्थिष्यति	मन्थिष्यत:	मन्थिष्यन्ति
क्रि०	अमन्थिष्यत्	अमन्थिष्यताम्	अमन्थिष्यन्

१५४८. ग्रन्थश् (ग्रन्थ्) संदर्भे। संदर्भो बन्धनम्। ४१

व०	ग्रथ्नाति	ग्रथ्नीत:	ग्रथ्नन्ति
स०	ग्रथ्नीयात्	ग्रथ्नीयाताम्	ग्रथ्नीयु:
प०	ग्रथ्नातु/ग्रथ्नीतात्	ग्रथ्नीताम्	ग्रथ्नन्तु
ह्य०	अग्रथ्नात्	अग्रथ्नीताम्	अग्रथ्नन्
अ०	अग्रन्थीत्	अग्रन्थिष्टाम्	अग्रन्थिषु:
प०	जग्रन्थ/जग्रन्थतु:	ग्रेथतु	जग्रन्थु:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	ग्रथ्यात्	ग्रथ्यास्ताम्	ग्रथ्यासुः
श्व०	ग्रन्थिता	ग्रन्थितारौ	ग्रन्थितारः
भ०	ग्रन्थिष्यति	ग्रन्थिष्यतः	ग्रन्थिष्यन्ति
क्रि०	अग्रन्थिष्यत्	अग्रन्थिष्यताम्	अग्रन्थिष्यन्

१५४९. कुन्थश् (कुन्थ्) सङ्क्लेशे। ४२

व०	कुथ्नाति	कुथ्नीतः	कुथ्नन्ति
स०	कुथ्नीयात्	कुथ्नीयाताम्	कुथ्नीयुः
प०	कुथ्नातु/कुथ्नीतात्	कुथ्नीताम्	कुथ्नन्तु
ह्य०	अकुथ्नात्	अकुथ्नीताम्	अकुथ्णन्
अ०	अकुन्थीत्	अकुन्थिष्टाम्	अकुन्थिषुः
प०	चुकुन्थ	चुकुन्थतुः	चुकुन्थुः
आ०	कुथ्यात्	कुथ्यास्ताम्	कुथ्यासुः
श्व०	कुन्थिता	कुन्थितारौ	कुन्थितारः
भ०	कुन्थिष्यति	कुन्थिष्यतः	कुन्थिष्यन्ति
क्रि०	अकुन्थिष्यत्	अकुन्थिष्यताम्	अकुन्थिष्यन्

।।अथ दान्ताः सेट्श्च।।

१५५०. मृदश् (मृद्) क्षौदे। ४३

व०	मृद्नाति	मृद्नीतः	मृद्नन्ति
स०	मृद्नीयात्	मृद्नीयाताम्	मृद्नीयुः
प०	मृद्नातु/मृद्नीतात्	मृद्नीताम्	मृद्नन्तु
ह्य०	अमृद्नात्	अमृद्नीताम्	अमृद्णन्
अ०	अमर्दीत्	अमर्दिष्टाम्	अमर्दिषुः
प०	ममर्द	ममृदतुः	ममृदुः
आ०	मृद्यात्	मृद्यास्ताम्	मृद्यासुः
श्व०	मर्दिता	मर्दितारौ	मर्दितारः
भ०	मर्दिष्यति	मर्दिष्यतः	मर्दिष्यन्ति
क्रि०	अमर्दिष्यत्	अमर्दिष्यताम्	अमर्दिष्यन्

।।अथ धान्तौ।।

१५५१. गुधश् (गुध्) रोषे। ४४

व०	गुध्नाति	गुध्नीतः	गुध्नन्ति
स०	गुध्नीयात्	गुध्नीयाताम्	गुध्नीयुः
प०	गुध्नातु/गुध्नीतात्	गुध्नीताम्	गुध्नन्तु
ह्य०	अगुध्नात्	अगुध्नीताम्	अगुध्णन्
अ०	अगोधीत्	अगोधिष्टाम्	अगोधिषुः
प०	जुगोध	जुगुधतुः	जुगुधुः
आ०	गुध्यात्	गुध्यास्ताम्	गुध्यासुः
श्व०	गोधिता	गोधितारौ	गोधितारः
भ०	गोधिष्यति	गोधिष्यतः	गोधिष्यन्ति
क्रि०	अगोधिष्यत्	अगोधिष्यताम्	अगोधिष्यन्

१५५२. बन्धश् (बन्ध्) बन्धने। ४५

व०	बध्नाति	बध्नीतः	बध्नन्ति
स०	बध्नीयात्	बध्नीयाताम्	बध्नीयुः
प०	बध्नातु/बध्नीतात्	बध्नीताम्	बध्नन्तु
ह्य०	अबध्नात्	अबध्नीताम्	अबध्णन्
अ०	अभान्त्सीत्	अबाद्धाम्	अभान्त्सुः
प०	बबन्ध	बबन्धतुः	बबन्धुः
आ०	बध्यात्	बध्यास्ताम्	बध्यासुः
श्व०	बन्द्धा	बन्द्धारौ	बन्द्धारः
भ०	भन्त्स्यति	भन्त्स्यतः	भन्त्स्यन्ति
क्रि०	अभन्त्स्यत्	अभन्त्स्यताम्	अभन्त्स्यन्

।।अथ भान्तास्त्रयः सेट्श्च।।

१५५३. क्षुभश् (क्षुभ) सञ्चलने। ४६

व०	क्षुभ्नाति	क्षुभ्नीतः	क्षुभ्नन्ति
स०	क्षुभ्नीयात्	क्षुभ्नीयाताम्	क्षुभ्नीयुः
प०	क्षुभ्नातु/क्षुभ्नीतात्	क्षुभ्नीताम्	क्षुभ्नन्तु
ह्य०	अक्षुभ्नात्	अक्षुभ्नीताम्	अक्षुभ्णन्
अ०	अक्षोभीत्	अक्षोभिष्टाम्	अक्षोभिषुः
प०	चुक्षोभ	चुक्षुभतुः	चुक्षुभुः
आ०	क्षुभ्यात्	क्षुभ्यास्ताम्	क्षुभ्यासुः
श्व०	क्षोभिता	क्षोभितारौ	क्षोभितारः
भ०	क्षोभिष्यति	क्षोभिष्यतः	क्षोभिष्यन्ति
क्रि०	अक्षोभिष्यत्	अक्षोभिष्यताम्	अक्षोभिष्यन्

१५५४. णभश् (नभ्) हिंसायाम्। ४७

व०	नभ्नाति	नभ्नीतः	नभ्नन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स०	नभ्नीयात्	नभ्नीयाताम्	नभ्नीयुः
प०	नभ्नातु/नभ्नीतात्	नभ्नीताम्	नभ्नन्तु
ह्य०	अनभ्नात्	अनभ्नीताम्	अनभ्णन्
अ०	अनाभीत्	अनाभिष्टाम्	अनाभिषुः
	अनभीत्	अनभिष्टाम्	अनभिषुः, इत्यादि
प०	ननाभ	नेभतुः	नेभुः
आ०	नभ्यात्	नभ्यास्ताम्	नभ्यासुः
श्व०	नभिता	नभितारौ	नभितारः
भ०	नभिष्यति	नभिष्यतः	नभिष्यन्ति
क्रि०	अनभिष्यत्	अनभिष्यताम्	अनभिष्यन्

१५५५. तुभश् (तुभ) हिंसायाम्। ४८

व०	तुभ्नाति	तुभ्नीतः	तुभ्नन्ति
स०	तुभ्नीयात्	तुभ्नीयाताम्	तुभ्नीयुः
प०	तुभ्नातु/तुभ्नीतात्	तुभ्नीताम्	तुभ्नन्तु
ह्य०	अतुभ्नात्	अतुभ्नीताम्	अतुभ्नन्
अ०	अतोभीत्	अतोभिष्टाम्	अतोभिषुः
प०	तुतोभ	तुतुभतुः	तुतुभुः
आ०	तुभ्यात्	तुभ्यास्ताम्	तुभ्यासुः
श्व०	तोभिता	तोभितारौ	तोभितारः
भ०	तोभिष्यति	तोभिष्यतः	तोभिष्यन्ति
क्रि०	अतोभिष्यत्	अतोभिष्यताम्	अतोभिष्यन्

॥अथ वान्तः सेट् च॥

१५५६. खवश् (खव्) हेठश्वत्। ४९

यथा हेठश् भूतप्रादुर्भावे तथाऽयमपि वर्णक्रमानुरोधेन तु तत्रैव न पठितः

व०	खौनाति	खौनीतः	खौनन्ति
स०	खौनीयात्	खौनीयाताम्	खौनीयुः
प०	खौनातु/खौनीतात्	खौनीताम्	खौनन्तु
ह्य०	अखौनात्	अखौनीताम्	अखौणन्
अ०	अखावीत्	अखाविष्टाम्	अखाविषुः
	अखवीत्	अखविष्टाम्	अखविषुः, इत्यादि
प०	चखाव	चखवतुः	चखवुः
आ०	खव्यात्	खव्यास्ताम्	खव्यासुः
श्व०	खविता	खवितारौ	खवितारः
भ०	खविष्यति	खविष्यतः	खविष्यन्ति
क्रि०	अखविष्यत्	अखविष्यताम्	अखविष्यन्

॥अथ शान्तौ सेटौ च॥ ५०

१५५७. क्लिशौश् (क्लिश्) विबाधने।

व०	क्लिश्नाति	क्लिश्नीतः	क्लिश्नन्ति
स०	क्लिश्नीयात्	क्लिश्नीयाताम्	क्लिश्नीयुः
प०	क्लिश्नातु/तात्	क्लिश्नीताम्	क्लिश्नन्तु
ह्य०	अक्लिश्नात्	अक्लिश्नीताम्	अक्लिश्णन्
अ०	अक्लेशीत्	अक्लेशिष्टाम्	अक्लेशिषुः
	अक्लिक्षत्	अक्लिक्षताम्	अक्लिक्षन्, इ०
प०	चिक्लेश	चिक्लिशतुः	चिक्लिशुः
आ०	क्लिश्यात्	क्लिश्यास्ताम्	क्लिश्यासुः
श्व०	क्लेशिता	क्लेशितारौ	क्लेशितारः
	क्लेष्टा	क्लेष्टारौ	क्लेष्टारः, इत्यादि
भ०	क्लेशिष्यति	क्लेशिष्यतः	क्लेशिष्यन्ति
	क्लेक्ष्यति	क्लेक्ष्यतः	क्लेक्ष्यन्ति, इ०
क्रि०	अक्लेशिष्यत्	अक्लेशिष्यताम्	अक्लेशिष्यन्
	अक्लेक्ष्यत्	अक्लेक्ष्यताम्	अक्लेक्ष्यन्, इ०

१५५८. अशश् (अश्) भोजने। ५१

व०	अश्नाति	अश्नीतः	अश्नन्ति
	अश्नासि	अश्नीथः	अश्नीथ
	अश्नामि	अश्नीवः	अश्नीमः
स०	अश्नीयात्	अश्नीयाताम्	अश्नीयुः
	अश्नीयाः	अश्नीयातम्	अश्नीयात
	अश्नीयाम्	अश्नीयाव	अश्नीयाम
प०	अश्नातु/अश्नीतात्	अश्नीताम्	अश्नन्तु
	अश्नीहि/अश्नीतात्	अश्नीतम्	अश्नीत
	अश्नानि	अश्नाव	अश्नाम
ह्य०	आश्नात्	आश्नीताम्	आश्णन्
	आश्नाः	आश्नीतम्	आश्नीत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	आश्नाम्	आश्नीव	आश्नीम
अ०	आशीत्	आशिष्टाम्	आशिषु:
	आशी:	आशिष्टम्	आशिष्ट
	आशिषम्	आशिष्व	आशिष्म
प०	आश	आशतु:	आशु:
	आशिथ	आशथु:	आश
	आश	आशिव	आशिम
आ०	अश्यात्	अश्यास्ताम्	अश्यासु:
	अश्या:	अश्यास्तम्	अश्यास्त
	अश्यासम्	अश्यास्व	अश्यास्म
श्व०	अशिता	अशितारौ	अशितार:
	अशितासि	अशितास्थ:	अशितास्थ
	अशितास्मि	अशितास्व:	अशितास्म:
भ०	अशिष्यति	अशिष्यत:	अशिष्यन्ति
	अशिष्यसि	अशिष्यथ:	अशिष्यथ
	अशिष्यामि	अशिष्याव:	अशिष्याम:
क्रि०	आशिष्यत्	आशिष्यताम्	आशिष्यन्
	आशिष्य:	आशिष्यतम्	आशिष्यत
	आशिष्यम्	आशिष्याव	आशिष्याम

अथ षान्ता: सप्त सेटश्च।

१५५९. इषश् (इष्) आभीक्ष्ण्ये।

आभीक्ष्ण्यं पौन:पुन्यम्। ५२

व०	इष्णाति	इष्णीत:	इष्णन्ति
स०	इष्णीयात्	इष्णीयाताम्	इष्णीयु:
प०	इष्णातु/इष्णीतात्	इष्णीताम्	इष्णन्तु
ह्य०	ऐष्णात्	ऐष्णीताम्	ऐष्णन्
अ०	ऐषीत्	ऐषिष्टाम्	ऐषिषु:
प०	इयेष	ईषतु:	ईषु:
आ०	इष्यात्	इष्यास्ताम्	इष्यासु:
श्व०	ऐषिता	ऐषितारौ	ऐषितार:
भ०	ऐषिष्यति	ऐषिष्यत:	ऐषिष्यन्ति
क्रि०	ऐषिष्यत्	ऐषिष्यताम्	ऐषिष्यन्

१५६०. विषश् (विष्) विप्रयोगे। ५३

व०	विष्णाति	विष्णीत:	विष्णन्ति
स०	विष्णीयात्	विष्णीयाताम्	विष्णीयु:
प०	विष्णातु/विष्णीतात्	विष्णीताम्	विष्णन्तु
ह्य०	अविष्णात्	अविष्णीताम्	अविष्णन्
अ०	अवेषीत्	अवेषिष्टाम्	अवेषिषु:
प०	विवेष	विविषतु:	विविषु:
आ०	विष्यात्	विष्यास्ताम्	विष्यासु:
श्व०	वेषिता	वेषितारौ	वेषितार:
भ०	वेषिष्यति	वेषिष्यत:	वेषिष्यन्ति
क्रि०	अवेषिष्यत्	अवेषिष्यताम्	अवेषिष्यन्

१५६१. प्रुषश् (प्रुष्) स्नेहसेचनपूरणेषु। ५४

व०	प्रुष्णाति	प्रुष्णीत:	प्रुष्णन्ति
स०	प्रुष्णीयात्	प्रुष्णीयाताम्	प्रुष्णीयु:
प०	प्रुष्णातु/प्रुष्णीतात्	प्रुष्णीताम्	प्रुष्णन्तु
ह्य०	अप्रुष्णात्	अप्रुष्णीताम्	अप्रुष्णन्
अ०	अप्रोषीत्	अप्रोषिष्टाम्	अप्रोषिषु:
प०	प्रुप्रोष	प्रुप्रुषतु	प्रुप्रुषु:
आ०	प्रुष्यात्	प्रुष्यास्ताम्	प्रुष्यासु:
श्व०	प्रोषिता	प्रोषितारौ	प्रोषितार:
भ०	प्रोषिष्यति	प्रोषिष्यत:	प्रोषिष्यन्ति
क्रि०	अप्रोषिष्यत्	अप्रोषिष्यताम्	अप्रोषिष्यन्

१५६२. प्लुषश् (प्लुष्) स्नेहसेचनपूरणेषु। ५५

व०	प्लुष्णाति	प्लुष्णीत:	प्लुष्णन्ति
स०	प्लुष्णीयात्	प्लुष्णीयाताम्	प्लुष्णीयु:
प०	प्लुष्णातु/तात्	प्लुष्णीताम्	प्लुष्णन्तु
ह्य०	अप्लुष्णात्	अप्लुष्णीताम्	अप्लुष्णन्
अ०	अप्लोषीत्	अप्लोषिष्टाम्	अप्लोषिषु:
प०	पुप्लोष	पुप्लुषतु	पुप्लुषु:
आ०	प्लुष्यात्	प्लुष्यास्ताम्	प्लुष्यासु:
श्व०	प्लोषिता	प्लोषितारौ	प्लोषितार:
भ०	प्लोषिष्यति	प्लोषिष्यत:	प्लोषिष्यन्ति
क्रि०	अप्लोषिष्यत्	अप्लोषिष्यताम्	अप्लोषिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५६३. मुषश् (मुष्) स्तेये। ५६

व०	मुष्णाति	मुष्णीतः	मुष्णन्ति
	मुष्णासि	मुष्णीथः	मुष्णीथ
	मुष्णामि	मुष्णीवः	मुष्णीमः
स०	मुष्णीयात्	मुष्णीयाताम्	मुष्णीयुः
	मुष्णीयाः	मुष्णीयातम्	मुष्णीयात
	मुष्णीयाम्	मुष्णीयाव	मुष्णीयाम
प०	मुष्णातु/मुष्णीतात्	मुष्णीताम्	मुष्णन्तु
	मुषाण/मुष्णीतात्	मुष्णीतम्	मुष्णीत
	मुष्णानि	मुष्णाव	मुष्णाम
ह्य०	अमुष्णात्	अमुष्णीताम्	अमुष्णन्
	अमुष्णाः	अमुष्णीतम्	अमुष्णीत
	अमुष्णाम्	अमुष्णीव	अमुष्णीम
अ०	अमोषीत्	अमोषिष्टाम्	अमोषिषुः
	अमोषीः	अमोषिष्टम्	अमोषिष्ट
	अमोषिषम्	अमोषिष्व	अमोषिष्म
प०	मुमोष	मुमुषतु	मुमुषुः
	मुमोषिथ	मुमुषथुः	मुमुष
	मुमोष	मुमुषिव	मुमुषिम
आ०	मुष्यात्	मुष्यास्ताम्	मुष्यासुः
	मुष्याः	मुष्यास्तम्	मुष्यास्त
	मुष्यासम्	मुष्यास्व	मुष्यास्म
श्व०	मोषिता	मोषितारौ	मोषितारः
	मोषितासि	मोषितास्थः	मोषितास्थ
	मोषितास्मि	मोषितास्वः	मोषितास्मः
भ०	मोषिष्यति	मोषिष्यतः	मोषिष्यन्ति
	मोषिष्यसि	मोषिष्यथः	मोषिष्यथ
	मोषिष्यामि	मोषिष्यावः	मोषिष्यामः
क्रि०	अमोषिष्यत्	अमोषिष्यताम्	अमोषिष्यन्
	अमोषिष्यः	अमोषिष्यतम्	अमोजिष्यत
	अमोषिष्यम्	अमोषिष्याव	अमोषिष्याम

१५६४. पुषश् (पुष्) पुष्टौ। ५७

व०	पुष्णाति	पुष्णीतः	पुष्णन्ति
स०	पुष्णीयात्	पुष्णीयाताम्	पुष्णीयुः
प०	पुष्णातु/पुष्णीतात्	पुष्णीताम्	पुष्णन्तु
ह्य०	अपुष्णात्	अपुष्णीताम्	अपुष्णन्
अ०	अपोषीत्	अपोषिष्टाम्	अपोषिषुः
प०	पुपोष	पुपुषतु	पुपुषुः
आ०	पुष्यात्	पुष्यास्ताम्	पुष्यासुः
श्व०	पोषिता	पोषितारौ	पोषितारः
भ०	पोषिष्यति	पोषिष्यतः	पोषिष्यन्ति
क्रि०	अपोषिष्यत्	अपोषिष्यताम्	अपोषिष्यन्

१५६५. कुषश् (कुष्) निष्कर्षे।

निष्कर्षो बहिष्कर्षणतम्। ५८

व०	कुष्णाति	कुष्णीतः	कुष्णन्ति
स०	कुष्णीयात्	कुष्णीयाताम्	कुष्णीयुः
क०	कुष्णातु/कुष्णीतात्	कुष्णीताम्	कुष्णन्तु
ह्य०	अकुष्णात्	अकुष्णीताम्	अकुष्णन्
अ०	अकोषीत्	अकोषिष्टाम्	अकोषिषुः
क०	कुकोष	कुकुषतु	कुकुषुः
आ०	कुष्यात्	कुष्यास्ताम्	कुष्यासुः
श्व०	कोषिता	कोषितारौ	कोषितारः
भ०	कोषिष्यति	कोषिष्यतः	कोषिष्यन्ति
क्रि०	अकोषिष्यत्	अकोषिष्यताम्	अकोषिष्यन्

निष्पूर्वस्य तु स्त्यादौ वेट भवति। निरकोषीत् निरकुक्षत इत्यादि।

॥अथ सान्तः सेट् च॥

१५६६. ध्रसूश् (ध्रस्) उञ्छे। ५९

व०	ध्रस्नाति	ध्रस्नीतः	ध्रस्नन्ति
	ध्रस्नासि	ध्रस्नीथः	ध्रस्नीथ
	ध्रस्नामि	ध्रस्नीवः	ध्रस्नीमः
स०	ध्रस्नीयात्	ध्रस्नीयाताम्	ध्रस्नीयुः
	ध्रस्नीयाः	ध्रस्नीयातम्	ध्रस्नीयात

	ध्रस्नीयाम्	ध्रस्नीयाव	ध्रस्नीयाम
प०	ध्रस्नातु/ध्रस्नीतात्	ध्रस्नीताम्	ध्रस्नन्तु
	ध्रसान/ध्रस्नीतात्	ध्रस्नीतम्	ध्रस्नीत
	ध्रस्नानि	ध्रस्नाव	ध्रस्नाम
ह्य०	अध्रस्नात्	अध्रस्नीताम्	अध्रस्णन्
	अध्रस्नाः	अध्रस्नीतम्	अध्रस्नीत
	अध्रस्नाम्	अध्रस्नीव	अध्रस्नीम
अ०	अध्रसीत्	अध्रसिष्टाम्	अध्रसिषुः
	अध्रसीः	अध्रसिष्टम्	अध्रसिष्ट
	अध्रसिषम्	अध्रसिष्व	अध्रसिष्म
	अध्रासीत्	अध्रासिष्टाम्	अध्रासिषुः, इ०
प०	दध्रास	दध्रसतुः	दध्रसुः
	दध्रसिथ	दध्रसथुः	दध्रस
	दध्रास/दध्रस	दध्रसिव	दध्रसिम
आ०	ध्रस्यात्	ध्रस्यास्ताम्	ध्रस्यासुः
	ध्रस्याः	ध्रस्यास्तम्	ध्रस्यास्त
	ध्रस्यासम्	ध्रस्यास्व	ध्रस्यास्म
श्व०	ध्रसिता	ध्रसितारौ	ध्रसितारः
	ध्रसितासि	ध्रसितास्थः	ध्रसितास्थ
	ध्रसितास्मि	ध्रसितास्वः	ध्रसितास्मः
भ०	ध्रसिष्यति	ध्रसिष्यतः	ध्रसिष्यन्ति
	ध्रसिष्यसि	ध्रसिष्यथः	ध्रसिष्यथ
	ध्रसिष्यामि	ध्रसिष्यावः	ध्रसिष्यामः
क्रि०	अध्रसिष्यत्	अध्रसिष्यताम्	अध्रसिष्यन्
	अध्रसिष्यः	अध्रसिष्यतम्	अध्रसिष्यत
	अध्रसिष्यम्	अध्रसिष्याव	अध्रसिष्याम

।।इति परस्मैपदिनः।।

।।अथात्मनेपदी ऋदन्तः सेट् च।।

१५६७. वृङ्श् (वृ) सम्भक्तौ। ६० संभक्तिः संसेवा।

व०	वृणीते	वृणाते	वृणते
	वृणीषे	वृणाथे	वृणीध्वे
	वृणे	वृणीवहे	वृणीमहे
स०	वृणीत	वृणीयाताम्	वृणीरण्
	वृणीथाः	वृणीयाथाम्	वृणीध्वम्
	वृणीय	वृणीवहि	वृणीमहि
प०	वृणीताम्	वृणाताम्	वृणताम्
	वृणीष्व	वृणाथाम्	वृणीध्वम्
	वृणै	वृणावहै	वृणामहै
ह्य०	अवृणीत	अवृणाताम्	अवृणत
	अवृणीथाः	अवृणाथाम्	अवृणीध्वम्
	अवृणि	अवृणीवहि	अवृणीमहि
अ०	अवरिष्ट	अवरिषाताम्	अवरिषत्, इत्यादि
	अवरीष्ट	अवरीषाताम्	अवरीषत्, इत्यादि
	अवृत	अवृषाताम्	अवृषत्, इत्यादि।
प०	वव्रे	वव्राते	वव्रिरे
	ववृषे	वव्राथे	ववृढ्वे
	वव्रे	ववृवहे	ववृमहे
आ०	वरिषीष्ट	वरिषीयास्ताम्	वरिषीरण्
	वरिषीष्ठाः	वरिषीयास्थाम्	वरिषीध्वम्
	वरिषीय	वरिषीवहि	वरिषीमहि
श्व०	वरिता	वरितारौ	वरितारः
	वरितासे	वरितासाथे	वरिताध्वे
	वरिताहे	वरितास्वहे	वरितास्मिहे
भ०	वरिष्यते	वरिष्येते	वरिष्यन्ते
	वरिष्यसे	वरिष्येथे	वरिष्यध्वे
	वरिष्ये	वरिष्यावहे	वरिष्यामहे
क्रि०	अवरिष्यत	अवरिष्येताम्	अवरिष्यन्त
	अवरिष्यथाः	अवरिष्येथाम्	अवरिष्यध्वम्
	अवरिष्ये	अवरिष्यावहि	अवरिष्यामहि
	अवरीष्यत्	अवरीष्येताम्	अवरीष्यन्त, इ०

॥क्र्यादिगणः सम्पूर्णः॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥अथ णितश्चुरादयो वर्णक्रमेण प्रस्तूयन्ते॥

तत्रादौ- १५६८. चुरण् (चुर्) स्तेये।

णित्त्वं चुरादित्वख्यापनार्थम्। स्वार्थिकत्वेनान्तरङ्गत्वाद्विशेषविधानाच्च कर्त्रादिकाराकापेक्षत्वेन बहिरङ्गेभ्यः सामान्यविहितेभ्यश्च तिवादिभ्यः प्रागेव ''चुरादिभ्य इति स्वार्थे णिचि। णिजन्तस्यापि क्रियार्थत्वाद्धातुत्वे 'शेषादिति' परस्मैपदे चोरयति। णिचो गित्त्वाभावात्फलवत्कर्त्तर्यात्मनेपदं नास्ति। चन्द्रस्तु णिच्यपि उभयपदित्वमाम्नासीत् णिज्विकल्पश्च चोरयन्तं प्रायुङ्क्तेति णिजन्तात् प्रयोक्तृव्यापारे इति णिगि णेरनिटि'' इति णिचो लुक्यपि णिजात्याश्रयणात्समानलोपित्वाभावादुपान्त्यस्येति ह्रस्वे लघोदीर्घ इति पूर्वस्य दीर्घे च अचूचुरत्। इह मचुण् चितुणप्रभृतीनां सनकारनिर्देशमकृत्वा उदित्करणं चुरादिणिचोऽनित्यत्वज्ञापकं न च चिन्त्यते इत्यादौ नलोपाभावार्थम्। ततो णिज्लुकः स्थानित्वेनोपान्त्यत्वाभावान्न लुकोऽप्रसङ्गात्। तेन चोरति चिन्ततीत्यादि सिद्धमिदं च ज्ञापकं घुषेरविशब्दे इति विशब्दनप्रतिषेधः। अयं हि विशब्दने घुषेरिट् प्रतिषेणभावार्थः, स च णिचोऽनित्यत्वेऽनेकस्वरत्वादेव सिद्धः। तेन, 'महीपालवचः श्रुत्वा जुघुषुः पुष्पमाणवाः इत्यपि सिद्धम्।

व०	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः
स०	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम
प०	चोरयतु/चोरयतात्	चोरयताम्	चोरयन्तु
	चोरय/चोरयतात्	चोरयतम्	चोरयत
	चोरयानि	चोरयाव	चोरयाम
ह्य०	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम
अ०	अचूचुरत्	अचूचुरताम्	अचूचुरन्
	अचूचुरः	अचूचुरतम्	अचूचुरत
	अचूचुरम्	अचूचुराव	अचूचुराम
प०	चोरयाञ्चकार	चोरयाञ्चक्रतुः	चोरयाञ्चक्रुः
	चोरयाञ्चकर्थ	चोरयाञ्चक्रथुः	चोरयाञ्चक्र
	चोरयाञ्चकार/चकर	चोरयाञ्चकृव	चोरयाञ्चकृम
	चोरयाम्बभूव/चोरयामास।		
आ०	चोर्यात्	चोर्यास्ताम्	चोर्यासुः
	चोर्याः	चोर्यास्तम्	चोर्यास्त
	चोर्यासम्	चोर्यास्व	चोर्यास्म
श्व०	चोरयिता	चोरयितारौ	चोरयितारः
	चोरयितासि	चोरयितास्थः	चोरयितास्थ
	चोरयितास्मि	चोरयितास्वः	चोरयितास्मः
भ०	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः
क्रि०	अचोरयिष्यत्	अचोरयिष्यताम्	अचोरयिष्यन्
	अचोरयिष्यः	अचोरयिष्यतम्	अचोरयिष्यत
	अचोरयिष्यम्	अचोरयिष्याव	अचोरयिष्याम

अथ ऋदन्तौ।

१५६९. पृण् (पृ) पूरणे। २

व०	पारयति	पारयतः	पारयन्ति
	पारयसि	पारयथः	पारयथ
	पारयामि	पारयावः	पारयामः
स०	पारयेत्	पारयेताम्	पारयेयुः
	पारयेः	पारयेतम्	पारयेत
	पारयेयम्	पारयेव	पारयेम
प०	पारयतु/पारयतात्	पारयताम्	पारयन्तु
	पारय/पारयतात्	पारयतम्	पारयत
	पारयाणि	पारयाव	पारयाम
ह्य०	अपारयत्	अपारयताम्	अपारयन्
	अपारयः	अपारयतम्	अपारयत
	अपारयम्	अपारयाव	अपारयाम
अ०	अपीपरत्	अपीपरताम्	अपीपरन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अपीपरः	अपीपरतम्	अपीपरत
	अपीपरम्	अपीपराव	अपीपराम
प०	पारयाञ्चकार	पारयाञ्चक्रतुः	पारयाञ्चक्रुः
	पारयाञ्चकर्थ	पारयाञ्चक्रथुः	पारयाञ्चक्र
	पारयाञ्चकार/चकर	पारयाञ्चकृव	पारयाञ्चकृम
	पारयाम्बभूव/पारयामास।		
आ०	पार्यात्	पार्यास्ताम्	पार्यासुः
	पार्याः	पार्यास्तम्	पार्यास्त
	पार्यासम्	पार्यास्व	पार्यास्म
श्व०	पारयिता	पारयितारौ	पारयितारः
	पारयितासि	पारयितास्थः	पारयितास्थ
	पारयितास्मि	पारयितास्वः	पारयितास्मः
भ०	पारयिष्यति	पारयिष्यतः	पारयिष्यन्ति
	पारयिष्यसि	पारयिष्यथः	पारयिष्यथ
	पारयिष्यामि	पारयिष्यावः	पारयिष्यामः
क्रि०	अपारयिष्यत्	अपारयिष्यताम्	अपारयिष्यन्
	अपारयिष्यः	अपारयिष्यतम्	अपारयिष्यत
	अपारयिष्यम्	अपारयिष्याव	अपारयिष्याम

१५७०. घृण् (घृ) स्रवणे। ३

व०	घारयति	घारयतः	घारयन्ति
स०	घारयेत्	घारयेताम्	घारयेयुः
प०	घारयतु/घारयतात्	घारयताम्	घारयन्तु
ह्य०	अघारयत्	अघारयताम्	अघारयन्
अ०	अजीघरत्	अजीघरताम्	अजीघरन्
प०	घारयाञ्चकार	घारयाञ्चक्रतुः	घारयाञ्चक्रुः
आ०	घार्यात्	घार्यास्ताम्	घार्यासुः
श्व०	घारयिता	घारयितारौ	घारयितारः
भ०	घारयिष्यति	घारयिष्यतः	घारयिष्यन्ति
क्रि०	अघारयिष्यत्	अघारयिष्यताम्	अघारयिष्यन्

॥अथ कान्ता अष्टौ॥

१५७१. श्वल्कण् (श्वल्क्) भाषणे। ४

व०	श्वल्कयति	श्वल्कयतः	श्वल्कयन्ति
स०	श्वल्कयेत्	श्वल्कयेताम्	श्वल्कयेयुः
प०	श्वल्कयतु	श्वल्कयतात्	श्वल्कयताम्
ह्य०	अश्वल्कयत्	अश्वल्कयताम्	अश्वल्कयन्
अ०	अशश्वल्कत्	अशश्वल्कताम्	अशश्वल्कन्
प०	श्वल्कयाञ्चकार	श्वल्कयाञ्चक्रतुः	श्वल्कयाञ्चक्रुः
आ०	श्वल्क्यात्	श्वल्क्यास्ताम्	श्वल्क्यासुः
श्व०	श्वल्कयिता	श्वल्कयितारौ	श्वल्कयितारः
भ०	श्वल्कयिष्यति	श्वल्कयिष्यतः	श्वल्कयिष्यन्ति
क्रि०	अश्वल्कयिष्यत्	अश्वल्कयिष्यताम्	अश्वल्कयिष्यन्

१५७२. वल्कण् (वल्क्) भाषणे। ५

व०	वल्कयति	वल्कयतः	वल्कयन्ति
स०	वल्कयेत्	वल्कयेताम्	वल्कयेयुः
प०	वल्कयतु	वल्कयतात्	वल्कयताम्
ह्य०	अवल्कयत्	अवल्कयताम्	अवल्कयन्
अ०	अववल्कत्	अववल्कताम्	अववल्कन्
प०	वल्कयाञ्चकार	वल्कयाञ्चक्रतुः	वल्कयाञ्चक्रुः
आ०	वल्क्यात्	वल्क्यास्ताम्	वल्क्यासुः
श्व०	वल्कयिता	वल्कयितारौ	वल्कयितारः
भ०	वल्कयिष्यति	वल्कयिष्यतः	वल्कयिष्यन्ति
क्रि०	अवल्कयिष्यत्	अवल्कयिष्यताम्	अवल्कयिष्यन्

१५७३. नक्कण् (नक्क्) नाशने। ६

व०	नक्कयति	नक्कयतः	नक्कयन्ति
स०	नक्कयेत्	नक्कयेताम्	नक्कयेयुः
प०	नक्कयतु	नक्कयतात्	नक्कयताम्
ह्य०	अनक्कयत्	अनक्कयताम्	अनक्कयन्
अ०	अननक्कत्	अननक्कताम्	अननक्कन्
प०	नक्कयाञ्चकार	नक्कयाञ्चक्रतुः	नक्कयाञ्चक्रुः
आ०	नक्क्यात्	नक्क्यास्ताम्	नक्क्यासुः
श्व०	नक्कयिता	नक्कयितारौ	नक्कयितारः
भ०	नक्कयिष्यति	नक्कयिष्यतः	नक्कयिष्यन्ति
क्रि०	अनक्कयिष्यत्	अनक्कयिष्यताम्	अनक्कयिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५७४. धक्कण् (धक्क्) नाशने। ७

व०	धक्कयति	धक्कयत:	धक्कयन्ति
स०	धक्कयेत्	धक्कयेताम्	धक्कयेयु:
प०	धक्कयतु	धक्कयतात्	धक्कयताम्
ह्य०	अधक्कयत्	अधक्कयताम्	अधक्कयन्
अ०	अदधक्कत्	अदधक्कताम्	अदधक्कन्
प०	धक्कयाञ्चकार	धक्कयाञ्चक्रतु:	धक्कयाञ्चक्रु:
आ०	धक्कयात्	धक्कयास्ताम्	धक्कयासु:
श्व०	धक्कयिता	धक्कयितारौ	धक्कयितार:
भ०	धक्कयिष्यति	धक्कयिष्यत:	धक्कयिष्यन्ति
क्रि०	अधक्कयिष्यत्	अधक्कयिष्यताम्	अधक्कयिष्यन्

१५७५. चक्कण् (चक्क्) व्यथने। ८

व०	चक्कयति	चक्कयत:	चक्कयन्ति
स०	चक्कयेत्	चक्कयेताम्	चक्कयेयु:
प०	चक्कयतु	चक्कयतात्	चक्कयताम्
ह्य०	अचक्कयत्	अचक्कयताम्	अचक्कयन्
अ०	अचचक्कत्	अचचक्कताम्	अचचक्कन्
प०	चक्कयाञ्चकार	चक्कयाञ्चक्रतु:	चक्कयाञ्चक्रु:
आ०	चक्कयात्	चक्कयास्ताम्	चक्कयासु:
श्व०	चक्कयिता	चक्कयितारौ	चक्कयितार:
भ०	चक्कयिष्यति	चक्कयिष्यत:	चक्कयिष्यन्ति
क्रि०	अचक्कयिष्यत्	अचक्कयिष्यताम्	अचक्कयिष्यन्

१५७६. चुक्कण् (चुक्क्) व्यथने। ९

व०	चुक्कयति	चुक्कयत:	चुक्कयन्ति
स०	चुक्कयेत्	चुक्कयेताम्	चुक्कयेयु:
प०	चुक्कयतु	चुक्कयतात्	चुक्कयताम्
ह्य०	अचुक्कयत्	अचुक्कयताम्	अचुक्कयन्
अ०	अचुचुक्कत्	अचुचुक्कताम्	अचुचुक्कन्
प०	चुक्कयाञ्चकार	चुक्कयाञ्चक्रतु:	चुक्कयाञ्चक्रु:
आ०	चुक्कयात्	चुक्कयास्ताम्	चुक्कयासु:
श्व०	चुक्कयिता	चुक्कयितारौ	चुक्कयितार:
भ०	चुक्कयिष्यति	चुक्कयिष्यत:	चुक्कयिष्यन्ति
क्रि०	अचुक्कयिष्यत्	अचुक्कयिष्यताम्	अचुक्कयिष्यन्

१५७७. टकुण् (टङ्क्) बन्धने। १०

व०	टङ्कयति	टङ्कयत:	टङ्कयन्ति
स०	टङ्कयेत्	टङ्कयेताम्	टङ्कयेयु:
प०	टङ्कयतु/टङ्कयतात्	टङ्कयताम्	धक्कयन्तु
ह्य०	अटङ्कयत्	अटङ्कयताम्	अटङ्कयन्
अ०	अटटङ्कत्	अटटङ्कताम्	अटटङ्कन्
प०	टङ्कयाञ्चकार	टङ्कयाञ्चक्रतु:	टङ्कयाञ्चक्रु:
आ०	टङ्क्यात्	टङ्क्यास्ताम्	टङ्क्यासु:
श्व०	टङ्कयिता	टङ्कयितारौ	टङ्कयितार:
भ०	टङ्कयिष्यति	टङ्कयिष्यत:	टङ्कयिष्यन्ति
क्रि०	अटङ्कयिष्यत्	अटङ्कयिष्यताम्	अटङ्कयिष्यन्

१५७८. अर्कण् (अर्क्) स्तवने। ११

व०	अर्कयति	अर्कयत:	अर्कयन्ति
स०	अर्कयेत्	अर्कयेताम्	अर्कयेयु:
प०	अर्कयतु	अर्कयतात्	अर्कयताम्
ह्य०	आर्कयत्	आर्कयताम्	आर्कयन्
अ०	आर्चिकत्	आर्चिकताम्	आर्चिकन्
प०	अर्कयाञ्चकार	अर्कयाञ्चक्रतु:	अर्कयाञ्चक्रु:
आ०	अर्क्यात्	अर्क्यास्ताम्	अर्क्यासु:
श्व०	अर्कयिता	अर्कयितारौ	अर्कयितार:
भ०	अर्कयिष्यति	अर्कयिष्यत:	अर्कयिष्यन्ति
क्रि०	आर्कयिष्यत्	आर्कयिष्यताम्	आर्कयिष्यन्

१५७९. पिच्चण् (पिच्च्) कुटने। १२

व०	पिच्चयति	पिच्चयत:	पिच्चयन्ति
स०	पिच्चयेत्	पिच्चयेताम्	पिच्चयेयु:
प०	पिच्चयतु	पिच्चयतात्	पिच्चयताम्
ह्य०	अपिच्चयत्	अपिच्चयताम्	अपिच्चयन्
अ०	अपिपिच्चत्	अपिपिच्चताम्	अपिपिच्चन्
प०	पिच्चयाञ्चकार	पिच्चयाञ्चक्रतु:	पिच्चयाञ्चक्रु:
आ०	पिच्चयात्	पिच्चयास्ताम्	पिच्चयासु:
श्व०	पिच्चयिता	पिच्चयितारौ	पिच्चयितार:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	पिच्चयिष्यति	पिच्चयिष्यतः	पिच्चयिष्यन्ति
क्रि०	अपिच्चयिष्यत्	अपिच्चयिष्यताम्	अपिच्चयिष्यन्

१५८०. पचुण् (पञ्च्) विस्तारे। १३

व०	प्रपञ्चयति	प्रपञ्चयतः	प्रपञ्चयन्ति
स०	प्रपञ्चयेत्	प्रपञ्चयेताम्	प्रपञ्चयेयुः
प०	प्रपञ्चयतु/प्रपञ्चयतात्	प्रपञ्चयताम्	प्रपञ्चयन्तु
ह्य०	प्रापञ्चयत्	प्रापञ्चयताम्	प्रापञ्चयन्
अ०	प्रापपञ्चत्	प्रापपञ्चताम्	प्रापपञ्चन्
प०	प्रपञ्चयाञ्चकार	प्रपञ्चयाञ्चक्रतुः	प्रपञ्चयाञ्चक्रुः
आ०	प्रपञ्च्यात्	प्रपञ्च्यास्ताम्	प्रपञ्च्यासुः
श्व०	प्रपञ्चयिता	प्रपञ्चयितारौ	प्रपञ्चयितारः
भ०	प्रपञ्चयिष्यति	प्रपञ्चयिष्यतः	प्रपञ्चयिष्यन्ति
क्रि०	अप्रपञ्चयिष्यत्	अप्रपञ्चयिष्यताम्	अप्रपञ्चयिष्यन्

१५८१. म्लेच्छण् (म्लेच्छ्) म्लेच्छने।

म्लेच्छनमव्यक्ता वाक्। १४

व०	म्लेच्छयति	म्लेच्छयतः	म्लेच्छयन्ति
स०	म्लेच्छयेत्	म्लेच्छयेताम्	म्लेच्छयेयुः
प०	म्लेच्छयतु/म्लेच्छयतात्	म्लेच्छयताम्	म्लेच्छयन्तु
ह्य०	अम्लेच्छयत्	अम्लेच्छयताम्	अम्लेच्छयन्
अ०	अमिम्लेच्छत्	अमिम्लेच्छताम्	अमिम्लेच्छन्
प०	म्लेच्छयाञ्चकार	म्लेच्छयाञ्चक्रतुः	म्लेच्छयाञ्चक्रुः
आ०	म्लेच्छ्यात्	म्लेच्छ्यास्ताम्	म्लेच्छ्यासुः
श्व०	म्लेच्छयिता	म्लेच्छयितारौ	म्लेच्छयितारः
भ०	म्लेच्छयिष्यति	म्लेच्छयिष्यतः	म्लेच्छयिष्यन्ति
क्रि०	अम्लेच्छयिष्यत्	अम्लेच्छयिष्यताम्	अम्लेच्छयिष्यन्

अथ जान्ता एकादश।

१५८२. ऊर्जण् (ऊर्ज्) बलप्राणनयोः।

प्राणनं जीवनम्। १५

व०	ऊर्जयति	ऊर्जयतः	ऊर्जयन्ति
	ऊर्जयसि	ऊर्जयथः	ऊर्जयथ
	ऊर्जयामि	ऊर्जयावः	ऊर्जयामः
स०	ऊर्जयेत्	ऊर्जयेताम्	ऊर्जयेयुः
	ऊर्जयेः	ऊर्जयेतम्	ऊर्जयेत
	ऊर्जयेयम्	ऊर्जयेव	ऊर्जयेम
प०	ऊर्जयतु/ऊर्जयतात्	ऊर्जयताम्	ऊर्जयन्तु
	ऊर्जय/ऊर्जयतात्	ऊर्जयतम्	ऊर्जयत
	ऊर्जयाणि	ऊर्जयाव	ऊर्जयाम
ह्य०	और्जयत्	और्जयताम्	और्जयन्
	और्जयः	और्जयतम्	और्जयत
	और्जयम्	और्जयाव	और्जयाम
अ०	और्जिजत्	और्जिजताम्	और्जिजन्
	और्जिजः	और्जिजतम्	और्जिजत
	और्जिजम्	और्जिजाव	और्जिजाम
प०	ऊर्जयाञ्चकार	ऊर्जयाञ्चक्रतुः	ऊर्जयाञ्चक्रुः
	ऊर्जयाञ्चकर्थ	ऊर्जयाञ्चक्रथुः	ऊर्जयाञ्चक्र
	ऊर्जयाञ्चकार/कर	ऊर्जयाञ्चकृव	ऊर्जयाञ्चकृम
	ऊर्जयाम्बभूव/ऊर्जयामास।		
आ०	ऊर्ज्यात्	ऊर्ज्यास्ताम्	ऊर्ज्यासुः
	ऊर्ज्याः	ऊर्ज्यास्तम्	ऊर्ज्यास्त
	ऊर्ज्यासम्	ऊर्ज्यास्व	ऊर्ज्यास्म
श्व०	ऊर्जयिता	ऊर्जयितारौ	ऊर्जयितारः
	ऊर्जयितासि	ऊर्जयितास्थः	ऊर्जयितास्थ
	ऊर्जयितास्मि	ऊर्जयितास्वः	ऊर्जयितास्मः
भ०	ऊर्जयिष्यति	ऊर्जयिष्यतः	ऊर्जयिष्यन्ति
	ऊर्जयिष्यसि	ऊर्जयिष्यथः	ऊर्जयिष्यथ
	ऊर्जयिष्यामि	ऊर्जयिष्यावः	ऊर्जयिष्यामः
क्रि०	और्जयिष्यत्	और्जयिष्यताम्	और्जयिष्यन्
	और्जयिष्यः	और्जयिष्यतम्	और्जयिष्यत
	और्जयिष्यम्	और्जयिष्याव	और्जयिष्याम

१५८३. तुजुण् (तुञ्ज्) हिंसाबलदाननिकेतनेषु।

निकेतनं गृहम्। १६

व०	तुञ्जयति	तुञ्जयतः	तुञ्जयन्ति
	तुञ्जयसि	तुञ्जयथः	तुञ्जयथ
	तुञ्जयामि	तुञ्जयावः	तुञ्जयामः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स०	तुञ्जयेत्	तुञ्जयेताम्	तुञ्जयेयुः
	तुञ्जयेः	तुञ्जयेतम्	तुञ्जयेत
	तुञ्जयेयम्	तुञ्जयेव	तुञ्जयेम
प०	तुञ्जयतु/तुञ्जयतात्	तुञ्जयताम्	तुञ्जयन्तु
	तुञ्जय/तुञ्जयतात्	तुञ्जयतम्	तुञ्जयत
	तुञ्जयानि	तुञ्जयाव	तुञ्जयाम
ह्य०	अतुञ्जयत्	अतुञ्जयताम्	अतुञ्जयन्
	अतुञ्जयः	अतुञ्जयतम्	अतुञ्जयत
	अतुञ्जयम्	अतुञ्जयाव	अतुञ्जयाम
अ०	अतुतुञ्जत्	अतुतुञ्जताम्	अतुतुञ्जन्
	अतुतुञ्जः	अतुतुञ्जतम्	अतुतुञ्जत
	अतुतुञ्जम्	अतुतुञ्जाव	अतुतुञ्जाम
प०	तुञ्जयाञ्चकार	तुञ्जयाञ्चक्रतुः	तुञ्जयाञ्चक्रुः
	तुञ्जयाञ्चकर्थ	तुञ्जयाञ्चक्रथुः	तुञ्जयाञ्चक्र
	तुञ्जयाञ्चकार/कर	तुञ्जयाञ्चकृव	तुञ्जयाञ्चकृम
	तुञ्जयाम्बभूव/तुञ्जयामास।		
आ०	तुञ्ज्यात्	तुञ्ज्यास्ताम्	तुञ्ज्यासुः
	तुञ्ज्याः	तुञ्ज्यास्तम्	तुञ्ज्यास्त
	तुञ्ज्यासम्	तुञ्ज्यास्व	तुञ्ज्यास्म
श्व०	तुञ्जयिता	तुञ्जयितारौ	तुञ्जयितारः
	तुञ्जयितासि	तुञ्जयितास्थः	तुञ्जयितास्थ
	तुञ्जयितास्मि	तुञ्जयितास्वः	तुञ्जयितास्मः
भ०	तुञ्जयिष्यति	तुञ्जयिष्यतः	तुञ्जयिष्यन्ति
	तुञ्जयिष्यसि	तुञ्जयिष्यथः	तुञ्जयिष्यथ
	तुञ्जयिष्यामि	तुञ्जयिष्यावः	तुञ्जयिष्यामः
क्रि०	अतुञ्जयिष्यत्	अतुञ्जयिष्यताम्	अतुञ्जयिष्यन्
	अतुञ्जयिष्यः	अतुञ्जयिष्यतम्	अतुञ्जयिष्यत
	अतुञ्जयिष्यम्	अतुञ्जयिष्याव	अतुञ्जयिष्याम

१५८४. पिजुण् (पिञ्ज्) हिंसाबलदाननिकेतनेषु। निकेतनं गृहम्। १७

व०	पिञ्जयति	पिञ्जयतः	पिञ्जयन्ति
स०	पिञ्जयेत्	पिञ्जयेताम्	पिञ्जयेयुः
प०	पिञ्जयतु/तात्	पिञ्जयताम्	पिञ्जयन्तु
ह्य०	अपिञ्जयत्	अपिञ्जयताम्	अपिञ्जयन्
अ०	अपिपिञ्जत्	अपिपिञ्जताम्	अपिपिञ्जन्
प०	पिञ्जयाञ्चकार	पिञ्जयाञ्चक्रतुः	पिञ्जयाञ्चक्रुः
आ०	पिञ्ज्यात्	पिञ्ज्यास्ताम्	पिञ्ज्यासुः
श्व०	पिञ्जयिता	पिञ्जयितारौ	पिञ्जयितारः
भ०	पिञ्जयिष्यति	पिञ्जयिष्यतः	पिञ्जयिष्यन्ति
क्रि०	अपिञ्जयिष्यत्	अपिञ्जयिष्यताम्	अपिञ्जयिष्यन्

१५८५. क्षजुण् (क्षञ्ज्) कृच्छ्रजीवने। १८

व०	क्षञ्जयति	क्षञ्जयतः	क्षञ्जयन्ति
स०	क्षञ्जयेत्	क्षञ्जयेताम्	क्षञ्जयेयुः
प०	क्षञ्जयतु/तात्	क्षञ्जयताम्	क्षञ्जयन्तु
ह्य०	अक्षञ्जयत्	अक्षञ्जयताम्	अक्षञ्जयन्
अ०	अचक्षञ्जत्	अचक्षञ्जताम्	अचक्षञ्जन्
प०	क्षञ्जयाञ्चकार	क्षञ्जयाञ्चक्रतुः	क्षञ्जयाञ्चक्रुः
आ०	क्षञ्ज्यात्	क्षञ्ज्यास्ताम्	क्षञ्ज्यासुः
श्व०	क्षञ्जयिता	क्षञ्जयितारौ	क्षञ्जयितारः
भ०	क्षञ्जयिष्यति	क्षञ्जयिष्यतः	क्षञ्जयिष्यन्ति
क्रि०	अक्षञ्जयिष्यत्	अक्षञ्जयिष्यताम्	अक्षञ्जयिष्यन्

१५८६. पूजण् (पूज्) पूजायाम्। १९

व०	पूजयति	पूजयतः	पूजयन्ति
स०	पूजयेत्	पूजयेताम्	पूजयेयुः
प०	पूजयतु/पूजयतात्	पूजयताम्	पूजयन्तु
ह्य०	अपूजयत्	अपूजयताम्	अपूजयन्
अ०	अपुपूजत्	अपुपूजताम्	अपुपूजन्
प०	पूजयाञ्चकार	पूजयाञ्चक्रतुः	पूजयाञ्चक्रुः
आ०	पूज्यात्	पूज्यास्ताम्	पूज्यासुः
श्व०	पूजयिता	पूजयितारौ	पूजयितारः
भ०	पूजयिष्यति	पूजयिष्यतः	पूजयिष्यन्ति
क्रि०	अपूजयिष्यत्	अपूजयिष्यताम्	अपूजयिष्यन्

१५८७. गजण् (गज्) शब्दे। २०

व०	गाजयति	गाजयतः	गाजयन्ति
स०	गाजयेत्	गाजयेताम्	गाजयेयुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	गाजयतु/गाजयतात्	गाजयताम्	गाजयन्तु
ह्य०	अगाजयत्	अगाजयताम्	अगाजयन्
अ०	अजीगजत्	अजीगजताम्	अजीगजन्
प०	गाजयाञ्चकार	गाजयाञ्चक्रतुः	गाजयाञ्चक्रुः
आ०	गाज्यात्	गाज्यास्ताम्	गाज्यासुः
श्व०	गाजयिता	गाजयितारौ	गाजयितारः
भ०	गाजयिष्यति	गाजयिष्यतः	गाजयिष्यन्ति
क्रि०	अगाजयिष्यत्	अगाजयिष्यताम्	अगाजयिष्यन्

१५८८. मार्जण् (मार्ज्) शब्दे। २१

व०	मार्जयति	मार्जयतः	मार्जयन्ति
स०	मार्जयेत्	मार्जयेताम्	मार्जयेयुः
प०	मार्जयतु/तात्	मार्जयताम्	मार्जयन्तु
ह्य०	अमार्जयत्	अमार्जयताम्	अमार्जयन्
अ०	अममार्जत्	अममार्जताम्	अममार्जन्
प०	मार्जयाञ्चकार	मार्जयाञ्चक्रतुः	मार्जयाञ्चक्रुः
आ०	मार्ज्यात्	मार्ज्यास्ताम्	मार्ज्यासुः
श्व०	मार्जयिता	मार्जयितारौ	मार्जयितारः
भ०	मार्जयिष्यति	मार्जयिष्यतः	मार्जयिष्यन्ति
क्रि०	अमार्जयिष्यत्	अमार्जयिष्यताम्	अमार्जयिष्यन्

१५८९. तिजण् (तिज्) निशाने। २२

व०	तेजयति	तेजयतः	तेजयन्ति
स०	तेजयेत्	तेजयेताम्	तेजयेयुः
प०	तेजयतु/तेजयतात्	तेजयताम्	तेजयन्तु
ह्य०	अतेजयत्	अतेजयताम्	अतेजयन्
अ०	अतीतिजत्	अतीतिजताम्	अतीतिजन्
प०	तेजयाञ्चकार	तेजयाञ्चक्रतुः	तेजयाञ्चक्रुः
आ०	तेज्यात्	तेज्यास्ताम्	तेज्यासुः
श्व०	तेजयिता	तेजयितारौ	तेजयितारः
भ०	तेजयिष्यति	तेजयिष्यतः	तेजयिष्यन्ति
क्रि०	अतेजयिष्यत्	अतेजयिष्यताम्	अतेजयिष्यन्

१५९०. वजण् (वज्) मार्वणसंस्कारगत्योः। मार्वणो बाणस्तस्य संस्कारे गतौ च। २३

व०	वाजयति	वाजयतः	वाजयन्ति
स०	वाजयेत्	वाजयेताम्	वाजयेयुः
प०	वाजयतु/वाजयतात्	वाजयताम्	वाजयन्तु
ह्य०	अवाजयत्	अवाजयताम्	अवाजयन्
अ०	अवीवजत्	अवीवजताम्	अवीवजन्
प०	वाजयाञ्चकार	वाजयाञ्चक्रतुः	वाजयाञ्चक्रुः
आ०	वाज्यात्	वाज्यास्ताम्	वाज्यासुः
श्व०	वाजयिता	वाजयितारौ	वाजयितारः
भ०	वाजयिष्यति	वाजयिष्यतः	वाजयिष्यन्ति
क्रि०	अवाजयिष्यत्	अवाजयिष्यताम्	अवाजयिष्यन्

१५९१. व्रजण् (व्रज्) मार्गणसंस्कारगत्योः। मार्गणो बाणस्तस्य संस्कारे गतौ च। २३

व०	व्राजयति	व्राजयतः	व्राजयन्ति
स०	व्राजयेत्	व्राजयेताम्	व्राजयेयुः
प०	व्राजयतु/व्राजयतात्	व्राजयताम्	व्राजयन्तु
ह्य०	अव्राजयत्	अव्राजयताम्	अव्राजयन्
अ०	अविव्रजत्	अविव्रजताम्	अविव्रजन्
प०	व्राजयाञ्चकार	व्राजयाञ्चक्रतुः	व्राजयाञ्चक्रुः
	व्राजयाम्बभूव/व्राजयामास।		
आ०	व्राज्यात्	व्राज्यास्ताम्	व्राज्यासुः
श्व०	व्राजयिता	व्राजयितारौ	व्राजयितारः
भ०	व्राजयिष्यति	व्राजयिष्यतः	व्राजयिष्यन्ति
क्रि०	अव्राजयिष्यत्	अव्राजयिष्यताम्	अव्राजयिष्यन्

१५९२. रुजण् (रुज्) हिंसायाम्। २५

व०	रोजयति	रोजयतः	रोजयन्ति
स०	रोजयेत्	रोजयेताम्	रोजयेयुः
प०	रोजयतु/रोजयतात्	रोजयताम्	रोजयन्तु
ह्य०	अरोजयत्	अरोजयताम्	अरोजयन्
अ०	अरुरुजत्	अरुरुजताम्	अरुरुजन्
प०	रोजयाञ्चकार	रोजयाञ्चक्रतुः	रोजयाञ्चक्रुः
	रोजयाम्बभूव/रोजयामास		
आ०	रोज्यात्	रोज्यास्ताम्	रोज्यासुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	रोजयिता	रोजयितारौ	रोजयितारः
भ०	रोजयिष्यति	रोजयिष्यतः	रोजयिष्यन्ति
क्रि०	अरोजयिष्यत्	अरोजयिष्यताम्	अरोजयिष्यन्

अथ टान्तास्त्रयोविंशतिः।

१५९३. नटण् (नट्) अवस्यन्दने। २६

व०	नाटयति	नाटयतः	नाटयन्ति
स०	नाटयेत्	नाटयेताम्	नाटयेयुः
प०	नाटयतु/नाटयतात्	नाटयताम्	नाटयन्तु
ह्य०	अनाटयत्	अनाटयताम्	अनाटयन्
अ०	अनीनटत्	अनीनटताम्	अनीनटन्
प०	नाटयाञ्चकार	नाटयाञ्चक्रतुः	नाटयाञ्चक्रुः
	नाटयाम्बभूव/नाटयामास।		
आ०	नाट्यात्	नाट्यास्ताम्	नाट्यासुः
श्व०	नाटयिता	नाटयितारौ	नाटयितारः
भ०	नाटयिष्यति	नाटयिष्यतः	नाटयिष्यन्ति
क्रि०	अनाटयिष्यत्	अनाटयिष्यताम्	अनाटयिष्यन्

१५९४. तुटण् (तुट्) छेदने। २७

व०	तोटयति	तोटयतः	तोटयन्ति
स०	तोटयेत्	तोटयेताम्	तोटयेयुः
प०	तोटयतु/तोटयतात्	तोटयताम्	तोटयन्तु
ह्य०	अतोटयत्	अतोटयताम्	अतोटयन्
अ०	अतुतुटत्	अतुतुटताम्	अतुतुटन्
प०	तोटयाञ्चकार	तोटयाञ्चक्रतुः	तोटयाञ्चक्रुः
	तोटयाम्बभूव/तोटयामास।		
आ०	तोट्यात्	तोट्यास्ताम्	तोट्यासुः
श्व०	तोटयिता	तोटयितारौ	तोटयितारः
भ०	तोटयिष्यति	तोटयिष्यतः	तोटयिष्यन्ति
क्रि०	अतोटयिष्यत्	अतोटयिष्यताम्	अतोटयिष्यन्

१५९५. चुटण् (चुट्) छेदने। २८

व०	चोटयति	चोटयतः	चोटयन्ति
स०	चोटयेत्	चोटयेताम्	चोटयेयुः
प०	चोटयतु/चोटयतात्	चोटयताम्	चोटयन्तु
ह्य०	अचोटयत्	अचोटयताम्	अचोटयन्
अ०	अचुचुटत्	अचुचुटताम्	अचुचुटन्
प०	चोटयाञ्चकार	चोटयाञ्चक्रतुः	चोटयाञ्चक्रुः
	चोटयाम्बभूव/चोटयामास।		
आ०	चोट्यात्	चोट्यास्ताम्	चोट्यासुः
श्व०	चोटयिता	चोटयितारौ	चोटयितारः
भ०	चोटयिष्यति	चोटयिष्यतः	चोटयिष्यन्ति
क्रि०	अचोटयिष्यत्	अचोटयिष्यताम्	अचोटयिष्यन्

१५९६. चुटुण् (चुण्ट्) छेदने। २९

व०	चुण्टयति	चुण्टयतः	चुण्टयन्ति
स०	चुण्टयेत्	चुण्टयेताम्	चुण्टयेयुः
प०	चुण्टयतु/तात्	चुण्टयताम्	चुण्टयन्तु
ह्य०	अचुण्टयत्	अचुण्टयताम्	अचुण्टयन्
अ०	अचुचुण्टत्	अचुचुण्टताम्	अचुचुण्टन्
प०	चुण्टयाञ्चकार	चुण्टयाञ्चक्रतुः	चुण्टयाञ्चक्रुः
	चुण्टयाम्बभूव/चुण्टयामास।		
आ०	चुण्ट्यात्	चुण्ट्यास्ताम्	चुण्ट्यासुः
श्व०	चुण्टयिता	चुण्टयितारौ	चुण्टयितारः
भ०	चुण्टयिष्यति	चुण्टयिष्यतः	चुण्टयिष्यन्ति
क्रि०	अचुण्टयिष्यत्	अचुण्टयिष्यताम्	अचुण्टयिष्यन्

१५९७. छुटण् (छुट्) छेदने। ३०

व०	छोटयति	छोटयतः	छोटयन्ति
स०	छोटयेत्	छोटयेताम्	छोटयेयुः
प०	छोटयतु/छोटयतात्	छोटयताम्	छोटयन्तु
ह्य०	अच्छोटयत्	अच्छोटयताम्	अच्छोटयन्
अ०	अचुच्छुटत्	अचुच्छुटताम्	अचुच्छुटन्
प०	छोटयाञ्चकार	छोटयाञ्चक्रतुः	छोटयाञ्चक्रुः
	छोटयाम्बभूव/छोटयामास।		
आ०	छोट्यात्	छोट्यास्ताम्	छोट्यासुः
श्व०	छोटयिता	छोटयितारौ	छोटयितारः
भ०	छोटयिष्यति	छोटयिष्यतः	छोटयिष्यन्ति
क्रि०	अच्छोटयिष्यत्	अच्छोटयिष्यताम्	अच्छोटयिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५९७-२. छुटण् (छुट्) इतिपाठे।

व०	छुण्टयति	छुण्टयतः	छुण्टयन्ति
स०	छुण्टयेत्	छुण्टयेताम्	छुण्टयेयुः
प०	छुण्टयतु/छुण्टयतात्	छुण्टयताम्	छुण्टयन्तु
ह्य०	अच्छुण्टयत्	अच्छुण्टयताम्	अच्छुण्टयन्
अ०	अचुच्छुण्टत्	अचुच्छुण्टताम्	अचुच्छुण्टन्
प०	छुण्टयाञ्चकार	छुण्टयाञ्चक्रतुः	छुण्टयाञ्चक्रुः
	छुण्टयाम्बभूव/छुण्टयामास।		
आ०	छुण्ट्यात्	छुण्ट्यास्ताम्	छुण्ट्यासुः
श्व०	छुण्टयिता	छुण्टयितारौ	छुण्टयितारः
भ०	छुण्टयिष्यति	छुण्टयिष्यतः	छुण्टयिष्यन्ति
क्रि०	अच्छुण्टयिष्यत्	अच्छुण्टयिष्यताम्	अच्छुण्टयिष्यन्

१५९८. कुट्टण् (कुट्ट्) कुत्सने च।
।।चकाराच्छेदने।। ३१

व०	कुट्टयति	कुट्टयतः	कुट्टयन्ति
स०	कुट्टयेत्	कुट्टयेताम्	कुट्टयेयुः
प०	कुट्टयतु/कुट्टयतात्	कुट्टयताम्	कुट्टयन्तु
ह्य०	अकुट्टयत्	अकुट्टयताम्	अकुट्टयन्
अ०	अचुकुट्टत्	अचुकुट्टताम्	अचुकुट्टन्
प०	कुट्टयाञ्चकार	कुट्टयाञ्चक्रतुः	कुट्टयाञ्चक्रुः
	कुट्टयाम्बभूव/कुट्टयामास।		
आ०	कुट्ट्यात्	कुट्ट्यास्ताम्	कुट्ट्यासुः
श्व०	कुट्टयिता	कुट्टयितारौ	कुट्टयितारः
भ०	कुट्टयिष्यति	कुट्टयिष्यतः	कुट्टयिष्यन्ति
क्रि०	अकुट्टयिष्यत्	अकुट्टयिष्यताम्	अकुट्टयिष्यन्

१५९९. पुट्टण् (पुट्ट्) अल्पीभावे। ३२

व०	पुट्टयति	पुट्टयतः	पुट्टयन्ति
स०	पुट्टयेत्	पुट्टयेताम्	पुट्टयेयुः
प०	पुट्टयतु/पुट्टयतात्	पुट्टयताम्	पुट्टयन्तु
ह्य०	अपुट्टयत्	अपुट्टयताम्	अपुट्टयन्
अ०	अपुपुट्टत्	अपुपुट्टताम्	अपुपुट्टन्
प०	पुट्टयाञ्चकार	पुट्टयाञ्चक्रतुः	पुट्टयाञ्चक्रुः
	पुट्टयाम्बभूव/पुट्टयामास।		
आ०	पुट्ट्यात्	पुट्ट्यास्ताम्	पुट्ट्यासुः
श्व०	पुट्टयिता	पुट्टयितारौ	पुट्टयितारः
भ०	पुट्टयिष्यति	पुट्टयिष्यतः	पुट्टयिष्यन्ति
क्रि०	अपुट्टयिष्यत्	अपुट्टयिष्यताम्	अपुट्टयिष्यन्

१६००. चुट्टण् (चुट्ट्) अल्पीभावे। ३३

व०	चुट्टयति	चुट्टयतः	चुट्टयन्ति
स०	चुट्टयेत्	चुट्टयेताम्	चुट्टयेयुः
प०	चुट्टयतु/चुट्टयतात्	चुट्टयताम्	चुट्टयन्तु
ह्य०	अचुट्टयत्	अचुट्टयताम्	अचुट्टयन्
अ०	अचुचुट्टत्	अचुचुट्टताम्	अचुचुट्टन्
प०	चुट्टयाञ्चकार	चुट्टयाञ्चक्रतुः	चुट्टयाञ्चक्रुः
	चुट्टयाम्बभूव/चुट्टयामास।		
आ०	चुट्ट्यात्	चुट्ट्यास्ताम्	चुट्ट्यासुः
श्व०	चुट्टयिता	चुट्टयितारौ	चुट्टयितारः
भ०	चुट्टयिष्यति	चुट्टयिष्यतः	चुट्टयिष्यन्ति
क्रि०	अचुट्टयिष्यत्	अचुट्टयिष्यताम्	अचुट्टयिष्यन्

१६०१. सुट्टण् (सुट्ट्) अल्पीभावे। ३४

व०	सुट्टयति	सुट्टयतः	सुट्टयन्ति
स०	सुट्टयेत्	सुट्टयेताम्	सुट्टयेयुः
प०	सुट्टयतु/सुट्टयतात्	सुट्टयताम्	सुट्टयन्तु
ह्य०	असुट्टयत्	असुट्टयताम्	असुट्टयन्
अ०	असुषुट्टत्	असुषुट्टताम्	असुषुट्टन्
प०	सुट्टयाञ्चकार	सुट्टयाञ्चक्रतुः	सुट्टयाञ्चक्रुः
	सुट्टयाम्बभूव/सुट्टयामास।		
आ०	सुट्ट्यात्	सुट्ट्यास्ताम्	सुट्ट्यासुः
श्व०	सुट्टयिता	सुट्टयितारौ	सुट्टयितारः
भ०	सुट्टयिष्यति	सुट्टयिष्यतः	सुट्टयिष्यन्ति
क्रि०	असुट्टयिष्यत्	असुट्टयिष्यताम्	असुट्टयिष्यन्

१६०२. पुटण् (पुट्) संपूर्णने। ३५

व०	पोटयति	पोटयतः	पोटयन्ति
स०	पोटयेत्	पोटयेताम्	पोटयेयुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प० पोटयतु/पोटयतात् पोटयताम् पोटयन्तु
ह्य० अपोटयत् अपोटयताम् अपोटयन्
अ० अपुपुटत् अपुपुटताम् अपुपुटन्
प० पोटयाञ्चकार पोटयाञ्चक्रतुः पोटयाञ्चक्रुः
पोटयाम्बभूव/पोटयामास।
आ० पोट्यात् पोट्यास्ताम् पोट्यासुः
श्व० पोटयिता पोटयितारौ पोटयितारः
भ० पोटयिष्यति पोटयिष्यतः पोटयिष्यन्ति
क्रि० अपोटयिष्यत् अपोटयिष्यताम् अपोटयिष्यन्

१६०३. मुटण् (मुट्) संमूर्णने। ३६

व० मोटयति मोटयतः मोटयन्ति
स० मोटयेत् मोटयेताम् मोटयेयुः
प० मोटयतु/मोटयतात् मोटयताम् मोटयन्तु
ह्य० अमोटयत् अमोटयताम् अमोटयन्
अ० अमुमुटत् अमुमुटताम् अमुमुटन्
प० मोटयाञ्चकार मोटयाञ्चक्रतुः मोटयाञ्चक्रुः
मोटयाम्बभूव/मोटयामास।
आ० मोट्यात् मोट्यास्ताम् मोट्यासुः
श्व० मोटयिता मोटयितारौ मोटयितारः
भ० मोटयिष्यति मोटयिष्यतः मोटयिष्यन्ति
क्रि० अमोटयिष्यत् अमोटयिष्यताम् अमोटयिष्यन्

१६०४. अट्टण् (अट्ट) अनादरे। ३७

व० अट्टयति अट्टयतः अट्टयन्ति
स० अट्टयेत् अट्टयेताम् अट्टयेयुः
प० अट्टयतु/अट्टयतात् अट्टयताम् अट्टयन्तु
ह्य० आट्टयत् आट्टयताम् आट्टयन्
अ० आट्टिटत् आट्टिटताम् आट्टिटन्
प० अट्टयाञ्चकार अट्टयाञ्चक्रतुः अट्टयाञ्चक्रुः
अट्टयाम्बभूव/अट्टयामास।
आ० अट्ट्यात् अट्ट्यास्ताम् अट्ट्यासुः
श्व० अट्टयिता अट्टयितारौ अट्टयितारः
भ० अट्टयिष्यति अट्टयिष्यतः अट्टयिष्यन्ति
क्रि० आट्टयिष्यत् आट्टयिष्यताम् आट्टयिष्यन्

१६०५. स्मिटण् (स्मिट्) अनादरे। ३८

व० स्मेटयति स्मेटयतः स्मेटयन्ति
स० स्मेटयेत् स्मेटयेताम् स्मेटयेयुः
प० स्मेटयतु/स्मेटयतात् स्मेटयताम् स्मेटयन्तु
ह्य० अस्मेटयत् अस्मेटयताम् अस्मेटयन्
अ० असिस्मिटत् असिस्मिटताम् असिस्मिटन्
प० स्मेटयाञ्चकार स्मेटयाञ्चक्रतुः स्मेटयाञ्चक्रुः
स्मेटयाम्बभूव/स्मेटयामास।
आ० स्मेट्यात् स्मेट्यास्ताम् स्मेट्यासुः
श्व० स्मेटयिता स्मेटयितारौ स्मेटयितारः
भ० स्मेटयिष्यति स्मेटयिष्यतः स्मेटयिष्यन्ति
क्रि० अस्मेटयिष्यत् अस्मेटयिष्यताम् अस्मेटयिष्यन्

१६०६. लुटुण् (लुण्ट्) स्तेये। ३९

व० लुण्टयति लुण्टयतः लुण्टयन्ति
स० लुण्टयेत् लुण्टयेताम् लुण्टयेयुः
प० लुण्टयतु/लुण्टयतात् लुण्टयताम् लुण्टयन्तु
ह्य० अलुण्टयत् अलुण्टयताम् अलुण्टयन्
अ० अलुलुण्टत् अलुलुण्टताम् अलुलुण्टन्
प० लुण्टयाञ्चकार लुण्टयाञ्चक्रतुः लुण्टयाञ्चक्रुः
लुण्टयाम्बभूव/लुण्टयामास।
आ० लुण्ट्यात् लुण्ट्यास्ताम् लुण्ट्यासुः
श्व० लुण्टयिता लुण्टयितारौ लुण्टयितारः
भ० लुण्टयिष्यति लुण्टयिष्यतः लुण्टयिष्यन्ति
क्रि० अलुण्टयिष्यत् अलुण्टयिष्यताम् अलुण्टयिष्यन्

१६०७. स्निटण् (स्निट्) स्नेहने। ४०

व० स्नेटयति स्नेटयतः स्नेटयन्ति
स० स्नेटयेत् स्नेटयेताम् स्नेटयेयुः
प० स्नेटयतु/स्नेटयतात् स्नेटयताम् स्नेटयन्तु
ह्य० अस्नेटयत् अस्नेटयताम् अस्नेटयन्
अ० असिस्निटत् असिस्निटताम् असिस्निटन्
प० स्नेटयाञ्चकार स्नेटयाञ्चक्रतुः स्नेटयाञ्चक्रुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्नेटयाम्बभूव/स्नेटयामास।

आ० स्नेट्यात् स्नेट्यास्ताम् स्नेट्यासुः

श्व० स्नेटयिता स्नेटयितारौ स्नेटयितारः

भ० स्नेटयिष्यति स्नेटयिष्यतः स्नेटयिष्यन्ति

क्रि० अस्नेटयिष्यत् अस्नेटयिष्यताम् अस्नेटयिष्यन्

१६०८. घट्टण् (घट्ट) चलने। ४१

व० घट्टयति घट्टयतः घट्टयन्ति

स० घट्टयेत् घट्टयेताम् घट्टयेयुः

प० घट्टयतु/घट्टयतात् घट्टयताम् घट्टयन्तु

ह्य० अघट्टयत् अघट्टयताम् अघट्टयन्

अ० अजघट्टत् अजघट्टताम् अजघट्टन्

प० घट्टयाञ्चकार घट्टयाञ्चक्रतुः घट्टयाञ्चक्रुः

घट्टयाम्बभूव/घट्टयामास।

आ० घट्ट्यात् घट्ट्यास्ताम् घट्ट्यासुः

श्व० घट्टयिता घट्टयितारौ घट्टयितारः

भ० घट्टयिष्यति घट्टयिष्यतः घट्टयिष्यन्ति

क्रि० अघट्टयिष्यत् अघट्टयिष्यताम् अघट्टयिष्यन्

१६०९. खट्टण् (खट्ट) संवरणे। ४२

व० खट्टयति खट्टयतः खट्टयन्ति

स० खट्टयेत् खट्टयेताम् खट्टयेयुः

प० खट्टयतु/खट्टयतात् खट्टयताम् खट्टयन्तु

ह्य० अखट्टयत् अखट्टयताम् अखट्टयन्

अ० अचखट्टत् अचखट्टताम् अचखट्टन्

प० खट्टयाञ्चकार खट्टयाञ्चक्रतुः खट्टयाञ्चक्रुः

खट्टयाम्बभूव/खट्टयामास।

आ० खट्ट्यात् खट्ट्यास्ताम् खट्ट्यासुः

श्व० खट्टयिता खट्टयितारौ खट्टयितारः

भ० खट्टयिष्यति खट्टयिष्यतः खट्टयिष्यन्ति

क्रि० अखट्टयिष्यत् अखट्टयिष्यताम् अखट्टयिष्यन्

१६१०. षट्टण् (सट्ट) हिंसायाम्। ४३

व० सट्टयति सट्टयतः सट्टयन्ति

स० सट्टयेत् सट्टयेताम् सट्टयेयुः

प० सट्टयतु/सट्टयतात् सट्टयताम् सट्टयन्तु

ह्य० असट्टयत् असट्टयताम् असट्टयन्

अ० अससट्टत् अससट्टताम् अससट्टन्

प० सट्टयाञ्चकार सट्टयाञ्चक्रतुः सट्टयाञ्चक्रुः

सट्टयाम्बभूव/सट्टयामास।

आ० सट्ट्यात् सट्ट्यास्ताम् सट्ट्यासः

श्व० सट्टयिता सट्टयितारौ सट्टयितारः

भ० सट्टयिष्यति सट्टयिष्यतः सट्टयिष्यन्ति

क्रि० असट्टयिष्यत् असट्टयिष्यताम् असट्टयिष्यन्

१६११. स्फिटण् (स्फिट्) हिंसायाम्। ४४

व० स्फेटयति स्फेटयतः स्फेटयन्ति

स० स्फेटयेत् स्फेटयेताम् स्फेटयेयुः

प० स्फेटयतु/स्फेटयतात् स्फेटयताम् स्फेटयन्तु

ह्य० अस्फेटयत् अस्फेटयताम् अस्फेटयन्

अ० अपिस्फिटत् अपिस्फिटताम् अपिस्फिटन्

प० स्फेटयाञ्चकार स्फेटयाञ्चक्रतुः स्फेटयाञ्चक्रुः

स्फेटयाम्बभूव/स्फेटयामास।

आ० स्फेट्यात् स्फेट्यास्ताम् स्फेट्यासुः

श्व० स्फेटयिता स्फेटयितारौ स्फेटयितारः

भ० स्फेटयिष्यति स्फेटयिष्यतः स्फेटयिष्यन्ति

क्रि० अस्फेटयिष्यत् अस्फेटयिष्यताम् अस्फेटयिष्यन्

१६१२. स्फुटण् (स्फुट्) परिहासे। ४५

व० स्फोटयति स्फोटयतः स्फोटयन्ति

स० स्फोटयेत् स्फोटयेताम् स्फोटयेयुः

प० स्फोटयतु/स्फोटयतात् स्फोटयताम् स्फोटयन्तु

ह्य० अस्फोटयत् अस्फोटयताम् अस्फोटयन्

अ० अपुस्फुटत् अपुस्फुटताम् अपुस्फुटन्

प० स्फोटयाञ्चकार स्फोटयाञ्चक्रतुः स्फोटयाञ्चक्रुः

स्फोटयाम्बभूव/स्फोटयामास।

आ० स्फोट्यात् स्फोट्यास्ताम् स्फोट्यासुः

श्व० स्फोटयिता स्फोटयितारौ स्फोटयितारः

भ० स्फोटयिष्यति स्फोटयिष्यतः स्फोटयिष्यन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रि०	अस्फोटयिष्यत्	अस्फोटयिष्यताम्	अस्फोटयिष्यन्

१६१३. कीटण् (कीट्) वर्णने। बन्धने इत्यपरे। ४६

व०	कीटयति	कीटयतः	कीटयन्ति
स०	कीटयेत्	कीटयेताम्	कीटयेयुः
प०	कीटयतु/कीटयतात्	कीटयताम्	कीटयन्तु
ह्य०	अकीटयत्	अकीटयताम्	अकीटयन्
अ०	अचीकिटत्	अचीकिटताम्	अचीकिटन्
प०	कीटयाञ्चकार	कीटयाञ्चक्रतुः	कीटयाञ्चक्रुः
	कीटयाम्बभूव/कीटयामास।		
आ०	कीट्यात्	कीट्यास्ताम्	कीट्यासुः
श्व०	कीटयिता	कीटयितारौ	कीटयितारः
भ०	कीटयिष्यति	कीटयिष्यतः	कीटयिष्यन्ति
क्रि०	अकीटयिष्यत्	अकीटयिष्यताम्	अकीटयिष्यन्

१६१४. वटुण् (वण्ट्) विभाजने। ४७

व०	वण्टयति	वण्टयतः	वण्टयन्ति
स०	वण्टयेत्	वण्टयेताम्	वण्टयेयुः
प०	वण्टयतु/वण्टयतात्	वण्टयताम्	वण्टयन्तु
ह्य०	अवण्टयत्	अवण्टयताम्	अवण्टयन्
अ०	अववण्टत्	अववण्टताम्	अववण्टन्
प०	वण्टयाञ्चकार	वण्टयाञ्चक्रतुः	वण्टयाञ्चक्रुः
	वण्टयाम्बभूव/वण्टयामास।		
आ०	वण्ट्यात्	वण्ट्यास्ताम्	वण्ट्यासुः
श्व०	वण्टयिता	वण्टयितारौ	वण्टयितारः
भ०	वण्टयिष्यति	वण्टयिष्यतः	वण्टयिष्यन्ति
क्रि०	अवण्टयिष्यत्	अवण्टयिष्यताम्	अवण्टयिष्यन्

१६१५. रुटण् (रुट्) रोषे ४८

व०	रोटयति	रोटयतः	रोटयन्ति
स०	रोटयेत्	रोटयेताम्	रोटयेयुः
प०	रोटयतु/रोटयतात्	रोटयताम्	रोटयन्तु
ह्य०	अरोटयत्	अरोटयताम्	अरोटयन्
अ०	अरुरुटत्	अरुरुटताम्	अरुरुटन्
प०	रोटयाञ्चकार	रोटयाञ्चक्रतुः	रोटयाञ्चक्रुः
	रोटयाम्बभूव/रोटयामास।		
आ०	रोट्यात्	रोट्यास्ताम्	रोट्यासुः
श्व०	रोटयिता	रोटयितारौ	रोटयितारः
भ०	रोटयिष्यति	रोटयिष्यतः	रोटयिष्यन्ति
क्रि०	अरोटयिष्यत्	अरोटयिष्यताम्	अरोटयिष्यन्

१६१६. शठण् (शठ्) संस्कारगत्योः। ४९

व०	शाठयति	शाठयतः	शाठयन्ति
स०	शाठयेत्	शाठयेताम्	शाठयेयुः
प०	शाठयतु/शाठयतात्	शाठयताम्	शाठयन्तु
ह्य०	अशाठयत्	अशाठयताम्	अशाठयन्
अ०	अशीशठत्	अशीशठताम्	अशीशठन्
प०	शाठयाञ्चकार	शाठयाञ्चक्रतुः	शाठयाञ्चक्रुः
	शाठयाम्बभूव/शाठयामास।		
आ०	शाठ्यात्	शाठ्यास्ताम्	शाठ्यासुः
श्व०	शाठयिता	शाठयितारौ	शाठयितारः
भ०	शाठयिष्यति	शाठयिष्यतः	शाठयिष्यन्ति
क्रि०	अशाठयिष्यत्	अशाठयिष्यताम्	अशाठयिष्यन्

१६१७. श्वठण् (श्वठ्) संस्कारगत्योः। ५०

व०	श्वाठयति	श्वाठयतः	श्वाठयन्ति
स०	श्वाठयेत्	श्वाठयेताम्	श्वाठयेयुः
प०	श्वाठयतु/श्वाठयतात्	श्वाठयताम्	श्वाठयन्तु
ह्य०	अश्वाठयत्	अश्वाठयताम्	अश्वाठयन्
अ०	अशिश्वठत्	अशिश्वठताम्	अशिश्वठन्
प०	श्वाठयाञ्चकार	श्वाठयाञ्चक्रतुः	श्वाठयाञ्चक्रुः
	श्वाठयाम्बभूव/श्वाठयामास।		
आ०	श्वाठ्यात्	श्वाठ्यास्ताम्	श्वाठ्यासुः
श्व०	श्वाठयिता	श्वाठयितारौ	श्वाठयितारः
भ०	श्वाठयिष्यति	श्वाठयिष्यतः	श्वाठयिष्यन्ति
क्रि०	अश्वाठयिष्यत्	अश्वाठयिष्यताम्	अश्वाठयिष्यन्

१६१८. श्वठुण् (श्वण्ठ्) संस्कारगत्योः। ५०

व०	श्वण्ठयति	श्वण्ठयतः	श्वण्ठयन्ति
स०	श्वण्ठयेत्	श्वण्ठयेताम्	श्वण्ठयेयुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	श्वण्ठयतु/श्वण्ठयतात्	श्वण्ठयताम्	श्वण्ठयन्तु
ह्य०	अश्वण्ठयत्	अश्वण्ठयताम्	अश्वण्ठयन्
अ०	अशश्वण्ठत्	अशश्वण्ठताम्	अशश्वण्ठन्
प०	श्वण्ठयाञ्चकार	श्वण्ठयाञ्चक्रतुः	श्वण्ठयाञ्चक्रुः
	श्वण्ठयाम्बभूव/ श्वण्ठयामास।		
आ०	श्वण्ठ्यात्	श्वण्ठ्यास्ताम्	श्वण्ठ्यासुः
श्व०	श्वण्ठयिता	श्वण्ठयितारौ	श्वण्ठयितारः
भ०	श्वण्ठयिष्यति	श्वण्ठयिष्यतः	श्वण्ठयिष्यन्ति
क्रि०	अश्वण्ठयिष्यत्	अश्वण्ठयिष्यताम्	अश्वण्ठयिष्यन्

१६१९. शुठण् (शुठ्) आलस्ये। ५२

व०	शोठयति	शोठयतः	शोठयन्ति
स०	शोठयेत्	शोठयेताम्	शोठयेयुः
प०	शोठयतु/शोठयतात्	शोठयताम्	शोठयन्तु
ह्य०	अशोठयत्	अशोठयताम्	अशोठयन्
अ०	अशुशुठत्	अशुशुठताम्	अशुशुठन्
प०	शोठयाञ्चकार	शोठयाञ्चक्रतुः	शोठयाञ्चक्रुः
	शोठयाम्बभूव/शोठयामास।		
आ०	शोठ्यात्	शोठ्यास्ताम्	शोठ्यासुः
श्व०	शोठयिता	शोठयितारौ	शोठयितारः
भ०	शोठयिष्यति	शोठयिष्यतः	शोठयिष्यन्ति
क्रि०	अशोठयिष्यत्	अशोठयिष्यताम्	अशोठयिष्यन्

१६२०. शुठुण् (शुठ्) शोषणे। ५३

व०	शुण्ठयति	शुण्ठयतः	शुण्ठयन्ति
स०	शुण्ठयेत्	शुण्ठयेताम्	शुण्ठयेयुः
प०	शुण्ठयतु/शुण्ठयतात्	शुण्ठयताम्	शुण्ठयन्तु
ह्य०	अशुण्ठयत्	अशुण्ठयताम्	अशुण्ठयन्
अ०	अशुशुण्ठत्	अशुशुण्ठताम्	अशुशुण्ठन्
प०	शुण्ठयाञ्चकार	शुण्ठयाञ्चक्रतुः	शुण्ठयाञ्चक्रुः
	शुण्ठयाम्बभूव/शुण्ठयामास।		
आ०	शुण्ठ्यात्	शुण्ठ्यास्ताम्	शुण्ठ्यासुः
श्व०	शुण्ठयिता	शुण्ठयितारौ	शुण्ठयितारः
भ०	शुण्ठयिष्यति	शुण्ठयिष्यतः	शुण्ठयिष्यन्ति
क्रि०	अशुण्ठयिष्यत्	अशुण्ठयिष्यताम्	अशुण्ठयिष्यन्

१६२१ गुठुण् (गुण्ठ) वेष्टने। ५४

व०	गुण्ठयति	गुण्ठयतः	गुण्ठयन्ति
स०	गुण्ठयेत्	गुण्ठयेताम्	गुण्ठयेयुः
प०	गुण्ठयतु/गुण्ठयतात्	गुण्ठयताम्	गुण्ठयन्तु
ह्य०	अगुण्ठयत्	अगुण्ठयताम्	अगुण्ठयन्
अ०	अजुगुण्ठत्	अजुगुण्ठताम्	अजुगुण्ठन्
प०	गुण्ठयाञ्चकार	गुण्ठयाञ्चक्रतुः	गुण्ठयाञ्चक्रुः
	गुण्ठयाम्बभूव/गुण्ठयामास।		
आ०	गुण्ठ्यात्	गुण्ठ्यास्ताम्	गुण्ठ्यासुः
श्व०	गुण्ठयिता	गुण्ठयितारौ	गुण्ठयितारः
भ०	गुण्ठयिष्यति	गुण्ठयिष्यतः	गुण्ठयिष्यन्ति
क्रि०	अगुण्ठयिष्यत्	अगुण्ठयिष्यताम्	अगुण्ठयिष्यन्

अथ डान्ताः सप्तदश।

१६२१. लडण् (लड) उपसेवायाम्। ५५

व०	लाडयति	लाडयतः	लाडयन्ति
स०	लाडयेत्	लाडयेताम्	लाडयेयुः
प०	लाडयतु/लाडयतात्	लाडयताम्	लाडयन्तु
ह्य०	अलाडयत्	अलाडयताम्	अलाडयन्
अ०	अलीलडत्	अलीलडताम्	अलीलडन्
प०	लाडयाञ्चकार	लाडयाञ्चक्रतुः	लाडयाञ्चक्रुः
	लाडयाम्बभूव/लाडयामास।		
आ०	लाड्यात्	लाड्यास्ताम्	लाड्यासुः
श्व०	लाडयिता	लाडयितारौ	लाडयितारः
भ०	लाडयिष्यति	लाडयिष्यतः	लाडयिष्यन्ति
क्रि०	अलाडयिष्यत्	अलाडयिष्यताम्	अलाडयिष्यन्

१६२३. स्फुडुण् (स्फुण्ड्) परिहासे। ५६

व०	स्फुण्डयति	स्फुण्डयतः	स्फुण्डयन्ति
स०	स्फुण्डयेत्	स्फुण्डयेताम्	स्फुण्डयेयुः
प०	स्फुण्डयतु/स्फुण्डयतात्	स्फुण्डयताम्	स्फुण्डयन्तु
ह्य०	अस्फुण्डयत्	अस्फुण्डयताम्	अस्फुण्डयन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ० अपुस्फुण्डत् अपुस्फुण्डताम् अपुस्फुण्डन्
प० स्फुण्डयाञ्चकार स्फुण्डयाञ्चक्रतुः स्फुण्डयाञ्चक्रुः
स्फुण्डयाम्बभूव/स्फुण्डयामास।
आ० स्फुण्ड्यात् स्फुण्ड्यास्ताम् स्फुण्ड्यासुः
श्व० स्फुण्डयिता स्फुण्डयितारौ स्फुण्डयितारः
भ० स्फुण्डयिष्यति स्फुण्डयिष्यतः स्फुण्डयिष्यन्ति
क्रि० अस्फुण्डयिष्यत् अस्फुण्डयिष्यताम् अस्फुण्डयिष्यन्

१६२४. ओलडुण् (ओलण्ड्) उत्क्षेपे। ५७

व० ओलण्डयति ओलण्डयतः ओलण्डयन्ति
स० ओलण्डयेत् ओलण्डयेताम् ओलण्डयेयुः
प० ओलण्डयतु/ओलण्डयतात् ओलण्डयताम् ओलण्डयन्तु
ह्य० औलण्डयत् औलण्डयताम् औलण्डयन्
अ० औललण्डत् औललण्डताम् औललण्डन्
प० ओलण्डयाञ्चकार ओलण्डयाञ्चक्रतुः ओलण्डयाञ्चक्रुः
ओलण्डयाम्बभूव/ओलण्डयामास।
आ० ओलण्ड्यात् ओलण्ड्यास्ताम् ओलण्ड्यासुः
श्व० ओलण्डयिता ओलण्डयितारौ ओलण्डयितारः
भ० ओलण्डयिष्यति ओलण्डयिष्यतः ओलण्डयिष्यन्ति
क्रि० औलण्डयिष्यत् औलण्डयिष्यताम् औलण्डयिष्यन्

१६२५. पीडण् (पीड्) गहने।

गहनं बाधा। ५८

व० पीडयति पीडयतः पीडयन्ति
स० पीडयेत् पीडयेताम् पीडयेयुः
प० पीडयतु/पीडयतात् पीडयताम् पीडयन्तु
ह्य० अपीडयत् अपीडयताम् अपीडयन्
अ० अपिपीडत् अपिपीडताम् अपिपीडन्
अपीपिडत् अपीपिडताम् अपीपिडन्, इ०
प० पीडयाञ्चकार पीडयाञ्चक्रतुः पीडयाञ्चक्रुः
पीडयाम्बभूव/पीडयामास।
आ० पीड्यात् पीड्यास्ताम् पीड्यासुः
श्व० पीडयिता पीडयितारौ पीडयितारः
भ० पीडयिष्यति पीडयिष्यतः पीडयिष्यन्ति
क्रि० अपीडयिष्यत् अपीडयिष्यताम् अपीडयिष्यन्

१६२६. तडण् (तड्) आघाते। ५९

व० ताडयति ताडयतः ताडयन्ति
स० ताडयेत् ताडयेताम् ताडयेयुः
प० ताडयतु/ताडयतात् ताडयताम् ताडयन्तु
ह्य० अताडयत् अताडयताम् अताडयन्
अ० अतीतडत् अतीतडताम् अतीतडन्
प० ताडयाञ्चकार ताडयाञ्चक्रतुः ताडयाञ्चक्रुः
ताडयाम्बभूव/ताडयामास।
आ० ताड्यात् ताड्यास्ताम् ताड्यासुः
श्व० ताडयिता ताडयितारौ ताडयितारः
भ० ताडयिष्यति ताडयिष्यतः ताडयिष्यन्ति
क्रि० अताडयिष्यत् अताडयिष्यताम् अताडयिष्यन्

१६२७. खडण् (खड्) भेदे। ६०

व० खाडयति खाडयतः खाडयन्ति
स० खाडयेत् खाडयेताम् खाडयेयुः
प० खाडयतु/खाडयतात् खाडयताम् खाडयन्तु
ह्य० अखाडयत् अखाडयताम् अखाडयन्
अ० अचीखडत् अचीखडताम् अचीखडन्
प० खाडयाञ्चकार खाडयाञ्चक्रतुः खाडयाञ्चक्रुः
खाडयाम्बभूव/खाडयामास।
आ० खाड्यात् खाड्यास्ताम् खाड्यासुः
श्व० खाडयिता खाडयितारौ खाडयितारः
भ० खाडयिष्यति खाडयिष्यतः खाडयिष्यन्ति
क्रि० अखाडयिष्यत् अखाडयिष्यताम् अखाडयिष्यन्

१६२८. खडुण् (खण्ड्) भेदे। ६१

व० खण्डयति खण्डयतः खण्डयन्ति
स० खण्डयेत् खण्डयेताम् खण्डयेयुः
प० खण्डयतु/खण्डयतात् खण्डयताम् खण्डयन्तु
ह्य० अखण्डयत् अखण्डयताम् अखण्डयन्
अ० अचखण्डत् अचखण्डताम् अचखण्डन्
प० खण्डयाञ्चकार खण्डयाञ्चक्रतुः खण्डयाञ्चक्रुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खण्डयाम्बभूव/खण्डयामास।

आ०	खण्ड्यात्	खण्ड्यास्ताम्	खण्ड्यासुः
श्व०	खण्डयिता	खण्डयितारौ	खण्डयितारः
भ०	खण्डयिष्यति	खण्डयिष्यतः	खण्डयिष्यन्ति
क्रि०	अखण्डयिष्यत्	अखण्डयिष्यताम्	अखण्डयिष्यन्

१६२९. कडुण् (कण्ड्) खण्डने च।

चकाराद्भेदने। ६२

व०	कण्डयति	कण्डयतः	कण्डयन्ति
स०	कण्डयेत्	कण्डयेताम्	कण्डयेयुः
प०	कण्डयतु/कण्डयतात्	कण्डयताम्	कण्डयन्तु
ह्य०	अकण्डयत्	अकण्डयताम्	अकण्डयन्
अ०	अचकण्डत्	अचकण्डताम्	अचकण्डन्
प०	कण्डयाञ्चकार	कण्डयाञ्चक्रतुः	कण्डयाञ्चक्रुः

कण्डयाम्बभूव/कण्डयामास।

आ०	कण्ड्यात्	कण्ड्यास्ताम्	कण्ड्यासुः
श्व०	कण्डयिता	कण्डयितारौ	कण्डयितारः
भ०	कण्डयिष्यति	कण्डयिष्यतः	कण्डयिष्यन्ति
क्रि०	अकण्डयिष्यत्	अकण्डयिष्यताम्	अकण्डयिष्यन्

१६३०. कुडुण् (कुण्ड्) रक्षणे। ६३

व०	कुण्डयति	कुण्डयतः	कुण्डयन्ति
स०	कुण्डयेत्	कुण्डयेताम्	कुण्डयेयुः
प०	कुण्डयतु/कुण्डयतात्	कुण्डयताम्	कुण्डयन्तु
ह्य०	अकुण्डयत्	अकुण्डयताम्	अकुण्डयन्
अ०	अचुकुण्डत्	अचुकुण्डताम्	अचुकुण्डन्
प०	कुण्डयाञ्चकार	कुण्डयाञ्चक्रतुः	कुण्डयाञ्चक्रुः

कुण्डयाम्बभूव/कुण्डयामास।

आ०	कुण्ड्यात्	कुण्ड्यास्ताम्	कुण्ड्यासुः
श्व०	कुण्डयिता	कुण्डयितारौ	कुण्डयितारः
भ०	कुण्डयिष्यति	कुण्डयिष्यतः	कुण्डयिष्यन्ति
क्रि०	अकुण्डयिष्यत्	अकुण्डयिष्यताम्	अकुण्डयिष्यन्

१६३१. गुडुण् (गुण्ड्) वेष्टने च। ६४

चगाराद्रक्षणे।

व०	गुण्डयति	गुण्डयतः	गुण्डयन्ति
स०	गुण्डयेत्	गुण्डयेताम्	गुण्डयेयुः
प०	गुण्डयतु/गुण्डयतात्	गुण्डयताम्	गुण्डयन्तु
ह्य०	अगुण्डयत्	अगुण्डयताम्	अगुण्डयन्
अ०	अजुगुण्डत्	अजुगुण्डताम्	अजुगुण्डन्
प०	गुण्डयाञ्चकार	गुण्डयाञ्चक्रतुः	गुण्डयाञ्चक्रुः

गुण्डयाम्बभूव/गुण्डयामास।

आ०	गुण्ड्यात्	गुण्ड्यास्ताम्	गुण्ड्यासुः
श्व०	गुण्डयिता	गुण्डयितारौ	गुण्डयितारः
भ०	गुण्डयिष्यति	गुण्डयिष्यतः	गुण्डयिष्यन्ति
क्रि०	अगुण्डयिष्यत्	अगुण्डयिष्यताम्	अगुण्डयिष्यन्

१६३२. चुडुण् (चुण्ड्) रक्षणे। ६३

व०	चुण्डयति	चुण्डयतः	चुण्डयन्ति
स०	चुण्डयेत्	चुण्डयेताम्	चुण्डयेयुः
प०	चुण्डयतु/चुण्डयतात्	चुण्डयताम्	चुण्डयन्तु
ह्य०	अचुण्डयत्	अचुण्डयताम्	अचुण्डयन्
अ०	अचुचुण्डत्	अचुचुण्डताम्	अचुचुण्डन्
प०	चुण्डयाञ्चकार	चुण्डयाञ्चक्रतुः	चुण्डयाञ्चक्रुः

चुण्डयाम्बभूव/चुण्डयामास।

आ०	चुण्ड्यात्	चुण्ड्यास्ताम्	चुण्ड्यासुः
श्व०	चुण्डयिता	चुण्डयितारौ	चुण्डयितारः
भ०	चुण्डयिष्यति	चुण्डयिष्यतः	चुण्डयिष्यन्ति
क्रि०	अचुण्डयिष्यत्	अचुण्डयिष्यताम्	अचुण्डयिष्यन्

१६३३. मडुण् (मण्ड्) भूषायाम्। ६६

व०	मण्डयति	मण्डयतः	मण्डयन्ति
स०	मण्डयेत्	मण्डयेताम्	मण्डयेयुः
प०	मण्डयतु/मण्डयतात्	मण्डयताम्	मण्डयन्तु
ह्य०	अमण्डयत्	अमण्डयताम्	अमण्डयन्
अ०	अममण्डत्	अममण्डताम्	अममण्डन्
प०	मण्डयाञ्चकार	मण्डयाञ्चक्रतुः	मण्डयाञ्चक्रुः

मण्डयाम्बभूव/मण्डयामास।

आ०	मण्ड्यात्	मण्ड्यास्ताम्	मण्ड्यासुः
श्व०	मण्डयिता	मण्डयितारौ	मण्डयितारः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	मण्डयिष्यति	मण्डयिष्यतः	मण्डयिष्यन्ति
क्रि०	अमण्डयिष्यत्	अमण्डयिष्यताम्	अमण्डयिष्यन्

१६३४. भडुण् (भण्ड्) कल्याणे। ६७

व०	भण्डयति	भण्डयतः	भण्डयन्ति
स०	भण्डयेत्	भण्डयेताम्	भण्डयेयुः
प०	भण्डयतु/भण्डयतात्	भण्डयताम्	भण्डयन्तु
ह्य०	अभण्डयत्	अभण्डयताम्	अभण्डयन्
अ०	अबभण्डत्	अबभण्डताम्	अबभण्डन्
प०	भण्डयाञ्चकार	भण्डयाञ्चक्रतुः	भण्डयाञ्चक्रुः

भण्डयाम्बभूव/भण्डयामास।

आ०	भण्ड्यात्	भण्ड्यास्ताम्	भण्ड्यासुः
श्व०	भण्डयिता	भण्डयितारौ	भण्डयितारः
भ०	भण्डयिष्यति	भण्डयिष्यतः	भण्डयिष्यन्ति
क्रि०	अभण्डयिष्यत्	अभण्डयिष्यताम्	अभण्डयिष्यन्

१६३५. पिडुण् (पिण्ड्) संघाते। ६८

व०	पिण्डयति	पिण्डयतः	पिण्डयन्ति
स०	पिण्डयेत्	पिण्डयेताम्	पिण्डयेयुः
प०	पिण्डयतु/पिण्डयतात्	पिण्डयताम्	पिण्डयन्तु
ह्य०	अपिण्डयत्	अपिण्डयताम्	अपिण्डयन्
अ०	अपिपिण्डत्	अपिपिण्डताम्	अपिपिण्डन्
प०	पिण्डयाञ्चकार	पिण्डयाञ्चक्रतुः	पिण्डयाञ्चक्रुः

पिण्डयाम्बभूव/पिण्डयामास।

आ०	पिण्ड्यात्	पिण्ड्यास्ताम्	पिण्ड्यासुः
श्व०	पिण्डयिता	पिण्डयितारौ	पिण्डयितारः
भ०	पिण्डयिष्यति	पिण्डयिष्यतः	पिण्डयिष्यन्ति
क्रि०	अपिण्डयिष्यत्	अपिण्डयिष्यताम्	अपिण्डयिष्यन्

१६३६. ईडुण् (ईड्) स्तुतौ। ६९

व०	ईडयति	ईडयतः	ईडयन्ति
स०	ईडयेत्	ईडयेताम्	ईडयेयुः
प०	ईडयतु/ईडयतात्	ईडयताम्	ईडयन्तु
ह्य०	ऐडयत्	ऐडयताम्	ऐडयन्
अ०	ऐडिडत्	ऐडिडताम्	ऐडिडन्
प०	ईडयाञ्चकार	ईडयाञ्चक्रतुः	ईडयाञ्चक्रुः

ईडयाम्बभूव/ईडयामास।

आ०	ईड्यात्	ईड्यास्ताम्	ईड्यासुः
श्व०	ईडयिता	ईडयितारौ	ईडयितारः
भ०	ईडयिष्यति	ईडयिष्यतः	ईडयिष्यन्ति
क्रि०	ऐडयिष्यत्	ऐडयिष्यताम्	ऐडयिष्यन्

१६३७. चडुण् (चण्ड्) कोपे। ७०

व०	चण्डयति	चण्डयतः	चण्डयन्ति
स०	चण्डयेत्	चण्डयेताम्	चण्डयेयुः
प०	चण्डयतु/चण्डयतात्	चण्डयताम्	चण्डयन्तु
ह्य०	अचण्डयत्	अचण्डयताम्	अचण्डयन्
अ०	अचचण्डत्	अचचण्डताम्	अचचण्डन्
प०	चण्डयाञ्चकार	चण्डयाञ्चक्रतुः	चण्डयाञ्चक्रुः

चण्डयाम्बभूव/चण्डयामास।

आ०	चण्ड्यात्	चण्ड्यास्ताम्	चण्ड्यासुः
श्व०	चण्डयिता	चण्डयितारौ	चण्डयितारः
भ०	चण्डयिष्यति	चण्डयिष्यतः	चण्डयिष्यन्ति
क्रि०	अचण्डयिष्यत्	अचण्डयिष्यताम्	अचण्डयिष्यन्

१६३८. जुडण् (जुड्) प्रेरणे। प्रेरणं दलनम्। ७१

व०	जोडयति	जोडयतः	जोडयन्ति
स०	जोडयेत्	जोडयेताम्	जोडयेयुः
प०	जोडयतु/जोडयतात्	जोडयताम्	जोडयन्तु
ह्य०	अजोडयत्	अजोडयताम्	अजोडयन्
अ०	अजुजुडत्	अजुजुडताम्	अजुजुडन्
प०	जोडयाञ्चकार	जोडयाञ्चक्रतुः	जोडयाञ्चक्रुः

जोडयाम्बभूव/जोडयामास।

आ०	जोड्यात्	जोड्यास्ताम्	जोड्यासुः
श्व०	जोडयिता	जोडयितारौ	जोडयितारः
भ०	जोडयिष्यति	जोडयिष्यतः	जोडयिष्यन्ति
क्रि०	अजोडयिष्यत्	अजोडयिष्यताम्	अजोडयिष्यन्

अथ णान्ताः षट्।

१६३९. चूर्णण् (चूर्ण्) प्रेरणे। प्रेरणं दलनम्। ७२

व०	चूर्णयति	चूर्णयतः	चूर्णयन्ति
स०	चूर्णयेत्	चूर्णयेताम्	चूर्णयेयुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	चूर्णयतु/चूर्णयतात्	चूर्णयताम्	चूर्णयन्तु
ह्य०	अचूर्णयत्	अचूर्णयताम्	अचूर्णयन्
अ०	अचुचूर्णत्	अचुचूर्णताम्	अचुचूर्णन्
प०	चूर्णयाञ्चकार	चूर्णयाञ्चक्रतुः	चूर्णयाञ्चक्रुः
	चूर्णयाम्बभूव/चूर्णयामास।		
आ०	चूर्ण्यात्	चूर्ण्यास्ताम्	चूर्ण्यासुः
श्व०	चूर्णयिता	चूर्णयितारौ	चूर्णयितारः
भ०	चूर्णयिष्यति	चूर्णयिष्यतः	चूर्णयिष्यन्ति
क्रि०	अचूर्णयिष्यत्	अचूर्णयिष्यताम्	अचूर्णयिष्यन्

१६४०. वर्णण् (वर्ण्) प्रेरणे।

प्रेरणं दलनतम्। ७३

व०	वर्णयति	वर्णयतः	वर्णयन्ति
स०	वर्णयेत्	वर्णयेताम्	वर्णयेयुः
प०	वर्णयतु/वर्णयतात्	वर्णयताम्	वर्णयन्तु
ह्य०	अवर्णयत्	अवर्णयताम्	अवर्णयन्
अ०	अववर्णत्	अववर्णताम्	अववर्णन्
प०	वर्णयाञ्चकार	वर्णयाञ्चक्रतुः	वर्णयाञ्चक्रुः
	वर्णयाम्बभूव/वर्णयामास।		
आ०	वर्ण्यात्	वर्ण्यास्ताम्	वर्ण्यासुः
श्व०	वर्णयिता	वर्णयितारौ	वर्णयितारः
भ०	वर्णयिष्यति	वर्णगिष्यतः	वर्णयिष्यन्ति
क्रि०	अवर्णयिष्यत्	अवर्णयिष्यताम्	अवर्णयिष्यन्

१६४१. चूणण् (चूण्) संकोचने। ७४

व०	चूणयति	चूणयतः	चूणयन्ति
स०	चूणयेत्	चूणयेताम्	चूणयेयुः
प०	चूणयतु/चूणयतात्	चूणयताम्	चूणयन्तु
ह्य०	अचूणयत्	अचूणयताम्	अचूणयन्
अ०	अचूचुणत्	अचूचुणताम्	अचूचुणन्
प०	चूणयाञ्चकार	चूणयाञ्चक्रतुः	चूणयाञ्चक्रुः
	चूणयाम्बभूव/चूणयामास।		
आ०	चूण्यात्	चूण्यास्ताम्	चूण्यासुः
श्व०	चूणयिता	चूणयितारौ	चूणयितारः
भ०	चूणयिष्यति	चूणयिष्यतः	चूणयिष्यन्ति
क्रि०	अचूणयिष्यत्	अचूणयिष्यताम्	अचूणयिष्यन्

१६४२. तूणण् (तूण्) संकोचने। ७५

व०	तूणयति	तूणयतः	तूणयन्ति
स०	तूणयेत्	तूणयेताम्	तूणयेयुः
प०	तूणयतु/तूणयतात्	तूणयताम्	तूणयन्तु
ह्य०	अतूणयत्	अतूणयताम्	अतूणयन्
अ०	अतूतुणत्	अतूतुणताम्	अतूतुणन्
प०	तूणयाञ्चकार	तूणयाञ्चक्रतुः	तूणयाञ्चक्रुः
	तूणयाम्बभूव/तूणयामास।		
आ०	तूण्यात्	तूण्यास्ताम्	तूण्यासुः
श्व०	तूणयिता	तूणयितारौ	तूणयितारः
भ०	तूणयिष्यति	तूणयिष्यतः	तूणयिष्यन्ति
क्रि०	अतूणयिष्यत्	अतूणयिष्यताम्	अतूणयिष्यन्

१६४३. श्रणण् (श्रण्) दाने। ७६

व०	श्राणयति	श्राणयतः	श्राणयन्ति
स०	श्राणयेत्	श्राणयेताम्	श्राणयेयुः
प०	श्राणयतु/श्राणयतात्	श्राणयताम्	श्राणयन्तु
ह्य०	अश्राणयत्	अश्राणयताम्	अश्राणयन्
अ०	अशिश्रणत्	अशिश्रणताम्	अशिश्रणन्
	अशश्राणत्	अशश्राणताम्	अशश्राणन् इ०
प०	श्राणयाञ्चकार	श्राणयाञ्चक्रतुः	श्राणयाञ्चक्रुः
	श्राणयाम्बभूव/श्राणयामास।		
आ०	श्राण्यात्	श्राण्यास्ताम्	श्राण्यासुः
श्व०	श्राणयिता	श्राणयितारौ	श्राणयितारः
भ०	श्राणयिष्यति	श्राणयिष्यतः	श्राणयिष्यन्ति
क्रि०	अश्राणयिष्यत्	अश्राणयिष्यताम्	अश्राणयिष्यन्

१६४४. पूणण् (पूण्) संघाते। ७७

व०	पूणयति	पूणयतः	पूणयन्ति
स०	पूणयेत्	पूणयेताम्	पूणयेयुः
प०	पूणयतु/पूणयतात्	पूणयताम्	पूणयन्तु
ह्य०	अपूणयत्	अपूणयताम्	अपूणयन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	अपूपुणत्	अपूपुणताम्	अपूपुणन्
प०	पूणयाञ्चकार	पूणयाञ्चक्रतुः	पूणयाञ्चक्रुः
	पूणयाम्बभूव/पूणयामास।		
आ०	पूण्यात्	पूण्यास्ताम्	पूण्यासुः
श्व०	पूणयिता	पूणयितारौ	पूणयितारः
भ०	पूणयिष्यति	पूणयिष्यतः	पूणयिष्यन्ति
क्रि०	अपूणयिष्यत्	अपूणयिष्यताम्	अपूणयिष्यन्

अथ तान्ताः षट्।

१६४५. चिन्तण् (चिन्त्) स्मृत्याम्। ७८

व०	चिन्तयति	चिन्तयतः	चिन्तयन्ति
स०	चिन्तयेत्	चिन्तयेताम्	चिन्तयेयुः
प०	चिन्तयतु/चिन्तयतात्	चिन्तयताम्	चिन्तयन्तु
ह्य०	अचिन्तयत्	अचिन्तयताम्	अचिन्तयन्
अ०	अचिचिन्तत्	अचिचिन्ताम्	अचिचिन्तन्
प०	चिन्तयाञ्चकार	चिन्तयाञ्चक्रतुः	चिन्तयाञ्चक्रुः
	चिन्तयाम्बभूव/चिन्तयामास।		
आ०	चिन्त्यात्	चिन्त्यास्ताम्	चिन्त्यासुः
श्व०	चिन्तयिता	चिन्तयितारौ	चिन्तयितारः
भ०	चिन्तयिष्यति	चिन्तयिष्यतः	चिन्तयिष्यन्ति
क्रि०	अचिन्तयिष्यत्	अचिन्तयिष्यताम्	अचिन्तयिष्यन्

१६४६. पुस्तण् (पुस्त्) आदरानादरयोः। ७९

व०	पुस्तयति	पुस्तयतः	पुस्तयन्ति
स०	पुस्तयेत्	पुस्तयेताम्	पुस्तयेयुः
प०	पुस्तयतु/पुस्तयतात्	पुस्तयताम्	पुस्तयन्तु
ह्य०	अपुस्तयत्	अपुस्तयताम्	अपुस्तयन्
अ०	अपुपुस्तत्	अपुपुस्ताम्	अपुपुस्तन्
प०	पुस्तयाञ्चकार	पुस्तयाञ्चक्रतुः	पुस्तयाञ्चक्रुः
	पुस्तयाम्बभूव/पुस्तयामास।		
आ०	पुस्त्यात्	पुस्त्यास्ताम्	पुस्त्यासुः
श्व०	पुस्तयिता	पुस्तयितारौ	पुस्तयितारः
भ०	पुस्तयिष्यति	पुस्तयिष्यतः	पुस्तयिष्यन्ति
क्रि०	अपुस्तयिष्यत्	अपुस्तयिष्यताम्	अपुस्तयिष्यन्

१६४७. बुस्तण् (बुस्त्) आदरानादरयोः। ८०

व०	बुस्तयति	बुस्तयतः	बुस्तयन्ति
स०	बुस्तयेत्	बुस्तयेताम्	बुस्तयेयुः
प०	बुस्तयतु/बुस्तयतात्	बुस्तयताम्	बुस्तयन्तु
ह्य०	अबुस्तयत्	अबुस्तयताम्	अबुस्तयन्
अ०	अबुबुस्तत्	अबुबुस्ताम्	अबुबुस्तन्
प०	बुस्तयाञ्चकार	बुस्तयाञ्चक्रतुः	बुस्तयाञ्चक्रुः
	बुस्तयाम्बभूव/बुस्तयामास।		
आ०	बुस्त्यात्	बुस्त्यास्ताम्	बुस्त्यासुः
श्व०	बुस्तयिता	बुस्तयितारौ	बुस्तयितारः
भ०	बुस्तयिष्यति	बुस्तयिष्यतः	बुस्तयिष्यन्ति
क्रि०	अबुस्तयिष्यत्	अबुस्तयिष्यताम्	अबुस्तयिष्यन्

१६४८. मुस्तण् (मुस्त्) संघाते। ८१

व०	मुस्तयति	मुस्तयतः	मुस्तयन्ति
स०	मुस्तयेत्	मुस्तयेताम्	मुस्तयेयुः
प०	मुस्तयतु/मुस्तयतात्	मुस्तयताम्	मुस्तयन्तु
ह्य०	अमुस्तयत्	अमुस्तयताम्	अमुस्तयन्
अ०	अमुमुस्तत्	अमुमुस्ताम्	अमुमुस्तन्
प०	मुस्तयाञ्चकार	मुस्तयाञ्चक्रतुः	मुस्तयाञ्चक्रुः
	मुस्तयाम्बभूव/मुस्तयामास।		
आ०	मुस्त्यात्	मुस्त्यास्ताम्	मुस्त्यासुः
श्व०	मुस्तयिता	मुस्तयितारौ	मुस्तयितारः
भ०	मुस्तयिष्यति	मुस्तयिष्यतः	मुस्तयिष्यन्ति
क्रि०	अमुस्तयिष्यत्	अमुस्तयिष्यताम्	अमुस्तयिष्यन्

१६४९. कृतण् (कृत्) संशब्दने।

संशब्दनं ख्यातिः। ८२

व०	कीर्तयति	कीर्तयतः	कीर्तयन्ति
स०	कीर्तयेत्	कीर्तयेताम्	कीर्तयेयुः
प०	कीर्तयतु/कीर्तयतात्	कीर्तयताम्	कीर्तयन्तु
ह्य०	अकीर्तयत्	अकीर्तयताम्	अकीर्तयन्
अ०	अचीकृतत्	अचीकृतताम्	अचीकृतन्
प०	कीर्तयाञ्चकार	कीर्तयाञ्चक्रतुः	कीर्तयाञ्चक्रुः
	कीर्तयाम्बभूव/कीर्तयामास।		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	कीर्त्यात्	कीर्त्यास्ताम्	कीर्त्यासुः
श्व०	कीर्तयिता	कीर्तयितारौ	कीर्तयितारः
भ०	कीर्तयिष्यति	कीर्तयिष्यतः	कीर्तयिष्यन्ति
क्रि०	अकीर्तयिष्यत्	अकीर्तयिष्यताम्	अकीर्तयिष्यन्

१६५०. स्वर्तण् (स्वर्त्) गतौ। ८३

व०	स्वर्तयति	स्वर्तयतः	स्वर्तयन्ति
स०	स्वर्तयेत्	स्वर्तयेताम्	स्वर्तयेयुः
प०	स्वर्तयतु/स्वर्तयतात्	स्वर्तयताम्	स्वर्तयन्तु
ह्य०	अस्वर्तयत्	अस्वर्तयताम्	अस्वर्तयन्
अ०	असस्वर्तत्	असस्वर्तताम्	असस्वर्तन्
प०	स्वर्तयाञ्चकार	स्वर्तयाञ्चक्रतुः	स्वर्तयाञ्चक्रुः

स्वर्तयाम्बभूव/स्वर्तयामास।

आ०	स्वर्त्यात्	स्वर्त्यास्ताम्	स्वर्त्यासुः
श्व०	स्वर्तयिता	स्वर्तयितारौ	स्वर्तयितारः
भ०	स्वर्तयिष्यति	स्वर्तयिष्यतः	स्वर्तयिष्यन्ति
क्रि०	अस्वर्तयिष्यत्	अस्वर्तयिष्यताम्	अस्वर्तयिष्यन्

अथ थान्ताश्चत्वारः।

१६५१. पथुण् (पन्थ्) गतौ। ८४

व०	पन्थयति	पन्थयतः	पन्थयन्ति
स०	पन्थयेत्	पन्थयेताम्	पन्थयेयुः
प०	पन्थयतु/पन्थयतात्	पन्थयताम्	पन्थयन्तु
ह्य०	अपन्थयत्	अपन्थयताम्	अपन्थयन्
अ०	अपपन्थत्	अपपन्थताम्	अपपन्थन्
प०	पन्थयाञ्चकार	पन्थयाञ्चक्रतुः	पन्थयाञ्चक्रुः

पन्थयाम्बभूव/पन्थयामास।

आ०	पन्थ्यात्	पन्थ्यास्ताम्	पन्थ्यासुः
श्व०	पन्थयिता	पन्थयितारौ	पन्थयितारः
भ०	पन्थयिष्यति	पन्थयिष्यतः	पन्थयिष्यन्ति
क्रि०	अपन्थयिष्यत्	अपन्थयिष्यताम्	अपन्थयिष्यन्

१६५२. श्रथण् (श्रथ्) प्रतिहर्षे। ८५

व०	श्राथयति	श्राथयतः	श्राथयन्ति
स०	श्राथयेत्	श्राथयेताम्	श्राथयेयुः
प०	श्राथयतु/श्राथयतात्	श्राथयताम्	श्राथयन्तु
ह्य०	अश्राथयत्	अश्राथयताम्	अश्राथयन्
अ०	अशिश्रथत्	अशिश्रथताम्	अशिश्रथन्
प०	श्राथयाञ्चकार	श्राथयाञ्चक्रतुः	श्राथयाञ्चक्रुः

श्राथयाम्बभूव/श्राथयामास।

आ०	श्राथ्यात्	श्राथ्यास्ताम्	श्राथ्यासुः
श्व०	श्राथयिता	श्राथयितारौ	श्राथयितारः
भ०	श्राथयिष्यति	श्राथयिष्यतः	श्राथयिष्यन्ति
क्रि०	अश्राथयिष्यत्	अश्राथयिष्यताम्	अश्राथयिष्यन्

१६५३. पृथण् (पृथ्) प्रक्षेपणे। ८६

व०	पर्थयति	पर्थयतः	पर्थयन्ति
स०	पर्थयेत्	पर्थयेताम्	पर्थयेयुः
प०	पर्थयतु/पर्थयतात्	पर्थयताम्	पर्थयन्तु
ह्य०	अपर्थयत्	अपर्थयताम्	अपर्थयन्
अ०	अपीपृथत्	अपीपृथताम्	अपीपृथन्
	अपपर्थत्	अपपर्थताम्	अपपर्थन् इ०
प०	पर्थयाञ्चकार	पर्थयाञ्चक्रतुः	पर्थयाञ्चक्रुः

पर्थयाम्बभूव/पर्थयामास।

आ०	पर्थ्यात्	पर्थ्यास्ताम्	पर्थ्यासुः
श्व०	पर्थयिता	पर्थयितारौ	पर्थयितारः
भ०	पर्थयिष्यति	पर्थयिष्यतः	पर्थयिष्यन्ति
क्रि०	अपर्थयिष्यत्	अपर्थयिष्यताम्	अपर्थयिष्यन्

पर्थण् इति केचित्। पार्थण् इत्यपरे।

१६५४. प्रथण् (प्रथ्) प्रख्याने। ८७

व०	प्राथयति	प्राथयतः	प्राथयन्ति
स०	प्राथयेत्	प्राथयेताम्	प्राथयेयुः
प०	प्राथयतु/प्राथयतात्	प्राथयताम्	प्राथयन्तु
ह्य०	अप्राथयत्	अप्राथयताम्	अप्राथयन्
अ०	अपप्रथत्	अपप्रथताम्	अपप्रथन्
प०	प्राथयाञ्चकार	प्राथयाञ्चक्रतुः	प्राथयाञ्चक्रुः

प्राथयाम्बभूव/प्राथयामास।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	प्राथ्यात्	प्राथ्यास्ताम्	प्राथ्यासुः
श्व०	प्राथयिता	प्राथयितारौ	प्राथयितारः
भ०	प्राथयिष्यति	प्राथयिष्यतः	प्राथयिष्यन्ति
क्रि०	अप्राथयिष्यत्	अप्राथयिष्यताम्	अप्राथयिष्यन्

॥अथ दान्ताः पञ्च॥

१६५५. छदण् (छद्) संवरणे। ८८

व०	छादयति	छादयतः	छादयन्ति
स०	छादयेत्	छादयेताम्	छादयेयुः
प०	छादयतु/छादयतात्	छादयताम्	छादयन्तु
ह्य०	अच्छादयत्	अच्छादयताम्	अच्छादयन्
अ०	अचिच्छदत्	अचिच्छदताम्	अचिच्छदन्
प०	छादयाञ्चकार	छादयाञ्चक्रतुः	छादयाञ्चक्रुः

छादयाम्बभूव/छादयामास।

आ०	छाद्यात्	छाद्यास्ताम्	छाद्यासुः
श्व०	छादयिता	छादयितारौ	छादयितारः
भ०	छादयिष्यति	छादयिष्यतः	छादयिष्यन्ति
क्रि०	अच्छादयिष्यत्	अच्छादयिष्यताम्	अच्छादयिष्यन्

१६५६. चुदण् (चुद्) संचोदने।

संचोदनं प्रेरणम्। ८९

व०	चोदयति	चोदयतः	चोदयन्ति
स०	चोदयेत्	चोदयेताम्	चोदयेयुः
प०	चोदयतु/चोदयतात्	चोदयताम्	चोदयन्तु
ह्य०	अचोदयत्	अचोदयताम्	अचोदयन्
अ०	अचूचुदत्	अचूचुदताम्	अचूचुदन्
प०	चोदयाञ्चकार	चोदयाञ्चक्रतुः	चोदयाञ्चक्रुः

चोदयाम्बभूव/चोदयामास।

आ०	चोद्यात्	चोद्यास्ताम्	चोद्यासुः
श्व०	चोदयिता	चोदयितारौ	चोदयितारः
भ०	चोदयिष्यति	चोदयिष्यतः	चोदयिष्यन्ति
क्रि०	अचोदयिष्यत्	अचोदयिष्यताम्	अचोदयिष्यन्

१६५७. मिदुण् (मिन्द्) स्नेहने। ९०

व०	मिन्दयति	मिन्दयतः	मिन्दयन्ति
स०	मिन्दयेत्	मिन्दयेताम्	मिन्दयेयुः
प०	मिन्दयतु/मिन्दयतात्	मिन्दयताम्	मिन्दयन्तु
ह्य०	अमिन्दयत्	अमिन्दयताम्	अमिन्दयन्
अ०	अमिमिन्दत्	अमिमिन्दताम्	अमिमिन्दन्
प०	मिन्दयाञ्चकार	मिन्दयाञ्चक्रतुः	मिन्दयाञ्चक्रुः

मिन्दयाम्बभूव/मिन्दयामास।

आ०	मिन्द्यात्	मिन्द्यास्ताम्	मिन्द्यासुः
श्व०	मिन्दयिता	मिन्दयितारौ	मिन्दयितारः
भ०	मिन्दयिष्यति	मिन्दयिष्यतः	मिन्दयिष्यन्ति
क्रि०	अमिन्दयिष्यत्	अमिन्दयिष्यताम्	अमिन्दयिष्यन्

१६५८. गुर्दण् (गुर्द) निकेतने। पूर्वनिकेतने इति केचित्।

पूर्वनिकेतनमाद्यो वासः। ९१

व०	गूर्दयति	गूर्दयतः	गूर्दयन्ति
स०	गूर्दयेत्	गूर्दयेताम्	गूर्दयेयुः
प०	गूर्दयतु/गूर्दयतात्	गूर्दयताम्	गूर्दयन्तु
ह्य०	अगूर्दयत्	अगूर्दयताम्	अगूर्दयन्
अ०	अजुगूर्दत्	अजुगूर्दताम्	अजुगूर्दन्
प०	गूर्दयाञ्चकार	गूर्दयाञ्चक्रतुः	गूर्दयाञ्चक्रुः

गूर्दयाम्बभूव/गूर्दयामास।

आ०	गूर्द्यात्	गूर्द्यास्ताम्	गूर्द्यासुः
श्व०	गूर्दयिता	गूर्दयितारौ	गूर्दयितारः
भ०	गूर्दयिष्यति	गूर्दयिष्यतः	गूर्दयिष्यन्ति
क्रि०	अगूर्दयिष्यत्	अगूर्दयिष्यताम्	अगूर्दयिष्यन्

१६५९. छर्दण् (छर्द) वमने। ९२

व०	छर्दयति	छर्दयतः	छर्दयन्ति
स०	छर्दयेत्	छर्दयेताम्	छर्दयेयुः
प०	छर्दयतु/छर्दयतात्	छर्दयताम्	छर्दयन्तु
ह्य०	अछर्दयत्	अछर्दयताम्	अछर्दयन्
अ०	अचच्छर्दत्	अचच्छर्दताम्	अचच्छर्दन्
प०	छर्दयाञ्चकार	छर्दयाञ्चक्रतुः	छर्दयाञ्चक्रुः

छर्दयाम्बभूव/छर्दयामास।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	छर्द्यात्	छर्द्यास्ताम्	छर्द्यासुः
श्व०	छर्दयिता	छर्दयितारौ	छर्दयितारः
भ०	छर्दयिष्यति	छर्दयिष्यतः	छर्दयिष्यन्ति
क्रि०	अछर्दयिष्यत्	अछर्दयिष्यताम्	अछर्दयिष्यन्

१६५९-२. गर्दण् (गर्द्) शब्दे इत्येके पेठुः।

व०	गर्दयति	गर्दयतः	गर्दयन्ति
स०	गर्दयेत्	गर्दयेताम्	गर्दयेयुः
प०	गर्दयतु/गर्दयतात्	गर्दयताम्	गर्दयन्तु
ह्य०	अगर्दयत्	अगर्दयताम्	अगर्दयन्
अ०	अजगर्दत्	अजगर्दताम्	अजगर्दन्
प०	गर्दयाञ्चकार	गर्दयाञ्चक्रतुः	गर्दयाञ्चक्रुः

गर्दयाम्बभूव/गर्दयामास।

आ०	गर्द्यात्	गर्द्यास्ताम्	गर्द्यासुः
श्व०	गर्दयिता	गर्दयितारौ	गर्दयितारः
भ०	गर्दयिष्यति	गर्दयिष्यतः	गर्दयिष्यन्ति
क्रि०	अगर्दयिष्यत्	अगर्दयिष्यताम्	अगर्दयिष्यन्

॥अथ धान्ताः पञ्च॥

१६६०. बुधुण् (बुन्ध्) हिंसायाम्। ९३

व०	बुन्धयति	बुन्धयतः	बुन्धयन्ति
स०	बुन्धयेत्	बुन्धयेताम्	बुन्धयेयुः
प०	बुन्धयतु/बुन्धयतात्	बुन्धयताम्	बुन्धयन्तु
ह्य०	अबुन्धयत्	अबुन्धयताम्	अबुन्धयन्
अ०	अबुबुन्धत्	अबुबुन्धताम्	अबुबुन्धन्
प०	बुन्धयाञ्चकार	बुन्धयाञ्चक्रतुः	बुन्धयाञ्चक्रुः

बुन्धयाम्बभूव/बुन्धयामास।

आ०	बुन्ध्यात्	बुन्ध्यास्ताम्	बुन्ध्यासुः
श्व०	बुन्धयिता	बुन्धयितारौ	बुन्धयितारः
भ०	बुन्धयिष्यति	बुन्धयिष्यतः	बुन्धयिष्यन्ति
क्रि०	अबुन्धयिष्यत्	अबुन्धयिष्यताम्	अबुन्धयिष्यन्

१६६१. वर्धण् (वर्ध्) छेदनपूरणयोः। ९४

व०	वर्धयति	वर्धयतः	वर्धयन्ति
स०	वर्धयेत्	वर्धयेताम्	वर्धयेयुः
प०	वर्धयतु/वर्धयतात्	वर्धयताम्	वर्धयन्तु
ह्य०	अवर्धयत्	अवर्धयताम्	अवर्धयन्
अ०	अववर्धत्	अववर्धताम्	अववर्धन्
प०	वर्धयाञ्चकार	वर्धयाञ्चक्रतुः	वर्धयाञ्चक्रुः

वर्धयाम्बभूव/वर्धयामास।

आ०	वर्ध्यात्	वर्ध्यास्ताम्	वर्ध्यासुः
श्व०	वर्धयिता	वर्धयितारौ	वर्धयितारः
भ०	वर्धयिष्यति	वर्धयिष्यतः	वर्धयिष्यन्ति
क्रि०	अवर्धयिष्यत्	अवर्धयिष्यताम्	अवर्धयिष्यन्

१६६२. गर्धण् (गर्ध्) अभिकाङ्क्षायाम्। ९५

व०	गर्धयति	गर्धयतः	गर्धयन्ति
स०	गर्धयेत्	गर्धयेताम्	गर्धयेयुः
प०	गर्धयतु/गर्धयतात्	गर्धयताम्	गर्धयन्तु
ह्य०	अगर्धयत्	अगर्धयताम्	अगर्धयन्
अ०	अवगर्धत्	अवगर्धताम्	अवगर्धन्
प०	गर्धयाञ्चकार	गर्धयाञ्चक्रतुः	गर्धयाञ्चक्रुः

गर्धयाम्बभूव/गर्धयामास।

आ०	गर्ध्यात्	गर्ध्यास्ताम्	गर्ध्यासुः
श्व०	गर्धयिता	गर्धयितारौ	गर्धयितारः
भ०	गर्धयिष्यति	गर्धयिष्यतः	गर्धयिष्यन्ति
क्रि०	अगर्धयिष्यत्	अगर्धयिष्यताम्	अगर्धयिष्यन्

१६६३. बन्धण् (बन्ध्) संयमने। ९६

व०	बन्धयति	बन्धयतः	बन्धयन्ति
स०	बन्धयेत्	बन्धयेताम्	बन्धयेयुः
प०	बन्धयतु/बन्धयतात्	बन्धयताम्	बन्धयन्तु
ह्य०	अबन्धयत्	अबन्धयताम्	अबन्धयन्
अ०	अबबन्धत्	अबबन्धताम्	अबबन्धन्
प०	बन्धयाञ्चकार	बन्धयाञ्चक्रतुः	बन्धयाञ्चक्रुः

बन्धयाम्बभूव/बन्धयामास।

आ०	बन्ध्यात्	बन्ध्यास्ताम्	बन्ध्यासुः
श्व०	बन्धयिता	बन्धयितारौ	बन्धयितारः
भ०	बन्धयिष्यति	बन्धयिष्यतः	बन्धयिष्यन्ति
क्रि०	अबन्धयिष्यत्	अबन्धयिष्यताम्	अबन्धयिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६६४. बधण् (बध्) संयमने। ९७

व०	बाधयति	बाधयतः	बाधयन्ति
स०	बाधयेत्	बाधयेताम्	बाधयेयुः
प०	बाधयतु/बाधयतात्	बाधयताम्	बाधयन्तु
ह्य०	अबाधयत्	अबाधयताम्	अबाधयन्
अ०	अबीबधत्	अबीबधताम्	अबीबधन्
प०	बाधयाञ्चकार	बाधयाञ्चक्रतुः	बाधयाञ्चक्रुः

बाधयाम्बभूव/बाधयामास।

आ०	बाध्यात्	बाध्यास्ताम्	बाध्यासुः
श्व०	बाधयिता	बाधयितारौ	बाधयितारः
भ०	बाधयिष्यति	बाधयिष्यतः	बाधयिष्यन्ति
क्रि०	अबाधयिष्यत्	अबाधयिष्यताम्	अबाधयिष्यन्

अथ पान्ता अष्टौ।

१६६५. छपुण् (छम्प्) गतौ। ९८

व०	छम्पयति	छम्पयतः	छम्पयन्ति
स०	छम्पयेत्	छम्पयेताम्	छम्पयेयुः
प०	छम्पयतु/छम्पयतात्	छम्पयताम्	छम्पयन्तु
ह्य०	अच्छम्पयत्	अच्छम्पयताम्	अच्छम्पयन्
अ०	अचच्छम्पत्	अचच्छम्पताम्	अचच्छम्पन्
प०	छम्पयाञ्चकार	छम्पयाञ्चक्रतुः	छम्पयाञ्चक्रुः

छम्पयाम्बभूव/छम्पयामास।

आ०	छम्प्यात्	छम्प्यास्ताम्	छम्प्यासुः
श्व०	छम्पयिता	छम्पयितारौ	छम्पयितारः
भ०	छम्पयिष्यति	छम्पयिष्यतः	छम्पयिष्यन्ति
क्रि०	अछम्पयिष्यत्	अछम्पयिष्यताम्	अछम्पयिष्यन्

१६६६. क्षपुण् (क्षम्प्) क्षान्तौ। ९९

व०	क्षम्पयति	क्षम्पयतः	क्षम्पयन्ति
स०	क्षम्पयेत्	क्षम्पयेताम्	क्षम्पयेयुः
प०	क्षम्पयतु/क्षम्पयतात्	क्षम्पयताम्	क्षम्पयन्तु
ह्य०	अक्षम्पयत्	अक्षम्पयताम्	अक्षम्पयन्
अ०	अचक्षम्पत्	अचक्षम्पताम्	अचक्षम्पन्
प०	क्षम्पयाञ्चकार	क्षम्पयाञ्चक्रतुः	क्षम्पयाञ्चक्रुः

क्षम्पयाम्बभूव/क्षम्पयामास।

आ०	क्षम्प्यात्	क्षम्प्यास्ताम्	क्षम्प्यासुः
श्व०	क्षम्पयिता	क्षम्पयितारौ	क्षम्पयितारः
भ०	क्षम्पयिष्यति	क्षम्पयिष्यतः	क्षम्पयिष्यन्ति
क्रि०	अक्षम्पयिष्यत्	अक्षम्पयिष्यताम्	अक्षम्पयिष्यन्

१६६७. ष्टुपण् (स्तूप्) समुच्छ्राये। १००

व०	स्तूपयति	स्तूपयतः	स्तूपयन्ति
स०	स्तूपयेत्	स्तूपयेताम्	स्तूपयेयुः
प०	स्तूपयतु/स्तूपयतात्	स्तूपयताम्	स्तूपयन्तु
ह्य०	अस्तूपयत्	अस्तूपयताम्	अस्तूपयन्
अ०	अतुष्टुपत्	अतुष्टुपताम्	अतुष्टुपन्
प०	स्तूपयाञ्चकार	स्तूपयाञ्चक्रतुः	स्तूपयाञ्चक्रुः

स्तूपयाम्बभूव/स्तूपयामास।

आ०	स्तूप्यात्	स्तूप्यास्ताम्	स्तूप्यासुः
श्व०	स्तूपयिता	स्तूपयितारौ	स्तूपयितारः
भ०	स्तूपयिष्यति	स्तूपयिष्यतः	स्तूपयिष्यन्ति
क्रि०	अस्तूपयिष्यत्	अस्तूपयिष्यताम्	अस्तूपयिष्यन्

१६६८. डिपण् (डिप्) क्षेपे। १०१

व०	डेपयति	डेपयतः	डेपयन्ति
स०	डेपयेत्	डेपयेताम्	डेपयेयुः
प०	डेपयतु/डेपयतात्	डेपयताम्	डेपयन्तु
ह्य०	अडेपयत्	अडेपयताम्	अडेपयन्
अ०	अडीडिपत्	अडीडिपताम्	अडीडिपन्
प०	डेपयाञ्चकार	डेपयाञ्चक्रतुः	डेपयाञ्चक्रुः

डेपयाम्बभूव/डेपयामास।

आ०	डेप्यात्	डेप्यास्ताम्	डेप्यासुः
श्व०	डेपयिता	डेपयितारौ	डेपयितारः
भ०	डेपयिष्यति	डेपयिष्यतः	डेपयिष्यन्ति
क्रि०	अडेपयिष्यत्	अडेपयिष्यताम्	अडेपयिष्यन्

१६६९. ह्लपण् (ह्लप्) व्यक्तायां वाचि। १०२

व०	ह्लापयति	ह्लापयतः	ह्लापयन्ति
स०	ह्लापयेत्	ह्लापयेताम्	ह्लापयेयुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	ह्लापयतु/ह्लापयतात्	ह्लापयताम्	ह्लापयन्तु
ह्य०	अह्लापयत्	अह्लापयताम्	अह्लापयन्
अ०	अजिह्लपत्	अजिह्लपताम्	अजिह्लपन्
प०	ह्लापयाञ्चकार	ह्लापयाञ्चक्रतुः	ह्लापयाञ्चक्रुः
	ह्लापयाम्बभूव/ह्लापयामास।		
आ०	ह्लाप्यात्	ह्लाप्यास्ताम्	ह्लाप्यासुः
श्व०	ह्लापयिता	ह्लापयितारौ	ह्लापयितारः
भ०	ह्लापयिष्यति	ह्लापयिष्यतः	ह्लापयिष्यन्ति
क्रि०	अह्लापयिष्यत्	अह्लापयिष्यताम्	अह्लापयिष्यन्

१६७०. डपुण् (डम्प्) संघाते।

अभिमर्दने इति केचित्। १०३

व०	डम्पयति	डम्पयतः	डम्पयन्ति
स०	डम्पयेत्	डम्पयेताम्	डम्पयेयुः
प०	डम्पयतु/डम्पयतात्	डम्पयताम्	डम्पयन्तु
ह्य०	अडम्पयत्	अडम्पयताम्	अडम्पयन्
अ०	अडडम्पत्	अडडम्पताम्	अडडम्पन्
प०	डम्पयाञ्चकार	डम्पयाञ्चक्रतुः	डम्पयाञ्चक्रुः
	डम्पयाम्बभूव/डम्पयामास।		
आ०	डम्प्यात्	डम्प्यास्ताम्	डम्प्यासुः
श्व०	डम्पयिता	डम्पयितारौ	डम्पयितारः
भ०	डम्पयिष्यति	डम्पयिष्यतः	डम्पयिष्यन्ति
क्रि०	अडम्पयिष्यत्	अडम्पयिष्यताम्	अडम्पयिष्यन्

१६७१. डिपुण् (डिम्प्) संघाते।

अभिमर्दने इति केचित्। १०४

व०	डिम्पयति	डिम्पयतः	डिम्पयन्ति
स०	डिम्पयेत्	डिम्पयेताम्	डिम्पयेयुः
प०	डिम्पयतु/डिम्पयतात्	डिम्पयताम्	डिम्पयन्तु
ह्य०	अडिम्पयत्	अडिम्पयताम्	अडिम्पयन्
अ०	अडिडिम्पत्	अडिडिम्पताम्	अडिडिम्पन्
प०	डिम्पयाञ्चकार	डिम्पयाञ्चक्रतुः	डिम्पयाञ्चक्रुः
	डिम्पयाम्बभूव/डिम्पयामास।		
आ०	डिम्प्यात्	डिम्प्यास्ताम्	डिम्प्यासुः
श्व०	डिम्पयिता	डिम्पयितारौ	डिम्पयितारः
भ०	डिम्पयिष्यति	डिम्पयिष्यतः	डिम्पयिष्यन्ति
क्रि०	अडिम्पयिष्यत्	अडिम्पयिष्यताम्	अडिम्पयिष्यन्

१६७२. शर्पण् (शर्प्) माने। १०५

व०	शूर्पयति	शूर्पयतः	शूर्पयन्ति
स०	शूर्पयेत्	शूर्पयेताम्	शूर्पयेयुः
प०	शूर्पयतु/शूर्पयतात्	शूर्पयताम्	शूर्पयन्तु
ह्य०	अशूर्पयत्	अशूर्पयताम्	अशूर्पयन्
अ०	अशुशूर्पत्	अशुशूर्पताम्	अशुशूर्पन्
प०	शूर्पयाञ्चकार	शूर्पयाञ्चक्रतुः	शूर्पयाञ्चक्रुः
	शूर्पयाम्बभूव/शूर्पयामास।		
आ०	शूर्प्यात्	शूर्प्यास्ताम्	शूर्प्यासुः
श्व०	शूर्पयिता	शूर्पयितारौ	शूर्पयितारः
भ०	शूर्पयिष्यति	शूर्पयिष्यतः	शूर्पयिष्यन्ति
क्रि०	अशूर्पयिष्यत्	अशूर्पयिष्यताम्	अशूर्पयिष्यन्

।।अथ बान्ता अष्टौ।।

१६७३. शुल्बण् (शुल्ब्) सर्जने च।

चकारान्माने। १०६

व०	शुल्बयति	शुल्बयतः	शुल्बयन्ति
स०	शुल्बयेत्	शुल्बयेताम्	शुल्बयेयुः
प०	शुल्बयतु/शुल्बयतात्	शुल्बयताम्	शुल्बयन्तु
ह्य०	अशुल्बयत्	अशुल्बयताम्	अशुल्बयन्
अ०	अशुशुल्बत्	अशुशुल्बताम्	अशुशुल्बन्
प०	शुल्बयाञ्चकार	शुल्बयाञ्चक्रतुः	शुल्बयाञ्चक्रुः
	शुल्बयाम्बभूव/शुल्बयामास।		
आ०	शुल्ब्यात्	शुल्ब्यास्ताम्	शुल्ब्यासुः
श्व०	शुल्बयिता	शुल्बयितारौ	शुल्बयितारः
भ०	शुल्बयिष्यति	शुल्बयिष्यतः	शुल्बयिष्यन्ति
क्रि०	अशुल्बयिष्यत्	अशुल्बयिष्यताम्	अशुल्बयिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६७४. डबुण् (डम्ब्) क्षेपे। १०७

व०	डम्बयति	डम्बयतः	डम्बयन्ति
स०	डम्बयेत्	डम्बयेताम्	डम्बयेयुः
प०	डम्बयतु/डम्बयतात्	डम्बयताम्	डम्बयन्तु
ह्य०	अडम्बयत्	अडम्बयताम्	अडम्बयन्
अ०	अडडम्बत्	अडडम्बताम्	अडडम्बन्
प०	डम्बयाञ्चकार	डम्बयाञ्चक्रतुः	डम्बयाञ्चक्रुः

डम्बयाम्बभूव/डम्बयामास।

आ०	डम्ब्यात्	डम्ब्यास्ताम्	डम्ब्यासुः
श्व०	डम्बयिता	डम्बयितारौ	डम्बयितारः
भ०	डम्बयिष्यति	डम्बयिष्यतः	डम्बयिष्यन्ति
क्रि०	अडम्बयिष्यत्	अडम्बयिष्यताम्	अडम्बयिष्यन्

१६७५. डिबुण् (डिम्ब्) क्षेपे। १०८

व०	डिम्बयति	डिम्बयतः	डिम्बयन्ति
स०	डिम्बयेत्	डिम्बयेताम्	डिम्बयेयुः
प०	डिम्बयतु/डिम्बयतात्	डिम्बयताम्	डिम्बयन्तु
ह्य०	अडिम्बयत्	अडिम्बयताम्	अडिम्बयन्
अ०	अडिडिम्बत्	अडिडिम्बताम्	अडिडिम्बन्
प०	डिम्बयाञ्चकार	डिम्बयाञ्चक्रतुः	डिम्बयाञ्चक्रुः

डिम्बयाम्बभूव/डिम्बयामास।

आ०	डिम्ब्यात्	डिम्ब्यास्ताम्	डिम्ब्यासुः
श्व०	डिम्बयिता	डिम्बयितारौ	डिम्बयितारः
भ०	डिम्बयिष्यति	डिम्बयिष्यतः	डिम्बयिष्यन्ति
क्रि०	अडिम्बयिष्यत्	अडिम्बयिष्यताम्	अडिम्बयिष्यन्

१६७५-२. दभण् (दभ्)। केचित्तु दभदभुदिभूनपि भान्तानिहाधीयते।

व०	दाभयति	दाभयतः	दाभयन्ति
स०	दाभयेत्	दाभयेताम्	दाभयेयुः
प०	दाभयतु/दाभयतात्	दाभयताम्	दाभयन्तु
ह्य०	अदाभयत्	अदाभयताम्	अदाभयन्
अ०	अदीदभत्	अदीदभताम्	अदीदभन्
प०	दाभयाञ्चकार	दाभयाञ्चक्रतुः	दाभयाञ्चक्रुः

दाभयाम्बभूव/दाभयामास।

आ०	दाभ्यात्	दाभ्यास्ताम्	दाभ्यासुः
श्व०	दाभयिता	दाभयितारौ	दाभयितारः
भ०	दाभयिष्यति	दाभयिष्यतः	दाभयिष्यन्ति
क्रि०	अदाभयिष्यत्	अदाभयिष्यताम्	अदाभयिष्यन्

१६७५-३. दभुण् (दम्भ्)।

व०	दम्भयति	दम्भयतः	दम्भयन्ति
स०	दम्भयेत्	दम्भयेताम्	दम्भयेयुः
प०	दम्भयतु/दम्भयतात्	दम्भयताम्	दम्भयन्तु
ह्य०	अदम्भयत्	अदम्भयताम्	अदम्भयन्
अ०	अददम्भत्	अददम्भताम्	अददम्भन्
प०	दम्भयाञ्चकार	दम्भयाञ्चक्रतुः	दम्भयाञ्चक्रुः

दम्भयाम्बभूव/दम्भयामास।

आ०	दम्भ्यात्	दम्भ्यास्ताम्	दम्भ्यासुः
श्व०	दम्भयिता	दम्भयितारौ	दम्भयितारः
भ०	दम्भयिष्यति	दम्भयिष्यतः	दम्भयिष्यन्ति
क्रि०	अदम्भयिष्यत्	अदम्भयिष्यताम्	अदम्भयिष्यन्

१६७५. दिभण् (दिम्भ्)।

व०	दिम्भयति	दिम्भयतः	दिम्भयन्ति
स०	दिम्भयेत्	दिम्भयेताम्	दिम्भयेयुः
प०	दिम्भयतु/दिम्भयतात्	दिम्भयताम्	दिम्भयन्तु
ह्य०	अदिम्भयत्	अदिम्भयताम्	अदिम्भयन्
अ०	अदिदिम्भत्	अदिदिम्भताम्	अदिदिम्भन्
प०	दिम्भयाञ्चकार	दिम्भयाञ्चक्रतुः	दिम्भयाञ्चक्रुः

दिम्भयाम्बभूव/दिम्भयामास।

आ०	दिम्भ्यात्	दिम्भ्यास्ताम्	दिम्भ्यासुः
श्व०	दिम्भयिता	दिम्भयितारौ	दिम्भयितारः
भ०	दिम्भयिष्यति	दिम्भयिष्यतः	दिम्भयिष्यन्ति
क्रि०	अदिम्भयिष्यत्	अदिम्भयिष्यताम्	अदिम्भयिष्यन्

१६७६. सम्बण् (सम्ब्) सम्बन्धे। १०९

व०	सम्बयति	सम्बयतः	सम्बयन्ति
स०	सम्बयेत्	सम्बयेताम्	सम्बयेयुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	सम्बयतु/सम्बयतात्	सम्बयताम्	सम्बयन्तु
ह्य०	असम्बयत्	असम्बयताम्	असम्बयन्
अ०	अससम्बत्	अससम्बताम्	अससम्बन्
प०	सम्बयाञ्चकार	सम्बयाञ्चक्रतुः	सम्बयाञ्चक्रुः
	सम्बयाम्बभूव/सम्बयामास।		
आ०	सम्ब्यात्	सम्ब्यास्ताम्	सम्ब्यासुः
श्व०	सम्बयिता	सम्बयितारौ	सम्बयितारः
भ०	सम्बयिष्यति	सम्बयिष्यतः	सम्बयिष्यन्ति
क्रि०	असम्बयिष्यत्	असम्बयिष्यताम्	असम्बयिष्यन्

१६७७. कुबुण् (कुम्ब्) आच्छादने। ११०

व०	कुम्बयति	कुम्बयतः	कुम्बयन्ति
स०	कुम्बयेत्	कुम्बयेताम्	कुम्बयेयुः
प०	कुम्बयतु/कुम्बयतात्	कुम्बयताम्	कुम्बयन्तु
ह्य०	अकुम्बयत्	अकुम्बयताम्	अकुम्बयन्
अ०	अचुकुम्बत्	अचुकुम्बताम्	अचुकुम्बन्
प०	कुम्बयाञ्चकार	कुम्बयाञ्चक्रतुः	कुम्बयाञ्चक्रुः
	कुम्बयाम्बभूव/कुम्बयामास।		
आ०	कुम्ब्यात्	कुम्ब्यास्ताम्	कुम्ब्यासुः
श्व०	कुम्बयिता	कुम्बयितारौ	कुम्बयितारः
भ०	कुम्बयिष्यति	कुम्बयिष्यतः	कुम्बयिष्यन्ति
क्रि०	अकुम्बयिष्यत्	अकुम्बयिष्यताम्	अकुम्बयिष्यन्

१६७८. लुबुण् (लुम्ब्) अर्दने। १११

व०	लुम्बयति	लुम्बयतः	लुम्बयन्ति
स०	लुम्बयेत्	लुम्बयेताम्	लुम्बयेयुः
प०	लुम्बयतु/लुम्बयतात्	लुम्बयताम्	लुम्बयन्तु
ह्य०	अलुम्बयत्	अलुम्बयताम्	अलुम्बयन्
अ०	अलुलुम्बत्	अलुलुम्बताम्	अलुलुम्बन्
प०	लुम्बयाञ्चकार	लुम्बयाञ्चक्रतुः	लुम्बयाञ्चक्रुः
	लुम्बयाम्बभूव/लुम्बयामास।		
आ०	लुम्ब्यात्	लुम्ब्यास्ताम्	लुम्ब्यासुः
श्व०	लुम्बयिता	लुम्बयितारौ	लुम्बयितारः
भ०	लुम्बयिष्यति	लुम्बयिष्यतः	लुम्बयिष्यन्ति
क्रि०	अलुम्बयिष्यत्	अलुम्बयिष्यताम्	अलुम्बयिष्यन्

१६७९. तुबुण् (तुम्ब्) अर्दने। ११२

व०	तुम्बयति	तुम्बयतः	तुम्बयन्ति
स०	तुम्बयेत्	तुम्बयेताम्	तुम्बयेयुः
प०	तुम्बयतु/तुम्बयतात्	तुम्बयताम्	तुम्बयन्तु
ह्य०	अतुम्बयत्	अतुम्बयताम्	अतुम्बयन्
अ०	अतुतुम्बत्	अतुतुम्बताम्	अतुतुम्बन्
प०	तुम्बयाञ्चकार	तुम्बयाञ्चक्रतुः	तुम्बयाञ्चक्रुः
	तुम्बयाम्बभूव/तुम्बयामास।		
आ०	तुम्ब्यात्	तुम्ब्यास्ताम्	तुम्ब्यासुः
श्व०	तुम्बयिता	तुम्बयितारौ	तुम्बयितारः
भ०	तुम्बयिष्यति	तुम्बयिष्यतः	तुम्बयिष्यन्ति
क्रि०	अतुम्बयिष्यत्	अतुम्बयिष्यताम्	अतुम्बयिष्यन्

१६८०. पुर्बण् (पुर्ब्) निकेतने। ११३

व०	पूर्बयति	पूर्बयतः	पूर्बयन्ति
स०	पूर्बयेत्	पूर्बयेताम्	पूर्बयेयुः
प०	पूर्बयतु/पूर्बयतात्	पूर्बयताम्	पूर्बयन्तु
ह्य०	अपूर्बयत्	अपूर्बयताम्	अपूर्बयन्
अ०	अपुपूर्बत्	अपुपूर्बताम्	अपुपूर्बन्
प०	पूर्बयाञ्चकार	पूर्बयाञ्चक्रतुः	पूर्बयाञ्चक्रुः
	पूर्बयाम्बभूव/पूर्बयामास।		
आ०	पूर्ब्यात्	पूर्ब्यास्ताम्	पूर्ब्यासुः
श्व०	पूर्बयिता	पूर्बयितारौ	पूर्बयितारः
भ०	पूर्बयिष्यति	पूर्बयिष्यतः	पूर्बदिष्यन्ति
क्रि०	अपूर्बयिष्यत्	अपूर्बयिष्यताम्	अपूर्बयिष्यन्

।।अथ मान्ताः।।

१६८१. यमण् (यम्) परिवेषणे। ११४

व०	यामयति	यामयतः	यामयन्ति
स०	यामयेत्	यामयेताम्	यामयेयुः
प०	यामयतु/यामयतात्	यामयताम्	यामयन्तु
ह्य०	अयामयत्	अयामयताम्	अयामयन्
अ०	अयीयमत्	अयीयमताम्	अयीयमन्
प०	यामयाञ्चकार	यामयाञ्चक्रतुः	यामयाञ्चक्रुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यामयाम्बभूव/यामयामास।

आ०	याम्यात्	याम्यास्ताम्	याम्यासुः
श्व०	यामयिता	यामयितारौ	यामयितारः
भ०	यामयिष्यति	यामयिष्यतः	यामयिष्यन्ति
क्रि०	अयामयिष्यत्	अयामयिष्यताम्	अयामयिष्यन्

॥अथ यान्तः॥

१६८२. व्ययण् (व्यय्) क्षये। ११५

व०	व्याययति	व्याययतः	व्याययन्ति
स०	व्याययेत्	व्याययेताम्	व्याययेयुः
प०	व्याययतु/व्याययतात्	व्याययताम्	व्याययन्तु
ह्य०	अव्याययत्	अव्याययताम्	अव्याययन्
अ०	अविव्ययत्	अविव्ययताम्	अविव्ययन्
प०	व्याययाञ्चकार	व्याययाञ्चक्रतुः	व्याययाञ्चक्रुः

व्याययाम्बभूव/व्यायव्यायास्

आ०	व्याय्यात्	व्याय्यास्ताम्	व्याय्यासुः
श्व०	व्याययिता	व्याययितारौ	व्याययितारः
भ०	व्याययिष्यति	व्याययिष्यतः	व्याययिष्यन्ति
क्रि०	अव्याययिष्यत्	अव्याययिष्यताम्	अव्याययिष्यन्

॥अथ रान्तास्त्रयः॥

१६८३. यन्त्रुण् (यन्त्र्) संकोचने। ११६

व०	यन्त्रयति	यन्त्रयतः	यन्त्रयन्ति
स०	यन्त्रयेत्	यन्त्रयेताम्	यन्त्रयेयुः
प०	यन्त्रयतु/यन्त्रयतात्	यन्त्रयताम्	यन्त्रयन्तु
ह्य०	अयन्त्रयत्	अयन्त्रयताम्	अयन्त्रयन्
अ०	अययन्त्रत्	अययन्त्रताम्	अययन्त्रन्
प०	यन्त्रयाञ्चकार	यन्त्रयाञ्चक्रतुः	यन्त्रयाञ्चक्रुः

यन्त्रयाम्बभूव/यन्त्रयामास।

आ०	यन्त्र्यात्	यन्त्र्यास्ताम्	यन्त्र्यासुः
श्व०	यन्त्रयिता	यन्त्रयितारौ	यन्त्रयितारः
भ०	यन्त्रयिष्यति	यन्त्रयिष्यतः	यन्त्रयिष्यन्ति
क्रि०	अयन्त्रयिष्यत्	अयन्त्रयिष्यताम्	अयन्त्रयिष्यन्

१६८४. कुद्रण् (कुन्द्र) अनृतभाषणे। ११७

व०	कुन्द्रयति	कुन्द्रयतः	कुन्द्रयन्ति
स०	कुन्द्रयेत्	कुन्द्रयेताम्	कुन्द्रयेयुः
प०	कुन्द्रयतु/कुन्द्रयतात्	कुन्द्रयताम्	कुन्द्रयन्तु
ह्य०	अकुन्द्रयत्	अकुन्द्रयताम्	अकुन्द्रयन्
अ०	अचुकुन्द्रत्	अचुकुन्द्रताम्	अचुकुन्द्रन्
प०	कुन्द्रयाञ्चकार	कुन्द्रयाञ्चक्रतुः	कुन्द्रयाञ्चक्रुः

कुन्द्रयाम्बभूव/कुन्द्रयामास।

आ०	कुन्द्यात्	कुन्द्यास्ताम्	कुन्द्यासुः
श्व०	कुन्द्रयिता	कुन्द्रयितारौ	कुन्द्रयितारः
भ०	कुन्द्रयिष्यति	कुन्द्रयिष्यतः	कुन्द्रयिष्यन्ति
क्रि०	अकुन्द्रयिष्यत्	अकुन्द्रयिष्यताम्	अकुन्द्रयिष्यन्

१६८५. श्वभ्रण् (श्वभ्र्) गतौ। ११८

व०	श्वभ्रयति	श्वभ्रयतः	श्वभ्रयन्ति
स०	श्वभ्रयेत्	श्वभ्रयेताम्	श्वभ्रयेयुः
प०	श्वभ्रयतु/श्वभ्रयतात्	श्वभ्रयताम्	श्वभ्रयन्तु
ह्य०	अश्वभ्रयत्	अश्वभ्रयताम्	अश्वभ्रयन्
अ०	अशश्वभ्रत्	अशश्वभ्रताम्	अशश्वभ्रन्
प०	श्वभ्रयाञ्चकार	श्वभ्रयाञ्चक्रतुः	श्वभ्रयाञ्चक्रुः

श्वभ्रयाम्बभूव/श्वभ्रयामास।

आ०	श्वभ्र्यात्	श्वभ्र्यास्ताम्	श्वभ्र्यासुः
श्व०	श्वभ्रयिता	श्वभ्रयितारौ	श्वभ्रयितारः
भ०	श्वभ्रयिष्यति	श्वभ्रयिष्यतः	श्वभ्रयिष्यन्ति
क्रि०	अश्वभ्रयिष्यत्	अश्वभ्रयिष्यताम्	अश्वभ्रयिष्यन्

॥अथ लान्ताः षोडश॥

१६८६. तिलण् (तिल्) स्नेहने। ११९

व०	तेलयति	तेलयतः	तेलयन्ति
स०	तेलयेत्	तेलयेताम्	तेलयेयुः
प०	तेलयतु/तेलयतात्	तेलयताम्	तेलयन्तु
ह्य०	अतेलयत्	अतेलयताम्	अतेलयन्
अ०	अतीतिलत्	अतीतिलताम्	अतीतिलन्
प०	तेलयाञ्चकार	तेलयाञ्चक्रतुः	तेलयाञ्चक्रुः

तेलयाम्बभूव/तेलयामास।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	तेल्यात्	तेल्यास्ताम्	तेल्यासुः
श्व०	तेलयिता	तेलयितारौ	तेलयितारः
भ०	तेलयिष्यति	तेलयिष्यतः	तेलयिष्यन्ति
क्रि०	अतेलयिष्यत्	अतेलयिष्यताम्	अतेलयिष्यन्

१६८७. जलण् (जल्) अपवारणे। १२०

व०	जालयति	जालयतः	जालदन्ति
स०	जालयेत्	जालयेताम्	जालयेयुः
प०	जालयतु/जालयतात्	जालयताम्	जालयन्तु
ह्य०	अजालयत्	अजालयताम्	अजालयन्
अ०	अजीजलत्	अजीजलताम्	अजीजलन्
प०	जालयाञ्चकार	जालयाञ्चक्रतुः	जालयाञ्चक्रुः
	जालयाम्बभूव/जालयामास।		
आ०	जाल्यात्	जाल्यास्ताम्	जाल्यासुः
श्व०	जालयिता	जालयितारौ	जालयितारः
भ०	जालयिष्यति	जालयिष्यतः	जालयिष्यन्ति
क्रि०	अजालयिष्यत्	अजालयिष्यताम्	अजालयिष्यन्

१६८८. क्षलण् (क्षल्) शौचे।

शौचं शौचकर्म। १२१

व०	क्षालयति	क्षालयतः	क्षालयन्ति
स०	क्षालयेत्	क्षालयेताम्	क्षालयेयुः
प०	क्षालयतु/क्षालयतात्	क्षालयताम्	क्षालयन्तु
ह्य०	अक्षालयत्	अक्षालयताम्	अक्षालयन्
अ०	अचिक्षलत्	अचिक्षलताम्	अचिक्षलन्
प०	क्षालयाञ्चकार	क्षालयाञ्चक्रतुः	क्षालयाञ्चक्रुः
	क्षालयाम्बभूव/क्षालयामास।		
आ०	क्षाल्यात्	क्षाल्यास्ताम्	क्षाल्यासुः
श्व०	क्षालयिता	क्षालयितारौ	क्षालयितारः
भ०	क्षालयिष्यति	क्षालयिष्यतः	क्षालयिष्यन्ति
क्रि०	अक्षालयिष्यत्	अक्षालयिष्यताम्	अक्षालयिष्यन्

१६८९. पुलण् (पुल्) समुच्छ्राये। १२२

व०	पोलयति	पोलयतः	पोलयन्ति
स०	पोलयेत्	पोलयेताम्	पोलयेयुः
प०	पोलयतु/पोलयतात्	पोलयताम्	पोलयन्तु
ह्य०	अपोलयत्	अपोलयताम्	अपोलयन्
अ०	अपूपुलत्	अपूपुलताम्	अपूपुलन्
प०	पोलयाञ्चकार	पोलयाञ्चक्रतुः	पोलयाञ्चक्रुः
	पोलयाम्बभूव/पोलयामास।		
आ०	पोल्यात्	पोल्यास्ताम्	पोल्यासुः
श्व०	पोलयिता	पोलयितारौ	पोलयितारः
भ०	पोलयिष्यति	पोलयिष्यतः	पोलयिष्यन्ति
क्रि०	अपोलयिष्यत्	अपोलयिष्यताम्	अपोलयिष्यन्

१६९०. बिलण् (बिल्) भेदे। १२३

व०	बेलयति	बेलयतः	बेलयन्ति
स०	बेलयेत्	बेलयेताम्	बेलयेयुः
प०	बेलयतु/बेलयतात्	बेलयताम्	बेलयन्तु
ह्य०	अबेलयत्	अबेलयताम्	अबेलयन्
अ०	अबीबिलत्	अबीबिलताम्	अबीबिलन्
प०	बेलयाञ्चकार	बेलयाञ्चक्रतुः	बेलयाञ्चक्रुः
	बेलयाम्बभूव/बेलयामास।		
आ०	बेल्यात्	बेल्यास्ताम्	बेल्यासुः
श्व०	बेलयिता	बेलयितारौ	बेलयितारः
भ०	बेलयिष्यति	बेलयिष्यतः	बेलयिष्यन्ति
क्रि०	अबेलयिष्यत्	अबेलयिष्यताम्	अबेलयिष्यन्

१६९१. तलण् (तल्) प्रतिष्ठायाम्। १२४

व०	तालयति	तालयतः	तालयन्ति
स०	तालयेत्	तालयेताम्	तालयेयुः
प०	तालयतु/तालयतात्	तालयताम्	तालयन्तु
ह्य०	अतालयत्	अतालयताम्	अतालयन्
अ०	अतीतलत्	अतीतलताम्	अतीतलन्
प०	तालयाञ्चकार	तालयाञ्चक्रतुः	तालयाञ्चक्रुः
	तालयाम्बभूव/तालयामास।		
आ०	ताल्यात्	ताल्यास्ताम्	ताल्यासुः
श्व०	तालयिता	तालयितारौ	तालयितारः
भ०	तालयिष्यति	तालयिष्यतः	तालयिष्यन्ति
क्रि०	अतालयिष्यत्	अतालयिष्यताम्	अतालयिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६९२. तुलण् (तुल्) उन्माने। १२५

व०	तोलयति	तोलयतः	तोलयन्ति
स०	तोलयेत्	तोलयेताम्	तोलयेयुः
प०	तोलयतु/तोलयतात्	तोलयताम्	तोलयन्तु
ह्य०	अतोलयत्	अतोलयताम्	अतोलयन्
अ०	अतूतुलत्	अतूतुलताम्	अतूतुलन्
प०	तोलयाञ्चकार	तोलयाञ्चक्रतुः	तोलयाञ्चक्रुः

तोलयाम्बभूव/तोलयामास।

आ०	तोल्यात्	तोल्यास्ताम्	तोल्यासुः
श्व०	तोलयिता	तोलयितारौ	तोलयितारः
भ०	तोलयिष्यति	तोलयिष्यतः	तोलयिष्यन्ति
क्रि०	अतोलयिष्यत्	अतोलयिष्यताम्	अतोलयिष्यन्

१६९३. दुलण् (दुल्) उत्क्षेपे। १२६

व०	दोलयति	दोलयतः	दोलयन्ति
स०	दोलयेत्	दोलयेताम्	दोलयेयुः
प०	दोलयतु/दोलयतात्	दोलयताम्	दोलयन्तु
ह्य०	अदोलयत्	अदोलयताम्	अदोलयन्
अ०	अदूदुलत्	अदूदुलताम्	अदूदुलन्
प०	दोलयाञ्चकार	दोलयाञ्चक्रतुः	दोलयाञ्चक्रुः

दोलयाम्बभूव/दोलयामास।

आ०	दोल्यात्	दोल्यास्ताम्	दोल्यासुः
श्व०	दोलयिता	दोलयितारौ	दोलयितारः
भ०	दोलयिष्यति	दोलयिष्यतः	दोलयिष्यन्ति
क्रि०	अदोलयिष्यत्	अदोलयिष्यताम्	अदोलयिष्यन्

१६९४. बुलण् (बुल्) निमज्जने। १२७

व०	बोलयति	बोलयतः	बोलयन्ति
स०	बोलयेत्	बोलयेताम्	बोलयेयुः
प०	बोलयतु/बोलयतात्	बोलयताम्	बोलयन्तु
ह्य०	अबोलयत्	अबोलयताम्	अबोलयन्
अ०	अबूबुलत्	अबूबुलताम्	अबूबुलन्
प०	बोलयाञ्चकार	बोलयाञ्चक्रतुः	बोलयाञ्चक्रुः

बोलयाम्बभूव/बोलयामास।

आ०	बोल्यात्	बोल्यास्ताम्	बोल्यासुः
श्व०	बोलयिता	बोलयितारौ	बोलयितारः
भ०	बोलयिष्यति	बोलयिष्यतः	बोलयिष्यन्ति
क्रि०	अबोलयिष्यत्	अबोलयिष्यताम्	अबोलयिष्यन्

१६९५. मूलण् (मूल्) रोहणे। १२८

व०	मूलयति	मूलयतः	मूलयन्ति
स०	मूलयेत्	मूलयेताम्	मूलयेयुः
प०	मूलयतु/मूलयतात्	मूलयताम्	मूलयन्तु
ह्य०	अमूलयत्	अमूलयताम्	अमूलयन्
अ०	अमूमुलत्	अमूमुलताम्	अमूमुलन्
प०	मूलयाञ्चकार	मूलयाञ्चक्रतुः	मूलयाञ्चक्रुः

मूलयाम्बभूव/मूलयामास।

आ०	मूल्यात्	मूल्यास्ताम्	मूल्यासुः
श्व०	मूलयिता	मूलयितारौ	मूलयितारः
भ०	मूलयिष्यति	मूलयिष्यतः	मूलयिष्यन्ति
क्रि०	अमूलयिष्यत्	अमूलयिष्यताम्	अमूलयिष्यन्

१६९६. कलण् (कल्) क्षेपे। १२९

व०	कालयति	कालयतः	कालयन्ति
स०	कालयेत्	कालयेताम्	कालयेयुः
प०	कालयतु/कालयतात्	कालयताम्	कालयन्तु
ह्य०	अकालयत्	अकालयताम्	अकालयन्
अ०	अचीकलत्	अचीकलताम्	अचीकलन्
प०	कालयाञ्चकार	कालयाञ्चक्रतुः	कालयाञ्चक्रुः

कालयाम्बभूव/कालयामास।

आ०	काल्यात्	काल्यास्ताम्	काल्यासुः
श्व०	कालयिता	कालयितारौ	कालयितारः
भ०	कालयिष्यति	कालयिष्यतः	कालयिष्यन्ति
क्रि०	अकालयिष्यत्	अकालयिष्यताम्	अकालयिष्यन्

१६९७. किलण् (किल्) क्षेपे। १३०

व०	केलयति	केलयतः	केलयन्ति
स०	केलयेत्	केलयेताम्	केलयेयुः
प०	केलयतु/केलयतात्	केलयताम्	केलयन्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	अकेलयत्	अकेलयताम्	अकेलयन्
अ०	अकीकिलत्	अकीकिलताम्	अकीकिलन्
प०	केलयाञ्चकार	केलयाञ्चक्रतुः	केलयाञ्चक्रुः
	केलयाम्बभूव/केलयामास।		
आ०	केल्यात्	केल्यास्ताम्	केल्यासुः
श्व०	केलयिता	केलयितारौ	केलयितारः
भ०	केलयिष्यति	केलयिष्यतः	केलयिष्यन्ति
क्रि०	अकेलयिष्यत्	अकेलयिष्यताम्	अकेलयिष्यन्

१६९८. पिलण् (पिल्) क्षेपे। १३१

व०	पेलयति	पेलयतः	पेलयन्ति
स०	पेलयेत्	पेलयेताम्	पेलयेयुः
प०	पेलयतु/पेलयतात्	पेलयताम्	पेलयन्तु
ह्य०	अपेलयत्	अपेलयताम्	अपेलयन्
अ०	अपीपिलत्	अपीपिलताम्	अपीपिलन्
प०	पेलयाञ्चकार	पेलयाञ्चक्रतुः	पेलयाञ्चक्रुः
	पेलयाम्बभूव/पेलयामास।		
आ०	पेल्यात्	पेल्यास्ताम्	पेल्यासुः
श्व०	पेलयिता	पेलयितारौ	पेलयितारः
भ०	पेलयिष्यति	पेलयिष्यतः	पेलयिष्यन्ति
क्रि०	अपेलयिष्यत्	अपेलयिष्यताम्	अपेलयिष्यन्

१६९९. पालण् (पाल्) रक्षणे। १३२

व०	पालयति	पालयतः	पालयन्ति
स०	पालयेत्	पालयेताम्	पालयेयुः
प०	पालयतु/पालयतात्	पालयताम्	पालयन्तु
ह्य०	पोलयत्	पोलयताम्	पोलयन्
अ०	अपीपलत्	अपीपलताम्	अपीपलन्
प०	पालयाञ्चकार	पालयाञ्चक्रतुः	पालयाञ्चक्रुः
	पालयाम्बभूव/पालयामास।		
आ०	पाल्यात्	पाल्यास्ताम्	पाल्यासुः
श्व०	पालयिता	पालयितारौ	पालयितारः
भ०	पालयिष्यति	पालयिष्यतः	पालयिष्यन्ति
क्रि०	पोलयिष्यत्	पोलयिष्यताम्	पोलयिष्यन्

१७००. एलण् (एल्) प्रेरणे। १३३

व०	एलयति	एलयतः	एलयन्ति
स०	एलयेत्	एलयेताम्	एलयेयुः
प०	एलयतु/एलयतात्	एलयताम्	एलयन्तु
ह्य०	ऐलयत्	ऐलयताम्	ऐलयन्
अ०	ऐलिलत्	ऐलिलताम्	ऐलिलन्
प०	एलयाञ्चकार	एलयाञ्चक्रतुः	एलयाञ्चक्रुः
	एलयाम्बभूव/एलयामास।		
आ०	एल्यात्	एल्यास्ताम्	एल्यासुः
श्व०	एलयिता	एलयितारौ	एलयितारः
भ०	एलयिष्यति	एलयिष्यतः	एलयिष्यन्ति
क्रि०	ऐलयिष्यत्	ऐलयिष्यताम्	ऐलयिष्यन्

१७०१. चलण् (चल्) भृतौ। १३४

व०	चालयति	चालयतः	चालयन्ति
स०	चालयेत्	चालयेताम्	चालयेयुः
प०	चालयतु/चालयतात्	चालयताम्	चालयन्तु
ह्य०	अचालयत्	अचालयताम्	अचालयन्
प०	अचीचलत्	अचीचलताम्	अचीचलन्
प०	चालयाञ्चकार	चालयाञ्चक्रतुः	चालयाञ्चक्रुः
	चालयाम्बभूव/चालयामास।		
आ०	चाल्यात्	चाल्यास्ताम्	चाल्यासुः
श्व०	चालयिता	चालयितारौ	चालयितारः
भ०	चालयिष्यति	चालयिष्यतः	चालयिष्यन्ति
क्रि०	अचालयिष्यत्	अचालयिष्यताम्	अचालयिष्यन्

।।अथ वान्ता:।।

१७०२. सान्त्वण् (सान्त्व्) सामप्रयोगे। १३५

व०	सान्त्वयति	सान्त्वयतः	सान्त्वयन्ति
स०	सान्त्वयेत्	सान्त्वयेताम्	सान्त्वयेयुः
प०	सान्त्वयतु/तात्	सान्त्वयताम्	सान्त्वयन्तु
ह्य०	असान्त्वयत्	असान्त्वयताम्	असान्त्वयन्
प०	सान्त्वयाञ्चकार	सान्त्वयाञ्चक्रतुः	सान्त्वयाञ्चक्रुः
	सान्त्वयाम्बभूव/सान्त्वयामास।		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	सान्त्व्यात्	सान्त्व्यास्ताम्	सान्त्व्यासुः
श्व०	सान्त्वयिता	सान्त्वयितारौ	सान्त्वयितारः
भ०	सान्त्वयिष्यति	सान्त्वयिष्यतः	सान्त्वयिष्यन्ति
क्रि०	असान्त्वयिष्यत्	असान्त्वयिष्यताम्	असान्त्वयिष्यन्

।।अथ शान्तः।।

१७०३. धूशण् (धूश्) कान्तीकरणे। १३६

व०	धूशयति	धूशयतः	धूशयन्ति
स०	धूशयेत्	धूशयेताम्	धूशयेयुः
प०	धूशयतु/धूशयतात्	धूशयताम्	धूशयन्तु
ह्य०	अधूशयत्	अधूशयताम्	अधूशयन्
अ०	अदूधुशत्	अदूधुशताम्	अदूधुशन्
प०	धूशयाञ्चकार	धूशयाञ्चक्रतुः	धूशयाञ्चक्रुः
	धूशयाम्बभूव/धूशयामास।		
आ०	धूश्यात्	धूश्यास्ताम्	धूश्यासुः
श्व०	धूशयिता	धूशयितारौ	धूशयितारः
भ०	धूशयिष्यति	धूशयिष्यतः	धूशयिष्यन्ति
क्रि०	अधूशयिष्यत्	अधूशयिष्यताम्	अधूशयिष्यन्

।।अथ षान्ताश्चत्वारः।।

१७०४. श्लिषण् (श्लिष्) श्लेषणे। १३७

व०	श्लेषयति	श्लेषयतः	श्लेषयन्ति
स०	श्लेषयेत्	श्लेषयेताम्	श्लेषयेयुः
प०	श्लेषयतु/तात्	श्लेषयताम्	श्लेषयन्तु
ह्य०	अश्लेषयत्	अश्लेषयताम्	अश्लेषयन्
अ०	अशिश्लिषत्	अशिश्लिषताम्	अशिश्लिषन्
प०	श्लेषयाञ्चकार	श्लेषयाञ्चक्रतुः	श्लेषयाञ्चक्रुः
	श्लेषयाम्बभूव/श्लेषयामास।		
आ०	श्लेष्यात्	श्लेष्यास्ताम्	श्लेष्यासुः
श्व०	श्लेषयिता	श्लेषयितारौ	श्लेषयितारः
भ०	श्लेषयिष्यति	श्लेषयिष्यतः	श्लेषयिष्यन्ति
क्रि०	अश्लेषयिष्यत्	अश्लेषयिष्यताम्	अश्लेषयिष्यन्

१७०५. लूषण् (लूष्) हिंसायाम्। १३८

व०	लूषयति	लूषयतः	लूषयन्ति
	लूषयसि	लूषयथः	लूषयथ
	लूषयामि	लूषयावः	लूषयामः
स०	लूषयेत्	लूषयेताम्	लूषयेयुः
	लूषयेः	लूषयेतम्	लूषयेत
	लूषयेयम्	लूषयेव	लूषयेम
प०	लूषयतु/लूषयतात्	लूषयताम्	लूषयन्तु
	लूषय	लूषयतम्	लूषयत
	लूषयानि	लूषयाव	लूषयाम
ह्य०	अलूषयत्	अलूषयताम्	अलूषयन्
	अलूषयः	अलूषयतम्	अलूषयत
	अलूषयम्	अलूषयाव	अलूषयाम
अ०	अलूलुषत्	अलूलुषताम्	अलूलुषन्
	अलूलुषः	अलूलुषतम्	अलूलुषत
	अलूलुषम्	अलूलुषाव	अलूलुषाम
प०	लूषयाञ्चकार	लूषयाञ्चक्रतुः	लूषयाञ्चक्रुः
	लूषयाञ्चकर्थ	लूषयाञ्चक्रथुः	लूषयाञ्चक्र
	लूषयाञ्चकार/कर	लूषयाञ्चकृव	लूषयाञ्चकृम
	लूषयाम्बभूव/लूषयामास।		
आ०	लूष्यात्	लूष्यास्ताम्	लूष्यासुः
	लूष्याः	लूष्यास्तम्	लूष्यास्त
	लूष्यासम्	लूष्यास्व	लूष्यास्म
श्व०	लूषयिता	लूषयितारौ	लूषयितारः
	लूषयितासि	लूषयितास्थः	लूषयितास्थ
	लूषयितास्मि	लूषयितास्वः	लूषयितास्मः
भ०	लूषयिष्यति	लूषयिष्यतः	लूषयिष्यन्ति
	लूषयिष्यसि	लूषयिष्यथः	लूषयिष्यथ
	लूषयिष्यामि	लूषयिष्यावः	लूषयिष्यामः
क्रि०	अलूषयिष्यत्	अलूषयिष्यताम्	अलूषयिष्यन्
	अलूषयिष्यः	अलूषयिष्यतम्	अलूषयिष्यत
	अलूषयिष्यम्	अलूषयिष्याव	अलूषयिष्याम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७०६. रुषण् (रुष्) रोषे। १३९

व० रोषयति	रोषयतः	रोषयन्ति
स० रोषयेत्	रोषयेताम्	रोषयेयुः
प० रोषयतु/रोषयतात्	रोषयताम्	रोषयन्तु
ह्य० अरोषयत्	अरोषयताम्	अरोषयन्
अ० अरुरुषत्	अरुरुषताम्	अरुरुषन्
प० रोषयाञ्चकार	रोषयाञ्चक्रतुः	रोषयाञ्चक्रुः

रोषयाम्बभूव/रोषयामास।

आ० रोष्यात्	रोष्यास्ताम्	रोष्यासुः
श्व० रोपयिता	रोषयितारौ	रोषयितारः
भ० रोषयिष्यति	रोषयिष्यतः	रोषयिष्यन्ति
क्रि० अरोषयिष्यत्	अरोषयिष्यताम्	अरोषयिष्यन्

१७०७. प्युषण् (प्युष्) उत्सर्गे। १४०

व० प्योषयति	प्योषयतः	प्योषयन्ति
स० प्योषयेत्	प्योषयेताम्	प्योषयेयुः
प० प्योषयतु/प्योषयतात्	प्योषयताम्	प्योषयन्तु
ह्य० अप्योषयत्	अप्योषयताम्	अप्योषयन्
अ० अपुप्युषत्	अपुप्युषताम्	अपुप्युषन्
प० प्योषयाञ्चकार	प्योषयाञ्चक्रतुः	प्योषयाञ्चक्रुः

प्योषयाम्बभूव/प्योषयामास।

आ० प्योष्यात्	प्योष्यास्ताम्	प्योष्यासुः
श्व० प्योषयिता	प्योषयितारौ	प्योषयितारः
भ० प्योषयिष्यति	प्योषयिष्यतः	प्योषयिष्यन्ति
क्रि० अप्योषयिष्यत्	अप्योषयिष्यताम्	अप्योषयिष्यन्

१७०८. पसुण् (पंस्) नाशने। १४१

व० पंसयति	पंसयतः	पंसयन्ति
स० पंसयेत्	पंसयेताम्	पंसयेयुः
प० पंसयतु/पंसयतात्	पंसयताम्	पंसयन्तु
ह्य० अपंसयत्	अपंसयताम्	अपंसयन्
अ० अपपंसत्	अपपंसताम्	अपपंसन्
प० पंसयाञ्चकार	पंसयाञ्चक्रतुः	पंसयाञ्चक्रुः

पंसयाम्बभूव/पंसयामास।

आ० पंस्यात्	पंस्यास्ताम्	पंस्यासुः
श्व० पंसयिता	पंसयितारौ	पंसयितारः
भ० पंसयिष्यति	पंसयिष्यतः	पंसयिष्यन्ति
क्रि० अपंसयिष्यत्	अपंसयिष्यताम्	अपंसयिष्यन्

१७०९. जसुण् (जंस्) रक्षणे। १४२

व० जंसयति	जंसयतः	जंसयन्ति
स० जंसयेत्	जंसयेताम्	जंसयेयुः
प० जंसयतु/जंसयतात्	जंसयताम्	जंसयन्तु
ह्य० अजंसयत्	अजंसयताम्	अजंसयन्
अ० अज्जंसत्	अज्जंसताम्	अज्जंसन्
प० जंसयाञ्चकार	जंसयाञ्चक्रतुः	जंसयाञ्चक्रुः

जंसयाम्बभूव/जंसयामास।

आ० जंस्यात्	जंस्यास्ताम्	जंस्यासुः
श्व० जंसयिता	जंसयितारौ	जंसयितारः
भ० जंसयिष्यति	जंसयिष्यतः	जंसयिष्यन्ति
क्रि० अजंसयिष्यत्	अजंसयिष्यताम्	अजंसयिष्यन्

१७१०. पुंसुण् (पुंस्) अभिमर्दने। १४३

व० पुंसयति	पुंसयतः	पुंसयन्ति
स० पुंसयेत्	पुंसयेताम्	पुंसयेयुः
प० पुंसयतु/पुंसयतात्	पुंसयताम्	पुंसयन्तु
ह्य० अपुंसयत्	अपुंसयताम्	अपुंसयन्
अ० अपुपुंसत्	अपुपुंसताम्	अपुपुंसन्
प० पुंसयाञ्चकार	पुंसयाञ्चक्रतुः	पुंसयाञ्चक्रुः

पुंसयाम्बभूव/पुंसयामास।

आ० पुंस्यात्	पुंस्यास्ताम्	पुंस्यासुः
श्व० पुंसयिता	पुंसयितारौ	पुंसयितारः
भ० पुंसयिष्यति	पुंसयिष्यतः	पुंसयिष्यन्ति
क्रि० अपुंसयिष्यत्	अपुंसयिष्यताम्	अपुंसयिष्यन्

१७११. ब्रूसण् (ब्रूस्) हिंसायाम्। १४४

व० ब्रूसयति	ब्रूसयतः	ब्रूसयन्ति
स० ब्रूसयेत्	ब्रूसयेताम्	ब्रूसयेयुः
प० ब्रूसयतु/ब्रूसयतात्	ब्रूसयताम्	ब्रूसयन्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	अब्रूसयत्	अब्रूसयताम्	अब्रूसयन्
अ०	अबुब्रुसत्	अबुब्रुसताम्	अबुब्रुसन्
प०	ब्रूसयाञ्चकार	ब्रूसयाञ्चक्रतुः	ब्रूसयाञ्चक्रुः
	ब्रूसयाम्बभूव/ब्रूसयामास।		
आ०	ब्रूस्यात्	ब्रूस्यास्ताम्	ब्रूस्यासुः
श्व०	ब्रूसयिता	ब्रूसयितारौ	ब्रूसयितारः
भ०	ब्रूसयिष्यति	ब्रूसयिष्यतः	ब्रूसयिष्यन्ति
क्रि०	अब्रूसयिष्यत्	अब्रूसयिष्यताम्	अब्रूसयिष्यन्

१७१२. पिसण् (पिस्) हिंसायाम्। १४५

व०	पेसयति	पेसयतः	पेसयन्ति
स०	पेसयेत्	पेसयेताम्	पेसयेयुः
प०	पेसयतु/पेसयतात्	पेसयताम्	पेसयन्तु
ह्य०	अपेसयत्	अपेसयताम्	अपेसयन्
अ०	अपीपिसत्	अपीपिसताम्	अपीपिसन्
प०	पेसयाञ्चकार	पेसयाञ्चक्रतुः	पेसयाञ्चक्रुः
	पेसयाम्बभूव/पेसयामास।		
आ०	पेस्यात्	पेस्यास्ताम्	पेस्यासुः
श्व०	पेसयिता	पेसयितारौ	पेसयितारः
भ०	पेसयिष्यति	पेसयिष्यतः	पेसयिष्यन्ति
क्रि०	अपेसयिष्यत्	अपेसयिष्यताम्	अपेसयिष्यन्

१७१३. जसण् (जस्) हिंसायाम्। १४६

व०	जासयति	जासयतः	जासयन्ति
स०	जासयेत्	जासयेताम्	जासयेयुः
प०	जासयतु/जासयतात्	जासयताम्	जासयन्तु
ह्य०	अजासयत्	अजासयताम्	अजासयन्
अ०	अजीजसत्	अजीजसताम्	अजीजसन्
प०	जासयाञ्चकार	जासयाञ्चक्रतुः	जासयाञ्चक्रुः
	जासयाम्बभूव/जासयामास।		
आ०	जास्यात्	जास्यास्ताम्	जास्यासुः
श्व०	जासयिता	जासयितारौ	जासयितारः
भ०	जासयिष्यति	जासयिष्यतः	जासयिष्यन्ति
क्रि०	अजासयिष्यत्	अजासयिष्यताम्	अजासयिष्यन्

॥अथ हान्तौ॥

१७१४. बर्हण् (बर्ह्) हिंसायाम्। १४७

व०	बर्हयति	बर्हयतः	बर्हयन्ति
स०	बर्हयेत्	बर्हयेताम्	बर्हयेयुः
प०	बर्हयतु/बर्हयतात्	बर्हयताम्	बर्हयन्तु
ह्य०	अबर्हयत्	अबर्हयताम्	अबर्हयन्
अ०	अबबर्हत्	अबबर्हताम्	अबबर्हन्
प०	बर्हयाञ्चकार	बर्हयाञ्चक्रतुः	बर्हयाञ्चक्रुः
	बर्हयाम्बभूव/बर्हयामास।		
आ०	बर्ह्यात्	बर्ह्यास्ताम्	बर्ह्यासुः
श्व०	बर्हयिता	बर्हयितारौ	बर्हयितारः
भ०	बर्हयिष्यति	बर्हयिष्यतः	बर्हयिष्यन्ति
क्रि०	अबर्हयिष्यत्	अबर्हयिष्यताम्	अबर्हयिष्यन्

१७१५. ष्णिहण् (स्निह्) स्नेहने। १४८

व०	स्नेहयति	स्नेहयतः	स्नेहयन्ति
स०	स्नेहयेत्	स्नेहयेताम्	स्नेहयेयुः
प०	स्नेहयतु/स्नेहयतात्	स्नेहयताम्	स्नेहयन्तु
ह्य०	अस्नेहयत्	अस्नेहयताम्	अस्नेहयन्
अ०	असिष्णिहत्	असिष्णिहताम्	असिष्णिहन्
प०	स्नेहयाञ्चकार	स्नेहयाञ्चक्रतुः	स्नेहयाञ्चक्रुः
	स्नेहयाम्बभूव/स्नेहयामास।		
आ०	स्नेह्यात्	स्नेह्यास्ताम्	स्नेह्यासुः
श्व०	स्नेहयिता	स्नेहयितारौ	स्नेहयितारः
भ०	स्नेहयिष्यति	स्नेहयिष्यतः	स्नेहयिष्यन्ति
क्रि०	अस्नेहयिष्यत्	अस्नेहयिष्यताम्	अस्नेहयिष्यन्

॥अथ क्षान्तास्त्रयः॥

१७१६. म्रक्षण् (म्रक्ष्) म्लेच्छने। १४९

व०	म्रक्षयति	म्रक्षयतः	म्रक्षयन्ति
स०	म्रक्षयेत्	म्रक्षयेताम्	म्रक्षयेयुः
प०	म्रक्षयतु/म्रक्षयतात्	म्रक्षयताम्	म्रक्षयन्तु
ह्य०	अम्रक्षयत्	अम्रक्षयताम्	अम्रक्षयन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	अमम्रक्षत्	अमम्रक्षताम्	अमम्रक्षन्
प०	म्रक्षयाञ्चकार	म्रक्षयाञ्चक्रतुः	म्रक्षयाञ्चक्रुः
	म्रक्षयाम्बभूव/म्रक्षयामास।		
आ०	म्रक्ष्यात्	म्रक्ष्यास्ताम्	म्रक्ष्यासुः
श्व०	म्रक्षयिता	म्रक्षयितारौ	म्रक्षयितारः
भ०	म्रक्षयिष्यति	म्रक्षयिष्यतः	म्रक्षयिष्यन्ति
क्रि०	अम्रक्षयिष्यत्	अम्रक्षयिष्यताम्	अम्रक्षयिष्यन्

१७१७. भक्षण् (भक्ष्) अदने। १५०

व०	भक्षयति	भक्षयतः	भक्षयन्ति
स०	भक्षयेत्	भक्षयेताम्	भक्षयेयुः
प०	भक्षयतु/भक्षयतात्	भक्षयताम्	भक्षयन्तु
ह्य०	अभक्षयत्	अभक्षयताम्	अभक्षयन्
अ०	अबभक्षत्	अबभक्षताम्	अबभक्षन्
प०	भक्षयाञ्चकार	भक्षयाञ्चक्रतुः	भक्षयाञ्चक्रुः
	भक्षयाम्बभूव/भक्षयामास।		
आ०	भक्ष्यात्	भक्ष्यास्ताम्	भक्ष्यासुः
श्व०	भक्षयिता	भक्षयितारौ	भक्षयितारः
भ०	भक्षयिष्यति	भक्षयिष्यतः	भक्षयिष्यन्ति
क्रि०	अभक्षयिष्यत्	अभक्षयिष्यताम्	अभक्षयिष्यन्

१७१८. पक्षण् (पक्ष्) परिग्रहे। १५१

व०	पक्षयति	पक्षयतः	पक्षयन्ति
स०	पक्षयेत्	पक्षयेताम्	पक्षयेयुः
प०	पक्षयतु/पक्षयतात्	पक्षयताम्	पक्षयन्तु
ह्य०	अपक्षयत्	अपक्षयताम्	अपक्षयन्
अ०	अपपक्षत्	अपपक्षताम्	अपपक्षन्
प०	पक्षयाञ्चकार	पक्षयाञ्चक्रतुः	पक्षयाञ्चक्रुः
	पक्षयाम्बभूव/पक्षयामास।		
आ०	पक्ष्यात्	पक्ष्यास्ताम्	पक्ष्यासुः
श्व०	पक्षयिता	पक्षयितारौ	पक्षयितारः
भ०	पक्षयिष्यति	पक्षयिष्यतः	पक्षयिष्यन्ति
क्रि०	अपक्षयिष्यत्	अपक्षयिष्यताम्	अपक्षयिष्यन्

।।अथोभयलदी क्षान्तः।।

१७१९. लक्षीण् (लक्ष्) दर्शनाङ्कयोः। अङ्कनं चिह्नम्। १५२

व०	लक्षयति	लक्षयतः	लक्षयन्ति
स०	लक्षयेत्	लक्षयेताम्	लक्षयेयुः
प०	लक्षयतु/लक्षयतात्	लक्षयताम्	लक्षयन्तु
ह्य०	अलक्षयत्	अलक्षयताम्	अलक्षयन्
अ०	अललक्षत्	अललक्षताम्	अललक्षन्
प०	लक्षयाञ्चकार	लक्षयाञ्चक्रतुः	लक्षयाञ्चक्रुः
	लक्षयाम्बभूव/लक्षयामास।		
आ०	लक्ष्यात्	लक्ष्यास्ताम्	लक्ष्यासुः
श्व०	लक्षयिता	लक्षयितारौ	लक्षयितारः
भ०	लक्षयिष्यति	लक्षयिष्यतः	लक्षयिष्यन्ति
क्रि०	अलक्षयिष्यत्	अलक्षयिष्यताम्	अलक्षयिष्यन्
व०	लक्षयते	लक्षयेते	लक्षयन्ते
स०	लक्षयेत	लक्षयेयाताम्	लक्षयेरन्
प०	लक्षयताम्	लक्षयेताम्	लक्षयन्ताम्
ह्य०	अलक्षयत	अलक्षयेताम्	अलक्षयन्त
अ०	अललक्षत	अललक्षेताम्	अललक्षन्त
प०	लक्षयाञ्चक्रे	लक्षयाञ्चक्राते	लक्षयाञ्चक्रिरे
आ०	लक्षयिषीष्ट	लक्षयिषीयास्ताम्	लक्षयिषीरन्
श्व०	लक्षयिता	लक्षयितारौ	लक्षयितारः
भ०	लक्षयिष्यते	लक्षयिष्येते	लक्षयिष्यन्ते
क्रि०	अलक्षयिष्यत	अलक्षयिष्येताम्	अलक्षयिष्यन्त

इतोऽर्थविशेषे आलक्षिणः। इतःपरमर्थविशेषे चुरादयो लक्षिपर्यन्ताः

१७२० ज्ञाण् (ज्ञा) मारणादिनियोजनेषु। मारणादयो मारणतोषणानि शाने ज्ञश्चेति सूत्रोक्तास्तेषु नियोजने चार्थे जानातिश्चुरादिः। १५३

तत्र मारणतोषणनिशाने

व०	ज्ञपयति	ज्ञपयतः	ज्ञपयन्ति
	ज्ञपयसि	ज्ञपयथः	ज्ञपयथ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	ज्ञपयामि	ज्ञपयावः	ज्ञपयामः
स०	ज्ञपयेत्	ज्ञपयेताम्	ज्ञपयेयुः
	ज्ञपयेः	ज्ञपयेतम्	ज्ञपयेत
	ज्ञपयेयम्	ज्ञपयेव	ज्ञपयेम
प०	ज्ञपयतु/ज्ञपयतात्	ज्ञपयताम्	ज्ञपयन्तु
	ज्ञपय/ज्ञपयतात्	ज्ञपयतम्	ज्ञपयत
	ज्ञपयानि	ज्ञपयाव	ज्ञपयाम
ह्य०	अज्ञपयत्	अज्ञपयताम्	अज्ञपयन्
	अज्ञपयः	अज्ञपयतम्	अज्ञपयत
	अज्ञपयम्	अज्ञपयाव	अज्ञपयाम
अ०	अजिज्ञपत्	अजिज्ञपताम्	अजिज्ञपन्
	अजिज्ञपः	अजिज्ञपतम्	अजिज्ञपत
	अजिज्ञपतम्	अजिज्ञपाव	अजिज्ञपाम
प०	ज्ञपयाञ्चकार	ज्ञपयाञ्चक्रतुः	ज्ञपयाञ्चक्रुः
	ज्ञपयाञ्चकर्थ	ज्ञपयाञ्चक्रथुः	ज्ञपयाञ्चक्र
	ज्ञपयाञ्चकार/कर	ज्ञपयाञ्चकृव	ज्ञपयाञ्चकृम
	ज्ञपयाम्बभूव/ज्ञपयामास।		
आ०	ज्ञप्यात्	ज्ञप्यास्ताम्	ज्ञप्यासुः
	ज्ञप्याः	ज्ञप्यास्तम्	ज्ञप्यास्त
	ज्ञप्यासम्	ज्ञप्यास्व	ज्ञप्यास्म
श्व०	ज्ञपयिता	ज्ञपयितारौ	ज्ञपयितारः
	ज्ञपयितासि	ज्ञपयितास्थः	ज्ञपयितास्थ
	ज्ञपयितास्मि	ज्ञपयितास्वः	ज्ञपयितास्मः
भ०	ज्ञपयिष्यति	ज्ञपयिष्यतः	ज्ञपयिष्यन्ति
	ज्ञपयिष्यसि	ज्ञपयिष्यथः	ज्ञपयिष्यथ
	ज्ञपयिष्यामि	ज्ञपयिष्यावः	ज्ञपयिष्यामः
क्रि०	अज्ञपयिष्यत्	अज्ञपयिष्यताम्	अज्ञपयिष्यन्
	अज्ञपयिष्यः	अज्ञपयिष्यतम्	अज्ञपयिष्यत
	अज्ञपयिष्यम्	अज्ञपयिष्याव	अज्ञपयिष्याम

॥अथादन्तः॥

१७२१. च्युण् (च्यु) सहने। १५४

व०	च्यावयति	च्यावयतः	च्यावयन्ति
	च्यावयसि	च्यावयथः	च्यावयथ
	च्यावयामि	च्यावयावः	च्यावयामः
स०	च्यावयेत्	च्यावयेताम्	च्यावयेयुः
	च्यावयेः	च्यावयेतम्	च्यावयेत
	च्यावयेयम्	च्यावयेव	च्यावयेम
प०	च्यावयतु/च्यावयतात्	च्यावयताम्	च्यावयन्तु
	च्यावय/च्यावयतात्	च्यावयतम्	च्यावयत
	च्यावयानि	च्यावयाव	च्यावयाम
ह्य०	अच्यावयत्	अच्यावयताम्	अच्यावयन्
	अच्यावयः	अच्यावयतम्	अच्यावयत
	अच्यावयम्	अच्यावयाव	अच्यावयाम
अ०	अचुच्यवत्	अचुच्यवताम्	अचुच्यवन्
	अचुच्यवः	अचुच्यवतम्	अचुच्यवत
	अचुच्यवम्	अचुच्यवाव	अचुच्यवाम
प०	च्यावयाञ्चकार	च्यावयाञ्चक्रतुः	च्यावयाञ्चक्रुः
	च्यावयाञ्चकर्थ	च्यावयाञ्चक्रथुः	च्यावयाञ्चक्र
	च्यावयाञ्चकार/कर	च्यावयाञ्चकृव	च्यावयाञ्चकृम
	च्यावयाम्बभूव/च्यावयामास।		
आ०	च्याव्यात्	च्याव्यास्ताम्	च्याव्यासुः
	च्याव्याः	च्याव्यास्तम्	च्याव्यास्त
	च्याव्यासम्	च्याव्यास्व	च्याव्यास्म
श्व०	च्यावयिता	च्यावयितारौ	च्यावयितारः
	च्यावयितासि	च्यावयितास्थः	च्यावयितास्थ
	च्यावयितास्मि	च्यावयितास्वः	च्यावयितास्मः
भ०	च्यावयिष्यति	च्यावयिष्यतः	च्यावयिष्यन्ति
	च्यावयिष्यसि	च्यावयिष्यथः	च्यावयिष्यथ
	च्यावयिष्यामि	च्यावयिष्यावः	च्यावयिष्यामः
क्रि०	अच्यावयिष्यत्	अच्यावयिष्यताम्	अच्यावयिष्यन्
	अच्यावयिष्यः	अच्यावयिष्यतम्	अच्यावयिष्यत
	अच्यावयिष्यम्	अच्यावयिष्याव	अच्यावयिष्याम

१७२२. भूण् (भू) अवकल्कने। मीश्रीकरणे इत्यर्थः। विकल्कने इति नन्दी। अवकल्पने इत्यन्ये। १५५

व०	भावयति	भावयतः	भावयन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स०	भावयेत्	भावयेताम्	भावयेयु:
प०	भावयतु/भावयतात्	भावयताम्	भावयन्तु
ह्य०	अभावयत्	अभावयताम्	अभावयन्
अ०	अबीभवत्	अबीभवताम्	अबीभवन्
प०	भावयाञ्चकार	भावयाञ्चक्रतु:	भावयाञ्चक्रु:
	भावयाम्बभूव/भावयामास।		
आ०	भाव्यात्	भाव्यास्ताम्	भाव्यासु:
श्व०	भावयिता	भावयितारौ	भावयितार:
भ०	भावयिष्यति	भावयिष्यत:	भावयिष्यन्ति
क्रि०	अभावयिष्यत्	अभावयिष्यताम्	अभावयिष्यन्

॥अथ कान्तास्त्रय:॥

१७२३. बुक्क (बुक्क्) भषणे। आभाषणे इत्यन्ये। १५६

व०	बुक्कयति	बुक्कयत:	बुक्कयन्ति
स०	बुक्कयेत्	बुक्कयेताम्	बुक्कयेयु:
प०	बुक्कयतु/तात्	बुक्कयताम्	बुक्कयन्तु
ह्य०	अबुक्कयत्	अबुक्कयताम्	अबुक्कयन्
अ०	अबुबुक्कत्	अबुबुक्कताम्	अबुबुक्कन्
प०	बुक्कयाञ्चकार	बुक्कयाञ्चक्रतु:	बुक्कयाञ्चक्रु:
	बुक्कयाम्बभूव/बुक्कयामास।		
आ०	बुक्क्यात्	बुक्क्यास्ताम्	बुक्क्यासु:
श्व०	बुक्कयिता	बुक्कयितारौ	बुक्कयितार:
भ०	बुक्कयिष्यति	बुक्कयिष्यत:	बुक्कयिष्यन्ति
क्रि०	अबुक्कयिष्यत्	अबुक्कयिष्यताम्	अबुक्कयिष्यन्

१७२४. रक (रक्) आस्वादने। १५७

व०	राकयति	राकयत:	राकयन्ति
स०	राकयेत्	राकयेताम्	राकयेयु:
प०	राकयतु/राकयतात्	राकयताम्	राकयन्तु
ह्य०	अराकयत्	अराकयताम्	अराकयन्
अ०	अरीरकत्	अरीरकताम्	अरीरकन्
प०	राकयाञ्चकार	राकयाञ्चक्रतु:	राकयाञ्चक्रु:
	राकयाम्बभूव/राकयामास।		
आ०	राक्यात्	राक्यास्ताम्	राक्यासु:
श्व०	राकयिता	राकयितारौ	राकयितार:
भ०	राकयिष्यति	राकयिष्यत:	राकयिष्यन्ति
क्रि०	अराकयिष्यत्	अराकयिष्यताम्	अराकयिष्यन्

१७२५. लकण् (लक्) आस्वादने। १५८

व०	लाकयति	लाकयत:	लाकयन्ति
स०	लाकयेत्	लाकयेताम्	लाकयेयु:
प०	लाकयतु/लाकयतात्	लाकयताम्	लाकयन्तु
ह्य०	अलाकयत्	अलाकयताम्	अलाकयन्
अ०	अलीलकत्	अलीलकताम्	अलीलकन्
प०	लाकयाञ्चकार	लाकयाञ्चक्रतु:	लाकयाञ्चक्रु:
	लाकयाम्बभूव/लाकयामास।		
आ०	लाक्यात्	लाक्यास्ताम्	लाक्यासु:
श्व०	लाकयिता	लाकयितारौ	लाकयितार:
भ०	लाकयिष्यति	लाकयिष्यत:	लाकयिष्यन्ति
क्रि०	अलाकयिष्यत्	अलाकयिष्यताम्	अलाकयिष्यन्

॥अथ गान्तास्त्रय:॥

१७२६. रगण् (रग्) आस्वादने। १५९

व०	रागयति	रागयत:	रागयन्ति
स०	रागयेत्	रागयेताम्	रागयेयु:
प०	रागयतु/रागयतात्	रागयताम्	रागयन्तु
ह्य०	अरागयत्	अरागयताम्	अरागयन्
अ०	अरीरगत्	अरीरगताम्	अरीरगन्
प०	रागयाञ्चकार	रागयाञ्चक्रतु:	रागयाञ्चक्रु:
	रागयाम्बभूव/रागयामास।		
आ०	राग्यात्	राग्यास्ताम्	राग्यासु:
श्व०	रागयिता	रागयितारौ	रागयितार:
भ०	रागयिष्यति	रागयिष्यत:	रागयिष्यन्ति
क्रि०	अरागयिष्यत्	अरागयिष्यताम्	अरागयिष्यन्

अन्यत्र रगे शङ्कायां, रगति।

१७२७. लगण् (लग्) आस्वादने। १६०

व०	लागयति	लागयत:	लागयन्ति
स०	लागयेत्	लागयेताम्	लागयेयु:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	लागयतु/लागयतात्	लागयताम्	लागयन्तु
ह्य०	अलागयत्	अलागयताम्	अलागयन्
अ०	अलीलगत्	अलीलगताम्	अलीलगन्
प०	लागयाञ्चकार	लागयाञ्चक्रतुः	लागयाञ्चक्रुः
	लागयाम्बभूव/लागयामास।		
आ०	लाग्यात्	लाग्यास्ताम्	लाग्यासुः
श्व०	लागयिता	लागयितारौ	लागयितारः
भ०	लागयिष्यति	लागयिष्यतः	लागयिष्यन्ति
क्रि०	अलागयिष्यत्	अलागयिष्यताम्	अलागयिष्यन्

१७२८. लिगुण् (लिङ्ग्) चित्रीकरणे। १६१

व०	लिङ्गयति	लिङ्गयतः	लिङ्गयन्ति
स०	लिङ्गयेत्	लिङ्गयेताम्	लिङ्गयेयुः
प०	लिङ्गयतु/लिङ्गयतात्	लिङ्गयताम्	लिङ्गयन्तु
ह्य०	अलिङ्गयत्	अलिङ्गयताम्	अलिङ्गयन्
अ०	अलिलिङ्गत्	अलिलिङ्गताम्	अलिलिङ्गन्
प०	लिङ्गयाञ्चकार	लिङ्गयाञ्चक्रतुः	लिङ्गयाञ्चक्रुः
	लिङ्गयाम्बभूव/लिङ्गयामास।		
आ०	लिङ्ग्यात्	लिङ्ग्यास्ताम्	लिङ्ग्यासुः
श्व०	लिङ्गयिता	लिङ्गयितारौ	लिङ्गयितारः
भ०	लिङ्गयिष्यति	लिङ्गयिष्यतः	लिङ्गयिष्यन्ति
क्रि०	अलिङ्गयिष्यत्	अलिङ्गयिष्यताम्	अलिङ्गयिष्यन्

॥अथ चान्तास्त्रयः॥

१७२९. चर्चण् (चर्च्) अध्ययने। १६२

व०	चर्चयति	चर्चयतः	चर्चयन्ति
स०	चर्चयेत्	चर्चयेताम्	चर्चयेयुः
प०	चर्चयतु/चर्चयतात्	चर्चयताम्	चर्चयन्तु
ह्य०	अचर्चयत्	अचर्चयताम्	अचर्चयन्
अ०	अचचर्चत्	अचचर्चताम्	अचचर्चन्
प०	चर्चयाञ्चकार	चर्चयाञ्चक्रतुः	चर्चयाञ्चक्रुः
	चर्चयाम्बभूव/चर्चयामास।		
आ०	चर्च्यात्	चर्च्यास्ताम्	चर्च्यासुः
श्व०	चर्चयिता	चर्चयितारौ	चर्चयितारः
भ०	चर्चयिष्यति	चर्चयिष्यतः	चर्चयिष्यन्ति
क्रि०	अचर्चयिष्यत्	अचर्चयिष्यताम्	अचर्चयिष्यन्

१७३०. अञ्चण् (अञ्च्) विशेषणे। १६३

विशेषण मतिशयः।

व०	अञ्चयति	अञ्चयतः	अञ्चयन्ति
स०	अञ्चयेत्	अञ्चयेताम्	अञ्चयेयुः
प०	अञ्चयतु/अञ्चयतात्	अञ्चयताम्	अञ्चयन्तु
ह्य०	आञ्चयत्	आञ्चयताम्	आञ्चयन्
अ०	आञ्चिचत्	आञ्चिचताम्	आञ्चिचन्
प०	अञ्चयाञ्चकार	अञ्चयाञ्चक्रतुः	अञ्चयाञ्चक्रुः
	अञ्चयाम्बभूव/अञ्चयामास।		
आ०	अञ्च्यात्	अञ्च्यास्ताम्	अञ्च्यासुः
श्व०	अञ्चयिता	अञ्चयितारौ	अञ्चयितारः
भ०	अञ्चयिष्यति	अञ्चयिष्यतः	अञ्चयिष्यन्ति
क्रि०	आञ्चयिष्यत्	आञ्चयिष्यताम्	आञ्चयिष्यन्

अञ्चयत्यर्थं व्यक्तीकरोतीत्यर्थः। अन्यत्र अञ्चू गतौ च, अञ्चति।

१७३१. मुचण् (मुच्) प्रमोचने। प्रयोजने इत्येके। मोचयति कुण्डले प्रयोजयतीत्यर्थः। १६४

व०	मोचयति	मोचयतः	मोचयन्ति
स०	मोचयेत्	मोचयेताम्	मोचयेयुः
प०	मोचयतु/मोचयतात्	मोचयताम्	मोचयन्तु
ह्य०	अमोचयत्	अमोचयताम्	अमोचयन्
अ०	अमूमुचत्	अमूमुचताम्	अमूमुचन्
प०	मोचयाञ्चकार	मोचयाञ्चक्रतुः	मोचयाञ्चक्रुः
	मोचयाम्बभूव/मोचयामास।		
आ०	मोच्यात्	मोच्यास्ताम्	मोच्यासुः
श्व०	मोचयिता	मोचयितारौ	मोचयितारः
भ०	मोचयिष्यति	मोचयिष्यतः	मोचयिष्यन्ति
क्रि०	अमोचयिष्यत्	अमोचयिष्यताम्	अमोचयिष्यन्

अन्यत्र मुचि कल्कने इत्येके, मोचते, मुच्लृंती मोक्षणे। मुञ्चति मुञ्चते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥अथ जान्तौ॥

१७३२. अर्जण् (अर्ज्) प्रतियत्ने।

प्रतियत्न: संस्कार:। १६५

व०	अर्जयति	अर्जयत:	अर्जयन्ति
स०	अर्जयेत्	अर्जयेताम्	अर्जयेयु:
प०	अर्जयतु/अर्जयतात्	अर्जयताम्	अर्जयन्तु
ह्य०	आर्जयत्	आर्जयताम्	आर्जयन्
अ०	आर्जिजत्	आर्जिजताम्	आर्जिजन्
प०	अर्जयाञ्चकार	अर्जयाञ्चक्रतु:	अर्जयाञ्चक्रु:
	अर्जयाम्बभूव/अर्जयामास।		
आ०	अर्ज्यात्	अर्ज्यास्ताम्	अर्ज्यासु:
श्व०	अर्जयिता	अर्जयितारौ	अर्जयितार:
भ०	अर्जयिष्यति	अर्जयिष्यत:	अर्जयिष्यन्ति
क्रि०	आर्जयिष्यत्	आर्जयिष्यताम्	आर्जयिष्यन्

अर्जयति हिरण्यं निवेशयतीत्यर्थ:। अन्यत्र तु अर्ज अर्जने। अर्जति।

॥अथ टान्तास्त्रय:॥

१७३३. चटण् (चट्) भेदे। १६६

व०	चाटयति	चाटयत:	चाटयन्ति
स०	चाटयेत्	चाटयेताम्	चाटयेयु:
प०	चाटयतु/चाटयतात्	चाटयताम्	चाटयन्तु
ह्य०	अचाटयत्	अचाटयताम्	अचाटयन्
अ०	अचीचटत्	अचीचटताम्	अचीचटन्
प०	चाटयाञ्चकार	चाटयाञ्चक्रतु:	चाटयाञ्चक्रु:
	चाटयाम्बभूव/चाटयामास।		
आ०	चाट्यात्	चाट्यास्ताम्	चाट्यासु:
श्व०	चाटयिता	चाटयितारौ	चाटयितार:
भ०	चाटयिष्यति	चाटयिष्यत:	चाटयिष्यन्ति
क्रि०	अचाटयिष्यत्	अचाटयिष्यताम्	अचाटयिष्यन्[1]

१. णिचोऽनित्यत्वाच्चटति।

१७३४. भजण् (भज्) विश्राणने। १६७

व०	भाजयति	भाजयत:	भाजयन्ति
स०	भाजयेत्	भाजयेताम्	भाजयेयु:
प०	भाजयतु/भाजयतात्	भाजयताम्	भाजयन्तु
ह्य०	अभाजयत्	अभाजयताम्	अभाजयन्
अ०	अबीभजत्	अबीभजताम्	अबीभजन्
प०	भाजयाञ्चकार	भाजयाञ्चक्रतु:	भाजयाञ्चक्रु:
	भाजयाम्बभूव/भाजयामास।		
आ०	भाज्यात्	भाज्यास्ताम्	भाज्यासु:
श्व०	भाजयिता	भाजयितारौ	भाजयितार:
भ०	भाजयिष्यति	भाजयिष्यत:	भाजयिष्यन्ति
क्रि०	अभाजयिष्यत्	अभाजयिष्यताम्	अभाजयिष्यन्[2]

१७३५. स्फुटण् (स्फुट्) भेदे। १६८

व०	स्फोटयति	स्फोटयत:	स्फोटयन्ति
स०	स्फोटयेत्	स्फोटयेताम्	स्फोटयेयु:
प०	स्फोटयतु/स्फोटयतात्	स्फोटयताम्	स्फोटयन्तु
ह्य०	अस्फोटयत्	अस्फोटयताम्	अस्फोटयन्
अ०	अपुस्फुटत्	अपुस्फुटताम्	अपुस्फुटन्
प०	स्फोटयाञ्चकार	स्फोटयाञ्चक्रतु:	स्फोटयाञ्चक्रु:
	स्फोटयाम्बभूव/स्फोटयामास।		
आ०	स्फोट्यात्	स्फोट्यास्ताम्	स्फोट्यासु:
श्व०	स्फोटयिता	स्फोटयितारौ	स्फोटयितार:
भ०	स्फोटयिष्यति	स्फोटयिष्यत:	स्फोटयिष्यन्ति
क्रि०	अस्फोटयिष्यत्	अस्फोटयिष्यताम्	अस्फोटयिष्यन्

[3]१७३६. घटण् (घट्) संघाते। १६९

व०	घाटयति	घाटयत:	घाटयन्ति
स०	घाटयेत्	घाटयेताम्	घाटयेयु:
प०	घाटयतु/घाटयतात्	घाटयताम्	घाटयन्तु
ह्य०	अघाटयत्	अघाटयताम्	अघाटयन्

२. अन्यत्र भर्जी सेवायाम भजति भजने

३. अन्यत्र तु स्फुट्ट विसरणे स्फोटति स्फुटि विकसने स्फोटते स्फुटत पिकाले स्फुटति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	अजीघटत्	अजीघटताम्	अजीघटन्
प०	घाटयाञ्चकार	घाटयाञ्चक्रतुः	घाटयाञ्चक्रुः
	घाटयाम्बभूव/घाटयामास।		
आ०	घाट्यात्	घाट्यास्ताम्	घाट्यासुः
श्व०	घाटयिता	घाटयितारौ	घाटयितारः
भ०	घाटयिष्यति	घाटयिष्यतः	घाटयिष्यन्ति
क्रि०	अघाटयिष्यत्	अघाटयिष्यताम्	अघाटयिष्यन्[1]

१७३६-२. हनंक् (हन्) हिंसागत्योः तत्र हिंसायाम्।

व०	घातयति	घातयतः	घातयन्ति
स०	घातयेत्	घातयेताम्	घातयेयुः
प०	घातयतु/घातयतात्	घातयताम्	घातयन्तु
ह्य०	अघातयत्	अघातयताम्	अघातयन्
अ०	अजीघतत्	अजीघतताम्	अजीघतन्
प०	घातयाञ्चकार	घातयाञ्चक्रतुः	घातयाञ्चक्रुः
	घातयाम्बभूव/घातयामास।		
आ०	घात्यात्	घात्यास्ताम्	घात्यासुः
श्व०	घातयिता	घातयितारौ	घातयितारः
भ०	घातयिष्यति	घातयिष्यतः	घातयिष्यन्ति
क्रि०	अघातयिष्यत्	अघातयिष्यताम्	अघातयिष्यन्

१७३६-३. हिंसुप् (हिंस्) हिंसायाम्।

व०	हिंसयति	हिंसयतः	हिंसयन्ति
स०	हिंसयेत्	हिंसयेताम्	हिंसयेयुः
प०	हिंसयतु/हिंसयतात्	हिंसयताम्	हिंसयन्तु
ह्य०	अहिंसयत्	अहिंसयताम्	अहिंसयन्
अ०	अजिहिंसत्	अजिहिंसताम्	अजिहिंसन्
प०	हिंसयाञ्चकार	हिंसयाञ्चक्रतुः	हिंसयाञ्चक्रुः
	हिंसयाम्बभूव/हिंसयामास।		
आ०	हिंस्यात्	हिंस्यास्ताम्	हिंस्यासुः
श्व०	हिंसयिता	हिंसयितारौ	हिंसयितारः
भ०	हिंसयिष्यति	हिंसयिष्यतः	हिंसयिष्यन्ति
क्रि०	अहिंसयिष्यत्	अहिंसयिष्यताम्	अहिंसयिष्यन्

१७३६-४. तृहप् (तृह्) तर्हायाम्।

व०	तर्हयति	तर्हयतः	तर्हयन्ति
स०	तर्हयेत्	तर्हयेताम्	तर्हयेयुः
प०	तर्हयतु/तर्हयतात्	तर्हयताम्	तर्हयन्तु
ह्य०	अतर्हयत्	अतर्हयताम्	अतर्हयन्
अ०	अतीतृहत्	अतीतृहताम्	अतीतृहन्
प०	तर्हयाञ्चकार	तर्हयाञ्चक्रतुः	तर्हयाञ्चक्रुः
	तर्हयाम्बभूव/तर्हयामास।		
आ०	तर्ह्यात्	तर्ह्यास्ताम्	तर्ह्यासुः
श्व०	तर्हयिता	तर्हयितारौ	तर्हयितारः
भ०	तर्हयिष्यति	तर्हयिष्यतः	तर्हयिष्यन्ति
क्रि०	अतर्हयिष्यत्	अतर्हयिष्यताम्	अतर्हयिष्यन्

॥अथ णान्ताः॥

१७३७. कणण् (कण्) निमीलने। १७०

व०	काणयति	काणयतः	काणयन्ति
स०	काणयेत्	काणयेताम्	काणयेयुः
प०	काणयतु/काणयतात्	काणयताम्	काणयन्तु
ह्य०	अकाणयत्	अकाणयताम्	अकाणयन्
अ०	अचिकणत्	अचिकणताम्	अचिकणन्
प०	काणयाञ्चकार	काणयाञ्चक्रतुः	काणयाञ्चक्रुः
	काणयाम्बभूव/काणयामास।		
आ०	काण्यात्	काण्यास्ताम्	काण्यासुः
श्व०	काणयिता	काणयितारौ	काणयितारः

१. अर्थान्तरे तु घटिषु चेष्टायां घटते। हन्त्यर्थाश्च। येऽन्यत्र हन्त्यर्था हिंसार्थाः पठ्यन्ते तेऽप्यत्र चुरादौ वेदितव्याः। हनंक् हिंसागत्योः। घातयति। हिंसु तृहप् हिंसायाम् हिंसयति तर्हयति। तत्तद्गणपाठसामर्थ्यात्तु हन्ति हिनस्ति तृणेढीत्यादयोऽपि अनेनैव च सिद्धेऽन्येषां हिंसार्थानां चुरादौ पाठ आत्मनेपदादिगतरूपभेदार्थः। अन्ये तु चटास्फुटौ घट च हन्त्यर्था इत्याद्यं पाठं मन्यन्ते। अस्यार्थः चट इत्ययं धातु आङ्पूर्वश्च स्फुट इति घट इत्ययं च त्रयोऽप्येते हन्त्यर्था हिंसार्थाः सन्तश्चुरादौ भवन्ति् चाटयति आस्फोटयति घाटयति हन्तीत्यर्थः। अर्थान्तरे तु न चुरादित्वम् चटति आस्फुटति घटते। अपरे तु अन्यथा व्याचक्षते। चटास्फुटौ आस्फुटत्यर्थे चुरादिः। चाटयति। घट च। अयंचास्फुटत्यर्थे चुरादिः घाटयति अन्यत्र चटति घटते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	काणयिष्यति	काणयिष्यत:	काणयिष्यन्ति
क्रि०	अकाणयिष्यत्	अकाणयिष्यताम्	अकाणयिष्यन्

अन्यत्र तु कण शब्दे, कणति।

१७३८. यतण् (यत्) निकारोपस्कारयो:। निकार:खेदनम्। निरश्च प्रतिदाने निर:परो यति:प्रतिदानार्थं चुरादि; निर्यातयति; ऋणं शोधयतीत्यर्थ:। १७१

व०	यातयति	यातयत:	यातयन्ति
स०	यातयेत्	यातयेताम्	यातयेयु:
प०	यातयतु/यातयतात्	यातयताम्	यातयन्तु
ह्य०	अयातयत्	अयातयताम्	अयातयन्
अ०	अयीयतत्	अयीयतताम्	अयीयतन्
प०	यातयाञ्चकार	यातयाञ्चक्रतु:	यातयाञ्चक्रु:
	यातयाम्बभूव/यातयामास।		
आ०	यात्यात्	यात्यास्ताम्	यात्यासु:
श्व०	यातयिता	यातयितारौ	यातयितार:
भ०	यातयिष्यति	यातयिष्यत:	यातयिष्यन्ति
क्रि०	अयातयिष्यत्	अयातयिष्यताम्	अयातयिष्यन्

अथ दान्ता: षट।

१७३९. शब्दण् (शब्द्) उपसर्गाद् भाषाविष्कारयो:।[1]

व०	शब्दयति	शब्दयत:	शब्दयन्ति
	शब्दयसि	शब्दयथ:	शब्दयथ
	शब्दयामि	शब्दयाव:	शब्दयाम:
स०	शब्दयेत्	शब्दयेताम्	शब्दयेयु:
	शब्दये:	शब्दयेतम्	शब्दयेत
	शब्दयेयम्	शब्दयेव	शब्दयेम
प०	शब्दयतु/शब्दयतात्	शब्दयताम्	शब्दयन्तु
	शब्दय/शब्दयतात्	शब्दयतम्	शब्दयत
	शब्दयानि	शब्दयाव	शब्दयाम
ह्य०	अशब्दयत्	अशब्दयताम्	अशब्दयन्
	अशब्दय:	अशब्दयतम्	अशब्दयत
	अशब्दयम्	अशब्दयाव	अशब्दयाम
अ०	अशशब्दत्	अशशब्दताम्	अशशब्दन्
	अशशब्द:	अशशब्दतम्	अशशब्दत
	अशशब्दम्	अशशब्दाव	अशशब्दाम
प०	शब्दयाञ्चकार	शब्दयाञ्चक्रतु:	शब्दयाञ्चक्रु:
	शब्दयाञ्चकर्थ	शब्दयाञ्चक्रथु:	शब्दयाञ्चक्र
	शब्दयाञ्चकार/कर	शब्दयाञ्चकृव	शब्दयाञ्चकृम
	शब्दयाम्बभूव/शब्दयामास।		
आ०	शब्द्यात्	शब्द्यास्ताम्	शब्द्यासु:
	शब्द्या:	शब्द्यास्तम्	शब्द्यास्त
	शब्द्यासम्	शब्द्यास्व	शब्द्यास्म
श्व०	शब्दयिता	शब्दयितारौ	शब्दयितार:
	शब्दयितासि	शब्दयितास्थ:	शब्दयितास्थ
	शब्दयितास्मि	शब्दयितास्व:	शब्दयितास्म:
भ०	शब्दयिष्यति	शब्दयिष्यत:	शब्दयिष्यन्ति
	शब्दयिष्यसि	शब्दयिष्यथ:	शब्दयिष्यथ
	शब्दयिष्यामि	शब्दयिष्याव:	शब्दयिष्याम:
क्रि०	अशब्दयिष्यत्	अशब्दयिष्यताम्	अशब्दयिष्यन्
	अशब्दयिष्य:	अशब्दयिष्यतम्	अशब्दयिष्यत
	अशब्दयिष्यम्	अशब्दयिष्याव	अशब्दयिष्याम

१७४०. षूदण् (सूद्) आश्रवणे। १७३

व०	सूदयति	सूदयत:	सूदयन्ति
स०	सूदयेत्	सूदयेताम्	सूदयेयु:
प०	सूदयतु/सूदयतात्	सूदयताम्	सूदयन्तु
ह्य०	असूदयत्	असूदयताम्	असूदयन्
अ०	असूषुदत्	असूषुदताम्	असूषुदन्
प०	सूदयाञ्चकार	सूदयाञ्चक्रतु:	सूदयाञ्चक्रु:
	सूदयाम्बभूव/सूदयामास।		
आ०	सूद्यात्	सूद्यास्ताम्	सूद्यासु:
श्व०	सूदयिता	सूदयितारौ	सूदयितार:

१. भाषा भाषणतम् भाषे आविष्कारे चायं शब्द इत्यर्थे धातुरूप सर्गात्परश्चुरादि:। योगविभागोऽत्रेति नन्दी शब्द उपसर्गादित्येक: भाषाविष्कारयोरित्यपर:। अनुपसर्गार्थोऽयमारम्भ:। पूर्वस्तु भाषाविष्करणार्थ: १७२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	सूदयिष्यति	सूदयिष्यत:	सूदयिष्यन्ति
क्रि०	असूदयिष्यत्	असूदयिष्यताम्	असूदयिष्यन्[1]

१७४१. आङः क्रन्दण् (आ-क्रन्द्) सातत्ये। आङ:पर:क्रन्द इत्ययं धातु: सातत्यार्थे चुरादि:। १७४

व०	आक्रन्दयति	आक्रन्दयत:	आक्रन्दयन्ति
स०	आक्रन्दयेत्	आक्रन्दयेताम्	आक्रन्दयेयु:
प०	आक्रन्दयतु/तात्	आक्रन्दयताम्	आक्रन्दयन्तु
ह्य०	आक्रन्दयत्	आक्रन्दयताम्	आक्रन्दयन्
अ०	आचक्रन्दत्	आचक्रन्दताम्	आचक्रन्दन्
प०	आक्रन्दयाञ्चकार	आक्रन्दयाञ्चक्रतु:	आक्रन्दयाञ्चक्रु:
	आक्रन्दयाम्बभूव/आक्रन्दयामास।		
आ०	आक्रन्द्यात्	आक्रन्द्यास्ताम्	आक्रन्द्यासु:
श्व०	आक्रन्दयिता	आक्रन्दयितारौ	आक्रन्दयितार:
भ०	आक्रन्दयिष्यति	आक्रन्दयिष्यत:	आक्रन्दयिष्यन्ति
क्रि०	आक्रन्दयिष्यत्	आक्रन्दयिष्यताम्	आक्रन्दयिष्यन्

अन्यत्र तु क्रदु रोदनाह्वानयो:। आक्रन्दति।

१७४२. ष्वदण् (स्वद्) आस्वादने। संवरे केचित्। १७५

व०	स्वादयति	स्वादयत:	स्वादयन्ति
स०	स्वादयेत्	स्वादयेताम्	स्वादयेयु:
प०	स्वादयतु/स्वादयतात्	स्वादयताम्	स्वादयन्तु
ह्य०	अस्वादयत्	अस्वादयताम्	अस्वादयन्
अ०	असिष्वदत्	असिष्वदताम्	असिष्वदन्
प०	स्वादयाञ्चकार	स्वादयाञ्चक्रतु:	स्वादयाञ्चक्रु:
	स्वादयाम्बभूव/स्वादयामास।		
आ०	स्वाद्यात्	स्वाद्यास्ताम्	स्वाद्यासु:
श्व०	स्वादयिता	स्वादयितारौ	स्वादयितार:
भ०	स्वादयिष्यति	स्वादयिष्यत:	स्वादयिष्यन्ति
क्रि०	अस्वादयिष्यत्	अस्वादयिष्यताम्	अस्वादयिष्यन्

१. अर्थान्तरे तु षूदि क्षरणे। सूदते।

१७४३. आस्वाद: सकर्मकात्। आङ्पूर्वात्स्वदते: सकर्मकाण्णिण्भवति; आस्वादयति यवागूम्। १७६

व०	आस्वादयति	आस्वादयत:	आस्वादयन्ति
स०	आस्वादयेत्	आस्वादयेताम्	आस्वादयेयु:
प०	आस्वादयतु/तात्	आस्वादयताम्	आस्वादयन्तु
ह्य०	आस्वादयत्	आस्वादयताम्	आस्वादयन्
अ०	आसिस्वदत्	आसिस्वदताम्	आसिस्वदन्
प०	आस्वादयाञ्चकार	आस्वादयाञ्चक्रतु:	आस्वादयाञ्चक्रु:
	आस्वादयाम्बभूव/आस्वादयामास।		
आ०	आस्वाद्यात्	आस्वाद्यास्ताम्	आस्वाद्यासु:
श्व०	आस्वादयिता	आस्वादयितारौ	आस्वादयितार:
भ०	आस्वादयिष्यति	आस्वादयिष्यत:	आस्वादयिष्यन्ति
क्रि०	आस्वादयिष्यत्	आस्वादयिष्यताम्	आस्वादयिष्यन्

१७४४. मुदण् (मुद्) संसर्गे। १७७

व०	मोदयति	मोदयत:	मोदयन्ति
स०	मोदयेत्	मोदयेताम्	मोदयेयु:
प०	मोदयतु/मोदयतात्	मोदयताम्	मोदयन्तु
ह्य०	अमोदयत्	अमोदयताम्	अमोदयन्
अ०	अमूमुदत्	अमूमुदताम्	अमूमुदन्
प०	मोदयाञ्चकार	मोदयाञ्चक्रतु:	मोदयाञ्चक्रु:
	मोदयाम्बभूव/मोदयामास।		
आ०	मोद्यात्	मोद्यास्ताम्	मोद्यासु:
श्व०	मोदयिता	मोदयितारौ	मोदयितार:
भ०	मोदयिष्यति	मोदयिष्यत:	मोदयिष्यन्ति
क्रि०	अमोदयिष्यत्	अमोदयिष्यताम्	अमोदयिष्यन्

।।अथ धान्ता:।।

१७४५. शृधण् (शृध्) प्रसहने। प्रसहनमभिभव:। १७८

व०	शर्धयति	शर्धयत:	शर्धयन्ति
स०	शर्धयेत्	शर्धयेताम्	शर्धयेयु:
प०	शर्धयतु/शर्धयतात्	शर्धयताम्	शर्धयन्तु
ह्य०	अशर्धयत्	अशर्धयताम्	अशर्धयन्
अ०	अशीशृधत्	अशीशृधताम्	अशीशृधन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	शर्धयाञ्चकार	शर्धयाञ्चक्रतु:	शर्धयाञ्चक्रु:
	शर्धयाम्बभूव/शर्धयामास।		
आ०	शर्ध्यात्	शर्ध्यास्ताम्	शर्ध्यासु:
श्व०	शर्धयिता	शर्धयितारौ	शर्धयितार:
भ०	शर्धयिष्यति	शर्धयिष्यत:	शर्धयिष्यन्ति
क्रि०	अशर्धयिष्यत्	अशर्धयिष्यताम्	अशर्धयिष्यन्

॥अथ पान्ता:॥

१७४६. कृपण् (कृप्) अवकल्कने[१]। १७९

व०	कल्पयति	कल्पयत:	कल्पयन्ति
स०	कल्पयेत्	कल्पयेताम्	कल्पयेयु:
प०	कल्पयतु/कल्पयतात्	कल्पयताम्	कल्पयन्तु
ह्य०	अकल्पयत्	अकल्पयताम्	अकल्पयन्
अ०	अचीक्लृपत्	अचीक्लृपताम्	अचीक्लृपन्
प०	कल्पयाञ्चकार	कल्पयाञ्चक्रतु:	कल्पयाञ्चक्रु:
	कल्पयाम्बभूव/कल्पयामास।		
आ०	कल्प्यात्	कल्प्यास्ताम्	कल्प्यासु:
श्व०	कल्पयिता	कल्पयितारौ	कल्पयितार:
भ०	कल्पयिष्यति	कल्पयिष्यत:	कल्पयिष्यन्ति
क्रि०	अकल्पयिष्यत्	अकल्पयिष्यताम्	अकल्पयिष्यन्

अर्थान्तरे तु कृपीङ् सामर्थ्ये कल्पते।

॥अथ मान्ता:॥

१७४७. जभुण् (जम्भ्) नाशने। १८०

व०	जम्भयति	जम्भयत:	जम्भयन्ति
स०	जम्भयेत्	जम्भयेताम्	जम्भयेयु:
प०	जम्भयतु/जम्भयतात्	जम्भयताम्	जम्भयन्तु
ह्य०	अजम्भयत्	अजम्भयताम्	अजम्भयन्
अ०	अज्जम्भत्	अज्जम्भताम्	अज्जम्भन्
प०	जम्भयाञ्चकार	जम्भयाञ्चक्रतु:	जम्भयाञ्चक्रु:
	जम्भयाम्बभूव/जम्भयामास।		
आ०	जम्भ्यात्	जम्भ्यास्ताम्	जम्भ्यासु:
श्व०	जम्भयिता	जम्भयितारौ	जम्भयितार:
भ०	जम्भयिष्यति	जम्भयिष्यत:	जम्भयिष्यन्ति
क्रि०	अजम्भयिष्यत्	अजम्भयिष्यताम्	अजम्भयिष्यन्

अन्यत्र जभुङ् गात्रविनामे; जम्भते।

॥अथ मान्ता:॥

१७४८. अमण् (अम्) रोगे। १८१

व०	आमयति	आमयत:	आमयन्ति
स०	आमयेत्	आमयेताम्	आमयेयु:
प०	आमयतु/आमयतात्	आमयताम्	आमयन्तु
ह्य०	आमयत्	आमयताम्	आमयन्
अ०	आमिमत्	आमिमताम्	आमिमन्
प०	आमयाञ्चकार	आमयाञ्चक्रतु:	आमयाञ्चक्रु:
	आमयाम्बभूव/आमयामास।		
आ०	आम्यात्	आम्यास्ताम्	आम्यासु:
श्व०	आमयिता	आमयितारौ	आमयितार:
भ०	आमयिष्यति	आमयिष्यत:	आमयिष्यन्ति
क्रि०	आमयिष्यत्	आमयिष्यताम्	आमयिष्यन्

अन्यत्र अम गतौ अमति।

१७४९. चरण् (चर्) असंशये।

निश्चये इत्यर्थ:। संशये इति केचित्। विचारणा हि संशये सति भवतीत्याहु:। १८२

व०	विचारयति	विचारयत:	विचारयन्ति
स०	विचारयेत्	विचारयेताम्	विचारयेयु:
प०	विचारयतु/तात्	विचारयताम्	विचारयन्तु
ह्य०	व्यचारयत्	व्यचारयताम्	व्यचारयन्
अ०	व्यचिचरत्	व्यचिचरताम्	व्यचिचरन्
प०	विचारयाञ्चकार	विचारयाञ्चक्रतु:	विचारयाञ्चक्रु:
	विचारयाम्बभूव/विचारयामास।		
आ०	विचार्यात्	विचार्यास्ताम्	विचार्यासु:
श्व०	विचारयिता	विचारयितारौ	विचारयितार:
भ०	विचारयिष्यति	विचारयिष्यत:	विचारयिष्यन्ति
क्रि०	अविचारयिष्यत्	अविचारयिष्यताम्	अविचारयिष्यन्

अन्यत्र चर भक्षणे च; चरति।

१. अवकल्कनं मिश्रीकरणं सामर्थ्यञ्च, अवकल्पन मित्यपरे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७५०. पूरण् (पूर्) आप्यायने। १८३

व०	पूरयति	पूरयत:	पूरयन्ति
स०	पूरयेत्	पूरयेताम्	पूरयेयु:
प०	पूरयतु/पूरयतात्	पूरयताम्	पूरयन्तु
ह्य०	अपूरयत्	अपूरयताम्	अपूरयन्
अ०	अपूपुरत्	अपूपुरताम्	अपूपुरन्
प०	पूरयाञ्चकार	पूरयाञ्चक्रतु:	पूरयाञ्चक्रु:
	पूरयाम्बभूव/पूरयामास।		
आ०	पूर्यात्	पूर्यास्ताम्	पूर्यासु:
श्व०	पूरयिता	पूरयितारौ	पूरयितार:
भ०	पूरयिष्यति	पूरयिष्यत:	पूरयिष्यन्ति
क्रि०	अपूरयिष्यत्	अपूरयिष्यताम्	अपूरयिष्यन्

अन्यत्र पूरैचि आप्यायने; पूर्यते।

॥अथ लान्ता:॥

१७५१. दलण् (दल) विदारणे। १८४

व०	दालयति	दालयत:	दालयन्ति
स०	दालयेत्	दालयेताम्	दालयेयु:
प०	दालयतु/दालयतात्	दालयताम्	दालयन्तु
ह्य०	अदालयत्	अदालयताम्	अदालयन्
अ०	अदीदलत्	अदीदलताम्	अदीदलन्
प०	दालयाञ्चकार	दालयाञ्चक्रतु:	दालयाञ्चक्रु:
	दालयाम्बभूव/दालयामास।		
आ०	दाल्यात्	दाल्यास्ताम्	दाल्यासु:
श्व०	दालयिता	दालयितारौ	दालयितार:
भ०	दालयिष्यति	दालयिष्यत:	दालयिष्यन्ति
क्रि०	अदालयिष्यत्	अदालयिष्यताम्	अदालयिष्यन्

अन्यत्र दल विशरणे; दलति।

॥अथ वान्ता:॥

१७५२. दिवण् (दिव्) अर्दने १८५

व०	देवयति	देवयत:	देवयन्ति
स०	देवयेत्	देवयेताम्	देवयेयु:
प०	देवयतु/देवयतात्	देवयताम्	देवयन्तु
ह्य०	अदेवयत्	अदेवयताम्	अदेवयन्
अ०	अदीदिवत्	अदीदिवताम्	अदीदिवन्
प०	देवयाञ्चकार	देवयाञ्चक्रतु:	देवयाञ्चक्रु:
	देवयाम्बभूव/देवयामास।		
आ०	देव्यात्	देव्यास्ताम्	देव्यासु:
श्व०	देवयिता	देवयितारौ	देवयितार:
भ०	देवयिष्यति	देवयिष्यत:	देवयिष्यन्ति
क्रि०	अदेवयिष्यत्	अदेवयिष्यताम्	अदेवयिष्यन्

अन्यत्र दिवूच् क्रीडादौ; दीव्यति।

॥अथ शान्ता:॥

१७५३. पशण् (पश्) बन्धने। १८६

व०	पाशयति	पाशयत:	पाशयन्ति
स०	पाशयेत्	पाशयेताम्	पाशयेयु:
प०	पाशयतु/पाशयतात्	पाशयताम्	पाशयन्तु
ह्य०	अपाशयत्	अपाशयताम्	अपाशयन्
अ०	अपीपशत्	अपीपशताम्	अपीपशन्
प०	पाशयाञ्चकार	पाशयाञ्चक्रतु:	पाशयाञ्चक्रु:
	पाशयाम्बभूव/पाशयामास।		
आ०	पाश्यात्	पाश्यास्ताम्	पाश्यासु:
श्व०	पाशयिता	पाशयितारौ	पाशयितार:
भ०	पाशयिष्यति	पाशयिष्यत:	पाशयिष्यन्ति
क्रि०	अपाशयिष्यत्	अपाशयिष्यताम्	अपाशयिष्यन्

अन्यत्र दिवूच् क्रीडादौ दीव्यति।

॥अथ षान्ताश्चत्वार:॥

१७५४. पषण् (पष्) बन्धने। १८७

व०	पाषयति	पाषयत:	पाषयन्ति
स०	पाषयेत्	पाषयेताम्	पाषयेयु:
प०	पाषयतु/पाषयतात्	पाषयताम्	पाषयन्तु
ह्य०	अपाषयत्	अपाषयताम्	अपाषयन्
अ०	अपीपषत्	अपीपषताम्	अपीपषन्
प०	पाषयाञ्चकार	पाषयाञ्चक्रतु:	पाषयाञ्चक्रु:
	पाषयाम्बभूव/पाषयामास।		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ० पाष्यात्	पाष्यास्ताम्	पाष्यासुः
श्व० पाषयिता	पाषयितारौ	पाषयितारः
भ० पाषयिष्यति	पाषयिष्यतः	पाषयिष्यन्ति
क्रि० अपाषयिष्यत्	अपाषयिष्यताम्	अपाषयिष्यन्

पसण् इत्यपि केचित्। अन्यत्र पशी बाधनस्पर्शनयोः। इति मूर्धन्यान्तस्तालव्यान्तो दन्त्यान्तश्चाचार्यभेदेन; पशति, पशते। पषति, पषते। पसति, पसते।

१७५५. पुषण् (पुष्) धारणे। १८८

व० पोषयति	पोषयतः	पोषयन्ति
स० पोषयेत्	पोषयेताम्	पोषयेयुः
प० पोषयतु/पोषयतात्	पोषयताम्	पोषयन्तु
ह्य० अपोषयत्	अपोषयताम्	अपोषयन्
अ० अपूपुषत्	अपूपुषताम्	अपूपुषन्
प० पोषयाञ्चकार	पोषयाञ्चक्रतुः	पोषयाञ्चक्रुः
पोषयाम्बभूव/पोषयामास।		
आ० पोष्यात्	पोष्यास्ताम्	पोष्यासुः
श्व० पोषयिता	पोषयितारौ	पोषयितारः
भ० पोषयिष्यति	पोषयिष्यतः	पोषयिष्यन्ति
क्रि० अपोषयिष्यत्	अपोषयिष्यताम्	अपोषयिष्यन्[१]

१७५६. घुषण् (घुष्) विशब्दने।

विशिष्टशब्दकरणे नानाशब्दकरणे वा। १८९

व० घोषयति	घोषयतः	घोषयन्ति
स० घोषयेत्	घोषयेताम्	घोषयेयुः
प० घोषयतु/घोषयतात्	घोषयताम्	घोषयन्तु
ह्य० अघोषयत्	अघोषयताम्	अघोषयन्
अ० अजूघुषत्	अजूघुषताम्	अजूघुषन्
प० घोषयाञ्चकार	घोषयाञ्चक्रतुः	घोषयाञ्चक्रुः
घोषयाम्बभूव/घोषयामास।		
आ० घोष्यात्	घोष्यास्ताम्	घोष्यासुः
श्व० घोषयिता	घोषयितारौ	घोषयितारः
भ० घोषयिष्यति	घोषयिष्यतः	घोषयिष्यन्ति
क्रि० अघोषयिष्यत्	अघोषयिष्यताम्	अघोषयिष्यन्

ऋदित्करणं चुरादिणिचो नित्यत्वे लिङ्गम्; तेन।

व० घोषति	घोषतः	घोषन्ति
स० घोषेत्	घोषेताम्	घोषेयुः
प० घोषतु/घोषतात्	घोषताम्	घोषन्तु
ह्य० अघोषत्	अघोषताम्	अघोषन्
अ० अघुषत्	अघुषताम्	अघुषन्
प० जुघोष	जुघुषतुः	जुघुषुः
आ० घुष्यात्	घुष्यास्ताम्	घुष्यासुः
श्व० घोषिता	घोषितारौ	घोषितारः
भ० घोषिष्यति	घोषिष्यतः	घोषिष्यन्ति
क्रि० अघोषिष्यत्	अघोषिष्यताम्	अघोषिष्यन्

आङः क्रन्दे आघोषयति, आक्रन्दत इत्यर्थः।। अन्ये **त्वाङःक्रन्दः सातत्ये इति पठन्ति। आक्रन्दयति नित्यम्।** अन्यत्र **आक्रन्दति।**

१७५७. भूषण् (भूष्) अलङ्कारे। १९०

व० भूषयति	भूषयतः	भूषयन्ति
स० भूषयेत्	भूषयेताम्	भूषयेयुः
प० भूषयतु/भूषयतात्	भूषयताम्	भूषयन्तु
ह्य० अभूषयत्	अभूषयताम्	अभूषयन्
अ० अबूभुषत्	अबूभुषताम्	अबूभुषन्
प० भूषयाञ्चकार	भूषयाञ्चक्रतुः	भूषयाञ्चक्रुः
भूषयाम्बभूव/भूषयामास।		
आ० भूष्यात्	भूष्यास्ताम्	भूष्यासुः
श्व० भूषयिता	भूषयितारौ	भूषयितारः
भ० भूषयिष्यति	भूषयिष्यतः	भूषयिष्यन्ति
क्रि० अभूषयिष्यत्	अभूषयिष्यताम्	अभूषयिष्यन्

।।भूष अलङ्कारे; भूषति।।

।।अथ सान्ताः सप्त।।

१७५८. तसुण् (तंस्) अलङ्कारे। १९१

व० तंसयति	तंसयतः	तंसयन्ति
स० तंसयेत्	तंसयेताम्	तंसयेयुः

१. अन्यत्र तु पुष पुषंच् पुषश् पुष्टौ, पोषति पुष्यति पुष्णाति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	तंसयतु/तंसयतात्	तंसयताम्	तंसयन्तु
ह्य०	अतंसयत्	अतंसयताम्	अतंसयन्
अ०	अततंसत्	अततंसताम्	अततंसन्
प०	तंसयाञ्चकार	तंसयाञ्चक्रतुः	तंसयाञ्चक्रुः
	तंसयाम्बभूव/तंसयामास।		
आ०	तंस्यात्	तंस्यास्ताम्	तंस्यासुः
श्व०	तंसयिता	तंसयितारौ	तंसयितारः
भ०	तंसयिष्यति	तंसयिष्यतः	तंसयिष्यन्ति
क्रि०	अतंसयिष्यत्	अतंसयिष्यताम्	अतंसयिष्यन्

तसु अलङ्कारे; तंसति।

१७५९. जसुण् (जस्) ताडने। १९२

व०	जासयति	जासयतः	जासयन्ति
स०	जासयेत्	जासयेताम्	जासयेयुः
प०	जासयतु/जासयतात्	जासयताम्	जासयन्तु
ह्य०	अजासयत्	अजासयताम्	अजासयन्
अ०	अजीजसत्	अजीजसताम्	अजीजसन्
प०	जासयाञ्चकार	जासयाञ्चक्रतुः	जासयाञ्चक्रुः
	जासयाम्बभूव/जासयामास।		
आ०	जास्यात्	जास्यास्ताम्	जास्यासुः
श्व०	जासयिता	जासयितारौ	जासयितारः
भ०	जासयिष्यति	जासयिष्यतः	जासयिष्यन्ति
क्रि०	अजासयिष्यत्	अजासयिष्यताम्	अजासयिष्यन्

अन्यत्र जसूच् मोक्षणे; जस्यति।

१७६०. त्रसण् (त्रस्) वारणे। धारणे इति नन्दी। १९३

व०	त्रासयति	त्रासयतः	त्रासयन्ति
स०	त्रासयेत्	त्रासयेताम्	त्रासयेयुः
प०	त्रासयतु/त्रासयतात्	त्रासयताम्	त्रासयन्तु
ह्य०	अत्रासयत्	अत्रासयताम्	अत्रासयन्
अ०	अतित्रसत्	अतित्रसताम्	अतित्रसन्
प०	त्रासयाञ्चकार	त्रासयाञ्चक्रतुः	त्रासयाञ्चक्रुः
	त्रासयाम्बभूव/त्रासयामास।		
आ०	त्रास्यात्	त्रास्यास्ताम्	त्रास्यासुः
श्व०	त्रासयिता	त्रासयितारौ	त्रासयितारः
भ०	त्रासयिष्यति	त्रासयिष्यतः	त्रासयिष्यन्ति
क्रि०	अत्रासयिष्यत्	अत्रासयिष्यताम्	अत्रासयिष्यन्

अन्यत्र त्रसैच् भये; त्रस्यति, त्रसति।

१७६१. वसण् (वस्) स्नेहच्छेदावहरणेषु। अवहरणं मारणम्। १९४

व०	वासयति	वासयतः	वासयन्ति
स०	वासयेत्	वासयेताम्	वासयेयुः
प०	वासयतु/वासयतात्	वासयताम्	वासयन्तु
ह्य०	अवासयत्	अवासयताम्	अवासयन्
अ०	अवीवसत्	अवीवसताम्	अवीवसन्
प०	वासयाञ्चकार	वासयाञ्चक्रतुः	वासयाञ्चक्रुः
	वासयाम्बभूव/वासयामास।		
आ०	वास्यात्	वास्यास्ताम्	वास्यासुः
श्व०	वासयिता	वासयितारौ	वासयितारः
भ०	वासयिष्यति	वासयिष्यतः	वासयिष्यन्ति
क्रि०	अवासयिष्यत्	अवासयिष्यताम्	अवासयिष्यन्[1]

१७६२. ध्रसण् (ध्रस्) उत्क्षेपे। उञ्छे केचित्। १९५

व०	ध्रासयति	ध्रासयतः	ध्रासयन्ति
स०	ध्रासयेत्	ध्रासयेताम्	ध्रासयेयुः
प०	ध्रासयतु/ध्रासयतात्	ध्रासयताम्	ध्रासयन्तु
ह्य०	अध्रासयत्	अध्रासयताम्	अध्रासयन्
अ०	अदिध्रसत्	अदिध्रसताम्	अदिध्रसन्
प०	ध्रासयाञ्चकार	ध्रासयाञ्चक्रतुः	ध्रासयाञ्चक्रुः
	ध्रासयाम्बभूव/ध्रासयामास।		
आ०	ध्रास्यात्	ध्रास्यास्ताम्	ध्रास्यासुः
श्व०	ध्रासयिता	ध्रासयितारौ	ध्रासयितारः
भ०	ध्रासयिष्यति	ध्रासयिष्यतः	ध्रासयिष्यन्ति
क्रि०	अध्रासयिष्यत्	अध्रासयिष्यताम्	अध्रासयिष्यन्

।।अन्यत्र ध्रसूश् उञ्छे।।

१. अन्यत्र वसं निवासे वसति। वसिक् आच्छादने वस्ते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७६३. ग्रसण् (ग्रस्) ग्रहणे। १९६

व०	ग्रासयति	ग्रासयतः	ग्रासयन्ति
स०	ग्रासयेत्	ग्रासयेताम्	ग्रासयेयुः
प०	ग्रासयतु/ग्रासयतात्	ग्रासयताम्	ग्रासयन्तु
ह्य०	अग्रासयत्	अग्रासयताम्	अग्रासयन्
अ०	अजिग्रसत्	अजिग्रसताम्	अजिग्रसन्
प०	ग्रासयाञ्चकार	ग्रासयाञ्चक्रतुः	ग्रासयाञ्चक्रुः
	ग्रासयाम्बभूव/ग्रासयामास।		
आ०	ग्रास्यात्	ग्रास्यास्ताम्	ग्रास्यासुः
श्व०	ग्रासयिता	ग्रासयितारौ	ग्रासयितारः
भ०	ग्रासयिष्यति	ग्रासयिष्यतः	ग्रासयिष्यन्ति
क्रि०	अग्रासयिष्यत्	अग्रासयिष्यताम्	अग्रासयिष्यन्

॥अन्यत्र ग्रसूङ् अदने; ग्रसते॥

१७६४. लसण् (लस्) शिल्पयोगे। १९७

व०	लासयति	लासयतः	लासयन्ति
स०	लासयेत्	लासयेताम्	लासयेयुः
प०	लासयतु/लासयतात्	लासयताम्	लासयन्तु
ह्य०	अलासयत्	अलासयताम्	अलासयन्
अ०	अलीलसत्	अलीलसताम्	अलीलसन्
प०	लासयाञ्चकार	लासयाञ्चक्रतुः	लासयाञ्चक्रुः
	लासयाम्बभूव/लासयामास।		
आ०	लास्यात्	लास्यास्ताम्	लास्यासुः
श्व०	लासयिता	लासयितारौ	लासयितारः
भ०	लासयिष्यति	लासयिष्यतः	लासयिष्यन्ति
क्रि०	अलासयिष्यत्	अलासयिष्यताम्	अलासयिष्यन्

अन्यत्र लस श्लेषणक्रीडतयोः; लसन्ति

॥अथ हान्तः॥

१७६५. अर्हण् (अर्ह्) पूहायाम् १९८

व०	अर्हयति	अर्हयतः	अर्हयन्ति
	अर्हयसि	अर्हयथः	अर्हयथ
	अर्हयामि	अर्हयावः	अर्हयामः
स०	अर्हयेत्	अर्हयेताम्	अर्हयेयुः
	अर्हयेः	अर्हयेतम्	अर्हयेत
	अर्हयेयम्	अर्हयेव	अर्हयेम
प०	अर्हयतु/अर्हयतात्	अर्हयताम्	अर्हयन्तु
	अर्हय/अर्हयतात्	अर्हयतम्	अर्हयत
	अर्हयानि	अर्हयाव	अर्हयाम
ह्य०	आर्हयत्	आर्हयताम्	आर्हयन्
	आर्हयः	आर्हयतम्	आर्हयत
	आर्हयम्	आर्हयाव	आर्हयाम
अ०	आर्जिहत्	आर्जिहताम्	आर्जिहन्
	आर्जिहः	आर्जिहतम्	आर्जिहत
	आर्जिहम्	आर्जिहाव	आर्जिहाम
प०	अर्हयाञ्चकार	अर्हयाञ्चक्रतुः	अर्हयाञ्चक्रुः
	अर्हयाञ्चकर्थ	अर्हयाञ्चक्रथुः	अर्हयाञ्चक्र
	अर्हयाञ्चकार/कर	अर्हयाञ्चकृव	अर्हयाञ्चकृम
	अर्हयाम्बभूव/अर्हयामास।		
आ०	अर्ह्यात्	अर्ह्यास्ताम्	अर्ह्यासुः
	अर्ह्याः	अर्ह्यास्तम्	अर्ह्यास्त
	अर्ह्यासम्	अर्ह्यास्व	अर्ह्यास्म
श्व०	अर्हयिता	अर्हयितारौ	अर्हयितारः
	अर्हयितासि	अर्हयितास्थः	अर्हयितास्थ
	अर्हयितास्मि	अर्हयितास्वः	अर्हयितास्मः
भ०	अर्हयिष्यति	अर्हयिष्यतः	अर्हयिष्यन्ति
	अर्हयिष्यसि	अर्हयिष्यथः	अर्हयिष्यथ
	अर्हयिष्यामि	अर्हयिष्यावः	अर्हयिष्यामः
क्रि०	आर्हयिष्यत्	आर्हयिष्यताम्	आर्हयिष्यन्
	आर्हयिष्यः	आर्हयिष्यतम्	आर्हयिष्यत
	आर्हयिष्यम्	अआर्हयिष्याव	आर्हयिष्याम्

अन्यत्र अर्ह पूजायाम्; अर्हति।

॥अथ क्षान्तः॥

१७६६. मोक्षण् (मोक्ष्) असने। १९९

व०	मोक्षयति	मोक्षयतः	मोक्षयन्ति
स०	मोक्षयेत्	मोक्षयेताम्	मोक्षयेयुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	मोक्षयतु/मोक्षयतात्	मोक्षयताम्	मोक्षयन्तु
ह्य०	अमोक्षयत्	अमोक्षयताम्	अमोक्षयन्
अ०	अमुमोक्षत्	अमुमोक्षताम्	अमुमोक्षन्
प०	मोक्षयाञ्चकार	मोक्षयाञ्चक्रतुः	मोक्षयाञ्चक्रुः

मोक्षयाम्बभूव/मोक्षयामास।

आ०	मोक्ष्यात्	मोक्ष्यास्ताम्	मोक्ष्यासुः
श्व०	मोक्षयिता	मोक्षयितारौ	मोक्षयितारः
भ०	मोक्षयिष्यति	मोक्षयिष्यतः	मोक्षयिष्यन्ति
क्रि०	अमोक्षयिष्यत्	अमोक्षयिष्यताम्	अमोक्षयिष्यन्

अन्यत्र मोक्षति।

अथ वर्णक्रमेण भासार्थाः। तत्र कान्तौ

१७६७. लोकृण् (लोक्) भासार्थः। २००

व०	लोकयति	लोकयतः	लोकयन्ति
स०	लोकयेत्	लोकयेताम्	लोकयेयुः
प०	लोकयतु/लोकयतात्	लोकयताम्	लोकयन्तु
ह्य०	अलोकयत्	अलोकयताम्	अलोकयन्
अ०	अलुलोकत्	अलुलोकताम्	अलुलोकन्
प०	लोकयाञ्चकार	लोकयाञ्चक्रतुः	लोकयाञ्चक्रुः

लोकयाम्बभूव/लोकयामास।

आ०	लोक्यात्	लोक्यास्ताम्	लोक्यासुः
श्व०	लोकयिता	लोकयितारौ	लोकयितारः
भ०	लोकयिष्यति	लोकयिष्यतः	लोकयिष्यन्ति
क्रि०	अलोकयिष्यत्	अलोकयिष्यताम्	अलोकयिष्यन्

अन्यत्र लोकृङ् दर्शने; लोकते।

१७६८. तर्कण् (तर्क्) भासार्थः। २०१

व०	तर्कयति	तर्कयतः	तर्कयन्ति
स०	तर्कयेत्	तर्कयेताम्	तर्कयेयुः
प०	तर्कयतु/तर्कयतात्	तर्कयताम्	तर्कयन्तु
ह्य०	अतर्कयत्	अतर्कयताम्	अतर्कयन्
अ०	अततर्कत्	अततर्कताम्	अततर्कन्
प०	तर्कयाञ्चकार	तर्कयाञ्चक्रतुः	तर्कयाञ्चक्रुः

तर्कयाम्बभूव/तर्कयामास।

आ०	तर्क्यात्	तर्क्यास्ताम्	तर्क्यासुः
श्व०	तर्कयिता	तर्कयितारौ	तर्कयितारः
भ०	तर्कयिष्यति	तर्कयिष्यतः	तर्कयिष्यन्ति
क्रि०	अतर्कयिष्यत्	अतर्कयिष्यताम्	अतर्कयिष्यन्[1]

१७६९. रघुण् (रङ्घ्) भासार्थः। २०२

व०	रङ्घयति	रङ्घयतः	रङ्घयन्ति
स०	रङ्घयेत्	रङ्घयेताम्	रङ्घयेयुः
प०	रङ्घयतु/रङ्घयतात्	रङ्घयताम्	रङ्घयन्तु
ह्य०	अरङ्घयत्	अरङ्घयताम्	अरङ्घयन्
अ०	अररङ्घत्	अररङ्घताम्	अररङ्घन्
प०	रङ्घयाञ्चकार	रङ्घयाञ्चक्रतुः	रङ्घयाञ्चक्रुः

रङ्घयाम्बभूव/रङ्घयामास।

आ०	रङ्घ्यात्	रङ्घ्यास्ताम्	रङ्घ्यासुः
श्व०	रङ्घयिता	रङ्घयितारौ	रङ्घयितारः
भ०	रङ्घयिष्यति	रङ्घयिष्यतः	रङ्घयिष्यन्ति
क्रि०	अरङ्घयिष्यत्	अरङ्घयिष्यताम्	अरङ्घयिष्यन्

अन्यत्र रघुङ् गतौ; रङ्घते।

१७७०. लघुण् (लङ्घ्) भासार्थः। २०३

व०	लङ्घयति	लङ्घयतः	लङ्घयन्ति
स०	लङ्घयेत्	लङ्घयेताम्	लङ्घयेयुः
प०	लङ्घयतु/लङ्घयतात्	लङ्घयताम्	लङ्घयन्तु
ह्य०	अलङ्घयत्	अलङ्घयताम्	अलङ्घयन्
अ०	अललङ्घत्	अललङ्घताम्	अललङ्घन्
प०	लङ्घयाञ्चकार	लङ्घयाञ्चक्रतुः	लङ्घयाञ्चक्रुः

लङ्घयाम्बभूव/लङ्घयामास।

आ०	लङ्घ्यात्	लङ्घ्यास्ताम्	लङ्घ्यासुः
श्व०	लङ्घयिता	लङ्घयितारौ	लङ्घयितारः
भ०	लङ्घयिष्यति	लङ्घयिष्यतः	लङ्घयिष्यन्ति
क्रि०	अलङ्घयिष्यत्	अलङ्घयिष्यताम्	अलङ्घयिष्यन्

अन्यत्र लघुङ् गतौ; लङ्घते।

---

१. गणान्तरेष्वपठिता अप्यत्र दण्डके पाठाद्धातव एव इत्यर्थान्तरे तर्कति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

।।अथ चान्तः।।

१७७१. लोचृण् (लोच्) भासार्थः। २०४

व०	लोचयति	लोचयतः	लोचयन्ति
स०	लोचयेत्	लोचयेताम्	लोचयेयुः
प०	लोचयतु/लोचयतात्	लोचयताम्	लोचयन्तु
ह्य०	अलोचयत्	अलोचयताम्	अलोचयन्
अ०	अलुलोचत्	अलुलोचताम्	अलुलोचन्
प०	लोचयाञ्चकार	लोचयाञ्चक्रतुः	लोचयाञ्चक्रुः
	लोचयाम्बभूव/लोचयामास।		
आ०	लोच्यात्	लोच्यास्ताम्	लोच्यासुः
श्व०	लोचयिता	लोचयितारौ	लोचयितारः
भ०	लोचयिष्यति	लोचयिष्यतः	लोचयिष्यन्ति
क्रि०	अलोचयिष्यत्	अलोचयिष्यताम्	अलोचयिष्यन्

अन्यत्र लोचृङ् दर्शने; लोचते।

।।अथ छान्तः।।

१७७२. विछण् (विच्छ्) भासार्थः। २०५

व०	विच्छयति	विच्छयतः	विच्छयन्ति
स०	विच्छयेत्	विच्छयेताम्	विच्छयेयुः
प०	विच्छयतु/विच्छयतात्	विच्छयताम्	विच्छयन्तु
ह्य०	अविच्छयत्	अविच्छयताम्	अविच्छयन्
अ०	अविविच्छत्	अविविच्छताम्	अविविच्छन्
प०	विच्छयाञ्चकार	विच्छयाञ्चक्रतुः	विच्छयाञ्चक्रुः
	विच्छयाम्बभूव/विच्छयामास।		
आ०	विच्छ्यात्	विच्छ्यास्ताम्	विच्छ्यासुः
श्व०	विच्छयिता	विच्छयितारौ	विच्छयितारः
भ०	विच्छयिष्यति	विच्छयिष्यतः	विच्छयिष्यन्ति
क्रि०	अविच्छयिष्यत्	अविच्छयिष्यताम्	अविच्छयिष्यन्

अन्यत्र विछत् गतौ। अशवि ते वेति वाये, विच्छायति विच्छति।

१७७३. अजुण् (अञ्ज्) भासार्थः। २०६

व०	अञ्जयति	अञ्जयतः	अञ्जयन्ति
स०	अञ्जयेत्	अञ्जयेताम्	अञ्जयेयुः
प०	अञ्जयतु/अञ्जयतात्	अञ्जयताम्	अञ्जयन्तु
ह्य०	आञ्जयत्	आञ्जयताम्	आञ्जयन्
अ०	आञ्जिजत्	आञ्जिजताम्	आञ्जिजन्
प०	अञ्जयाञ्चकार	अञ्जयाञ्चक्रतुः	अञ्जयाञ्चक्रुः
	अञ्जयाम्बभूव/अञ्जयामास।		
आ०	अञ्ज्यात्	अञ्ज्यास्ताम्	अञ्ज्यासुः
श्व०	अञ्जयिता	अञ्जयितारौ	अञ्जयितारः
भ०	अञ्जयिष्यति	अञ्जयिष्यतः	अञ्जयिष्यन्ति
क्रि०	आञ्जयिष्यत्	आञ्जयिष्यताम्	आञ्जयिष्यन्

अन्यत्र अञ्जौप् व्यक्त्यादौ व्यनक्ति।

१७७४. तुजुण् (तुञ्ज्) भासार्थः। २०७

व०	तुञ्जयति	तुञ्जयतः	तुञ्जयन्ति
स०	तुञ्जयेत्	तुञ्जयेताम्	तुञ्जयेयुः
प०	तुञ्जयतु/तुञ्जयतात्	तुञ्जयताम्	तुञ्जयन्तु
ह्य०	अतुञ्जयत्	अतुञ्जयताम्	अतुञ्जयन्
अ०	अतुतुञ्जत्	अतुतुञ्जताम्	अतुतुञ्जन्
प०	तुञ्जयाञ्चकार	तुञ्जयाञ्चक्रतुः	तुञ्जयाञ्चक्रुः
	तुञ्जयाम्बभूव/तुञ्जयामास।		
आ०	तुञ्ज्यात्	तुञ्ज्यास्ताम्	तुञ्ज्यासुः
श्व०	तुञ्जयिता	तुञ्जयितारौ	तुञ्जयितारः
भ०	तुञ्जयिष्यति	तुञ्जयिष्यतः	तुञ्जयिष्यन्ति
क्रि०	अतुञ्जयिष्यत्	अतुञ्जयिष्यताम्	अतुञ्जयिष्यन्

अन्यत्र तुजु वलने च; तञ्जति।

१७७५. पिजुण् (पिञ्ज्) भासार्थः। २०८

व०	पिञ्जयति	पिञ्जयतः	पिञ्जयन्ति
स०	पिञ्जयेत्	पिञ्जयेताम्	पिञ्जयेयुः
प०	पिञ्जयतु/पिञ्जयतात्	पिञ्जयताम्	पिञ्जयन्तु
ह्य०	अपिञ्जयत्	अपिञ्जयताम्	अपिञ्जयन्
अ०	अपिपिञ्जत्	अपिपिञ्जताम्	अपिपिञ्जन्
प०	पिञ्जयाञ्चकार	पिञ्जयाञ्चक्रपिः	पिञ्जयाञ्चक्रुः
	पिञ्जयाम्बभूव/पिञ्जयामास।		
आ०	पिञ्ज्यात्	पिञ्ज्यास्ताम्	पिञ्ज्यासुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	पिञ्जयिता	पिञ्जयितारौ	पिञ्जयितार:
भ०	पिञ्जयिष्यति	पिञ्जयिष्यत:	पिञ्जयिष्यन्ति
क्रि०	अपिञ्जयिष्यत्	अपिञ्जयिष्यताम्	अपिञ्जयिष्यन्

१७७६. लजुण् (लञ्ज्) भासार्थ:। २०९

व०	लञ्जयति	लञ्जयत:	लञ्जयन्ति
स०	लञ्जयेत्	लञ्जयेताम्	लञ्जयेयु:
प०	लञ्जयतु/लञ्जयतात्	लञ्जयताम्	लञ्जयन्तु
ह्य०	अलञ्जयत्	अलञ्जयताम्	अलञ्जयन्
अ०	अललञ्जत्	अललञ्जताम्	अललञ्जन्
प०	लञ्जयाञ्चकार	लञ्जयाञ्चक्रतु:	लञ्जयाञ्चक्रु:

लञ्जयाम्बभूव/लञ्जयामास।

आ०	लञ्ज्यात्	लञ्ज्यास्ताम्	लञ्ज्यासु:
श्व०	लञ्जयिता	लञ्जयितारौ	लञ्जयितार:
भ०	लञ्जयिष्यति	लञ्जयिष्यत:	लञ्जयिष्यन्ति
क्रि०	अलञ्जयिष्यत्	अलञ्जयिष्यताम्	अलञ्जयिष्यन्

अन्यत्र लजु भर्त्सने; लञ्जति।

१७७७. लुजुण् (लुञ्ज्) भासार्थ:। २१०

व०	लुञ्जयति	लुञ्जयत:	लुञ्जयन्ति
स०	लुञ्जयेत्	लुञ्जयेताम्	लुञ्जयेयु:
प०	लुञ्जयतु/लुञ्जयतात्	लुञ्जयताम्	लुञ्जयन्तु
ह्य०	अलुञ्जयत्	अलुञ्जयताम्	अलुञ्जयन्
अ०	अलुलुञ्जत्	अलुलुञ्जताम्	अलुलुञ्जन्
प०	लुञ्जयाञ्चकार	लुञ्जयाञ्चक्रतु:	लुञ्जयाञ्चक्रु:

लुञ्जयाम्बभूव/लुञ्जयामास।

आ०	लुञ्ज्यात्	लुञ्ज्यास्ताम्	लुञ्ज्यासु:
श्व०	लुञ्जयिता	लुञ्जयितारौ	लुञ्जयितार:
भ०	लुञ्जयिष्यति	लुञ्जयिष्यत:	लुञ्जयिष्यन्ति
क्रि०	अलुञ्जयिष्यत्	अलुञ्जयिष्यताम्	अलुञ्जयिष्यन्

अन्यत्र लुञ्जति।

१७७८. भजुण् (भञ्ज्) भासार्थ:। २११

व०	भञ्जयति	भञ्जयत:	भञ्जयन्ति
स०	भञ्जयेत्	भञ्जयेताम्	भञ्जयेयु:
प०	भञ्जयतु/भञ्जयतात्	भञ्जयताम्	भञ्जयन्तु
ह्य०	अभञ्जयत्	अभञ्जयताम्	अभञ्जयन्
अ०	अबभञ्जत्	अबभञ्जताम्	अबभञ्जन्
प०	भञ्जयाञ्चकार	भञ्जयाञ्चक्रतु:	भञ्जयाञ्चक्रु:

भञ्जयाम्बभूव/भञ्जयामास।

आ०	भञ्ज्यात्	भञ्ज्यास्ताम्	भञ्ज्यासु:
श्व०	भञ्जयिता	भञ्जयितारौ	भञ्जयितार:
भ०	भञ्जयिष्यति	भञ्जयिष्यत:	भञ्जयिष्यन्ति
क्रि०	अभञ्जयिष्यत्	अभञ्जयिष्यताम्	अभञ्जयिष्यन्

अन्यत्र भञ्जोप् आमर्दने; भनक्ति।

।।अथ टान्ता: पञ्च।।

१७७९. पटण् (पट्) भासार्थ:। २१२

व०	पाटयति	पाटयत:	पाटयन्ति
स०	पाटयेत्	पाटयेताम्	पाटयेयु:
प०	पाटयतु/पाटयतात्	पाटयताम्	पाटयन्तु
ह्य०	अपाटयत्	अपाटयताम्	अपाटयन्
अ०	अपीपटत्	अपीपटताम्	अपीपटन्
प०	पाटयाञ्चकार	पाटयाञ्चक्रतु:	पाटयाञ्चक्रु:

पाटयाम्बभूव/पाटयामास।

आ०	पाट्यात्	पाट्यास्ताम्	पाट्यासु:
श्व०	पाटयिता	पाटयितारौ	पाटयितार:
भ०	पाटयिष्यति	पाटयिष्यत:	पाटयिष्यन्ति
क्रि०	अपाटयिष्यत्	अपाटयिष्यताम्	अपाटयिष्यन्

अन्यत्र पट गतौ; पटति। अदन्त:-पटयति।।

१७८०. पुटण् (पुट्) भासार्थ:। २१३

व०	पोटयति	पोटयत:	पोटयन्ति
स०	पोटयेत्	पोटयेताम्	पोटयेयु:
प०	पोटयतु/पोटयतात्	पोटयताम्	पोटयन्तु
ह्य०	अपोटयत्	अपोटयताम्	अपोटयन्
अ०	अपूपुटत्	अपूपुटताम्	अपूपुटन्
प०	पोटयाञ्चकार	पोटयाञ्चक्रतु:	पोटयाञ्चक्रु:

पोटयाम्बभूव/पोटयामास।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	पोट्यात्	पोट्यास्ताम्	पोट्यासु:
श्व०	पोटयिता	पोटयितारौ	पोटयितार:
भ०	पोटयिष्यति	पोटयिष्यत:	पोटयिष्यन्ति
क्रि०	अपोटयिष्यत्	अपोटयिष्यताम्	अपोटयिष्यन्

अन्यत्र पुटत् संश्लेषणे; पुटति।

१७८१. लुटण् (लुट्) भासार्थ:। २१४

व०	लोटयति	लोटयत:	लोटयन्ति
स०	लोटयेत्	लोटयेताम्	लोटयेयु:
प०	लोटयतु/लोटयतात्	लोटयताम्	लोटयन्तु
ह्य०	अलोटयत्	अलोटयताम्	अलोटयन्
अ०	अलूलुटत्	अलूलुटताम्	अलूलुटन्
प०	लोटयाञ्चकार	लोटयाञ्चक्रतु:	लोटयाञ्चक्रु:
	लोटयाम्बभूव/लोटयामास।		
आ०	लोट्यात्	लोट्यास्ताम्	लोट्यासु:
श्व०	लोटयिता	लोटयितारौ	लोटयितार:
भ०	लोटयिष्यति	लोटयिष्यत:	लोटयिष्यन्ति
क्रि०	अलोटयिष्यत्	अलोटयिष्यताम्	अलोटयिष्यन्

अन्यत्र लुटत् संश्लेषणे; लुटति।

१७८२. घटण् (घट्) भासार्थ:। २१५

व०	घाटयति	घाटयत:	घाटयन्ति
स०	घाटयेत्	घाटयेताम्	घाटयेयु:
प०	घाटयतु/घाटयतात्	घाटयताम्	घाटयन्तु
ह्य०	अघाटयत्	अघाटयताम्	अघाटयन्
अ०	अजीघटत्	अजीघटताम्	अजीघटन्
प०	घाटयाञ्चकार	घाटयाञ्चक्रतु:	घाटयाञ्चक्रु:
	घाटयाम्बभूव/घाटयामास।		
आ०	घाट्यात्	घाट्यास्ताम्	घाट्यासु:
श्व०	घाटयिता	घाटयितारौ	घाटयितार:
भ०	घाटयिष्यति	घाटयिष्यत:	घाटयिष्यन्ति
क्रि०	अघाटयिष्यत्	अघाटयिष्यताम्	अघाटयिष्यन्

अन्यत्र घटिष चेष्टायां; घटते।

१७८३. घटुण् (घण्ट्) भासार्थ:। २१६

व०	घण्टयति	घण्टयत:	घण्टयन्ति
स०	घण्टयेत्	घण्टयेताम्	घण्टयेयु:
प०	घण्टयतु/घण्टयतात्	घण्टयताम्	घण्टयन्तु
ह्य०	अघण्टयत्	अघण्टयताम्	अघण्टयन्
अ०	अजघण्टत्	अजघण्टताम्	अजघण्टन्
प०	घण्टयाञ्चकार	घण्टयाञ्चक्रतु:	घण्टयाञ्चक्रु:
	घण्टयाम्बभूव/घण्टयामास।		
आ०	घण्ट्यात्	घण्ट्यास्ताम्	घण्ट्यासु:
श्व०	घण्टयिता	घण्टयितारौ	घण्टयितार:
भ०	घण्टयिष्यति	घण्टयिष्यत:	घण्टयिष्यन्ति
क्रि०	अघण्टयिष्यत्	अघण्टयिष्यताम्	अघण्टयिष्यन्

अन्यत्र; घण्टति।

।।अथ तान्ता:।।

१७८४. वृतण् (वृत्) भासार्थ:। २१७

व०	वर्तयति	वर्तयत:	वर्तयन्ति
स०	वर्तयेत्	वर्तयेताम्	वर्तयेयु:
प०	वर्तयतु/वर्तयतात्	वर्तयताम्	वर्तयन्तु
ह्य०	अवर्तयत्	अवर्तयताम्	अवर्तयन्
अ०	अवीवृतत्	अवीवृतताम्	अवीवृतन्
	अववर्तत्	अववर्तताम्	अववर्तन्, इत्यादि
प०	वर्तयाञ्चकार	वर्तयाञ्चक्रतु:	वर्तयाञ्चक्रु:
	वर्तयाम्बभूव/वर्तयामास।		
आ०	वर्त्यात्	वर्त्यास्ताम्	वर्त्यासु:
श्व०	वर्तयिता	वर्तयितारौ	वर्तयितार:
भ०	वर्तयिष्यति	वर्तयिष्यत:	वर्तयिष्यन्ति
क्रि०	अवर्तयिष्यत्	अवर्तयिष्यताम्	अवर्तयिष्यन्

अन्यत्र वृतङ् वर्णने; वर्तते।

।।अथ थान्ता:।।

१७८५. पुथुण् (पुथ्) भासार्थ:। २१८

व०	पोथयति	पोथयत:	पोथयन्ति
स०	पोथयेत्	पोथयेताम्	पोथयेयु:
प०	पोथयतु/पोथयतात्	पोथयताम्	पोथयन्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	अपोथयत्	अपोथयताम्	अपोथयन्
अ०	अपुपुथत्	अपुपुथताम्	अपुपुथन्
प०	पोथयाञ्चकार	पोथयाञ्चक्रतुः	पोथयाञ्चक्रुः
	पोथयाम्बभूव/पोथयामास।		
आ०	पोथ्यात्	पोथ्यास्ताम्	पोथ्यासुः
श्व०	पोथयिता	पोथयितारौ	पोथयितारः
भ०	पोथयिष्यति	पोथयिष्यतः	पोथयिष्यन्ति
क्रि०	अपोथयिष्यत्	अपोथयिष्यताम्	अपोथयिष्यन्

अन्यत्र पुथच् हिंसायां; पुथ्यति।

॥अथ दान्तः॥

१७८६. नदण् (नद्) भासार्थः। २१९

व०	नादयति	नादयतः	नादयन्ति
स०	नादयेत्	नादयेताम्	नादयेयुः
प०	नादयतु/नादयतात्	नादयताम्	नादयन्तु
ह्य०	अनादयत्	अनादयताम्	अनादयन्
अ०	अनीनदत्	अनीनदताम्	अनीनदन्
प०	नादयाञ्चकार	नादयाञ्चक्रतुः	नादयाञ्चक्रुः
	नादयाम्बभूव/नादयामास।		
आ०	नाद्यात्	नाद्यास्ताम्	नाद्यासुः
श्व०	नादयिता	नादयितारौ	नादयितारः
भ०	नादयिष्यति	नादयिष्यतः	नादयिष्यन्ति
क्रि०	अनादयिष्यत्	अनादयिष्यताम्	अनादयिष्यन्

अन्यत्र नद अव्यक्ते शब्दे; नदति।

॥अथ धान्तः॥

१७८७. वर्धण् (वर्ध्) भासार्थः। २२०

व०	वर्धयति	वर्धयतः	वर्धयन्ति
स०	वर्धयेत्	वर्धयेताम्	वर्धयेयुः
प०	वर्धयतु/वर्धयतात्	वर्धयताम्	वर्धयन्तु
ह्य०	अवर्धयत्	अवर्धयताम्	अवर्धयन्
अ०	अवीवृधत्	अवीवृधताम्	अवीवृधन्
प०	वर्धयाञ्चकार	वर्धयाञ्चक्रतुः	वर्धयाञ्चक्रुः
	वर्धयाम्बभूव/वर्धयामास।		
आ०	वर्ध्यात्	वर्ध्यास्ताम्	वर्ध्यासुः
श्व०	वर्धयिता	वर्धयितारौ	वर्धयितारः
भ०	वर्धयिष्यति	वर्धयिष्यतः	वर्धयिष्यन्ति
क्रि०	अवर्धयिष्यत्	अवर्धयिष्यताम्	अवर्धयिष्यन्

अन्यत्र वृधङ् वृद्धौ; वर्धते।

॥अथ पान्तास्त्रयः॥

१७८८. गुपण् (गुप्) भासार्थः। २२१

व०	गोपयति	गोपयतः	गोपयन्ति
स०	गोपयेत्	गोपयेताम्	गोपयेयुः
प०	गोपयतु/गोपयतात्	गोपयताम्	गोपयन्तु
ह्य०	अगोपयत्	अगोपयताम्	अगोपयन्
अ०	अजूगुपत्	अजूगुपताम्	अजूगुपन्
प०	गोपयाञ्चकार	गोपयाञ्चक्रतुः	गोपयाञ्चक्रुः
	गोपयाम्बभूव/गोपयामास।		
आ०	गोप्यात्	गोप्यास्ताम्	गोप्यासुः
श्व०	गोपयिता	गोपयितारौ	गोपयितारः
भ०	गोपयिष्यति	गोपयिष्यतः	गोपयिष्यन्ति
क्रि०	अगोपयिष्यत्	अगोपयिष्यताम्	अगोपयिष्यन्

अन्यत्र गुपौ रक्षति; गोपयति।

१७८९. धूपण् (धूप्)। २२२

व०	धूपयति	धूपयतः	धूपयन्ति
स०	धूपयेत्	धूपयेताम्	धूपयेयुः
प०	धूपयतु/धूपयतात्	धूपयताम्	धूपयन्तु
ह्य०	अधूपयत्	अधूपयताम्	अधूपयन्
अ०	अदूधुपत्	अदूधपताम्	अदूधपन्
प०	धूपयाञ्चकार	धूपयाञ्चक्रतुः	धूपयाञ्चक्रुः
	धूपयाम्बभूव/धूपयामास।		
आ०	धूप्यात्	धूप्यास्ताम्	धूप्यासुः
श्व०	धूपयिता	धूपयितारौ	धूपयितारः
भ०	धूपयिष्यति	धूपयिष्यतः	धूपयिष्यन्ति
क्रि०	अधूपयिष्यत्	अधूपयिष्यताम्	अधूपयिष्यन्

अन्यत्र धूप संताने; धूपायति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७९०. कुपण् (कुप्) भासार्थः। २२३

व०	कोपयति	कोपयतः	कोपयन्ति
स०	कोपयेत्	कोपयेताम्	कोपयेयुः
प०	कोपयतु/कोपयतात्	कोपयताम्	कोपयन्तु
ह्य०	अकोपयत्	अकोपयताम्	अकोपयन्
अ०	अचूकुपत्	अचूकुपताम्	अचूकुपन्
प०	कोपयाञ्चकार	कोपयाञ्चक्रतुः	कोपयाञ्चक्रुः
	कोपयाम्बभूव/कोपयामास।		
आ०	कोप्यात्	कोप्यास्ताम्	कोप्यासुः
श्व०	कोपयिता	कोपयितारौ	कोपयितारः
भ०	कोपयिष्यति	कोपयिष्यतः	कोपयिष्यन्ति
क्रि०	अकोपयिष्यत्	अकोपयिष्यताम्	अकोपयिष्यन्

अन्यत्र कुपच् कोपे; कुप्यति।

॥अथ वान्ताः॥

१७९१. चीवण् (चीव) भासार्थः। २२४

व०	चीवयति	चीवयतः	चीवयन्ति
स०	चीवयेत्	चीवयेताम्	चीवयेयुः
प०	चीवयतु/चीवयतात्	चीवयताम्	चीवयन्तु
ह्य०	अचीवयत्	अचीवयताम्	अचीवयन्
अ०	अचीचिवत्	अचीचिवताम्	अचीचिवन्
प०	चीवयाञ्चकार	चीवयाञ्चक्रतुः	चीवयाञ्चक्रुः
	चीवयाम्बभूव/चीवयामास।		
आ०	चीव्यात्	चीव्यास्ताम्	चीव्यासुः
श्व०	चीवयिता	चीवयितारौ	चीवयितारः
भ०	चीवयिष्यति	चीवयिष्यतः	चीवयिष्यन्ति
क्रि०	अचीवयिष्यत्	अचीवयिष्यताम्	अचीवयिष्यन्

अन्यत्र चीवृग् झषीवत्; चीवते, चीवति।

१७९२. दशुण् (दंश्) भासार्थः २२५

व०	दंशयति	दंशयतः	दंशयन्ति
स०	दंशयेत्	दंशयेताम्	दंशयेयुः
प०	दंशयतु/दंशयतात्	दंशयताम्	दंशयन्तु
ह्य०	अदंशयत्	अदंशयताम्	अदंशयन्
अ०	अददंशत्	अददंशताम्	अददंशन्
प०	दंशयाञ्चकार	दंशयाञ्चक्रतुः	दंशयाञ्चक्रुः
	दंशयाम्बभूव/दंशयामास।		
आ०	दंश्यात्	दंश्यास्ताम्	दंश्यासुः
श्व०	दंशयिता	दंशयितारौ	दंशयितारः
भ०	दंशयिष्यति	दंशयिष्यतः	दंशयिष्यन्ति
क्रि०	अदंशयिष्यत्	अदंशयिष्यताम्	अदंशयिष्यन्

अन्यत्र दंश दंशने; दंशति।

१७९३. कुशण् (कुंश्) भासार्थः। २२६

व०	कुंशयति	कुंशयतः	कुंशयन्ति
स०	कुंशयेत्	कुंशयेताम्	कुंशयेयुः
प०	कुंशयतु/कुंशयतात्	कुंशयताम्	कुंशयन्तु
ह्य०	अकुंशयत्	अकुंशयताम्	अकुंशयन्
अ०	अचुकुंशत्	अचुकुंशताम्	अचुकुंशन्
प०	कुंशयाञ्चकार	कुंशयाञ्चक्रतुः	कुंशयाञ्चक्रुः
	कुंशयाम्बभूव/कुंशयामास।		
आ०	कुंश्यात्	कुंश्यास्ताम्	कुंश्यासुः
श्व०	कुंशयिता	कुंशयितारौ	कुंशयितारः
भ०	कुंशयिष्यति	कुंशयिष्यतः	कुंशयिष्यन्ति
क्रि०	अकुंशयिष्यत्	अकुंशयिष्यताम्	अकुंशयिष्यन्

अन्यत्र कुंशति।

॥अथ सान्ताश्चत्वार उदितश्च॥

१७९४. त्रसुण् (त्रंस्) भासार्थः। २२७

व०	त्रंसयति	त्रंसयतः	त्रंसयन्ति
स०	त्रंसयेत्	त्रंसयेताम्	त्रंसयेयुः
प०	त्रंसयतु/त्रंसयतात्	त्रंसयताम्	त्रंसयन्तु
ह्य०	अत्रंसयत्	अत्रंसयताम्	अत्रंसयन्
अ०	अतत्रंसत्	अतत्रंसताम्	अतत्रंसन्
प०	त्रंसयाञ्चकार	त्रंसयाञ्चक्रतुः	त्रंसयाञ्चक्रुः
	त्रंसयाम्बभूव/त्रंसयामास।		
आ०	त्रंस्यात्	त्रंस्यास्ताम्	त्रंस्यासुः
श्व०	त्रंसयिता	त्रंसयितारौ	त्रंसयितारः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	त्रंसयिष्यति	त्रंसयिष्यतः	त्रंसयिष्यन्ति
क्रि०	अत्रंसयिष्यत्	अत्रंसयिष्यताम्	अत्रंसयिष्यन्

अन्यत्र त्रंसति।

१७९५. पिसुणं (पिस्) भासार्थः। २२८

व०	पिंसयति	पिंसयतः	पिंसयन्ति
स०	पिंसयेत्	पिंसयेताम्	पिंसयेयुः
प०	पिंसयतु/पिंसयतात्	पिंसयताम्	पिंसयन्तु
ह्य०	अपिंसयत्	अपिंसयताम्	अपिंसयन्
अ०	अपिपिंसत्	अपिपिंसताम्	अपिपिंसन्
प०	पिंसयाञ्चकार	पिंसयाञ्चक्रतुः	पिंसयाञ्चक्रुः

पिंसयाम्बभूव/पिंसयामास।

आ०	पिंस्यात्	पिंस्यास्ताम्	पिंस्यासुः
श्व०	पिंसयिता	पिंसयितारौ	पिंसयितारः
भ०	पिंसयिष्यति	पिंसयिष्यतः	पिंसयिष्यन्ति
क्रि०	अपिंसयिष्यत्	अपिंसयिष्यताम्	अपिंसयिष्यन्

अन्यत्र पिंसति।

१७९६. कुंसुण् (कुंस्) भासार्थः। २२९

व०	कुंसयति	कुंसयतः	कुंसयन्ति
स०	कुंसयेत्	कुंसयेताम्	कुंसयेयुः
प०	कुंसयतु/कुंसयतात्	कुंसयताम्	कुंसयन्तु
ह्य०	अकुंसयत्	अकुंसयताम्	अकुंसयन्
अ०	अचुकुंसत्	अचुकुंसताम्	अचुकुंसन्
प०	कुंसयाञ्चकार	कुंसयाञ्चक्रतुः	कुंसयाञ्चक्रुः

कुंसयाम्बभूव/कुंसयामास।

आ०	कुंस्यात्	कुंस्यास्ताम्	कुंस्यासुः
श्व०	कुंसयिता	कुंसयितारौ	कुंसयितारः
भ०	कुंसयिष्यति	कुंसयिष्यतः	कुंसयिष्यन्ति
क्रि०	अकुंसयिष्यत्	अकुंसयिष्यताम्	अकुंसयिष्यन्

अन्यत्र कुंसति।

१७९७. दसुण् (दंस्) भासार्थः। २३०

व०	दंसयति	दंसयतः	दंसयन्ति
स०	दंसयेत्	दंसयेताम्	दंसयेयुः
प०	दंसयतु/दंसयतात्	दंसयताम्	दंसयन्तु
ह्य०	अदंसयत्	अदंसयताम्	अदंसयन्
अ०	अददंसत्	अददंसताम्	अददंसन्
प०	दंसयाञ्चकार	दंसयाञ्चक्रतुः	दंसयाञ्चक्रुः

दंसयाम्बभूव/दंसयामास।

आ०	दंस्यात्	दंस्यास्ताम्	दंस्यासुः
श्व०	दंसयिता	दंसयितारौ	दंसयितारः
भ०	दंसयिष्यति	दंसयिष्यतः	दंसयिष्यन्ति
क्रि०	अदंसयिष्यत्	अदंसयिष्यताम्	अदंसयिष्यन्

अन्यत्र दंसति।

अथ हान्ताः षट् वर्हवल्हौ मुक्तौदितश्च।

१७९८. वर्हण् (वर्ह्) भासार्थः। २३१

व०	वर्हयति	वर्हयतः	वर्हयन्ति
स०	वर्हयेत्	वर्हयेताम्	वर्हयेयुः
प०	वर्हयतु/वर्हयतात्	वर्हयताम्	वर्हयन्तु
ह्य०	अवर्हयत्	अवर्हयताम्	अवर्हयन्
अ०	अववर्हत्	अववर्हताम्	अववर्हन्
प०	वर्हयाञ्चकार	वर्हयाञ्चक्रतुः	वर्हयाञ्चक्रुः

वर्हयाम्भूव/वर्हयामास।

आ०	वर्ह्यात्	वर्ह्यास्ताम्	वर्ह्यासुः
श्व०	वर्हयिता	वर्हयितारौ	वर्हयितारः
भ०	वर्हयिष्यति	वर्हयिष्यतः	वर्हयिष्यन्ति
क्रि०	अवर्हयिष्यत्	अवर्हयिष्यताम्	अवर्हयिष्यन्

अन्यत्र वर्हि प्राधान्ये; वर्हते।

१७९९. वृंहण् (वृंह्) भासार्थः। २३२

व०	वृंहयति	वृंहयतः	वृंहयन्ति
स०	वृंहयेत्	वृंहयेताम्	वृंहयेयुः
प०	वृंहयतु/वृंहयतात्	वृंहयताम्	वृंहयन्तु
ह्य०	अवृंहयत्	अवृंहयताम्	अवृंहयन्
अ०	अववृंहत्	अववृंहताम्	अववृंहन्
प०	वृंहयाञ्चकार	वृंहयाञ्चक्रतुः	वृंहयाञ्चक्रुः

वृंहयाम्वृंभूव/वृंहयामास।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ० वृंह्यात्	वृंह्यास्ताम्	वृंह्यासुः
श्व० वृंहयिता	वृंहयितारौ	वृंहयितारः
भ० वृंहयिष्यति	वृंहयिष्यतः	वृंहयिष्यन्ति
क्रि० अवृंहयिष्यत्	अवृंहयिष्यताम्	अवृंहयिष्यन्

अन्यत्र वृहु शब्दे च; वृंहति।

१८००. वल्हण् (वल्ह्) भासार्थः। २३३

व० वल्हयति	वल्हयतः	वल्हयन्ति
स० वल्हयेत्	वल्हयेताम्	वल्हयेयुः
प० वल्हयतु/वल्हयतात्	वल्हयताम्	वल्हयन्तु
ह्य० अवल्हयत्	अवल्हयताम्	अवल्हयन्
अ० अववल्हत्	अववल्हताम्	अववल्हन्
प० वल्हयाञ्चकार	वल्हयाञ्चक्रतुः	वल्हयाञ्चक्रुः

वल्हयाम्बभूव/वल्हयामास।

आ० वल्ह्यात्	वल्ह्यास्ताम्	वल्ह्यासुः
श्व० वल्हयिता	वल्हयितारौ	वल्हयितारः
भ० वल्हयिष्यति	वल्हयिष्यतः	वल्हयिष्यन्ति
क्रि० अवल्हयिष्यत्	अवल्हयिष्यताम्	अवल्हयिष्यन्

अन्यत्र वल्हि प्राधान्ये; वल्हते।

१८०१. अंहुण् (अंह्) भासार्थः। २३४

व० अंहयति	अंहयतः	अंहयन्ति
स० अंहयेत्	अंहयेताम्	अंहयेयुः
प० अंहयतु/अंहयतात्	अंहयताम्	अंहयन्तु
ह्य० आंहयत्	आंहयताम्	आंहयन्
अ० आंजिहत्	आंजिहताम्	आंजिहन्
प० अंहयाञ्चकार	अंहयाञ्चक्रतुः	अंहयाञ्चक्रुः

अंहयाम्बभूव/अंहयामास।

आं० अंह्यात्	अंह्यास्ताम्	अंह्यासुः
श्व० अंहयिता	अंहयितारौ	अंहयितारः
भ० अंहयिष्यति	अंहयिष्यतः	अंहयिष्यन्ति
क्रि० आंहयिष्यत्	आंहयिष्यताम्	आंहयिष्यन्

अन्यत्र अहुङ् गतौ; अंहते।

१८०२. वहुण् (वंह्) भासार्थः। २३५

व० वंहयति	वंहयतः	वंहयन्ति
स० वंहयेत्	वंहयेताम्	वंहयेयुः
प० वंहयतु/वंहयतात्	वंहयताम्	वंहयन्तु
ह्य० अवंहयत्	अवंहयताम्	अवंहयन्
अ० अववंहत्	अववंहताम्	अववंहन्
प० वंहयाञ्चकार	वंहयाञ्चक्रतुः	वंहयाञ्चक्रुः

वंहयाम्बभूव/वंहयामास।

आ० वंह्यात्	वंह्यास्ताम्	वंह्यासुः
श्व० वंहयिता	वंहयितारौ	वंहयितारः
भ० वंहयिष्यति	वंहयिष्यतः	वंहयिष्यन्ति
क्रि० अवंहयिष्यत्	अवंहयिष्यताम्	अवंहयिष्यन्

१८०३. महुण् (मंह्) भासार्थः। २३६

व० मंहयति	मंहयतः	मंहयन्ति
स० मंहयेत्	मंहयेताम्	मंहयेयुः
प० मंहयतु/मंहयतात्	मंहयताम्	मंहयन्तु
ह्य० अमंहयत्	अमंहयताम्	अमंहयन्
अ० अममंहत्	अममंहताम्	अममंहन्
प० मंहयाञ्चकार	मंहयाञ्चक्रतुः	मंहयाञ्चक्रुः

मंहयाम्बभूव/मंहयामास।

आ० मंह्यात्	मंह्यास्ताम्	मंह्यासुः
श्व० मंहयिता	मंहयितारौ	मंहयितारः
भ० मंहयिष्यति	मंहयिष्यतः	मंहयिष्यन्ति
क्रि० अमंहयिष्यत्	अमंहयिष्यताम्	अमंहयिष्यन्

।।अन्यत्र महुङ् वृद्धौ; मंहते।।

लोकृतर्कादयः स्वार्थे णिचमुत्पादयन्ति भासार्थाश्चेति पारायणम्। भासयति दिशः दीपयति इन्धयति प्रकाशयति। गणान्तरपाठस्त्वेषामात्मनेपदादिकार्यार्थः।।

अथात्मनेपदिनः। तत्रोदन्तः।

१८०४. युणि (यु) जुगुप्सायाम्। २३७

व० यावयते	यावयेते	यावयन्ते
स० यावयेत	यावयेयाताम्	यावयेरन्
प० यावयताम्	यावयेताम्	यावयन्ताम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य० अयावयत	अयावयेताम्	अयावयन्त
अ० अयीयवत	अयीयवेताम्	अयीयवन्त
प० यावयाञ्चक्रे	यावयाञ्चक्राते	यावयाञ्चक्रिरे

यावयाम्बभूव/यावयामास।

आ० यावयिषीष्ट	यावयिषीयास्ताम्	यावयिषीरन्
श्व० यावयिता	यावयितारौ	यावयितार:
भ० यावयिष्यते	यावयिष्येते	यावयिष्यन्ते
क्रि० अयावयिष्यत	अयावयिष्येताम्	अयावयिष्यन्त

।।अथ ॠदन्त:।।

१८०५. गॄणि (गॄ) विज्ञाने। २३८

व० गारयते	गारयेते	गारयन्ते
स० गारयेत	गारयेयाताम्	गारयेरन्
प० गारयताम्	गारयेताम्	गारयन्ताम
ह्य० अगारयत	अगारयेताम्	अगारयन्त
अ० अजीगरत	अजीगरेताम्	अजीगरन्त
प० गारयाञ्चक्रे	गारयाञ्चक्राते	गारयाञ्चक्रिरे

गारयाम्बभूव/गारयामास।

आ० गारयिषीष्ट	गारयिषीयास्ताम्	गारयिषीरन्
श्व० गारयिता	गारयितारौ	गारयितार:
भ० गारयिष्यते	गारयिष्येते	गारयिष्यन्ते
क्रि० अगारयिष्यत	अगारयिष्येताम्	अगारयिष्यन्त

अन्यत्र गॄत् निगरणे; गिरति। गॄश् शब्दे। गृणाति।

।।अथ चान्त:।।

१८०६. वञ्चिण् (वञ्च्) प्रलम्भने।

प्रलम्भनं मिथ्याफलाख्यानम्। २३९

व० वञ्चयते	वञ्चयेते	वञ्चयन्ते
स० वञ्चयेत	वञ्चयेयाताम्	वञ्चयेरन्
प० वञ्चयताम्	वञ्चयेताम्	वञ्चयन्ताम्
ह्य० अवञ्चयत	अवञ्चयेताम्	अवञ्चयन्त
अ० अववञ्चत	अववञ्चेताम्	अववञ्चन्त
प० वञ्चयाञ्चक्रे	वञ्चयाञ्चक्राते	वञ्चयाञ्चक्रिरे

वञ्चयाम्बभूव/वञ्चयामास।

आ० वञ्चयिषीष्ट	वञ्चयिषीयास्ताम्	वञ्चयिषीरन्
श्व० वञ्चयिता	वञ्चयितारौ	वञ्चयितार:
भ० वञ्चयिष्यते	वञ्चयिष्येते	वञ्चयिष्यन्ते
क्रि० अवञ्चयिष्यत	अवञ्चयिष्येताम्	अवञ्चयिष्यन्त

अन्यत्र वञ्चू गतौ वञ्चति।

।।अथ टान्त:।।

१८०७. कुटिण (कुट्) प्रतापने। २४०

व० कोटयते	कोटयेते	कोटयन्ते
स० कोटयेत	कोटयेयाताम्	कोटयेरन्
प० कोटयताम्	कोटयेताम्	कोटयन्ताम्
ह्य० अकोटयत	अकोटयेताम्	अकोटयन्त
अ० अचूकुटत	अचूकुटेताम्	अचूकुटन्त
प० कोटयाञ्चक्रे	कोटयाञ्चक्राते	कोटयाञ्चक्रिरे

कोटयाम्बभूव/कोटयामास।

आ० कोटयिषीष्ट	कोटयिषीयास्ताम्	कोटयिषीरन्
श्व० कोटयिता	कोटयितारौ	कोटयितार:
भ० कोटयिष्यते	कोटयिष्येते	कोटयिष्यन्ते
क्रि० अकोटयिष्यत	अकोटयिष्येताम्	अकोटयिष्यन्त

।अन्यत्र कुटत् कौटिल्ये, कुटति।

।।अथ दान्तौ।।

१८०८. मदिण् (मद्) तृप्तियोगे। २४१

व० मादयते	मादयेते	मादयन्ते
स० मादयेत	मादयेयाताम्	मादयेरन्
प० मादयताम्	मादयेताम्	मादयन्ताम
ह्य० अमादयत	अमादयेताम्	अमादयन्त
अ० अमीमदत	अमीमदेताम्	अमीमदन्त
प० मादयाञ्चक्रे	मादयाञ्चक्राते	मादयाञ्चक्रिरे

मादयाम्बभूव/मादयामास।

आ० मादयिषीष्ट	मादयिषीयास्ताम्	मादयिषीरन्
श्व० मादयिता	मादयितारौ	मादयितार:
भ० मादयिष्यते	मादयिष्येते	मादयिष्यन्ते
क्रि० अमादयिष्यत	अमादयिष्येताम्	अमादयिष्यन्त

।अन्यत्र मदैच् हर्षे, माद्यति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥अथ दान्तौ॥

१८०९. विदिण् (विद्) चेतनाख्याननिवासेषु। २४२

व०	वेदयते	वेदयेते	वेदयन्ते
स०	वेदयेत	वेदयेयाताम्	वेदयेरन्
प०	वेदयताम्	वेदयेताम्	वेदयन्ताम
ह्य०	अवेदयत	अवेदयेताम्	अवेदयन्त
अ०	अवीवदत	अवीवदेताम्	अवीवदन्त
प०	वेदयाञ्चक्रे	वेदयाञ्चक्राते	वेदयाञ्चक्रिरे

वेदयाम्बभूव/वेदयावेस्

आ०	वेदयिषीष्ट	वेदयिषीयास्ताम्	वेदयिषीरन्
श्व०	वेदयिता	वेदयितारौ	वेदयितारः
भ०	वेदयिष्यते	वेदयिष्येते	वेदयिष्यन्ते
क्रि०	अवेदयिष्यत	अवेदयिष्येताम्	अवेदयिष्यन्त

अन्यत्र विदक् ज्ञाने; वेत्ति विदिच् सत्तायां, विद्यते। विद्लृन्ती लाभे, विन्दते विन्दति, विदिप् विचारणे, वित्ते।

॥अथ नान्तः।

१८१०. मनिण् (मन्) स्तम्भे। २४३

स्तम्भो गर्वः।

व०	मानयते	मानयेते	मानयन्ते
स०	मानयेत	मानयेयाताम्	मानयेरन्
प०	मानयताम्	मानयेताम्	मानयन्ताम्
ह्य०	अमानयत	अमानयेताम्	अमानयन्त
अ०	अमीमनत	अमीमनेताम्	अमीमनन्त
प०	मानयाञ्चक्रे	मानयाञ्चक्राते	मानयाञ्चक्रिरे

मानयाम्बभूव/मानयामास।

आ०	मानयिषीष्ट	मानयिषीयास्ताम्	मानयिषीरन्
श्व०	मानयिता	मानयितारौ	मानयितारः
भ०	मानयिष्यते	मानयिष्येते	मानयिष्यन्ते
क्रि०	अमानयिष्यत	अमानयिष्येताम्	अमानयिष्यन्त

अन्यत्र मनिंच् ज्ञाने, मन्यते। मनु विबोधने मनुते।

॥अथ लान्तौ॥

१८११. बलिण् (बल्) आभण्डने।

आभण्डनं निरूपणम्। २४४

व०	बालयते	बालयेते	बालयन्ते
स०	बालयेत	बालयेयाताम्	बालयेरन्
प०	बालयताम्	बालयेताम्	बालयन्ताम्
ह्य०	अबालयत	अबालयेताम्	अबालयन्त
अ०	अबीबलत	अबीबलेताम्	अबीबलन्त
प०	बालयाञ्चक्रे	बालयाञ्चक्राते	बालयाञ्चक्रिरे

बालयाम्बभूव/बालयामास।

आ०	बालयिषीष्ट	बालयिषीयास्ताम्	बालयिषीरन्
श्व०	बालयिता	बालयितारौ	बालयितारः
भ०	बालयिष्यते	बालयिष्येते	बालयिष्यन्ते
क्रि०	अबालयिष्यत	अबालयिष्येताम्	अबालयिष्यन्त

अन्यत्र बलि संवरणे; बलते।

१८१२. भलिण् (भल्) आभण्डने।

आभण्डनं निरूपणम्। २४५

व०	भालयते	भालयेते	भालयन्ते
स०	भालयेत	भालयेयाताम्	भालयेरन्
प०	भालयताम्	भालयेताम्	भालयन्ताम्
ह्य०	अभालयत	अभालयेताम्	अभालयन्त
अ०	अबीभलत	अबीभलेताम्	अबीभलन्त
प०	भालयाञ्चक्रे	भालयाञ्चक्राते	भालयाञ्चक्रिरे

भालयाम्बभूव/भालयामास।

आ०	भालयिषीष्ट	भालयिषीयास्ताम्	भालयिषीरन्
श्व०	भालयिता	भालयितारौ	भालयितारः
भ०	भालयिष्यते	भालयिष्येते	भालयिष्यन्ते
क्रि०	अभालयिष्यत	अभालयिष्येताम्	अभालयिष्यन्त

अन्यत्र भलि संवरणे; भलते।

॥अथ वान्तः॥

१८१३. दिविण् (दिव्) परिकूजने। २४६

व०	देवयते	देवयेते	देवयन्ते
स०	देवयेत	देवयेयाताम्	देवयेरन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	देवयताम्	देवयेताम्	देवयन्ताम्
ह्य०	अदेवयत	अदेवयेताम्	अदेवयन्त
अ०	अदीदिवत	अदीदिवेताम्	अदीदिवन्त
प०	देवयाञ्चक्रे	देवयाञ्चक्राते	देवयाञ्चक्रिरे
	देवयाम्बभूव/देवयामास।		
आ०	देवयिषीष्ट	देवयिषीयास्ताम्	देवयिषीरन्
श्व०	देवयिता	देवयितारौ	देवयितार:
भ०	देवयिष्यते	देवयिष्येते	देवयिष्यन्ते
क्रि०	अदेवयिष्यत	अदेवयिष्येताम्	अदेवयिष्यन्त

अन्यत्र दिवूच् क्रीडादौ; दीव्यति।

।।अथ षान्ता:।।

१८१४. वृषिण् (वृष्) शक्तिबन्धे। २४७

व०	वर्षयते	वर्षयेते	वर्षयन्ते
स०	वर्षयेत	वर्षयेयाताम्	वर्षयेरन्
प०	वर्षयताम्	वर्षयेताम्	वर्षयन्ताम्
ह्य०	अवर्षयत	अवर्षयेताम्	अवर्षयन्त
अ०	अवीवृषत	अवीवृषेताम्	अवीवृषन्त
प०	वर्षयाञ्चक्रे	वर्षयाञ्चक्राते	वर्षयाञ्चक्रिरे
	वर्षयाम्बभूव/वर्षयामास।		
आ०	वर्षयिषीष्ट	वर्षयिषीयास्ताम्	वर्षयिषीरन्
श्व०	वर्षयिता	वर्षयितारौ	वर्षयितार:
भ०	वर्षयिष्यते	वर्षयिष्येते	वर्षयिष्यन्ते
क्रि०	अवर्षयिष्यत	अवर्षयिष्येताम्	अवर्षयिष्यन्त

अन्यत्र वृषु सेचने; वर्षति।

।।अथ सान्ता:।।

१८१५. कुत्सिण् (कुत्स्) अवक्षेपे। २४८

व०	कुत्सयते	कुत्सयेते	कुत्सयन्ते
स०	कुत्सयेत	कुत्सयेयाताभ्	कुत्सयेरन्
प०	कुत्सयताम्	कुत्सयेताम्	कुत्सयन्ताम्
ह्य०	अकुत्सयत	अकुत्सयेताम्	अकुत्सयन्त
अ०	अचुकुत्सत	अचुकुत्सेताम्	अचुकुत्सन्त
प०	कुत्सयाञ्चक्रे	कुत्सयाञ्चक्राते	कुत्सयाञ्चक्रिरे
	कुत्सयाम्बभूव/कुत्सयामास।		
आ०	कुत्सयिषीष्ट	कुत्सयिषीयास्ताम्	कुत्सयिषीरन्
श्व०	कुत्सयिता	कुत्सयितारौ	कुत्सयितार:
भ०	कुत्सयिष्यते	कुत्सयिष्येते	कुत्सयिष्यन्ते
क्रि०	अकुत्सयिष्यत	अकुत्सयिष्येताम्	अकुत्सयिष्यन्त

।।अथ क्षान्ता:।।

१८१६. लक्षिण् (लक्ष्) आलोचने। २४९

व०	लक्षयते	लक्षयेते	लक्षयन्ते
स०	लक्षयेत	लक्षयेयाताम्	लक्षयेरन्
प०	लक्षयताम्	लक्षयेताम्	लक्षयन्ताम्
ह्य०	अलक्षयत	अलक्षयेताम्	अलक्षयन्त
अ०	अललक्षत	अललक्षेताम्	अललक्षन्त
प०	लक्षयाञ्चक्रे	लक्षयाञ्चक्राते	लक्षयाञ्चक्रिरे
	लक्षयाम्बभूव/लक्षयामास।		
आ०	लक्षयिषीष्ट	लक्षयिषीयास्ताम्	लक्षयिषीरन्
श्व०	लक्षयिता	लक्षयितारौ	लक्षयितार:
भ०	लक्षयिष्यते	लक्षयिष्येते	लक्षयिष्यन्ते
क्रि०	अलक्षयिष्यत	अलक्षयिष्येताम्	अलक्षयिष्यन्त

अन्यत्र लक्षीण् दर्शनाङ्कनयो:। लक्षयति लक्षयते।

णिचोऽनित्यत्वात्; लक्षते।

अथात्मनेपदिन एवार्थान्तरेऽपि चुरादय:।

अथ कान्तास्त्रय:।

१८१७. हिष्किण् (हिष्क्) हिंसायाम्। २५०

व०	हिष्कयते	हिष्कयेते	हिष्कयन्ते
स०	हिष्कयेत	हिष्कयेयाताम्	हिष्कयेरन्
प०	हिष्कयताम्	हिष्कयेताम्	हिष्कयन्ताम्
ह्य०	अहिष्कयत	अहिष्कयेताम्	अहिष्कयन्त
अ०	अजिहिष्कत	अजिहिष्केताम्	अजिहिष्कन्त
प०	हिष्कयाञ्चक्रे	हिष्कयाञ्चक्राते	हिष्कयाञ्चक्रिरे
	हिष्कयाम्बभूव/हिष्कयामास।		
आ०	हिष्कयिषीष्ट	हिष्कयिषीयास्ताम्	हिष्कयिषीरन्
श्व०	हिष्कयिता	हिष्कयितारौ	हिष्कयितार:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	हिष्कयिष्यते	हिष्कयिष्येते	हिष्कयिष्यन्ते
क्रि०	अहिष्कयिष्यत	अहिष्कयिष्येताम्	अहिष्कयिष्यन्त

१८१८. किष्किण् (किष्क्) हिंसायाम्। २५१

व०	किष्कयते	किष्कयेते	किष्कयन्ते
स०	किष्कयेत	किष्कयेयाताम्	किष्कयेरन्
प०	किष्कयताम्	किष्कयेताम्	किष्कयन्ताम्
ह्य०	अकिष्कयत	अकिष्कयेताम्	अकिष्कयन्त
अ०	अचिकिष्कत	अचिकिष्केताम्	अचिकिष्कन्त
प०	किष्कयाञ्चक्रे	किष्कयाञ्चक्राते	किष्कयाञ्चक्रिरे
	किष्कयाम्बभूव/किष्कयामास।		
आ०	किष्कयिषीष्ट	किष्कयिषीयास्ताम्	किष्कयिषीरन्
श्व०	किष्कयिता	किष्कयितारौ	किष्कयितार:
भ०	किष्कयिष्यते	किष्कयिष्येते	किष्कयिष्यन्ते
क्रि०	अकिष्कयिष्यत	अकिष्कयिष्येताम्	अकिष्कयिष्यन्त

१८१९. निष्किण् (निष्क्) परिमाणे। २५२

व०	निष्कयते	निष्कयेते	निष्कयन्ते
स०	निष्कयेत	निष्कयेयाताम्	निष्कयेरन्
प०	निष्कयताम्	निष्कयेताम्	निष्कयन्ताम्
ह्य०	अनिष्कयत	अनिष्कयेताम्	अनिष्कयन्त
अ०	अनिनिष्कत	अनिनिष्केताम्	अनिनिष्कन्त
प०	निष्कयाञ्चक्रे	निष्कयाञ्चक्राते	निष्कयाञ्चक्रिरे
	निष्कयाम्बभूव/निष्कयामास।		
आ०	निष्कयिषीष्ट	निष्कयिषीयास्ताम्	निष्कयिषीरन्
श्व०	निष्कयिता	निष्कयितारौ	निष्कयितार:
भ०	निष्कयिष्यते	निष्कयिष्येते	निष्कयिष्यन्ते
क्रि०	अनिष्कयिष्यत	अनिष्कयिष्येताम्	अनिष्कयिष्यन्त

।।अथ जान्ता:।।

१८२०. तर्जिण् (तर्ज्) सन्तर्जने। २५३

व०	तर्जयते	तर्जयेते	तर्जयन्ते
स०	तर्जयेत	तर्जयेयाताम्	तर्जयेरन्
प०	तर्जयताम्	तर्जयेताम्	तर्जयन्ताम्
ह्य०	अतर्जयत	अतर्जयेताम्	अतर्जयन्त
अ०	अततर्जत	अततर्जेताम्	अततर्जन्त
प०	तर्जयाञ्चक्रे	तर्जयाञ्चक्राते	तर्जयाञ्चक्रिरे
	तर्जयाम्बभूव/तर्जयामास।		
आ०	तर्जयिषीष्ट	तर्जयिषीयास्ताम्	तर्जयिषीरन्
श्व०	तर्जयिता	तर्जयितारौ	तर्जयितार:
भ०	तर्जयिष्यते	तर्जयिष्येते	तर्जयिष्यन्ते
क्रि०	अतर्जयिष्यत	अतर्जयिष्येताम्	अतर्जयिष्यन्त

।।अथ टान्तौ।।

१८२१. कूटिण् (कुट्) अप्रमादे। २५४

व०	कूटयते	कूटयेते	कूटयन्ते
स०	कूटयेत	कूटयेयाताम्	कूटयेरन्
प०	कूटयताम्	कूटयेताम्	कूटयन्ताम्
ह्य०	अकूटयत	अकूटयेताम्	अकूटयन्त
अ०	अचूकुटत	अचूकुटेताम्	अचूकुटन्त
प०	कूटयाञ्चक्रे	कूटयाञ्चक्राते	कूटयाञ्चक्रिरे
	कूटयाम्बभूव/कूटयामास।		
आ०	कूटयिषीष्ट	कूटयिषीयास्ताम्	कूटयिषीरन्
श्व०	कूटयिता	कूटयितारौ	कूटयितार:
भ०	कूटयिष्यते	कूटयिष्येते	कूटयिष्यन्ते
क्रि०	अकूटयिष्यत	अकूटयिष्येताम्	अकूटयिष्यन्त

१८२२. त्रूटिण् (त्रुट्) छेदने। २५५

व०	त्रोटयते	त्रोटयेते	त्रोटयन्ते
स०	त्रोटयेत	त्रोटयेयाताम्	त्रोटयेरन्
प०	त्रोटयताम्	त्रोटयेताम्	त्रोटयन्ताम्
ह्य०	अत्रोटयत	अत्रोटयेताम्	अत्रोटयन्त
अ०	अतुत्रुटत	अतुत्रुटेताम्	अतुत्रुटन्त
प०	त्रोटयाञ्चक्रे	त्रोटयाञ्चक्राते	त्रोटयाञ्चक्रिरे
	त्रोटयाम्बभूव/त्रोटयामास।		
आ०	त्रोटयिषीष्ट	त्रोटयिषीयास्ताम्	त्रोटयिषीरन्
श्व०	त्रोटयिता	त्रोटयितारौ	त्रोटयितार:
भ०	त्रोटयिष्यते	त्रोटयिष्येते	त्रोटयिष्यन्ते
क्रि०	अत्रोटयिष्यत	अत्रोटयिष्येताम्	अत्रोटयिष्यन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८२३. शठिण् (शठ्) श्लाघायाम्। २५६

व०	शाठयते	शाठयेते	शाठयन्ते
स०	शाठयेत	शाठयेयाताम्	शाठयेरन्
प०	शाठयताम्	शाठयेताम्	शाठयन्ताम्
ह्य०	अशाठयत	अशाठयेताम्	अशाठयन्त
अ०	अशीशठत	अशीशठेताम्	अशीशठन्त
प०	शाठयाञ्चक्रे	शाठयाञ्चक्राते	शाठयाञ्चक्रिरे
	शाठयाम्बभूव/शाठयामास।		
आ०	शाठयिषीष्ट	शाठयिषीयास्ताम्	शाठयिषीरन्
श्व०	शाठयिता	शाठयितारौ	शाठयितार:
भ०	शाठयिष्यते	शाठयिष्येते	शाठयिष्यन्ते
क्रि०	अशाठयिष्यत	अशाठयिष्येताम्	अशाठयिष्यन्त

।।अथ णान्तास्त्रय:।।

१८२४. कूणिण् (कूण्) संकोचने। २५७

व०	कूणयते	कूणयेते	कूणयन्ते
स०	कूणयेत	कूणयेयाताम्	कूणयेरन्
प०	कूणयताम्	कूणयेताम्	कूणयन्ताम्
ह्य०	अकूणयत	अकूणयेताम्	अकूणयन्त
अ०	अचूकुणत	अचूकुणेताम्	अचूकुणन्त
प०	कूणयाञ्चक्रे	कूणयाञ्चक्राते	कूणयाञ्चक्रिरे
	कूणयाम्बभूव/कूणयामास।		
आ०	कूणयिषीष्ट	कूणयिषीयास्ताम्	कूणयिषीरन्
श्व०	कूणयिता	कूणयितारौ	कूणयितार:
भ०	कूणयिष्यते	कूणयिष्येते	कूणयिष्यन्ते
क्रि०	अकूणयिष्यत	अकूणयिष्येताम्	अकूणयिष्यन्त

१८२५. तूणिण् (तूण्) पूरणे। २५८

व०	तूणयते	तूणयेते	तूणयन्ते
स०	तूणयेत	तूणयेयाताम्	तूणयेरन्
प०	तूणयताम्	तूणयेताम्	तूणयन्ताम्
ह्य०	अतूणयत	अतूणयेताम्	अतूणयन्त
अ०	अतूतुणत	अतूतुणेताम्	अतूतुणन्त
प०	तूणयाञ्चक्रे	तूणयाञ्चक्राते	तूणयाञ्चक्रिरे
	तूणयाम्बभूव/तूणयामास।		
आ०	तूणयिषीष्ट	तूणयिषीयास्ताम्	तूणयिषीरन्
श्व०	तूणयिता	तूणयितारौ	तूणयितार:
भ०	तूणयिष्यते	तूणयिष्येते	तूणयिष्यन्ते
क्रि०	अतूणयिष्यत	अतूणयिष्येताम्	अतूणयिष्यन्त

१८२६. भ्रूणिण् (भ्रूण्) आशायाम्। २५९

व०	भ्रूणयते	भ्रूणयेते	भ्रूणयन्ते
स०	भ्रूणयेत	भ्रूणयेयाताम्	भ्रूणयेरन्
प०	भ्रूणयताम्	भ्रूणयेताम्	भ्रूणयन्ताम्
ह्य०	अभ्रूणयत	अभ्रूणयेताम्	अभ्रूणयन्त
अ०	अबुभ्रुणत	अबुभ्रुणेताम्	अबुभ्रुणन्त
प०	भ्रूणयाञ्चक्रे	भ्रूणयाञ्चक्राते	भ्रूणयाञ्चक्रिरे
	भ्रूणयाम्बभूव/भ्रूणयामास।		
आ०	भ्रूणयिषीष्ट	भ्रूणयिषीयास्ताम्	भ्रूणयिषीरन्
श्व०	भ्रूणयिता	भ्रूणयितारौ	भ्रूणयितार:
भ०	भ्रूणयिष्यते	भ्रूणयिष्येते	भ्रूणयिष्यन्ते
क्रि०	अभ्रूणयिष्यत	अभ्रूणयिष्येताम्	अभ्रूणयिष्यन्त

।।अथ तान्तौ।।

१८२७. चितिण् (चित्) संवेदने। २६०

व०	चेतयते	चेतयेते	चेतयन्ते
स०	चेतयेत	चेतयेयाताम्	चेतयेरन्
प०	चेतयताम्	चेतयेताम्	चेतयन्ताम्
ह्य०	अचेतयत	अचेतयेताम्	अचेतयन्त
अ०	अचीचितत	अचीचितेताम्	अचीचितन्त
प०	चेतयाञ्चक्रे	चेतयाञ्चक्राते	चेतयाञ्चक्रिरे
	चेतयाम्बभूव/चेतयामास।		
आ०	चेतयिषीष्ट	चेतयिषीयास्ताम्	चेतयिषीरन्
श्व०	चेतयिता	चेतयितारौ	चेतयितार:
भ०	चेतयिष्यते	चेतयिष्येते	चेतयिष्यन्ते
क्रि०	अचेतयिष्यत	अचेतयिष्येताम्	अचेतयिष्यन्त

१८२८. वस्तिण् (वस्त्) अर्दने। २६१

व०	वस्तयते	वस्तयेते	वस्तयन्ते
स०	वस्तयेत	वस्तयेयाताम्	वस्तयेरन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	वस्तयताम्	वस्तयेताम्	वस्तयन्ताम्
ह्य०	अवस्तयत	अवस्तयेताम्	अवस्तयन्त
अ०	अववस्तत	अववस्तेताम्	अववस्तन्त
प०	वस्तयाञ्चक्रे	वस्तयाञ्चक्राते	वस्तयाञ्चक्रिरे

वस्तयाम्बभूव/वस्तयामास।

आ०	वस्तयिषीष्ट	वस्तयिषीयास्ताम्	वस्तयिषीरन्
श्व०	वस्तयिता	वस्तयितारौ	वस्तयितार:
भ०	वस्तयिष्यते	वस्तयिष्येते	वस्तयिष्यन्ते
क्रि०	अवस्तयिष्यत	अवस्तयिष्येताम्	अवस्तयिष्यन्त

१८२९. गन्धिण् (गन्ध्) अर्दने। २६२

व०	गन्धयते	गन्धयेते	गन्धयन्ते
स०	गन्धयेत	गन्धयेयाताम्	गन्धयेरन्
प०	गन्धयताम्	गन्धयेताम्	गन्धयन्ताम्
ह्य०	अगन्धयत	अगन्धयेताम्	अगन्धयन्त
अ०	अजगन्धत	अजगन्धेताम्	अजगन्धन्त
प०	गन्धयाञ्चक्रे	गन्धयाञ्चक्राते	गन्धयाञ्चक्रिरे

गन्धयाम्बभूव/गन्धयामास।

आ०	गन्धयिषीष्ट	गन्धयिषीयास्ताम्	गन्धयिषीरन्
श्व०	गन्धयिता	गन्धयितारौ	गन्धयितार:
भ०	गन्धयिष्यते	गन्धयिष्येते	गन्धयिष्यन्ते
क्रि०	अगन्धयिष्यत	अगन्धयिष्येताम्	अगन्धयिष्यन्त

॥अथ पान्ताश्चत्वार:॥

१८३०. डपिण् (डप्) संघाते। २६३

व०	डापयते	डापयेते	डापयन्ते
स०	डापयेत	डापयेयाताम्	डापयेरन्
प०	डापयताम्	डापयेताम्	डापयन्ताम्
ह्य०	अडापयत	अडापयेताम्	अडापयन्त
अ०	अडीडपत	अडीडपेताम्	अडीडपन्त
प०	डापयाञ्चक्रे	डापयाञ्चक्राते	डापयाञ्चक्रिरे

डापयाम्बभूव/डापयामास।

आ०	डापयिषीष्ट	डापयिषीयास्ताम्	डापयिषीरन्
श्व०	डापयिता	डापयितारौ	डापयितार:
भ०	डापयिष्यते	डापयिष्येते	डापयिष्यन्ते
क्रि०	अडापयिष्यत	अडापयिष्येताम्	अडापयिष्यन्त

१८३१. डिपिण् (डिप्) संघाते। २६४

व०	डेपयते	डेपयेते	डेपयन्ते
स०	डेपयेत	डेपयेयाताम्	डेपयेरन्
प०	डेपयताम्	डेपयेताम्	डेपयन्ताम्
ह्य०	अडेपयत	अडेपयेताम्	अडेपयन्त
अ०	अडीडिपत	अडीडिपेताम्	अडीडिपन्त
प०	डेपयाञ्चक्रे	डेपयाञ्चक्राते	डेपयाञ्चक्रिरे

डेपयाम्बभूव/डेपयामास।

आ०	डेपयिषीष्ट	डेपयिषीयास्ताम्	डेपयिषीरन्
श्व०	डेपयिता	डेपयितारौ	डेपयितार:
भ०	डेपयिष्यते	डेपयिष्येते	डेपयिष्यन्ते
क्रि०	अडेपयिष्यत	अडेपयिष्येताम्	अडेपयिष्यन्त

१८३२. डम्पि (डम्प्) संघाते। २६५

व०	डम्पयते	डम्पयेते	डम्पयन्ते
स०	डम्पयेत	डम्पयेयाताम्	डम्पयेरन्
प०	डम्पयताम्	डम्पयेताम्	डम्पयन्ताम्
ह्य०	अडम्पयत	अडम्पयेताम्	अडम्पयन्त
अ०	अडडम्पत	अडडम्पेताम्	अडडम्पन्त
प०	डम्पयाञ्चक्रे	डम्पयाञ्चक्राते	डम्पयाञ्चक्रिरे

डम्पयाम्बभूव/डम्पयामास।

आ०	डम्पयिषीष्ट	डम्पयिषीयास्ताम्	डम्पयिषीरन्
श्व०	डम्पयिता	डम्पयितारौ	डम्पयितार:
भ०	डम्पयिष्यते	डम्पयिष्येते	डम्पयिष्यन्ते
क्रि०	अडम्पयिष्यत	अडम्पयिष्येताम्	अडम्पयिष्यन्त

१८३३. डिम्पिण् (डिम्प्) संघाते। २६६

व०	डिम्पयते	डिम्पयेते	डिम्पयन्ते
स०	डिम्पयेत	डिम्पयेयाताम्	डिम्पयेरन्
प०	डिम्पयताम्	डिम्पयेताम्	डिम्पयन्ताम्
ह्य०	अडिम्पयत	अडिम्पयेताम्	अडिम्पयन्त
अ०	अडिडिम्पत	अडिडिम्पेताम्	अडिडिम्पन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	डिम्पयाञ्चक्रे	डिम्पयाञ्चक्राते	डिम्पयाञ्चक्रिरे
	डिम्पयाम्बभूव/डिम्पयामास।		
आ०	डिम्पयिषीष्ट	डिम्पयिषीयास्ताम्	डिम्पयिषीरन्
श्व०	डिम्पयिता	डिम्पयितारौ	डिम्पयितारः
भ०	डिम्पयिष्यते	डिम्पयिष्येते	डिम्पयिष्यन्ते
क्रि०	अडिम्पयिष्यत	अडिम्पयिष्येताम्	अडिम्पयिष्यन्त

१८३४. डम्भि (डम्भ्) संघाते। २६७

व०	डम्भयते	डम्भयेते	डम्भयन्ते
स०	डम्भयेत	डम्भयेयाताम्	डम्भयेरन्
प०	डम्भयताम्	डम्भयेताम्	डम्भयन्ताम्
ह्य०	अडम्भयत	अडम्भयेताम्	अडम्भयन्त
अ०	अडडम्भत	अडडम्भेताम्	अडडम्भन्त
प०	डम्भयाञ्चक्रे	डम्भयाञ्चक्राते	डम्भयाञ्चक्रिरे
	डम्भयाम्बभूव/डम्भयामास।		
आ०	डम्भयिषीष्ट	डम्भयिषीयास्ताम्	डम्भयिषीरन्
श्व०	डम्भयिता	डम्भयितारौ	डम्भयितारः
भ०	डम्भयिष्यते	डम्भयिष्येते	डम्भयिष्यन्ते
क्रि०	अडम्भयिष्यत	अडम्भयिष्येताम्	अडम्भयिष्यन्त

१८३५. डिम्भिण् (डिम्भ्) संघाते। २६८

व०	डिम्भयते	डिम्भयेते	डिम्भयन्ते
स०	डिम्भयेत	डिम्भयेयाताम्	डिम्भयेरन्
प०	डिम्भयताम्	डिम्भयेताम्	डिम्भयन्ताम्
ह्य०	अडिम्भयत	अडिम्भयेताम्	अडिम्भयन्त
अ०	अडिडिम्भत	अडिडिम्भेताम्	अडिडिम्भन्त
प०	डिम्भयाञ्चक्रे	डिम्भयाञ्चक्राते	डिम्भयाञ्चक्रिरे
	डिम्भयाम्बभूव/डिम्भयामास।		
आ०	डिम्भयिषीष्ट	डिम्भयिषीयास्ताम्	डिम्भयिषीरन्
श्व०	डिम्भयिता	डिम्भयितारौ	डिम्भयितारः
भ०	डिम्भयिष्यते	डिम्भयिष्येते	डिम्भयिष्यन्ते
क्रि०	अडिम्भयिष्यत	अडिम्भयिष्येताम्	अडिम्भयिष्यन्त

॥अथ मान्तास्त्रयः॥

१८३६. स्यमिण् (स्यम्) वितर्के। २६९

व०	स्यामयते	स्यामयेते	स्यामयन्ते
स०	स्यामयेत	स्यामयेयाताम्	स्यामयेरन्
प०	स्यामयताम्	स्यामयेताम्	स्यामयन्ताम्
ह्य०	अस्यामयत	अस्यामयेताम्	अस्यामयन्त
अ०	असिस्यमत	असिस्यमेताम्	असिस्यमन्त
प०	स्यामयाञ्चक्रे	स्यामयाञ्चक्राते	स्यामयाञ्चक्रिरे
	स्यामयाम्बभूव/स्यामयामास।		
आ०	स्यामयिषीष्ट	स्यामयिषीयास्ताम्	स्यामयिषीरन्
श्व०	स्यामयिता	स्यामयितारौ	स्यामयितारः
भ०	स्यामयिष्यते	स्यामयिष्येते	स्यामयिष्यन्ते
क्रि०	अस्यामयिष्यत	अस्यामयिष्येताम्	अस्यामयिष्यन्त

१८३७. शमिण् (शम्) आलोचने। २७०

व०	शामयते	शामयेते	शामयन्ते
स०	शामयेत	शामयेयाताम्	शामयेरन्
प०	शामयताम्	शामयेताम्	शामयन्ताम्
ह्य०	अशामयत	अशामयेताम्	अशामयन्त
अ०	अशीशमत	अशीशमेताम्	अशीशमन्त
प०	शामयाञ्चक्रे	शामयाञ्चक्राते	शामयाञ्चक्रिरे
	शामयाम्बभूव/शामयामास।		
आ०	शामयिषीष्ट	शामयिषीयास्ताम्	शामयिषीरन्
श्व०	शामयिता	शामयितारौ	शामयितारः
भ०	शामयिष्यते	शामयिष्येते	शामयिष्यन्ते
क्रि०	अशामयिष्यत	अशामयिष्येताम्	अशामयिष्यन्त

१८३८. कुस्मिण् (कुस्म्) कुस्मयने।
कुत्सितं स्मयनं कुस्मयनम्। २७१

व०	कुस्मयते	कुस्मयेते	कुस्मयन्ते
स०	कुस्मयेत	कुस्मयेयाताम्	कुस्मयेरन्
प०	कुस्मयताम्	कुस्मयेताम्	कुस्मयन्ताम्
ह्य०	अकुस्मयत	अकुस्मयेताम्	अकुस्मयन्त
अ०	अचुकुस्मत	अचुकुस्मेताम्	अचुकुस्मन्त
प०	कुस्मयाञ्चक्रे	कुस्मयाञ्चक्राते	कुस्मयाञ्चक्रिरे
	कुस्मयाम्बभूव/कुस्मयामास।		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	कुस्मयिषीष्ट	कुस्मयिषीयास्ताम्	कुस्मयिषीरन्
श्व०	कुस्मयिता	कुस्मयितारौ	कुस्मयितारः
भ०	कुस्मयिष्यते	कुस्मयिष्येते	कुस्मयिष्यन्ते
क्रि०	अकुस्मयिष्यत	अकुस्मयिष्येताम्	अकुस्मयिष्यन्त

॥अथ रान्तास्त्रयः॥

१८३९. गूरिण् (गूर्) उद्यमे। २७२

व०	गूरयते	गूरयेते	गूरयन्ते
स०	गूरयेत	गूरयेयाताम्	गूरयेरन्
प०	गूरयताम्	गूरयेताम्	गूरयन्ताम्
ह्य०	अगूरयत	अगूरयेताम्	अगूरयन्त
अ०	अजूगुरत	अजूगुरेताम्	अजूगुरन्त
प०	गूरयाञ्चक्रे	गूरयाञ्चक्राते	गूरयाञ्चक्रिरे

गूरयाम्बभूव/गूरयामास।

आ०	गूरयिषीष्ट	गूरयिषीयास्ताम्	गूरयिषीरन्
श्व०	गूरयिता	गूरयितारौ	गूरयितारः
भ०	गूरयिष्यते	गूरयिष्येते	गूरयिष्यन्ते
क्रि०	अगूरयिष्यत	अगूरयिष्येताम्	अगूरयिष्यन्त

१८४०. तन्त्रिण् (तन्त्र्) कुटुम्बधारणे।

कुटुम्बः परिवारः। उपलक्षणञ्चैतत्। २७३

व०	तन्त्रयते	तन्त्रयेते	तन्त्रयन्ते
स०	तन्त्रयेत	तन्त्रयेयाताम्	तन्त्रयेरन्
प०	तन्त्रयताम्	तन्त्रयेताम्	तन्त्रयन्ताम
ह्य०	अतन्त्रयत	अतन्त्रयेताम्	अतन्त्रयन्त
अ०	अततन्त्रत	अततन्त्रेताम्	अततन्त्रन्त
प०	तन्त्रयाञ्चक्रे	तन्त्रयाञ्चक्राते	तन्त्रयाञ्चक्रिरे

तन्त्रयाम्बभूव/तन्त्रयामास।

आ०	तन्त्रयिषीष्ट	तन्त्रयिषीयास्ताम्	तन्त्रयिषीरन्
श्व०	तन्त्रयिता	तन्त्रयितारौ	तन्त्रयितारः
भ०	तन्त्रयिष्यते	तन्त्रयिष्येते	तन्त्रयिष्यन्ते
क्रि०	अतन्त्रयिष्यत	अतन्त्रयिष्येताम्	अतन्त्रयिष्यन्त

१८४१. मन्त्रिण् (मन्त्र्) गुप्तभाषणे। २७४

व०	मन्त्रयते	मन्त्रयेते	मन्त्रयन्ते
स०	मन्त्रयेत	मन्त्रयेयाताम्	मन्त्रयेरन्
प०	मन्त्रयताम्	मन्त्रयेताम्	मन्त्रयन्ताम्
ह्य०	अमन्त्रयत	अमन्त्रयेताम्	अमन्त्रयन्त
अ०	अममन्त्रत	अममन्त्रेताम्	अममन्त्रन्त
प०	मन्त्रयाञ्चक्रे	मन्त्रयाञ्चक्राते	मन्त्रयाञ्चक्रिरे

मन्त्रयाम्बभूव/मन्त्रयामास।

आ०	मन्त्रयिषीष्ट	मन्त्रयिषीयास्ताम्	मन्त्रयिषीरन्
श्व०	मन्त्रयिता	मन्त्रयितारौ	मन्त्रयितारः
भ०	मन्त्रयिष्यते	मन्त्रयिष्येते	मन्त्रयिष्यन्ते
क्रि०	अगन्त्रयिष्यत	अमन्त्रयिष्येताम्	अमन्त्रयिष्यन्त

॥अथ लान्तः॥

१८४२. ललिण् (लल्) ईप्सायाम्। २७५

व०	लालयते	लालयेते	लालयन्ते
स०	लालयेत	लालयेयाताम्	लालयेरन्
प०	लालयताम्	लालयेताम्	लालयन्ताम्
ह्य०	अलालयत	अलालयेताम्	अलालयन्त
अ०	अलीललत	अलीललेताम्	अलीललन्त
प०	लालयाञ्चक्रे	लालयाञ्चक्राते	लालयाञ्चक्रिरे

लालयाम्बभूव/लालयामास।

आ०	लालयिषीष्ट	लालयिषीयास्ताम्	लालयिषीरन्
श्व०	लालयिता	लालयितारौ	लालयितारः
भ०	लालयिष्यते	लालयिष्येते	लालयिष्यन्ते
क्रि०	अलालयिष्यत	अलालयिष्येताम्	अलालयिष्यन्त

॥अथ शान्तौ॥

१८४३. स्पशिण् (स्पश्) ग्रहणश्लेषणयोः। २७६

व०	स्पाशयते	स्पाशयेते	स्पाशयन्ते
स०	स्पाशयेत	स्पाशयेयाताम्	स्पाशयेरन्
प०	स्पाशयताम्	स्पाशयेताम्	स्पाशयन्ताम्
ह्य०	अस्पाशयत	अस्पाशयेताम्	अस्पाशयन्त
अ०	अपस्पशत	अपस्पशेताम्	अपस्पशन्त
प०	स्पाशयाञ्चक्रे	स्पाशयाञ्चक्राते	स्पाशयाञ्चक्रिरे

स्पाशयाम्बभूव/स्पाशयामास।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	स्पाशयिषीष्ट	स्पाशयिषीयास्ताम्	स्पाशयिषीरन्
श्व०	स्पाशयिता	स्पाशयितारौ	स्पाशयितारः
भ०	स्पाशयिष्यते	स्पाशयिष्येते	स्पाशयिष्यन्ते
क्रि०	अस्पाशयिष्यत	अस्पाशयिष्येताम्	अस्पाशयिष्यन्त

१८४४. दंशिण् (दंश्) दर्शने। २७७

व०	दंशयते	दंशयेते	दंशयन्ते
स०	दंशयेत	दंशयेयाताम्	दंशयेरन्
प०	दंशयताम्	दंशयेताम्	दंशयन्ताम्
ह्य०	अदंशयत	अदंशयेताम्	अदंशयन्त
अ०	अददंशत	अददंशेताम्	अददंशन्त
प०	दंशयाञ्चक्रे	दंशयाञ्चक्राते	दंशयाञ्चक्रिरे
	दंशयाम्बभूव/दंशयामास।		
आ०	दंशयिषीष्ट	दंशयिषीयास्ताम्	दंशयिषीरन्
श्व०	दंशयिता	दंशयितारौ	दंशयितारः
भ०	दंशयिष्यते	दंशयिष्येते	दंशयिष्यन्ते
क्रि०	अदंशयिष्यत	अदंशयिष्येताम्	अदंशयिष्यन्त

।।अथ सान्तौ।।

१८४५. दंसिण् (दंस्) दर्शने च।

चकाराद्दंसने। २७८

व०	दंसयते	दंसयेते	दंसयन्ते
स०	दंसयेत	दंसयेयाताम्	दंसयेरन्
प०	दंसयताम्	दंसयेताम्	दंसयन्ताम्
ह्य०	अदंसयत	अदंसयेताम्	अदंसयन्त
अ०	अददंसत	अददंसेताम्	अददंसन्त
प०	दंसयाञ्चक्रे	दंसयाञ्चक्राते	दंसयाञ्चक्रिरे
	दंसयाम्बभूव/दंसयामास।		
आ०	दंसयिषीष्ट	दंसयिषीयास्ताम्	दंसयिषीरन्
श्व०	दंसयिता	दंसयितारौ	दंसयितारः
भ०	दंसयिष्यते	दंसयिष्येते	दंसयिष्यन्ते
क्रि०	अदंसयिष्यत	अदंसयिष्येताम्	अदंसयिष्यन्त

१८४६. भर्त्सिण् (भर्त्स्) संतर्जने। २७९

व०	भर्त्सयते	भर्त्सयेते	भर्त्सयन्ते
स०	भर्त्सयेत	भर्त्सयेयाताम्	भर्त्सयेरन्
प०	भर्त्सयताम्	भर्त्सयेताम्	भर्त्सयन्ताम्
ह्य०	अभर्त्सयत	अभर्त्सयेताम्	अभर्त्सयन्त
अ०	अबभर्त्सत	अबभर्त्सेताम्	अबभर्त्सन्त
प०	भर्त्सयाञ्चक्रे	भर्त्सयाञ्चक्राते	भर्त्सयाञ्चक्रिरे
	भर्त्सयाम्बभूव/भर्त्सयामास।		
आ०	भर्त्सयिषीष्ट	भर्त्सयिषीयास्ताम्	भर्त्सयिषीरन्
श्व०	भर्त्सयिता	भर्त्सयितारौ	भर्त्सयितारः
भ०	भर्त्सयिष्यते	भर्त्सयिष्येते	भर्त्सयिष्यन्ते
क्रि०	अभर्त्सयिष्यत	अभर्त्सयिष्येताम्	अभर्त्सयिष्यन्त

।।अथ क्षान्तः।।

१८४७. यक्षिण् (यक्ष्) पूजायाम्। २८०

व०	यक्षयते	यक्षयेते	यक्षयन्ते
स०	यक्षयेत	यक्षयेयाताम्	यक्षयेरन्
प०	यक्षयताम्	यक्षयेताम्	यक्षयन्ताम्
ह्य०	अयक्षयत	अयक्षयेताम्	अयक्षयन्त
अ०	अययक्षत	अययक्षेताम्	अययक्षन्त
प०	यक्षयाञ्चक्रे	यक्षयाञ्चक्राते	यक्षयाञ्चक्रिरे
	यक्षयाम्बभूव/यक्षयामास।		
आ०	यक्षयिषीष्ट	यक्षयिषीयास्ताम्	यक्षयिषीरन्
श्व०	यक्षयिता	यक्षयितारौ	यक्षयितारः
भ०	यक्षयिष्यते	यक्षयिष्येते	यक्षयिष्यन्ते
क्रि०	अयक्षयिष्यत	अयक्षयिष्येताम्	अयक्षयिष्यन्त

इत्यात्मनेभाषाः।

इतोऽदन्ताः।। इत ऊर्ध्वं युजादेः प्रागदन्तत्वं धातूनां विधीयते। ततश्च अत इत्यल्लुकः स्थानिवत्त्वात् गुणवृद्ध्योः समानलोपित्वाच्च सन्वद्भावदीर्घोपान्त्यह्रस्वानामभावः। यथा सुखयति रचयति। अत्र अत इत्यल्लुकः स्वरादेशत्वेन पूर्वविधिं प्रति स्थानित्वाद् गुणवृद्ध्यभावः। अररचत्, असुसुखत्। अत्र समानलोपित्वादसमानलोपे इति पूर्वस्य सन्वद्भावो लघोर्दीर्घ इति दीर्घश्च न भवति; असुसूचत्। अत्रोपान्त्यह्रस्वाभावः। अङ्कादीनां तूक्तफलाभावेऽपि पूर्वाचार्यानुरोधेनादन्तेषु पाठः। णिजभावेऽनेकस्वरत्वाद्

यङ्निवृत्त्यर्थं इत्येके। द्रुमिलास्तु एवं प्रकाराणामत्त्वविधानसामर्थ्यादल्लोपाभावं मन्यन्ते; ततश्च ञ्णिति इति वृद्धौ प्वागमे च दु:खापयति, लज्जापयति, वेण्टापयति, रंहापयति, अर्थापयते, सत्रापयते, गर्वापयते, इत्युदाहरन्ति। ते हि ञ्णिति वृद्धिं स्वरमात्रस्येच्छन्ति।

।।अथ कान्तौ।।

१८४८. अङ्कण् (अङ्क्) लक्षणे। २८१

व०	अङ्कयति	अङ्कयत:	अङ्कयन्ति
स०	अङ्कयेत्	अङ्कयेताम्	अङ्कयेयु:
प०	अङ्कयतु/अङ्कयतात्	अङ्कयताम्	अङ्कयन्तु
ह्य०	आङ्कयत्	आङ्कयताम्	आङ्कयन्
अ०	आञ्चिकत्	आञ्चिकताम्	आञ्चिकन्
प०	अङ्कयाञ्चकार	अङ्कयाञ्चक्रतु:	अङ्कयाञ्चक्रु:

अङ्कयाम्बभूव/अङ्कयामास।

आ०	अङ्क्यात्	अङ्क्यास्ताम्	अङ्क्यासु:
श्व०	अङ्कयिता	अङ्कयितारौ	अङ्कयितार:
भ०	अङ्कयिष्यति	अङ्कयिष्यत:	अङ्कयिष्यन्ति
क्रि०	आङ्कयिष्यत्	आङ्कयिष्यताम्	आङ्कयिष्यन्

''ओर्जान्ते'' तिसूत्रे पयेवर्णे इति सिद्धे जान्तस्थापवर्गग्रहणं ज्ञापयति णौ यत्कृतं कार्यं तत्सर्वं स्थानिवद्भवति। तेनान्तरङ्गत्त्वात्कृतेऽपि अल्लुकितस्य स्थानिवद्भावात् कशब्दस्य द्वित्त्वम् रूपातिदेशात् एतज्ज्ञापकमवर्णे एव। तेनाचिकीर्त्तत् इति सिद्धम्।

१८४९. ब्लेष्कण् (ब्लेष्क्) दर्शने। २८२

व०	ब्लेष्कयति	ब्लेष्कयत:	ब्लेष्कयन्ति
स०	ब्लेष्कयेत्	ब्लेष्कयेताम्	ब्लेष्कयेयु:
प०	ब्लेष्कयतु	ब्लेष्कयतात्	ब्लेष्कयताम्
ह्य०	अब्लेष्कयत्	अब्लेष्कयताम्	अब्लेष्कयन्
अ०	अबिब्लेष्कत्	अबिब्लेष्कताम्	अबिब्लेष्कन्
प०	ब्लेष्कयाञ्चकार	ब्लेष्कयाञ्चक्रतु:	ब्लेष्कयाञ्चक्रु:

ब्लेष्कयाम्बभूव/ब्लेष्कयामास।

आ०	ब्लेष्क्यात्	ब्लेष्क्यास्ताम्	ब्लेष्क्यासु:
श्व०	ब्लेष्कयिता	ब्लेष्कयितारौ	ब्लेष्कयितार:
भ०	ब्लेष्कयिष्यति	ब्लेष्कयिष्यत:	ब्लेष्कयिष्यन्ति
क्रि०	अब्लेष्कयिष्यत्	अब्लेष्कयिष्यताम्	अब्लेष्कयिष्यन्

णिजभावेऽप्यदन्तत्वार्थोऽस्य पाठ:।

तेनानेकस्वरत्वाद् यङ् न भवति। एवं सूत्रिरुक्षिगर्विप्रभृतीनां पाठे प्रयोजनमुन्नेयम्।

।।अथ खान्ता:।।

१८५०. सुखण् (सुख्) तत्क्रियायाम्।

सुखनं तत्क्रिया। २८३

व०	सुखयति	सुखयत:	सुखयन्ति
स०	सुखयेत्	सुखयेताम्	सुखयेयु:
प०	सुखयतु/सुखयतात्	सुखयताम्	सुखयन्तु
ह्य०	असुखयत्	असुखयताम्	असुखयन्
अ०	असुसुखत्	असुसुखताम्	असुसुखन्
प०	सुखयाञ्चकार	सुखयाञ्चक्रतु:	सुखयाञ्चक्रु:

सुखयाम्बभूव/सुखयामास।

आ०	सुख्यात्	सुख्यास्ताम्	सुख्यासु:
श्व०	सुखयिता	सुखयितारौ	सुखयितार:
भ०	सुखयिष्यति	सुखयिष्यत:	सुखयिष्यन्ति
क्रि०	असुखयिष्यत्	असुखयिष्यताम्	असुखयिष्यन्

१८५१. दु:खण् (दु:ख्) तत्क्रियायाम्।

दु:खनं तत्क्रिया। २८४

व०	दु:खयति	दु:खयत:	दु:खयन्ति
स०	दु:खयेत्	दु:खयेताम्	दु:खयेयु:
प०	दु:खयतु	दु:खयतात्	दु:खयताम्
ह्य०	अदु:खयत्	अदु:खयताम्	अदु:खयन्
अ०	अदुदु:खत्	अदुदु:खताम्	अदुदु:खन्
प०	दु:खयाञ्चकार	दु:खयाञ्चक्रतु:	दु:खयाञ्चक्रु:

दु:खयाम्बभूव/दु:खयामास।

आ०	दु:ख्यात्	दु:ख्यास्ताम्	दु:ख्यादु::
श्व०	दु:खयिता	दु:खयितारौ	दु:खयितार:
भ०	दु:खयिष्यति	दु:खयिष्यत:	दु:खयिष्यन्ति
क्रि०	अदु:खयिष्यत्	अदु:खयिष्यताम्	अदु:खयिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८५२. अङ्गण् (अङ्ग्) पदलक्षणयोः। २८५

व०	अङ्गयति	अङ्गयतः	अङ्गयन्ति
स०	अङ्गयेत्	अङ्गयेताम्	अङ्गयेयुः
प०	अङ्गयतु/अङ्गयतात्	अङ्गयताम्	अङ्गयन्तु
ह्य०	आङ्गयत्	आङ्गयताम्	आङ्गयन्
अ०	आञ्जिगत्	आञ्जिगताम्	आञ्जिगन्
प०	अङ्गयाञ्चकार	अङ्गयाञ्चक्रतुः	अङ्गयाञ्चक्रुः
	अङ्गयाम्बभूव/अङ्गयामास।		
आ०	अङ्ग्यात्	अङ्ग्यास्ताम्	अङ्ग्यासुः
श्व०	अङ्गयिता	अङ्गयितारौ	अङ्गयितारः
भ०	अङ्गयिष्यति	अङ्गयिष्यतः	अङ्गयिष्यन्ति
क्रि०	आङ्गयिष्यत्	आङ्गयिष्यताम्	आङ्गयिष्यन्

॥अथ घान्तः॥

१८५३. अघण् (अङ्ग्) पापकरणे। २८६

व०	अघयति	अघयतः	अघयन्ति
स०	अघयेत्	अघयेताम्	अघयेयुः
प०	अघयतु/अघयतात्	अघयताम्	अघयन्तु
ह्य०	आघयत्	आघयताम्	आघयन्
अ०	आजिघत्	आजिघताम्	आजिघन्
प०	अघयाञ्चकार	अघयाञ्चक्रतुः	अघयाञ्चक्रुः
	अघयाम्बभूव/अघयामास।		
आ०	अघ्यात्	अघ्यास्ताम्	अघ्यासुः
श्व०	अघयिता	अघयितारौ	अघयितारः
भ०	अघयिष्यति	अघयिष्यतः	अघयिष्यन्ति
क्रि०	आघयिष्यत्	आघयिष्यताम्	आघयिष्यन्

॥अथ चान्तौ॥

१८५४. रचण् (रच्) प्रतियत्ने। २८७

व०	रचयति	रचयतः	रचयन्ति
स०	रचयेत्	रचयेताम्	रचयेयुः
प०	रचयतु/रचयतात्	रचयताम्	रचयन्तु
ह्य०	अरचयत्	अरचयताम्	अरचयन्
अ०	अररचत्	अररचताम्	अररचन्
प०	रचयाञ्चकार	रचयाञ्चक्रतुः	रचयाञ्चक्रुः
	रचयाम्बभूव/रचयामास।		
आ०	रच्यात्	रच्यास्ताम्	रच्यासुः
श्व०	रचयिता	रचयितारौ	रचयितारः
भ०	रचयिष्यति	रचयिष्यतः	रचयिष्यन्ति
क्रि०	अरचयिष्यत्	अरचयिष्यताम्	अरचयिष्यन्

१८५५. सूचण् (सूच्) पैशून्ये। २८८

व०	सूचयति	सूचयतः	सूचयन्ति
स०	सूचयेत्	सूचयेताम्	सूचयेयुः
प०	सूचयतु/सूचयतात्	सूचयताम्	सूचयन्तु
ह्य०	असूचयत्	असूचयताम्	असूचयन्
अ०	असुसूचत्	असुसूचताम्	असुसूचन्
प०	सूचयाञ्चकार	सूचयाञ्चक्रतुः	सूचयाञ्चक्रुः
	सूचयाम्बभूव/सूचयामास।		
आ०	सूच्यात्	सूच्यास्ताम्	सूच्यासुः
श्व०	सूचयिता	सूचयितारौ	सूचयितारः
भ०	सूचयिष्यति	सूचयिष्यतः	सूचयिष्यन्ति
क्रि०	असूचयिष्यत्	असूचयिष्यताम्	असूचयिष्यन्

॥अथ जान्ताश्चत्वारः॥

१८५६. भाजण् (भाज्) पृथक्कर्मणि। २८९

व०	भाजयति	भाजयतः	भाजयन्ति
स०	भाजयेत्	भाजयेताम्	भाजयेयुः
प०	भाजयतु/भाजयतात्	भाजयताम्	भाजयन्तु
ह्य०	अभाजयत्	अभाजयताम्	अभाजयन्
अ०	अपिभाजत्	अपिभाजताम्	अपिभाजन्
प०	भाजयाञ्चकार	भाजयाञ्चक्रपिः	भाजयाञ्चक्रुः
	भाजयाम्बभूव/भाजयामास।		
आ०	भाज्यात्	भाज्यास्ताम्	भाज्यासुः
श्व०	भाजयिता	भाजयितारौ	भाजयितारः
भ०	भाजयिष्यति	भाजयिष्यतः	भाजयिष्यन्ति
क्रि०	अभाजयिष्यत्	अभाजयिष्यताम्	अभाजयिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८५८. लजण् (लज्) प्रकाशने। २९१

व०	लजयति	लजयतः	लजयन्ति
स०	लजयेत्	लजयेताम्	लजयेयुः
प०	लजयतु/लजयतात्	लजयताम्	लजयन्तु
ह्य०	अलजयत्	अलजयताम्	अलजयन्
अ०	अललजत्	अललजताम्	अललजन्
प०	लजयाञ्चकार	लजयाञ्चक्रतुः	लजयाञ्चक्रुः
	लजयाम्बभूव/लजयामास।		
आ०	लज्यात्	लज्यास्ताम्	लज्यासुः
श्व०	लजयिता	लजयितारौ	लजयितारः
भ०	लजयिष्यति	लजयिष्यतः	लजयिष्यन्ति
क्रि०	अलजयिष्यत्	अलजयिष्यताम्	अलजयिष्यन्

१८५९. लजुण् (लञ्ज्) प्रकाशने। २९२

व०	लञ्जयति	लञ्जयतः	लञ्जयन्ति
स०	लञ्जयेत्	लञ्जयेताम्	लञ्जयेयुः
प०	लञ्जयतु/लञ्जयतात्	लञ्जयताम्	लञ्जयन्तु
ह्य०	अलञ्जयत्	अलञ्जयताम्	अलञ्जयन्
अ०	अललञ्जत्	अललञ्जताम्	अललञ्जन्
प०	लञ्जयाञ्चकार	लञ्जयाञ्चक्रलः	लञ्जयाञ्चक्रुः
	लञ्जयाम्बभूव/लञ्जयामास।		
आ०	लञ्ज्यात्	लञ्ज्यास्ताम्	लञ्ज्यासुः
श्व०	लञ्जयिता	लञ्जयितारौ	लञ्जयितारः
भ०	लञ्जयिष्यति	लञ्जयिष्यतः	लञ्जयिष्यन्ति
क्रि०	अलञ्जयिष्यत्	अलञ्जयिष्यताम्	अलञ्जयिष्यन्

।।अथ टान्ताः सप्त।।

१८६०. कूटण् (कूट्) दाहे। २९३

व०	कूटयति	कूटयतः	कूटयन्ति
स०	कूटयेत्	कूटयेताम्	कूटयेयुः
प०	कूटयतु/कूटयतात्	कूटयताम्	कूटयन्तु
ह्य०	अकूटयत्	अकूटयताम्	अकूटयन्
अ०	अचुकूटत्	अचुकूटताम्	अचुकूटन्
प०	कूटयाञ्चकार	कूटयाञ्चक्रतुः	कूटयाञ्चक्रुः
	कूटयाम्बभूव/कूटयामास।		
आ०	कूट्यात्	कूट्यास्ताम्	कूट्यासुः
श्व०	कूटयिता	कूटयितारौ	कूटयितारः
भ०	कूटयिष्यति	कूटयिष्यतः	कूटयिष्यन्ति
क्रि०	अकूटयिष्यत्	अकूटयिष्यताम्	अकूटयिष्यन्

१८६१. पटण् (पट्) ग्रन्थे।

ग्रन्थो वेष्टनम्। २९४

व०	पटयति	पटयतः	पटयन्ति
स०	पटयेत्	पटयेताम्	पटयेयुः
प०	पटयतु/पटयतात्	पटयताम्	पटयन्तु
ह्य०	अपटयत्	अपटयताम्	अपटयन्
अ०	अपपटत्	अपपटताम्	अपपटन्
प०	पटयाञ्चकार	पटयाञ्चक्रतुः	पटयाञ्चक्रुः
	पटयाम्बभूव/पटयामास।		
आ०	पट्यात्	पट्यास्ताम्	पट्यासुः
श्व०	पटयिता	पटयितारौ	पटयितारः
भ०	पटयिष्यति	पटयिष्यतः	पटयिष्यन्ति
क्रि०	अपटयिष्यत्	अपटयिष्यताम्	अपटयिष्यन्

१८६२. वटण् (वट्) ग्रन्थे।

ग्रन्थो वेष्टनम्। २९५

व०	वटयति	वटयतः	वटयन्ति
स०	वटयेत्	वटयेताम्	वटयेयुः
व०	वटयतु/वटयतात्	वटयताम्	वटयन्तु
ह्य०	अवटयत्	अवटयताम्	अवटयन्
अ०	अववटत्	अववटताम्	अववटन्
व०	वटयाञ्चकार	वटयाञ्चक्रतुः	वटयाञ्चक्रुः
	वटयाम्बभूव/वटयामास।		
आ०	वट्यात्	वट्यास्ताम्	वट्यासुः
श्व०	वटयिता	वटयितारौ	वटयितारः
भ०	वटयिष्यति	वटयिष्यतः	वटयिष्यन्ति
क्रि०	अवटयिष्यत्	अवटयिष्यताम्	अवटयिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८६३. खेटण् (खेट्) भक्षणे। २९६

व०	खेटयति	खेटयतः	खेटयन्ति
स०	खेटयेत्	खेटयेताम्	खेटयेयुः
प०	खेटयतु/खेटयतात्	खेटयताम्	खेटयन्तु
ह्य०	अखेटयत्	अखेटयताम्	अखेटयन्
अ०	अचिखेटत्	अचिखेटताम्	अचिखेटन्
प०	खेटयाञ्चकार	खेटयाञ्चक्रतुः	खेटयाञ्चक्रुः
	खेटयाम्बभूव/खेटयामास।		
आ०	खेट्यात्	खेट्यास्ताम्	खेट्यासुः
श्व०	खेटयिता	खेटयितारौ	खेटयितारः
भ०	खेटयिष्यति	खेटयिष्यतः	खेटयिष्यन्ति
क्रि०	अखेटयिष्यत्	अखेटयिष्यताम्	अखेटयिष्यन्

१८६४. खोटण् (खोट्) क्षेपे। २९७

व०	खोटयति	खोटयतः	खोटयन्ति
स०	खोटयेत्	खोटयेताम्	खोटयेयुः
प०	खोटयतु/खोटयतात्	खोटयताम्	खोटयन्तु
ह्य०	अखोटयत्	अखोटयताम्	अखोटयन्
अ०	अचुखोटत्	अचुखोटताम्	अचुखोटन्
प०	खोटयाञ्चकार	खोटयाञ्चक्रतुः	खोटयाञ्चक्रुः
	खोटयाम्बभूव/खोटयामास।		
आ०	खोट्यात्	खोट्यास्ताम्	खोट्यासुः
श्व०	खोटयिता	खोटयितारौ	खोटयितारः
भ०	खोटयिष्यति	खोटयिष्यतः	खोटयिष्यन्ति
क्रि०	अखोटयिष्यत्	अखोटयिष्यताम्	अखोटयिष्यन्

१८६५. पुटण् (पुट्) संसर्गे। २९८

व०	पुटयति	पुटयतः	पुटयन्ति
स०	पुटयेत्	पुटयेताम्	पुटयेयुः
प०	पुटयतु/पुटयतात्	पुटयताम्	पुटयन्तु
ह्य०	अपुटयत्	अपुटयताम्	अपुटयन्
अ०	अपुपुटत्	अपुपुटताम्	अपुपुटन्
प०	पुटयाञ्चकार	पुटयाञ्चक्रतुः	पुटयाञ्चक्रुः
	पुटयाम्बभूव/पुटयामास।		
आ०	पुट्यात्	पुट्यास्ताम्	पुट्यासुः
श्व०	पुटयिता	पुटयितारौ	पुटयितारः
भ०	पुटयिष्यति	पुटयिष्यतः	पुटयिष्यन्ति
क्रि०	अपुटयिष्यत्	अपुटयिष्यताम्	अपुटयिष्यन्

१८६६. वटुण् (वण्ट्) विभाजने। २९९

व०	वण्टयति	वण्टयतः	वण्टयन्ति
स०	वण्टयेत्	वण्टयेताम्	वण्टयेयुः
प०	वण्टयतु/वण्टयतात्	वण्टयताम्	वण्टयन्तु
ह्य०	अवण्टयत्	अवण्टयताम्	अवण्टयन्
अ०	अववण्टत्	अववण्टताम्	अववण्टन्
प०	वण्टयाञ्चकार	वण्टयाञ्चक्रतुः	वण्टयाञ्चक्रुः
	वण्टयाम्बभूव/वण्टयामास।		
आ०	वण्ट्यात्	वण्ट्यास्ताम्	वण्ट्यासुः
श्व०	वण्टयिता	वण्टयितारौ	वण्टयितारः
भ०	वण्टयिष्यति	वण्टयिष्यतः	वण्टयिष्यन्ति
क्रि०	अवण्टयिष्यत्	अवण्टयिष्यताम्	अवण्टयिष्यन्

१८६७. शठण् (शठ्) सम्यग्भाषणे। ३००

व०	शठयति	शठयतः	शठयन्ति
स०	शठयेत्	शठयेताम्	शठयेयुः
प०	शठयतु/शठयतात्	शठयताम्	शठयन्तु
ह्य०	अशठयत्	अशठयताम्	अशठयन्
अ०	अशशठत्	अशशठताम्	अशशठन्
प०	शठयाञ्चकार	शठयाञ्चक्रतुः	शठयाञ्चक्रुः
	शठयाम्बभूव/शठयामास।		
आ०	शठ्यात्	शठ्यास्ताम्	शठ्यासुः
श्व०	शठयिता	शठयितारौ	शठयितारः
भ०	शठयिष्यति	शठयिष्यतः	शठयिष्यन्ति
क्रि०	अशठयिष्यत्	अशठयिष्यताम्	अशठयिष्यन्

१८६८. श्वठण् (श्वठ्) सम्यग्भाषणे। ३०१

व०	श्वठयति	श्वठयतः	श्वठयन्ति
स०	श्वठयेत्	श्वठयेताम्	श्वठयेयुः
प०	श्वठयतु/तात्	श्वठयताम्	श्वठयन्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य० अश्वठयत्	अश्वठयताम्	अश्वठयन्
अ० अशश्वठत्	अशश्वठताम्	अशश्वठन्
प० श्वठयाञ्चकार	श्वठयाञ्चक्रतुः	श्वठयाञ्चक्रुः

श्वठयाम्बभूव/श्वठयामास।

आ० श्वठ्यात्	श्वठ्यास्ताम्	श्वठ्यासुः
श्व० श्वठयिता	श्वठयितारौ	श्वठयितारः
भ० श्वठयिष्यति	श्वठयिष्यतः	श्वठयिष्यन्ति
क्रि० अश्वठयिष्यत्	अश्वठयिष्यताम्	अश्वठयिष्यन्

।।अथ डान्ताः।।

१८६९. दण्डण् (दण्ड) दण्डनिपाते। ३०२

व० दण्डयति	दण्डयतः	दण्डयन्ति
स० दण्डयेत्	दण्डयेताम्	दण्डयेयुः
प० दण्डयतु/दण्डयतात्	दण्डयताम्	दण्डयन्तु
ह्य० अदण्डयत्	अदण्डयताम्	अदण्डयन्
अ० अददण्डत्	अददण्डताम्	अददण्डन्
प० दण्डयाञ्चकार	दण्डयाञ्चक्रतुः	दण्डयाञ्चक्रुः

दण्डयाम्बभूव/दण्डयामास।

आ० दण्ड्यात्	दण्ड्यास्ताम्	दण्ड्यासुः
श्व० दण्डयिता	दण्डयितारौ	दण्डयितारः
भ० दण्डयिष्यति	दण्डयिष्यतः	दण्डयिष्यन्ति
क्रि० अदण्डयिष्यत्	अदण्डयिष्यताम्	अदण्डयिष्यन्

दण्डादेर्नाम्नो णिचि दण्डयतीत्यादिसिद्धौ दण्डण्प्रभृतीनां पाठो यथाभिधानं णिचं विनापि प्रयोगार्थः। अत एवादन्तत्वमपि अनेकस्वर कार्यार्थं फलवत्।।

।।अथ णान्ता अष्टौ।।

१८७०. व्रणण् (व्रण्) गात्रविचूर्णने। ३०३

व० व्रणयति	व्रणयतः	व्रणयन्ति
स० व्रणयेत्	व्रणयेताम्	व्रणयेयुः
प० व्रणयतु/व्रणयतात्	व्रणयताम्	व्रणयन्तु
ह्य० अव्रणयत्	अव्रणयताम्	अव्रणयन्
अ० अवव्रणत्	अवव्रणताम्	अवव्रणन्
प० व्रणयाञ्चकार	व्रणयाञ्चक्रतुः	व्रणयाञ्चक्रुः

व्रणयाम्बभूव/व्रणयामास।

आ० व्रण्यात्	व्रण्यास्ताम्	व्रण्यासुः
श्व० व्रणयिता	व्रणयितारौ	व्रणयितारः
भ० व्रणयिष्यति	व्रणयिष्यतः	व्रणयिष्यन्ति
क्रि० अव्रणयिष्यत्	अव्रणयिष्यताम्	अव्रणयिष्यन्

१८७१. वर्णण् (वर्ण्) वर्णक्रियाविस्तारगुणवचनेषु। ३०४

व० वर्णयति	वर्णयतः	वर्णयन्ति
स० वर्णयेत्	वर्णयेताम्	वर्णयेयुः
प० वर्णयतु/वर्णयतात्	वर्णयताम्	वर्णयन्तु
ह्य० अवर्णयत्	अवर्णयताम्	अवर्णयन्
अ० अववर्णत्	अववर्णताम्	अववर्णन्
प० वर्णयाञ्चकार	वर्णयाञ्चक्रतुः	वर्णयाञ्चक्रुः

वर्णयाम्बभूव/वर्णयामास।

आ० वर्ण्यात्	वर्ण्यास्ताम्	वर्ण्यासुः
श्व० वर्णयिता	वर्णयितारौ	वर्णयितारः
भ० वर्णयिष्यति	वर्णयिष्यतः	वर्णयिष्यन्ति
क्रि० अवर्णयिष्यत्	अवर्णयिष्यताम्	अवर्णयिष्यन्

वर्णक्रिया वर्णनं वर्णकरणं वा। वर्णयति कथां सुवर्णम्। विस्तारे वर्णनेयम्। गुणवचनं स्तुतिः शुक्लाद्युक्तिर्वा

१८७२. पर्णण् (पर्ण्) हरितभावे। ३०५

व० पर्णयति	पर्णयतः	पर्णयन्ति
स० पर्णयेत्	पर्णयेताम्	पर्णयेयुः
प० पर्णयतु/पर्णयतात्	पर्णयताम्	पर्णयन्तु
ह्य० अपर्णयत्	अपर्णयताम्	अपर्णयन्
अ० अपपर्णत्	अपपर्णताम्	अपपर्णन्
प० पर्णयाञ्चकार	पर्णयाञ्चक्रतुः	पर्णयाञ्चक्रुः

पर्णयाम्बभूव/पर्णयामास।

आ० पर्ण्यात्	पर्ण्यास्ताम्	पर्ण्यासुः
श्व० पर्णयिता	पर्णयितारौ	पर्णयितारः
भ० पर्णयिष्यति	पर्णयिष्यतः	पर्णयिष्यन्ति
क्रि० अपर्णयिष्यत्	अपर्णयिष्यताम्	अपर्णयिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८७३. कर्णण् (कर्ण्) भेदे। ३०६

व०	कर्णयति	कर्णयतः	कर्णयन्ति
स०	कर्णयेत्	कर्णयेताम्	कर्णयेयुः
प०	कर्णयतु/कर्णयतात्	कर्णयताम्	कर्णयन्तु
ह्य०	अकर्णयत्	अकर्णयताम्	अकर्णयन्
अ०	अचकर्णत्	अचकर्णताम्	अचकर्णन्
प०	कर्णयाञ्चकार	कर्णयाञ्चक्रतुः	कर्णयाञ्चक्रुः
	कर्णयाम्बभूव/कर्णयामास।		
आ०	कर्ण्यात्	कर्ण्यास्ताम्	कर्ण्यासुः
श्व०	कर्णयिता	कर्णयितारौ	कर्णयितारः
भ०	कर्णयिष्यति	कर्णयिष्यतः	कर्णयिष्यन्ति
क्रि०	अकर्णयिष्यत्	अकर्णयिष्यताम्	अकर्णयिष्यन्

१८७४. तूणण् (तूण्) संकोचने। ३०७

व०	तूणयति	तूणयतः	तूणयन्ति
स०	तूणयेत्	तूणयेताम्	तूणयेयुः
प०	तूणयतु/तूणयतात्	तूणयताम्	तूणयन्तु
ह्य०	अतूणयत्	अतूणयताम्	अतूणयन्
अ०	अतूतुणत्	अतूतुणताम्	अतूतुणन्
प०	तूणयाञ्चकार	तूणयाञ्चक्रतुः	तूणयाञ्चक्रुः
	तूणयाम्बभूव/तूणयामास।		
आ०	तूण्यात्	तूण्यास्ताम्	तूण्यासुः
श्व०	तूणयिता	तूणयितारौ	तूणयितारः
भ०	तूणयिष्यति	तूणयिष्यतः	तूणयिष्यन्ति
क्रि०	अतूणयिष्यत्	अतूणयिष्यताम्	अतूणयिष्यन्

१८७५. गणण् (गण्) सङ्ख्याने। ३०८

व०	गणयति	गणयतः	गणयन्ति
स०	गणयेत्	गणयेताम्	गणयेयुः
प०	गणयतु/गणयतात्	गणयताम्	गणयन्तु
ह्य०	अगणयत्	अगणयताम्	अगणयन्
अ०	अजगणत्	अजगणताम्	अजगणन्
प०	गणयाञ्चकार	गणयाञ्चक्रतुः	गणयाञ्चक्रुः
	गणयाम्बभूव/गणयामास।		
आ०	गण्यात्	गण्यास्ताम्	गण्यासुः
श्व०	गणयिता	गणयितारौ	गणयितारः
भ०	गणयिष्यति	गणयिष्यतः	गणयिष्यन्ति
क्रि०	अगणयिष्यत्	अगणयिष्यताम्	अगणयिष्यन्

१८७६. कुणण् (कुण्) आमन्त्रणे।
आमन्त्रा गूढोक्तिः। ३०९

व०	कुणयति	कुणयतः	कुणयन्ति
स०	कुणयेत्	कुणयेताम्	कुणयेयुः
प०	कुणयतु/कुणयतात्	कुणयताम्	कुणयन्तु
ह्य०	अकुणयत्	अकुणयताम्	अकुणयन्
अ०	अचुकुणत्	अचुकुणताम्	अचुकुणन्
प०	कुणयाञ्चकार	कुणयाञ्चक्रतुः	कुणयाञ्चक्रुः
	कुणयाम्बभूव/कुणयामास।		
आ०	कुण्यात्	कुण्यास्ताम्	कुण्यासुः
श्व०	कुणयिता	कुणयितारौ	कुणयितारः
भ०	कुणयिष्यति	कुणयिष्यतः	कुणयिष्यन्ति
क्रि०	अकुणयिष्यत्	अकुणयिष्यताम्	अकुणयिष्यन्

१८७७. गुणण् (गुण्) आमन्त्रणे।
आमन्त्रा गूढोक्तिः। ३१०

व०	गुणयति	गुणयतः	गुणयन्ति
स०	गुणयेत्	गुणयेताम्	गुणयेयुः
प०	गुणयतु/गुणयतात्	गुणयताम्	गुणयन्तु
ह्य०	अगुणयत्	अगुणयताम्	अगुणयन्
अ०	अजुगुणत्	अजुगुणताम्	अजुगुणन्
प०	गुणयाञ्चकार	गुणयाञ्चक्रतुः	गुणयाञ्चक्रुः
	गुणयाम्बभूव/गुणयामास।		
आ०	गुण्यात्	गुण्यास्ताम्	गुण्यासुः
श्व०	गुणयिता	गुणयितारौ	गुणयितारः
भ०	गुणयिष्यति	गुणयिष्यतः	गुणयिष्यन्ति
क्रि०	अगुणयिष्यत्	अगुणयिष्यताम्	अगुणयिष्यन्

॥अथ तान्तास्त्रयः॥

१८७८. केतण् (केत्) आमन्त्रणे।
आमन्त्रणं गूढोक्तिः। ३११

व०	केतयति	केतयतः	केतयन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स०	केतयेत्	केतयेताम्	केतयेयुः
प०	केतयतु/केतयतात्	केतयताम्	केतयन्तु
ह्य०	अकेतयत्	अकेतयताम्	अकेतयन्
अ०	अचिकेतत्	अचिकेताम्	अचिकेतन्
प०	केतयाञ्चकार	केतयाञ्चक्रतुः	केतयाञ्चक्रुः

केतयाम्बभूव/केतयामास।

आ०	केत्यात्	केत्यास्ताम्	केत्यासुः
श्व०	केतयिता	केतयितारौ	केतयितारः
भ०	केतयिष्यति	केतयिष्यतः	केतयिष्यन्ति
क्रि०	अकेतयिष्यत्	अकेतयिष्यताम्	अकेतयिष्यन्

अयं निश्रावणनिमन्त्रणयोरपीत्येके।

१८७९. पतण् (पत्) गतौ वा। ३१२

व०	पतयति	पतयतः	पतयन्ति
स०	पतयेत्	पतयेताम्	पतयेयुः
प०	पतयतु/पतयतात्	पतयताम्	पतयन्तु
ह्य०	अपतयत्	अपतयताम्	अपतयन्
अ०	अपपतत्	अपपताम्	अपपतन्
प०	पतयाञ्चकार	पतयाञ्चक्रतुः	पतयाञ्चक्रुः

पतयाम्बभूव/पतयामास।

आ०	पत्यात्	पत्यास्ताम्	पत्यासुः
श्व०	पतयिता	पतयितारौ	पतयितारः
भ०	पतयिष्यति	पतयिष्यतः	पतयिष्यन्ति
क्रि०	अपतयिष्यत्	अपतयिष्यताम्	अपतयिष्यन्

वा शब्दो णिजदन्तत्वयोर्युगपद्विकल्पार्थः। पक्षे, पतति, अपातीत्। अपतीत्।

१८८०. वातण् (वात्) गतिसुखसेवनयोः। ३१३

व०	वातयति	वातयतः	वातयन्ति
स०	वातयेत्	वातयेताम्	वातयेयुः
प०	वातयतु/वातयतात्	वातयताम्	वातयन्तु
ह्य०	अवातयत्	अवातयताम्	अवातयन्
अ०	अववातत्	अववाताम्	अववातन्
प०	वातयाञ्चकार	वातयाञ्चक्रतुः	वातयाञ्चक्रुः

वातयाम्बभूव/वातयामास।

आ०	वात्यात्	वात्यास्ताम्	वात्यासुः
श्व०	वातयिता	वातयितारौ	वातयितारः
भ०	वातयिष्यति	वातयिष्यतः	वातयिष्यन्ति
क्रि०	अवातयिष्यत्	अवातयिष्यताम्	अवातयिष्यन्

सुखसेवनयोरित्येके। वा इत्येके। तन्मते, वापयति।

॥अथ थान्तौ॥

१८८१. कथण् (कथ्) वाक्यप्रबन्धे। ३१४

व०	कथयति	कथयतः	कथयन्ति
स०	कथयेत्	कथयेताम्	कथयेयुः
प०	कथयतु/कथयतात्	कथयताम्	कथयन्तु
ह्य०	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
अ०	अचकथत्	अचकथताम्	अचकथन्
प०	कथयाञ्चकर	कथयाञ्चक्रतुः	कथयाञ्चक्रुः

कथयाम्बभूव/कथयामास।

आ०	कथ्यात्	कथ्यास्ताम्	कथ्यासुः
श्व०	कथयिता	कथयितारौ	कथयितारः
भ०	कथयिष्यति	कथयिष्यतः	कथयिष्यन्ति
क्रि०	अकथयिष्यत्	अकथयिष्यताम्	अकथयिष्यन्

वाक्यप्रतिबन्धे इत्यन्ये। प्रतिबन्धो विच्छेदोदीरणात्। वदने इत्यपरे।

१८८२. श्रथण् (श्रथ्) दौर्बल्ये। ३१५

व०	श्रथयति	श्रथयतः	श्रथयन्ति
स०	श्रथयेत्	श्रथयेताम्	श्रथयेयुः
प०	श्रथयतु/श्रथयतात्	श्रथयताम्	श्रथयन्तु
ह्य०	अश्रथयत्	अश्रथयताम्	अश्रथयन्
अ०	अशश्रथत्	अशश्रथताम्	अशश्रथन्
प०	श्रथयाञ्चकार	श्रथयाञ्चक्रतुः	श्रथयाञ्चक्रुः

श्रथयाम्बभूव/श्रथयामास।

आ०	श्रथ्यात्	श्रथ्यास्ताम्	श्रथ्यासुः
श्व०	श्रथयिता	श्रथयितारौ	श्रथयितारः
भ०	श्रथयिष्यति	श्रथयिष्यतः	श्रथयिष्यन्ति
क्रि०	अश्रथयिष्यत्	अश्रथयिष्यताम्	अश्रथयिष्यन्

लत्वे श्लथयतीत्यादि।

॥अथ दान्तौ॥

१८८३. छेदण् (छेद्) द्वैधीकरणे। ३१६

व०	छेदयति	छेदयतः	छेदयन्ति
स०	छेदयेत्	छेदयेताम्	छेदयेयुः
प०	छेदयतु/छेदयतात्	छेदयताम्	छेदयन्तु
ह्य०	अच्छेदयत्	अच्छेदयताम्	अच्छेदयन्
अ०	अचिच्छदत्	अचिच्छदताम्	अचिच्छदन्
प०	छेदयाञ्चकार	छेदयाञ्चक्रतुः	छेदयाञ्चक्रुः

छेदयाम्बभूव/छेदयामास।

आ०	छेद्यात्	छेद्यास्ताम्	छेद्यासुः
श्व०	छेदयिता	छेदयितारौ	छेदयितारः
भ०	छेदयिष्यति	छेदयिष्यतः	छेदयिष्यन्ति
क्रि०	अच्छेदयिष्यत्	अच्छेदयिष्यताम्	अच्छेदयिष्यन्

१८८४. गदण् (गद) गर्जे। गर्जो मेघशब्दः।

व०	गदयति	गदयतः	गदयन्ति
स०	गदयेत्	गदयेताम्	गदयेयुः
प०	गदयतु/गदयतात्	गदयताम्	गदयन्तु
ह्य०	अगदयत्	अगदयताम्	अगदयन्
अ०	अजगदत्	अजगदताम्	अजगदन्
प०	गदयाञ्चकार	गदयाञ्चक्रतुः	गदयाञ्चक्रुः

गदयाम्बभूव/गदयामास।

आ०	गद्यात्	गद्यास्ताम्	गद्यासुः
श्व०	गदयिता	गदयितारौ	गदयितारः
भ०	गदयिष्यति	गदयिष्यतः	गदयिष्यन्ति
क्रि०	अगदयिष्यत्	अगदयिष्यताम्	अगदयिष्यन्

॥अथ धान्तः॥

१८८५. अन्धण् (अन्ध्) दृष्ट्युपसंहारे। ३१८

व०	अन्धयति	अन्धयतः	अन्धयन्ति
स०	अन्धयेत्	अन्धयेताम्	अन्धयेयुः
प०	अन्धयतु/अन्धयतात्	अन्धयताम्	अन्धयन्तु
ह्य०	आन्धयत्	आन्धयताम्	आन्धयन्
अ०	आन्दिधत्	आन्दिधताम्	आन्दिधन्
प०	अन्धयाञ्चकार	अन्धयाञ्चक्रतुः	अन्धयाञ्चक्रुः

अन्धयाम्अभूव/अन्धयामास।

आ०	अन्ध्यात्	अन्ध्यास्ताम्	अन्ध्यासुः
श्व०	अन्धयिता	अन्धयितारौ	अन्धयितारः
भ०	अन्धयिष्यति	अन्धयिष्यतः	अन्धयिष्यन्ति
क्रि०	आन्धयिष्यत्	आन्धयिष्यताम्	आन्धयिष्यन्

१८८६. स्तनण् (स्तन्) गर्जे।

गर्जो मेघशब्दः। ३१९

व०	स्तनयति	स्तनयतः	स्तनयन्ति
स०	स्तनयेत्	स्तनयेताम्	स्तनयेयुः
प०	स्तनयतु/स्तनयतात्	स्तनयताम्	स्तनयन्तु
ह्य०	अस्तनयत्	अस्तनयताम्	अस्तनयन्
अ०	अतस्तनत्	अतस्तनताम्	अतस्तनन्
प०	स्तनयाञ्चकार	स्तनयाञ्चक्रतुः	स्तनयाञ्चक्रुः

स्तनयाम्बभूव/स्तनयामास।

आ०	स्तन्यात्	स्तन्यास्ताम्	स्तन्यासुः
श्व०	स्तनयिता	स्तनयितारौ	स्तनयितारः
भ०	स्तनयिष्यति	स्तनयिष्यतः	स्तनयिष्यन्ति
क्रि०	अस्तनयिष्यत्	अस्तनयिष्यताम्	अस्तनयिष्यन्

१८८७. ध्वनण् (ध्वन्) शब्दे। ३२०

व०	ध्वनयति	ध्वनयतः	ध्वनयन्ति
स०	ध्वनयेत्	ध्वनयेताम्	ध्वनयेयुः
प०	ध्वनयतु/ध्वनयतात्	ध्वनयताम्	ध्वनयन्तु
ह्य०	अध्वनयत्	अध्वनयताम्	अध्वनयन्
अ०	अदध्वनत्	अदध्वनताम्	अदध्वनन्
प०	ध्वनयाञ्चकार	ध्वनयाञ्चक्रतुः	ध्वनयाञ्चक्रुः

ध्वनयाम्बभूव/ध्वनयामास।

आ०	ध्वन्यात्	ध्वन्यास्ताम्	ध्वन्यासुः
श्व०	ध्वनयिता	ध्वनयितारौ	ध्वनयितारः
भ०	ध्वनयिष्यति	ध्वनयिष्यतः	ध्वनयिष्यन्ति
क्रि०	अध्वनयिष्यत्	अध्वनयिष्यताम्	अध्वनयिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८८८. स्तेनण् (स्तेन्) चौर्ये। ३२१

व०	स्तेनयति	स्तेनयतः	स्तेनयन्ति
स०	स्तेनयेत्	स्तेनयेताम्	स्तेनयेयुः
प०	स्तेनयतु/स्तेनयतात्	स्तेनयताम्	स्तेनयन्तु
ह्य०	अस्तेनयत्	अस्तेनयताम्	अस्तेनयन्
अ०	अतिस्तेनत्	अतिस्तेनताम्	अतिस्तेनन्
प०	स्तेनयाञ्चकार	स्तेनयाञ्चक्रतुः	स्तेनयाञ्चक्रुः

स्तेनयाम्बभूव/स्तेनयामास।

आ०	स्तेन्यात्	स्तेन्यास्ताम्	स्तेन्यासुः
श्व०	स्तेनयिता	स्तेनयितारौ	स्तेनयितारः
भ०	स्तेनयिष्यति	स्तेनयिष्यतः	स्तेनयिष्यन्ति
क्रि०	अस्तेनयिष्यत्	अस्तेनयिष्यताम्	अस्तेनयिष्यन्

१८८९. ऊनण् (ऊन्) परिहाणे। ३२२

व०	ऊनयति	ऊनयतः	ऊनयन्ति
स०	ऊनयेत्	ऊनयेताम्	ऊनयेयुः
प०	ऊनयतु/ऊनयतात्	ऊनयताम्	ऊनयन्तु
ह्य०	औनयत्	औनयताम्	औनयन्
अ०	औनिनत्	औनिनताम्	औनिनन्
प०	ऊनयाञ्चकार	ऊनयाञ्चक्रतुः	ऊनयाञ्चक्रुः

ऊनयाम्बभूव/ऊनयामास।

आ०	ऊन्यात्	ऊन्यास्ताम्	ऊन्यासुः
श्व०	ऊनयिता	ऊनयितारौ	ऊनयितारः
भ०	ऊनयिष्यति	ऊनयिष्यतः	ऊनयिष्यन्ति
क्रि०	औनयिष्यत्	औनयिष्यताम्	औनयिष्यन्

।।अथ पान्तास्त्रयः।।

१८९०. कृपण् (कृप्) दौर्बल्ये। ३२३

व०	कृपयति	कृपयतः	कृपयन्ति
स०	कृपयेत्	कृपयेताम्	कृपयेयुः
प०	कृपयतु/कृपयतात्	कृपयताम्	कृपयन्तु
ह्य०	अकृपयत्	अकृपयताम्	अकृपयन्
अ०	अचकृपत्	अचकृपताम्	अचकृपन्
प०	कृपयाञ्चकार	कृपयाञ्चक्रतुः	कृपयाञ्चक्रुः

कृपयाबभूव/कृपयामास।

आ०	कृप्यात्	कृप्यास्ताम्	कृप्यासुः
श्व०	कृपयिता	कृपयितारौ	कृपयितारः
भ०	कृपयिष्यति	कृपयिष्यतः	कृपयिष्यन्ति
क्रि०	अकृपयिष्यत्	अकृपयिष्यताम्	अकृपयिष्यन्

१८९२. क्षपण् (क्षप्) प्रेरणे। ३२५

व०	क्षपयति	क्षपयतः	क्षपयन्ति
स०	क्षपयेत्	क्षपयेताम्	क्षपयेयुः
प०	क्षपयतु/क्षपयतात्	क्षपयताम्	क्षपयन्तु
ह्य०	अक्षपयत्	अक्षपयताम्	अक्षपयन्
अ०	अचक्षपत्	अचक्षपताम्	अचक्षपन्
प०	क्षपयाञ्चकार	क्षपयाञ्चक्रतुः	क्षपयाञ्चक्रुः

क्षपयाबभूव/क्षपयामास।

आ०	क्षप्यात्	क्षप्यास्ताम्	क्षप्यासुः
श्व०	क्षपयिता	क्षपयितारौ	क्षपयितारः
भ०	क्षपयिष्यति	क्षपयिष्यतः	क्षपयिष्यन्ति
क्रि०	अक्षपयिष्यत्	अक्षपयिष्यताम्	अक्षपयिष्यन्

।।अथ भान्तः।।

१८९३. लाभण् (लाभ्) प्रेरणे। ३२६

व०	लाभयति	लाभयतः	लाभयन्ति
स०	लाभयेत्	लाभयेताम्	लाभयेयुः
प०	लाभयतु/लाभयतात्	लाभयताम्	लाभयन्तु
ह्य०	अलाभयत्	अलाभयताम्	अलाभयन्
अ०	अललाभत्	अललाभताम्	अललाभन्
प०	लाभयाञ्चकार	लाभयाञ्चक्रतुः	लाभयाञ्चक्रुः

लाभयाम्बभूव/लाभयामास।

आ०	लाभ्यात्	लाभ्यास्ताम्	लाभ्यासुः
श्व०	लाभयिता	लाभयितारौ	लाभयितारः
भ०	लाभयिष्यति	लाभयिष्यतः	लाभयिष्यन्ति
क्रि०	अलाभयिष्यत्	अलाभयिष्यताम्	अलाभयिष्यन्

लभणित्यन्ये।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥अथ मान्ता: पञ्च॥

१८९४. भामण् (भाम्) क्रोधे। ३२७

व०	भामयति	भामयत:	भामयन्ति
स०	भामयेत्	भामयेताम्	भामयेयु:
प०	भामयतु/भामयतात्	भामयताम्	भामयन्तु
ह्य०	अभामयत्	अभामयताम्	अभामयन्
अ०	अबभामत्	अबभामताम्	अबभामन्
प०	भामयाञ्चकार	भामयाञ्चक्रतु:	भामयाञ्चक्रु:
	भामयाम्बभूव/भामयामास।		
आ०	भाम्यात्	भाम्यास्ताम्	भाम्यासु:
श्व०	भामयिता	भामयितारौ	भामयितार:
भ०	भामयिष्यति	भामयिष्यत:	भामयिष्यन्ति
क्रि०	अभामयिष्यत्	अभामयिष्यताम्	अभामयिष्यन्

१८९५. गोमण् (गोम्) उपलेपने। ३२८

व०	गोमयति	गोमयत:	गोमयन्ति
स०	गोमयेत्	गोमयेताम्	गोमयेयु:
प०	गोमयतु/गोमयतात्	गोमयताम्	गोमयन्तु
ह्य०	अगोमयत्	अगोमयताम्	अगोमयन्
अ०	अजुगोमत्	अजुगोमताम्	अजुगोमन्
प०	गोमयाञ्चकार	गोमयाञ्चक्रतु:	गोमयाञ्चक्रु:
	गोमयाम्बभूव/गोमयामास।		
आ०	गोम्यात्	गोम्यास्ताम्	गोम्यासु:
श्व०	गोमयिता	गोमयितारौ	गोमयितार:
भ०	गोमयिष्यति	गोमयिष्यत:	गोमयिष्यन्ति
क्रि०	अगोमयिष्यत्	अगोमयिष्यताम्	अगोमयिष्यन्

१८९६. सामण् (साम्) सान्त्वने। सान्त्वनं प्रीणनम्। ३२९

व०	सामयति	सामयत:	सामयन्ति
स०	सामयेत्	सामयेताम्	सामयेयु:
प०	सामयतु/सामयतात्	सामयताम्	सामयन्तु
ह्य०	असामयत्	असामयताम्	असामयन्
अ०	अससामत्	अससामताम्	अससामन्
प०	सामयाञ्चकार	सामयाञ्चक्रतु:	सामयाञ्चक्रु:
	सामयाम्बभूव/सामयामास।		
आ०	साम्यात्	साम्यास्ताम्	साम्यासु:
श्व०	सामयिता	सामयितारौ	सामयितार:
भ०	सामयिष्यति	सामयिष्यत:	सामयिष्यन्ति
क्रि०	असामयिष्यत्	असामयिष्यताम्	असामयिष्यन्

१८९७. श्रामण् (श्राम्) आमन्त्रणे। ३३०

व०	श्रामयति	श्रामयत:	श्रामयन्ति
स०	श्रामयेत्	श्रामयेताम्	श्रामयेयु:
प०	श्रामयतु/श्रामयतात्	श्रामयताम्	श्रामयन्तु
ह्य०	अश्रामयत्	अश्रामयताम्	अश्रामयन्
अ०	अशश्रामत्	अशश्रामताम्	अशश्रामन्
प०	श्रामयाञ्चकार	श्रामयाञ्चक्रतु:	श्रामयाञ्चक्रु:
	श्रामयाम्बभूव/श्रामयामास।		
आ०	श्राम्यात्	श्राम्यास्ताम्	श्राम्यासु:
श्व०	श्रामयिता	श्रामयितारौ	श्रामयितार:
भ०	श्रामयिष्यति	श्रामयिष्यत:	श्रामयिष्यन्ति
क्रि०	अश्रामयिष्यत्	अश्रामयिष्यताम्	अश्रामयिष्यन्

१८९८. स्तोमण् (स्तोम्) श्लाघायाम्। ३३१

व०	स्तोमयति	स्तोमयत:	स्तोमयन्ति
स०	स्तोमयेत्	स्तोमयेताम्	स्तोमयेयु:
प०	स्तोमयतु/स्तोमयतात्	स्तोमयताम्	स्तोमयन्तु
ह्य०	अस्तोमयत्	अस्तोमयताम्	अस्तोमयन्
अ०	अतुस्तोमत्	अतुस्तोमताम्	अतुस्तोमन्
प०	स्तोमयाञ्चकार	स्तोमयाञ्चक्रतु:	स्तोमयाञ्चक्रु:
	स्तोमयाम्बभूव/स्तोमयामास।		
आ०	स्तोम्यात्	स्तोम्यास्ताम्	स्तोम्यासु:
श्व०	स्तोमयिता	स्तोमयितारौ	स्तोमयितार:
भ०	स्तोमयिष्यति	स्तोमयिष्यत:	स्तोमयिष्यन्ति
क्रि०	अस्तोमयिष्यत्	अस्तोमयिष्यताम्	अस्तोमयिष्यन्

१६८२. व्ययण् (व्यय्) क्षये। ११५

व०	व्याययति	व्याययत:	व्याययन्ति
स०	व्याययेत्	व्याययेताम्	व्याययेयु:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	व्याययतु/व्याययतात्	व्याययताम्	व्याययन्तु
ह्य०	अव्याययत्	अव्याययताम्	अव्याययन्
अ०	अविव्ययत्	अविव्ययताम्	अविव्ययन्
प०	व्याययाञ्चकार	व्याययाञ्चक्रतुः	व्याययाञ्चक्रुः
	व्याययाम्बभूव/व्यायव्यायास्		
आ०	व्याय्यात्	व्याय्यास्ताम्	व्याय्यासुः
श्व०	व्याययिता	व्याययितारौ	व्याययितारः
भ०	व्याययिष्यति	व्याययिष्यतः	व्याययिष्यन्ति
क्रि०	अव्याययिष्यत्	अव्याययिष्यताम्	अव्याययिष्यन्

।।अथ रान्तास्त्रयोदश।।

१९००. सूत्रण् (सूत्र्) विमोचने। ३३३

विमोचनं मोचनाभावो ग्रन्थनमितियावत्।

व०	सूत्रयति	सूत्रयतः	सूत्रयन्ति
स०	सूत्रयेत्	सूत्रयेताम्	सूत्रयेयुः
प०	सूत्रयतु/सूत्रयतात्	सूत्रयताम्	सूत्रयन्तु
ह्य०	असूत्रयत्	असूत्रयताम्	असूत्रयन्
अ०	असुसूत्रत्	असुसूत्रताम्	असुसूत्रन्
प०	सूत्रयाञ्चकार	सूत्रयाञ्चक्रतुः	सूत्रयाञ्चक्रुः
	सूत्रयाम्बभूव/सूत्रयामास।		
आ०	सूत्र्यात्	सूत्र्यास्ताम्	सूत्र्यासुः
श्व०	सूत्रयिता	सूत्रयितारौ	सूत्रयितारः
भ०	सूत्रयिष्यति	सूत्रयिष्यतः	सूत्रयिष्यन्ति
क्रि०	असूत्रयिष्यत्	असूत्रयिष्यताम्	असूत्रयिष्यन्

१९०१. मूत्रण् (मूत्र्) प्रस्रवणे। ३३४

व०	मूत्रयति	मूत्रयतः	मूत्रयन्ति
स०	मूत्रयेत्	मूत्रयेताम्	मूत्रयेयुः
प०	मूत्रयतु/मूत्रयतात्	मूत्रयताम्	मूत्रयन्तु
ह्य०	अमूत्रयत्	अमूत्रयताम्	अमूत्रयन्
अ०	अमुमूत्रत्	अमुमूत्रताम्	अमुमूत्रन्
प०	मूत्रयाञ्चकार	मूत्रयाञ्चक्रतुः	मूत्रयाञ्चक्रुः
	मूत्रयाम्बभूव/मूत्रयामास।		
आ०	मूत्र्यात्	मूत्र्यास्ताम्	मूत्र्यासुः
श्व०	मूत्रयिता	मूत्रयितारौ	मूत्रयितारः
भ०	मूत्रयिष्यति	मूत्रयिष्यतः	मूत्रयिष्यन्ति
क्रि०	अमूत्रयिष्यत्	अमूत्रयिष्यताम्	अमूत्रयिष्यन्

१९०२. पारण् (पार्) कर्मसमाप्तौ। ३३५

व०	पारयति	पारयतः	पारयन्ति
स०	पारयेत्	पारयेताम्	पारयेयुः
प०	पारयतु/पारयतात्	पारयताम्	पारयन्तु
ह्य०	अपारयत्	अपारयताम्	अपारयन्
अ०	अपपारत्	अपपारताम्	अपपारन्
प०	पारयाञ्चकार	पारयाञ्चक्रतुः	पारयाञ्चक्रुः
	पारयाम्बभूव/पारयामास।		
आ०	पार्यात्	पार्यास्ताम्	पार्यासुः
श्व०	पारयिता	पारयितारौ	पारयितारः
भ०	पारयिष्यति	पारयिष्यतः	पारयिष्यन्ति
क्रि०	अपारयिष्यत्	अपारयिष्यताम्	अपारयिष्यन्

१९०३. तीरण् (तीर्) कर्मसमाप्तौ। ३३६

व०	तीरयति	तीरयतः	तीरयन्ति
स०	तीरयेत्	तीरयेताम्	तीरयेयुः
प०	तीरयतु/तीरयतात्	तीरयताम्	तीरयन्तु
ह्य०	अतीरयत्	अतीरयताम्	अतीरयन्
अ०	अतितीरत्	अतितीरताम्	अतितीरन्
प०	तीरयाञ्चकार	तीरयाञ्चक्रतुः	तीरयाञ्चक्रुः
	तीरयाम्बभूव/तीरयामास।		
आ०	तीर्यात्	तीर्यास्ताम्	तीर्यासुः
श्व०	तीरयिता	तीरयितारौ	तीरयितारः
भ०	तीरयिष्यति	तीरयिष्यतः	तीरयिष्यन्ति
क्रि०	अतीरयिष्यत्	अतीरयिष्यताम्	अतीरयिष्यन्

१९०४. कत्रण् (कत्र्) शैथिल्ये। ३३७

व०	कत्रयति	कत्रयतः	कत्रयन्ति
स०	कत्रयेत्	कत्रयेताम्	कत्रयेयुः
प०	कत्रयतु/कत्रयतात्	कत्रयताम्	कत्रयन्तु
ह्य०	अकत्रयत्	अकत्रयताम्	अकत्रयन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	अचकत्रत्	अचकत्रताम्	अचकत्रन्
प०	कत्रयाञ्चकार	कत्रयाञ्चक्रतु:	कत्रयाञ्चक्रु:
	कत्रयाम्बभूव/कत्रयामास।		
आ०	कत्र्यात्	कत्र्यास्ताम्	कत्र्यासु:
श्व०	कत्रयिता	कत्रयितारौ	कत्रयितार:
भ०	कत्रयिष्यति	कत्रयिष्यत:	कत्रयिष्यन्ति
क्रि०	अकत्रयिष्यत्	अकत्रयिष्यताम्	अकत्रयिष्यन्

१९०५. गात्रण् (गात्र्) शैथिल्ये। ३३८

व०	गात्रयति	गात्रयत:	गात्रयन्ति
स०	गात्रयेत्	गात्रयेताम्	गात्रयेयु:
प०	गात्रयतु/गात्रयतात्	गात्रयताम्	गात्रगातु
ह्य०	अगात्रयत्	अगात्रयताम्	अगात्रयन्
अ०	अजगात्रत्	अजगात्रताम्	अजगात्रन्
प०	गात्रयाञ्चकार	गात्रयाञ्चक्रतु:	गात्रयाञ्चक्रु:
	गात्रयाम्बभूव/गात्रयामास।		
आ०	गात्र्यात्	गात्र्यास्ताम्	गात्र्यासु:
श्व०	गात्रयिता	गात्रयितारौ	गात्रयितार:
भ०	गात्रयिष्यति	गात्रयिष्यत:	गात्रयिष्यन्ति
क्रि०	अगात्रयिष्यत्	अगात्रयिष्यताम्	अगात्रयिष्यन्

१९०६. चित्रण् (चित्र्) चित्रक्रियाकदाचिद्दृष्ट्योः। ३३९

व०	चित्रयति	चित्रयत:	चित्रयन्ति
स०	चित्रयेत्	चित्रयेताम्	चित्रयेयु:
प०	चित्रयतु/चित्रयतात्	चित्रयताम्	चित्रचितु
ह्य०	अचित्रयत्	अचित्रयताम्	अचित्रयन्
अ०	अचिचित्रत्	अचिचित्रताम्	अचिचित्रन्
प०	चित्रयाञ्चकार	चित्रयाञ्चक्रतु:	चित्रयाञ्चक्रु:
	चित्रयाम्बभूव/चित्रयामास।		
आ०	चित्र्यात्	चित्र्यास्ताम्	चित्र्यासु:
श्व०	चित्रयिता	चित्रयितारौ	चित्रयितार:
भ०	चित्रयिष्यति	चित्रयिष्यत:	चित्रयिष्यन्ति
क्रि०	अचित्रयिष्यत्	अचित्रयिष्यताम्	अचित्रयिष्यन्

चित्रयति आलेख्यं करोति कदाचित्पश्यति वा। वैचित्र्यकरणार्थोऽयं न चित्रक्रियार्थ इत्यन्ये।

१९०७. छिद्रण् (छिद्र्) भेदे। ३४०

व०	छिद्रयति	छिद्रयत:	छिद्रयन्ति
स०	छिद्रयेत्	छिद्रयेताम्	छिद्रयेयु:
प०	छिद्रयतु/छिद्रयतात्	छिद्रयताम्	छिद्रयन्तु
ह्य०	अच्छिद्रयत्	अच्छिद्रयताम्	अच्छिद्रयन्
अ०	अचिच्छिद्रत्	अचिच्छिद्रताम्	अचिच्छिद्रन्
प०	छिद्रयाञ्चकार	छिद्रयाञ्चक्रतु:	छिद्रयाञ्चक्रु:
	छिद्रयाम्बभूव/छिद्रयामास।		
आ०	छिद्र्यात्	छिद्र्यास्ताम्	छिद्र्यासु:
श्व०	छिद्रयिता	छिद्रयितारौ	छिद्रयितार:
भ०	छिद्रयिष्यति	छिद्रयिष्यत:	छिद्रयिष्यन्ति
क्रि०	अच्छिद्रयिष्यत्	अच्छिद्रयिष्यताम्	अच्छिद्रयिष्यन्

१९०८. मिश्रण् (मिश्र्) सम्पर्चने। सम्पर्चनं श्लेष:। ३४१

व०	मिश्रयति	मिश्रयत:	मिश्रयन्ति
स०	मिश्रयेत्	मिश्रयेताम्	मिश्रयेयु:
प०	मिश्रयतु/मिश्रयतात्	मिश्रयताम्	मिश्रयन्तु
ह्य०	अमिश्रयत्	अमिश्रयताम्	अमिश्रयन्
अ०	अमिमिश्रत	अमिमिश्रताम्	अमिमिश्रन्
प०	मिश्रयाञ्चकार	मिश्रयाञ्चक्रतु:	मिश्रयाञ्चक्रु:
	मिश्रयाम्बभूव/मिश्रयामास।		
आ०	मिश्र्यात्	मिश्र्यास्ताम्	मिश्र्यासु:
श्व०	मिश्रयिता	मिश्रयितारौ	मिश्रयितार:
भ०	मिश्रयिष्यति	मिश्रयिष्यत:	मिश्रयिष्यन्ति
क्रि०	अमिश्रयिष्यत्	अमिश्रयिष्यताम्	अमिश्रयिष्यन्

१९०९. वरण् (वर्) ईप्सायाम्। ३४२

व०	वरयति	वरयत:	वरयन्ति
स०	वरयेत्	वरयेताम्	वरयेयु:
प०	वरयतु/वरयतात्	वरयताम्	वरयन्तु
ह्य०	अवरयत्	अवरयताम्	अवरयन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	अववरत्	अववरताम्	अववरन्
प०	वरयाञ्चकार	वरयाञ्चक्रतुः	वरयाञ्चक्रुः
	वरयाम्बभूव/वरयामास।		
आ०	वर्यात्	वर्यास्ताम्	वर्यासुः
श्व०	वरयिता	वरयितारौ	वरयितारः
भ०	वरयिष्यति	वरयिष्यतः	वरयिष्यन्ति
क्रि०	अवरयिष्यत्	अवरयिष्यताम्	अवरयिष्यन्

१९१०. स्वरण् (स्वर्) आक्षेपे। ३४३

व०	स्वरयति	स्वरयतः	स्वरयन्ति
स०	स्वरयेत्	स्वरयेताम्	स्वरयेयुः
प०	स्वरयतु/स्वरयतात्	स्वरयताम्	स्वरयन्तु
ह्य०	अस्वरयत्	अस्वरयताम्	अस्वरयन्
अ०	असस्वरत्	असस्वरताम्	असस्वरन्
प०	स्वरयाञ्चकार	स्वरयाञ्चक्रतुः	स्वरयाञ्चक्रुः
	स्वरयाम्बभूव/स्वरयामास।		
आ०	स्वर्यात्	स्वर्यास्ताम्	स्वर्यासुः
श्व०	स्वरयिता	स्वरयितारौ	स्वरयितारः
भ०	स्वरयिष्यति	स्वरयिष्यतः	स्वरयिष्यन्ति
क्रि०	अस्वरयिष्यत्	अस्वरयिष्यताम्	अस्वरयिष्यन्

१९११. शारण् (शार्) दौर्बल्ये। ३४४

व०	शारयति	शारयतः	शारयन्ति
स०	शारयेत्	शारयेताम्	शारयेयुः
प०	शारयतु/शारयतात्	शारयताम्	शारयन्तु
ह्य०	अशारयत्	अशारयताम्	अशारयन्
अ०	अशशारत्	अशशारताम्	अशशारन्
प०	शारयाञ्चकार	शारयाञ्चक्रतुः	शारयाञ्चक्रुः
	शारयाम्बभूव/शारयामास।		
आ०	शार्यात्	शार्यास्ताम्	शार्यासुः
श्व०	शारयिता	शारयितारौ	शारयितारः
भ०	शारयिष्यति	शारयिष्यतः	शारयिष्यन्ति
क्रि०	अशारयिष्यत्	अशारयिष्यताम्	अशारयिष्यन्

शरेत्येके

१९१२. कुमारण् (कुमार्) क्रीडायाम्। ३४५

व०	कुमारयति	कुमारयतः	कुमारयन्ति
स०	कुमारयेत्	कुमारयेताम्	कुमारयेयुः
प०	कुमारयतु/कुमारयतात्	कुमारयताम्	कुमारयन्तु
ह्य०	अकुमारयत्	अकुमारयताम्	अकुमारयन्
अ०	अचुकुमारत्	अचुकुमारताम्	अचुकुमारन्
प०	कुमारयाञ्चकार	कुमारयाञ्चक्रतुः	कुमारयाञ्चक्रुः
	कुमारयाम्बभूव/कुमारयामास।		
आ०	कुमार्यात्	कुमार्यास्ताम्	कुमार्यासुः
श्व०	कुमारयिता	कुमारयितारौ	कुमारयितारः
भ०	कुमारयिष्यति	कुमारयिष्यतः	कुमारयिष्यन्ति
क्रि०	अकुमारयिष्यत्	अकुमारयिष्यताम्	अकुमारयिष्यन्

लान्तोऽय मित्येके।

।।अथ लान्ताः पञ्च।।

१९१३. कलण् (कल्) सङ्ख्यानगत्योः। ३४६

व०	कलयति	कलयतः	कलयन्ति
स०	कलयेत्	कलयेताम्	कलयेयुः
प०	कलयतु/कलयतात्	कलयताम्	कलयन्तु
ह्य०	अकलयत्	अकलयताम्	अकलयन्
अ०	अचकलत्	अचकलताम्	अचकलन्
प०	कलयाञ्चकार	कलयाञ्चक्रतुः	कलयाञ्चक्रुः
	कलयाम्बभूव/कलयामास।		
आ०	कल्यात्	कल्यास्ताम्	कल्यासुः
श्व०	कलयिता	कलयितारौ	कलयितारः
भ०	कलयिष्यति	कलयिष्यतः	कलयिष्यन्ति
क्रि०	अकलयिष्यत्	अकलयिष्यताम्	अकलयिष्यन्

क्षेपे तु; कालयति गाः।

१९१४. शीलण् (शील्) उपधारणे। उपधारणमभ्यासः परिचयो वा। ३४७

व०	शीलयति	शीलयतः	शीलयन्ति
स०	शीलयेत्	शीलयेताम्	शीलयेयुः
प०	शीलयतु/शीलयतात्	शीलयताम्	शीलयन्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	अशीलयत्	अशीलयताम्	अशीलयन्
अ०	अशिशीलत्	अशिशीलताम्	अशिशीलन्
प०	शीलयाञ्चकार	शीलयाञ्चक्रतुः	शीलयाञ्चक्रुः

शीलयाम्बभूव/शीलयामास।

आ०	शील्यात्	शील्यास्ताम्	शील्यासुः
श्व०	शीलयिता	शीलयितारौ	शीलयितारः
भ०	शीलयिष्यति	शीलयिष्यतः	शीलयिष्यन्ति
क्रि०	अशीलयिष्यत्	अशीलयिष्यताम्	अशीलयिष्यन्

१९१५. वेलण् (वेल्) उपदेशे। ३४८

व०	वेलयति	वेलयतः	वेलयन्ति
स०	वेलयेत्	वेलयेताम्	वेलयेयुः
प०	वेलयतु/वेलयतात्	वेलयताम्	वेलयन्तु
ह्य०	अवेलयत्	अवेलयताम्	अवेलयन्
अ०	अविवेलत्	अविवेलताम्	अविवेलन्
प०	वेलयाञ्चकार	वेलयाञ्चक्रतुः	वेलयाञ्चक्रुः

वेलयाम्बभूव/वेलयामास।

आ०	वेल्यात्	वेल्यास्ताम्	वेल्यासुः
श्व०	वेलयिता	वेलयितारौ	वेलयितारः
भ०	वेलयिष्यति	वेलयिष्यतः	वेलयिष्यन्ति
क्रि०	अवेलयिष्यत्	अवेलयिष्यताम्	अवेलयिष्यन्

वेलण् कालोपदेशे इत्येके।

१९१६. कालण् (काल्) उपदेशे। ३४९

व०	कालयति	कालयतः	कालयन्ति
स०	कालयेत्	कालयेताम्	कालयेयुः
प०	कालयतु/कालयतात्	कालयताम्	कालयन्तु
ह्य०	अकालयत्	अकालयताम्	अकालयन्
अ०	अचकालत्	अचकालताम्	अचकालन्
प०	कालयाञ्चकार	कालयाञ्चक्रतुः	कालयाञ्चक्रुः

कालयाम्बभूव/कालयामास।

आ०	काल्यात्	काल्यास्ताम्	काल्यासुः
श्व०	कालयिता	कालयितारौ	कालयितारः
भ०	कालयिष्यति	कालयिष्यतः	कालयिष्यन्ति
क्रि०	अकालयिष्यत्	अकालयिष्यताम्	अकालयिष्यन्

१९१७. पल्यूलण् (पल्यूल्) लवनपवनयोः। ३५०

व०	पल्यूलयति	पल्यूलयतः	पल्यूलयन्ति
स०	पल्यूलयेत्	पल्यूलयेताम्	पल्यूलयेयुः
प०	पल्यूलयतु/तात्	पल्यूलयताम्	पल्यूलयन्तु
ह्य०	अपल्यूलयत्	अपल्यूलयताम्	अपल्यूलयन्
अ०	अपपल्यूलत्	अपपल्यूलताम्	अपपल्यूलन्
प०	पल्यूलयाञ्चकार	पल्यूलयाञ्चक्रतुः	पल्यूलयाञ्चक्रुः

पल्यूलयाम्बभूव/पल्यूलयामास।

आ०	पल्यूल्यात्	पल्यूल्यास्ताम्	पल्यूल्यासुः
श्व०	पल्यूलयिता	पल्यूलयितारौ	पल्यूलयितारः
भ०	पल्यूलयिष्यति	पल्यूलयिष्यतः	पल्यूलयिष्यन्ति
क्रि०	अपल्यूलयिष्यत्	अपल्यूलयिष्यताम्	अपल्यूलयिष्यन्

वल्यूलेत्यन्ये; पल्यूलयति क्षेत्रं सबुसधान्यं वा

१९१८. अंशण् (अंश्) समाधाने।
समाधानो विभाजनम्। ३५१

व०	अंशयति	अंशयतः	अंशयन्ति
स०	अंशयेत्	अंशयेताम्	अंशयेयुः
प०	अंशयतु/अंशयतात्	अंशयताम्	अंशयन्तु
ह्य०	आंशयत्	आंशयताम्	आंशयन्
अ०	आंशिशत्	आंशिशताम्	आंशिशन्
प०	अंशयाञ्चकार	अंशयाञ्चक्रतुः	अंशयाञ्चक्रुः

अंशयाम्बभूव/अंशयामास।

आ०	अंश्यात्	अंश्यास्ताम्	अंश्यासुः
श्व०	अंशयिता	अंशयितारौ	अंशयितारः
भ०	अंशयिष्यति	अंशयिष्यतः	अंशयिष्यन्ति
क्रि०	आंशयिष्यत्	आंशयिष्यताम्	आंशयिष्यन्

॥अथ षान्तास्त्रयः॥

१९१९. पषण् (पष्) अनुपसर्गः पष इत्ययं।
धातुरनुपसर्गोऽदन्तो णिचमुत्पादयति। ३५२

व०	पषयति	पषयतः	पषयन्ति
स०	पषयेत्	पषयेताम्	पषयेयुः
प०	पषयतु/पषयतात्	पषयताम्	पषयन्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	अपषयत्	अपषयताम्	अपषयन्
अ०	अपपषत्	अपपषताम्	अपपषन्
प०	पषयाञ्चकार	पषयाञ्चक्रतुः	पषयाञ्चक्रुः
	पषयाम्बभूव/पषयामास।		
आ०	पष्यात्	पष्यास्ताम्	पष्यासुः
श्व०	पषयिता	पषयितारौ	पषयितारः
भ०	पषयिष्यति	पषयिष्यतः	पषयिष्यन्ति
क्रि०	अपषयिष्यत्	अपषयिष्यताम्	अपषयिष्यन्

१९२०. गवेषण् (गवेष्) मार्गणे। ३५३

व०	गवेषयति	गवेषयतः	गवेषयन्ति
स०	गवेषयेत्	गवेषयेताम्	गवेषयेयुः
प०	गवेषयतु/गवेषयतात्	गवेषयताम्	गवेषयन्तु
ह्य०	अगवेषयत्	अगवेषयताम्	अगवेषयन्
अ०	अजगवेषत्	अजगवेषताम्	अजगवेषन्
प०	गवेषयाञ्चकार	गवेषयाञ्चक्रतुः	गवेषयाञ्चक्रुः
	गवेषयाम्बभूव/गवेषयामास।		
आ०	गवेष्यात्	गवेष्यास्ताम्	गवेष्यासुः
श्व०	गवेषयिता	गवेषयितारौ	गवेषयितारः
भ०	गवेषयिष्यति	गवेषयिष्यतः	गवेषयिष्यन्ति
क्रि०	अगवेषयिष्यत्	अगवेषयिष्यताम्	अगवेषयिष्यन्

१९२१. मृषण् (मृष्) क्षान्तौ। क्षान्तिस्तितिक्षा। ३५४

व०	मृषयति	मृषयतः	मृषयन्ति
स०	मृषयेत्	मृषयेताम्	मृषयेयुः
प०	मृषयतु/मृषयतात्	मृषयताम्	मृषयन्तु
ह्य०	अमृषयत्	अमृषयताम्	अमृषयन्
अ०	अममृषत्	अममृषताम्	अममृषन्
मृ०	मृषयाञ्चकार	मृषयाञ्चक्रतुः	मृषयाञ्चक्रुः
	मृषयाम्बभूव/मृषयामास।		
आ०	मृष्यात्	मृष्यास्ताम्	मृष्यासुः
श्व०	मृषयिता	मृषयितारौ	मृषयितारः
भ०	मृषयिष्यति	मृषयिष्यतः	मृषयिष्यन्ति
क्रि०	अमृषयिष्यत्	अमृषयिष्यताम्	अमृषयिष्यन्

णिचोऽनित्यत्वाद् मृषति।

।।अथ सान्तास्त्रयः।।

१९२२. रसण् (रस्) आस्वादनस्नेहनयोः। ३५५

व०	रसयति	रसयतः	रसयन्ति
स०	रसयेत्	रसयेताम्	रसयेयुः
प०	रसयतु/रसयतात्	रसयताम्	रसयन्तु
ह्य०	अरसयत्	अरसयताम्	अरसयन्
अ०	अररसत्	अररसताम्	अररसन्
प०	रसयाञ्चकार	रसयाञ्चक्रतुः	रसयाञ्चक्रुः
	रसयाम्बभूव/रसयामास।		
आ०	रस्यात्	रस्यास्ताम्	रस्यासुः
श्व०	रसयिता	रसयितारौ	रसयितारः
भ०	रसयिष्यति	रसयिष्यतः	रसयिष्यन्ति
क्रि०	अरसयिष्यत्	अरसयिष्यताम्	अरसयिष्यन्

१९२३. वासण् (वास्) उपसेवायाम्। ३५६

व०	वासयति	वासयतः	वासयन्ति
स०	वासयेत्	वासयेताम्	वासयेयुः
प०	वासयतु/वासयतात्	वासयताम्	वासयन्तु
ह्य०	अवासयत्	अवासयताम्	अवासयन्
अ०	अववासत्	अववासताम्	अववासन्
प०	वासयाञ्चकार	वासयाञ्चक्रतुः	वासयाञ्चक्रुः
	वासयाम्बभूव/वासयामास।		
आ०	वास्यात्	वास्यास्ताम्	वास्यासुः
श्व०	वासयिता	वासयितारौ	वासयितारः
भ०	वासयिष्यति	वासयिष्यतः	वासयिष्यन्ति
क्रि०	अवासयिष्यत्	अवासयिष्यताम्	अवासयिष्यन्

१९२४. निवासण् (निवास्) आच्छादने। ३५७

व०	निवासयति	निवासयतः	निवासयन्ति
स०	निवासयेत्	निवासयेताम्	निवासयेयुः
प०	निवासयतु/तात्	निवासयताम्	निवासयन्तु
ह्य०	अनिवासयत्	अनिवासयताम्	अनिवासयन्
अ०	अनिनिवासत्	अनिनिवासताम्	अनिनिवासन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	निवासयाञ्चकार	निवासयाञ्चक्रतुः	निवासयाञ्चक्रुः
	निवासयाम्बभूव/निवासयामास।		
आ०	निवास्यात्	निवास्यास्ताम्	निवास्यासुः
श्व०	निवासयिता	निवासयितारौ	निवासयितारः
भ०	निवासयिष्यति	निवासयिष्यतः	निवासयिष्यन्ति
क्रि०	अनिवासयिष्यत्	अनिवासयिष्यताम्	अनिवासयिष्यन्

॥अथ हान्ताः॥

१९२५. चहण् (चह्) कल्कने।

कल्कनं दम्भः। ३५८

व०	चहयति	चहयतः	चहयन्ति
स०	चहयेत्	चहयेताम्	चहयेयुः
प०	चहयतु/चहयतात्	चहयताम्	चहयन्तु
ह्य०	अचहयत्	अचहयताम्	अचहयन्
अ०	अचचहत्	अचचहताम्	अचचहन्
प०	चहयाञ्चकार	चहयाञ्चक्रतुः	चहयाञ्चक्रुः
	चहयाम्बभूव/चहयामास।		
आ०	चह्यात्	चह्यास्ताम्	चह्यासुः
श्व०	चहयिता	चहयितारौ	चहयितारः
भ०	चहयिष्यति	चहयिष्यतः	चहयिष्यन्ति
क्रि०	अचहयिष्यत्	अचहयिष्यताम्	अचहयिष्यन्

१९२६. महण् (मह्) पूजायाम्। ३५९

व०	महयति	महयतः	महयन्ति
स०	महयेत्	महयेताम्	महयेयुः
प०	महयतु/महयतात्	महयताम्	महयन्तु
ह्य०	अमहयत्	अमहयताम्	अमहयन्
अ०	अममहत्	अममहताम्	अममहन्
प०	महयाञ्चकार	महयाञ्चक्रतुः	महयाञ्चक्रुः
	महयाम्बभूव/महयामास।		
आ०	मह्यात्	मह्यास्ताम्	मह्यासुः
श्व०	महयिता	महयितारौ	महयितारः
भ०	महयिष्यति	महयिष्यतः	महयिष्यन्ति
क्रि०	अमहयिष्यत्	अमहयिष्यताम्	अमहयिष्यन्

१९२७. रहण् (रह्) त्यागे। ३९०

व०	रहयति	रहयतः	रहयन्ति
स०	रहयेत्	रहयेताम्	रहयेयुः
प०	रहयतु/रहयतात्	रहयताम्	रहयन्तु
ह्य०	अरहयत्	अरहयताम्	अरहयन्
अ०	अररहत्	अररहताम्	अररहन्
प०	रहयाञ्चकार	रहयाञ्चक्रतुः	रहयाञ्चक्रुः
	रहयाम्बभूव/रहयामास।		
आ०	रह्यात्	रह्यास्ताम्	रह्यासुः
श्व०	रहयिता	रहयितारौ	रहयितारः
भ०	रहयिष्यति	रहयिष्यतः	रहयिष्यन्ति
क्रि०	अरहयिष्यत्	अरहयिष्यताम्	अरहयिष्यन्

१९२८. रहुण् (रंह्) गतौ। ३६१

व०	रंहयति	रंहयतः	रंहयन्ति
स०	रंहयेत्	रंहयेताम्	रंहयेयुः
प०	रंहयतु/रंहयतात्	रंहयताम्	रंहयन्तु
ह्य०	अरंहयत्	अरंहयताम्	अरंहयन्
अ०	अररंहत्	अररंहताम्	अररंहन्
प०	रंहयाञ्चकार	रंहयाञ्चक्रतुः	रंहयाञ्चक्रुः
	रंहयाम्बभूव/रंहयामास।		
आ०	रंह्यात्	रंह्यास्ताम्	रंह्यासुः
श्व०	रंहयिता	रंहयितारौ	रंहयितारः
भ०	रंहयिष्यति	रंहयिष्यतः	रंहयिष्यन्ति
क्रि०	अरंहयिष्यत्	अरंहयिष्यताम्	अरंहयिष्यन्

१९२९. स्पृहण् (स्पृह्) ईप्सायाम्। ३६२

व०	स्पृहयति	स्पृहयतः	स्पृहयन्ति
स०	स्पृहयेत्	स्पृहयेताम्	स्पृहयेयुः
प०	स्पृहयतु/स्पृहयतात्	स्पृहयताम्	स्पृहयन्तु
ह्य०	अस्पृहयत्	अस्पृहयताम्	अस्पृहयन्
अ०	अपस्पृहत्	अपस्पृहताम्	अपस्पृहन्
प०	स्पृहयाञ्चकार	स्पृहयाञ्चक्रतुः	स्पृहयाञ्चक्रुः
	स्पृहयाम्बभूव/स्पृहयामास।		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	स्पृह्यात्	स्पृह्यास्ताम्	स्पृह्यासुः
श्व०	स्पृहयिता	स्पृहयितारौ	स्पृहयितारः
भ०	स्पृहयिष्यति	स्पृहयिष्यतः	स्पृहयिष्यन्ति
क्रि०	अस्पृहयिष्यत्	अस्पृहयिष्यताम्	अस्पृहयिष्यन्

॥अथ क्षान्तः॥

१९३०. रुक्षण् (रुक्ष्) पारुष्ये। ३६३

व०	रुक्षयति	रुक्षयतः	रुक्षयन्ति
स०	रुक्षयेत्	रुक्षयेताम्	रुक्षयेयुः
प०	रुक्षयतु/रुक्षयतात्	रुक्षयताम्	रुक्षयन्तु
ह्य०	अरुक्षयत्	अरुक्षयताम्	अरुक्षयन्
अ०	अरुरुक्षत्	अरुरुक्षताम्	अरुरुक्षन्
प०	रुक्षयाञ्चकार	रुक्षयाञ्चक्रतुः	रुक्षयाञ्चक्रुः

रुक्षयाम्बभूव/रुक्षयामास।

आ०	रुक्ष्यात्	रुक्ष्यास्ताम्	रुक्ष्यासुः
श्व०	रुक्षयिता	रुक्षयितारौ	रुक्षयितारः
रु०	रुक्षयिष्यति	रुक्षयिष्यतः	रुक्षयिष्यन्ति
क्रि०	अरुक्षयिष्यत्	अरुक्षयिष्यताम्	अरुक्षयिष्यन्

॥इत्यदन्ताः परस्मैपदिनः॥

अथादन्तेष्वेव कुहणिमभिव्याप्यात्मने पदिनः। तत्र गान्ताः

१९३१. मृग णि (मृग्) अन्वेषणे। ३६४

व०	मृगयते	मृगयेते	मृगयन्ते
स०	मृगयेत	मृगयेयाताम्	मृगयेरन्
प०	मृगयताम्	मृगयेताम्	मृगयन्ताम्
ह्य०	अमृगयत	अमृगयेताम्	अमृगयन्त
अ०	अममृगत	अममृगेताम्	अममृगन्त
प०	मृगयाञ्चक्रे	मृगयाञ्चक्राते	मृगयाञ्चक्रिरे

मृगयाम्बभूव/मृगयामास।

आ०	मृगयिषीष्ट	मृगयिषीयास्ताम्	मृगयिषीरन्
श्व०	मृगयिता	मृगयितारौ	मृगयितारः
भ०	मृगयिष्यते	मृगयिष्येते	मृगयिष्यन्ते
क्रि०	अमृगयिष्यत	अमृगयिष्येताम्	अमृगयिष्यन्त

॥अथ थान्तः॥

१९३२. अर्थणि (अर्थ्) उपयाचने। ३६५

व०	अर्थयते	अर्थयेते	अर्थयन्ते
स०	अर्थयेत	अर्थयेयाताम्	अर्थयेरन्
प०	अर्थयताम्	अर्थयेताम्	अर्थयन्ताम्
ह्य०	आर्थयत	आर्थयेताम्	आर्थयन्त
अ०	आर्तिथत	आर्तिथेताम्	आर्तिथन्त
प०	अर्थयाञ्चक्रे	अर्थयाञ्चक्राते	अर्थयाञ्चक्रिरे

अर्थयाम्बभूव/अर्थयामास।

आ०	अर्थयिषीष्ट	अर्थयिषीयास्ताम्	अर्थयिषीरन्
श्व०	अर्थयिता	अर्थयितारौ	अर्थयितारः
भ०	अर्थयिष्यते	अर्थयिष्येते	अर्थयिष्यन्ते
क्रि०	आर्थयिष्यत	आर्थयिष्येताम्	आर्थयिष्यन्त

॥अथ दान्तः॥

१९३३. पदणि (पद्) गतौ। ३६६

व०	पदयते	पदयेते	पदयन्ते
स०	पदयेत	पदयेयाताम्	पदयेरन्
प०	पदयताम्	पदयेताम्	पदयन्ताम्
ह्य०	अपदयत	अपदयेताम्	अपदयन्त
अ०	अपपदत	अपपदेताम्	अपपदन्त
प०	पदयाञ्चक्रे	पदयाञ्चक्राते	पदयाञ्चक्रिरे

पदयाम्बभूव/पदयामास।

आ०	पदयिषीष्ट	पदयिषीयास्ताम्	पदयिषीरन्
श्व०	पदयिता	पदयितारौ	पदयितारः
भ०	पदयिष्यते	पदयिष्येते	पदयिष्यन्ते
क्रि०	अपदयिष्यत	अपदयिष्येताम्	अपदयिष्यन्त

॥अथ मान्ताः॥

१९३४. संग्रामणि (संग्राम्) युद्धे। ३६७

व०	संग्रामयते	संग्रामयेते	संग्रामयन्ते
स०	संग्रामयेत	संग्रामयेयाताम्	संग्रामयेरन्
प०	संग्रामयताम्	संग्रामयेताम्	संग्रामयन्ताम्
ह्य०	असंग्रामयत	असंग्रामयेताम्	असंग्रामयन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	असमसंग्रामत	असमसंग्रामेताम्	असमसंग्रामन्त
प०	संग्रामयाञ्चक्रे	संग्रामयाञ्चक्राते	संग्रामयाञ्चक्रिरे
	संग्रामयाम्बभूव/संग्रामयामास।		
आ०	संग्रामयिषीष्ट	संग्रामयिषीयास्ताम्	संग्रामयिषीरन्
श्व०	संग्रामयिता	संग्रामयितारौ	संग्रामयितार:
भ०	संग्रामयिष्यते	संग्रामयिष्येते	संग्रामयिष्यन्ते
क्रि०	असंग्रामयिष्यत	असंग्रामयिष्येताम्	असंग्रामयिष्यन्त

१९३५. शूरणि (शूर्) विक्रान्तौ। ३६८

व०	शूरयते	शूरयेते	शूरयन्ते
स०	शूरयेत	शूरयेयाताम्	शूरयेरन्
प०	शूरयताम्	शूरयेताम्	शूरयन्ताम्
ह्य०	अशूरयत	अशूरयेताम्	अशूरयन्त
अ०	अशुशूरत	अशुशूरेताम्	अशुशूरन्त
प०	शूरयाञ्चक्रे	शूरयाञ्चक्राते	शूरयाञ्चक्रिरे
	शूरयाम्बभूव/शूरयामास।		
आ०	शूरयिषीष्ट	शूरयिषीयास्ताम्	शूरयिषीरन्
श्व०	शूरयिता	शूरयितारौ	शूरयितार:
भ०	शूरयिष्यते	शूरयिष्येते	शूरयिष्यन्ते
क्रि०	अशूरयिष्यत	अशूरयिष्येताम्	अशूरयिष्यन्त

१९३६. वीरणि (वीर्) विक्रान्तौ। ३६९

व०	वीरयते	वीरयेते	वीरयन्ते
स०	वीरयेत	वीरयेयाताम्	वीरयेरन्
प०	वीरयताम्	वीरयेताम्	वीरयन्ताम्
ह्य०	अवीरयत	अवीरयेताम्	अवीरयन्त
अ०	अविवीरत	अविवीरेताम्	अविवीरन्त
प०	वीरयाञ्चक्रे	वीरयाञ्चक्राते	वीरयाञ्चक्रिरे
	वीरयाम्बभूव/वीरयामास।		
आ०	वीरयिषीष्ट	वीरयिषीयास्ताम्	वीरयिषीरन्
श्व०	वीरयिता	वीरयितारौ	वीरयितार:
भ०	वीरयिष्यते	वीरयिष्येते	वीरयिष्यन्ते
क्रि०	अवीरयिष्यत	अवीरयिष्येताम्	अवीरयिष्यन्त

१९३७. सत्रणि (सत्र्) संदानक्रियायाम्। ३७०

व०	सत्रयते	सत्रयेते	सत्रयन्ते
स०	सत्रयेत	सत्रयेयाताम्	सत्रयेरन्
प०	सत्रयताम्	सत्रयेताम्	सत्रयन्ताम्
ह्य०	असत्रयत	असत्रयेताम्	असत्रयन्त
अ०	अससत्रत	अससत्रेताम्	अससत्रन्त
प०	सत्रयाञ्चक्रे	सत्रयाञ्चक्राते	सत्रयाञ्चक्रिरे
	सत्रयाम्बभूव/सत्रयामास।		
आ०	सत्रयिषीष्ट	सत्रयिषीयास्ताम्	सत्रयिषीरन्
श्व०	सत्रयिता	सत्रयितारौ	सत्रयितार:
भ०	सत्रयिष्यते	सत्रयिष्येते	सत्रयिष्यन्ते
क्रि०	असत्रयिष्यत	असत्रयिष्येताम्	असत्रयिष्यन्त

॥अथ लान्ता:॥

१९३८. स्थूलणि (स्थूल्) परिबृंहणे। परिबृंहणं पीनत्वम्। ३७१

व०	स्थूलयते	स्थूलयेते	स्थूलयन्ते
स०	स्थूलयेत	स्थूलयेयाताम्	स्थूलयेरन्
प०	स्थूलयताम्	स्थूलयेताम्	स्थूलयन्ताम्
ह्य०	अस्थूलयत	अस्थूलयेताम्	अस्थूलयन्त
अ०	अतुस्थूलत	अतुस्थूलेताम्	अतुस्थूलन्त
प०	स्थूलयाञ्चक्रे	स्थूलयाञ्चक्राते	स्थूलयाञ्चक्रिरे
	स्थूलयाम्बभूव/स्थूलयामास।		
आ०	स्थूलयिषीष्ट	स्थूलयिषीयास्ताम्	स्थूलयिषीरन्
श्व०	स्थूलयिता	स्थूलयितारौ	स्थूलयितार:
भ०	स्थूलयिष्यते	स्थूलयिष्येते	स्थूलयिष्यन्ते
क्रि०	अस्थूलयिष्यत	अस्थूलयिष्येताम्	अस्थूलयिष्यन्त

॥अथ वान्ता:॥

१९३९. गर्वणि (गर्व्) माने। ३७२

व०	गर्वयते	गर्वयेते	गर्वयन्ते
स०	गर्वयेत	गर्वयेयाताम्	गर्वयेरन्
प०	गर्वयताम्	गर्वयेताम्	गर्वयन्ताम्
ह्य०	अगर्वयत	अगर्वयेताम्	अगर्वयन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	अजगर्वत	अजगर्वेताम्	अजगर्वन्त
प०	गर्वयाञ्चक्रे	गर्वयाञ्चक्राते	गर्वयाञ्चक्रिरे
	गर्वयाम्बभूव/गर्वयामास।		
आ०	गर्वयिषीष्ट	गर्वयिषीयास्ताम्	गर्वयिषीरन्
श्व०	गर्वयिता	गर्वयितारौ	गर्वयितारः
भ०	गर्वयिष्यते	गर्वयिष्येते	गर्वयिष्यन्ते
क्रि०	अगर्वयिष्यत	अगर्वयिष्येताम्	अगर्वयिष्यन्त

।।अथ हान्ता।।

१९४०. गृहणि (गृह्) ग्रहणे। ३७३

व०	गृहयते	गृहयेते	गृहयन्ते
स०	गृहयेत	गृहयेयाताम्	गृहयेरन्
प०	गृहयताम्	गृहयेताम्	गृहयन्ताम्
ह्य०	अगृहयत	अगृहयेताम्	अगृहयन्त
अ०	अजगृहत	अजगृहेताम्	अजगृहन्त
प०	गृहयाञ्चक्रे	गृहयाञ्चक्राते	गृहयाञ्चक्रिरे
	गृहयाम्बभूव/गृहयामास।		
आ०	गृहयिषीष्ट	गृहयिषीयास्ताम्	गृहयिषीरन्
श्व०	गृहयिता	गृहयितारौ	गृहयितारः
भ०	गृहयिष्यते	गृहयिष्येते	गृहयिष्यन्ते
क्रि०	अगृहयिष्यत	अगृहयिष्येताम्	अगृहयिष्यन्त

१९४१. कुहणि (कुह्) विस्मापने। ३७४

व०	कुहयते	कुहयेते	कुहयन्ते
स०	कुहयेत	कुहयेयाताम्	कुहयेरन्
प०	कुहयताम्	कुहयेताम्	कुहयन्ताम्
ह्य०	अकुहयत	अकुहयेताम्	अकुहयन्त
अ०	अचुकुहत	अचुकुहेताम्	अचुकुहन्त
प०	कुहयाञ्चक्रे	कुहयाञ्चक्राते	कुहयाञ्चक्रिरे
	कुहयाम्बभूव/कुहयामास।		
आ०	कुहयिषीष्ट	कुहयिषीयास्ताम्	कुहयिषीरन्
श्व०	कुहयिता	कुहयितारौ	कुहयितारः
भ०	कुहयिष्यते	कुहयिष्येते	कुहयिष्यन्ते
क्रि०	अकुहयिष्यत	अकुहयिष्येताम्	अकुहयिष्यन्त

अथ विकल्पितणिचो युजादयः।

१९४२. युजण् (युज्) सम्पर्चने। ३७५

व०	योजयति	योजयतः	योजयन्ति
स०	योजयेत्	योजयेताम्	योजयेयुः
प०	योजयतु/योजयतात्	योजयताम्	योजयन्तु
ह्य०	अयोजयत्	अयोजयताम्	अयोजयन्
अ०	अयूयुजत्	अयूयुजताम्	अयूयुजन्
प०	योजयाञ्चकार	योजयाञ्चक्रतुः	योजयाञ्चक्रुः
	योजयाम्बभूव/योजयामास।		
आ०	योज्यात्	योज्यास्ताम्	योज्यासुः
श्व०	योजयिता	योजयितारौ	योजयितारः
भ०	योजयिष्यति	योजयिष्यतः	योजयिष्यन्ति
क्रि०	अयोजयिष्यत्	अयोजयिष्यताम्	अयोजयिष्यन्

पक्षे न्यार्यविकरणः शव्।

व०	योजति	योजतः	योजन्ति
स०	योजेत्	योजेताम्	योजेयुः
प०	योजतु/योजतात्	योजताम्	योजन्तु
ह्य०	अयोजत्	अयोजताम्	अयोजन्
अ०	अयोजीत्	अयोजिष्टाम्	अयोजिषुः
प०	युयोज	युयुजतुः	युयुजुः
आ०	युज्यात्	युज्यास्ताम्	युज्यासुः
श्व०	योजिता	योजितारौ	योजितारः
भ०	योजिष्यति	योजिष्यतः	योजिष्यन्ति
क्रि०	अयोजिष्यत्	अयोजिष्यताम्	अयोजिष्यन्

इह युजादीनां नियतो णिज्विकल्पश्चुरादीनां तु यथादर्शनं णिजनित्य इत्युक्तमेव।

।।अथेदन्तास्त्रयः।।

१९४३. लीण् (ली) द्रवीकरणे। ३७६

व०	लीनयति	लीनयतः	लीनयन्ति
स०	लीनयेत्	लीनयेताम्	लीनयेयुः
प०	लीनयतु/लीनयतात्	लीनयताम्	लीनयन्तु
ह्य०	अलीनयत्	अलीनयताम्	अलीनयन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	अलीलनत्	अलीलनताम्	अलीलनन्
प०	लीनयाञ्चकार	लीनयाञ्चक्रतुः	लीनयाञ्चक्रुः
	लीनयाम्बभूव/लीनयामास।		
आ०	लान्यात्	लान्यास्ताम्	लान्यासुः
श्व०	लीनयिता	लीनयितारौ	लीनयितारः
भ०	लीनयिष्यति	लीनयिष्यतः	लीनयिष्यन्ति
क्रि०	अलीनयिष्यत्	अलीनयिष्यताम्	अलीनयिष्यन्
व०	लाययति	लाययतः	लाययन्ति
स०	लाययेत्	लाययेताम्	लाययेयुः
प०	लाययतु/लाययतात्	लाययताम्	लाययन्तु
ह्य०	अलाययत्	अलाययताम्	अलाययन्
अ०	अलीलयत्	अलीलयताम्	अलीलयन्
प०	लाययाञ्चकार	लाययाञ्चक्रतुः	लाययाञ्चक्रुः
	लाययाम्बभूव/लाययामास।		
आ०	लाय्यात्	लाय्यास्ताम्	लाय्यासुः
श्व०	लाययिता	लाययितारौ	लाययितारः
भ०	लाययिष्यति	लाययिष्यतः	लाययिष्यन्ति
क्रि०	अलाययिष्यत्	अलाययिष्यताम्	अलाययिष्यन्

।।णिजभावे।।

व०	लयति	लयतः	लयन्ति
स०	लयेत्	लयेताम्	लयेयुः
प०	लयतु/लयतात्	लयताम्	लयन्तु
ह्य०	अलयत्	अलयताम्	अलयन्
अ०	अलायीत्	अलायिष्टाम्	अलायिषुः
प०	लिलाय	लिल्यतुः	लिल्युः
आ०	लीयात्	लीयास्ताम्	लीयासुः
श्व०	लयिता	लयितारौ	लयितारः
भ०	लयिष्यति	लयिष्यतः	लयिष्यन्ति
क्रि०	अलयिष्यत्	अलयिष्यताम्	अलयिष्यन्

१९४४. मीण् (मी) मतौमर्तिर्मननम्। ३७७

व०	माययति	माययतः	माययन्ति
स०	माययेत्	माययेताम्	माययेयुः
प०	माययतु/माययतात्	माययताम्	माययन्तु
ह्य०	अमाययत्	अमाययताम्	अमाययन्
अ०	अमीमयत्	अमीमयताम्	अमीमयन्
प०	माययाञ्चकार	माययाञ्चक्रतुः	माययाञ्चक्रुः
	माययाम्बभूव/माययामास।		
आ०	माय्यात्	माय्यास्ताम्	माय्यासुः
श्व०	माययिता	माययितारौ	माययितारः
भ०	माययिष्यति	माययिष्यतः	माययिष्यन्ति
क्रि०	अमाययिष्यत्	अमाययिष्यताम्	अमाययिष्यन्

।।णिजभावे।।

व०	मयति	मयतः	मयन्ति
स०	मयेत्	मयेताम्	मयेयुः
प०	मयतु/मयतात्	मयताम्	मयन्तु
ह्य०	अमयत्	अमयताम्	अमयन्
अ०	अमायीत्	अमायिष्टाम्	अमायिषुः
प०	मिमाय	मिम्यतुः	मिम्युः
आ०	मीयात्	मीयास्ताम्	मीयासुः
श्व०	मयिता	मयितारौ	मयितारः
भ०	मयिष्यति	मयिष्यतः	मयिष्यन्ति
क्रि०	अमयिष्यत्	अमयिष्यताम्	अमयिष्यन्

१९४५. प्रीगण् (प्री) तर्पणे। ३७८

व०	प्रीणयति	प्रीणयतः	प्रीणयन्ति
स०	प्रीणयेत्	प्रीणयेताम्	प्रीणयेयुः
प०	प्रीणयतु/प्रीणयतात्	प्रीणयताम्	प्रीणयन्तु
ह्य०	अप्रीणयत्	अप्रीणयताम्	अप्रीणयन्
अ०	अपिप्रिणत्	अपिप्रिणताम्	अपिप्रिणन्
प०	प्रीणयाञ्चकार	प्रीणयाञ्चक्रतुः	प्रीणयाञ्चक्रुः
	प्रीणयाम्बभूव/प्रीणयामास।		
आ०	प्रीण्यात्	प्रीण्यास्ताम्	प्रीण्यासुः
श्व०	प्रीणयिता	प्रीणयितारौ	प्रीणयितारः
भ०	प्रीणयिष्यति	प्रीणयिष्यतः	प्रीणयिष्यन्ति
क्रि०	अप्रीणयिष्यत्	अप्रीणयिष्यताम्	अप्रीणयिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राययतीति केचित्।

।।णिजभावे।।

व०	प्रयति	प्रयतः	प्रयन्ति
स०	प्रयेत्	प्रयेताम्	प्रयेयुः
प०	प्रयतु/प्रयतात्	प्रयताम्	प्रयन्तु
ह्य०	अप्रयत्	अप्रयताम्	अप्रयन्
अ०	अप्रायीत्	अप्रायिष्टाम्	अप्रायिषुः
प०	पिप्राय	पिप्रियतुः	पिप्रियुः
आ०	प्रीयात्	प्रीयास्ताम्	प्रीयासुः
श्व०	प्रयिता	प्रयितारौ	प्रयितारः
भ०	प्रयिष्यति	प्रयिष्यतः	प्रयिष्यन्ति
क्रि०	अप्रयिष्यत्	अप्रयिष्यताम्	अप्रयिष्यन्
व०	प्रयते	प्रयेते	प्रयन्ते
स०	प्रयेत	प्रयेयाताम्	प्रयेरन्
प०	प्रयताम्	प्रयेताम्	प्रयन्ताम
ह्य०	अप्रयत	अप्रयेताम्	अप्रयन्त
अ०	अप्रयिष्ट	अप्रयिषाताम्	अप्रयिषत
प०	पिप्रिये	पिप्रियाते	पिप्रियिरे
आ०	प्रयिषीष्ट	प्रयिषीयास्ताम्	प्रयिषीरन्
श्व०	प्रयिता	प्रयितारौ	प्रयितारः
भ०	प्रयिष्यते	प्रयिष्येते	प्रयिष्यन्ते
क्रि०	अप्रयिष्यत	अप्रयिष्येताम्	अप्रयिष्यन्त

।।अथ ऊदन्ताः।।

१९४६. धूगृण् (धू) कम्पने। ३७९

व०	धूनयति	धूनयतः	धूनयन्ति
स०	धूनयेत्	धूनयेताम्	धूनयेयुः
प०	धूनयतु/धूनयतात्	धूनयताम्	धूनयन्तु
ह्य०	अधूनयत्	अधूनयताम्	अधूनयन्
अ०	अदूधुनत्	अदूधुनताम्	अदूधुनन्
प०	धूनयाञ्चकार	धूनयाञ्चक्रतुः	धूनयाञ्चक्रुः
	धूनयाम्बभूव/धूनयामास।		
आ०	धून्यात्	धून्यास्ताम्	धून्यासुः
श्व०	धूनयिता	धूनयितारौ	धूनयितारः
भ०	धूनयिष्यति	धूनयिष्यतः	धूनयिष्यन्ति
क्रि०	अधूनयिष्यत्	अधूनयिष्यताम्	अधूनयिष्यन्

।।णिजभावे।।

व०	धवति	धवतः	धवन्ति
स०	धवेत्	धवेताम्	धवेयुः
प०	धवतु/धवतात्	धवताम्	धवन्तु
ह्य०	अधवत्	अधवताम्	अधवन्
अ०	अधावीत्	अधाविष्टाम्	अधाविषुः
प०	दुधाव	दुधुवतुः	दुधुवु
आ०	धूयात्	धूयास्ताम्	धूयासुः
श्व०	धविता	धवितारौ	धवितारः
भ०	धविष्यति	धविष्यतः	धविष्यन्ति
क्रि०	अधविष्यत्	अधविष्यताम्	अधविष्यन्
	अधोष्यत्	अधोष्यताम्	अधोष्यन्, इत्यादि
व०	धवते	धवेते	धवन्ते
स०	धवेत	धवेयाताम्	धवेरन्
प०	धवताम्	धवेताम्	धवन्ताम
ह्य०	अधवत	अधवेताम्	अधवन्त
अ०	अधविष्ट	अधविषाताम्	अधविषत
	अधोष्ट	अधोषाताम्	अधोषत, इत्यादि।
प०	दुधुवे	दुधुवाते	दुधुविरे
आ०	धविषीष्ट	धविषीयास्ताम्	धविषीरन्
श्व०	धविता	धवितारौ	धवितारः
	धोता	धोतारौ	धोतारः इ०
भ०	धविष्यते	धविष्येते	धविष्यन्ते
	धोष्यते	धोष्येते	धोष्यन्ते इ०
क्रि०	अधविष्यत	अधविष्येताम्	अधविष्यन्त
	अधोष्यत्	अधोष्येताम्	अधोष्यन्त इ०

।।अथ ऋदन्ताः।।

१९४७. वृग्ण् (वृ) आवरणे। ३८०

व०	वारयति	वारयतः	वारयन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स०	वारयेत्	वारयेताम्	वारयेयु:
प०	वारयतु/वारयतात्	वारयताम्	वारयन्तु
ह्य०	अवारयत्	अवारयताम्	अवारयन्
अ०	अवीवरत्	अवीवरताम्	अवीवरन्
प०	वारयाञ्चकार	वारयाञ्चक्रतु:	वारयाञ्चक्रु:
	वारयाम्बभूव/वारयामास।		
आ०	वार्यात्	वार्यास्ताम्	वार्यासु:
श्व०	वारयिता	वारयितारौ	वारयितार:
भ०	वारयिष्यति	वारयिष्यत:	वारयिष्यन्ति
क्रि०	अवारयिष्यत्	अवारयिष्यताम्	अवारयिष्यन्

॥णिजभावे॥

व०	वरति	वरत:	वरन्ति
स०	वरेत्	वरेताम्	वरेयु:
प०	वरतु/वरतात्	वरताम्	वरन्तु
ह्य०	अवरत्	अवरताम्	अवरन्
अ०	अवारीत्	अवारिष्टाम्	अवारिषु:
प०	ववार	वव्रतु:	वव्रु:
आ०	व्रियात्	व्रियास्ताम्	व्रियासु:
श्व०	वरिता	वरितारौ	वरितार:
	वरीता	वरीतारौ	वरीतार:, इत्यादि।
भ०	वरिष्यति	वरिष्यत:	वरिष्यन्ति
	वरीष्यति	वरीष्यत:	वरीष्यन्ति, इत्यादि
क्रि०	अवरिष्यत्	अवरिष्यताम्	अवरिष्यन्
	अवरीष्यत्	अवरीष्यताम्	अवरीष्यन्, इ०
व०	वरते	वरेते	वरन्ते
स०	वरेत	वरेयाताम्	वरेरन्
प०	वरताम्	वरेताम्	वरन्ताम
ह्य०	अवरत	अवरेताम्	अवरन्त
अ०	अवरिष्ट	अवरिषाताम्	अवरिषत
	अवरीष्ट	अवरीषाताम्	अवरीषत, इत्यादि
प०	वव्रे	वव्राते	वव्रिरे
आ०	वरिषीष्ट	वरिषीयास्ताम्	वरिषीरन्
श्व०	वरिता	वरितारौ	वरितार:
	वरीता	वरीतारौ	वरीतार:, इत्यादि।
भ०	वरिष्यते	वरिष्येते	वरिष्यन्ते
	वरीष्यते	वरीष्येते	वरीष्यन्ते, इत्यादि
क्रि०	अवरिष्यत	अवरिष्येताम्	अवरिष्यन्त
	अवरीष्यत्	अवरीष्येताम्	अवरीष्यन्त, इ०

॥अथ ऋदन्त:॥

१९४८. जॄ़ (जॄ) वयोहानौ। ३८१

व०	जारयति	जारयत:	जारयन्ति
स०	जारयेत्	जारयेताम्	जारयेयु:
प०	जारयतु/जारयतात्	जारयताम्	जारयन्तु
ह्य०	अजारयत्	अजारयताम्	अजारयन्
अ०	अजीजरत्	अजीजरताम्	अजीजरन्
प०	जारयाञ्चकार	जारयाञ्चक्रतु:	जारयाञ्चक्रु:
	जारयाम्बभूव/जारयामास।		
आ०	जार्यात्	जार्यास्ताम्	जार्यासु:
श्व०	जारयिता	जारयितारौ	जारयितार:
भ०	जारयिष्यति	जारयिष्यत:	जारयिष्यन्ति
क्रि०	अजारयिष्यत्	अजारयिष्यताम्	अजारयिष्यन्

॥णिजभावे॥

व०	जरति	जरत:	जरन्ति
स०	जरेत्	जरेताम्	जरेयु:
प०	जरतु/जरतात्	जरताम्	जरन्तु
ह्य०	अजरत्	अजरताम्	अजरन्
अ०	अजारीत्	अजारिष्टाम्	अजारिषु:
प०	जजार	जजरतु:/जेरतु:	जजरु:/जेरु:
आ०	जीर्यात्	जीर्यास्ताम्	जीर्यासु:
श्व०	जरिता	जरितारौ	जरितार:
	जरीता	जरीतारौ	जरीतार:, इत्यादि।
भ०	जरिष्यति	जरिष्यत:	जरिष्यन्ति
	जरीष्यति	जरीष्यत:	जरीष्यन्ति, इत्यादि
क्रि०	अजरिष्यत्	अजरिष्यताम्	अजरिष्यन्
	अजरीष्यत्	अजरीष्यताम्	अजरीष्यन्, इ०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥अथ कान्तौ॥

१९४९. चीकण् (चीक्) आमर्षणे। ३८२

व०	चीकयति	चीकयत:	चीकयन्ति
स०	चीकयेत्	चीकयेताम्	चीकयेयु:
प०	चीकयतु/चीकयतात्	चीकयताम्	चीकयन्तु
ह्य०	अचीकयत्	अचीकयताम्	अचीकयन्
अ०	अचीचिकत्	अचीचिकताम्	अचीचिकन्
प०	चीकयाञ्चकार	चीकयाञ्चक्रतु:	चीकयाञ्चक्रु:

चीकयाम्बभूव/चीकयामास।

आ०	चीक्यात्	चीक्यास्ताम्	चीक्यासु:
श्व०	चीकयिता	चीकयितारौ	चीकयितार:
भ०	चीकयिष्यति	चीकयिष्यत:	चीकयिष्यन्ति
क्रि०	अचीकयिष्यत्	अचीकयिष्यताम्	अचीकयिष्यन्

॥णिजभावे॥

व०	चीकति	चीकत:	चीकन्ति
स०	चीकेत्	चीकेताम्	चीकेयु:
प०	चीकतु/चीकतात्	चीकताम्	चीकन्तु
ह्य०	अचीकत्	अचीकताम्	अचीकन्
अ०	अचीकीत्	अचीकिष्टाम्	अचीकिषु:
प०	चिचीक	चिचीकतु:	चिचीकु:
आ०	चीक्यात्	चीक्यास्ताम्	चीक्यासु:
श्व०	चीकिता	चीकितारौ	चीकितार:
भ०	चीकिष्यति	चीकिष्यत:	चीकिष्यन्ति
क्रि०	अचीकिष्यत्	अचीकिष्यताम्	अचीकिष्यन्

१९५०. शीकण् (शीक्) आमर्षणे। ३८३

व०	शीकयति	शीकयत:	शीकयन्ति
स०	शीकयेत्	शीकयेताम्	शीकयेयु:
प०	शीकयतु/शीकयतात्	शीकयताम्	शीकयन्तु
ह्य०	अशीकयत्	अशीकयताम्	अशीकयन्
अ०	अशीशिकत्	अशीशिकताम्	अशीशिकन्
प०	शीकयाञ्चकार	शीकयाञ्चक्रतु:	शीकयाञ्चक्रु:

शीकयाम्बभूव/शीकयामास।

आ०	शीक्यात्	शीक्यास्ताम्	शीक्यासु:
श्व०	शीकयिता	शीकयितारौ	शीकयितार:
भ०	शीकयिष्यति	शीकयिष्यत:	शीकयिष्यन्ति
क्रि०	अशीकयिष्यत्	अशीकयिष्यताम्	अशीकयिष्यन्

॥णिजभावे॥

व०	शीकति	शीकत:	शीकन्ति
स०	शीकेत्	शीकेताम्	शीकेयु:
प०	शीकतु/शीकतात्	शीकताम्	शीकन्तु
ह्य०	अशीकत्	अशीकताम्	अशीकन्
अ०	अशीकीत्	अशीकिष्टाम्	अशीकिषु:
प०	शिशीक	शिशीकतु:	शिशीकु:
आ०	शीक्यात्	शीक्यास्ताम्	शीक्यासु:
श्व०	शीकिता	शीकितारौ	शीकितार:
भ०	शीकिष्यति	शीकिष्यत:	शीकिष्यन्ति
क्रि०	अशीकिष्यत्	अशीकिष्यताम्	अशीकिष्यन्

॥अथ गान्ता:॥

१९५१. मार्गण् (मार्ग्) अन्वेषणे। ३८४

व०	मार्गयति	मार्गयत:	मार्गयन्ति
स०	मार्गयेत्	मार्गयेताम्	मार्गयेयु:
प०	मार्गयतु/मार्गयतात्	मार्गयताम्	मार्गयन्तु
ह्य०	अमार्गयत्	अमार्गयताम्	अमार्गयन्
अ०	अममार्गत्	अममार्गताम्	अममार्गन्
प०	मार्गयाञ्चकार	मार्गयाञ्चक्रतु:	मार्गयाञ्चक्रु:

मार्गयाम्बभूव/मार्गयामास।

आ०	मार्ग्यात्	मार्ग्यास्ताम्	मार्ग्यासु:
श्व०	मार्गयिता	मार्गयितारौ	मार्गयितार:
भ०	मार्गयिष्यति	मार्गयिष्यत:	मार्गयिष्यन्ति
क्रि०	अमार्गयिष्यत्	अमार्गयिष्यताम्	अमार्गयिष्यन्

॥णिजभावे॥

व०	मार्गति	मार्गत:	मार्गन्ति
स०	मार्गेत्	मार्गेताम्	मार्गेयु:
प०	मार्गतु/मार्गतात्	मार्गताम्	मार्गन्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य० अमार्गत्	अमार्गताम्	अमार्गन्
अ० अमार्गीत्	अमार्गिष्टाम्	अमार्गिषुः
प० ममार्ग	ममार्गतुः	ममार्गुः
आ० मार्ग्यात्	मार्ग्यास्ताम्	मार्ग्यासुः
श्व० मार्गिता	मार्गितारौ	मार्गितारः
भ० मार्गिष्यति	मार्गिष्यतः	मार्गिष्यन्ति
क्रि० अमार्गिष्यत्	अमार्गिष्यताम्	अमार्गिष्यन्

॥अथ चान्ताश्चत्वारः॥

१९५२. पृचण् (पृच्) सम्पर्चने।

व० पर्चयति	पर्चयतः	पर्चयन्ति
स० पर्चयेत्	पर्चयेताम्	पर्चयेयुः
प० पर्चयतु/पर्चयतात्	पर्चयताम्	पर्चयन्तु
ह्य० अपर्चयत्	अपर्चयताम्	अपर्चयन्
अ० अपीपृचत्	अपीपृचताम्	अपीपृचन्
अपपर्चत्	अपपर्चताम्	अपपर्चन्, इत्यादि
प० पर्चयाञ्चकार	पर्चयाञ्चक्रतुः	पर्चयाञ्चक्रुः

पर्चयाम्बभूव/पर्चयामास।

आ० पर्च्यात्	पर्च्यास्ताम्	पर्च्यासुः
श्व० पर्चयिता	पर्चयितारौ	पर्चयितारः
भ० पर्चयिष्यति	पर्चयिष्यतः	पर्चयिष्यन्ति
क्रि० अपर्चयिष्यत्	अपर्चयिष्यताम्	अपर्चयिष्यन्

॥णिजभावे॥

व० पर्चति	पर्चतः	पर्चन्ति
स० पर्चेत्	पर्चेताम्	पर्चेयुः
प० पर्चतु/पर्चतात्	पर्चताम्	पर्चन्तु
ह्य० अपर्चत्	अपर्चताम्	अपर्चन्
अ० अपर्चीत्	अपर्चिष्टाम्	अपर्चिषुः
प० पपर्च	पपृचतुः	पपृचुः
आ० पृच्यात्	पृच्यास्ताम्	पृच्यासुः
श्व० पर्चिता	पर्चितारौ	पर्चितारः
भ० पर्चिष्यति	पर्चिष्यतः	पर्चिष्यन्ति
क्रि० अपर्चिष्यत्	अपर्चिष्यताम्	अपर्चिष्यन्

१९५३. रिचण् (रिच्) वियोजने। ३८६

व० रेचयति	रेचयतः	रेचयन्ति
स० रेचयेत्	रेचयेताम्	रेचयेयुः
प० रेचयतु/रेचयतात्	रेचयताम्	रेचयन्तु
ह्य० अरेचयत्	अरेचयताम्	अरेचयन्
अ० अरीरिचत्	अरीरिचताम्	अरीरिचन्
प० रेचयाञ्चकार	रेचयाञ्चक्रतुः	रेचयाञ्चक्रुः

रेचयाम्बभूव/रेचयामास।

आ० रेच्यात्	रेच्यास्ताम्	रेच्यासुः
श्व० रेचयिता	रेचयितारौ	रेचयितारः
भ० रेचयिष्यति	रेचयिष्यतः	रेचयिष्यन्ति
क्रि० अरेचयिष्यत्	अरेचयिष्यताम्	अरेचयिष्यन्

॥णिजभावे॥

व० रेचति	रेचतः	रेचन्ति
स० रेचेत्	रेचेताम्	रेचेयुः
प० रेचतु/रेचतात्	रेचताम्	रेचन्तु
ह्य० अरेचत्	अरेचताम्	अरेचन्
अ० अरेचीत्	अरेचिष्टाम्	अरेचिषुः
प० रिरेच	रिरिचतुः	रिरिचुः
आ० रिच्यात्	रिच्यास्ताम्	रिच्यासुः
श्व० रेचिता	रेचितारौ	रेचितारः
भ० रेचिष्यति	रेचिष्यतः	रेचिष्यन्ति
क्रि० अरेचिष्यत्	अरेचिष्यताम्	अरेचिष्यन्

१९५५. अर्चिण् (अर्च्) पूजायाम्। ३८८

व० अर्चयति	अर्चयतः	अर्चयन्ति
स० अर्चयेत्	अर्चयेताम्	अर्चयेयुः
अ० अर्चयतु/अर्चयतात्	अर्चयताम्	अर्चयन्तु
ह्य० आर्चयत्	आर्चयताम्	आर्चयन्
अ० आर्चिचत्	आर्चिचताम्	आर्चिचन्
अ० अर्चयाञ्चकार	अर्चयाञ्चक्रतुः	अर्चयाञ्चक्रुः

अर्चयाम्बभूव/अर्चयामास।

आ० अर्च्यात्	अर्च्यास्ताम्	अर्च्यासुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	अर्चयिता	अर्चयितारौ	अर्चयितार:
भ०	अर्चयिष्यति	अर्चयिष्यत:	अर्चयिष्यन्ति
क्रि०	आर्चयिष्यत्	आर्चयिष्यताम्	आर्चयिष्यन्

।।णिजभावे।।

व०	अर्चते	अर्चेते	अर्चन्ते
स०	अर्चेत	अर्चेयाताम्	अर्चेरन्
प०	अर्चताम्	अर्चेताम्	अर्चन्ताम्
ह्य०	आर्चत	आर्चेताम्	आर्चन्त
अ०	आर्चिष्ट	आर्चिषाताम्	आर्चिषत
प०	आनर्चे	आनर्चाते	आनर्चिरे
आ०	अर्चिषीष्ट	अर्चिषीयास्ताम्	अर्चिषीरन्
श्व०	अर्चिता	अर्चितारौ	अर्चितार:
भ०	अर्चिष्यते	अर्चिष्येते	अर्चिष्यन्ते
क्रि०	आर्चिष्यत	आर्चिष्येताम्	आर्चिष्यन्त

१९५४. वचण् (वच्) भाषणे ३८७

व०	वाचयति	वाचयत:	वाचयन्ति
स०	वाचयेत्	वाचयेताम्	वाचयेयु:
अ०	वाचयतु/वाचयतात्	वाचयताम्	वाचयन्तु
ह्य०	अवाचयत्	अवाचयताम्	अवाचयन्
अ०	अवीवचत्	अवीवचताम्	अवीवचन्
अ०	वाचयाञ्चकार	वाचयाञ्चक्रतु:	वाचयाञ्चक्रु:
	वाचयाम्बभूव/वाचयामास।		
आ०	वाच्यात्	वाच्यास्ताम्	वाच्यासु:
श्व०	वाचयिता	वाचयितारौ	वाचयितार:
भ०	वाचयिष्यति	वाचयिष्यत:	वाचयिष्यन्ति
क्रि०	अवाचयिष्यत्	अवाचयिष्यताम्	अवाचयिष्यन्

।।णिजभावे।।

व०	वचति	वचत:	वचन्ति
स०	वचेत्	वचेताम्	वचेयु:
अ०	वचतु/वचतात्	वचताम्	वचन्तु
ह्य०	अवचत्	अवचताम्	अवचन्
अ०	अवाचीत्	अवाचिष्टाम्	अवाचिषु:
अ०	ववाच	ववचतु:	ववचु:
आ०	वच्यात्	वच्यास्ताम्	वच्यासु:
श्व०	वचिता	वचितारौ	वचितार:
भ०	वचिष्यति	वचिष्यत:	वचिष्यन्ति
क्रि०	अवचिष्यत्	अवचिष्यताम्	अवचिष्यन्

।।अथ थान्ताश्चत्वार:।।

१९५६. श्रन्थण् (श्रन्थ्) संदर्भे।

संदर्भो बन्धनम्। ३९२

व०	श्रन्थयति	श्रन्थयत:	श्रन्थयन्ति
स०	श्रन्थयेत्	श्रन्थयेताम्	श्रन्थयेयु:
प०	श्रन्थयतु/श्रन्थयतात्	श्रन्थयताम्	श्रन्थयन्तु
ह्य०	अश्रन्थयत्	अश्रन्थयताम्	अश्रन्थयन्
अ०	अशश्रन्थत्	अशश्रन्थताम्	अशश्रन्थन्
प०	श्रन्थयाञ्चकार	श्रन्थयाञ्चक्रतु:	श्रन्थयाञ्चक्रु:
	श्रन्थयाम्बभूव/श्रन्थयामास।		
आ०	श्रन्थ्यात्	श्रन्थ्यास्ताम्	श्रन्थ्यासु:
श्व०	श्रन्थयिता	श्रन्थयितारौ	श्रन्थयितार:
भ०	श्रन्थयिष्यति	श्रन्थयिष्यत:	श्रन्थयिष्यन्ति
क्रि०	अश्रन्थयिष्यत्	अश्रन्थयिष्यताम्	अश्रन्थयिष्यन्
व०	श्रन्थति	श्रन्थत:	श्रन्थन्ति
स०	श्रन्थेत्	श्रन्थेताम्	श्रन्थेयु:
प०	श्रन्थतु/श्रन्थतात्	श्रन्थताम्	श्रन्थन्तु
ह्य०	अश्रन्थत्	अश्रन्थताम्	अश्रन्थन्
अ०	अश्रन्थीत्	अश्रन्थिष्टाम्	अश्रन्थिषु:
प०	शश्रन्थ	शश्रन्थतु:	शश्रन्थु:
आ०	श्रथ्यात्	श्रथ्यास्ताम्	श्रथ्यासु:
श्व०	श्रन्थिता	श्रन्थितारौ	श्रन्थितार:
भ०	श्रन्थिष्यति	श्रन्थिष्यत:	श्रन्थिष्यन्ति
क्रि०	अश्रन्थिष्यत्	अश्रन्थिष्यताम्	अश्रन्थिष्यन्

१९५७. मृजौण् (मृज्) शौचालङ्कारयो:। ३९०

व०	मार्जयति	मार्जयत:	मार्जयन्ति
स०	मार्जयेत्	मार्जयेताम्	मार्जयेयु:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	मार्जयतु/मार्जयतात्	मार्जयताम्	मार्जयन्तु
ह्य०	अमार्जयत्	अमार्जयताम्	अमार्जयन्
अ०	अमीमृजत्	अमीमृजताम्	अमीमृजन्
	अममार्जत्	अममार्जताम्	अममार्जन्, इ०
प०	मार्जयाञ्चकार	मार्जयाञ्चक्रतुः	मार्जयाञ्चक्रुः
	मार्जयाम्बभूव/मार्जयामास।		
आ०	मार्ज्यात्	मार्ज्यास्ताम्	मार्ज्यासुः
श्व०	मार्जयिता	मार्जयितारौ	मार्जयितारः
भ०	मार्जयिष्यति	मार्जयिष्यतः	मार्जयिष्यन्ति
क्रि०	अमार्जयिष्यत्	अमार्जयिष्यताम्	अमार्जयिष्यन्

॥णिजभावे॥

व०	मार्जति	मार्जतः	मार्जन्ति
स०	मार्जेत्	मार्जेताम्	मार्जेयुः
प०	मार्जतु/मार्जतात्	मार्जताम्	मार्जन्तु
ह्य०	अमार्जत्	अमार्जताम्	अमार्जन्
अ०	अमार्जीत्	अमार्जिष्टाम्	अमार्जिषुः
	अमार्क्षीत्	अमार्ष्टाम्	अमार्क्षुः, इत्यादि।
प०	ममार्ज	ममार्जतुः/ममृजतुः	ममार्जुः/ममृजुः
आ०	मृज्यात्	मृज्यास्ताम्	मृज्यासुः
श्व०	मार्जिता	मार्जितारौ	मार्जितारः
	मार्ष्टा	मार्ष्टारौ	मार्ष्टारः इ०
भ०	मार्जिष्यति	मार्जिष्यतः	मार्जिष्यन्ति
	मार्क्ष्यति	मार्क्ष्यतः	मार्क्ष्यन्ति इ०
क्रि०	अमार्जिष्यत्	अमार्जिष्यताम्	अमार्जिष्यन्
	अमार्क्ष्यत्	अमार्क्ष्यताम्	अमार्क्ष्यन् इ०

॥अथ ठान्ताः॥

१९५८. कठुण् (कण्ठ्) शोके। ३९१

व०	कण्ठयति	कण्ठयतः	कण्ठयन्ति
स०	कण्ठयेत्	कण्ठयेताम्	कण्ठयेयुः
प०	कण्ठयतु/कण्ठयतात्	कण्ठयताम्	कण्ठयन्तु
ह्य०	अकण्ठयत्	अकण्ठयताम्	अकण्ठयन्
अ०	अचकण्ठत्	अचकण्ठताम्	अचकण्ठन्
प०	कण्ठयाञ्चकार	कण्ठयाञ्चक्रतुः	कण्ठयाञ्चक्रुः
	कण्ठयाम्बभूव/कण्ठयामास।		
आ०	कण्ठ्यात्	कण्ठ्यास्ताम्	कण्ठ्यासुः
श्व०	कण्ठयिता	कण्ठयितारौ	कण्ठयितारः
भ०	कण्ठयिष्यति	कण्ठयिष्यतः	कण्ठयिष्यन्ति
क्रि०	अकण्ठयिष्यत्	अकण्ठयिष्यताम्	अकण्ठयिष्यन्
व०	कण्ठति	कण्ठतः	कण्ठन्ति
स०	कण्ठेत्	कण्ठेताम्	कण्ठेयुः
प०	कण्ठतु/कण्ठतात्	कण्ठताम्	कण्ठन्तु
ह्य०	अकण्ठत्	अकण्ठताम्	अकण्ठन्
अ०	अकण्ठीत्	अकण्ठिष्टाम्	अकण्ठिषुः
प०	चकण्ठ	चकण्ठतुः	चकण्ठुः
आ०	कण्ठ्यात्	कण्ठ्यास्ताम्	कण्ठ्यासुः
श्व०	कण्ठिता	कण्ठितारौ	कण्ठितारः
भ०	कण्ठिष्यति	कण्ठिष्यतः	कण्ठिष्यन्ति
क्रि०	अकण्ठिष्यत्	अकण्ठिष्यताम्	अकण्ठिष्यन्

॥अथ जान्तौ॥

१९५९. वृजैण् (वृज्) वर्जने। ३८९

व०	वर्जयति	वर्जयतः	वर्जयन्ति
स०	वर्जयेत्	वर्जयेताम्	वर्जयेयुः
प०	वर्जयतु/वर्जयतात्	वर्जयताम्	वर्जयन्तु
ह्य०	अवर्जयत्	अवर्जयताम्	अवर्जयन्
अ०	अवीवृजत्	अवीवृजताम्	अवीवृजन्
प०	वर्जयाञ्चकार	वर्जयाञ्चक्रतुः	वर्जयाञ्चक्रुः
	वर्जयाम्बभूव/वर्जयामास।		
आ०	वर्ज्यात्	वर्ज्यास्ताम्	वर्ज्यासुः
श्व०	वर्जयिता	वर्जयितारौ	वर्जयितारः
भ०	वर्जयिष्यति	वर्जयिष्यतः	वर्जयिष्यन्ति
क्रि०	अवर्जयिष्यत्	अवर्जयिष्यताम्	अवर्जयिष्यन्

॥णिजभावे॥

व०	वर्जति	वर्जतः	वर्जन्ति
स०	वर्जेत्	वर्जेताम्	वर्जेयुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	वर्जतु/वर्जतात्	वर्जताम्	वर्जन्तु
ह्य०	अवर्जत्	अवर्जताम्	अवर्जन्
अ०	अवर्जीत्	अवर्जिष्टाम्	अवर्जिषुः
प०	ववर्ज	ववृजतुः	ववृजुः
आ०	वृज्यात्	वृज्यास्ताम्	वृज्यासुः
श्व०	वर्जिता	वर्जितारौ	वर्जितारः
भ०	वर्जिष्यति	वर्जिष्यतः	वर्जिष्यन्ति
क्रि०	अवर्जिष्यत्	अवर्जिष्यताम्	अवर्जिष्यन्

१९६०. ग्रन्थण् (ग्रन्थ्) संदर्भे।

संदर्भो बन्धनम्। ३९३

व०	ग्रन्थयति	ग्रन्थयतः	ग्रन्थयन्ति
स०	ग्रन्थयेत्	ग्रन्थयेताम्	ग्रन्थयेयुः
प०	ग्रन्थयतु/ग्रन्थयतात्	ग्रन्थयताम्	ग्रन्थयन्तु
ह्य०	अग्रन्थयत्	अग्रन्थयताम्	अग्रन्थयन्
अ०	अजग्रन्थत्	अजग्रन्थताम्	अजग्रन्थन्
प०	ग्रन्थयाञ्चकार	ग्रन्थयाञ्चक्रतुः	ग्रन्थयाञ्चक्रुः
	ग्रन्थयाम्बभूव/ग्रन्थयामास।		
आ०	ग्रन्थ्यात्	ग्रन्थ्यास्ताम्	ग्रन्थ्यासुः
श्व०	ग्रन्थयिता	ग्रन्थयितारौ	ग्रन्थयितारः
भ०	ग्रन्थयिष्यति	ग्रन्थयिष्यतः	ग्रन्थयिष्यन्ति
क्रि०	अग्रन्थयिष्यत्	अग्रन्थयिष्यताम्	अग्रन्थयिष्यन्
व०	ग्रन्थति	ग्रन्थतः	ग्रन्थन्ति
स०	ग्रन्थेत्	ग्रन्थेताम्	ग्रन्थेयुः
प०	ग्रन्थतु/ग्रन्थतात्	ग्रन्थताम्	ग्रन्थन्तु
ह्य०	अग्रन्थत्	अग्रन्थताम्	अग्रन्थन्
अ०	अग्रन्थीत्	अग्रन्थिष्टाम्	अग्रन्थिषुः
प०	जग्रन्थ	जग्रन्थतुः	जग्रन्थुः
आ०	ग्रथ्यात्	ग्रथ्यास्ताम्	ग्रथ्यासुः
श्व०	ग्रन्थिता	ग्रन्थितारौ	ग्रन्थितारः
भ०	ग्रन्थिष्यति	ग्रन्थिष्यतः	ग्रन्थिष्यन्ति
क्रि०	अग्रन्थिष्यत्	अग्रन्थिष्यताम्	अग्रन्थिष्यन्

१९६१. क्रथणि (क्रथ्) हिंसायाम्। ३९४

व०	क्राथयति	क्राथयतः	क्राथयन्ति
स०	क्राथयेत्	क्राथयेताम्	क्राथयेयुः
प०	क्राथयतु/क्राथयतात्	क्राथयताम्	क्राथयन्तु
ह्य०	अक्राथयत्	अक्राथयताम्	अक्राथयन्
अ०	अचिक्रथत्	अचिक्रथताम्	अचिक्रथन्
प०	क्राथयाञ्चकार	क्राथयाञ्चक्रतुः	क्राथयाञ्चक्रुः
	क्राथयाम्बभूव/क्राथयामास।		
आ०	क्राथ्यात्	क्राथ्यास्ताम्	क्राथ्यासुः
श्व०	क्राथयिता	क्राथयितारौ	क्राथयितारः
भ०	क्राथयिष्यति	क्राथयिष्यतः	क्राथयिष्यन्ति
क्रि०	अक्राथयिष्यत्	अक्राथयिष्यताम्	अक्राथयिष्यन्

।।णिजभावे।।

व०	क्रथते	क्रथेते	क्रथन्ते
स०	क्रथेत	क्रथेयाताम्	क्रथेरन्
प०	क्रथताम्	क्रथेताम्	क्रथन्ताम्
ह्य०	अक्रथत	अक्रथेताम्	अक्रथन्त
अ०	अक्रथिष्ट	अक्रथिषाताम्	अक्रथिषत्
प०	चक्रथे	चक्रथाते	चक्रथिरे
आ०	क्रथिषीष्ट	क्रथिषीयास्ताम्	क्रथिषीरन्
श्व०	क्रथिता	क्रथितारौ	क्रथितारः
भ०	क्रथिष्यते	क्रथिष्येते	क्रथिष्यन्ते
क्रि०	अक्रथिष्यत	अक्रथिष्येताम्	अक्रथिष्यन्त

अथ लाघवार्थं थान्तमध्ये एवार्थानुगुण्येन दान्ताः।

१९६२. अर्दिण् (अर्द्) हिंसायाम्। ३९५

व०	अर्दयति	अर्दयतः	अर्दयन्ति
स०	अर्दयेत्	अर्दयेताम्	अर्दयेयुः
अ०	अर्दयतु/अर्दयतात्	अर्दयताम्	अर्दयन्तु
ह्य०	आर्दयत्	आर्दयताम्	आर्दयन्
अ०	आर्दिदत्	आर्दिदताम्	आर्दिदन्
अ०	अर्दयाञ्चकार	अर्दयाञ्चक्रतुः	अर्दयाञ्चक्रुः
	अर्दयाम्बभूव/अर्दयामास।		
आ०	अर्द्यात्	अर्द्यास्ताम्	अर्द्यासुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	अर्दयिता	अर्दयितारौ	अर्दयितार:
भ०	अर्दयिष्यति	अर्दयिष्यत:	अर्दयिष्यन्ति
क्रि०	आर्दयिष्यत्	आर्दयिष्यताम्	आर्दयिष्यन्

॥णिजभावे॥

व०	अर्दते	अर्देते	अर्दन्ते
स०	अर्देत	अर्देयाताम्	अर्देरन्
प०	अर्दताम्	अर्देताम्	अर्दन्ताम्
ह्य०	आर्दत	आर्देताम्	आर्दन्त
अ०	आर्दिष्ट	आर्दिषाताम्	आर्दिषत
प०	आनर्दे	आनर्दाते	आनर्दिरे
आ०	अर्दिषीष्ट	अर्दिषीयास्ताम्	अर्दिषीरन्
श्व०	अर्दिता	अर्दितारौ	अर्दितार:
भ०	अर्दिष्यते	अर्दिष्येते	अर्दिष्यन्ते
क्रि०	आर्दिष्यत	आर्दिष्येताम्	आर्दिष्यन्त

१९६३. श्राथण् (श्राथ्) संदर्भे। संदर्भो बन्धनम्। ३९२

व०	श्राथयति	श्राथयत:	श्राथयन्ति
स०	श्राथयेत्	श्राथयेताम्	श्राथयेयु:
प०	श्राथयतु/श्राथयतात्	श्राथयताम्	श्राथयन्तु
ह्य०	अश्राथयत्	अश्राथयताम्	अश्राथयन्
अ०	अशिश्रथत्	अशिश्रथताम्	अशिश्रथन्
प०	श्राथयाञ्चकार	श्राथयाञ्चक्रतु:	श्राथयाञ्चक्रु:
	श्राथयाम्बभूव/श्राथयामास।		
आ०	श्राथ्यात्	श्राथ्यास्ताम्	श्राथ्यासु:
श्व०	श्राथयिता	श्राथयितारौ	श्राथयितार:
भ०	श्राथयिष्यति	श्राथयिष्यत:	श्राथयिष्यन्ति
क्रि०	अश्राथयिष्यत्	अश्राथयिष्यताम्	अश्राथयिष्यन्
व०	श्रथति	श्रथत:	श्रथन्ति
स०	श्रथेत्	श्रथेताम्	श्रथेयु:
प०	श्रथतु/श्रथतात्	श्रथताम्	श्रथन्तु
ह्य०	अश्रथत्	अश्रथताम्	अश्रथन्
अ०	अश्राथीत्	अश्राथिष्टाम्	अश्राथिषु:
	अश्रथीत्	अश्रथिष्टाम्	अश्रथिषु:, इ०
प०	शश्राथ	शश्रथतु:	शश्रथु:
आ०	श्रथ्यात्	श्रथ्यास्ताम्	श्रथ्यासु:
श्व०	श्रथिता	श्रथितारौ	श्रथितार:
भ०	श्रथिष्यति	श्रथिष्यत:	श्रथिष्यन्ति
क्रि०	अश्रथिष्यत्	अश्रथिष्यताम्	अश्रथिष्यन्

॥अथ दान्ताश्चत्वार:॥

१९६४. वदिण् (वद्) भाषणे। ३९७

व०	वादयति	वादयत:	वादयन्ति
स०	वादयेत्	वादयेताम्	वादयेयु:
अ०	वादयतु/वादयतात्	वादयताम्	वादयन्तु
ह्य०	अवादयत्	अवादयताम्	अवादयन्
अ०	अवीवदत्	अवीवदताम्	अवीवदन्
अ०	वादयाञ्चकार	वादयाञ्चक्रतु:	वादयाञ्चक्रु:
	वादयाम्बभूव/वादयामास।		
आ०	वाद्यात्	वाद्यास्ताम्	वाद्यासु:
श्व०	वादयिता	वादयितारौ	वादयितार:
भ०	वादयिष्यति	वादयिष्यत:	वादयिष्यन्ति
क्रि०	अवादयिष्यत्	अवादयिष्यताम्	अवादयिष्यन्

॥णिजभावे॥

व०	वदते	वदेते	वदन्ते
स०	वदेत	वदेयाताम्	वदेरन्
प०	वदताम्	वदेताम्	वदन्ताम्
ह्य०	अवदत	अवदेताम्	अवदन्त
अ०	अवदिष्ट	अवदिषाताम्	अवदिषत्
प०	ववदे	ववदाते	ववदिरे
आ०	वदिषीष्ट	वदिषीयास्ताम्	वदिषीरन्
श्व०	वदिता	वदितारौ	वदितार:
भ०	वदिष्यते	वदिष्येते	वदिष्यन्ते
क्रि०	अवदिष्यत	अवदिष्येताम्	अवदिष्यन्त

१८६५. छदण् (छद्) अपवारणे। ३९८

व०	छादयति	छादयत:	छादयन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स०	छादयेत्	छादयेताम्	छादयेयुः
प०	छादयतु/छादयतात्	छादयताम्	छादयन्तु
ह्य०	अच्छादयत्	अच्छादयताम्	अच्छादयन्
अ०	अचिच्छदत्	अचिच्छदताम्	अचिच्छदन्
प०	छादयाञ्चकार	छादयाञ्चक्रतुः	छादयाञ्चक्रुः
	छादयाम्बभूव/छादयामास।		
आ०	छाद्यात्	छाद्यास्ताम्	छाद्यासुः
श्व०	छादयिता	छादयितारौ	छादयितारः
भ०	छादयिष्यति	छादयिष्यतः	छादयिष्यन्ति
क्रि०	अच्छादयिष्यत्	अच्छादयिष्यताम्	अच्छादयिष्यन्
व०	छदति	छदतः	छदन्ति
स०	छदेत्	छदेताम्	छदेयुः
प०	छदतु/छदतात्	छदताम्	छदन्तु
ह्य०	अच्छदत्	अच्छदताम्	अच्छदन्
अ०	अच्छादीत्	अच्छादिष्टाम्	अच्छादिषुः
	अच्छदीत्	अच्छदिष्टाम्	अच्छदिषुः,इत्यादि
प०	चच्छाद	चच्छदतुः	चच्छदुः
आ०	छद्यात्	छद्यास्ताम्	छद्यासुः
श्व०	छदिता	छदितारौ	छदितारः
भ०	छदिष्यति	छदिष्यतः	छदिष्यन्ति
क्रि०	अच्छदिष्यत्	अच्छदिष्यताम्	अच्छदिष्यन्

१९६६. आङ:सदण् (आ-सद्) गतौ। ३९९

व०	सादयति	सादयतः	सादयन्ति
स०	सादयेत्	सादयेताम्	सादयेयुः
प०	सादयतु/सादयतात्	सादयताम्	सादयन्तु
ह्य०	असादयत्	असादयताम्	असादयन्
अ०	असीसदत्	असीसदताम्	असीसदन्
प०	सादयाञ्चकार	सादयाञ्चक्रतुः	सादयाञ्चक्रुः
	सादयाम्बभूव/सादयामास।		
आ०	साद्यात्	साद्यास्ताम्	साद्यासुः
श्व०	सादयिता	सादयितारौ	सादयितारः
भ०	सादयिष्यति	सादयिष्यतः	सादयिष्यन्ति
क्रि०	असादयिष्यत्	असादयिष्यताम्	असादयिष्यन्
व०	आसीदति	आसीदतः	आसीदन्ति
स०	आसीदेत्	आसीदेताम्	आसीदेयुः
प०	आसीदतु/आसीदतात्	आसीदताम्	आसीदन्तु
ह्य०	आसीदत्	आसीदताम्	आसीदन्
अ०	आसादीत्	आसादिष्टाम्	आसादिषुः
	आसदीत्	आसदिष्टाम्	आसदिषुः, इ०।
प०	आससाद	आसेदतुः	आसेदुः
आ०	आसद्यात्	आसद्यास्ताम्	आसद्यासुः
श्व०	आसदिता	आसदितारौ	आसदितारः
भ०	आसदिष्यति	आसदिष्यतः	आसदिष्यन्ति
क्रि०	आसदिष्यत्	आसदिष्यताम्	आसदिष्यन्

१९६७. छृदण् (छृद) संदीपने। ४००

व०	छर्दयति	छर्दयतः	छर्दयन्ति
स०	छर्दयेत्	छर्दयेताम्	छर्दयेयुः
प०	छर्दयतु/छर्दयतात्	छर्दयताम्	छर्दयन्तु
ह्य०	अच्छर्दयत्	अच्छर्दयताम्	अच्छर्दयन्
अ०	अचच्छर्दत्	अचच्छर्दताम्	अचच्छर्दन्
प०	छर्दयाञ्चकार	छर्दयाञ्चक्रतुः	छर्दयाञ्चक्रुः
	छर्दयाम्बभूव/छर्दयामास।		
आ०	छर्द्यात्	छर्द्यास्ताम्	छर्द्यासुः
श्व०	छर्दयिता	छर्दयितारौ	छर्दयितारः
भ०	छर्दयिष्यति	छर्दयिष्यतः	छर्दयिष्यन्ति
क्रि०	अच्छर्दयिष्यत्	अच्छर्दयिष्यताभ्	अच्छर्दयिष्यन्

।।णिजभावे।।

व०	छर्दति	छर्दतः	छर्दन्ति
स०	छर्देत्	छर्देताम्	छर्देयुः
प०	छर्दतु/छर्दतात्	छर्दताम्	छर्दन्तु
ह्य०	अच्छर्दत्	अच्छर्दताम्	अच्छर्दन्
अ०	अच्छर्दीत्	अच्छर्दिष्टाम्	अच्छर्दिषुः
प०	चच्छर्द	चच्छृदतुः	चच्छृदुः
आ०	छृद्यात्	छृद्यास्ताम्	छृद्यासुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्व०	छर्दिता	छर्दितारौ	छर्दितार:
भ०	छर्दिष्यति	छर्दिष्यत:	छर्दिष्यन्ति
क्रि०	अच्छर्दिष्यत्	अच्छर्दिष्यताम्	अच्छर्दिष्यन्

कृतचृतेत्यत्र तृदसाहचर्येण रुधादेरेव ग्रहणात्
सादाविड्विकल्पभावेन, छर्दिष्यति।

।।अथ धान्त:।।

१९६८. शुन्धिण् (शुन्ध्) शुद्धौ। ४०१

व०	शुन्धयति	शुन्धयत:	शुन्धयन्ति
स०	शुन्धयेत्	शुन्धयेताम्	शुन्धयेयु:
अ०	शुन्धयतु/शुन्धयतात्	शुन्धयताम्	शुन्धयन्तु
ह्य०	अशुन्धयत्	अशुन्धयताम्	अशुन्धयन्
अ०	अशुशुन्धत्	अशुशुन्धताम्	अशुशुन्धन्
अ०	शुन्धयाञ्चकार	शुन्धयाञ्चक्रतु:	शुन्धयाञ्चक्रु:
	शुन्धयाम्बभूव/शुन्धयामास।		
आ०	शुन्ध्यात्	शुन्ध्यास्ताम्	शुन्ध्यासु:
श्व०	शुन्धयिता	शुन्धयितारौ	शुन्धयितार:
भ०	शुन्धयिष्यति	शुन्धयिष्यत:	शुन्धयिष्यन्ति
क्रि०	अशुन्धयिष्यत्	अशुन्धयिष्यताम्	अशुन्धयिष्यन्

।।णिजभावे।।

व०	शुन्धते	शुन्धेते	शुन्धन्ते
स०	शुन्धेत	शुन्धेयाताम्	शुन्धेरन्
प०	शुन्धताम्	शुन्धेताम्	शुन्धन्ताम्
ह्य०	अशुन्धत	अशुन्धेताम्	अशुन्धन्त
अ०	अशुन्धिष्ट	अशुन्धिषाताम्	अशुन्धिषत्
प०	शुशुन्धे	शुशुन्धाते	शुशुन्धिरे
आ०	शुन्धिषीष्ट	शुन्धिषीयास्ताम्	शुन्धिषीरन्
श्व०	शुन्धिता	शुन्धितारौ	शुन्धितार:
भ०	शुन्धिष्यते	शुन्धिष्येते	शुन्धिष्यन्ते
क्रि०	अशुन्धिष्यत	अशुन्धिष्येताम्	अशुन्धिष्यन्त

।।अथ नान्तौ।।

१९६९. तनूण् (तन्) श्रद्धाघाते। ४०२

व०	तानयति	तानयत:	तानयन्ति
स०	तानयेत्	तानयेताम्	तानयेयु:
प०	तानयतु/तानयतात्	तानयताम्	तानयन्तु
ह्य०	अतानयत्	अतानयताम्	अतानयन्
अ०	अतीतनत्	अतीतनताम्	अतीतनन्
प०	तानयाञ्चकार	तानयाञ्चक्रतु:	तानयाञ्चक्रु:
	तानयाम्बभूव/तानयामास।		
आ०	तान्यात्	तान्यास्ताम्	तान्यासु:
श्व०	तानयिता	तानयितारौ	तानयितार:
भ०	तानयिष्यति	तानयिष्यत:	तानयिष्यन्ति
क्रि०	अतानयिष्यत्	अतानयिष्यताम्	अतानयिष्यन्

वन श्रद्धोपहिंसनयोरिति चान्द्रं पारायणम।

व०	तनति	तनत:	तनन्ति
स०	तनेत्	तनेताम्	तनेयु:
प०	तनतु/तनतात्	तनताम्	तनन्तु
ह्य०	अतनत्	अतनताम्	अतणन्
अ०	अतानीत्	अतानिष्टाम्	अतानिषु:
	अतनीत्	अतनिष्टाम्	अतनिषु:, इत्यादि
प०	ततान	तेनतु:	तेनु:
आ०	तन्यात्	तन्यास्ताम्	तन्यासु:
श्व०	तनिता	तनितारौ	तनितार:
भ०	तनिष्यति	तनिष्यत:	तनिष्यन्ति
क्रि०	अतनिष्यत्	अतनिष्यताम्	अतनिष्यन्

१९७०. मानण् (मान्) पूजायाम्। ४०३

व०	मानयति	मानयत:	मानयन्ति
स०	मानयेत्	मानयेताम्	मानयेयु:
प०	मानयतु/मानयतात्	मानयताम्	मानयन्तु
ह्य०	अमानयत्	अमानयताम्	अमानयन्
अ०	अमीमनत्	अमीमनताम्	अमीमनन्
प०	मानयाञ्चकार	मानयाञ्चक्रतु:	मानयाञ्चक्रु:
	मानयाम्बभूव/मानयामास।		
आ०	मान्यात्	मान्यास्ताम्	मान्यासु:
श्व०	मानयिता	मानयितारौ	मानयितार:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	मानयिष्यति	मानयिष्यतः	मानयिष्यन्ति
क्रि०	अमानयिष्यत्	अमानयिष्यताम्	अमानयिष्यन्

।।णिजभावे।।

व०	मानति	मानतः	मानन्ति
स०	मानेत्	मानेताम्	मानेयुः
प०	मानतु/मानतात्	मानताम्	मानन्तु
ह्य०	अमानत्	अमानताम्	अमाणन्
अ०	अमानीत्	अतानिष्टाम्	अतानिषुः
	अमानीत्	अमानिष्टाम्	अमानिषुः, इत्यादि
प०	ममान	ममानतुः	ममानुः
आ०	मान्यात्	मान्यास्ताम्	मान्यासुः
श्व०	मानिता	मानितारौ	मानितारः
भ०	मानिष्यति	मानिष्यतः	मानिष्यन्ति
क्रि०	अमानिष्यत्	अमानिष्यताम्	अमानिष्यन्

।।अथ पान्तास्त्रयः।।

१९७१. तपिण् (तप्) दाहे। ४०४

व०	तापयति	तापयतः	तापयन्ति
स०	तापयेत्	तापयेताम्	तापयेयुः
अ०	तापयतु/तापयतात्	तापयताम्	तापयन्तु
ह्य०	अतापयत्	अतापयताम्	अतापयन्
अ०	अतीतपत्	अतीतपताम्	अतीतपन्
अ०	तापयाञ्चकार	तापयाञ्चक्रतुः	तापयाञ्चक्रुः
	तापयाम्बभूव/तापयामास।		
आ०	ताप्यात्	ताप्यास्ताम्	ताप्यासुः
श्व०	तापयिता	तापयितारौ	तापयितारः
भ०	तापयिष्यति	तापयिष्यतः	तापयिष्यन्ति
क्रि०	अतापयिष्यत्	अतापयिष्यताम्	अतापयिष्यन्

।।णिजभावे।।

व०	तपते	तपेते	तपन्ते
स०	तपेत	तपेयाताम्	तपेरन्
प०	तपताम्	तपेताम्	तपन्ताम्
ह्य०	अतपत	अतपेताम्	अतपन्त
अ०	अतपिष्ट	अतपिषाताम्	अतपिषत्
प०	तेपे	तेपाते	तेपिरे
आ०	तपिषीष्ट	तपिषीयास्ताम्	तपिषीरन्
श्व०	तपिता	तपितारौ	तपितारः
भ०	तपिष्यते	तपिष्येते	तपिष्यन्ते
क्रि०	अतपिष्यत	अतपिष्येताम्	अतपिष्यन्त

१९७२. तर्पण् (तृप्) प्रीणने। ४०५

व०	तर्पयति	तर्पयतः	तर्पयन्ति
स०	तर्पयेत्	तर्पयेताम्	तर्पयेयुः
प०	तर्पयतु/तर्पयतात्	तर्पयताम्	तर्पयन्तु
ह्य०	अतर्पयत्	अतर्पयताम्	अतर्पयन्
अ०	अतीतृपत्	अतीतृपताम्	अतीतृपन्
	अततर्पत्	अततर्पताम्	अततर्पन् इ०
प०	तर्पयाञ्चकार	तर्पयाञ्चक्रतुः	तर्पयाञ्चक्रुः
	तर्पयाम्बभूव/तर्पयामास।		
आ०	तर्प्यात्	तर्प्यास्ताम्	तर्प्यासुः
श्व०	तर्पयिता	तर्पयितारौ	तर्पयितारः
भ०	तर्पयिष्यति	तर्पयिष्यतः	तर्पयिष्यन्ति
क्रि०	अतर्पयिष्यत्	अतर्पयिष्यताम्	अतर्पयिष्यन्

।।णिजभावे।।

व०	तर्पति	तर्पतः	तर्पन्ति
स०	तर्पेत्	तर्पेताम्	तर्पेयुः
प०	तर्पतु/तर्पतात्	तर्पताम्	तर्पन्तु
ह्य०	अतर्पत्	अतर्पताम्	अतर्पन्
अ०	अतर्पीत्	अतर्पिष्टाम्	अतर्पिषुः
प०	ततर्प	ततृपतुः	ततृपुः
आ०	तृप्यात्	तृप्यास्ताम्	तृप्यासुः
श्व०	तर्पिता	तर्पितारौ	तर्पितारः
भ०	तर्पिष्यति	तर्पिष्यतः	तर्पिष्यन्ति
क्रि०	अतर्पिष्यत्	अतर्पिष्यताम्	अतर्पिष्यन्

१९७२. आप्लृण् (आप्) लम्भने।

लम्भनं प्राप्तिः। ४०६

व०	आपयति	आपयतः	आपयन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स० आपयेत्	आपयेताम्	आपयेयुः
अ० आपयतु/आपयतात्	आपयताम्	आपयन्तु
ह्य० आपयत्	आपयताम्	आपयन्
अ० आपिपत्	आपिपताम्	आपिपन्
अ० आपयाञ्चकार	आपयाञ्चक्रतुः	आपयाञ्चक्रुः

आपयाम्बभूव/आपयामास।

आ० आप्यात्	आप्यास्ताम्	आप्यासुः
श्व० आपयिता	आपयितारौ	आपयितारः
भ० आपयिष्यति	आपयिष्यतः	आपयिष्यन्ति
क्रि० आपयिष्यत्	आपयिष्यताम्	आपयिष्यन्

।।णिजभावे।।

व० आपति	आपतः	आपन्ति
स० आपेत्	आपेताम्	आपेयुः
प० आपतु/आपतात्	आपताम्	आपन्तु
ह्य० आपत्	आपताम्	आपन्
अ० आपत्	आपताम्	आपन्
प० आप	आपतुः	आपुः
आ० आप्यात्	आप्यास्ताम्	आप्यासुः
श्व० आपिता	आपितारौ	आपितारः
भ० आपिष्यति	आपिष्यतः	आपिष्यन्ति
क्रि० आपिष्यत्	आपिष्यताम्	आपिष्यन्

।।अथ भान्ताः।।

१९७४. दृभैत् (दृभ्) भये। ४०७

व० दर्भयति	दर्भयतः	दर्भयन्ति
स० दर्भयेत्	दर्भयेताम्	दर्भयेयुः
प० दर्भयतु/दर्भयतात्	दर्भयताम्	दर्भयन्तु
ह्य० अदर्भयत्	अदर्भयताम्	अदर्भयन्
अ० अदीदृभत्	अदीदृभताम्	अदीदृभन्
अददर्भत्	अददर्भताम्	अददर्भन् इ०
प० दर्भयाञ्चकार	दर्भयाञ्चक्रतुः	दर्भयाञ्चक्रुः

दर्भयाम्बभूव/दर्भयामास।

आ० दर्भ्यात्	दर्भ्यास्ताम्	दर्भ्यासुः
श्व० दर्भयिता	दर्भयितारौ	दर्भयितारः
भ० दर्भयिष्यति	दर्भयिष्यतः	दर्भयिष्यन्ति
क्रि० अदर्भयिष्यत्	अदर्भयिष्यताम्	अदर्भयिष्यन्

।।णिजभावे।।

व० दर्भति	दर्भतः	दर्भन्ति
स० दर्भेत्	दर्भेताम्	दर्भेयुः
प० दर्भतु/दर्भतात्	दर्भताम्	दर्भन्तु
ह्य० अदर्भत्	अदर्भताम्	अदर्भन्
अ० अदर्भीत्	अदर्भिष्टाम्	अदर्भिषुः
प० ददर्भ	ददृभतुः	ततृपुः
आ० दृभ्यात्	दृभ्यास्ताम्	दृभ्यासुः
श्व० दर्भिता	दर्भितारौ	दर्भितारः
भ० दर्भिष्यति	दर्भिष्यतः	दर्भिष्यन्ति
क्रि० अदर्भिष्यत्	अदर्भिष्यताम्	अदर्भिष्यन्

।।अथ रान्ताः।।

१९७५. ईरण् (ईर्) क्षेपे। ४०८

व० ईरयति	ईरयतः	ईरयन्ति
स० ईरयेत्	ईरयेताम्	ईरयेयुः
प० ईरयतु/ईरयतात्	ईरयताम्	ईरयन्तु
ह्य० ऐरयत्	ऐरयताम्	ऐरयन्
अ० ऐरिरत्	ऐरिरताम्	ऐरिरन्
प० ईरयाञ्चकार	ईरयाञ्चक्रतुः	ईरयाञ्चक्रुः

ईरयाम्बभूव/ईरयामास।

आ० ईर्यात्	ईर्यास्ताम्	ईर्यासुः
श्व० ईरयिता	ईरयितारौ	ईरयितारः
भ० ईरयिष्यति	ईरयिष्यतः	ईरयिष्यन्ति
क्रि० ऐरयिष्यत्	ऐरयिष्यताम्	ऐरयिष्यन्

।।णिजभावे।।

व० ईरति	ईरतः	ईरन्ति
स० ईरेत्	ईरेताम्	ईरेयुः
प० ईरतु/ईरतात्	ईरताम्	ईरन्तु
ह्य० ऐरत्	ऐरताम्	ऐरन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	ऐरीत्	ऐरिष्टाम्	ऐरिषुः
	ऐरीत्	अमानिष्टाम्	अमानिषुः, इत्यादि
प०	ईराञ्चकार	ईराञ्चक्रतुः	ईराञ्चक्रुः
	ईराम्बभूव/ईरामास।		
आ०	ईर्यात्	ईर्यास्ताम्	ईर्यासुः
श्व०	ईरिता	ईरितारौ	ईरितारः
भ०	ईरिष्यति	ईरिष्यतः	ईरिष्यन्ति
क्रि०	ऐरिष्यत्	ऐरिष्यताम्	ऐरिष्यन्

॥अथ षान्ताश्चत्वारः॥

१९७६. मृषिण् (मृष्) तितिक्षायाम्। ४०९

व०	मर्षयति	मर्षयतः	मर्षयन्ति
स०	मर्षयेत्	मर्षयेताम्	मर्षयेयुः
प०	मर्षयतु/मर्षयतात्	मर्षयताम्	मर्षयन्तु
ह्य०	अमर्षयत्	अमर्षयताम्	अमर्षयन्
अ०	अमीमृषत्	अमीमृषताम्	अमीमृषन्
	अममर्षत्	अममर्षताम्	अममर्षन्, इत्यादि
प०	मर्षयाञ्चकार	मर्षयाञ्चक्रतुः	मर्षयाञ्चक्रुः
	मर्षयाम्बभूव/मर्षयामास।		
आ०	मर्ष्यात्	मर्ष्यास्ताम्	मर्ष्यासुः
श्व०	मर्षयिता	मर्षयितारौ	मर्षयितारः
भ०	मर्षयिष्यति	मर्षयिष्यतः	मर्षयिष्यन्ति
क्रि०	अमर्षयिष्यत्	अमर्षयिष्यताम्	अमर्षयिष्यन्

॥णिजभावे॥

व०	मर्षते	मर्षेते	मर्षन्ते
स०	मर्षेत	मर्षेयाताम्	मर्षेरन्
प०	मर्षताम्	मर्षेताम्	मर्षन्ताम्
ह्य०	अमर्षत	अमर्षेताम्	अमर्षन्त
अ०	अमर्षिष्ट	अमर्षिषाताम्	अमर्षिषत्
प०	ममृषे	ममृषाते	ममृषिरे
आ०	मर्षिषीष्ट	मर्षिषीयास्ताम्	मर्षिषीरन्
श्व०	मर्षिता	मर्षितारौ	मर्षितारः
भ०	मर्षिष्यते	मर्षिष्येते	मर्षिष्यन्ते
क्रि०	अमर्षिष्यत	अमर्षिष्येताम्	अमर्षिष्यन्त

१९७७. शिषण् (शिष्) असर्वोपयोगे।

असर्वोपयोगोऽनुपयुक्तत्वम्। ४१०

व०	शेषयति	शेषयतः	शेषयन्ति
स०	शेषयेत्	शेषयेताम्	शेषयेयुः
प०	शेषयतु/शेषयतात्	शेषयताम्	शेषयन्तु
ह्य०	अशेषयत्	अशेषयताम्	अशेषयन्
अ०	अशीशिषत्	अशीशिषताम्	अशीशिषन्
प०	शेषयाञ्चकार	शेषयाञ्चक्रतुः	शेषयाञ्चक्रुः
	शेषयाम्बभूव/शेषयामास।		
आ०	शेष्यात्	शेष्यास्ताम्	शेष्यासुः
श्व०	शेषयिता	शेषयितारौ	शेषयितारः
भ०	शेषयिष्यति	शेषयिष्यतः	शेषयिष्यन्ति
क्रि०	अशेषयिष्यत्	अशेषयिष्यताम्	अशेषयिष्यन्

॥णिजभावे॥

व०	शेषति	शेषतः	शेषन्ति
स०	शेषेत्	शेषेताम्	शेषेयुः
प०	शेषतु/शेषतात्	शेषताम्	शेषन्तु
ह्य०	अशेषत्	अशेषताम्	अशेषन्
अ०	अशेषीत्	अशेषिष्टाम्	अशेषिषुः
	अशेषीत्	अशेषिष्टाम्	अमानिषुः, इत्यादि
प०	शिशेष	शिशिषतुः	शिशिषुः
आ०	शिष्यात्	शिष्यास्ताम्	शिष्यासुः
श्व०	शेषिता	शेषितारौ	शेषितारः
भ०	शेषिष्यति	शेषिष्यतः	शेषिष्यन्ति
क्रि०	अशेषिष्यत्	अशेषिष्यताम्	अशेषिष्यन्

१९७८. जुषण् (जुष्) परितर्कणे। ४११

व०	जोषयति	जोषयतः	जोषयन्ति
स०	जोषयेत्	जोषयेताम्	जोषयेयुः
प०	जोषयतु/जोषयतात्	जोषयताम्	जोषयन्तु
ह्य०	अजोषयत्	अजोषयताम्	अजोषयन्
अ०	अजूजुषत्	अजूजुषताम्	अजूजुषन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	जोषयाञ्चकार	जोषयाञ्चक्रतुः	जोषयाञ्चक्रुः
	जोषयाम्बभूव/जोषयामास।		
आ०	जोष्यात्	जोष्यास्ताम्	जोष्यासुः
श्व०	जोषयिता	जोषयितारौ	जोषयितारः
भ०	जोषयिष्यति	जोषयिष्यतः	जोषयिष्यन्ति
क्रि०	अजोषयिष्यत्	अजोषयिष्यताम्	अजोषयिष्यन्

॥णिजभावे॥

व०	जोषति	जोषतः	जोषन्ति
स०	जोषेत्	जोषेताम्	जोषेयुः
प०	जोषतु/जोषतात्	जोषताम्	जोषन्तु
ह्य०	अजोषत्	अजोषताम्	अजोषन्
अ०	अजोषीत्	अजोषिष्टाम्	अजोषिषुः
प०	जुजोष	जुजुषतुः	जुजुषुः
आ०	जुष्यात्	जुष्यास्ताम्	जुष्यासुः
श्व०	जोषिता	जोषितारौ	जोषितारः
भ०	जोषिष्यति	जोषिष्यतः	जोषिष्यन्ति
क्रि०	अजोषिष्यत्	अजोषिष्यताम्	अजोषिष्यन्

१९७९. धृषण् (धृष्) प्रसहने।

प्रसहनमभिभवः। ४१२

व०	धर्षयति	धर्षयतः	धर्षयन्ति
स०	धर्षयेत्	धर्षयेताम्	धर्षयेयुः
प०	धर्षयतु/धर्षयतात्	धर्षयताम्	धर्षयन्तु
ह्य०	अधर्षयत्	अधर्षयताम्	अधर्षयन्
अ०	अदीधृषत्	अदीधृषताम्	अदीधृषन्
	अदधर्षत्	अदधर्षताम्	अदधर्षन्, इत्यादि
प०	धर्षयाञ्चकार	धर्षयाञ्चक्रतुः	धर्षयाञ्चक्रुः
	धर्षयाम्बभूव/धर्षयामास।		
आ०	धर्ष्यात्	धर्ष्यास्ताम्	धर्ष्यासुः
श्व०	धर्षयिता	धर्षयितारौ	धर्षयितारः
भ०	धर्षयिष्यति	धर्षयिष्यतः	धर्षयिष्यन्ति
क्रि०	अधर्षयिष्यत्	अधर्षयिष्यताम्	अधर्षयिष्यन्

॥णिजभावे॥

व०	धर्षति	धर्षतः	धर्षन्ति
स०	धर्षेत्	धर्षेताम्	धर्षेयुः
प०	धर्षतु/धर्षतात्	धर्षताम्	धर्षन्तु
ह्य०	अधर्षत्	अधर्षताम्	अधर्षन्
अ०	अधर्षीत्	अधर्षिष्टाम्	अधर्षिषुः
प०	दधर्ष	दधृषतुः	दधृषुः
आ०	धृष्यात्	धृष्यास्ताम्	धृष्यासुः
श्व०	धर्षिता	धर्षितारौ	धर्षितारः
भ०	धर्षिष्यति	धर्षिष्यतः	धर्षिष्यन्ति
क्रि०	अधर्षिष्यत्	अधर्षिष्यताम्	अधर्षिष्यन्

॥अथ सान्तौ॥

१९८०. हिसुण् (हिंस्) हिंसायाम्। ४१३

व०	हिंसयति	हिंसयतः	हिंसयन्ति
स०	हिंसयेत्	हिंसयेताम्	हिंसयेयुः
प०	हिंसयतु/हिंसयतात्	हिंसयताम्	हिंसयन्तु
ह्य०	अहिंसयत्	अहिंसयताम्	अहिंसयन्
अ०	अजिहिंसत्	अजिहिंसताम्	अजिहिंसन्
प०	हिंसयाञ्चकार	हिंसयाञ्चक्रतुः	हिंसयाञ्चक्रुः
	हिंसयाम्बभूव/हिंसयामास।		
आ०	हिंस्यात्	हिंस्यास्ताम्	हिंस्यासुः
श्व०	हिंसयिता	हिंसयितारौ	हिंसयितारः
भ०	हिंसयिष्यति	हिंसयिष्यतः	हिंसयिष्यन्ति
क्रि०	अहिंसयिष्यत्	अहिंसयिष्यताम्	अहिंसयिष्यन्

॥णिजभावे॥

व०	हिंसति	हिंसतः	हिंसन्ति
स०	हिंसेत्	हिंसेताम्	हिंसेयुः
प०	हिंसतु/हिंसतात्	हिंसताम्	हिंसन्तु
ह्य०	अहिंसत्	अहिंसताम्	अहिंसन्
अ०	अहिंसीत्	अहिंसिष्टाम्	अहिंसिषुः
प०	जिहिंस	जिहिंसतुः	जिहिंसुः
आ०	हिंस्यात्	हिंस्यास्ताम्	हिंस्यासुः
श्व०	हिंसिता	हिंसितारौ	हिंसितारः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ०	हिंसिष्यति	हिंसिष्यतः	हिंसिष्यन्ति
क्रि०	अहिंसिष्यत्	अहिंसिष्यताम्	अहिंसिष्यन्

॥अथ हान्तौ॥

१९८१. गर्हण् (गर्ह्) विनिन्दने। ४१४

व०	गर्हयति	गर्हयतः	गर्हयन्ति
स०	गर्हयेत्	गर्हयेताम्	गर्हयेयुः
प०	गर्हयतु/गर्हयतात्	गर्हयताम्	गर्हयन्तु
ह्य०	अगर्हयत्	अगर्हयताम्	अगर्हयन्
अ०	अजगर्हत्	अजगर्हताम्	अजगर्हन्
प०	गर्हयाञ्चकार	गर्हयाञ्चक्रतुः	गर्हयाञ्चक्रुः

गर्हयाम्बभूव/गर्हयामास।

आ०	गर्ह्यात्	गर्ह्यास्ताम्	गर्ह्यासुः
श्व०	गर्हयिता	गर्हयितारौ	गर्हयितारः
भ०	गर्हयिष्यति	गर्हयिष्यतः	गर्हयिष्यन्ति
क्रि०	अगर्हयिष्यत्	अगर्हयिष्यताम्	अगर्हयिष्यन्

॥णिजभावे॥

व०	गर्हति	गर्हतः	गर्हन्ति
स०	गर्हेत्	गर्हेताम्	गर्हेयुः
प०	गर्हतु/गर्हतात्	गर्हताम्	गर्हन्तु
ह्य०	अगर्हत्	अगर्हताम्	अगर्हन्
अ०	अगर्हीत्	अगर्हिष्टाम्	अगर्हिषुः
प०	जगर्ह	जगर्हतुः	जगर्हुः
आ०	गर्ह्यात्	गर्ह्यास्ताम्	गर्ह्यासुः
श्व०	गर्हिता	गर्हितारौ	गर्हितारः
भ०	गर्हिष्यति	गर्हिष्यतः	गर्हिष्यन्ति
क्रि०	अगर्हिष्यत्	अगर्हिष्यताम्	अगर्हिष्यन्

१९८२. षहण् (सह्) मर्षणे। ४१५

व०	साहयति	साहयतः	साहयन्ति
स०	साहयेत्	साहयेताम्	साहयेयुः
प०	साहयतु/साहयतात्	साहयताम्	साहयन्तु
ह्य०	असाहयत्	असाहयताम्	असाहयन्
अ०	असीषहत्	असीषहताम्	असीषहन्
प०	साहयाञ्चकार	साहयाञ्चक्रतुः	साहयाञ्चक्रुः

साहयाम्बभूव/साहयामास।

आ०	साह्यात्	साह्यास्ताम्	साह्यासुः
श्व०	साहयिता	साहयितारौ	साहयितारः
भ०	साहयिष्यति	साहयिष्यतः	साहयिष्यन्ति
क्रि०	असाहयिष्यत्	असाहयिष्यताम्	असाहयिष्यन्

॥णिजभावे॥

व०	सहति	सहतः	सहन्ति
स०	सहेत्	सहेताम्	सहेयुः
प०	सहतु/सहतात्	सहताम्	सहन्तु
ह्य०	असहत्	असहताम्	असहन्
अ०	असहीत्	असहिष्टाम्	असहिषुः
प०	ससाह	सेहतुः	सेहुः
आ०	सह्यात्	सह्यास्ताम्	सह्यासुः
श्व०	सहिता	सहितारौ	सहितारः
भ०	सहिष्यति	सहिष्यतः	सहिष्यन्ति
क्रि०	असहिष्यत्	असहिष्यताम्	असहिष्यन्

बहुलमेतन्निदर्शनम् यदेतद्भवत्यादिधातुपरिगणनं तद्बाहुल्येन निदर्शनत्वेन ज्ञेयम्। तेनात्रापठिता अपि क्लविप्रभृतयो लौकिकाः सतम्भूप्रभृतयः सौत्राश्चुलुम्पादयश्च वाक्यकरणीया धातव उदाहार्याः। वर्धते हि धातुगणः। यल्लक्ष्यम्।

मिलन्त्याशासु जीमूता विक्लवन्ते दिवि ग्रहाः।
उपक्षपयति प्रावृद् क्षीयन्ते कामिविग्रहाः॥ इत्यादि।
मुसुलक्षेपहुंकारस्तोभैः कलमखण्डिनि।
कुचविष्कम्भमुत्तम्भन्निंस्कुभ्नातीव ते स्मरः॥
नीपानन्दोलयन्नेष प्रेङ्खोलयति मे मनः।
पवनो वीजयन्नाशा ममाशामुच्चुलुम्पति॥
तावत्खरः प्रखरमुल्ललयाञ्चकार॥

विक्लवन्ते विच्छायीभवन्तीत्यर्थः; उपक्षपयति आसन्नीभवन्तीत्यर्थः।

यद्वा भुवादिगणाष्टकोक्ताः स्वार्थणिजन्ता अपि बहुलं भवन्ति। चुरादिपाठस्तु निदर्शनार्थः। यदाहुः-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निवृत्तप्रेषणाद्धातोः प्राकृतेऽर्थे णिजिष्यते॥ यल्लक्ष्यम्।

रामो राज्यमकारयत्। अकरोदित्यर्थः।

रञ्जयति वस्त्रम्। रजतीत्यर्थः। भेदयति भृत्यान्। भिनत्तीत्यर्थः। तापयति वाचयति वाहयति घातयति तपति वक्ति वहति हन्तीत्यर्थः। यद्वा प्रयोज्यव्यापारेऽपि प्रयोक्तृव्यापारानुप्रवेशो णिगं विनापि बुद्ध्यारोपाद् बहुलं भवति।

जजान गर्भं मघवा इन्द्रः॥ अजीजनदित्यर्थः।

एकं द्वादशधा जज्ञे॥ जनितमित्यर्थः।

षड्भिर्हलैः कृषति। कर्षयतीत्यर्थः।

वान्ति पर्णशुषो वाता वान्ति पर्णमुचोऽपरे।

वान्ति पर्णरुहोऽप्यन्ये ततो देवः प्रवर्षति। इति॥

अथवा नाम्नो णिज्बहुलमित्येव सिद्धेस्तत्र सूत्रच्छिद्राान्धदण्डादय उदाहरणार्थाः। तेनादन्तेषु अनुक्ता अपि बहुलं द्रष्टव्याः। तेन स्कन्ध समाहारे, ऊष छुरणे, स्फुट प्रकटभावे, वसं निवासे, इत्यादयोऽपि भवन्ति। तथा ओजयत्योजः।

तडित्खचयतीवाशाः॥

पांसुर्दिशां मुखमतुत्थयदुत्थितोद्रेः॥इति॥

॥इति णिजन्तश्चुरादयो धातवः॥

॥चुरादिगणः सम्पूर्णः॥

❖❖❖

अथ सौत्रादिधातुरूपाणि

क्लविप्रभृतयो लौकिका इति रूपाणि दर्श्यन्ते-

तत्र १९८३. क्लवि (क्लव) विच्छायीभवने इत्यस्य।

व०	क्लवते	क्लवेते	क्लवन्ते
	क्लवसे	क्लवेथे	क्लवध्वे
	क्लवे	क्लवावहे	क्लवामहे
स०	क्लवेत	क्लवेयाताम्	क्लवेरन्
	क्लवेथाः	क्लवेयाथाम्	क्लवेध्वम्
	क्लवेय	क्लवेवहि	क्लवेमहि
प०	क्लवताम्	क्लवेताम्	क्लवन्ताम्
	क्लवस्व	क्लवेथाम्	क्लवध्वम्
	क्लवै	क्लवावहै	क्लवामहै
ह्य०	अक्लवत	अक्लवेताम्	अक्लवन्त
	अक्लवथाः	अक्लवेथाम्	अक्लवध्वम्
	अक्लवे	अक्लवावहि	अक्लवामहि
अ०	अक्लविष्ट	अक्लविषाताम्	अक्लविषत्
	अक्लविष्ठाः	अक्लविषाथाम्	अक्लविड्ढ्वम्
	अक्लविषि	अक्लविष्वहि	अक्लविष्महि
प०	चक्लवे	चक्लवाते	चक्लविरे
	चक्लविषे	चक्लवाथे	चक्लविध्वे
	चक्लवे	चक्लविवहे	चक्लविमहे
आ०	क्लविषीष्ट	क्लविषीयास्ताम्	क्लविषीरन्
	क्लविषीष्ठाः	क्लविषीयास्थाम्	क्लविषीध्वम्
	क्लविषीय	क्लविषीवहि	क्लविषीमहि
श्व०	क्लविता	क्लवितारौ	क्लवितारः
	क्लवितासे	क्लवितासाथे	क्लविताध्वे
	क्लविताहे	क्लवितास्वहे	क्लवितास्महे
भ०	क्लविष्यते	क्लविष्येते	क्लविष्यन्ते
	क्लविष्यसे	क्लविष्येथे	क्लविष्यध्वे
	क्लविष्ये	क्लविष्यावहे	क्लविष्यामहे
क्रि०	अक्लविष्यत	अक्लविष्येताम्	अक्लविष्यन्त
	अक्लविष्यथाः	अक्लविष्येथाम्	अक्लविष्यध्वम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अक्लविष्ये	अक्लविष्यावहि	अक्लविष्यामहि

प्रभृतिग्रहणात्।

१९८४. क्षीङ्च् (क्षी) क्षये।

व०	क्षीयते	क्षीयेते	क्षीयन्ते
	क्षीयसे	क्षीयेथे	क्षीयध्वे
	क्षीये	क्षीयावहे	क्षीयामहे
स०	क्षीयेत	क्षीयेयाताम्	क्षीयेरन्
	क्षीयेथा:	क्षीयेयाथाम्	क्षीयेध्वम्
	क्षीयेय	क्षीयेवहि	क्षीयेमहि
प०	क्षीयताम्	क्षीयेताम्	क्षीयन्ताम्
	क्षीयस्व	क्षीयेथाम्	क्षीयध्वम्
	क्षीयै	क्षीयावहै	क्षीयामहै
ह्य०	अक्षीयत	अक्षीयेताम्	अक्षीयन्त
	अक्षीयथा:	अक्षीयेथाम्	अक्षीयध्वम्
	अक्षीये	अक्षीयावहि	अक्षीयामहि
अ०	अक्षैष्ट	अक्षैषाताम्	अक्षैषत
	अक्षैष्ठा:	अक्षैषाथाम्	अक्षैढ्वम्/ध्वम्
	अक्षैषि	अक्षैष्वहि	अक्षैष्महि
प०	चिक्षिये	चिक्षियाते	चिक्षियिरे
	चिक्षिषे	चिक्षियाथे	चिक्षियिध्वे/चिक्षियिढ्वे
	चिक्षिये	चिक्षियिवहे	चिक्षियिमहे
आ०	क्षेषीष्ट	क्षेषीयास्ताम्	क्षेषीरन्
	क्षेषीष्ठा:	क्षेषीयास्थाम्	क्षेषीध्वम्
	क्षेषीय	क्षेषीवहि	क्षेषीमहि
श्व०	क्षेता	क्षेतारौ	क्षेतार:
	क्षेतासे	क्षेतासाथे	क्षेताध्वे
	क्षेताहे	क्षेतास्वहे	क्षेतास्महे
भ०	क्षेष्यते	क्षेष्येते	क्षेष्यन्ते
	क्षेष्यसे	क्षेष्येथे	क्षेष्यध्वे
	क्षेष्ये	क्षेष्यावहे	क्षेष्यामहे
क्रि०	अक्षेष्यत	अक्षेष्येताम्	अक्षेष्यन्त
	अक्षेष्यथा:	अक्षेष्येथाम्	अक्षेष्यध्वम्
	अक्षेष्ये	अक्षेष्यावहि	अक्षेष्यामहि

१९८५. मृगच् (मृग्) अन्वेषणे।

व०	मृग्यति	मृग्यत:	मृग्यन्ति
	मृग्यसि	मृग्यथ:	मृग्यथ
	मृग्यामि	मृग्याव:	मृग्याम:
स०	मृग्येत्	मृग्येताम्	मृग्येयु:
	मृग्ये:	मृग्येतम्	मृग्येत
	मृग्येयम्	मृग्येव	मृग्येम
प०	मृग्यतु/मृग्यतात्	मृग्यताम्	मृग्यन्तु
	मृग्य/मृग्यतात्	मृग्यतम्	मृग्यत
	मृग्याणि	मृग्याव	मृग्याम
ह्य०	अमृग्यत्	अमृग्यताम्	अमृग्यन्
	अमृग्य:	अमृग्यतम्	अमृग्यत
	अमृग्यम्	अमृग्याव	अमृग्याम
अ०	अमर्गीत्	अमर्गिष्टाम्	अमर्गिषु:
	अमर्गी:	अमर्गिष्टम्	अमर्गिष्ट
	अमर्गिषम्	अमर्गिष्व	अमर्गिष्म
प०	ममर्ग	ममृगतु:	ममृगु:
	ममर्गिथ	ममृगथु:	ममृग
	ममर्ग	ममृगिव	ममृगिम
आ०	मृग्यात्	मृग्यास्ताम्	मृग्यासु:
	मृग्या:	मृग्यास्तम्	मृग्यास्त
	मृग्यासम्	मृग्यास्व	मृग्यास्म
श्व०	मर्गिता	मर्गितारौ	मर्गितार:
	मर्गितासि	मर्गितास्थ:	मर्गितास्थ
	मर्गितास्मि	मर्गितास्व:	मर्गितास्म:
भ०	मर्गिष्यति	मर्गिष्यत:	मर्गिष्यन्ति
	मर्गिष्यसि	मर्गिष्यथ:	मर्गिष्यथ
	मर्गिष्यामि	मर्गिष्याव:	मर्गिष्याम:
क्रि०	अमर्गिष्यत्	अमर्गिष्यताम्	अमर्गिष्यन्
	अमर्गिष्य:	अमर्गिष्यतम्	अमर्गिष्यत
	अमर्गिष्यम्	अमर्गिष्याव	अमर्गिष्याम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्तम्भूप्रभृतयः सौत्रा इति यदुक्तं तत्रादौ स्तम्भू स्तुम्भू स्कम्भू स्कुम्भू इति चत्वारो रोधनार्थाः परस्मैपदिनश्च। प्रथमतृतीयौ स्तम्भार्थौ द्वितीयो निष्कोषणार्थः। तुर्यो धारणार्थ इति माधवः।

१९८६. स्तम्भू (स्तम्भ्) रोधनार्थः।

व०	स्तभ्नाति	स्तभ्नीतः	स्तभ्नन्ति
	स्तभ्नासि	स्तभ्नीथः	स्तभ्नीथ
	स्तभ्नामि	स्तभ्नीवः	स्तभ्नीमः
		तथा	
	स्तभनोति	स्तभ्नुतः	स्तभ्नुवन्ति, इ०
स०	स्तभ्नीयात्	स्तभ्नीयाताम्	स्तभ्नीयुः
	स्तभ्नीयाः	स्तभ्नीयातम्	स्तभ्नीयात
	स्तभ्नीयाम्	स्तभ्नीयाव	स्तभ्नीयाम
		तथा	
	स्तभ्नुयात्	स्तभ्नुयाताम्	स्तभ्नुयुः, इत्यादि।
पं०	स्तभ्नातु/स्तभ्नीतात्	स्तभ्नीताम्	स्तभ्नन्तु
	स्तभान/स्तभ्नीतात्	स्तभ्नीतम्	स्तभ्नीत
	स्तभ्नानि	स्तभ्नाव	स्तभ्नाम
		तथा	
	स्तभ्नोतु	स्तभ्नुतात् स्तभ्नुताम्	स्तभ्नुवन्तु, इ०
ह्य०	अस्तभ्नात्	अस्तभ्नीताम्	अस्तभ्णन्
	अस्तभ्नाः	अस्तभ्नीतम्	अस्तभ्नीत
	अस्तभ्नाम्	अस्तभ्नीव	अस्तभ्नीम
अ०	अस्तम्भीत्	अस्तम्भिष्टाम्	अस्तम्भिषुः
	अस्तम्भीः	अस्तम्भिष्टम्	अस्तम्भिष्ट
	अस्तम्भिषम्	अस्तम्भिष्व	अस्तम्भिष्म
प०	तस्तम्भ	तस्तम्भतुः	तस्तम्भुः
	तस्तम्भिथ	तस्तम्भथुः	तस्तम्भ
	तस्तम्भ	तस्तम्भिव	तस्तम्भिम
आ०	स्तभ्यात्	स्तभ्यास्ताम्	स्तभ्यासुः
	स्तभ्याः	स्तभ्यास्तम्	स्तभ्यास्त
	स्तभ्यासम्	स्तभ्यास्व	स्तभ्यास्म
श्व०	स्तम्भिता	स्तम्भितारौ	स्तम्भितारः
	स्तम्भितासि	स्तम्भितास्थः	स्तम्भितास्थ
	स्तम्भितास्मि	स्तम्भितास्वः	स्तम्भितास्मः
भ०	स्तम्भिष्यति	स्तम्भिष्यतः	स्तम्भिष्यन्ति
	स्तम्भिष्यसि	स्तम्भिष्यथः	स्तम्भिष्यथ
	स्तम्भिष्यामि	स्तम्भिष्यावः	स्तम्भिष्यामः
क्रि०	अस्तम्भिष्यत्	अस्तम्भिष्यताम्	अस्तम्भिष्यन्
	अस्तम्भिष्यः	अस्तम्भिष्यतम्	अस्तम्भिष्यत
	अस्तम्भिष्यम्	अस्तम्भिष्याव	अस्तम्भिष्याम

१९८७. स्तुम्भू (स्तुम्भ्) रोधनार्थः।

व०	स्तुभ्नाति	स्तुभ्नीतः	स्तुभ्नन्ति
	स्तुभ्नासि	स्तुभ्नीथः	स्तुभ्नीथ
	स्तुभ्नामि	स्तुभ्नीवः	स्तुभ्नीमः
		तथा	
	स्तुभनोति	स्तुभ्नुतः	स्तुभ्नुवन्ति, इ०
स०	स्तुभ्नीयात्	स्तुभ्नीयाताम्	स्तुभ्नीयुः
	स्तुभ्नीयाः	स्तुभ्नीयातम्	स्तुभ्नीयात
	स्तुभ्नीयाम्	स्तुभ्नीयाव	स्तुभ्नीयाम
		तथा	
	स्तुभ्नुयात्	स्तुभ्नुयाताम्	स्तुभ्नुयुः, इत्यादि
प०	स्तुभ्नातु/स्तुभ्नीतात्	स्तुभ्नीताम्	स्तुभ्नन्तु
	स्तुभान/स्तुभ्नीतात्	स्तुभ्नीतम्	स्तुभ्नीत
	स्तुभ्नानि	स्तुभ्नाव	स्तुभ्नाम
		तथा	
	स्तुभ्नोतु/स्तुभ्नुतात्	स्तुभ्नुताम्	स्तुभ्नुवन्तु, इत्यादि
ह्य०	अस्तुभ्नात्	अस्तुभ्नीताम्	अस्तुभ्णन्
	अस्तुभ्नाः	अस्तुभ्नीतम्	अस्तुभ्नीत
	अस्तुभ्नाम्	अस्तुभ्नीव	अस्तुभ्नीम
अ०	अस्तुम्भीत्	अस्तुम्भिष्टाम्	अस्तुम्भिषुः
	अस्तुम्भीः	अस्तुम्भिष्टम्	अस्तुम्भिष्ट
	अस्तुम्भिषम्	अस्तुम्भिष्व	अस्तुम्भिष्म
प०	तुस्तुम्भ	तुस्तुम्भतुः	तुस्तुम्भुः
	तुस्तुम्भिथ	तुस्तुम्भथुः	तुस्तुम्भ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	तुस्तुम्भ	तुस्तुम्भिव	तुस्तुम्भिम
आ०	स्तुभ्यात्	स्तुभ्यास्ताम्	स्तुभ्यासुः
	स्तुभ्याः	स्तुभ्यास्तम्	स्तुभ्यास्त
	स्तुभ्यासम्	स्तुभ्यास्व	स्तुभ्यास्म
श्व०	स्तुम्भिता	स्तुम्भितारौ	स्तुम्भितारः
	स्तुम्भितासि	स्तुम्भितास्थः	स्तुम्भितास्थ
	स्तुम्भितास्मि	स्तुम्भितास्वः	स्तुम्भितास्मः
भ०	स्तुम्भिष्यति	स्तुम्भिष्यतः	स्तुम्भिष्यन्ति
	स्तुम्भिष्यसि	स्तुम्भिष्यथः	स्तुम्भिष्यथ
	स्तुम्भिष्यामि	स्तुम्भिष्यावः	स्तुम्भिष्यामः
क्रि०	अस्तुम्भिष्यत्	अस्तुम्भिष्यताम्	अस्तुम्भिष्यन्
	अस्तुम्भिष्यः	अस्तुम्भिष्यतम्	अस्तुम्भिष्यत
	अस्तुम्भिष्यम्	अस्तुम्भिष्याव	अस्तुम्भिष्याम

१९८८. स्कुम्भू (स्कुम्भ्) रोधनार्थः।

व०	स्कभ्नाति	स्कभ्नीतः	स्कभ्नन्ति
	स्कभ्नासि	स्कभ्नीथः	स्कभ्नीथ
	स्कभ्नामि	स्कभ्नीवः	स्कभ्नीमः
	स्कभनोति	स्कभ्नुतः	स्कभ्नुवन्ति, इ०
स०	स्कभ्नीयात्	स्कभ्नीयाताम्	स्कभ्नीयुः
	स्कभ्नीयाः	स्कभ्नीयातम्	स्कभ्नीयात
	स्कभ्नीयाम्	स्कभ्नीयाव	स्कभ्नीयाम
	स्कभ्नुयात्	स्कभ्नुयाताम्	स्कभ्नुयुः, इत्यादि
प०	स्कभ्नातु/स्कभ्नीतात्	स्कभ्नीताम्	स्कभ्नन्तु
	स्कभान/स्कभ्नीतात्	स्कभ्नीतम्	स्कभ्नीत
	स्कभ्नानि	स्कभ्नाव	स्कभ्नाम

तथा

	स्कभ्नोतु	स्कभ्नुतात् स्कभ्नुताम्	स्कभ्नुवन्तु, इत्यादि
ह्य०	अस्कभ्नात्	अस्कभ्नीताम्	अस्कभ्नन्
	अस्कभ्नाः	अस्कभ्नीतम्	अस्कभ्नीत
	अस्कभ्नाम्	अस्कभ्नीव	अस्कभ्नीम
अ०	अस्कम्भीत्	अस्कम्भिष्टाम्	अस्कम्भिषुः
	अस्कम्भीः	अस्कम्भिष्टम्	अस्कम्भिष्ट
	अस्कम्भिषम्	अस्कम्भिष्व	अस्कम्भिष्म
प०	चस्कम्भ	चस्कम्भतुः	चस्कम्भुः
	चस्कम्भिथ	चस्कम्भथुः	चस्कम्भ
	चस्कम्भ	चस्कम्भिव	चस्कम्भिम
आ०	स्कभ्यात्	स्कभ्यास्ताम्	स्कभ्यासुः
	स्कभ्याः	स्कभ्यास्तम्	स्कभ्यास्त
	स्कभ्यासम्	स्कभ्यास्व	स्कभ्यास्म
श्व०	स्कम्भिता	स्कम्भितारौ	स्कम्भितारः
	स्कम्भितासि	स्कम्भितास्थः	स्कम्भितास्थ
	स्कम्भितास्मि	स्कम्भितास्वः	स्कम्भितास्मः
भ०	स्कम्भिष्यति	स्कम्भिष्यतः	स्कम्भिष्यन्ति
	स्कम्भिष्यसि	स्कम्भिष्यथः	स्कम्भिष्यथ
	स्कम्भिष्यामि	स्कम्भिष्यावः	स्कम्भिष्यामः
क्रि०	अस्कम्भिष्यत्	अस्कम्भिष्यताम्	अस्कम्भिष्यन्
	अस्कम्भिष्यः	अस्कम्भिष्यतम्	अस्कम्भिष्यत
	अस्कम्भिष्यम्	अस्कम्भिष्याव	अस्कम्भिष्याम

१९८९. स्कुम्भू (स्कुम्भ्) रोधनार्थः।

व०	स्कुभ्नाति	स्कुभ्नीतः	स्कुभ्नन्ति
	स्कुभनोति	स्कुभ्नुतः	स्कुभ्नुवन्ति, इ०
स०	स्कुभ्नीयात्	स्कुभ्नीयाताम्	स्कुभ्नीयुः
	स्कुभ्नुयात्	स्कुभ्नुयाताम्	स्कुभ्नुयुः, इत्यादि
प०	स्कुभ्नातु/स्कुभ्नीतात्	स्कुभ्नीताम्	स्कुभ्नन्तु
	स्कुभ्नोतु/स्कुभ्नुतात्	स्कुभ्नुताम्	स्कुभ्नुवन्तु, इ०
ह्य०	अस्कुभ्नात्	अस्कुभ्नीताम्	अस्कुभ्नन्
अ०	अस्कुम्भीत्	अस्कुम्भिष्टाम्	अस्कुम्भिषुः
प०	चस्कुम्भ	चस्कुम्भतुः	चस्कुम्भुः
आ०	स्कुभ्यात्	स्कुभ्यास्ताम्	स्कुभ्यासुः
श्व०	स्कुम्भिता	स्कुम्भितारौ	स्कुम्भितारः
भ०	स्कुम्भिष्यति	स्कुम्भिष्यतः	स्कुम्भिष्यन्ति
क्रि०	अस्कुम्भिष्यत्	अस्कुम्भिष्यताम्	अस्कुम्भिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९९०. जुं (जु) गतौ सौत्रः।

व०	जवति	जवतः	जवन्ति
स०	जवेत्	जवेताम्	जवेयुः
प०	जवतु/जवतात्	जवताम्	जवन्तु
ह्य०	अजवत्	अजवताम्	अजवन्
अ०	अजौषीत्	अजौष्टाम्	अजौषुः
प०	जुजाव	जुजवतुः	जुजवुः
आ०	जूयात्	जूयास्ताम्	जूयासुः
श्व०	जोता	जोतारौ	जोतारः
भ०	जोष्यति	जोष्यतः	जोष्यन्ति
क्रि०	अजोष्यत्	अजोष्यताम्	अजोष्यन्

१९९१. कगे (कग्) सौत्रः।

क्रियासामान्यार्थोऽयमित्येके अनेकार्थोऽयमित्यन्ये।

व०	कगति	कगतः	कगन्ति
स०	कगेत्	कगेताम्	कगेयुः
प०	कगतु/कगतात्	कगताम्	कगन्तु
ह्य०	अकगत्	अकगताम्	अकगन्
अ०	अकगीत्	अकगिष्टाम्	अकगिषुः
	अकगीत्	अकगिष्टाम्	अमानिषुः, इत्यादि
प०	चकाग	चकगतुः	चकगुः
आ०	कग्यात्	कग्यास्ताम्	कग्यासुः
श्व०	कगिता	कगितारौ	कगितारः
भ०	कगिष्यति	कगिष्यतः	कगिष्यन्ति
क्रि०	अकगिष्यत्	अकगिष्यताम्	अकगिष्यन्

अथ धातोः कण्डवादेर्यक्-इतिसूत्रसूचिताः कण्डुप्रभृतयः सौत्रा उच्यन्ते।

व०	कण्डूयति	कण्डूयतः	कण्डूयन्ति
स०	कण्डूयेत्	कण्डूयेताम्	कण्डूयेयुः
प०	कण्डूयतु/कण्डूयतात्	कण्डूयताम्	कण्डूयन्तु
ह्य०	अकण्डूयत्	अकण्डूयताम्	अकण्डूयन्
अ०	अकण्डूयीत्	अकण्डूयिष्टाम्	अकण्डूयिषुः
प०	कण्डूयाञ्चकार	कण्डूयाञ्चक्रतुः	कण्डूयाञ्चक्रुः
	कण्डूयाम्बभूव/कण्डूयामास।		
आ०	कण्डूय्यात्	कण्डूय्यास्ताम्	कण्डूय्यासुः
श्व०	कण्डूयिता	कण्डूयितारौ	कण्डूयितारः
भ०	कण्डूयिष्यति	कण्डूयिष्यतः	कण्डूयिष्यन्ति
क्रि०	अकण्डूयिष्यत्	अकण्डूयिष्यताम्	अकण्डूयिष्यन्

१९९२. कण्डूग् (कण्डू) गात्रविघर्षणे।

व०	कण्डूयते	कण्डूयेते	कण्डूयन्ते
स०	कण्डूयेत	कण्डूयेयाताम्	कण्डूयेरन्
प०	कण्डूयताम्	कण्डूयेताम्	कण्डूयन्ताम्
ह्य०	अकण्डूयत	अकण्डूयेताम्	अकण्डूयन्त
अ०	अकण्डूयिष्ट	अकण्डूयिषाताम्	अकण्डूयिषत
प०	कण्डूयाञ्चक्रे	कण्डूयाञ्चक्राते	कण्डूयाञ्चक्रिरे
	कण्डूयाम्बभूव/कण्डूयामास।		
आ०	कण्डूयिषीष्ट	कण्डूयिषीयास्ताम्	कण्डूयिषीरन्
श्व०	कण्डूयिता	कण्डूयितारौ	कण्डूयितारः
भ०	कण्डूयिष्यते	कण्डूयिष्येते	कण्डूयिष्यन्ते
क्रि०	अकण्डूयिष्यत	अकण्डूयिष्येताम्	अकण्डूयिष्यन्त

१९९३. महीङ् (मही) वृद्धौ पूजायाञ्च।

व०	महीयते	महीयेते	महीयन्ते
स०	महीयेत	महीयेयाताम्	महीयेरन्
प०	महीयताम्	महीयेताम्	महीयन्ताम्
ह्य०	अमहीयत	अमहीयेताम्	अमहीयन्त
अ०	अमहीयिष्ट	अमहीयिषाताम्	अमहीयिषत
प०	महीयाञ्चक्रे	महीयाञ्चक्राते	महीयाञ्चक्रिरे
	महीयाम्बभूव/महीयामास।		
आ०	महीयिषीष्ट	महीयिषीयास्ताम्	महीयिषीरन्
श्व०	महीयिता	महीयितारौ	महीयितारः
भ०	महीयिष्यते	महीयिष्येते	महीयिष्यन्ते
क्रि०	अमहीयिष्यत	अमहीयिष्येताम्	अमहीयिष्यन्त

१९९४. हृणीङ् (हृणी) रोषलज्जयोः।

व०	हृणीयते	हृणीयेते	हृणीयन्ते
स०	हृणीयेत	हृणीयेयाताम्	हृणीयेरन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	हृणीयताम्	हृणीयेताम्	हृणीयन्ताम्
ह्य०	अहृणीयत	अहृणीयेताम्	अहृणीयन्त
अ०	अहृणीयिष्ट	अहृणीयिषाताम्	अहृणीयिषत
प०	हृणीयाञ्चक्रे	हृणीयाञ्चक्राते	हृणीयाञ्चक्रिरे

हृणीयाम्बभूव/हृणीयामास।

आ०	हृणीयिषीष्ट	हृणीयिषीयास्ताम्	हृणीयिषीरन्
श्व०	हृणीयिता	हृणीयितारौ	हृणीयितारः
भ०	हृणीयिष्यते	हृणीयिष्येते	हृणीयिष्यन्ते
क्रि०	अहृणीयिष्यत	अहृणीयिष्येताम्	अहृणीयिष्यन्त

१९९५. वेङ् (वे) धौर्त्ये पूर्वभावे स्वप्ने च।

व०	वेयते	वेयेते	वेयन्ते
स०	वेयेत	वेयेयाताम्	वेयेरन्
प०	वेयताम्	वेयेताम्	वेयन्ताम्
ह्य०	अवेयत	अवेयेताम्	अवेयन्त
अ०	अवेयिष्ट	अवेयिषाताम्	अवेयिषत
प०	वेयाञ्चक्रे	वेयाञ्चक्राते	वेयाञ्चक्रिरे

वेयाम्बभूव/वेयामास।

आ०	वेयिषीष्ट	वेयिषीयास्ताम्	वेयिषीरन्
श्व०	वेयिता	वेयितारौ	वेयितारः
भ०	वेयिष्यते	वेयिष्येते	वेयिष्यन्ते
क्रि०	अवेयिष्यत	अवेयिष्येताम्	अवेयिष्यन्त

१९९६. लाङ् (ला) धौर्त्ये पूर्वभावे स्वप्ने च।

व०	लायते	लायेते	लायन्ते
स०	लायेत	लायेयाताम्	लायेरन्
प०	लायताम्	लायेताम्	लायन्ताम्
ह्य०	अलायत	अलायेताम्	अलायन्त
अ०	अलायिष्ट	अलायिषाताम्	अलायिषत
प०	लायाञ्चक्रे	लायाञ्चक्राते	लायाञ्चक्रिरे

लायाम्बभूव/लायामास।

आ०	लायिषीष्ट	लायिषीयास्ताम्	लायिषीरन्
श्व०	लायिता	लायितारौ	लायितारः
भ०	लायिष्यते	लायिष्येते	लायिष्यन्ते
क्रि०	अलायिष्यत	अलायिष्येताम्	अलायिष्यन्त

१९९७. मन्तु रोषवैमनस्ययोः।

व०	मन्तूयति	मन्तूयतः	मन्तूयन्ति
स०	मन्तूयेत्	मन्तूयेताम्	मन्तूयेयुः
प०	मन्तूयतु/मन्तूयतात्	मन्तूयताम्	मन्तूयन्तु
ह्य०	अमन्तूयत्	अमन्तूयताम्	अमन्तूयन्
अ०	अमन्तूयीत्	अमन्तूयिष्टाम्	अमन्तूयिषुः
प०	मन्तूयाञ्चकार	मन्तूयाञ्चक्रतुः	मन्तूयाञ्चक्रुः

मन्तूयाम्बभूव/मन्तूयामास।

आ०	मन्तूय्यात्	मन्तूय्यास्ताम्	मन्तूय्यासुः
श्व०	मन्तूयिता	मन्तूयितारौ	मन्तूयितारः
भ०	मन्तूयिष्यति	मन्तूयिष्यतः	मन्तूयिष्यन्ति
क्रि०	अमन्तूयिष्यत्	अमन्तूयिष्यताम्	अमन्तूयिष्यन्

१९९८. वल्गु माधुर्यपूजयोः।

व०	वल्गूयति	वल्गूयतः	वल्गूयन्ति
स०	वल्गूयेत्	वल्गूयेताम्	वल्गूयेयुः
प०	वल्गूयतु/वल्गूयतात्	वल्गूयताम्	वल्गूयन्तु
ह्य०	अवल्गूयत्	अवल्गूयताम्	अवल्गूयन्
अ०	अवल्गूयीत्	अवल्गूयिष्टाम्	अवल्गूयिषुः
प०	वल्गूयाञ्चकार	वल्गूयाञ्चक्रतुः	वल्गूयाञ्चक्रुः

वल्गूयाम्बभूव/वल्गूयामास।

आ०	वल्गूय्यात्	वल्गूय्यास्ताम्	वल्गूय्यासुः
श्व०	वल्गूयिता	वल्गूयितारौ	वल्गूयितारः
भ०	वल्गूयिष्यति	वल्गूयिष्यतः	वल्गूयिष्यन्ति
क्रि०	अवल्गूयिष्यत्	अवल्गूयिष्यताम्	अवल्गूयिष्यन्

१९९९. असु मानसोपतापे।

व०	असूयति	असूयतः	असूयन्ति
स०	असूयेत्	असूयेताम्	असूयेयुः
प०	असूयतु/असूयतात्	असूयताम्	असूयन्तु
ह्य०	आसूयत्	आसूयताम्	आसूयन्
अ०	आसूयीत्	आसूयिष्टाम्	आसूयिषुः
प०	असूयाञ्चकार	असूयाञ्चक्रतुः	असूयाञ्चक्रुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असूयाम्बभूव/असूयामास।

आ० असूय्यात् असूय्यास्ताम् असूय्यासुः

श्व० असूयिता असूयितारौ असूयितारः

भ० असूयिष्यति असूयिष्यतः असूयिष्यन्ति

क्रि० आसूयिष्यत् आसूयिष्यताम् आसूयिष्यन्

असू असूग् इत्येके। अन्ये तु असूङ दोषाविष्कृतौ रोगे चेत्याहुः।

२००० वेट् २०० लाट् वेड्वत्। यथा वेड्धातुः धौर्त्ये पूर्वभावे स्वप्ने च वर्तते तथा इमावपि लाट् जीवन इत्येके। वेट् लाट् इत्यन्ये।

२०००. वेट् धौर्त्ये पूर्वभावे स्वप्ने च।

व० वेट्यति वेट्यतः वेट्यन्ति

स० वेट्येत् वेट्येताम् वेट्येयुः

प० वेट्यतु/वेट्यतात् वेट्यताम् वेट्यन्तु

ह्य० अवेट्यत् अवेट्यताम् अवेट्यन्

अ० अवेटीत् अवेटिष्टाम् अवेटिषुः

प० वेटाञ्चकार वेटाञ्चक्रतुः वेटाञ्चक्रुः

वेटाम्बभूव/वेटामास।

आ० वेट्यात् वेट्यास्ताम् वेट्यासुः

श्व० वेटिता वेटितारौ वेटितारः

भ० वेटिष्यति वेटिष्यतः वेटिष्यन्ति

क्रि० अवेटिष्यत् अवेटिष्यताम् अवेटिष्यन्

२००१. लाट् धौर्त्ये पूर्वभावे स्वप्ने च।

व० लाट्यति लाट्यतः लाट्यन्ति

स० लाट्येत् लाट्येताम् लाट्येयुः

प० लाट्यतु/लाट्यतात् लाट्यताम् लाट्यन्तु

ह्य० अलाट्यत् अलाट्यताम् अलाट्यन्

अ० अलाटीत् अलाटिष्टाम् अलाटिषुः

प० लाटाञ्चकार लाटाञ्चक्रतुः लाटाञ्चक्रुः

लाटाम्बभूव/लाटामास।

आ० लाट्यात् लाट्यास्ताम् लाट्यासुः

श्व० लाटिता लाटितारौ लाटितारः

भ० लाटिष्यति लाटिष्यतः लाटिष्यन्ति

क्रि० अलाटिष्यत् अलाटिष्यताम् अलाटिष्यन्

२००२. लिट् अल्पार्थे कुत्सायाञ्च।

व० लिट्यति लिट्यतः लिट्यन्ति

स० लिट्येत् लिट्येताम् लिट्येयुः

प० लिट्यतु/लिट्यतात् लिट्यताम् लिट्यन्तु

ह्य० अलिट्यत् अलिट्यताम् अलिट्यन्

अ० अलिटीत् अलिटिष्टाम् अलिटिषुः

प० लिटाञ्चकार लिटाञ्चक्रतुः लिटाञ्चक्रुः

लिटाम्बभूव/लिटामास।

आ० लिट्यात् लिट्यास्ताम् लिट्यासुः

श्व० लिटिता लिटितारौ लिटितारः

भ० लिटिष्यति लिटिष्यतः लिटिष्यन्ति

क्रि० अलिटिष्यत् अलिटिष्यताम् अलिटिष्यन्

२००३. लोट् दीप्तौ।

व० लोट्यति लोट्यतः लोट्यन्ति

स० लोट्येत् लोट्येताम् लोट्येयुः

प० लोट्यतु/लोट्यतात् लोट्यताम् लोट्यन्तु

ह्य० अलोट्यत् अलोट्यताम् अलोट्यन्

अलोट्यः अलोट्यतम् अलोट्यत

अलोट्यम् अलोट्याव अलोट्याम

अ० अलोटीत् अलोटिष्टाम् अलोटिषुः

अलोटीः अलोटिष्टम् अलोटिष्ट

अलोटिषम् अलोटिष्व अलोटिष्म

प० लोटाञ्चकार लोटाञ्चक्रतुः लोटाञ्चक्रुः

लोटाम्बभूव/लोटामास।

आ० लोट्यात् लोट्यास्ताम् लोट्यासुः

श्व० लोटिता लोटितारौ लोटितारः

भ० लोटिष्यति लोटिष्यतः लोटिष्यन्ति

क्रि० अलोटिष्यत् अलोटिष्यताम् अलोटिष्यन्

लेट् लोट् धौर्त्ये पूर्वभावे स्वप्ने चेत्येके।

लेला दीप्ताविति केचित्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२००४. उरस् ऐश्वर्ये।

व०	उरस्यति	उरस्यतः	उरस्यन्ति
स०	उरस्येत्	उरस्येताम्	उरस्येयुः
प०	उरस्यतु/उरस्यतात्	उरस्यताम्	उरस्यन्तु
ह्य०	औरस्यत्	औरस्यताम्	औरस्यन्
अ०	औरसीत्	औरसिष्टाम्	औरसिषुः
प०	उरसाञ्चकार	उरसाञ्चक्रतुः	उरसाञ्चक्रुः
	उरसाम्बभूव/उरसामास।		
आ०	उरस्यात्	उरस्यास्ताम्	उरस्यासुः
श्व०	उरसिता	उरसितारौ	उरसितारः
भ०	उरसिष्यति	उरसिष्यतः	उरसिष्यन्ति
क्रि०	औरसिष्यत्	औरसिष्यताम्	औरसिष्यन्

२००५. उषस् प्रभातीभावे।

व०	उषस्यति	उषस्यतः	उषस्यन्ति
स०	उषस्येत्	उषस्येताम्	उषस्येयुः
प०	उपस्यतु/उषस्यतात्	उषस्यताम्	उषस्यन्तु
ह्य०	औषस्यत्	औषस्यताम्	औषस्यन्
अ०	औषसीत्	औषसिष्टाम्	औषसिषुः
प०	उपसाञ्चकार	उषसाञ्चक्रतुः	उषसाञ्चक्रुः
	उषसाम्बभूव/उषसामास।		
आ०	उषस्यात्	उषस्यास्ताम्	उषस्यासुः
श्व०	उपसिता	उषसितारौ	उषसितारः
भ०	उपसिष्यति	उषसिष्यतः	उषसिष्यन्ति
क्रि०	औषसिष्यत्	औषसिष्यताम्	औषसिष्यन्

२००६. इरस् ईर्ष्यायाम्।

व०	इरस्यति	इरस्यतः	इरस्यन्ति
स०	इरस्येत्	इरस्येताम्	इरस्येयुः
प०	इरस्यतु/इरस्यतात्	इरस्यताम्	इरस्यन्तु
ह्य०	ऐरस्यत्	ऐरस्यताम्	ऐरस्यन्
अ०	ऐरसीत्	ऐरसिष्टाम्	ऐरसिषुः
प०	इरसाञ्चकार	इरसाञ्चक्रतुः	इरसाञ्चक्रुः
	इरसाम्बभूव/इरसामास।		
आ०	इरस्यात्	इरस्यास्ताम्	इरस्यासुः
श्व०	इरसिता	इरसितारौ	इरसितारः
भ०	इरसिष्यति	इरसिष्यतः	इरसिष्यन्ति
क्रि०	ऐरसिष्यत्	ऐरसिष्यताम्	ऐरसिष्यन्

२००७. तिरस् अन्तर्द्धौ।

व०	तिरस्यति	तिरस्यतः	तिरस्यन्ति
स०	तिरस्येत्	तिरस्येताम्	तिरस्येयुः
प०	तिरस्यतु/तिरस्यतात्	तिरस्यताम्	तिरस्यन्तु
ह्य०	अतिरस्यत्	अतिरस्यताम्	अतिरस्यन्
अ०	अतिरसीत्	अतिरसिष्टाम्	अतिरसिषुः
प०	तिरसाञ्चकार	तिरसाञ्चक्रतुः	तिरसाञ्चक्रुः
	तिरसाम्बभूव/तिरसामास।		
आ०	तिरस्यात्	तिरस्यास्ताम्	तिरस्यासुः
श्व०	तिरसिता	तिरसितारौ	तिरसितारः
भ०	तिरसिष्यति	तिरसिष्यतः	तिरसिष्यन्ति
क्रि०	अतिरसिष्यत्	अतिरसिष्यताम्	अतिरसिष्यन्

२००८. इयस् प्रसृतौ।

व०	इयस्यति	इयस्यतः	इयस्यन्ति
स०	इयस्येत्	इयस्येताम्	इयस्येयुः
प०	इयस्यतु/इयस्यतात्	इयस्यताम्	इयस्यन्तु
ह्य०	ऐयस्यत्	ऐयस्यताम्	ऐयस्यन्
अ०	ऐयसीत्	ऐयसिष्टाम्	ऐयसिषुः
प०	इयसाञ्चकार	इयसाञ्चक्रतुः	इयसाञ्चक्रुः
	इयसाम्बभूव/इयसामास।		
आ०	इयस्यात्	इयस्यास्ताम्	इयस्यासुः
श्व०	इयसिता	इयसितारौ	इयसितारः
भ०	इयसिष्यति	इयसिष्यतः	इयसिष्यन्ति
क्रि०	ऐयसिष्यत्	ऐयसिष्यताम्	ऐयसिष्यन्

२००९. इमस् प्रसृतौ।

व०	इमस्यति	इमस्यतः	इमस्यन्ति
स०	इमस्येत्	इमस्येताम्	इमस्येयुः
प०	इमस्यतु/इमस्यतात्	इमस्यताम्	इमस्यन्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य०	ऐमस्यत्	ऐमस्यताम्	ऐमस्यन्
अ०	ऐमसीत्	ऐमसिष्टाम्	ऐमसिषुः
प०	इमसाञ्चकार	इमसाञ्चक्रतुः	इमसाञ्चक्रुः
	इमसाम्बभूव/इमसामास।		
आ०	इमस्यात्	इमस्यास्ताम्	इमस्यासुः
श्व०	इमसिता	इमसितारौ	इमसितारः
भ०	इमसिष्यति	इमसिष्यतः	इमसिष्यन्ति
क्रि०	ऐमसिष्यत्	ऐमसिष्यताम्	ऐमसिष्यन्

२०१०. अस् प्रसृतौ।

व०	अस्यति	अस्यतः	अस्यन्ति
	अस्यसि	अस्यथः	अस्यथ
	अस्यामि	अस्यावः	अस्यामः
स०	अस्येत्	अस्येताम्	अस्येयुः
	अस्येः	अस्येतम्	अस्येत
	अस्येयम्	अस्येव	अस्येम
प०	अस्यतु/अस्यतात्	अस्यताम्	अस्यन्तु
	अस्य/अस्यतात्	अस्यतम्	अस्यत
	अस्यानि	अस्याव	अस्याम
ह्य०	आस्यत्	आस्यताम्	आस्यन्
	आस्यः	आस्यतम्	आस्यत
	आस्यम्	आस्याव	आस्याम
अ०	आसीत्	आसिष्टाम्	आसिषुः
	आसीः	आसिष्टम्	आसिष्ट
	आसिषम्	आसिष्व	आसिष्म
प०	असाञ्चकार	असाञ्चक्रतुः	असाञ्चक्रुः
	असाञ्चकर्थ	असाञ्चक्रथुः	असाञ्चक्र
	असाञ्चकार/कर	असाञ्चकृव	असाञ्चकृम
	असाम्बभूव/असामास।		
आ०	अस्यात्	अस्यास्ताम्	अस्यासुः
	अस्याः	अस्यास्तम्	अस्यास्त
	अस्यासम्	अस्यास्व	अस्यास्म
श्व०	असिता	असितारौ	असितारः
	असितासि	असितास्थः	असितास्थ
	असितास्मि	असितास्वः	असितास्मः
भ०	असिष्यति	असिष्यतः	असिष्यन्ति
	असिष्यसि	असिष्यथः	असिष्यथ
	असिष्यामि	असिष्यावः	असिष्यामः
क्रि०	आसिष्यत्	आसिष्यताम्	आसिष्यन्
	आसिष्यः	आसिष्यतम्	आसिष्यत
	आसिष्यम्	आसिष्याव	आसिष्याम

२०११. पयस् प्रसृतौ।

व०	पयस्यति	पयस्यतः	पयस्यन्ति
	पयस्यसि	पयस्यथः	पयस्यथ
	पयस्यामि	पयस्यावः	पयस्यामः
स०	पयस्येत्	पयस्येताम्	पयस्येयुः
	पयस्येः	पयस्येतम्	पयस्येत
	पयस्येयम्	पयस्येव	पयस्येम
प०	पयस्यतु/पयस्यतात्	पयस्यताम्	पयस्यन्तु
	पयस्य/पयस्यतात्	पयस्यतम्	पयस्यत
	पयस्यानि	पयस्याव	पयस्याम
ह्य०	अपयस्यत्	अपयस्यताम्	अपयस्यन्
	अपयस्यः	अपयस्यतम्	अपयस्यत
	अपयस्यम्	अपयस्याव	अपयस्याम
अ०	अपयसीत्	अपयसिष्टाम्	अपयसिषुः
	अपयसीः	अपयसिष्टम्	अपयसिष्ट
	अपयसिषम्	अपयसिष्व	अपयसिष्म
प०	पयसाञ्चकार	पयसाञ्चक्रतुः	पयसाञ्चक्रुः
	पयसाञ्चकर्थ	पयसाञ्चक्रथुः	पयसाञ्चक्र
	पयसाञ्चकार/कर	पयसाञ्चकृव	पयसाञ्चकृम
	पयसाम्बभूव/पयसामास।		
आ०	पयस्यात्	पयस्यास्ताम्	पयस्यासुः
	पयस्याः	पयस्यास्तम्	पयस्यास्त
	पयस्यासम्	पयस्यास्व	पयस्यास्म
श्व०	पयसिता	पयसितारौ	पयसितारः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	पयसितासि	पयसितास्थः	पयसितास्थ
	पयसितास्मि	पयसितास्वः	पयसितास्मः
भ०	पयसिष्यति	पयसिष्यतः	पयसिष्यन्ति
	पयसिष्यसि	पयसिष्यथः	पयसिष्यथ
	पयसिष्यामि	पयसिष्यावः	पयसिष्यामः
क्रि०	अपयसिष्यत्	अपयसिष्यताम्	अपयसिष्यन्
	अपयसिष्यः	अपयसिष्यतम्	अपयसिष्यत
	अपयसिष्यम्	अपयसिष्याव	अपयसिष्याम

२०१२. सम्भूयस् सम्भूसृतभावो

व०	सम्भूयस्यति	सम्भूयस्यतः	सम्भूयस्यन्ति
स०	सम्भूयस्येत्	सम्भूयस्येताम्	सम्भूयस्येयुः
प०	सम्भूयस्यतु/सम्भूयस्यतात्	सम्भूयस्यताम्	सम्भूयस्यन्तु
ह्य०	असम्भूयस्यत्	असम्भूयस्यताम्	असम्भूयस्यन्
अ०	असम्भूयसीत्	असम्भूयसिष्टाम्	असम्भूयसिषुः
प०	सम्भूयसाञ्चकार	सम्भूयसाञ्चक्रतुः	सम्भूयसाञ्चक्रुः
	सम्भूयसाम्बभूव/सम्भूयसामास।		
आ०	सम्भूयस्यात्	सम्भूयस्यास्ताम्	सम्भूयस्यासुः
श्व०	सम्भूयसिता	सम्भूयसितारौ	सम्भूयसितारः
भ०	सम्भूयसिष्यति	सम्भूयसिष्यतः	सम्भूयसिष्यन्ति
क्रि०	असम्भूयसिष्यत्	असम्भूयसिष्यताम्	असम्भूयसिष्यन्

२०१३. दूवस् परितापपरिचरणयोः।

व०	दुवस्यति	दुवस्यतः	दुवस्यन्ति
स०	दुवस्येत्	दुवस्येताम्	दुवस्येयुः
प०	दुवस्यतु/दुवस्यतात्	दुवस्यताम्	दुवस्यन्तु
ह्य०	अदुवस्यत्	अदुवस्यताम्	अदुवस्यन्
अ०	अदुवसीत्	अदुवसिष्टाम्	अदुवसिषुः
प०	दुवसाञ्चकार	दुवसाञ्चक्रतुः	दुवसाञ्चक्रुः
	दुवसाम्बभूव/दुवसामास।		
आ०	दुवस्यात्	दुवस्यास्ताम्	दुवस्यासुः
श्व०	दुवसिता	दुवसितारौ	दुवसितारः
भ०	दुवसिष्यति	दुवसिष्यन:	दुवसिष्यन्ति
क्रि०	अदुवसिष्यत्	अदुवसिष्यताम्	अदुवसिष्यन्

२०१४. दुरज् चिकित्सायाम्।

व०	दुरज्यति	दुरज्यतः	दुरज्यन्ति
स०	दुरज्येत्	दुरज्येताम्	दुरज्येयुः
प०	दुरज्यतु/दुरज्यतात्	दुरज्यताम्	दुरज्यन्तु
ह्य०	अदुरज्यत्	अदुरज्यताम्	अदुरज्यन्
अ०	अदुरजीत्	अदुरजिष्टाम्	अदुरजिषुः
प०	दुरजाञ्चकार	दुरजाञ्चक्रतुः	दुरजाञ्चक्रुः
	दुरजाम्बभूव/दुरजामास।		
आ०	दुरज्यात्	दुरज्यास्ताम्	दुरज्यासुः
श्व०	दुरजिता	दुरजितारौ	दुरजितारः
भ०	दुरजिष्यति	दुरजिष्यतः	दुरजिष्यन्ति
क्रि०	अदुरजिष्यत्	अदुरजिष्यताम्	अदुरजिष्यन्

२०१५. भिषज् चिकित्सायाम्।

व०	भिषज्यति	भिषज्यतः	भिषज्यन्ति
स०	भिषज्येत्	भिषज्येताम्	भिषज्येयुः
प०	भिषज्यतु/भिषज्यतात्	भिषज्यताम्	भिषज्यन्तु
ह्य०	अभिषज्यत्	अभिषज्यताम्	अभिषज्यन्
अ०	अभिषजीत्	अभिषजिष्टाम्	अभिषजिषुः
प०	भिषजाञ्चकार	भिषजाञ्चक्रतुः	भिषजाञ्चक्रुः
	भिषजाम्बभूव/भिषजामास।		
आ०	भिषज्यात्	भिषज्यास्ताम्	भिषज्यासुः
श्व०	भिषजिता	भिषजितारौ	भिषजितारः
भ०	भिषजिष्यति	भिषजिष्यतः	भिषजिष्यन्ति
क्रि०	अभिषजिष्यत्	अभिषजिष्यताम्	अभिषजिष्यन्

२०१६. भिष्णुक् उपसेवायाम्।

व०	भिष्णुक्यति	भिष्णुक्यतः	भिष्णुक्यन्ति
स०	भिष्णुक्येत्	भिष्णुक्येताम्	भिष्णुक्येयुः
प०	भिष्णुक्यतु/भिष्णुक्यतात्	भिष्णुक्यताम्	भिष्णुक्यन्तु
ह्य०	अभिष्णुक्यत्	अभिष्णुक्यताम्	अभिष्णुक्यन्
अ०	अभिष्णुकीत्	अभिष्णुकिष्टाम्	अभिष्णुकिषुः
प०	भिष्णुकाञ्चकार	भिष्णुकाञ्चक्रतुः	भिष्णुकाञ्चक्रुः
	भिष्णुकाम्बभूव/भिष्णुकामास।		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ०	भिष्णुक्यात्	भिष्णुक्यास्ताम्	भिष्णुक्यासु:
श्व०	भिष्णुकिता	भिष्णुकितारौ	भिष्णुकितार:
भ०	भिष्णुकिष्यति	भिष्णुकिष्यत:	भिष्णुकिष्यन्ति
क्रि०	अभिष्णुकिष्यत्	अभिष्णुकिष्यताम्	अभिष्णुकिष्यन्

२०१७. रेखा श्लाघासादनयो:।

व०	रेखायति	रेखायत:	रेखायन्ति
स०	रेखायेत्	रेखायेताम्	रेखायेयु:
प०	रेखायतु/रेखायतात्	रेखायताम्	रेखायन्तु
ह्य०	अरेखायत्	अरेखायताम्	अरेखायन्
अ०	अरेखायीत्	अरेखायिष्टाम्	अरेखायिषु:
प०	रेखायाञ्चकार	रेखायाञ्चक्रतु:	रेखायाञ्चक्रु:
	रेखायाम्बभूव/रेखायामास।		
आ०	रेखाय्यात्	रेखाय्यास्ताम्	रेखाय्यासु:
श्व०	रेखायिता	रेखायितारौ	रेखायितार:
भ०	रेखायिष्यति	रेखायिष्यत:	रेखायिष्यन्ति
क्रि०	अरेखायिष्यत्	अरेखायिष्यताम्	अरेखायिष्यन्

२०१८. लेखा विलासस्खलनयो:।

व०	लेखायति	लेखायत:	लेखायन्ति
स०	लेखायेत्	लेखायेताम्	लेखायेयु:
प०	लेखायतु/लेखायतात्	लेखायताम्	लेखायन्तु
ह्य०	अलेखायत्	अलेखायताम्	अलेखायन्
अ०	अलेखायीत्	अलेखायिष्टाम्	अलेखायिषु:
प०	लेखायाञ्चकार	लेखायाञ्चक्रतु:	लेखायाञ्चक्रु:
	लेखायाम्बभूव/लेखायामास।		
आ०	लेखाय्यात्	लेखाय्यास्ताम्	लेखाय्यासु:
श्व०	लेखायिता	लेखायितारौ	लेखायितार:
भ०	लेखायिष्यति	लेखायिष्यत:	लेखायिष्यन्ति
क्रि०	अलेखायिष्यत्	अलेखायिष्यताम्	अलेखायिष्यन्

२०१९. ऐला विलासे

व०	एलायति	एलायत:	एलायन्ति
स०	एलायेत्	एलायेताम्	एलायेयु:
प०	एलायतु/एलायतात्	एलायताम्	एलायन्तु
ह्य०	ऐलायत्	ऐलायताम्	ऐलायन्
अ०	ऐलायीत्	ऐलायिष्टाम्	ऐलायिषु:
प०	एलायाञ्चकार	एलायाञ्चक्रतु:	एलायाञ्चक्रु:
	एलायाम्बभूव/एलायामास।		
आ०	एलाय्यात्	एलाय्यास्ताम्	एलाय्यासु:
श्व०	एलायिता	एलायितारौ	एलायितार:
भ०	एलायिष्यति	एलायिष्यत:	एलायिष्यन्ति
क्रि०	ऐलायिष्यत्	ऐलायिष्यताम्	ऐलायिष्यन्

२०२०. वेला विलासे।

व०	वेलायति	वेलायत:	वेलायन्ति
स०	वेलायेत्	वेलायेताम्	वेलायेयु:
प०	वेलायतु/वेलायतात्	वेलायताम्	वेलायन्तु
ह्य०	अवेलायत्	अवेलायताम्	अवेलायन्
अ०	अवेलायीत्	अवेलायिष्टाम्	अवेलायिषु:
प०	वेलायाञ्चकार	वेलायाञ्चक्रतु:	वेलायाञ्चक्रु:
	वेलायाम्बभूव/वेलायामास।		
आ०	वेलाय्यात्	वेलाय्यास्ताम्	वेलाय्यासु:
श्व०	वेलायिता	वेलायितारौ	वेलायितार:
भ०	वेलायिष्यति	वेलायिष्यत:	वेलायिष्यन्ति
क्रि०	अवेलायिष्यत्	अवेलायिष्यताम्	अवेलायिष्यन्

२०२१. केला विलासे।

व०	केलायति	केलायत:	केलायन्ति
स०	केलायेत्	केलायेताम्	केलायेयु:
प०	केलायतु/केलायतात्	केलायताम्	केलायन्तु
ह्य०	अकेलायत्	अकेलायताम्	अकेलायन्
अ०	अकेलायीत्	अकेलायिष्टाम्	अकेलायिषु:
प०	केलायाञ्चकार	केलायाञ्चक्रतु:	केलायाञ्चक्रु:
	केलायाम्बभूव/केलायामास।		
आ०	केलाय्यात्	केलाय्यास्ताम्	केलाय्यासु:
श्व०	केलायिता	केलायितारौ	केलायितार:
भ०	केलायिष्यति	केलायिष्यत:	केलायिष्यन्ति
क्रि०	अकेलायिष्यत्	अकेलायिष्यताम्	अकेलायिष्यन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०२२. खेला विलासे।

व०	खेलायति	खेलायतः	खेलायन्ति
स०	खेलायेत्	खेलायेताम्	खेलायेयुः
प०	खेलायतु/खेलायतात्	खेलायताम्	खेलायन्तु
ह्य०	अखेलायत्	अखेलायताम्	अखेलायन्
अ०	अखेलायीत्	अखेलायिष्टाम्	अखेलायिषुः
प०	खेलायाञ्चकार	खेलायाञ्चक्रतुः	खेलायाञ्चक्रुः

खेलायाम्बभूव/खेलायामास।

आ०	खेलाय्यात्	खेलाय्यास्ताम्	खेलाय्यासुः
श्व०	खेलायिता	खेलायितारौ	खेलायितारः
भ०	खेलायिष्यति	खेलायिष्यतः	खेलायिष्यन्ति
क्रि०	अखेलायिष्यत्	अखेलायिष्यताम्	अखेलायिष्यन्

२०२३. गोधा आशुग्रहणे।

व०	गोधायति	गोधायतः	गोधायन्ति
स०	गोधायेत्	गोधायेताम्	गोधायेयुः
प०	गोधायतु/गोधायतात्	गोधायताम्	गोधायन्तु
ह्य०	अगोधायत्	अगोधायताम्	अगोधायन्
अ०	अगोधायीत्	अगोधायिष्टाम्	अगोधायिषुः
प०	गोधायाञ्चकार	गोधायाञ्चक्रतुः	गोधायाञ्चक्रुः

गोधायाम्बभूव/गोधायामास।

आ०	गोधाय्यात्	गोधाय्यास्ताम्	गोधाय्यासुः
श्व०	गोधायिता	गोधायितारौ	गोधायितारः
भ०	गोधायिष्यति	गोधायिष्यतः	गोधायिष्यन्ति
क्रि०	अगोधायिष्यत्	अगोधायिष्यताम्	अगोधायिष्यन्

२०२४. मेधा आशुग्रहणे।

व०	मेधायति	मेधायतः	मेधायन्ति
स०	मेधायेत्	मेधायेताम्	मेधायेयुः
प०	मेधायतु/मेधायतात्	मेधायताम्	मेधायन्तु
ह्य०	अमेधायत्	अमेधायताम्	अमेधायन्
अ०	अमेधायीत्	अमेधायिष्टाम्	अमेधायिषुः
प०	मेधायाञ्चकार	मेधायाञ्चक्रतुः	मेधायाञ्चक्रुः

मेधायाम्बभूव/मेधायामास।

आ०	मेधाय्यात्	मेधाय्यास्ताम्	मेधाय्यासुः
श्व०	मेधायिता	मेधायितारौ	मेधायितारः
भ०	मेधायिष्यति	मेधायिष्यतः	मेधायिष्यन्ति
क्रि०	अमेधायिष्यत्	अमेधायिष्यताम्	अमेधायिष्यन्

२०२५. मगध (मगध्) परिवेष्टने। नीचदास्य इत्यन्ये।

व०	मगध्यति	मगध्यतः	मगध्यन्ति
स०	मगध्येत्	मगध्येताम्	मगध्येयुः
प०	मगध्यतु/मगध्यतात्	मगध्यताम्	मगध्यन्तु
ह्य०	अमगध्यत्	अमगध्यताम्	अमगध्यन्
अ०	अमगधीत्	अमगधिष्टाम्	अमगधिषुः
प०	मगधाञ्चकार	मगधाञ्चक्रतुः	मगधाञ्चक्रुः

मगधाम्बभूव/मगधामास।

आ०	मगध्यात्	मगध्यास्ताम्	मगध्यासुः
श्व०	मगधिता	मगधितारौ	मगधितारः
भ०	मगधिष्यति	मगधिष्यतः	मगधिष्यन्ति
क्रि०	अमगधिष्यत्	अमगधिष्यताम्	अमगधिष्यन्

२०२६. इरध (इरध्) शरधारणे।

व०	इरध्यति	इरध्यतः	इरध्यन्ति
स०	इरध्येत्	इरध्येताम्	इरध्येयुः
प०	इरध्यतु/इरध्यतात्	इरध्यताम्	इरध्यन्तु
ह्य०	ऐरध्यत्	ऐरध्यताम्	ऐरध्यन्
अ०	ऐरधीत्	ऐरधिष्टाम्	ऐरधिषुः
प०	इरधाञ्चकार	इरधाञ्चक्रतुः	इरधाञ्चक्रुः

इरधाम्बभूव/इरधामास।

आ०	इरध्यात्	इरध्यास्ताम्	इरध्यासुः
श्व०	इरधिता	इरधितारौ	इरधितारः
भ०	इरधिष्यति	इरधिष्यतः	इरधिष्यन्ति
क्रि०	ऐरधिष्यत्	ऐरधिष्यताम्	ऐरधिष्यन्

२०२७. इषुध (इषुध्) शरधारणे।

व०	इषुध्यति	इषुध्यतः	इषुध्यन्ति
स०	इषुध्येत्	इषुध्येताम्	इषुध्येयुः
प०	इषुध्यतु/इषुध्यतात्	इषुध्यताम्	इषुध्यन्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्य० ऐषुध्यत्	ऐषुध्यताम्	ऐषुध्यन्
अ० ऐषुधीत्	ऐषुधिष्टाम्	ऐषुधिषुः
प० इषुधाञ्चकार	इषुधाञ्चक्रतुः	इषुधाञ्चक्रुः
इषुधाम्बभूव/इषुधामास।		
आ० इषुध्यात्	इषुध्यास्ताम्	इषुध्यासुः
श्व० इषुधिता	इषुधितारौ	इषुधितारः
भ० इषुधिष्यति	इषुधिष्यतः	इषुधिष्यन्ति
क्रि० ऐषुधिष्यत्	ऐषुधिष्यताम्	ऐषुधिष्यन्

२०२८. कुषुभ क्षेपे।

व० कुषुभ्यति	कुषुभ्यतः	कुषुभ्यन्ति
स० कुषुभ्येत्	कुषुभ्येताम्	कुषुभ्येयुः
प० कुषुभ्यतु/कुषुभ्यतात्	कुषुभ्यताम्	कुषुभ्यन्तु
ह्य० अकुषुभ्यत्	अकुषुभ्यताम्	अकुषुभ्यन्
अ० अकुषुभीत्	अकुषभिष्टाम्	अकुषभिषुः
प० कुषुभाञ्चकार	कुषुभाञ्चक्रतुः	कुषुभाञ्चक्रुः
कुषुभाम्बभूव/कुषुभामास।		
आ० कुषुभ्यात्	कुषुभ्यास्ताम्	कुषुभ्यासुः
श्व० कुषुभिता	कुषुभितारौ	कुषुभितारः
भ० कुषुभिष्यति	कुषुभिष्यतः	कुषुभिष्यन्ति
क्रि० अकुषुभिष्यत्	अकुषुभिष्यताम्	अकुषुभिष्यन्

श्रीहैमशब्दानुशासने (कुसुम्भ इति तद्रूपाणि कुषुम्भ्यति कुषुम्भ्यत इत्यादीनि। क्रियारत्नसमुच्चये तु (कुरुरु क्षेपे) इति

२०२९. सुख (सुख) तत्क्रियायाम्।

व० सुख्यति	सुख्यतः	सुख्यन्ति
स० सुख्येत्	सुख्येताम्	सुख्येयुः
प० सुख्यतु/सुख्यतात्	सुख्यताम्	सुख्यन्तु
ह्य० असुख्यत्	असुख्यताम्	असुख्यन्
अ० असुखीत्	असुखिष्टाम्	असुखिषुः
प० सुखाञ्चकार	सुखाञ्चक्रतुः	सुखाञ्चक्रुः
सुखाम्बभूव/सुखामास।		
आ० सुख्यात्	सुख्यास्ताम्	सुख्यासुः
श्व० सुखिता	सुखितारौ	सुखितारः
भ० सुखिष्यति	सुखिष्यतः	सुखिष्यन्ति
क्रि० असुखिष्यत्	असुखिष्यताम्	असुखिष्यन्

२०३०. दु:ख (दु:ख) तत्क्रियायाम्।

व० दु:ख्यति	दु:ख्यतः	दु:ख्यन्ति
स० दु:ख्येत्	दु:ख्येताम्	दु:ख्येयुः
प० दु:ख्यतु/दु:ख्यतात्	दु:ख्यताम्	दु:ख्यन्तु
ह्य० अदु:ख्यत्	अदु:ख्यताम्	अदु:ख्यन्
अ० अदु:खीत्	अदु:खिष्टाम्	अदु:खिषुः
प० दु:खाञ्चकार	दु:खाञ्चक्रतुः	दु:खाञ्चक्रुः
दु:खाम्बभूव/दु:खामास।		
आ० दु:ख्यात्	दु:ख्यास्ताम्	दु:ख्यादु::
श्व० दु:खिता	दु:खितारौ	दु:खितारः
भ० दु:खिष्यति	दु:खिष्यतः	दु:खिष्यन्ति
क्रि० अदु:खिष्यत्	अदु:खिष्यताम्	अदु:खिष्यन्

२०३१. अगद (अगद) निरोगत्वे।

व० अगद्यति	अगद्यतः	अगद्यन्ति
स० अगद्येत्	अगद्येताम्	अगद्येयुः
प० अगद्यतु/अगद्यतात्	अगद्यताम्	अगद्यन्तु
ह्य० आगद्यत्	आगद्यताम्	आगद्यन्
अ० आगदीत्	आगदिष्टाम्	आगदिषुः
प० अगदाञ्चकार	अगदाञ्चक्रतुः	अगदाञ्चक्रुः
अगदाम्बभूव/अगदामास।		
आ० अगद्यात्	अगद्यास्ताम्	अगद्यासुः
श्व० अगदिता	अगदितारौ	अगदितारः
भ० अगदिष्यति	अगदिष्यतः	अगदिष्यन्ति
क्रि० आगदिष्यत्	आगदिष्यताम्	आगदिष्यन्

२०३२. गद्गद (गद्गद्) वाक्स्खलने।

व० गद्गद्यति	गद्गद्यतः	गद्गद्यन्ति
स० गद्गद्येत्	गद्गद्येताम्	गद्गद्येयुः
प० गद्गद्यतु/गद्गद्यतात्	गद्गद्यताम्	गद्गद्यन्तु
ह्य० अगद्गद्यत्	अगद्गद्यताम्	अगद्गद्यन्
अ० अगद्गदीत्	अगद्गदिष्टाम्	अगद्गदिषुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प०	गद्गदाञ्चकार	गद्गदाञ्चक्रतुः	गद्गदाञ्चक्रुः
	गद्गदाम्बभूव/गद्गदामास।		
आ०	गद्गद्यात्	गद्गद्यास्ताम्	गद्गद्यासुः
श्व०	गद्गदिता	गद्गदितारौ	गद्गदितारः
भ०	गद्गदिष्यति	गद्गदिष्यतः	गद्गदिष्यन्ति
क्रि०	अगद्गदिष्यत्	अगद्गदिष्यताम्	अगद्गदिष्यन्

२०३३. तरण (तरण्) गतौ।

व०	तरण्यति	तरण्यतः	तरण्यन्ति
स०	तरण्येत्	तरण्येताम्	तरण्येयुः
प०	तरण्यतु/तरण्यतात्	तरण्यताम्	तरण्यन्तु
ह्य०	अतरण्यत्	अतरण्यताम्	अतरण्यन्
अ०	अतरणीत्	अतरणिष्टाम्	अतरणिषुः
प०	तरणाञ्चकार	तरणाञ्चक्रतुः	तरणाञ्चक्रुः
	तरणाम्बभूव/तरणामास।		
आ०	तरण्यात्	तरण्यास्ताम्	तरण्यासुः
श्व०	तरणिता	तरणितारौ	तरणितारः
भ०	तरणिष्यति	तरणिष्यतः	तरणिष्यन्ति
क्रि०	अतरणिष्यत्	अतरणिष्यताम्	अतरणिष्यन्

२०३४. वरण (वरण्) गतौ।

व०	वरण्यति	वरण्यतः	वरण्यन्ति
स०	वरण्येत्	वरण्येताम्	वरण्येयुः
प०	वरण्यतु/वरण्यतात्	वरण्यताम्	वरण्यन्तु
ह्य०	अवरण्यत्	अवरण्यताम्	अवरण्यन्
अ०	अवरणीत्	अवरणिष्टाम्	अवरणिषुः
प०	वरणाञ्चकार	वरणाञ्चक्रतुः	वरणाञ्चक्रुः
	वरणाम्बभूव/वरणामास।		
आ०	वरण्यात्	वरण्यास्ताम्	वरण्यासुः
श्व०	वरणिता	वरणितारौ	वरणितारः
भ०	वरणिष्यति	वरणिष्यतः	वरणिष्यन्ति
क्रि०	अवरणिष्यत्	अवरणिष्यताम्	अवरणिष्यन्

२०३५. उरण (उरण्) त्वरायाम्

व०	उरण्यति	उरण्यतः	उरण्यन्ति
स०	उरण्येत्	उरण्येताम्	उरण्येयुः
प०	उरण्यतु/उरण्यतात्	उरण्यताम्	उरण्यन्तु
ह्य०	औरण्यत्	औरण्यताम्	औरण्यन्
अ०	औरणीत्	औरणिष्टाम्	औरणिषुः
प०	उरणाञ्चकार	उरणाञ्चक्रतुः	उरणाञ्चक्रुः
	उरणाम्बभूव/उरणामास।		
आ०	उरण्यात्	उरण्यास्ताम्	उरण्यासुः
श्व०	उरणिता	उरणितारौ	उरणितारः
भ०	उरणिष्यति	उरणिष्यतः	उरणिष्यन्ति
क्रि०	औरणिष्यत्	औरणिष्यताम्	औरणिष्यन्

२०३६. तुरण (तुरण्) त्वरायाम्।

व०	तुरण्यति	तुरण्यतः	तुरण्यन्ति
स०	तुरण्येत्	तुरण्येताम्	तुरण्येयुः
प०	तुरण्यतु/तुरण्यतात्	तुरण्यताम्	तुरण्यन्तु
ह्य०	अतुरण्यत्	अतुरण्यताम्	अतुरण्यन्
अ०	अतुरणीत्	अतुरणिष्टाम्	अतुरणिषुः
प०	तुरणाञ्चकार	तुरणाञ्चक्रतुः	तुरणाञ्चक्रुः
	तुरणाम्बभूव/तुरणामास।		
आ०	तुरण्यात्	तुरण्यास्ताम्	तुरण्यासुः
श्व०	तुरणिता	तुरणितारौ	तुरणितारः
भ०	तुरणिष्यति	तुरणिष्यतः	तुरणिष्यन्ति
क्रि०	अतुरणिष्यत्	अतुरणिष्यताम्	अतुरणिष्यन्

२०३७. पुरण (पुरण्) गतौ।

व०	पुरण्यति	पुरण्यतः	पुरण्यन्ति
स०	पुरण्येत्	पुरण्येताम्	पुरण्येयुः
प०	पुरण्यतु/पुरण्यतात्	पुरण्यताम्	पुरण्यन्तु
ह्य०	अपुरण्यत्	अपुरण्यताम्	अपुरण्यन्
अ०	अपुरणीत्	अपुरणिष्टाम्	अपुरणिषुः
प०	पुरणाञ्चकार	पुरणाञ्चक्रतुः	पुरणाञ्चक्रुः
	पुरणाम्बभूव/पुरणामास।		
आ०	पुरण्यात्	पुरण्यास्ताम्	पुरण्यासुः
श्व०	पुरणिता	पुरणितारौ	पुरणितारः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ० पुरणिष्यति पुरणिष्यतः पुरणिष्यन्ति

क्रि० अपुरणिष्यत् अपुरणिष्यताम् अपुरणिष्यन्

२०३८. भुरण (भुरण्) धारणपोषणयुद्धेषु।

व० भुरण्यति भुरण्यतः भुरण्यन्ति

स० भुरण्येत् भुरण्येताम् भुरण्येयुः

प० भुरण्यतु/भुरण्यतात् भुरण्यताम् भुरण्यन्तु

ह्य० अभुरण्यत् अभुरण्यताम् अभुरण्यन्

अ० अभुरणीत् अभुरणिष्टाम् अभुरणिषुः

प० भुरणाञ्चकार भुरणाञ्चक्रतुः भुरणाञ्चक्रुः

भुरणाम्बभूव/भुरणामास।

आ० भुरण्यात् भुरण्यास्ताम् भुरण्यासुः

श्व० भुरणिता भुरणितारौ भुरणितारः

भ० भुरणिष्यति भुरणिष्यतः भुरणिष्यन्ति

क्रि० अभुरणिष्यत् अभुरणिष्यताम् अभुरणिष्यन्

क्रियारत्नसमुच्चयकृन्मतानुसारेण निम्नलिखितरूपाणि-इति तत्थाने वुरण्यतीत्यादीनि लेख्यानि। पश्चात् चुरण्यतीत्याद्यपि केचिदिति लेख्यम्।

२०३९. चुरण (चुरण्) मतिचौर्ययोः।

व० चुरण्यति चुरण्यतः चुरण्यन्ति

चुरण्यसि चुरण्यथः चुरण्यथ

चुरण्यामि चुरण्यावः चुरण्यामः

स० चुरण्येत् चुरण्येताम् चुरण्येयुः

चुरण्येः चुरण्येतम् चुरण्येत

चुरण्येयम् चुरण्येव चुरण्येम

प० चुरण्यतु/चुरण्यतात् चुरण्यताम् चुरण्यन्तु

चुरण्य/चुरण्यतात् चुरण्यतम् चुरण्यत

चुरण्यानि चुरण्याव चुरण्याम

ह्य० अचुरण्यत् अचुरण्यताम् अचुरण्यन्

अचुरण्यः अचुरण्यतम् अचुरण्यत

अचुरण्यम् अचुरण्याव अचुरण्याम

अ० अचुरणीत् अचुरणिष्टाम् अचुरणिषुः

अचुरणीः अचुरणिष्टम् अचुरणिष्ट

अचुरणिषम् अचुरणिष्व अचुरणिष्म

प० चुरणाञ्चकार चुरणाञ्चक्रतुः चुरणाञ्चक्रुः

चुरणाञ्चकर्थ चुरणाञ्चक्रथुः चुरणाञ्चक्र

चुरणाञ्चकार/चकर चुरणाञ्चकृव चुरणाञ्चकृम

चुरणाम्बभूव/चुरणामास।

आ० चुरण्यात् चुरण्यास्ताम् चुरण्यासुः

चुरण्याः चुरण्यास्तम् चुरण्यास्त

चुरण्यासम् चुरण्यास्व चुरण्यास्म

श्व० चुरणिता चुरणितारौ चुरणितारः

चुरणितासि चुरणितास्थः चुरणितास्थ

चुरणितास्मि चुरणितास्वः चुरणितास्मः

भ० चुरणिष्यति चुरणिष्यतः चुरणिष्यन्ति

चुरणिष्यसि चुरणिष्यथः चुरणिष्यथ

चुरणिष्यामि चुरणिष्यावः चुरणिष्यामः

क्रि० अचुरणिष्यत् अचुरणिष्यताम् अचुरणिष्यन्

अचुरणिष्यः अचुरणिष्यतम् अचुरणिष्यत

अचुरणिष्यम् अचुरणिष्याव अचुरणिष्याम

हैमशब्दानुशासने वुरण इति। वुरण्यति वुरण्यतः इत्यादि।

२०४०. भरण (भरण्) प्रसिद्धार्थः।

व० भरण्यति भरण्यतः भरण्यन्ति

भरण्यसि भरण्यथः भरण्यथ

भरण्यामि भरण्यावः भरण्यामः

स० भरण्येत् भरण्येताम् भरण्येयुः

भरण्येः भरण्येतम् भरण्येत

भरण्येयम् भरण्येव भरण्येम

प० भरण्यतु/भरण्यतात् भरण्यताम् भरण्यन्तु

भरण्य/भरण्यतात् भरण्यतम् भरण्यत

भरण्यानि भरण्याव भरण्याम

ह्य० अभरण्यत् अभरण्यताम् अभरण्यन्

अभरण्यः अभरण्यतम् अभरण्यत

अभरण्यम् अभरण्याव अभरण्याम

अ० अभरणीत् अभरणिष्टाम् अभरणिषुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अभरणीः	अभरणिष्टम्	अभरणिष्ट
	अभरणिषम्	अभरणिष्व	अभरणिष्म
प०	भरणाञ्चकार	भरणाञ्चक्रतुः	भरणाञ्चक्रुः
	भरणाञ्चकर्थ	भरणाञ्चक्रथुः	भरणाञ्चक्र
	भरणाञ्चकार/चकर	भरणाञ्चकृव	भरणाञ्चकृम
	भरणाम्बभूव/भरणामास।		
आ०	भरण्यात्	भरण्यास्ताम्	भरण्यासुः
	भरण्याः	भरण्यास्तम्	भरण्यास्त
	भरण्यासम्	भरण्यास्व	भरण्यास्म
श्व०	भरणिता	भरणितारौ	भरणितारः
	भरणितासि	भरणितास्थः	भरणितास्थ
	भरणितास्मि	भरणितास्वः	भरणितास्मः
भ०	भरणिष्यति	भरणिष्यतः	भरणिष्यन्ति
	भरणिष्यसि	भरणिष्यथः	भरणिष्यथ
	भरणिष्यामि	भरणिष्यावः	भरणिष्यामः
क्रि०	अभरणिष्यत्	अभरणिष्यताम्	अभरणिष्यन्
	अभरणिष्यः	अभरणिष्यतम्	अभरणिष्यत
	अभरणिष्यम्	अभरणिष्याव	अभरणिष्याम

२०४१. तपुस (तपुस्) दुःखार्थः।

व०	तपुस्यति	तपुस्यतः	तपुस्यन्ति
	तपुस्यसि	तपुस्यथः	तपुस्यथ
	तपुस्यामि	तपुस्यावः	तपुस्यामः
स०	तपुस्येत्	तपुस्येताम्	तपुस्येयुः
	तपुस्येः	तपुस्येतम्	तपुस्येत
	तपुस्येयम्	तपुस्येव	तपुस्येम
प०	तपुस्यतु/तपुस्यतात्	तपुस्यताम्	तपुस्यन्तु
	तपुस्य/तपुस्यतात्	तपुस्यतम्	तपुस्यत
	तपुस्यानि	तपुस्याव	तपुस्याम
ह्य०	अतपुस्यत्	अतपुस्यताम्	अतपुस्यन्
	अतपुस्यः	अतपुस्यतम्	अतपुस्यत
	अतपुस्यम्	अतपुस्याव	अतपुस्याम
अ०	अतपुसीत्	अतपुसिष्टाम्	अतपुसिषुः
	अतपुसीः	अतपुसिष्टम्	अतपुसिष्ट
	अतपुसिषम्	अतपुसिष्व	अतपुसिष्म
प०	तपुसाञ्चकार	तपुसाञ्चक्रतुः	तपुसाञ्चक्रुः
	तपुसाञ्चकर्थ	तपुसाञ्चक्रथुः	तपुसाञ्चक्र
	तपुसाञ्चकार/कर	तपुसाञ्चकृव	तपुसाञ्चकृम
	तपुसाम्बभूव/तपुसामास।		
आ०	तपुस्यात्	तपुस्यास्ताम्	तपुस्यासुः
	तपुस्याः	तपुस्यास्तम्	तपुस्यास्त
	तपुस्यासम्	तपुस्यास्व	तपुस्यास्म
श्व०	तपुसिता	तपुसितारौ	तपुसितारः
	तपुसितासि	तपुसितास्थः	तपुसितास्थ
	तपुसितास्मि	तपुसितास्वः	तपुसितास्मः
भ०	तपुसिष्यति	तपुसिष्यतः	तपुसिष्यन्ति
	तपुसिष्यसि	तपुसिष्यथः	तपुसिष्यथ
	तपुसिष्यामि	तपुसिष्यावः	तपुसिष्यामः
क्रि०	अतपुसिष्यत्	अतपुसिष्यताम्	अतपुसिष्यन्
	अतपुसिष्यः	अतपुसिष्यतम्	अतपुसिष्यत
	अतपुसिष्यम्	अतपुसिष्याव	अतपुसिष्याम

२०४२. तम्पस (तम्पस्) दुःखार्थः।

व०	तम्पस्यति	तम्पस्यतः	तम्पस्यन्ति
	तम्पस्यसि	तम्पस्यथः	तम्पस्यथ
	तम्पस्यामि	तम्पस्यावः	तम्पस्यामः
स०	तम्पस्येत्	तम्पस्येताम्	तम्पस्येयुः
	तम्पस्येः	तम्पस्येतम्	तम्पस्येत
	तम्पस्येयम्	तम्पस्येव	तम्पस्येम
प०	तम्पस्यतु/तम्पस्यतात्	तम्पस्यताम्	तम्पस्यन्तु
	तम्पस्य/तम्पस्यतात्	तम्पस्यतम्	तम्पस्यत
	तम्पस्यानि	तम्पस्याव	तम्पस्याम
ह्य०	अतम्पस्यत्	अतम्पस्यताम्	अतम्पस्यन्
	अतम्पस्यः	अतम्पस्यतम्	अतम्पस्यत
	अतम्पस्यम्	अतम्पस्याव	अतम्पस्याम
अ०	अतम्पसीत्	अतम्पसिष्टाम्	अतम्पसिषुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	अतम्पसीः	अतम्पसिष्टम्	अतम्पसिष्ट
	अतम्पसिषम्	अतम्पसिष्व	अतम्पसिष्म
प०	तम्पसाञ्चकार	तम्पसाञ्चक्रतुः	तम्पसाञ्चक्रुः
	तम्पसाञ्चकर्थ	तम्पसाञ्चक्रथुः	तम्पसाञ्चक्र
	तम्पसाञ्चकार/कर	तम्पसाञ्चकृव	तम्पसाञ्चकृम
	तम्पसाम्बभूव/तम्पसामास।		
आ०	तम्पस्यात्	तम्पस्यास्ताम्	तम्पस्यासुः
	तम्पस्याः	तम्पस्यास्तम्	तम्पस्यास्त
	तम्पस्यासम्	तम्पस्यास्व	तम्पस्यास्म
श्व०	तम्पसिता	तम्पसितारौ	तम्पसितारः
	तम्पसितासि	तम्पसितास्थः	तम्पसितास्थ
	तम्पसितास्मि	तम्पसितास्वः	तम्पसितास्मः
भ०	तम्पसिष्यति	तम्पसिष्यतः	तम्पसिष्यन्ति
	तम्पसिष्यसि	तम्पसिष्यथः	तम्पसिष्यथ
	तम्पसिष्यामि	तम्पसिष्यावः	तम्पसिष्यामः
क्रि०	अतम्पसिष्यत्	अतम्पसिष्यताम्	अतम्पसिष्यन्
	अतम्पसिष्यः	अतम्पसिष्यतम्	अतम्पसिष्यत
	अतम्पसिष्यम्	अतम्पसिष्याव	अतम्पसिष्याम

तन्तस पस्यस इत्यन्यत्र।

२०४३. अरर (अरर्) आराकर्मणि।

व०	अरर्यति	अरर्यतः	अरर्यन्ति
	अरर्यसि	अरर्यथः	अरर्यथ
	अरर्यामि	अरर्यावः	अरर्यामः
स०	अरर्येत्	अरर्येताम्	अरर्येयुः
	अरर्येः	अरर्येतम्	अरर्येत
	अरर्येयम्	अरर्येव	अरर्येम
प०	अरर्यतु/अरर्यतात्	अरर्यताम्	अरर्यन्तु
	अरर्य/अरर्यतात्	अरर्यतम्	अरर्यत
	अरर्याणि	अरर्याव	अरर्याम
ह्य०	आरर्यत्	आरर्यताम्	आरर्यन्
	आरर्यः	आरर्यतम्	आरर्यत
	आरर्यम्	आरर्याव	आरर्याम
अ०	आररीत्	आररिष्टाम्	आररिषुः
	आररीः	आररिष्टम्	आररिष्ट
	आररिषम्	आररिष्व	आररिष्म
प०	अरराञ्चकार	अरराञ्चक्रतुः	अरराञ्चक्रुः
	अरराञ्चकर्थ	अरराञ्चक्रथुः	अरराञ्चक्र
	अरराञ्चकार/कर	अरराञ्चकृव	अरराञ्चकृम
	अरराम्बभूव/अररामास।		
आ०	अरर्यात्	अरर्यास्ताम्	अरर्यासुः
	अरर्याः	अरर्यास्तम्	अरर्यास्त
	अरर्यासम्	अरर्यास्व	अरर्यास्म
श्व०	अररिता	अररितारौ	अररितारः
	अररितासि	अररितास्थः	अररितास्थ
	अररितास्मि	अररितास्वः	अररितास्मः
भ०	अररिष्यति	अररिष्यतः	अररिष्यन्ति
	अररिष्यसि	अररिष्यथः	अररिष्यथ
	अररिष्यामि	अररिष्यावः	अररिष्यामः
क्रि०	आररिष्यत्	आररिष्यताम्	आररिष्यन्
	आररिष्यः	आररिष्यतम्	आररिष्यत
	आररिष्यम्	आररिष्याव	आररिष्याम

२०४४. सपर (सपर्) पूजायाम्

व०	सपर्यति	सपर्यतः	सपर्यन्ति
	सपर्यसि	सपर्यथः	सपर्यथ
	सपर्यामि	सपर्यावः	सपर्यामः
स०	सपर्येत्	सपर्येताम्	सपर्येयुः
	सपर्येः	सपर्येतम्	सपर्येत
	सपर्येयम्	सपर्येव	सपर्येम
प०	सपर्यतु/सपर्यतात्	सपर्यताम्	सपर्यन्तु
	सपर्य/सपर्यतात्	सपर्यतम्	सपर्यत
	सपर्याणि	सपर्याव	सपर्याम
ह्य०	असपर्यत्	असपर्यताम्	असपर्यन्
	असपर्यः	असपर्यतम्	असपर्यत
	असपर्यम्	असपर्याव	असपर्याम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ०	असपरीत्	असपरिष्टाम्	असपरिषुः
	असपरीः	असपरिष्टम्	असपरिष्ट
	असपरिषम्	असपरिष्व	असपरिष्म
प०	सपराञ्चकार	सपराञ्चक्रतुः	सपराञ्चक्रुः
	सपराञ्चकर्थ	सपराञ्चक्रथुः	सपराञ्चक्र
	सपराञ्चकार/कर	सपराञ्चकृव	सपराञ्चकृम
	सपराम्बभूव/सपरामास।		
आ०	सपर्यात्	सपर्यास्ताम्	सपर्यासुः
	सपर्याः	सपर्यास्तम्	सपर्यास्त
	सपर्यासम्	सपर्यास्व	सपर्यास्म
श्व०	सपरिता	सपरितारौ	सपरितारः
	सपरितासि	सपरितास्थः	सपरितास्थ
	सपरितास्मि	सपरितास्वः	सपरितास्मः
भ०	सपरिष्यति	सपरिष्यतः	सपरिष्यन्ति
	सपरिष्यसि	सपरिष्यथः	सपरिष्यथ
	सपरिष्यामि	सपरिष्यावः	सपरिष्यामः
क्रि०	असपरिष्यत्	असपरिष्यताम्	असपरिष्यन्
	असपरिष्यः	असपरिष्यतम्	असपरिष्यत
	असपरिष्यम्	असपरिष्याव	असपरिष्याम

२०४५. समर (समर्) युद्धे।

व०	समर्यति	समर्यतः	समर्यन्ति
स०	समर्येत्	समर्येताम्	समर्येयुः
प०	समर्यतु/समर्यतात्	समर्यताम्	समर्यन्तु
ह्य०	असमर्यत्	असमर्यताम्	असमर्यन्
अ०	असमरीत्	असमरिष्टाम्	असमरिषुः
प०	समराञ्चकार	समराञ्चक्रतुः	समराञ्चक्रुः
	समराम्बभूव/समरामास।		
आ०	समर्यात्	समर्यास्ताम्	समर्यासुः
श्व०	समरिता	समरितारौ	समरितारः
भ०	समरिष्यति	समरिष्यतः	समरिष्यन्ति
क्रि०	असमरिष्यत्	असमरिष्यताम्	असमरिष्यन्

इति कड्ण्वादयः।

२०४६ अन्दोलण् २०४७ प्रेंखोलण् अन्दोलने २०४८ वीजण् वीजने। एते त्रयोऽप्यदन्ताः। बहुलवचनात्स्वार्थे णिचि अन्दोलयति अन्दोलयेत अन्दोलयतु आन्दोलयत् आन्दुदोलत् अन्दोलयाञ्चकार अन्दोलयाम्बभूव अन्दोल्यात् अन्दोलयिता अन्दोलयिष्यति। आन्दोलयिष्यत्। प्रेङ्खोलयति प्रेङ्खोलयेत् प्रेङ्खोलयतु अप्रेङ्खोलयत् अपिप्रेङ्खोलत् प्रेङ्खोलयाञ्चकार प्रेङ्खोलयाम्बभूव प्रेङ्खोलयामास प्रेङ्खोल्यात् प्रेङ्खोलयिता प्रेङ्खोलयिष्यति अप्रेङ्खोलयिष्यत्। वीयजति वीजयेत् वीजयतु अवीजयत्। अविवीजत् वीजयाञ्चकार वीजयाम्बभूव। वीजयामास वीज्यात्, विजयिता वीजयिष्यति अवीजयिष्यत्।।

२०४९ रिरिर्लिखेः समानार्थः। रेखति चित्रकृत्। अरेखीत्

२०५० लुल कम्पने। लोलति। अलोलीत्।।

२०५१ चुलुम्प चुलुम्पति, चुलुम्पेत् चुलुम्पतु अचुलुम्पत् अचुलुम्पीत् चुलुम्पाञ्चकार चुलुम्पाम्बभूव चुलुम्पामास चुलुम्प्यात् चुलुम्पिता चुलुम्पिष्यति, अचुलुम्पिष्यत्।

श्रीमत्तपोगणगगनाङ्गणगगनमणि सार्वसार्वज्ञशासनसार्वभौम-
तीर्थरक्षणपरायण-विद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधक-संविग्न-
शाखीय-आचार्यचूडामणि-अखण्ड विजयश्रीमद्गुरुराज-
श्रीविजयने मिसूरीश्वचरणेन्दिरामन्दिरेन्दिन्दि-रायमाणान्तिषन्
मुनिलावण्य विजयविरचिते धातुरत्नाकरे नव-गणातिरिक्त-
लौकिकसौत्रवाक्यकरणीयधातूनां रूपाणि समाप्तानि।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥सेट् अनिट्कारिका:॥

यद्यपि धातुपाठेत्वेव सेट्त्वानिट्त्वज्ञापकानि अनुबन्धविशेषरूपाणि चिह्नानि सङ्गतानि तथापि सामान्यतया तत्स्वरूपावगतये शिष्यबुद्धिवैशद्यकारिका: कारिका: पूर्वाचार्याया: प्रतिपाद्यन्ते विव्रियन्ते च।

अथ सेट्त्वमनिट्त्वञ्च किं नामेति चेदुच्यते। इटा टकारस्यानुबन्धत्वाद् इकारेण सह वर्त्तते इति सेट् तस्य भाव: सेट्त्वम् न विद्यते इट् इकारो यस्य सोऽनिट् तस्य भावोऽनिट्त्वम्।

अत्रायं निष्कर्ष:-येभ्यो धातुभ्य: परतो विधीयमाना: शित्संज्ञकभिन्नत्रोणादिभिन्नसकारादितकारादिप्रत्यया विशेषविधानं विहायादौ इकाररूपमिडागमं नित्यं गृह्णन्ति ते सेट:। ये न गृह्णन्ति तेऽनिट:। सेट्त्वानिट्त्वे च यद्यपि स्ताद्यशितोऽत्रोणादेरिति प्रत्ययस्यादौ विधानत्प्रत्ययस्यैव तथाप्युपचारेण धातोरपि। इह तावद्धातवो द्विधा स्वरान्ता व्यञ्जनान्ताश्चेति। तव सूचिकटाहन्यायेनाल्पत्वादौ स्वरान्तानां सेट्त्वानिट्त्वे विवेच्य तदनु व्यञ्जनान्तानां विवेचयति तत्रपि ग्रन्थलाघवार्थं स्वरान्तेषु सेट्धातुन् निर्दिश्य तद्व्यतिरेकेणानिटो व्यञ्जनान्तेषु अनिट्वातून् निर्दिश्य तद्व्यतिरेकेण सेटश्च दर्शयति।

श्विश्रिडीशीयुरुक्षुक्ष्णु-णुस्नुभ्यश्च वृगो वृङ:।
ऊदृदन्तयुजादिभ्य: स्वरान्ता धातव: परे॥१॥
पाठ एकस्वरा: स्युर्येऽनुस्वारेत इमे स्मृता:।

ये पाठे धातुपाठे धातुपाठोपदेशावस्थायामित्यर्थ:। न तु द्विर्भावादौ। एकस्वरा एक एव स्वरो येषु ते एकस्वरा:। तथा अनुस्वारेत: एति अपगच्छतीति इत् प्रयोगकालेऽनवस्थायीत्यर्थ:। अनुस्वार इत् येषु ते अनुस्वारेत:। तादृशा ये धातव: स्युस्ते इमे अभ्यस्ततमतया बुद्धिस्थत्वेन प्रत्यक्षा धातव:। अनिट इति पदमन्त्यकारिकान्तस्थमप्यत्र योज्यम्। स्मृता:। अर्थात्। धातुपाठोपदेशावस्थायां ये एकस्वरा अनुस्वारेनश्च भवेयुस्तेऽनिटो धातवो विज्ञेषा:। इदं च स्वरान्तव्यञ्जनान्तसाधारणं लक्षणं तेनोभयत्र योज्यम्। परे एतत्प्रथमकारिकोक्तेभ्योऽन्ये ये केचन स्वरान्ता एकस्वरा अनुस्वारेतश्च धातवस्ते सर्वेऽपि अनिट:। अस्यां कारिकायां चोक्ता: स्वरान्ता: धातव: सर्वेऽपि सेट:।

एवं निम्ननिदर्शिता व्यञ्जनान्ता एकस्वरा अनुस्वारेतश्च धातवोऽनिट:। तद्व्यतिरिक्ता व्यञ्जनान्ता: सेटच। इमे द्विविधा अपि धातवो ये औदितो न भवेयुस्ते ग्राह्या: औदितानामनुबन्धफलप्रतिपादकप्रकरणे वेट्त्वाभिधानात्। केभ्य: परे। श्विश्रिडीशीयुरुक्षुक्ष्णुस्नुज्य: वृग: वृङ: उदृदन्तयुजादिभ्य:। अत्र वृद्ध्यर्थत्वेन माङ्गलिकत्वादादौ श्विघातोर्ग्रहणम्। ९९७ ट्वोश्वि (श्वि) गतिवृद्ध्यो:। ८८३ श्रिग् (श्रि) सेवायाम्। ५८८ डीङ् (डी) विहायसां गतौ। १२४९ डीङ्च् (डी) गतौ। ११०५ शीङ्क् (शी) स्वप्ने। यु-इति सामान्यनिर्देशेऽपि रुक्षुप्रभृतिसाहचर्यात्। १०८० युक् (यु) मिश्रणे इत्यस्यैव ग्रहणम् न तु १५१३ युंग्श् (यु) बन्धने इत्यस्यग् १८०४ युणि (यु) जुगुप्सायामित्यस्य तु चौरादिकत्वादनेकस्वरत्वेन स्वत एव सेट्त्वम्। रु-इति सामान्यनिर्देशेऽपि क्षुप्रभृतिसाहचर्यात् १०८५ रुक् (रु) शब्दे इत्यस्यैव ग्रहणं न तु ५९९ रुंङ् (रु) रेषणे च इत्यस्य् १०८४ टुक्षुक् (क्षु) शब्दे। १०८२ क्ष्णुक (क्ष्णु) तेजने। १०८१ णुक् (नु) स्तुतौ। १०८३ स्नुक् (स्नु) प्रस्नवने। १२९४ वृग्ट् (वृ) वरणे। १५६७ वृङ्श् (वृ) सम्भक्तौ। १९४५ वृग्ण् (वृ) आवरणे इत्यस्य तु युजादिपाठे एव समावेश:। ऊकार एव ऊत् ॠकार एव ॠत् ऊच्च ॠच्च ऊदृतौ तौ अन्ते एषामिति ऊदृदन्ता: ऊकारान्ता भूप्रभृतय: ॠकारान्ता नप्रभृत्य:। युजादयो युजादिगणपठिता। इमे- १९४३ लीण् (ली) द्रवीकरणे। १९४४ (मीण) मतौ। १९४५ प्रीगण् (प्री) तर्पणे। १९४६ धूग्ण् (धू) कम्पने। अस्य ऊकारान्तत्वेनापि सेट्त्वम्। १९४७ वृग्ण् (वृ) आवरणे। १९४८ जॄण् (जॄ) वयोहानौ। अस्य ॠकारान्तत्वेनापि सेट्त्वम्। इमे सर्वेऽप्युक्ता: स्वरान्ता: सेट:। तद्व्यतिरिक्ता: स्वरान्ता अनिट:। अथ व्यञ्जनान्तानिटो नामग्राहं दर्शयति-

द्विविधोऽपि शक्छिवं वचिर्विचिरिचो पचि:॥२॥

सिज्जतिर्मुचिरतोऽपि पृच्छतिर्भ्रस्जिमस्जिश्रुजयो युजिर्यजि:।

ष्वञ्जिरञ्जिरुजयो णिजिविजृषञ्जिभञ्जिभजय: सृजित्यजी॥३॥

स्कन्दिविद्यविद्लृविन्त्सयो नुदि: स्विद्यति: शदिसदी भिदिच्छिदी।

तुद्यदी पदिह्रदी स्विदीक्षुदी राधिसाधिशुधयो युधिव्यधी॥४॥

बन्धबुध्यरुधय: क्रुधिक्षुधी सिध्यतिस्तदनु हन्तिमन्यती।

आधिना तपिशपिक्षिपिच्छुपो लुम्पतिः सृपिलिपी वपिस्वपीः॥५॥

यभिरभिलभियमिरमिनमिगमयः

क्रुशिलिशिरुशिदिशदिशितिदशयः

स्पृशिमृशतिविशतिदृशिशिष्लृशुष-

यस्त्विषिपिषिविष्लृकृषितुषिदुषिपुषयः॥६॥

श्लिष्यतिर्द्विषिरतो घसिवसती रोहतिर्लुहिरिही अनिड्गदितौ।

देग्धिदोग्धिलिहयो मिहिवहती नह्यतिर्दाहरितिस्फुटमनिटः॥७॥

१२८० शकींच् (शक्) मर्षणे। १३०० शक्लृंट (शक्) शक्तौ। अत्र शक्धातुरेव शकिः। इकिश्तिव् स्वरूपार्थे। ५/३/१३८॥ इति स्वरूपे इप्रत्यये किप्रत्यये वा रूपम् एवमग्रेतनधातुषु यथायोगं स्वरूपार्थे इप्रत्ययः किप्रत्ययः श्तिव्प्रत्यय इति ज्ञेयम्। १०९६ वचंक् (वच्) भाषणे। ११२५ ब्रूंगृक् (ब्रू) व्यक्तायां वाचि इत्यस्य यो वच्-आदेशस्तस्य लाक्षणिकत्वेऽपि अत्र ग्रहणम्। अत एवास्य ब्रूधातोरूकारान्तत्वेन सेट्त्वप्राप्तावपि धातुपाठे सानुस्वारनिर्देशेनानिट्त्वं प्रतिपादितम्। १९५४ वचण् (वच्) पृथग्भावे।। १४७४ रिचृंपी (रिच्) विरेचने। १९५३ रिचण् (रिच्) वियोजने च इत्यस्य तु युजादिपाठात्सेटत्वमेव। ८९२ डुपचींष् (पच्) पाके। १३२१ षिंचीत् (सिच्) क्षरणे। अस्य स्वरूपश्तिव् प्रत्यये सिञ्चातिरिति रूपम्। १३२० मुचॢंती (मुच्) मोक्षणे। १७३१ मुचण् (मुच्) प्रमोचने इत्यस्य चौरादिकत्वादनेकस्वरत्वेन सेट्त्वमेव १३४७ प्रछंत् (प्रच्छ्) ज्ञीप्सायाम्। १३१६ भ्रस्जींत् (भ्रस्ज्) पाके। १३५२ टुमस्जींत् (मस्ज्-मज्ज्) शुद्धौ। १३५१ भुजींत् (भुज्) कौटिल्ये। १४८७ भुजंप् (भुज्) पालनाभ्यवहारयोः। १२४८ युजिंच् (युज्) समाधौ। १४७६ युजृं पी (युज्) योगे।१९४२ युजण् (युज्) संपर्चने इत्यस्य तु युजादिपाठात्सेट्त्वमेव् ९९१ यजीं (यज्) देवपूजासंगतिकरणदानेषु। १४७१ ष्वञ्जिंत् (स्वञ्ज्) सङ्गे। ८९६ रञ्जीं (रञ्ज्) रागे।। १२८२ रञ्जींच् (रञ्ज्) रागे। १३५० रुजींत् (रुज्) भङ्गे। १५९२ रुजण् (रुज्) हिंसायाम् अस्य तु चौरादिकत्वादनेकस्वरत्वेन सेट्त्वमेव। ११४१ णिजृंकी निज् शौचे च। ११४२ विजृंकी (विज्) पृथग्भावे। विजृ इति ऋकारसहितग्रहणादस्यैव विज् धातोर्ग्रहणम्। न तु १४६८ ओविजैति (विज्) भयचलनयोरित्यस्य १४८९ औविजैप् (विज्) भयचलनयोरित्यस्य च। ननु अत्यन्तान्तिकस्थनिज्-साहचर्यादभिमतस्यैव ग्रहणे किं पुनः ऋकारसहितनिर्देश इति चेत्साहचर्यपरिभाषाया अनित्यत्वसूचनार्थमेतत्तेन शद्सहचारतासहचरितयोः सदोरत्र प्रकरणे ग्रहणम्। १७३ षंञ्ज् (सञ्ज्) सङ्गे। १४६८ भञ्जोंप् (भञ्ज्) आमर्दने। ८९५ भजीं (भज्) सेवायाम्। १७३४ भजण् (भज्) विश्राणने। इत्यस्य तु चौरादिकत्वादनेकस्वत्वेन सेट्त्वमेव। १२५५ सृजिंच् (सृज्) विसर्गे। १३४९ सृजंत् (सृज्) विसर्गे। १७२ त्यजं (त्यज्) हानौ। ३१९ स्कन्दृं (स्कन्द्) गतिशोषणयोः। विद्य-इति श्यविकरणसहितग्रहणादनेन। १२५८ विदिंच् (विद्) सत्तायामित्यस्य ग्रहणम्। विद्लृ-इति लृकारानुबन्धसहितग्रहणादनेन। १३२२ विद्लृंती (विद्) लाभे इत्यस्य ग्रहणतम्। विन्ति-इति श्नविकरणसहितग्रहणादनेन। १४९७ विदिंप् (विद्) विचारणे इत्यस्य ग्रहणम्। एषां विशेषणोपादानात्। १०९९ विदक् (विद्) ज्ञाने इत्यस्य न ग्रहणम्। १८०९ विदिण् (विद्) चेतनाख्याननिवासेषु इत्यस्य तु चौरादिकत्वादनेकस्वरत्वेन सेट्त्वं सिद्धमेव।

वेत्तेर्विदितं वित्तेर्वित्रं वित्तश्च विद्यतेर्विन्नम्॥

वित्तं धने प्रतीते च विन्दतेर्विन्नमन्यत्र॥ १॥

१३७० णुदंत् (नुद्) प्रेरणे। स्विद्यतीति श्यविकरणसहितग्रहणादनेन। ११७८ ष्विदांच् (स्विद्) गात्रप्रक्षरणे इत्यस्यैव ग्रहणं नतु ९४६ ञिष्विदाङ् (स्विद्) मोचने च इत्यस्य। ९६७ शद्लृं (शद्) शातने। ९६६ षद्लृं (सद्) विशरणगत्यवसादनेषु। १३७१ षद्लृंत् (सद्) अवसादने। १४७७ भिदृंपी (भिद्) विदारणे। १४७८ छिदृंपी (छिद्) द्वैधीकरणे। १३१५ तुदींत् (तुद्) व्यथने। १०५७ अदंक् (अद्) भक्षणे। १२५७ पदिंच् (पद्) गतौ। १९३३ पदिण् (पद्) गतौ। इत्यस्य तु चौरादिकत्वादनेकस्वरत्वेन सेट्त्वमेव। ७२८ हदिं (हद्) पुरीषोत्सर्गे। १२५९ खिदिंच् (खिद्) दैन्ये। १३२६ खिदंत् (खिद्) परिघाते। १४७९ खिदिंप् (खिद्) दैन्ये। १४७९ क्षुदृंपी (क्षुद्) संपेषे। ११५६ राधंच् (राध्) वृद्धौ। १३०४ राधंट् (राध्) संसिद्धौ। १३०५ साधंट् (साध्) संसिद्धौ। ११८३ शुधंच् (शुध्) शौचे। १२६० युधिंच् (युध्) सम्प्रहारे। ११५७ व्यधंच् (व्यध्) ताडने। १५५२ बन्धश् (बन्ध्) बन्धने। १६६३ बन्धण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(बन्ध्) संयमने इत्यस्य तु चौरादिकत्वादनेकस्वरत्वेन सेट्त्वमेव। बुध्य-इति श्यविकरणसहितनिर्देशात् १२६२ बुधिंच् (बुध्) ज्ञाने इत्यस्यैव ग्रहणं न तु ९१२ बुधृग् (बुध्) बोधने ९६८ बुधं (बुध्) अवगमने इत्यस्य च। १४७३ रुधृंपी (रुध्) आवरणे। १२६१ अनोरुधिंच् (अनु-रुध्) कामे। ११८४ क्रुधंच् (क्रुध्) कोपे। ११८२ क्षुधंच् (क्षुध्) बुभुक्षायाम्। सिध्यति-इति श्यविकरणसहितनिर्देशात्। ११८५ षिधूच् (सिध्) संराद्धौ इत्यस्यैव ग्रहणं न तु ३२० षिध् (सिध्) गत्यामित्यस्य ३२१ षिधौ (सिध्) शास्त्रमाङ्गल्ययोरित्यस्य च।

११०० हनंक् (हन्) हिंसागत्योः। मन्यति-इति श्यविकरणसहितनिर्देशात् १२६३ मनिंच् (मन्) ज्ञाने इत्यस्यैव ग्रहणं नतु १५०७ मनूयि (मन्) बोधने इत्यस्य। १८१० मनिण् (मन्) स्तम्भे इत्यस्य तु चौरादिकत्वादनेकस्वरत्वेन सेट्त्वमेव। १३०७ आप्लृंट् (आप्) व्याप्तौ। १९७३ आप्लृण् (आप्) लम्भने इत्यस्य तु युजादिपाठात्सेट्त्वमेव। ३३३ तपं (तप्) संतापे। १२६७ तपिंच् (तप्) ऐश्वर्ये वा। १९७९ तपिण् (तप्) दाहे इत्यस्य तु युजादिपाठात्सेट्त्वमेव। ९१६ शपीं (शप्) आक्रोशे। १२८३ शपींच् (शप्) आक्रोशे। ११५८ क्षिपंच् (क्षिप्) प्रेरणे। १३१७ क्षिपींत् (क्षिप्) प्रेरणे।

१३७५ छुपंत् (छुप्) स्पर्शे लुम्पति इति मागमासहितनिर्देशात् १३२३ लुप्लृंती (लुप्) छेदने इत्यस्यैव मागमार्हस्य ग्रहणं नतु ११९५ लुपच् (लुप्) विमोहने इत्यस्य। १३४१ सृप्लृं (सृप्) गतौ। १३२४ लिपींत् (लिप्) उपदेहे ९९५ डुबपीं (वप्) बीजसंताने। १०८८ ञिष्वपंक् (स्वप्) शपे। ३७८ यभं (यभ्) मैथुने। ७८५ रभिं (रभ्) राभस्ये। ७८६ डुलभिंष् (लभ्) प्राप्तौ। ३८६ यमुं (यम्) उपरमे। ९८९ रमिं (रम्) क्रीडायाम्। ३८८ णमं (नतम्) प्रह्वत्वे। ३९६ गम्लृं (गम्) गतौ। ९८६ क्रशं (क्रुश्) आह्वानरोदनयोः। १२७७ लिशिंच् (लिश्) अल्पत्वे। १४१७ लिशंत् (लिश्) गतौ। १४१३ रुशंत् (रुश्) हिंसायाम्। १४१४ दिशंत् (दिश्) हिंसायाम्। १३१८ दिशींत (दिश्) अतिसर्जने। ४९६ दंशं (दंश्) दशने। १४१२ स्पृंशत् (स्पृश्) स्पर्शे। १४१६ मृशंत् (मृश्) आमर्शने। १४१५ विशंत् (विश्) प्रवेशने। ४९५ दृशृं (दृश) प्रेक्षणे। लृकारसहितग्रहणात् १४९२ शिष्लृंप् (शिष्) विशेषणे इत्यस्यैव ग्रहणं नतु ५०८ शिष (शिष्) हिंसायामित्यस्य। १९७७ शिषण् (शिष्) असर्वोपयोगे इत्यस्य तु युजादिपाठात्सेट्त्वमेव। १२०८ शुषंच् (शुष्) शोषणे। ९३० त्विषीं (त्विष्) दीप्तौ। १४९३ पिष्लृंप् (पिष्) संचूर्णने। विष्लृ-इति लृकारसहितनिर्देशात् ११४३ विष्लृंक्षी (विष्) व्याप्तौ इत्यस्यैव ग्रहणं न तु ५२३ विषू (विष्) सेचने इत्यस्य १५६० विषश् (विष्) विप्रयोगे इत्यस्य च। ५०६ कुंष् (कुष्) विलेखने। १३१९ कृषींत् (कृष्) विलेखने। १२१३ तुषंच् (तुष्) तुष्टौ १२०९ दुषंच् (दुष्) वैकृत्ये दुष्-साहचर्यात् ११७५ पुषंच् (पुष्) पुष्टौ इत्यस्यैव ग्रहणं न तु। ५३६ पुष् (पुष्) पुष्टौ इत्यस्य। १५६४ पुषशू (पुष्) पुष्टौ इत्यस्य च। १७५५ पुषण् (पुष्) धारणे इत्यस्य तु चौरादिकत्वादनेकस्वरत्वेन सेट्त्वमेव। श्लिष्यति-इति श्यविकरणसहितनिर्देशात्। १२१० श्लिषंच् (श्लिष्) आलिङ्गने इत्यस्यैव ग्रहणं न तु ५३१ श्लिषू (श्लिष्) दाहे इत्यस्य। १७०४ श्लिषण् (श्लिष्) श्लेषणे। इत्यस्य तु चौरादिकत्वादनेकस्वरत्वेन सेट्त्वमेव। १६२६ द्विषींक् (द्विष्) अप्रीतौ। ५४४ घस्लृं (घस) अदने। वसति-इति शब्विकरणसहितनिर्देशात्। ९९९ वसं (वस्) निवासे इत्यस्यैव ग्रहणं न तु १११७ वसिक् (वस्) आच्छादने इत्यस्य। १२२६ वसूच् (वस्) स्तम्भे इत्यस्य च। १७६१ वसण् (वस्) स्नेहच्छेदावहरणेषु इत्यस्य तु चौरादिकत्वेनानेकस्वरत्वात्सेट्त्वमेव। ९८८ (रुहं) रुह् जन्मनि। अत्र रोहति-इति शब्विकरणसहितनिर्देशः श्लोकरचनार्थः। लुहि रुही (लुह्-रुह्) इमौ धातुपाठेषु न दृश्येते छान्दसौ मन्तान्तरीयौ वा संभाव्येते। देग्धीति। ११२८ दिहींक् (दिह्) लेपे। दोग्धीति। ११२७ दुहींक् (दुह्) क्षरणे। ११२९ लिहींक् (लिह्) आस्वादने। ५५१ मिहं (मिह्) सेचने। ९९६ वहीं (वह्) प्रापणे। १२८५ णहींच् (नह्) बन्धने। ५५२ दहं (दह्) भस्मीकरणे। इति स्फुटं यथा स्यात्तथा इमे व्यञ्जनान्ता धातवोऽनिटः तद्व्यतिरिक्ता व्यञ्जनान्ताः सेटः। इति स्वरान्तव्यञ्जनान्तधातूनां सेट्त्वानिट्त्वे प्रपञ्चिते।।

।।समाप्ता अनिट्कारिका:।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥अथ धातुप्रत्यानुबन्धफलप्रतिपादका:श्लोका:॥

उच्चारणेऽस्त्यवर्णाद्य आ: क्तयोरिण् निषेधने।
इकारादात्मनेपद-मीकाराच्चोभयं भवेत्॥ १॥
उदित: स्वरान्नोन्तश्चो-त्तवादाविटो विकल्पनम्।
रूपान्त्ये डेयरेऽह्रस्व ऋकारादङ् विकल्पक:॥२॥
लृकारादङ् समायात्ये: सिचि वृद्धिनिषेधक:।
ऐ: क्तयोरिण्निषेध: स्या-दो: क्तयोस्तस्य नो भवेत्॥ ३॥
औकार इड्विकल्पार्थेऽनुस्वारोऽनिड्विशेषणे।
लृकाराश्च विसर्गश्चा-नुबन्धो भवतो नहि॥ ४॥
कोऽदादिर्न गुणी प्रोक्तो खे पूर्वस्य मुमागम:।
गे नोभयपदी प्रोक्तो घश्च चजो: कगौ कृतौ॥५॥
आत्मने गुणरोधे ङ्-श्चो दिवादिगणो भवेत्।
ञो वृद्धौ वर्तमाने क्त: ट: स्वादिष्ठ्वुकारक:॥६॥
त्रिमगर्थो डकार: स्याण् णश्चुरादिश्च वृद्धिकृत्।
तस्तुदादौ नकारश्चेच्चापुंसीति विशेषणे॥७॥
रुधादौ नागमे पोहि मो दाम: सम्प्रदानके।
यस्तनादौ रकार: स्यात् पुंवद्भावार्थसूचक:॥८॥
स्त्रीलिङ्गार्थे लकारो हि उत औविंति वो भवेत्।
श: क्र्यादि: क्य: शिति प्रोक्त: ष: षितोङ् विशेषणे॥९॥
पदत्वार्थे सकारो हि नोक्ता अत्र न सन्ति च।
धातूनां प्रत्ययानाञ्चानुबन्ध: कथितो मया॥१०॥

उच्चारणम् उच्चारणार्थं श्रुतिसुखदोच्चारणार्थमिति यावत्। अवर्णाद्य: अवर्णस्तु अकार आकारश्च वर्णग्रहणे स्वसंज्ञकस्यापि ग्रहणमिति न्यायात्। तत्राकारव्यवच्छेदार्थमाह-अवर्णस्य अकाराकाररूपस्याद्य: प्रथम अकार इत्यर्थ:। अस्ति। अकार: श्रुतिसुखदोच्चारणार्थं धात्वादौ अनुबन्धतया योज्यत इत्यर्थ:। यथा ५१ तक (तक्) हसने। एवम् आ आकार: क्तयो: क्तक्तवतु प्रत्यययोरादौ इण्निषेण्ने इकारनिषेधार्थ:। यथा १२५ हुर्छा (हुर्छ्) कौटिल्ये। अत्रादित्त्वात् आदित इति क्तयोरिडभावे हूर्ण हूर्णवान्। इकाराद् आत्मनेपदं भवति। यथा ६१८ ककि (कक्) लौल्ये। अत्र इडित्त इत्यात्मनेपदे ककते। च: समुच्चये। ईकाराद् उभयमुभयपदं भवति। ८९५ भजीं (भज्) सेवायाम्। अत्र ईदित्त्वात्फलवात्कर्तरि ईगित इत्यात्मनेपदम्। अफलवति तु शेषात्परस्मै इति परस्मैपदमेवोभयपदं भवति। चो-उश्च ऊश्चानयो: समाहार इति ऊ: तत: क्लीबे इति ह्रस्वत्वे उ इति तत: च-उ-इति अकारस्य उकारस्य च सन्धौ चो इति जातम्। तथा च चोशब्देन च उ: ऊ: इति ज्ञेयम्। तत्र चकार: समुच्चये। उ: उकार उदित: स्वरान्नोऽन्त इत्यत्र विशेषणार्थ: ऊ: ऊकार: क्त्वादौ क्त्वाप्रत्ययस्य आदौ इड इकारस्य विकल्पनं करोतीति शेष:। अथवा-उ-उदित: स्वरान्नोऽन्त: च-ऊ: इति ऊदितस्वरान्नोऽन्त: च-ऊ: इति ऊदितस्वरान्नोऽन्तश्चो: इति पाठो ज्ञेय:। तत्र प्रथमो य उशब्दस्तेन उरुपमक्षरमिति नपुंसकलिङ्गार्थं व्याख्येयम्। यथा ५२ तकु (तक्-तनक्-तङ्क्) कृच्छ्रजीवने। अत्र उदित्त्वाद् उदित: स्वरान्नोऽन्त इति नागम:। १०६ वञ्चू (वञ्च्) गतौ। ऊदितो वा इति वेट्। वक्त्वा। इति तु ऋतृषेति क्त्वो वा कित्त्वे वचित्वा वञ्चित्वा ऋ उपान्त्ये इत्यवस्थायां सन्धौ रुपान्त्ये। डे परे डप्रत्यये परे डपरणौ प्रत्यये इति यावत् अह्रस्वो ह्रस्वाभाव:। डपरकणिप्रत्यये परे सति ऋदितां धातूनामुपान्त्यस्य ह्रस्वो न भवति। यथा ५५ ओखृ (ओख्) शोषणालमर्थयो:। अत्र ऋदित्त्वाद् डपरे णौ उपान्त्यस्येति न ह्रस्व:। मा भवानोचिखत्। ऋदित्त्वादेव चौतो नेत्संज्ञा प्रयोगित्वाच्च्। एवं ५६ राखृ (राख्) शोषणालमर्थयो:। अरराखत्। ऋकाराद् अङ: विकल्प एव विकल्पक:। २८० च्युतृ (च्युत्) आसेचने। ऋदित्त्वाद् ऋदिच्छ्वीति वाङि अच्युतत् अच्योतीत्। लृकाराद् अङ् समायाति ३९६ गम्लृं (गम्) गतौ। लृदित्त्वाद् लृदिद्द्युतादित्यङि अगमत्। ए: एकार: सिचि वृद्धिनिषेधक:। १७४ कटे (कट्) वर्षावरणयो:। अत्र व्यञ्जनादेर्वोपान्त्यस्येति। वृद्धेरेदित्त्वान्न श्विजाग्रिति प्रतिषेधे अकटीत्। ऐ: ऐकारो यदि भवेत्तर्हि क्तयो: क्तक्तवतुप्रत्यययोरादौ इण्निषेणे भवति। २०० कटै (कट्) गतौ। अत्रैदित्त्वात् डीयश्वैदित: क्तयोरिति क्तयोर्नेट् कट्ट: कट्टवान्। ओ: ओकारो यदि स्यात्तर्हि क्तयो: क्तक्तवतुप्रत्यययोस्तकारस्य नो नकारो भवेत्। ४८ ओवैं (वै) शोषणे। अत्र ओदित्त्वात् सूयत्यादीति क्तयोस्तस्य नत्वे वान: वानवान्। २१ औस्वृ (स्वृ) शब्दोपतापयो:। अत्रौदित्त्वाद् धूगौदित इति वेट्। स्वर्ता स्वरिता सुस्वूर्षति सिस्वरिषति। अनुस्वार: बिन्दुरूपोऽनिड्विशेषणे अनिट्त्वार्थ इत्यर्थ:।

२ पां (पा) पाने। अत्रानुस्वारेत्त्वात् स्ताद्यशित इति प्राप्तस्येट: एकस्वरादनुस्वारेत इति निषेध:। पाता पास्यति। लृकारो विसर्गश्चानुबन्धो न भवत:। ककारो यदि धातौ स्यात्तदा धातु:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अदादिर्भवति। एवं ककारो यदि प्रत्यये स्यात्तदा तस्मिन् प्रत्यये परे धातुर्गुणी गुणवान् न भवति। ११०० हनंक् (हन्) हिंसागत्योः। कित्करणाददादित्वं तेन कर्तर्यनद्भ्यः शव् इत्यत्र अदादिवर्जनाच्छवभावे हन्ति। भूसत्तायाम्। भू-क्यात्-भूयात् अत्र कित्त्वेन नामिनो गुणोऽक्ङितीत्यत्र क्ङिद्वर्जनान्न गुणः खे पूर्वस्य-मुमागम इति मुम्-इति (म्) इत्यस्य प्राचां संज्ञा तयाइङ्व्यवहारः प्राचां-संज्ञाया व्यवहार इत्यत्र प्रमाणम्-यजादेः संप्रसारणमिति एवञ्च मुमागम इत्यस्य मागम इत्यर्थः। खे खिति पूर्वस्य म् आगमो भवति १२० मनिंच् (मन्) ज्ञाने कर्तुः खश् इति खशि खित्यनव्ययेति मागमे च पटुमात्मानं मन्यत इति पटुंमन्यः।। ८८३ श्रिग् (श्रि) सेवायाम्। गित्त्वात्फलवति कर्तरि ईगित इत्यात्मनेपदेऽन्यत्र-शेषात्परस्मायिति परस्मैपदे चोभयपदं ज्ञेयम्। श्रयते श्रयति। घो घकारो यदि स्यात्तदा चजोः चकारजकारयोः कगौ क्रमेण ककारगकारौ कृतौ विहितौ ज्ञातव्यौ। भाविनि भूतोपचाराद् घकारे। इति चकारस्य ककारो जकारस्य गकारो भवतीत्यर्थः। ८९२ डुपचींष् (पच्) पाके। पचनं (पच्-घञ्) पाकः। ९९१ यजीं (यज्) देवपूजासंगतिकरणदानेषु। यजनं (यज्-घञ्) यागः। अत्र चजः कगमिति चकारस्य कत्वं जकारस्य गत्वञ्च। आत्मने इति पदैकदेशे पदसमुदायोपचाराद् आत्मनेपदे आत्मनेपदार्थं गुणरोधे गुणनिषेणार्थञ्च ङो डकारो भवति। ५६८ गांङ् (गा) गतौ ङित्त्वाद् इङित इत्यात्मनेपदे गाते। ९३७ द्युति (द्युत्) दीप्तौ। द्युत्-अङ् अद्युतत् अत्र ङित्त्वेन-नामिन इत्यत्र ङिद्वर्जनान्न गुणः। चः चकारो यदि स्यात्तदा दिवागणो भवेत्। दिवादिगणीयो धातुर्भवेदित्यर्थः। ११५३ कुथच् (कुथ्) पूतिभावे। अत्र चित्त्वाद्दिवादित्वेन दिवादेरिति श्ये कुथ्यति। ञो ञकारो वृद्धौ वृद्ध्यर्थः।।

एवं ञो नाम ञकारोपलक्षितो ञिर्यदि भवेत्तदाः धातोर्वर्तमाने क्तप्रत्यो भवति। १ भू सत्तायाम्। अनु-अ-भू-ञिच् अन्वभावि-अत्र ञित्त्वाद् ञ्णितीति वृद्धिः। ३०० ञिक्ष्विदा (क्ष्विद्) अव्यक्ते शब्दे। ञित्त्वाज्ज्ञानेच्छार्चेति सत्यर्थे क्तः। क्ष्विद्यते क्ष्विण्णः। टकारो यदि स्यात्तदा स्वादिः स्यात्। १२८६ षिगट् (सि) अभिषवे। अत्र टित्त्वेन स्वादित्वात् स्वादेः श्नुरिति श्नौ सिनुते (टःस्वादिष्टद्युकारकः) अत्र ठद्यकारकः इति पाठो न समीचीनः ठानुबन्धानुपलम्भात् ठ-इत्यस्य निर्विभक्तिकत्वात् अयोग्यतया समासाभावात् द्युकारक इत्यत्र द्युरूपकार्यानुपलभ्भाच्च अतः टःस्वादिरथुकारकः इति पाठः सम्यक् टकारः स्वादिः (षिंगट्-सिनुते इति उकारविशिष्टः-टकारः अथुकारकः यथा टुवपीं बीजसन्ताने इति 'ड्वितोऽथुः' इति अथौ वपथुरिति। त्रिमगर्थो डकार इत्यग्रिमग्रन्थानुरोधेन-उकारविशिष्ट इति अवश्याध्याहार्यम्-इति तस्मिन् पाठे न कोऽपि दोष इति-त्रिमग् अर्थः प्रयोजनं यस्य तादृशो डकारः स्यात् अत्र डकारेण डकारोपलक्षितो 'डुंकारो ज्ञेयः। ८९२ डुपचींष् (पच्) पाके। ड्वित्त्वात्रिमकि पाकेन निर्वृत्तं पक्त्रिमम्। णो णकारो यदि स्यात्तदा चुरादिः धातुश्चुरादिगणीयो भवति एवं णकारो वृद्धिकृद्। अस्ति १५७२ बल्कण् (बल्क्) भाषणे। णित्वाच्चुरादित्वेन चुरादिभ्य इति णिचि वल्कयति। १२ दु (दु) गतौ णवि वृद्धौ दुदाव। १३१७ क्षिपीं‌त् (क्षिप्) प्रेरणे। तित्त्वात् तुदादेः श इति क्षिपति। नकारश्च इच्चापुंसोऽनित्क्याप्परे इत्यत्र विशेषणार्थः। खट्विका खट्वाका् अनिदिति किम्। दुर्गका पकारो रुधादौ नागमार्थः। अर्थात् पकारेण रुधादित्वं भवति रुधादित्वाच्च नागमो भवति। १४७३ रिचृंपी (रिच्) विरेचने रुधां स्वरादिति श्ने रिणक्ति किन्तु रुधादौ तागमे पोहि-इति पाठः सम्यक्- तस्येयं व्याख्या पकारो रुधादिघटकाः पकारानुबन्धेन धातूनां रुधादित्वं भवतीति भावः प्रत्ययस्थपकारानुबन्धः तागमप्रयोजकः-(दृवृग्-इत्यादिना क्यपि 'ह्रस्वस्य तः पित्कृति' तागमे आदृत्य प्रावृत्य इति मो मकारः दामः सम्प्रदाने ऽधर्म्ये आत्मने च इत्यत्र विशेषणार्थः। दास्या सम्प्रयच्छते कामुकः। यो यकारः तनादेः सूचकः। १५०१ क्षणूयी (क्षण्) हिंसायाम्। यित्त्वात् कृग्तनादेरित्यौ च तनुते। रकारः पुंवद्भावरूपो योऽर्थस्तत्सूचकः। पट्वो प्रकारोऽस्याः पटुजातीया। प्रकारे जातीयरिति जातीयरि प्रत्यये रितीति पुंवद्भावः। लकारो स्त्रीलिङ्गार्थः। जनानां समूहो जनता; अत्र तल्प्रत्ययस्य लित्त्वात् स्त्रीत्वम्। वकार उत और्विंतिव्यञ्जनेऽद्वेरित्यत्र विशेषणार्थः। १०७७ द्युंक् (द्यु) अभिगमने। द्यौति। शकारो यदि स्यात्तदा त्र्क्यादिः स्यात्। १५०७ षिंगूश् (सि) बन्धने। शित्वात्क्र्यादित्वेन क्र्यादेरिति श्नाप्रत्यये सिनाति। क्यःशितीत्यत्र विशेषणार्थः। भूयते अत्र भावकर्मविहिते शिति क्यः। चकारःषितोऽङ् इत्यत्र विशेषणार्थः। ८९२ डुपचींष् (पच्) पाके। पच्यतेऽसाविति पचा। सकारः पदत्वार्थे पदत्वप्रयोजकः। भवतोरिकणीयसौ इतीयसि भामसिद्यव्यञ्जने-इति पदत्वे घुटस्तृतीय इति दत्वे

भवदीय इति येऽनुबन्धतया नोक्तास्तेऽनुबन्धा न सन्ति। अनुबन्धास्तु इयन्त एव। अपि तु अत्रानुबन्धानां यद्यत्फलमुक्तं तेन प्रयोजनान्तराण्यप्युपलक्ष्यन्ते। यथा टकारस्य प्रयोजन स्वादित्वमेवोक्तं तथापि २८ ट्धें (धे) पाने। अत्र टकार: शुनिंधयीत्यादौ ङ्यर्थ:।

एवं डकारस्यान्त्यस्वरलोपप्रभृतिप्रयोजनं स्वयमूह्यम्।

अत्रार्थेऽन्येऽपि कतिचित् श्लोका:

अदादय: कानुबन्धाश्चानुबन्धा दिवादय:।
स्वादयष्टानुबन्धांस्तानुबन्धास्तुदादय:॥१॥
रुधादय: पानुबन्धा यानुबन्धास्तनादय:।
क्र्यादय: शानुबन्धा णानुबन्धाश्चुरादय:॥२॥

॥इत्यनुबन्धफलप्रतिपादकप्रकरणतम्॥

॥वृत्गणफलनिरुपणम्॥

द्युतादेरद्यतन्यां चाऽऽत्मनेपदमिष्यते
वृदादिपञ्चकेभ्यो वा स्यसनोरात्मनेपदम्॥१॥
ज्वलादेर्णो विकल्पेन यजादे: संप्रसारणम्।
घटादीनां भवेद्ह्रस्वो णौ परेऽजीघटत् सदा॥२॥
अद्यतन्यां पुषादित्वादङ् परस्मैपदे भवेत्।
स्वादित्वाच्च क्तयोस्तस्य न कार: प्रकटो भवेत्॥३॥
प्वादीनां भवेद्ह्रस्वो ल्वादेस्क्तयोश्च नो भवेत्।
युजादयो विकल्पेन ज्ञेयाश्चुरादिके गणे॥४॥
मुचादेर्नागम: शे च कुटादित्वात्सिचि परे।
गुणवृद्धेरभावश्च कथितो हेमसूरिणा॥५॥
अदन्तानां गुणो वृद्धिर्यङ् चुरादेश्च नो भवेत्।
संक्षेपेण फलञ्चैतज्ज्ञेयं सूत्रानुसारत:॥६॥

वृत् गणानामान्तर्गणास्तेषामान्तर्गणकरणे यत्फलं तदुच्यते। द्युतोदेर्द्युतादिगणपठितधातोरद्यतन्यामङ् आत्मनेपदञ्च वा भवति। अर्थात्-द्युतादिगणस्य फलमद्यतन्यां विकल्पेनाऽऽत्मने-पदभवनम्। ९३७ द्युति (द्युत्) दीप्तौ। द्युद्भ्योऽद्यतन्यामि-त्यात्मनेपदिनोऽपि विकल्पनात्पक्षे शेषात्परस्मायिति परस्मैपदे लृदिद्द्युतादीत्यङि अद्युतत्। पक्षे अद्योतिष्ट वृदादिपञ्चकेभ्यो वृदादे: पञ्चत: स्यसनो: स्यादौ प्रत्यये सनि च विषये आत्मनेपदं वा भवति। अयं वृदादिर्द्युताद्यन्तर्गणस्तेन द्युतादिफलन्तु अत्येव तदतिरिक्तमिदं ज्ञेयम्। ९५५ वृतूङ् (वृत्) वर्त्तने। अवृतत् अवर्तिष्ट। वद्भ्य इति स्यसनोर्विषये वात्मनेपदमात्मनेपदाभावे च न वृद्द्भ्य इति नेट्। वर्तिष्यते वर्त्स्यति अवर्तिष्यत अवर्त्स्यत् सनि विवृत्सति विवर्तिषते। ज्वलादेर्ण: प्रत्ययो विकल्पेन भवति। ९६० ज्वल (ज्वल) दीप्तौ। वा ज्वलादीति णे ज्वाल:। पक्षे ज्वल:। यजादेर्यजादिगणस्य फलं सम्प्रसारणं य्वृत। ९९१ यजीं (यज्) देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु। यजादिवशिति पूर्वस्य य्वृति इयाज यजादिवचेरिति य्वृति ईजे। घटादीनां फलं तु णौ णिप्रत्यये परे ह्रस्व:। १००० घटिष् (घट्) चेष्टायाम्। घटादेरितिह्रस्वे। घटयति। (णौ परेऽजीघटत् सदा) अयं भाव: 'जासनाटक्राथपिषो हिंसायां इत्यत्र क्राथेत्याकारोपान्त्यनिर्देशा-दाकारश्रुतावस्य प्रवृत्ते: चौरस्योत्क्राथयतीति घटादेर्ह्रस्व इति ह्रस्वत्वाभाव:। अद्यतन्यां तु ह्रस्वघटितमेव रूपं भवति इति अजीघटत्सदेत्यनेन सूचितमिति क्राथेरपि उदचिक्रथादिति 'उपान्त्यस्य' इति ह्रस्वस्तु न निषिध्यते यस्मिन् प्राप्त एवेति न्यायादिति। पुषादित्वादद्यतन्यां परस्मैपदेऽङ् भवति। दिवाद्यन्तर्गणपुषादिगणस्य फलं परस्मैपदेऽद्यतन्यामङ् प्रत्ययभवनमित्यर्थ:। ११७५ पुषंच् (पुष्) पुष्टौ। लदिदिति अङि अपुषत्।स्वादित्वात् दिवाद्यन्तर्गणस्वादिगणपठितत्वात् क्तयोस्क्तक्तवतुप्रत्यययो-स्तकारस्य नकारो भवति। १२४१ षूङौच् (सू) प्राणिप्रसवे। सूयत्यादीति क्तयोस्तस्य नत्वे सून: सूनवान्। प्वादीनां क्र्याद्यन्तर्गणप्वादिगणपठितधातूनां ह्रस्वो गदित:। १५१८ पूग्श् (पू) पवने। प्वादेरिति ह्रस्वे पुनाति पुनीते। ल्वादे: क्र्याद्यन्तर्गणप्वान्तर्गणल्वादिगणपठितधातोस्क्तयोस्तस्य नो भवेत्। १५१९ लूग्श् (लू) छेदने। ऋल्वादेरिति क्तक्तीनां तो नत्वे लून: लूनवान् लूति:। युजादयो युजादिगणपठिता धातवश्चुरादिगणे विकल्पेन ज्ञेया:। चुराद्यन्तगणयुजादिगणस्य फलं विकल्पेन णिच्ग्रहणमित्यर्थ:। १९४२ युजण् (युज्) सम्पर्चने। युजादेरिति वा णिचि योजयति। पक्षे न्यायविकरण: शव् योजति। मुचादेस्तुदाद्यन्तर्गणमुचादिगणस्य फलं शे शप्रत्यये नागम:। १३२० मुच्लृन्ती (मुच्) मोक्षणे मुचादीति स्वरात्परे नेन्ते मुञ्चति मुञ्चते। कुटादित्वात् तुदाद्यन्तर्गणकुटादिगणपठितत्वात् सिचि परे गुणवृद्ध्यभाव:। यथा १४२६ कुटत् (कुट्) कौटिल्ये। कटादेरिति ङित्त्वात् गुणाभावे सिचि अकुटीत्। १४२९ णूत् (णूत्) स्तवने।

कुटादेरिति ङित्वात् सिचि परस्मायिति वृद्ध्यभावे अनुवीत्। चुरादेरदन्तानां चुरादिगणपठितादन्तधातूनामित्यर्थः। गुणो वृद्धिश्च न भवेत्। सुखण् (सुख्) तत्क्रियायाम्। १८५४ रचण् (रच्) प्रतियत्ने। रचयति। अत्रात इत्यल्लुकः स्वरादेशत्वेन स्थानिवत्त्वाद् गुणवृद्ध्यभावः। अररचत्। असुसुखत्। अत्र समानलोपित्वादसमानलोप इति पूर्वस्य सन्वद्भावो लघोर्दीर्घ इति दीर्घश्च न भवति। १८५५ सूचण् (सूच्) पैशून्ये अत्रोपान्त्यह्रस्वाभावः।।

।।इति वृत्गणफलनिरूपणम्।।

।।सकर्मकवाकर्मकत्वानिरूपणम्।।

फलव्यापारयोरेकनिष्ठतायाकर्मकः।

धातुस्तयोर्धर्मिभेदे सकर्मक उदाहृतः।।१।।

फलस्य गतिनिवृत्त्यादिरूपस्य व्यापारस्य गतिनिवृत्त्यनुकूल-व्यापारादिरूपस्य च एकनिष्ठतायामेकाधिकरणवृत्तितायां सत्यां धातुरकर्मको भवति। फलसमानाधिकरणव्यापारबोधकत्वं समानाधिकरणफलावच्छिन्नव्यापारबोधकत्वं वाकर्मकत्वमिति फलितोऽर्थः। यथा ष्ठां (स्था) गतिनिवृत्तौ, अत्र फलं गतिनिवृत्तिः व्यापारस्तदनुकूल इति फलं व्यापारश्चोभयं देवदेत्तस्तिष्ठति इत्यत्र देवदत्तरूपैकाधिकरणे वर्त्तते। देवदत्तस्तिष्ठतीति कोऽर्थः? गतिनिवृत्त्यनुकूलव्यापारवान् देवदत्तः। एवं तयोः फलव्यापारयोः धर्मिभेदेऽधिकरणभेदे भिन्नभिन्नाधिकरणवृत्तितायां सत्यां धातुः सकर्मको भवति। फलव्यधिकरणव्यापारबोधकत्वं व्यधिकरणफलावच्छिन्न-व्यापार बोधकत्वं वा सकर्मकत्वमिति फलितोऽर्थः। यथा ८९२ डुपचींष् (पच्) पाके। देवदत्तस्तण्डुलान् पचति। कोऽर्थः? तण्डुलनिष्ठविक्लृत्यनुकूलव्यापारवान् देवदत्तः। अत्र फलं विक्लृतिः, सा तण्डुलेषु वर्त्तते व्यापारस्तदनुकूलः स देवदत्ते वर्त्तते इति फलव्यापारयोर्भिन्नाधिकरता।

अर्थान्तरे वर्तमानस्याकर्मकस्यापि सकर्मकत्वं भवति कालाध्वभावदेशापेक्षया च सर्व एव धातवः सकर्मकाः। मासमास्ते। क्रोशो गुडधानाभिर्भूयते। गोदो-स्वपिति। कुरून् शेते। अर्थान्तरवृत्त्यादिना च सकर्मकस्यापि अकर्मकत्वं भवति। यदाह-

धातोरर्थान्तरे वृत्तेर्धात्वर्थेनोपसंग्रहात्।

प्रसिद्धेरविवक्षातः कर्मणोऽकर्मिका क्रिया।। २।।

अर्थान्तरे वर्त्तमानाद्धातोः सकर्मकस्यापि अकर्मिका क्रिया भवति। यथा भारं वहति उद्यच्छतीत्यर्थः नदी वहती स्रवतीत्यर्थः। कर्मणो धात्वर्थान्तःप्रवेशादकर्मकत्वम्। यथा ४६५ जीव (जीव्) प्राणधारणे जीवति। ७२८ हदिं (हद्) पुरीषोत्सर्गे हदते। अत्र प्राणपुरीषाख्ये कर्मणी धात्वर्थेनैव क्रोडीकृते। कर्मणः प्रसिद्धत्वात्। यथा ५२७ वृषू (वृष्) सेचने। देवो वर्षति। न पुनरत्र रक्तं वर्षति। पार्थः शरान् वर्षति। कर्मणोऽविवक्षितत्वात्। यथा नेह पच्यते नेह भुज्यते। कर्माविवक्षा चौदासीन्थनिवृत्तिमात्रपरतया प्रयोगात्। यथा किं करोतीति प्रश्ने पचति पठतीत्यादि प्रत्यवस्थानं नतु भवति विद्यते वेत्यादि तेषामपर्यनुयोज्यत्वात्। यत्तु किं करोतीति प्रश्ने भवतीत्युत्तरं तत्क्रियाख्यकर्मनिबन्धनं नतु बाह्यकर्मापेक्षं भवनं करोतीत्यर्थावगमात्। क्रिया हि सर्वधातूनामान्तरं कर्म। अतएव क्रियाविशेषणानां कर्मत्वं स्मरन्ति। नन्वेवं क्रियाविशेषणादिति योगो व्यर्थः कर्मणीत्येव द्वितीयासिद्धेः। नैवम्। आन्तरकर्मणा सकर्मणोऽपि अकर्मककार्यप्रतिपत्त्यर्थत्वाद्योगस्य। तेन सुखं सुप्त इत्यादौ कर्त्तरि क्तः सिद्धः। सुखं स्थातेत्यादौ कृत्रिमित्ता षष्ठी न भवतीति। अत एव सकर्मकाकर्मकव्यवहारो द्रव्यकर्मनिमित्त इत्युच्यते। यदाह-

।।सकर्मकाकर्मकत्वं द्रव्यकर्मनिबन्धनम्।।

।।अथ द्विकर्मकगणनानिरूपणतम्।।

नीहवहिकृषो ण्यन्ता दुहिब्रूपृच्छिभिक्षिचिरुधिशास्वर्थाः।

पचियाचिदण्डिकृग्रहमथिजिप्रमुखा द्विकर्माणः।।१।।

इमे सर्वे धातवो द्विकर्मका विज्ञेयाः। ८८४ णींग् (नी) प्रापणे। गाममजां नयति। ८८५ हंग् (हृ) वरणे। निवासं हरति घासं। ९९६ वहीं (वह्) प्रापणे। ग्रामं भारं वहति। ५०६ कृषं (कृष्) विलेखने। १३१९ कृषींत् (कृष्) विलेखने। ग्रामं बलिवर्दं कर्षाति। ण्यन्ता इति। ३ घ्रां (घ्रा) गन्धोपादाने। जिनदासं पुष्पाणि घ्रापयति। दुहिब्रूपृच्छिभिक्षिचिरुचिशासूधातूनामर्था इव अर्था येषां ते तथा। दुहिप्रभृतीनां षण्णां धातूनां येऽर्थाः प्रतिपादिताः तादृशा अर्था येषां धातूनां भवन्ति तेऽपि धतवो द्विकर्मका विज्ञेयाः। ११२७ दुहींक् (दुह्) क्षरणे। गां दोग्धि पयः। ११२५ ब्रूंगक् (ब्रू) व्यक्तायां वाचि। भव्यान् धर्मं ब्रूते। १३४७ प्रच्छंत् (प्रच्छ्) ज्ञीप्सायाम्। जनं मार्गं पृच्छति। ८८० भिक्षि (भिक्ष्) याञ्चायाम्। भिक्षते गां राजानम्। १२९० चिंग्ट् (चि) चयने। वृक्षं पुष्पाणि अवचिनोति। १४७३ रुधृंपी (रुध्)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आवरणे। शंठ गृहमवरुणद्धि १०९५ शासृक। (शास्) अनुशिष्टौ। मनुष्यं धर्मं शास्ति। ८९२ डुपचीँष् (पच्) पाके तण्डुलानोदनं पचति। याचिरत्रानुनयार्थस्तेन भिक्ष्यर्थाद्भेदः। ८९१ डुयाचृग् (याच्) याञ्चायाम्। शठं धर्मं याचतेऽनुनयतीत्यर्थः। १८६९ दण्डण् (दण्ड्) दण्डनिपाते। देवदत्तं शतं दण्डयति। ८८८ डुकृंग् (कृ) करणे। मृदं घटं करोति। १५१७ ग्रहीश् (ग्रह्) उपादाने। द्रव्यं धान्यं प्रतिगृह्णाति। १५४७ मन्थश् (मन्थ्) विलोडने। समुद्रममृतमम्नात्। ८ जिं (जि) अभिभवे। देवदत्तं शतं जयति। प्रमुखग्रहणात् १५६३ मुषश् (मुष्) स्तेये। गोविन्दं शतं मुष्णाति। एतद्व्याख्या तु मतान्तरीयोक्तकारिकानुसारेण कृता। हेमचन्द्रसूरीशानैस्तु। तच्च (द्विविधं कर्म तु) द्विकर्मकेषु दुहिभिक्षिरुधिप्रच्छिचिग्शास्वब्रूर्थेषु याचि जयतिप्रभृतिषु नीहकृषवहेषु च भवति। अत्रोदाहरणानि तु निरुक्तान्येव। अत्रोक्तातिरिक्तधातूणामुपरि गणना कृता। सा अत्रैव समवसरति। इदं तस्या उपलक्षणं मतभेदो वेति स्वयमूह्यम्।

।।इति द्विकर्मकगणनानिरूपणम्।।

।।अथ गौणमुख्यकर्मनिरूपणम्।।

न्यादीनां कर्मणो मुख्यं प्रत्ययो वक्ति कर्मजः।
नीयते गौर्द्विजैर्ग्रामं भारो ग्राममथोह्यते।।१।।
गौणं कर्म दुहादीनां प्रत्ययो वक्ति कर्मजः।
गौः पयो दुह्यतेऽनेन शिष्योऽर्थं गुरुणोच्यते।।२।।

कर्म द्विविधं मुख्यं गौणञ्च। तत्र यदर्थं क्रिया आरभ्यते तत्प्रधानम्। तत्सिद्ध्यै यत्क्रियया व्याप्यते गवादि तदप्रधानम्। अन्यत्सर्वं स्फुटम्। किञ्च गत्यर्थानामकर्मकाणां तु णिगन्तानां प्रधाने एष कर्मणि गम्यते मैत्रो ग्रामम्। आस्यते मासं मैत्रः। बोधाहारार्थशब्दकर्मकाणां तु णिगन्तानामुभयत्र बोध्यते शिष्यो धर्मम्। बोध्यते शिष्यं धर्मो वा। भोज्यतेऽतिथिमोदनः। भोज्यतेऽतिथिरोदनम्। पाठ्यते शिष्यो ग्रन्थतम्। पाठ्यते शिष्यं ग्रन्थो वा।

।।इति गौणुख्यकर्मनिरूपणम्।।

।।अथ धातूपसर्गजन्यभेदप्रकाशनिरूपणम्।।

बीजकालेषु सम्बद्धा यथा लाक्षारसादयः।
वर्णादिपरिणामेन फलानामुपकुर्वते।।१।।
बुद्धिस्थादभिसम्बन्धात्तथा धातूपसर्गयोः।
अभ्यन्तरीकृतो भेदः पदकाले प्रकाश्यते।।२।।

व्याख्या अथ किं धातुः पूर्वमुपसर्गेण युज्यते उत साधनेनेति! साधनं हि क्रियां निवर्त्तयति (साध्यत्ववैशिष्ट्येन बोधयतीति तामुपसर्गो विशिनष्टि (स्वद्योत्यविशेषणवैशिष्ट्येन बोधयतीत्यर्थः) अतः पूर्वं साधनेन साधनं कारकम् तदभिधायि कार्येण युज्यत इति तदयुक्तम् पूर्वं हि धातोः साधनेन सम्बन्धे आस्यते गुरुणा इत्यकर्मकः उपास्यते गुरुरिति सकर्मकः केन स्यात्।

यस्माद्विशिष्टैव क्रिया साधनेन साध्यते नतु साधनाल्लब्धस्वरूपान्यतो विशेषं लभते तस्मात् पूर्वमुपसर्गेण युज्यते-इति युक्तम्। न च प्रत्ययसम्बन्धमन्तरेण क्रियाविशेषस्यानभिव्यक्तेर्न धातोः पूर्वमुपसर्गेण सम्बन्धो युज्यते इति वाच्यम्? यतः-

बीजकालेषु सम्बद्धा यथा लाक्षारसादयः।
वर्णादिपरिणामेन फलानामुपकुर्वते।। १।।

बीजकालेषु-बीजोत्पत्तिसमयेषु सम्बद्धाः सम्पृक्ताः (बीजैरिति शेषः) लाक्षारसादयः-जतुरसप्रभृतयः फलानां वर्णादिपरिणामेन रूपरसादिपरिणमनद्वारा यथा उपकुर्वते।

(बुद्धिस्थादभिसम्बन्धात्तथा धातूपसर्गयोः।।
अभ्यन्तरीकृतो भेदः पदकाले प्रकाशते।।१।।)

तथा धातूपसर्गयोः बुद्धिस्थाद् (बुद्धिविषयीकृतात्) अभिसम्बन्धात् भेदः (उपसर्गार्थकृतो विशेषः) अभ्यन्तरीकृतः (बुद्धिस्थीकृतः धातुनेति शेषः पदकाले उपसर्गसंज्ञकशब्दप्रयोगकाले प्रकाशते श्रोतुरिति शेषः। इति अङ्कुरोत्पत्तिसमये लाक्षारसादिसेकेन फलानां रूपरसादिवैलक्षण्यं भवति इति लोकप्रसिद्धिः तत्र यथा लाक्षारसादीनां पूर्वकालिकसम्बन्धेन जायमाना विलक्षणता फलकाले प्रकाशते तथा पूर्वकालिकोपसर्गसम्बन्धेन जायमानः उपसर्गार्थकृतौ विशेषः उपसर्गप्रयोगकाले प्रकाशते-एवं च पूर्वमुपसर्गयोगो नाम तदर्थसम्बन्धः तत उपसर्गशब्दात् पूर्वं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साधनकार्ययोग: तत उपसर्गसंज्ञकशब्दप्रयोग इति तात्पर्यम् इत्यलम्।

।।अथ षोपदेशनिरूपणतम्।।

स्वरदन्त्यपरसकारादय: स्मिस्विदिस्वदिस्वञ्जिस्वपयश्च।
षोपदेशा: सृपि सृजि स्त्या स्तृ स्तृ सृ सेकृवर्जम्॥१॥

स्वरा अवर्णादयो दन्त्या लृवर्णतवर्गलसास्ते परा यस्मात्तादृशो य: सकार: स आदौ येषां ते स्वरदन्त्यपरसकारादय: स्वरपरसादय: दन्त्यपरसादयश्च धातव: षोपदेशा ज्ञेया: उत्तरदलर्दार्शतान् विहाय। यथा ९९० षहि (सह) मर्षणे। ५ ष्ठां (स्था) गतिनिवृत्तौ। उक्तलक्षणेनाग्रहादाह-स्मीत्यादिस्मिप्रभृतयश्च षोपदेशा विज्ञेया:। ५६७ ष्मिङ् (स्मि) ईषद्धसने। ९४६ ञिष्विदाङ् (स्विद्) मोचने च। ११७८ ष्विदांच् (स्विद्) गात्रप्रक्षरणे। ७२९ ष्वदि (स्वद्) आस्वादने। १७४२ ष्वदण् (स्वद्) आस्वादने। ष्वञ्जिंत् (स्वञ्ज्) सङ्गे। १०८८ ञिष्वपंक् (स्वप्) शये। सृपिप्रभृतीन् विहाय। ते चेमे। ३४१ सृप्लृं (सप्) गतौ। १२५५ सृजिंच् (सृज्) विसर्गे। १३४९ सृजंत् (सृज्) विसर्गे। ४० स्त्यै (स्त्यै) संघाते। १५२१ स्तृग्शृ (स्तृ)आच्छादने। १२९२ स्तृंगट् (स्तृ) आच्छादने। २५ सृं (सृ) गतौ। ६३५ सेकृङ् (सेक्) गतौ। षोपदेशफलं तु असीषहत् इत्यादौ षत्वकरणम्। स्मिप्रभृतिभि: साहचर्यादेकस्वराणामेव षोपदेशस्मृति:। अत एव सूत्रसत्रसंग्रामसामसमाजस्थूलस्तनस्तेन स्तोमसुखानामषोपदेशत्वात् सोसुत्र्यते सिसत्रयिषते इत्यादौ षत्वं न भवति।

।।इति षोपदेशप्रकरणम्।।

।।अथ णोपदेशनिरूपणम्।।

सर्वे न नादयो णोपदेशा नृति नन्दि नर्दि नशि नाटि नक्कि नाधृ नाथृ नृवर्जम्। येषां धातूनामादौ नकारो भवेत्ते णोपदेशा विज्ञेया: नृतिप्रभृतीन् विहाय ते चेमे। ५२ नृतैच् (नृत्) नर्तने। ३१२ टुनदु (नन्द) समृद्धौ ३०२ नर्द (नर्द) शब्दे। १२०२ नशौच् (नश्) अदर्शने। नाटीति १५९३ नटण् (नट्) अवस्यन्दने इत्यस्यैवात्र वर्जनं नतु १८७ णट् लट् नृत्तौ। १०३३ णट (नट्) नतौ एतयो:। १५७३ नक्कण् (नक्क्) नाशने। ४४७ नाधृङ् (नाध्) नाथङ्वन्। ७१६ नाथृङ् (नाथ्) उपतापैश्वर्याशी:षु च। १०१६ नृ नये। १५३७ नृश् (नृ) नये। एतद्व्यतिरिक्ता नकारादय:सर्वे णोपदेशा: यथा ६५ णख (नख्) गतौ। णोपदेशफलन्तु प्रणखतीत्यादौ णत्वम्। ननु ६४ नख (नख्) गतौ। इत्यस्य अणोपदेशत्वात् कथमत्र न वर्जनमिति चेदुच्यते नख णख इति पाठसामर्थ्यादेव अणोपदेशत्वमेवान्यत्रापि।

।।इति णोपदेशप्रकरणम्।।

।।अथ धात्वर्थविशेषनिरूपणम्।।

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
विहाराहारसंहारप्रहारप्रतिहारवत्॥१॥
धात्वर्थं बाधते कश्चित् कश्चित्तमनुवर्त्तते।
तमेव विशिनष्ट्यन्योऽनर्थकोऽन्य: प्रयुज्यते॥२॥

उपसर्गेण॥

प्रपरापसमन्ववनिर्दुरभिव्यधिसूदतिनिप्रतिपर्ययय:।
उप आङिति विंशतिरेष सखे! उपसर्गगण: कथित: कविभि:॥१॥

इत्याद्यन्यतमेन धात्वर्थो धातुपाठे य उक्तोऽर्थ: स बलात्प्रतीतिसामर्थ्यादन्यत्रान्यस्मिन्नर्थे नीयते स्थाप्यते पर्यवसितो भवतीत्यर्थ:। अत्र ये उपसर्गस्य द्योतकत्वमामनन्ति तन्मते तु अन्योऽप्यर्थस्तस्य धातोरेव ये तु वाचकत्वमाश्रयन्ति तन्मते धातुसम्बन्धात्तमन्यमर्थमुपसर्ग एवाभिधत्ते तदेवाह-८८५ हृंग् (हृ) वरणे। अस्य उदाहरणार्थत्वेऽपि विहार: क्रीडासमीचीनगमनं वा। आहारो भोजनम्। संहारो विनाश:। प्रहारस्ताडनतम्। प्रतिहार: द्वा:स्थकर्म् इत्यादौ उक्तादित्तविविधार्थावगते:। कश्चिदुपसर्गो धात्वर्थं बाधते। यथा-३२० षिध् (सिध्) गत्याम्। प्रतिषेधति। अत्र गत्यर्थं बाधित्वा निषेधार्थमभिदधति। कश्चित्तं मौलधात्वर्थमनुवर्त्तते, यथा अधीयते। अत्र ११०४ इङ्क् (इ) अध्ययने। अयमधिनाऽवश्यंभावी योगो न चार्थविशेष:। अन्य उपसर्गस्तमेव मूलधात्वर्थं विशिनष्टि विशिष्टतामापादयति। यथा ९९२ डुपचींष् (पच्) पाके। प्रपचति प्रकृष्टं प्रकर्षे वा पचतीत्यर्थ:। अन्य उपसर्गोऽनर्थक एव प्रयुज्यते। ३९६ गम्लृं (गम्) गतौ। अधिगच्छति। अत्र न धात्वर्थबाधो न वा धात्वर्थविशेषता न वा गम्-धातुनाऽवश्यंभावी योग इति।

।।इति धात्वर्थविशेषनिरूपणम्।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥अथ अनुस्वारनिरूपणम्॥

नकारजावनस्वारपञ्चमौ धुटि धातुषु।

सकारजः शकारश्चेर्षादृवर्गस्तवर्गजः॥१॥

धातुषु धुटि धुडादौ वर्णे परे सति योऽनुस्वारो वर्गपञ्चमाक्षरो वा दृश्यते स नकारस्थाने जात इति वेदितव्यम्। ४९६ दंशं (दन्श्-दंश्) दशने दशति। अत्र यदि नकारजोऽनुस्वारो न भवत्तर्हि दंशसञ्ज इति लुग्न स्यात् १३७८ तुम्फत (तुन्फ्-तुम्फ्) तृप्तौ। तृफति। अत्रापि नकारजो मकाररूपपञ्चमो वर्णो न स्यात्तर्हि नो व्यञ्जनस्येति लुग्न स्यात्। एवं च चकारे परे यः शकारः स सकारजः सकारस्थाने जातः। यथा। ६ षस्च (सस्च्-सश्च्) गतौ। सश्चति। अत्र शकारः सकारस्थाने जातः। र्षात् रकारात् षकाराच्च परो यः टवर्गः स तवर्गो जातः। यथा ११२३ ऊर्णुग्क् (ऊर्नु-ऊर्णु) आच्छादने। ऊर्णुनाव। अत्र रकारात्परो यो णकारः स नकारस्थाने जातः। अन्यथा ऊर्णुनाव। अत्र रकारात्परो यो णकारः स नकारस्थाने जातः। अन्यथा ऊर्णुणाव इत्येव स्यात्। ५ ष्ठां (स्था) गतिनिवृत्तौ। अत्र षकारस्तु षोपदेशार्थस्तदन्तरं ठकाररूपटवर्णस्थकार- रूपतवर्गजातः। एवं र्षाद् इत्यत्र पूर्वार्थे पञ्चमीविवक्षायां २५७ अट्ड (अट्ड्-अड्ड्) अभियोगे अड्डति इत्यादिकमपि भावनीयम्।

॥इत्यनुस्वारादिनिरूपणम्॥

॥अथ धातुत्वनिरूपणम्॥

क्रियार्थो धातुः। क्रिया कृतिः प्रवृत्तिर्व्यापार इति यावत्। पूर्वापरीभूता साध्यमाना रूपा सार्थोऽभिधेयं यस्य स शब्दो धातुसंज्ञो भवति। पूर्वावयवयोगात्पूर्वाऽपरावयवयोगादपरा पूर्वा चासावपरा च पूर्वापरा अपूर्वापरा पूर्वापराभूता पूर्वापरीभूता तत्र पूर्वोऽवयवोऽधिश्रयणादिरपर उदकसेकादिस्तौ तौ द्वावपि भागौ पाकक्रियायां स्तः। साह्यधिश्रयणोदकसेचनादिरूपा साध्यमानाः साधनायत्तस्वरूपा क्रियास्ति यथा पचति कश्चैत्रः कमोदनं कैः काष्ठैः क्व स्थाल्यां कुतः कुशूलात् कस्मै मैत्रायेति भावना। ननु पचतीत्यादिष्वस्तु क्रियात्वं भवत्यादिषु तु सत्ताया नित्यत्वेन साध्यमानत्वाभावात् तदभावे च पूर्वापरविभागाभावात् तदभावे च क्रियार्थत्वाभावे न प्राप्नोति धातुसंज्ञा। सत्यम्। आधेयभेदेन सत्तापि पूर्वापरीभूता साध्यमाना। यथा देवदत्तसत्ता क्वचिद्गमनयुक्ता क्वचिद्भोजनयुक्ता क्वचित्पठनयुक्ता। एवमनेकधा योजना कार्या। एधते। अत्ति। दीव्यति। सुनोति। तुदति। रुणद्धि। तनोति। क्रीणाति। सहति। आयादिप्रत्ययान्तानामपि क्रियार्थत्वात् धातुत्वम्। गोपायति। कामयते। ऋतीयते। जुगुप्सते। कण्डूयति। पापच्यते। चोरयति। कारयति। चिकीर्षति। पुत्रकाम्यति। पुत्रीयति। अश्वति। श्येनायते। हस्तयते। मुण्डयति। एवं जुस्तम्भूचुलुम्पादीनामपि। जवनः। स्तभ्नाति। चुलुम्पाञ्चकार। प्रेङ्खोलयति। ननु क्रियार्थे धातौ शिश्ये इत्यादिषु भावे तदर्थप्रत्ययस्यापि धातुत्वप्रसङ्गः। भावप्रत्ययो हि क्रियार्थे एवोत्पद्यते। ततश्चात्सन्ध्यक्षर-स्येत्यात्वप्रसङ्गः। आत्वं हि धातोर्विहितमनैमित्तिकञ्चेति। अतः प्रत्ययनिषेधार्थं क्रियाविशेषकं प्रथमग्रहणं कर्तव्यं व्याख्येयञ्च प्रथमं यः क्रियामाहेति। प्राथम्यञ्चात्राभिधानापेक्षं ग्राह्यं तेन किं सिद्धमन्येनानभिहितां क्रियां य आह स धातुः। अयमर्थः- अन्येभ्यः क्रियाभिधायिभ्योः यः प्रथममाहेति। शिश्ये इत्यत्र तु शीत्यनेनाभिहितां क्रियां प्रत्यय आहेति न तस्य धातुसंज्ञा प्रवृत्तिः। शब्दार्थापेक्षया प्राथम्यं घटते तत्र शब्दतश्चेत्पुत्रीयतीत्यादावपि न प्राप्नोति। नात्र प्रथममुच्चार्यमाणः पुत्रशब्दः क्रियामाह। अर्थतश्चत्पुत्रीत्यादौ प्रथमा आद्या क्रिया अप्रथमेनापि क्येनाभिधीयते न तु द्वितीयेति सिद्ध्यति धातुसंज्ञा। ननु प्रथमग्रहणे सति चिकीर्षतीत्यत्रापि न प्राप्नोति धातुसंज्ञा। यतोऽत्रापि सन् प्रत्ययो न प्रथमं क्रियामाह अपि तु कृ इत्यनेनाभिहिताम्। नैवम्। करोत्यर्थोपसर्जनामिच्छा-मन्येनानभिहितां सन् प्रत्यय आहेति स्यादेव धातुसंज्ञेति। अत्रोच्यते। यथाऽत्र प्रथमग्रहणे कृते शिश्ये इत्यत्र धातुसंज्ञा न भवति तथा स्वार्थिकायादिप्रत्ययान्तानां न प्राप्नोति गोपायति कामयते इत्यादिषु अत्रापि अभिहिताया एव क्रियाया आयादिभिरभिहितात्वात्। तस्मादेव व्याख्येयं क्रियामेव प्राधान्येन योऽभिधत्ते स क्रियार्थाभिधायी साधुसंज्ञ् गोपयतीत्यादावपि तदस्तीति सिद्धा धातुसंज्ञा। शिश्य इत्यादौ तु भूतानद्यतनपरोक्षत्वादेरभिधानान्न धातुसंज्ञा। एतेन क्रियैवाभिधेया यस्य स धातुः। एवं च कृत्वा कर्तुमित्यादिषु साध्ये भावे कृत्प्रत्ययान्तस्यापि न धातुसंज्ञा। किञ्चान्यदपि उत्तरमस्ति् अव्ययसंज्ञया धातुसंज्ञाया बाधितत्वात्। इकिस्तिव् स्वरूपार्थे इति प्रत्ययान्तस्य सिद्धसाध्ययोरभेदोपचारेण सिद्धरूपत्वात्। कर्तव्यं भूयते इत्यादौ तु भावे त्याद्यन्तस्य क्रियार्थत्वेऽपि न धातुत्वं साहचर्यात्। यतोऽन्येषामलिङ्गसङ्ख्यानामपदसंज्ञकानां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धातुसंज्ञा प्रत्ययादि। अत्र लिङ्गसङ्ख्यानां विद्यमानत्वात्। क्रियामेव प्राधान्येन योऽभिधत्ते स धातुरिति यल्लक्षणं कृतं तस्य शिष्टधातुपाठानुसारित्वाद् आणपयतीत्यानिवृत्तिः। ननु यद्येवं शिष्टधातुपाठ एवास्तु किमनेन लक्षणेनेति चेन्मैवं पाठपठितानामपि क्रियार्थानामेव धातुत्वज्ञापनार्थत्वात्। अयं भावः-लक्षणात्पृथक। पठिता अपि त एव शिष्टा धातवो ये क्रियार्थाः। तेन यावाप्रभृतीनां सर्वनामविकल्पाद्यर्थानां पाठाविसंवादित्वेऽपि लक्षणविसेवादित्वाद् आणपयतीत्यादीनां तु क्रियार्थत्वेऽपि पाठविसंवादित्वाद्धातुत्वाभावः। अन्वयव्यतिरेकाभ्याञ्च धातोः क्रियार्थत्वापगमः। तथाहि-पचतीत्यादौ धातुप्रत्ययसमुदाये संसृष्टक्रियाकालकार-काद्यनेकार्थाभिधायिनि प्रयुज्यमाने धातोरवं क्रियार्थत्वमवगम्यतेऽन्वयव्यतिरेकाभ्यां नेतरेषाम्। पचतीति प्रयोगे द्वयं श्रूयते पच् इति प्रकृतिः अति-इति प्रत्ययश्च। अर्थोऽपि कश्चिद्गम्यते। विक्लित्तिः कर्तृत्वमेकत्वम्। पठतीत्युक्ते कश्चित् शब्दो हीयते। कश्चिदुपजायते कश्चिदन्वयी। पच् शब्दो हीयते पठ् शब्द उपजायते अतिशब्दोऽन्वयी। अर्थोऽपि कश्चिद्धीयते कश्चिदुपजायते कश्चिदन्वयी विक्लित्तिर्हीयते पठिरुपजायते एकत्वञ्चान्वयी। तेन मन्यामहे यः शब्दो हीयते तस्यासावर्थो यो हीयते यश्च शब्द उपजायते तस्यासावर्थो य उपजायते यश्च शब्दोऽन्वयी तस्यासावर्थो योऽन्यवयीति। ननु कृतिः करोत्यर्थः क्रिया तत्र युक्तं पचादीनां किं करोति पचति किं करोति पठतीति करोतीत्यर्थगर्भितत्वात् क्रियात्वम् अस्ति विद्यते भवतीनां तु न युक्तम् नहि भवति किं करोति अस्ति भवति विद्यते चेति। तदयुक्तम्। न करोत्यर्थः क्रियाशब्दस्य प्रवृत्तिनिमित्तमपि तर्हि कारकव्यापार विशेषः। व्यापारश्च व्यापारान्तराद्भिद्यते इत्यस्त्याद्यर्थोऽपि क्रियैव। करोत्यर्थस्तु क्रियाशब्दस्य व्युत्पत्तिनिमित्तमेव। ननु पचतीत्यादिषु हि तदस्ति इति धातुत्वं यतः पचती युक्ते न पठति न गच्छति न किञ्चिदन्यद्व्यापारान्तरं विधत्ते किन्तु पाकरूपविशेष एव गम्यते। अपि तु अस्त्यादीनां न प्राप्नोति क्रियात्वं सत्ताया व्यापारविशेषाभावात् यतः सर्वोऽपि धात्वर्थोऽस्त्यादिभिर्व्याप्त इति चेत्सत्यम् अस्त्यैवैतत्तथापि पाकादेर्विशेषात्सत्ताया अपि विशेषो ज्ञायते स्वरूपेण। नहि स एव पाकः सैव सत्ता। यथानेकघटाच्छादक एकः पटस्तेष्वनुस्यूतोऽपि तेभ्ये भिद्यते। नहि स एव पटः स एव घटः। एवं प्रस्तुतेऽपि। एवं सति क्रियासामान्यवचनाः कृभ्वस्तयः क्रियाविशेषवचनास्तु पचादय इति सिद्धम्। यथा क्रियाशब्दस्य न करोत्यर्थः प्रवृत्तिनिमित्तं किन्तु कारकव्यापार विशेषस्तथा भावशब्दे न भवत्यर्थः प्रवृतिनिमित्तमपि तु कारकव्यापारविशेष एवेत्यर्थः। यदाह हरिः-आख्यातशब्दे भामाभ्यां साध्यसाधनवर्तिता। प्रकल्पिता यथा शास्त्रे सद्ययादिष्वपि क्रमः॥१॥ साध्यत्वेन क्रिया तत्र धातुरूपनिबन्धना। सत्त्वभागस्तु यस्तस्याः स घञादिनिबन्धनः॥२॥ तथा च भावे घञ् इत्युक्त्वा पाकः कार इत्यादयोऽप्युदाह्रियन्ते। क्रियोपपदाद्धातोस्तुमित्युक्त्वा योद्धुं धनुर्भवति द्रष्टुं चक्षुर्जातमित्याद्यपि उदाहरणं युक्तम्। यदाहु:-यत्रान्यक्रियात्पदं न श्रूयते तत्रास्तिर्भवन्तीपरः प्रथमपुरुषे प्रयुज्यते। क्रिया च द्वेधा सिद्धसाध्यत्वभेदात्। तत्र सिद्धस्वभावोपसंहृतक्रमा परितः परिच्छिन्ना सत्त्वभावमापन्ना घञादिभिरभिधीयते। यदाह-कृदभिहितो भावो द्रव्यत्प्रकाशते इति। तुमादिभिस्तु सत्त्वभावमनापन्नेति विशेषः। साध्यमानावस्था पूर्वापरीभूतावयवा भूतभविष्यद्वर्तमानसद-सदाद्यनेकावयवरूपाख्यातपदैरुच्यते। यदाह-पूर्वापरीभूतं भावमाख्यातेनाचष्टे। यथा च पचतीत्यत्र पूर्वापरीभूतभावस्तद्वदेव जायते अस्ति विपरिणमते वर्धते अपक्षीयते विनश्यति भवति श्वेतते संयुज्यते समवैतीत्यादावपि। साध्यत्वाभिधानेन क्रमरूपाश्रयणात् क्रियाव्यपदेशः सिद्धः। तदुत्तम्-यवत्सिद्धमसिद्धं वा साध्यत्वेनाभिधीयते। आश्रितक्रमरूपत्वात् तत् क्रियेत्यभिधीयते॥१॥ सिद्धं सत्तादि असिद्धं तु कटादि। ननु एवं तर्हि सत्तायाः साध्यमानता कया रीत्या। उच्यते। यथा एकस्मिन् स्थाने पाषाणखण्डं कस्तूरिका चास्ति ततः कस्तूरिकामाहात्म्यात्पाषाणखण्डमपि सुगन्धि भवत्येवमत्रापि कस्मिंश्चिदेकस्मिन् पिण्डे पाकक्रिया सत्ता च विद्यते, पाकक्रिया च पूर्वापरीभूता ततस्तस्या माहात्म्यात्सत्तापि पूर्वापरीभूता भवतीति साध्यमानत्वम्। किं बहुनाख्यातपदेन उच्यमानः सिद्धभावोऽपि साध्यरूपतां भजति तन्माहात्म्यादित्यलं बहुना!

॥इति धात्वर्थनिरूपणम्॥

॥इति धातुरत्नाकरस्य प्रथमो विभागः॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट

क्रमानुसारधात्वर्थसूची

धात्वङ्क	धातुनाम	संस्कृतभाषार्थ	अंग्रेजी अर्थ	हिन्दी भाषार्थ
1	भू	सत्तायाम्	To be	होना
2	पां	पाने	To drink	पीना
3	घ्रां	गन्धोपादाने।	To smell	सूँघना
4	ध्मां	शब्दाग्निसंयोगयोः।	To blow	शब्द करना, अग्नि प्रज्वलित करने किए फूँकना
5	शं	गतिनिवृत्तौ।	To stand	रुक जाना
6	म्नां	अभ्यासे (अभ्यासः पारम्पर्येण वृत्तिः)	To behave like ancestors	अभ्यास करना, पूर्वजों के अनुकूल वृत्ति रखना।
7	दाम्	दाने	To give	देना
8	जिं 9 ज्रिं	अभिभवे	To conquer	जीतना
10	क्षिं	क्षये	To decay	नष्ट होना
11	इं (इतः परं षडुदन्ताः)	गतौ	To go	जाना
12	दुं 13 द्रुं 14 शुं 15 स्त्रुं	गतौ	To go	जाना
16	ध्रुं	स्थैर्ये च। चकाराद्गतौ	To be firm, to move	स्थिर होना, जाना
17	सुं	प्रसवैश्वर्ययोः। प्रसवोऽभ्य-नुज्ञानम्। ऐश्वर्यमीशनक्रिया।	To have power to cousent	जानना, सम्मति देना, ऐश्वर्य प्रकट करना
18	स्मृं	चिन्तायाम्	To remember	स्मरण करना
19	गृ 20 घृं	सेचने	To sprinkle	छिड़कना
21	औस्वृ	शब्दो पतापयोः	To sound, to pain	शब्द करना, कष्ट देना
22	दवृं	वरणे। वरणं स्थगनम्	To cover	ढँकना
23	ध्वृं 24 ह्वृं	कौटिल्ये	To behave contrary	गलत व्यवहार करना
25	सृं	गतौ।	To go	जाना
26	ऋं	प्रापणे च। चकाराद्गतौ	To go, to carry	जाना, ले जाना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

27	तॄ	प्लवनतरणयो:। प्लवनं मज्जनम् तरणमुल्लङ्घनम्	To swim, to bath in water	तैरना, पानी में स्नान करना
28	दृधें	पाने	To drink	पीना
29	दैव्	शोधने	To parify	शुद्ध करना
30	ध्यैं	चिन्तायाम्।	To meditate upon	ध्यान लगाना
31	ग्लैं	हर्षक्षये। इह हर्षक्षयो धात्व पचय:।	To be weak	क्षीण होना
32	म्लैं	गात्रविनामे। विना: कान्तिक्षय:	To grow weary	म्लान होना
33	द्यै	न्यङ्ककरणे। कुत्सितमङ्गं न्यङ्गम्	To disfigure	खराब करना
34	द्रैं	स्वप्ने	To sleep	सोना
35	ध्रैं	तृप्तौ	To be satisfied	तृप्त होना
36	कैं 37 गैं 38 रैं	शब्दे	To sound	शब्द करना
39	ष्टयैं 40 स्त्यैं	संघाते	To be collectea in a heap	इकठ्ठा होकर समुदाय बनाना
41	खैं	खदने। खदनं हिंसा स्थैर्यश्च	To strike, to be steady	हिंसा करना, स्थिर होना
42	क्षैं 43 जैं 44 सैं	क्षये	To decrease	क्षीण होना
45	स्नें 46 श्रैं	पाके	to boil	पकाना
47	पैं 48 ओवैं	शोषणे	To wither	सुकाना
49	ष्णं	वेष्टने	To coil around	लपेटना
50	फक्क	नीचेर्गतौ। नीचैर्गतिर्मन्दगमन. मसद्व्यवहार	To walk slowly To behave falsely	धीरे चलना गलत व्यवहार करना
51	तक	हसने	To laugh	हँसना
52	तकु	कृच्छ्रजीवने	To live in distress	दुखद अवस्था में जीना
53	शुक	गतौ	To go	जाना
54	बुक्क	भाषणे	To speak	बोलना
55	ओखृ 56 राखृ 57 लाखृ	शोषणालमर्थयो:	To be dry, to be able	सुखाना, समर्थ होना
58	द्राखृ 59 ध्राखृ	शोषणालमर्थयो:	To dry, to be able	सुखाना, समर्थ होना
60	शाखृ 61 श्लाखृ	व्याप्तौ	To pervade	व्याप्त करना
62	कक्ख	हसने	To laugh	हँसना
63	उख 64 नख 65	गतौ	To go	जाना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	णख 66 वख 67 मख 68 रख 69 लख 70 मखु 71 रखु 72 लखु 73 रिखु 74 इख 75 इखु 76 ईखु 77 वल्ग 78 रेगु 79 लगु 80 तगु 81 श्रगु 82 श्लगु 83 अगु 84 वगु 85 मगु 86 स्वगु 87 इगु 88 उगु 89 रिगु 90 लिगु			
91	त्वगु	कम्पने च। चकाराद्गतौ स्थितस्यैव चलनं कम्पनम। गतिर्देशान्तर प्राप्तिहेतुः क्रिया	To tremble, to go	कम्पित होना, जाना
92	युगु 93 जगु 94 वुगु	वर्जने	To avoid	छोड देना
95	गग्घ	हसने	To laugh	हँसना
96	दघु	पालने	To protect	रक्षा करना
97	शिघु	आघ्राणे। आघ्राणं गन्धोपादानाम्।	To smell	सूँघना
98	लघु	शोषणे	To dry	सुखाना
99	शुच	शोके	To regret	शोक जताना
100	कुच	शब्दे तारे। तार उच्च इत्यर्थः	To cry out [be have contrary]	जोर से आवाज करना,
101	क्रुञ्च	गतौ	To go, to be come small	जाना, लघुता प्रकट करना
102	क्रुञ्च च	कौटिल्याल्पीभावयोः।	To become small, to behave contrary	वक्रता करना, छोटा होना
103	लुञ्च	अपनयने। अनुपयुक्तापासने	To throw off useless	अनुपयुक्त को फेंक देना
104	अर्च	पूजायाम्	To worship	पूजा करना
105	अञ्चू	गतौ च। चकारात्पूजायाम्	To go, to worship	जाना, पूजा करना
106	वञ्चू 107 चञ्चू 108 तञ्चू 109 त्वञ्चू 110 मञ्चू	गतौ	To go	जाना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	111 मुञ्चू 112 म्रुञ्चू 113 म्रुचू 114 म्लुचू 115 ग्लुञ्चू 116 षस्च			
117	ग्रुचू 118 ग्लुचू	स्तेये	To steal	चोरी करना
119	म्लेछ	अव्यक्तायां वाचि	To speak cofusedly	अनर्थक बोलना
120	लछ 121 लाछु	लक्षणे	To mark	चिह्नित करना
122	वाछु	इच्छायाम्	To wish	इच्छा करना
123	आछु	आयामे	To extend	लंबा करना
124	ह्रीछ	लज्जायाम्	To be ashamed	शर्म करना
125	हुर्छा	कौटिल्ये	To be crooked	वक्रता करना
126	मुर्छा	मोह समुच्छ्राययो:	To faint	मूर्छित होना, बड़ा होना
127	स्फुर्छा 128 स्मुर्छा	विस्मृतौ	To forget	भूल जाना
129	युछ	प्रमादे	To be idle	आलस करना
130	धृज 131 धृजु 132 ध्वज 133 ध्वजु 134 ध्रज 135 ध्रजु 136 वज 137 व्रज 138 षम्ज	गतौ	To go	जाना
139	अज	क्षेपणे च। चकाराद्गतौ	To go, to throw	जाना, फेंकना
140	कुज् 141 खज्	स्तेये	To steal	चोरी करना
142	अर्ज 143 सर्ज	अर्जने	To procure, to earn	संग्रह करना, कमाना
144	कर्ज	व्यथने	To distress	पीडा करना
145	खर्ज	मार्जने च। चकाराद् व्यथने	To cleanse, to distress	साफ करना, पीडा देना
146	खज	मन्थे। मन्थो विलोडनम्	To churn	मंथन करना
147	खजु	गतिवैकल्ये। गतेर्वैकल्यं विकृतत्वं।	To walk lame	लंगडा होकर चलना
149	ट्वोस्फूर्जा	वज्रनिर्घोषे	To treamble	कंपित होना
150	क्षीज कूज 151	अव्यक्ते शब्दे	To speak in distinctly	अर्थहीन आस्पष्ट बोलना
152	152 गुज, 153 गुजु			
154	लज 155 लजु 156	भर्त्सने	To blame	दोष देना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	तर्ज			
157	लाज 158 लाजु	भर्जने च। चकाराद् भर्त्सने	To blame, to fry	दोष देना, छौंक लगाना
158	159 जज 160 जजु	युद्धे	To fight	युद्ध करना
161	तुज	हिंसायाम्	To kill	हिंसा करना
162	तुजु	बलने च, चकाराद्धिंसायाम्	To kill, to breathe	हिंसा करना, श्वास लेना
163	गर्ज 164 गजु 165 गृज 166 गृजु 167 मुज 168 मुजु 169 मृजु 170 मज	शब्दे	To sound	शब्द करना
171	गज	मदनेव। चकाराच्छब्दे।	To sound, to be intoxicated	शब्द करना, मदोन्मत्त होना
172	त्यजं	हानौ। हानिस्त्यागमः	To abandon	त्याग करना
173	षञ्जं	सङ्गे	To accompany	मित्रता करना
174	कटे	वर्षावरणयोः। वृष्टावावरणे चार्थे	To cover, to rain	ढँकना, बरसना
175	शट	रुजाविशरणगत्यवशा तनेषु। चतुर्ष्वर्थेषु।	To be sick, to disunite	रोगी होना, सड जाना, पतला होना,
176	वट	वेष्टने	To surround	लपेटना
177	किट 178 खिट	उत्त्रासे। उत्त्रासो भयोद्गतिरुत्साहनञ्च	To fear, to give pain	भय करना, दुःख देना
179	शिट 180 षिट	अनादरे	To despise	अवहेलना करना
181	जट 182 झट	संघाते।	To combine	मिलाना
183	पिट	शब्दे च। चकारात्संघाते।	To sound, to combine	शब्द करना, मिलाना
184	भट	भृतौ। भृतिर्वेतनं भरणञ्च।	To feed, to serve	पोषण करना, सेवा करना
185	तट	उच्छाये।	To rise	आगे बढना
186	खट	काङ्क्षे। काङ्क्षास्यास्तीत्य भ्रादित्वादः काङ्क्षः। काङ्क्षाविशिष्टो धात्वर्थः।	To wish	इच्छा करना
187	णट	नृतौ	To dance	नृत्य करना
188	हट	दीप्तौ।	To shine	चमकना
189	षट	अवयवे	To form a part	भाग करना
190	लुट	विलोटने	To wallow	लोटना

191	चिट	प्रैष्ये। प्रैष्यं दासत्वम्।	To be slave	सेवक होना
192	विट	शब्दे	To sound	शब्द करना
193	हेट	विबाधायाम्	To injure	चोट पहुँचाना
194	अट 195 पट 196 इट 197 किट 198 कट 199 कटु 200 कट	गतौ	To go	जाना
201	कुट्ट	वैकल्ये	To have a defect	विकलांग होना
202	मुट	प्रमर्दने	To turn forcibly	मरोड़ना
203	चुट 204 चुट्ट	अल्पीभावे	To become small	छोटा होना
205	वट्ट	विभाजने। विभाजनं विभागीकरणम्	To part	विभाजित करना
206	रुट्ट 207 लुट्ट	स्तेये	To steal	चोरी करना
208	स्फट 209 स्फुट्	विसरणे	To break	तोड़ना
210	लट	बाल्ये। बाल्यं बालक्रिया	To be childish,	बालचेष्टा करना
211	रट (अथ ठान्ता:सप्तदश सेटश्च)	परिभाषणे।	To speak	बोलना
212	212 रठ च	चकारोलटानुकर्षणार्यस्तेन लटे रर्थद्वयं सिद्धम्	To speak	बोलना
213	पठ	व्यक्तायां वाचि	To read	स्पष्ट उच्चारण करना
214	वठ	स्थौल्ये	To be fat	मोटा होना
215	मठ	मदनिवासयोश्च	To be fat, to dwell, to be proud of	मोटा होना, निवास करना, गर्वित होना
216	कठ	कृच्छ्रजीवने	To live in distress	कष्टमय जीवन बिताना
217	हठ	बलात्कारे	To be ravish	हठ करना
218	उठ 219 रुठ 220 लुठ	उपधाते	To strike	कष्ट देना
221	पिठ	हिंसासंक्लेशनयो:	To kill, to quarrel	मारना, लड़ाई करना
222	शठ	कैतवे च। चकाराद् हिंसासंक्लेशनयो:	To deceive, to kill	मूर्ख बनाना, मारना
223	शुठ	प्रतीघाते	To strike	कष्ट देना
224	कुठु 225 लुठु	आलस्ये च। चकाराद् गतिप्रतीघाते।	To be idle, to strike	आलस करना, मारना
226	शुठु	शोषणे	To dry	सुखाना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

227	अठ 228 रुठु	गतौ	To go	जाना
229	पुड्ड	प्रमर्दने	To rub	रगड़ना
230	मुड्ड	खण्डने च। चकारात्प्रमर्दने	To cut a form, to rub	खण्डित करना, रगड़ना
231	मड्ड	भूषायाम्	To decorate	शोभित करना
232	गड्ड	वदनैकदेशे। गण्डगतसंहतनक्रियायामित्यर्थ:।	To decorate	शोभित करना
233	शौड्ट	गर्वे	To be proud	गर्व करना
234	यौड्ट	सम्बन्धे। सम्बन्ध: श्लेष:	To join	जोड़ना
235	मेड 236 म्रेड्ट 237 म्लेड 238 लोड 239 लौड	उन्मादे	To be mad	पागल होना
240	240 रोड 241 रौड 242 तौड्ट	अनादरे	To dishonour	अनादर करना
243	क्रीड	विहारे	To play	खेलना
244	तुड 245 तूड 246 तोड	तोडने। तोडनं दारणम्	To break	तोड़ना
247	हुड 248 हूड	गतौ	To go	जाना
249	हुड्ट २५० हौड		To go	जाना
251	खोड्ट	प्रतीघाते गतावित्यनुवृत्ते-र्गतिविषये प्रतीघाते	To be lame	लंगड़ा होना
252	विड	आक्रोशे।	To be cry out loudly	जोर से चिल्लाना
253	अड	उद्यमे	To exert	उद्यम करना
254	लड	विलासे	To play	खेलना
255	कड्ड	मदे	To be proud	गर्व करना
256	कद्‌ड	कार्कश्ये	To be hard	कठोर होना
257	अद्‌ड	अभियोगे	To attack	आक्रमण करना
258	चुद्‌ड (चुड्ड्)	हावकरणे। हावोभाव सूचनम्।।	To show one's wish	हावभाव दिखाना
259	अण 260 रण 261 वण 262 व्रण 263 बण 264 भण 265 भ्रण 266 म्रण 267 धण 268 ध्वण 269 ध्रण 270 कण 271 क्वण 272 चण।	शब्दे। शब्द: शब्दक्रिया	To sound	शब्द करना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

273	ओणृ	अपनयने	To remove	हटाना
274	शोणृ	वर्णगत्यो:	To be redish, to go	लाल होना, जाना
275	श्रोणृ 276 श्लोणृ	संघाते	To unite	एक होना
277	पैणृ	गतिप्रेरणश्लेषणेषु–	To go, to embrace, to suggest to act	जाना, गले लगाना, प्रेरित करना
278	चितै	संज्ञाने। संज्ञानं संविति:	To know	जानना
279	अत	सातत्यगमने। सातत्योगमनं नित्यगति:	To go constantly	निरन्तर चलना
280	च्युतृ	आसेचने। आसेचनमीषत्सेक:	To sprinkle in small quantity	थोड़ा छिड़कना
281	चुतृ 282 स्चुतृ 283 स्च्युतृ।	क्षरणे। क्षरणं स्रवणम्।	To ooje	रिसना
284	जुतृ	भासनं	To shine	चमकाना
285	अतु	बन्धने	To bind	बांधना
286	कित	निवासे	To dwell	रहना
287	ऋत	घृणागतिस्पर्धेषु	To be kind, to go, to compete	दया करना, जाना, प्रतिस्पर्धा करना
288	कुथु 289 पुथु 290 लथु 291 मथु 292 मन्थ् 293 मान्थ	हिंसासंक्लेशयो:। हिंसा प्राण्युपघात:। संक्लेशो बाधा।	To hurt, to kill	चोट पहुँचाना, मारना
294	खादृ	भक्षणे	To eat	खाना
295	बद	स्थैर्ये	To be firm	स्थिर होना
296	खद	हिंसायाञ्च। चकारात्स्थैर्ये	To kill, to be firm	मारना, स्थिर होना
297	गद	व्यक्तायां वाचि	To speak distinctly	स्पष्ट बोलना
298	रद	विलेखने। विलेखनमुत्पाटनम	To carve	खोदना
299	णद 300 भिक्ष्विदा	अव्यक्ते शब्दे	To speak indistinctly	अस्पष्ट बोलना
301	अर्द	गतियाचनयो:	To go, to beg	जाना, मांगना
302	णर्द 303 नर्द 304 गर्द	शब्दे	To sound	शब्द करना
305	तर्द	हिंसायाम्	To kill	हिंसा करना
306	कर्द	कुत्सिते शब्दे	To rumble	अव्यक्त शब्द करना
307	खर्द	दशने। दशनमिहदन्द-शूककर्तृकं दन्तकर्म।	To bite	डंक मारना
308	अदु	बन्धने	To bind	बांधना
309	इदु	परमैश्वर्ये। परमैश्वर्यं परमेशनक्रिया	To be lord	स्वामी होना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

310	विदु	अवयवे। अवयव एकदश: अनेनस्वगता क्रिया लक्ष्यते।	To act in one part	एक भाग में क्रिया करना
311	णिदु	कुत्सायाम्।	To censure	निन्दा करना
312	टुनडु	समृद्धौ	To be prosperous	समृद्ध होना
313	चदु	दीप्त्याह्लादनयो:। आह्लादनमानन्दोत्पादनम्	To shine, to make delightful	चमकना, हर्षित होना
314	त्रदु	चेष्टयाम्।	To act	चेष्टा करना
315	कदु 316 क्रदु 317 क्लदु	रोदनाह्वानयो:।	To cry, to call	चिल्लाना, बुलाना
318	क्लिदु	परिदेवने। परिदेवनं शोचनम्	To lament	रोदन करना
318	स्कृन्दृ	गतिशोषणयो:।	To go, to dry	जाना, सुखाना
320	षिधू	गत्याम्	To go	जाना
321	षिधौ	शास्त्रमाङ्गल्ययो:। शास्त्रं शास्त्रविषयं शासनम्। माङ्गल्यं मङ्गलविषयाक्रिया	To advise in scriptures	शास्त्रयुक्त सलाह देना
322	शुन्ध	शुद्धौ	To be pure	शुद्ध करना
323	स्तन 324 धन 325 ध्वन 336 चन 327 स्वन 328 वन	शब्दे	To sound	शब्द करना
329	वन 330 षन	भक्तौ। भक्तिर्भजनम्।	To pray to god, to go	प्रार्थना करना, जाना
331	कनै	दीप्तिकान्तिगतिषु। दीप्ति: प्रकाश:। कान्ति: शोभा।	To shine, to be beautiful	चमकना, सुन्दर दिखना
332	गुपौ	रक्षणे	To protect	रक्षा करना
333	तपं 334 धूप	संतापे	To be hot or suffer pain	सन्तप्त होना
335	रप 336 लप 337 जल्प	व्यक्ते वचने	To speak distinctly	स्पष्ट बोलना
338	जप	मानसे च। मनोनिर्वत्ये वचने। वचने। चकाराद्व्यक्ते वचने	To mutter, to speak	जप करना, बोलना
339	चप	सान्त्वने	To consoleted	सान्त्वना देना
340	षप	समवाये	To unite	एक होना
341	सृप्लृं	गतौ	To go	जाना
342	चुप	मन्दायाम्। गता-वित्यनुवृत्तेर्मन्दायां गतौ	To go slowly	धीरे जाना
343	तुप 344 तुम्प 347 तुफ 348 तुम्फ	हिंसायाम्	To kill	मारना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	349 त्रुफ 350 त्रुम्फ 345 त्रुप 346 त्रुम्पँ			
351	वर्फ 352 रफ 353 रेफु 354 अर्ब 355 कर्ब 356 खर्ब 357 गर्ब 358 चर्ब 359 चर्ब 360 नर्ब 361 पर्ब 362 बर्ब 363 शर्ब 364 षर्ब 365 सर्ब 366 रिबु 367 रबु	गतौ	To go	जाना
368	कुबु	आच्छादने	To cover	ढँकना
369	लुबु 370 जुबु	अर्दने	To pain	कष्ट देना
371	चुबु	वक्त्रसंयोगे।	To kiss	चुम्बन करना
372	सृभू (सृभ्) 373 सृम्भू (सृम्भ्) 374 स्रिभू (स्रिभ्) 375 षिम्भू (सिम्भ्) 376 भर्भ (भर्भ्)	हिंसायाम्।	To kill	मारना
377	शुम्भ (शुम्भ्)	भाषणे च।	To speak	बोलना
378	यभ (यभ्)	मैथुने। मिथुनस्य कर्मणि भावे वा।	To do act of intercourse	संभोग क्रिया करना
379	जभ (जम्भ्)	मैथुने। मिथुनस्य कर्मणि भावे वा।	To do act of intercourse	संभोग क्रिया करना
380	चमू 381 छमू 382 जमू 383 झमू 384 जिमू	अदने	To eat	खाना
385	क्रमू	पादविक्षेपे। पादन्यास इत्यर्थः	To walk	चलना
886	यमूं	उपरमे। उपरमो निवृत्तिः	To stop	स्थिर होना
887	स्यमू	शब्दे	To sound	शब्द करना
888	णमं	प्रह्वत्वे। प्रह्वत्वं नम्रत्वम्	To bend	मोडना
889	षम 390 ष्टम	वैक्लव्ये। वैक्लव्यं कातरत्वम्	To be vigourless	कातर होना
391	अम	शब्दभक्त्योः भक्तिर्भजनम्	To sound, to pray	शब्द करना, प्रार्थना करना
392	अम 393 द्रम 394	गतौ	To go	जाना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	हम्म 395 मीमृ 396 गम्लृं			
397	हय 398 हर्य	क्लान्तौ च। चकाराद्गतौ।	To be weary, to go	थकान होना, जाना
399	मव्य	बन्धने।	To bind	बांधना
400	सूक्ष्र्य 401 ईक्ष्र्य 402 ईर्ष्य	ईर्ष्यार्थाः	To envy	ईर्षा करना
403	शुच्यै 404 चुच्यै	अभिषवे। द्रवेण द्रवाणां परिवासनमभिषवः।	To perfume a fluid by another fluid	एक द्रव्य से अन्य द्रव्य को सुगन्धित करना
405	त्सर	छद्मगतौ। छद्मप्रकार इत्यर्थः	To cheat	छलकपट करना
406	क्मर	हूर्छने। हूर्छनं कौटिल्यम्	To be crooked	टेढा होना
407	अभ्र 408 बभ्र 409 मभ्र	गतौ	To go	जाना
410	चर	भक्षणे च। चकाराद्गतौ।	To eat, to walk	खाना, चलना
411	घोरृ	गतेश्चातुर्ये	To walk skilfully	सावधान होकर चलना
412	खोरृ	प्रतीघाते। गतेरित्यनु वृत्तेर्गतिप्रतीघाते	To be lame	विकलांग होना
413	दल 414 त्रिफला	विशरणे	To be scattered	बिखेरना
415	मील 416 श्मील	निमेषणे निमेषणं संकोचः।	To concentrate	एकाग्र होना
417	स्मील 418 क्ष्मील	निमेषणे निमेषणं संकोचः।	To concentrate	एकाग्र होना
419	पील	प्रतिष्टम्भे। प्रतिष्टम्भो रोपणम्	To erect in ground	जमीन में गाड़ना
420	णील	वर्णे। वर्णोपलक्षितायां क्रियायाम्।	To be green	हरित होना
421	शील	समाधौ। समाधिरैकाग्र्यम्	To contemplate in a thing	समाधिस्थ होना
422	कील	बन्धे	To bind	बांधना
423	कूल	आवरणे	To cover	ढंकना
424	शूल	रुजायाम्	To be ill	रोगी होना
425	तूल	निष्कर्षे। निष्कर्षोऽन्त स्थस्य बहिर्निःसारणम्	To draw out	बाहर निकालना
426	पूल	संघाते	To unite	एक होना
427	मूल	प्रतिष्ठायाम्	To root	स्थापित करना
428	फल	निष्पत्तौनिष्पत्तिः सिद्धिः	To fulfil according to wish	इच्छानुसार पूर्ण करना
429	फुल्ल	विकसने	To bloom	विकसित होना
430	चुल्ल	हावकरणे। मैथुनेच्छा-प्रेरितशरीर विकारो हावकरणम्।	To sport with a wish of intercourse	संभोगेच्छा करना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

431	चिल्ल	शैथिल्ये च। चकाराद्भावकरणे	To become loose, to sport with a wish of intercourse	शिथिल होना, मैथुन क्रीडा करना
432	पेलृ 433 फेलृ 434 शेलृ 435 षेलृ 436 सेलृ 437 वेल्ह 438 सल 439 तिल 440 तिल्ल 441 पल्ल 442 वेल्ल	गतौ	To go	जाना
443	वेलृ 444 चेलृ 445 केलृ 446 क्वेलृ 447 खेलृ 448 स्खल	चलने	To move	चलना
449	खल	संचये च। चकाराच्चलने	To collect, to move	एकत्रित करना, चलना
450	श्वल 451 श्वल्ल	आशु गतौ	To go quickly	शीघ्र जाना
452	गल	अदने। गल: स्रवणेऽप्यनेकार्थत्वात्	To eat, to ooze	खाना, रिसना
453	चर्व	अदने	To eat, to ooxe	खाना, रिसना
454	पूर्व 455 पर्व 456 मर्व	पूरणे	To fill	भरना
457	मर्व 458 धवु 459 शव	गतौ	To go	जाना
460	कर्व 461 खर्व 462 गर्व	दर्पे	To be proud	गर्व करना
463	ष्ठिवू 464 क्षिवू	निरसने	To spit out	थूकना
465	जीव	प्राणधारणे	To live	प्राणधारण करना
466	पीव 467 मीव 468 तीव 469 नीव	स्थौल्ये	To be fat	मोटा होना
470	उर्वै 471 तुर्वै 472 थुर्वै 473 दुर्वै 474 धुर्वै 475 जुर्वै 476 अर्व 477 भर्व 478 शर्व	हिंसा करना	To kill	हिंसा करना
479	मुर्वै 480 मव	बन्धने	To bind	बंधन में डालना
481	गुर्वै	उद्यमे	To work	काम करना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

482	पिवु 483 मिवु 484 निवु	सेचने	To sprinkle	छिडकाव करना
485	हिवु 486 दिवु 487 जिवु	प्रीणने	To please	प्रसन्न होना
488	इवु	व्याप्तौ च। चकारात्प्रीणने	To pervade, to please	व्याप्त करना, प्रसन्न करना
489	अव	रक्षणगतिकान्तिप्रीति तृप्त्यवगमनप्रवेश- श्रवणस्वाम्यर्थ याचन-क्रियेच्छादीप्त्य-वाप्त्यालिङ्गनहिंसादहनभाव वृद्धिषु एकोनविंशतावर्थेषु।	To protect, to go, To be beautiful, to love, to be tranquiled, to know, to enter, to hear, to work for owner, to work for money, to beg, to wish, to shine, to earn, to kiss, to kill, to burn, to be, to increase	रक्षा करना, प्रसन्न करना, सुन्दर बनाना, प्रेम करना, तृप्त करना, जानना, प्रवेश करना, सुनना, मालिक के लिये कार्यकरना, पैसे के लिए कार्य करना, मांगना, इच्छा करना, चमकना, कमाना, चुम्बन करना, मारना, जलाना, होना, बढना।
490	कश	शब्दे	To sound	शब्द करना
491	मिश 492 मश	रोषे च। चकाराच्छब्दे	To be angry, to sound	क्रोध करना, शब्द करना
493	शश	प्लुतिगतौ। प्लुतिभिर्गमने उत्प्लुत्य गमन इत्यर्थः	To walk while jumping	कूदते हुए चलना
494	णिश	समाधौ।	To comtemplate in a thing	समाधिस्थ होना
495	दृशृं	प्रेक्षणे।	To see	देखना
496	दंशं	दशने। दशनं दन्तकर्म	To bite	डंक मारना
497	घुष्टृ	शब्दे	To sound	शब्द करना
498	चूष	पाने	To suck up	पान करना
499	तूष	तुष्टौ	To be tranquilled	तृप्त करना
500	पूष	वृद्धौ	To be fat	मोटा होना
501	लुष 502 मूष	स्तेये	To steal	चोरी करना
503	षूष	प्रसवे (प्रसवोऽभ्यनुज्ञानम्)	To give birth to	जन्म देना
504	ऊष	रुजायाम्।	To be kill	हिंसा करना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

505	ईष	उञ्छे। उच्छमुच्चयनम्।	To collect	इकट्ठा करना
506	कृषं	विलेखने। विलेखनं हलोत्कर्षणम्।	To plough	हल जोतना
507	कष 508 शिष 509 जष 510 झष 511 वष 512 मष, 513 मुष 514 रुष 515 रिष 516 यूष 517 जूष 518 शष 519 चष	हिंसायाम्	To kill, to injure	हिंसा करना, चोट पहुँचाना
520	वृषू	संघाते च। चकाराद्हिंसायाम्।	To unite, to kill	एक होना, हिंसा करना
521	भष	भर्त्सने। भर्त्सनं कुत्सितशब्दकरणम्	To bark	भर्त्सना करना
522	जिषू 523 विषू 524 मिषू 525 निषू 526 पृषू 527 वृषू	सेचने	To sprinkle	छिड़कना
528	मृषू	सहने च। चकारात्सेचने	To sprinkle	छिड़कना
529	उषू 530 श्रिषू 531 श्लिषू 532 प्रुषु, 533 प्लुषू	दाहे	To burn	जलना
534	धृषू	सहर्बे	To attack	आक्रमण करना
535	हृषू	अलीके	To lie	झूठ बोलना
536	पुष	पुष्टौ	To be powerful	पुष्ट होना
537	भूष 538 तसु	अलङ्कारे	To adorn	शोभित करना
539	तुस 540 ह्रस 541 ह्लस 542 रस	शब्दे	To sound	शब्द करना
543	लस	श्लेषणक्रीडनयो	To enbrace, to sport	गले लगना, लीला करना
544	घस्लृं	अदने	To eat	भोजन करना
545	हसे	हसने	To laugh	हँसना
546	पिसृ 547 पेसृ 548 वेसृ	गतौ	To go	जाना
549	शसू	हिंसायाम्	To kill	मारना
550	शंसू	स्तुतौ च। चकाराद् हिंसायाम्	To praise, to kill	प्रसन्न करना, मारना
551	मिहं	सेचने।	To sprinkle	छिड़कना
552	दहं	भस्मी करणे	To burn	जलाना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

553	चह	कल्कने। कल्कनं शाठ्यम्	To deceive	शठता करना
554	रह	त्यागे	To abandon	त्याग करना
555	रहु	गतौ	To go	जाना
556	दुह 557 दृहु 558 वृह	वृद्धौ	To grow	बढना
559	वृहृ 560 वृह	शब्दे च। चकाराद्वृद्धौ	To sound, to grow	शब्द करना, बढना
561	उहृ 562 तुहृ 563 दुहृ	अर्दने	To hurt	चोट पहुँचाना
564	अर्ह 565 मह	पूजायाम्	To worship	पूजा करना
566	उक्ष	सेचने	To sprinkle	छिड़कना
567	रक्ष	पालने	To protect	रक्षा करना
568	मक्ष 569 मुक्ष	संघाते	To gather	एकत्रित होना
570	अक्षौ	व्याप्तौ च चकारात्संघाते	To pervade, to gather	व्याप्त होना, एकत्रित होना
571	तक्षौ 572 त्वक्षौ	तनूकरणे। तनूकरणं कार्श्यम्।	To thin, to chop	पतला करना, खण्डित करना
573	णिक्ष	चुम्बने। चुम्बनं वक्त्रसंयोग:	To kiss	चुम्बन करना
574	तृक्ष 575 स्तृक्ष 576 णक्ष	गतौ	To go	जाना
577	वक्ष	रोषे	To be angry	क्रोधित होना
578	त्वक्ष	त्वचने। त्वचनं त्वग्ग्रहणं संवरणं वा।	To catch a skin, to cover	त्वचा ग्रहण करना, ढँकना
579	सूर्क्ष	अनादरे	To disrespect	अनादर करना
580	काक्षु 581 वाक्षु 582 माक्षु	काङ्क्षायाम्	To desire	इच्छा करना
583	द्राक्षु 584 ध्राक्षु 585 ध्वाक्षु	घोरवाशिते च। चकारात्काङ्क्षायाम्	To cry out, to desire	चिल्लाना, इच्छा करना
586	गाङ्	गतौ	To go	जाना
587	ष्मिङ्	ईषद्धसने	To smile	मुस्कुराना
588	डीङ्	विहायसांगतौ।	To fly	उडना
589	उंङ् 590 कुंङ् 591 गुंङ् 592 घुंङ् 593 ङुङ्	शब्दे	To sound	शब्द करना
594	च्युंङ् 595 ज्युंङ् 596 जुंङ् 597 प्रुंङ्	गतौ	To go	जाना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	598 प्लुंङ्			
599	रुंङ्	रेषणे च। चकाराद्गतौ रेषणं हिंसाशब्द:।	To kill, to go	मारना, जाना
600	पूङ्	पवने। पवनं नीरजीकरणम	To purify, cleanse	शुद्ध करना
601	मूङ्	बन्धने	To bind	बाँधना
602	धृंङ्	अविध्वंसने	To hold	धारण करना
603	मेङ्	प्रतिदाने। प्रतिदान प्रत्यर्पणम्	To return	वापिस करना
604	देंङ् 605 त्रैंङ्	पालने	To protect	रक्षा करना
606	श्यैंङ्	गतौ	To go	जाना
607	प्यैंङ्	वृद्धौ	To grow	बढ़ना
608	षकुङ्	कौटिल्ये	To be crooked	टेढा होना
609	मकुङ्	मण्डने	To adorn	अलंकृत करना
610	अकुङ	लक्षणे। लक्षणं चिन्हम्	To mark	चिह्नित करना
611	शीकृङ्	सेचने।	To sprinkle	छिड़कना
612	लोकृङ्	दर्शने।	To see	देखना
613	श्लोकृङ्	संघाते। संघात: संहननं संहन्यमानश्च	To unite, to collect	एक होना, इकठ्ठा करना
614	द्रेकृङ् 615 ध्रेकृङ्	शब्दोत्साहे। शब्द स्योत्साहऔद्धत्यं वृद्धिश्च	To speak happily To speak more	प्रसन्नता से बोलना, अधिक बोलना
616	रेकृङ् 617 शकुङ्	शङ्कायाम्। शङ्का संदेह: पूर्वस्यार्थ: द्वितीयस्य त्रासश्च	To doubt	शंका करना
618	ककि	लौल्ये। लौल्यं गर्धश्चापलञ्च	To long for, to be unfirm	लोलुपता करना, चञ्चल होना
619	कुकि 620 वृकि	आदाने	To take	ग्रहण करना
621	चकि	तृप्तिप्रतीघातयो:	To be satisfied, to beat	संतुष्ट होना, प्रतिघात करना
622	ककुङ् 623 श्वकुङ् 624 त्रकुङ् 625 श्रकुङ् 626 श्लकुङ् 627 ढौकृङ् 628 त्रौकृङ् 629 ष्वष्कि 630 बस्कि 631 मस्कि 632 तिकि 633 टिकी 634 टीकृङ् 635 सेकृङ् 636	गतौ लङ्घिर्भोजन- निवृत्यर्थोऽपि	To go	जाना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	स्रेकृङ् 637 रघुङ् 638 लघुङ्			
639	अघुङ् 640 वघुङ्	गत्याक्षेपे। गतेराक्षेपो वेग आरम्भ उपलम्भो वा	To go fast, to start To experience intercourse	शीघ्र गमन करना, प्रारम्भ करना, सुख का अनुभव करना
641	मघुङ्	कैतवे च। कैतवे वञ्चना। चकाराद्गत्याक्षेपे	To deceit, to go fast to state, to experience intercourse	जुआ खेलना, सुख का अनुभव करना
642	राघृङ् 643 लाघृङ्	सामर्थ्ये	To enable	सामर्थ्य देना
644	द्राघृङ्	आयासे च। चकारा- त्सामर्थ्ये। आयास: कदर्थनम्	To enable, to effort	सामर्थ्य देना, प्रयत्न करना
645	श्लाघृङ्	कत्थने। कत्थनमुत्कर्षाख्यानम्	To praise	प्रसन्न करना
646	लोचृङ्	दर्शने	To see	देखना
647	षचि	सेचने। सेचनं सेवनं भजनमितियावत्	To pray	प्रार्थना करना
648	शचि	व्यक्तायां वाचि	To speak distinctly	स्पष्ट बोलना
649	कचि	बन्धने	To bind	बांधना
650	कचुङ्	दीप्तौ च। चकाराद्बन्धने	To shine, to bind	चमकना, बांधना
651	श्वचि 652 श्वचुङ्	गतौ	To go	जाना
653	वर्चि	दीप्तौ	To shine	चमकना
654	मचि 655 मुचुङ्	कल्कने। कल्कनं-दम्भ:शाठ्यं क्वथनञ्च	To pretend, to deceive to boil	दम्भ करना, शठता करना, उबालना
656	मचुङ्	धारणोच्छ्रायपूजनेषु च चकारात्कल्कने	To hold, to grow, to worship, to pretend, to deceive, to boil	धारण करना, बढना, पूजा करना, दम्भ करना, छल करना, उबालना
657	पचुङ्	व्यक्तीकरणे	To speak clear	स्पष्ट बोलना
658	ष्टुचि	प्रसादे	To please, to be pleased	प्रसन्न करना, प्रसन्न होना
659	एजृङ् 660 भ्रेजृङ् 661 भ्राजि	दीप्तौ	To shine	चमकना
662	इजुङ्	गतौ	To go	जाना
663	ईजि	कुत्सने च। चकाराद्गतौ	To censure, to go	निन्दा करना, जाना
664	ऋजि	गतिस्थानार्जनोर्जनेषु ऊर्ध्वं प्राणनम्	To go, to stand, to earn, to breathe	जाना, स्थिर होना, कमाना, श्वास लेना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

665	ऋजुङ् 666 भृजैंङ्	भर्जने भर्जनं पाकप्रकार:	To fry	तलना, भूनना
667	तिजि	क्षमानिशानयो: निशानंतक्ष्णीकरणम्	To endure, to make pointed	क्षमा करना, तीक्ष्ण करना
668	घट्टि	चलने	To move	जाना
669	स्फुटि	विकसने	To move	जाना
670	चेष्टि	चेष्टायाम्। चेष्टेहा	To attempt	चेष्टा करना
671	गोष्टि 672 लोष्टि	संघाते	To be united	एक होना
673	वेष्टि	वेष्टने। वेष्टनं ग्रन्थनं लोटनं परिहाणिश्च	To twist, to wallow to decrease	लपेटना, गूँथना,
674	अट्टि	हिंसातिक्रमयो:। अतिक्रम उल्लङ्घनम्	To kill, to transgress	मारना, अतिक्रमण करना
675	एठि 676 हेठि	विबाधायाम्	To distress	चिन्ता करना
677	मठुङ् 678 कठुङ्	शोकोशोकोऽत्राध्यानम्	To care	सोचना
679	मुठुङ्	पलायने	To run away	भागना
680	वठुङ्	एकचर्यायाम्। एक्सया-सहायस्य चर्यागतिस्तस्याम्	To go alone	अकेले जाना
681	अठुङ् 682 पठुङ्	गतौ	To go	जाना
683	हुडुङ् 684 पिडुङ्	संघाते	To unite	एक करना
685	शडुङ्	रुजायाञ्च। चकारात्संघाते	To be sick, to unite	रोगी होना, एक होना
686	तडुङ्	ताडने	To beat	ताडित करना
687	कडुङ्	मदे	To be proud	गर्व करना
688	खडुङ्	मन्थे	To churn	मन्थन करना
689	खुडुङ	गतिवैकल्ये	To walk like drunker	बक्रगति से चलना
690	कुडुङ्	दाहे	To burn	जलाना
691	वडुङ् 692 मडुङ्	वेष्टने	To envelope	लपेटना
693	भडुङ्	परिभाषणे	To speak	बोलना
694	मुडुङ्	मज्जने। मज्जनं शोधनं न्यग्भावश्च	To clean, to censure	साफ करना, निन्दा करना
695	तुडुङ्	तोडने। तोडनं हिंसा	To kill	मारना
696	भुडुङ्	वरणे। वरणं स्वीकार:	To admitt	स्वीकार करना
697	चडुङ्	कोपे	To be angry	क्रोध करना
698	द्राडृङ् 699 ध्राडृङ्	विशरणे	To be scattered	काटना
700	शाडृङ् श्लाघायाम्		To praise	स्तुति करना
701	वाडृङ्	आप्लाव्ये। आप्लाव्यमाप्लावनम्	To dive and swim	डूबकी लगाना
702	हेडृङ् 703 होडृङ्	अनादरे	To disrespect	अनादर करना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

704	हिडुङ्	गतौ च। चकारादनादरे	To go, to disrespect	जाना, अनादर करना
705	घिणुङ् 706 घुणुङ् 707 घृणुङ्	ग्रहणे	To take	ग्रहण करना
708	घुणि 709 घूर्णि	भ्रमणे	To wander	भ्रमण करना
710	पणि	व्यवहारस्तुत्योः	To make business, to praise	व्यवहार करना, स्तुति करना
711	यतैङ्	प्रयत्ने	To try	यत्न करना
712	युतृङ् 713 जुतृङ्	भासने	To make shining	चमकाना
714	विथुङ् 715 वेथृङ्	याचने	To beg, to favour	मांगना, पक्षपात करना
716	नाथृङ्	उपतापेश्वर्याशीःषु च। चकाराद्याचने। उपताप उपघातः	To pain, to be powerful	कष्ट देना, शक्तिशाली होना
717	श्रथुङ्	शैथिल्ये। शैथिल्यगाढा	To relax	शिथिल होना
718	ग्रथुङ्	कौटिल्ये। कौटिल्यं कुसृतिर्बन्धश्च	To bind, to show which is unreal by majic	बाँधना, असत्य को जादू द्वारा सत्य में प्रकट करना
719	कत्थि	श्लाघायाम्। श्लाघागुणारोपः	To praise	स्तुति करना
720	श्विदुङ्	श्वैत्ये। श्वैत्यं श्वेतगुणक्रिया।	To make white, to be white	श्वेत होना, श्वेत करना
721	वदुङ्	स्तुत्यभिवादनयोः। स्तुतिर्गुणैः प्रशंसा। अभिवादनं पादयोः प्रणिपातः।	To praise, to bow down	स्तुति करना, नमन करना
722	भदुङ्	सुखकल्याणयोः। सुखं सद्वेद्यकर्मोदयाच्छुभानुभवनम्। कल्याणं श्रेयः।	To be happy, to be benfecial	प्रसन्न होना, लाभान्वित होना
723	मदुङ्	स्तुतिमोदमदस्वप्नगतिषु। मोदो हर्षः मदो दर्पः। स्वप्ने नालस्यमपि लक्ष्यते	To praise, to be delighted, to be proud, to sleep, to be idle, to go	प्रशंसा करना, प्रसन्न होना, गर्वित होना, सोना, आलस्य करना, जाना
724	स्पदुङ्	किञ्चिच्चलने	To move	चलना
725	क्लिदुङ्	परिदेवने। परिदेवनं शोचनम्	To lament	रोदन करना
726	मुदि	हर्षे	To be jolly	प्रसन्न होना
727	ददि	दाने	To give	देना
728	हर्दि	पुरीषोत्सर्गे	To excrement	मलविसर्जन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

729	ष्वदि 730 स्वदि 731 स्वादि	आस्वादने। आस्वादनं जिह्वया लेह:	To taste with pallet	आस्वादन
732	उर्दि	मानक्रीडयोश्च। चकारादास्वादने। मानं मितिः।	To measure, to sport	मापना, खेलना
733	कुर्दि 734 गुर्दि 735 गुदि	क्रीडायाम	To sport	खेलना
736	षूदि	क्षरणे। क्षरणं निरसनम्।	To split	तोड़ना
737	ह्रादि	शब्दे	To sound	शब्द करना
738	ह्लादिङ्	सुखे च। चकाराच्छब्दे।	To be happy, to sound	सुखी होना, शब्द करना
739	पर्दि	कुत्सितेशब्दे। पायुध्वनौ वर्त्तते	To break wind	कुत्सित शब्द करना
740	स्कुदुङ्	आप्रवणे। आप्रवणमुत्प्लुत्य गमनमास्कन्दनं वा	To walk, to attact	चलना, आक्रमण करना
741	एधि	वृद्धौ	To grow	बढ़ना
742	स्पर्धि	संघर्षे संघर्ष पराभिभवेच्छा।	To compete, to vie with	स्पर्धा करना
743	गाधृङ्	प्रतिष्ठालिप्साग्रन्थेषु। प्रतिष्ठास्पदम्। लब्धुमिच्छा लिप्सा। ग्रन्थनं ग्रन्थः। प्रतिष्ठायामकर्मकोऽयं लिप्साग्रन्थयोः सकर्मकः।	To make firm, to long for a thing	प्रतिष्ठा करना, इच्छा करना
744	बाधृङ्	रोटने। रोटनं प्रतिघातः	To give pain	पीडित करना
785	दधि	धारणे	To hold	धारण करना
786	बधि	बन्धने	To bind	बाँधना
747	नाधृङ्	नाथृङ्वत्। उपतापै-श्वर्याशीर्याञ्चास्वर्थेषु नाथृङ्वदयं वर्तते। लाघवार्थमेवं निर्देशवर्ण-क्रमानुसारणात्तु नेकत्राधीतौ	To give pain, to be lord, To bless, to beg	पीडा देना, प्रभुत्व दिखाना, आशीर्वाद देना, मांगना
748	पनि	स्तुतौ	To praise	प्रशंसा करना
749	मानि	पूजायाम्	To worship	पूजा करना
750	तिपृङ् 751 ष्टिपृङ् 752 ष्टेपृङ्	क्षरणे	To ooxe	रिसना
753	तेपृङ्	कम्पने च। चकारात्क्षरणे	To tremble, to ooxe	कम्पित करना
754	टुवेपृङ् 755 केपृङ् 756 गेपृङ् 757 कपुङ्	चलने	To move	चलना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

758	ग्लेपृङ्	दैन्ये च। चकाराच्चलन	To be poor, to move	दीन होना, चलना
759	मेपृङ् 760 रेपृङ् 761 लेपृङ्	गतौ	To go	जाना
762	त्रपौंषि	लज्जायाम्	To be ashamed	लज्जित होना
763	गुपि	गोपनकुत्सनयो:	To protect, to censure	रक्षा करना
764	अबुङ् 765 रबुङ्	शब्दे	To sound	शब्द करना
766	लबुङ्	अवस्रंसने च। चकारा-च्छब्दे लम्बते प्रलम्बते अवलम्बते आलम्बते उल्लम्बते विलम्बते इत्यनेकार्थत्वमुपसर्ग-द्यौवितमन्यत्राप्युदाहार्यम्	To be mannerless, to be perishable, to sound	व्यवहारशून्य, नष्ट होना, शब्द करना
767	कबृङ्	वर्णे। वर्णो वर्णनं शुक्लादिश्च	To describe, to be coloured	वर्णन करना, रंग देना
768	क्लीबृङ्	आधार्ष्ट्ये	To be feeble	नपुंसक होना
769	क्षीबृङ्	मदे	To be proud	गर्व करना
770	शीभृङ् 771 वीभृङ् 772 शल्भि	कत्थने।	To praise	स्तुति करना
773	वल्भि	भोजने	To eat	खाना
774	गल्भि	धार्ष्ट्ये	To be courageous	धूर्तता करना
775	रेभृङ् 776 अभुङ् 777 रभुङ् 778 लभुङ्	शब्दे	To sound	शब्द करना
779	ष्टभुङ् 780 स्काभुङ् 781 ष्टभूङ्	स्तम्भे। स्तम्भ: क्रियानिरोध:।	To stand still	अवरुद्ध होना
782	जभुङ् 783 जभैङ् 784 जृभुङ्	गात्रविनामे।	To be pale	फीका पड़ना
785	रभिं	राभस्ये। राभस्यं कार्योपक्रम:	To begin	प्रारम्भ करना
786	डुलभिष्	प्राप्तौ	To obtain	प्राप्त करना
787	भामि	क्रोधे	To be angry	क्रोध करना
788	क्षमौंषि	सहने	To endure	सहन करना
789	कमूङ्	कान्तौ। कान्तिरभिलाष:	To long for	अभिलाषा करना
790	अयि 791 वयि 792 पयि 793	गतौ	To go	जाना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	मयि, 794 नयि 795 चयि 796 रयि			
797	तयि 798 णयि	रक्षणे। चकाराद्गतौ।	To protect, to go	रक्षा करना, जाना
799	दयि	दानगतिहिंसादहनेषु च। चाद्रक्षणे।	To give, to go, to kill, To protect	देना, जाना, मारना, रक्षा करना
800	ऊयैङ्	तन्तुसन्ताने।	To weave	बुनना
801	पूयैङ्	दुर्गन्धविशरणयो:।	To be dispersed, to smell bad	बिखेरना, दुर्गन्धयुक्त करना
802	क्नूयैङ्	शब्दोन्दनयो:। उन्दनं क्लेदनम्	To sound, to wet	शब्द करना
803	क्ष्मायैङ्	विधूनने।	To tremble	कम्पित करना
804	स्फायैङ् 805 ओप्यायैङ्	वृद्धौ	To grow	बढाना
806	तायृङ्	संतानपालनयो:। संतान: प्रबन्ध:।	To protect, to compose	रक्षा करना, रचना करना
807	वलि 808 वल्लि	संवरणे	To cover	ढँकना
809	शलि	चलने च। चकारात्संवरणे।	To move, to cover	चलना, ढँकना
810	मलि 811 मल्लि	धारणे	To hold	धारण करना
812	भलि 813 भल्लि	परिभाषणहिंसादानेषु	To speak, to kill, to give	बोलना. मारना, देना
814	कलि	शब्दसङ्ख्यानयो:	To sound, to count	शब्द करना, गिनना
815	कल्लि	अशब्दे। शब्दस्या-भावोऽशब्दं तृष्णींभाव:	To be silent	चुप होना
816	तेवृङ् 817 देवृङ्	देवने	To play, to wish for conquer, to make, commence, to shine, to praise, to go	खेलना, जीतने की इच्छा करना
818	वेवृङ् 819 सेवृङ् 820 केवृङ् 821 खेवृङ्, 822 गेवृङ् 823 ग्लेवृङ्, 824 पेवृङ् 825 प्लेवृङ् 826 मेवृङ् 827 म्लेवृङ्	सेवने	To serve	सेवा करना
828	रेवृङ् 829 पवि	गतौ	To go	जाना
830	काशृङ्	दीप्तौ	To shine	चमकना
831	क्लेशि	विबाधने	To quarrel, to speak distinctly	क्लेश करना, अव्यक्त शब्द करना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

832	भाषि च	व्यक्तायां वाचि। प्रकृते परश्चकारः प्रवृत्ति-मनुकर्षति। तेन क्लेशिर्भाषिश्च व्यक्तायां वाचि।	To speak distinctly	स्पष्ट बोलना
833	ईषि	गतिहिंसादर्शनेषु	To go, to kill, to see	जाना, मारना,
834	गेषृङ	अन्विच्छायाम्। अन्विच्छान्वेषणम्	To search for	अन्वेषण करना
835	ग्रेषृङ्	प्रयत्ने	To attempt	प्रयत्न करना
836	जेषृङ् 837 णेषृङ् 838 एषृङ् 839 हेषृङ्	गतौ	To go	जाना
840	रेषृङ् 841 हेषृङ्	अव्यक्ते शब्दे	To speeak indistinctly	अव्यक्त शब्द करना
842	पर्षि	स्नेहने।	To be gummy	चिकना करना
843	घुषुङ्	कान्तीकरणे।	To beautify	चमकाना
844	स्रंसूङ्	प्रमादे। प्रमादोपलेपः	To be proud	अभिमान करना
845	कासृङ्	शब्दकुत्सायाम् शब्दस्य कुत्सारोगः	To cough	खाँसना
846	भ्रासि 847 टुभ्रासि 848 टुभ्लासृङ्	दीप्तौ	To shine	चमकना
849	रासृङ् 850 णासृङ्	शब्दे	To sound	शब्द करना
851	णसि	कौटिल्ये	To be crooked	कुटिल होना
852	भ्यसि	भये	To fear	भय करना
853	आङःशसूङ्	इच्छायाम्। आङ इति आङःपर एवायं प्रयुज्यते नान्योपसर्गान्नापि केवल इति ज्ञापनार्थम	To wish	इच्छा करना
845	ग्रसूङ् 846 ग्लसूङ्	अदने	To eat	खाना
846	घसुङ्	करणे	To do	करना
847	ईहि	चेष्टायाम्	To do something	चेष्टा करना
848	अहुङ् 849 प्लिहि	गतौ	To go	जाना
860	गर्हि 861 गल्हि	कुत्सने	To censure	निन्दा करना
862	वर्हि 863 वल्हि	प्राधान्ये	To be chief	प्रधान होना
864	बर्हि 865 बल्हि	परिभाषणहिंसाच्छादनेषु	To tell, to kill, to over	बोलना, मारना, ढँकना
866	वेहृङ् 867 जेहृङ 868 वाहृङ्	प्रयत्ने	To attempt	प्रयत्न करना
869	द्राहृङ्	निक्षेपे	To establish	स्थापित करना
870	ऊहि	तर्के। तर्क उत्प्रेक्षा।	To imagine	तर्क करना
871	गाहौङ्	विलोडने। विलोडनं परिमिलनम्।	To dive	डूबकी लगाना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

872	ग्लहौङ्	ग्रहणे	To take	लेना
873	बहुङ् 874 महुङ्	वृद्धौ	To grow	बढ़ना
875	दक्षि	शैघ्र्ये च। शैघ्र्यं शिघ्रता चकाराद्वृद्धौ	To be quick, to grow	शीघ्रता करना, बढ़ना
876	धुक्षि 877 धिक्षि	संदीपनक्लेशनजीवनेषु।	To encourage, to quarrel, to live	बढ़ाना, क्लेश करना, प्राण धारण करना
878	वृक्षि	वरणे।	To accept	स्वीकार करना
879	शिक्षि	विद्योपादाने।	To learn	सीखना
880	भिक्षि	याञ्चायाम्	To beg	मांगना
881	दीक्षि	मोण्ड्येज्योपनयन नियमव्रतादेशेषु। मोण्ड्यं वपनम्। इज्या यजनम्। उपनयनंमौञ्जी बन्धः। नियमः संयमः व्रतादेशः संस्कारादेशः	To root out hairs from head, to sacrifice, to invest, wish sacred thread, to act according to sacred books	मुण्डन कराना, यज्ञ करना, नियम व्रतादि में यज्ञोपवीत धारण करना
882	ईक्षि	दर्शने	To see	देखना
883	श्रिग्	सेवायाम	To serve	सेवा करना
884	णीग्	प्रापणे	To carry	ले जाना
885	हृंग्	हरणे	To take away by force	हरण करना
886	भृंग्	भरणे	To nourish	पोषण करना
887	धृंग्	धारणे	To hold	धारण करना
888	डुकृंङ्	करणे	To do	करना
889	हिक्की	अव्यक्ते शब्दे	To speak indistinctly	अस्पष्ट शब्द करना
890	अञ्चूग्	गतौ च। चकारादव्यक्ते शब्दे	To go, to sound indistinctly	जाना, अस्पष्ट शब्द करना
891	डुयाचृग्	याञ्चायाम्	To beg	मांगना
892	डुपचींष्	पाके	To prepare food	पकाना
893	राजृग् 894 टुभ्राजि	दीप्तौ	To shine	चमकना
895	भजीं	सेवायाम्	To serve	सेवा करना
896	रञ्जीं	रागे	To colour	रंगना
897	रेट्टग्	परिभाषणयाचनयोः	To tell, to beg	भाषण करना, मांगना
898	वेणृग्	गतिज्ञानचिन्तानिशाम नवादित्रग्रहणेषु। वादित्रस्य वाद्यभाण्डस्य वादनाय ग्रहणम्	To go, to know, to care for, to contemplate, to take musical instrument	जाना, जानना, सजग होना, हानि-लाभ का विचार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

				करना, वाद्ययन्त्र उठाना
899	चतेग्	याचने।	To beg	मांगना
900	प्रोथृग्	पर्याप्तौ। पर्याप्ति: पूर्णता	To be complete	पूर्ण करना
901	मिथृग्	मेधाहिंसयो:	To be prudent, to kill	मेधायुक्त होना, मारना
902	मेथृग्	संगमे च चकारान्मेधा-हिंसयो।	To unite, to be prudent, to kill	मिलना, मेधायुक्त होना, मारना
903	चदेग्	याचने	To beg	मांगना
904	ऊबुन्दृग्	निशामने। निशामनमोलोचनम्।	To think for credit or discredit	हानि-लाभ का विचार करना
905	णिदृग् 906 णेदृग्	कुत्सासन्निकर्षयो:।	To censure, to be near	निन्दा करना, निकट होना
907	मिदृग् 908 मेदृग्	मेधाहिंसयो:	To be prudent, to kill	मेधायुक्त होना, मारना
909	मेधृग्	संगमे च। चकारान्मेधा हिंसयो:	To unite, to be prudent, to kill	एकत्रित करना, मेधायुक्त होना, मारना
910	शृधृग् 911 मृधृग्	उन्दे। उन्द: क्लेदनम्	To moisten with liquid	गीला करना
912	बुधृग्	बोधने	To know	जानना
913	खनूग्	अवदारणे	To dig	खोदना
914	दानी	अवखण्डने।	To break down	तोड़ना
915	शानी	तेजने	To sharpen	तीक्ष्ण करना
916	शपीं	आक्रोशे। आक्रोशो विरुद्धानुध्यानम्	To curse	शाप देना
917	चायृग्	पूजानिशामनयो:	To worship, to consider gain and loss	पूजा करना, हानि-लाभ का विचार करना
918	व्ययी	गतौ	To go	जाना
919	अली	भूषणपर्याप्तिवारणेषु।	To adorn, to be fit to do away	सजाना, उद्यम के लिए तैयार होना
920	धावूग्	अतिशुद्ध्यो:	To go, to be pure	जाना, शुद्ध करना
921	चीवृग्	झषीवत्। झषी आदान संवरणयो: वक्ष्यते तद्धदयमपि आदान-संवरणयोरित्यर्थ:।	To take, to cover	लेना, ढँकना
922	दाशृग्	दाने।	To give	देना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

923	झषी	आदानसंवरणयो:	To take, to cover	लेना, ढँकना
924	भेषृग	भये।	To fear	भय करना
925	भ्रेषृग्	चलने च। चकाराद्भये	To weave, to walk, to fear	बुनना, चलना, भय करना
926	पषी	बाधनस्पर्शनयो:। स्पर्शनं ग्रन्थनम्	To injure, to weave	ताडित करना, बुनना
927	लषी	कान्तौ। कान्तिरिच्छा	To wish	इच्छा करना
928	चषी	भक्षणे।	To eat	खाना
929	छषी	हिंसायाम्	To kill	मारना
930	त्विषीं	दीप्तौ	To shine	चमकना
931	अषी 932 असी	गत्यादानयोश्च	To go, to take	जाना, लेना
933	दासृग्	दाने	To give	दान करना
934	माहृग्	माने। मानं वर्तनम	To act, to behave	वर्तन करना
935	गुहौग्	संवरणे।	To cover	ढँकना
936	भ्लक्षी	भक्षणे	To eat	खाना
937	द्युति	दीप्तौ	To shine	चमकना
938	रुचि	अभिप्रीत्याञ्च। चकाराद् दीप्तौ। अभिप्रीतिरभिलाष:	To long for, to shine	प्रीति करना, चमकना
939	घुटि	परिवर्तने	To be altered	परिवर्तित करना
940	रुटि 941 लुटि 942 लुठि	प्रतीघाते।	To strike	प्रतिघात करना
943	श्विताङ्	वर्णे	To be white	श्वेत होना
944	ञिमिदाङ्	स्नेहने। स्नेहनं स्नेहयोग:।	To be gummy	चिकना करना
945	ञिक्ष्विदाङ् 946 ञिष्विदाङ्	मोचने च। चकारा- त्स्नेहने	To release, to be gummy	मुक्त करना, चिकना करना
947	शुभि	दीप्तौ	To shine	चमकना
948	क्षुभि	संचलने। संचलनं रूपान्यथात्वम्	To agitate	क्षुब्ध करना
949	णभि 950 तुभि	हिंसायाम्	To kill	मारना
951	स्रम्भूङ् विश्वासे		To believe	विश्वास करना
952	भ्रंशूङ् 953 स्रंसूङ्	अवस्रंसने।	To perish	नष्ट करना
954	ध्वंसूङ्	गतौ च। चकारादवस्रंसने	To go, to be perished	जाना, नष्ट होना
955	वृतूङ्	वर्तने। वर्तनं स्थिति।	To be have	वर्तन करना
956	स्यन्दौङ्	स्रवणे।	To ooze	स्रवित होना
957	वृधूङ्	वृद्धौ	To grow	वृद्धि करना
958	शृधूङ्	शब्दकुत्सायाम्। शब्दकुत्सापायुशब्दत्वात्।	To break wind	करना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

959	कृपौङ् वृत् वृतादिः। वृत द्युतादिः 23 द्युतादिः 5 वृतादिश्चान्तर्गणौ वर्तितौ समाप्तावित्यर्थः।	सामर्थ्ये	To be strong	समर्थ होना
960	ज्वल	दीप्तौ	To shine	चमकना
961	कुच	सम्पर्चन कौटिल्यप्रति ष्टम्भविलेखनेषु सम्पर्चनं मिश्रता। प्रतिष्ठम्भो रोधनम् विलेखनं कर्षणम्।	To mix, to be wicked; To stop, to pull, to plough	मिलाना, कुटिलगति करना, रुकना, खींचना, हल जोतना
962	पत्लृ 963 पथे	गतौ	To go	जाना
964	क्वथे	निष्पाके	To boil	उबालना
965	मथे अध दान्तौ	विलोडने	To churn	मंथन करना
966	षद्लृं	विशरणगत्यवसादनेषु। विशरणं शटनम् अवसादोऽनुत्साहः	To rot, to go, to discourage	क्षय होना, जाना, हतोत्साहित करना
967	शद्लृं	शातने। शातनं तनूकरणम	To make thine	पतला करना
968	बुध	अवगमने। अवगमनं ज्ञापनम्	To know	जानना
969	टुवमु	उद्गिरणे। उद्गिरणं भुक्तस्योर्ध्वगतिः।	To vomit	वमन करना
970	भ्रभू	चलने	To wonder	घूमना
971	क्षर	संचलने। क्षरतिगौर्दुग्धं क्षरति जलम्।	To ooze, to flow	करना
972	चल	कम्पने।	To tremble	कम्पित होना
973	जल	घात्ये। घात्यं जडत्वम तैक्ष्ण्यमित्यर्थः।	To be heavy	जड़ होना
974	टल 975 ट्वल	वैक्लव्ये। विक्लव एव वैक्लव्यम्।	To be discourageous	विकलांग होना
976	ष्ठल	स्थाने	To be firm	दृढ करना
977	हल	विलेखने विलेखनं कर्षरम्	To plough, to pull	हल जोतना, खींचना
978	णल	गन्धे। गन्धोऽर्दनम्।	To pain	कष्ट देना
979	बल	प्राणनधान्यावरोधयोः प्राणनं जीवनम्। धञ्ञनयमवरुध्यते यत्रेति धान्यावरोधः कुसूलः	To breathe, to do something about hoarding of grain, to be great	प्राणधारण करना, धान एकत्रित करने की क्रिया करना, महान् होना
980	पुल	महत्त्वे	To be great	महान् होना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

981	कुल	बन्धुसंस्त्यान्यो:। संस्त्यानं संघात:	To have family to unite, to pile	परिजनों को संगठित करना
982	पल 983 फल 984 शल	गतौ	To go	जाना
985	हुल	हिंसासंवरणयोश्च	To kill, to cover	हिंसा करना, ढँकना
986	क्रुशं	आह्वानरोदनयो:	To call, to lament	बुलाना, रोदन
987	कस	गतौ	To go	जाना
988	रु	जन्मनि	To be produced	जन्म देना
989	रमिं	क्रीडायाम्	To sport	खेलना
990	षहि वृत ज्वलादि:। ज्वालाद- यो वृत्ता: समाप्ताइत्यर्थ:	मषर्णं। मर्षणं क्षमा।	To forgive	क्षमा करना
991	यजीं	देवपूजासंगतिकरणदानेषु	To worship, to go	पूजा करना, जाना
992	वेंग्	तन्तुसंघाते	To weave	बुनना
993	व्येंग्	संवरणे। संवरणमाच्छादनम्	To cover	आच्छादन करना
994	ह्वेंग्	स्पर्धाशब्दयो:।	To compete, to make noise	स्पर्धा करना, शब्द करना
995	डुवपीं	बीजसंताने। बीजानां संतान: क्षेपे विस्तारणम्	To sow the seeds	बीज बोना
996	वहीं	प्रापणे।	To carry	ले जाना
997	ट्वोंश्वि	गतिवृद्धयो:।	To go, to grow	जाना, बढना
998	वद	व्यक्तायां वाचि	To speak	बोलना
999	वसं वृत यजादि:। वर्तिता: समापिता यजादय इत्यर्थ:	निवासे।	To dwell	निवास करना
1000	घटिष्	चेष्टायाम्। चेष्टेहा	To do something	चेष्टा करना
1001	क्षजुङ्	गतिदानयो:	To go, to give	गति करना, देना
1002	व्यथिष्	भयचलनयो:	To fear, to move	भय करना, चलना
1003	प्रथिष्	प्रख्याने। प्रख्यानं प्रसिद्धि:	To be published	प्रकाशित करना
1004	म्रदिष्	मर्दने	To rub gently	मालिश करना
1005	स्खदिष्	खदने। खदनं विदारणम्	To tear off	फाड़ना
1006	कदुङ् 1007 क्रदुङ् 1008 क्लदुङ्	वैक्लव्ये। विक्लव: कातरस्तस्य भाव: कर्म- वैक्लव्यम्।	To be feeble, to be powerless	दुबला होना, शक्तिहीन होना
1009	क्रपि	कृपायाम्।	To show mercy	दया करना
1010	ञित्विरिष्	संभ्रमे। संभ्रमोऽत्राकारिता	To hasten	जल्दबाजी करना
1011	प्रसिष्	विस्तारे	To spread	विस्तार करना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1012	दक्षि	हिंसागत्योः	To kill	मारना
1013	श्रां	पाके	To cook	पकाना
1014	स्मृं	आध्याने। आध्यानमुत्कण्ठा	To long earnestly	उत्कण्ठित होना
1015	दृ	भये	To fear	भय करना
1016	नृ	नये	To carry	ले जाना
1017	ष्टक 1018 स्तक	प्रतीघाते	To strike	ताड़न करना
1019	चक	तृप्तौ च। चकारात्प्रतीघाते	To be contented, to strike	तृप्त करना, ताड़न करना
1020	अक	कुटिलायां गतौ	To walk astray	कुटिल गति करना
1021	कखे	हसने	To laugh	हँसना
1022	अग अकवत्।	अक कुटिलायां गतौ पठितोऽयमपि तदर्थो लाघवार्थं तथा निर्दिश्यते	To walk astray	कुटिल गति करना
1023	रगे	शङ्कायाम्	To doubt	शंका करना
1024	लगे	सङ्गे	To accompany	संग करना
1025	ह्गे 1026 ह्लगे 1027 षगे 1028 सगे 1029 ष्ठगे 1030 स्थगे	संवरणे। संवरण- माच्छादनम्।	To cover	ढँकना
1031	वट 1032 भट	परिभाषणे	To tell	कहना
1033	णट	ततौ	To bend	झुकना
1034	गड	सेचने	To sprinkle	छिड़कना
1035	हेड	वेष्टने	To twist	लपेटना
1036	लड	जिह्वोन्मन्थने। जिह्वाया उन्मन्थनं जह्वोन्मन्थनम्।	To loll the tongue	जिह्वा को मथना
1037	फण 1038 कण 1039 रण	गतौ	To go	जाना
1040	चण	हिंसादानयोश्च। हिंसायांदाने चकारादतौ	To kill, to give, to go	मारना, देना, जाना
1041	शण 1042 श्रण	दाने	To give	देना
1043	स्नथ 1044 क्नथ 1045 क्रथ 1046 क्लथ	हिंसार्थाः	To kill	मारना
1047	छद	ऊर्जने। ऊर्जनं प्राणनं बलञ्च	To burn, to breathe	जलना, श्वास लेना
1048	मदै	हर्षग्लपनयोः।	To be delighted, to tremble	हर्षित होना,
1049	गुष्टन 1050 स्तन 1051 ध्वन	शब्दे	To make noise	शब्द करना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1052	स्वन	अवतंसने	To decorate	सजाना
1053	चन	हिंसायाम्	To kill	मारना
1054	ज्वर	रोगे	To be feverish	रोगी होना
1055	चल	कम्पने	To tremble	कम्पित होना
1056	ह्वल 1057 ह्मल	चलने	To move	चलना
1058	ज्वल	दीप्तौ च। चकाराच्चलने	To shine, to move	चमकना, चलना
1059	अदं 1060 प्सांक्	भक्षणे	To eat	खाना
1061	भांक्	दीप्तौ	To shine	चमकना
1062	यांक्	प्रापणे	To go	जाना
1063	वांक्	गतिगन्धनयो:।	To go, to perfume	जाना, सुगन्धित करना
1064	ष्णांक्	शौचे	To bathe	स्नान करना
1065	श्रांक्	पाके	To cook	पकाना
1066	द्रांक्	कुत्सितगतौ। कुत्सिता गति: पलायनं स्वप्नश्च	To be broken, to sleep	भाग जाना, शयन करना
1067	पांक्	रक्षणे	To protect	रक्षा करना
1068	लांक्	आदाने	To take	लेना
1069	रांक्	दाने	To give	दान करना
1070	दांवक्	लवने।	To cut down	काटना
1071	ख्यांक्	प्रथने	To publish	प्रकाशित करना
1072	प्रांक्	पूरणे	To fulfil	पूर्ण करना
1073	मांक्	माने। मानं वर्तनम्।	To contain	समाविष्ट होना
1074	इंक्	स्मरणे	To remember	स्मरण करना
1075	इंण्क्	गतौ	To go	जाना
1076	वींक्	प्रजनकान्त्यसनखादनेषु च। चकाराद्गतौ प्रजन: प्रथमगर्भग्रहणम् असनं क्षेप	To conceive first time, to wish, to throw, to eat	प्रथम प्रसव, इच्छा करना, फेंकना, खाना
1077	द्युक्	अभिगमने	To go forward	आगे चलना
1078	षुंक्	प्रसवैश्वर्ययो:	To consent, to be lord	प्रसव, प्रभुत्व दिखाना
1079	तुंक्	वृत्तिहिंसापूरणेषु	To maintain himself, to kill, to fulfil	वृत्ति, हिंसा, पूर्ण करना
1080	युक्	मिश्रणे	To mix	मिश्रण करना
1081	णुक्	स्तुतौ	To praise	स्तुति करना
1082	क्ष्णुक्	तेजने	To make pointed to sharp	तीक्ष्ण करना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1083	स्नुक्	प्रस्नवने। प्रस्नवनं क्षरणम्	To ooze	प्रस्रवण करना
1084	टुक्षु। 1085 रु 1086 कुंक्	शब्दे	To make noise	शब्द करना
1087	रुदृक्	अश्रुविमोचने	To shed tears	आँसू बहाना
1088	ञिष्वपंक्	शये	To sleep	सोना
1089	अन 1090 श्वसक्	प्राणने। प्राणनं जीवनम	To live, to breathe	प्राणधारण करना
1091	जक्षक्	भक्षहसनयो:	To eat, to laugh	खाना, हँसना
1092	दरिद्राक्	दुर्गतौ	To be poor	दरिद्र होना
1093	जागृक्	निद्राक्षये	To be awaked	जागना
1094	चकासृक्	दीप्तौ	To shine	चमकना
1095	शासूक्	अनुशिष्टौ। अनुशिष्टिनियोग:	To rule	शासन करना
1096	वचंक्	भाषणे	To speak	बोलना
1097	मृजौक्	शुद्धौ	To purify, to be pure	शुद्ध करना, शुद्ध होना
1098	सस्तुक्	स्वप्ने	To sleep	सोना
1099	विदक्	ज्ञाने	To know	जानना
1100	हनंक्	हिंसागत्यो:।	To kill, to go	हिंसा करना, जाना
1101	वशक्	कान्तौ। कान्तिरिच्छा	To desire	इच्छा करना
1102	असक्	भुवि। भवनं भू: सत्ता:	To be	होना
1103	षसक्	स्वप्ने	To sleep	शयन करना
1104	इंड्क्	अध्ययने	To study	अध्ययन करना
1105	शीङ्क्	स्वप्ने	To sleep	शयन करना
1106	ह्नुङ्क्	अपनयने। अपनयनमपलाप:।	To conceal	अपलाप करना
1107	षूङौक्	प्राणिगर्भविमोचने।	To beget, to deliver	जन्म देना
1108	पृचैङ् 1109 पृजुङ् 1110 पिजुकि	मिश्रणम् सम्पर्चने। सम्पर्चनं	To mix	मिश्रित करना
1111	वृजैकि	वर्जने	To abandon	त्याग करना
1112	णिजुकि	शुद्धौ	To be pure	शुद्ध होना
1113	शिजुकि	अव्यक्ते शब्दे	To speak indistinctly	अस्पष्ट बोलना
1114	ईडिक्	स्तुतौ	To praise	प्रशंसा करना
1115	ईरिक्	गतिकम्पनयो:	To go, to tremble	जाना, काँपना
1116	ईशिक्	ऐश्वर्ये	To be	होना
1117	वसिक्	आच्छादने	To cover	ढंकना
1118	आङ: शासूकि	इच्छायाम	To wish	इच्छा करना
1119	आसिक्	उपवेशने	To sit	बैठना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1120	कसुकि	गतिशातनयो:	To go, to fall down	जाना, नीचे करना
1121	णिसुकि	चुम्बने	To kiss	चुम्बन करना
1122	चक्षिक्	वक्तायां वाचि	To speak	बोलना
1123	ऊर्णुंक्	आच्छादने	To dever	आच्छादन करना
1124	ष्टुंक्	स्तुतो	To prose	स्तुत
1125	ब्रूंक् वाचि	व्यक्तायां	To speak clear	स्पष्ट बोलना
1126	द्विषींक्	अप्रीतौ	To hote	गरम करना
1127	दुहींक्	क्षरणे	To milk	दोहना
1128	दिहींक्	लेपे	To plaster	लेप करना
1129	लिहींक्	आस्वादनम्	To lick	आस्वाद करना
1130	हुंक्	दानादनयो:। दानमत्र हविष्प्रक्षेप:। अदनंभक्षणम्	To give in sacrifice, to eat	यज्ञ में हवि देना, भोजन करना
1131	ओहांक्	त्यागे	To abandon	त्याग करना
1132	त्रिभींक्	भये	To fear	भय करना
1133	ह्रींक्	लज्जायाम्	To be ashamed	लज्जित करना
1134	पृंक्	पालनपूरणयो:	To protect, to fulfil	रक्षा करना, पूर्ण करना
1135	ऋंक्	गतौ	To go	जाना
1136	ओहाङ्क्	गतौ	To go	जाना
1137	मांङ्क्	मानशब्दयो:	To measure, to sound	नापना, शब्द करना
1138	डुदांग्क्	दाने	To give	जाना
1139	डुधांग्क्	धारणे च। चकारादाने	To hold, to give	धारण करना
1140	टुडुभृंग्क्	पोषणे च। चकाराद्धारणे	To nourish	पोषित करना
1141	णिजृंकी	शौचे च। चकारात्पोषणे	To cleanse, to nourish	निर्मल करना, पोषण करना
1142	विजृंकी अथ षान्त:	पृथग्भावे	To separate	अलग करना
1143	विष्लृंकी इति किददादिगण: सम्पूर्ण:। अथ श्यविकरणा दिवादयो वर्णक्रमेणनिदिश्यन्ते। तत्रापि पूर्वाचार्य-प्रसिद्ध्यनुरोधेनादौ	व्याप्तौ	To pervade	रक्षा करना
1144	दिदूच्	क्रीडाजयेच्छापणिद्युतिस्तुतिगतिषु।	To sport, to wish, to win, to make	क्रीड़ा करना, इच्छा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

		जयेच्छा विजिगीषा। पणिर्व्यवहार: क्रयादि:	business, to shine, to praise, to go	करना, जीतना, व्यापार करना, चमकना, प्रशंसा करना, जाना
1145	जृष् 1146 झृष्च् जरसि	जरसि। जरावयोहानि:	To grow old	वृद्ध होना
1147	शोंच्	तक्षणे। तक्षणं तनूकरणम्।	To make pointed	छिलना
1148	दों 1149 छोंट्	छेदने	To cut	काटना
1150	षोंच्	अन्तकर्मणि। अन्तकर्म विनाश	To perish	विनाश करना
1151	व्रीडच	लज्जायाम्	To feel shame	लज्जित होना
1152	नृतैव	नर्तने। नर्तन नाट्यम्	To dance, to play, to perform drama	नाचना, खेलना, नाटक करना
1153	कुथच्	पूतिभावे। पूतिभावोदुर्गन्ध: क्लेद:	To be wet and of nauseous smell	गीला होना तथा दुर्गन्धयुक्त होना
1154	पुथच्	हिंसायाम्	To kill	हिंसा करना
1155	गुधच्	परिवेष्टने	To twist	लपेटना
1156	राधचं	वृद्धौ	To grow	बढ़ना
1157	व्यधंच्	ताडने	To beat	ताड़ित करना
1158	क्षिपंच	प्रेरणे	To throw	फेंकना
1159	पुष्पच्	विसकने	To bloom	विकसित होना
1160	तिम 1161 तीम 1162 ष्टिम 1163 ष्टीमच	आर्द्रभावे	To be wet	गीला करना
1164	षिवूच्	उतौ। उतिर्वानं तन्तुसंतान इत्यर्थ:	To weave	सीलना
1165	श्रिवूच्	गतिशोषणयो:	To go, to be dried	जाना, सुखाना
1166	ष्ठिवू 1167 क्षिवूच्	निरसने	To spit	थूकना
1168	इषच्	गतौ	To go	जाना
1169	ष्ण्सूच्	निरसने	To spit	थूकना
1170	क्नसूच्	ह्वृतिदीप्त्यो: ह्वृति: कौटिल्यम्	To be crooked	वक्र होना
1171	त्रसैच्	भये	To fear	भयभीत होना
1172	प्युसच्	दाहे	To burn	जलना
1173	षह 1174 षुहच्	शक्तौ	To be powerful	शक्तिशाली होना
1175	पुषंच्	पुष्टौ	To be fat	मोटा होना
1176	उचच्	समवाये। समवाय ऐक्यम्	To unite	एक होना
1177	लुटच्	विलोटने	To wallow	लोटना
1178	ष्विदांच्	गात्रप्रक्षरणे। गात्रप्रक्षरणं धर्मस्रुति:	To perspire	परसेवा करना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1179	क्लिदौच्	आर्द्रभावे	To be wet	गीला होना
1180	ञिमिदाच्	स्नेहने	To be gummy, to love	चिकना होना, प्रेम करना
1181	ञिक्ष्विदाच्	मोचने च। चकारात्स्नेहने	To release, to be gummy, to love	मुक्त करना, चिकना होना, प्रेम करना
1182	क्षुधंच्	बुभुक्षायाम्	To be hungry	भूखा होना
1183	शुंधंच्	शौचे। शौचं नैर्मल्यम्	To cleanse	निर्मल होना
1184	क्रुधंच्	कोपे	To be angry	कुपित होना
1185	षिधूंच्	संराद्धौ। संराद्धि निंष्पत्तिः	To be ready	तैयार होना
1186	ऋधूच्	वृद्धौ	To grow	बढ़ना
1187	गृधूच्	अभिकाङ्क्षायाम्	To long for	लोप करना
1188	रधौच्	हिंसासंराध्योः। संराद्धिः पाकः	To kill, to cook	मारना, पकाना
1189	तृपौच्	प्रीतौ। प्रीतिः सौहित्यम्	To be tranquil	तृप्त होना
1190	दृपौच्	हर्षमोहनयोः मोहनंगर्वः	To be pleased, to be proud	प्रसन्न होना, गर्वित होना
1191	कुपच्	क्रोधे	To be angry	कुपित होना
1192	गुपच्	व्याकुलत्वे	To be confused	व्याकुल होना
1193	युप् 1194 रुप, 1195 लुपच्	विमोहने	To be disturbed	विचलित होना
1196	डिपच्	क्षेपे	To throw, to send	फेंकना, भेजना
1197	ष्टुपच्	समुछ्राये	To grow	बढ़ना
1198	लुभच्	गार्द्ध्ये। गार्द्ध्यमभिकाङ्क्षा	To be greedy	लालची होना
1199	क्षुभच्	संचलने। संचलनं रूपान्यथान्यम्	To be agitated	हिचकिचाना
1200	णभ 1202 तुभच्	हिंसायाम्	To kill	हिंसा करना
1202	नशौच्	अदर्शने। अदर्शनमनुपलब्धिः	To be invisible, to take a flight, to perish	अदृश्य होना, भाग जाना, नष्ट होना
1203	कुशच्	श्लेषणे	To embrace, to joint	गले लगना, जोड़ना
1204	भृश् 1205 भ्रंशूच्	अधः पतने	To depress	पतित होना
1206	वृशच्	वरणे	To accept	स्वीकार करना
1207	कृशच्	तनुत्वे	To grow thin	पतला होना
1208	शुषंच्	शोषणे	To dry	सुखाना
1209	दुषंचू	वैकृत्ये। वैकृत्यं रूपभङ्गः	To be corrupted	दूषित होना
1210	श्लिषंच्	आलिङ्गने	To embrace	गले लगना
1211	प्लुषूच्	दाहे	To burn	जलाना
1212	ञितृषच्	पिपासायाम्	To be thirsty	प्यासा होना
1213	तुषं 1214 हृषच्	तुष्टौ। तुष्टिः प्रीतिः	To be pleased	हर्षित होना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1215	रुषच्	रोषे	To be angry	रोष करना
1216	प्युष, 1217 प्युस 1218 पुसच्	विभागे	To separate, to divide	अलग होना, विभाजित होना
1219	विसच्	प्रेरणे	To throw, to send	फेंकना, भेजना
1220	कुसच्	श्लेषे	To embrace	गले लगना
1221	असूच्	क्षेपणे	To throw	फेंकना
1222	यसूच्	प्रयत्ने	To try	प्रयत्न करना
1223	जसूच्	मोक्षणे	To release	मुक्त करना
1224	तसू 1225 दसूच्	उपक्षये	To fade away	क्षीण होना
1226	वसूच्	स्तम्भे	To be proud	गर्वित होना
1227	वुसच्	उत्सर्गे। उत्सर्गस्त्यागः	To abandon	त्याग करना
1228	मुसच्	खण्डने	To break	तोड़ना
1229	मसैच्	परिणामे। परिणामोविकार:	To be altered	रूपातंरित होना
1230	शमू 1231 दमूच्	उपशमे	To be calm	शांत होना
1232	तमूच्	काङ्क्षायाम्	To long for	अभिलाषा करना
1233	श्रमूच्	खेदतपसो:	To be sorry, to go in retirement	खेद प्रकट करना, तपस्या करना
1234	भ्रमूच्	अनवस्थाने। अनवस्थानं देशान्तरगमनम्	To wander	भ्रमण करना
1235	क्षमौच्	खहने	To allow, to endure	आज्ञा देना, सहन करना
1236	मदैच्	हर्षे	To be pleased	हर्षित होना
1237	क्लमूच् अवसितं शमादीना सप्तकमष्टकश्च	ग्लानौ	To fade away	क्षीण होना
1238	मुहौच्	वैचित्त्ये। वैचित्त्यमविवेक:	To be excited, to beauty	विवेकरहित होना, मोहित होना
1239	द्रुहौच्	जिघांसायाम्	To wish for killing to be imprudent	मारने की इच्छा करना
1240	ष्णुहौच्	उद्गिरणे	To vomit	वमन करना
1241	ष्णिहौच् वृत पुषादि:। पुषादिर्दिवाद्यन्तर्गणो वर्तित सम्पूर्ण इत्यर्थ:	प्रीतौ	To love	प्रेम करना
1242	षूङौच्	प्राणिप्रसवे	To deliver	जन्म देना
1243	दूङ्च्	परितापे। परितापखेद:	To be sorry	खेद प्रकट करना
1244	दीङ्च्	क्षये	To decrease	क्षीण होना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1245	धींङ्च्	अनादरे	To disrespect	अनादार करना
1246	मींङ्च्	हिंसायाम्	To kill	मारना
1247	रींङ्च्	स्रवणे	To ooze	रिसना
1248	लीङ्च्	श्लेषणे	To embrace	गले लगना
1249	डीङ्च्	गतौ	To go	जाना
1250	व्रींङ्च् वृत्स्वादि:	वरणे	To accept	स्वीकार करना
1251	पींङ्च्	पाने	To drink	पीना
1252	ईङ्च्	गतौ	To go	जाना
1253	प्रींङ्च्	प्रीतौ	To love	प्रेम करना
1254	युजिंच्	समाधौ। समाधिश्चित्तवृत्तिनिरोध:	To contemplate in solitude	समाधिस्थ होना
1255	सृजिंच्	विसर्गे	To make, to arrange	बनाना, रचना
1256	वृतूचि	वरणे	To accept	स्वीकार करना
1257	पदिंच्	गतौ। गतिर्यानं ज्ञानश्च	To go	जाना
1258	विदिंच्	सत्तायाम्। सत्ता भाव:	To become	होना
1259	खिदिंच्	दैन्ये।	To be sorry, to be poor	खेद प्रकट करना, दीन होना
1260	युधिंच्	सम्प्रहारे। सम्प्रहारो हननम्	To fight	युद्ध करना
1261	अनो रुधिंच्	कामे। काम इच्छा	To wish	इच्छा करना
1262	बुधिं 1263 मनिंच्	ज्ञाने	To know	जानना
1264	अनिच्	प्राणने	To breathe	प्राण धारण करना
1265	जनैचि	प्रादुर्भावे। प्रादुर्भाव	To be produced	उत्पन्न करना
1266	दीपैचि	दीप्तौ	To shine	चमकना
1267	तर्पिच्	ऐश्वर्ये वा। तपंधूप संतापे इत्यस्यैवैश्वर्ये दिवादित्वामात्मनेपदं वा विधीयते	To be lord	स्वामी होना
1268	पूरैचि	आप्यायने। आप्यायनं	To increase	वृद्धि होना
1269	घूरैङ् 1270 जूरैचि	जरायाम्। जरा वयोहानि:	To grow old	वृद्ध होना
1271	धूरैङ् 1272 गूरैचि	गतै	To go	जाना
1273	शूरैचि	स्तम्भे	To be proud	अभिमान करना
1274	तूरैचि घुरादय: हिंसायाश्च	त्वरायाम्। घुरादय: षडपि हिंसायां चकाराद्यथापथमुक्तेषु जरादिषु	To haste	उतावला होना
1275	चूरैचि	दाहे	To burn	जलाना
1276	क्लिशिच्	उपतापे	To be afflicted	दुखित होना
1277	लिशिंच्	अल्पत्वे	To be small	छोटा होना
1278	काशिच्	दीप्तौ	To shine	चमकना
1279	वाशिच्	शब्दे	To make noise	शब्द करना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1280	शकींच्	मर्षणे। मर्षणं क्षमा	To forgive	क्षमा करना
1281	शुचृगैच्	पूतिभावे। पूतिभाव: क्लेद:	To be wet	गीला होना
1282	रञ्जींच्	रागे	To be coloured	रंग करना
1283	शपींच्	आक्रोशे	To curse	शाप देना
1284	मृषीच्	तितिक्षायाम्। तितिक्षाक्षमा	To forgive	क्षमा करना
1285	णहींच्	बन्धने	To bind	बांधना
1286	षुगट्	अभिषवे। अभिषव: क्लेदनं संधानाख्यं पीडनमन्थने वा	To extract juice	अर्क निकालना
1287	षिंगट्	बन्धने	To bind	बाँधना
1288	शिंगट्	निशाने। निशानं तनूकरणम्	To make pointed sharpen	तीक्ष्ण करना
1289	डुमिंगट्	प्रक्षेपणे	To make over	वृद्धि करना
1290	चिंगट्	चयने	To collect	इकट्ठा करना
1291	धूगट्	कम्पने	To tremble	कंपित होना
1292	स्तृगूट्	आच्छादने	To cover	ढकना
1293	कृंगट्	हिंसायाम्	To kill	मारना
1294	वृग्ट्	वरणे	To forgive	क्षमा करना
1295	हिंट्	गतिवृद्ध्यो:	To go, to grow	जाना, बढ़ना
1296	श्रुंट्	श्रवणे	To hear	सुनना
1297	टुटुंट्	उपतापे	To afflict	दुखित होना
1298	पृंट्	प्रीतौ	To love	प्रेम करना
1299	स्मृंट्	पालने च। चकारात्प्रीतौ	To protect, to love	रक्षा करना, प्रेम करना
1300	शकॢ	शक्तौ	To be able	योग्य होना
1301	तिक 1302 तिग 1303 षघट्	हिंसायाम्	To kill	मारना
1304	राधं 1305 सांधट् फलसंपत्ति।	संसिद्धौ। संसिद्धि:	To be equal to	समान होना
1306	ऋधूट्	वृद्धौ	To grow	वृद्धि करना
1307	आप्लृंट्	व्याप्तौ	To pervade	व्याप्त होना
1308	तृपट्	प्रीणने	To please	प्रसन्न करना
1309	दम्भूट्	दम्भे	To find excuse	बहाना ढूँढना
1310	कृवुट्	हिंसाकरणयो:	To kill	मारना
1311	धिवुट्	गतौ	To go	जाना
1312	जिधृषाट्	प्रागल्भ्ये	To proud	गर्व करना
1313	ष्टिघिट्	आस्कन्दने	To shout	चिल्लाना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1314	अशौटि	व्यापतौ	To pervade	व्याप्त होना
1315	तुदींत्	व्यथने	To afflict	दुखित होना
1316	भ्रस्जींत्	पाके	To cook	पकाना
1317	क्षिपींत्	प्रेरणे	To send	भेजना
1318	दिशींत्	अतिसर्जने। अतिसर्जनं त्याग:	To give alms	दान देना
1319	कृषींत्	विलेखने	To pull	खींचना
1320	मुच्लृंती	मोक्षणे	To abandon	त्याग करना
1321	षिचींत्	क्षरणे	To sprinkle	छिड़कना
1322	विद्लृंन्ती	लाभे	To increase	वृद्धि करना
1323	लुप्लृन्ती	छेदने	To cut	काटना
1324	लिपींत्	उपदेहे। उपदेहो वृद्धि:	To grow	बढ़ना
1325	कृतैत्	छेदने	To cut	काटना
1326	खिदंत्	परिघाते	To kill	मारना
1327	पिशत् वृत: मुचादि:	अवयवे	To crush	पीसना
1328	रिं 1329 पिंत्	गतौ	To go	जाना
1330	धिंत्	धारणे	To hold	धारण करना
1331	क्षित्	निवासगत्यो:	To live	रहना
1332	षत्	प्रेरणे	To inspire	प्रेरित करना
1333	भृतं	प्राणत्यागे	To die	प्राण त्याग करना
1334	कृत्	विक्षेपे	To throw	फेंकना
1335	गृत्	निगरणे। निगरणं भोजनम्।	To dine	भोजन करना
1336	लिखत्	अक्षरविन्यासे	To write	लिखना
1337	जर्च 1338 झर्चत्	परिभाषणे	To speak	बोलना
1339	त्वचत्	संरवणे। संयरणमाच्छादनम्।	To cover	ढँकना
1340	ऋचत्	स्तुतौ	To praise	स्तुति करना
1341	ओव्रस्जौत्	छेदने	To cut	छेदन करना
1342	ऋछत्	इन्द्रियप्रलयमूर्तिभावयो: इन्द्रियाणां प्रलये मोहे मूर्तिभावे च	To be tempted by senses	इन्द्रियों से अभिभूत होना
1343	विछत	गतौ	To go	जाना
1344	उछैत्	विवासे। विवासोऽतिक्रम:	To transgress	उल्लंघन करना
1345	मिछत	उत्क्लेशे। उत्क्लेशो बाधनम्	To give pain	दु:ख देना
1346	उछुत	उञ्छे। उञ्छ उच्चय:।	To	
1347	प्रछंत्	ज्ञीप्सायाम्। त्रीप्सा जिज्ञासा	To be eager, to know	जिज्ञासु होना, जानना
1348	उब्जत्	आर्जवे	To be plain	सरल होना
1349	सृजंत्	विसर्गे	To create	रचना करना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1350	रुजोंत्	भङ्गे	To break	तोड़ना
1351	भुजोत्	कौटिल्ये	To be crooked	टेडा करना
1352	टुमस्जोंत्	शुद्धौ। शुद्ध्या स्नानं बुडनं च लक्ष्यते।	To bathe, to sink in water	स्नान करना, पानी में डूबना
1353	जर्ज 1354 झर्झत्	परिभाषणे	To talk	बातचीत करना
1355	उद्झत्	उत्सर्गे	To abandon	त्याग करना
1356	जुडत्	गतौ	To go	जाना
1357	पृड 1358 मृडत्	सुखने	To make happy	प्रसन्न होना
1359	कडत्	मदे	To be proud	गर्वित होना
1360	पृणत्	प्रीवणे	To please	प्रसन्न होना
1361	तुणत्	कौटिल्ये	To be crooked	वक्रता करना
1362	मृणत्	हिंसायाम्	To kill	मारना
1363	दुणत्	गतिकौटिल्ययोश्च चकाराद्धिंसायाम्	To be crooked, to go	वक्रता करना, जाना
1364	पुणत्	शुभे। शुभ शुभविषया क्रिया	To do auspicious act	शुभकार्य करना
1365	मुणत्	प्रतिज्ञाने	To promise	वचन देना
1366	कुणत्	शब्दोपकर्णयो:	To sound, to support	शब्द करना, आधार देना
1367	घुण 1368 घूर्णत्	भ्रमणे	To wander, to hurt	घूमना, आहत करना
1369	चृतैत्	हिंसाग्रन्थयो:	To hurt	आहत करना
1370	णुदत्	प्रेरणे	To drive	प्रेरणा देना
1371	षद्लृंत्	अवसादने	To be unhappy	दु:खी करना
1372	विध्रत्	विधाने	To cut, to honour, to work according to rite	छेदन करना, आदर करना, विधि के अनुसार कार्य करना
1373	जुन 1374 शुनत्	गतौ	To go	जाना
1375	छुंपत्	स्पर्शे	To touch	स्पर्श करना
1376	रिफत्	कथनयुद्धहिंसादानेषु	To tell, to fight	कहना, युद्ध करना
1377	तृफ 1378 तृम्फत्	तृप्तौ	To be contented	तृप्त होना
1379	ऋफ 1380 ऋम्फत	हिंसायाम्	To kill, to hurt	हिंसा करना, आहत करना
1381	दृफ 1382 दृम्फत्	उत्क्लेशे	To fell distressed	पीड़ा देना
1383	गुफ 1384 गुम्फत्	ग्रन्थेने	To sew	बुनना
1385	उभ 1386 उम्भत्	पूरणे	To fill	भरना
1387	शुभ 1388 शुम्भत्	शोभार्थे	To shine	चमकना
1389	दृभैत्	ग्रन्थे	To fasten to arrange	गूँथना
1390	लुभत्	विमोहने। विमोहनं व्याकुलीकरणम्।	To perplex	उलझना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1391	कुरत्	शब्दे	To sound	शब्द करना
1392	क्षुरत्	विखनने	To scratch	काटना
1393	खुरत्	छेदने च। छेदन विलेखनम्।चकारा द्विखनने	To scratch, to cut	काटना, छेदन करना
1394	घुरत्	भीमार्थशब्द्यो:	To say a terrible meaning, to grunt	भयानक शब्द करना
1395	पुरत्	अग्रगमने	To go forth	आगे बढ़ना
1396	मुरत्	संवेष्टने	To surround, to entwine	अच्छी प्रकार लपेटना
1397	सुरत्	ऐश्वर्यदीप्त्यो:	To govern, to shine	शासन करना, चमकना
1398	स्फर, 1399 स्फलत्	स्फुरणे	To throb, to quiver	फड़कना
1400	किलत्	श्वैत्यक्रीडनयो:।	To make one play, to be white	खिलाना, श्वेत करना
1401	इलत्	गतिस्वप्नप्रश्लेपणेषु	To add, to go to sleep	जमा करना, शयन करना
1402	हिलत्	हावकरणे	To sport amorously, To wanton to dally	हावभाव करना
1403	शिल 1404 सिलत्	उञ्छे	To glean	बीनना
1405	तिलत्	स्नहने	To be greasy	चिकना करना
1406	चलत्	विलसने	To frolic about	विलास करना
1407	चिउत्	वसने	To put on clothes	कपड़े पहनना
1408	विलत्	वरणे	To cover, to divide	ढँकना, विभाजित करना
1409	बिलत्	भेदने	To break	तोड़ना
1410	णिलत्	गहने	To give pain	पीड़ा देना
1411	मिलत्	श्लेषणे	To collect	इकट्ठा करना
1412	स्पृशत्	संस्पर्शे	To touch	स्पर्श करना
1413	रुशं 1414 रिशंत्	हिंसायाम्	To kill	मारना
1415	विशंत्	प्रवेशने	To enter	प्रवेश करना
1416	भृशत्	आमर्शने। आमर्शनं	To touch, to handle	स्पर्श करना, संभालना
1417	लिश (अथ षान्तास्त्रय: सेटश्च) 1417 ऋषैत्	गतौ	To go	जाना
1419	इषत्	इच्छायाम्	To wish	इच्छा करना
1420	मिषत्	स्पर्द्धायाम्	To compete with	प्रतिस्पर्धा करना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1421	वृहौत्	उद्यमे। उद्यम उद्धरणम्	To make one prosperous	उन्नति करना
1422	तृहौ 1423 तृंहौ, 1424 स्तृहौ, 1425 स्तृंहौत्	हिंसायाम्	To kill	मारना
1426	कुटत्	कौटिल्ये	To be crooked	वक्रता करना
1427	गुंत्	पुरीषोत्सर्गे	To void excrement	अरण्य में जाना
1428	ध्रुंत्	गतिस्थैर्ययोः	To go, to stand	जाना, स्थिर होना
1429	णूच्	स्तवने	To tremble, to praise	कंपित होना, प्रशंसा करना
1430	धूत्	विधूनने	To shake	कंपित होना
1431	कुचत्	संकोचने	To be thrifty	संकोचित करना
1432	व्यचत्	व्याजीकरणे	To excuse	बहाना ढूँढना
1433	गुजत्	शब्दे	To sound	शब्द करना
1434	घुटत्	प्रतीघाते	To give pain, to give a counterblow, to resist	पीड़ा देना, प्रत्याघात करना, रोकना
1435	चुट् 1436 छुट 1437 त्रुटत्	छेदने	To cut	छेदन करना
1438	तुटत्	कलहकर्मणि	To break	तोड़ना
1439	मुटत्	आक्षेपप्रमर्दनयो	To blame	निन्दा करना
1440	स्फुटत्	विसकने	To expand	विकसित करना
1441	पुट (अथ ठान्तः सेट् च) 1442 लुठत्	संश्लेषणे	To join	जोड़ना
1443	कृडत्	घसने। घसनं भक्षणम्	To eat	खाना
1444	कुडत्	बाल्ये च. चकाराद्घसने	To eat, to act as a child	खाना, बाल-चेष्टा करना
1445	गुडत्	रक्षायाम्	To preserve	रक्षण करना
1446	जुडत	बन्धे	To bind	बाँधना
1447	तुडत	तोडने। तोडन भेदः	To break	तोड़ना
1448	लुड1449 थुड , 1450 स्थुडत्	संवरणे	To cover	ढँकना
1451	वुडत्	उत्सर्गे च। चकारात्संवरणे।	To discharge, to abandond, to give alms, to cover	छुट्टी देना, त्याग करना, दान देना, ढँकना
1452	व्रुड 1453 भ्रुडत	संघाते	To collect, to cover	इकट्ठा करना, ढँकना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1454	दुड 1455 हुड 1456 त्रुडत	निमज्जने	To sink, to make one sink	डूबना, डूबाना
1457	चुणत्	छेदने	To cut	छेदन करना
1458	डिपत्	क्षेपे	To throw	फेंकना
1459	छुरत्	छेदने	To cut	छेदन करना
1460	स्फुरत्	स्फुरणे	To throb	फड़कना
1461	स्फुलत्	संचये च। चकारात्स्फुरणे	To throb, to quiver, to collect	फड़कना, इकट्ठा करना
1462	कुंड् 1463 कूड्	शब्दे	To sound	शब्द करना
1464	गुरैति	उद्यमे	To exert	उद्यम करना
1465	पृङत्	व्यायामे। व्यायाम उद्योग	To take exercise	व्यापार करना
1466	दृंङत्	आदरे	To respect	आदर करना
1467	धृंङ्त्	स्थाने	To live, to hold	रहना, धारण करना
1468	ओविजैति	भयचलनयो	To fear	भय करना
1469	ओलजैङ् 1470 औलस्जैति	व्रीडे	To be ashamed	लज्जित होना
1471	ष्वञ्जित	संगे	To accompany	मैत्री करना
1472	जुषैति तिच्छविकरणस्तुदादिगण: सम्पूर्ण:	प्रीतिसेवनयो:	To love, to serve	प्रेम करना, सेवा करना
1473	रुधृपी	आधरणे। आवरणं व्यापित्वम्	To cover	ढँकना
1474	रिचृम्पो	विरेचने। विरेचनं नि सारणम्।	To purge, to evacuate	शुद्धि करना, खाली करना
1475	विचृम्पो	पृथग्भावे।	to separate	अलग करना
1476	युजृम्पी	योगे	to join	जोड़ना
1477	भिदृपी	विदारणे	To tear	भेदन करना
1478	छिदृपी	द्वैधीकरणे। अद्वधस्य। पृथक्त्वे	To divide, to cut	विभाजित करना, छेदन करना
1479	क्षुदृपी	संपेशे	To pound	कुचलना
1480	उछृदृपी	दीप्तिदेवनयो:	To shine	चमकना
1481	उतदृपी	हिंसानादरयो:।	To hurt, to disrespect	आहत करना, अनादार करना
1482	पृचैप्	संपर्के	To unite, to mingle	एक होना, मिश्रण करना
1483	वृचैप्	धरणे	To choose	स्वीकार करना
1484	तञ्चू 1485 तञ्चौप्	संकोचने	To contract	संकुचित करना
1486	भञ्जोंप्	आमर्दने	To break	तोड़ना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1487	भुजंप्	पालनाभ्यवहारयो: अभ्यवहारी भोजनम्।	To protect, to eat	रक्षण करना, खाना
1488	अञ्जोंप्	व्यक्तिम्रक्षणगतिषु। व्यक्ति: प्रकटता। भक्षणं घृतादिसेक:।	To manifest, to go, to sprinkle	प्रगट करना, जाना, छिड़कना
1489	ओविजेप्	भयचलनयो:।	To fear, to move	भय करना, जाना
1490	कृतैप्	वेष्टने	To encompass, to twist	कांपना, लपेटना
1491	उन्दैप्	क्लेदने	To moisten	गीला होना
1492	शिष्लृंप्	विशेषणे। विशेषणं गुणान्तरोत्पादनम्	To qualify	स्थापन करना
1493	पिष्लृंप्	सञ्चूर्णने	To pound, to grind	कुचलना, पीसना
1494	हिसु 1495 तृहप्	हिंसायाम्	To hurt	आहत करना
1496	खिदिंप्	दैन्ये	To be afflicted, to be depressed	दु:खी होना, खेद प्रकट करना
1497	विदिंप्	विचारणे	To think	विचार करना
1498	ञिइन्धैपि इति श्नविकरण: पिदुधा: दिर्गण: सम्पूर्ण:	दीप्तौ	To shine	चमकना
1499	तनूयी	विस्तारे	To spread	विस्तारित होना
1500	षणूयी	दाने	To give	देना
1501	क्षणूय 1502 क्षिणूयी	हिंसायाम्	To hurt	आहत करना
1503	ऋणूयी	गतौ	To go	जाना
1504	तृणूयी	अदने	To eat, to graze	खाना, चरना
1505	घृणूयी	दीप्तौ	To shine	चमकना
1506	वनूयि	याचने	To desire	इच्छा करना
1507	मनूयि	बोधने	To know	जानना
1508	डुक्रींग्श्	द्रव्यविनिमये। विनिमय: परिवर्त:	To purchase	खरीदना
1509	विंग्श्	बन्धने	To bind	बँधना
1510	पींग्श्	तीप्तिकान्तयो: कान्तिरभिलाष:	To satisfy	सन्तुष्ट होना
1511	श्रींग्श्	पाके	To cook	पकाना
1512	मींग्श्	हिंसायाम्	To hurt	आहत करना
1513	युंग्श्	बन्धने	To bind	बँधना
1514	स्कुंग्श्	आप्रवणे। आप्रवणमुद्धरणम्	To uphold	उद्धार करना
1515	क्नूग्श्	शब्दे	To sound	शब्द करना
1516	दुग्श्	हिंसायाम्	To hurt, to kill	आहत करना, मारना
1517	ग्रहीश्	उपादाने। उपादानं स्वीकार:।	To take, to accept	लेना, स्वीकार करना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1518	पूग्श्	पवने। पवनं शुद्धिः	To purify	शुद्ध करना
1519	लूग्श्	छेदने	To cut	छेदन करना
1520	धूग्श्	कम्पने	To shake	हिलाना
1521	स्तॄग्श्	आच्छादने	To cover	ढँकना
1522	कॄग्श्	हिंसायाम्	To kill, to hurt	मारना, आहत करना
1523	वॄग्श्	वरणे	To choose	स्वीकार करना
1524	ज्यांश्	हानौ	To oppress, to grow	क्षीण होना, बढ़ना
1525	रींश्	गतिरेषणयः। रेषणं हिंसा	To go, to hurt	जाना, आहत करना
1526	लींश्	श्लेषणे	To embrace	गले लगाना
1527	व्लींश्	वरणे	To choose, to accept	स्वीकार करना
1528	ल्वींश्	गतौ	To go	जाना
1529	कॄ 1530 मॄ			
1531	शॄ	हिंसायाम्	To kill	मारना
1532	पॄश्	पालणपूरणयोः।	To protect, to kill	रक्षा करना, मारना
1533	बॄश्	भरणे	To nourish	पोषण करना
1534	भॄश्	भर्जने च। भर्जनं पाकः। चकाराद्भरणे	To cook, to nourish	पकाना, पोषण करना
1535	दॄश्	विदारणे	To tear	फाड़ना
1536	जॄश्	वयोहानौ	To grow old	वृद्ध होना
1537	नॄश्	नये	To carry	ले जाना
1538	गॄश्	शब्दे	To sound	शब्द करना
1539	ॠश्	गतौ	To go	जाना
1540	ज्ञांश्	अवबोधने	To know	जानना
1541	क्षिष्श्	हिंसायाम्	To kill	मारना
1542	व्रींश्	वरणे	To choose	स्वीकार करना
1543	भ्रींश्	भरणे	To nourish	पोषण करना
1544	हेडश्	भूतप्रादुर्भावे। भूतप्रादुर्भावोऽतिक्रान्तोत्पत्तिः	To recreate	पुनः उत्पन्न करना
1545	मृडश्	सुखने	To make happy	सुखी होना
1546	श्रन्थश्	मोचनप्रतिहर्षयोः	To release, to delight	छोड़ना, प्रसन्न होना
1547	मन्थश्	विलोडने	To churn	मंथन करना
1548	ग्रन्थश्	संदर्भे। संदर्भो बन्धनम्	To bind, to gather	बँधना, गूँथना
1549	कुन्थश्	संक्लेशे	To suffer	दुःख देना
1550	मृदश्	क्षोदे	To crush	पीसना
1551	गुधश्	रोषे	To be angry	क्रोध करना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1552	बन्धंश्	बन्धने	To bind	बँधना
1553	क्षुभश्	संचलने	To agitate	कंपित होना
1554	णभ् 1555 तुभश्		To move, to shake, to kill	चलना, कंपित होना, मारना
1556	खवश्	हेठश्वत्। यथा हेठश् भूतप्रादुर्भावे तथायमपिवर्णक्रमानुरोधेन तु तत्रैव न पठितः।	To make prosper	उन्नति करना
1557	क्लिशौश्	विबाधने	To narrate a past thing	भूतकाल का स्मरण करना
1558	अशश्	भोजने	To eat	खाना
1559				
1560	विषश्	विप्रयोगे	To separate, to disjoin	अलग करना, .वियोग करना
1561	प्रुष 1562 प्लुषश्	स्नेह सेचन पूरणेषु	To moisten, to sprinkle	गीला करना, छिड़कना
1563	मुषश्	स्तेये	To steal	चोरी करना
1564	पुषश्	पुष्टौ	To nourish	पोषण करना
1565	कुषश्	निषकर्षे। निषकर्षो बहिष्कर्षणम्	To draw out	बाहर निकालना
1566	ग्रसूश्	उञ्छे	To collect	इकट्ठा करना
1567	वृङ्श्	संभक्तौ। संभक्ति संसेवा।	To serve well	अच्छी प्रकार सेवा करना
1568	चुरण्	स्तेये	To steal	चोरी करना
1569	पृण्	पूरणे	To fill	भरना
1570	घृण्	स्रवणे	To sprinkle over, to wet	छिड़कना, गीला करना
1571	श्वल्क 1572 वल्कण्	भाषणे	To speak	बोलना
1573	नक्क 1574 धक्कण्	नाशने	To destroy	नष्ट करना
1575	चक्क 1576 चुक्कण्	व्यथने	To trouble	कष्ट देना
1577	टकुण्	बन्धने	To bind	बँधना
1578	अर्कण्	स्तवने	To praise	प्रशंसा करना
1579	पिच्चण्	कुट्टने	To hammer	वार करना
1580	पचुण्	विस्तारे	To extend	विस्तार करना
1581	म्लेछण्	म्लेच्छने। म्लेच्छनम व्यक्ता वाक्	To speak indistinctly	अस्पष्ट बोलना
1582	ऊर्जण्	बलप्राणनयोः। प्राणनं जीवनम्।	To be strong, to live	बलवान होना, जीना
1583	तुजु 1584 पिजुश्	हिंसाबलदाननिकेतेनेषु। निकेतनं गृहम्	To kill, to be strong, to give, to live	मारना, बलवान होना, देना, प्राण धारण करना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1585	क्षजुण्	कृच्छ्रजीवने	To live, to distress	प्राण धारण करना, दु:खी होना
1586	'पूजण	पूजायाम्	To worship	पूजा करना
1587	गज 1588 मार्जण्	शब्दे	To sound	शब्द करना
1589	तिजण्	निशाने	To sharpen	तीक्ष्ण करना
1590	व्रज 1591 व्रजण्	मार्गणसंस्कारगत्यो:। मार्गणो बाणस्तस्यसंस्कारे गतौ	To cleanse an arrow to go	बाण को साफ करना, जाना
1592	रुजण्	हिंसायाम्	To kill	हिंसा करना
1593	नटण	अवस्पन्दने। अवस्यन्दनं भ्रंश:	To degrade	पतित करना
1594	तुट 1595 चुट 1596 चुट्ट 1597 छुटण्	छेदने	To cut	छेदना
1598	कुट्टण्	कुत्सने। चकाराच्छेदने	To cut, to censure	छेदना, निन्दा करना
1599	पुट्ट 1600 चुट्ट 1601 षुट्टण्	अल्पीभावे	To become small	छोटा हो जाना
1602	पुट 1603 मुटण्	संचूर्णने	To grind, to speak	पीसना, बोलना
1604	अट्ट 1605 स्मिटण्	अनादरे	To disrespect	अनादर करना
1606	लुण्टण्	स्तेये च। चकारादनादरे	To disrespect, to steal	अनादर करना, चुराना
1607	स्निटण्	स्नेहने	To moisten	गीला करना
1608	घट्टण्	चलने	To move	चलना
1609	खट्ट	संवरणे	To cover	ढंकना
1610	षट्ट 1611 स्फिटण	हिंसायाम्	To kill	हिंसा करना
1612	स्फुटुण	परिहासे	To jest, joke, laugh	हँसी उड़ाना
1613	कीटण	वर्णने	To describe	वर्णन करना
1614	वटुण	विभाजने	To divide, to share	विभाजित करना, बाँटना
1615	रुट्ण	रोषे	To be angry	क्रोधित होना
1616	शठ 1617 श्वठ 1618 श्वठुण्	संस्कारगत्या:	To go, to make well	जाना, अच्छा बनाना
1619	शुठण्	आलस्ये	To be idle	आलस करना
1620	शुठुण्	शोषणे	To become dry	सुखाना
1621	गुठुण्	वेष्टने	To wind or twist round	लपेटना
1622	लडण्	उपसेवायाम्।	To fondle	आलिंगन करना
1623	स्फुडुण्	परिहासे	To jest or laugh	परिहास करना
1624	ओलडुण्	उत्क्षेपे	To throw	फेंकना
1625	पीडण्	गहने। गहनं बाधा	To trouble	बाधित करना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1626	तडण्	आघाते	To beat	मारना
1627	खड 1628 खडुण्	भेदे	To break	तोड़ना
1629	कडुण्	खण्डने च। चकाराद्भेदे	To pierce	भेदित करना
1630	कुडुण्	रक्षणे	To protect	रक्षा करना
1631	गुडुण्	वेष्टने च। चकाराद्रक्षणे	To protect, to twist round	रक्षा करना, मोड़ना
1632	चुडुण्	छेदने	To break	तोड़ना
1633	मडुण्	भूषायाम्	To decorate	सजाना
1634	भडुण्	कल्याणे	To make fortunate, to be fortunate	भाग्यशाली होना
1635	पिडुण्	संघाते	To collect	संग्रह करना
1636	ईडण्	स्तुतौ	To praise	प्रशंसा करना
1637	चडुण्	कोपे	To be angry	दु:खी होना
1638	जुड 1639 चूर्ण 1640 वर्णण्	प्रेरणे प्रेरणं दलनम्।	To pound	गड्ढा खोदना
1641	चूण 1642 तूणण्	संकोचने	To contract	संकुचित करना
1643	श्रणण्	दाने	To give	देना
1644	पूणण्	संघाते	To collect	संग्रह करना
1645	चितुण्	स्मृत्याम्।	To remember	याद करना
1646	पुस्त 1647 बुस्तण्	आदरानादरयो:।	To respect, to disrespect	आदर करना, आनादर करना
1648	मुस्तण्	संघाते	To gather together	एकत्रित करना
1649	कृतण्	संशब्दे। संशब्द: ख्याति	To glorify	ख्याति देना
1650	स्वर्त 1651 पथुण्	गतौ	To go	जाना
1652	श्रथण्	प्रतिहर्षे।	To be glad	हर्षित होना
1653	पृथण्	प्रक्षेपणे	To put in, to fly	स्थापित करना, उड़ना
1654	प्रथण्	प्रख्याने	To publish	प्रसिद्ध करना
1655	छदण्	संवरणे	To cover	ढ़कना
1656	चुदण्	संचोदने। संचोदनं नोदनम्	To drive	प्रेरणा देना
1657	मिदुण्	स्नेहने	To be greasy	चिकना होना
1658	गुर्दण्	निकेतने	To inhabit	निवास करना
1659	छर्दण्	वमने	To vomit	उलटी करना
1660	बुधुण्	हिंसायाम्।	To kill	हिंसा करना
1661	वर्धण्	छेदनपरणयो:।	To cut	काटना
1662	गर्धण्	अभिकाङ्क्षायाम्।	To desire	इच्छा करना
1663	बन्ध 1664 बधण्	संयमने	To control, to bind	रोकना, बाँधना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1665	छपुण्	गतौ	To go	जाना
1666	क्षपुण्	क्षान्तौ	To be patient, to forbear	सहनशील होना
1667	छूपण्	समुच्छ्राये	To erect	उँचा बढ़ना
1668	डिपण्	क्षेपे	To throw	फेंकना
1669	ह्लपण्	व्यक्तायां वाचि।	To speak distinctly	स्पष्ट बोलना
1670	डपु 1671 डिपुण्	संघाते	To make a heap of	इकठ्ठा करना
1672	शूर्पण्	माने	To measure	मापना
1673	शुल्बण्	सर्जने च। चकारान्माने	To measure, to create	मापना, सर्जन करना
1674	डबु 1675 डिबुण्	क्षेपे	To throw	फेंकना
1676	सम्बण्	सम्बन्धे	To join	जोड़ना
1677	कुबुण्	आच्छादने	To cover	ढकना
1678	लबु 1679 तुबुण्	अर्दने	To torment, harass	पीड़ा पहुँचाना
1680	पुर्बण्	निकेतने	To dwell	निवास करना
1681	यमण्	परिवेषणे	To supply	परोसना
1682	व्ययण्	क्षये	To waste	बेकार करना
1683	यत्रुण्	संकोचने	To contract	सकुंचित करना
1684	कुद्रुण्	अनृतभाषणे	To tell a lie	झूठ बोलना
1685	श्वभ्रण्	गतौ	To go	जाना
1686	तिलण्	स्नेहने	To make greesy	चिकना करना
1687	जलण्	अपवारणे	To cover, to screen	ढंकना, ढक्कन लाना
1688	क्षलण्	शौचे। शौचं शौचकर्म	To wash	साफ करना
1689	पुलण्	समुच्छ्राये	To heap up	उँचा बढ़ना
1690	बिलण्	भेदे	To split	तोड़ना
1691	तलण्	प्रतिष्ठायाम्।	To be a helper, to establish	स्थापित करना
1692	तुलण्	उन्माने।	To weigh	तोलना
1693	दुलण्	उत्क्षेपे	To throw up	ऊपर फेंकना
1694	बुलण्	निमज्जने	To sink, to plunge	डूबना, निविष्ट करना
1695	मूलण्	रोहणे	To grow	वृद्ध होना
1696	कल 1697 किल 1698 पिलण्	क्षेपे	To send	भेजना
1699	पलण्	रक्षणे।	To protect	रक्षा करना
1700	इलण्	प्रेरणे	To direct	प्रेरणा देना
1701	चलण्	भृतौ।	To foster, to serve	नौकरी करना, सेवा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

				करना
1702	सान्त्वण्	सामप्रयोगे	To consoll, to tell good words to	शान्त करना, प्रिय वचन करना
1703	धूशण्	कान्तीकरणे	To adron, to decorate	शोभित करना,
1704	श्लिषण्	श्लेषणे।	To embrace, to join	गले लगना, जोड़ना
1705	लूषण्	हिंसायाम्।	To hurt, to kill	हिंसा करना, मारना
1706	रुषण्	रोषे।	To be angry	क्रोध करना
1707	प्युषण्	उत्सर्गे	To emit, to abandon	दान देना, त्याग करना
1708	पसुण	नाशने	To destroy	नष्ट करना
1709	जसुण	रक्षणे	To proect	रक्षा करना
1710	पुंसण	अभिमर्दने	To crush, to grind, to trouble, to punish	कुचलना, पिसना, कष्ट देना, दण्ड देना
1711	ब्रुस 1712 पिस 1713 जस 1714 बर्हण्	हिंसायाम्।	To hurt, to kill	हिंसा करना
1715	ष्णिहण्	स्नेहने	To be greesy, to love	चिकना करना, प्रेम करना
1716	म्रक्षण्	म्लेच्छने	To speak indistinctly	अस्पष्ट बोलना
1717	भक्षण्	अदने	To eat	खाना
1718	पक्षण्	परिग्रहे	To seize loosely, to take, to accept	बन्द करना, लेना, स्वीकार करना
1719	लक्षीण्	दर्शनाङ्कयो:। अङ्कं चिह्नम्।	To show	दिखाना
1720	ज्ञाण्	मारणादिनियोजनेषु। मारणादयो मारणतोषणनिशानेज्ञश्चेतिसूत्रोक्तास्तेषु नियोजे चार्थे जानातिश्चुरादि:।	To beat, to please, to sharpen	मारना, खुश करना, तीक्ष्ण करना
1721	च्युण्	सहने	To endure	सहन करना
1722	भूण्	अवकल्कने। अवकल्कनं मिश्रीकरणम्	To mix	मिश्रण करना
1723	बुक्कण्	भषणे।	To bark at	भाषण देना
1724	रक 1725 लक 1726 रग 1727 लगण्	आस्वादने	To taste	चाटना
1728	लिगुण्	चित्रीकरणे	To paint, to inflict a noun according to its gender	चित्रित करना,
1729	चर्चण्	अध्ययने	To study	अध्ययन करना
1730	अञ्चण्	विशेषणे। विशेषणमतिशय:	To qualify, to clear	विशिष्ट होना, स्पष्ट

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

				करना,
1731	मुचण्	प्रमोचने।	To release, to throw	छोड़ना, फैकना
1732	अर्जण्	प्रतियत्ने। प्रतियत्न: संस्कार:।	To arrange	क्रमबद्ध करना
1733	भजण्	विश्राणने। विश्राणनं विपचनम्	To cook, to give	पकाना, देना
1734	चट 1735 स्फुटण्	भेदे	To break, to pierce	तोड़ना, भेदना
1736	घटण्	संघाते	To collect	इकट्ठा करना
1737	कणण्	निमीलने	To be blind	अन्धा होना
1738	यतण्	निकारोपस्कारयो:। निकार: खेदनम्	To close, to torture, to reflect	बन्द करना, कष्ट देना, प्रतिबिम्बित करना
1738-2	निरश्च	प्रतिदाने। निर: परो यति: प्रतिदानेऽर्थे चुरादि:।	to return	वापस देना
1739	शब्दण्	उपसर्गाद् भाषाविष्कारयो:। भाषो भाषणम्। भाषे आविष्कारे। भाषे आविष्कारे चार्थे शब्द इत्ययं धातुरुपसर्गा त्परश्चुरादि:।	To sound, to speak	शब्द करना, बोलना
1740	षूदण्	आस्रवणे	To excite, to ooze, to drop	उकसाना, टपकना, गिराना
1741	आङ: क्रन्दण्	सातत्ये। आङ: पर: क्रन्द इत्ययं धातु: सातत्येऽर्थे चुरादि:।	to cry, to lament, to be permanent	चिल्लायाना, रोधन करना, स्थाई होना
1742	ष्वदण्	आस्वादने	To taste	चाटना
1743	आस्वद: सकर्मकात्	आङ्पूर्वात्स्वदते: सकर्मकाण्णिजू भवति		
1744	मुदण्	संसर्ग	To mix, to blend	मिश्रण करना
1745	शृधण्	प्रसहने। प्रसहनमभिभव:।	To strive, to defeat, to win	अभिभूत करना, हराना, जितना
1746	कृपण्	अवकल्कने। अवकल्कनं मिश्रीकरणं सामर्थ्यञ्च	To mix, to be strong	मिश्रण करना, समर्थ होना
1747	जभुण्	नाशने	To destroy	नष्ट करना
1748	अमण्	रोगे	To be ill	रोगी बनना
1749	चरण्	असंशये	To think	विचार करना
1750	पूरण्	आप्यायने	To fill	भरना
1751	दलण्	विदारणे	To tear	फाड़ डालना
1752	दिवण् 1753 पश	अर्दने	To trouble	पीड़ा देना
1754	पषण्	बन्धने	To bind	बाँधना
1755	पुषण्	धारणे	To nourish	पोषण करना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1756	घुषृण्	विशब्दने। विशब्दनं विशिष्टशब्दकरणं नानाशब्दनं वा।	To sound	उद्घोषणा करना
1757	भूष 1758 तसुण्	अलङ्कारे	To decorate	सुशोभित करना
1759	जसण्	ताडने	To beat	ताड़ना देना
1760	त्रसण्	वारणे	To move, to hold, to oppose, to push	भ्रमण करना, धारण करना, विरोध करना, धक्का देना
1761	वसण्	स्नेहच्छेदावहरणेषु	To cut, to make greesy, to kill, to beat	काटना, चिकना करना, हिंसा करना, मारना
1762	ध्रसण्	उत्क्षेपे	To throw	उछालना
1763	ग्रसण्	ग्रहणे	To devour	ग्रहण करना
1764	लसण्	शिल्पयोगे	To exercise at art	कारीगरी करना
1765	अर्हण्	पूजायाम्	To worship	पूजा करना
1766	मोक्षण्	असने	To throw	उछालना
1767	लोकृ 1768 तर्क 1769 रघु 1770 लघु 1771 लोचृ 1772 विछ 1773 अजु 1774 तुजु 1775 पिजु 1776 लजु 1777 लुजु 1778 भजु 1779 पट 1780 पुट 1781 लुट 1782 घट 1783 घटु 1784 वृत 1785 पुथ 1786 नद 1787 वृध 1788 गुप 1789 धूप 1790 कुप 1791 चीव 1792 दशु 1793 कुशु 1794 त्रसु 1795 पिसु 1796 कुसु 1797 दसु 1798 वर्ह 1799	भासार्था:। लोकृतर्कादय: स्वार्थे णिचमुत्पादयन्ति भासार्थाश्च	To look at, to shine	प्रकाशित करना, चमकना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	वृहु 1800 वल्ह 1801 अहु 1802 वहु 1803			
1804	युणि	जुगुप्सायाम्।	To censure	निन्दा करना
1805	गृणि	विज्ञाने	To know	जानना
1806	वञ्चिण्	प्रलम्भने। प्रलम्भनं मिथ्याफलाख्यानम्	To deceive	ठगना
1807	कुटिण्	प्रतापने	To warm	तपाना
1808	मदिण्	तृप्तियोगे	To be satisfied or delighted	तृप्त होना
1809	विदिण्	चेतनाख्याननिवासेषु	To declare, to dwell, to exprience	घोषणा करना, कहना, अनुभव करना
1810	मनिण्	स्तम्भे। स्तम्भो गर्वः	To be proud	अभिमान करना
1811	बलि 1812 भलिण्	आभण्डने। आभण्डनं निरूपणम्	To see, to behold	देखना, निरूपण करना
1813	दिविण्	परिकुजने	To suffer pain, to lament, to screech, to squeat	पीड़ित होना, रोधन करना, चिल्लाना,
1814	वृषिण्	शक्तिबन्धे। शक्तिबन्धः प्रजननसामर्थ्यम्। शक्तिसम्बन्धश्च	To conceive	कल्पित करना
1815	कुत्सिण्	अवक्षेपे	To abuse, to revile	निन्दा करना
1816	लक्षिण्	आलोचने	To discriminate between right and wrong	योग्य-अयोग्य पर विचार करना
1817	हिष्कि 1818 किष्किण्	हिंसायाम्।	To hurt, to kill	हिंसा करना
1819	निष्किण्	परिमाणे	To weigh, to measure	तोलना, मापना
1820	तर्जिण्	संतर्जने	To threaten, to scold, to deride	डराना, तर्जना करना,
1821	कूटिण्	अप्रमादे	To be active	क्रियाशील होना
1822	त्रुटिण्	छेदने	To cut	काटना
1823	शठिण्	श्लाघायाम्।	To praise	प्रशंसा करना
1824	कूणिण्	सङ्कोचने	To contract	संकुचित करना
1825	तूणिण्	पूरणे	To fill	भरना
1826	भ्रूणिण्	आशायाम्।	To hope	आशा रखना
1827	चितिण्	संवेदने	To experience	अनुभव करना
1828	बस्ति 1829 गन्धिण्	अर्दने	To torment	दुःख देना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1830	डपि 1831 डिपि 1832 डम्पि 1833 डिम्पि 1834 डम्भि 1835 डिम्भिण्	संघाते	To collect	इकट्ठा करना
1836	स्यमिण्	वितर्के	To consider, to reflect	तर्क देना, प्रतिबिम्बित करना
1837	शमिण्	आलोचने	To see, to discriminate	देखना, आलोचना करना
1838	कुस्मिण्	कुस्मयने। कुत्सितं स्मयनं कुस्मयनम्।	To smile improperly	बुरा हँसना
1839	गूरिण्	उद्यमे	To throw	फेंकना
1840	तन्त्रिण्	कुटुम्बधारणे। कुटुम्ब: परिवार:। उपलक्षणञ्चैतत्	To maintain the family	परिवार का पोषण करना
1841	मन्त्रिण्	गुप्तभाषणे	To talk privately	गुप्त बात करना
1842	ललिण्	ईप्सायाम्।	To fondle	इच्छा करना
1843	स्पशिण्	ग्रहणश्लेषणयो:	To perform	ग्रहण करना
1844	दंशिण्	दशने	To bite	डंक मारना
1845	दंसिण्	दर्शने च। चकाराद् दशने	To bite, to see	डंक मारना, देखना
1846	भर्त्सिण्	सन्तर्जने	To abuse	निन्दा करना
1847	यक्षिण्	पूजायाम्	To worship	पूजा करना
1848	अङ्कण्	लक्षणे	To mark	चिह्नित करना
1849	ब्लष्कण्	दर्शने	To see	देखना,
1850	सुख 1851 दु:खण्	तत्क्रियायाम्। सुखनं दु:खनञ्च तत्क्रिया	To be happy, to be unhappy	सुख भोगना, दु:ख भोगना
1852	अङ्गण्	पदलक्षणयो:	To mark or stamp with	चिह्नित करना,
1853	अघण्	पापकरणे	To commit a sin	पाप करना
1854	रचण्	प्रतियत्ने	To arrange	रचना करना
1855	सूचण्	पेशून्ये	To pierce, to betray, to intimate, to spy	भेदना, धोखा देना, सूचना देना, जासूसी करना
1856	भाजण्	पृथक्कर्मणि।	To separate	अलग करना
1857	सभाजण्	प्रीतिसेवनयो:।	To please, to serve	प्रेम करना, सेवा करना
1858	लज 1859 लजुण्	प्रकाशने	To shine, to be manifest	चमकना, प्रकाशित करना
1860	कूटण्	दाहे	To burn	जलाना
1861	पट 1862 वटण्	ग्रन्थे। ग्रन्थो वेष्टनम्	To twist round	गोल लपेटना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1863	खेटण्	भक्षणे	To eat	खाना
1864	खोडण्	क्षेपे	To throw	फेंकना
1865	पुटण्	संसर्गे	To accompany	साथ करना
1866	वटुण्	विभाजने	To divide	विभाजित करना
1867	शठ 1868 श्वठण्	सम्यग्भाषणे	To speak well elegantly	अच्छी प्रकार से कहना
1869	दण्डण्	दण्डनिपाते	To punish	दण्ड देना
1870	व्रणण्	गात्रविचूर्णने	To hurt, to wound	हिंसा करना, पीड़ा पहुँचाना
1871	वर्णण्	वर्णक्रियाविस्तारगुणवचनेषु। वर्णक्रिया वर्णनं वर्णकरणं वा। विस्तारे वर्णनेयम्। गुणवचनं स्तुतिः शुक्लाद्युक्तिर्वा	To relate, to extol, to colour	वर्णन करना, विस्तार करना, रंगों का वर्णन करना
1872	पर्णण्	हरितभावे	To make green or verdant	हरित करना
1873	कर्णण्	भेदे	To pierce, to bore	भेदना, छेदन करना
1874	तूणण्	संकोचने	To contract	संकुचित करना
1875	गणण्	संख्याने	To count	गिनना
1876	कुण 1877 गुण 1878 केतण्	आमन्त्रणे आमन्त्रणं गूढोक्तिः।	To go	जाना
1879	पतण्	गतौ वा। वाशब्दो णिजदन्तत्वयोर्युगपद्विकल्पार्थः	To go	जाना
1880	वातण्	ण्गतिसुखसेवनयोः	To go, to enjoy	जाना, प्रसन्न होना
1881	कथण्	वाक्यप्रबन्धे	To tell	कहना
1882	श्रन्थण्	दौर्बल्ये	To be weak	दुर्बल होना
1883	छेदण्	द्वैधीकरणे	To divide	विभाजित करना
1884	गदण्	गर्जे। गर्जो मेघशब्दः	To thunder	गर्जना करना
1885	अन्धण्	दृष्ट्युपसंहारे	To make blind	अन्धा करना
1886	स्तनण्	गर्जे। गर्जो मेघशब्दः	To thunder	गर्जना करना
1887	ध्वनण्	शब्दे	To sound	शब्द करना
1888	स्तेनण्	चौर्ये	To steal	चोरी करना
1889	ऊनण्	परिहाणे	To lose	कमी होना
1890	कृपण्	दौर्बल्ये	To be weak	दुर्बल होना
1891	रूपण्	रूपक्रियायाम्। रूपक्रिया राजमुद्रादिरूपस्य करणम्	To fashion, to represent on the stage, to feign	सुसज्जित होना, मंच पर प्रतिनिधित्व करना,
1892	क्षप 1893 लाभण्	प्रेरणे	To send, to miss	भेजना, प्रेरणा करना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1894	भामण्	क्रोधे	To be angry	क्रोधित होना
1895	गोमण्	उपलेपने	To anoint, to plaster	लिपना
1896	सामण्	सान्त्वने। सान्त्वन प्रीणनम्	To console, to please	खुश करना
1897	श्रामण्	आमन्त्रणे	To invite	आमंत्रण देना
1898	स्तोभण्	श्लाघायाम्	To praise	प्रशंसा करना
1899	व्ययण्	वित्तसमुत्सर्गे। वित्तसमुत्सर्गस्त्यागः।	To spend	खर्च करना
1900	सूत्रण्	विमोचने। विमोचनं मोचनाभावो ग्रन्थनमिति यावत्।	To twist or sew together	गूँथना
1901	मूत्रण्	प्रस्रवणे	To make water	पेशाब करना
1902	पार 1903 तीरण्	कर्मसमाप्तौ।	To accomplish a work	कार्यपूर्ण करना
1904	कत्र 1905 गात्रण्	शैथिल्ये	To be weak	कमजोर होना
1906	चित्रण्	चित्रक्रियाकदाचिद्दृष्ट्योः।	To draw (a picture), to see	चित्र बनाना, देखना
1907	छिद्रण्	भेदे	To make a hole	छेद करना
1908	मिश्रण्	संपर्चने। सम्पर्चनं श्लेषः।	To mix	मिश्रण करना
1909	वरण्	ईप्सायाम्।	To ask for, to choose	इच्छा करना
1910	स्वरण्	आक्षेपे	To blame, to censure	आरोप देना, निन्दा करना
1911	शारण्	दौर्बल्ये	To be weak	दुर्बल होना
1912	कुमारण्	क्रीडायाम्	To sport, to blame	क्रीड़ा करना, निन्दा करना
1913	कलण्	संख्यानगत्योः।	To count, to go	गिनना, जाना
1914	शीलण्	उपधारणे। उपधारणमभ्यासः परिचयो वा	To form a habit, to form an acquaitance	प्रवृत्ति बनाना, परिचय करना
1915	वेल 1916 कालण्	उपदेशे	To advise	उपदेश देना
1917	पल्यूलण्	लवनपवनयोः।	To reap (corn)	काटना, साफ करना
1918	अंशण्	समाघाते। समाघातो विभाजनम	To purify	शुद्ध करना
1919	पषण्	अनुपसर्गः। धातुरनुपसर्गोऽदन्तो णइचमुत्पादयन्ति		
1920	गवेषण्	मार्गणे। मार्गणं शोधनम्	To seek	अन्वेषण करना
1921	मृषण्	क्षान्तौ। क्षान्तिस्तितिक्षा	To endure	सहन करना
1922	रसण्	आस्वादनस्नेहनयोः	To taste, to love, to moisten	स्वाद लेना, प्रेम करना, गीला करना
1923	वासण्	उपसेवायाम्।	To serve	सेवा करना
1924	निवासण्	आच्छादने	To cover, to clothe	ढकना,
1925	चहण्	कल्कने। कल्कनं दम्भः	To make a pretext	बहाना ढूँढना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1925	चहण्	कल्कने। कल्कनं दम्भ:	To make a pretext	बहाना ढूँढना
1926	महण्	पूजायाम्।	To worship	पूजा करना
1927	रहण्	त्यागे	To abandon	त्याग करना
1928	रहुण्	गतौ	To go	जाना
1929	स्पृहण्	ईप्सायाम्।	To desire for	इच्छा करना
1930	रुक्षण्	पारुष्ये	To be harsh	कठोर होना
1931	मृगणि	अन्वेषणे	To seek for	अन्वेषण करना
1932	अर्थणि	उपयाचने	To beg for	माँगना
1933	पदणि	गतौ	To go	जाना
1934	संग्रामणि	युद्धे	To fight	लड़ना
1935	शूर 1936 वीरणि	विक्रान्तौ	To be powerful, to make vigorous exertions	पराक्रमी होना,
1937	सत्रणि	संदानक्रियायाम्।	To practise charity	दान देना
1938	स्थूलणि	परिवृंहणे। परिवृंहणं पीनत्वम्।	To be fat	मोटा होना
1939	गर्वणि	माने	To be proud	गर्व करना
1940	गृहणि	ग्रहणे	To take	ग्रहण करना
1941	कुहणि	विस्मापने	To surprise, to deceive	आश्चर्यचकित करना, मूर्ख बनाना
1942	युजण्	संपर्चने	To mix	मिश्रण करना
1943	लीण्	द्रवीकरणे	To liquidify	प्रवाही करना
1944	मीण्	मतौ। मतिर्मननम्।	To think, to reflect	सोचना, मनन करना
1945	प्रीगण्	तर्पणे	To please	खुश करना
1946	धूगण्	कम्पने	To shake	हिलाना
1947	वृगण्	आवरणे	To cover	ढकना
1948	जॄण्	वयोहानौ	To grow old	वृद्ध होना
1949	चीक 1950 शीकण्	आमर्षणे	To suffer, to touch, to be impatient	सहन करना, स्पर्श करना, सहन न करना
1951	मार्गण्	अन्वेषणे	To seek for	अन्वेषण करना
1952	पृचण्	संपर्चने	To mix	मिश्रण करना
1953	रिचण्	वियोजने च। चकारात्सं पर्चने	To separate, (to mix)	अलग करना, मिश्रण करना
1954	वचण्	भाषणे	To speak	कहना
1955	अर्चिण्	पूजायाम्।	To worship	पूजा करना
1956	वृजैण्	वर्जने	To avoid	त्याग करना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1957	मृजौण्	शौचालङ्कारयो।	To purify, to decorate	शुद्ध करना, सुशोभित करना
1958	कठुण्	शोके	To grieve for	शोक करना
1959	श्रन्थ 1960 ग्रन्थण्	संदर्भे। संदर्भो बन्धनम्	To bind	बाँधना
1961	क्रथ 1962 अर्दिण्	हिंसायाम्।	To kill	हिंसा करना
1963	श्रथण्	बन्धने च। चकाराद्धिंसायाम्।	To hunt, to kill, to bind	हिंसा करना, मारना, बाँधना
1964	वदिण्	भाषणे	To speak	कहना
1965	छदण्	अपवारणे (अपवारणमाच्छादनम्)	To cover	ढकना
1966	आङः सदण्	गतौ। आङः परः सद इत्ययं धातुर्गतावर्थे युजादिः	To go	जाना
1967	छृदण्	संदीपने	To kindle, to burn, to shine	उत्तेजित करना, जलाना, चमकना
1968	शुन्धिण्	शुद्धौ	To purify	शुद्ध करना
1969	तनूण्	श्रद्धाघाते	To lose faith	विश्वास खोना
1969.2	उपसर्गाद्	दैर्घ्ये। उपसर्गपूर्वस्तनूदैर्घ्येऽर्थे युजादिः	To be long	दीर्घ होना
1970	मानण्	पूजायाम्	To adore, to worship	पूजा करना
1971	तपिण्	दाहे	To burn	जलाना
1972	तृपण्	प्रीणने	To please, to satisfy	प्रसन्न करना, संतुष्ट करना
1973	आप्लृण्	लम्भने। लम्भन प्राप्तिः	To obtain	प्राप्त करना
1974	दृभैण्	भये	To fear	डरना
1975	ईरण्	क्षेपे। क्षेपः प्ररणम्	To discharge, to excite, to cast, to go	फेंकना, उत्तेजित करना, डालना, जाना
1976	मृषिण्	तितिक्षायाम्	To suffer	सहन करना
1977	शिषण्	असर्वोपयोगे। असर्वोपयोगोऽनुपयुक्तत्वम्	To leave as a remainder, to share	शेष बचना, विशेषित करना
1977-2	विपूर्वः	अतिशये। अतिशय उत्कर्षः। विपूर्वः शिषिरतिशये युजादिः		
1978	जुषण्	परितर्कणे	To reason, to be satisfied	तर्क करना, सन्तुष्ट होना
1979	घृषण्	प्रसहने। प्रसहनभमिभवः	To insult, to assail	निन्दा करना, हराना
1980	हिसुण्	हिंसायाम्।	To hurt, to kill	हिंसा करना, मारना
1981	गर्हण्	विनिन्दने	To censure	निन्दा करना
1982	षहण्	मर्षणे	To endure	सहन करना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org